आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

फोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक १) २२, पौष २०२५ रविवार—दयानन्दाब्द १४४-५ जनवरी १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

यस्यच्छायाऽमृतम्

वेद का आदेश है, हे मानवो! प्रभु केवल उसी का आश्रय ले जो सारे संसार का निर्माण करने वाला है। जिसको छाया अर्थात् आश्रय ही अमृत है। उस परमात्मा का आश्रय लेना अमर जीवन को प्राप्त करना है। परन्तु आज मानव उसे भूलकर आश्रय के लिए दर-दर भटक रहा है। वह कहीं धनीयों का आश्रय लेता है। कहीं संसार के भौतिक पदार्थों का सहारा लेता है। परन्तु उसे कहीं भी सुख नहीं मिलता, फिर वहां सुख है भी कहां?

हे मानव अगर तू अमर होना चाहता है,अपने जीवन को अमर बनाना चाहता है तो उस प्यारे प्रभु की शरण में आ, उसकी छाया अमृतमय है उससे प्रेम कर मानव, प्रभु प्रेम अमृत है। अमृत को पाकर तुम अमर हो जाओगे।

वेदामृत

हम प्रकाशमान् बनें

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि।
स यथा त्वं भ्राजता
भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता
भ्राज्यासम्॥

अथर्व वेद काण्ड १७-१-२०

अर्थ हे प्रभो! आप (शुक्र.) शुद्ध निर्मल (असि) है आप (भ्राजः) प्रकाशमान (असि) हैं (सः) वह (यथा) जैसे (त्वम्) आप (भ्राजता) प्रकाशमान के साथ (भ्राज.) प्रकाशमान (असि) हैं (एह अहं) वैसे मैं भी (भ्राजता) प्रकाशमान के साथ (भ्राज्यासम्) प्रकाशमान बन जाऊं।

भाव यह है

प्रभुदेव! आप प्रकाश के भण्डार हैं। विश्व के तमाम चमकने वाले सूर्यादि पदार्थों में जितना भी प्रकाश है। यह सारा आपका ही दिया है। आप प्रकाश के केन्द्र हैं। हम भी आपके बच्चे-बच्चियां हैं। आपके सम्पर्क में रहते हुए हम भी प्रकाश को प्राप्त करते रहें। आपकी कृपा से ही तो हमारे जीवन में हर प्रकार के आचार-विचार की ज्योति मिलती जाएगी। प्रकाश के भण्डार से ही तो हमें ज्योति मिलेगी। कृपा करें। हमारे जीवन में समय-समय पर अन्धकार आकर हमें विपत्तियों में फंसा लेता है। पिता जी! अपने प्रकाश से हमारे जीवन में भी चमक पैदा कर देवें। सं.

ऋषि दर्शन

सर्वोत्कृष्टत्वात्

हे महान् देव। आप सबसे ही उत्कृष्ट हैं, ऊंचे हैं, सबसे श्रेष्ठ हैं। आप से बढ़कर सारे विश्व में कोई भी तो श्रेष्ठ व ज्येष्ठ नहीं है। आप सर्वोत्तम हैं। आप को प्रणाम हो।

परमेश्वर अनन्तविद्या युक्त

परमेश्वर ही अनन्त विद्याओं के भण्डार हैं। सारी विद्याओ के केन्द्र आप ही हैं। सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

विद्वांस: क्रान्त दर्शना:

विद्वान् वे कहलाते हैं जो क्रांत दर्शी होते हैं। जो बहुत ही दूर की सोचते हैं, उनकी दृष्टि व मन का चिंतन बहुत दूर जाने वाला होता है। बड़े दूरदर्शी हुआ करते हैं। ऐसे लोग विद्वान् कहलाते हैं।

भाष्य भूमिका से

दाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी एच० डी० (सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोकचन्द्रशास्त्री

न तां नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति ।
देवाश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ।

विद्याएं नष्ट नहीं होतीं चोर नहीं चुराता है, दु:खदायी शत्रु भी इनका तिरस्कार नहीं कर सकता है, इनके ज्ञान से ही मनुष्य देवयज्ञ करता है, विद्वानों का सत्कार और संगति करता है और दान करता है। गोपतिः ज्योग इन्द्रिय स्वामी, जीवात्मा निरन्तर उनके साथ सम्बद्ध रहता है।

ब्लैकबोर्ड पर चाक का एक टुकड़ा फेंकिए एक संस्कार उस पर पड़ जाएगा। इसी प्रकार मनुष्य जो कुछ देखता है, सुनता है उस सबका संस्कार उसके आत्मा पर पड़ता है। साधारणतया हम यह समझते हैं कि जो क्रिया जिस समय हम करते हैं उतने समय के लिए उसकी प्रतीती होती है। कभी-कभी इस प्रकार भी होता है कि हमने रास्ते चलते किसी वस्तु को देखा और देख कर चले गए। फिर उसके विषय में किसी तरह की जिज्ञासा और किसी तरह का विचार नहीं उठता। परन्तु किसी समय सहसा वह विचारधारा या उस वस्तु की स्मृति जागृत हो जाती है। आप अवश्य सोचते होंगे कि आखिर इस वस्तु के कैसे दर्शन हो गए, यह स्मृति कहां से आ गई। मनोवैज्ञानिक इसका उत्तर देते हैं और कहते हैं कि प्रत्येक क्रिया और प्रत्येक वस्तु जो हम देखते, सुनते या किसी तरह उन सब की रेखाएं हमारे मस्तिष्क पर पड़ती हैं, इन में से किसी की रेखा हल्की, किसी की गहरी और किसी की साधारण होती है। यह सब रेखाएं अनुकूल साधन एवं परिस्थिति पाकर स्मृति के रूप में जाग खड़ी होती हैं। अर्थात् हमारी सभी क्रियाओं व चेष्टाओं की आत्मा पर एक अमिट सी छाप पड़ती है जिसको मिटाना सम्भव नहीं। विद्या प्राप्त करना भी एक क्रिया है चेष्टा है। उसकी भी आत्मा पर छाप पड़ती है, संस्कार पड़ता और वह संस्कार मिटता नहीं। इसीलिए इस संस्कार को वेद ने अमिट कहा है। इस प्रकार विद्या प्राप्त करना एक क्रिया है। क्रिया के साथ परिश्रम और बुद्धि का योग होना चाहिए।

विद्या का नाश नहीं होता

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम. ए. एल. टी. गोरखपुर)

उसमें सत्य को खोजने और जानने की उत्कण्ठा आवश्यक है।

अब इस पर जब हम विचार करते हैं तो हमें पता चलता है कि विद्या दो प्रकार की है। एक आध्यात्मिक ज्ञान और दूसरा भौतिक ज्ञान अर्थात् विज्ञान। संसार में जीवन बिताने के लिए दोनों प्रकार का ज्ञान आवश्यक है। आध्यात्मिक ज्ञान का मतलब है—मैं क्या हूं, परमात्मा क्या है, जगत क्या है, धर्म क्या है—यह सब आध्यात्मिक ज्ञान है। आध्यात्मिक ज्ञान हमें बतलाता है कि मनुष्य, पशु, पक्षी सभी परमात्मा के पुत्र हैं। यह मानव जाति मेरी है, ये सब मेरे भाई हैं और इनकी सेवा करने के लिए ही मुझे विज्ञान की आवश्यकता है। यदि आध्यात्मिक ज्ञान हमें नहीं प्राप्त हुआ और हम केवल भौतिक ज्ञान की उन्नति में लगे रहे तो विज्ञान सुरक्षित न बचेगा। विज्ञान सारे संसार का नाश कर देगा। विज्ञान से संसार सुन्दर बनने के बजाय भयानक बन जावेगा। जब तक हममें आध्यात्मिकता की भावना नहीं आती, आत्मीयता नहीं आती तब तक विज्ञान व्यर्थ है। ज्ञान-हीन विज्ञान के हाथ में समाज को सौंप देना मानो बन्दर के हाथ जलती हुई लकड़ी दे देने जैसा ही है। अतः सब लोग आपस में भाई-भाई बनें, सब एक ईश्वर के बनें। 'मनुर्भव' मनुष्य बनाना यह विद्या का लक्ष्य है। यही वेद का उपदेश है।

यह बात ध्यान रखने की है कि मान लीजिए हमने मानव ऐक्य की कल्पना द्वारा मानव प्रेम एवं सेवा की भावना अपने हृदय में सन्निहित कर दी और इस भावना से अभिभूत होकर रोगियों की सेवा का व्रत भी ले लिया। परन्तु उन रोगियों के कष्ट को हम कैसे दूर करेंगे? उस के लिए हमें विज्ञान की आवश्यकता पड़ेगी। विज्ञान का अर्थ है उन कामों को करने की जानकारी। रोगी की सेवा और दवा का ज्ञान न होने से हम उसे लाभ के स्थान पर हानि पहुंचा देंगे। आजकल विज्ञान की बहुत अधिक वृद्धि हो गई है। स्टोव किस तरह जलाना चाहिए, पानी किस प्रकार साफ करना चाहिए, बिजली के पास कैसे रहना चाहिए, टेलीफोन किस प्रकार करना चाहिए, इंजैक्शन कैसे लगाना चाहिए, कौन सी अच्छी सब्जी है, किस चीज में विटामिन्स है, किस तरह व्यायाम अच्छा है, कौन सी शिक्षा पद्धति उत्तम है, प्रभावशाली भाषण कैसे दिया जा सकता है, गांवों में किस प्रकार स्वास्थ्य सुधार करना चाहिए, खाद कैसे तैयार की जा सकती है, बीज कितने अन्तर से बोना चाहिए, इस प्रकार एक दो नहीं सैकड़ों प्रकार विज्ञान की हमें प्रतिदिन के व्यवहार में आवश्यकता रहती है। हमें इस प्रकार भौतिक विद्या प्राप्त करनी चाहिए। विज्ञान के बिना ज्ञान निरुपयोगी है और ज्ञान के बिना विज्ञान भयकर है।

विद्या के ये दो भेद हैं। विद्या शब्द का अर्थ सत्यार्थ-प्रकाश में स्वामी दयानन्द ने लिखते हुए कहा है 'वेत्ति यथा-वत्तत्वपदार्थ स्वरूपं यया सा विद्या यया तत्व स्वरूपं न जानाति भ्रमादन्यस्मिन्नन्यन्निश्चिनोति यया सा अविद्या' जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिससे तत्वस्वरूप न जान पड़े, अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है।

विद्या कभी नष्ट नहीं होती यह विद्या का प्रथम और मुख्य गुण है। संसार का धन, प्राकृति भौतिक वृद्धि काल पाकर नष्ट हो जाती है। ये सब संयोग से आती है जहां जहां संयोग है वहां वियोग है। धन सम्पत्ति आज एक के पास है कल चला-चचला उसे छोड़कर दूसरे के पास चली जाती है। एक जगह धनियों की सन् १९२३ में हुई सभा वर्णन पढ़ा था। इस सभा में दुनिया की सबसे बड़ी लोहा कम्पनी के प्रधान अमेरिका के नेशनल सिटी बैंक के अध्यक्ष, अमेरिका की सबसे बड़ी गैस कम्पनी के सभापति, गेहूं के सबसे बड़े सट्टाबाज, न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज के प्रधान अमेरिका के हाल स्ट्रीट के सबसे बड़े गोदाम के स्वामी, सारी दुनिया के देशों के सैटलमैंट बैंक के अध्यक्ष भी थे। यह सभी संसार के उन इने-गिने धनियों में से थे जिन्हें स्वयं भी यह पता न था कि उनके पास कितना धन है। परन्तु १५ वर्ष के बाद दुनिया की सबसे बड़ी लोहा कम्पनी के प्रधान चार्ल्स दीवालिया होकर मरे, दुनिया की सबसे बड़ी व्यापारी कम्पनी के प्रधान सैमुअल बीमा के अन्तिमदिनों में सड़कों पर भीख मांगते थे और छिपे हुये अपराधी भी थे। सबसे बड़ी गैसकम्पनी के प्रधान हावर्ड पागलों के हस्पताल में मरे। गेहूं के सट्टाबाज दीवालिया हुए। न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज के प्रधान विटने जेलखाने में पड़े और बन्दीगृह में उनकी मृत्यु हुई। सबसे बड़े गोदाम के स्वामी ने आत्महत्या की। दुनिया के सारे देशों के बैंक के प्रधान फ्रेजर ने आत्महत्या की। इसी लिए वेद ने कहा है:—

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा-
न्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः।
ऋ० १०।११७।५

धन तो रथ के पहियों की भांति लोट-पोट होते रहते हैं और दूसरों-दूसरों के पास जाते रहते हैं। आज एक धनी है कल वही निर्धन है। धन सांयोगिक पदार्थ है। सांयोगिक का वियोग होकर ही रहता है। किंतु विद्या का नाश नहीं होता वह तो आत्मा का गुण है। यही कारण है कि चोर उसे चुरा नहीं सकता, डाकू उसे लूट नहीं सकता उसको उसे पा नहीं सकते। किसी संस्कृत के कवि ने ठीक ही लिखा है:—

हर्तुर्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता। कल्पान्तेऽपि न या नश्येत् किमन्यद्विद्यया समम्॥

चोर की दृष्टि में आती नहीं और देने से बढ़ती है, सृष्टि के नाश होने पर नष्ट नहीं होती। ऐसी विद्या के तुल्य और कौन वस्तु हो सकती है? 'पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते' विचित्र है यह विद्या। गुरु शिष्य को अपना सम्पूर्ण धन विद्या धन दे देता है परन्तु यह विद्या धन गुरु का घटता नहीं, कम नहीं होता वह बढ़ता ही जाता है। दुनिया की अन्य वस्तुएं देने से घटती है। यह घटती नहीं। यही इसकी विचित्रता है। तभी तो वेद कहता है—

न दभाति तस्करः

(क्रमशः)

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, ५ जनवरी, १६६९ अंक १

मानव-जीवन दुःखमय क्यों ?

(धर्मदेव आर्य व्यवस्थापक)

आज चारों तरफ संसार में हाहाकार मचा हुआ है सभी लोग कहते सुने जाते हैं, अत्याचार बढ रहे हैं, पाप दिनों-दिन बढता चला जा रहा है। लोगों में स्वार्थपरता बढ रही है। महंगाई सीमा से बहुत दूर जा चुकी है। रिश्वत खोरी ऐसे बढ रही है जसे नदी मे बाढ बढती जाती है। सभी लोग यही प्रश्न करते हैं, देश का बनेगा क्या ? अपने देश की दशा पर सभी विचार कर आश्चर्य मे पड जाते हैं। यह भारत देश क्या था और आज क्या बनता चला जा रहा है। देश की दशा देखकर देश-भक्त रो उठता है। उसके स्वप्नो का यह स्वतन्त्र भारत, 'राम का राज्य' बनना था यह तो रावण के राज्य से भी आगे बढ गया है। वह कह उठता है—

हम कौन थे, क्या हो गए
और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्याए सभी ।।

विचारने का प्रश्न है आखिर हमारी यह दशा क्यो हो गई हम अपने पूर्वजो से इतने दूर क्यो निकल गए हैं घोर अन्धकार मे जैसे एक पथिक पथ पर बढता जाता है बिना विचारे वह घने जगल मे पहुच जाता है। वह अपने घर वालो से अपने परिवार से इतनी दूर निकल जाता है कि उसके लिए लौटना असम्भव हो जाता है वह पीछे लौटना चाहता है उसे अपने सम्बन्धियो की याद आती है। परन्तु जब वह पीछे लौटा तो पीछे लौटने का भी रास्ता भूल गया जब वह आगे बढा वहा कटिले वृक्ष थे, जगली जानवर, शेर आदि को देख वह घबराता है परन्तु क्या करें उसे कोई मार्ग उस जगल से निकलने का मिलता ही नही।

कुछ दूर चलने पर उसे कुछ मानवों के पद चिन्ह मिल जाते हैं। परन्तु वह मूर्खता वश उन पर भी थोडी दूर चल कर घबरा जाता है कि पता नही यह मार्ग कहा निकल जायेगा। उसे छोड वह फिर जगल में भटक जाता है।

उसी व्यक्ति की भान्ति आज का मानव भटक रहा है, पूर्वजों के पद-चिन्ह सामने है। जिन पर चल कर हम इस ससार रूपी घनघोर जगल से बाहिर निकल सकते हैं। परन्तु मूर्खता वश हम उस मार्ग को छोड, उस पथिक की भान्ति इस घने जगल मे ही जीवन का अन्त कर देंगे परन्तु बाहिर निकलना नही चाहेगे।

हमारे पूर्वजों ने जो आदेश दिए हैं, उनका पालन करना उनके अनुसार चलना ही हमारे लिए लाभप्रद है। आज भ्रष्टाचार क्यो बढ रहा है? चारों ओर हा हाकार क्यो मचा हुआ है ? देश की दशा सोचनीय क्यो हो गई है ? इसका एक ही कारण है। हमने उस सर्व शक्तिमान को भुला दिया है, जिस को हमारे पूर्वजो ने अजर, अमर मान कर अराधना की है। उस को कण-कण मे व्यापक मान, उसकी अन्तर ज्योति मे अनुभव किया है। जीवन का बहुत बडा भाग प्रभु चिन्तन मे ही उन्होने लगाया है।

आज हम परमात्मा शब्द की हसी उडाते हैं कि परमात्मा भी कोई चीज है यह सारा ससार तो अपने आप बन गया, इसे कोई बनाने वाला भी नही है, बीज से बीज पैदा होता है, ऐसे ही सारा ससार बन गया। अरे मानव तू उस तीनो लोको के स्वामी को भुला कर ही यह दुख उठा रहा है। वेद कहता है तीनो लोक उस प्यारे प्रभु ने ही बनाए हैं उसे जान।

ब्रह्मणा भूमिर्विहिता
ब्रह्म द्यौरुत्तरा हिता
ब्रह्मेद मूर्ध्वं तिर्यक्
चान्तरिक्षं व्यचोहितम्

अ० १०।२।२५

(ब्रह्मणा) परमात्मा ने (भूमिः) पृथिवि (विहिता) बनाई, ब्रह्म) परमेश्वर ने (द्यौः) द्युलोक को (उत्तरा) ऊपर (हिता) स्थापित किया, परमात्मा ने ही यह (अन्तरिक्षम्) मध्यलोक उर्ध्वम्) ऊपर (तिर्यक) तिरछा और नीचे, (व्यचो हितम्) व्यापा है, बनाया हैं।

यथार्थ—यह है। कि एशिया, यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका आदि सभी देशो व खण्डों से युक्त यह सारी भूमि और इस भूमि मे रहने वाले सभी प्राणी परमात्मा ने रचे हैं।

उस परमात्मा ने ही सूर्य से ऊपर का हिस्सा जिसे द्युलोक कहते हैं तथा नीच का अन्तरिक्ष लोक, तिरछे. ऊपर नीचे जितने भी लोक लोकान्तर हैं उस उस प्यारे प्रभु ने ही रचे हैं।

कितना स्पष्ट लिखा है। इस अथर्व वेद के मन्त्र मे, परन्तु फिर भी हम उसे भुला ही बैठे हैं। क्योकि हमने वेद का स्वाध्याय ही छोड दिया। हम अपने कर्तव्य को पहचाने कैसे ? वेद को समझो बन्धुओ, महर्षि दयानन्दजी ने हमारी दोहरी डयूटी लगा दी है। नियम बना दिया हैं।

'वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना, आर्यो का परम धर्म है।

पढना ही नही पढाना भी, सुनना ही नही सुनाना भी, फिर केवल धर्म ही नही परम धर्म बताया है। इन सभी दुःखो का कारण यही है हमने वेद और भगवान को भुला दिया है। आज दुःखो के जाल मे फसे है।

हमने मूर्खतावश परमात्मा को गलत समझा, उसे मन्दिर की चार दीवारी मे समझ कर हम पाप मे रत हो गये क्योकि भगवान तो मन्दिर मे हैं वह हमे पाप करते देख ही नही सकता, फिर उस पाप की कमाई से थोडा मन्दिर में भी भगवान की भेट चढा देंगे और पाप से मुक्त होजाएगे। गगा के पवित्र जल मे हरिद्वार जाकर स्नान कर लेगे, सभी पाप दूर हो जाते रहेगे, मुसलमान भाई कहते हैं मुहम्मद पर ईमान ले आएगे सभी गुनाह दूर हो जाएगे। ईसाई कहताहै ईशा सबके पापो को लेकर सूली पर चढ़ गया जो पापी ईशा पर ईमान ले आएगा वह पापो से मुक्त होता जाएगा।

कितना सस्ता सौदा आजव्यक्तिने वेदसे विमुख होकर, पाप से मुक्त होने का प्राप्त कर लिया है। सच पूछो तो आज इस जहालत के आने का यही एक सबसे बडा कारण है। ऐसी बात नही की मानव पाप से डरता नही आजका व्यक्ति भी डरता है। पाप से हम सब भयभीत होते हैं, परन्तु जब देखते हैं। पाप तो आसानी से छूट जाएगा। जितना चाहे करलो, वेद का स्वाध्याय न करने से तथा ऋषि ग्रन्थो से दूर हो जाने से, हम अन्ध-विश्वासो मे फस गए हैं। सत्य असत्य की कसौटी हमारे पास रही ही नही।

प्यारे बन्धुओ किए हुए कर्म कभी भी क्षमा नही होते, चाहे वह अच्छे हो या बुरे हो।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम्—वेद कहता है किए हुए शुभ और अशुभ दोनो प्रकार के कर्मो का फल अवश्य ही भोगना पडेगा। अगर आजका व्यक्ति इस वेदादेश को सम्मुख रखकर कार्य करे तो, पापाचार समाप्त हो जाएगा।

वेद कहता है भगवान ससार के कण-कण मे विद्यमान है, वह अन्धेरे से अन्धेरे, और छोटे से छोटे स्थान मे भी विराजमान है, वह ससार के कण मे रमा हुआ है। हमारे प्रत्येक कर्म का द्रष्टा है

जब आजका व्यक्ति इस वेद के आदेश को मानकर कार्य करेगा। उसको सर्वव्यापक मानेगा तो पाप उससे नही हो सकेगा। रिश्वत, चोरी, भ्रष्टाचार करते समय वह काप उठेगा।

मानव पाप तब करता है जब वह देखता है कि मुझे कोई देख न रहा हो।

आज मानव जीवन मे दुःख बढते जा रहे हैं। भ्रष्टाचार का बोल बाला है। कोई वस्तु बाजार से शुद्ध नही मिलती महगाई चरम सीमा को भी पार करती जा रही है। बिना रिश्वत खोरी के कोई कार्य होता ही नही। मानव का जीवन पापो मे आच्छादित होता जा रहा है। आज हम वेद और भगवान से विमुख होकर ही इस पाप के मार्ग पर दुःख भोगने के लिए बढते चले जा रहे हैं और पाप के मार्ग पर चल कर सुख कहा से प्राप्त हो। इसी लिए आज दुःख भी दिन प्रति-दिन बढते जाते हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

समाज और संघ

पं० सत्यप्रिय शास्त्री सिद्धांत शिरोमणि
श्री उपाचार्य–दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

भारतीय सभ्यता सस्कृति, परम्परा एव राष्ट्रियता के सरक्षण तथा सम्बन्ध के उद्देश्य से उन्नीसवी सदी में जिन आन्दोलनो ने जन्म लिया उन मे सब से अधिक प्रभावी एव कृतकार्य महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज रूपी सर्वतोमुखी वैचारिक आन्दोलन है। अन्य जितने भी मनीषियों ने वैचारिक आन्दोलन प्रारम्भ किये उन मे कही न कही आशिक रूप मे ही पाश्चात्य विचार क कीटाणु विद्यमान है। अत: वे सर्वथा भारतीयता का दावा करते हुए भी मौलिक रूप मे सर्वथा स्वच्छ नही है। महर्षि दयानन्द की यही सब से बडी देन है कि वे सर्वथा मूल रूप मे विशुद्ध स्वदेशी थे, जीवन के किसी भी क्षेत्र मे विदेशिता उन्हे छू नही गई थी। अत: महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज सिद्धान्त पर किसी के साथ पूर्णरूपेण समझौता नही कर सके। ब्राह्म समाज देव समाज तथा थियासोफिकलादि से पृथक रहने मे यही एक मूल बाधा थी। दूसरे स्वाधीनता आन्दोलन में काग्रेस के साथ कन्ध से कन्धा ही नही प्रत्युत सभी मोर्चों पर उस से आगे रह, कार्य करने के पश्चात भी आर्य समाज ने यह अनुभव किया कि इस सस्था के विचार, कार्यक्रम तथा योजना भारतीयता के पोषक न होकर घातक ही हैं। अत: स्वतन्त्र भारत ने भी यदि भारतीयता का विघात होता रहा तो स्वतन्त्रता से क्या लाभ ? इस पर आर्य समाज ने भारतीयता के पोषक सहायको की खोज मे इधर-उधर नजर दौडाई। तो कुछ दल विशुद्ध भारतीयता का लेबल लगाकर आर्यसमाजकी सहायता को आगे आये, उनमे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ तथा जनसघ। जिन दोनो को आगे चलकर इस लेख माला मे सम्मिलित 'सघ' नाम से पुकारा जायेगा। प्रमुख थे तथा कही २ अब भी देखा करते हैं।

इसके साथ ही इस लेखमाला को आरम्भ करने का मूल कारण यह भी है कि आज का ससार राजनीतिकाहै। आर्यसमाज चूकि एकागी सस्था न होकर सर्वतोमुखी आदोलन है। अत: वर्तमान काल मे आर्यसमाज राजनीति क्षेत्र मे आर्यसमाज राजनीति क्षेत्र में प्रवेश करे या नही इस पर सर्वत्र बडी ले दे हो रही है। कुछ लोगो का मत है कि विचार-धारा की दृष्टि से जो दल हमारे निकट हैं, उनमे प्रवेशकर अपना राजनैतिक प्रभाव उत्पन्न करो। इसी उद्देश्य से आर्यसमाज के कुछ तथा कथित लीडर संघ के लेबल लगाकर ससद् की कुर्सियो पर बैठे है, तो क्या उनका कथन ठीक है कि यह सस्था अन्य दलो की अपेक्षा हमसे निकट है ? और यदि ऐसा ही है तो क्या उस घर के मालिक इतने असावधान तथा मूढ होगे कि तुमको अपने घर का मालिक बनने देगे ? क्योकि वे तो आपको पडोसी समझते हैं। सम्भवत: इस लेखमाला से मेरे बहुत से मित्र, हितैषी तथा दयालु मेरे ऊपर अपने क्रोध का नजला झाड़े, लेकिन आर्य समाज के हित की दृष्टि से उनकी क्रोधपात्रता को भी शिरोधार्य करता हुआ मैं इस लेखमाला को प्रथम कर रहा हू। क्योकि मेरा यह हार्दिक मत है कि विश्व का रक्षक तथा पथप्रदर्शक मेरा देश भारत है और भारत वर्ष का रक्षक एव पथप्रर्शक ऋषि दयानन्द एव उन का वैचारिक आन्दोलन आर्य समाज है। अत: राजनीति के इस भयकर युग मे जब कि आर्य समाज के नेता भी राज नीति की चौपडे बिछा कर उस दाय पेंच मे महर्षि की पवित्र विचार धारा रूपी द्रोपदी को भी दाव पर लुटा रहे हो और उन के सामने ही उक्त राजनैतिक दलो रूपी दु:शासन और दुर्योधनो द्वारा यह द्रोपदी नगी की जा रही हो तो कम से कम उस दृश्य से मेरा हृदय तो टूकर हो रहा है, तन मन मे आग लग रही हैऔर जी चाहता है कि इन भारतीयता के दावेदारो का समूल नाश करके यमपुर भेजा जाय। मै वतमान तथा आन वाली युवा पीढी को चेतावनी देना चाहता हू कि यदि आपने महर्षि के सच्चे मिशन को आगे बढाना है तो इन झूठे ढढोरचियो के चक्कर से बचकर जरा अपने शत्रु और मित्र को पहचानो, आज हमे हमारा शत्रु उतनी हानि नही पहुचा रहा है, जितनी हानि हमे तथा कथित मित्रो से हो रही है। शत्रु की अपेक्षा मित्र कहने वाले द्वारा अधिक भयकर हानि हुआ करती है। अत. अपने युवामित्रोसे कहूगा, कि सावधान रहो तथा महर्षि दयानन्द के महान लक्ष्य को पहचानो ! इस लेखमाला के माध्यम से अपने पाठकों तक सुगमता से पहुचाने के लिये मैं चार चीजे लेता हू।

१:—हमारी धार्मिक मान्यताये—

सर्वप्रथम मैं अपनी धार्मिक मान्यताओ के विषय को लेता हू, जिनमे, सन्ध्या हवन तथा यज्ञोपवीतादि प्रमुख हैं। इस विषय मे हमारे सघी बन्धु कहा तक सहमत हैं, यह मैं स्पष्ट करूगा। आज हमे यह कहकर भी बहकाया जाता है कि सघ मे तो सारे आर्यसमाजी ही हैं। जैसे यज्ञदत्त जी, मधोक जी इत्यादि, लेकिन मैंने जहां तक अध्ययन किया उक्त सभी के विषय मे ऐसा कहकर केवल हमारी शक्ति को अपना अग बनाना ही प्रयोजन होता है। ये सज्जन अपने जीवन मे हमारी कितनी धार्मिक मान्यताओं को कितना स्थान देते हैं। क्या कोई यह बताने का कष्ट करेगा। इस दल का तो व्यवहार ही यह है कि गगा गये गंगादास और जमना गये तो जमनादास अर्थात आर्यसमाजियों के सामने आर्यसमाजी और पौराणिको के सामने पौराणिक बनते हैं। बल्कि मैं तो यहा तक कहने को उद्यत हू कि वास्तव में धार्मिक मान्यताओ के क्षेत्र मे ये हमारे पक्के शत्रु हैं। पाठक चौकियेगा नही, मैं प्रमाण के लिये निम्न घटनाए उपस्थित कर रहा हू।

१—मैं जब दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुना नगर मे पढता था तो अपने दो तीन साथियो के साथ अपने गाव मन्धार प्रचार करने गया। वहा को हम रात्रिमंजिलंण्टेन से जब प्रचार करने लगे तो निकट ही सघियो ने अपनी शाखा लगाई और हुडदगा मचाने लगे, जब हमने नम्रता पूर्वक मनाकिया तो लडके नचवाए और जोर-जोर से गाने लगे ताकि प्रचार में बाधा पड़े। बाद मे जब मैंने उक्त कृत्य की शिकायत उनके जिलाधिकारी को पत्र द्वारा की तो उल्टा मुझे उपदेश दिया कि महर्षि दयानन्द ने तो ईंट पत्थर और जहर खाए इत्यादि इत्यादि।

२—पाठक यह न समझें कि मैं सदा से ही संघ का विरोधी हूं। मैं उस परिवार का सदस्य हूं। जिन्होंने अपने इलाके में सघ को बढावा देने में अपना सारा परिवार झोक दिया था। सन ४० या ४२ में हमारे गांव मे सर्व प्रथम मेरे पिता जी ने ही सघ की शाखा आरम्भ की थी। उसके बाद आस-पास उन्होंने शाखाओ का जाल बिछा दिया था। मैं स्वय बचपन मे सघ की शाखाओं मे जाता था। हमारा सारा परिवार सघी था। परन्तु आर्य समाजी जी उससे पूर्व था। सघ के बड़े-बड़े कार्यकर्ता तथा अधिकारी हमारे घर ठहरते थे। एक बार प्रतिष्ठित अधिकारी आए, उन्होने पिता जी के गले मे यज्ञोपवीत देखकर कहा कि यह धागा क्यो गले मे डाल रखा ? पिता जी ने कहा कि यह यज्ञोपवीत है और हमारी प्राचीन सस्कृति का प्रतीक है। वे बोले इसे उतारकर खूटी पर लटका दो, इसकी क्या आवश्यकता ? तब पिता जी बोले कि श्रीमान्जी ? आज तो आप यहा आ गए, सो अतिथि होने के नाते ठहरो, भोजन और विश्राम करो, परन्तु आगे से इस घर में कदम नही धरना। तब से आज लगभग १५ या १६ वर्ष हो रहे हैं। इस कूडे करकट को हमने अपने घर से फैंक दिया है।

३—हमारे गाव मे आर्यसमाज का बहुत प्रचार है। मेरे चाचा श्री हर लालसिह जी की भजन मडली ने बडा प्रचार किया। चाचा जी ने अपने कई साथी गायक तैयार किये थे, जिन्होने भजन मण्डली द्वारा बड़ा भारी प्रचार किया था। परन्तु जब से वे शाखाओ मे गये तभी से प्रचार तो छोडा तो छोड़ा, इस के साथ ही यज्ञोवीत तोड कर फक दिया और बीडी, हुक्के तथा सिग्रेट पीने लग गये हैं। जब कि उस से पूर्व उन मे उक्त दोष नहीं थे।

४. सन ११५७ मे जब पंजाब मे हिन्दी सत्याग्रह चला तो आर्य समाज दुर्भाग्य से उस में सघी भी शामिल हो गये। मैं उस समय सैन्ट्रल जेल फीरोजपुर में छ मास तक बन्दी रहा और हमारे दुर्भाग्य से वहा कोई ऊंचा नेता उपस्थित नही था। इसका परिणाम यह था कि कोई ऐसा दुर्भाग्य शाली गिना जाता होगा।

(क्रमश:)

भारतीय नारी का महत्व

गुणवत देवी सपुत्री श्री भक्त फूलसिह मुजफ्फर नगर

भारतीय परम्परा में नारी प्रारम्भिक काल से ही हमारी सस्कृति का मेरुदण्ड बनी चली आ रही है। भारतीय सस्कृति मे नारी को जितना उच्च स्थान दिया है, उतना उसे ससार मे कही नही मिला है। वैदिक काल मे नारी को पुरुष की बराबरी का स्थान प्राप्त था। प्राचीनकाल से ही नारी को मनुष्य घर की देवी की तरहॅ लक्ष्मी स्वरूप मानते थे। उन्हे पुरुषो की तरह शिक्षित किया जाता था। वे पूर्ण स्वतन्त्र होती थी। पुरुषों के सदृश नारी को भी स्वय अपने 'वर' चुनने मे स्वतन्त्रता थी। शकुन्तला, दमयन्ती, सीता आदि नारियो के उज्ज्वल उदाहरण आज भी हमारे समक्ष उपस्थित हैं। सस्कृत में कहा भी गया है—

"या देवी सर्वभूतेषु बीज
रुपेण तिष्ठिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमो नम. ॥

केवल अध्यात्मिक में ही नही, अपितु लौकिक व्यवहार मे भी नारी को पूजनीय ठहराया हैं। मनु के अनुसार कहा भी गया है—

यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते
रमन्ते तत्र देवता.
यत्रैतास्तु न पूजयन्ते
सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।

और भी कहा गया है—

"तस्मादेता: सदा पूज्या:
भूषणाच्छादनादिभि:
भूतिकामैर्नरैर्नित्य:
बहुकल्याणमीप्सुभि:।'

कितने ऊचे विचार थे हमारे पूर्वजो के जो नारी को देवी मानकर पूजते थे। प्रायेक कार्य मे नारी की उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती थी वे उसको वैभव, सासारिक सुखो और वासना पूर्ति का साधन न समझकर मानवता का कल्याण करने वाली मानते थे। परन्तु जैसे-जैसे नारी की गरिमा का गुणगान हो रहा था समाज। समाज मे उसको ऊंचा स्थान प्राप्त था। परन्तु एक समय का ऐसा झोका आया और वह झूला जिसमे नारी जीवन पनप रहा था, अठखेलियां कर रहा था दूसरी ओर झुक गया जिधर सांस लेना मुश्किल था। उसकी सारी स्वतन्त्रता छीन ली गई। वह नारी जो भावनाओ के स्वतन्त्र आकाश मे पख फैलाया करती थी, घर की चारदीवारी में पर्दो के पीछे घुट-घुटकर बिलखने लगी उसकी आत्मा चीत्कार कर उठी। उसकी दशा उस पक्षी के समान हो गई जिसके पख तो हो परन्तु उनके मजबूत बेडियो के बघे होने के कारण वह उड़ने के लिये स्वतन्त्र न हो मध्यकालीन युग में यह भी प्रथा चली कि सम्राट एक की जगह दर्जनो रानिया रख सकता था क्या यह नारी का अपमान नही था? परन्तु क्या करती नारी बिचारी वह तो विवश थी? क्योंकि पुरुष के शिकजे मे पूर्ण रूपेण जकडी हुई थी। समाज ने इसे बुरा नही कहा बल्कि प्रोत्साहन दिया। नारी की उस समय की स्थितिको देखकर श्री मैथिलीशरण जी ने कहा हैं--

"अबला जीवन हाय
तुम्हारी यही कहानी।
आंचल मे है दूध
और आखो मे पानी ॥"

नीचे गिरकर, अपना सतीत्व लुटाकर, अपना नारीत्व बेचकर उसने एक चोट खाई। पुन. वह धीरे-धीरे सभलने लगी। खिसक-खिसक कर पुरुषो के बराबर आने के लिये निरन्तर प्रयास करती रही। एक दिन आया कि उसने खड़े होकर समाज का विरोध किया और अपनी स्वतन्त्रता की माग की—

"मुक्त करो नारी को मानव
चिर-बन्दिनी नारी को।"

समाजको उसका नारीत्व देना पडा। उसका लुटा हुआ नारीत्व वापिस करना पडा क्योकि नारी इतनी चेतन एव सबल हो चुकी थी कि उस मे समाज से टक्कर लेने की शक्ति पैदा हो गई थी। उसका नारीत्व जाग उठा था, क्रान्ति की भावना उसके मन मे घर कर गई थी और अपने पैरो पर खडे होने की शक्ति उसमे आ गई थी। समाज को मजबूर होकर यह कहना पडा—

"Man and woman are two wheels of a chariot" नारी स्वतन्त्र हो गई। आज भी वह स्वतन्त्र है। स्वतन्त्र होकर नारी ने अपना महत्व ससार मे फैलाया। केवल पुरुष ही नही, बल्कि पुरुषो मे ऊचे पदो पर भी नारी पहुच चुकी है। निरन्तर अपने यशोगान का प्रसार कर रही है। वास्तव मे नारी का स्वतन्त्र होना पुरुष से भी ज्यादा अनिवार्य है। नारी के द्वारा समाज का उत्थान तथा पतन होना सभव है। नारी समाज का आधारशिला है।

शिक्षके दृष्टिकोण से भी नारी का महत्व अधिक है। नारी का शिक्षित होना अत्यन्त अनिवार्य है, क्योकि शिक्षित नारी अपने सम्पूर्ण परिवार को शिक्षित बना सकती है। शिक्षित माता अपने बच्चो की देख भाल उचित रूप मे कर सकती है। वह अपने बच्चे की भलाई तथा बुराई का ध्यान कदम-कदम पर रखेगी। पिता से ज्यादा प्रभाव बच्चे पर माता का ही पडता है। शिक्षित माता ही अपनी सतान को उन्नति के पथ पर ले जा सकती है। अत: सक्षिप्त मे कहा जा सकता है कि नारी का शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। नारी घर की शोभा होती है।

भारतीय नारी त्याग और सहनशीलता की मूर्ति ही नही रही है उसमे शिशु-पालन के साथ-साथ तलवार उठाने की शक्ति भी रही है। भारत की देविया दया और करुण की साक्षात प्रतिमा बनकर पति सेवा को ही अपना सर्वस्व मानकर उसी मे लीन नही रहती थी, बल्कि अवसर पडने पर देश की रक्षा हेतु अपने प्राणो की आहुति करने में भी पीछे नही रही है। मुसलमानों के आक्रमण के समय भारतीय वीरागनाओ ने युद्ध भूमि में रणचण्डी के समान तथा अवसर पड़ने पर जलती चिता से कूदकर अपने शौर्य का परिचय दिया है। आधुनिक काल मे देश के स्वतन्त्रता सग्राम के अनुसार होने वाली झासी की रानी प्रथम थी। झासी की रानी लक्ष्मीवाई जिसने भारत की स्वतन्त्रता के लिए केवल सामूहिक रूप से प्रयत्नही नही किया, वरन रणक्षेत्र में अग्रजो के छक्के छुडा दिए। लक्ष्मीबाई की बचपन से ही युद्ध तथा शास्त्र कला मे रुचि थी। झासी की रानी जिसकी नस-नस मे नारीत्व टपकता था उपासना योग्य है। १८५७ मे जब स्वतन्त्रता सग्राम हुआ तब लार्ड डलहौजी ने इग्लैड मे जाकर यह शब्द झासी की रानी लक्ष्मीबाई के लिये कहे थे—

'भारत मे सुयोग्य, मे सुयोग्य, राजनैतिक, साहसी, कर्तव्यपारायण नारी थी तो केवल एक महारानी लक्ष्मीबाई।'

नारी केवल बुरको में बन्दी चारदिवारी मैं रहने वाली नही है।

नारी की शूरता तथा तथा वीरता के लिये इतिहास साक्षी है। औरछा देश के नरेश चम्पतराय की पत्नी सारन्धा का उज्जल उदाहरण आज भी इतिहास के पन्ने मे दृष्टिगोचर हो रहा है। इस नारी की वीरता को कोई मिटा नही सकता। राजपूत काल मे राजपूतो की वीरता और त्याग मे पुरुषों से पीछे नही थी। अवसर पडने पर स्वय हाथ मे तलवार सभालती थी। रानी सारन्धा को अपनी मर्यादा सब से अधिक प्रिय थी। मर्यादा के लिये इस रानी ने सब कुछ न्योछावर कर दिया था। राजा चम्पतराय जब मुगलो की आधीनता स्वीकार कर लेते हैं। तब रानी सारन्धा की अन्तर आत्मा अग्नि की तरह फबक (जल) उठती है, एव मर्यादा के वशीभूत होकर अपने प्रिय पति के पेट मे तलवार घुसा दी थी। रानी सारन्धा ने स्वय स्वतन्त्रता के लिये एव अपने ओरछा देश की लाज बचाने के लिये मुगलों से युद्ध किया तथा अपनी मर्यादा के लिये अपनी तथा अपने लाडले सुपुत्र छत्रसाल के प्राणो की आहुति दी। यह था देश प्रेम तथा मर्यादा के प्रति प्रेम, जिस नारी ने इन दो कारणो के लिये अपने वश को खतम कर दिया था।

वास्तव मे ऐसे उदाहरणो से हमारा भारतीय इतिहास भरा पडा है। ऐसी-ऐसी वीरागनाओ की शूरता तथा वीरता का परिचय पाकर कौन नही आदर से मस्तक झुका लेगा।

आधुनिक भारतीय नारी विभिन्न क्षेत्रो मे तत्परता से कार्य कर रही है। आज की नारी इर्जीनियर लेडी डाक्टर प्राफेसर, टाईपिस्ट तथा राजदूत आदि बन रही हैं। आधुनिक इस विकासवादी युग मे तो नारिया अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। श्रीमती भडारनायक ने तो लका की प्रथम प्रधान मन्त्री बनकर विश्व मे अपना रिकार्ड क़ायम कर दिया।

वर्तमान समय मे भारत की प्रथम मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने भी विश्व मे भारत की नारियो को चमका दिया है। हमारी प्रधान मन्त्री

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मानव-जीवन दु:खमय क्यों?

(पृष्ठ ३ का शेष)

अगर हम दु:खों से छूटना चाहते हैं, अगर हम अपने जीवन को सुखी बनाना चाहते हैं। तो उसका एक ही रास्ता है। उस प्यारे प्रभु को जाने।

'न अन्य पन्था विद्यते अनाथन

और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। जब हम उसको सर्व-व्यापक मान कर अपना जीवन व्यतीत करेंगे। उसे पहचानेंगे तो हम दु:ख मे भी मुस्करा उठेंगे। कष्टों को हसते-हसते सह लेंगे। हमारा जीवन शुद्ध पवित्र होगा।

प्यारे पाठको, आज पहली जनवरी से नव वर्ष का आरम्भ हुआ है। व्रत ले लो इस नव वर्ष १९६९ मे आज से ही हम उस प्यारे पिता की भक्ति के लिए अवश्य समय निकालेंगे यह नया वर्ष जीवन के लिए भी नव सन्देश लेकर आए। अध्यात्मिक जीवन बनाने का आज से व्रत ले लो फिर वर्ष के बाद देखना जीवन के कितने दु:ख दूर हो गए हैं। कितनी शक्ति हमारे अन्दर समोत हो गई, वास्तव मे आप देखोगे कि जीवन का पासा ही पलटा हुआ होगा। आज से वर्ष भर का कार्यक्रम बना लो। नव वर्ष मे हमारे जीवन मे कुछ तो नया हो कुछ तो नवीनता आए।

यह नव वर्ष सभी पाठक बन्धुओ के लिए मगलमय हो, शुभनीय हो, यह सारा वर्ष और इसके बाद आने वाले सभी वर्ष आप सबके लिए, खुशियो और मुस्कराहटो और सुखो से भरपुर हों, यही मेरी मगल कामना है। आओ बन्धुओ जीवन को सुखमय बनाने के लिए वेद के आदेश का पालन करें। —धर्मदेव 'आर्य'

नव वर्ष का मुबारिकवाद

आर्यजगत् के सभी पाठकों तथा परिवार को सभा प्रधान श्री प्रि. भीमसेन जी बहल का मुबारिकवाद

श्री आदरणीय सभा प्रधान जी ने आर्यजगत् के सारे परिवार को नव वर्ष १९६९ के शुभ आगमन पर बधाई भेजी है, सभी के लिए शुभ कामनाए प्रकट की हैं। भगवान करे यह नव वर्ष सभी के लिए शुभनीय रहे। यह प्रधान जी की हार्दिक भावना है। सभी के लिए नव वर्ष मगलमय हो, शुभ हो। सभी को प्रधान जी की ओर से मुबारिकवाद।

साप्ताहिक सत्संग

आर्यसमाज विक्रमपुरा का साप्ताहिक सत्सग रविवार ५-१-६९ को प्रात: ८-३० पर आरम्भ होगा। सध्या, हवन, भजनो के पश्चात् श्रीमान् प० भीमसिंह जी पुरोहित का महत्व पूर्ण उपदेश होगा।

भारतीय नारी का महत्व

(पृष्ठ ५ का शेष)

इन्दिरा गाधी ने ससार को यह दिखा दिया कि नारिया क्या कुछ नही कर सकती? अर्थात वह घर की चार दीवारी मे बन्द होने वाली नही है। वास्तव मे जब हम अपनी प्रधान मंत्री की महानता पर दृष्टिपात करते हैं तब हमारी भारतीय नारियों का मस्तक गौरव के साथ ऊंचा हो उठता है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित को कौन नहीं जानता? ऊंचे-ऊंचे पदो पर रहते हुए भी इन्होंने सम्पूर्ण ससार की सुरक्षा परिषद की अध्यक्ष रह चुकी हैं। यह है भारतीय नारियो की बुद्धि तथा क्षमित का परिचय।

सक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि नारी समस्त सृष्टि की संचालिका है, जीवन की ज्योतिर्मय मशाल है जिस के आकाश में युग ज्ञान और विज्ञान की अंगड़ाई लेता है। नारी करुणा की मूर्ति है। प्रसाद जैसे कवियो ने नारी को सर्वजीवन शक्ति के रूप में अपनाया है। नारी एक ऐसी केन्द्र बिन्दु के रूप मे हमारी चेतना को दीप्त एवं जागृत करती है जिसके पावन आलोक मे जीवन-मरण के स्फुलिंग जलते और बुझते हैं। नारी के इसी रूप के प्रति जयशकर प्रसाद जी की श्रद्धा फूट पड़ी—

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल मे।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में॥

वास्तव मे यही है भारतीय नारी का सच्चा आदर्श।

श्री त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री के सुपुत्र दयानन्द जी एम. ए. का अचानक गुम हो जाने का दुखद समाचार

यह समाचार सभी को जानकर अति दु:ख होगा कि श्री प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री आर्य प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध महोपदेशक के सुपुत्र श्री दयानन्द जो एम० ए० एक मास से ला पता हैं। जिनका यह चित्र है,



आज तक उनका कही भी, तनिक भी पता नही चल सका, साधुआश्रम होशियारपुर से यह नौजवान २ नवम्बर से गुम है। क्या हुआ कहा गया, किस ओर गया, कुछ भी भेद नहीं चल रहा। शास्त्री जी रात दिन दौड धूप कर रहे हैं, सभी मित्र खोज मे लगे हुए है। सभा के सभी व्यक्ति इस दु:ख मे दुखी हैं। मेरा सभी आर्य बन्धुओं की सेवा मे निवेदन है कि जिस भी बन्धु को श्री दयानन्द एम० ए० के बारे मे कही से कोई भेद लगे तो तुरन्त सभा को सूचना कर दें हम सभी उनको खोजने के प्रयत्न मे लगे हैं। परमात्मा करे कि हमारा यह नौजवान कही सुख पूर्वक हो। आशा है सभी समाजो व संस्थाओं के अधिकारी हमारी इस कार्य मे सहायता करेंगे। सभी बन्धु अपने-अपने आस-पास के स्थानो पर खोज करने का प्रयत्न करें। यही सभी से निवेदन है।

—निवेदक—वेदीराम

मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, जालन्धर

एकता का प्रचार

(पं. तेज राम पुरोहित वैदिक मिशनरी दिल्ली)

[illegible] है। [illegible] नहीं। इस लिए हम कुछ नहीं कर सकते अपने ही देश में जो अवहार है। हिन्दुओं के अधिकार क्या लेता है! साहूकारों पर आये दिन आक्रमण होते हैं। गावों में सेठों का रहना कठिन है! बलवा की घटनाएं हिन्दुओं में अधिक हो रही हैं! जब हिन्दुओं पर हमला होता है। तो यह सिर नीचा कर लेते हैं! इनकी यह इच्छा होती है। कि दूसरा कोई आ कर बचाए। जब कोहाट डेरा इस्माईल खान में फसादात हुए। तो हिन्दुओं की जानों और माल का अधिक नुकसान हुआ। जब उन से पूछा गया तो वो कहने लगे, कि इस क्षेत्र में हम कमती में हैं! जब कानपुर बम्बई में झगड़े हुए। तो वहां भी हिन्दुओं के जान और माल का अधिक नुकसान हुआ, जब उनको कहा गया। यहां तो आप अधिक थे। उन्होंने उत्तर दिया। चाहे हम अधिक हों या कमती। हमारा ही सदा नुकसान होता है।

यदि विचार से देखा जाये तो हिन्दुओं में धन की कमी नहीं। करोड़पति सेठ इस देश में पाये जाते हैं। वीरता की भी कमी नहीं गोरखा, मरहटे, जाट, राजपूत, गुजर, सिख और जातियां पाई जाती हैं। विद्या की भी कमी नहीं हिन्दी संस्कृत के विद्वान उर्दू, फारसी के आलम अंग्रेजी के शेक्सपीयर विद्वान के माहिर यहां बहुत पाये जाते हैं। एक चीज जो कौमों को शक्तिशाली बनाती है। हिन्दु जाति इस से वंचित है वो है एकता की शक्ति और संगठन की बरकत।

इतिहास बतलाते हैं जब महम्मद गौरी ने भारत पर हमला किया तो पृथ्वीराज के पास सेना धन की कमी न थी महम्मद गौरी को पकड़ कर इस ख्याल से छोड़ दिया कि घर पर आये हुए का वध करना ठीक नहीं जब पृथ्वीराज और जयचंद की आपस में फूट पड़ी तो जयचन्द की सहायता से पृथ्वीराज पर महम्मद गौरी ने हमला किया उसको पकड़ कर गजनी ले जाकर आंखें निकलवा कर बहुत दुःख देकर मारा महमूद गजनवी ने जब विष्णु मत वाले मन्दिर पर हमला किया। तो शिव मत वाले लोगों ने उनको बचाने की कोशिश न की। इसी तरह जब शिव मत वाले मन्दिरों को लूटा तो विष्णु मत वालों ने उनको बचाने की कोशिश न की जब ब्राह्मणों पर हमला हुआ तो हरिजनों ने उनको बचाने की कोशिश न की। जब हरिजनों पर हमला हुआ तो ब्राह्मणों ने उनको अछूत समझ कर सहायता न की। इसी तरह क्या विष्णु मत वाले, क्या शिव मत वाले, क्या ब्राह्मण क्या हरिजन सब एक ही तलवार से मारे गए, लूटे गए। यह किसी को समझ न आई। कि सब इकट्ठे मिल कर महमूद गजनवी को शिकस्त देकर समाप्त कर दें। यदि किसी अंग्रेज पर आपत्ति आ जाए तो सब अंग्रेज सहायता के लिये तैयार हो जाते हैं। एक मिस ऐलिस अंग्रेज लड़की के उठाये जाने पर सारा बलावी राज हिल गया, अठारह घण्टे पठानों पर गोला बारी हुई और कई घण्टो के अन्दर लड़की को सही सलामत अंग्रेजों के हवाले किया गया। यदि भारत के किसी मुसलमान पर कोई कष्ट आ जाये तो मुसलिम देश सब सहायता के लिए तैयार हो जाते हैं। हजरत बिल के एक बाल के गुम हो जाने पर इस्लामी दुनिया में शोर मच गया। हिंदुओं में यह बात नहीं है। कि आपत्ति आने पर वो एक हो जाए और कौमी कष्ट को दूर करें।

मिलकर चलो, मिलकर बोलो, मिलकर विचार करो, पूर्वजों की तरह मिलकर सफलता प्राप्त करो। महाभारत के समय तक लोग वेद की इस शिक्षा पर अमल करते रहे थे! अब ब्राह्मण क्षत्री वैश्य हरिजन में भेद दिन प्रतिदिन बढ़ते चले जा रहे हैं। एक पार्टी काम शुरू करती हैं, कुछ समय तक यह भली प्रकार से चलता रहता है। फिर इसमें फूट पड़ जाती है। पार्टीयां बन जाती हैं। काम करने का शौक जो पहले पाया जाता था। वह चला जाता है। हिंदुओं में फुट का कारण यह है कि हर एक हिंदु यह चाहता है कि मैं बड़ा बनूं और बड़ा आदमी कहलाऊं। जब मनुष्य मात्र में स्वार्थ आ जाता है तो नेकी नसता नहीं रहती। बुराई झगड़ा शुरू हो जाता है। हिंदुओं को चाहिए कि वे अपने लाभ को जाति के लाभ पर कुर्बान कर दें। अगर मन की एक ऐसी वृत्तिया बन जाएं तो झगड़ा पैदा नहीं हो सकता। और न हो कौम कमजोर हो सकती है। हिन्दु डा० वाटन के त्याग को सामने रखकर शिक्षा प्राप्त करें।

गीता का उपदेश है। जो दूसरों की आत्मा को अपनी आत्मा समझता है। उसके सुख को अपना सुख समझता है। उसका उत्साह बढ़ाता है। और उसके दुःख को दूर करने का प्रयत्न करता है। वह सच्चा योगी कहलाता है यदि हिन्दुओं में ऐसी स्पिरिट पैदा हो जाए तो उनके मजबूत हो जाने में देर नहीं लगेगी। प्राचीन जमाने में गायत्री मन्त्र सबको जबानी याद था! वह इसका इरराज जाप करके अपनी बुद्धि को निर्मल बना कर शुभ करते थे। ऋषि वर ने सब आर्य हिन्दुओं को एक ईश्वर की उपासना करने का उपदेश दिया और कहा वेद को अपनी धर्म पुस्तक मानो। राष्ट्र भाषा हिन्दी से राज्य का सारा काम करो। ईश्वर स्तुती प्रार्थना उपासना के मन्त्र ब्राह्मण क्षत्री वैश्य हरिजन के विवाह पर एक जैसे पढ़े जाए। सब का धर्म कर्म रीति-रिवाज वेद के आधार पर हो। इससे विश्व में शान्ति और हिन्दुओं में संगठन शीघ्र आ सकता है।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने बतलाया जब हिन्दुओं पर हमला होता है तो वो सिर नीचा कर लेते हैं! यही कमजोरी है। जो जालिम को हमला करने का हौसला बढाती है। गुरु जी ने दिवान लगाकर एक ऐसी पार्टी बनाई जिसमें ऊंच नीच का ख्याल जाता रहा जो एक दूसरे को भाई-भाई समझने लगी उनके दिलों से मरने का डर जाता रहा। यह टोला गुरुवर ने हिन्दुओं की रक्षा के लिए बनाया था जो खालसा के नाम से प्रसिद्ध है।

जब राजा चित्र सेन ने हमला करके दुर्योधन को पकड़ लिया तो कौरव भागे भागे वन में युधिष्ठर महाराज के पास पहुंचे, और दुर्योधन को छुड़वाने के लिए सहायता मांगी। भीम अर्जुन ने कहा, वो हमें चिड़ाने के लिए आया था! अब स्वयं पकड़ा गया है। इसलिए वो सहायता का पात्र नहीं है। इसको सुनकर युधिष्ठर महाराज कहने लगे भाईयों में दुश्मनी हो जाया करती है! जब जालिम आ कर आक्रमण करे तो उनको आपस की दुश्मनी भुला कर दुश्मन का मुकाबला करना चाहिए। दोनों ने धर्म पुत्र के इस उपदेश पर अमल करके दुर्योधनको छुड़वाकर हस्तनापुर भिजवाया।

हलदी घाटी के घोर युद्ध में महाराणा प्रताप की जान खतरे में पड़ गई। राजपूती सरदार ने लपक कर महाराणा को निकाल कर बाहिर भगा दिया। ऐसा देखकर दो मुगल सवारों ने महाराणा का पीछा किया। हो सकता था कि महाराणा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ठ ७ का शेष)

[illegible] हो जाता उसके भाई शक्ति सिंह ने जो ग्यारह साल से भाई भाई के खिलाफ युद्ध कर रहा था। महाराणा प्रताप को खतरे में देख कर न रहा गया। सारी दुश्मनी भुला कर भाई की सहायता के लिये उनके दुश्मनों के पीछे भागा और उनका सफाया किया महाराणा के पास पहुच कर माफी मागी और उनके साथ मिल कर अकबर की फौजों के साथ युद्ध करने लगा।

शिवा जी जब अपने मुकाबले में दुश्मन की तरफ से किसी मरहटा सरदार को सामने देखता तो झट नम बन कर उसको अपने साथ मिला लेता।

आज हिन्दू अपने आप को ब्राह्मण, चमार हरिजन राजपूत आदि की सूरत मे अलग-अलग दिखलाते हैं। इस लिये जालिम के मुकाबले में उसके पांव उखड़ जाते हैं। और वह मार खा कर भाग जाता है। मगर गैर अपने पीछे करोड़ों की सख्या देख कर मुकाबला मे डट जाता है। और पीछे हटने का नाम नहीं लेता और वह काम याब हो जाता है। जब तक हिन्दू अपने आप को एक न समझेंगे, बलवान कौम नहीं बन सकेंगे। आजादी से पहले हिन्दू एक जगह इकट्ठा करके एकता का प्रचार करते थे। अगर अब यह भावना पैदा हो जाये और सब इकट्ठे हो कर सगठन का प्रचार करना शुरू कर दें तो देश और धर्म को कोई खतरा पैदा नहीं हो सकता।

एकता

देव असुर सग्राम आदि से जारी हैं। राक्षसी भावों को दूर करने के लिये अब बड़े पुरुष मिल कर मुकाबला करना शुरू कर देंगे तो इनके सगठन के आगे राक्षस नहीं ठहर सकेंगे और [illegible]

खतरा—

मरदुम शुमारी मे हिन्दुओं की सख्या घट रही है। खतरा है कि हिन्दू कमती में होकर राज्य से हाथ न धो बैठें। दूसरे लोगों मे फौजी शक्ति बढ़ रही है डर है कि कहीं हिन्दू कमजोर होकर मिट न जाए। ईसाई और दूसरे मजहब वाले करोड़ो रुपया खर्च करके हिन्दुओं को ईसाई आदि बना कर अपनी शक्ति बढ़ा रहे हैं। हिन्दू बाबू पश्चिमी सभ्यता का शिकार बन कर नास्तिक बन रहे हैं और धर्म के प्रचार में भाग नहीं ले रहे। विदेश में हिन्दुओं पर जुल्म ढाये जा रहे हैं और हिन्दुओं में नित नये फिरके बढ़ा कर जाति को कमजोर [illegible] इन सब समस्याओं [illegible] हिन्दू संगठन [illegible] के लिये [illegible] का मजबूत [illegible] इसकी आमदनी से हिन्दुओं [illegible] उन्नति, [illegible] और संगठन का [illegible] जाये। आगामी चुनाव में हिन्दू ऐसे उम्मीदवार को कामयाब बनावें जो देश की तरक्की के साथ-साथ हिन्दू धर्म के प्रचार सुधार और संगठन में दिलचस्पी ले। गौ रक्षा को अपना परम धर्म समझें और राष्ट्रभाषा हिन्दी को सारे देश में राज्यभाषा लागू करने में पूरा पूरा प्रयत्न करें। देश भर में यह सभाएं और शाखायें मिल कर केन्द्र की सभा को मजबूत बना कर उसकी आज्ञाओं का पालन करें और शुद्धी के काम को अधिक तेज बना कर अपने बिछड़े हुए भाईयों को गले से मिला कर अपने आपको शक्तिशाली बनावें विदेशों के हिन्दुओं का संगठित होकर विदेश में रहने वाले हिन्दुओं के दुखों को दूर करें इसी में [illegible] है और देश का [illegible] है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, [illegible] में मुद्रित तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर पंजाब

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २०, अंक २) २९ पौष २०२५ रविवार दयानन्दाब्द १४५—१२ जनवरी १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु

हे प्रभु ! यह मेरा मन शिव सकल्प वाला हो, इसमें सदा अच्छे सकल्प ही आएं, शुभ विचार ही आएं, हम सदा मन से शुभ ही सोचें, विचारें।

हे प्रभु ! बुरे सकल्प कभी भी मेरे मन में न उठें, परम पिता तू सर्वव्यापक है, कोई भी स्थान आपसे खाली नहीं है। आप ससार के कण-कण में रम रहे हैं। इसी प्रकार हमारे शरीर में भी आप ओत-प्रोत हैं। हमारे मन में उठने वाले प्रत्येक विचार को आप पहले ही जान लेते हैं।

हे पिता ! जब हमारे मन में कभी बुरे विचार उठें, गन्दी भावनाएं पैदा हों, उस समय अपनी कृपा से हमारे मन को शिव सकल्प वाला ही बनाएं, शुद्ध भावनाओं को ही उपजाएं, हमारे मन को इतना शक्तिशाली बना दो यह मन अपने अन्दर उठने वाले अशिव विचारों का प्रतिकार करने में समर्थ हो। पाप के मार्ग से हटा हमें पुण्य के मार्ग पर ले जाने वाला हो। पुन:-पुन: यही प्रार्थना है यही प्रार्थना है यह हमारा मन सदा-सदा शिव-शिव सकल्पों वाला ही हो।

वेदामृत

उत्पादक और पालक प्रभु

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥

ऋ० ५।५१।१२

पदार्थ—(वायुम्) अनन्त बलवान् परमेश्वर का (स्वस्तये) कल्याण के लिए (उप ब्रवामहै) हम विशेष रूप से कथन करें। (सोमम्) सकल जगत् के उत्पादक और सत्कर्मों में प्रेरक प्रभु का (स्वस्ति) आनन्द के लिए कथन करें (यः) जो (भुवनस्य पतिः) जगत् का पालक है (बृहस्पतिम्) बड़े-बड़े सूर्यादि लोकों का वा वेदवाणी का रक्षक (सर्वगणम्) सब की गणना करने वाले जगदीश्वर का (स्वस्तये) कल्याण की प्राप्ति के लिए कथन करें (आदित्यास:) अविनाशी परमेश्वर के भक्त (नः स्वस्तये) हमारे आनन्द के लिए (भवन्तु) सदा वर्तमान रहें।

भावार्थ—हे अनन्त बलवान् परमैश्वर्ययुक्त, सत्कर्मों में प्रेरक, ब्रह्माण्डों के और वेद-वाणी के रक्षक, सब की गिनती करने वाले सर्वशक्तिमान् जगत्पिता परमात्मन् ! आपको हम जिज्ञासु लोग, बारम्बार स्तुति और प्रार्थना करते हैं, कृपा करके हमारा इस लोक और परलोक में सदा कल्याण करें। भगवान् ! आपके भक्त जो वेदविद्या के और सब का कल्याण चाहने वाले शान्तात्मा महात्मा हैं, वे भी हमें ब्रह्मविद्या का उपदेश देकर, हमारा कल्याण करने वाले हों।

ऋषि दर्शन

ईश्वर स्तुति

प्रथम ईश्वर, कि जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्द आदि लक्षण युक्त है जिसके गुण कर्म स्वभाव पवित्र हैं। जो सर्वज्ञ निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा अनन्त सब शक्तिमान, दयालु न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता-धर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार, सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षण युक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूं।

चारों वेदों, (विद्या धर्म युक्त ईश्वर प्रणीत संहिता मन्त्रभाग, को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूं वे स्वयं प्रमाणरूप हैं कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं जैसे सूर्य व प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं। वैसे चारों वेद हैं और चारों वेदों के ब्राह्मण, छः अंग, छः उपांग, चार उपवेद और ११२७ (ग्यारह सौ सत्ताईस) वेदों की शाखा जो कि वेदों के व्याख्यान रूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाए हैं ग्रन्थ। उनको परतः प्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेद विरुद्ध वचन हैं उनका अप्रमाण करता हूं।

(महर्षि दयानन्द)

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी एच० डी० (सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

मानव और मानवता

—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

मानव के जीवन की आधार-शिला है तप और त्याग। हमारे पूर्वजो ने विलासिता—खान-पान सुखोपभोग को जीवन की आधार शिला नही बनाया, तप और त्याग को बनाया। मानव-जीवन को उन्होने चार भागो मे विभक्त कर दिया। उनका नाम रखा आश्रम। सबसे पहले ब्रह्मचर्य आश्रम—यह है कि अपने शरीर को पुष्ट करो, मन और बुद्धि को ठीक करो। अपना निर्माण करो, निरन्तर तप करते जाओ। रजोगुण और तमोगुण को दूर करके सत्वगुण को अपनाओ। तप और त्याग के बिना यह सब कुछ होता नही। तब आया गृहस्थ आश्रम। वह क्या है? यह कि पति-पत्नि के लिए त्याग करे, पत्नी पति के लिये त्याग करे। सन्तान हो जाए, तो दोनो उस सन्तान के लिए त्याग करे। उसके सुख दुःख की चिन्ता करे। अपने परिवार के लिये तप-त्याग करे। इसके पश्चात है वानप्रस्थ आश्रम—इसलिये जीवन मे कुछ न्यूनताए रह गई हो, कुछ दुर्बलताए आ गई हों, तो तप और त्याग से उन्हे दूर कर दो। और अन्त मे है सन्यास आश्रम—इसलिए कि अब तक तुम तप-त्याग करते थे, अब उसे चरम सीमा तक पहुचा दो। सन्यास आश्रम घोर तप, घोर त्याग का आश्रम है।

आप कहेगे कि गृहस्थ आश्रम भी तप-त्याग का आश्रम है, सन्यास आश्रम भी तप-त्याग का आश्रम है, फिर दोनो मे अन्तर क्या है? अतर यह है कि गृहस्थ आश्रम मे मनुष्य तप त्याग करता है अपने परिवार के लिए, अपने सम्बन्धियो के लिये, अपनी जाति, अपने देश के लिये। सन्यास आश्रम मे वह तप-त्याग करता है सम्पूर्ण ससार के लिये, सारा ससार उसका हो जाता है। वसुधैव कुटुम्बकम्—यह सारी पृथ्वी उसका गृह बन जाती है, इस पर रहने वाले सभी मनुष्य उसका परिवार बन जाते है।

हमारा इतिहास बताता है कि त्याग से ही मनुष्य ऊपर उठता है, सग्रह से, लोभ से नही। सग्रह बुरा नही, सग्रह करो अवश्य कमाओ, खाओ, सग्रह करो—परन्तु इसलिए सग्रह करो कि स्वय उपभोग कर सको और दूसरो की सहायता कर सको। जो केवल अपने लिये जोडता है, वह जोड़े धन से, अन्न से ही जुड जाता है। उपनिषद ने स्पष्ट कहा है—

अन्न बहु कुर्वीत तद्व्रतम्
अन्नं न निन्द्यात् तद्व्रतम् ।।

बहुत अन्न उत्पन्न करो, जोडो अन्न को। उसकी निन्दा न करो। यह व्रत ले लो, यह निर्णय कर लो। परन्तु फिर कहा—जोडो किस लिए। इसलिये कि स्वय खाओ और दूसरो को खिलाओ। वेद भगवान् ने कहा—

त्यक्तेन भुञ्जीथाः ।

त्याग से भोग कर। भोगो अवश्य परन्तु त्याग से भोगो।

आप कहेगे—यह क्या हुआ? भोगो भी, त्यागो भी—दोनो बातें साथ-साथ कैसे हो सकती हैं। मैं बताता हूं—त्याग से भोगने का अर्थ यह है कि जो कमाया है तुमने, उस का उपभोग अकेले मत करो। स्वय खाओ, दूसरो को खिलाओ। अपने आराम को चिन्ता करो, दूसरो के आराम की भी चिन्ता करो। वेद ने स्पष्ट कहा है कि धन कमाओ अवश्य परन्तु उसके पाच भाग करो। पहला—धर्म के लिये, अपने कर्त्तव्य की पूर्ति के लिये। दूसरा यश के लिए—ऐसे कार्य करनेकेलिए जिनसे तुम्हारी प्रतिष्ठा होकुआ, बावली, धर्मशाला अस्पताल, स्कूल, कालेज, मन्दिर बनवाओ। तीसरा—इसलिए कि अपने सम्बन्धियो की सहायता कर सको। चौथा अपने लिए और पाचवा इसलिए क उसके द्वारा पुन: धन अर्जित कर सको। इस प्रकार जो धन का विभाजन करता है, उसका धनोपार्जन सफल हो जाता है। इस मे अपने लिए एक भाग, शेष सब दूसरो के लिए है। इस बात को भूल कर यदि कोई कहे कि मैंने कमाया, मैंने जोड़ा अत: मैं अपने लिए ही इसका उपउपभोग करूगा—तो ऐसे व्यक्ति के विषय में हमारे शास्त्र कहते हैं कि वह पाप करता है, पाप खाता है, पाप ओढता है, उसको सुख नहीं मिलता क्योंकि सुख केवल त्याग मे है, जोडने मे नही।

अतप्ततनु: न तदमृतमश्नुते ।

जिसने तप नही किया वह उस प्यारे प्रभु का दर्शन कभी नही कर सकता। तप और त्याग की भावना जब तक हमारे देश मे, हमारी जाति मे रही, तब तक वह ऊपर उठती गई। जब से तप-त्याग समाप्त हुए तब से पतन आरम्भ हुआ। मानवता रही नही, मानवता का यह आदर्श नही रहा कि—

आत्मन: प्रतिकूलानि
परेषां न समाचरेत् ।

जो बात तुम्हे अपने लिए अच्छी नही लगती, उसे दूसरो के लिए मत करो। यदि मैं चाहता हू कि कोई मुझ से घृणा न करे, तो मुझे भी किसी से घृणा नही करनी चाहिए। यदि मैं चाहता हू कि कोई मेरे धन का अपहरण न करे तो मुझे भी किसी धन का अपहरण नही करना चाहिए। यदि मैं चाहता हूं कि कोई मेरी बहिन, बेटी, बहू को बुरी दृष्टि से न देखे, तो मुझे भी किसी की बहिन, बेटी, बहू को बुरी दृष्टि से नही देखना चाहिए। यदि मैं चाहता हूं कि कोई मेरी भावनाओ को न ठेस पहूंचाए, तो मुझे भी किसी की भावनाओ को ठेस न पहुचानी चाहिए।

आत्मवत् सर्वभुतेषु य:
पश्यति स पश्यति ।

जो सब प्राणियों को अपने ही समान देखता है, वही देखता है, दूसरा आखें होने पर भी वस्तुत: देखता नही। अब बताइए, सब लोग इसी प्रकार देखने लगे तो कौन किस का शत्रु रह जाए, कौन किसके लिए पराया रह जाए। आज रूस वाले परमाणु बम बनाते हैं, अमेरिका वाले भी बनाते हैं। क्यो? दूसरो के भय से, दूसरो का विनाश करने के लिए। आज मानव—मानव का शत्रु हो गया है। जिन लोगो के पास मानव बनाने की योजना है, उनके पास शक्ति नही। जिन के पास शक्ति है, उनके पास योजना नहीं।

मैं इस योजना को आर्य-सस्कृति नही कहता, हिन्दू सस्कृति या भारतीय संस्कृति भी नही कहता, वैदिक-सस्कृति भी नही कहता—यह मानव-संस्कृति है, यह न्याय के लिए है। अब इस योजना को सुनिए। ऋग्वेद के दसवें मण्डल मे एक मन्त्र आता है—

तन्तुं तन्वन् रसजो भानुमन्विहि ज्योतिष्मत: पथो रक्ष धिया कृतान् ।

इस ससार का, अपने कार्य-व्यापार का ताना-बाना बुनता हुआ भी तू सूर्य के पीछे चल। परन्तु सूर्य के पीछे चलने का तात्पर्य क्या है? सूर्य तो नौ दस करोड मील की दूरी पर है, उसके पीछे कोई चलेगा कैसे? प्राचीन काल मे ब्रह्मचारी जब गुरु के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए आता था, तो गुरु उसे सूर्य के सामने खड़ा करके कहता था।

(क्रमश:)

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, १२ जनवरी, १९६९ [अंक २

मकर संक्राति का सन्देश

वैसे तो भगवान के इस विविध विश्व में ऐसी कौन सी वस्तु है जिससे मानव को किसी न किसी प्रकार का जीवन सन्देश नहीं मिलता ? वेद मे को काव्य कहा गया है। इसे निरन्तर देखते रहने का उपदेश मिलता है। उसी महान कवि के महाकाव्य मे पर्वों की गणना भी होती है। प्रत्येक पर्व स्वय एक खुली पुस्तक है जिसके पाठ से सारा समाज बहुत बडा सन्देश प्राप्त कर सकता है। पुस्तक और अन्य पदार्थों के समान पर्व भी मौन भाषा मे बहुत कुछ कह जाते हैं। सुनने वाले उससे लाभ उठाते तथा बहरे कानो वाले कोरे रह जाते हैं। पर्व किसी भी जाति और समाज के विराट शरीर मे समय समय पर पैदा होने वाली न्यूनता को पूरा करने का कार्य किया करते हैं। सब मे कमी होती है। नितान्तपूर्ण तो केवल मात्र भगवान है। ये पर्व आकर समाज को एक नया जीवन दे जाते हैं।

आर्य जाति के पर्वों मे विशेषता है। एक २ पर्व चाहे उसका सम्बन्ध किसी ऋतु के साथ हो या किसी महापुरुष के वह अपना विशेष रूप लेकर आता है और अपनी विशेष छाप लगाता है। इन पर्वों का विशेष रूप है। जो समाज अपने पर्वों को पूरे उत्साह से समारोह से मनाता है—उसे बहुत कुछ प्राप्त होता रहता है। इसके विपरीत जिस जाति मे इनके प्रति उदासीनता की भावना भरी रहती है—उसको कुछ नहीं मिल सकता। न उसकी न्यूनता दूर होती है मकर सक्राति का पर्व बहुत ही प्राचीन काल से चला आता है। दो मास कड़ाके का जाड़ा पडता है। हेमन्त का मौसम होता है। पानी तक जम जाता है। चारो ओर शीत की तीखी लहर चलती है। शरीर मे गति करने करने वाला रक्त भी जमने लगता है। उष्णता कम होती है। सब ओर ठढक का राज्य होने लगता है। सब कुछ ठढा ही ठढा हो जाता है। प्रकृति की दशा में सारे समाज के जीवन-कार्यों के वातावरण मे भी इसका प्रभाव पडता है। जब विचारो मे ठडापन आ जाए। उत्साह व उल्लास की गर्मी कम होती जाए तो जीवन पथ पर बढने वाला पग रुक जाता है। यात्री या तो बैठ जाता है या यात्रागति अतीव मन्द हो जाती है। दोनो अवस्थाओ से ही हानि है। तीसरी बात इन जाड़े के दिनो मे यह होती है कि अन्न खेतो मे बो दिया जाता है। इसके लिये वर्षा की बडी आवश्यकता होती है अन्न विश्व का जीवन प्राण है तथा जल अन्न के लिये जीवन है। वर्षा न हो तो अन्न कहां से होगा ? पर्जन्य को बादल को जीवन देने वाला कहा गया है। और भी कई बातें हैं जिनमे मकर सक्राति का पर्व बहुत बड़ा सन्देश ला कर देता है।

आर्यजाति यज्ञ के महत्व को परम्परा से जानती आई है। यज्ञ से वर्षा होती है—यह तथ्य आज सब मानते हैं। साथ ही आर्य सस्कृति मे आलस्य, प्रमाद को सर्वथा स्थान नहीं दियागया जीवन आलस्य का नाम नहीं, उत्साह का नाम है। इस पर्व पर हेमन्त मौसम के दो महीनो मे पौष का मास समाप्त हो जाता है। माघ के प्रारम्भ मे यह मकर संक्रान्ति का त्योहार आता है। सारी जाति अपने-अपने नगरो मे ग्रामो मे इस पर्व पर बडे-बडे यज्ञ करती थी। वर्षा के जल को चाहती थी। अन्न के भण्डार को भरने के लिए यज्ञ का प्रबन्ध होता था। दूसरी बात यह थी कि ठण्ड में आर्य जाति प्रकृति के चैलेंज को भी खुले रूप मे स्वीकार करके उसका प्रतिकार करने मे तैयार रहती थी। आर्य जाति अपने जीवन को अग्निमय मानती चली आई है। प्रकृति की ठण्ड का सामना करने के लिए सदा तैयार रहती है। इस दिन से सूर्य अपनी उत्तरायण की गति मे प्रविष्ट होता है। उसकी किरणें तेज होती जाती हैं। दिन भी बढते जाते हैं।

मकर सक्रान्ति का पवित्र पर्व मनाते हुए हमने अपने जीवन मे एक विशेष पाठ सीखना है। वह यह कि अपने विचारों मे ठण्डापन मत आने दो सारा कार्य विचारो का ही है। जिस व्यक्ति के या समाज के विचार ही ठण्डे हो गये—उन मे उष्णता ही समाप्त हो गई। अग्नि जाती रही तो समाज या चाहे कितना बड़ा शरीर क्यो न हो किन्तु उष्णता व ताप के बिना वह तो निराश्रय हो जायेगा मृतक शरीर वही होता है जिस मे ताप समाप्त हो जाये—आत्मा चली जाये। बुझा अगारा क्या काम देगा ? आर्योंने सदा उत्साह पथ का सहारा लिया है। विचारो को कभी ठण्डा नही होने दिया। आर्य समाज को इस समय चारो ओर से कई प्रकार की चुनौतिया मिल रही है। अनाचार बढता जाता है, भौतिकता का बोल बाला है, नगापन का प्रवाह बडी तेजी से चल रहा है। धर्म का प्यार कम होता है। स्वार्थ भावना भरपूर आक्रमण कर रही है। जीवन की प्रत्येक मर्यादा टूटती जाती है। धर्म को मिटाने वाली प्रवृत्तिया खिलखिला कर हस रही हैं। चारो ओर धर्म के विरोधियोंने अपना हल्ला बोल रखा है। पुरातन वैदिक सस्कृति को खाने के लिए प्रयत्न जारी हैं। बहुत कुछ किया जा रहा है।

इस अवस्था मे मकर सक्रान्ति का पर्व आर्य जाति के लिए एक जीवन का सन्देश लेकर आया है कि इस शीत लहर मे या कडाके के हिमपात मे अपने जीवन को ठण्डा न होने देना। विचारो मे उदासीनता मत छोडना। अग्नि रूप भगवान हमारा नायक है। यह नभ की अग्नि मण्डल का प्रतीक सूर्य देवता, यह पृथिवी का अग्निदेव भौतिकरूप से हमारे पथ का प्रदर्शन करने वाले हैं। हमारे जीवन का उत्साह भरा विचार भी अब उत्तरायण दिशा मे चल पड़ा है। सब का प्रतिकार करने को सदा तैयार है। किसी प्रकार की भी चिन्ता नही। —त्रिलोक चन्द

नम्र निवेदन

मेरे पुत्र प्रिय दयानन्द आर्य एम ए. के साधु आश्रम होश्यारपुर से २ नवम्बर से लापता होने पर बहुत से मान्य आर्य समाजो, स्कूल कालेजो के सज्जनो तथा व्यक्तिगत भी भाई बहिनो के सहानुभूति से भरे पत्र मुझे सभा के पते पर तथा घर कादिया के पते पर आते रहते हैं यह सब की कृपा है। मैं सब का अतीव आभारी हू। अभी तक प्रिय दयानन्द का सुराग नही लग सका। अपनी सभा के मान्य प्रधान श्री प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल जी ने प्रभाव पूर्ण पत्र ऊपर अधिकारियो को लिखे हैं। अपने-अपने स्थान पर प्रिंसिपल भगवान दास जी अम्बाला आर्य वीरदल की ओर से प्रिंसिपल ज्ञान चन्द जी हिसार-सारे ही कृपा कर रहे है। पता लगने पर धन्यवाद करूगा। पत्रो उत्तर न मिले तो रोष न करे—

आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर

—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

सन्तवचन-संग्रह

★ मनुष्य अपने लक्ष्य को दृष्टि मे रखकर सीधा तीर की भाति चला चले, न दाए देखे न बाए, यदि इधर-उधर दृष्टि जाती है तो समझो समझो कि निष्ठा स्थिर नहीं है।

★ यदि तुम आस्तिक हो तो सदा प्रसन्न, निर्भय और निश्चिन्त रहे।

★ यदि तुम सुखी रहना चाहते हो तो अपने चारो ओर ईश्वर की कृपा को देखो। भविष्य मे सुनहरे स्वप्न देखने का स्वभाव बनाओ, सदैव के लिए मन में यह बात बिठा लो कि तुम्हारा कल अत्यन्त प्रकाश मय, मधुर और आनन्दमय होगा।

★ हसो, प्रसन्न रहो, तो ससार तुम्हारे साथ हसेगा। रोओगे, दुःखी रहोगे, तो रोने मे तुम्हारा साथ कोई न देगा।

★ सत्सग तथा सत शास्त्र के सुनने से ही जब चित्त को बहुत शाति मिलती है तो उनके कथनानुसार आचरण से कितना सुख और शाति मिलेगी, इसका अनुमान मनुष्य स्वय करे।

★ सशय साधक का सबसे बडा शत्रु है। सशय को जड से निर्मूल कर देना चाहिये। मन मे दुविधा बनी रहने से अशाति बढती है।

★ जब उपासक मे कोई सासारिक कामना, इच्छा नही रहती, तब उसे वास्तविक आनन्द का अनुभव होता है।

★ जबतुम दिलके मकर छोड़कर सरल, सीधे हो जाओगे, तब तुम्हारे भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनो काल सुखदाई हो जाएगे।

विद्या का नाश नहीं होता

(सुरेश चन्द्र विद्यालंकार)

(गतांक से आगे)

विद्वान् व्यक्ति की निशानी है कि संसार की कोई शक्ति उसे भयभीत नही कर सकती। विद्वान आत्मा की शक्ति को पूर्ण तरह समझ लेता है, उस से उत्तमोत्तम श्रेष्ठ गुणो का विकास हो जाता है, उस मे आत्मिक शक्ति का सचार होता है, उस मे आत्मिक शक्ति का सचार होता है ऐसी दशा मे कौन उसे दबा सकता है। परमेश्वर सर्वस्व है। परमेश्वर सर्वज्ञ है। ज्ञान या विद्या मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाती है और उस समय हमे इस ससार मे कभी अकेलापन अनुभव नही होता क्योकि ज्ञान द्वारा ईश्वर की निकटता का अनुभव हमे होता रहता है और हमे ऐसा विश्वास हो जाता है कि हम मे ऐसी दिव्यता है जिसे कभी समाप्त नही किया जा सकता। ज्ञान द्वारा जब हम प्रभु से अपना सम्बन्ध बना लेगे तब हम निडर हो जायेगे, हटेगे नही। सच तो यह है कि ईश्वर के प्रकाश मे कदम रखते ही मनुष्य की सब दुर्बलताये, सब पाप, सूर्य के सामने के अन्धकार की तरह नष्ट हो जाते है। बस एक बार ज्ञान के आधार सर्वज्ञ ईश्वर मे विद्या द्वारा विश्वास रख उसके पास जाओ वह अपने अनुपम सौदर्य से तुम्हे सुन्दर बना देगा, अपनी उज्ज्वलता से तुम्हे उज्ज्वल बना देगा। अपनी निडरता से तुम्हे निडर बना देगा। ज्ञान से मनुष्य प्रभु के निकट आता है। यही ज्ञान की विशेषता है।

एक बार एक जहाज मे नव-दम्पती यात्रा कर रहे थे। अभी अभी उनका विवाह हुआ था। पति सेना मे मेजर था। तूफान आया। समुद्र की लहरो ने जहाज को पटकना शुरू किया। कप्तान ने खतरे की पहली सीटी बजाई, दूसरी बजाई, परन्तु पत्नी द्वारा ध्यान आकृष्ट करने पर भी मेजर ने बचन का कोई उपाय नही किया। तीसरी सीटी बजने पर पत्नी ने कहा कि तुम ने बचने का कोई उपाय नही किया। अब क्या करोगे। मेजर ने अपनी तलवार निकाल ली और उसकी नोक पत्नी की छाती मे चुभाने के लिए बढाई। पत्नी डरी नही, मुस्कराती रही। उन्होने डपट कर मार डालने की धमकी दी परन्तु वह घबराने के स्थान पर मुस्कराती रही। मेजर ने तलवार हटाई और उस से पूछा कि तुम ने अपने बचने की कोई चिन्ता नही की, तुम डरी नही, भयभीत नही हुई। क्या तुम्हे डर नही लगा कि मैं तुम्हे मार डालू गा? पत्नी ने मुस्कराते हुए कहा "मैं तुम्हारी प्रेमिका हू। मुझे विश्वास है कि तुम मेरा कुछ बिगाडोगे नही। तुम्हारी यह तलवार मुझे कोई क्षति नही पहुचा सकती तुम तो मेरे रक्षक हो। तब मुझे डर क्या?" मेजर ने कहा "प्रियतमे! जैसे तुम मेरी शरण मे रह कर मेरे तलवार दिखाने पर भी भयभीत नही हो रही हो, उस से मस नही हो रही हो उसी तरह हम सब भी अपने प्रियतम प्रभु की इन तलवार की नोको से क्यो डरे? यह तूफान हमारा कुछ नही बिगाड सकते जब कि हमारा रक्षक प्रियतम हमारे ऊपर अपने करुणामय हाथो को रखे हुए है।" यह है ज्ञान का विद्या का उपदेश। डूबने का गम तो प्रभु के विरोधी को होगा, उसके भक्त को नही। ठीक ही कहा है—

डूबने का गम मुझे बिल्कुल नही।
जब मै तेरा, दरिया तेरा, किश्ती तेरी, साहिल तेरा॥

विद्वान व्यक्ति दूसरो के धन या दूसरो की वस्तु की कामना भी नही करता उसे तो उसका दाता सदा देता दिखाई देता है, कबीर ने कहा है:—

हरिजन गाठ न बाधई,
उदर समाता लेई।
आगे पीछे हरि खडे,
जब मांग ही तब देई।

जब विद्वान का रक्षक प्रभु है, दाता प्रभु है तो उसे भय कहा? उसे डर कहा?

इस मन्त्र मे विद्या के एक और गुण का उल्लेख किया गया है कि विद्या का कोई दुःखदायी शत्रु नाश नही कर सकता है। विद्या के बल से मनुष्य मे उत्तमोत्तम श्रेष्ठ गुणो का विकास होता है। विद्या के कारण महा विद्वानो ज्ञानियो की सगती मे बैठने की योग्यता आती है। विद्वान् और जिज्ञासु दोनो ही उसका आदर करते हैं। इसीलिए वेद कहता है— 'नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।' अर्थात् कोई शत्रु इसका नाश नही कर सकता इतना ही नही आगे कहा है—'देवाश्च याभिर्यजते ददाति च' इस विद्या के द्वारा मनुष्य बड़े-बडो से मेल करता है। किसी सस्कृत के कवि ने लिखा है:—

स योजयति विद्यैव नीचगापि नर सारत्। समुद्रमिव दुर्धर्ष नृप भाग्यमत. परम्।

अर्थात् नीचे जाने वाली नदी समुद्र ऐसे महाशय जलाशय से जा मिलती है, इसी प्रकार विद्या चाहे वह नीच पुरुष में क्यों न हो, उस विद्वान को राजा से मिला देती है।

अन्तिम विशेषता का उल्लेख करते हुए मन्त्र कहता है 'ज्योगित्ताभि सचते गोपति. सह' विद्या का दान करने वाला ज्ञानपति निरन्तर विद्या से सम्बद्ध रहता है। अर्थात विद्या दान करने से विद्या बढती है, घटती नही किसी सस्कृत के कवि ने विद्या के विषय मे कहा है:—

ज्ञातिभिर्वण्ट्यते नैव चोरेणापि न नीयते। दाने नैव क्षय याति विद्यारत्न महाधनम्।

विद्या रत्न रूपी महाधन को सम्बन्धी लोग बाट नहीं सकते चोर इसे नही ले जा सकता, दान से यह नष्ट नही होता। दूसरे ने कहा है:—

न चौरहार्यं न राजहार्यं, न भ्रातृभाज्य न च भारकारी। व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधन सर्वधन प्रधानम्।

अर्थात विद्या को चोर नही चुरा सकता, राजा नही छीन सकता, भाई नही बाट सकते, यह भार रहित है। व्यय करने पर नित्य बढती है। अत. विद्या धन सब धनो से श्रेष्ठ है।

इसीलिए मनु महाराज ने धर्म के दश लक्षणो मे विद्या को भी धर्म का एक चिन्ह माना है। आइए, हम भी परा, अपरा भौतिक, आध्यात्मिक, ज्ञान, विधान या विद्या और अविद्या (कर्म) का समन्वय कर अपना जीवन सार्थक करे।

खून दिया है

युगो-युगो से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।
खून दिया है मगर नही दी कभी देश की माटी है॥
इस धरती पर जन्म लिया हैं यही पुनीता-माता है।
एक प्राण और देह सरीखा, इससे अपना नाता है॥
यह धरती है पार्वती-मा, यही राष्ट्र शिवशकर है।
दिग्मडल सापो का कुण्डल कण-कण रुद्र भयकर है॥
यह माटी पावन ललाट की क्षण मे प्रलय मचाती है।
युगो-युगो से यही ....
इस भू की पुत्री के कारण भस्म हुई लका सारी।
सुई-नोक भर भू के कारण, हुआ महाभारत भारी॥
पानी-सा बह उठा लहू था, पानीपत के प्रागण मे।
बिछा दिए थे दुश्मन के शव, इसी तरावड़ी के रण मे॥
इतिहासों के पृष्ठ बाचती अब भी हल्दी घाटी है।
युगो-युगो से यही.... ...

—विद्यावती मलिक

क्रांति की आग

(धर्मदेव आर्य व्यवस्थापक)

धाए ! धाए ! धाए ! तीन शब्द आकाश मे गूंज उठे। पुलिस कप्तान इधर उधर देखने लगा, ये क्या है ? यह कौन है ! पकडो ! पकडो !

यह शब्द मुह मे ही रह गये, उनकी गर्दन के पास कान को एक पिस्टल छूने लगी। किसी ने कहा सावधान अगर एक भी शब्द मुख से निकाला तो गोली दाग दो जायेगी।

पुलिस कप्तान कांप उठा, वह देख रहा था एक नौजवान ने कहा। क्या चाहते हो, मौत या जिन्दगी ?

कप्तान ने लडखडाते हुए कहा। नौजवान क्या करू सरकार की नोकरी करता हू उसी के लिए ये सभी कुछ करना पडता है, मुझे भी अपने देश से प्यार है मैं भी भारतीय हू। मुझे मेरे बच्चो के लिए छोड़ दो।

तुम्हे छोड़े देता हू कप्तान, परन्तु बाहिर पुलीस जमा हो गई अब मैं वहा से निकल नही सकूगा। अपने सिपाहियो को यही से आवाज लगा कर कह दो वह सब चौकी न० ३ मे चले जाए।

कप्तान कह रहा था सभी सिपाहियो को आर्डर है, विद्रोही फ़ार हो गया सभी चौकी न० ३ मे चले जाए। शीघ्र चले जाओ विद्रोही की खोज करो आर्डर-आर्डर।

सभी सिपाही चले गये मार्ग साफ हो गया नौजवान ने कहा— तुम्हे छोड देता हू कप्तान तुम भारत मा का अन्न खाते हो। इसलिए इसकी स्वतन्त्रता मे बाधक मत बनो।

फिर क्या करू ? तुम हमारा साथ दो।

मैं तुम्हारा साथ दू क्या मतलब मैं भी तुम्हारी भाति मौत के मुह मे हर समय रहू।

नही कप्तान मैं यह नही चाहता, कुछ कहने से पहले जानना चाहता हू। क्या इस कमरे मे कोई कही और तो नहीं होगा।

नही तो केवल मैं और आप हैं। अच्छा सुनो आप हमारे नेता बनो हमारा मार्ग दर्शन करो बताओ शत्रु आज क्रातिकारियों के पकड़ने को क्या षड्यन्त्र कर रहा है ? पुलिस का जोर कहा ? गवर्नमैंट का मन कहा है ? तुम कहा होगे ? किस देश भक्त को किस ने और कहा गिरफ्तार किया, वह कौन सी जेल में होगा ? पुलिस की प्रतिदिन की गतिविधिया मैं आप से जानना चाहता हू। क्या स्वीकार है।

आज तुम्हे भी हमारी भाति देश रक्षा का व्रत लेना पड़ेगा। बोलो करो प्रतीज्ञा !

मुझे स्वीकार है नौजवान तुम ने मेरी आंखे खोल दी, मै भारत मां का लाल हू, मां का सच्चा पूत बन कर ही रहूगा। ये लो मेरा पता। कप्तान नौजवान को गले से लगाता हुआ बोला जब तुम्हारे जैसे लाल मां के पास है फिर मां के बन्धन क्यों नही कटेंगे।

दोनो मुस्कराते हुए कमरे से बाहिर निकले यह चौकी न० ४ थी,

एक कहानी

बाहिर अभी पुलिस के कुछ सिपाही थे। एक ने आगे बढते हुए कहा, कप्तान साहेब, अफसोस की बात है। चौकी मे आकर भी शत्रु दरोगा महासिह को घायल कर गया। और वह आप की मौजूदगी मे भी पकडा नही गया।

दरोगा साहेब बच जायेगे। परन्तु आश्चर्य इस बात का है। हम चारो ओर पहरा दे रहे हैं अन्दर से कोई बाहिर नही गया, कातिल निकला कैसे।

एक ने कहा यह आप के साथ कौन साहेब है। हमे इन पर कुछ सन्देह है।

खबरदार अगर आगे यह शब्द मूह से निकाले यह मेरा ममेरा भाई है दिल्ली से आया है। यहा कालेज में दाखिल हुआ है, गोली किसी ने चौकी से बाहिर से चलाई है। तुम कातिल को अन्दर ढूढते रहे वह फ़ार हो गया होगा।

जाओ कातिल की खोज करो। थोडी दूर पर खडी मोटर साईकल पर सवार होते हुए नौजवान ने कहा— वन्दे मातरम् कप्तान साहेब, कल घर पर मिलूगा और वह फड फड करता हुआ अन्तरध्यान हो गया।

कप्तान शाम को घर आया, विचारो मे डूब गया आराम कुर्सी पर बैठा मुह पर उगली रखे सोचता रहा **क्या ये नौजवान देश को आजाद करा लेगे ? क्या अग्रेज भारत को छोड जाएगे ? भारत माता की दासता की बेड़िया क्या कट जाएंगी ? फिर वह पागलो की भान्ति चिल्ला उठे। जहां ऐसे-ऐसे नौजवान होगे, वहां इसमे कोई सन्देह नही, देश आजाद जरूर होगा। जरूर होगा। जरूर होगा।**

लता ने दौड कर कप्तान को झकझोरते हुए कहा पिता जी क्या बोल रहे, क्या है वह जो जरूर हो ! जरूर होगा। जरूर होगा।

जैसे कप्तान साहेब नीद से जागे हो मुस्कराते हुए बोले। बेटी कुछ नही, ऐसे ही नीद सी आ गई थी, हो सकता है स्वप्न मे कुछ बोल पडा हू।

पिता जी आज आपने वर्दी भी नही उतारी।

ओह ! बेटी ध्यान नही रहा लो अभी उतारता हू।

पिता जी खाना ले आऊ ?

नही बेटी आज मुझे भूख नही है।

इतने में घंटी बजी चौकीदार बाहिर गया क्यो किससे काम है ?

लो यह चिट कप्तान साहेब को दे देना। चिट के पढते ही कप्तान साहेब ने कहा उसे आने दो।

गठिले बदन का उत्साही खूबसूरत वही नौजवान सामने था। आओ बैठो नौजवान, तुम्हारा नाम क्या है कप्तान ने उसकी ओर देखते हुए कहा—

मुझे लोग अजीतसिंह कहते है। वास्तविक नाम कुछ और है साहेब।

बेटी 'लता' इधर आओ देखो महमान बैठे हैं और तुमने यह भी नही पूछा क्या लाऊ, चाय, दूध, भोजन, कुछ ना पूछना था।

कौन आये है पिताजी कहते हुए जब लता ने कमरे में पाव रखा वह सामने उस मनमोहनी सूरत को देखकर भौचक्की-सी रह गई। वह एक-टक उसकी ओर देखती रही, जैसे आखो ने कुछ पी लिया हो, वह नीचे को झुक गई, वह सभलकर कुछ मुस्करा उठी और बोली क्यो जी, क्या पीएगे आप क्या खाएगे ?

जो आप खिलाना चाहेगी लता अब जरूर खाऊगा। अब दूध, चाय का समय नही है।

अजीत सोच रहा था क्या यह वही लडकी नही है जिसने अपना नाम वीणा बताया था। जो मुझे कह रही थी मैं क्रान्तिकारियो के नेता से मिलना चाहती हू और जब मैंने कहा था। कहिए आपको हमारा पता कैसे लगा और कैसे यहा आना हुआ तुम कौन हो ? सच बता दो नही तो, मैंने रिवाल्वर निकालते हुए कहा था। यह गोली तुम्हारे कोमल शरीर मे पार हो जाएगी।

तब इसी लता ने कहा था। नौजवान मैं भी अपने देश के लिए अपनी बलि देना चाहती हू क्या नवयुवतिया भी आपके इस दल की मेम्बर बन सकती है ? क्या उन्हें भी अधिकार होगा वह भी अपनी मा के बन्धनो को काटने के लिए इस राष्ट्र यज्ञ मे अपनी आहूति दे सके।

जब मैंने पूछा कि तुम्हे यह प्रेरणा कहा से मिली, तुम यहा तक कैसे पहुची तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं ?

तब इसी वीणा रूपी लता ने कहा था वह एक सिपाही है, वह प्रतिदिन मुझे तुम्हारी बाते रात को बताते है, कि आज एक देश भक्त

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

वीर ने दो अंग्रेज आफिसरों को मौत के घाट उतार दिया, आज रेलवे लाईन कट गई, आज सरकार का खजाना लूट लिया गया। थोड़े से नौजवानों ने अंग्रेजों के नाक मे दम कर दिया। वह जान हथेली पर रखकर लड़ते हैं। उनके सामने हम मूक रह जाते हैं। काश के मेरा कोई लाल होता मैं भी उसे इस दल की भेंट कर देता। आज बड़ी खोज के बाद मैं आपके पास पहुंची हूं।

मेरे बाप के पास बेटा नही तो बेटी तो है। मै बेटा बन कर बाप की अभिलाषा पूरा करना चाहती हूं।

अजीत आज यह जानकर हैरान रह गया कि वह साधारण सिपाही की ही बेटी नही है। वह तो एक पुलीस कप्तान की लाडली लता है।

उधर खाना त्यार करने मे लगी लता सोच रही थी यह वही नेता क्या नही है जिसने मुझे क्रांति दल मे काम करने की आज्ञा न देते हुए यह कहा था, बीणा यह काम कोमल लडकियों के वश का नही है, लड़कियां बात को छुपा नही सकती. तुम पुलिस के अत्याचारों से घबरा जाओगी और घबराकर भेद भी दे सकती हो, फिर अभी एक प्रत्यक्ष रूप से हमारे दल में लड़किया काम भी नही कर रही, क्षमा करें मैं तुम्हें यहा रहने की आज्ञा नही दूंगा। तुम इसी समय यह शपथ उठाकर चली जाओ की मैं किसी को भी इस दल का भेद नही दूगी। और एक लम्बी सास खींचते हुए कहा था। क्षमा करना बीणा मैं विवश हूं। मैं विवश हूं! क्षमा।

भोजन सामने था, कप्तान साहेब भी भोजन करने लगे। लता ने हंसते हुए कहा पिता जी आपको तो भूख नही थी।

नही बेटी! अब भूख लग गई है। पिता जी क्या मैं इनका परिचय पूछ सकती हू।

हा बेटी क्यो नही, ये है मिस्टर अजीत दिल्ली के रहने वाले हैं। लखनऊ मे अभी-अभी आये हैं। नौकरी की तलाश मे है। कल इन से परिचय हो गया था। बहुत सज्जन है यह लता। देखो न कैसा गठिला बदन कैसे हंस मुख, बात करने की कैसी योग्यता। कल कही इनके लिये नौकरी की तलाश करूंगा।

क्रांति की आग

पिता जी मालूम होता है मैंने इन्हे कही पहले भी देखा है।

देखा होगा बेटी पिछले वर्ष तुम भी तो दिल्ली में ही रही हो।

अच्छा बेटी तुम जाओ मैं इनसे कुछ आवश्यक बातें कर लू।

लता के चले जाने पर कप्तान ने कहा प्यारे अजीत वह सामने वाला कमरा मैंने खाली करा दिया है। तुम आज रात से यही रहो, मैं तुम्हारी पूरी-पूरी सहायता करूंगा। पास रहने से सभी भेद समय पर दे सकूंगा और मेरे पास रहने से तुम्हे खतरा भी नही होगा।

एक खबर है आज तीन नौजवान शक-सन्देह मे पकडे गए है। नाम नरेन्द्र, महेन्द्र, सुरेन्द्र बता रहे हैं। पुलीस अत्याचार कर रही है परन्तु वह युवक कुछ भी भेद नही दे रहे। वह चौकी न. ५ मे बन्द है।

अच्छा कप्तान साहेब नमस्ते कल मिलूंगा। यह तीनो नौजवान पंजाब के वीर हैं, यह इनके नकली नाम हैं। हमारे दल के प्रमुख युवक है। सवेरे आप समाचार पत्रों में पढना तीनों युवक फरार हो गए।

जाने लगे हो अजीत ठहरो ये लो ५० कार्तूस, और ध्यान रखना, ठीक रात के २ बजे चौकी न० ५ से १०० गज की दूरी पर एक खाली कार खड़ी होगी। चारो नौजवान निकलकर फरार हो जाना। पहरा बडा कडा है। सौ सिपाही चौकी की रक्षा रहे हैं।

सब ठीक होगा कप्तान साहेब आपका बडा बडा धन्यवाद, उस नौजवान ने अपने माऊजर पिस्टल सभाले दोनो कोट की जेबो मे डालकर चल पड़ा।

साथियो को इकट्ठा किया योजना बनाई, स्थान पर स्कूटर कार, साईकिल भेज दी, नौजवानों चिंता मत करना मैं अकेला ही जाऊंगा। अगर तुम कई साथ होगे तो सफलता नही मिलेगी।

रात को एक बजा था लता को नींद नही आ रही थी उसने छुप कर अपने पिता और अजीत की बातें सुन ली थी। वह काली पोशाक में घर से चल पड़ी, चौकी न. ५ पर जहा कार खड़ी थी कुछ दूर अपनी पिस्टल सम्भालकर दिवार का सहारा लेकर खड़ी हो गई।

वह अजीत की इन्तजार कर रही थी लेकिन वह पहले ही चौकी न. ५ मे दाखिल हो चुका था, सिपाही की वर्दी में, चौकीदार को सलूट दिया।

कहा से आए हो नौजवान चौकीदार ने पूछा?

मैं चौकी न. तीन से आया हूं। पुलीस इन्सपैक्टर जी का आर्डर है कि जितने भी सिपाही वहा है सभी को चौकी न. तीन मे भेज दो, चौकी न. ३ खतरे मे है विद्रोहियो ने चौकी को घेर लिया है।

चौकीदार ने दरोगा को नींद से उठाया दरोगा ने आखे मलते-मलते कहा जल्दी करो सभी सिपाही शीघ्र चौकी न. ३ मे पहुंच जाओ। पुलीस पुलीस इन्सपैक्टर का आर्डर है।

सभी सिपाही दौड गए चौकी खाली हो गई, अजीत ने जेल के चौकीदार को पिस्तौल तानते हुए कहा, बिना शोर किए ताला खोल दो नही तो गोली दाग दी जाएगी। उसने कांपते हुए ताला खोल दिया तीनो नौजवान जेल की कोठड़ी से बाहिर थे।

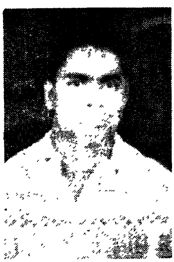
दूर खड़े दरोगा ने शोर मचाना चाहा अजीत की पिस्टल दग चुकी थी, धाए के शब्द से आकाश गूंज उठा।

चौकी के चौकीदारने यह देख राईफल दाग दी, अजीत बाल-बाल बच गया बाहिर खड़ी लता की पिस्टल से चमकती हुई गोली ने चौकीदार को सुख की नींद सुला दिया। अजीत ने दूसरे वार से उस चौकी दार को भी यमपुर पहुंचा दिया।

अजीत हैरान था यह गोली किस की है जिस ने चौकीदार की कपाल-क्रिया कर दी, परन्तु यह सोचने का समय नहीं था। चारों नौजवान कार मे सवार हुए ही थे कि पुलीस वाले आ धमके। (क्रमशः)

श्री त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री के सुपुत्र दयानन्द जी एम. ए. का अचानक गुम हो जाने का दुखद समाचार

यह समाचार सभी को जानकर अति दुःख होगा कि श्री प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री आर्य प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध महोपदेशक के सुपुत्र श्री दयानन्द जी एम० ए० एक मास से ला पता हैं। जिनका यह चित्र है,



आज तक उनका कही भी, तनिक भी पता नही चल सका, साधुआश्रम होशियारपुर से यह नौजवान २ नवम्बर से गुम है। क्या हुआ, कहा गया, किस ओर गया, कुछ भी भेद नही चल रहा। शास्त्री जी रात दिन दौड धूप कर रहे हैं, सभी मित्र खोज में लगे हुए हैं। सभा के सभी व्यक्ति इस दुःख में दुखी हैं। मेरा सभी आर्य बन्धुओं की सेवा मे निवेदन है कि जिस भी बन्धु को श्री दयानन्द एम० ए० के बारे में कहीं से कोई भेद लगे तो तुरन्त सभा को सूचना कर दें हम सभी उनको खोजने के प्रयत्न मे लगे हैं। परमात्मा करे कि हमारा यह नौजवान कहीं सुख पूर्वक हो। आशा है सभी समाजो व संस्थाओं के अधिकारी हमारी इस कार्य मे सहायता करेंगे। सभी बन्धु अपने-अपने आस-पास के स्थानों पर खोज करने का प्रयत्न करे। यही सभी से निवेदन है।

—निवेदक—वेदीराम

मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, जालन्धर

साप्ताहिक सत्संग

इस रविवार १२-१-६९ को आर्यसमाज विक्रमपुरा के साप्ताहिक सत्संग में श्री कुन्दनलाल जी चूनियां वाले का मनोहर उपदेश होगा। सभी आर्य सज्जनों से प्रार्थना है कि श्री कुन्दनलाल जी के इस जीवनदीप-योगी उपदेश से धर्मलाभ उठाएं।

खालसा ज्ञान प्रकाश

अर्थात् गुरु ग्रन्थ का वैदिक पन्थ

आज हिन्दू और सिक्ख दोनो को अलग-अलग समझा जाता है। यह हमारा दुर्भाग्य है। क्या सिख भी हिन्दू नहीं हैं। वैसे तो हमारा वास्तविक नाम आर्य है। परन्तु यह भी हमारा दुर्भाग्य ही रहा कि विदेशियो का दिया यह बुरे अर्थो वाला यह नाम हम ने स्वीकार कर लिया। परन्तु आज यह नाम हमारे साथ इतना सम्बन्धित हो गया कि इसे छोडना कठिन हो गया। भारत के प्रत्येक रहने वाले को हिन्दु कहा है। चाहे वह किसी भी जाति से सम्बन्ध रखता हो, लेकिन आज सिख अपने आपको हिन्दु नही मानता यह भी मुसलमान ईसाई आदि जातियो की भाति अपने को हिन्दुओ से अलग समझता है। हिन्दुओ के पूर्वजो को यह अपने पूर्वज मानने को भी तैयार नही, आज ईश्वरीय ज्ञान वेद को न मान कर केवल गुरु ग्रंथ को ही अपना धर्म ग्रंथ मानते हैं। लेकिन अगर ग्रंथ साहेब को ध्यान से पढा जाए तो उसमे वेद महिमा भरी पडी है। हिन्दी और संस्कृत के असख्य शब्द उसमे आते बहुत सी बाते वेद के अनुकूल हैं परन्तु जो गुरुओ के नाम से जो बाद में अप्रसगिक विषय जोड दिए गए हैं। वह वेद विरुद्ध अवश्य है।

श्री स्वामी अमृतानन्द जी भूतपूर्व महाशय ताराचन्द वानप्रस्थी जो आज कल वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर मे रहते हैं। बहुत बड़े विद्वान तथा सिख साहित्य के मर्मज्ञ हैं। एक त्यागी, तपस्वी महात्मा है। स्वामी जी ने दो भागो खालसा ज्ञान प्रकाश पुस्तक लिखी है। जिसका दूसरा भाग अभी-अभी छपा है। इस पुस्तक मे गुरु ग्रंथ साहेब का निर्माण किन कारणो से कैसे और कब हुआ अर्थात गुरु ग्रंथ साहेब की आत्मकथा, सिख गुरुओ का यज्ञोपवीत आदि सोलह वैदिक सस्कारो का कराना, वेद को मानना तथा दशों सिख गुरु आर्य (हिन्दु) थे। वेद मर्यादा और गुरु मर्यादा आदि २ विषयो का विस्तृत वर्णन किया है। स्वामी जी ने सिखो को हिन्दुओ का अटूट अग सिद्ध किया है। जो व्यक्ति पक्षपात को छोड कर इस पुस्तक को पढेगा। वह अवश्य ही अन्त मे कह उठेगा हिन्दु-सिख दो नही किन्तु एक ही वृक्ष की दो शाखाए हैं। यह पुस्तक प्रत्येक सिख तथा हिन्दु भाई को पढनी चाहिए, जो ऐसे समय मे बडी उपयोगी सिद्ध होगी जब कि हिन्दु और सिखों का आपस मे मतभेद बढता जा रहा है। इसका मूल्य केवल दो रुपया है, स्वामी जी से मगा कर अवश्य पढ़े।

अमूल्य रत्न

★ अगर मैं सच्चा हू तो मेरे साथी जरूर सच्चे होगे।

★ हकूमत का क्षेत्र, सरकार का क्षेत्र, छोटा रहता है, लेकिन सेवा का क्षेत्र तो बहुत बड़ा रहता है।

★ बेहद विरोधी परिस्थितियो मे ही आदमी की जाच होनी है।

आर्यसमाजो से निवेदन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी समाजों से प्रार्थना है कि वर्ष समाप्त होने को है, तो जिन समाजों ने अभी तक अपना दशांश, वेद-प्रचार, दीवाली, शिवरात्रि फण्ड नहीं भेजा वह शीघ्र ही भेजने की कृपा करें।

वेदी राम
सभा मन्त्री

धर्म विज्ञान और मजहब

(श्री देशबन्धु जी आर्य)

(गताक से आगे)

ब्रिटिश शासनकाल मे फूट डालो और राज्य करो' की नीति के कारण हिंदुओ को जान-बूझकर बाजे के प्रश्न पर लडया गया था। परन्तु दुर्भाग्य है इस देश को कि इन कांग्रेसी नेताओ पर आज भी वही 'ढाक के तीन पात' वाली कहावत चरितार्थ होती है। ५० वर्ष के बाद मेरी उडीसा के जनता के अन्दर एक जागृति हुई। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर कार्तिकेश्वर की प्रतिमा का विसर्जन करने के लिए शोभायात्रा निकली। मुसलमानो ने शोभायात्रा को रोक दिया। हिंदुओ ने कहा हम शोभायात्रा करके ही छोडेगे। फिर क्या होना था यह आवाज सरकार के कानो तक पहुची। उडीसा सरकार ने कहा कि इजाजत देना मेरे बस की बात नही। उसके बाद सुपरिमकोर्ट तक मामला दायर हुआ। १० दिन तक प्रतिमा बाहर ही पडी रही। सुप्रिम कोर्ट के जज एस. एम. सिक्री और आर. एस. बचाओ ने फैसला कर दिया कि 'साधारण रास्ता से धर्म सम्बन्धीय अथवा धर्म-सम्बन्ध न होने पर भी सब प्रकार के शोभायात्रा बाजा सहित जा सकता है।' यह बात सुनकर वहा के जनता मारे खुशी से उछलने लगे। '५० वर्ष के बाद उनको धर्म सम्बन्ध मे आजादी मिली। मै धन्यवाद देता हू उन लोगो को जिन्होने ऐसा सगठन करके एक साहसपूर्ण कार्य किया। बाजा बजाते हुए खुशी के सारे प्रतिमा विसर्जित हुई। जलूस शातिपूर्ण सम्पन्न हुआ। विसर्जन के अगले दिन मुसलमानो ने शिकायत की कि जब जलूस मस्जिद के सामने गुजर रहा था तो हिंदुओ ने मस्जिदो मे जूते व चप्पले फैंकी। तुरन्त एक सैक्यूलरवादी एव भूतपूर्व कांग्रेस मन्त्री श्री राधानाथ रथ मैदान म उतर आए और हिंदुओ को गालिया देने लगा। जब कि पुलिस सूत्रो का कहना है कि प्रत्येक मस्जिद के सामने पुलिस के बडे-कडे पहरे की व्यवस्था थी और उन्होने कही पर कोई वस्तु फैंके जाते नही देखा। एक उच्च पुलिस अधिकारी ने तो यहा तक कहा कि ये राधानाथ मुसलमानो मे सस्ती लोकप्रियता कमाने के लिए ही ऐसे वक्तव्य देते हैं, जिससे साम्प्रदायिक विद्वेष कम होने के बजाय बढता है। मार्कसवादी कम्युनिष्ट जैसे राष्ट्रद्रोही सस्था के सदस्य ए.पी-चटर्जी तो ससदमे ४ दिसम्बर को राज्यसभा मे यहा तक कह डाला कि मस्जिदो के सामने बाजा न बजाना इस देश का परम्परागत नियम है पर उसके विपरीत निर्णय देकर सर्वोच्च न्यायालय ने देश का कानून (**Low of the Laud**) तोडा है। भूपेशगुप्त और राजनारायण ने भी उनकी इस उलजलुल की हिमायत की। क्योंकि हम सेक्यूलरवादी है। इसलिए हम देशद्रोहियो को प्रोत्साहन देते हैं। आज हमारे शुद्धि प्रचार मे १४४ धारा लगती है।

(क्रमश.)

उपदेशकों की आवश्यकता है

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर के लिए पाच आर्य महोपदेशको की शीघ्र आवश्यकता है। आर्य सिद्धान्तो के मर्मज्ञ उच्चकोटि के आर्य विद्वानो की आवश्यकता है।

एक विद्वान की आवश्यकता है जो विदेशो मे जाकर विदेशी भाषा अंग्रेजी आदि मे भी उपदेश दे सके जो सस्कृत, हिन्दी के साथ-साथ विदेशी भाषाओ का भी ज्ञाता हो। वेतन योग्यता अनुसार दिया जायेगा। निम्न पते पर शीघ्र पत्र-व्यवहार करे।

वेदीराम
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर

अन्तर्जातीय विवाह कर, देश से जात-पात समाप्त करो

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की आर्य युवकों से अपील

सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने एक विज्ञप्ति मे कहा है कि जो युवक अन्तर्जातीय विवाह कर देश मे एकता स्थापित करने मे योगदान देना चाहते है वह अपने नाम तथा पते सार्वदेशिक आर्यवीर दल, महर्षि दयानन्द भवन, राम लीला मैदान, नई दिल्ली—१ के पते पर शीघ्र-अति-शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

विज्ञप्ति में आगे कहा गया है इस समय विदेशी शत्रुओ का तो देश मे निरन्तर खतरा बना ही हुआ है इससे भी अधिक खतरा आन्तरिक शत्रुओं का है जो इस समय सक्रिय रूपसे देश के विघटन मे बडे जोर शोर से सक्रिय हो गये हैं। विशेष रूप से यह सब शक्तिया जात पात के नाम पर ही देश को विघटित करने में सलग्न है इस कार्य के लिए सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने यह [illegible] अपने हाथ मे लिया [illegible] कि देश मे जात-पात को समाप्त करने के लिए एक आदोलनात्मक पग उठाया जाए। इसके लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल का आर्य युवको को अवाहन् है कि वह अपने आपको अन्तर्जातीय तथा अन्तंप्रातीय विवाह के लिए प्रस्तुत कर जनता का मार्ग प्रशस्त करें।

हमें फस का ऐसा कोई काम होता हो आर्य युवको को उसमें अग्रसर होना चाहिए जिससे कि देश के अन्य नवयुवकों मे देशभक्ति की प्रेरणा जागृत हो और वह देश के [illegible] को रोकने में अपना योग दे सके।

[illegible] छूतछात तथा जात पात के अभिशाप को मिटा कर ही आर्य वीरों को दम लेना चाहिए जिससे कि देश मे महर्षि स्वामी दयानन्द के बताए मार्ग का प्रचार तथा प्रसार हो। आज भी महर्षि दयानन्द के उस समय के विचार उतने ही प्रभावशाली तथा देशहित मे हैं जितने कि उस समय थे। इस लिए महर्षि स्वामी दयानन्द के विचारो का प्रचार तथा प्रसार करना प्रत्येक आर्य के लिए बहुत आवश्यक कार्य है। ★★

आर्य प्रादेशिक सभा म० हसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२ वैदिक गुरमत [पजाबी मे] (ले० डा० धर्मान्तिसिह जी) १०-००
३ चन्द्रगुप्त मौर्य ० ५०
४. अमृत वाणी ० ५०
५. ऋषि सन्देश ० २०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १ ००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ० ५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हसराज-मोडर्न पजाबके निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M A.(अग्रेजी में) १ ५०
१२. सध्या पर व्याख्यान-ले०महात्मा हसराज जी १ ००
१३ Dayanand His Life & Work(ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २ ००
१४. महात्मा हसराज जी सचित्र(ले० आनन्द स्वामाजी महाराज)१ २५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A) १.००
१७. स्वाध्याय सग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M.A) ० ५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले वाचस्पति M.A. ५०
२० ,, ,, द्वितीय ,, ,, ५०
२१ मु डक उपनिषद(ले० प्रि० दीवन चन्द जी M. A.) ०·३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना(ले० स्वामी सोमानद जी)उर्दू मे ० ३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १·२५
२४. सीता(ले. आनदस्वामीजी)०·३७
२५ पद्ममनी (,, ,, ,,)०·३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A) अग्रेजी मे १.२५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १ ५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करे।

विशेष सूचना—महत्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली मे भी खोल दी गई है अत साहित्य-प्रेमी वहा से भी पुस्तके प्राप्त कर सकते है। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजे।

साप्ताहिक आर्य जगत में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

समाचार

[illegible]क उपप्रतिनिधि सभा मन्त्री एव डी. ए. वी कालेज कमेटी चित्र गुप्ता रोड नई देहली के कार्यालय अधीक्षक श्रीयुत दरबारी लाल जी की पूज्य माता जी का स्वर्गवास हो गया। सारा आर्य जगत परिवार इस शोक मे शामिल होकर अपनी आन्तरिक सवेदना श्री दरबारी लाल जी व उनके सारे परिवार से प्रकट करते हुए प्रभु से दिवगत आत्मा की शाति तथा परिवार को शान्ति देने की प्रार्थना करता है।

★ श्री प. चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के पूज्य ससुर जी के शोकमय देहावसान का समाचार से श्री आर्य जगत का परिवार शोकाकुल है। श्री पण्डित जी के सारे परिवार के इस भारी दुःख मे हम सब दुःखी होते हुए हार्दिक सवेदना प्रकट करते हैं। प्रभु स्वर्गीय आत्मा को शान्ति एव सारे दुःखी परिवार को सहन शक्ति प्रदान करें। —स.

★ मनुष्य तो एक प्राणी है। वह राजा तभी होता है, जब वह अहकार छोड कर ईश्वर मे समा जाता है। —महात्मा गाधी

वैदिक साहित्य के विद्वान् स्व० राजमित्र राजरत्न आत्मारामजी अमृतसरी की पुस्तकें

१. अन्नप्राशन निष्क्रमण सस्कार २५ पैसे। २ नामकरण सस्कार १६ पैसे। ३. कर्णवेध सस्कार ३० पैसे। ४. उपनयन सस्कार ७५ पैसे। ५ वेदारम्भ सस्कार १ रु० ५० पैसे। ६. गीतासार हिन्दी गुजराती ७५ पैसे। ७ कु गमुनिज्ञानामृत १ रु० २५ पैसे। ८. चीन की सस्कृति १ रु० ५० पैसे। ९. आलमगीर के पत्र १ रु०। १०. बालोद्यान पद्धति का गृह शिक्षण १ रु०। ११. त्रिदेव निरूपण ३० पैसे। १२. हिन्दुस्तान भाषा कविता ३५ पैसे। १३. धर्म की उत्पत्ति और विकास २ रु०।

आचार्य शिवपूजन सिंह कुशवाहा पथिक M.A. कृत

१४. जादू विद्या रहस्य २०] १५. अद्भुत वैज्ञानिक जादू विद्या कौशल ५.२५। १६. मनोवैज्ञानिक जादू विद्या के चमत्कार ५) १७. महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्यानुशीलन १) १८. आर्यसमाज के द्वितीय/नियम की व्याख्या ५० पैं. १९ वैदिक राज पर समीक्षात्मक दृष्टि ७५. २०. मेरी आठ रोचक कहानिया ७५ पैं. स्वामी ब्रह्ममुनिकृत वेदाध्ययन प्रवेशिका ५) वैदिक वन्दन ५) न्याय दर्शन प्रथमाध्याय पृ० १६० मु. १-७५ कु सुशीला पण्डित कृत नैसर्गिक नारी सौंदर्य ३-५० आदर्श दम्पति १-५० वैदिक सिद्धात ५० पैं. मुफ्त विशेष परिचय मासिक 'साहित्य प्रचारक' मे देखें जो ६० पैसे डाक व्यय लेकर मुफ्त भेजा जाता है।

जयदेव ब्रदर्स पो० बा० ४६ बड़ौदा—१

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम. ए. पी. एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलापरोड जालन्धर मेंतथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधी सभा जालन्धर पंजाबत



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P.

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक ३) ७ माघ २०२५ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१९ जनवरी १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

सर्वमस्त्वनामयम्

अर्थ-सर्वम्—यह सारा प्राणीवर्ग ही अस्तु-सदा हो जाए, अनामयज्ञ—सुख-आनन्द से भरा हुआ। मंगलमय महान् देव सारे विश्व के जीव समुदाय का कुशलमंगलम करते रहें। वेद को मानने वाले प्रत्येक को सदा सुखी देखना चाहते हैं। केवल अपना सुख और शान्ति ही नहीं चाहते किन्तु सारे विश्व का कल्याण चाहते हैं। सर्वे भवन्तु सुखिन:—की प्रार्थना सदा प्रभु प्रेमी करते रहते हैं हमारे हरेक कर्मकाण्ड की समाप्ति पर सब का भला करो भगवान् की सामूहिक ध्वनि बन कर के निकलती रहती है। इस धरती पर या विशाल विश्व में कोई भी दुःखी न हो। सारे अपने-अपने जीवन में चाहे द्विपाद हों या चतुष्पाद सुख शान्ति से भरपूर रहें। सदा सब का मंगल हो—

वेदामृत

परमात्मा की स्तुति से मोक्ष

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ऋ० ७।५९।१२॥

पदार्थ—(त्र्यम्बकम्) तीनों काल में एक रस ज्ञान युक्त, अथवा तीनों लोकों का जनक अथवा जगत् की उत्पत्ति स्थिति प्रलय इन तीनोंके कर्त्ता परमात्मा (सुगन्धिम्) बड़े यश वाले (पुष्टिवर्धनम्) शरीर आत्मा और समाज के बल को बढ़ाने वाले जगदीश की (यजामहे) स्तुति करते हैं। हे प्रभु! (उर्वारुकम् इव) जैसे पका हुआ खरबूजा (बन्धनात्) लता बन्धन से छूट जाता है वैसे ही (मृत्योः) मृत्यु से (मुक्षीय) हम छूट जावें। (अमृतात् मा) मोक्षरूप सुख से न छूटें।

भावार्थ-हे जगत् उत्पत्ति स्थिति प्रलयकर्त्ता परमात्मन्! आपका यश सब जगत् में व्याप रहा है, आप ही अपने भक्तों के शरीर, आत्मा और समाजके बल को बढ़ाने वाले हैं। भगवन्! जैसे पका हुआ खरबूजा अपने लता बन्धन से छूट जाता है, ऐसे ही मैं भी मृत्यु के बन्धन दुःख से छूट जाऊं, किन्तु मुक्ति से कभी अलग न होऊं। आपकी कृपा से मुक्ति सुख को अनुभव करता हुआ सदा आनन्द में मग्न रहूं।

ऋषि दर्शन

तज्जपस्तदर्थभावनम्

योग दर्शन के बनाने वाले महर्षि पतञ्जलि कहते हैं कि भगवान का निजी नाम तो प्रणव है ओ३म् है। जाप सदा ओ३म् नाम का ही करना चाहिए। साथ ही यह भी आवश्यक है कि यह जाप केवल मात्र शब्द जाप न बना रहे। केवल वाणी से ही शब्दका उच्चारण न होता रहे। किन्तु तज्जप:—प्रभु के ओ३म् नाम का जपजाप तो यह है कि तदर्थभावनम्—उसके अर्थों पर भी विचार किया जाए। अर्थ-विचार के बिना शब्द जाप का लाभ क्या है? जहां प्रभु नाम ओ३म् का जाप किया जाए वहां इसके अर्थों पर भी पूरा-पूरा विचार करके उसको अपने जीवन में लाने का पूरा प्रयत्न किया जाए तभी ठीक है। —संपादक

योग दर्शन से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी एच० डी० (सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शा

मानव और मानवता

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज)

(गतांक से आगे)

सूर्यस्य, वृत्तम् अनुव्रजस्व

इस सूर्य को देख, इसके पीछे-पीछे चल। यह तेरे जीवन का आदर्श है। ब्रह्मचारी यजुर्वेद का मन्त्र बोलता हुआ कहता था—

सूर्यस्य व्रजम् अन्वावृते

मैं सूर्य के अनुसार, सूर्य के पीछे-पीछे चलने का निश्चय करता हू। इसके पश्चात प्रतिदिन प्रार्थना करता था—

अहं भूयास सवितेव चारु

हे भगवन, मैं सूर्य के समान तेजस्वी, वर्चस्वी बन जाऊ, सूर्य के समान सुन्दर बन जाऊ।

परन्तु इसका अर्थ क्या है? सूर्य के पीछे कोई चल कैसे सकता है? इसका सीधा-सा उत्तर है—सूर्य के गुणो को धारण करने से सूर्य का पहला गुण यह है कि वह घूमता है किन्तु अपने केन्द्र को, अपनी धुरी को छोडता नही। चन्द्रमा पृथ्वी के चारो ओर घूमता है, एक मास में पृथ्वी का एक चक्र पूरा कर लेता है। पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है, वर्ष भर मे एक चक्र पूरा कर लेती है। सूर्य भी घूमता है, परन्तु किसी के चारो ओर नही। अपनी ही धुरी पर घूमता रहता है। घूमता अवश्य है, अपने स्थान को नही छोडता। इसी प्रकार सूर्य के पीछे-पीछे चलो। अपनी धुरी को मत छोडो। मानव की धुरी मानवता है। उस पर डगमगाओ नही, उसे छोड कर इधर-उधर मत जाओ। जब से मानव इस धुरी को छोड कर इधर उधर होने लगा, तभी से उसके लिए विपत्तिया, दु ख और चिन्ताए उत्पन्न होने लगी, तभी से मानव, मानव से पृथक् होने लगा। हमारे शास्त्रो ने चार वर्ण और चार आश्रम निश्चित किये थे। हम ने इन चार वर्णों के कई हजार बना दिये। ब्राह्मणो मे कान्य कुब्ज अलग हैं, त्रिपाठी, द्विवेदी, चतुर्वेदी सब अलग अलग हैं। प० मदनमोहन मालवीय बहुत ऊचे ब्राह्मण थे, देश उन पर यथार्थ रूप से अभिमान कर सकता कर सकता है। प० दीन दयालु उपाध्याय भी बडे विद्वान् ब्राह्मण थे, विद्या उन पर अभिमान करती थी। परन्तु आश्चर्यजनक बात यह है कि मालवीय जी चावल पकाये तो उपाध्याय जी खा नही सकते और उपाध्याय जी पकाये तो मालवीय जी खा नही सकते। यह विचित्र लीला है। मनुष्य-मनुष्य में एक ओर ब्राह्मण-ब्राह्मण में भी भेद हो गया।

अपने जीवन की एक घटना सुनाता हू। मैं लाहौर मे रहता था। यू० पी० और सी० पी० के कुछ क्षेत्रो से सूचना मिली कि ईसाई पादरी निर्धन और निरक्षर जनता को लोभ देकर ईसाई बना रहे हैं। महात्मा हसराज जी ने मुझे वहा भेजा। दो दिन और दो रात की यात्रा करके मैं यू०पी० और सी०पी० की सीमा पर स्थित एक नगर मे पहुचा। एक पुराने मित्र के घर पहुचा। स्नानादि करके भोजन के लिए तैयार हो गया क्योकि मार्ग में कहीं भोजन मिला नहीं था। प्रातः के नौ बज गये, दस बज गये परन्तु भोजन खाने का नाम न लेता था। सोचा कि बाजार मे जाकर खा लू गा परन्तु मन मे विचार आया कि कही मित्र बुरा न मानें। ग्यारह बज गये, बारह बज गये। लगभग एक बज वे सज्जन आये, बोले—चलो, भोजन करो। रसोई के बाहर बरामदे मे पहुच कर वे बोले—कपडे उतार दो। मैंने कहा—किसलिए? उन्होने कहा—भोजन करना है कि नही? मैंने अनिच्छा पूर्वक कपडे उतारे और उनकी दी हुई धोती पहन ली। रसोई मे पहुचा, वहा तीन चौके बने हुए थे। उन्होने सकेत करते हुए कहा—यह आपका चौका है, इस में बैठिए। मैं चौके में जाने लगा, एक पांव अभी चौके के बाहर रखा ही था कि वे चिल्लाये अरे... चौका भ्रष्ट हो गया। आपने एक पांव चौके में और एक बाहर रख दिया। मैंने आश्चर्य से पूछा—तब कैसे जाता? एक पाव अन्दर रखा तो दूसरा बाहर रहेगा ही। उन्होंने कहा—नहीं, दोनों पाव एक साथ उठा कर, कूद कर चौके मे जाना होता है। अब तो सब भ्रष्ट हो गया। अब बताइये, कहा पहुच गया है मानव? मानवता की धुरी से हटा कर किस ओर चल पडा है?

१९२२-२३ मे मालाबार मे मोपला-विद्रोह हुआ। मालाबार इस समय केरल प्रदेश मे पडता है। वहा, ९० प्रतिशत हिन्दू हैं, तो भी मोपले मुसलमानो ने उनके घर जला दिये मन्दिर तोड दिये और हजारो लोगो की हत्या कर डाली। यह इसलिए हुआ कि हिन्दू परस्पर विभक्त थे, उनमें एक दूसरे के लिए मिलाप की नही. घृणा और परायेन की भावना थी। एक वहा 'नम्बूदरी' हैं, फिर 'अय्यर' हैं, तब 'नायर' हैं तब 'तय्या' हैं और अन्त मे 'नयाडी' हैं। नम्बूदरी ब्राह्मण किसी 'नयाडी' से सीधे बात भी नहीं कर सकता। यदि बात करना अनिवार्य ही हो तो ईंट, पत्थर आदि कोई वस्तु मध्य मे रखकर बात की जाती है। और कुछ न मिले तो नम्बूदरा अपना जूता भूमि में रखकर जूते के माध्यम से वार्तालाप करता है। यह अवस्था थी वहा हिन्दुओ की। इसलिए ९० प्रतिशत होने पर भी मार खा बैठे। न सूर्य के पीछे कहीं चले, मानवता को गुरु बना अपनी धुरी से भटक गए। ऐसी अवस्था नहीं चाहते तो एक ही उपाय है—सूर्य के गुण को ग्रहण करो। अपनी धुरी से भटको नही, उसे छोडो नही। मत भूलो इस बात को कि तुम सब पहले 'मानव' हो। यदि तुम मानव होकर भी मानव से घृणा करते हो, तो यह मानवता नही मलिनता से भटक जाना है।

दूसरी बात क्या सिखाता है सूर्य? यह कि—

ज्योतिष्मत पथो रक्ष धिया कृतान्।

उन मार्गों की रक्षा करो जो बुद्धि से परिमार्जित हैं, जिन्हें तुम्हारे दूरदर्शी विद्वानो ने अपनाया। उन मार्गों को छोडो नही। एक उत्तम एव सुन्दर सस्कृति उन्होने तुम को दी। उसे भूल कर परस्पर द्वेष न करो। मानवता के महत्व को समझो, उसे छोडो नही। जब मनुष्य का पतन होता है, तो सबसे पहले उसकी मानवता समाप्त हो जाती है। श्री गिबन ने 'रोमन साम्राज्य' नामक पुस्तक लिखी है। उस में वह लिखता है कि छः मास तक रोमन आक्रामक ईस्टइण्डिया के विशाल पुस्तकागार को जलाते रहे। शताब्दियो के सगृहीत ज्ञान को भस्मसात् कर दिया, तब मानवता कहा रही? बख्त्यार खिलजी ने नालन्दा पर आक्रमण किया तो नालन्दा के विशाल पुस्तकालय में आग लगा दी, हजारों बौद्धो का वध कर डाला। तब मानवता कहा थी? चित्तौड की पद्मिनी अपनी सहेलियो के साथ जीवित जल गई जिससे एक आततायी से अपनी मर्यादा की रक्षा कर सके। यह मानवता आखिर कैसी मानवता है जिसमे देवियो को अपने सम्मान की रक्षा के लिए आत्महत्या करनी पडे। किन्तु यह सब हुआ क्यों? इस लिए कि मनुष्य सूर्य के पीछे चलने और अपना धुरा पर स्थिर रहने के बजाय उससे दूर हट गया, मानवता से परे हट गया।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, १९ जनवरी, १९६९ [अंक ३

अभियान चलाना होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तर्गत काम करने वाले अखिल भारतीय आर्यवीर दल ने यह आवश्यक प्रस्ताव पारित करके आर्य युवकों से अनुरोध किया है कि परस्पर अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन दिया जाए। आज परिवारों में विवाह जैसा पवित्र कार्य भी एक विषम समस्या बन गई है। खुलम-खुली युवकों की नीलामी और बोली होती है। जो कन्या के परिवार वाला अधिक बोली दे जाये उस का युवक बन जाता है। पहले किसी से हुआ वाग्दान-सगाई भी तोड़ दी जाती है। आर्यवीर दल ने यह प्रस्ताव तो सुन्दरता से पारित किया है तथा इस समय विषम विवाह-समस्या पर ध्यान दिलाया है। इसके लिए नाम पते भी युवकों व युवतियों के परिवारों के मांगे हैं। किन्तु इस का ठोस परिणाम कितना निकलता है—देखना तो यह है। अच्छी बात यदि क्रियात्मिक रूप धारण न कर सके तो उसका लाभ नहीं होता। आर्यवीर दल के प्रबन्धकों ने यदि इस ओर ध्यान दिया है तो सारी शक्ति लगा कर इसको ठोस रूप देने के लिए प्रयत्न करना पड़ेगा। हम ने 'आर्यजगत' के कई अंकों में समय-समय पर हिन्दुसमाज की इस महामारी की ओर विशेष लेखों के द्वारा जनता का ध्यान खींचा है। आर्यसमाज भी इस बीमारी में रोगी है—यह बात स्वीकार करने में किसी को भी संकोच नहीं करना चाहिए। इस समय कई परिवारों में तीस-तीस वर्षों की ऊंची शिक्षा प्राप्त युवति बेटियां बैठी समाज के विवाह सम्बन्धी इस रोने को रो रही हैं। दहेज के लिए हजारों का प्रबन्ध कैसे किया जावे? जाति बिरादरी वाले लड़के बड़ी कीमतें मांगते हैं। शादी पर लड़के वाले क्या-क्या मांगते व चाहते हैं। सर्टीफिकेट व दिखावे के लिए क्या-क्या करना पड़ता है। ये अवस्था सब जानते हैं। नई-नई चीजें सामने आती हैं। पहिले ठाका आ गया है, फिर सगाई का भारी व्यय है फिर विवाह की लम्बी List सामने आती हैं। इसके बाद भी बहुत कुछ चलता है बेटियां मौन होकर हिन्दु समाज को रो रही हैं। कई भाग जाती हैं, कई बेचारी चुप-चाप अपना जीवन ही समाप्त कर देती हैं। बंगाल की स्नेहलताओं का परिवार चारों ओर बढ़ता जाता है। आज का युवक पैसे का पुजारी बन गया है—प्यार की पूजा नहीं करता। परिवारों में भी तमाशा है—लड़की के बारे में तो सब हां में हां मिलाते हैं किन्तु जब उनके लिए अपने ही युवक बेटे के विवाह का समय आता है तब वे भी उसी प्रकार नीलामी व बोली की बातें करने लगते हैं। सारे ही ऐसे हैं। हिन्दु समाज को अभिशाप लगा हुआ है। इस ओर कोई भी तो ध्यान नहीं देता। अब तो एक और बीमारी भी शुरू हो गई है कि लड़के वाले लड़की वालों को अपने ही शहर में आकर लड़की की शादी करने को बाधित करते हैं। कन्या वाले विवशता में मौन होकर सब कुछ करते हैं। क्या किया जाए? इससे बढ़कर कन्यापक्ष को और सजा क्या दी जा सकती है? बारात का भी क्या कहा जाए। इस युग में भी सौ दो-सौ से भी ऊपर बारात आती है। कितना भयंकर तमाशा हो रहा है। यह बीमारी हिन्दु समाज को निर्बल किये जाती है। कन्याओं के आंसू समाज को छोड़ेंगे नहीं।

आर्य वीरदल ने इसका सुधार करने का बीड़ा उठाया है। उसकी जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। किन्तु परिणाम के बाद ही प्रशंसा होगी। हम तो यह चाहते हैं कि आर्यों के विवाह इतने सादा सरल हो जाएं जिससे लड़कों वालों को अपनी लड़की भार न प्रतीत हो। आज तो लड़कों को देखकर माता-पिता रो देते हैं। हमारा तो यहां तक विचार है कि इस के लिए कुछ सामयिक सुधार किए जाएं—

१—एक तो प्रयत्न किया जाए कि विवाह संस्कार आर्य समाज मन्दिरों में किया जाए। मण्डप विधि प्रमुख हो तथा शेष सजावट गौण हो।

२—बरात जितनी थोड़ी हो उतना ठीक है। लड़के वाले अपने घर में मित्रों को चाहें तो स्वागत सम्मान खाने पिलाने का कर लें। बरात फौज बना कर न ले जावें इतनी थोड़ी बरात हो कि अनुभव हो वे ही।

३—ऊपर के दिखावे पर विशेष काम न किया जावे। यह सब धन का अपव्यय ही है यही पैसा किसी उत्तम काम में व्यय किया जाए।

४—प्रमुख बात यह है कि अपनी जातिपाति के बन्धनों से बाहर निकला जावे। योग्य बच्चे बच्ची का विवाह सदा सफल होगा।

५—दहेज का किसी प्रकार से भी प्रदर्शन न किया जाए। इस से भावना में बिगाड़ होता है। आतिशबाजी व झगड़ा सर्वथा रोक दिया जाए। योग्य युवक-युवति लड़के लड़कियों की List बनाने के लिए एक विशेष अलग विभाग हो जो यही कार्य करे सामूहिक विवाहों को प्रोत्साहन दिया जाए आर्यवीर दल ठोस कदम उठाये तो भारी उपकार होगा—समाज का भला होगा—इस अभियान को चलाए।

—त्रिलोकचन्द

आचार्य जी का अभिनन्दन

आचार्य भगवान् देव जी आर्यसमाज के तपस्वी नेता हैं। उनका त्याग प्रशंसनीय है। जब भी कभी आर्यसमाज ने अपना किसी प्रकार का आंदोलन प्रारम्भ किया है—उसमें माननीय आचार्य जी स्वयं तो नेतृत्व करते हुए शामिल हुए ही हैं—साथ-साथ अपने जीवन-प्रभाव से हज़ारों की सख्या में जनता को भी तैयार करते रहे हैं। अभी-अभी आप विश्व-इतिहास सम्मेलन में रूस गये थे। वहां पर भी आपने इसी तपस्वी वेश में रहकर सबको प्रभावित किया है। आपके लिखे मेरी रूस-यात्रा के स्मरण जन-जीवन में चेतना-प्रेरणा भर देते हैं। हरयाणा के तो आप नेता हैं, भारी प्रभाव है। मद्यनिषेध तथा बूचड़खानों को बन्द कराने के अभियान के आप सेनानी हैं।

आपका सम्मानपूर्वक अभिनन्दन करके एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का इसके लिए बनी समिति ने निश्चय किया है। धन की थैली भी। हम इस समाचार से बड़े प्रसन्न हैं। इस प्रकार के तपस्वी विद्वान्, त्यागी आचार्य जी का अभिनन्दन होना ही चाहिए। यह अभिनन्दन सारे समाज का ही अभिनन्दन होगा, सबको इस पवित्र कार्य में सहयोगी बनना चाहिए।

अब तो आंखें खोलो

भारत सरकार के खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम जी ने चेतावनी दी है कि यदि १०-१५ वर्ष इसी प्रकार ही हरिजनों को ईसाई बनाने का काम जारी रहा तो हमारे देश पर 'ईसाईस्तान' बनाये जाने का दबाव डाला जा सकता है।

श्री मन्त्री जी की इस चेतावनी से प्रतीत होता है कि भारत में ईसाई मिशन कितना कार्य करते हैं। हरिजनों को किस प्रकार कितनी बड़ी संख्या में अपने धर्म से गिरा कर ईसाई बनाया जा रहा है। ईसाईयत का कितना बड़ा खतरा देश में मौजूद है। किन्तु इस ओर ध्यान कौन देवे? सरकार तो अपने आप को धर्म निरपेक्ष कहने में लगी है। भारत का विशाल हिन्दुसमाज आखें बन्द किये हुए है। उसे तो नदियों के मन्दिरों की यात्रा करने तथा पैसे की पूजा करने का ही एक मात्र ध्यान लगा रहता है रह-रह कर सारे देश में आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जिसे अनेक मोर्चों पर रात दिन संग्राम करना पड़ता है। हरिजनों को ईसाई मिशनों के पंजों से मुक्त करने में पूरी शक्ति लगा रहा है। यदि हिन्दुसमाज के धनीमानी लोग आर्यसमाज को इस कार्य में धन से सहायता करें तो भारी काम हो सकता है। आर्य समाज के तपस्वी, सौम्यस्वभावी, विद्वान नेता आचार्य देवप्रकाश जी ने निरन्तर ३० वर्षों से रतलाम, उज्जैन, इन्दौर आदि के भीलों में जो काम किया तथा वहां से ईसाई मिशनों को वापस चले जाने पर विवश किया। इसी प्रकार छोटा नागपुर में स्वामी ब्रह्मानन्द जी जो कार्य कर रहे हैं—उनके सामने सिर झुकता है। आर्य समाज से ही ईसाई मिशन भय खाता है। आर्य समाज हरिजनों को प्रारंभ से ही अपने विशाल परिवार का अंग मान

(शेष पृष्ठ ६ पर)

क्रान्ति की आग

(श्री धर्मदेव जी आर्य द्वारा लिखित)

(गतांक से आगे)

जब चौकी न० तीन में पहुँचे तो पता चला उन्हे किसी ने नहीं बुलाया यह शत्रु की कोई चाल है। वह वहां से दौड़े सभी ने पास से जाती कार देखी जब चौकी में आये तो वहा तीन लाशें पड़ी थी।

सभी को समझने में देर न लगी। कार का पीछा रात के अन्धेरे मे किया गया। परन्तु कार गायब हो गई कोई पता नहीं चला।

लता सवेरे अखबार पढ़ कर अपने पिता कप्तान को सुना रही थी। पिता जी रात तो गजब हो गया वह क्रान्तिकारी चौकी न० पांच की जेल में तीन व्यक्तियों को मार कर फरार हो गये, यह सभी कार्य धोखे से हुआ। सौ आदमियों के पहरे से तीन आदमी निकल भागे। क्यां पिता जी यह सच्च है।

हां! बेटी यह सच्च है। मुझे रात्र ही फोन आ गया था। कमाल है बेटी इन लोगो का सौ सिपाहियो को चकमा दे गए। उनका पुलिस बाल-बाका भी नही कर सकी।

मैं आफिस मे जाता हू बेटी सामने वाले कमरे मे वह मिस्टर अजीत सो रहे हैं। वह लगभग १० बजे उठेगा। उसके भोजन आदि का प्रबन्ध कर देना। जब तक उसे कहीं नौकरी नहीं मिलती वह यही रहेगा।

बहुत अच्छा पिता जी, आप आप चिन्ता न करें।

दस बज चुके थे। अजीत जाग पड़ा ज्यो ही वह कमरे से बाहिर निकला।

कमरे से बाहिर पाच सिपाही उनके सामने खड़े थे। श्रीमान जी आप कब से यहा रहते हैं? आप का क्या नाम है? आप क्या काम करते हैं? जल्दी बताओ हमे तुम्हारे ऊपर शक है।

पास मे खड़ी लता तपाक से बोल पड़ी इन का नाम है मिस्टर नाथुराम, यह यहा एक वर्ष से रहते हैं। यह पुरातत्व विभाग के सक्रिय कार्यकर्ता है। पुरानी चीजों की खोज में दिल्ली से यहा आये हैं। रात दिन खोज मे लगे रहते हैं। हमारे नजदीकी रिश्तेदार भी हैं।

अच्छा आप कप्तान साहेब के रिश्तेदार हैं। क्षमा करना मिस्टर नाथुराम भूल से आप पर शक कर बैठे रात को चौकी न० ५ में आप जैसा तो जवान ही सब सिपाहियो की आंखो मे धूल झौंक गया। हम उसी की खोज में हैं।

सिपाही गये।

अजीत आश्चर्य से 'लता' की ओर देख रहा था। कितनी समझदार हो तुम लता, मैं ऐसी आशा भी नहीं रखता था। मैं कोई उत्तर भी न दे सका तुमने ऐसा सन्तोषजनक उत्तर दिया कि सिपाही चुपचाप चले गये। क्या लता मैं पूछ सकता हूं तुमने यह सब झूठ क्यो बोल दिया? यह सूझ तुम्हे कैसे आई कि मेरा परिचय इस प्रकार दे? तुमने यों क्यों नही कहा यह तो आज से ही यहा रहने लगे हैं।

मैं बच्ची नहीं हूं 'अजीत' मैं समझती हू किस समय किस को क्या उत्तर देना है। आप हमारे महमान हैं अगर मैं ऐसा उत्तर न देती हो सकता है वह किसी शक सन्देह मे आपको परेशान कर देते, यही विचार कर मैंने यह झूठी बात बनाई।

खाना त्यार है आप खा लें पिता जी ने कहा था जब वह सोकर उठे उन्हे भोजन खिला देना। बड़े प्रेम से बनाया है 'अजीत' काश के मैं सदा-सदा तुम्हे यों ही खिलाती रहूं।

चौंकते हुए अजीत ने कहा लता! यह क्या कह दिया तुमने मुझे गलत मत समझना।

मैं समझती थी 'अजीत' तुम यह सुन चौंकोगे तुम्हें मेरा यह प्रस्ताव स्वीकार भी नहीं होगा। परन्तु क्या करू नौजवान भावो को छुपा नहीं सकती, तुम से भीख मागती हूं! मुझे प्यार की भीख दे दो।

'लता' सावधान अगर ऐसा शब्द मुख से निकला तो।

मैं तुम्हारे मुंह से यही शब्द सुनना चाहती थी वह हस पड़ी, एक बार फिर कहो 'सावधान' मुझे बड़ा प्यारा लगता है यह शब्द तुम्हारा 'सावधान'।

अच्छा आप तो नराज हो गये, लो खाना खाओ मैं आगे तुम्हे कुछ नहीं कहूगी।

थोड़ा-सा खाना खाकर, वास्तव में खाना आज प्रेम से बनाया है। क्या तुमने खा लिया है लता या नही?

स्त्रियां पहले पुरुष को खिला कर बाद में आप खाती हैं यह हमारी प्राचीन परम्परा है।

तुम तो बाते करने मे बड़ी चतुर हो अच्छा मैं जाता हू। यह कहकर 'अजीत चला गया। अब वह यही रहता है। लता का प्रेम दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जाता है। रात को लता भी उसका पीछा करती है।

एक दिन शाम को कप्तानसाहब ने अजीतको बताया। क्रान्ति की

ज्वाला सारे देश में जाग उठी, आग की लपटें चारों ओर उठती नजर आ रही हैं, पंजाब बगाल, बिहार उत्तर प्रदेश आदि सभी स्थानों पर क्रान्ति आग धधक रही है।

सारे देश में अंग्रेजों ने मिल्ट्री और पुलीस को तबाह कर दिया। आज यहां शाम काल ६ बजे हमारे बड़े आफिर का भाषण होगा जो एक अंग्रेज है। आज दिल्ली से आया है। उसका स्वागत करना है। यह सदर थाने के प्रांगण में होगा।

चिन्ता न करो साहेब हम तैयार हैं। योजना बन गई, थाने की फाटक के सामने जो चबूतरा है वही से निशाना ठीक बैठेगा।

ठीक छः बजे से अंग्रेज साहेब ने भाषण देना आरम्भ किया। 'कप्तान साहेब व सिपाहियो, टुम लोग देख रहा है। टुम्हारे देश का लोग आजादी मांगता है (अहः हः ह हसता है) सब विद्रोहियो को टुम लोग कुचल डालो, मार डालो, हम टुम्हे आर्डर देता है। विद्रोह करने वालो को टुम गोली से भून,......

अंग्रेज साहेब के आगे शब्द मुंह मे ही रह गए एक गोली उनकी छाती मे लगी, अजीत ने घबराते हुए पीस्टल दाग दी, फड़-फड़-फड़ करती हुई तीन गोलियां और अंग्रेज साहेब को लगते ही शोर मच गया। पास में खड़ी कार कार को स्टार्ट करके 'अजीत' ने फुल स्पीड पर छोड़ दिया, वह सोच रहा था। वह पहली गोली किसकी थी जो, इस अंग्रेज को लगी, मेरा कोई साथी पास था नहीं, और किसी को इस योजना का पता नहीं। वह सोच ही रहा था। पुलिस की गोली चली जो कार का पीछा कर रही थी। गोली कार के टायर मे लगी, कार रुक गई।

अजीत निकलकर भागा। सामने पेड़ की जड़ एक मोटर साईकिल खड़ी थी। चढ़ते ही उसने फुल स्पीड पर छोड़ दी, पुलिस की दो कारें एक मोटर साईकिल अजीत का पीछा कर रही थी। पुलिस की सन-सनाती गोली अजीत के कान को छूती हुई हुई चली गई, दूसरी गोली से मोटर साईकिल का टायर भी फट गया।

अजीत घबरा गया आगे साईकिल पड़ा था उसे उठाकर वह तेजी से दौड़ा परन्तु अब फासला बहुत थोड़ा था। वह घिर गया, चारों ओर सुनसान था अन्धेरा होने लग रहा था, सूर्य अपने प्रकाश को समेटकर

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यसमाज माडल टाऊन जालन्धर में

गायत्री यज्ञ

माघ के महीने मे प्रतिदिन २-३० बजे बाद दोपहर

स्त्री आर्यसमाज माडल टाऊन, जालन्धर प्रति वर्ष माघ के महीने मे गायत्री यज्ञ करती हैं। इसी परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी स्त्री आर्यसमाज यह पर्व इतवार प्रथम माघ २०२५ तदनुसार १४ जनवरी १९६९ से लेकर मगलवार प्रथम फाल्गुन २०२५ तदनुसार १२ फरवरी १९६९ तक बाद दोपहर २-३० बजे गायत्री यज्ञ का आयोजन करेगी। यज्ञ नई यज्ञशाला में होगा जिसे सब बहनों ने तथा विशेषत श्रीमान् जोवराय जी तथा पूज्य माता जी पार्वती देवी जी ने विशेष सहायता देकर इस यज्ञशाला को अवसर पर पूर्ण करा दिया है हम सब बहनें उन के कृतज्ञ हैं। इस लिये सब आर्य नर-नारियों से प्रार्थना है कि इस यज्ञ में सपरिवार सम्मिलित होकर कृतार्थ करें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

अस्तावल को बना गया था। सामने एक मकान का खण्डहर था। अजीत ने सोचा अब मरना तो है ही परन्तु ऐसे क्यों मरूं, दो चार को मारकर तो मरूंगा। वह साईकिल दूर फेंक कर उस टूटी दीवार की आड़ लेकर खड़ा हो गया। अपनी दोनों पिस्टलें सम्भाल लीं। कारों से तथा स्कूटर से उतरकर पुलिस वाले आगे बढ़े।

अजीत की पिस्टलें दग चुकी थी वह धाएं! धाएं! करने लगी। पुलिस वाले सावधानी से वार बचाने लगे। तीन पुलिस वाले काम आए चार अभी शेष थे। दोनों तरफ से वार हो रहे थे। एक गोली अजीत की टांग में लगी वह पार हो गई, खून बहने लगा। परन्तु वीर ने धैर्य नहीं छोड़ा केवल पाच कारतूस शेष थे। इतने में एक कार और आकर वहां रुकी एक नौजवान पीछे से पुलिस वालो पर गोलिया बरसाने लगा, अजीत ने समझा पुलिस वाले और आ गये, खून अधिक बह रहा था उसके पांच कारतूस भी खत्म हो गये थे, वह बेहोश हो गया, तीन पुलिस वाले बचे थे। वह पीछे की ओर भागने लगे परन्तु दूसरे नौजवान का एक २ निशाना ठीक २ लग रहा था। वह तीनों भी वहीं ढेर हो गये।

वह नौजवान खण्डहर की ओर बढ़ा उसने बेहोश हुए अजीत को छाती से लगा लिया, नौजवान रो उठा वह उसे बड़े परिश्रम से खीच कर कार के पास लाया। उसने दवाई निकाली, टांग पर पट्टी की खून बन्द हो गया। और भी छोटे २ कई घाव थे। उनको दवाई से भर दिया।

वह उसे कार मे डालकर बेतहाशा ले उड़ा। सामने एक गांव था। एक मकान के सामने कार रोक दी, वह अन्दर गया। कोई है यहा आवाज लगाई अन्दर से एक नौजवान लड़की आई।

नौजवान ने कहा मुझे पानी चाहिए बहन और इस कार के खड़ा करने के लिए स्थान।

कार सामने वाले मकान में कर दो, ये लो पानी, उस लड़की ने दीपक के प्रकाश में देखा एक नौजवान घायल, बेहोश, दोनो उसे होश में लाने का प्रयत्न करने लगे। कुछ देर के बाद उस लड़की का पिता भी आ गया उसने यह सभी कुछ देखा। वह

क्रांति की आग

घबरा गया अपनी लड़की को डाटते हुए बोला यह कौन हैं लड़की ने रोष से उत्तर दिया। पिताजी अब इस घर की मालिक मैं हूं। मैं किसी को भी यहा ठहरा सकती हू।

बेटी इसके पीछे पुलिस आएगी हमें भी तग करेगी।

आने दो पिता जी चिंता नहीं!

बड़े प्रयत्न के बाद अजीत को होश आया वह अपने आपको एक मकान मे देखकर चौंक पड़ा, मुझे यहां कौन लाया, क्योंकि वहां सुनसान में उसका तो कोई था ही नहीं, फिर अभी सिपाही जीवित थे कारतूस समाप्त हो गए थे।

वह चिल्ला उठा लड़की तुम कौन हो। उसने कहा नौजवान सब बता दूंगी, आराम करो, इतने मे दूसरा नौजवान दौड़ता हुआ आया। क्या इन्हे होश आ गया। हा ?

वह लड़की अजीत की मनमोहनी सूरत अपनी जघा पर रखे एक-टक देख रही थी, मन ही मन कह रही थी, कैसा सज्जिलता नौजवान है। कितना सुन्दर, दिल में आता था इसकी भोली-भाली सूरत को प्यार से एक बार चूम लू।

उसे होश आई सामने बैठे एक नौजवान और एक लड़की को बार-बार वह देख रहा था। उसे यह समझते देर न लगी वह नौजवान कौन है जो उसे यहा उठाकर लाया है।

वह चिल्ला उठा 'लता' तुम! वह लड़की 'लता' शब्द सुन घबरा गई।

तुम्हें कैसे पता लगा मेरा नाम लता है। लता रूपी नौजवान को मौका मिल गया जो पुरुष वेश मे थी। वह बोली, मेरे इस साथी से प्यार करने वाली एक लता थी। तुम्हे देखकर बहन इसे वही याद आ गई फिर अजीत से बोली। मेरे प्यारे नौजवान यह लता को याद करने का समय नही है। आराम से सो जाओ। तुम ठीक नहीं हो।

वह मकान वाली लड़की ज्यो ही उठने लगी वह, उस लता रूपी नौजवान से टकरा गई, शरीर का स्पर्श होते ही वह एकदम ताड़ गई अरे तुम भी लड़की ही हो।

लता ने धीमे से कहा शोर मत मचाओ बहन अब बचा लो तुम्हारी शरण मे हूं।

तुम कौन हो दोनो सच्च बताओ?

बहन हम इस भारत मां के लिए अपने प्राणों की बलि देने को उद्यत देश-भक्त।

मैं समझी चिंता मत करो सभी ठीक होगा। तुम देश के लिए प्राण देने वाले हैं, समझ लो मैं तुम्हारे लिए अपने प्राणों को लुटा दू गी।

बहुत सी पुलिस उस स्थान पर पहुच चुकी थी जहा वह पुलिसमैन खून से लथपथ पड़े तड़फ रहे थे। सभी देख हैरान थे रात मे कार की लीक के सहारे वह उस का पीछा करते हुए चल पड़े।

उसी गाव में पहुचे, उसी मकान के सामने जाकर रुक गए, द्वार खट-खटाया।

कौन है अन्दर से आवाज आई, द्वार खोलो नहीं तो किवाड तोड़ दिये जाएगे।

वह मकान मालिक लता सब समझ गई। वह दोनो लता इकट्ठी थी।

लता ने कहा बहन यह कौन होंगे?

सिपाही?

हा?

द्वार नहीं खुला पुलीस किवाडो को तोडने लगी। दोनो लड़किया पिस्टलें सम्भाल कर खड़ी हो गईं।

मकान मालिक लता ने कहा बहन ऐसे हमदोनो इसनौजवानको नहीं बचा सकेंगी। मेरे मकान का दूसरा बड़ा दरवाजा पिछली ओर खुलता है तुम उससे अपनी कार लेकर फरार हो जाओ।

नहीं बहन ऐसा नही होगा तुम्हे मौत के मुंह मे छोड़ मैं नही जाऊगी।

लता तुम्हे मेरी कसम जो यहा से न जाए। जल्दी करो दरवाजा टूटने वाला है।

अजीत को कार में लिटा कर, दोनो लड़कियो ने एक दूसरे को छाती से लगा लिया। एक प्यार भरा चुम्बन हुआ मूक भाषा मे कुछ कहा और कार मकान से बाहिर हो गई।

दरवाजा टूट गया। पुलिस अदर घुस गई दरोगा चिल्ला उठा पकड़ो-पकड़ो।

पिस्टल को तानते हुए लता ने कहा, सब वहीं खड़े हो जाओ खबरदार जो कदम आगे बढाया तुम कौन हो? क्यों मेरे मकानके किवाड तोड़े? मौत की इन्तजार करो?

दरोगा कुछ कहना चाहता था। परन्तु उस लता की पिस्टल फड, फड, फड़ करनेलगी वह निशाना मारना नही जानती थी, उसने कभी पिस्टल देखी भी नहीं देखीथी,केवल उस कार वाली लता ने उसे तो केवल, उसको चलाने की विधि ही बताई थी।

चार सिपाही फिर भी पड़े हुए अन्तिम श्वास ले रहे थे। परन्तु पुलिस बढ़ी थी। अन्त मे पिस्टल खाली हो गई और उस कोमल लता को पुलिस ने पकड़ लिया। गाव वालों ने पुलिस का मुकाबला करना चाहा परन्तु बिना हथियारो के क्या करते।

पुलिस ने घर का कोना २ छान मारा वहा कुछ भी नही था। लड़की को गिरफ्तार कर लिया गया। उसे पास के थाने मे ले जाया गया। पुलिस अत्याचार करने लगी परन्तु लड़की ने कुछ भी भेद नही दिया।

कमरे मे जब अजीत को होश आई वह अपने उसी कमरे मे लेटा था। लता अपनी गोदी मे रक्खे उसके सिर को सहला रही थी, डा० छः बोतल खून चढा चुके थे। कप्तान साहेब भी पास कुर्सी पर बैठें थे। डाक्टरो के चले जाने पर कप्तान खुशी के मारे उच्छल पड़े मेरी प्यारी लता मेरा प्यारा 'अजीत' दोनो को छाती से लगा लिया। मेरी बेटी तुम्हे कैसे पता लगा था, कि 'अजीत' घायल हो गया।

अजीत हसते हुए बोला। कप्तान साहेब आपकी बेटी 'लता, से पहले क्षमा मांग लूं, मैंने भूल से इन्हे गलत समझा था 'मुझे पता नही था 'यह 'वीणा, रूपी लता एक अग्नि का शोला है। आज समझा चौकीदार को मरने वाली लता है। आफिसर को गोली दागने वाली लता है। मेरे प्राणो को बचाने वाली यही लता है। लता तुम मेरे प्राण हो, मेरा . हो। 'लता ने देखा कप्तान साहेब हसते हुये बाहिर चले जा रहे थे। लता ने मौके का लाभ उठाकर उसको छाती से लगा लिया, एक आलिगन हुआ। पता नही कब दोनो की बाहो ने एक दूसरे को मुक्त किया।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महाशय कुन्दनलाल जी चूनियां वाले

आज से लगभग २० वर्ष से मेरा परिचय महाशय कुन्दनलाल जी के साथ है। मेरा परिचय इनके साथ आर्यसमाज बस्ती गुजां जालन्धर में हुआ। जब मैंने आपके उपदेश सुने तो मुझ पर उन उपदेशों का अति प्रभाव हुआ। महाशय जी का जीवन एक आर्य जीवन है।

५.१.६९ रविवार को आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग के पश्चात कुछ आर्य सज्जनों से बातचीत करने से ज्ञात हुआ कि श्री महाशय कुन्दनलाल जी आर्य जालन्धर का निवास स्थान छोड़कर देहली जा रहे हैं। इनके देहली चले जाने से जालन्धर की समाजों में एक सच्चे आर्य सेवक का अभाव रहेगा। यह ठीक है कि महाशय जी जिस स्थान पर भी रहेंगे। आर्य समाज का कार्य उनके जीवन का ध्येय होगा। देहली निवासियों को उनके जीवन से पूर्ण लाभ उठाना चाहिए। सच्चे कार्यकर्ता के सामने कोई भी क्षेत्र आ जाए वह अपना स्थान स्वयं ही बना लिया करता है। आप देहली में भी अपना स्थान आर्य समाज के क्षेत्र में जालन्धर की तरह सुन्दर और श्रेष्ठ बना लेंगे।

हम आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर की ओर से महाशय जी के कार्यों तथा सेवाओं की सराहना करते हैं। जोकि पिछले बीस या बाईस वर्षों में उन्होंने आर्यसमाज के क्षेत्र में रह कर कीं। परमात्मा से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों। जिससे आप आर्यसमाज की अधिक से अधिक सेवा कर सकें।

मन्त्री—आर्यसमाज विक्रमपुरा,

श्री वैद्य रामस्वरूप जी का देहान्त

यह जानकर दुःख हुआ कि श्री वैद्य रामस्वरूप जी आर्य गांव मकड़ौली जि० रोहतक का दि० ३०.१२.६८ को सायं आठ बजे ७५ की अवस्था में देहावसान हो गया।

श्री वैद्य रामस्वरूप जी अपने गांव के सर्व प्रथम आर्य समाजी थे तथा सम्पूर्ण जीवन अविवाहित ही रहे। यह उनका अनुकरणीय आदर्श था कि उन्होंने पूर्ण जीवन रोगियों की निःशुल्क ही चिकित्सा की। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

अब तो आंखें खोलो

(पृष्ठ ३ का शेष)

कर मले अलापा जा रहा है। और इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन इसी काम में लगा है।

हम हिन्दू समाज के लोगों पर भी, करोड़ पतियों से कहना चाहते हैं कि व भारत में ईसाइयत के खतरे को पहिचानें तथा अपना धन इस ओर भी दें ताकि बाद में केरल या नागालैंड जैसी स्थिति न पैदा हो। आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर भी इस मिशन में चुपचाप बड़ा काम कर रही है। जनता इस काम में सभा की पूरी सहायता करती रहे। तभी कुछ होगा। —स

नम्र निवेदन

प्रिय पुत्र दयानन्द एम० ए० का अभी पता नहीं लगा। इस दुःख में पत्र भेजने वाले भाई-बहिनों की सेवा में निवेदन किया था कि कुछ पता लगने पर सूचना दी जायगी। मैं तो सभा का प्रचारक हूं। आर्यसमाज का सिपाही हूं। मेरी तो सारी शक्ति व बाजू सभा व समाज ही है। मैं ने तो माननीय सभा प्रधान श्री प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल की सेवा में प्रार्थना कर दी है। आर्य नेताओं से निवेदन कर दिया है कि मेरे प्रिय पुत्र के लापता होने के मामले को आप अपने हाथों में लेकर मेरे पथ प्रदर्शक बनें। वे सब लगे हुए हैं—अभी तो साधु आश्रम होशियारपुर में नव युवक बेटा गया बैठा हूं।

त्रिलोक चन्द्र शास्त्री
आर्यप्रादेशिक सभा

उपदेशकों की आवश्यकता है

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर के लिए पांच आर्य महोपदेशकों की शीघ्र आवश्यकता है। आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ उच्चकोटि के आर्य विद्वानों की आवश्यकता है।

एक विद्वान की आवश्यकता है जो विदेशों में जाकर विदेशी भाषा अंग्रेजी आदि में भी उपदेश दे सके जो संस्कृत, हिन्दी के साथ साथ विदेशी भाषाओं का भी ज्ञाता हो। वेतन योग्यता अनुसार दिया जावेगा। निम्न पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

वेदराम
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर

क्रान्ति की आग

(पृष्ठ ५ का शेष)

कप्तान साहेब फिर कमरे में आए। बोले बेटा अजीत उस लड़की को पुलिस पकड़ा सकता नहीं है जिसने तुम्हें शरण दी थी उसे बचाना है।

पिता जी उसका प्रबन्ध मैं करूंगा तुम इनसे कुछ न कहो।

नहीं, बता उसे मैं बचाऊंगा, अजीत ने खड़ा होते हुए कहा कप्तान साहेब ने देखा यह मानेगा नहीं क्या करूं उसने सोचकर कहा तुम दोनो आराम करो मैं प्रबन्ध करूं। फिर जैसा होगा करेंगे।

कप्तान साहेब ने अपने कमरे में जाकर अपनी अलमारी को खोला माऊजर पिस्टल सम्भाले, कारतूस कोट की जेबों में भरे फिर एक फाईल को खोलो वह पढने लगे।

वसीयत नामा

मैं वसीयत करता हू मेरे मरने के बाद मेरी जायदाद के मालिक मेरा दामाद

समाज के समाचार

माननीय श्री देसराजजी भाटिया एम० ए० प्रिंसिपल डी० ए० वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल लेखराम नगर कादियां जब से आर्य हाई स्कूल नाभा से वापस कादियां स्कूल में आए हैं। स्कूल व समाज के कार्य में तो प्रगति हुई ही है। अब स्कूल में प्रति शनि वार को समाज व कुमार सभा का अधिवेशन सत्संग लगता है जिनमें माननीय अध्यापक व कुमार भाग लेते हैं। इसके साथ २ माननीय प्रिंसिपल जी अपनी आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर का भी विशेष ध्यान रखते हैं। इस बार जनवरी शुरू होते ही सभा के वेदप्रचार के लिये प्रेम पूर्वक ५०) रुपए भेंट किए हैं। जब से आए हैं समय समय पर सभा के वेद प्रचार का ध्यान रखते हैं। नाभा में भी यही सभा प्रेम था। बटाला में डी० ए० वी० स्कूल के माननीय प्रिंसिपल युगल किशोर जी एम० ए० का भी सभा को पूरा २ सहयोग मिलता रहता है। गुरदास में माननीय श्री बलदेवसिंह जी भण्डारी एडवोकेट द्वारा डी० ए० वी० स्कूल का भी सहयोग मिलता है। सभा के इस प्यार के लिए धन्यवाद है। इसी प्रकार सभा का ध्यान रखने से प्रेरणा मिलती है।

अजीत और बैठी लता होंगे।

नीचे कप्तान ने अपने हस्ताक्षर देखे। फिर उसे वहीं रख दिया और अकेला ही चल पड़ा। आज वह ऐसे भेष में था कि उसे कोई पहचान नहीं सकता था। कार आकर करीमो वाले के द्वार पर खड़ी थी। एक पत्र निकाल कर दरोगा के पास भेजा। उस पत्र को पढ नीचे पुलिस कप्तान के हस्ताक्षर देख उस लड़की को उनके हवाले कर दिया। और जब पहीं फौज की गाड़ी सड़क, इधर कौन इंस्पेक्टर साहेब कौन बैठ रहे दरोगा जी।

जी हां।

अच्छा उस लड़की को गोली से उड़ा दो और वह कोई भी भेद नहीं देती?

वह तो कप्तान साहेब की चिट के अनुसार लखनऊ भेज दी गई अभी एक मिनट हुआ है।

इन्स्पेक्टर माथे पर हाथ मारते हुए बोला दरोगा तुम मूर्ख हो, उसको किसी ने नहीं बुलाया विद्रोही उसे निकाल ले भागे। कार का पीछा करो उसे पकड़ो नहीं तो तुम भी बच न पाओगे।

फोन की घण्टी बज रही थी। लता ने दौड़ कर उठाया हैलो कौन आप।

मैं पुलिस इन्स्पेक्टर बेटी साहब घर है?

नहीं तो! क्या काम था।

क्या बताऊं बेटी जुल्म हो गया। जो लड़की कल पकड़ी गई थी उसे कोई नकली कप्तान की चिट दिखा कर थाने से ले भागा। पुलिस कार को घेरने वाली है।

टेलीफोन बन्द कर लता दौड़ी अजीत अजीत? क्या है?

(क्रमशः)

आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी समाजों से प्रार्थना है कि वर्ष समाप्त होने को है तो जिन समाजों ने अभी तक अपना दशांश, वेद-प्रचार, दीवाली, शिवरात्रि फण्ड नहीं भेजा वह शीघ्र ही भेजने की कृपा करें।

वेद राम
सभा मन्त्री

आर्य समाज के पत्र-पत्रिकाओं का इतिहास

(डा. भवानीलाल भारतीय, एम. ए., पी. एच. डी.)

आर्य समाज के पत्रों का इतिहास आर्य समाज के इतिहास से भी पुराना है। आर्य समाज की स्थापना १८७५ ई० में हुई जब कि आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रतिपादन मे शाहजहाँपुर के मुन्शी बख्तावरसिंह के सम्पादकत्व मे एक पत्र 'आर्यदर्पण, १८७० ई० मे प्रकाशित हुआ। यह सम्भवत: मासिक पत्र था। इसका प्रकाशन सम्भवत: १९०६ तक होता रहा। इन्हीं मुन्शी बख्तावरसिंह ने १८०६ मे शाहजहाँपुर से ही 'आर्य भूषण' नामक मासिक पत्र निकाला। यह कदाचित दीर्घजीवी नही हुआ। आर्य दर्पण को ही आर्य समाज का प्रथम पत्र मानना चाहिए। इसमे स्वामी दयानन्द तथा काशी के पण्डितो के बीच हुए प्रसिद्ध शास्त्रार्थ का विवरण छापा था। इस पत्र की पुरानी सचिकाओ की खोज होनी चाहिए। मुन्शी बख्तावरसिंह ने एक अन्य पत्र 'अजाब' शीर्षक १८७७ मे निकाला था, परन्तु इसका पूर्ण विवरण उपलब्ध नही होता और नही यह ज्ञात होता है कि इस नाम का क्या अभिप्राय है? कुछ भी हो मुन्शी बख्तावरसिंह ही आर्य समाज के प्रथम पत्रकार कहलाएगे। वे कालान्तर मे वैदिक यन्त्रालय के व्यवस्थापक भी रहे थे और उक्त यन्त्रालय के हिसाब किताब मे गोलमाल करने के कारण स्वामी जी ने उन्हें इस पद से पृथक भी कर दिया था।

१८७९ में भारत सुदशा प्रवर्तक मासिक का प्रकाशन आर्य समाज फर्रुखाबाद के तत्वावधान मे हुआ। पहले इसका नाम भारत दुर्दशा प्रमर्दक या भारत दुर्दशा समर्थक रखा गया था, परन्तु स्वामी दयानन्द ने नाम बदलकर भारत सुदशा प्रवर्तक रख दिया। इसके सम्पादक प० गणेशप्रसाद शर्मा और प्रकाशक कोई रामस्वरूप जी थे। पत्र का आकार १०×६। तथा वार्षिक मूल्य २ रु० था। प० वरदेव शास्त्री लिखित आर्यसमाज के इतिहास द्वितीय भाग के अनुसार) स्वयं स्वामी जी ने इस का सम्पादन कुछ दिन तक किया था, यह तथ्य भी गवेषणीय है। इसमे स्वामी जी के कई लेख भी छापे थे। १९०६-७ में यह कुछ दिनो तक साप्ताहिक के रूप में भी छापा।१ तब इसके व्यवस्थापको में बाबू गुलराज गोपाल गुप्त२ व प० राम दुलारे, बाबू ज्योति प्रसाद आदि थे। प० गणेश प्रसाद शर्मा आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध लेखक थे। उन्होने फर्रुखाबाद का इतिहास तथा अन्य कई ग्रथ लिखे हैं। सुदशा प्रवर्तक लन्दन के हिन्दी प्रेमी फ्रेडरिकपिंकार, श्रीमती अरुण्डेल तथा आर्यसमाज लन्दन को भी भेजा जाता था। इसकी एक पुरानी फाइल आर्यसमाज व्यावर के पुस्तकालय मे है।

१८८२ मे अजमेर से मुन्शी मुन्नालाल शर्मा के सम्पादकत्व मे देशहितैषी मासिक पत्र प्रकाशित हुआ, यह लीथो पर छापता था। इसका आर्यसमाज से सम्बन्ध सदिग्ध है, परन्तु यह धर्म सम्बन्धी पत्र ही था। १८८४ में कानपुर से हीरालाल नामक किसी सज्जन ने वेद प्रकाश साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। बाजपेयी जी के अनुसार १८९७ मे यही पत्र प० तुलसीराम स्वामी के सम्पादकत्व मे स्वामी प्रेस, मेरठ से निकलने लगा। प० तुलसीराम स्वामी के निधन के पश्चात उनके अनुज छुट्टनलाल स्वामी इसे निकालने रहे। यह अपने युग का प्रसिद्ध सैद्धातिक पत्र था। आर्यसमाज मे जिस समय कर्णव्यवस्था को लेकर 'ब्राह्मण-बाबू' विवाद छिड़ा, उस समय इस पत्र ने तथाकथित ब्राह्मणवाद का समर्थन करते हुए महात्मा मुन्शीराम तथा मुन्शी नारायणप्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) आदि अब्राह्मण आर्य नेताओ की आलोचना की तथा प० अखिलानन्द शर्मा का पक्ष लिया। जब प० भीमसेन शर्मा आर्य समाज से पृथक होकर इटावे से ब्राह्मण सर्वस्व का सम्पादन करते हुए आर्यसमाज पर आक्षेप करते थे, उस समय इस पत्र ने प० भीमसेन का मुहतोड उत्तर देने का नियम बना रखा था। इस मासिक की ग्राहक सख्या सवत् १९७६ मे १००० के लगभग थी।१ आर्यसमाज मेरठसे आर्य समाचार मासिक पत्र १८८५ में छापने लगा। इसे गगासहाय और कल्याणराय नामक सज्जनो से विद्या दर्पण प्रेस से निकाला था। बाद मे मेरठ के प्रसिद्ध आर्य विद्वान प० कासीराम जी निकालने लगे। १८८५ मे ही मुरादाबाद से आर्य विनय प्रकाशित होने लगा। प० रुद्रदत्त सम्पादकाचार्य इसके सम्पादक थे। यह पत्र अधिक दिनो तक नही चल सका।

आषाढ स. १९४४ वि. (१८८७) से स्वामी दयानन्द के शिष्य प० भीमसेन शर्मा ने 'आर्य सिद्धात' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। स्वामी जी के अन्य शिष्य प० ज्वालादत्त शर्मा भी इसके सम्पादन मे प० भीमसेन के सहयोगी थे। यह प्रयाग के वैदिक यन्त्रालय मे प्रकाशित होता था, परन्तु कालान्तर मे इसे प० भीमसेन शर्मा अपने निजी सरस्वती यन्त्रालय मे छापने लगे थे। पौराणिको द्वारा किए गए आक्षेपो का विद्वत्तापूर्ण समाधान इस पत्र की विशेषता थी। डा० लक्ष्मी नारायण गुप्त का यह कथन समीचीन नही जान पडता कि यह पत्र परोपकारिणी सभा की ओर से निकलता था। वैदिक यन्त्रालय मे छापने मात्र से ही इसे प्रकाशित सभा का मुखपत्र नही माना जा सकता। यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि प० अम्बिका-प्रसाद बाजपेयी ने अपने ग्रन्थ 'समाचार पत्रो के इतिहास' में इस महत्व-पूर्ण पत्र की चर्चा नही की। कालान्तर मे प. भीसेनन का सरस्वती यन्त्रालय प्रयाग से इटावा आ गया था तथा आर्य सिद्धात भी इटावे से ही छापता था। प० भीमसेन के मत परिवर्तन कर लेने पर उनका सनातनी पत्र ब्राह्मण सर्वस्व भी इटावे से ही प्रकाशित होता था। (क्रमश.)

---

१. समाचार पत्रो का इतिहास-अम्बिका प्रसाद बाजपेयी पृ० १५०

२. इस पत्र का विशिष्ट परिचय आर्य मित्र-हीरक जयन्ती अंक में इन्हीं पंक्तियों के लेखक ने दिया है।

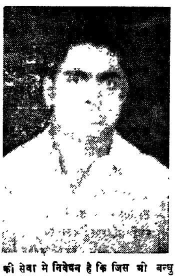
१. यह समय बाजपेयी जी के अनुसार है। फर्रुखाबाद के इतिहास में साप्ताहिक होने का काल १९१२ जुलाई बताया है।

२. दिल्ली के वर्तमान महापौर श्री हसराज गुप्त के पिता।

१. वेदप्रकाश का विशिष्ठ परिचय परोपकारी (अजमेर) मे इन्ही पक्तियो के लेखक ने लिखा है।

श्री त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री के सुपुत्र दयानन्द जी एम. ए. का अचानक गुम हो जाने का दुखद समाचार

यह समाचार सभी को जानकर अति दु:ख होगा कि श्री प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री आर्य प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध महोपदेशक के सुपुत्र श्री दयानन्द



जी एम० ए० एक मास से ला पता हैं। जिनका यह चित्र है, आज तक उनका कही भी, तनिक भी पता नही चल सका, साधुआश्रम होशियारपुर से यह नौजवान २ नवम्बर से गुम है। क्या हुआ, कहा गया, किस ओर गया, कुछ भी भेद नही चल रहा। शास्त्री जी रात दिन दौड धूप कर रहे है, सभी मित्र खोज में लगे हुए हैं। सभा के सभी व्यक्ति इस दु.ख मे दुखी हैं। मेरा सभी आर्य बन्धुओं की सेवा मे निवेदन है कि जिस भी बन्धु को श्री दयानन्द एम० ए० के बारे में कहीं से कोई भेद लगे तो तुरन्त सभा को सूचना कर दें हम सभी उनको खोजने के प्रयत्न मे लगे हैं। परमात्मा करे कि हमारा यह नौजवान कहीं सुख पूर्वक हो। आशा है सभी समाजो व संस्थाओ के अधिकारी हमारी इस कार्य मे सहायता करेगे। सभी बन्धु अपने-अपने आस-पास के स्थानों पर खोज करने का प्रयत्न करे। यही सभी से निवेदन है।

—निवेदक—वेदीराम

मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, जालन्धर

मानव और मानवता

(पृष्ठ २ का शेष)

तीसरी बात क्या कहता है सूर्य ? यह कि सब को प्रकाश दो। परन्तु यह प्रकाश वह कैसे देता है ? कहीं से दीप या मशाल मांग कर वहीं लाया वह। वह स्वयं प्रकाशमान है, अतः दूसरो को प्रकाश देता है। सूर्य के पीछे चलना है तो पहले अपने अन्दर प्रकाश उत्पन्न करो, फिर दूसरो को प्रकाश दो। दान वह कर सकता है जो स्वय धनवान् हो। पहले धनवान् बनो, मन मे उदारता को जगाओ, फिर दानी बनकर दूसरो के कष्टों को दूर करो। जिसके अन्दर ज्योति है वही दूसरों को भी ज्योति दे सकता है। और यह ज्योति आपके अन्दर वर्तमान है—

स्वर्गो ज्योमिषावृतः।

ज्योति से जगमगाता हुआ सूर्य आपके अन्दर है। वेद भगवान् कहता है—

अष्टाचक्रा नवद्वारा,
देवाना पुरयोध्या।
तस्यां हिरण्यः कोशः
स्वर्गो ज्योतिषावृतः॥

आठ चक्रो, नव द्वारा वाली यह देवताओ की नगरी अयोध्या है मनुष्य का शरीर। इसके अन्दर देवता निवास करते हैं। इसी के अन्दर स्वर्ण के समान देदीप्यमान ज्योति से पूर्ण स्वर्ग है। इस ज्योति को जगाओ, इसके द्वार खोलो, अन्दर चलो। इस ज्योति से अपने आपको प्रकाशित करो। तब तुम ऐसे योग्य हो जाओगे [illegible] को प्रकाश दे सको।

[illegible]री बात क्या कहता है सूर्य ? [illegible]नुष्यके जीवनमें उत्थान-पतन अवश्य आते हैं। सुख के चमकते हुए दिन भी आते हैं, दुःख और विपत्ति के काले दिन भी आते हैं। सूर्य कहता है—दुःख के, विपत्ति के काले दिनों से घबरा न जाना। वर्षा ऋतु में घनघोर काली घटाएं आती हैं, सूर्य उनके पीछे छिप जाता है, कई-कई दिन लोग उसे देख नही पाते। ऐसे भी दिन आते हैं जब मध्याह्न के समय इतना अन्धकार हो जाता है कि दीप जलाने पड़ते हैं। परन्तु उन बादलों के पीछे खड़ा हुआ सूर्य कहता है—मानव ! दुःख से, काले दिन से घबरा नहीं, ये सदा रहेगे नही। एक न एक दिन ये घटाए टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी, ये बादल बिखर जाएंगे और मैं फिर चमकूंगा। तेरे लिए भी हो सकता है कि काले दिन आ गये हैं, दुःख की घनघोर घटाए घिर आई हैं, तो चिन्ता न कर, निराशावादी न बन। अच्छे दिन नहीं रहे तो काले दिन भी नही रहेंगे।

यह बात किस शक्ति से कहता है ? आत्मविश्वास की शक्ति से। उसे ज्ञात है कि इन बादलो की शक्ति कोई शक्ति नहीं। मेरे अन्दर वह शक्ति है कि मैं उनको समाप्त कर दूंगा। यह आत्म विश्वास यह मानसिक बल अपने अन्दर उत्पन्न करो। विश्वास रखो कि विपत्ति आती है तो जाती भी है। घबराओ नहीं, अपने ससार के तुम स्वय स्वामी हो। स्वय वेद भगवान भी कहता है—

स्वय वाजिस्तन्व कल्पयस्व
स्वय यजस्व।
स्वय जुषस्व महिमा
ते अन्येव न सन्निशे॥

कितना महान् सन्देश भगवान् कहते हैं—क्यों रे मानव, क्यो रे नवयुवक ! क्या बनना चाहता है ? प्रधानमन्त्री बन जाए ? यह सब सम्भव है, परन्तु इसके लिए तुझे स्वयं ही यत्न करना होगा। स्वयं यज्ञ करना होगा, अपने आपको आहुति बनाकर उसमें डाल देना होगा। तब तुझे प्रत्येक वह वस्तु प्राप्त होगी जिसे तू चाहता है।

इसके बाद क्या कहता है सूर्य ? यह कि—भूतल पर जहां भी कहीं जल होता है, उसे मैं अपनी किरणों द्वारा ऊपर खींच लेता हूं। परन्तु ऐसा करने के पश्चात् उसे अपने पास नहीं रखता, पृथ्वी को वापिस दे देता हू, तुम भी ऐसा करो। धन कमाओ अवश्य, यथेष्ट कमाओ। वेद में प्रार्थना आती है—स्याम पतयो रयीणाम्—हे भगवन्, मैं धन-धान्य के भण्डारो का स्वामी बन जाऊं। वेद-उपनिषद् धन कमाने से नही रोकते। भरपूर धन कमाओ, परन्तु उस मे डूब न जाओ। जैसे सूर्य कमाये हुए जल की वर्षा करता है, उसी प्रकार तुम अपने धन की वर्षा करो जिससे समाज, देश और मानव सुखी हो। यदि तुम ऐसा नही करतें तो तुम्हारा धन पाप है। धन की सफलता कमाने और अपने लिए व्यय करने में नही, अपितु दूसरो के लिए, शुभ कार्यों में व्यय करने में है। वेद की वाणी है—

मोघमन्न विन्दते अप्रचेताः सत्य
ब्रवीमि वध इत् स तस्य।
नार्यमण पुष्यति नो सखाय
केवलाघो भवति केवलादी॥

कमा कर अकेले न खाओ। जो कमा कर अकेला खाता है, वह पाप खाता है। यह सत्य है, इसमें कोई सन्देह नही है।

फिर सूर्य कहता है कि यदि तुम मेरे पीछे चलना चाहते हो तो मेरे समान मलिनता का नाश करो। जहां सूर्य का प्रकाश नही पहुचता, वहां रोगों के जीवाणु उत्पन्न हो जाते हैं। तुम यदि मानव बनना चाहते हो तो देश, जाति, समाज के जीवाणुओं को नष्ट करने की शक्ति उत्पन्न करो। पाप, अत्याचार तथा अन्याय के सामने झुको नहीं, इनको नष्ट कर दो। इसके साथ ही सूर्य एक बार और भी सिखाता है। सूर्य की किरणें मलिनता को नष्ट करती हैं, परन्तु स्वय मलिन नहीं होतीं। समाज, देश, जाति को हानि पहुचाने वाले तत्वो को नष्ट करो अवश्य, परन्तु स्वय उनके शिकार न हो जाओ। कई लोग सुधार का कार्य आरम्भ करते हैं, सुधार होता नहीं, स्वय ही बिगड़ जाते हैं। वह तो सूर्य के पीछे चलना नहीं है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम. ए. पी. एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलापरोड जालन्धर तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधी सभा जालन्धर पंजाब

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

फोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No P

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक ४) ११ माघ २०२५ रविवार – दयानन्दाब्द १४४–२६ जनवरी १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

द्युमत्तमं रयिं दाः

हे प्रभ व ! हमे द्युमत्तमम् उज्ज्वल शोभा से भरी हुई रयिं धन-लक्ष्मी विभूति को दा—प्रदान करो। भगवान से धन की प्रार्थना की जाती है। इसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न भी किया जाता है। वेद भगवानका उपदेशहै कि पाप का काला धन न आए। बुरे साधनो से सम्पत्ति न कमाई जाए। धन ऐसा हो जो सदा चमकता हो पवित्र हो। उत्तम व शुद्ध साधनो से कमाया गया हो। पाप से कमाया काला धन जीवन को काला कर देता है। असुर बना देता है। धर्म से आया धन देवता व मनुष्य बना देता है। इसलिए उज्ज्वल धन मिलता मिलता रहे।

यजुर्वेद स

वेदामृत

हमारे कल्याण रक्षक प्रभु

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये

ऋ० १।२९।५॥

पदार्थ–(वयम्) हम लोग (अव से) अपनी रक्षा के लिए (तम्) उस (ईशानम्) ईश्वर की जो (जगत तस्थुष पतिम्) जगम और स्थावर का स्वामी (धियम् जिन्वम) बुद्धि का प्रेरक है उसकी (हूमहे) प्रार्थना करते है वह (पूषा) पोषक ईश्वर (न) हमारे (वेदसाम्वृधे) धनो की वृद्धि के लिए (असत) होवे तथा (अदब्ध) किसी से न दबने वाला (स्वस्तये) हमारे कल्याण के लिये (रक्षिता) रक्षक और (पायु) पालक (असत्) होवे।

भावार्थ–सब चर और अचर के स्वामी परमेश्वर की हम प्रार्थना उपासना करते हैं, कि वह हमारी बुद्धियो को शुभ मार्ग मे लगावे, और हमारे तन, धन की रक्षा करें, हमारे कल्याण का रक्षक तथा पालक हो, क्योंकि उस प्रभु की कृपा दृष्टि के बिना, न हमारा तन और धन सुरक्षित हो सकता है, और न ही हमें कल्याण प्राप्त हो सकता है, इसलिये इस लोक और परलोक मे कल्याण प्राप्ति के लिये, उस जगत् पति परमात्मा की हम लोग प्रार्थना उपासना करते हैं॥

ऋषि दर्शन

जन्माद्यस्य यतः

यत – जिस ब्रह्म से जन्म आदि इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय होते हैं अस्य-इस जगत् की। वह ब्रह्म है।

मुनिवर व्यास जी ने अपने वेदान्त शास्त्र मे कहा है कि ब्रह्म ही इस सारे विश्व का कर्ता है धर्ता है और संहर्ता है। उसी के सुन्दर नियमो मे यह सारा ब्रह्माण्ड काम कर रहा है। प्रभु ही विश्व का कर्ता है। बिना चेतन शक्ति के जड़ प्रकृति किस प्रकार नियमो मे काम कर सकती है। कर्ता के बिना कार्य कैसे होगा। जड वस्तु स्वय भी कार्य करने में सर्वथा असमर्थ है। ब्रह्म ही इस विश्व का उत्पादक है। वही धारक और मारक है।

वेदान्त दर्शन

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी एच० डी० (सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

आर्य समाज के पत्र-पत्रिकाओं का इतिहास

(डा. भवानीलाल भारतीय, एम. ए., पी. एच. डी.)

(गतांक से आगे)

१८८७ मे ही कलकत्ता से आर्यावर्त साप्ताहिक प्रकाशित होने लगा। १८९१ में प. क्षेत्रपाल शर्मा इसके सम्पादक थे। १८९७ मे यह रांची से छापने लगा और १८९८ मे दानापुर से निकलने लगा। इसके सम्पादक प. रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य तथा बाबू बाल कृष्णसहाय, वकील, तत्कालीन प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा बगाल व बिहार भी रहे। पत्र का आकार १२×१८ तथा यह ८ पृष्ठो मे छापता था। स, १९७६ वि. मे इसके सम्पादक काव्य तीर्थ श्याम जी शर्मा नामक कोई सज्जन थे तथा यह मासिक रूप में पटना से प्रकाशित होता था। १९२९-३० तक यह पत्र आर्य प्रतिनिधिसभा बिहार के मुखपत्र के रूप मे पटना से छपता था। उस समय इसके सम्पादक पं. भवानीदयाल सन्यासी थे। विस्तृत परिचय के लिये देखो—आर्यमित्र २४ और ३१ जुलाई के अको मे आर्य समाज रांची के मंत्री श्री दयाराम जी के लेख।

'भारतभगिनी' शीर्षक एक महिला सुधार पत्रिका थी आर्यसमाज लदनके संस्थापक प्रसिद्ध पंजाबी आर्यसमाजी नेता बैरिस्टर रोशन लाल की पत्नी श्रीमती महादेवी इसकी सम्पादिका थी। डा. रामरतन भटनागर के अनुसार इसकी सम्पादिका हर देवी थी। यह मासिक पत्रिका सरस्वती प्रेस, प्रयोग से प भीमसेन शर्मा द्वारा मुद्रित होकर प्रकाशित होती थी। प्रकाशन काल १८८८ है। पहले इसकाआकार १०×६ तथा वार्षिक मूल्य १ रु. था। इसी वर्ष यह लाहौर चली गई, तब इसका आकार १०×७॥ तथा वार्षिक मूल्य २ रु. हो गया। कालांतर मे यह पाक्षिक हो गई और इसकाशुल्क १ रु. ९ आना रहा। १९०६ तक यही अवस्था रही।

वैदिक यत्रालय के व्यवस्थापक मुन्शी समर्थदान ने १८८९ मे अजमेर से 'राजस्थान समाचार' पत्र साप्ताहिक रूप मे निकाला। इसका वार्षिक मूल्य ३॥ रु था तथा यह दो रायलशीट के १६ पृष्ठो में निकलता था। बाबू राधाकृष्णदास ने १८८४ मे 'हिंदी पत्रो का इतिहास' लिखते हुए इसे आर्यसमाज का पत्र लिखा है। बाबू बालमुकन्द गुप्त ने जीवन के अन्तिम काल मे मुन्शी समर्थदान के विचारोंमें परिवर्तन होने की सूचना दी है, परतु आर्यसमाज के इतिहास से इस बात की पुष्टि नही होती। मुन्शी की मृत्यु पर्यन्त स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के अनुयायी बने रहे।

परोपकारिणी सभा का मासिक मुख पत्र परोपकारी' १९९० में प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रथम लेखक फ्रान्सीसी विद्वान तासी तथा डा० राम रत्न भटनागर के अनुसार यह सर्व प्रथम आगरा से निकला, परन्तु यह तथ्य गलत है। स्वामी दयानन्द के परलोक वासी होने के पश्चात परोपकारिणी सभा तथा वैदिक मत्रालय का मुख्यालय अजमेर ही था। आरम्भ मे यह १६ मास चलकर बद हो गया। १९०६ मे यह पुन: अजमेर से छापने लगा। तब इसके सम्पादक प्रसिद्ध साहित्य समालोचक प.पद्मसिंह शर्मा थे। शर्मा जी के पश्चात वैदिक मत्रालय के व्यवस्थापक प. हरिश्चन्द्र त्रिवेदी इसका सम्पादक करते रहे। १९०८ तक चलकर यह बन्द हो गया। पुन: परोपकारिणी सभा ने इस १९५९ मे छापना प्रारम्भ किया है। अब यह डा० मानकरण शारदा व श्री करण शारदा के संयुक्त सम्पादन में अजमेर से प्रकाशित होता है।

स्वामी दर्शनानन्द ने जब पूर्व आश्रम में प. कृपाराम के नाम से विख्यात थे, काशी मे तिमिर नाशक प्रेस की स्थापना की तथा वहां से तिमिर नाशक पत्र प्रकाशित किया। इसका प्रथम अक ३० जून १८९० को प्रकाशित हुआ था। इस पत्र का आदर्श वाक्य यह दोहा था—

स्वारथ भारत मे बस्यो
जीवन भयो अकाज।
खोयो कुमति विलास ने
धर्म जीव और लाज॥

इसी वर्ष आर्य समाज खोरी (उत्तर प्रदेश) की ओर से 'ब्रह्मावर्त' पत्र प्रकाशित हुआ। यह आर्य भास्कर प्रेस मे छापता था।

आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) का साप्ताहिक मुखपत्र आर्य मित्र १८९८ में प्रकाशित हुआ। डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त ने तासी के हवाले से इसका प्रकाशन काल १८९७ माना जो गलत है। प्रारम्भ में इसका प्रकाशन आर्य भास्कर प्रेस, मुरादाबाद से हुआ। पुन: यह आगरे से निकला १९०८ में पं० नन्दकुमारदेव शर्मा इसके सम्पादक थे। वर्षों तक पं० रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य भी आर्य मित्र का सम्पादन करते रहे। १९२५ में यह दैनिक हुआ। हरिशंकर शर्मा के सम्पादन काल में आर्य मित्र की बहुत उन्नति हुई। इसके अन्य सपादकों में प बदरी दत्त शर्मा, पं० शिवशंकर शर्मा काव्य तीर्थ प लक्ष्मीधर वाजपेयी आदि के नाम उल्लेखनीय है। १९५५ में आर्य मित्र प्रकाशन लिमिटेड कम्पनी की स्थापना की गई थी और पं० भारतेन्दु नाथ के सम्पादन में यह दैनिक भी निकला, परन्तु पर्याप्त घाटा खाकर इसका दैनिकरूप पुन: बन्द कर देना पड़ा। साप्ताहिक रूप यथापूर्व चल रहा है। एक बार पुन: प० हरिशंकर शर्मा इसके अवैतनिक सम्पादक बने। प० उमेश चन्द्र स्नातक ने वर्षों तक इसका अवैतनिक रूप से सम्पादन किया। प.धर्मपाल विद्यालकार प० शिवदयालु, पं० भगवत्शरण, प० सच्चिदानन्द शास्त्री, प० विक्रमादित्य वसन्त आदि सभा के अधिकारी समय-समय पर इसके सम्पादन मे सहयोग करते रहे। आजकल सभा के मन्त्री प० प्रेमचन्द शर्मा सम्पादक है।

मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आर्य सेवक १९०० ई० मे प्रकाशित होने लगा। पहले यह पाक्षिक रूप में छापता था। आकार १३×९ और वार्षिक मूल्य १॥) रु० था। इसके सम्पदक थे प० गणेशप्रसाद शर्मा जो भारत सुदशा प्रवर्तक के सम्पादक रह चुके थे। १९०९ मे यह मासिक रूप में प्रकाशित होने लगा। प्रारम्भ में यह नरसिंहपुर से छापता था अब यह नागपुर से निकलता है और स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती इसके सम्पादक हैं। पाचाल पण्डिता नामक कन्या महाविद्यालय जालन्धर का मुखपत्र १५ नवम्बर १८९७ में प्रकाशित होने लगा। इसके प्रारम्भिक सम्पादको मे महाविद्यालय के सस्थापक लाला देवराज थे। स्त्री-जाति को जागृति और उन मे विद्या का प्रचार इस पत्रिका का मुख्य लक्ष्य था। डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त के अनुसार इसका वार्षिक १॥ रु० था, जबकि वाजपेयी के अनुसार २) रु० था। इस में अंग्रेजी के भी चार पृष्ठ होते थे। १५ अप्रैल १९०५ से यह पत्रिका पूर्ण रूप से हिन्दी में छापने लगी। १ जुलाई १९०१ से इसमें अन्तिम चार पृष्ठ छोटी बालिकाओं के लिये 'सुकुमारी' के नाम से छापने लगे। जनवरी १९०३ से श्रीमती सावित्री देवी का नाम उप-सम्पादिका के रूप प्रकाशित होने लगा। १९०५ से इस में आर्थिक घाटा होता रहा, परन्तु येन केन प्रकारेण पत्रिका चलती रही। पंजाब के शिक्षा संचालक ने इसे राजकीय पाठशालाओं में क्रय किये जाने की आज्ञा प्रदान कर दी थी। सम्भवत: १९१३-१४ तक यह चली।

१९०२ मे मासिक अनाथ रक्षक अजमेर के श्रीमद् दयानन्द अनाथालय से प्रकाशित होने लगा। सेठ मांगी लाल कवि किंकर इसके सम्पादक थे। इसका आकार ९॥×६। और वार्षिक मूल्य १ रु० था। इसी वर्ष पजरोम जिला जबलपुर से 'आर्य वनिता' साप्ताहिक पत्रिका निकली। इसका विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नहीं होता। (क्रमश:)

ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा का आयुर्वेदिक कालेज

श्री आचार्य भगवानदास डी० ए० वी० कालेज अम्बाला नगर,

आर्यसमाज के प्रसिद्ध पत्र आर्यजगत में कुछ समय पूर्व यह समाचार छपा था कि टंकारा का आयुर्वेदिक कालेज बन्द हो चुका है। दिल को दु:ख हुआ परन्तु इस बात को आगे जानने के लिए मन में इच्छा रही। अब देहली के एक नेता ने इस बात की पुष्टि कर दी है। सुना है कि टंकारा ट्रस्ट का रुपया किसी को ब्याज पर दिया गया था। वह खतरे मे है। इसलिए कालेज बन्द कर दिया गया है। टंकारा पत्र लिखा था पर उत्तर नहीं मिला। जो भाई वास्तविक स्थिति जानते हों वह आर्य जगत को पूरी जानकारी दें। मेरा तो आरम्भ से ही यह विचार रहा है कि ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि ही हमारे लिए महत्व की नहीं जितना कि ऋषि दयानन्द का मिशन। स्थान आर्य समाज के लिए इतने पवित्र नहीं जितने कि शुद्ध विचार। किन्तु जब जन समूह से धन इकट्ठा किया जाए तो हमारा अधिकार है कि उसकी पूछताछ करें।

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, २६ जनवरी, १९६९ अंक ४

जीवन में बसन्त

बसन्त प्रतिवर्ष आकर अपना एक विशेष सन्देश देता है कि निराशा को अपने समीप कभी मत आने दें। प्रकृति में धूप-छाया मिलकर आते रहते हैं। प्रसाद और विषाद का चक्र चलता ही रहता है। बसन्त के पूर्व शिशिर का मौसम है। शिशिर का अर्थ ही है हिंसा करने वाला। यह लताओं, वृक्षों एव पौधों के पुष्प-पत्र रूपी सम्पत्ति की हिंसा कर देता है। उन सबको पुष्पहीन व पत्रहीन बनाकर शोभा से हीन करके रख देता है। अत्याचारी नृप के समान पतझड़ भी सारे बन, उपवन मे अपना प्रभाव जमा कर उन्हें श्रीहीन कर देता है। किंतु प्रभु की सृष्टि मे सब की सदा नही चलती और बनती। विश्व मे परिवर्तन चलता ही रहता है। राजनीति के विशाल क्षेत्र मे ही सामने देख लीजिए कि कल के ऊंचे आसन पर बैठने वाले आज किस स्थान पर खड़े हैं? अन्यायी का अन्याय तथा अत्याचारी का अत्याचार सदा काम नहीं कर सकता। भगवान् के इस सरकने वाले संसार में कभी छाया है तो कभी धूप भी आ जाती है। यदि कभी रात्रि है तो प्रभात की वेला भी निश्चित रूप से आती है। किसी का भी तो समय एक-सा नही रहा है और न रह सकता है। इस-लिए निराशा को समीप मत आने दें। पत्र और पुष्पों से हीन हो जाने के बाद उनके लिए बसन्त का मौसम आता है। पहले से भी अधिक सुन्दर पत्ते-पल्लव उनको प्राप्त हो जाते हैं। उनका भण्डार भर देता है। प्रकृति के शरीर में फिर से रूप-लावण्य आता है। चारों ओर आनन्द मस्ती का वातावरण पैदा कर देता है। एक नया युग ला देता है। बसन्त इसी लिए बसन्त है। जीवन देने के नाते इसे राजाबसन्त माना है। सारे विश्व के महाकवियों ने अपनी-अपनी भाषा के काव्यों में इस के गीत गाये हैं। भारतीय महान् कवियों ने तो बसन्त का चित्र-चित्रण करने में सब का पथप्रदर्शन किया है।

प्रकृति मे तो बसन्त आ गया है। बसन्त का ऋतु प्रारम्भ हो चुका है। सब कुछ खिलने-मुस्काने लगा है। चारो ओर बसन्त की छटा है। किन्तु प्रश्न यह है कि प्रकृति के साथ जीवन मे भी एव सारे समाज के विचारो मे भी बसन्त आया है या नही? यदि समाज के जीवन मे विश्वास की भावनाएं पैदा नही हो सकी। निराशा की भीषण बदलियां नही साफ हुई? उल्लास एव साहस की तरगें ठाठे नही मारने लगी। कार्यों मे उत्साह व लगन का जोश नही है—तो फिर काम कैसे चल सकेगा? निराश जीवन किस काम का?

भारतीय सभ्यता मे निराशा के लिए किसी प्रकार का भी स्थान नही है। उत्साह काम की सफलता की कुञ्जी है। वैदिक संस्कृति तो जीवन-विश्वास की संस्कृति है। कष्ट क्लेश का शिशिर किस व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र के जीवन-वृक्ष पर नहीं आया। किन्तु इसके बाद बसन्त भी आया जिसके द्वारा उस व्यक्ति और समाज के जीवन मे सब कुछ आ गया। आर्य समाज के सारे इतिहास को देखिये। समय-समय पर पतझड़ ने आकर अपना निर्दयी चक्र चलाने मे कौन सी न्यूनता रखी? विपत्तियों की काली २ भयकर घटाएं इसके सिर पर चारो ओर से घिर २ कर आ गईं। अत्याचार का दमन चक्र कितने वेग से चला कौन सा अन्याय या आतक है जो आर्य समाज को समाप्त करने के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ? किन्तु बसन्त के आगमन पर विश्वास करने वाले आर्य समाज ने कभी निराश होना सीखा ही नहीं। हर पतझड के बाद नवीन २ उत्साह के पल्लवो से भरपूर हो गया। इतने थोड़े समय में जितने बलिदान आर्य समाज ने दिए, इतने किसने दिए? जितना अत्याचार इसके साथ किया गया, इतना किसके साथ हुआ? किन्तु हर परीक्षा मे कुन्दन बनकर निकला। प्रत्येक शिशिर के बाद बस श्री जीवन को प्राप्त किया।

अब फिर ऋतुराज बसन्त का मौसम अपना आशावाद का सन्देश लेकर आया है। आज आर्यसमाज का पथ बड़ा कण्टक भरा है। बड़ी-बड़ी बाधाएं हैं। चारो ओर विरोधियो का समूह है। इसके पास साधन कम हैं। किन्तु वेद को मानने वाला आर्यसमाज बसन्त के आगमन पर अपने जीवन मे आशा-विश्वास को और भी नित्यप्रति पक्का करता जाये। इसके जीवन मे सफलता के सुमन खिलेंगे और निश्चित रूप मे खिलेंगे। अभी समाज ने बड़ा काम करना है। चारो ओर अश्लीलता का नगा नाच हो रहा है। नगापन हर क्षेत्र मे अपना प्रभाव जमा रहा है। भौतिकवाद का बोल-बाला है। धर्म को इस समय धन ने बुरी तरह दबा लिया है। चारो ओर धन की पूजा होती है। धर्म और धर्म वालो को कोई भी नहीं पूछता। भारतीय विचारधारा से मुख मोड़ा जाता है। भोग को भगवान मान कर पूजन किया जा रहा है। इस अवस्था मे आर्यसमाज अपने जीवन मे बसन्त लाये। उत्साह व उल्लास के साथ आसुरी विचारो के साथ पूरे जोर शोर से टकराने का प्रबन्ध करे। जीवन मे, विचारो मे, कार्यों मे बसन्त ही बसन्त हो। —त्रिलोक चन्द्र

स्वामी समर्पणानन्द जी गये

आर्य समाज के विशाल परिवार मे से बड़े-बड़े नेता और महान विद्वान आंखे बन्द करते जा रहे हैं। अभी एक का शोक हो रहा होता है तो दूसरा स्तम्भ गिर जाता है। अभी-अभी आर्य समाज के मौलिक दिग्गज महान विद्वान, वक्ता, लेखक और विख्यात महारथी स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती भी आंखे बन्द कर स्वर्गवासी हो गए। पूज्य स्वामी जी श्री प. बुद्ध देव जी विद्यालंकार के नाम से सारे देश मे बड़े ही प्रसिद्ध थे। सन्यासी बनने पर स्वामी समर्पणानन्द जी के नाम से विख्यात हुए। कितने महान विद्वान थे स्वामी जी हिन्दी-संस्कृत और इगलिश भाषा पर पूरा-पूरा अधिकार था। अपने सारे जीवन मे मौलिक प्रतिभा आप की एक विशेषता थी। वेद के मन्त्रो पर इतना मौलिक विचारो से भरा प्रवचन देते थे जिससे सुनने वालो के मन पर वेद के प्रति बड़ी श्रद्धा की छाप लग जाती थी। वेदका संस्कृत का भाष्य प्रारम्भ किया था—जितने भी मन्त्रो पर भूमिका समेत भाष्य छपा आपकी संस्कृत पढ़ कर तो आपके प्रकाण्ड पांडित्य पर भारत के बड़े २ संस्कृत के विद्वानो का सिर झुकजाता है। आप अलौकिक प्रतिभाके मालिक थे। वेद के सप्त सिधु सूक्त पर जो और जितना सुन्दर विवेचन आपने किया है कमाल ही है शतपथ पर आपने किया है कमाल ही है। शतपथ पर आपने भाष्य प्रारम्भ किया था। कई पुस्तके भी आपने लिखी जिनका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान हैं।

आर्यसमाज मे आपका बहुत ही ऊंचा स्थान रहा है। भगवान ने आप की वाणी पर सरस्वती दे रखी थी। आप जब प्रवचन देते थे तो श्रोताओं को मस्ती भरे वातावरण मे पहुंचा कर मन्त्रमुग्ध बना देते थे आपके भाषण बहुत ही प्रभावशाली तथा निर्भयता से भरे होते थे। लिखने और बोलने दोनो मे कमाल था। आर्य समाज को आप पर बड़ा ह मान था। कवि भी गजब के थे। वेद और ऋषि दयानन्द के परमभक्त थे। वर्षो आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे। अन्य विशेषताओं के साथ सरलता, सादगी तथा हर समय प्रसन्नता खासविशेषता थी। गत दिसम्बर आर्यसमाज अनार कली नई देहली के वार्षिक महोत्सव पर आपका प्रभावशाली भाषण सुनने का सौभाग्य मिला तथा समाज की वर्तमान दशा पर चर्चा की भी। क्या पता था कि पूज्य स्वामी जी चले जाएंगे। अपने हो या पराये—सबके दिल मे आपका मान था। विद्वत्ता की छाप थी। प्रभाव था। आपके स्वर्गवास से समाज की कभी न पूरी होने वाली क्षति हुई है। उन जैसा विद्वान वक्ता, चिंतक, लेखक तथा मौलिक प्रतिभा सम्पन्न विरला ही होता है। प्रभु के सामने मौन होकर सिर झुका देना होता है। आर्य समाज का महान भण्डार ऐसे-ऐसे महारत्नो के चले जाने से खाली होता जाता है। पूज्य स्वामी जी महाराज के स्वर्गवास हो जाने पर आर्य जगत का सारा परिवार शोकाकुल है—आर्य समाज के मान्य नेता-महारथियों को गम्भीरता के साथ अब सोचना होगा कि समाज के इतने बड़-बड़े योग्य महारत्न एक-एक करके दिवगत होते जा रहे हैं अब भविष्य मे समाज के कार्य की कुछ पूर्ति करने वाले योग्य युवक विद्वानो को समाज मे लाने का प्रबन्ध किया जाए। ताकि समाज का कार्य कुछ तो चलता रहे। —स.

अपना प्यारा भारत देश चिर-काल तक परतन्त्रता की बेड़ियों मे जकड़ा रहा। पहले मुस्लिम राजाओ ने अपना कुचक्र चलाया, उसके उपरान्त शासन की बागडोर अंग्रेजो के हाथो मे आगई उन्होने अपना कुचक्र चहुमुखी चलाया। हमारी संस्कृति पर चोट की, हमारे रहन-सहन, भाषा-भेष सभी को बदल डाला, अंग्रेजियत के रग मे हमे रगने का पूर्ण प्रयास किया, हम दास्ता की बेडियो मे ऐसे कस कर बाध दिए गये कि न हम स्वय मुक्त हो सके और न ही कोई और शक्ति हमे मुक्त करा सके।

यह ऋषियो और मुनियो का देश कब तक परतन्त्र रहता आखिर एक दिन इस देश की जनता ने अगड़ाई ली जैसे बड़ी नींद से जाग पड़ी हो, यू तो मुगलकाल मे भी क्राति की ज्वालाए उभरती रही, परन्तु सन् १८५७ मे भारत के कोने २ मे एक आग-सी सुलग पड़ी, क्राति विफल हुई, परन्तु अंग्रेज सरकार उसका पूर्ण रूपेण दमन न कर सकी इसके उपरान्त भारत की जनता ने परतन्त्रता की बेडियो को काटने का व्रत धारण कर लिया यह सघर्ष सन् १९४७ तक जारी रहा इस काल मे भारत मां के अनेको सपूतो ने मा के चरणो मे अपने सर की बलिया चढा दी, तरह२ की यातनाओ को सह-सह कर जेल की काली कोठरी मे सड-सड कर फांसी की रस्सियो को चूम-चूम कर हसते हुए नोजवानो ने अपनी जवानियो को लुटा दिया।

मैंने कहानी लिखी "क्रान्ति की आग" मित्रो ने इसका बडा स्वागत किया, प्रशसा-पत्र भी लिखे, मैं अपने मित्रो क. बडा आभारी हूं जिन्होने मेरी इस प्रथम कहानी का स्वागत किया तथा मुझे आगे भी कलम उठाने का उत्साह प्रदान किया। यह एक काल्पनिक वीर रस मे परिपूर्ण कहानी हमे उसी काल की याद दिलाती है जब भारत की जनता आजादी के लिए तड़फ रही थी प्रत्येक व्यक्ति अगडाई लेकर खड़ा हो चुका था और वह जान हथेली पर रख कर अंग्रेज सरकार से झूझ रहा था।

इस काल मे हमे अनेको हीरों को खोना पडा, पजाब केसरी श्री ला. लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्र शेखर आजाद, वीर भगत सिंह,

स्वतन्त्रता की याद दिलाने वाली २६ जनवरी

(श्री धर्मदेव जी आर्य व्यवस्थापक आर्यजगत)

वीर सेनानी सुभाष चन्द्र बोस आदि-आदि अनेकों देशभक्तों को खोकर हमें १५ अगस्त १९४७ को यह आजादी मिली, २६ जनवरी के बाद में अपना राज्य बना अपना सविधान बना, चिरकाल से ओढी हुई दास्ता की चादर फाडकर हम स्वतन्त्र हुए, २६ जनवरी को विशेष महत्वपूर्ण उत्सवो का स्थान२ पर आयोजन किया गया।

यह २६ जनवरी का दिन हमारे लिए बडा महत्व का दिन है। इस दिन की याद आते ही हमारे दिन उछल पडते हैं, परन्तु स्वतन्त्रता के साथ-साथ उन शहीदों की भी याद आ जाती है जिनके खून के बदले में हमें यह आजादी मिली है। यह आजादी एक-एक खून के बिन्दु से रगी हुई है।

आज इन्हीं शहीदों की धरोहर के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, शहीदो की आशाओं का भारत कुछ और था परन्तु आज का भारत कुछ और है। हम स्वप्न लेते थे, हम आजाद होगे। भारत में राम-राज्य होगा। हर तरह से देश खुशहाल हो जायेगा। हमारे नेता फिर राम और कृष्ण जैसे महान यशस्वी नेता होगे। देश का कोना २ जगमगा उठेगा। हमारे देश का प्रत्येक नगर अयोध्या नगरी की तरह होगा। परन्तु आज हमे जो कुछमिला वह कुछ और ही मिला, हमे लंगडी आजादी मिली और देश को राम राज्य तो बनाना एक ओर रहा हम इसे रावण राज्य भी नही बना सके,

देश की दशा को देखकर रोना आता है। देश की दशा फिर दिन प्रतिदिन बिगडती जा रही है। जिस आजादी के लिए शहीदो ने डोरियों को चूमा था अपने खून को देकर जिसकी रक्षा की थी आज वह फिर खतरे मे है।

शत्रु चारो ओर हमारी सीमाओ पर दनदना रहे हैं, कही चीन, कही पाकिस्तान, और कहीं अन्य देश, सभी इसे हड़प जाना चाहते हैं। अन्दर विरोधी तत्व रात दिन षडयन्त्रो मे लगे हुए हैं। ईसाई रात दिन इसे फिर ईसाई स्तान बनाने में लगे हैं खतरा है, कही आजादी के पांव फिर न लड़खड़ा जाए।

नौजवानों आज हम २६ जनवरी मना रहे हैं। आज इस शुभ दिन शुभ घड़ी मे आओ एक व्रत ले लें, हमें अपने देश की आजादी की रक्षा के लिए अगर अपना सर्वस्व भी लुटाना पड़े हम लुटाएगे। विश्वास घाती शत्रुओ का डटकर मुकाबला करेंगे। अन्दर के शत्रुओ को नष्ट कर देश की रक्षा करेगे।

आओ आज बढते हुए विरोधी तत्वो और भीतरी शत्रुओ का छाती तान कर सामना करें भारत की आजादी की जडो को इतना सुदृढ कर दें कि इसे कोई हिला भी न सके, यह कार्य केवल सरकार का ही नहीं है, सीमा पर लडने वाली सेना का ही नही है। यह तो भारत के प्रत्येक नागरिक का है। भारत का अन्न खाने वाले प्रत्येक व्यक्ति का है।

देश विरोधी तत्वो के इस नासूर पर अभी से काबू पा लो, नहीं तो इसके पुराना हो जाने पर इसका इलाज करना कठिन हो जायेगा। आओ आज २६ जनवरी को देश रक्षा का व्रत लें। तभी यह दिन मनाना सफल होगा।

—धर्मदेव आर्य

क्रान्ति की आग

(गताक से आगे)

मुझे सन्देह है पिता जी ही उस लड़की को थाने से लाने गए हैं और उन की कार पुलिस घेरने वाली है। दोनो मारे जाएगे जल्दी करो।

वह उठा उस ने दोड़ कर फोन का नम्बर मिलाया। हैलो! कौन महेन्द्र बोल रहा है?

जी हा मैं ही हू। आवाज को पहचानते हुए उस ने कहा।

देखो महेन्द्र सभी नोजवान मरौली और लखनऊ के रास्ते को पांच मिनट के अन्दर अन्दर घेर लो एक हमारा आदमी उस लड़की को कार में लेकर आ रहा है। जो कल गाव से गिरफ्तार की गई थी पुलिस उसे घेरना ही चाहती है मैं भी आ रहा हू।

लता और अजीत दोनों फट-फट पर सवार होते ही हवा से बातें करने लगे। अजीत ने देखा कार घिर चुकी थी, अकेला कप्तान दोनों हाथों से पिस्टलें दाग रहा था। चारों ओर से वार पर वार हो रहे थे. अब मुकाबले में ५० अंग्रेजी सिपाहियों की टुकड़ी थी।

कप्तान साहब बुरी तरह से घायल हो गए थे। शरीर से खून की धाराए चल रही थी, परन्तु पिस्टलें रुकी नहीं, कार में पडी वह लड़की भी बुरी तरह से जख्मी हो गई।

इतने अजीत के जवानों ने उस टुकडी को घेर लिया अजीत चिल्लाने लगा। जवानो एक भी बच न पाए, वार पर होते जा रहे थे, अजीत देख रहा था सबसे अचूक निशाना 'लता' का लग रहा था।

सारे अंग्रेज सिपाही भून दिए गए। सभी कप्तान साहब की ओर बढे, वह खून से लथ-पथ पडे थे। लता ने कार में उस लडकी को देखा। उसकी दशा भी सोचनीय थी। यह सोचने और आसू बहाने का समय नहीं था। दोनों अपने घायलो को उठाकर क्रातिकारी पास के जगल में घुस गये।

सभी नौजवान पूछना चाहते थे यह लडकिया कौन है। यह जख्मी होने वाले व्यक्ति कौन हैं? इतने में कप्तान साहेब को होश आया शरीर से खून बह रहा था। अजीत और लता उससे लिपट गई, दोनो ने कहा पिता जी।

कप्तान ने सम्भलते हुए कहा मेरी बेटी मुझे अपना हाथ दे दें, बेटा अजीत अपनी हथेली मुझे पकड़ा दे। अरे तुम दोनो रोते जा रहे हो तुम तो बड़े भीरु हो, मै तो तुम्हें पता नही क्या समझता था। मेरी कसम खाकर कहो अब नहीं रोएगे?

दोनो ने कहा नही पिता जी अब नही रोएगे!

'लता, के हाथ को अजीत की हथेली पर रखते हुए कप्तान ने कहा? लो सम्भालो बेटा 'अजीत, मेरा कर्त्तव्य पूरा हुआ। सभी चाबियें मेरी अलमारी में पडी हैं, मेरी फाईलें निकाल कर देख लेना मेरी लता आज तुम्हारे सभी कुछ अजीत हुए, लो मैं सफर करता हूं। मुझे यहीं लकड़ी इकट्ठी कर चिता मे रख देना अच्छा मैं वेद-पाठ कर लूं।

इसके बाद कप्तान साहिब ने एक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आज नौजवान कहां हैं ?

(श्री रविन्द्रकुमार जी आर्य, पक्का बाग जालन्धर)

सुनो सुनाओ, नाचो गाओ

आप भाई यह शीर्षक पढकर आश्चर्य में जरूर पड़ेंगे। सुनो-सुनाओ नाचो गाओ का मतलब क्या है। मैं आपको यह वह बात बताने जा रहा हूं जिसके बारे में अब तक आप जानते होंगे। 'पियो और पिलाओ' के बाद आज एक और नारा लगा 'सुनो-सुनाओ, नाचो गाओ।'

बात यह है कि हमारे समाज मे अब ऐसे कीड़े जन्म तो ले रहे हैं जो खु:द गन्दगी में रहते हैं साथ दूसरों को भी खींच लेते हैं। ये थोड़े दिन हुए बाजार कला के एक होटल मे अपने एक साथी के कहने पर चला गया। वहां जो कुछ मैंने देखा मेरा सर शर्म से झुक गया। मैं बगैर चाय पीए वापस आ गया। आप शायद जानने से उत्सुक होंगे कि क्या हो रहा होगा। उस समय एक तरफ चार-पाच व्यक्ति जो कि एक छोटी-सी स्टेज पर खड़े थे कोई आर्केस्ट्रा बजा रहा था कोई कुछ। मेरे कहने का मतलब यह कि बिल्कुल कल्बों जैसा और फिल्मों-सा। वहां अच्छे-अच्छे घर से सम्बन्धित हमारी युवा बहिने बैठी थी जो नि:संकोच अपने पाव थिरकाते हुए गाने के अन्त में कूद कूद कर वाह-वाह कह रही थी। लड़कियों को इस तरह करते देख लड़के भी उनका साथ दे रहे थे। एक अच्छा खासा वह क्लब सा बना हुआ है और था! किसी दिन यह न हो कि वहां राक-एन-रो या डास शुरू हो जाए! मगर आजकल लड़किया और लड़के खराब होते हैं तो ऐसी ही सोसायटी से। वहां माईक से बोला जाता है। सुनो-सुनाओ नाचो गाओ।' फिर हम यह कहते हैं फला लड़की को फला लड़के ने छेड़ा उसे पीटा गया पुलिस के हवाले किया गया।

यह मौका किस तरह आता है। इन्ही समाज मे पल रहे कोढ़ो से बिमारी होती है। यह ऐसी छूत की बीमारी है जिसका इलाज किसी के पास नहीं। आजकल ऐसी जगह पर जाने से लड़के लड़किया खराब हो जाते हैं। दोष मा-बापको दिया जाताहै। अगर मा-बाप पैसे न दें तो चोरी करके घर से भाग निकलते हैं। आज कल एक तो तंग कपड़े पहनने का फैशन चल पड़ा है। ऐसे-ऐसे कपड़े स्त्रियां पहन कर बाजार में अकड़ कर चलती हैं जिसे देखकर समझदार व्यक्ति तो जरूर आखे नीची कर लेता है। मैं आप को उस होटल की बात कर रहा था। वहां आप जाकर खाली चाय मांगीये। आप को नही मिलेगी। आप उससे कारण पूछेंगे कि क्या बात है। तो वह शान से कहते हैं कि जो अब यह होटल नही क्लब है कोई साथ खाने की चीज मगाइये।

भाइयो! अगर ऐसा होता रहा और अगर ऐसा होता और अगर दो चार होटल और खुल गये तो यहां पर शरीफ लोगो का रहना मुश्किल हो जाएगा! क्योंकि जब धनके बच्चे उन्ही होटलो मे जाकर डास करेंगे, शराब पीयेंगे। सिगरेट की डब्बीयां खाली होगी और साथ-जुआ होगा। वह मां बाप उस बच्चे की इस बुरी आदतो से तग आ जायेंगे। पीछे बच्चा सारा घर ले डूबेगा और मां-बाप, सगे सम्बन्धी और इष्ट मित्र देखते रह जायेंगे।

वहां खास तौर पर बहिने जब जाती हैं तो वह भी वहां का असर लेकर आती है। उन्हे पता नही होता जब हमारे बच्चे होंगे तो उन पर कौन से संस्कार पड़ेंगे। जब वह नही अपने मा-बाप की फिक्र करते तो आने वाली जो सन्तानें होंगी उससे वह कैसे आशा रखते हैं कि वह उन की फिक्र करेंगी उनकी सेवा करेंगी। माता ही सारे बच्चो को बनाने वाली और खराब करने वाली होती है।

होटल मे जब लड़किया तालियो पीट-पीटकर अपने दात निकाल-निकालकर वाह-वाह कह रही थी, उसी समय मैं सोच मे पड़ गया क्या यह आज जो बहिने बेटी ऐसा कह रही है उन्हे रोकने-टोकने वाला कोई नही। क्या इनकी संतान इनके दबाव में आएगी कभी नहीं आएगी। क्योंकि खुद उन्होने अपने माता-पिता का कहना नही माना। उन पर भी अवश्य उन के रंग का असर होगा। जब बच्चा होने वाला होगा उस समय भी उन्हें अपने कल्ब की चिंता लगी होगी पता भी आज क्या हो रहा होगा।

मैं अपने आर्य भाई व बहनों को सावधान करना चाहता हूं कि वह ऐसी जगह पर कदापि अपने पग आने को न उठाए। पता नहीं हमारी आने वाली पीढिया कैसी होगी कैसी सतान को हम जन्म देंगे! पहले जल्द बाजी से कर लेना और उसके बाद फिर पछताना। यह ठीक नही। पहले ही ऐसा काम न करो कि बादमे पछताना पड़े। इतनी छोटी २ उमर मे ऐसी जगहो पर जाने से हमारे संस्कार। विचार, आचार, रहन-सहन, बात करने का ढग और बैठना सब हममें आ जाती है। क्योकि यहां आकर हद बहुत कर जाते हैं और फिर बुरा नतीजा होता है।

लेकिन आजकल युवा बहिनो को तो बिल्कुल नही जाना चाहिए क्योंकि वही से वह अपने को खराब कर लाती हैं। फिर लड़के उनको सरे-बाजार छेड़ते हैं। कइयों का अपहरण होता है। कइयो से बलात्कार होता जिससे उनके माता-पिता समाज मे सिर उठाकर नही चल सकता। गलती बच्चो की होती है और उसको मा-बाप विवश होकर सहन करते रहते हैं। वह बेचारे भी क्या करें। जान से बच्चे को मार दे तो भी मुश्किल और उसे समझाये तो बच्चे डडा लेकर मा-बापपर बरस पड़ते हैं।

मुझे आशा है कि नव-जवान जरूर इस बात पर विचार करेंगे। खास तौर पर हमारी बहिनें जरूर ध्यान देंगी।

शर्मिला-पटौदी विवाह

श्रीमती शर्मिला टैगोर का विवाह नवाब पटौदी के साथ होने का समाचार हिन्दु जाति के लिए एक खुला चैलञ्ज है। शर्मिला टैगोर ने एक मुसलमान के साथ विवाह करके न केवल अपने पितामहा महा कवि श्री रवीन्द्र टैगोर की ख्याति को अपितु समस्त हिन्दु जाति को बट्टा दिया है। शर्मिला टैगोर के आचार का दीवाला तो उसी दिन निकल चुका था। जब उस ने ऐसे ऊंचे घराने मे जन्म लेकर फिल्म अभिनेत्री का व्यवसाय आरम्भ किया। अभी कुछ समय पूर्व फिल्म ऐक्ट्रेसों को अच्छी दृष्टि से नही देखा जाता था। प्राय: वेश्याए और आचार हीन स्त्रियां आवारा युवक ही इस व्यवसाय को पसन्द करते थे परन्तु कांग्रेस सरकार ने जहा मद्य मान्स और अण्डो आदि के प्रयोग एव व्यापार का खुला प्रोत्साहन करके तथा कलचरल प्रोग्रामो के नाम पर देश मे दुराचार और भ्रष्टाचार को उन्नत किया, वहा फिल्म एक्टरो और एक्टरेसों को 'पद्म श्री' और 'पद्म भूषण' आदि की उपाधिया देकर देश के युवको और युवतियो के आचार को नष्ट करने वाले इस घृणित व्यवसाय प्रदान करने का महापाप किया और भले घरानो के पुत्र और पुत्रियो को इस दुराचार के गढे मे गिरने की प्रेरणा दी।

शरमीला टैगोर की इस निर्लज्जता पूर्ण पग पर जितना शोक किया जाए वह कम है परन्तु हमें तो उन प्रतिष्ठित महानुभावो की बुद्धि और बेगैरती पर कर रोना आता है जो इस अवसर पर वधु को अपनी शुभ कामनाए और आशीर्वाद देने के लिए सम्मिलित हुए। उनमे गर्वनर महोदय श्री धर्मवीर जी, महारानी जयपुर, श्री अतुल घोष, श्री हेरन मुकरजी और श्री ज्योति बसु के नाम पढकर और भी दु:ख हुआ। यदि कहीं पाकिस्तान मे किसी ऊचे कुल की तो क्या कोई साधारण मुसलिम लड़की भी किसी हिंदु के साथ विवाह कर बैठती तो निस्सदेह समाचार पत्रो मे छपने से पूर्व दोनो इसकी सजा पा चुके होते और सारे देश मे तूफान मच जाता। परन्तु दुर्भाग्य से सैक्यूलरिजम के मद मे उन्मत इस भारत-वर्ष देश मे ऐसी दुर्घटनाए होती ही रहती हैं और न सरकार तथा न हिंदु जनता के कान तक जूं रींगती है, काश कि, आज स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय अथवा पण्डित मदनलाल मालवी जैसा कोई नेता होता जो भारत सरकार तथा देश और जाति को अपमानित करने वाले कार्य करने वालो और इन्हे सहयोग देने वालो को इबरत नाक शिक्षा देते।

—रुद्रदत्त शर्मा, प्रधान
आर्यसमाज लक्ष्मणसर
अमृतसर

क्रांति की आग

(पृष्ठ ४ का शेष)

लम्बी श्वास खींचकर कहा – प्यारे नौजवानो इस क्रांति की आग को देश के कोने २ में फैला दो दावानल की तरह जिससे सारा देश भड़क उठे। जब तक शत्रु देश को छोड़ न जाए इसे बुझने न देना। अच्छा मैं जाता हूं सभी को नमस्ते। कप्तान साहेब अब इस दुनियां मे नहीं थे।

लड़की चिल्लाई सभी ने उसकी ओर देखा। लता अपनी लता को छाती से लगाकर बैठ गई। लता कहने लगी बहन तूने अपने प्राणो को देकर मेरे इस सुहाग को बचाया मैं तुम्हारी ऋणि रहूंगी।

वह बोली नही बहन यह मेरा कर्तव्य था, तुम्हारे ऊपर यह कोई अहसान नही है। मुझे खुशी है कि मुझे यह सौभाग्य मिला मैंने पिता जी के दर्शन भी कर लिए, मैं पिता के स्नेह को लेकर चली हूं।

पिता जी ने मुझे देख कुछ सन्देह में पूछा तुम किसकी लड़की हो, माता-पिता कौन है। जब मैंने उनको कुछ बताया तो वह मार खड़ी कर मुझे चूमने लगे, तुम मेरी बेटी रीना हो, आज तुम्हे भी लोग लता कहते हैं।

उन्होने बताया था जब मैं एक मास की थी तो हमारी माता गुजर गई थी। तब एक गाव का जमीदार मुझे पालने के लिए ले गया था। आज तुम्हारी सूरत जब लता बेटी से मिलती देखी तो याद आया। दोनो बहनो ने एक दूसरे को चूम लिया।

अच्छा बहन लता मे भी पिता जी के साथ जाती हू। वह देखो वह बुला रहे हैं। अन्तिम नमस्ते।

इस दृश्य को देख कर सभी अवाक रह गये। दो चितायें जगल मे जल उठी मानो क्रांति की आग की लपटें अब आकाश को छू लेंगी।

घर आकर जब लता ने फाईल खोली तो वसीयत नामा पढ़ा दोनों अवाक थे। दोनो पिता जी-पिता जी कह चिल्ला उठे। दोनो ने सभी धन कान्ति दल को अर्पण कर दिया। क्योकि वह अपने आपको भी क्रांति-दल को अर्पण कर चुके थे। (समाप्त)

स्वर्गीय प्रतिभाशाली महा विद्वान स्वा. समर्पणानन्द जी

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध प्रतिभाशाली शास्त्रार्थ महारथी महा विद्वान और कवि स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती (भू० पू० श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड) के १५ जनवरी की प्रात: को देहली मे देहावसान का दु:खद समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। यदि यह कहा जाए कि इस समय आर्य जगत मे अपने वेदशास्त्र, काव्य, पुराणादि समस्त सस्कृत पर अगाध पाण्डित्य, मौलिकता और प्रतिभा, कविता, शास्त्रार्थ पटुता, ओजस्विनी अत्यधिक प्रभावशालिनी वक्ता आदि मे वे अनुपम थे तो इसमे जरा भी अत्युक्ति न होगी। उनका अथर्ववेद का संस्कृत भाष्य और शतपथ ब्राह्मण का हिन्दी भाष्य अत्यधिक मौलिक विद्वतापूर्ण और अद्भुत था। यद्यपि यह खेद की बात है कि ये दोनो उनके आर्य जनता के निमन्त्रण पर अधिकतर यात्राओ पर रहने के कारण अपूर्ण ही रह गये तो भी जितना भाष्य वे कर गये उस के प्रकाशन की शीघ्र व्यवस्था होनी चाहिए। ताकि विद्वत्मण्डली उनसे लाभ उठा सके। शास्त्रार्थ महारथी के रूप में उनकी ख्याति अपनी अद्भुत विद्वता और वक्तव्य शक्ति के कारण अत्यधिक थी। अभी १४ अप्रैल १९६८ को वे अखिल भारतीय गुरुकुल स्नातक मण्डल के प्रधान चुने गए थे जब स्नेह और विश्वास के कारण मुझे सर्वसम्मति से निर्वाचित मुख्य उपप्रधान के रूप मे का प्रधान नियत किया। उनके अद्भुत विद्वता और प्रतिभा पूर्ण ग्रन्थो मे से 'कायाकल्प पच महायज्ञ प्रकाश' सोम, अथ मतत्सूक्तम, सप्त सिंधु व्याख्या आदि विशेष रूप से पठनीय है। उन के अन्दर इतनी अधिक विद्वत्ता साथ गुणग्राहकता और अन्य विद्वानों को प्रोत्साहित करने की बड़ी उत्तम अनुकरणीय प्रवृत्ति थी। आर्य जगत में उनके अभाव की पूर्ति की चिरकाल तक आशा नही प्रतीत होती तथापि आर्य विद्वानो को विशेषत: स्नातक बन्धुओं को चाहिए कि उनके अधूरे छोड़े वेदादि विषयक कार्य की पूर्ति का मिलकर प्रयत्न करें। मैं स्नातक मण्डल की ओर से उन दिवंगत विद्वच्छिरोमणि परम मान्य स्वामी, तपस्वी आर्य नेता और सन्यासी के प्रति श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए भगवान से प्रार्थना करता हू कि उन के अपूर्ण वेदादि विषयक अद्भुत कार्य को पूरा करने की शक्ति हमें प्रदान करें।

★

श्री मेलाराम जी के परिवार की ओर सहायता

१०० रु. श्री. महाशय सन्तराम जी आ. स. मा. टाऊन लुधियाना।

१५० रु. श्रीमती सरोज बोहरी व माता माया देवी जी आर्य स्त्री समाज होशियारपुर।

१२५ रु. माता सेवा देवी जी धर्म पत्नी स्व० ला० ज्ञानचन्द जी भाटिया भू पू. मन्त्री सभा माडल टाऊन जालन्धर।

५० रु. श्री वजीर चन्द जी आर्य समाज ऊना।

५० रु. श्रीमती रामकलि जी स्त्री आर्य समाज कोटली कालोनी जम्मू तवी।

२५ रु. मन्त्री आर्य समाज कठुआ जम्मू। श्री मोहन लाल जी आरोड़ा प्रधान आ. स. लारेंस रोड़ ने एकवर्ष तक प्रतिमास १० रु. वजीफा रूप में देना स्वीकार किया।

श्री स्वामी समर्पणानन्द जी

दिवगत विद्वच्छिरोमणि स्वा० समर्पणानन्द जी (पं० बुद्धदेव जी) को श्रद्धांजलि (प्रधान अ.भा. स्नातक मडल)

विद्या के मार्तण्ड मनस्वी, बुद्ध देव जी अस्त हुए।
जग आलोकित करिणो से कर, दिव्य दिवाकर अस्त हुए॥

ओजस्वी वक्ता के कविवर, प्रतिभाशाली शिरोमणि थे।
अज्ञानात्याचार मिटाते, हाय भानु वे अस्त हुए॥

नही दिखाई देता उनसा, प्रतिभान्वित वैदिक विद्वान्।
दूर-दूर यात्राओ मे कर, शक्ति अपव्यय अस्त हुए॥

शतपथ ब्राह्मण श्रुति आयर्वण, भाष्य अधूरा छोड गये।
जनता का यह शेष अधूरा, कार्य छोड अस्त हुए॥

ये शास्त्रार्थ महारथी अनुपम, सिंह समान गरजते थे।
तम अज्ञान मिटाते जग का, विद्या भास्कर अस्त हुए॥

केसरी समान का अब गर्जन, नहीं सुनाई देवेगा।
गर्जन मे निज शक्ति खो गये, कभी न जो कि परास्त हुए॥

वेद धर्म निष्ठा विद्वता, निर्भयता का अनुकरणीय।
प्रस्तुत करके भव्य निदर्शन, बुद्ध देव रवि अस्त हुए॥

सरस्वती के पुत्र लाडले, बन कर वे समर्पणा नन्द।
श्रद्धा पूर्वक कर हरि कीर्तन, इस में ही वे मस्त हुए॥

धर्मदेव विद्यामार्तण्ड (वेद मुनि)
का. प्रधान अखिल भारतीय स्नातक मण्डल)

घुटमलपुर में गायत्री का यज्ञ

कृष्णपुरी छुटमलपुर (सहारनपुर) मे शिवरात्रि के उपलक्ष में गायत्री यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया है चार दिन तक श्री माननीय वयोवृद्ध नेता श्री सेवकराम जी यात्री कथा करेंगे तथा श्री स्वामी भजनानन्द जी और सुमेरचन्द भजनोपदेश के मनोहर भजन होंगे। यह ग्राम प्रचार का आयोजन श्री श्रीराम जी पथिक के पुरुषार्थ से हो रहा है। सभी सज्जन सम्मिलित हो धर्मलाभ उठाएं।

साप्ताहिक आर्यजगत का वार्षिक चंदा आठ रुपये

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे

वैदिक-सूत्र

नर-नारायण

श्री पं० जगतकुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली

क पून्नर : । जो सुख को वृद्धि करता है, वही नर है। ऋ० १०।१०१।१२

प्रवचन

जो स्वयं सुखी है, और अपने कार्यों के द्वारा संसार के सुख-समुदाय में वृद्धि करता है, वेद की भाषा मे उस श्रेष्ठ मनुष्य को नर कहते हैं। मनुष्य पुरुष, मानव, मर्त्य, नर आदि मनुष्य वाचक सभी शब्द अपने-अपने यौगिक (धातज) अर्थो को रखते हुए भी सामान्यतया एक ही "मनुष्य" अर्थ को बतलाने वाले हैं। वेद के उपदेशानुसार सुख की प्राप्ति एवं वृद्धि प्रत्येक मनुष्य का एक आवश्यक कर्त्तव्य है। मनुष्य का स्वय सुखी हो जाना ही पर्याप्त नही है। संसार में सुख की वृद्धि करना, अर्थात् दूसरे प्राणियों को सुखी बनाना भी आवश्यक है। दूसरो को दु:खी बना कर स्वयं सुखी होना तो भारी पाप, अपराध और निन्दित कर्म है। कोई सच्चा नर तो ससार मे दुख की वृद्धि कभी करता ही नहीं और जो दु:ख की वृद्धि करे स्वयं भी दु:खी बना रहे; वह चाहे और कुछ भी हो, नर नहीं।

सुख-क्या है, और दु:ख क्या ? अपने अनुभव के आधार पर हम सभी इस विषय में कुछ न कुछ तो जानते ही हैं। दु:ख से सभी बचना चाहते हैं। सुख की कामना भी सभी किया करते हैं। एक बड़ी विचित्र बात यह है कि कामना करने पर भी सुख सब किसी को नहीं मिलता। संसार में पूर्ण सुखी प्राणी तो कोई-कोई ही होगे। दूसरी ओर न चाहने पर भी दु:ख तो सभी को भोगने पड़ते हैं नाना प्रकार के दु:खो की ससार मे भरमार हो रही है। किसी का स्वास्थ्य बिगड गया। किसी को मृत्यु ने सताया, किसी को अभाव ने खाया। गिनती बढ़ाने से क्या लाभ ? हम सब प्रतिदिन अपने-अपने दु:खो क साथ सघर्ष किया ही करते हैं। शास्त्री भाषा मे स्वतन्त्रता सुख है, परतन्त्रता दु:ख। अनुकूल वेदना सुख है; प्रतिकूल वेदना दुख, एवमेव इन्द्रियो की उत्तमता सुख है, अनुमत्ता दु:ख।

फिर, सुख की प्राप्ति और सुख-सम्पदा को वृद्धि का उपाय क्या है ? गम्भीरता पूर्वक विचार करने से उस उपाय को बोध भी यहा प्राप्त होता है। 'क' यह नाम सुख स्वरूप, प्रजापति परमात्मा का हैं। परमात्मा तो सुख का भण्डार और सब सुखों का प्रदाता प्रसिद्ध ही है। अत: यहा सुस्पष्ट अर्थ व्यजना होती है कि जो मनुष्य ईश्वर स्तुति, प्रार्थना और उपासना आदि शुभ कर्मों के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करता है, और ईश्वर भाव अर्थात् आस्तिकता का प्रसार करता है, वही सच्चा नर है। ईश्वर परायणता ही ससार में सुख की वृद्धि का सर्व श्रेष्ठ उपाय है।

संसार के सम्पूर्ण सज्जन पुरुषो ! तुम सुखी बनो और ससार के सुख-समुदाय मे वृद्धि करो। ससार मे सुख की वृद्धि करने का एक सुनहरी नियम यह है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, अपितु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। ससार के विषम भोगो मे भी कुछ सुख मिलता तो है, परन्तु वह तो क्षण भगुर और विकार-ग्रस्त होता है। विषय-भोग-जन्य सुख शीघ्र ही नष्ट भी हो जाता है, और अधिक उपभोग करने से रुचता भी नही है। न मिलने पर विषय-भोग-जन्य दु:ख देता ही है, सुलभ होने पर वह नीरस भी प्रतीत होने लगता है। सुख का सच्चा साधन तो ईश्वरवाद ही है।

वैदिक-यज्ञवाद भी ससार मे सुख की वृद्धि और ईश्वरवाद के प्रसार का ही एक मुख्य-साधन है। यज्ञवाद के तीन प्रसिद्ध अग है—देव पूजा, संगति-करण और दान। देव-पूजा तो सुख प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है ही। सगति-करण से मिलकर रहने, बाटकर खाने और सहयोग पूर्ण जीवन यापन से मानव-समाज में सहज मे ही सुख का प्रसार हो जाता है। दान मे दाता और आदाता दोनो को ही सुख मिलता है। सुख की वृद्धि का एक अन्य उपाय 'त्यागवाद' भी है। उसका विचार भी 'यज्ञवाद' के अन्तर्गत ही करना चाहिए।

सार्वदेशिक धार्मिक परीक्षाएं

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षाए गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी सारे देश मे आगामी जुलाई के अन्तिम सप्ताह मे होगी। केन्द्र स्थापना फार्म पाठविधि तथा आवेदन पत्र आदि के लिए परीक्षा मन्त्री श्रीयत प० देव व्रत धर्मेन्दु, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—१से पत्र व्यवहार करें।

आदर्श विवाह

बटाला मे श्रीयुत महाशय सत्य-पाल जी हकीम आर्य समाज के बहुत पुराने महारथी हैं। वर्षो समाज के वहां मन्त्री और आर्य कन्या हाई स्कूल के प्रबन्धक रहे हैं। सारा परिवार ही आर्य समाज के रंग मे रंगा है। इन की बेटी सरला श्री निवासपुरी देहली मे समाज कार्यो मे सदा आगे रहती हैं। दूसरी पुत्री कमला अपने पतिदेव श्री ब्रह्मपाल जी के साथ बम्बई मे समाज का बड़ा कार्य करती हैं। पुत्री निर्मला भी समाज कार्य मे आगे हैं। पुत्र प्रिय दर्शन कुमार बटाला समाज के मन्त्री हैं। प्रिय विजय जी समाज मे प्रमुख तथा प्रिय रमेश जी पूना समाज मे खूब हाथ बटाते हैं। अन्दर बाहिर से समाज रग मे रगे परिवार इन जैसे थोड़े हैं इन से अपने पन से सम्बन्ध व प्रेम है प्रिय रमेश जी के शुभ विवाह पर शामिल होने का सुअवसर मिला। घर पर इनके वेद यज्ञ होता रहा। अमृतसर में श्री. दीवानचन्द जी की सुपुत्री ऊषा जी के साथ पूर्ण वैदिक रीति से विवाह सस्कार सम्पन्न हुआ। आदर्श विवाह था। इस अवसर पर इक्तीस रुपए सभा वेद प्रचार के लिए प्राप्त हुए। नवदम्पति तथा परिवार को बधाई हो। —स.

स्व० श्री स्वामी समर्पणानंद जी के प्रति

देश-जाति हित किया जिन्होंने निशि दिन अनुपम त्याग,
जिनकी काया धारण करती, थी सच्चा वैराग।
दयानन्द के अनुयायी विचरण करते निर्द्वन्द्व,
वेद ज्ञान का स्रोत बहाकर किया प्रचार अमन्द।
जो विद्या मार्तण्ड कहाये, जिनकी प्रभा अनूप,
और बिना धन वैभव के भी जो जन जन के भूप।
राग, द्वेष अभिमान, दम्भा. से जो थे कोसों दूर,
कौन जानता था होनेशा उन्हें विधाता क्रूर।
तरुण तपस्वी पर सेवा मे रहे निरन्तर लीन,
आर्य जाति के अग्रगण्य वैसे हो गये विलीन।
क्या श्रद्धा के फूल चढ़ाऊं ओ श्रद्धा के पुंज,
'भूषण' कीर्ति पताका तेरी फहराए उत्तुंग॥

(ले० सत्य भूषण 'वेदालंकार' एम. ए. नई दिल्ली

आर्यजगत का शिवरात्रि ऋषिबोध अंक

यह जान कर आर्य जनता को बड़ा हर्ष होगा कि शिवरात्रि के शुभ अवसर पर एक अनुपम भेंट ऋषि बोध विशेषांक के रूप मे 'आर्यजगत साप्ताहिक अपने पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा है। यह अंक बड़ा अनुपम होगा। सभी सज्जनो व संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि वह प्रचारणार्थ अपना अमूल्य आर्डर शीघ्र अति शीघ्र अधिक से अधिक भेज दें ताकि उनकी प्रतियां सुरक्षित रख ली जाए। लेखक तथा कवि महोदयो का सेवा में प्रार्थना है कि अपने लेख तथा कविताएं शीघ्र कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। ताकि समय पर छप सकें।

निवेदक—धर्मदेवार्य, व्यवस्थापक

आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०)
वार्षिक निर्वाचन

आर्य युवक परिषद् का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान— श्री देवव्रत धर्मेन्दु, उपप्रधान—श्री अचरज लाल तथा रामदेव तनेजा, मन्त्री—श्रीओमप्रकाश उपमन्त्री— श्री शम्भूदयाल शर्मा, प्रचार मन्त्री—श्री जेमसिंह व श्री वृषशंकर, परीक्षा मन्त्री— श्री चमनलाल, कोषाध्यक्ष—श्री केदारनाथ निरीक्षक—श्री गुमानसिंह।

ज्ञान - वृद्धि के लिए साप्ताहिक आर्यजगत पढ़िए

ऋषि मेला

आर्य युवक परिषद् दिल्ली पंजीकृत की ओर से कोटला फरोजशाह नई दिल्ली में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में शनिवार १५ फरवरी १९६९ की मध्याह्न १२ बजे से स्कूलों के छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता:-

महर्षि दयानन्द की देन

विषय पर श्री कविराज हरनामदास जी बी०ए० की अध्यक्षता में होगी। प्रत्येक वक्ता को ५ मिनट का समय भाषण के लिए दिया जावेगा। जिस संस्था का बच्चा भाषण में सर्वप्रथम रहेगा उस संस्था को 'स्वर्गीया सत्यप्रिया चल

र.

का ...

२६-१-६९ को प्रात: ८-३० बजे आरम्भ होगा। सन्ध्या, हवन, भजनों के पश्चात श्रीमान पं० मौजसिंह जी पुरोहित का धार्मिक उपदेश होगा।

विजयोपहार' दिया जावेगा। अन्य विजेता छात्र-छात्राओं को भी अध्यक्ष महोदय द्वारा पारितोषिक वितरित किए जावेंगे।

माता-पिता तथा आचार्य गण प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के इच्छुक बच्चों के नाम १२ फरवरी६९ तक प्रतियोगिता सयोजक श्री जगसिंह जी के पास आर्यसमाज पहाड़ी धीरज (सदर बाजार) दिल्ली के पते पर भेज देवें।

शोक-संवेदना

मैंसमाज के महान - उद्भट ... गुरुकुलकांगड़ी की भी शान॥ जिसको जानता जहान। वह बुद्धिमान॥ श्रद्धेय स्वामी 'समर्पणानन्द' जी महाराज के स्वर्ग सिधारने से आज, 'गुरुकुल आर्यनगर' हिसार के सभी निवासी। ब्रह्मचारी हैं अथवा संन्यासी॥ सभी अधिकारी और पदाधिकारी। अत्यन्त शोक प्रकट करते है। खड़े होकर प्रभु का ध्यान धरतेहैं—और मिल कर यह कहते हैं। स्वर्गीय आत्मा, परमात्मासे मिले और उनके शुभ गुणों से हमारा जीवन खिले।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम. ए. पी. एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलापरोड जालंधर तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर पंजाब

ओ३म्

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No P 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक ५) १८ माघ २०२५ रविवार - दयानन्दाब्द १४४-२ फरवरी १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

देव मर्ता अमर्त्यम्

हे मनुष्यो ! मर्ता —मानवो ! उस देव [illegible] को पूजो जो कि अमर्त्यम्—अमर है। अविनाशी है। इन जड देवों को क्यो पूजते हो जो हैं ही जड। न हिलते न सुनते और न बोलतेही हैं। प्रकृतिके इन जड देवोको छोडकर अमरदेव को पूजो

ऋक—५ १४ २

दाशुष विभजामि भोजनम्

प्रभुदेव स्वय कहते हैं कि मैं उसको भोजनम्—हर प्रकार के भोग्य पदार्थ विभजामि देता हू जो कि दाशुषेदाता है, परोपकारी है, जो कृपण है, अदेव है, असुर है उसे प्रभु देव देते नहीं है। वह कृपण है।

यस्यच्छाय ऽमृतम्

जिस भगवान का आश्रय, सहारा अमृत है। उस परमात्मा का आश्रय लेवा अमर जीवन को प्राप्त करता है। जो मानव उसका बन जाता है वह अमरता की पदवी प्राप्त कर लेता है। प्रभु प्रेम अमृत है।

१०-१२१-२

वे दा मृ त

ओ३म् यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवापनुपश्यति
सर्व भूतेषु चात्मान ततो न विजुगुप्सते ॥

यजु अध्याय ४० मन्त्र ६

अर्थ —(य तु) जो तो (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणिमात्र को (आत्मनि) भगवान् या अपने मे (अनुपश्यति देखता है और (सर्वभूतेषु) सब प्राणिमात्र मे (आत्मानम्) भगवान् या अपने को देखता है (तत) तब न विजुगुप्सते) घृणा नही करता है।

भाव —जो मनुष्य तमाम प्राणिमात्रका अपनी आत्मा के समान समझता है। अपने समान ही उनके सुख दुख को जानता व मानता है, तथा सब प्राणिमात्र मे अपने आप को देखता व जानता है। ऐसा उदार-विचार वाला, सर्व-भूतो को समान समझने वाला किसी से किसी प्रकार की भी घृणा नही करता। वह किसी को भो कष्ट नही देता। वह सब को अपनी आत्मा का और अपने को सब का रूप मानता है। सारा प्राणिमात्र ही मेरा अपना रूप है। वे सारे मेरा अपना ही रूप है और मैं उन तमाम का रूप हू। ऐसा विश्व प्रेमी भला क्यो किस को दुख देगा। आत्मवत् भावना विश्व-प्रेम का सर्व प्रथम सन्देश है। सब को अपना मानो और स्वय सब के बनो।

—सम्पादक

ऋषि दर्शन

सर्वेशः सर्वशक्तिमान्

अर्थ —वह महान भगवान सवश सब जगत का ईश है, स्वामी है। वही सर्वशक्तिमान है। सारी शक्तियो का भडार है मालिक है।

भाव —यह जितना भी चर-अचर विशाल विश्व दिखाई देताहै तमाम ब्रह्माड का वही प्रभु स्वामी है। सारा जगत उसी के नियन नियम मे कार्य मे लगा है। वही सारी शक्तियोका घर है। उसकी शक्तिके सामने सबको सिर झुकाना पडता है। बड़े २ अभिमानी राजा आये, नास्तिक आय, बडा अभिमान किया। किंतु अंत मे उन सबका अभिमान टूट गया। रोते पश्चात्ताप करके चले गए। प्रभु सबसे महान व बलवान है। उस से सदा डरते रहना चाहिए।

—स
मुनिवर दयानन्द

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी०एच० डी० (सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

महर्षि दयानन्द तथा अन्य मत-मतांतर

–ब्रह्मचारी जगदीशचन्द्र वसु विद्या वाचस्पति, सिद्धान्तालंकार

ससार में अनेकों सुधारक आए, जिनमें से बहुतने अपनेको ब्रह्म बताया किसी ने अपने को ब्रह्म का अवतार प्रगट किया, किसी ने अपने को ईश्वर का भेजा हुआ दूत बताया, किसी ने ईश्वर से साक्षात बातें करने वाला अपने को सिद्ध करने का यत्न किया किसी ने ईश्वर से कुश्ती लडने वाला कहा, किसी ने अपने को ईश्वर का पुत्र कहा, कोई यह कहता हुआ आया कि मैं आकाशो को पार करके ईश्वर से मिल आया हू मेरे साथ फरिश्ते हैं। मैं ईश्वर का प्यारा हू, यदि मैं न होता तो ससार ही उत्पन्न न होता, कोई अपने को मसीह बताता हुआ आया। और कहा कि मैं ईश्वर का इकलौता बेटा हू, और मैंने ही ससार को बनाया है। इत्यादी बातें सुधारको ने कहीं।

परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में एक महान् आत्मा ने भी जन्म लिया, जिसका नाम था वेदोद्धारक आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज। इस महान आत्मा ने (उपरोक्त) इन बातो में से एक भी बात नही कही, अपितु यह कहा कि—(बैक टू दी वेदास) हे ससार के लोगो! वेदो की ओर चलो।

जिस समय वेदोउद्धारक, राष्ट्रोउद्धारक पतित पावन आदित्य ब्रह्मचारी भारतीय स्वाधीनता सग्राम के प्रथम सेनानी, जगद् गुरु महामानवता के अमर पुजारी, महर्षि भगवान दयानन्द सरस्वती जी महाराज १९वीं शताब्दी मे इस भारतीय रगमच पर आए उस समय देश की अवस्था बड़ी ही विचित्र थी। लोग वेदो को भूल चुके थे अनेक प्रकार के अवैदिक मत-मतांतर तीव्र गति से बढ़ रहे थे, मत-मतांतरो को जन्म देने वाले लोग अपने को कुछ का कुछ बता रहे थे, (जैसा कि उपरोक्त कहा जा चुका,) महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराजने इन सब अवस्थाओ का गम्भीरता से अध्ययन किया। और इनका सुधार करने के लिए कार्य क्षेत्र मे कूद पड़े। महर्षि ने प्रत्येक क्षेत्र मे क्रांति की वेदभाष्य करके उन्होने वेद के गौरव को बढ़ाया, और उन्होने घोषणा की कि हे ससार के लोगो! यदि तुम अपने जीवन को सुखमय एवं—शांतिमय बना सकते हो तो केवल वेदो को ही अपनाओ! क्योंकि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। अन्य मत-मतांतरो की साम्प्रदायिक पुस्तकें ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकती, क्योंकि वह पुस्तकें मनुष्यों की बनाई हुई हैं। वेद ही विश्व का कल्याण कर सकता है। और मनुष्य के जीवन को सुखी एवं शांति प्रदान कर सकता है। 'अन्य कुरान, पुराण' बाईबिल तथा अन्य अवैदिक पुस्तकें नही।

जब हम विश्व के इतिहास का आद्योपान्त निष्पक्ष भाव से अवलोकन करते हैं। तो मालूम पड़ता है कि महाभारत काल तक केवल एक ही धर्म था और वह था वैदिक धर्म। महाभारत काल के पश्चात ही अन्य मत-मतान्तरो का प्रादुर्भाव हुआ। जितने मत-मतांतर आज संसार में हैं उनका आदी स्रोत यही वैदिक धर्म हैं। क्योंकि वेदकी बहुत सी बातें इन मतों की धर्म पुस्तकोंमें व्यापक रूपसे विद्यमान हैं। हम एक दीपक उदाहरण उपस्थित करते जैसे एक दीपक कही जल रहा हो उसकी रोशनी तो हमेशा एक ही रग की होती है। लेकिन जो मनुष्य उसको अपनी आंखों पर नीला चश्मा चढ़ा कर देखता है। वह उसको नीला समझता है। हरे चश्मे वाला हरा, पीले चश्मे वाला पीला और काले चश्मे वाला काला ही देखता है। इस प्रकार उसके मत भिन्न-भिन्न हो जाते हैं और वह परस्पर (आपस में) विवाद और लड़ना झगड़ना आरम्भ करते हैं। यही दशा इन मत-मतान्तरों की है। अपने-अपने पक्षपात एवं स्वार्थ का चश्मा आंखो पर चढ़ा कर उन्होने सनातन वैदिक धर्म की उस दिव्य ज्योति को देखा है। यद्यपि वैदिकधर्म प्रकाश हमेशा से एक जैसा ही है। लेकिन ससार के भ्रांत लोगो ने उसे न समझ कर अपने-अपने मत-मतांतर खड़े कर लिए।

ससार के सब इतिहासिज्ञ विद्वान एक बात से एकमत हैं कि संसार के पुस्तकालय में यदि कोई पुरानी पुस्तक है तो वह है ऋगवेद अर्थात वेद ही है और यह भी मानते हैं कि सत्य सिद्धान्त यदि किसी के पास है तो वह इसी वैदिक धर्म से ही लिये गए हैं। जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान ईसाईयत के चौथे सिद्धान्तों पर विश्वास करने वाले प्रोफेसर मैक्समूलरने भी निष्पक्ष भाव से यही स्वीकार किया है कि 'दी ऋगवेदा इज ओल्डेस्ट बुक इन दा लायब्रेरी आफ दी होल वर्ल्ड' अर्थात समस्त ससार में यदि हम दृष्टिपात करते हैं तो संसार की लायब्रेरी में यदि कोई पुरानी पुस्तक है तो है वह 'ऋगवेद' ही है इसी तथ्य को स्वीकार करते हुए जार्ज बर्नार्डशा ने भी निष्पक्ष भाव से स्वीकार करते हुए कहाहै कि 'देयर इज ओन्लि वन ये रिलीजन थ्रो देयर आर थाऊजैन्ड वर्षियन आफ इट("**There is only one religion through there are thousand Warshian of it.**" यह ऐतिहासिक तथ्य हैं। कि इन मत मतान्तरो को फैले थोड़ा ही समय व्यतीत हुआ है। किन्तु वैदिक-धर्म तथा वेद ज्ञान सृष्टी के आरम्भ से ही चला आ रहा है। वैदिक धर्म की प्राचीनता को एक दो विद्वानो ने ही नही अपितु अनेक विद्वावो ने स्वीकार किया है इत्यादि।

अब हम मुख्य२ मत - मतान्तरो का सक्षेप से वर्णन करते हैं कि मत कब चला और किस ने चलाया और क्यो चला।

१. सर्वप्रथम हम पारसी मत को देखते हैं। इस मत को चले हुए लगभग ४५ सौ वर्ष हुए हैं। इस मत को चलाने वाले जरदुस्त महोदय थे जो हजरत मूसा से लगभग ५०० वर्ष पहले भारत देश में उत्पन्न हुए थे। इन की बनाई हुई पुस्तक "जिन्दावस्ता है।'

२. दूसरा मत चला (महा भारत कालके पश्चात) यहूदीमत, इस मत को चले हुए लगभग ४० सौ वर्ष व्यतीत हुए हैं। जरदुस्त के समकालीन हजरत इब्राहीम थे, जिनकी कथा बाईबल के ओल्डटेस्टामैंट धर्म में लिखी है।

इब्राहीम सैमिटिक वंश के थे और उन्हीं के पश्चात सैमिटिक लोगों से यहूदी मत फैला अर्थात प्रचलित हुआ जब सैमिटिक लोगोका सम्बन्ध पारसियों से हो गया तब उनकी बहुत-सी विचार-धाराओं को लेकर हजरतमूसा ने यहूदी मत का विस्तार किया। बाईबिल की पुरानी पुस्तक ही उनका धर्म ग्रन्थ है।

३—बौद्धमत तथा जैनमत इन दोनों मतों को चले हुए लगभग (२५००) २५ सौ वर्ष व्यतीत हुए हैं। इन दोनों मतों को जन्म देने वाले क्रमश: महात्मा बुद्ध तथा महावीर स्वामी थे।

४—ईसाईमत—इस मतको चले हुए लगभग २ हजार वर्ष होते हैं। इस मत को चलाने वाले ईसा मसीह थे। जिसका ईस्वी सन आजकल सभी लोग जानते हैं। हजरत ईसा मसीह फिलिस्तान के जेरूसलम नगर में उत्पन्न हुए। उनकी धर्म पुस्तक बाईबिल है।

५—इस्लाममत—इस मत को चलाने वाले हजरत मोहम्द साहब थे। मोहम्मद साहब ने अब से २४ सौ वर्ष पहले जन्म लेकर अरब में इस्लाम मत की स्थापना कर, उसका प्रचार किया उनकी धर्म पुस्तक कुरान हैं।

६—सिक्खमत—इस मत को चले हुए-लगभग ४ सौ वर्ष व्यतीत होते हैं। इस मत के संस्थापक गुरु नानक देव थे। इनकी धर्म पुस्तक गुरु ग्रन्थ साहब है। चार सौ वर्ष पूर्व जबकि वैदिक धर्म (हिन्दु-धर्म) खतरे में था। तब केवल वैदिक धर्म की रक्षा के लिए ही गुरु नानक देव ने इस मत को चलाया। परन्तु आज सिक्ख मत भी साम्प्रदायिक मत का रूप धारण कर चुका है। इन मतों के पश्चात और भी अनेक मत-मतान्तरो हैं। जो कि अवैदिक विचार-धाराओ को स्वार्थवश जन्म दे रहे हैं। उदाहरण के लिए जैसे:—पौराणिक मत, ब्रह्मसमाज, प्रार्थना देवसमाज, राधा स्वामी मत, मुनि समाज, शहन्शाही मत, हंस देव मत, गायत्री परिवार मत, आनन्द मार्गमत, ब्रह्मकुमारी मत, सच्चो सरकार मत इत्यादि। ऐसे और भी अनेक मत-मतांतर हैं जो कि वेद विरुद्ध हैं। इन मतों को भी थोड़ा ही समय अर्थात् १०० वर्ष के लगभग ही होता है किन्तु इसके विपरीत वैदिक-धर्म को आरम्भ हुए १ अरब, सत्तानवे करोड़, उन्नीस लाख, उनचास हजार, अडसठ वर्षो से निरन्तर चला आ रहा है। (अर्थात् सृष्टि के आरम्भ काल से ही वैदिक-धर्म चला आ रहा है) क्योंकि वेद भगवान् ने स्वयं कहा है कि 'देवस्य पश्य काव्यं, न ममार न जीर्यति' अर्थात् हे मनुष्य! (देवस्य काव्यं) परमात्मा के काव्य (वेद) को (पश्य) देख, वह कैसा है

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, २ फरवरी, १९६९ [अंक ११

राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा

राष्ट्र की प्रत्येक वस्तु देशवासियो के लिये बड़ी प्यारी होती है। भूमि हो या भवन, पताका हो या परम्परा सबके लिए सम्मान की भावना का होना नितान्त आवश्यक है। भाषा का स्थान भी बड़ा ऊचा है। राष्ट्र की किसी भी वस्तु का जो निरादर करता है उसे देश प्रेमी नहीं कहा जा सकता। जिसे देश की भूमि के लिये, भावना या भाषा के लिए प्यार सम्मान् का विचार नही है, वह राष्ट्र भक्ति से दूर है। भाषा तो सारे देश का मुख होता है। देश की जनता उसी के द्वारा ही तो आपस मे एकता का सम्पर्क बनाये रखती है। जहा भाषाओं मे भिन्नता आ जाती है। प्रान्त २ की बोलियां मानी तथा बोली जाती हैं—उस देश की उन्नति नहीं हो सकती। भाषा की एकता सारे देश की एकता का सबसे आवश्यक धन माना जाता है। एक केन्द्र का जैसे होना जरूरी है। उसी प्रकार केन्द्रीय भाषा का होना भी अनिवार्य है। सब शरीर को केन्द्र से ही तो जीवनरस या जीवन शक्ति मिलती है। भारत ने विदेशी सत्ता बाहर निकालनेके बाद अपना संविधान बनाया। उसमें हिन्दीको राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। हमारा दुर्भाग्य यह है कि अंग्रेजो के चले जाने के बाद उसके मानसपुत्र उसी विचार-धारा के बने रहे। उस विदेशी भाषा को छोड़ना नहीं चाहते। जनतन्त्र का इससे बढ़कर और क्या उपहास हो सकता है कि सारे भारत मे दो प्रति-शत ही अंग्रेजी पढ़े लिखे होंगे, किंतु उनकी ही आवाजका प्रभाव व अधि-कार सारे राष्ट्र पर मौजूद है। वे विदेशी भाषा को त्यागने को तैयार नहीं। और तो और इतने वर्षो के बाद भी भारत के साथ 'इंडिया' का शब्द जोड़ रखा है। टिकटें हो या नोट पैसे—सब पर इंडिया आज भी लिखा होता है। आज भी अंग्रेजी दैनिकों में तथा आकाशवाणी के समाचार प्रसारणो मे भारत का नाम पढ़ने व सुनने को नहीं मिलेगा। इंडिया ही होगा। इससे बढ़कर हमारे लिए दासता की मनोवृत्ति और क्या हो सकती है? कितना बड़ा जनता को धोखा दिया जाता है जब यह कहा जाता है कि अंग्रेजी के बिना हमारा देश उन्नति नही कर सकेगा? इस विचार से बढकर दासता का दूसरा विचार और क्या होगा? आज रूस ने जो ज्ञान विज्ञान मे इतनी उन्नति की है क्या अंग्रेजी के बल बूते पर? जापान ने या विरोधी चीन ने, फ्रांस या छोटे से देश इसरायलने इतनी प्रगति कर ली है क्या अंग्रेजी का दास बन कर? सत्य यह है कि हमारे देश मे ऐसी भावना देने वाले विदेशी विचारधारा के लोग हैं जो नही चाहते कि यह देश अंग्रेजी को त्याग दे। इसमे उनकी स्वार्थ की प्रवृत्तिया काम करती हैं। प्रभु करें कि ऐसे अंग्रेजो के मानस पुत्रो से भारत जितनी जल्दी छुटकारा प्राप्त कर सके—उतना ही अच्छा है। यह बीमारी बहुत परिवारों व सस्थाओ में कार्य करती हैं। हमे बड़ा ही दुःख व खेद होता है जबकि इतने वर्षो के बाद भी किसी के समारोह का निमन्त्रण पत्र अपनी भाषा में न होकर विदेशी भाषा मे होता है। या किसी संस्था का समारोह का कार्य अंग्रेजी में होता है। या आज भी किसी संस्था का नाम बाहिर के द्वार पर मोटे अक्षरों में अंग्रेजी में लिखा होता। इस पर लज्जा अनुभव होती है। हम भारत में बैठे हैं—विदेश में नहीं। सब से बढ कर तो दु:ख तो इस बात पर होता है, कि परीक्षा मे यदि कोई सारे विषयों में अच्छे अक लेकर उत्तीर्ण हो जाता है—किन्तु अंग्रेजी मे रह जाता है तो उसे सारी परीक्षा में फेल कर दिया जाता है। इस से बढ़ कर छात्र के साथ अधिक खिलवाड़ और क्या हो सकता है? विश्वविद्यालयों के ऐसे अपमानजनक नियमों में क्यों परिवर्तन नहीं कराया जाता। बात यह है कि सारे कुएं में ही भंग पड़ी है। इस समय राष्ट्र-भाषा वालों का वेतनस्तर स्कूलों मे कितना थोडा तथा अंग्रेजी वालों का कितना ऊंचा है—यह देख कर किसे दु:ख नही होता? गणराज्य दिवस प्रति वर्ष मना लेते हैं किन्तु राष्ट्र की इन बातों के सम्मान की ओर ध्यान नही दिया जाता। यह सब बदलना ही होगा।

इस गणराज्य दिवस२६ जनवरीसे हरियाणा सरकार ने अपना सारा सरकारी कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी मे कर देने की घोषणा करके राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा की है। हरियाणा की सरकार इसके लिए बधाई की पात्र है। राष्ट्रभाषा के नाते उसने अपने प्रान्त मे हिन्दी को पूरा २ सम्मान देकर उचित पग उठाया है।

पजाब मे राष्ट्रभाषा का अपमान जारी है। इसे प्रांत से निकाल दिया जा रहा है। हिन्दी प्रेमी इसके लिए सघर्ष जारी रखे हुए हैं। जब तक राष्ट्रभाषा हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान नही मिल जाता तब तक हिन्दी प्रेमी मौन होकर नहीं बैठेंगे। हम सविधान के अनुसार जो अल्पमत के अधिकार है—वही चाहते हैं। पजाब मे राष्ट्र भाषा के साथ यह खिलवाड क्यों किया जाये? राष्ट्र भाषा के इस अपमान को कैसे सहन किया जा सकता है? कितनी विचित्र बात है कि राष्ट्रपति को प्रधानमन्त्री या अन्य किसी ऊंचे नेता अधिकारी को हिंदी मे लिखे गए पत्र का उत्तर तो हिंदी मे मिल जाता है—किंतु पजाब मे हिंदी के पत्र को पहिले तो स्वीकार ही नही किया जाता—यदि लिखा भी जाए तो उत्तर उसमे नही मिलता। कितना राष्ट्रभाषा का अपमान है? इस प्रांत मे हिंदी प्रेमियो का राष्ट्रभाषा का सम्मान प्राप्त करने के लिए सघर्ष व अभियान जारी है। अधिकार मिलना ही चाहिए। जन-भावना जाग गई है उसे दबाया नही जा सकेगा। इस गणतन्त्र के महान् दिवस पर हरियाणा सरकार ने हिंदी को पूरी तरह से राजकाज के लिए अपनाकर प्रतिष्ठा का कार्य किया है। हम फिर इसके लिए बधाई देते हैं।

—त्रिलोक चन्द्र

शिवरात्रि विशेषांक

आर्य जगत आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर पंजाब का अपना साप्ताहिक मुखपत्र है। शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर प्रतिवर्ष की भान्ति इस बार भी अपना विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। आर्य समाज के मान्य और महान नेताओ, शिक्षा शास्त्रियो, प्रमुख विद्वानो एव प्रसिद्ध कवियों की सुन्दर कृतियो से भरपूर होगा। आर्य जगत पर इस के सारे प्रेमी परिवार की सदैव कृपा रहती है। हर प्रकार का सहयोग मिलता है। विशेषांक की तैयारी जारी है। साहित्य भी विचारो के प्रचार का बड़ा आवश्यक साधन होता है। इतनी विशाल शिक्षा सस्थाए स्कूलो, कालेजो व समाजो के रूप मे हैं। इस समय अपने दूसरे विचारो के मित्रो को इस के रूप मे यह मधुर—विचार—प्रसाद को बाटा जाए तो कितना लाभ हो सकता है। स्कूलो, कालेजो मे इसकी अधिक प्रतिया मंगवाकर छात्रो व अध्यापको के हाथों में पहुचाई जाए। विद्वान लेखको के लेखो से बड़ी प्रेरणा मिलती है। समाजों के उस दिन के समारोह मे जनता तक इसे पहुचाया जाये। दूसरे विचारो व अपने विचार के परिवारो मे विशेषांक की प्रतिया दी जाए। यह विशेषांक एक प्रकार का मधु-भंडार ही होता है। समय थोड़ा है हम सस्थाओ व समाजो के मान्य अधिकारियों से प्रार्थना करते हैं कि कृपा करते हुए इसकी अधिक से अधिक प्रतिया मगवाने का शीघ्र आदेश देवे। छपने पर बाद मे आदेश का पालन कठिन हो जाता है। यह सभा का मुखपत्र है। सभा आपकीहै। आप सभा के परिवार मे प्यारे अगहैं।

प्रिय दयानन्द के बारे में

मेरे युवक बेटे प्रिय दयानन्द एम.ए. के लापता हो जाने के बारे मे मान्य स्नेही सज्जनो के कई पत्र आते रहते है। आयजगत के द्वारा ही उनके इस विशेष स्नेह का धन्यवाद करते हुए निवेदन कर दिया करता हू कि अभी तक उसका कोई भी पता नही लग सका। उसका साधु आश्रम होशियारपुर मे रहते व कार्य करते हुए वहा से इस प्रकार लापता हो जाना एक रहस्य बना हुआ है। इस रहस्य का पता प्रभु कृपा से कभी तो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द तथा अन्य मत-मतांतर

–ब्रह्मचारी जगदीशचन्द्र वसु विद्या वाचस्पति, सिद्धान्तालंकार

संसार मे अनेकों सुधारक आए, जिनमे से बहुतने अपनेको ब्रह्म बताया किसी ने अपने को ब्रह्म का अवतार प्रगट किया, किसी ने अपने को ईश्वर का भेजा हुआ दूत बताया, किसी ने ईश्वर से साक्षात बातें करने वाला अपने को सिद्ध करने का यत्न किया किसी ने ईश्वर से कुश्ती लडने वाला कहा, किसी ने अपने को ईश्वर का पुत्र कहा, कोई यह कहता हुआ आया कि मैं आकाशों को पार करके ईश्वर से मिल आया हू मेरे साथ फरिश्ते हैं। मैं ईश्वर का प्यारा हूं, यदि मैं न होता तो संसार ही उत्पन्न न होता, कोई अपने को मसीह बताता हुआ आया। और कहा कि मैं ईश्वर का इकलोता बेटा हू, और मैंने ही संसार को बनाया है। इत्यादी बातें सुधारकों ने कहीं।

परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी मे एक महान् आत्मा ने भी जन्म लिया, जिसका नाम था वेदोद्धारक आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज। इस महान आत्मा ने (उपरोक्त) इन बातो में से एक भी बात नहीं कही, अपितु यह कहा कि—(बैक टू दी वेदास) हे संसार के लोगो! वेदो की ओर चलो।

जिस समय वेदोउद्धारक, राष्ट्रोउद्धारक पतित पावन आदित्य ब्रह्मचारी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम सेनानी, जगद् गुरु महामानवता के अमर पुजारी, महर्षि भगवान दयानन्द सरस्वती जी महाराज १९वीं शताब्दी मे इस भारतीय रंगमंच पर आए उस समय देश की अवस्था बड़ी ही विचित्र थी। लोग वेदो को भूल चुके थे अनेक प्रकार के अवैदिक मत-मतांतर तीव्र गति से बढ़ रहे थे, मत-मतांतरो को जन्म देने वाले लोग अपने को कुछ का कुछ बता रहे थे, (जैसा कि उपरोक्त कहा जा चुका,) महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराजने इन सब अवस्थाओ का गम्भीरता से अध्ययन किया। और इनका सुधार करने के लिए कार्य क्षेत्र मे कूद पड़े। महर्षि ने प्रत्येक क्षेत्र मे क्रांति की वेदभाष्य करके उन्होने वेद के गौरव को बढाया, और उन्होने घोषणा की कि हे संसार के लोगो! यदि तुम अपने जीवन को सुखमय एव—शांतिमय बना सकते हो तो केवल वेदो को ही अपनाओ! क्योंकि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। अन्य मत-मतांतरों की साम्प्रदायिक पुस्तकें ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकती, क्योंकि वह पुस्तकें मनुष्यो की बनाई हुई हैं। वेद ही विश्व का कल्याण कर सकता है। और मनुष्य के जीवन को सुखी एव शांति प्रदान कर सकताहै। 'अन्य कुरान, पुराण' बाईबिल तथा अन्य अवैदिक पुस्तकें नही।

जब हम विश्व के इतिहास का आद्योपान्त निष्पक्ष भाव से अवलोकन करते हैं। तो मालूम पड़ता है कि महाभारत काल तक केवल एक ही धर्म था और वह था वैदिक धर्म। महाभारत काल के पश्चात ही अन्य मत-मतान्तरो का प्रादुर्भाव हुआ। जितने मत-मतांतर आज संसार में हैं उनका आदी स्रोत यही वैदिक धर्महै। क्योंकि वेदकी बहुत सी बातें इन मतों की धर्म पुस्तकोंमें व्यापक रूपसे विद्यमान हैं। हम एक दीपक उदाहरण उपस्थित करते जैसे एक दीपक कही जल रहा हो उसकी रोशनी तो हमेशा एक ही रंग की होती है। लेकिन जो मनुष्य उसको अपनी आंखों पर नीला चश्मा चढ़ा कर देखता है। वह उसको नीला समझता है। हरे चश्मे वाला हरा, पीले चश्मे वाला पीला और काले चश्मे वाला काला ही देखता है। इस प्रकार उसके मत भिन्न-भिन्न हो जाते हैं और वह परस्पर (आपस में) विवाद और लड़ना झगड़ना आरम्भ करते हैं। यही दशा इन मत-मतान्तरों की है। अपने-अपने पक्षपात एवं स्वार्थ का चश्मा आंखों पर चढ़ा कर उन्होने सनातन वैदिक धर्म की उस दिव्य ज्योति को देखा है। यद्यपि वैदिकधर्म प्रकाश हमेशा से एक जैसा ही है। लेकिन संसार के भ्रांत लोगो ने उसे न समझ कर अपने-अपने मत-मतांतर खड़े कर लिए।

संसार के सब इतिहासिज्ञ विद्वान एक बात से एकमत हैं कि संसार के पुस्तकालय में यदि कोई पुरानी पुस्तक है तो वह है ऋगवेद अर्थात वेद ही है और यह भी मानते हैं कि सत्य सिद्धान्त यदि किसी के पास है तो वह इसी वैदिक धर्म से ही लिये गए हैं। जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान ईसाईयत के चौथे सिद्धान्तों पर विश्वास करने वाले प्रोफेसर मैक्समूलरने भी निष्पक्ष भाव से यही स्वीकार किया है कि 'दी ऋगवेदा इज ओलडेस्ट बुक इन दा लायब्रे री आफ दी होल वर्ल्ड' अर्थात समस्त संसार में यदि हम दृष्टिपात करते हैं तो संसार की लायब्रे री मे यदि कोई पुरानी पुस्तक है तो है वह 'ऋगवेद' ही है इसी तथ्य को स्वीकार करते हुए जार्ज बर्नार्डशा ने भी निष्पक्ष भाव से स्वीकार करते हुए कहाहै कि 'देयर इज ओन्लि वन ये रिलीजन थ्रो देयर आर थाऊजेन्ट वर्षियन आफ इट("**There is only one religion through there are thousand Warshian of it.**" यह ऐतिहासिक तथ्य हैं। कि इन मत मतान्तरो को फैले थोड़ा ही समय व्यतीत हुआ है। किन्तु वैदिक-धर्म तथा वेद ज्ञान सृष्टी के आरम्भ से ही चला आ रहा है। वैदिक धर्म की प्राचीनता को एक दो विद्वानो ने ही नही अपितु अनेक विद्वावो ने स्वीकार किया है इत्यादि।

अब हम मुख्य२ मत - मतान्तरो का संक्षेप से वर्णन करते हैं कि मत कब चला और किस ने चलाया और क्यों चला।

१. सर्वप्रथम हम पारसी मत को देखते हैं। इस मत को चले हुए लगभग ४५ सौ वर्ष हुए हैं। इस मत को चलाने वाले जरदुस्त महोदय थे जो हजरत मूसा से लगभग ५०० वर्ष पहले भारत देश में उत्पन्न हुए थे। इन की बनाई हुई पुस्तक "जिन्दावस्ता है।'

२. दूसरा मत चला (महा भारत कालके पश्चात) यहूदीमत, इस मत को चले हुए लगभग ४० सौ वर्ष व्यतीत हुए हैं। जरदुस्त के समकालीन हजरत इब्राहीम थे, जिनकी कथा बाईबल के ओल्डटेस्टामेंट धर्म में लिखी है।

इब्राहीम सैमिटिक वंश के थे और उन्हीं के पश्चात सैमिटिक लोगो से यहूदी मत फैला अर्थात प्रचलित हुआ जब सैमिटिक लोगोका सम्बन्ध पारसियों से हो गया तब उनकी बहुत-सी विचार-धाराओं को लेकर हजरतमूसा ने यहूदी मत का विस्तार किया। बाईबिल की पुरानी पुस्तक ही उनका धर्म ग्रन्थ है।

३—बौद्धमत तथा जैनमत इन दोनों मतों को चले हुए लगभग (२५००) २५ सौ वर्ष व्यतीत हुए हैं। इन दोनों मतों को जन्म देने वाले क्रमश: महात्मा बुद्ध तथा महावीर स्वामी थे।

४—ईसाईमत—इस मतको चले हुए लगभग २ हजार वर्ष होते हैं। इस मत को चलाने वाले ईसा मसीह थे। जिसका ईस्वी सन आजकल सभी लोग जानते हैं। हजरत ईसा मसीह फिलिस्ताव के जेरूसलम नगर में उत्पन्न हुए। उनकी धर्म पुस्तक बाईबिल है।

५—इस्लाममत—इस मत को चलाने वाले हजरत मोहम्द साहब थे। मोहम्मद साहब ने अब से २४ सौ वर्ष पहले जन्म लेकर अरब में इस्लाम मत की स्थापना कर, उसका प्रचार किया उनकी धर्म पुस्तक कुरान हैं।

६—सिक्खमत—इस मत को चले हुए-लगभग ४ सो वर्ष व्यतीत होते हैं। इस मत के संस्थापक गुरु नानक देव थे। इनकी धर्म पुस्तक गुरु ग्रन्थ साहब है। चार सो वर्ष पूर्व जबकि वैदिक धर्म (हिन्दु-धर्म) खतरे में था। तब केवल वैदिक धर्म की रक्षा के लिए ही गुरु नानक देव ने इस मत को चलाया। परन्तु आज सिक्ख मत भी साम्प्रदायिक मत का रूप धारण कर चुका है। इन मतों के पश्चात और भी अनेक मत-मतान्तरो हैं। जो कि अवैदिक विचार-धाराओं को स्वार्थवश जन्म दे रहे हैं। उदाहरण के लिए जैसे:—पौराणिक मत, ब्रह्मसमाज, प्रार्थना देवसमाज, राधा स्वामी मत, मुनि समाज, शहन्शाही मत, हस देव मत, गायत्री परिवार मत, आनन्द मार्गमत, ब्रह्मकुमारी मत, सच्ची सरकार मत इत्यादि। ऐसे और भी अनेक मत-मतांतर हैं जो कि वेद विरुद्ध हैं। इन मतों को भी थोड़ा ही समय अर्थात् १०० वर्ष के लगभग ही होता है किन्तु इसके विपरीत वैदिक-धर्म को आरम्भ हुए १ अरब, छियानवे करोड़, उन्नीस लाख, उनंचास हजार, अठहत्तर वर्षो से निरन्तर चला आ रहा है। (अर्थात् सृष्टि के आरम्भ काल से ही वैदिक-धर्म चला आ रहा है) क्योंकि वेद भगवान् ने स्वयं कहा है कि 'देवस्य पश्य काव्यं, न ममारं न जीर्यति' अर्थात् हे मनुष्य! (देवस्य काव्यं) परमात्मा के काव्य (वेद) को (पश्य) देख, वह कैसा है

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, २ फरवरी, १९६९ [अंक ११

राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा

राष्ट्र की प्रत्येक वस्तु देशवासियों के लिये बड़ी प्यारी होती है। भूमि हो या भवन, पताका हो या परम्परा सबके लिए सम्मान की भावना का होना नितान्त आवश्यक है। भाषा का स्थान भी बड़ा ऊंचा है। राष्ट्र की किसी भी वस्तु का जो निरादर करता है उसे देश प्रेमी नहीं कहा जा सकता। जिसे देश की भूमि के लिये, भावना या भाषा के लिए प्यार सम्मान् का विचार नही है, वह राष्ट्र भक्ति से दूर है। भाषा तो सारे देश का मुख होता है। देश की जनता उसी के द्वारा ही तो आपस मे एकता का सम्पर्क बनाये रखती है। जहा भाषाओं मे भिन्नता आ जाती है। प्रान्त २ की बोलिया मानी तथा बोली जाती हैं—उस देश की उन्नति नही हो सकती। भाषा की एकता सारे देश की एकता का सबसे आवश्यक अंग माना जाता है। एक केन्द्र का जैसे होना जरूरी है। उसी प्रकार केन्द्रीय भाषा का होना भी अनिवार्य है। सब शरीर को केन्द्र से ही तो जीवनरस या जीवन शक्ति मिलती है। भारत ने विदेशी सत्ता बाहर निकालनेके बाद अपना संविधान बनाया। उसमें हिन्दीको राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। हमारा दुर्भाग्य यह है कि अग्रेजो के चले जाने के बाद उसके मानसपुत्र उसी विचार-धारा के बने रहे। उस विदेशी भाषा को छोड़ना नहीं चाहते। जनतन्त्र का इससे बढ़कर और क्या उपहास हो सकता है कि सारे भारत में दो प्रतिशत ही अग्रेजी पढ़े लिखे होंगे, किंतु उनकी ही आवाजका प्रभाव व अधिकार सारे राष्ट्र पर मौजूद है। वे विदेशी भाषा को त्यागने को तैयार नहीं। और तो और इतने वर्षो के बाद भी भारत के साथ 'इंडिया' का शब्द जोड़ रखा है। टिकटें हों या नोट पैसे—सब पर इंडिया आज भी लिखा होता है। आज भी अंग्रेजी दैनिकों में तथा आकाशवाणी के समाचार प्रसारणो में भारत का नाम पढने व सुनने को नही मिलेगा। इंडिया ही होगा। इससे बढकर हमारे लिए दासता की मनोवृत्ति और क्या हो सकती है? कितना बड़ा जनता को धोखा दिया जाता है जब यह कहा जाता है कि अग्रेजी के बिना हमारा देश उन्नति नही कर सकेगा? इस विचार से बढकर दासता का दूसरा विचार और क्या होगा? आज रूस ने जो ज्ञान विज्ञान मे इतनी उन्नति की है क्या अग्रेजी के बल बूते पर? जापान ने या विरोधी चीन ने, फ्रास या छोटे से देश इसरायलने इतनी प्रगति कर ली है क्या अग्रेजी का दास बन कर? सत्य यह है कि हमारे देश म ऐसी भावना देने वाले विदेशी विचारधारा के लोग हैं जो नही चाहते कि यह देश अग्रेजी को त्याग दे। इसमे उनकी स्वार्थ की प्रवृत्तिया काम करती हैं। प्रभु करें कि ऐसे अग्रेजो के मानस पुत्रो से भारत जितनी जल्दी छुटकारा प्राप्त कर सके—उतना ही अच्छा है। यह बीमारी बहुत परिवारों व संस्थाओं में कार्य करती हैं। हमे बड़ा ही दु:ख व खेद होता है जबकि इतने वर्षों के बाद भी किसी के समारोह का निमन्त्रण पत्र अपनी भाषा मे न होकर विदेशी भाषा मे होता है। या किसी संस्था का समारोह का कार्य अग्रेजी मे होता है। या आज भी किसी संस्था का नाम बाहिर के द्वार पर मोटे अक्षरो में अंग्रेजी में लिखा होता। इस पर लज्जा अनुभव होती है। हम भारत में बैठे हैं—विदेश में नहीं। सब से बढ़ कर तो दु:ख तो इस बात पर होता है, कि परीक्षा मे यदि कोई सारे विषयों में अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हो जाता है—किन्तु अग्रेजी में रह जाता है तो उसे सारी परीक्षा में फेल कर दिया जाता है। इस से बढ़ कर छात्र के साथ अधिक खिलवाड़ और क्या हो सकता है? विश्वविद्यालयों के ऐसे अपमानजनक नियमों में क्यों परिवर्तन नहीं कराया जाता। बात यह है कि सारे कुए में ही भग पड़ी है। इस समय राष्ट्र-भाषा वालो का वेतनस्तर स्कूलो मे कितना थोड़ा तथा अग्रेजी वालो का कितना ऊंचा है—यह देख कर किसे दु:ख नही होता? गणराज्य दिवस प्रति वर्ष मना लेते हैं किन्तु राष्ट्र की इन बातो के सम्मान की ओर ध्यान नही दिया जाता। यह सब बदलना ही होगा।

इस गणराज्य दिवस२६ जनवरीसे हरियाणा सरकार ने अपना सारा सरकारी कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी मे कर देने की घोषणा करके राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा की है। हरियाणा की सरकार इसके लिए बधाई की पात्र है। राष्ट्रभाषा के नाते उसने अपने प्रान्त मे हिन्दी को पूरा २ सम्मान देकर उचित पग उठाया है।

पजाब मे राष्ट्रभाषा का अपमान जारी है। इसे प्रात से निकाल दिया जा रहा है। हिन्दी प्रेमी इसके लिए सघर्ष जारी रखे हुए हैं। जब तक राष्ट्रभाषा हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान नही मिल जाता तब तक हिन्दी प्रेमी मौन होकर नहीं बैठेंगे। हम सविधान के अनुसार जो अल्पमत के अधिकार है—वही चाहते हैं। पंजाब मे राष्ट्र-भाषा के साथ यह खिलवाड क्यो किया जाये? राष्ट्र भाषा के इस अपमान को कैसे सहन किया जा सकता है? कितनी विचित्र बात है कि राष्ट्रपति को प्रधानमन्त्री या अन्य किसी ऊचे नेता अधिकारी को हिंदी मे लिखे गए पत्र का उत्तर तो हिंदी में मिल जाता है—किंतु पजाब मे हिंदी के पत्र को पहिले तो स्वीकार ही नही किया जाता—यदि लिखा भी जाए तो उत्तर उसमें नही मिलता। कितना राष्ट्रभाषा का अपमान है? इस प्रात में हिंदी प्रेमियो का राष्ट्रभाषा का सम्मान प्राप्त करने के लिए सघर्ष व अभियान जारी है। अधिकार मिलना ही चाहिए। जन-भावना जाग गई है उसे दबाया नही जा सकेगा। इस गणतन्त्र के महान् दिवस पर हरियाणा सरकार ने हिंदी को पुरी तरह से राजकाज के लिए अपनाकर प्रतिष्ठा का कार्य किया है। हम फिर इसके लिए बधाई देते हैं।

—त्रिलोक चन्द्र

शिवरात्रि विशेषांक

आर्य जगत आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर पंजाब का अपना साप्ताहिक मुखपत्र है। शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर प्रतिवर्ष की भान्ति इस बार भी अपना विशेषाक प्रकाशित कर रहा है। आर्य समाज के मान्य और महान नेताओं, शिक्षा शास्त्रियो, प्रमुख विद्वानो एव प्रसिद्ध कवियो की सुन्दर कृतियो से भरपूर होगा। आर्य जगत पर इस के सारे प्रेमी परिवार की सदैव कृपा रहनी है। हर प्रकार का सहयोग मिलता है। विशेषाक की तैयारी जारी है। साहित्य भी विचारो के प्रचार का बड़ा आवश्यक साधन होता है। इतनी विशाल शिक्षा सस्थाए स्कूलो, कालेजो व समाजो के रूप मे हैं। इस समय अपने दूसरे विचारो के मित्रो को इस के रूप मे यह मधुर—विचार—प्रसाद को बाटा जाए तो कितना लाभ हो सकता है। स्कूलो, कालेजो मे इसकी अधिक प्रतिया मगवाकर छात्रो व अध्यापको के हाथों मे पहुचाई जाए। विद्वान लेखको के लेखो से बड़ी प्रेरणा मिलती है। समाजो के उस दिन के समारोह मे जनता तक इसे पहुचाया जाये। दूसरे विचारो व अपने विचार के परिवारो मे विशेषाक की प्रतिया दी जाए। यह विशेषाक एक प्रकार का मधु-भडार ही होता है। समय थोडा है हम सस्थाओ व समाजों के मान्य अधिकारियो से प्रार्थना करते हैं कि कृपा करते हुए इसकी अधिक से अधिक प्रतिया मगवाने का शीघ्र आदेश देवे। छपने पर बाद मे आदेश का पालन कठिन हो जाना है। यह सभा का मुखपत्र है। सभा आपकीहै। आप सभा के परिवार मे प्यारे अगहैं।

प्रिय दयानन्द के बारे में

मेरे युवक बेटे प्रिय दयानन्द एम.ए. के लापता हो जाने के बारे मे मान्य स्नेही सज्जनो के कई पत्र आते रहते हैं। आर्यजगत के द्वारा ही उनके इस विशेष स्नेह का धन्यवाद करते हुए निवेदन कर दिया करता हू कि अभी तक उसका कोई भी पता नही लग सका। उसका साधु आश्रम होशियारपुर मे रहते व कार्य करते हुए वहा से इस प्रकार लापता हो जाना एक रहस्य बना हुआ है। इस रहस्य का पता प्रभु कृपा से कभी तो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

क्रांति के अग्रदूत :

श्री सुभाषचन्द्र बोस

ले०—कुशलदेव शास्त्री, 'विद्याभास्कर'-

एक दिन एकनौजवान, चद्दरओढे, कन्धे पर दुपट्टा डाले, नेत्रों पर उपनेत्र लगाये, कलकत्ते को लम्बी चौडी सड़को पर लम्बे चौडे डग भरता हुआ चला जा रहा था कि अचानक उस की दृष्टि एक सुन्दर नवयुवती पर पड़ी जो कि अट्टालिका पर बैठी अपने सुन्दर बालो को सवार रही थी। नवयुवक उसकी ओर देखता ही रहगया। नवयुवक को इस प्रकार देखते हुए देखकर नवयुवती ने कहा—

जो आबरू की तेगे अलम देखते हैं,
वो पहिले सर अपना कलम देखते हैं।
जो होते हैं गैरो की सूरत पै शैदा,
हमेशा वो रुजो अलम देखते हैं।

क्या आप जानते हैं नारी के इस प्रकार कहने पर नवयुवक ने क्या कहा था? कहा था उसने—

हरशै मे देखा प्रभु नजर आया,
उसी को हम अपना बलम देखते हैं।
न ख्वाईश है तेरी व सूरत पै शैदा,
मुसव्विर की हम तो कलम देखते हैं।

यही नवयुवती अन्त मे जाकर आजाद हिंद सेना की कैप्टन बनी, जिनका नाम श्रीमती लक्ष्मी था। और यही नवयुवक सुभाषचन्द्र बोस था जो कि अन्तिम दम तक देश के लिए जिया व मरा।

प्रिय पाठको! क्रांति के अग्रदूत सुभाष चन्द्र बोस का जन्म १८९७ ई० २३ जनवरी को कटक मे हुआ था। पिता श्री जानकी नाथ जी ने बालक सुभाषको कटक के एक स्कूलमें अध्ययनार्थ भेज दिया। बाल्यकाल से ही सुभाष की बुद्धि अति प्रखर थी। उन्होंने स्कूल की पढाई यथा-शीघ्र समाप्त करके प्रेसिडेन्सी कालेज मे प्रवेश ले लिया। इसी समय डा० सुरेश मिर्जापुर स्ट्रीट के मेडिकल मैदान मे एक नये आश्रम की स्थापना हुई। जिसके द्वारा देश सेवक नवजवान कार्यकर्त्ताओं का निर्माण होता था। जब सुभाष को इस आश्रम का पता चला तो अपने भाई शरद्चन्द्र बोस सहित अपना योगदान आश्रम को देते हुए यह प्रतिज्ञा की कि—"आजन्म ब्रह्मचारी रह कर देश-सेवा करूगा।"

भाइयो! विद्यार्थी वर्ग ही नही अपितु भारतीय जन-जन भी भारत मां के आसुओ को हृदयरक्त जल से धोने वाले श्री सुभाष बाबू को नहीं भुला सकगा, जिन्होने कि सी० एफ० ओटन नामक एक अग्रेज प्रो० के "यू ब्लैक मंकी" अर्थात् "तुम काले बन्दर हो" इस अपमानजनक वाक्य का प्रतिशोध उसके गौर वर्ण गाल पर पाचो अगुलियो की मोहर लगाते हुए या यूं कहिये कि गालो को तमाचो का रसास्वादन कराते हुए दिया था। इस प्रकार भारत की शान पर किंचिन्मात्र भी आच न आने देते हुए एफ० ए० और बी० ए० परीक्षा पास कर कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से लन्दन में आई० सी० एस० परीक्षा भी उत्तीर्ण की, और कुछ समय बाद स्वदेश आने से पहिले ही भारत मन्त्री के हाथो मे गुलामी की नोकरी का त्यागपत्र देते हुए मन मे सोचा और प्रतिज्ञा की कि—"हम आज़ादी हासिल करके रहेगे या मर जायेंगे।"

जैसे ही सुभाष स्वदेश आए तो उन्हे अपनी इच्छा के अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ। प्यार के गीतो की झन्कार सुनने वाले कान जोशीले गीत सुन रहे थे। गान्धी जी के नेतृत्व में असहयोग की दुन्दुभि बज चुकी थी। सुभाषबाबू ने भी दिग्गज नेता देशबन्धु चितरञ्जन दास से भेंट कर असहयोग आन्दोलन के इस पहिले मोर्चे मे अपने अन्त:करण में छिपी हुई क्राति की चिन्गारियों को ऐसा चमकाना शुरू किया कि शाघ्र ही सरकार की राह में काटे बन गए और देश भक्ति के फलस्वरूप छ: मास की सजा प्राप्त की। सजा सुनने के उपरान्त तीक्ष्ण व्यग कसते हुए सुभाष ने कहा कि—'केवल छ: मास क्या मैंने मुर्गी चुराने का अपराध किया है।' ऐसा था वह वीर साहसी सुभाष।

जेल से छूटने के बाद फिर सुभाष बाबू को सरकार ने २४ अक्तूबर १९२४ को गोपी नाथ नामक एक तरुण क्रातिकारी के हाथों मि० डे० नामक एक अग्रेजी की हत्या की आड़मे गिरफ्तार कर बर्मा की राजधानी 'माण्डले' भेज दिया। सुभाष जी की गिरफ्तारी का करुण समाचार सुन स्व० श्री देशबन्धुजी भी कह उठे थे कि—

'यदि मातृभूमि का प्रेम एक अपराध है तो मैं भी अपराधी हूं। अगर सुभाषचन्द्र बोस अपराधी घोषित किया जाता है तो मैं भी उतना अपराधी हू, जितना कि सुभाषचन्द्र बोस।

मई मास १९२६ में जेल से छूटने के बाद फिर दो बार और सुभाष बाबू को ब्रिटिश सरकार ने जेल की सीखचो में बन्द कर दिया परन्तु देशभक्त की, भारत मा की पारतन्त्र्यरूपी बेडियों को मुक्त करने की भावना को जेल की दीवारें न दबा सकीं। जैसे ही सुभाष बाबू जेल से छूटे तो उन्होंने मथुरा में होने वाले नोजवान भारत सभा के अधिवेशन मे एक ऐसा ओजस्वी भाषण दिया जिसका नवयुवको पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप सुभाष अनिश्चित काल के लिये जेल मे डाल दिए गए। सुभाष का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरने लगा। सारा देश तिलमिला उठा। अन्त मे सरकार ने उन्हें विवश होकर जेल से छूटते ही विदेश चले जाने की शर्त पर छोड़ दिया। सुभाष बाबू विदेश चले गये। इसी बीच बोस के पिता जी अत्यधिक बीमार हो गये। सुभाष जी को भी पिता जी के दर्शन करने की अत्यन्त उत्कट लालसा थी, लेकिन दु:ख है कि उनके आने से पहिले ही उनके पिता जी का देहान्त हो गया और उन्हे सरकार के आदेशानुसार पुन: विदेश लौट जाना पड़ा। अब और अधिक सुभाष बाबू मातृभूमि की गोद से बाहर रहना सहन न कर सके और वे एक इटालियन जहाज से स्वदेश आगये। स्वदेश आते ही सुभाष बाबू को गिरफ्तार कर मार्च सन् १९३७ में मुक्त कर दिया गया।

कुछ समय बीत जाने पर कलकत्ता मे हालवेल स्मारक के विरुद्ध आंदोलन शुरू हुआ। नेता जी ने इस में अपनी पूरी शक्ति का परिचय दिया। फलस्वरूप नेता जी को कारावास का मेहमान बन जाना पड़ा। देशभक्त ने कृष्ण मन्दिर में आमरण अनशन कर दिया और सोचा कि—'या तो मैं अनशन के फलस्वरूप शहीद होजाऊंगा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वैदिक-धर्म-गौरव-गान

—गोपीचन्द्र शर्मा

(तर्ज—तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान)

सभी धर्मों से ऊंची शान, हमारा वैदिक धर्म महान्

चारों वेद हैं इसके स्रोत, सकल विद्याओ से ओत प्रोत,
विश्व का जिन से हो कल्याण, हमारा वैदिक धर्म महान्।
छ: दर्शन और उपनिषद्, प्रशंसा कर गये हो गद्गद्,
शोपनहायर से गुणवान, हमारा वैदिक धर्म महान्।
धरा पर धर्म यही था एक, बाद मे फैल गये हैं अनेक,
सत्य में करके झूठ मिलान, हमारा वैदिक धर्म महान्।
शाति अहिंसा का सन्देश, धर्म यह ही देता है उपदेश,
जीवो, देवी जीवन दान, हमारा वैदिक धर्म महान्।
धर्म यह ही है आलमगीर, खून से सींच गये कई वीर,
प्राण दे करके कर गये त्राण, हमारा वैदिक धर्म महान्।
कुमारिल, शङ्कर व दयानन्द, लेखराम और श्रद्धानन्द,
निज जीवन कर गये कुर्बान, हमारा वैदिक धर्म महान्।
बजा गये इसी धर्म का नाद, जैमिनी, गौतम, कपिल, कणाद,
नही जिन सा भू पर विद्वान्, हमारा वैदिक धर्म महान्।
ऊंची थी इसी से आर्य कौम, थर्राता भूमण्डल व्योम,
आज पर हो रहो है गल्तान, हमारा वैदिक धर्म महान्।
कैसा दृश्य हृदय द्रावक, सो रहा है यह सिंहशावक,
छेड़ उठ वह ही वैदिक तान, हमारा वैदिक धर्म महान।
उठे गूंज अखिल अम्बर, वन, पर्वत, नदी, ग्राम, नगर,
गर्जना कर तू सिंह समान, हमारा वैदिक धर्म महान्।

श्री सुभाषचन्द्र बोस

(पृष्ठ ४ का शेष)

या क्रांति का ईंधन बन जाऊंगा अगर सरकार मुझे छोड देती है तो मैं जेल से छूटते ही फरार हो जाऊंगा।' अततोगत्वा सरकार ने उन्हें कारावास से मुक्तकर उन्ही के कलकत्ते वाले मकान मे नजरबन्द कर दिया। कूटनीतिज्ञ सुभाष ने २६ जनवरी सन् १९४१ मे लगभग खुफिया पुलिस वालों की आखो मे धूल झोक, नजरबन्दी का चक्रव्यूह तोड, मौलाना पठान का वेश बना काबुल होते हुए जर्मनी मे जाकर हिटलर से हाथ मिलाया। इस भेंट मे सुभाष को हिटलर के द्वारा 'डिप्टी फ्युहरर' की उपाधि के साथ एक शक्तिशाली वायुयान तथा संदेश प्रसारण के लिए ट्रांसमीटर भी प्राप्त हुआ।

इसके बाद सुभाष जापान पहुचे वहां १९४१ मे २१ अक्तूबर को आजाद हिंद सेना की स्थापना हुई। तदन्तर सिंगापुर में रासबिहारी बोस ने नेताजी का स्वागत करते हुए कहा—'पिछले बीस सालो से मैं अपनी मां की गोद से दूर हू। कितनी बार भारत मा ने हाथ बढाकर मुझ जैसे जिद्दी शिशु को अपनी गोद मे घसीटना चाहा मगर माता के हाथो मे हथकडियो जकडी हुई थी इसलिये मैं नही गया, पर आज मेरा दूसरा भाई उम्र मे छोटा मगर लड़ाई मे मुझसे आगे सुभाष मसीहा बन कर इन्सानियत के घावों को आजादी के फाए से ठीक करने आया है। हम २० लाख नंगे-भूखे प्रवासी भारतीय स्वतन्त्रता के दूत का स्वागत करते हैं और हम चाहते हैं कि वे हमारा नेतृत्व करें।'

रासबिहारी बोस के बाद सुभाष मंच पर खड़े हुए और उन्होने कहा—'मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'

आजादी का इतिहास नही काली
स्याही लिख पाती है।
उसके लिखने के लिये खून की जरूरत
होती है॥

'मुझे इस में रत्ती भर भी सदेह नही कि जब हम हिन्दुस्तानी सीमा के अन्दर प्रवेश करेंगे उस वक्त हिन्दुस्तान के अन्दर एक विशाल क्रांति होगी। जिस में एक भी ब्रिटिश सत्ताधारी टिक न सकेगा मैं भगवान को साक्षी कर यह पवित्र शपथ ग्रहण करता हूं कि भारत को आजाद करने के लिए अन्तिम दम तक लडता रहूंगा। स्वतन्त्रता मिल जाने के उपरात भी जब कभी आजादी की रक्षा के लिये मेरी जरूरत होगी तो अपनेरक्त की अंतिम बूंद भी मा के दिव्य चरणो पर चढ़ा दूंगा।'

तदनन्तर भारत के हरेक सिपाही व अधिकारी ने तिरंगे झंडे के नीचे खडे होकर देश पर मर मिटने की प्रतिज्ञा की और 'कदम-कदम बढ़ाये जा' इस प्रयाण गीत के साथ 'जय हिंद' व 'चलो दिल्ली' का नारा लगाते हुए क्रांति की गाडी अग्रसर हुई। सुभाष ब्रिग्रेड के रंगून पहुचने से पूर्व आजाद हिंद सरकार ने ब्रिटेन व अमेरिका के विरुद्ध युद्ध का नगाडा बजा दिया। इसके बाद एक फौज भारतीय सीमा की ओर रवाना हुई। मई १९४०मे भारतीय स्थल 'माऊडेक' मे प्रवेश कर 'शुभ सुख चैन की वर्षा बरसे' गाने के साथ तिरंगा ध्वज शान के साथ लहरा दिया गया। लेकिन कुछ कालबाद ऐसीपरिस्थितिहुई कि जापानी जर्मन सेना ने घुटने टेक दिए। जय की आशा पराजय में बदल गई, फिर भी आजाद हिन्द सेना ने लडकर प्राण देने का निश्चय किया। तदनुसार बहुत से सिपाही आगे बढ़कर लड़े, गिरफ्तार हुए और शहीद हो गए।

इसके बाद रणाङ्गन मे बरसते बमो के नीचे निर्भयता पूर्वक खड़े होने वाले सुभाष बाबू कई बार भारतीय स्थिति पर सैगून रेडियो से बोलते रहे और अगस्त सन १९४५ मे कर्नल हबीबुर्रहमान के साथ टोकियो के लिए रवाना हो गए।

हबीबुर्रहमान के अनुसार दुर्भाग्य से मार्ग मे हवाई दुर्घटना हो गई। नेता जी के सिर मे चोट आई और हस्पताल मे छः घण्टे बाद देहावसान हो गया। उनका कहना है कि नेताजी जिस समय चिता पर चढ़ाए गए उस समय मैं वहीं मौजूद था। बहुत से लोग नेता जी को अब भी जीवित मानते हैं पर मैं कहता हू कि यदि नेता जी जीवित होते तो भारत की दशा को देखकर अवश्य ही भारतीय सम्मान की रक्षा के लिए अज्ञातवास करने की अपेक्षा अपने पवित्र रक्त की अन्तिम बून्द को भी भारत मां के दिव्य चरणो पर चढ़ा देते। सुभाष ने जो भी कुछ किया जनहित और भारत मां की रक्षार्थ किया। उन्होने एक बार कहा था कि—'जनता जो नही चाहती वह सुभाष भी नही चाहेगा पर यदि आप डूबना चाहेंगे तो सुभाष अपने प्राण देकर भी आपकी रक्षा करेगा।'

इस प्रकार आजादी के दिवाने, धैर्य के सागर, नवयुवको के हृदय सम्राट्, क्राति के अग्रदूत सुभाषचन्द्र बोस ने अपना सर्वस्व भारत मा की बलिवेदि पर न्योछावर कर देशवासियों के दिलो का दुलार पाया। अनगणित अपरिचित लोगो का प्यार पाया और अपने बलिदान के द्वारा भारत के युवकों मे स्वतन्त्रता के लिये मर-मिटने की अभिलाषा पैदा की, जोकि भावी सन्तति के दिलों मे सदा-२ के लिए बनी रहेगी।

जय हो! मातृभूमि पर
मरने वाले सेनानी।
अमर हुई इतिहास तुम्हारा,
लिखने वाली स्याही॥

ऋषि वचन अमृत—ऋषि वाणी

संग्रहकर्त्ता—मथुरादास नवांकोट, अमृतसर

★ राजा और प्रजा के पुरुष मिलके सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धिकारक राजा, प्रजा के सम्बन्धरूप व्यवहार मे तीन सभा अर्थात्—१. विद्यार्य्य सभा २. धर्मार्य सभा, ३. राजार्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलकृत करे।

★ (किसी) एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राज सभा के आधीन रहे।

★ यदि राजवर्ग, प्रजा से स्वतन्त्र रहेंगे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करेंगे, क्योंकि अकेला राजा स्वाधीन व उन्मत्त होकर प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह राजा प्रजा को खाए जाता है, इसलिए किसी एक को राज्य मे स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह व मांसाहारी, हृष्ट-पुष्ट पशु को मारकर खा लेते है वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है, अर्थात् किसी को अपने से अधिक न होने देता है और श्रीमान् धनवानो को लूट-खसूटकर और अन्याय से दण्ड (कर-टैक्स) लेकर अपना प्रयोजन पूरा करता है।

★ जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

महा-विद्वानो को विद्यार्य सभा का अधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्मार्य सभा का अधिकारी, और प्रशसनीय धार्मिक पुरुषो को राजार्य-सभा का सभासद बनाना चाहिए, और जो उन सब मे सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव वाला महान पुरुष हो उसको राज आर्य सभा का पति रूप मानकर सब प्रकार से उन्नति करें।

★ तीनो सभाओ की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम बनाए और नियमो के अधीन सब लोग बरते। सबके हितकारक कामो मे सम्मति करके सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और धर्मयुक्त कामो मे अर्थात् जो-जो निज के काम हैं उन-उनमे वह स्वतन्त्र रहे।

★ यदि एक अकेला सब वेदो के जाननेहारा द्विजो मे उत्तम सन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे वही श्रेष्ठ धर्म है। क्योंकि अज्ञानियो के सहस्रो लाखो करोड़ो मिलकर जो कुछ व्यवस्था करें उसको कभी न मानना चाहिए।

★ जो ब्रह्मचर्य, सत्यभाषणादि व्रत, वेद विद्या वा विचार से रहित, जन्म मात्र से शूद्रवत, वर्तमान है उन सहस्रो मनुष्यो के मिलने से भी सभा नही कहाती। जो अविद्या युक्त, वेदो को न जानने वाले मनुष्य जिस धर्म को कहे उसको कभी न मानना चाहिये क्योंकि जो मूर्खों के कहे हुए धर्म के अनुसार चलते हैं उनके पीछे सैकड़ो प्रकार के पाप लग जाते हैं।

★ इस लिये तीनो अर्थात् विद्यार्यसभा, धर्मार्यसभा और राजार्यसभाओ मे मूर्खों को कभी भरती न करे किन्तु सदा विद्वान और धार्मिक पुरुषों का स्थापन करें।

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

आर्य कभी भी पराधीन न हुए

—विजय पाल आर्य, दयानन्द कालिज हिसार

क्यों ! ठीक ही तो है। हमने कब और किसकी दासता स्वीकार की ? राजनैतिक क्षेत्र हो या धार्मिक अथवा सामाजिक, आर्यों ने हमेशा अपनी स्वतन्त्र मनोवृत्ति दिखलाई। हमारा शासक कोई भी रहा हो, हम उसके गुलाम, दास तो न बने। हमने उसे नेता तो न माना। उसके शासन काल में हमने चुप्पी तो न साधी। दास तो तब होते यदि उसकी दासता स्वीकार कर लेते। लेकिन इतिहास साक्षी है कि हमने कभी भी विधर्मी को चैन से न बैठने दिया। बाबर यदि यहां आया तो राणा सांगा के रूप में हमने उससे युद्ध किया। औरंगजेब ने यदि हमारी स्वाधीनता को नष्ट करना चाहा तो शिवाजी बनकर उसके होश गुम कर दिये। अकबर ने यदि चालाकी से हमको पराधीन रखना चाहा तो राणा प्रताप ने भूखे रह कर भी उसे चैन से न बैठने दिया। गौरी को पृथ्वीराज के हाथों और सिकन्दर को पोरस के हाथो मार खानी पड़ी। अंग्रेज भी यहा सुख चैन से राज्य न कर सके। १९१३ में लार्ड हार्डिंग पर बम फैंके जाने वाले काण्ड मे भाई बालमुकन्द जी ने वीर गति प्राप्त की। कितने क्रांतिकारी शहीद हुए यदि उनके केवल नाम ही लिखे जाए तो ग्रन्थ बन जाए। सारांश यह है कि हमने कभी पराधीनता स्वीकार न की।

हमने केवल ईश्वर, सत्य तथा न्याय के आगे झुकना सीखा है। असत्य व अन्याय की दासता हमने स्वीकार न की। हैदराबाद व लोहारू के नवाबों ने यदि हमारी स्वाधीनता छीननी चाही तो मुह की खानी पड़ी। जेले जाकर, बलिदान देकर उनके बिगड़े दिमागों को ठीक कर दिया। अन्याय के आगे झुके नहीं।

आज जिस स्वतन्त्रता को हम भोग रहे हैं वह आर्य समाज के प्रयत्नों का ही तो फल है। १८७५ मे जबकि कांग्रेस का जन्म भी न हुआ था, उस भयंकर समय में अंग्रेजों के जरा भी विरुद्ध बोलना अपनी मृत्यु को निमन्त्रण देना था। उस समय स्वामी दयानन्द जी ने अपनी अमरकृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखकर कि कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अपनी स्वतन्त्र मनोवृत्ति दर्शाई थी। कांग्रेस की भू० पू० अध्यक्षता डा० ऐनीबीसेंट ने **Indian Nation** में लिखा था—

Swami Daya nand was the first to proclain India for Indians.

अंग्रेजो ने यहां अंग्रेजी शिक्षा पद्धति लागू की। अंग्रेजी यहां की शिक्षा का माध्यम बना। ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजाराम मोहनराय ने तो अंग्रेजी का समर्थन करके अपनी दास मनोवृत्ति का परिचय दिया था। लेकिन यहा पर भी हमारी स्वतन्त्रता की मनोवृत्ति ही रही। स्वामी दयानंदजी ने स्वय गुजराती होते हुए हिन्दी का समर्थन किया था। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद दिलवाने के लिए लाखों हस्ताक्षर करा कर ब्रिटिश सरकार के पास भिजवाए थे।

यही बस नहीं। हमने स्त्री व शूद्र की पराधीनता को अपनी पराधीनता समझा। उनको उनके अधिकार दिलवाए। उनके लिए चिरकाल से बंद पड़े शिक्षा के द्वारा खोले। सति-प्रथा, बाल व वृद्ध विवाह, छूआछूत, जातपात आदि से जनता को आजाद किया। विधवाओं को विवाह की अनुमति देकर उनकी छिनी हुई स्वतन्त्रता उन्हें दी।

धर्म के क्षेत्र मे भी हम सजग रहे। धर्म का वास्तविक रूप समझा कर जनता को अज्ञान रूपी पराधीनता से मुक्त किया। ये तिलक, ये रोजे, यह मूर्तिपूजा और श्राद्ध आदि पाखण्डों से जनता को मुक्त किया। बात क्या ! हमने कभी स्वतन्त्रता का दामन न छोड़ा। इसीलिये मैंने लिखा है कि—आर्य कभी भी पराधीन न हुए।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का उपाधि तथा पुरस्कार वितरणार्थ आठवां वार्षिकोत्सव

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का उपाधि तथा पुरस्कार वितरणार्थ आठवां वार्षिकोत्सव दिनांक १९ जनवरी को विद्यालय के प्रांगण मे समारोह सहित सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमुदाय के मध्य अतिथि दान वीर तथा कर्मठ सेठ श्रीरतनचन्द जी सूद नयी दिल्ली ने विद्यालय के छात्रों को प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार प्रदान किया। तत्पश्चात उन्होने विद्यालय के नवनिर्मित मेहरचन्द ब्लाक (भूतपूर्व आचार्य दयानन्द कालेज लाहौर) का उदघाटन किया। विद्यालय का कार्य व्यवस्था की प्रशसा करते हुए अपनी शुभकामनाए प्रकट की। इस अवसर पर सेठ जी ने विद्यालय को पांच हजार की राशि प्रदान की तथा प्रतिमास सौ रुपया देने का वचन दिया है। उनसे इतना दान और देने की प्रार्थना की गयी आशा है कि स्वीकार हो जाएगी हम विद्यालय की ओर से उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं, तथा ईश्वर से उन की उन्नति की प्रार्थना करते हैं।

स्वामी समर्पणानन्दजी महाराज

आर्यकुमार सभा गुरुकुल झज्जर

आर्यजगत के सर्वमान्य नेता श्री स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज के निधन पर पं० सत्यपाल जी (उपाध्याय) की अध्यक्षता मे आर्यकुमार सभा गुरुकुल झज्जर में शोक सभा मनाई गई जिस में उनके स्थान की क्षति को अपूरणीय बताते हुये ब्रह्मचारियों ने शोकाकुल हृदय से उनके प्रति अपनी श्रद्धाजलियां अर्पित की। तत्पश्चात् गुरुकुल के मुख्य अधिष्ठाता श्री बलदेव जी तथा प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री रामकिशन जी ने मूर्धन्य प्रवर सन्यासी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सन्तप्त मानस भावो मे दिवंगत आत्मा को आर्यसमाज की महान विभूति अभिव्यक्त किया।

अन्त में श्री उपाध्याय जी ने स्वामी जी महाराज के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुये उनको महर्षि दयानन्द का अनन्य भक्त बतलाया और कहा कि वे राष्ट्र के महान कर्णधार यशस्वी लेखक, वक्ता एव भारतीय परम्परा के पूर्ण समर्थक थे। आज हम उन्हें अपने बीच में न देखकर अनाथ से हो गये हैं। भगवान उस महान आत्मा को सद्गति प्रदान करें। ★★

दण्ड

★ चाहे पिता, आचार्य, मित्र, स्त्री, पुत्र और पुरोहित क्यो न हो, जो स्वधर्म मे स्थित नही रहते वह राजा का अदण्ड्य नहीं होता अर्थात् जब राजा न्यायासन पर बैठ न्याय करे तब किसी का पक्षपात न करे किन्तु यथोचित दण्ड देवे।

★ न मित्रता और न पुष्कल (बहुत सा) धन की प्राप्ति से भी राजा सब प्राणियों को दुख देने वाले साहसिक (दुष्ट) मनुष्य को बन्धन छेदन किये बिना कभी न छोड़े।

प्रिय दयानन्द के बारे में

(पृष्ठ ३ का शेष)

लगेगा सारा समाज इसका पता करने में लगा हुआ है। जब भी प्रिय दयानन्द जी के बारे में कुछ पता लगेगा सबकी सेवा में नम्रता भरा निवेदन करूंगा। लगभग तीन महीने लापता हुए होने लगे हैं। अब तो उसके जीवन के बारे में भी सन्देह होने लगा है। क्या पता आश्रम में उसके साथ क्या-क्या खेल खेला गया। —त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

महर्षि दयानन्द तथा अन्य मत-मतांतर

(पृष्ठ २ का शेष)

(न जीर्यति न ममार) न पुराना होता है और न मरता है। प्रभु का यह काव्य — समय (वेद) उपदेश सदैव एक जैसा बना रहता है। कभी विनष्ट नहीं होता और न ही पुराना होता है।

बन्धुओ ! मेरे गुरु देव दयानन्द ने इसी विचारधारा (सिद्धांत) को जीवन में लेकर वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया। वेद का प्रचार करते समय उन्होंने को २१ बार जहर दिया। अनेक प्रकार के कष्ट दिये। राजा महाराजाओ ने अनेक प्रकार के प्रलोभन दिए। परन्तु आदित्य ब्रह्मचारी देवदयानन्द ने इन सब प्रलोभनों को, कष्टो को झेलते हुए, अपने जीवन में आगे बढ़ने और सम्पूर्ण जीवन को सनातन वैदिक धर्म के प्रचार हेतु न्यौछावर कर दिया। और सम्पूर्ण भारतवर्ष देश में भ्रमणकर सर्वसाधारण लोगो के अन्त: करणो में वैदिक धर्म का महत्व स्थापित किया। और अकाट्य प्रबल युक्तियोंसे यह अच्छी तरह समझा दिया कि आधुनिक मत-मतान्तरो से भिन्न वैदिक धर्म ही प्राचीनतम और श्रेष्ठ है। वैदिक धर्म से ही संसार का तथा मनुष्यों का कल्याण हो सकता है अन्य से नहीं।

पाठकगण ! महर्षि ने किसी अपने निजी मत की स्थापना नही की। उन्होने तो अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाशके अन्त में 'स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाश' मे अपने मत को स्पष्ट करके लिखाहै कि—

'जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्तो के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं। जिनको कि मैं भी मानता हू। सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल मे सबको एक-सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना का मत-मतान्तर चलाने का लेश-मात्र भी अभिप्राय: नहीं है। किन्तु जो सत्य है इसको मानना मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। इत्यादि विचार-धारा उपस्थित की है, जिससे बुद्धिमान लोग सहज ही में समझ सकते है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज क्या चाहते थे। महर्षि चाहते थे कि सब लोग पक्षपात एवं स्वार्थ को छोड़कर एक सनातन वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे आ जाएं। इस सम्बन्ध में महर्षि ने एक सभा भी दिल्ली (इन्द्र-प्रस्थ) में आयोजित की थी, जिसमे अनेक मत-मतान्तरों के धर्माचार्यो मठाधीशों, महन्तों, मौलवीयो एव पादरियों को आमन्त्रित किया था, परन्तु दुर्भाग्यवश अनेक मत-मतान्तरो के धर्माचार्य स्वार्थ के वशीभूत होकर एकमत नही हो सके। दूसरा प्रयत्न महर्षि जी ने काशी के विद्वानो को एकत्रित कर उनको ललकारा कि हे काशी के विद्याभिमानी थोथे पण्डितो ! आओ सत्यासत्य का निर्णय करें, परन्तु यह भी महर्षि का प्रयत्न असफल रहा।

कुछ लोग कहा करते हैं कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके एक और मत को खड़ा कर दिया। मैं उन लोगो से कहना चाहता हू कि महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना करके किसी वेद विरुद्ध मत को जन्म नही दिया, परन्तु आर्य समाज की स्थापना करके सनातन वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। महर्षि जी महाराज ने उन दस नियमो के अन्दर कोई भी नियम ऐसा नही जिससे अपना व्यक्तिगत मत प्रदर्शित किया हो। केवल उन्होने वेद को ही सन्मुख रखा, वेद के महत्व को प्रगट करते हुए लिखाहै कि 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है वेद का पढ़ना और पढाना, सुनना और सुनाना यह सब आर्यों का परम धर्म है। महर्षि की कितनी महान् विशेषता है कि उन्होने वेद के महत्व को प्रगटकर इस आर्य जाति पर कितना महान उपकार किया है।

संसार मे अनेक महापुरुषों का प्रादुर्भाव हुवा, उन्हो में से किसी ने अहिंसा को परमधर्म बताया, किसीने सत्य को और किसी ने कुछ, किसी ने कुछ अपनीर वेद विरुद्ध डफलीबजाते रहे। परन्तु महा मानवता के उस अमर पुजारी ने अवबी बात न कह कर केवल वेद को ही पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सर्व आर्यों का परम धर्म बतलाया।

यदि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज अपने स्वतन्त्र मत की स्थापना करना चाहते तो यह नहीं लिखते कि वेद सब सत्य-विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है। अपितु यह लिखते कि सत्यार्थ प्रकाश सब सत्यविद्याओ की पुस्तक हैं सत्यार्थ प्रकाश का पढना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। परन्तु यह नही लिखा, उन्होने तो यही घोषणा की कि वेद ही सर्वोपरि है। वेद के माध्यम से ही विश्व का तथा मानव का कल्याण हो सकता है, अन्य मत-मतातरों की साम्प्रदायिक पुस्तको से नही।

महाभारत काल के पश्चात यदि किसी महापुरुष को विशेष महत्व दिया जा सकता है तो वह केवल महर्षि दयानन्द को ही दिया जा सकताहै अन्य किसी को नही, क्योकि महर्षि दयानन्द ही वह महामानव थे जिन्होने केवल वेद को ही सर्वोपरि समझा। अन्य धर्माचार्यों एव महापुरुषो ने अपनी रचित पुस्तकों को।

पाठकवृन्द ! मैं अधिक न लिखता हुआ अन्त में यही विशेष कह देना चाहता हू कि योगीराज महर्षिदेव दयानन्द ने केवल वेद और ईश्वर के दृढ विश्वास पर बड़े-बड़े निन्दको के सिर वेदो के सामने झुकवा दिये और घोर नास्तिकों को कट्टर आस्तिक बना दिया, न मौजियो से काम लिया, न फरिश्तो से, न तलवार भलाई न छल किया केवल सत्योपदेश से ही ससार को मोहित कर दिया। आदर्श ब्रह्मचारी बन कर ससार को ब्रह्मचर्य की शिक्षा दे गये, सत्य के बल से एवं ईश्वर के दृढ विश्वास पर डूबती हुई वैदिक सस्कृति व आर्य जाति को नौका को पार लगा गए। नाना प्रकार के मत-मतान्तरो के साम्प्रदायिक पाखण्डो का उन्मूलन करके एक ईश्वर की भक्ति के सामने ही सिर झुकवा गए। ससार के लिए एक ईश्वर, एक ही उपासना, एक गायत्री, एक सा कर्म-काड, एक सा भोजन और भाषा बताकर, ओर वेदों पर लगे हुए कलक के टीके को मिटाकर दीपावली के दिन उस परम-पिता परमात्मा की गोद में जा विराजे।

मैंने यह 'महर्षि दयानन्द तथा अन्य मत-मतान्तरों' नामक विषय पर संक्षिप्त रूप से विचार प्रगट किये हैं। जिस से प्रगट होता है कि महाभारत काल के पश्चात केवल वेदोद्धारक राष्ट्रोद्धारक पतित-पावन आदित्य ब्रह्मचारी, महामानवताके अमर पुजारी भारतीय स्वाधीनता सग्राम के प्रथम सेनानी जगद् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ही ऐसे महा-मानव थे जिन्होने ईश्वरीय ज्ञान सनातन वैदिक धर्म को ही अपनाकर वैदिक संस्कृति, सभ्यता एव इस आर्य जाति का पुनरुद्धार किया। और अन्य मत मतान्तरो को जन्म देने वाले लोगो ने, अपने अज्ञान एवं स्वार्थ की पूर्ति के लिए, अन्य वेद विरुद्ध मत-मतान्तरो को जन्म दिया इसीलिए हम सब आर्यों का (हिन्दुओ का) इस पुनीत अवसर पर हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम भगवान देव दयानन्द के बताए हुए सनातन वैदिक धर्म के मतानुसार चलकर हम अपना तथा विश्व का कल्याण करें। श्री प्रकाश चन्द्र कवि के शब्दो मे :—

किसी ने तो बाईबिल, किसी ने
कुरान पै ही आख मीच के ईमान
लाओ ये सुझाया था।
किसी ने पुराण भागवत किसी
ने 'प्रकाश' धर्म ग्रथ हनुमान
चालिसा बताया था।
किसीने केवल ज्ञान, किसी ने केवल
कर्म किसी ने केवल ढोल
भक्ति का बजाया था।
किन्तु स्वामी दयानन्द जी ने वेद
द्वारा ज्ञान कर्म भक्ति तीनो का
महत्व दरशाया था।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब के सप्ताहिक पत्र आर्य जगत के व्यवस्थापक श्री प. धर्म देव जी आर्य ने २३-१-६९ से सभा और आर्य जगत की सेवाओं से त्याग पत्र देकर श्री वीरेन्द्र जी द्वारा सस्थापित आर्य प्रतिनिधि सभा मे नौकरी कर ली। सभी सम्बद्ध आर्य समाजें सूचित रहे।

वेदा राम शर्मा
मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि
सभा, पंजाब।

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा ट्रस्ट सहायक समिति दिल्ली

विश्व वन्दनीय महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी १३-१४-१५-१६ फरवरी १९६९ को ऋषिबोधोत्सव ११वें ऋषि मेले के रूप में मनाया जायेगा। प्रतिवर्ष की भांति दिल्ली सहायक समिति की ओर से 'महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा' को टंकारा महालय की सहायतार्थ १५००० रु० की राशि थैली के रूप में भेंट की जायेगी। यह राशि दिल्ली राज्य की आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, वैदिक संस्थाओं, आर्य बन्धुओं तथा ऋषिभक्तों द्वारा दिये गए व एकत्रित किए गये दान से ही प्रदान की जाती है अतएव आप सब महानुभावों से प्रार्थना है कि आप भेंट की जाने वाली राशि के लिए अपने व्यक्तिगत मित्रों से तथा समाज, सभा व सम्बन्धित वैदिक संस्थाओं से अधिक से अधिक धन सहायक समिति के कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर १५, हनुमान रोड नई दिल्ली में भिजवाने की कृपा करें।

[illegible] आर्य समाज भा[illegible] आनन्दपुर का उत्सव

[illegible] गांव वाली आनन्दपुर में ता० [illegible]४ से २६ [illegible] जालन्धर के उपदेशक श्री प. प्रभु दयाल आर्य प्रभाकर, श्री भूराराम वानप्रस्थी, श्री सुमेरसिंह श्री रणजीत सिंह ने वैदिक धर्म का प्रचार किया।

जिसका गांव के लोगों पर लोगों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा।

भाली आनन्दपुर समाज के अधिकारी श्री प्रधान चौ० सूरत मन्त्री हुकमचन्द जी बड़े ही उत्साह से कार्य कर रहे हैं।

श्री प्रधान सूरतसिंह जी के घर श्री पं. प्रभु दयाल जी आर्य प्रभाकर ने वैदिक रीति से यज्ञ करवाया जिसके यजमान चौ० सूरतसिंह जी और उनकी धर्म पत्नी [illegible] देवी अध्यापिका ने यज्ञ की समाप्ति पर एक सौ एक रुपया आर्य प्रादेशिक सभा को दान [illegible] सभा प्रधान की ओर उनकी [illegible] का धन्यवाद करती है।

आर्यजगतका शिवरात्रि ऋषिबोधअंक

यह जान कर आर्य जनता को बड़ा हर्ष होगा कि शिवरात्रि के शुभ अवसर पर एक अनुपम भेंट ऋषि बोध विशेषांकके रूप में 'आर्यजगत साप्ताहिक' अपने पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा है। यह अंक बड़ा अनुपम होगा। सभी सज्जनों व संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि वह प्रचारार्थ अपना अमूल्य आर्डर शीघ्र अति शीघ्र अधिक से अधिक भेज दें ताकि उनकी प्रतियां सुरक्षित रख [illegible] जाएं। लेखक तथा कवि महोदयों की सेवा में प्रार्थना है कि अपने लेख तथा कविताएं शीघ्र कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। ताकि समय पर [illegible]।

निवेदक—धर्मदेवार्य, व्यवस्थापक

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मान्तसिह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाबके निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी मे) १·५०
१२. सध्या पर व्याख्यान-ले०महात्मा हंसराज जी १·००
१३. Dayanand His Life & Work(ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २.५०
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र(ले० आनन्द स्वामीजी महाराज)१.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M.A.) ०·५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाष्य प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. ·५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, ·५०
२१. मुंडक उपनिषद(ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०·३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना(ले० स्वामी सोमानंद जी)उर्दू में ०·३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १·२५
२४. सीता(ले. आनंदस्वामीजी)०·३७
२५. पधनी (,, ,, ,,)०·३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A.) अंग्रेजी में १.२५
२८. [illegible] १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर का अमूल्य साहित्य अवश्य पढ़ें

मनोविज्ञान शिव संकल्प	३ ५०	दयानन्द गर्जना	०-७५
वैदिक गीता	२-५०	सिनेमा या सर्वनाश	०-३०
सन्ध्या अष्टांग योग	०-७५	भारत की अधोगति के कारण	०-५०
कन्या और ब्रह्मचर्य	०-१५	नित्य कर्मविधि	०-१५
स्वर्ग लोक के पांच द्वारपाल	०-१५	ऋषि दृष्टान्त प्रकाश	०-५०
आत्मोपदेश	०-३५	वेद गीतांजलि	०-२०
ब्रह्मस्तोत्र (सन्ध्या जपजी)	०-१२	विवाह पद्धति मोटे अक्षर	०-६०
,, (पंजाबी मे)	०-१२	गुरु ग्रन्थ का वैदिक पथ	०-७५
ओंकार स्तोत्र	०-१५	सुखी गृहस्थ	०-१५
प्यारे ऋषि की कहानियां	०-३०	दृष्टांत दीपिका	०-३०
देश भक्तों की कहानियां	०-२५	ओंकार उपासना	०-३०
धर्मवीरों की ,,	०-५०	खण्डनकौन ही करता	०-३०
कर्मवीरों की ,,	०-५०	गायत्री गीता	०-२५
शूरवीरो की ,,	०-३०	सदाचार शिक्षा	०-२५
नादानो की ,,	०-३०	हवन मन्त्र मोटे अक्षर	०-५०
भारत की आदर्श वीर देवियां	०-५०	आर्य सत्संग गुटका	०-७५
गड़गज चिमटा भजन	०-२५	खालसा ज्ञान प्रकाश दू० भाग	२-००

निम्न पते से आर्य तथा वेद साहित्य शीघ्र मंगावें पता—

स्वा.आत्मानन्द प्रकाशन मंदिर वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर,अम्बाला

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम. ए. पी. एच. डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलापप्रेस,मिलाप रोड जालंधर तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब।

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक ६) १६ फाल्गुण २०२५ रविवार दयानन्दाब्द १४४–२ मार्च १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

अग्ने मर्ता अमर्त्यस्त्वम्

हे अग्ने— अग्निदेव भगवन्! मर्तान्–मरणधर्मा मनुष्यों में अमर्त्यः–अमरहो त्वम्–आप केवल। सारा मानव जगत् तथा जीव समुदाय मौत के मुख में चला जाता है। कोई भी बच नही सकता। किन्तु केवल भगवान् ही सदा अमर हैं। मौत उनको मार नहीं सकती। सारा शरीर ही परिवर्तनशील है। प्रभु देव ही सदा एक रस है, अमृत है, अमर है। लोगो! मरणधर्मा होकर उस अमर प्रभु को क्यों भुलाते हो। उसी की भक्ति से मानव जीवनमें मौत का भय रोका जा सकता है। वह अमरहै। उसी की भक्ति से अमरता होगी।

अथर्व: ८-३-२०

वे दा मृ त

विश्वास और संकल्प

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद् भूयासमश्वजिद धनञ्जयो हिरण्यजित्॥

अथर्ववेद ७-५०-८

अर्थः–(कृत) कर्म(मे) मेरे(दक्षिणे) दाहिने(हस्ते) हाथ में हैं। (जयः) विजय (मे) मेरे (सव्ये) बाएं हाथ में (आहितः) स्थित है। (गोजित्) मैं भूमि को जीतने वाला मैं (भूयासम्) होऊं (अश्वजित्) घोड़े को जीतने वाला और (धनजयः) धन को जीतने वाला और (हिरण्यजित्) सुवर्ण जीतने वाला होऊं।

इसका भाव यह है

मनुष्य जीवन आशा और विश्वास का जीवनहै। इस में निराशा तथा उदासीनता के लिए किसी प्रकार का कोई भी स्थान नही है। वेद का भक्त कहता है कि सब कुछ मेरे दोनों हाथों में है। दाहिने हाथ में कर्म है। यह कर्मयोग का महान केन्द्र है। मैं निरन्तर इससे विविध कार्य करता रहता हू। कर्मशीलता इसमें भरी हुई है। उत्साह पूर्वक कर्म को फल विजय है। बाएं हाथ में सब ओर से विजय ही विजय है। मैं सबको प्राप्त कर सकता हूं। कर्म करने से तथा कर्मयोगी बन कर मुझे भूमि, भवन, विभूति के भंडार आदि सारी सम्पत्तियां मिल जाती हैं। आशा और विश्वास मेरे जीवन के दिव्य सहयोगी हैं मैं आशावादी तथा विश्वासी हू।

–सं.

ऋषि दर्शन

सत्यं ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात्

सदा जीवन में सत्य-सत्य ही ब्रूयात्–बोलना चाहिये और वह प्रियं–प्यारा तथा मीठा सत्य ही बोलना चाहिये।

जीवन में सत्य चितन सत्य भाषण सत्य व्यवहार और सत्य मनन हो। असत्य को छिपाने के लिये कई और असत्य बोलने पड़तेहै। किंतु सत्य हो मीठा, सरस। कड़वा सत्य ठीक नही होता। मिठास भरा सत्य अपना प्रभाव डाल देता है। कड़वा सत्य सबको विरोधी बना देता है। प्यारा सत्य ही बोलो। इसी मे कल्याण होता है। मधुर सत्य परम सम्पत्ति है।

महात्मा मनु

अधिष्ठाता––डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी०एच० डी० (सभा मन्त्री)

सम्पादक––त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

अमर शहीद लेखराम

'प्राण-देन दे वेद ध्वजा को
धरती पर फहराया
रक्त ज्योति से जिसने युग को
ज्योति पथ दिखलाया।

उस ज्योति को कोई नही मिटा सकता जिस ज्योति की बत्ती पक्की मजबूत हो और जिसमें तेल समय २ पर पडता रहे। वह वृक्ष सूख नही सकता जिसको समय-समय पर पानी नलाई व पूरी खुराक मिलते रहे। इसी तरह धर्म की ज्योति (वेद की) दयानन्द द्वारा लगाई गई मजबूत ज्योति कैसे सूख सकती है जिसको लेखराम ने अपने खून से महान त्याग, तपस्या व मेहनत से सींचा हो।

हम कितने लापरवाही हैं कितने बदकिस्मित हैं कि जो हमारे लिये, हमे, ज्ञान ज्योति देने के लिये अपने प्राणो को तेल बनाकर उस ज्योति मे डालता है। जो हमे रोशनी दिखलाने के लिये अपने घर-बाहिर, स्त्री-पुरुष धन-दौलत को न्यौछावर कर देता है उसके प्रति थोडे भी आसू नही बहाते उसके बलिदान दिवस पर घर मे चुप्पी साधे बैठे रहते हैं। अरे जिस पौधे ने हमे फल-फूल दिये, छाया दी उस पौधे के माली की मेहनत को तनिक भी याद नही करते। उठो छोडो यह मोह-जाल अपने कर्त्तव्य का पालन करो।

धर्म के दिवाने ने हमारे लिये क्या-क्या नही सहा था। हमे उठाने के लिये, इस देश को हिलाने के लिये, वेद के सन्देशरूपी प्रकाशसे फैले हुये अन्धकाररूपी अज्ञानको मिटानेके लिये ऋषि का परवाना क्या कुछ सहता है—लीजिये एक झलकी।

एक शहर मे, जहा पर कोई जानने, पहचानने वाला नही, कोई विचार सुनने वाला नही पहुच जाता मस्ताना शहर मे मुनादी हो जाती है कि अमुक जगह पर वेद-प्रवचन होगा। पर मेरे ये मूर्ख लोग वेद प्रवचन को क्या समझते थे उनके पास तो भागवत जैसे वेद थे। वेद के नाम पर तो वे लाठी लेकर आ जाते थे। अस्तु, ठीक समय पर वेद सन्देश शुरू हो जाता हो, सामने सुनने वाला कोई भी नही होता पर दयानन्द के शिष्य ने तो अपना कार्य रोकना थोडा था। लोग आस-पास की दुकानों, मकानों पर चढ़ कर लगे ईंटें चलाने, पत्थर बरसाने पर यहां तो कुछ असर ही नही था। आखिर जब लोगों की यह बेशर्मी देखी न गई तो एक सज्जन पुरुष आगे बढ़ा और खड़ा होकर उन बेशर्मो को कहने लगा कि बन्द करो ये ईंटें पत्थर अगर अब किसी ने हिम्मत की तो मैं देखूंगा उसे फिर क्या था ईंटे भी बन्द हो गई पर सुनने कोई न आया। लेखराक ने फिर भी हिम्मत न हारी और लगा रहा, डटा रहा अपने काम पर। आखिरकार कुछ दिन की मेहनत के फलस्वरूप वहा एक मजबूत आर्यसमाज स्थापित हो गया।

कैसी धर्म की लगन थी यह। लेखराम यह जानता था और उसका यह नारा था कि—

'यदि है प्यारा काया
का तो आर्य वीर न बनना,
यहाँ यह सोच कर आना
कि जीवन भेंट है करना।

कितना प्यार, लगन, उत्साह है यह प्रचार करने में। कादिया मे एक पाखण्डी दम्भी ने अपना माया-जाल फैलाया हुआ था, धर्म के नाम पर मासूम बच्चो को लोगों को धर्म से पथ-भ्रष्ट कराया जाता था। इस माया जाल के मुखिया मिर्जा साहिब ने यह घोषणा की हुई थी कि जो कोई भी मेरे पास एक साल रह कर कोई चमत्कार न देख लेगा उसे मैं २४०० रु० दूगा। यह एक ढोग था जिम मे साधारण जनता फस जाती थी। जब लेखराम ने यह सुना तो उसने मिर्जा को चिट्ठी लिखी कि मे तैयार हू एक साल के लिए। पर मिर्जा ने कई अडचनो खड़ी कर दी कि बातचीत शुरू करने से पहले तुम (लेखराम) भी २४००) जमा कर दो। दूसरे मैं (मिर्जा) किसी सस्था के मुख्य आदमी से बातचीत करूगा।

पर धर्म के दिवाने ने इन दोनो शर्तो की भी कोई परवाह न की और आ डटा मैदान मे। पूरे दो मास कादिया में रहने के पश्चात मिर्जा साहिब को जब असली माया को देखा तो लगे गरजने कादिया मे उनके घर में, जिसका परिणाम यह हुआ कि मिर्जा ने जो अपने माया दिखलानी थी वह तो दिखलाई पर

शिकवा-शहीद

(श्री बिहारी लाल मंत्री आर्य समाज कादियां)

क्यो आर्यो खूब, औरों को बताओ,
जो कहते हो दुनिया को करके
दिखा दो।

शहीदे अकबर पं. लेखराम स्मारक लेखराम नगर (कादियां) जि० गुरदासपुर की सुध लो

शहीदे अकबर पं० लेखराम ६ मार्च १८९७ को शहीद हुए। दुश्मनों की कुन्द छुरी से जाने शहादत नोश किया। इस द्वितीय बलिदान ने आर्य समाज के प्रचार को चार चाद लगा दिए। अस्तु भारत भर में यह आंदोलन जगल की आग की तरह फैल गया। इससे शताब्दियों से सोए हुए हिंदुओं में जातिहित और देशहित की भावनाएं उभरी। तबलीग का जवाब शुद्धि से मिलने लगा। ईसाई मिशनरी तथा इस्लामी प्रचारकों के दिल टूट गए। आर्य मुसाफिर मडल स्थापित हो गया। अत्यन्त प्रसिद्ध आत्मत्यागी तथा आवाज उपदेशक इसमें सम्मिलित हो गए। आर्यसमाज की तो आधार शिला ही बलिदानों पर रखी गई है। इस ने हर क्षेत्र में कहीं बढ़-चढ़ कर बलिदान दिए हैं। इस आधार पर यह हर क्षेत्र में सब से आगे रहा है। अपितु प्रतिविधित्व करता रहा है। यहा तक कि अंग्रेज भी इस आंदोलन से मस्त थे। इन बलिदानों को देखकर शेष सम्प्रदाय इसके समक्ष पानी भरते थे। संक्षिप्ततः प्रत्येक राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक आदोलन मे आर्यसमाज का सम्मिलित होना अनिवार्य था। यह केवल बलिदानो का ही फल था और बलिदानी वीरों की निःस्वार्थ सेवा का ही परिणाम था कि आर्यसमाज का भार सूडंका बनने लगा। लेकिन देश का दुर्भाग्य समझिए कि देश की राज सत्ता ऐसे अयोग्य तथा निर्बल हाथों मे आई कि जिनका पालन पोषण विदेशी वातावरण में हुआ था। जो भारत की सम्यत: सस्कृति तथा एकता से अभिज्ञ थे। भारत के योग्य व्यक्ति जिन पर देश गर्व कर सकता था, एक ताक मे रख दिए गए। उन्होने भारत को इंगलैंड तथा अमरीका बनाने की आवाज उठाई जिसके कारण आज भारत तमाम बुराइयो का घर बन कर रह गया है। तमाम अच्छाईयां दूर हो चुकी हैं। पंडित जी की शहादत को ७२ साल हो चुके हैं, मगर अभी तक इस देवता ब्राह्मण का किसी भी स्थान पर कोई भी स्मारक नहीं है। यह परले दर्जे की कृतघ्नता तथा बेवफाई है। कृतघ्नता सबसे बड़ा पाप है। जो ऋषि के अनुयायी को शोभा नहीं देती। जो कौमें शहीदों की शहादत का सम्मान नही करती, वे अति शीघ्र पतन के गढे मे गिर जाती हैं। आम जनता उन से दूर चली जाती है। अपना प्राचीन गौरव

(शेष पृष्ठ ८ पर)

लेखराम ने जरूर अपनी, महर्षि दयानन्द की करामात दिखलाई। एक प्रभावशाली आर्य समाज का निर्माण करके करारी चपत लगा कर लौटे।

थोडी देर के बाद मिर्जा ने एक विष्णु दास नामक हिन्दू को अपने जाल मे फिर फसा लिया। जब प० जी को पता लगा तो फिर गए कादिया और करारी चपेड़ विरोधियो के मुंह पर लगा कर उसे (विष्णुदास) को पुन: हिन्दू बना कर आर्य समाज का एक प्रभाव शाली कार्यकर्त्ता बना दिया। यह वास्तव विजय थी प. लेखराम की।

ऐ "आर्य समाज की मौत" वालो यह सचमुच तुम्हारी मौत है। ऐ वेद को नास्तिक का हामी लिखने, कहने वालों, जरा अपनो ओर तो देखो कितनी आस्तिक पूर्ण बातें हैं तुम्हारे में ?

हिन्दुओ। आर्यो ! विरोधियो ने तो अपने दुश्मन को छूरे से मारा, अब तुम क्या सोच रहे हो। अपने धर्म की रक्षा के लिए, लेख राम के सन्देश को, ऋषि के उपदेश को फैलाने के लिए तैयार हो जाओ। अपने वीरो में युवकों में युगो में धर्म की भावना भर दो, ताकि हम निकले—

"सुझाया मार्ग ऋषियो का
सुनाने फिर से हम निकले,
अरे जीवन पलटने को
बनाने आर्य हम निकले।
यदि चाहो कि दुनियां मे धर्म
वैदिक फैलाना है
तो मद में मस्त युवको को सही
मार्ग दिखाना है।"

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, २ मार्च, १९६९ [अंक ९

अमर शहीद का सन्देश

व्यक्ति और समाज की उन्नति बलिदान पर निर्भर है। जितनी उत्सर्ग की भावना अधिक होगी उतना ही समाज प्रगति पथ पर बढ़ता जाएगा। आर्यसमाज तो स्वय ही एक बलिदान का विशाल आन्दोलन है। इसकी तो आधारशिला ही बलिदान पर रखी गई है। इसकी बलिदान की माला मे इतने मनोरम मनके है—जिनकी चमक सदा नई है। प्रत्येक बलिदानी वीर ने अपने जीवन को समिधा बनाकर धर्म की ज्वाला को प्रदीप्त करने मे बड़ा कार्य किया है। ऐसे वीरात्मा सारे समाज के लिए महापुरुष हैं, सम्मान के योग्य हैं। उसका अमर जीवन एक खुली हुई एक पुस्तक है, जिसका एक-एक अध्याय जीवन में सदा चेतना एवं प्रेरणा भरने का काम करता है। इन्हीं अमर बलिदानियों मे अमर शहीद पंडित लेखराम जी आर्य मुसाफिर का नाम भी आता है। एक बात तो स्पष्ट है कि आर्यसमाज ने इस हुतात्मा के सम्बन्ध मे जितना सम्मान दिखलाना चाहिए था उतना शायद नहीं दिखलाया। जितना समारोह से इस देवपुरुष का शहीदी दिवस मनाना चाहिए उतने उत्साह से कम मनाया है। लेखराम नगर कादियां के एव सारे जिला गुरदासपुर के आर्य समाज एवम् अन्य प्रेमी इस बात के लिए प्रशंसा के योग्य हैं कि जो प्रतिवर्ष ही नियमित रूप से चार पांच छः मार्च को अमरशहीद पण्डित लेख राम जी का शहीदी पर्व बड़े ही समारोह से मना लेते हैं। वहां का प्रत्येक सज्जन आर्य हो या सनातन, हिन्दु हो या सिख, किसी भी राजनीतिक दल का हो-इस शहीद के सम्मेलन में पूरा सहयोग देता है। यह शहीदी मेला बीसियो वर्ष से वहा बड़े ही उत्साह से मनाया जाता है। जनता का हर क्षेत्र का नरनारी अमर-शहीद आर्य मुसाफिर को अपना समझता हुआ उसे अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि पेश करने में अपना गौरव समझता है। उन दिनो वहा का सारा वातावरण ही अमरशहीद लेखराम के जयघोषो से गूंज उठता है। यदि आर्य समाजें तथा सभाए अपना हाथ वहां के लोगो के सिर पर रखें तो यह बलिदानीपर्व एक मेला का रूप धारण कर सकता है। बलिदान का पाठ जीवन को पढाने में बड़ा सहयोग मिल सकता है।

अमरशहीद प. लेखराम जी का जीवन एक प्रेरणा का स्रोत है। वह कितने सत्य के उपासक थे, धर्म की निष्ठा वाले थे तथा वेद के परम विश्वासी थे—कैसे महान् लेखक तथा प्रभाव शाली वक्ताथे—कितने बड़े रिसर्च स्कालर थे—यह कहने की आवश्यकता ही नही। उन की खोजपूर्ण लिखी पुस्तकों का समूह 'कुलियात आर्य मुसाफिर' के नाम से आज भी कितना प्रसिद्ध है। सत्य तो यह है कि अमर शहीद स्वय ही एक चलते फिरते आर्य समाज का महान् रूप थे। उन के रोम २ तथा श्वास २ मे वेद का प्रेम भरा था। ऋषि-दयानन्द जी के दर्शन करने और उन के समीप बैठ कर अपने दिल की सारी शकाओ को निवृत्त कर लेने के बाद वह आर्य समाज के महान मिशनरी बन गये। उनका अपना कुछ भी नही था। सब कुछ ही आर्यसमाज के लिए था। उनके जीवन दीप से न जाने कितने जीवन दीप प्रदीप्त हो गए। उनके त्याग, उत्सर्ग का रूप तो अपने रूप मे एक ही इतिहास ही बन गया है। अनेक प्रकार के बलिदानियो की समाज को आवश्यकता होती है। उनमें धन बलिदानी या समयदानी, भूमि व भवनदानी, श्रम या अन्न-वस्त्रदानी सारे ही ठीक हैं। किन्तु जीवन का बलिदान कर देना सरल नहीं। सबसे बड़ा उत्सर्ग है। अमर शहीद पं. लेखराम ने अपने जीवन की आहुति दे दी। उनके बलिदान से आर्यसमाज का कार्य बहुत आगे बढ़ा। रक्त के एक २ बिंदु से कितने वीर धर्मप्रेमी पैदा हो गए।

सारा जीवन ही अमर शहीद का सन्देशो से भरा पडा है। उनमें सबसे बड़ा यह सन्देश था—कि 'आर्यसमाज से लेख का काम बन्द न होने दे। आज के दिन सारा समाज मिल कर इस पर विचार करे कि इस पर आचरण हो रहा है? इस युगमें इसकी बडी आवश्यकता है—त्रिलोक चन्द्र

सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर का वार्षिक बजट अधिवेशन इस बार ति॰ ९ मार्च रविवार के मध्यान्होत्तर दो बजे चण्डीगढ में सम्पन्न होने जा रहा है। वर्ष के बाद सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो के निर्वाचित मान्य प्रतिनिधि अधिवेशन मे पधार कर बीते हुए वर्ष के विशाल कार्य का विवरण सुनते हैं तथा आने वाले वर्ष के लिए कार्यक्रम बनाते हे तथा सभा के माननीय अधिकारियो को चुनते हैं। इस सभा का अतीत युग बडा सुनहला है। प्रारम्भ से ही जनता की सेवा के पुतीतपथ पर निरन्तर आगे बढते जाने का व्रत लिया है। तप और त्याग की मूर्ति स्वर्गीय महात्मा हसराज जी जैसे महान नेता देवता जिस समय के संस्थापक हो। बडे २ प्रभावशाली महानुभावो ने जिस पूरा-पूरा सहयोग दिया हो जिसके विशाल परिवार बडे-बडे प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री हो, गण्यमान्य नेता हो, लब्ध प्रतिष्ठित सज्जन हो तथा प्रेम भरी आर्यसमाजो का लम्बा-चौडा परिवार हो उसका कितना गौरव है। यह सभा अपने आरम्भकाल से ही वेद प्रचार के कार्य में लगी हुई है। साहित्य प्रकाशन द्वारा हो अथवा प्रचार द्वारा, सेवा कार्य द्वारा या अन्य नानाविध साधनो के आधार पर। वेद प्रचार के प्रमुख कार्य मे लगी रहती है। वर्ष के पश्चात् इस का मान्य परिवार वर्षिक अधिवेशन के रूप मे इकट्ठा होकर प्रचार के साधनों पर विचार करता है। आज कल तो सभाओं का कार्यभार सभालना कितना कठिन है—इसके लिए मान्य अधिकारियो को कितना तप व परिश्रम करना पड़ता है—यह बात तो वही जानते हैं। आज के भोगवादी युग मे धर्म प्रचार का काम कितना कठिन है। धन्य है वे लोग जो संस्थाओं को चलाने के लिए इतना तप करते हैं। आर्थिक परिस्थितियां इस भौतिक सभ्य कितनी विषम हैं--यह तो सब जानते ही हैं। आर्य प्रादेशिक सभा अपने जन्मकाल से ही कुछ विशेषताओ को लेकर चलती आ रही है। यह सब के लिए गौरव का विषय है।

इस समय समाज के सामने बडी बडी समस्याये है। जीवन का नगापन बढता जा रहा है धर्म के प्रति जीवन की रुचि कम होने लगी है। नानाविध समस्याओ से आकाश धूमिल है। वेद प्रचार के प्रमुख कार्य के मार्ग पर कौन-कौन-सी बाधाए उपस्थित हैं। अर्थ की क्या अवस्था है। जीवन का नैतिकता किस स्तर पर पहुचने लगी है। ऐसी बहुत-सी बाते हैं जो आर्यसमाज के सामने है। मिल कर विचार किया जाता है। इसलिए सभा का अपना सारा परिवार इस अधिवेशन मे मिल कर परिवार के नाते विचार करता है तथा उन-उन कठिनाईयो को दूर करने मे सभा के मान्य अधिकारियो को पूरा सहयोग देने का व्रत लेता है। इसलिए सभा के इस अधिवेशन की विशेषता का ध्यान रखना होगा।

लोग सयाने हो गए

जनता बडी सयानी हो गई है। भारत के लोकतन्त्र में निर्वाचन में सब कुछ जनता के हाथ मे है। इस बार कई प्रान्तो मे मध्यावधि चुनाव सम्पन्न हुए। उनके जो परिणाम सामने आए उनसे प्रतीत होता है कि लोग अपने मतदान मे सयाने होते जा रहे हैं। एक बात तो साफ है कि सब कुछ जनता के हाथो मे है जिसे चाहे आसन पर बिठा दे और जिसे चाहे बैठे को भी उतार दे इस बार तो बड़े-बड़े धमाके हुए। अब तो प्रत्येक को जनता की सेवा करनी होगी तभी वह आसन पर बैठ सकेगा। बीस-बीस से ऊचे-ऊचे आसन पर बैठे हुए बड़े-बड़े राजनीति के महारथियो को नीचे आ जाना इस बात का परिचय देता है कि जगत गति शील है। परिवर्तन होता रहता है। जो रह गए हैं उनको चाहिए कि जनता की सेवा मे लगे रहे। आसन के विना सेवा तो सच्ची सेवा है। —स.

★ जीव की ओर से चिन्तन कर्त्तव्य है, प्रभु की ओर से कृपा होगी ही। जित-जितना चिन्तन बढ़ेगा, उतना-उतना ही आनन्द बढ़ेगा।

आर्य पथिक का सन्देश

(श्री टेक चन्द प्रभाकर, जालन्धर)

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरुवर श्री स्वामी विरजानन्द जी दण्डी से संसार मे वैदिक सत्य सनातन धर्म के प्रचार, प्रसार तथा अवैदिक मत-मतान्तरो के पाखण्डो के खण्डन की दीक्षा व प्रतीक्षा गुरु-दक्षिणा के रूप में ली। ऋषि का जीवन इस प्रतिज्ञा के पूर्णत: पालन करने की मुंह बोलती तस्वीर है। ऋषि जी ने मौखिक प्रचार, पाखण्डन, शास्त्रार्थो एव साहित्य सृजन द्वारा अपना ऋण चुकाया और प्राणों तक की बलि दे डाली।

अपने आचार्य प्रवर महर्षि दयानन्द जी के जीवन उपदेशों तथा ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के चौमुखी कार्यों को आगे बढाने के लिए कर्तव्य निभाने वाले ऋषि अनुयाइयो शहीदे अकबर श्री पं० लेखराम जी, मुनिवर पं० गुरुदत्त जी लाला लाजपत राय तथा अमर बलिदानी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि महामानवो ने जो-जो कार्य किये वे आर्यसमाज के इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो में लिखे हुए पढ़ने को मिल जाते हैं।

ऋषि दयानन्द के अमर बलिदान के उपरान्त आर्यसमाज के सर्वप्रथम अमरदानी आर्य पथिक प० लेखराम जी के अमर बलिदान होना आर्य समाज के सदस्यों को प्रेरणादेवे इस उद्देश्य से इस वर्ष वीर लेखराम के बलिदान का सन्देश अपने लोगो के सम्मुख आर्य जगत् के माध्यम से ये पंक्तियां लिखने बैठ गया हू।

प० लेखराम की जीवन गाथा पढ़ने से पता चलता है कि आपका जन्म १८५८ ई० मे जिला रोहतक की तहसील चकवाल के सैदपुर गांव में हुआ। ६ मार्च १८९७ ई० को लाहौर में केवल ३९ वर्ष की आयु में पंडित जी महाराज ने बलिदान का प्याला पिया।

पोलिस की नौकरी छोड आर्य समाज मे प्रविष्ट हो आचार्य के साक्षात दर्शन करने लेखराम ऋषि के चरणो में पहुचे। उन से वार्तालाप शका समाधान एव प्रश्नोत्तर करके आर्य समाज के कार्य क्षेत्र में उतरे। अपने आचार्य से क्या प्रेरणा ली जो यह हमे पढने को मिल जाता है सो इस प्रकार है।

१, वैदिक सत्यसनातन धर्म का प्रचार।

२. अवैदिक मतमतान्तरा की पाखण्डपूर्ण बातों की कलई खोलने के लिए झूठे के घर तक पहुंचना।

३. अन्य मतो के लोगो मुसलमानो इसाइयो को शुद्ध कर अर्थात् अपने वैदिक धर्म की पुण्य पताका के नीचे लाना।

इन्ही तीनो उद्देश्यों की पूर्ति में प० लेखरामजी ने अपना सारा जीवन लगा दिया।

वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए पण्डित जी आर्य प्रतिनिधि पंजाब में उपदेशक के रूप में कार्य करने लगे। बहुत कम वेतन केवल २५) लेना स्वीकार किया सभा द्वारा वेतन बढाने की सूचना मिलने पर 'मेरा गुजारा इसी में भली भांति हो जाता है' लिख कर वेतन वृद्धि ठुकरा दी। तभी तो वे एक आदर्श उपदेशक माने जाते थे। धर्म प्रचार में विलक्षण लग्न तथा अन्यमत में चले जाने वाले लोगों को पुन: वापस लाने की कितनी उत्कण्टा उन के हृदय में थी इस का प्रमाण पायापेल ग्राम में व रुकने वाली गाड़ी से छलाग कर मुसलमान होने जा रहे एक रईस के घर तक पहुंचने की घटना से ही मिल जाता है। कहा तक इनके गुणों का उल्लेख किया जावे यह लेख लेखनी को असमर्थ है।

अवैदिक मतमतान्तरों की पाखण्ड पूर्ण बातों की कलाई खोलने और झूठे के घर तक पहुचने की कहावी तो मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी के सामने आर्यपथिक प० लेखराम के डट जाने और बलिदान हो जाना 'प्रत्यक्षेकि प्रमाणं' हाथ कंगन को आरसी क्या वाली लोकोक्तिया दो चरितार्थ हो रही हैं।

वैदिक धर्म के प्रचार के लिये स्थायी कार्य करने के रूप में पं. लेखराम की मंडनात्मक रचना में महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र सृष्टि का इतिहास, श्री कृष्ण का जीवन चरित्र श्री राम चन्द्र जी का वास्तविक जीवन,स्त्री शिक्षा आर्य हिंद और नमस्ते की खोज मुर्दा अवश्य जलाना चाहिए, पतितोधार धर्मप्रचार एवं पुन:जन्म आदि पुस्तकें आर्य समाजके साहित्य में वृद्धि करने का ज्वलन्त प्रमाण है। अवैदिक मत-मतान्तरों के खण्डन, में आर्यसमाज, वैदिक धर्म और अपने महापुरुषों के विरुद्ध प्रकाशित अन्य मतावलंबियों मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी आदि की पुस्तकों में उत्तर में लिखी गई तकजीबे बुराहीने अहमदिया। नुस्खा खब्ते अहमदिया जिहाद आदि पुस्तकें भी इस बात तथा क्रिश्चियन दर्पण का जीता जागता प्रमाण है। पंडित जी की रचनाओ का संग्रह 'कुलयाते आर्य मुसाफिर' नाम से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने उर्दू मे तीन भागों में प्रकाशित कराया था और जिसके प्रथम भाग का हिंदी अनुवाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने श्री पं. शांति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी से कराया और १९६३ में सभा के प्रकाशन विभागके अधिष्ठाता पं. राम चन्द्र जी जावेद ने सभा की ओर से 'कुलयात आर्य मुसाफिर' प्रथम भाग के नाम से प्रकाशित करा दिया था।

एक आदर्श उपदेशक, धर्म प्रचार में धुन के पक्के, तप, त्याग की मूर्ति एव आर्यसमाज के शहीदों के शिरोमणि आर्य पथिक पण्डित लेखराम के जीवन, शहादत का मूल कारण और अन्तिम वसीयत आर्यसमाज में लेख का काम बन्द न होने पाए। आदि सन्देश वर्तमान आर्यसमाज के सभासदों को एक सत्प्रेरणा लेकर आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार में जुटे रहना चाहिए। ऐसी शुभ कामना परमपिता परमात्मा से है।

हिंदी सप्ताहिक पत्र

आर्य जगत

जालन्धर के स्वामीत्व अधिकार तथा अन्य विषयों का व्यौरा फार्म ४

(अधिनियम ८ देखो)

१—प्रकाशन का स्थान—कार्यालय आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, महात्मा हंसराज भवन, निकट कचहरी, जालन्धर नगर।

२—प्रकाशन की अवधि—सप्ताहिक।

३—मुद्रक का नाम—डा० वेदीराम शर्मा
जाति—भारतीय।
पता—मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, निकट कचहरी जालन्धर नगर।

४—प्रकाशक का नाम—डा० वेदीराम शर्मा
जाति—भारतीय।
पता—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कचहरी जालन्धर

५—सम्पादक का नाम—पं० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री बी० ए०
पता—महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कचहरी जालन्धर नगर।

६—पत्र के स्वामी व्यक्तियों के नाम अथवा पते जो उसके साझीदार हैं। अथवा इसकी सम्पूर्ण पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक भागों के मालिक हैं—
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा रजिस्टर्ड संस्था ही इस पत्र की स्वामिनी है।

मैं वेदीराम शर्मा इस लेख द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर लिखे विषयों की सूचना मेरे ज्ञान व विश्वास के अनुसार सर्वथा तथ्य पूर्ण है।

(हस्ताक्षर) वेदीराम शर्मा—प्रकाशक आर्यजगत सप्ताहिक जालन्धर

स जाने उस दिन एक अबोध बालक को क्या सूझी कि घर के अन्य सदस्यों के साथ-साथ वह भी अपनी जिद से शिवरात्रि के व्रत के लिये तैयार हो गया। सूर्य अस्त से पुनः सूर्य उदय तक उस बच्चे ने मानो जागने का प्रण कर रखा था। आज भी उन दिनों की तरह शिव पिंडी पर जहां मिष्ठान चढ़ाए जाते हैं वहां बिष्टा भी दृष्टि गोचर होती है, जहां प्रेम और श्रद्धा के हाथ लगते हैं वहां कभी चूहे के नन्हें-नन्हे पांव भी थरकते हैं। लेकिन वह सभी कुछ ध्यान से निहारता रहा और शिव पिंडी पर एक चूहे की उछल-कूद उसे न भाई और परिणाम स्वरूप अपने पिताजी को जगाया ताकि शंका का समाधान हो सके। बेटा, ऐसे प्रश्न नहीं किया करते। इतना कहकर निन्द्रा में मस्त

समाज सुधारक दयानन्द

—ओम प्रकाश अंशु देहरादून

उसके पिता ने बालक की पिपासा पर तुषारा पात कर दिया। बालक के चित्त में अग्नि प्रज्जवलित हो उठी उसे शांत करने को ज्ञान-जल उस समय उपलब्ध न हो सका। वह बालक दिल मे पीड़ा और उत्सुकता लिए घर से चल पड़ा। रास्ते में जहां-जहां उसे रोका गया वहीं-वहीं उसे असन्तुष्टि ही मिली और उसके प्रश्नों पर कुठाराघात किया गया। लोग पुरानी परम्पराओ मे मजबूती जकड़े पड़े थे और सत्य को समझ पाना लोगों के लिये एक टेढ़ी खीर साबित हो रही थी। परिणामतः वह अबोध वह सच्चे शिव का भक्त भटकता ही गया सौभाग्य से उसे एक नेत्रहीन के दर्शन मथुरा की एक छोटी सी कोठरी मे हुए। उस नेत्रहीन ने मानो वेदो का तमाम ज्ञान उन दो लुप्त नेत्रों तले सजोया हो। उस नेत्रहीन स्वामी विरजानन्द से उस श्रद्धालु भक्त ने सत्य और ज्ञान का पाठ सीख लिया। स्वामी विरजानन्द ने भी भक्त की भावनाओं को समझा। उसके शब्द का समाधान किया। और सच्चे और झूठे शिव की पहचान बताई एवं उसे वेदाध्ययन का अवसर दिया। अपनी शिक्षा-दीक्षा समाप्त कर वह भक्त, स्वामी दयानन्द के नाम से ससार के सामने आया। सत्य को ग्रहण करने एवं करवाने मे उन्हे अनेक बाधाओ को लाघना पडा।

देशभक्ति की लहर—स्वामी जी के मन मे ब्रिटिश शासन के कुचक्र का जो चित्र अंकित था उससे छुटकारा पाने के लिए उन्होने लोगो को आह्वान करते हुए कहा कि विदेशी राजा चाहे कितना भी सुख नागी व कल्याणमत हो, वह स्वदेशी राज्य के समान कभी भी उपयोगी नहीं हो सकता। उनका यह आह्वान समय आने पर कसौटी पर खरा उतरा और भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन में दयानन्द की आवाज पर जागने वाले आर्यसमाजी अस्सी प्रतिशत की विराट सख्या में जेलो में जा पहुचे। सरदार भगतसिंह, लाला लाजपतराय, वीर सावरकर एवं सुभाष बाबू पर चढ़ा हुआ आर्यसमाज का रंग विजय श्री की मांग का सिंदूर साबित हुआ।

हिंदी प्रचार—स्वय गुजराती होते हुए स्वामी दयानन्द की पैनी दृष्टि ने यह भली प्रकार ज्ञान लिया था कि भारत की यदि एक भाषा हो सकती है तो वह केवल देवनागरी वाली हिन्दी ही हो सकती है। उन्होंने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे और इसको पजाब मे बढ़ावा देने में आर्यसमाज का प्रशसनीय योगदान रहा है। पजाब का सबसे पहला हिंदी दैनिक का एक आर्यसमाजी पत्रकार ही था जिसने पत्र को घाटे मे भी चलाया और वह पत्र आज भी शान से निकल रहा है। समाज के अनुयाइयो ने हिंदी को आर्य भाषा ही कहना शुरू कर दिया।

समान अधिकार—उन दिनों जाति और धर्म का ही बोल बाला था जातियो मे आपस के झगड़े उग्र रूप धारण करते हुए चले जा रहे थे। तब स्वामी जी ने ललकारा कोई भी केवल जन्म से ही छोटा अथवा बड़ा नही है। व्यक्ति के अपने काम ही उसे छोटा अथवा बड़ा बना देते हैं।

समाजिक सुधार—समाज में नाना प्रकार के वेष विराजमान थे। स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। वह नारी को शिक्षित कर उसके द्वारा तीव घरों का सुधार करवाना चाहते थे, बड़े बूढ़े यह जानते हैं और इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज को किस कदर दिक्कतों का सामना करना पड़ा जब आर्य समाज ने सर्व प्रथम मुंशीराम महात्मा के द्वारा एक कन्या पाठशाला को जालन्धर में खोला। महात्मा मुंशी राम का उनकी बिरादरी वालों ने हुक्का पानी तक बन्द कर दिया था। आज कदम-कदम पर खुले स्कूलों के बच्चो भले ही यह सब कौतूहल पूर्ण लगे परन्तु वस्तुतः उन दिनो लोग ऐसा ही दुर्व्यवहार करते थे जो उनकी मान्यताओ पर कुठाराघात करता था। भारत की नारी किसी भी अवस्था मे स्वामी जी के परोपकारो को भूल नहीं सकती।

इसके अलावा स्थान-स्थान पर अनाथालय, गोशालाए आदि खोलकर दीनो पिछड़े हुए वर्गों की रक्षा की। इतना ही नहीं बल्कि नेत्रहिनो की ओर आदर और स्नेह के भाव से देखने वाली आर्य समाज नामक पहली ही सामाजिक सस्था थी। जिसने इस ओर भी अपने प्रभावशाली पग उठाए। दिल्ली मे ही एक अन्धा विद्यालय स्वामी विरजानन्द के नाम से नेत्रहीनों की आशायो का केन्द्र बना हुआ है। इसके अतिरिक्त विधवा-विवाह की छूट, सति प्रथा की रोक और बाल विवाह को रोकने में भी स्वामी जीने ने उल्लेखनीय कार्य किया। इस प्रकार एक निर्जीव और खोखली हिन्दू जाति मे स्वामी जी ने जान फूंकी। दूसरे धर्मावलम्बियो का मार्ग प्रदर्शन किया। ससार मे व्यक्तिवाद को दूर करने का बीढा उठाया और मानव समाज में मे क्रांति पैदा कर दी। इसी समाज सुधारक को आज के दिन सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।

खंडवा में ऋषिदयानंद बोधोत्सव

आर्यसमाज खंडवा पूर्व निमाड मे दि० १५-२-६९ को ऋषि दयानंद बोधोत्सव एवं शिवरात्रि पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया रात्र ६ बजे बृहद् यज्ञ प्रार्थना सगीतमय भजनों के पश्चात् श्री प्र० रघुनाथसिंह जी वर्मा की अध्यक्षता में वाद-विवाद प्रतियोगिता (वैदिक धर्म के द्वारा ही विश्व मे शांति स्थापित हो सकती है) कार्यक्रम रखा गया। निबन्ध प्रतियोगिता (विश्व को महर्षि दयानन्द की देन) का भी आयोजन किया गया था। दोनो प्रतियोगिता मे नगर के हाईस्कूल एव कालेज के छात्रो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। निबन्ध प्र० में सर्वप्रथम प्रेम शकर-बड़थाल, वादविवाद में सर्व प्रथम प्रकाशचन्द पांडे आये दोनों प्र० मे विजेता छात्रों को (रजतपदक, कप, एवं उच्चकोटि का वैदिक साहित्य) प्र० साहब के करकमलों द्वारा पारितोषिक वितरण किया गया। पर्व कि विशेषता पर बसन्तलाल गुप्ता प्रचारमंत्री, रामचन्द्र जी आर्य मंत्री, जमनाप्रसाद आर्य, एव समाज के प्रचारक सुखराम आर्य सि. शास्त्री के सारगर्भित भाषण हुए। अन्त में ऋषि के जीवन घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए अध्यक्ष महोदय ने सबका आभार प्रदर्शन किया। शांति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

बसन्तलाल गुप्ता
प्रचार मंत्री

'आर्य जगत' युवकों के लिए

सभी आर्य सज्जनों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत साप्ताहिक पत्र अब युवकों के लिए भी विशेष रूप से उपयोगी हो गया है। इस में 'आर्य-युवक संगठन' की प्रत्येक सूचना चुनाव या और कोई महत्वपूर्ण बातें भी होगी। सभी सज्जनों को चाहिए अपने यहा आर्य युवको के बारे में उनकी प्रगति के बारे मे आर्यजगत को लिखें। 'आर्य जगत' उन सब का स्वागत करेगा।

—व्यवस्थापक
आर्यजगत

अहमदियों का फरिश्ता

फरिश्तो की बातें (गप्पें) बहुत सुनी होगी पर इन अहमदियो के फरिश्ते की कहानी भी अजीब है। इनके धर्म मे फरिश्ता उसको कहते हैं जो खाकर हराम कर दे जो अमृत पिलाने वाले को जहर दे। प० लेखराम कितना सीधा सरल पुरुष था हिन्दू जाति के लिए प० जी ने कितने कष्ट सहे यह किसी से भी छिपा हुआ नहीं है, वास्तव मे डूबती हुई किश्ती को पार लगाने वाला वही था।

सोचो, ऐसे भले आदमी का छिप कर छल-कपट से खून करना क्या फरिश्तो का काम है?

यदि ऐसे नीच, दुष्ट, कपटी आदमी को अहमदी भाई फरिश्ता कहते हैं तो कितने शर्म की बात है और डूब मरने का मुकाम है। सभी अहमदी भाईयो को चाहिए कि ६ मार्च को शहीदी मेले मे जाकर असली फरिश्ते की पहचान करें। रविन्द्रकुमार

पीड़ित किसान

(श्री ओम्प्रकाश अंशु, देहरादून)

गरीब के लिए फुटपाथ कहां,
महल इधर सब बनते हैं ।
ज्ञान भानू को जाते देख,
यौवन के उन्माद धरकते हैं ।।

हम अस्त व्यस्त से पड़े पड़े,
कहने को दिल न चाह रहा ।
चौराहे पर बैठा था ढोलक वाला,
मैं ने उस से कुछ पूछ ही डाला ।।

रहता किधर बाबा !
और कहां से तू आया ।
वह बोला आंखों मे नीर लिए,
वह उठा चित की पीड़ लिए ।।

कल हो निज गांव से आया मैं,
अब रहता इसी वट छाया में ।
जायदाद तो थी गांव में हज़ारों की,
पर भाई दुनिया यह तो यारों की ।

स्वतन्त्र भारत के, ये परतन्त्र न्यायालय,
होता इन में इन्साफ कहां ?
जिस की लाठी उसी की भैंस,
झूठे गवाह घूमें यहां वहां ।।

ये बिक जाते हैं,
खरीद लें इन्हें कोई ।
इस भारत में देख काटे,
हंसता कोई रोता भी कोई ।।

नाती इक मेरा रिश्ते में,
चाल बेढंगी चली उस नर ने ।
बाल ओ नारी के कहने पर,
बात बिगड़ गई तन मन में ।।

स्वर्न सम थी भू हमारी,
करते कृषि, होते थे खुश ।
यों गया बीतता यह जीवन,
हम परिश्रमी जब बने धनधारी ।।

वह नाती बन चला बालक,
हठ करता, चिल्लाता कभी ।
लड़ता, कभी कर मुझ से लगता,
और बन बैठा सर्व भू-मालिक ।।

मेरे संग बन रहा कहां,
जब भू-सम्पत्ति से जुदा हुआ ।
निज मोत-भ्रात से ले दे कर,
मैं इस अदालत में आया यहां ।।

लुटा दिया, सब गवां दिया,
इन श्याम कोट वालों ने मुझे ।
बनाया पंगु अरु किया पागल,
फिर कुछ इस प्रकार से मार दिया ।

घर-गहने बेच दिए मैं ने,
सब.................कुछ छुटा ।
ओह ! लाज भी छोड़ी,
अब डाला गले ढोलक मैं ने ।।

निज पत्नी का भी छुटा साथ,
भाई बांधव सब हुए जुदा ।
धनी से बदला निर्धन मैं,
अंशु ! फैला दिए ये हाथ ।

करनाल में ऋषि बोध

दिनांक १५ फरवरी को प्रातः ९ से १ बजे तक दयानन्द आर्य गर्ल्स हाई स्कूल के प्रागण में आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से ऋषि-बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें श्री ब्र० सत्यप्रिय जी एवं डा० राम-प्रकाश पी.एच.डी. आदि विद्वानों के प्रभावशाली भाषण हुए । हवन-यज्ञ के पश्चात् स्कूल और कालेजो के विद्यार्थियो की भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसमे आर्यसमाज की ओर से सत्यार्थ प्रकाशादि पुस्तकों के अतिरिक्त १०० रुपए का पुरस्कार दिया गया । उक्त अवसर पर नगर की समस्त आर्य समाजो तथा समस्त शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया । जनता पर प्रचार का भारी प्रभाव रहा । पण्डाल की सुव्यवस्था के लिए मुख्याध्यापिका आदि धन्यवाद की पात्र हैं । —विनीत

शमशेर कुमार आर्य
प्रचार मन्त्री

ऋषि बोधोत्सव हिसार

आर्यसमाज को हिसार की ओर से ऋषि-बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, १४, १५, फरवरी को खूब रौनक रही । चौ० नत्थासिंह जी के मधुर भजन हुए, दो दिन प्रभात फेरी हुई । प्रो० राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' तथा अन्य महानुभावों के शिक्षाप्रद भाषण हुए । —मन्त्री

आर्य समाज हिसार

अभी तक लापता है

मेरा युवक बेटा प्रिय दयानन्द एम. ए. अभी तक लापता है । किसी प्रकार का पता नहीं लग सका । आर्य समाज का मान्य नेता, सभाओं के माननीय अधिकारी, समाजें तथा अपने २ स्थानों पर अनेक सज्जन उस का पता लगाने मे बड़ी कृपा कर रहे हैं। पोलिस भी लगी हुई है । क्या पता उस के साथ क्या हुआ है । मेरी तथा सारे परिवार की वेदना सब ने बांट ली है । बहुत आभारी हूं । सज्जनों के कई पत्र आते हैं । इस के लिए हार्दिक आभारी हूं । प्रभु कृपा से कुछ भी समझ नहीं आता कि साधु आश्रम होशियार पुर में उस के साथ हुआ क्या है ?

त्रिलोक चन्द्र
आर्य प्रादेशिक सभा
जालन्धर

प्रादेशिक आर्य युवक संगठन पंजाब युवकों में जागृति

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब के नेतृत्व में कई वर्षो से आर्य युवक सगठन का कार्य हो रहा है । इस सगठन में सभी समाजों, स्कूलो, कालेजों के युवको को सम्मिलित किया जाता है और उनको हर प्रकार से आर्य समाज के निकट लाया जाता है। यहा तक हो सके उनको बुराईयों, कुरीतियो से बचाया जाता है और उनकी जगह अच्छाईयो को लाया जाता है ताकि वो अनुशासित रहते हुए अपने परिवार, समाज, देश का भला कर सकें ।

सभी समाजो, स्कूलो, कालेजोंसे प्रार्थना है वो अपने यहा युवक सगठन बनाएं, या यदि बनाना चाहें तो महा-मन्त्री, प्रादेशिक आर्य युवक संगठन पजाब । के पते पर पत्र लिखें । प्रादेशिक युवक सगठन की ओर से विशेष कार्यकर्त्ता समय तर पहुचकर आपकी सहायता करेंगे । आर्य युवक संगठन की ओर से एक आवश्यक बैठक निकट भविष्य में होगी जिसकी सूचना बाद में दी जाएगी । युवक सगठन के बारे में किसी भी प्रकारकी जानकारी के लिए ऊपर लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें ।

शोक प्रस्ताव

हिसार:—दिनांक ५-२-१९६९ को दयानन्द ब्राह्म विद्यालय के छात्रों तथा प्राध्यापकों ने आर्य जगत के दानवीर कार्यकर्ता श्री युत सेठ फतहचन्द जी की असमय मृत्यु पर शोक प्र ट किया तथा ईश्वर से उनकी सदगति के लिए प्रार्थना की ।

शोक सन्तप्त
अधिकारी एव छात्र वर्ग
द. ब्रा. म. वि. हिसार

५-२-६९ को डी० ए० वी० हाईस्कूल के छात्रों तथा अधिकारी वर्ग ने आर्य संस्थाओं के प्रमुख संरक्षक श्रीमान् सेठ फतहचन्द जी की आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रकट किया ईश्वर से उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना की ।

(गिरधारी लाल)
मुख्याध्यापक
डी.ए.वी. कालिज हिसार

लेखक परिचय

श्री ऋषि कुमारजी पूज्य पंडित त्रिलोक चन्द जी शास्त्री के होनहार सपूत हैं आजकल डी० ए० वी० कालेज जालन्धर में प्री-मैडीकल कर रहे है। साईस के विषय पढ़ते हुए हुए भी इनका संस्कृत के साथ बहुत प्रेम है। मेरा ऋषि कुमार जी से उस समय से परिचय है जब ऋषि जी छ: क्लास में डी० ए० वी० हायर सकैंडरी में पढते थे मैं तो हायर सकैंडरी की परीक्षा देकर राऊरकिला (उत्कल) चला गया। परन्तु इन्होने हायर सकैंडरी करके प्री-मैडीकल ले लिया। ऋषि जी का आर्य समाज से साथ बहुत स्नेह है। इनको वर्तमान फैशन छू नही सके।

कालिज में भी सादगी से रहते हैं। मेरी ऋषि जी से प्रार्थना है कि भविष्य मे भी लेखादि लिखकर आर्य जगत् की सेवा करते रहे।

—व्यवस्थापक

संस्कृतं विना संस्कृतो न भवति भारतीया

(श्री ऋषिकुमार 'आर्य')

अस्माकं राष्ट्रं भारत विश्व-प्रसिद्धम्। तस्य सस्कृति: जगत् प्रसिद्धा—पवित्र वेद शब्देषुसा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा। इय च सस्कृते सूत्रिता। संस्कृत हिनाम देवभाषा। मानव जीवनस्य सर्व सम्पत्ति: अस्मिन्। आर्य: संस्कृत आसीत् आदिकालात्। मनसो विचारे, वाच: उच्चारे, व्यक्तिगतपरिवारे, लोक-व्यवहारे, धर्म प्रचारे, राज्य ससारे च पुरातन भारतोय: सस्कृत एव आसीत्। रघूणां युगे, रामराज्ये, महाभारतस्य धर्मपुत्र राज्ये, अशोक समये च भारतवासिना विश्वकीर्ति आसीत्। न चोर:, नापि जार:, न पाप:, नापि असत्यवादी न नास्तिक: नापि पतित: कश्चिद् आसीत्। अश्वपति घोष: इतिहासे प्रसिद्ध। अस्य मूल-कारणं सस्कृतमेव। विश्व पूज्या: अस्माकं पूर्वज: मुनिवर मनु, राम-गोपाल, व्यास, बुद्ध, शकर-दयानन्दा संस्कृता: सस्कृतेन एव।

इद तु कालस्य परिवर्तनम। यत् अस्मिन् युगे मनुष्यो वस्त्रै, भूषणै, लावण्यै:प्रसाधनै: च सस्कृतो भवितुम् इच्छयति। किन्तु प्रयत्नो निष्फल:। इद तु बाह्यडम्बरम् एवा आत्मसन्य शरीर मृतम् एव भवति। आत्म जीवनम्। एवं भारतीय: अपि संस्कृत बिन संस्कृतो नैव भवति। स्वाधीनताया अनन्तरं भारतीयानां भौतिक पदार्था-नाम् उन्नति: किंतु नैतिक जीवनस्य पतनम्। किम् कारणम्? संस्कृत निष्ठाया अभाव:। इदं सत्यम् यत् यावत्पर्यंन्तम् भारतीयेषु सस्कृत प्रति समादरो न भवति, जीवन-मूलात् रस-ग्रहणम् न भवति-तावत्पर्यन्त भारतीय: सस्कृतो न भविष्यति। अयम् अनाचार:, कदाचार: भ्रष्टाचार:, न समाप्तो भविष्यति। आचार सूर्य न उदेष्यति। सस्कृत आचार-सूत्रम्। विचार केन्द्रम्।। व्यवहार मूलम्। मानवता मानम् च। भारतम् सभ्यता मूलम्। संस्कृत च प्रतिष्ठास्थानम्। अत:—

सस्कृति सस्कृते बद्धा,
सस्कृत विश्व मगलम्।
सस्कृत: संस्कृते नैव,
भारतीयो भविष्यति।
सस्कृत सर्व पूज्यं स्यात,
सस्कृत सर्व वन्दितम्।
सस्कृत सस्कृत लोके,
नाम कीर्ति स्वा'नुयात॥
सस्कृतस्य प्रसारा स्यात,
लोके लोके गृहे गृहे।
आत्मा भारतस्येद,
सस्कृत येन जीवितम्।

★ सत्सग से लाभ मिलता है तथा इन्द्रिय दमन में सहायता मिलती है। ईश्वर की कृपा तो अनिवार्य है ही। आत्म समर्पण, श्रद्धा तथा भक्ति के द्वारा ईश्वर कृपा प्राप्त कीजिए।

खेद है

माण्यवर श्री दयानन्द जी सपुत्र श्री प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, आज से लगभग साढे तीन मास पूर्व से लापता हैं। आर्य समाज का यह कैसा दीवाना है। इसके बारे में लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। (यह सच्चाई है इसमे जरा भी श्री दयानन्द की बढाई नही की गई है) इस आर्य वीर के गुम होने का समाचार जब मैंने सुना तो पांवों से जमीन निकल गई आंखो मे अन्धेरा छा गया दिल ऐसे गुम-सुम हुआ कि देर तक मुख से शब्द तक भी न निकल सका (यह वास्तविकता है) किसी को दर्शाने के लिए मैं नही लिख रहा बल्कि इसलिए लिख रहा हूं कि मन पर पड़ा बोझ कुछ हल्का कर सकू) क्योकि मेरे पर जितने उपकार श्री दयानन्द के हैं उतने किसी और के नही हैं। वास्तव मे देखा जाए तो मुझ को सीधा रास्ता दिखलाने वाला दयानन्द ही था। मैं तो श्री दयानन्द को अपना बडा भय्या कहा करता था पर खेद तो इस बात का है कि पूरी कोशिश करने पर भी अपने भय्या का कोई पता नही निकाल सका। अपने इलाके के लगभग सब बड़े अफसरो से पता किया पर किसी से भी सन्तोषजनक उत्तर नही पाया।

मुझे खेद अपने तमाम आर्य नेताओ, आर्य समाजियो पर भी है जिनके होते हुए एक नवयुवक का कोई पता नही चल रहा है। आर्य समाजियो याद रखो, तुम एक नव-युवक के बारे मे कुछ नही कर सके, तो तुम्हारा नाम भी, तुम्हारा आर्यापन भी कुछ काम का न रहेगा लोग तुम्हारे नाम पर थूकेगे, तुम्हारे पास कोई अपना लडका नहीं भेजेगा। खेद है होशियारपुर के जिला के आर्य नेताओ पर जिनकी झोली से एक नवयुवक एक हीरे का कोई पता तक नही लग रहा।

मेरी पंजाब के नेताओ से, खास कर आर्य नेताओ से प्रार्थना है, निवेदन है, कि इकट्ठे होकर पंजाब के मुख्यधिकारियो को इस मामले में पडताल करने के लिये कहे। खासकर होशियारपुर जिला के मुख्याधिकारी को मिले और इस मामले मे उन तिथियो को लेकर आज तक के **Daily Routine** का निरीक्षण करें। आर्य नेताओ यहतुम्हारे इम्तहान का समय है। दयानन्द केवल प० त्रिलोक चन्द्रजी के परिवार से ही सम्बन्धित नही था वह सबका था सारी समाज का, सारे देश का था वह तुम्हारा था।

—करनैलसिंह विद्यार्थी विद्या वाचस्पति

'कविता'

उठो आर्य वीरो, करो वेद प्रचार।
पर हित ही तो जीवन का, सबसे उत्तम सार।
मन को करके प्रबल, विषयों को तू पछाड़।
चित्त प्रबल जब हो जाए, विषय करे न वार।
हाथमें लेकर ज्ञान का दीपक, कर दे तू उजाला
वेद ज्ञान के पाठन से तो आए मजा निराला।
वेद पाठन से ही मन का अंधेरा भागे।
इसके पाठन से अभागा मानव जागे।
तू प्रेम भाव से कर श्रवन, मनन इसे अब
नही जानता कोई यह नश्वर शरीरखतमहो जाए कब
करके हिम्मत और हौसला इसे बड़ा दे।
सबसे अच्छा उपदेश, नाद घर-घर मे बजा दे।
'शर्मा' सुन और सुना सब को यह गीत
वेद पाठ के करने से ही मिलेगा सच्चा मीत।

'सुरेन्द्र पाल शर्मा'

ऋषिबोधत्सव

आर्य समाज मन्दिर जालन्धर छावनी मे ऋषिबोधत्सव बडे समारोह के साथ मनाया गया। आर्य कन्या पाठशाला की छात्रायो के मधुर भजन हुए उस के पच्छात् श्री राम चन्द्र जी जावेद प्रधान आर्य समाज जालन्धर छावनी ने एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया, प्रशाद वितरण के बाद कार्य-वाही समाप्त हुई।

भवदीय,
भक्त राम भण्डारी मन्त्री

अंबलामें ऋषिबोधत्सव

ऋषिबोधत्सव के उपलक्ष मे १५ फरवरी १९६९को प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई। प्रेम नगर के महानु-भावो ने भी सहयोग दिया हवन आदि के पच्छात् कवितायें, गीतो तथा भाषणो के द्वारा स्वामी दयानन्द के जीवन चरित् पर प्रकाश डाला गया प्रो. शान्ता ने पंजाबी मे कविता पाठ किया प्रो. चानन जी ने भाषण दिया मेहर चन्द जी प्रधान के बाद अतिथि सत्कार हुआ तथा कार्य-वाही शेष हुई।

हरगोविंद सिंह मन्त्री
आर्य समाज माडल टाऊन
अम्बाला नगर

शिकवा-शहीद

(पृष्ठ २ का शेष)

खो बैठता है तथा उसके पहले बलिदानों पर पानी फिर जाता है।

'सुनो तो सही जहां में है तेरा अफसाना क्या ?'

भगवान् ने इस कौम की हालत नहीं बदली 'न हों जिस को ख्याल आप अपनी हालत बदलने का।' डाक्टर इकबाल के कथनानुसार 'कौम मजहब से है, मजहब जो नहीं तो तुम भी नहीं।'

यह गर्व केवल आर्य समाज कादियां को ही प्राप्त है कि वह मार्च १९६९ को पंडित जी की स्मृति में ५२ वां [illegible] समारोह से मना रहा है। स्मारक बनाने का सकल्प किए हुए है। किन्तु धन के अभाव से यह स्मारक अधूरा पड़ा है। धन के लिए प्रति वर्ष अपीलें की जाती हैं मगर वही ढाक की तीन पात प्रतीत होता है कि सब हिन्दू कुम्भ करण की नींद सो रहे हैं।

जो आलम रहेगा, यही बेबसी का,
भरोसा नहीं कौम की जिन्दगी का।

इस लिए तमाम हिन्दुओं से प्रार्थना है कि वे स्मारक को पूरा करने के लिए धन से पूरी २ सहायता करें ताकि हम शहीद के ऋण से उऋण हो सकें।

शहीद का स्मारक नव जीवन तथा महान् शक्ति का कारण होगा। शिथलता दूर होगी। यह स्मारक लाईट हाऊस का काम देगा। युवक मण्डल में बलिदान की भावनाएं जागृत हो कर वेग गति से प्रवाहित होंगी। वर्तमान की पुकार है। स्मारक निर्माण इस लिए विनम्र प्रार्थना है कि ४, ५, ६ मार्च को शहीदी मेला के शुभावसर पर परिवार सहित कादियां पधार [illegible] स्मारक निर्माण यज्ञ में अपनी आहुति डालें।

न काम आती है तदबीरें न काम आती हैं फरयादें शहादत पर रखी जाती है कौमियत की बुनियादें।

कादियां में शहीदी मेला

लेख राम नगर कादियां जिला गुरदास पुर में प्रतिवर्ष की भान्ति इस बार भी ४ ५-६ मार्च को अमर शहीद पं. लेख राम जी आर्य मुसाफिर की बलिदान स्मृति में शहीदी मेला बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। पहिले कथा भी होगी। शहीदी जलूस भी निकलेगा, इस मे मान्य नेता एवं प्रसिद्ध उपदेशक भजनीक पधार रहे हैं। तैयारी शुरू है लोगो मे बड़ा उत्साह है—

प्रचार के [illegible]र

बटाला में शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज कालेज विभाग बटाला बड़ा सुन्दर कार्य कर रहा है। माननीय प्रिंसिपल युगल किशोर जी एम० ए०, डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल बटाला के संरक्षण एवं नेतृत्व में समाज के प्रधान श्री० मनोहरलाल जी, मन्त्री श्री. दर्शन कुमार जी सारे अधिकारी व सदस्य समाज कार्य को आगे ही आगे ले जाने में लगे हैं। समय-समय पर पर्व भी बड़े ही समारोह से मनाये जाते हैं। सभा के वेद प्रचार का भी विशेष ध्यान रखते हैं।

इस बार समाज की ओर से शिवरात्रि का पुण्य पर्व डी. ए. वी. स्कूल के विशाल हाल में प्रातः यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। यजमान नगर के मान्य सज्जन श्री. सुखदेव जी अपनी श्रीमती जी के साथ बड़ी श्रद्धा से बने। आप की ही प्रधानता में समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। वेद मन्त्रों के मधुर गायन के बाद डी० ए० वी० प्रायमरी स्कूल व डी. ए. वी. हायर स्कूल के बच्चों ने बड़ा ही मीठा संगीत पेश किया। डी. ए. वी. गर्ल्स कालेज तथा आर्य पुत्री पाठशाला की छात्राओं ने सुन्दर कार्यक्रम पेश किया। इस समारोह में श्री ज्ञानी प्रकाशदेव जी, श्री ओंप्रकाश जी प्रधान आर्यसमाज जौहरी चौक, श्री धर्मपाल जी बजाज श्री रब्बे कादिया तथा प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री आर्य प्रादेशिक सभा ने अपने विचार रखते हुए महर्षि दयानन्द के गुणगान किये। अन्त में श्री बिहारीलाल जी सुखदेव सभापति जी ने भी सुन्दर विचार प्रस्तुत किए।

बाद में बड़ा ही उत्तम सहभोज हुआ। सभा के वेद प्रचार में १०१) रुपये तथा ५) रु० मार्गव्यय दिया। समारोह बड़ा ही प्रभावशाली था।

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज, साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद [illegible] (ले० [illegible] वैद्यनाथ [illegible]) [illegible]
२. वैदिक [illegible] [पंजाबी में] (ले० डा० धर्म[illegible]सिंह जी) १०-[illegible]
३. चन्द्रगुप्त मौर्य [illegible]
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A. (अंग्रेजी में) [illegible]
१२. संध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १.००
१३. Dayanand His Life & Work (ले० प्रि० सूर्यभानु जी M. A. २.००
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र (ले० आनन्द स्वामीजी महाराज) १.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईदास जी M.A.) ०.५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. .५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, .५०
२१. मुंडक उपनिषद (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सोमानंद जी) उर्दू में ०.३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १.२५
२४. सीता (ले. आनंदस्वामीजी) ०.[illegible]
[illegible]. [illegible] (,, ,, ,,) ०.११
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A.) अंग्रेजी में १.२५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वाध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

बटाला की मिशनशाखा

दयानन्द सालवेशन मिशन की बटाला नगर की मिशनशाखा बहुत ही उत्तम शुद्धि का कार्य कर रही है। इसके अधिकारियों में [illegible] श्री बृजबिहारी जी, उपप्रधान श्री मनोहर लाल जी मन्त्री—[illegible] बलदेव सिंह जी, श्री [illegible] कुमार जी, खजांची श्री नरेन्द्रनाथ जी तथा सरपरस्त मान्य प्रिंसिपल पं० युगलकिशोर जी एम. ए. के नेतृत्व में बड़ा सराहनीय काम हो रहा है। अब तक चौधरी वाला ग्राम, धुपसड़ी, माडी पुनवां, राजू बेला, बोड़ा कर सांवा आदि ग्रामों मे ४१८ शुद्धियों हो चुकी हैं। दो शुद्ध करके विवाह भी कर दिया है। उस इलाके में ईसाईयों का मुकाबिला करते हुए इस मिशन के इस शुद्धि कार्य से जनता में प्रसन्नता है। यदि इस शाखा को हर प्रकार का समाजों व सज्जनो का सहयोग मिलता रहे तो शुद्धि का विस्तृत काम हो सकेगा।

सूचना

मा० आनन्द स्वामी जी की अमृतसर में कथा—आर्य जगत् के नेता पूज्य आनन्द स्वामी जी सरस्वती २५ फरवरी से ४ मार्च तक प्रातः ७.१५ से ८.१५ बजे तक नित्य आर्य समाज मन्दिर मदन मोहन मालवीय मार्ग में कथा किया करेंगे। कथा से पूर्व ६.१५ से ७ बजे तक यज्ञ और भजन हुआ करेंगे।

धर्म प्रेमी सज्जन परिवार समेत पधार कर लाभ उठावें।

श्री चौधरी सूरत सिंह जी प्रधान आर्य समाज खाली आनन्दपुर जिला रोहतक ने अपने घर में श्री [illegible] तथा प्रभु दयाल जी द्वारा यज्ञ करवाया सभा के लिए एक सौ एक १०१) रुपए वेद प्रचारार्थ दान दिए। श्री सेठ लालमण जी १० एफ० माडल टाऊन हिसार ने ५१) रुपये वेद प्रचार के लिए दान दिए। इसी पर वह [illegible] पर तन, मन धन से सभा की सहायता करते रहते हैं।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए. पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालंधर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक १०) | २६ फाल्गुण २०२५ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—९ मार्च १९६९ | (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तस्मै रुद्राय नमः

तस्मै—उस रुद्र भगवान् के लिए नमः—नमस्कार हो। भगवान् के अनन्त नामों में रुद्र नाम भी है। रुद्र का अर्थ यम है रुलाने वाला। परमात्मा जहां शिव शंकर है, कल्याण कारी है, वहां वह रुलाने वाला रुद्र भी है। वह दुष्टों को दंड दे कर रुलाता रहता है। उसी के समय २ पर दिये गये दंड से बड़े २ दुष्ट, अत्याचारी आततायी रोते हैं। रुद्र की शक्ति से वे लोग बचते नहीं। हम रुद्र भगवान् को नमस्कार करते हैं। सादर प्रणाम करते हैं।

अथर्व ८—८७—१

वे दा मृ त

मुझे सब का प्यार मिले

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये॥

अथर्व० १९-६२-१

अर्थ :—हे प्रभु देव ! (प्रियं) प्यारा (मा) मुझ को (कृणु) कर दो (देवेषु ब्रह्मज्ञानी विद्वानों व देवों में और (प्रिय) प्यारा (राजसु) राजाओं में (मा) मुझे (कृणु) कर दें। तथा (प्रियं) प्यारा (सर्वस्य) सब का (पश्यत:) देखने वाले जीवों का (उत) और (शूद्रे) शूद्र में (उत अर्ये) और वैश्य जगत् में प्यारा बना दीजिये।

इस का भाव यह है

हे परमपिता परमात्मन् ! आप ऐसी कृपा करें। मुझ में ऐसे गुण भर देवें जिन के द्वारा मैं इस जगत् में केवल अपने परिवार का या मित्र-मण्डली का ही प्यारा न बनूं, सभी के स्नेह का भाजन बनता जाऊं। सब का सदा मुझे प्यार प्राप्त होता रहे। देवजन मेरे से प्यार करते हुए शुभ आशीश देते रहें। राजगण एवं धनवानों में भी मुझे स्नेह मिलता रहे। जितना भी यह देखने वाला जीव-मण्डल है, प्राणिमात्र है सभी का मैं प्यारा बनूं। चाहे कोई छोटा हो या बड़ा—किसी भी क्षेत्र में कार्य करने वाला हो—सब का प्रेम-पात्र बनता रहूं। चारों ओर से मेरे लिए प्यार ही प्यार का संसार बना रहे। —स०

ऋषि दर्शन

अस्य विश्वस्य परं निधानम्

अस्य—इस विश्वस्य—सारे विश्व आप परम निधानं-सहारा हो आधार हो।

हे प्रभु देव ! यह जितना भी जड़ चेतन जगत् है—तमाम संसार के केवल मात्र आप ही एकमात्र आधार हो। एकमात्र सहारा हो। आप के ही नियत नियमों में, अनुशासन में यह सारा चर-अचर विश्व काम कर रहा है। यह सब विश्व है, आप इसके पति होने से विश्वपति हो। यह विशाल जगत् है, आप इसके स्वामी हो। आप ही इसके सब कुछ हो—

योगेश्वर कृष्ण—गीता से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी०एच० डी० (सभा मन्त्री) | सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

महर्षि दयानन्द के शब्दों में :–

हमारा असली नाम आर्य ही है

[illegible] जी वसु सिद्धान्तालंकार [illegible]

आज आर्यों में एक भ्रांत धारणा [illegible] कर रही आ रही है, और वह है कि हिन्दी, हिन्दु, हिन्दुस्तान इन तीनों [illegible] का बड़ा ही व्यापक रूप से [illegible] होता जा रहा है परन्तु आज हम यह भूल गए हैं कि हमारा असली नाम क्या है ? यह तीनों ही शब्द हिन्दी हिंदू-हिन्दुस्तान हमारे स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने के लिए ही रखे गए हैं। जब मुसलमान आक्रमणकारियों ने इस देश को पराजित न कर लिया तो यहीं के निवासियों को इस घृणा सूचक नाम से सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया। जिस प्रकार आज से लगभग सौ, सवा सौ वर्ष पूर्व हमारे देश के कुछ लोगों को मजदूर बनाकर अफ्रीका, फिजी आदि देशों में भेजा गया और इनके कुली होने के कारण पीछे जो भारतीय गए वे भी उसी नाम से पुकारे गए। ठीक इसी प्रकार कालान्तर में राजनीतिक पराधीनता के कारण मुसलमानों द्वारा दिया गया यह घृणास्पद शब्द हिन्दी हिन्दु हिन्दुस्तान हमने अपना लिया।

यह 'हिंदू' शब्द फारसी का है। फारसी के कोषो मे इसका अर्थ चोर, डाकू, गुलाम, काफिर काला इत्यादि किया है कि वह इस अरबी में भी यह शब्द इन्हीं अर्थों में प्रयोग हुआ है। इसलिए भारतीय स्वतन्त्रता के प्रेमी का कर्तव्य है कि वह इस कलंक के टीके हिंदी हिंदु हिंदुस्तान नाम को परित्याग करके अपने असलीनाम आर्य, आर्य भाषा, आर्य व्रत को ही अपनाने में गौरव समझे। स्वाधीनता संग्राम के प्रथम सेनानी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि किसी ग्रंथ मे भी (हिंदी हिंदू-हिंदुस्तान) इन तीनों शब्द का कहीं पर भी प्रयोग नहीं किया है। हां आर्य-आर्य भाषा और आर्यव्रत इन तीनो श्रेष्ठ नामों को हां भिन्न स्थानों पर अंकित किया है। वे हिंदू शब्द को इतना कलंक समझते थे जितना कि अन्य मत मतान्तरों को। उन्होंने अपने ग्रंथो और व्याख्यानो में हिंदू शब्द के परित्याग और आर्य शब्द के ग्रहण पर बड़ा ही बल दिया है। उन्होंने वैदिक सिद्धांतों के प्रचार और प्रसार के लिए जो संस्था स्थापित की है। उसका नाम आर्यसमाज रखा। महर्षि हिंदू' शब्द पर ही बड़े दुःखी थे। उन्होंने अपने पूना के व्याख्यानों में कहा था कि '[illegible] [illegible] का त्याग [illegible] और [illegible] हम नामको अभिमान करो। गुण भ्रष्ट हम लोग हुए परन्तु नाम भ्रष्ट तो हमें न होना चाहिए ऐसी आप लोगों से मेरी प्रार्थना है।

पुनः आपने वर्ण धर्म के विषय पर चौथा व्याख्यान देते हुए कहते हैं कि इस प्रकार के प्राणप्रतिष्ठता के मन्त्र कहा से निकले यह विचार हम हिन्दुओं को नहीं २ भूला हिन्दू शब्द का उच्चारण मैंने भूल से किया क्योंकि हिन्दू यह नाम हम को मुसलमानो ने दिया है, जिस अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि सो मैंने भूल से उस शब्द को स्वीकार किया था अपितु हमारा असली नाम आर्य है अर्थात् श्रेष्ठ है।

जगत गुरू महर्षि दयानन्द ने भूल से आर्य शब्द न कह कर हिन्दू शब्द का उच्चारण किया परन्तु महर्षि जी की महानता देखो कि उन्होंने सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये के सिद्धांत को किस प्रकार अपने जीवन मे चरितार्थ किया। भूल से हिन्दू शब्द कहने के पश्चात् कहते हैं कि 'इस का विचार हम हिन्दुओं को नहीं, नहीं, वहीं मैं भूला, हम आर्यो को अवश्य करना चाहिए शब्द का उच्चारण मैंने भूल से किया इत्यादि (उपदेश मञ्जरी)

महर्षि पुनः [illegible] [illegible] गुलाम [illegible] कि आर्य वासियों को [illegible] यवन (मुसलमानों) आदि की ओर से हैं और आर्य [illegible] जिसके अर्थ श्रेष्ठ के हैं, इसी पुस्तक में लिखा है कि 'हिन्दू' उसी को कहते हैं जो वेदोक्त सत्य मार्ग से विरुद्ध चले। पुनः आगे लिखा है कि ऐसे ही सब जगत को ब्रह्म मानना तथा भ्रम को जगत रूप समझना यह हिन्दुओं की बात होगी, आर्यों की नहीं, इत्यादि विचार धारा महर्षि दयानन्द ने दी है।

आर्य जगत के प्रसिद्ध नेता इतिहासज्ञ अमर शहीद आर्य वीर श्री श्रद्धेय पं० लेखराम जी आर्य पथिक आर्य समाज की एक महान् विभूति एक अपूर्व लेखक एवं ओजस्वि वक्ता इतिहासज्ञ और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माननीय निर्माताओं में से प्रमुख थे। उन्होंने अपनी खोज पूर्ण पुस्तक 'कुलियात आर्य मुसाफिर' मे (आर्य हिन्दू और नमस्ते की खोज में। हिन्दू शब्द की महान खोज की है। हिन्दू शब्द की खोज करते उन्होंने २८ प्रमाण भिन्न-भिन्न विदेशी कोषो के अपनी पुस्तक मे उद्धृत किये हैं। जिन प्रमाणों से भली भांति सिद्ध होता है कि हमारा असली प्राचीन नाम आर्य ही है हिंदू नहीं हम कुछ प्रमाण [illegible] है पाठक [illegible] है।

१. हिन्दू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

अर्थ :— हिन्दू शब्द [illegible] [illegible] चोर, [illegible] पहुंचा [illegible] [illegible] और गुलाम के अर्थों में।

[illegible] हिन्दू [illegible] [illegible] काफिर [illegible] (कश्फ [illegible] कोष)

अर्थ :— हिन्दू की अर्थ गुलाम, कैदी, काफिर और दलदार है।

३. "दो हिन्दू ए [illegible] [illegible] सर का आर्वदन्द (गुलिस्तान) अर्थ :— दो चोर चट्टान् के पीछे से निकले

४ चे हिन्दू ए काफिर चे काफिर रहजन रहजने ईमान (यवन के बजोर)

अर्थ :— हिन्दू क्या है ? काफिर काफिर रहजन। रहजन क्या है ? रहजन ईमान पर डाका मारने।

यहीं हिन्दू शब्द फारसी अरबी, इबरानी आदि भाषाओं में लग भग इन्हीं अर्थों मे प्रयुक्त हुआ है। ऐसी पुस्तक होगी जिस में यह शब्द में आता हो। जिस से प्रत्येक प्रकार से सिद्ध है कि यह "हिन्दु" नाम नहीं अपितु सर्वथा त्याग करने योग्य है और शत्रुता तथा विरोध से रखा है जैसा कि हमारे यहा अनेक यवन और मलेच्छ आदि हैं।

"हिन्दू शब्द कहने में सब से बड़ी आपत्ति यह है कि हमारा इतिहास छोटा हो जाता है। क्योंकि हिन्दू शब्द को प्रचलित हुए ८०० वर्ष हुए। आर्य शब्द सृष्टि के आरम्भ से ही चला आ रहा है। अर्थात् १ अरब ९१ करोड़ २९ लाख ४९ हजार ६७ वर्षों से निरंतर चला आ रहा है। और अन्त तक चलता रहेगा।

मैं उपरोक्त वर्णन कर चुका हूं कि हमारी जाति का हिन्दूनाम हमारी किसी भी संस्कृत पुस्तक में नहीं लिखा है वेदो से शास्त्रो प्रत्युत: पुराणों से लेकर सत्यनारायण की कथा (जो बहुत थोड़े समय की रचना है) तक में भी कहीं इस नाम का चिन्ह नहीं मिलता। वाल्मीकि की रामायण पढ़ने वाले जानते हैं कि रामायण मे भी भिन्न-भिन्न स्थानों पर आर्य शब्दो का सम्बोधन किया है, अनेक स्थलों पर माता सीता ने राम को हे आर्य पुत्र ! के नाम से पुकारा है, इत्यादि। अतः इससे

शेष पृष्ट ८ पर

भजन

तर्ज :–(बोल मेरी तकदीर मे क्या है)

फिल्म :–(हरियाली और रास्ता)

परमेश्वर की भक्ति अन्दर, मन तेरा यह क्यो न लेता,
विषय विकारों में जिंदगी गवा दी, अब क्यों तू करता उससे गिला।
पांचों विषयो को ही तू, अपना धर्म बना बैठा,
इन्हीं में मगन रहा मानव, इन्हे ही कर्म बना बैठा।
पापों की तू किश्ती बना कर, भव सागर में अब डूबा, विषय विकारों...

अन्धेरे में ही रह करके, यह जिन्दगी गवा ही डाली है,
मानव है तू पर अन्दे—जो मानवता से खाली है।
पाखण्ड का साथ तू लेकर, जीवन अपना दिया गवा, विषय विकारों
ऐ प्राणी होश में आकर, कुछ तो पुण्य कमा ले तू,
जवानी पाप में बीती, जीवन सफल बना ले तू।
सुरेन्द्र का तू कहना मान ले, परमेश्वर को तू अपना विषय विकारों...

—सुरेन्द्र पाल "शर्मा"

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२५, ९ मार्च, १९६९ [अंक १०

महान् नेता चले गये

माननीय डाक्टर गोकुल चन्द जी नारग भी हम को छोड़ कर स्वर्गवासी हो गए। सारा समाज और राष्ट्र एक और महान् नेता के नेतृत्व से वंचित हो गया वेद के परमनिष्ठावान्, प्रभु के भक्त, ऋषि दयानन्द के पूरे अनुयायी एवम् आर्य समाज के आरम्भ युग के स्तम्भ चले गये। शिक्षा के भारत में सर्वप्रथम विशाल धारा दयानन्द एंग्लो वैदिक के प्रवाहित करने तथा उसे प्रतिष्ठा ऊचे स्थान पर पहुचाने में डाक्टर जी ने बड़ा ही कार्य किया। जब भी इतिहास लिखा जायगा श्री मान्यवर नारग जी का नाम तथा काम स्वर्ण के अक्षरो मे अंकित होगा। आर्य समाज के आदि युग में जिन नेताओ ने आर्य समाज के गौरव को कोने २ में फैलाने में पूरी आस्था के साथ कार्य किया, जन-जीवन में वैदिक विचारो के प्रचार में सहयोग दिया, शिक्षण सस्थाओ की स्थापना मे भारी हाथ बटाया, स्वराज्य आन्दोलन मे जीवन का तप त्याग स्वीकार कर के अनेक कष्ट सहन किए उन नेताओ के मनोरम माला के मनोहर मनको मे लब्धख्याति डाक्टर जी भी एक अमूल्य मोती हैं। आपको बालपन से। ही देश प्रेम का पाठ पढ़ने को मिला धर्म की सुगन्धि से आपका जीवन सुगन्धित था। विरले ही ऐसे युवक होते हैं जिन के विचारो मे यौवन मे प्रभु-प्रेम की सात्विक तरगें प्रवाहित होती हो। समाज के व्यापक काम मे बड़ी रुचि लेते हों तथा वैदिक सिद्धान्तों के स्वाध्याय मे पूर्णनिष्ठा हो। बैरिस्टर होकर इतना धर्म प्रेम किसी-किसी मे देखने को मिलेगा। भारतीय सस्कृति के तो आप बहुत बड़े पक्षपाती थे। आपके विचारों में प्रारम्भ से ही पुरातन सनातन भारतीय सस्कृति के प्रति पूरी श्रद्धा की भावना ठाठें मारती थी। देशभक्ति की मस्ती से ओतप्रोत थे।

आज की राजनीति बहुत गदली होती जा रही है स्वार्थ की सरणी पर आज का राजनीतिज्ञ चलने लगा है। उसे अपनी चिन्ता अधिक है दूसरों की सेवा का ध्यान कम है। आसन पर बैठ कर आज का राजनयिक व्यक्ति समाज को सर्वथा भूल जाता है। अपनी तिजौरी को भरन एव चाचा-भतीजावाद की परिक्रमा करने मे ही लगा रहता है। किन्तु स्वर्गवासी मान्यवर डा० नारंग जी राजनीति के क्षेत्र मे ऊचे से ऊचे मिनिस्टरी के आसन पर बैठे तो अपने सामने जनता की सेवा का पवित्र कार्य ही था। अपने व्यक्ति के जीवन को सर्वथा भुला कर समष्टि रूप ही निर्मित कर लिया था। देश प्रेम का कितना बड़ा भाव उनके जीवन मे कूट-कूट कर भरा था यह इस बात से प्रतीत होता है कि जब स्वदेश भक्ति के आन्दोलन की लहर चली तो उन्होने ब्रिटिश सरकार की ओर से दिये गये सब से बड़े सम्मान **Knight** व **Sir** 'सर' की उपाधि वापस लौटा दी। यह त्याग बहुत बड़ा त्याग है। उस युग मे ऐसा त्याग मामूली त्याग नही है। देश प्रेम की भावना उनके जीवन की सारे देशवासियो का मस्तक झुकाती रहेगी, डा० नारग पक्के स्वतन्त्रता प्रेमी और देश भक्त थे। राष्ट्र के स्वातन्त्र्य आन्दोलन में उनका दिया योगदान अमर रहेगा। आज तो थोडा सा भी जिस ने देश-सेवा का काम किया या करता है वह इसके लिए पुरस्कार मागता है किन्तु डा० गोकुल चन्द जी नारग सच्चे देश-प्रेमी थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा वेद भाष्य से राष्ट्र प्रेम की प्रेरणा प्राप्त की थी। देश-सेवा का कार्य किया किन्तु किसी प्रकार का पुरस्कार नही चाहा। यह उनकी देश भक्ति की सुन्दर पराकाष्ठा है।

डाक्टर नारग जी के उच्च जीवन के कई क्षेत्र है, जहा उनके विशाल कार्य के दर्शन होते है उनका शिक्षण का कार्य, व्यापार का कार्य, राजनीति के नेता के रूप मे नेतृत्व तथा राष्ट्र भक्त रूप, महान ओजस्वी वक्ता तथा प्रभा वशाली लेखक का रूप। ये सारे रूप सुन्दर हैं। इन मे समाज सेवी, धार्मिक वेद प्रेमी और आर्य समाज के महान कार्य-कर्त्ता के रूप मे उनका जो प्रभावभरा रूप है। वह भी वन्दना के योग्य है। आर्य समाज मे उनके प्रभाव शाली प्रवचन तथा समय-समय उनके खोज पूर्ण लेख स्मरण रहेगे। बड़ा भारी स्वाध्याय था। अनेक शास्त्रार्थों मे आपने प्रधानता की तथा अन्त मे आपका जो निर्णय भाषण होता था वह भी स्वय ही एक खोज पूर्ण विषय होता था। हमे तो भूलता नही वर्षों हुए आपने और ग्रन्थों के साथ एक सुन्दर पुस्तक वैदिक सूक्तियो पर लिखी थी। कमाल के स्वाध्याय का परिचय था। हर दिशा मे प्रशसा प्राप्त की।

माननीय डाक्टर नारग जी चले गए उन के बाद यह कभी तो कमी पूरी होगी नही आर्यसमाज अपने महान् नेता के समय-समय पर आदेश सन्देशो से वंचित हो गया है दानी के रूप मे भी उनका नाम कभी नही भूल सकता। उनके स्वर्गवास पर उनके जीवन कार्यों के प्रत्येक क्षेत्र को देखते हुए जितनी भी भावभरी श्रद्धांजलिया अर्पित की जाए कम है। उनका जीवन कार्य वाणी या लेखनी के सामान्य शब्दो या पक्तियो मे आ ही नही सकता। सारे परिवार के साथ पूरी समवेदना है डाक्टर जी तो सचमुच समाज के सारे परिवार के पिता व नेता थे। अब उनका जीवन कार्य हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा। डी. ए. वी. कालेज कमेटी के वह एक बड़े ही पुराने प्रतिष्ठित महान् स्तम्भ थे। हम कमेटी के मान्यवर प्रधान श्री डा. जी. एल दत्त जी तथा अधिकारियो से प्रार्थना से प्रार्थना करते हैं कि वे डाक्टर जी के विविध क्षेत्रो मे की गई सेवाओ के सम्बन्ध मे विशेष ग्रन्थ प्रकाशित करें जिसमें उनके जीवन की अनेक घागाओ की विशद रूप से चर्चा हो। यह ठोस श्रद्धाजलि होगी।

—त्रिलोकचन्द्र

सभा परिवार का प्रेमी

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर एक महान् परिवार हैं। इस के साथ बडे २ मान्य शिक्षण सस्थानो के आचार्यों, राजनीति के विविध क्षेत्रो मे कार्य करने वाले राजनयिको, समाजो के अधिकारियो, व्यापारी महानुभावो तथा अन्य सज्जनो का प्रारम्भ से ही बड़ा प्यार व आदर से भरपूर सम्बन्ध है। सभा केन्द्र है— इस के द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार होता है। समाज सुधार का व्यापक काम जारी है। विदेशी पादरियो के मिशन के मिशनरियो ने अपने पैसे के तथा विदेशी सत्ता के दलबल पर भारत मे जहां २ पर भारतीयो को अपने विचारो का बनाने मे काम जारी किया हुआ है। उन का प्रतिकार करने के लिए भी सभा पूरा २ कार्य करने मे लगी हुई है। इस के पास अपना प्रचारक वर्ग है तथा साहित्य विभाग भी है। प्रकाशन का कार्य भी होता है। सभा की ओर से समय २ पर बड़ा ही महत्वपूर्ण पुस्तको के रूप साहित्य छपता रहता है। अपनी डी. ए. वी की स्कूल, कालेजो की सस्थाए हो या आर्य समाजें हो, सब का अपनी सभा के साथ बड़ा ही स्नेह है। यह गौरव की बात है।

वर्ष के बाद सभा से सम्बन्धित समाजो के मान्य प्रतिनिधियो का परिवार वार्षिक अधिवेशन के रूप मे एकत्रित होता है। गत वर्ष के कार्य का विवरण सुनते हैं तथा आगामी वर्ष के व्यापक प्रचार व अन्य कार्यो के लिए वर्ष के लिए बजट पारित करके अधिकारियो का चुनाव भी करते हैं।

हमारी सभा के इतिहास का यह गौरव भरी परम्परा है। निर्वाचन मे जिस सद्भावना प्रेम तथा एकता का परिचय मिलता रहता है। उसे देखकर मस्तक मान से ऊचा हो जाता है। हमारी सभा मे तो अधिकारी बनते नही वरन् उनसे सभा का कार्य सभालने के लिए अधिकारी बनने के लिए प्रार्थना करके विवश कर दिया जाता है। आर्य प्रादेशिक सभा की यह शुरू से ही यह पुनीत परम्परा रही है। यहा तो अधिकार की लिप्सा नहीं होती वरन् धर्मप्रचार की सेवा की भावना का ध्यान रहता है। इस बार चण्डीगढ मे ता० ९ मार्च रविवार के दिन मध्यान्होत्तर सभा का वार्षिक बजट अधिवेशन हो रहा है। वर्ष के बाद सभा का प्रेमी परिवार इकट्ठा हो रहा है। गत वर्ष सभा का कार्य का विविध विवरण सुनेंगे तथा इस वर्ष का सभा कार्य बनाना होगा। इस समय प्रचार की कितनी भारी आवश्यकता है। जीवन की दिशा किस ओर जा रही है। भोगवाद का कितना बोलबाला है—प्रत्येक क्षेत्र मे गिरावट के

(शेष पृष्ठ पाच पर)

ऋषि की महानता युवकों के लिए

(श्री करनैलसिंह विद्यार्थी)

Give me young men (young stood) & I shall give you freedom' यह शब्द नेताजी सुभाष के नाम से पुकारते हैं। कहते को तो ये थोड़े से ही शब्द हैं पर यदि ध्यान से देखा जाए तो इस एक वाक्य में ऋषि दयानन्द की साक्षात भावना नजर आती है।

मेरे इन वाक्यो से कुछेक भाइयो को मेरे बारे मे यह विचार होगा कि मैं यहा पर ऋषि दयानन्द का पक्ष ले रहा हूं पर यह बात कभी भूलने वाली नही है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन पर ऋषि दयानन्द का गहरा प्रभाव था। नेताजी तो ऋषि को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे।

केवल नेताजी ही ऋषि पर लट्टू न थे बल्कि भारत को आज़ाद कराने वाला प्रत्येक शहीद ऋषि की प्रेरणा से ही प्रेरित होकर आज़ादी की आग मे कूदा। सरदार भगतसिंह जिसके दुनिया गीत गाती है ऋषि दयानन्द का ही तो दीवाना था कहते हैं कलकत्ता की कार्नवालिस समाज में अभी भी भगतसिंह के दान किए हुए बर्तन है जिनके द्वारा भगतसिंह ने आर्यसमाज के सन्यासियो, ऋषि के नाम लेवो को भोजन करवाने के लिए समाज के सज्जनों को कहा था। यह थी ऋषि की महानता देश के मतवाले, आज़ादी के दीवानो के लिए। बिस्मिल जिस ने सारा जीवन ही आर्य-समाज के नाम लिख दिया था केवल किस कारण। इस लिए कि ऋषि के बताये हुए रास्ते मे महानता है। लाला लाजपतराय ने आर्यसमाज को अपनी मा और दयानन्द को अपना धार्मिक गुरू (बाप) क्यो और किस लिए कहा था? इसी लिए कि ऋषि जो अपने समय के बडे-बड़े वाईसरायो के आगे नही घबराया, बडे-बडे गवर्नरों और राजाओ, महाराजों के आगे नहीं घबराया, उस की वाणी लेखनी मे आग के शोले भरे हैं जो बुराइओ को मिटाये चले जाते हैं। जो भी ऋषि के जीवन से थोड़ा भी सम्बन्धित हुआ बस सोना बन गया, कुन्दन बन कर चमका।

दयानन्द की ज्वाला ने केवल राजनैतिक भावनों को ही नही फैलाया बल्कि धार्मिक जगत मे कुरीतियों को उखाड कर सत्य का बीज बोया। हर ओर उथल-पुथल मच गया। ईसाइयों मुसलमानो ने अपने ग्रन्थो को सम्भालना शुरू कर दिया यहा तक कि एक पाश्चात्य विद्वान को कहना पडा—

In India our religion (Bible) will now & never strike root. The acient Vedic Culture will flow black upon Europeon Lands.

लेख को लम्बा होने से बचाने के लिए मैं यहा पर ही खत्म करता हू। केवल पाठको को यही बताना चाहता हू कि ऋषि की हमारे लिए हमारे देश के लिए बहुत महानता थी। जिधर भी देख, जिस तरफ भी देखें, ऋषि का नम्बर सब से आगे है। भारत को कुरीतियों से निकालने में या भारत को वेद के मनोहर रत्नो जैसे उपदेशों को देने में या भारत को आजादी देने में या भारत को सच्चे अर्थों मे बनाने मे बात क्या, सब मे ऋषि की महानता है।

युवको के लिए इसलिए क्योकि ऋषि ने युवको को नई स्फूर्ति दी देश को उठाने के लिए और वैदिक धर्म की ऐसी सच्चाई बताई कि **Mr. Broun** को कहना पडा— **The Vedic religious is a Complete & Scientific religion, where Science & religion meets hond in hand.**

आर्यसमाज के प्रवर्तक मे क्या क्या महानता थी? ये लिखना बहुत मुश्किल है। आज दिन से सभी ऋषि की महानता को स्वीकार करते हैं जुबां से कहे या न कहे। आओ ऋषि के इस महान सन्देश से कुछ शिक्षा लें और महर्षि के बताये हुए रास्ते पर चले। आज जरूरत है नौजवानों की युवको की वीरों की जो इस भलाई के कार्य को सच्चाई के काम को अपने हाथ मे लें। यही सच्ची ऋषि के प्रति कृतज्ञता होगी युवको की।

गुरु विरजानन्द शताब्दी बड़े समारोह से मनायी

पंजाब निवासियों को आवाहन

(श्री आनन्द सागर आर्य)

'आचार्य देवो भव' पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है परन्तु इस पर मैं अपने कुछ विचार आप की सेवा मे लिख रहा हूं। पंजाब निवासियो, भारत वर्ष की जनता की दृष्टि इस समय आप की ओर लगी हुई है। हम एक बहु महान् कार्य करने जा रहे हैं जिस की प्रतीक्षा मे हम थे। बडो का कथन है कि माता पिता तथा गुरुओ पर पूर्ण श्रद्धा रखो।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज के पुज्य आचार्य गुरू विरजानन्द जी की निर्माण शताब्दी अक्तूबर १९६९ में मनाए जाने की तैयारिया की जा रही हैं। जिस की स्वागत सम्मिती करतार पुर मे बनाई जा चुकी है क्योकि यह पर्व एक दिन करतार पुर गुरू विरजानन्द जी की पुण्य नगरी में तथा दो दिन जालन्धर नगर मे मनाया जा रहा है। मैं चाहता हू कि जालन्धर नगर मे भी एक स्वागत समिती बना दी जाए। सारे भारत वर्ष से आने वाले आर्य भाईयो को हम दिखा दे कि पंजाब में आर्य समाज का प्रचार अपना एक विशेष स्थान रखता है। हम ऋषि दयानन्द के विचारों पर तो चलते हैं परन्तु हमें यह देखना है कि यह विचार ऋषि दयानन्द जी को कहा से प्राप्त हुए। यह ठीक है कि स्वामी दयानन्द महाराज जी ने एक विशाल स्वाध्याय करके यह ज्ञान प्राप्त किया था परन्तु इस तथ्य को कदापि नहीं भूल सकते कि यहे विचार मे प्रारम्भ मे स्वामी जी को गुरु विरजानन्द महाराज की देन थी। चाहे गुरु विरजानन्द जी के बाहरी चक्षु नही थे परन्तु उनकी मानसिक ज्योति का इतना विकास हो चुका था कि जिसका अनुमान लगाना कठिन है। यदि हम ठीक अर्थों मे कहे तो गुरु विरजानन्द जी का जलाया हुआ दीपक ससार मे एक ज्वाला स्तम्भ बनकर खड़ा रहेगा तथा इस ज्वाला से जो भी अगारों को प्राप्त करेगा उसका मस्तिष्क ससार भर में चमक उठेगा। आर्यसमाज के जितने भी नेता हुये हैं उन्होंने इसी ज्योति स्तम्भ से प्रकाश प्राप्त किया था।

आओ सभी आर्य बन्धु मिलकर विचार करें कि जिस पुण्य आत्मा के कारण हम ससार को कुछ दे पाए हैं उनकी पुण्य तिथि को किस प्रकार हम मना पायेगे। कृपया जो सज्जन इस बारे अपने विचार लिखना चाहें निम्न पते पर लिखें जिससे हम एक ठोस कदम उठाकर उस शुभ कार्य को पूर्ण रूपेण निभा पाए। मैं वैदिक धर्म मे श्रद्धा रखने वालो को इस पुण्य कार्य के लिए आवाहन करता हू।

समाचार

बटाला

दिनाक २५-२-६९ को डी.ए.वी. हायर सकेंडरी स्कूल बटाला के प्रिंसीपल, स्टाफ तथा छात्रों मे मा भारती के वरद पुत्र डा० गोकुलचन्द्र जी नारंग के निधन समाचार से शोक की लहर दौड़ गई।

प्रिंसीपल महोदय तथा अध्यापको ने डा० गोकुलचन्द्र जी नारंग की चिर-स्मरणीय सेवाओ का परिचय देते हुए उनको श्रद्धाजंलि समर्पित की। श्री नारंग जी की दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए, तथा उनके शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान हेतु परम-पिता से प्रार्थना की। शेष समय के लिए बडे शोक पूर्ण वाता-वरण मे विद्यालय का कार्य बन्द रहा।

प्रिं० डी० ए० वी० हायर सकेण्डरी स्कूल बटाला।

एक आर्य युवक की कहानी

(श्री रविन्द्र कुमार भागीरथ (कादियां)

मनुष्य जीवन को विद्वानों ने सात श्रेणीयां बनाई हैं अर्थात मनुष्य जीवन को सात भागों मे बाट दिया है। बचपन, विद्यार्थी, कवि,युवावस्था, बुढापा, सब अंगों का कार्य कम पड जाना **Extremey old thin man**) और सातवा नम्बर उसकी मौत है जो उसकी **Last stage** है। इसके बाद मनुष्य जीवन खत्म हो जाता है। सब प्रकार के कष्टो से छुटकारा हो जाता है।

बचपना हर कोई याद नहीं, रख सकता ज्यो-ज्यो मनुष्य विकसित होता है वह अपनी गुजरी जिंदगी को भूल जाता है अर्थात (**He Do not want to think about his Past life)** यही मनुष्य की सब से बडी कमजोरी है। अगर आदमी अपने पिछले दिनो को कभी-कभी याद कर ले तो मेरे ख्याल में वह उसको किसी प्रकार की तकलीफ नही देते। शायद उस युवक ने भी पुराना नक्शा (जिन्दगी का) देखना अच्छा नही समझा, तभी तो वह अपने जीवन पथ को भूल गया, अपने आप को भूल गया।

बात आज से १२ साल पहले की है मैं उस समय कादियां (गुरदासपुर) मे डी० ए० वी० प्राईमरी स्कूल में चार क्लास मे पढता था वह युवक भी मेरा सहपाठी था, परन्तु उस समय मेरी उसके साथ किसी किस्म की बोलचाल नही थी। अगर उस समय कही मित्रता हो भी जाए तो वह केवल क्षण भर की ही होती है। क्योंक उस अवस्था मे विद्यार्थी दोस्ती का तात्पर्य नही जानते। ऐसे ही मेरी भी उसके साथ कोई ज्यादा दोस्ती नहीं थी। मेरे घरसे उसका घर ज्यादा दूर नही था, केवल बीच में एक छोटा सा बाजार पडता था परन्तु मेरा उसके घर आना-जाना नही था। हा स्कूल में प्रतिदिन मुलाकात हो जाती थी। उस वर्ष मैंने तथा उसने चार क्लास की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली, और डी. ए. वी. हाई स्कूल (आज कल वह सकैण्डरी है) में जाकर पाच क्लास में पढना शुरू कर दिया परन्तु हमारी बोलचाल फिर भी शुरू नही हुई। पर मुझे उसके साथ बहुत प्यार था। दिन में जब तक मैं उसे देख न लू चैन नही पडता था। मैं स्कूल की छुट्टी के बाद भी उसे बुलाने की, उससे बात करने की कोशिश करता परन्तु मेरे मन मे एक झिझक सी पैदा हो जाती थी। मैं उसके घर के नजदीक जाकर वापिस आ जाता था। बाजार मे खडा होकर उसकी राह देखा करता परन्तु उससे बात करने मे झिझक महसूस करता। वह क्लास भी-बगैर हमारी बोलचाल के पास हो गई। हम दोनो ने छटा क्लास मे पढना शुरू कर दिया। ऐसा हुआ कि उस समय हमारे अध्यापक जी ने मुझे तो 'क' वर्ग मे अपने पास रख लिया और उस को 'ख' वर्ग मे दूसरे अध्यापक के पास भेज दिया।

मैं फिर भी पानी पीने के बहाने उस को देख आता मैं नही कह सकता कि उस के मेरे प्रति क्या विचार थे? असली कहानी यहा से शुरू होती है। उस समय मेरा सम्बन्ध आर्य समाज साथ हो गया था "हो गया" लिखना उचित होगा क्योंकि उस समय अल्प बोध था आर्य समाज क्या है? वहा, क्या होता है? कुछ पता नही था हा खेलने कूदने के लिए (उस समय) उस से अच्छी जगह कही नही मिलती थी। मैं और मेरे कुछ साथी सध्या समय वहा नित्य प्रति पहुच जाते। और विद्यार्थी जो हम से बडें थे वह तो सध्या करते और हम लोग शरारतें करने मे मस्त रहते थे। बीच-बीच मे इतनी जोर से हसते कि एकाध को तो मार पड जाती फिर भी हसी का दौरा खत्म न होता। आखिरकार उठकर (सध्या भवन) से बाहर आ जाते। सन्ध्या के बाद दूसरे युवक हमको समझाते परन्तु मेरे लिए तो उस समय सब बेकार सिद्ध हुआ। वह जीवन ही ऐसा था कि किसी बात का मेरे पर असर ही न होता था। (एक बार तो मैंने अपने दोस्तो को इकट्ठा करके आर्यसमाज मन्दिर मे पत्थर मारे थे) हा मतलब है कि मेरा आर्यसमाज के साथ सम्बन्ध हो गया। एक साल तो मैंने वहा जाकर खेलने में गुजार दिया। पता नहीं उसके बाद क्या हुआ? मेरा आर्यसमाज के साथ प्रेम-सा हो गया। अब मैं वहा जाकर शरारते कम करता। अपने साथी लोगो से भी चोरी ही समाज ने आता। मेरा कहने का तात्पर्य है कि मैं पहले से कुछ शरीफ बन गया।

हा तो वह युवक मुझे बराबर स्कूल मे मिलता परन्तु वही पहले जैसे ही, हमारी मुलाकात होती थी, परन्तु उसमे कोई मजा नही था। मुझे उसके प्रेम था, सहानुभूति थी,

एक दिन की बात है कि मै घर से कुछ समान लेने जा रहा था कि उसकी मुझे झलक सी पडी, वह हाथ मे कुछ लिये आ रहा था, मैंने हौसला किया, मुझे ऐसा जोश आया कि उस को भागकर पीछे से कमीज से पकड लिया। वह हैरान नहीं हुआ, चौका नही, बडी शिष्टता पूर्वक बोला सुनाओ भाई क्या हाल चाल है? मैंने उसके प्रश्न का उतर दिया परतु मैं खुशी मे ठीक से कुछ कह भी न सका, कुछ और बात ठीक से सुन भी न सका:— (क्रमशः)

प्रिं. युगल किशोर जी को वधाई

डी. ए. वी. हायर सैकण्डरी स्कूल बटालाके प्रिंसिपल मान्य प. युगल किशोर जी एम. ए. के युवक योग्य सुपुत्र श्री. प्रिय रमेश जी का शुभ विवाह सौभाग्यवती कमलेशजी सुपुत्री प. श्री कृष्णजी आदर्श नगर जालधर के साथ बडी धूमधाम से सम्पन्नहुआ। इस अवसर पर माननीय प्रि० जी ने जालन्धर मे अपने परिवार में विवाह से पूर्व प्रातः काल वेद यज्ञ का समारोह किया। बडी श्रद्धा से बडा ही सुन्दर यज्ञ का काम क्रम रखा गया। सारा परिवार एव सबधी बडी आस्था से यज्ञ मे शामिल होकर यज्ञ मे आहुति डालते रहे। इसमे प. त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, प. राजपाल जी मदन मोहन चिमटामडली आर्य प्रादेशिक सभा, प. अयोध्या प्रसाद जी शास्त्री जालन्धर, श्री प. ओमप्रकाश जी महोपदेशक सभा आए, मधुर सगीत भी हुआ। मान्य प युगल किशोर जी प्रि० स्वय ही बडे आस्था वाले धर्म भावना से भरे तथा यज्ञ व वेद के बडे ही श्रद्धालु है। आर्य समाज बटाला कालेज विभाग आप के उत्साह का परिणाम है। सभा के तो बडे ही हितैषी हैं। समय-समय पर सभा के वेद प्रचार मे देते ही रहते हैं। सभा की अन्तरग सभा के माननीय सदस्य हैं। सभा के प्रचारको से बडा ही स्नेह रखते है।

सायं काल को प्रिय रमेश का शुभ सेहरा बन्दी का कार्यक्रम वेद मन्त्रो के उच्चारण से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के सम्माननीय प्रधान प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल, प्रिंसिपल, विद्यावती जी आनन्द, प्रिं. प्यार लाल जी वेदी, सभा मन्त्री डा० वेदी राम जी शर्मा, डा० हुकुम चन्द जी भल्ला, ला इन्द्रसेन जी, ला. भीमसेन जी एडवोकेट आदि नगर के गण्य मान्य सज्जन पधारे थे। सब ने वर महोदय का पुष्पो की वर्षा से शुभाशीः दी। विवाह संस्कार समारोह से सम्पन्न हो गया। इस शुभावसर पर श्री प्रिंसिपल युगल किशोर जी ने सभा के वेद प्रचार मे एक सौ एक रुपए दान दिए। सारा दान ५०१ रु. दिया। भिन्न-भिन्न सस्थाओं को मिला। ३० रुपए मार्ग व्यय मिला। नवदम्पति व सारे परिवार को बधाई।

सभा परिवार का प्रेमी

(पृष्ठ तीन का शेष)

दर्शन होते हैं। युवक वर्ग किस तरफ भागा जा रहा है। नैतिकता का लोप होता जाता है। धर्म के प्रति मानव समुदाय की रुचि कम ही कम होती जाती है। सभा के इन कार्यो के लिए धन की कितनी आवश्यकता है। अर्थ के बिना तो कोई भी काम आगे नही चल सकता। ऐसे और भी कार्य करने हैं। जिन पर सभा के प्रेमी प्रतिनिधियो ने गम्भीरता से विचार करना होगा।

सभा के सारे पधारने वाले मान्य प्रतिनिधियो से हम प्रार्थना करते हैं कि सभा रूपी अपने इस महान् केन्द्र को हर प्रकार की पूरी शक्ति लगा कर सहायता करें। प्रत्येक प्रतिनिधि इस वर्ष सभा के लिए अधिक से अधिक सहयोगी बनें। जितना भी सभा का यह केन्द्र भरपूर होता जायेगा, उतना-उतना वेद प्रचार का महान् मिशन फैलता जायेगा। आज प्रचार की बडी भारी आवश्यकता है। सारे प्रेमी मान्य सज्जनो को अपनी सभा के लिए जोर-शोर से सहयोग देना है।—स०

★ परमेश्वर से नाता जुड जाने पर यह ससार रूपी कारागार ऐश्वर्य पूर्ण समृद्ध राज्य बन जाता है।

सेना सम्वाद

सैनिक स्कूल

सैनिक स्कूलो से राष्ट्रीय रक्षा अकादमी मे भर्ती होने वाले लड़कों की सख्या लगातार बढ रही है। १९६६ मे यह संख्या ९८ थी तथा १९६८ मे बढ़कर १६८ हो गई।

सैनिक स्कूलो मे विद्यार्थियो को लोक सेवा आयोग द्वारा राष्ट्रीय रक्षा अकादमी मे प्रवेश के लिए ली जाने वाली परीक्षा के लिए शिक्षा दी जाती है। अकादमी में प्रतिवर्ष ५०० उम्मीदवारो को प्रवेश दिया जाता है तथा सैनिक स्कूलो के विद्यार्थियो को प्रवेश पाने के लिए अन्य विद्यालयो के छात्रो से प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है।

इस समय देश में कुल १५ सैनिक स्कूल हैं। ये स्कूल आध्र प्रदेश, असम, गुजरात, बिहार, हरियाणा, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मैसूर, उड़ीसा, पजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बगाल मे हैं।

इस वर्ष जनवरी मे विभिन्न सैनिक स्कूलो में ५२८५ विद्यार्थी थे।

संक्षिप्त समाचार

प्रधान मन्त्री श्रीमती इदिरा-गाधी ने १९ फरवरी को लोकसभा मे बताया कि चौथी योजना का मसौदा लगभग तैयार हो चुका है तथा जल्दी ही राष्ट्रीय विकास परिषद के सम्मुख पेश कर दिया जाएगा।

१९६७-६८ के दौरान सबसे कम रेल दुर्घटनाएं हुई। १९६५-६६ मे ६०१७ तथा १९६६-६७ मे ५८८९ रेल दुर्घटनाए हुईं, जबकि १९६७-६८ मे यह सख्या केवल ५५०२ थी।

शीघ्र ही नई दिल्ली और हावड़ा के बीच राजधानी एक्सप्रेस चलाने का प्रस्ताव है। यह सप्ताह मे दो बार चलेगी और १८ घंटे से कम मे १,४४५ किलोमीटर का फासला तय करेगी।

केन्द्रीय सिचाई तथा बिजली मन्त्रालय मे दामोदर घाटी निगम के १९६८-६९ के पूजी गत खर्च मे भारत सरकार के हिस्से के तौर पर ७० लाख रु० की राशि स्वीकृत की है।

सिंचाई तथा बिजली मत्रालय ने आध्र प्रदेश तुगभद्रा परियोजना को ऊंचे स्तर वाली नहर योजना के दूसरे चरण में (१९६८—६९) में होने वाले कार्य के लिए ५३ लाख रु० का ऋण स्वीकृत किया है।

केन्द्रीय पेट्रो—रसायन तथा खान और धातु मत्री डा. त्रिगुण सेन ने १८ फरवरी को राज्य सभा मे बताया कि देश मे मिट्टी के तेल का उत्पादन बढ़ता रहा है तथा अनुमान है कि १९६९ मे २६ लाख टन से अधिक का उत्पादन होगा।

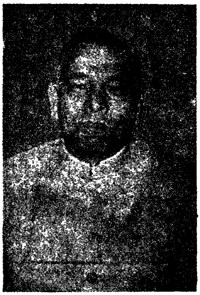
दीक्षान्त समारोह

कादियां में

डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल कादियां ने १७-२-६९ को दीक्षान्त समारोहवर्ग धूमधाम से मनाया। दसवीं तथा ग्यारहवी श्रेणी के विद्यार्थियो ने एक बृहत यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के पुरोहित आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक पं० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री थे। यज्ञ के पश्चात् सम्बन्धित अध्यापक महानुभावों ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया। स्कूल के आचार्य श्री देशराज जी भाटिया ने आशीर्वाद देते कहा कि परीक्षा भवन में जा कर ईमानदारी से परीक्षा देना। नकल से नहीं अकल से काम लेना। नकल करना महा-पाप है। श्री० शास्त्री जी ने युवकों को अग्नि से तुलना देते हुए कहा कि युवक मे तेज, ओज और प्रकाश की जरूरत है। आर्य संस्थाओं के विद्यार्थी अग्नि की तरह ससार से अन्धकार का नाश करते हैं। आशीर्वाद के बाद पुरोहित जी ने विद्यार्थियों को दीक्षान्त सूत्र बांधे। इसके उपरान्त दशम श्रेणी ने स्टाफ तथा ग्यारहवीं श्रेणी को फीस्ट दी। इसी प्रकार ९—२—६९ को वृहत् यज्ञ के बाद ८ वीं श्रेणी को आशीर्वाद दिया गया था। आठवी श्रेणी के विद्यार्थियो ने तथा दशम ए के छात्रों ने एक बड़ी दरी स्कूल को दक्षिणा के रूप मे भेंट की। इस समारोह का विद्यार्थियो पर विशेष प्रभाव पड़ा।

सेठ फतेह चन्द भी गए

आर्य समाज हिसार हरयाणा में बड़ी ही प्रसिद्ध समाज है। सभा के समाजो के परिवार मे इस का बडा हो महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रचार की दृष्टि से यह समाज कार्य क्षेत्र में सदा आगे रहती है। अपना दयानन्द कालेज है, स्कूल है तथा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय है। समाज का बड़ा भारी क्षेत्र है। इसका कारण यह है कि यहा के मान्य सज्जनो का हर प्रकार का बडा सहयोग मिलता रहता है। सभा के साथ जिन विशिष्ट महारथियों का विशेष प्रेम, सहयोग है।



उनमें सेठ फतेह चन्द जी का स्थान बहुत ऊंचा है। उनका सारा ही परिवार समाज के रग में रंगा है। सारे हिसार में मान्य सेठ जी के जीवन की बड़ी छाप है। कोई भी यहा की ऐसी सस्था नही है जिसके बनाने मे और ऊंचा ले जाने में इनका हाथ न हो। यहां का शानदार स्कूल, दयानन्द कालेज, ब्राह्म विद्यालय, पुत्री पाठशाला तथा अन्य अपनी संस्थाओ के निर्माण मे सेठ जी का बहुत बड़ा हाथ है। प्रधान के रूप मे इनका नेतृत्व बड़ा काम करता रहा है।

सेठ जी के स्वर्गवास का दुःखद समाचार सुन कर सारे आर्यजगत को बड़ा दुःख हुआ है। उन के चले जाने से केवल आर्य समाज हिसार की क्षति नहीं हुई वरन् सारे समाज की भारी हानि हुई है। श्री सेठ जी के जीवन मे आध्यात्मिकता तो कूट कूट कर भरी हुई थी। भक्ति की पुस्तकों का स्वाध्याय करना उन की विशेष रुचि बन गई थी। भक्तिरस के सगीतों से बड़ा चाव रखते थे। उन के धार्मिक विचारो से भरे जीवन की छाप उन के सारे परिवार पर है। उन के योग्य सुपुत्र श्री त्रिलोक चन्द्र जी देहली में रहते हुए आर्य समाज का बड़ा कार्य करते हैं। नया बांस के अधिकारी भी हैं।

अन्य उनके सुपुत्र श्री. जयदेव जी, सहदेव जी आदि समाज के रग में रगे हुये हैं। सारा परिवार ही समाज का परिवार है। श्री. सेठ जी का घर अतिथि सत्कार में अग्रणी है। समाज की संस्थाओं को उनकी ओर से दिया गया दान भी कम नहीं है। दिल खोलकर दान देने में आगे थे। सभा का तो बड़ा ही ध्यान रखते थे। महात्मा आनन्द स्वामी जी का यह परिवार बड़ा भक्त है। सेठ फतहचंद जी के स्वर्गवास पर हार्दिक शोक है सारे परिवार की संवेदना में हम शामिल होकर स्वर्गीय आत्मा को शांति व परिवार को धैर्य देने की प्रभु से प्रार्थना है। स.

स्वा० विवेकानंद के अमेरिका में अनुभव

१. 'ससार भर मे केवल एक ही देश है, जो धर्म को समझ सकता है—वह है भारत, हिन्दू अपनी सम्पूर्ण बुराइयों के बावजूद नीति एवं अध्यात्म में दूसरे राष्ट्रों मे बहुत ऊंचे हैं।'

२. 'एशिया के लोग ससार की सब जातियों में अधिक दानशील हैं, केवल वे सबसे अधिक गरीब हैं। हमारी जाति की अपेक्षा पाश्चात्य देशवासी अधिक कंजूस हैं।'

३. शरीर ही अमेरिकनों का धर्म है। उसी को मांजते-धोते हैं, उसी पर सारा ध्यान लगाते हैं।...ये भले आदमी, दयालु और सत्यवादी हैं। सब अच्छा है, परन्तु 'भोग' ही इनके भगवान हैं, जहां धन की नदी, रूप की तरंग, विद्या की वीचि एवं विलास का जमघट है।

४. इस देश की नारियों को देख कर मेरे तो होश उड़ गए हैं। मुझे, बच्चे की तरह घर-बाहर, दूकान-बाजार में लिए फिरती हैं। सब कार्य करती हैं। मैं तो उस का चौथाई हिस्सा भी नहीं कर सकता। ये रूप में लक्ष्मी और गुण में सरस्वती हैं—ये साक्षात् जगदम्बा हैं।"

राजेश गुप्ता,

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (१)

(सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी. डी. बी. कालेज, गोरखपुर)

श्री सुरेश चन्द्र वेदालंकार की "तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः" शीर्षक लेख माला प्रकाशित हो रही है। इसमें प्रभु के गुणों का उल्लेख करते हुए भावपूर्ण शब्दों में प्रभु भक्ति की प्रेरणा दी गई है। यह लेखमाला नियमित रूप से प्रकाशित होगी। इसमें चार-पांच लेख होंगे।

—संपादक

यो भूतंच भव्यंच,
सर्वं यश्चाधि तिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं,
तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।

अथर्व १०-८-१.

(यः) जो प्रभु (भूत) भूतकाल (च) और (भव्यं) भविष्यत काल का (अधितिष्ठति) स्वामी है (यश्च) और जो (सर्वं अधितिष्ठति) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वामी है अर्थात जो नित्य और सर्व व्यापक है। (यस्य च स्वः) और जिसका आनन्द (केवलं) विशुद्ध अर्थात् द्वन्द्वातीत है (तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः) उस सर्वतो महान ब्रह्म को नमस्कार है।

वेद में समय का अधिष्ठाता परमेश्वर को माना गया है। एक दूसरे मंत्र में अथर्ववेद ११-७-२० में आया है:—

अर्धमासाश्च मासाश्चार्तवा ऋतुभिः सह। उच्छिष्टे घोषिणीरापः स्तनयित्नुः श्रुतिर्मही।

अर्थात् (अर्धमासाः च मासाः च आर्तवः ऋतुभिः सह) अर्धमास, मास, ऋतुओं के साथ ऋतु सम्बन्धी पदार्थ (घोषणी आपः) शब्द करने वाला जल (स्तनयित्नुः) मेघ गर्जना (श्रुतिः) सुनाई देने वाली वाणी (मही) पृथ्वी अथवा (मही श्रुतिः) पूज्य वेद वाणी यह सब (उच्छिष्ट) परमात्मा के अन्दर हैं।

अथर्ववेद के स्कम्भसूक्त १०।७।९ मंत्र में प्रश्न किया गया है कि भूतकाल में परमात्मा का जिस प्रकार अनुप्रवेश होता था वैसा ही भविष्य काल में होगा या नहीं? तथा एक ही पदार्थ को सहस्रधा विभक्त करने पर उसके प्रत्येक अंश में वह परमात्मा प्रविष्ट होता है या नहीं? यह प्रश्न का भाव है और इसका उत्तर देते हुए कहा गया है कि वह सर्वत्र एक जैसा व्यापक है।

मन्त्र है:—

कियता स्कम्भः प्र विवेश भूतं
कियद् भविष्यदन्वाशयेऽस्य।
एकं यदङ्गमकृणोत् सहस्रधा कियता
स्कम्भः प्र विवेश तत्र।

(कियता भूतम्) कहां तक भूत कालीन सृष्टि में (स्कम्भः प्रविवेश) सर्वाधार आत्मा ने प्रवेश किया था (कियत् भविष्यति) कितनी भविष्य काल की सृष्टि (अस्य अनु आशये) इसके साथ रहेगी। (यत् एक अङ्गम्) जिस एक अंग को (सहस्रधा अकृणोत्) सहस्र प्रकारों से विभक्त किया करता है (तत्र) उसमें वह (स्कम्भः) आधार स्तम्भ (कियता प्रविवेश) कहां तक प्रविष्ट होता है।

अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर काल का स्वामी है, नियन्त्रक है। उसे भूत, भविष्यत्, वर्तमान का पूरा-पूरा ज्ञान है।

भूतकाल का स्वामी होने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर अनन्त-काल से है और उसने भूतकाल मे इस संसार का निर्माण किया, इसे उसने बनाया, पालन किया और इसका संचालन किया। ब्रह्माण्ड की सूक्ष्म अवस्था से पूर्व ब्रह्माण्ड अव्याकृत अवस्था मे होता है, अर्थात् प्रकृति की अपनी कारणावस्था में होता है। इस अव्याकृत अवस्था का नियामक होने के कारण परमात्मा का नाम ईश्वर है। परमात्मा अपना ईशन् (ईश्+वर) अर्थात् नियमन का कार्य मुख्य रूप से इस आकाभूत अवस्था द्वारा करता है। जगत के मूलकारण में लगी हुई परमात्मा की ईशन शक्ति ही मूलकारण की परिवत अवस्थाओं में भी ईशन का काम दे रही है। जिस प्रकार मशीन के मुख्य पुर्जे में गति के देने से समग्र मशीन गति में हो जाती है इसी प्रकार मूलकारण मे प्रेरणा देने वाली ईशन शक्ति ही सूक्ष्म तथा स्थूल जगत मे भी ईशन का कार्य कर रही है। इस प्रकार ईशन् शक्ति का मुख्य सम्बन्ध चूंकि मूलकारण के साथ हुआ करता है तथा कार्यों में ईशन शक्ति का प्रभाव मूल कारण के द्वारा आया करता है। इसलिए जगत मे मूल कारण का नियामक होने के कारण, परमात्मा को ईश्वर (ईशन शक्ति वाला) कहा जाता है। और इसी कारण उसे भूत का अधिष्ठाता भी माना गया है। उसने अपनी इसी शक्ति से विशाल विश्व का निर्माण किया है। उसका विश्व कितना मनोरञ्जक है। जरा आकाश में नजर उठाकर देखिए रात को जो आकाश गंगा दिखाई देती है इसी मे ११ अरब सितारे चमक रहे हैं। इस समय तक दो अरब सौर मंडल देखे जा चुके हैं, और एक सौर मंडल मे जैसे ही सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी तथा अन्य नक्षत्र तथा तारा मंडल है जैसे हमारे सौर मंडल में है। हम जिस पृथ्वी पर खड़े हैं, वह हम से कितनी बड़ी है परन्तु यह पृथ्वी सूर्य से १३ लाख गुनी छोटी है और यह सूर्य अगस्त्य तारा से एक करोड़ गुना छोटा है और ज्येष्ठा उस अगस्त्य से कई करोड़ गुना बड़ा है। अभी महाज्येष्ठा, परम ज्येष्ठा आदि न जाने कितने नक्षत्र और ग्रह इस ब्रह्माण्ड मे है। आकाश गंगा के तारों की गणना करने का प्राचीन ज्योतिषियों ने प्रयत्न किया था, पता नहीं तारे वे गिन सके या नही परन्तु उस को परिधि का पता लगाया और उस की व्यास कितने मील है यह जानने के लिए १७६३ के आगे १६ बिन्दु लगाने होंगे जिसकी गणना नहीं हो सकती। इसी प्रकार केवल हमारी सृष्टि ही नहीं न जाने कितनी सृष्टियां प्रतिदिन बनती और उजड़ती रहती हैं। आज कल के वैज्ञानिकों ने हमारी पृथ्वी से १४७ के आगे १९ बिन्दु मील दूर प्रकृति की वह अवस्था देखी है जो विकृत हो कर रूप धारण करने लगती है और इन सम्पूर्ण भूत और भविष्यत् सृष्टियों का अधिष्ठाता वह ब्रह्म है जिस की नन्ही सी सामर्थ्य यह सब कार्य करा रही है और शेष उस के तीन भागों का तो पता ही नहीं। "पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि" यजु ३१—३८। बालकों की बात क्या बड़े-बड़े बुद्धिमान् प्रभु को अचरज भरी सृष्टि को देख कर चक्कर में पड़ जाते हैं। गरीब दास कहते हैं

साहिब तेरी साहिबी,
कहा कहूं करतार,
पलक-पलक की दीठि,
मैं पूर्ण ब्रह्म हमार।

मेरे पूर्ण ब्रह्म स्वामी, क्या कहूं तेरी महामहिमा को! धन्य! हर पलक और हर नजर में तेरा दर्शन मिल रहा है।

कबीर ने कहा है:—

खालिक खलक, खलिक में खालक,
सब घट रह्या समाई।

अजब रहस्य है! खालिक में यह सारा खलक समाया हुआ है और खलक में मेरा खालिक हमें तो हर घर में यही मौला नजर आ रहा है। परमेश्वर नित्य है। सर्वव्यापक है और आनन्द स्वरूप है। उसके आनन्द स्वरूप का वर्णन करते हुए यजुर्वेद ३६.५ में आया है:—

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः।
दृढा चिदारुजे वसु॥

(मदानां मंहिष्ठः) आनन्द आर्यों में अत्यन्त पूजनीय (सत्यः) सज्जन हितैषी, त्रिकालाबाधातीत सत्स्वरूप (कः) आनन्द स्वरूप परमेश्वर (त्वा) तुझ को (मत्सत्) आनन्द युक्त करता है। वह (चित्) चित्स्वरूप ज्ञानी परमेश्वर (आरुजे) दुःख पाने वाले जीव को (दृढा) दृढ अर्थात् शीघ्र लुप्त न होने वाला (वसु) मोक्ष रूप धन देता है।

सचमुच सब कालों मे सब से श्रेष्ठ, सबसे विलक्षण ईश्वर कल्याण कारक रक्षा के द्वारा और अपनी आनन्ददायक महाशक्ति के तथा बारबार कर्म करने की सामर्थ्य के साथ हम सब का मित्र होता है। अर्थात् मित्र के समान हम सब का भला करता है। वह इतना हित-कारी कार्य करता है कि उसकी कोई तुलना नही। हम नहीं समझ पाते पर वह हमारे लिए आनन्द का मार्ग खोलता रहता है। हमें कष्ट देने मे उसका यही भाव रहता है। श्री पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज की सुनी हुई एक विख्यात कथा सुनाता हूं—

एक राजा मन्त्री के साथ जंगल में शिकार खेलने गया। जंगल मे झाड़ियों मे उसके वस्त्र उलझ गए। राजा निकालने लगा तो उसके हाथ कांटे चुभ गए और हाथ में बड़ा घाव हो गया। मन्त्री ने उसके हाथ में पट्टी बांधते हुए कहा, 'ईश्वर जो करता है अच्छा करता है।' यह सुनकर राजा चिढ़ा और उसने तत्काल मंत्री को वहां से हटा दिया। मंत्री ने वहां से जाते हुए फिर कहा ईश्वर जो करता है अच्छा करता है।' और चला गया। राजा अकेला चल पड़ा और वह डाकुओं के प्रदेश में पहुंच गया। डाकू देवी को प्रसन्न करने के लिए नरबलि के लिए किसी की खोज

(शेष पृष्ठ ८ पर)

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे

(पृष्ठ ७ का शेष)

में ने उसे देख कर उन्हें पकड़ लिया। बलि चढ़ाने से पूर्व राजा को स्नान कराया जाने लगा तो पुजारी ने राजा की कटी उंगली को देखकर कहा 'अरे, यह तो अंग-भंग है, इसकी बलि नहीं चढ़ाई जा सकती।' वह छोड़ दिया गया। राजा अपने राज्य में पहुंचा और रास्ते में सोचता गया कि मेरे हाथ में घाव लगने पर मंत्री ने जो यह कहा था कि ईश्वर जो करता है अच्छा करता है।' यह सत्य ही था। यदि घाव यह घाव न होता तो मैं वध के यहां पहुंचा दिया गया होता। अब उसने मंत्री को बुलवाया और कहा [illegible] मेरी अंगुली कटने पर [illegible] [illegible] की ओर [illegible] की बात कही थी, मैं ही अल्प बुद्धि समझ न पाया, इसी बात के कारण मौत के मुंह से निकल कर आया हूं और उसने सब घटना सुनाई और कहा मन्त्रिन्! मेरे घायल होने से मेरा भला हुआ परन्तु मैंने तुम्हें अपमानित कर जब तुम्हें निकाला और तब भी तुम ने यही कहा तब मैं प्रभु ने आप की क्या भलाई की?' मन्त्री ने मुस्कराते हुए कहा 'महाराज, यह तो और भी अधिक अच्छा हुआ। यदि आप मुझे न हटाते तो आप तो घायल होने से बच जाते और मैं मृत्यु का ग्रास बन जाता।' इस लिए प्रभु स्वयं आनन्द का भण्डार है और सब को आनन्दित करने के उपाय करता रहता है। इस लिए आइए उस ज्येष्ठ और महान् ब्रह्म को नमस्कार करें। उसके चरणों में आत्म समर्पण करें। जो अपने को उस ब्रह्म के लिए अर्पण कर देता है उसके मुख से दादू दयाल के शब्दों में अनायास निकल पड़ता है—

तुमसों राता तुम सो माता
तुम सो लागा रंग रे खालिक,
तुम सों खेला, तुम सों मेला
तुम सों प्रेम स्नेह रे खालिक।
तुमसों लेणा, तुम सो देणा
तुम ही सों रत दोइ के खालिक
खालिक मेरा, आशिक तेरा,
दादू अनत जादू रे खालिक।

मेरे सरजानहार, तुम्हीं में अनुरक्त हूं और तुम्हीं में उन्मत्त, और रंग भी तुम्हारा ही लगा हुआ है। तुम्हारे साथ मेरा [illegible] मिलता हूं और तुम्हीं से मेरा [illegible] स्नेह है। लेना भी तुम्हीं से और व्यवहार, तुम्हीं से मेरा अनुराग है। मेरे खालिक, मेरे [illegible]। मैं तो एक तुम्हीं पर आशिक हूं। [illegible] बनाने, प्रेम करने से और कहां जाऊं?

स्वामी [illegible] और [illegible] महाराज ने [illegible] को [illegible] के लिए अर्पित कर दिया। आइए, आज हम भी उनके चरणों पर अपना [illegible] करें। और निम्नलिखित इस मन्त्र का [illegible] बन जाएं—

भूत भविष्यत् वर्तमान का,
जो प्रभु है अन्तर्यामी।
[illegible] के [illegible],

[illegible]

[illegible] सिद्ध होता है कि हमारा नाम हिन्दू नहीं है अपितु आर्य था। विदेशियों के प्रभाव में [illegible] के [illegible] हमारा नाम हिन्दू और हमारे देश आर्यावर्त का नाम हिन्दुस्तान पड़ गया।

हमारे कुछ [illegible] भाई भी अपनी [illegible] हिन्दू [illegible] में [illegible]

जो [illegible] का है स्वामी।
[illegible] आनन्द [illegible] है,
जो कैवल्य रूप [illegible]।
उस महान् परमेश्वर को है,
[illegible]।
(क्रमशः)

[illegible] है। [illegible] कोई [illegible] [illegible] हैं [illegible] यह कहना है कि हिन्दू [illegible] के [illegible] रहने वाले आर्यों को ईरान निवासियों ने यहूदी हिन्दू [illegible] पुकारा और फ़ारसी भाषा में "स" का उच्चारण "ह" होता है। [illegible] [illegible] आर्यों का नाम हिन्दू पड़ गया। परन्तु यदि [illegible] सत्य होता तो [illegible] भी हिन्द [illegible] और हिन्द [illegible] के लिए [illegible] के नाम से विख्यात होते। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इसीलिए हमारा नाम हिन्दू न हो कर आर्य लोगों का [illegible] नाम आर्य ही [illegible] [illegible] है। [illegible] यह [illegible] का [illegible] किया है कि हमारा [illegible] नाम आर्य ही है। हिन्दू नहीं।

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१	सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)	२०-००
२	वैदिक गुरुकुल [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी)	१०-००
३	चन्द्रगुप्त मौर्य	०-५०
४	अमृत वाणी	० ५०
५	ऋषि सन्देश	०.२०
६	दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी)	१ ००
७.	[illegible]	१.२५
८	ऋग्वेद शतक	० ५०
९.	यजुर्वेद शतक	[illegible]
१०	अथर्ववेद शतक	[illegible]
११	महात्मा हंसराज-मोडर्न [illegible] निर्माता ले० प्रि० [illegible] शर्मा M.A.(अंग्रेजी में)	१.[illegible]
१२	संध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी	१ ००
१३	Dayanand His Life & Works ले० प्रि० सूर्यभानु जी M A	२ ००
१४	महात्मा हंसराज की जीवनी (ले० आनन्द स्वामी जी महाराज)	१.२५
१५.	प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज)	१ २५
१६	महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.)	१ ००
१७	स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० [illegible] जी M.A.)	०.५०
१८	नवीन प्राचीन [illegible] (ले० स्व० नारायण स्वामी जी)	१.००
१९	[illegible] प्रथम खंड स्वाध्याय ले. वाचस्पति M A	५०
२०	,, ,, द्वितीय ,, ,,	[illegible]
२१	[illegible] (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.)	[illegible]
२२	[illegible] मत आलोचना (ले० स्वामी [illegible] जी) उर्दू में	० ३७
२३	[illegible] समन्वय (ले० बुद्धदेव जी [illegible])	१-२५
२४	[illegible] (ले. आनन्द स्वामी जी)	० ३७
२५	[illegible] (,, ,, ,,)	० ३१
२६	पार्वती (,, ,, ,,)	० २५
२७	Teaching of Ish Upnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A.) अंग्रेजी में	१.२५
२८.	वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा [illegible]	१.५०
२९	जीवन-ज्योति	० ६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वाध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

सूचना

कादिया (गुरदासपुर)।—[illegible] वर्ष देव और आर्य कन्या स्कूल की छात्राओं ने श्री ए. डी. [illegible] मैमोरियल कमेटी की [illegible] धर्म शिक्षा प्रतियोगिता में पांच पारितोषिक प्राप्त किये। [illegible] की छात्रा [illegible] ने पूरी [illegible] में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

[illegible]—आर्य [illegible] कालेज विभाग [illegible] में श्री [illegible] जी हैडमास्टर के प्रयत्नों से आ० स० कालेज विभाग में तीनों समाजों ने ऋषि बोधोत्सव सामूहिक रूप से मनाया। पं. [illegible] जी की प्रधानता में स० कृष्ण आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल तथा आर्य हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित की। महर्षि दयानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित लेख तथा कविताएं हुईं।

[illegible]

[illegible] पत्र व [illegible] रुपये के पारितोषिक दिए।

श्री [illegible]
[illegible]

भूल सुधार

२ मार्च आय जगत् अंक में "अमर शहीद लेखराम" लेख के लेखक श्रीकरनैल सिंह जी" लिखा [illegible] है। आर्य जगत् के साथ उन का [illegible] है। [illegible] से वह इस की सेवा करते रहते हैं।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० देवीराम जी एम.ए. बी.एस.डी. मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्य जगत कार्यालय, महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No P. 1[illegible]

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९ अक ११) ३ चैत्र २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४-१६ मार्च १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

विश्वदेव महा असि

अर्थ –हे विश्व देव ! [illegible] के देव प्रभो ! [illegible] हो ! आप से कोई भी बडा नहीं है।

भाव –इस विश्व में अनेक प्रकार के जड तथा चेतन देवता हैं। अपने अपने स्थान पर सारे ठीक हैं, उपयोगी तथा बड़े हैं। किन्तु सारे चराचर देवों मे भगवान तो साक्षात ही विश्वदेव है। सब के देव हैं अधिदेव हैं महादेव हैं। वही सबसे महान् हैं। इस जगत् मे प्रभुदेव से कोई भी महान् नही है। मानव अभिमान किस बात पर करे। उसके पास है भी क्या ? जो उसे महान् जानता और मानता है, उसके जीवन में भी विश्व-प्रेम की भावना जाग उठती है। प्रभो ! आप महान् हो।—स०

साम वेद से–

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक निर्वाचन

माननीय प्रि. भीमसेन जी बहल, एम.एस.सी.

सर्वसम्मति से पुन सभा प्रधान निर्वाचित हुए



आर्यप्रादेशिक सभा पजाब के दिनांक ९ मार्च १९६९ ई० रविवार को आर्यसमाज डी० ए० वी० कालेज चडीगढ़ सैक्टर १० में सम्पन्न वार्षिक अधिवेशन मे सर्वसम्मति से श्री प्रि० भीमसेन जी बहल को प्रधान चुना गया तथा अन्य अधिकारियो एवम अन्तरग सभा, प्रतिष्ठित सदस्यों और सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधियो को मनोनीत करने के भी सभी अधिकार आप को दिए गए। आप ने सभी मान्य प्रतिनिधियो से अधिवेशन में निवेदन किया कि—सभा को उन्नत दिशा में ले जाने के लिए सभी को पूर्ण सहयोग देना आवश्यक है। सभा बड विकट आर्थिक सकट में है। वेद प्रचार के कार्य को भी बढ़ाना है। अत सभी को हृदय खोलकर तन, मन, धन से सभा की सहायता में अग्रसर हो जाना चाहिए।

सुरेन्द्रपाल आर्य
व्यवस्थापक—आर्यजगत

ऋषि दर्शन

बुद्धिपूर्वा वाक्यकृति वेदे

महर्षि कणाद अपने दर्शन वैशेषिक मे वेदो को ईश्वर का ज्ञान मानते हुए एक आवश्यक सूत्र लिखते हैं कि वेदे-वेद मे जितने भी वाक्यकृति –मन्त्र हैं। उन मे जितने भी वाक्य हैं या जितना भी वेदो मे उपदेश है—वह सब बुद्धिपूर्वा ज्ञान के बुद्धि के अनुकूल है। तर्क व युक्ति की कसोटी पर वेद की एक-एक बात पूरी उतरती है। न इसमे सृष्टिक्रम के विपरीत कोई बात है और न ही ज्ञान के विरुद्ध है। प्रत्येक सिद्धान्त सुन्दर है। ज्ञान के अनुकूल है। तर्क सगत है। ईश्वरीय ज्ञान की सबसे बडी यह भी कसोटी है जिस पर वेद उतरता है।

—सम्पादक

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए० पी०एच० डी० (सभा मन्त्री) सम्पादक– त्रिलोकचन्द्र शा[illegible]

आर्य समाज

(सत्यभूषण 'वेदालंकार एम० ए०' नई दिल्ली)

जब भारत की पुण्य भूमि विदेशी दासता की लौह शृंखलाओं में आबद्ध थी, लार्ड मैकाले की शिक्षा योजना से रूप रंग बाह्य शरीर से भारतवासी भारतीय होते हुए भी रक्त से, मन से अंग्रेज बन रहे थे, चारों ओर अज्ञान घोर अन्धकार मे जनता प्रकाश पाने के लिए छट पटा रही थी, शूद्रो और नारियो के अधिकारो का हनन हो रहा था, सती प्रथा के प्रवर्तन से नारी जाति की दुर्दशा हो रही थी, ज्ञान का सूर्य वेद निराशा की मेघ घटा मे विलीन हो रहा था, छूआछूत, जाति भेद का भयकर भूत अट्टहास कर रहा था, पाषाण, पूजा, बहु देवतावाद, पाखण्ड, पोप-लीला आदि कुरीतियो, अन्ध विश्वासो से हिन्दू जाति के सामाजिक जीवन मे गतिरोध उत्पन्न हो रहा था, अनेक मतमतान्तरो, का सम्प्रदायो की तूती बोल रही थी, भूत प्रेत गडतावीज की विचित्र लीला भोले भक्तो को पिशाचनी के समान डकार रही थी राष्ट्रीय एकता का नाम भी न था, जात-पात की बीमारी प्लेग की तरह फैलकर हिन्दू जाति के लाखो लाखो को ईसाइयत के मोहावत में धकेल रही थी। ईसा के पुजारियों और यवन मतावलम्बियो के जहाद के नारो से जल-थल, अम्बर कम्पाय मान हो रहा था। विधवाओ अनाथो की करुण दशा जन-जन के मानस को द्रवित कर रही थी, ऐसे विकट काल मे सच्चिदानन्द-कन्द करुणाकर की अपार कृपा से स० १८८१-१८२५ ई० मे कृशन जी तिवारी के घर बालक मूलशकर का एक अनुपम दैवी शक्ति के रूप मे प्रादुर्भाव हुआ, जिसने बड़ होकर देशोन्नति के विचार से भारत माता को धन-मुक्त करने, कोटि-कोटि पथ-भ्रान्त मानवो को मानवता का पाठ पढाकर एकता का महत्व समझा कर एक सूत्र मे पिरोने राष्ट्रीयता का सिंहनाद कर परतन्त्रता की बेडियो को झकझोर ने अतुल ज्ञान के भडार वेद की कुंजी खोलने दीन हीन सतप्त मानवो को आश्चर्य देने और समाज को रूढ़िवाद, अन्ध विश्वास के गहन-गव से निकाल कर उज्ज्वल भविष्य साकार करने के के लिए आज से लगभग ९४ वर्ष पूर्व भारत की समृद्धिशाली नगरी मुम्बापुरी (बम्बई) मे डा० मानिकचन्द्र की वाटिका में चैत्र सुदी प्रतिपदा वि० स० १९३२, शनिवार तदनुसार ७ एप्रिल, सन् १८७५ ई० को प्रथम आर्य समाज की स्थापना की।

पाठकगण! आप सोचेंगे, प्रश्न करेंगे, कि आर्यसमाज किस चिड़िया का नाम है। आखिर यह है क्या? लो, अब आपके प्रश्न का उत्तर कैसे दू। अब तो भारत के कोने-कोने मे शहरो से लेकर गांवों में आर्यसमाजें स्थापित हो चुकी है। यही नही, अफ्रीका जैसे सुदूर देशो में भी इसकी धाक जम चुकी है। आप जिस शहर या गाव में रहते हैं वहां भी आर्यसमाज स्थापित होगा। फिर आप यह क्यों पूछते हैं हम से जहां उच्च शिखर पर 'ओ३म्' का झंडा लहरा रहा हो, 'कृण्वन्तो विश्व मार्यम्' का सन्देश दिया जा रहा हो चरित्र को सुधारने जाति को उन्नत बनाने की योजना बनाई जा रही हो, गायत्री सन्ध्या—हवन के वेद मन्त्रों का मिल कर पाठ हो रहा हो, नारियो, विधवाओं, अछूतों, अनाथो का उद्धार हो रहा हो ईसाईयत के षड्यन्त्र से, कुचक्र मे, भोले दरिद्र, असहाय हिन्दू जाति के लालो को छुडाने का भगीरथ प्रयास किया जा रहा हो, उस पवित्र मन्दिर की दीवारों पर मोटे अक्षरों मे आप पढ़ेंगे, आर्यसमाज मन्दिर।

अब आप अगले लेख में इस प्रश्न का शास्त्रीय विवेचन पढें।

★ वैराग्य तथा इन्द्रिय दमन के बिना ध्यान तथा समाधि सम्भव नही।

★ इन्द्रियों का दमन कीजिये, मधुर बोलिये, प्रिय बोलिये, सत्य बोलिये, अल्प बोलिए, कटु शब्द कभी भी न बोलिए, यही वाणी का सयम है।

★ बिना साधन किये सिद्धि कहा और कैसे मिले। तैरने के विषय की सैकड़ों पुस्तकें पढ लेने पर भी जब तक पानी में घुसा न जाए, अभ्यास न किया जाय, तैरना नहीं आता। कोरा किताबी ज्ञान अनुपयोगी है। भोग अथवा दान में काम में न आने वाला केवल जमीन में गड़ा हुआ धन व्यर्थ होता है।

एकादश ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) उत्सव टंकारा

इस वर्ष टंकारा में ट्रस्ट के सत्प्रयास में एकादश ऋषि बोधोत्सव खूब धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

इस पवित्र अवसर पर आकर्षक कार्यक्रम नीचे लिखे सम्पन्न हुए।

७ फरवरी से १५ फरवरी तक यजुर्वेद महापारायण यज्ञ श्री मान्य स० आनन्द भिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता में बहुत ही अनुशासन और पवित्र वातावरण में हुआ। इसमे पूर्णाहुति का दिन १५ फरवरी विशेष आकर्षक था। जिसमें नवो दिनो के यजमानों ने पूज्य महात्मा जी से आशीर्वाद और प्रसाद प्राप्त किया।

इस यज्ञ मे उपदेशक महा विद्यालय टंकारा के विद्यार्थियो ने वेद पाठ द्वारा प्रबन्ध द्वारा तथा भजनों द्वारा पूर्ण योगदान दिया। यज्ञ प्रवचनों में आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार-माता आनन्दावती जी तथा मान्य महात्मा जी ने यज्ञ सम्बन्धी विचार उपस्थित किए। कन्या महाविद्यालय के कन्याओं ने यज्ञ मे मन्त्र पाठ और भजनों द्वारा पूर्ण सहयोग दिया।

१५ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन हुआ। आगे कन्या-महाविद्यालय बडोदा की छात्राए प. आनन्द प्रिय जी की अध्यक्षता में थी पीछे उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी तथा अपार जनसमूह था। आर्यसमाज मन्दिर टंकारा ऋषि दयानन्द का जन्म स्थान तथा ऋषि दयानन्द का बोध मन्दिर तीनो स्थानों पर यज्ञाहुतियां दी गईं और तीनों स्थानों की यात्रा के बाद शोभा यात्रा की महालय में समाप्ति हुई।

१३ फरवरी को यज्ञ के अतिरिक्त दोपहर और सायकाल सकीर्तन समाज का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य भाग उपदेशक महाविद्यालय के छात्रो तथा कन्या महाविद्यालय बड़ोदा के छात्राओं का था।

१४ फरवरी को दोपहर के बाद श्लोक पाठ प्रतियोगिता तथा संस्कृत भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

१६ फरवरी को दोपहर के बाद वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

१६ फरवरी को श्री मान्य आर्य भिक्षु जी के कर कमलों द्वारा उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों को प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक वितरण का कार्य किया। दो विद्यार्थियों को सिद्धान्त प्रवेश तथा तीन विद्यार्थियों को सिद्धान्त परिचय का प्रमाण पत्र दिया गया।

पारितोषिक निम्न विद्यार्थियो ने प्राप्त किया।

१—श्री राज कुमार—प्रथम सिद्धात प्रवेश परीक्षा

२—श्री राम सुभगसिंह—प्रथम सिद्धांत परिचय परीक्षा

३—श्री ओ३म प्रकाश प्रथम श्लोक पाठ प्रतियोगिता

४—श्री हरिश्चन्द्र — प्रथम संस्कृत भाषण प्रतियोगिता

५— „ „ —प्रथम वादविवाद प्रतियोगिता

६— „ „ —प्रथम कविता पाठ प्रतियोगिता

इस वर्ष उत्सव मे मान्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी मान्य आर्य भिक्षु जी तथा पं. आनन्द प्रिय जी ने अपने प्रवचनों द्वारा जनता को नया सदेश दिया। श्री जगदीश चन्द्र जी प्रवासी, श्री विश्व प्रेमी जी श्री रघुवीर सिंह जी ने सगीत और भजनों द्वारा विशेष आकर्षण उत्पन्न किया। इन के अतिरिक्त माता आनन्द वती जी, आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार, ब्र. वेद भिक्षु तथा बड़ोदा की कन्याओ ने स्वा दयानन्द जी के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की।

उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियो ने भजनों द्वारा, भाषणों द्वारा उत्सव की सफलता में पूर्ण योगदान दिया।

प्रबन्ध कार्य में ला० दीवानचन्द जी प्रधान, श्री महाराम जी मेहता कार्यकर्ता प्रधान, श्री ओंकार नाथ जी मन्त्री, श्री आनन्द प्रिय जी पू० म० आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार, श्री विजय कुमार प्रभाकर, श्री मगन भाई आदि के मनोरथ परिश्रम और योगदान से उत्सव का सब कार्य पूरी सफलता से सम्पन्न हुआ।

उत्सव पर साढ़े सात हजार के लगभग व्यय आया। जिसके संग्रह का श्रेय मुख्यतया बम्बई सहायक समिति तथा दिल्ली सहायक समिति को है।

★★

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, १६ मार्च, १९६९ [अंक ११

सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर का वार्षिक बजट एवं निर्वाचन अधिवेशन आर्य समाज चण्डीगढ़ डी. ए. वी. कालेज के विशाल हाल में माननीय प्रिंसिपल सोमसेन जी बहल सभा प्रधान जी की प्रधानता में ता. ९ मार्च १९६९ रविवार दो बजे मध्याह्नोत्तर प्रारम्भ हुआ। सर्व प्रथम ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के वेद मन्त्रों का मिल कर उच्चारण किया गया। इस अधिवेशन में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों से १२० के लगभग मान्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि इन में पंजाब, हिमाचल, जम्मू, काश्मीर, हरियाणा तथा देहली प्रान्तों के मान्य सज्जन पधारे हुए थे। दूर-दूर शिमला, योगेन्द्रनगर, गुरदासपुर, फिरोजपुर, अमृतसर, दादरी आदि के भाईयों का सभा प्रेम दर्शनीय था। आर्य जगत के माननीय नेताओं, विख्यात विद्वानों तथा समाजों के अनथक कार्यकर्ताओं के निधन पर शोक-प्रस्ताव पारित किया गया।

सभा के इस विशाल परिवार में ८४ वर्ष के डा. मिलखीराम जी अम्बाला छावनी जैसे सभा के पुराने वृद्ध-महारथी भी मौजूद थे। डी. ए. वी. संस्थाओं के प्रतिष्ठित शिक्षा विशारद प्रिंसिपल, समाजों के अधिकारी, ग्रामों के श्रद्धालु महानुभाव, समाजों के कार्यकर्ता तथा प्रचारक वर्ग भी शामिल था। करनाल के वृद्ध प. विश्वम्भर दत्त जी भी आए थे। सभा के इस विशिष्ट भव्य प्रतिष्ठित परिवार के दर्शन करके चित्त प्रसन्न हो रहा था। सभा के साथ सबका कितना स्नेह है तथा धर्म के साथ कितनी रुचि है—इस बात का परिचय मिल रहा था। किसी भी संस्था के जीवन की यह सबसे बड़ी निशानी है। प्रगति पथ पर आगे बढ़ने के लिए यह एक स्वस्थ परम्परा है। इस सभा का इस बात में मस्तक सदा ही उन्नत है।

माननीय सभा प्रधान जी की ओर से लिखा गया सभा के १९६८ के वार्षिक कार्य के विवरण का प्राक्कथन का भाग सभा मन्त्री डा. वेदीराम जी शर्मा ने पढ़ा, जिस में गत वर्ष के सभा सम्बन्धी नानाविध विस्तृत कार्यों पर भावपूर्ण व तथ्य भरे शब्दों से प्रकाश डाला था। सभा का प्रचार कार्य हो या साहित्य प्रकाशन हो। आर्य जगत् हो या ईसाईयत के बढ़ते प्रवाह को रोकने का काम हो—कोई भी ऐसा आवश्यक कार्य नहीं है जिस का बड़ी सुन्दरता से विवेचन न किया गया हो। यह प्राक्कथन सभा-कार्यों का एक प्रकार का वर्णन है जिस के द्वारा सभा के सारे वर्ष के विविध कार्यों को भली-भान्ति आंका जा सकता है।

इसके बाद सभा की आर्थिक अवस्था पर विचार आरम्भ हुआ। अनेक सभा के हितैषियों ने इसके बारे में अपने-अपने ठोस सुझाव दिये। इन में श्री. गौरीशंकर जी देहली, ज्ञानी पिण्डीदास जी अमृतसर, भाई हरगोबिन्दसिंह जी यमुनानगर, श्री. चौहराम जी करनाल, डा० मिलखी राम जी अम्बाला, प्रि० मेलाराम जी बर्क, चौधरी बलवीरसिंह जी एम० एल० ए० होशयारपुर, प्रि० ओम् प्रकाश जी बग्गा, श्री राजेन्द्र जी, श्री प्यारेलाल जी कपिल खन्ना आदि ने बड़े ही उत्तम सुझाव दिये। आदरणीय सभा प्रधान जी ने इन पर अपनी सम्मति व विचार प्रकट किए। ये विचार युक्तियुक्त तथा ठोस थे। सारी रिपोर्ट व सारा वार्षिक बजट सर्व-सम्मति से पारित हो गया। सभा के प्रचारक प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री के चार महीने से साधुआश्रम होशयारपुर से लापता युवक पुत्र दयानन्द एम० ए० की खोज के लिए भी और प्रयत्न करने की बात कही गई।

इसके बाद दो आवश्यक प्रस्तावों को प्रस्तुत तथा सर्व-सम्मति से अनुमोदित किया गया। एक में तो पंजाब में हिन्दी भाषा की स्थिति की ओर ध्यान दिलाया गया तथा दूसरे में जालन्धर में दयानन्द यूनिवर्सिटी स्थापित करने का आवश्यक जोर दिया गया। इस के लिए विशेष कार्य करने की योजना तैयार करने की बात कही गई। दोनों प्रस्ताव पूर्ण रूप से अंगीकार किए गए हैं। सभा के सदन में बड़ा ही उत्साह व उल्लास भरा था। इस बारे में माननीय सभा प्रधानजी ने पूरे विस्तार से प्रकाश डालते हुए सारी बात साफ कर दी।

अन्त में प्रिंसिपल सोमसेन जी बहल का नाम सभा के प्रधानपद के लिए प्रस्तुत हुआ तथा सर्व सम्मति से तालियों की गड़गड़ाहट की हर्ष ध्वनि के साथ स्वीकार किया गया। निर्वाचन कार्य तो एक मिनट में ही सम्पन्न हो गया। इस सभा की पुरानी पवित्र इस सर्व सम्मत निर्वाचन की परिपाटी से सब का मस्तक मान से ऊंचा हो गया। बाकी सर्वाधिकार भी मान्यवर प्रधान जी को ही सर्व सम्मति से सौंपा गया। अन्त में आदरणीय प्रधान जी प्रभावशाली शब्दों में सभा को इस वर्ष हर प्रकार से ऊंचा करने के लिए सब के सहयोग का निवेदन किया। शांति-पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। बाद में बहुत ही उत्तम जलपान का समाज की ओर से प्रबन्ध था।

समाज की ओर से, चण्डीगढ़ डी. ए. वी कालेज के प्रिंसिपल श्री त्रिलोकी नाथ जी के नेतृत्व में आए हुए सारे प्रतिनिधियों के निवास तथा भोजनादि का बड़ा ही बढ़िया प्रबन्ध किया गया था। सारे प्रबन्ध की स्वयं ही देख रेख कर रहे थे। इस सुप्रबन्ध के लिए सब की ओर से धन्यवाद किया गया। सभा परिवार के तमाम सदस्यों को बहुत बधाई।

त्रिलोक चन्द्र

समाज का स्थापना दिवस

आर्यसमाज का स्थापना दिवस आ गया है। यह समाज का जन्म-दिन है। यह शुभ दिन मनाते हुए कितनी प्रसन्नता होगी। आर्यसमाज ने अपने जीवन का एक और वर्ष बिता दिया। यह पवित्र पर्व है जिसे धूमधाम से मनाया है। इस दिन समाज के सारे प्रेमियों को देखना चाहिए कि हमारा यह प्यारा आर्य-समाज अपने कार्य पथ पर कितना आगे बढ़ा है? जिस विशाल कार्य के लिए इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने की थी—क्या वह वैदिक धर्म के महान् मिशन का कार्य ठीक रूप से हो रहा है या नहीं? इस दिन सबको बैठकर जांच-पड़ताल करनी चाहिए। जन्म-दिवस जीवन की प्रगति का एक प्रतीक होता है। इस दिन बैठकर प्रत्येक अपने जीवन में वेद प्रचार के कार्य को सफल लेवे। वैदिक धर्म की सेवा का व्रत धारण करे। उत्तम साहित्य वितरण किया जाए। जितने भी आर्य परिवार व संस्थाएं हैं—वे इस दिवस पर दीपमाला करें ताकि दूसरों को आर्य समाज के जन्म दिवस का ज्ञान हो सके। स्थान-स्थान पर सभाएं हों। उत्तम-उत्तम प्रवचनों व संगीतों का कार्यक्रम रखा जाए। हम सारे ही आर्यजगत से निवेदन करेंगे कि वह इस दिन को पूरे समारोह से मनाने का आयोजन करे। इस दिन समाज की शक्ति, संगठन, प्रेम, उत्साह तथा विश्वजनीन भावना का सबको परिचय मिल सके।

★ इस मार्ग में सब से बड़ा विघ्न है अपने साधन का अभिमान, अभिमान वश मनुष्य दूसरों का अपमान कर बैठता है। अपने से दूसरों को छोटा समझता है, यही सब से बड़ा अपराध है। इस से हमारा किया कराया सब नष्ट हो जाता है।

★ विश्वास रखना चाहिये कि प्रभु हमारी रक्षा करेंगे ही।

आर्य बन्धु ध्यान दें

कई महीनों से पूज्य पण्डित त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री के सुपुत्र श्री दयानन्द आर्य का कोई पता नहीं चला। वह साधु आश्रम हुशियारपुर में कार्य करते थे। मेरी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह इधर ध्यान दें तथा इस तथ्य की जानकारी प्राप्त करने के लिए बल लगावें, कि साधु आश्रम में उनके साथ क्या बीती? क्या वह वहां प्रसन्न थे या नहीं? कब, किन तिथियों को कैसे वहां से गए थी या नहीं? आर्य सभाओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए। यह केवल मात्र पूज्य शास्त्री जी का कार्य नहीं है अपितु हम सब का है। यदि सब लोग मिल कर साधु आश्रम से पड़ताल करें तो कुछ न कुछ सुराग मिलेगा ही। क्या कारण है कि नेता वहां शिष्टमण्डल बना कर नहीं जा रहे? न ही नेताओं का शिष्टमण्डल किसी विशेष सरकारी पदाधिकारी से मिला है। क्या कोई इधर ध्यान देगा?

रामप्रकाश, चण्डीगढ़

सभा के वार्षिक कार्य विवरगा का प्राक्कथन

(सभा प्रधान माननीय प्रिंसिपल भोमसेन जी बहल द्वारा)

मान्यवर बन्धुओ !

जगन्नियन्ता जगदीश्वर की अपार कृपा और आप लोगों के सहयोग से वर्ष भर सेवा करने के उपरात आज हमें पुन: एकत्र बैठकर विचार करने का अवसर प्राप्त हुआ है। गत वर्ष हम भारत की राजधानी दिल्ली मे मिले थे। वहा हमने जो निश्चय किये थे उन्हीं के अनुसार देव दयानन्द द्वारा निर्देशित कार्य को आगे ले चलने के लिए और भूमि पजाब की इस सुन्दर सुरम्य व नवीन राजधानी चण्डीगढ के स्थान पर आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। हमे यह देख कर भी अत्यन्त प्रसन्नता है कि यहा की डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओ ने भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल सैक्टर ८, डी० ए० वी० माडल स्कूल सैक्टर १५ व ८, श्री मेहरचन्द महाजन डी० ए० वी० महिला कालेज सैक्टर ३६, और डी० ए० वी० कालेज १० सैक्टर अपनी शानदार मर्यादाओं की स्थापना करते हुए आर्यों के यश और कीर्ति को चार चाद लगा रहे हैं।

शिक्षण सस्थाओ के साथ-साथ चण्डीगढ के आर्य-बन्धुओं और आर्य बहिनो ने वेद प्रचारार्थ अपने आर्य भवन निर्माण कर लिए है। आर्य प्रादेशिक प्र, नि. सभा का मस्तक गर्व से उन्नत हो जाता है जबकि इस सभा से सम्बद्ध यहा आर्य समाजो की सख्या एक से बढ कर दो हो रही है। दोनो ही समाज अपने-अपने सत्संग मन्दिर भी निर्माण करने में दत्तचित्त है। श्री प० आसूराम जी पुरोहित और पूर्व प्रिंसिपल श्री हरीराम जी के प्रयास से सैक्टर ८ में तो मन्दिर कार्य लगभग सम्पूर्ण होने की दिशा मे भी पहुच गया है। वास्तव मे चण्डीगढ की इन सभी प्रगतियो मे स्वर्गीय जस्टिस मेहरचन्द जी महाजन और प० नानक चन्द जी बैरिस्टर जैसे तेजस्वी और लगनशील आर्य नेताओ की ही तपस्या दिखाई दे रही है। उन्ही के पद-चिन्हो पर चलते हुए आज श्री जस्टिस दया कृष्णजी महाजन, जस्टिस श्री टेकचन्द जी, श्री सतपाल जी मैनी **Retd Commissioner** श्री भीमसेन जी सच्चर, श्री लाला सूर्यभानु जी, उपकुलपति, प्रि० त्रिलोकी नाथ जी, श्री आसूराम जी, श्रीमती माता देवकी देवी जी, श्रीमती विद्यावतीजी चोपडा, श्रीमती मोहनी चौधरी आदि आर्य समाज के कार्य को आगे ले जाने में लीन हैं।

मैं चण्डीगढ निवासी इन सभी भाई-बहिनो का हृदय से आभारी हू कि उन्होंने सभा के इस अधिवेशन का निमन्त्रण देकर पजाब के आर्यों को मिल बैठकर अपनी समस्याओ पर विचार करने का अवसर प्रदान किया। परम पिता परमात्मा आप सभी को इस प्रकार का उत्साह व समाज कार्यों के प्रति पूर्ण निष्ठावान बने रहने की सामर्थ्य प्रदान करता रहे।

आर्य समाज की कतिपय विभूतियों का देहावसान

वर्ष १९६८ के अन्तर्गत आर्य समाज की कुछ विभूतिया प्रभु इच्छा में लीन होकर हम से सदा के लिए पृथक हो गई। इनके देहावसान से आर्य समाज के कार्य को जो क्षति हुई है वह पूर्ण होनी अत्यन्त कठिन है। इन में से—

वैदिक सिद्धान्तो के महान गवेषक, वेद, इतिहास और भाषा विज्ञान के महान पंडित श्री प० भगवद्दत्त जी का दिल्ली मे लम्बी बीमारी के पश्चात देहात हो गया। पूज्य पण्डित जी डी. ए. वी. आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं। डी. ए. वी. कालेज लाहौर के अनुसन्धान विभाग मे वर्षों तक कार्य करते रहे हैं। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रचारक भी रहे। पूज्य पण्डित जी की सेवाए देश विदेश सभी जगह कभी भी भुलाई जा सकेगी।

इसी प्रकार श्री प० गगा प्रसाद जी उपाध्याय, स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज, स्वामी सुधानन्द जी, स्वामी गगागिरी जी महाराज भी अपनी जीवन लीला पूर्ण कर हम से विदा हो गये।

सभा के युवक उपदेशक श्री प० हरिश्चन्द्र हिसार मण्डल में बड़ी लग्न से कार्य कर रहे थे। वह एकदम ज्वर ग्रस्त हुए और शीघ्र ही बिलखते हुए छोटे-छोटे नन्हें बच्चों और युवा पत्नी व आर्य परिवार को छोड सदा के लिये हम से बिछुड़ गये।

श्री मेलाराम जी सगीताचार्य के सुपुत्र श्री सत्यपाल का देहावसान भी बड़ा ही हृदय विदारक रहा है। उनके भी सात छोटे-छोटे बालक हैं। सभा के लग्नशील भजनोपदेशक श्री तारा चन्द जी भी लम्बी बीमारी के पश्चात इस ससार को छोड प्रभु इच्छा में सदा के लिए लीन हो गये।

श्री प. चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी के पूज्य धर्म-पिताजी का भी देहावसान इसी वर्ष हमे सहन करना पडा है।

गुरुदासपुर के गण्यमान, प्रतिष्ठित वकील और सभा के परम हितैषी लाला मोतीराम जी भी हमसे बिछुड गए हैं।

आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली के मान्य मन्त्री श्री दरबारी लाल जी एम० ए० की पूज्य माताजी का भी देहावसान इसी वर्ष हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्र० नि० सभा के हम सभी सभासद इन दिवगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमदेव प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह इन्हें सद्गति प्रदान करें तथा आर्य जगत मे उनके अमूल्य रिक्त स्थानोको पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करें।

वेद प्रचार:—

आज चारो ओर भौतिकता का राज्य छा रहा है। विलास और भोग की धारा बडी तीव्रता से सभी को अपनी लपेट मे लिपटाए बढ़ती चली जा रही है। अनैतिकता अनाचार की भीषण आंधी ने सभी को अन्धा-सा बना दिया है। देव दयानन्द ने इन्ही विदूषित प्रवृत्तियो से टक्कर लेने, इस विकृत, दूषित, पतन की ओर भागते विश्व का सुधार करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज आरम्भ से ही इस दुर्गन्धपूर्ण वातावरण को दूर करने में लगा है।

आर्य प्रा० प्र० नि० सभा इसी शृंखला मे एक कडी है। इसका विशाल परिवार कश्मीर से लेकर दक्षिण तक तथा कलकत्ता और आसाम से लेकर बम्बई तक फैला है। महात्मा हंसराज जी जैसे स्वनामधन्य महात्माओं का इसे आशीर्वाद प्राप्त है। आनन्द स्वामी जैसे यशस्वी संन्यासी इसके सहायक हैं। सभा के समस्त उपदेशक प्रचारक महानुभाव वर्ष भर कार्यरत रहते हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमें डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं के मान्य प्रिंसिपल महोदय एव प्रोफेसर महानुभाव सदा ही सभा की सेवाओं के लिए तत्पर रहते हैं। यही नहीं अपितु सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य जगत् और साहित्य विभाग की पुस्तको की बिक्री का बहुत कुछ अंश इन्हीं सस्थाओं द्वारा सम्पन्न होता है। इससे सभा की आर्थिक स्थिति के सुधार मे भी बहुत कुछ सहयोग प्राप्त हुआ है। दिल्ली उप-सभा ने सभा के कार्य का जिस सुन्दरता से विस्तार किया है यह इनकी वार्षिक रिपोर्ट से स्पष्ट है। इस उपसभा के सुयोग्य युवक मन्त्री श्री दरबारी लाल जी एम० ए० व अनुभवी प्रधान श्री लाला दीवान चन्द जी श्री ठकेदार बड़ी लग्न से कार्य मे लीन हैं।

सभा के वेद प्रचार का कार्य मध्य प्रदेश मे श्री प० देव प्रकाश जी और कालीकट (केरल) मे श्री प. बुध सिंह जी की देखरेख में सफलतापूर्वक चल रहा है। कालीकट मे सभा की सम्पत्ति भी है। एक बाल-विद्यालय भी चल रहा है। इस प्रकार ईसाई प्रचारको के समतुल्य न होते हुये भी हम अपनी सीमित शक्तियो द्वारा वेद-प्रचार के कार्य मे रत हैं।

सभा की आर्थिक दशा:—

सभा की सेवाओ और कार्यों का क्षेत्र जितना विशाल और विस्तृत है उसके अनुसार इसके पास धन नहींहै। पजाब विभाजन ने तो आर्थिक दशा और भी अधिक विषम बना दी है। आज सभा के पास एक पैसा भी स्थिर कोष मे नही है। सभा को अपने महोपदेशक महानुभावों को वेतन देना भी कठिन हो रहा है। इस वर्ष कई आर्यसमाजो ने इस दशा के सुधारनेमें काफी सहयोग दिया है। आर्यसमाज माडल टाऊन यमुना नगर और आर्य समाज लारेन्स रोड ने सदा की भान्ति सहायता देते हुए हमारा उत्साह बढ़ाया है। डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ को मैं वर्ष भर धन के लिए प्रार्थना करता रहा हूं। यह इन्हीं के सहयोग का बल है कि यह वर्ष येन केन-प्रकारेण निकल पाया है अन्यथा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (२)

सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी. डी. बी.
कालेज, गोरखपुर

यस्य भूमि प्रमा,
अन्तरिक्ष मुतोदरम् ।
दिव यश्चक्रे मूर्धान,
तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ।
अथर्व १०।७।३२

(भूमिः) यह पृथ्वी (अस्य) जिसके (प्रमा) चरण हैं (उत) और (अन्तरिक्ष) यह आकाश (उदरम्) पेट है । (यः) जो (दिवं) द्युलोक को (मूर्धान चक्रे) मस्तक बनाए हुए हैं (तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः) उस सर्वतो महान ब्रह्म को नमस्कार है ।

क्या कहते हो ? पृथ्वी ब्रह्म का पैर है अन्तरिक्ष उसका पेट और यह द्युलोक उसका सिर है । तो क्या यह ब्रह्म साकार है ? तो क्या इस ब्रह्म की सीमा है ? नहीं, वह ब्रह्म साकार नही, उसकी कोई सीमा नही । वह असीम है, निराकार है, प्रतिमा रहित है । तभी —
तो वेद कहता है, न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद्यशः उस महान् महिमाशाली को कोई प्रतिमा नही है । पर वेद देव का काव्य है । 'पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति, वह देव का अजर और अमर काव्य है। काव्य मे अलंकार होते हैं । अलकार काव्य की शोभा बढ़ाते हैं । यदि हम किसी के मुख की उपमा चन्द्रमा से देते हैं तो यह हमारी भूल होगी कि यदि हम उस नायिका के मुख पर हाथ धर कर और छू कर यह पूछने लगे कि उसका मुख शीतल भी है कि नहीं ? परमेश्वर तो इतना महान् इतना सत्य, इतना शिव और सुन्दर कि उसके लिए उपमाए हीनोपमा हो जाएगी । उसकी महानता, उसकी सहिष्णुता और उसकी दृढता का प्रतिपादन करने के लिए उसके चरणो को पृथ्वी कहा गया है, उसकी विशालता का बोध कराने के लिये आकाश को उसका पेट और तेजस्विता को प्रकट करने के लिए उसम यादव को सूर्य सम माना गया है । इसीलिए ऋग्वेद १।५२।१४ कहता है ।

न यस्य द्यावा पृथिवी
अनुव्य चो न सिन्धवो
रजसो अन्तमानशुः । नोत
स्ववृष्टिं मदे अस्य
युध्यत एको अन्याच्चकृषे विश्वमानुषक्

(द्यावा पृथिवी) द्युलोक और पृथिवी लोक (यस्य व्यचः) जिसकी व्यापकता (न अनु) नही पाते और (रजसः सिन्धवः) अन्तरिक्ष लोक भी जिसका अन्त (न आनशः) नही पा सकते (अस्य युध्यतः) इसके युद्ध करने के समय (मदे) हर्ष में (स्ववृष्टिं न) शस्त्रादिको की अपनी वृष्टि जो होती हैं उसको भी कोई नही जानता। ऐसा (एकः) तू अकेला ही (अन्यत विश्व) अपने से भिन्न विश्व को (आनुषक चकृषे) सपूर्ण रूप मे करता है ।

परमात्मा की व्यापकता त्रिलोकी से अधिक है, इसलिए कोई भी ठीक प्रकार उसे नही जानता, तथा उसके शस्त्ररिपा शत्रु का कैसे नाश करते हैं यह भी कोई नही जान सकता । ऐसा विलक्षण शक्तिशाली ईश्वर एक है, अकेला ही किसी की सहायता की अपेक्षा न करता हुआ उससे भिन्न जितना कुछ विश्व है उस सम्पूर्ण विश्व को बनाता है । इसी सनातन परमेश्वर ने सूर्य को तेजस्वी बनाया है । ऋग्वेद ९-२८-५ मे आया है.—
एष सूर्यमरोच पत्पवमानो विचर्षणिः ।
विश्वाधामानि विश्ववित् ॥

(एष विचर्षणिः पवमान. सूर्यम् अरोचयत्) यह सर्वज्ञ पवित्र प्रभु सूर्य को प्रकाशित करता है, और वही (विश्ववित्) सर्वव्यापक, सब से विचार करने योग्य, सब से जानने योग्य प्रभु (विश्वाधामानि) सम्पूर्ण तेजस्वी पदार्थों को प्रकाश युक्त करता है । सध्या के उपस्थान मन्त्र, 'सूर्यमान्य ज्योतिरुत्तमम्' मे सूर्य परमात्मा ही तप और साधना से प्राप्त करने की बात कही गई है । उस परमात्मा का, देवाधिदेव का रूप कैसा है ? मन्त्र कहता है 'ज्योति' ज्योति स्वरूप है । गीता में भगवान् के इस दिव्य ज्योतिमय रूप का वर्णन निम्न शब्दो हुआ है :—
दिवि सूर्य सहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता,
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य
महात्मनः ।
गीता ११।१२

अर्थात् आकाश में एक साथ हजारो सूर्यो की ज्योति उदय हो जाये, तो वह ज्योति उस भगवान् की ज्योति के समान शायद हो । ज्योतिमय भगवान् की ज्योति से ही यह विश्व प्रकाशित हो रहा है । सूर्य के प्रकाश मे, चन्द्र की चादनी मे, तारो की टिमटिमाती ज्योति मे, विद्युत् की चमक में, अग्नि के तेज मे, प्रभात की लाल ऊषा मे, सन्ध्या की रगीली घटा मे उसी ज्योति स्वरूप की ज्योति जगमगा रही है । कठोपनिषद् में यही तो कहा है :—
न तत्र सूर्योभाति न
चन्द्र तारक,
नेमा विद्युतो भान्ति
कुतोऽय अग्निः ।
तमेव भात मनुभाति सर्वा,
तस्य भासा सर्वमिद विभाति ।
कठोपनिषद् ५.१५

अर्थात परमेश्वर के लिये जितने भी अलकार है वे उससे हीन हैं अत उसकी उपमा तो दी नही जा सकती फिर भी काव्य मे उसका उल्लेख करने के लिये हीनोपमा ही समझिए दी गई है और उसके चरणो को पृथ्वी उदर को आकाश और मस्तिष्क को सूर्य के समान बताया गया है । यह सारा जगत मानो परमात्मा का देह है । इसे विराट कहते है ।

इसको स्पष्ट करने के लिये विराट शब्द से क्या अभिप्रेत है ? महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास मे ओ३म् की व्याख्या करते हुये अ, उ, म् मे से प्रत्यक अक्षर क तीन-तीन अर्थ दर्शाये है । यथा —
अकार से विश्व,—विराट्—अग्नि
उकार से तैजस्—हिरण्यगर्भ—वायु
मकार से प्राज्ञ—ईश्वर—आदित्य

इन नामो मे से विश्व, तैजस् और प्राज्ञ एक श्रेणी के विराट्, हिरण्यगर्भ और वायु द्वितीय श्रेणी के और अग्नि, वायु, आदित्य तृतीय श्रेणी के नाम है । प्रथम श्रेणी के नाम शरीर के साथ परमात्मा के सम्बन्ध को बताते है और तृतीय श्रेणी के अर्थात्, अग्नि, वायु और आदित्य स्थूल जगत् क तीन विमानो के साथ परमात्मा के सम्बन्ध को बतलाते हैं । द्वितीय श्रेणी क विराट् हिरण्यगर्भ और ईश्वर ब्रह्माण्ड क साथ परमात्मा के सम्बन्ध को बतलाते हैं । ब्रह्माण्ड की स्थूल अवस्था का नियामक होने से परमात्मा को विराट् कहा गया है । सूक्ष्म अवस्था का नियामक होने से परमात्मा को हिरण्यगर्भ और अव्याकृत अवस्था का नियामक होने से ईश्वर कहते है । प्रत्यक्ष रूप से दीखते हुए स्थूल जगत् के तीन रूप समें दृष्टिगोचर होते हैं । पृथ्वी लोक, अन्तरिक्षलोक, तथा द्युतलोक, ।

(क्रमशः)

आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा हिमाचल, जम्मू-काश्मीर के वार्षिक अधिवेशन

प्रि० भीमसेन जी बहल सर्वसम्मति से पुनः प्रधान निर्वाचित हुए

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और जम्मू-काश्मीर का वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनाक ९-३-६९ को दोपहर बाद २ बजे से डी०ए०वी० कालेज चण्डीगढ मे हुआ जिसमें सभा से सम्बद्ध ४०० आर्यसमाजो के १५० प्रतिनिधियो ने भाग लिया । सभा की कार्यवाही वेद प्रार्थना से आरम्भ हुई । सर्वप्रथम वर्ष के मध्य दिवगत आदि महानुभावो के प्रति शोक प्रकट किया गया जिनमें सर गोकलचन्द जी नारग, प० भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर, स्वामी समर्पणानन्द जी, सेठ फतहचन्द जी, श्री दयानन्द जी हीरो साईकिल फैक्टरी लुधियाना वाले, श्री सत्यपाल जी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

सभा मे वार्षिक विवरण और बजट आदि के अतिरिक्त दो प्रस्ताव भी प्रधान सभा की ओर से प्रस्तुत किया गया जिन म पहला पजाब म हिन्दी भाषा की स्थिति के सम्बन्ध मे था तथा दूसरा दयानन्द विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए सरकार से माग की गई थी ।

अन्त मे आगामी वर्ष के अधिकारियो क निर्वाचन का विषय प्रस्तुत किया गया । श्री ओ३म् प्रकाश जी ने श्री प्रि० भीमसेन जी बहल डी ए वी. कालेज जालन्धर का नाम प्रस्तुत किया और श्री सत्यप्रकाश जी न अनुमोदन किया । अन्य नाम न होन के कारण इन्ही को सर्वसम्मति स प्रधान चुना गया तथा अन्य अधिकारी और अन्तरग सभा और सार्वदेशिक आदि के सदस्य चुनने का भी इन्ही को अधिकार दिया गया ।

(डा० वेदीराम शर्मा)

(पृष्ठ ४ का शेष)

परिस्थिति विकट से विकटतम ही होती रही है।

मैं सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करूंगा कि आप इस स्थिति पर गम्भीरता से विचार करें और सभा के स्थिर कोष के लिए अपने अमूल्य सुझाव देकर उन्हें कार्यान्वित करने करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग भी प्रदान करें।

महात्मा हंसराज भवन

महात्मा हंसराज भवन की जमीन और पुराना स्थान १९६१ ई० में सरकार से खरीद लिया गया था। यह भवन इतना जीर्ण और शीर्ण था कि प्रत्येक वर्ष वर्षा ऋतु में इसका कोई न कोई भाग अवश्य गिरता रहा है। इस वर्ष वर्षा के कारण बाहर की ओर से एक दीवार पूरी की पूरी ही गिर पड़ी। साथ ही कमरे भी बुरी अवस्था मे थे। इस सब की मरम्मत में तथा सभी छतो ठीक कराने में डी० ए० वी० कालेज जालन्धर ने काफी सहायता दी है। भवन को रंग-रोगन करा कर उत्तम बनाने में भी कालेज से ही सहायता ली गई है। महात्मा आनन्द स्वामी जी इसे देख कर अति प्रसन्न हुए।

आगामी वर्षो से नए खरीदे गए एक प्लाट की चारदीवारी करानी अत्यावश्यक है। धन के अभाव में रोज नई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

मैं दानी सज्जनो से प्रार्थना करूंगा कि वे इस कार्यार्थ अवश्य सहायता प्रदान कर सभा के कार्यकर्ताओं का उत्साह बढाए।

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग:—

आज के युग मे प्रचार की परमावश्यकता है। सिद्धांतो का प्रसार तो बिना इसका आश्रय लिए होना असम्भव ही है। आपकी सभा के पास आर्य जगत और साहित्य विभाग दो क्षेत्र इस कार्यार्थ सुरक्षित हैं।

आर्य जगत

गत २८-२७ वर्षो से इस दशा मे कार्य कर रहा है। इस वर्ष इसका घाटा पूरा करने मे सभा के सुयोग महोपदेशक और पत्र के सम्पादक श्री प. त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री ने अपनी पूरी शक्ति लगाई है। डा० वेदीराम जी इसके अधिष्ठाता रूप में कार्य करते रहे हैं। गत वर्ष इसका घाटा ३१०० रुपए था किन्तु इस वर्ष

सभा के वार्षिक कार्य विवरण का प्राक्कथन

प्रयत्नों द्वारा १५०० रह गया है आगामी वर्ष मे आप यदि थोड़ा और सहयोग दें तो यह भी पूर्ण हो जाएगा।

आर्यजगत के नए व्यवस्थापक श्री सुरेन्द्रपाल जी आर्य ने अभी कार्य संभाला है हमें उनसे पूरी आशा है कि वह इस पत्र को स्वावलम्बी बनाने में अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करेंगे।

साहित्य विभाग भी इस वर्ष सक्रिय रहा है। श्री प्रो० वेद प्रकाश जी मल्होत्रा के प्रयत्नों द्वारा इस वर्ष श्री लाला सूर्यभानु जी एम० ए० द्वारा लिखित पुस्तक **Dayanand his life and work** का पुनर्मुद्रण कराया तथा उसे शीघ्र ही सभी कालजों और स्कूलो ने खरीदना भी आरम्भ कर दिया मैंने पंजाब के सभी कालजों के प्रिंसिपल महोदयों की सेवा में इस पुस्तक और साथ ही वैदिक गुरुमत और श्री प्रि० श्रीराम द्वारा लिखित पुस्तक **Mahatma Hans Raj maker of the modern Panjab** के खरीदने के लिए प्रार्थना की थी। इसका अच्छा स्वागत किया गया। मैं सभी महानुभावो का इसके लिए आभारी हूं।

अगले वर्ष साहित्य विभाग मे उर्दू सत्यार्थप्रकाश तथा अन्य कई पुस्तकें प्रकाशित करने का विचार है।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर

आर्य अनाथालय का कार्य भार दीवान जयकृष्ण जी नन्दा तथा श्री प्रताप चन्द जी महता ने काफी समय मे अवैतनिक रूप में सम्भाला हुआ है। दीवान जी चाहते हैं कि अब यह कार्य किसी अन्य बन्धु को सौंप दिए जाए सभा एक अनुभवी और सुयोग्य कार्यकर्ता की खोज मे है। आप सज्जनो से भी मैं प्रार्थना करता हूं कि आप इस ओर ध्यान देकर किसी त्यागी और तपस्वी सज्जन को महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित इस संस्था में कार्य करने के लिए अवश्य प्रेरित कर अनुग्रहीत करें।

आर्य युवक संगठन:—

आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा सचालित प्रादेशिक आर्य युवक संगठन का कार्य गत दो वर्षों से शिथिल पड़ा हुआ था। इस वर्ष यह कार्य पुनः डा० वेदीराम जी को सौंपा है। उन्होंने इसे पुनः संगठित करना भी आरंभ कर दिया है। आशा है अगले वर्ष इसओर भी कुछ प्रगति हो सकेगी। युवक सगठन के महामन्त्री श्री रवीन्द्र जी एक सुयोग्य और अनुभवी कार्यकर्ता हैं। युवको की अच्छी टीम बनने की पूर्ण आशा है।

पंजाब मे हिंदी भाषा की स्थिति

आपको विदित ही है कि भारत के इस सीमा प्रान्त में गत कई वर्षों से भाषा का नाम लेकर कई प्रकार के झगड़े हो रहे हैं। अकाली सिखों की नीति राष्ट्रभाषा हिन्दी को पीछे फैंक कर गुरुमुखी लिपि में लिखित पंजाबी को आगे लाने की है तथा इस मांग के माध्यम से सिख-होमलैंड की मांग को आश्रय देना है।

आर्य प्रादेशिक प्र०नि० सभा की आरम्भ से ही यह धारणा रही है कि :—

(i) भाषा का मामला शिक्षा के साथ सम्बन्ध रखता है। इसे राजनीतिक आधार पर सुलझाना गलत है।

(ii) बच्चो की शिक्षा का अधिकार माता-पिता का है वे अपनी इच्छानुसार हिन्दी या पंजाबी जिस भाषा मे शिक्षा दिलाना चाहें दिला सकते हैं। इसमें राज्य सरकार द्वारा किसी भी प्रकार की अनिवार्यता घोषित करना माता-पिता के अधिकारों का हनन करना है।

(iii) पंजाब द्विभाषी प्रान्त है और आज पुनर्गठन हो जाने के पश्चात् भी यहा हिन्दी भाषी लोग रहते हैं अत: उन्हे उनके अधिकार अवश्य मिलने चाहिए।

प्रादेशिक सभा ने समय-समय पर अपनी इस उपर्युक्त धारणा को सरकार और जनता दोनो के समक्ष रखा है। और आज भी उसी के लिए कृत-सकल्प है। इस अधिवेशन में हम पुनः इस पर विचार करके सरकार से अनुरोध करेंगे कि वह हिन्दी भाषी जनता के साथ अन्याय न करें।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय

स्वर्गीय जस्टिस मेहरचन्द जी महाजन ने सार्वभौम शिक्षा संस्थान के वार्षिक अधिवेशनों में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय की स्थापना के अपने निश्चय को बार-बार दोहराया था। वे इस कार्य में लगे हुये थे। राजस्थान सरकार ने इसे सम्भव है स्वीकार भी कर लिया था। पूज्य महाजन साहिब के इस संकल्प का सभा ने सदा हार्दिक स्वागत किया है। महाजन साहिब आज हमारे मध्य नहीं हैं किंतु उनका संकल्प हमारे समक्ष है। वे हमारे नेता थे और हमें सदा उचित दिशा प्रदान करते रहे हैं।

अत: दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना के कार्य को हमें अपने हाथ मे लेना आवश्यक हो गया है। मैं आप सभी प्रतिनिधि भाईयोंसे प्रार्थना करूगा। कि आप इस दिशा में अपने अपने सुझाव देकर इस निश्चय को पूरा करने में अपनी शक्ति लगा दें।

इस प्रकार वर्ष भर सभा के कार्यकर्ता, राष्ट्र सेवा के कार्य मे लगे रहे है। जितना भी कर पाए हैं आप के सामने हैं। प्रभु हम मे शक्ति दे कि जिससे इस पावन मिशन को और आगे ले जाया जा सके।

इस कथन को समाप्त करने से पूर्व मैं अपने सहयोगी कार्यालय के कर्मचारियो, आर्यजगत के सम्पादक, प्रचारक महोदयो अंतरग सभासदों का हृदय से धन्यवाद करता हू कि जिनके सहयोग से ही सभा का कार्य इस रूप में चल सका है।

मैं आप सब प्रतिनिधि बन्धुओं का भी आभारी हू कि जिन्होंने पधार कर हमारा उत्साह बढ़ाया है तथा अपने अमूल्य परामर्श द्वारा सभा कार्य मे सहयोग दिया है।

अन्त मे परम पिता परमात्मा का धन्यवाद है कि जिसकी अपार कृपा से हम इस कार्य में आगे बढ़ सके हैं।

★ प्रमाद, आलस्य और निद्रा ये तीन तमोगुण के पुत्र जिसके पीछे पड़ जाते हैं उसे जीते हुए ही मरा समझना चाहिए।

★ यज्ञ करने के बाद यज्ञ के सामने शुद्ध रहने की प्रतिज्ञा करके हमेशा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को बुरे विचारो तथा बुरे कर्मों से दूर रखने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। यही शुद्धि कहला है।

★ जिनका शरीर, मन तथा आत्मा को अशुद्ध हो, जो दूसरे मतों में रह कर मन को, तथा मांस और शराब आदि सेवन कर शरीर को अपवित्र कर चुके हों।

★ बहु मूल्य रत्नो के बदले भी आयु का एक क्षण नहीं मिल सकता, ऐसे अमूल्य जीवन को जो व्यर्थ गंवा देता है वह नर नहीं नराधम कहा जाता है।

सेना संवाद

हवाई खोज

नई दिल्ली—बङ्गाल की खाड़ी में 'एवरिल कन्होजी आन्ग्रे' की खोज निकालना, भारतीय वायुसेना की हवाई खोज की एक और उपलब्धि है। वायुसेना की यह सफलता सेना द्वारा असैनिक अधिकारियों की सहायता का भी एक उदाहरण है।

भारतीय वायुसेना गत १५ वर्षों से समुद्री सर्वेक्षण का काम कर रही है। यह सर्वेक्षण कार्य शत्रुओं के जहाजों को ढूंढ कर नौ सेना की सहायता के लिए किया जाता था। शांतिकाल में समय-समय पर सेना के हवाई जहाज समुद्र में घिरी असैनिक नौकाओं तथा व्यापारियों की सहायता भी करते हैं।

विशेष रूप से प्रशिक्षित चालकों के ये हवाई जहाज राडार प्रणाली से लैस होते हैं जो समुद्र में नौकाओं तथा जहाजों को ढूंढ निकाल सकते हैं।

समुद्री सर्वेक्षण करने वाले विमानों में बोर्ड पर एक रक्षा करने का 'गियर' लगा रहता है। किसी भी भटके हुए जहाज को ढूंढने के बाद, यह 'गियर' जहाज पर गिरा दिया जाता है जिसके सहारे मुसीबत के मारे नाविक बच निकलते हैं। कई ऐसे उदाहरण भी है जहां वायुसेना की सहायता से अन्य नौकाओं ने डूबते हुए नाविकों को बचाया है।

एक ऐसी घटना दो वर्ष पूर्व घटी। अरब सागर मे एक तेलवाहक जहाज विपत्ति में फस गया। सूचना मिलने के एक घंटे के अन्दर ही समुद्री सर्वेक्षण टुकड़ी के एक विमान ने उड़ान भरी तथा चार घंटे में ही फसे हुए जहाज का पता लगा लिया। हवाई जहाज ने समीप के एक अन्य जहाज को फंसे हुए तेल वाहक की ठीक-ठीक स्थिति से अवगत कराया जिसके परिणामस्वरूप तेल वाहक जहाज पर सवार सभी लोग बचा लिए गये जिनकी मौत निश्चित ही थी।

इनके अतिरिक्त समय-समय पर समुद्री तूफानों की चपेट में आने वाली मछली पकड़ने की, नौकाओं को बचाने में भी वायुसेना की समुद्री सर्वेक्षण टुकड़ी सहायक सिद्ध हुई है।

सभी प्रकार के मौसमों में उड़ाने भरने वाले समुद्री सर्वेक्षण विमानों के चालक जरूरत पड़ने पर तुरन्त सहायता पहुंचाने के लिए तैयार रहते हैं।

सितम्बर १९६८ में कोयला उत्पादन के आंकड़े

खान सुरक्षा के महानिदेशक के अनुसार १९६८ के सितम्बर मास मे ७६९ खानो मे कार्य हुआ जबकि इस से पिछले महीने में ७६७ तथा १९६७ के सितम्बर माह मे ७७४ खानों में कार्य हुआ।

अगस्त १९६८ से सितम्बर १९६८ में खनिकों तथा लदाई करने वालो ने प्रतिपारी अधिक कोयला निकाला। सितम्बर माह में खानो के अन्दर तथा बाहर काम करने वाले खनिको का प्रतिव्यक्ति प्रतिपारी उत्पादन ०.८९ टन तथा अन्य व्यक्तियों का ०.६४ टन रहा। सितम्बर १९६७ में यह उत्पादन क्रमश: ०.७९ तथा ०.५६ टन था।

खान मजदूर की प्रति सप्ताह नकद कमाई का अखिल भारतीय औसत ४८.४४ रु० था। झरिया तथा रानीगंज में यह नकद कमाई क्रमश: ४७.४७ रु० तथा ४७.५२ रु० रही। अगस्त १९६८ में खान मजदूर की प्रति सप्ताह नकद कमाई का अखिल भारतीय औसद ४८.४७ रु० थी।

'सितम्बर १९६८ मे कोयला खानों में गैरहाजरी ११.७७ प्रतिशत थी जबकि अगस्त १९६८ में १२.४८ और सितम्बर १९६७ में ११.१८ प्रतिशत थी।

★★

लुधियाना में जिला वेद प्रचारिणी सभा की स्थापना

२४-२-६९ को लुधियाना मे श्री दानवीर सेठ ला० लक्ष्मणदास जी की प्रधानता में जिला वेद प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। चुनाव इस प्रकार है—

प्रधान—श्री मतवालचन्द आर्य,
उप-प्रधान—श्री मदनमोहन चड्ढा,
मन्त्री—श्री विश्वबन्धु आर्य,
उप-मन्त्री—श्री वेदरत्न आर्य,
प्रचारमन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र नारग,
कोषाध्यक्ष—श्री प्रकाशचन्द्र हुरिया,

★ बहुमूल्य रत्नो के बदले भी आयु का एक क्षण नहीं मिल सकता, ऐसे अमूल्य जीवन को जो व्यर्थ गंवा देता है वह नर नहीं नराधम कहा जाता है।

संतो, भक्तों के अमूल्य उपदेश

[संग्रह कर्त्ता :—श्री पं. ठाकुर दत्त शर्मा वैद्य]

कबिरा हरि के नाम मे, बात चलावै और।
उस अपराधी जीव को, तीन लोक नही ठौर॥
है नियरे दीखे नही, धिक धिक ऐसी जिन्द।
तुलसी या ससार के, हुआ मोतिया बिन्द॥
तरुवर पत्तो से कहे, सुनो पात इक बात।
या घर ये ही रीति है, इक आवत इक जात॥
आतमा अनुभव ज्ञान की, जो कोई पूछे बात।
ज्यों गूंगा गुड खाय के, कहे कौन मुख स्वाद॥
काम बिगाड़े भक्ति को, ज्ञान बिगाड़े क्रोध।
लोभ विराग बिगाड दे, मोह बिगाड़े बोध॥
तुलसी गुरु प्रताप से, ऐसी जान पड़ी।
नहीं भरोसा स्वास का, आगे मौत खड़ी॥
भजन करन को आलसी, भोजन को हुशियार।
तुलसी ऐसे पतित को, बार बार धिक्कार॥
अरब खरब लों द्रव्य है, उदय अस्त लौं राज।
बिना भक्ति भगवान की, सभी नरक का साज॥
सत्य वचन आधीनता, पर तिय मात समान।
इतने में हरि न मिले, तुलसी दास जमान॥
राम नाम जपते रहो, जब लग घट मे प्राण।
कब हूं तो दीन दयाल के, भिनक पड़ेगी कान॥

अभी तक लापता है

मेरे युवक बेटे प्रिय दयानन्द एम. ए. का पता करने के बारे में समाजो से कई सज्जनो के सहानुभूति भरे पत्र आते रहते हैं। इसके लिए निवेदन है कि अभी तक उसके बारे मे कोई सुराग नही मिल सका। कोशिश जारी है तथा सभा के माननीय प्रधान प्रिंसिपल बहल जी तथा अन्य महानुभाव भी प्रयत्न में लगे हैं। प्रभु कृपा करें। कुछ पता लगने पर निवेदन कर दिया जायगा।

त्रिलोकचन्द शास्त्री
आर्योपदेशक सभा
जालन्धर

सम्पादक के नाम

श्री शिवनाथ जी दुबे [कल्याण सम्पादकीय विभाग] गोरखपुर से लिखते है कि सम्पादक जी! 'आर्य जगत' नमस्ते! आर्य जगत् का ऋषिबोध अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद! यह अंक श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती से सम्बन्धित उद्बोधक सामग्रियों से अत्यधिक महत्वपूर्ण बन गया है। निश्चय ही यह अंक पाठकों के लिए सुप्रेरक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

श्री करनैलसिंह जी तलवड़ी चौधरियां से लिखते हैं सम्पादक जी, सुप्रेम नमस्ते! जब से 'आर्यजगत' पत्रिका पढ़ना शुरू किया है तब से अल्पज्ञान दूर हो गया है। आर्यजगत् के प्रथम पृष्ठ पर वेद मन्त्रो का लिखना बहुत लाभप्रद सिद्ध हुआ है। शिक्षाप्रद लेखादि भी पढने को मिलते है। भविष्य मे भी 'आर्यजगत्' अगर इसी प्रकार छपता रहा तो वेद प्रचार का इससे उत्तम कोई और साधन न होगा।

हार्दिक शोक

आर्य प्रादेशिक-प्रतिनिधि सभा जालन्धर श्री ला० गुरचरण दत्त जी महाजन ब्रह्मनगर अमृतसर के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। लाला जी आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर के देर तक मन्त्री रहे। उनके निधन से आर्य जगत को काफी क्षति पहुंची है। सभा उनकी सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है व पन्ना लाल जी महाजन प्रधान म्युनिसिपल कमेटी एवं सारे शोक ग्रस्त परिवार व बन्धुओ से हार्दिक सम्वेदना प्रकट करती है।

सभा मन्त्री

आर्यसमाज [illegible] टाऊन अम्बाला नगर

१. आ० स० माडल टाऊन अम्बाला नगर की यह सभा डा० गोकलचन्द जी की मृत्यु पर महा शोक प्रकट करती है।

आप एक उच्च कोटि के नेता थे जिन्होंने अपने लेखों तथा वाणी द्वारा आर्य समाज डी० ए० वी० कालेज तथा आर्य संस्थाओं की सेवा की। आपने देश की आजादी के लिए भी कष्ट उठाए। आपने देश के उद्योग की प्रगति के लिए भी बहुत काम किया।

प्रभु आपकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा दुःखद परिवार को शांति दें।

—हर गोविन्दसिंह मन्त्री

आर्य समाज माडल टाऊन अम्बाला नगर की यह शोक सभा श्री फतहचन्द जी सेठ हिसार की मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। भगवान से प्रार्थना करती है कि वह आपकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

—हरगोविन्दसिंह मन्त्री

आर्यसमाज बाजार सीताराम का वार्षिक चुनाव

प्रधान :—पं० राजाराम जी शास्त्री।

उपप्रधान :—श्री स्वादर मल जी, श्री दौलतरामजी व श्री दीनानाथ जी

मन्त्री—श्री नारेन्द्रनाथ जी।

सहायक मन्त्री :—श्री राधेश्याम जी।

उपमन्त्री :—श्री श्याम बाबू जी, श्री विमल चन्द्र जी व श्री देवेन्द्र कुमार जी।

कोषाध्यक्ष :—श्री बाबूराम जी आर्य।

पुस्तकाध्यक्ष :—श्री आनन्द स्वरूप जी।

लेखा निरीक्षक :—श्री आनन्तराम जी बेरी।

—तेजराम पुरोहित

शोक समाचार

अम्बाला नगर :—आर्य वीर दल तथा आर्य युवक समाज अम्बाला नगर की यह सम्मिलित बैठक आर्यवीर दल हिसार के मण्डल-पति श्री प्रह्लाद राय जी के सुपुत्र श्री ओ३म् प्रकाश जी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को यह कष्ट सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजीकृत)

राजधानी में मनाए जाने वाले [illegible] पर्व दिवस के अध्यक्ष [illegible] शिव कुमार शास्त्री, संसद्-सदस्य होंगे—

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं की ओर से रविवार दिनांक २३ मार्च, ६९ को ४ से ६ बजे तक अजमलखां पार्क, करोल बाग, नई दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। अजमलखां पार्क में इस दिन एक सार्वजनिक सभा होगी जिसकी अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० शिवकुमार जी शास्त्री संसद्-सदस्य करेंगे।

उस सभा में पं० प्रकाशवीर शास्त्री, संसद-सदस्य, श्री के. नरेन्द्र (सम्पादक वीर अर्जुन व प्रताप), प्रोफेसर रामप्रकाश एम० ए०, पी० एच० डी. श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्रताप, प्रो० उत्तम चन्द शरर् आदि आर्यसमाज के कार्यकलाप का दिग्दर्शन करायेंगे उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री चौधरी चरणसिंह जी के आने की सम्भावना है।

मेरी दिल्ली की आर्य जनता से प्रार्थना है कि इस उत्सव को सफल बनाने के लिए अभी से जुट जावें और अपने इलाके के लोगों को इस उत्सव में अधिक से अधिक आने की प्रेरणा करें।

रामनाथ सहगल
मन्त्री

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मात्मसिंह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान [illegible]जी) १.००
७. [illegible] माला मूल १.२५
८. [illegible]शतक ०.५०
९. [illegible]शतक ०.५०
१०. [illegible]वेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाबके निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी में) १.५०
१२. सन्ध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १.००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २.००
१४. महात्मा हंसराज की सुचित्र(ले० आनन्द स्वामीजी महाराज)१.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M.A.) ०.६०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम अनुवाद ले. वाचस्पति M.A. .५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, .५०
२१. मुंडक उपनिषद(ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना(ले० स्वामा सोमानन्द जी)उर्दू में ०.३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १.२५
२४. सीता(ले. आनंदस्वामीजी)०.३७
२५. पद्मनी (,, ,, ,,)०.३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० लोकनाथ जी M.A.) अंग्रेजी में १.२५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

अमर शहीदी मेला

अमर शहीद पं. लेखराम बलि-दान पर्व लेखराम नगर कादियां में शहीदी मेले के रूप में इस बार भी ४-५-६ मार्च को बड़े ही समारोह से स्मारक पिण्डाल में मनाया गया। इसमें शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शान्तिप्रकाश जी, पं० रामकिशोर जी वैद्य, पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, पं० रामपाल मदन मोहन जी विद्रटा मण्डली, पं० नन्दलाल जी मण्डली, श्री मिलखीराम जी महाजन इन्सपेक्टर आफ डी.ए.वी. स्कूल्ज तथा अन्य सज्जन भी पधारे थे। बहिन सुशीला देवी जी आनन्द माता जी भी आईं। शहीदी जलूस में दोनों डी.ए.वी.स्कूलों, सभा, बटाला पुत्री पाठशाला की बच्चियों व सज्जनों ने भाग लिया। जलूस भव्य था। शहीदी सम्मेलन भी कमाल का था। [illegible] देवराज जी सादिया का उत्साह प्रशंसनीय है। युवक मण्डल व स्त्री समाज का सहयोग भी पूरा-पूरा था। मेला में ऋषिनगर सुन्दर था—जालन्धर, पठानकोट, कादियान, गुरदासपुर, अमृतसर, बटाला आदि से सज्जन पधारे। बहुत ही सफल रहा। सभा को ११०) वेद प्रचार व ३०) रुपये कार्य भेंट किया। —सं०

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए.पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजा[illegible]



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P.

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक १२) — १० चैत्र २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४–२३ मार्च १९६९ — (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

सर्वमस्त्वनामयम्

अर्थ-सर्वम्-यह सारा प्राणीवर्ग हो अस्तु-सदा हो जाए, अनामयम्–सुख-आनन्द से भरा हुआ। मंगलमय महान देव सारे विश्व के जीव समुदाय का कुशलमंगलम करते रहें। वेद को मानने वाले प्रत्येक को सदा सुखी देखना चाहते हैं। केवल अपना सुख और शांति ही नहीं चाहते किंतु सारे विश्व का कल्याण चाहते है। सर्वे भवन्तु सुखिनः–की प्रार्थना सदा प्रभु प्रेमी करते रहते है हमारे हरेक कर्मकांड की समाप्ति पर सब का भला करो भगवान की सामूहिक ध्वनि बन कर के निकलती रहती हैं। इस धरती पर या विशाल विश्व में कोई भी दुखी न हो। सारे अपने अपने जीवन में चाहे द्विपाद हों या चतुष्पाद सुख शांति से भरपूर रहें। सदा सब का मंगल हो—

वेदामृत

विश्व प्रेम का सन्देश

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानु पश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति॥

यजुर्वेद अध्याय ४० मन्त्र ६

अर्थ :–(यः तु) जो कोई) (सर्वाणि) सारे (भूतानि) भूतों का चराचर जगत् अथवा प्राणियों को (आत्मनि एवं) उस परमात्मा में अथवा अपने आत्मा में (अनुपश्यति) देखता है। (सर्वभूतेषु) सब जीवों में (च आत्मानं) और अपने आप को देखता है। (ततः) इससे वह (न) नहीं (विचिकित्सति सन्देह करता है।

इस का भाव यह है

वेद के द्वारा मानव वर्ग को विश्व प्रेम का कितना ही सुन्दर उपदेश मिलता है। जो कोई सारे प्राणि-मात्र को अपने आत्मा में तथा अपने को उनमें देखता है। प्राणिमात्र को अपने ही समान मान कर उनके दुःख को अपना दुःख जानता है। सभी को अपने जैसा समझता है। उनके कष्ट निवारण में अपना कर्त्तव्य मानता है। वह सब प्रकार के सन्देह से परे हो जाता है। विश्व की तमाम अशान्ति को दूर करने के लिए इससे बढ़कर विश्व प्रेम का सन्देह और क्या हो सकेगा। सब को अपना जानो

–सम्पादक

ऋषि दर्शन

तज्जपस्तदर्थभावनम्

योग दर्शन के बनाने वाले महर्षि पतन्जलि कहते हैं कि भगवान का निजि नाम तो प्रणव है ओ३म् है। जाप सदा ओ३म् नाम का ही करना चाहिए। साथ ही यह भी आवश्यक है कि यह जाप केवल मात्र शब्द जाप न बना रहे। केवल वाणी से ही शब्द का उच्चारण न होता रहे। किंतु तज्जपः– प्रभु के ओ३म् नाम का जपजाप तो यह है कि तदर्थभावनम्- उसके अर्थों पर भी विचार किया जाए। अर्थ-विचार के बिना शब्द जाप का लाभ क्या है? जहां प्रभु नाम ओ३म् का जाप किया जाए वहां इसके अर्थों पर भी पूरा-पूरा विचार करके उसको अपने जीवन में लाने का पूरा प्रयत्न किया जाए तभी ठीक है। –संपादक

योग दर्शन से

अधिष्ठाता—श्री वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच० डी० (सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

(गतांक से आगे)

इस मंत्र में इन्हीं तीनों लोकों को आधार बनाकर पृथ्वी को चरण अन्तरिक्ष को उदर और द्युलोक को मस्तिष्क माना गया है। और परमेश्वर अग्नि, वायु और आदित्य रूप में इन तीनों लोकों का नियन्त्रण कर रहा है। परमात्मा (वि) अर्थात् विविध प्रकार के जगत् को (राट्) प्रदीप्त कर रहा है, प्रकाशित कर रहा है, इसलिए उसका नाम विराट् है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारागण, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक जल, औषधि, प्राणी, अप्राणी आदि भेद जगत की स्थूल रचना में ही दिखाई देते हैं। इसलिए जगत की स्थूल अवस्था विविध रचनाओं वाली है। इन विविध रचनाओं को प्रकाशित करने के कारण विराट् है और इस विराट् के एक-एक अंग को इन लोकों के नियता के रूप में दिखाया है।

इसलिए संसार मे सच्चे सुख की प्राप्ति की कामना करने वाले मानव! तू अपने को राजाओं, धनियों और शक्तिशालियों के सामने दीन न बना। अपने को इनके सामने मत झुका। यदि तुझे नमस्कार करना है तो उस महान् ब्रह्म को, जिसकी शक्ति से यह संसार टिका हुआ है। जिसने तुझे सम्पूर्ण ऐश्वर्य दिए हैं। याद रख! सांसारिक पदार्थों से प्राप्त होने वाली शांति अधिक है। विश्वेश्वर है। उस प्रभु के चरणों में झुककर भक्त भगवान से कह। हे मेरे प्रभु! जब तक तुम मेरे हृदय के सर्वस्व नहीं हो जाते जब तक मनोवांछित तृप्ति नहीं हो सकती, पूर्णानन्द की प्राप्ति संभावित नहीं। इसलिये हे मेरे विराट! मेरे सर्वस्व सपूर्ण सांसारिक लोगों से अनासक्त होकर, विषयों की कामनाएं विस्मृत कर तुम्हारे चरणों में झुक जाऊं!

हे आनन्द के अक्षय स्रोत! तुम्हे पाने की मेरी उत्कंठा, मेरी अभिलाषा तभी सफल होगी जब मैं अपने मन को बाहरी विषयों से हटाकर और तुम्हारी महिमा को देखकर अपने को तुम्हारे चरणों मे झुका दूंगा। इस लिए हे महान जगदीश्वर! हे शांति के अक्षय भंडार! शांति प्राप्त करने के लिए तुम्हारे चरणों में आया हू, तुम्हारी शरण में पहुचा हू और तुम्हें अविचल शांति के लिए बार-बार प्रणाम करता हू। तुम हे शक्ति के दिव्यधाम! वर्षा करो, सहस्रों धाराओं मे शांति की वर्षा करो।

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (३)

(सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए.एल.टी.डी.वी. कालेज, गोरखपुर)

हे कामनाओं को पूर्ण करने वाले विराट देव! मेरे चारों ओर सुख और शांति की दिव्यधाराएं में प्रवाहित होने दो, मेरे मानस और रोम-रोम में शांति समा जाने दो। आइए हम उसकी हिन्दी गान में वन्दना करें:—

सत्य ज्ञान की परिचायक यह,
पृथ्वी जिस के चरण महान्
जो इस विस्तृत अन्तरिक्ष को
रखता है निज उदर समान।
शीर्ष तुल्य है जिसके शोभित।
यह नभ च लोक द्युति मान।
उस महान् जगदीश्वर को है
अर्पित मेरा नम्र प्रणाम।

यस्य सूर्यश्चक्षुः,
चन्द्रमा च पुनर्णवः।
अग्निं यश्चक्रे आस्यं
तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।
अथर्व १०-७-३३

(सूर्यः) यह सूर्य (च) और पुनर्णवः चन्द्रमा) फिर नया होने वाला चन्द्रमा (यस्य चक्षुः) जिसकी आंखें हैं (यः) जिसने (अग्नि) अग्नि को (आस्य चक्रे) मुख बनाया है (तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः) उस सर्वतो महान ब्रह्म को नमस्कार है।

प्रकृति एव प्राकृतिक पदार्थो के माध्यम से मनुष्य अपनी उस प्रभु के प्रति छिपी अपनी रहस्य भावनाओं के प्रकट करता। प्रकृति की विराट् सत्ता मे किसी अनन्य शक्ति का उसे अभ्यास होता है। उस शक्ति की विराट और रहस्यमयी सत्ता उसे इतना प्रभावित एव अभिभूत करलेती है कि वह अपने को उसके चरणों मे समर्पित कर देता है, अपने को उसके चरणों मैं नत-मस्तक कर देता है। कवि व्यक्त जगत् के नाना रूपों और व्यापारों के भीतर किसी अज्ञात चेतन सत्ता का आभास कराता हुआ जिस अतृप्त जिज्ञासा की बात करता है, वैसी भावनाएं प्रत्येक सहृदय व्यक्ति के मन में इस रहस्यमय जगत् को देखकर उठा करती हैं। रात्रि के रहस्यमय नक्षत्रों और चन्द्रमा को देख कर, सूर्य की तेजस्विनी आभा को देख कर, मेघों के गर्जन में तड़ित की छवि को देख कर, समुद्र की उठती हुई तरंगों को देख कर मनुष्य को विस्मय होता है कि न जाने वह कौन-सी अज्ञात सत्ता है जो हमें मौन निमन्त्रण दे रही है और वह सूर्य, चांद, अग्नि आदि किसी के मुख, आंख आदि हैं। हिन्दी के कवि 'प्रसाद' ने अज्ञात सत्ता का परिचय प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो कर कहा है—

न जाने कौन अए द्युतिमान्
जान मुझ को अबोध अज्ञान
सुझाते हो तुम पथ अनजान
फूंक देते छिद्रों में गान
अहे सुख दुःख के सहचर मौन
नहीं कह सकती तुम हो कौन?

'प्रसाद' ने अनंत सत्ता का परिचय न जान उत्सुकतावश पूछा है:—

महानील इस परम व्योम में अन्तरिक्ष में ज्योतिमति ग्रह-नक्षत्र और विद्युत्कण किसका करते हैं सन्धान? छिप जाते हैं और निकलते आकर्षण से खिंचे हुए, फिर नीचा कर किसकी सत्ता सब करते स्वीकार यहा सदा मौन हो प्रवचन करते ऐसा वह अस्तित्व कहां? उसी अस्तित्व को इस मन्त्र में नमस्कार किया गया है। वेद में परमेश्वर को इन शब्दों से अनेकबार स्मरण किया गया है। यजुर्वेद ३२।१ में आया है:—

तदेवाग्निस्तदादित्य
स्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता
आपः स प्रजापतिः।

अर्थात् वही पुरुष अग्नि है, वही आदित्य है, वही वायु और वही चन्द्रमा है, वह शुक्र है और वही ब्रह्म है। इसी को वेद मे दूसरे रूप मे कहा है कि परमात्मा की दृष्टि सूर्य है। जिस समय सारा संसार अन्धकार से आच्छन्न होता है, यह सूर्य उदय होकर हमे प्रकाश देता है ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी जब अज्ञान के अन्धकार मे था तो इस प्रभु ने उसे ज्ञान का प्रकाश दिया। इसकी दृष्टि जब हम पर पड़ी तो प्रकृति के साथ-साथ हृदय भी रंगन से प्रकाशित हो गया। इस परमेश्वर ने सूर्य के रूप मे हमें ज्योति प्रदान की है। मनुष्य ज्योति का पुतला है। वेद के एक मंत्र में मनुष्य को कहा गया है कि—

इदंत एकं पर ऊत
एक तृतीयेन ज्योतिषा—
संवेशस्तन्वे चारु रेधि प्रियो
देवानां परमे जनित्रे संविशाव।

अर्थात् मनुष्य ज्योति का पुतला है। उसका जन्म ज्योति लोक में लोक में हुआ है। यह संसार ज्योतियों का आगार है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और यह कि संपूर्ण सौर मंडल ज्योतियों की दीपावली सी है। फिर पानी में, हवा में, आग में विद्युत् के प्रत्येक रूप में प्रकाश ही प्रकाश है।

किस अमित ज्योति के ज्योतिर्मय कण नए [illegible] प्रचण्ड।
कर फुलझड़ियों में तुम्हा दृष्टि दिखलाए करती विहार।

प्रभु ने ज्योति लोक की संपूर्ण दीप्तियां जीवात्मा को अर्पण की हैं। वास्तव मे ये ज्योतियां प्रभु की ज्योतियां हैं। प्रभु की इच्छा है कि मेरी इन ज्योतियों से, इन सूर्यो से, मेरी इन दृष्टियों से अन्तरात्मा में चमचमाते लोक लोकान्तरों का आलोक हो। इन प्रत्यक्ष ज्योतियों से उत्कृष्ट एक और परोक्ष ज्योति है जो इन्द्रियों की पहुंच से बाहर है परन्तु सपूर्ण इन्द्रियों में उसी का प्रकाश है। संसार की सभी ज्योतियों का ज्ञान हमें इसी आन्तरिक ज्योति—आत्मा की ज्योति, चेतना की ज्योति मे होता है। दृष्टि न हो तो सृष्टि में लाख रूपों की सृष्टि हुआ करे। आवरणी शक्ति न हो तो लाख विश्ववाटिका मे लाख सुरभित सुगंधियां हुआ करें। त्वचा तथा रसना के अभाव में स्पर्श और स्वाद वस्तु ही क्या हैं? इसी प्रकार संसार मे परमात्मा ज्योति ही सब ज्योतियों की एक ज्योति है। शेष सब ज्योतियां उस ज्योति की छाया मात्र हैं।

इसलिए हे मेरे आराध्य! यह सूर्य की तरह अपनी ज्योति हमारे लिए ला! हमारे लिए ला! मेरे हृदय मे, मेरे मस्तिष्क मे, मेरे सम्पूर्ण क्रियाकलाप मे, मेरे ज्ञान-विज्ञान में यह ज्योति प्रवेश करे। इस सूर्य ज्योति के दर्शन से मेरा हृदय कमल की तरह खिल उठे। मेरी विश्व-वाहिनी मूर्धा-पद्मिनी की पखुड़ियां आज साक्षात् सरस्वती का सिंहासन बन जाए। मेरा मस्तिष्क खुल जाए, खुल जाए।

चन्द्रमा भी जिसकी आंख हैं। कैसा है यह चन्द्रमा। अंधेरे में शीतल किरणें बिखेरता हुआ और पृथ्वी के प्रारम्भ से उसी रूप में प्रतिदिन निकलता हुआ, कालिदास के युग में कालिदास को जो अपनी छटा इसने दिखाई थी। (क्रमशः)

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, २३ मार्च, १९६९ [अंक १२

दयानन्द विश्वविद्यालय

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालंधर के वार्षिक बजट व निर्वाचन अधिवेशन में चण्डीगढ़ में ता. ९ मार्च रविवार के दिन सभा प्रधान माननीय प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल की प्रधानता मे यह आवश्यक एव समाज के अनुकूल प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया कि जालंधर में दयानन्द यूनिवर्सिटी को स्थापित किया जाए। इस प्रस्ताव पर सारी सभा मे बड़ी ही प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सारे माननीय प्रतिनिधियो ने पूरे २ सहयोग का आश्वासन दिया। इस प्रस्ताव के बाद सारे समाज को रात दिन एक करके इस कार्य मे जुट जाना पड़ेगा। यह तो बड़े हर्ष का विषय है कि वैसे तो सारे भारत मे ही आर्यसमाज की बड़ी २ स्कूल-कालेजों और गुरुकुलों के रूप में व्यापक कार्य हो रहा है। सारी जनता के लिए यह गौरव की बात है। समाज के शिक्षा प्रसार के महान मिशन के सामने अपनों एव परायों का श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है। इन शिक्षा के महान केन्द्रो से बडे २ नेता, बलिदानी वीर, शिक्षाशास्त्री, प्रसिद्ध डाक्टर व व्यापारी तथा राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र मे विशिष्ट कार्य करने वाले बड़े-बड़े व्यक्ति निकले। इनके इतिहास प्रसिद्ध नाम और काम से आज भी भारत देश परिचित है। अमेरिका में विज्ञान में नोबल पुरस्कार को प्राप्त करने वाले डा० खुराना जैसे वैज्ञानिक, डा० दीवान चन्द्र एम. ए. कानपुर जैसे फिलास्फर, डा. गोवर्धन लाल दत्त तथा प्रि. सूर्यभानु जी वायसचासलर जैसे शिक्षा शास्त्री भी इन महान विद्याकेन्द्रों से निकले हैं। आर्य समाज के इन सरस्वती मन्दिरों राष्ट्र को क्या-क्या नहीं दिया? ऊंचे से ऊंचे प्रिंसिपल दिए, राजनीतिक क्षेत्र के अग्रगामी नेता दिए। देश भक्ति से भरे वीर सेनानी व अमर बलिदानी दिए। सेवा के सुधार क्षेत्र में बड़े-बड़े महानुभाव दिए। समाज के कार्यकर्ता दिए। इन संस्थानों ने भारत को सब कुछ दिया। इस पर गौरव है।

आर्य समाज के विशाल परिवार की यह प्रबल इच्छा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के महान देवता के नाम पर दयानन्द यूनिवर्सिटी खोली जाए। लम्बे समय से इस बात का अनुभव किया जा रहा है। जिसके पास इतनी विशाल सस्थाए हों, उसके पास दयानन्द विश्वविद्यालय न हो तो कितने [illegible] की बात है। भारत में कितनी यूनिवर्सिटियां हैं। किस — किस के नाम पर विश्वविद्यालय नही है? अब तो स्वर्गीय प्रधान मन्त्री नेहरू जी के नाम पर नेहरू यूनिवर्सिटी बनने लगी है। और भी कई विश्वविद्यालय बने तथा बनते जा रहे हैं। अभी-अभी घोषणा निकली है कि अमृतसर खालसा कालेज में गुरु नानक जी के नाम पर नानक यूनिवर्सिटी बनेगी। जितने भी विश्वविद्यालय बने उतना अच्छा शिक्षा का प्रसार होता जाएगा। आर्यसमाज ने शिक्षा क्षेत्र में प्रारम्भकाल से इतना काम किया व किया जा रहा है तो अब तक दयानन्द विश्वविद्यालय का बन न सकना हमारे लिए कितने दु.ख का विषय है इसलिए इस समय सभा ने सारे समाज की भावना का प्रतिनिधित्व करते हुए दयानन्द यूनिवर्सिटी की स्थापना का प्रस्ताव पारित करके इसे जालन्धर मे बनाने का सकल्प किया है।

जालन्धर शहर शिक्षा का महान् केन्द्र है। समाज के बडे-बडे स्कूल व कालेज हैं। यहा का डी.ए.वी. कालेज तो अपनी शान का आप ही है। यह भारत की कई यूनिवर्सिटी से भी बहुत बड़ा है। देखा जाए तो यह स्वयम् विश्वविद्यालय का रूप है। सारे पंजाब, हरयाणा, हिमाचल, देहली में सारी शिक्षण सस्थाओ में यह डी. ए. वी. कालेज जालन्धर सब से बड़ा विद्या का सस्थान है। इस की छात्र सख्या, पढ़ाई, परीक्षा परिणाम तथा शिक्षक मण्डल सब का पथ प्रदर्शन करते हैं। इस के प्रिंसिपल मान्यवर भीमसेन जी बहल शिक्षण क्षेत्र में माने हुए आचार्य हैं। अमेरिका की यात्रा कर आये हैं। यही कालेज दयानन्द यूनिवर्सिटी का रूप लेगा। इस की बड़ी आवश्यकता है। समय की आवाज है। इस लिये हम दयानन्द यूनिवर्सिटी जालन्धर की स्थापना के सर्वसम्मत पारित प्रस्ताव की पूर्ण रूप से समर्थन करके अपनी सरकार से कहना चाहते हैं कि उस देवदयानन्द के पवित्र नाम पर बनाई जाने वाली इस दयानन्द यूनिवर्सिटी के लिये दिल खोल कर धनादि मे सहायता करे। बिना किसी भेदभाव के सारी जनता से अनुरोध करेंगे कि इस दयानन्द विश्वविद्यालय को जल्दी बनाने के लिए प्रस्ताव के अधिकारियों को अपना हर प्रकार का पूरा पूरा तन-मन धन आदि का सहयोग देवें। जितनी जल्दी यह विश्वविद्यालय खुले उतनी बडी शोभा है। देर न करें।

—त्रिलोकचन्द

आर्य युवक संगठन

आर्यसमाज के परिवार के युवको की शक्ति के सगठन की कितनी आवश्यकता है। यह बात सारा समाज बडे जोर से अनुभव करने लगा है। युवक समाज के जीवन में मेरुदण्ड का कार्य किया करते हैं। समाज के प्रारम्भ मे आर्य युवको ने समाज मे कितना कार्य किया—यह आज भी सब की आखो के सामने हैं। इस समय समाज के विविध क्षेत्रो मे जितने भी नेता कार्य करते नजर आते हैं, चाहे स्कूलो-कालेजो व गुरुकुलो के मान्य प्रिंसिपल हो, समाजो के वयोवृद्ध सज्जन हों या और भी महानुभाव हो या कार्यकर्ता सन्यासी महात्मा, प्रचारक, लेखक हो—ये सारे युवक समाजो के सगठन के रूप मे क्षेत्र मे उतरे। तब की श्रद्धा की भावना आज भी इनको सेवा-कार्यों मे प्रेरित करती है। हमे इन नेताओ पर गर्व है। तने ये सारे युवावस्था में ही हैं। महात्मा हंसराज जी के जीवन-सम्पर्क मे आए, स्वामी श्रद्धानंद जी के विचारो को सुना तो इन जीवन ज्योतियोंने प्रकाश देना शुरू करदिया। किन्तु कुछ समय से समाज मे युवा शक्ति कम होती जा रही है। युवकों का ध्यान किसी दूसरी ओर होता जा रहा है। यह कमी सारा समाज देख रहा है। जहां भी दो चार युवक समाज में हैं वहा एक नया उत्साह पैदा हो जाता है। आर्य युवकों की कमी तो नहीं है—किन्तु ये अलग-अलग स्थानों पर बिखरे पडे हैं। यदि इन माला के मनोरम मन को सगठन के सूत्र में परो दिया जाए तो कितना बड़ा काम हो सकता है। जब इन का सगठित रूप देखने को मिलता है वहा दिल प्रसन्नता से उछल पडता है। डी० ए० वी० कालेज जालन्धर मे आर्य युवक समाज के रूप मे जो युवक संगठन डा० वेदीराम जी शर्मा एम० ए० पी० एच० डी सभा मन्त्री की देख-रेख मे तथा सभा प्रधान श्री प्रिंसिपल भीमसेन जी की सरपरस्ती मे चल रहा है। दैनिक रूप मे वहा सन्ध्या व हवन चलता है। विशेष समारोहो पर जो युवा शक्ति का उल्लास का दृश्य देखने को मिलता है उससे तो दिल प्रसन्नता से उछलता है। डा० वेदीराम जी को युवकों से विशेष स्नेह है। वे इन मे चेतना की प्रेरणा भरते रहते हैं। हमारे इस बात पर बड़ा मान है। ऐसे ही हमारे अनेक स्कूल व कालेज हैं जहा युवको का परिवार काम करता है। अबोहर मे प्रिय प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु हैं, कादियां हो या बटाला, गुरदासपुर हो या अम्बाला, करनाल हो या रोहतक हिसार—हिसार हो या लुधियाना प्राय, सारे सस्थानो मे यह युवक परिवार काम मे लगा है।

इस बार विशेष रूप मे सभा के बजट अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित करके इस शक्ति के सगठन की ओर भी सभा ने सब का ध्यान खींचा है। स्कूलों कालेजो के वहा प्रिंसिपल भी थे तथा समाजो के अधिकारी भी मौजूद थे। इसके कुछ बजट भी रखा गया है। इस कार्य को को डा० वेदीराम जी शर्मा के हाथ दिया गया है। प्रिय प्रो० रमेश जी भाटिया डी.ए.वी. कालेज जालन्धर मे स्वय युवक हैं। दिल मे आर्यसमाज के कार्य का आरम्भ से ही अपने माता-पिता का दिया गया जोश है। वह भी भी लगे है। इस युवक सगठन के लिए सारे सहयोग देवे। यह काम करना ही होगा।

ला. गुरुचरणदत्त जी भी गये

यह समाचार बडे ही दुःख-शोक से पढा व सुना जायगा कि अमृतसर लारेंस रोड के बूढे आर्य जनरल, अनथक कार्यकर्ता, आर्यसमाज के जीवन पर्यन्त दीवाने श्री लाला गुरुचरणदत्त जी भी आखे बन्द कर चले गये। इस बूढे नेता ने अपने

(शेष पृष्ठ ४ ९२)

युवक स्तम्भः—

आर्य युवक संगठन की आवश्यकता

[सुरेन्द्र पाल शर्मा] व्यवस्थापक आर्य जगत

हमारा देश सदियों से पराधीन रहा है हमारे तन, मन, धन पर बहुत समय तक अंग्रेजों का अधिकार रहा है। आजादी को प्राप्त करने के लिए कई महारथियों ने अपने जीवन की आहुति इस बलिदान कुंड में दी। कई बहुओं के सुहाग स्वतन्त्र-प्राप्ति हेतु मिट गए। कई माताओं के सपूतों ने आजादी प्राप्त करने के लिए मौत को गले से लगा लिया, फांसी पर झूल गए। आखिर कार वह सौभाग्यशाली दिन नसीब हुआ। अंग्रेजों को यहां से जाना पड़ा। हमारी आजादी हमें प्राप्त हो गई। हम तन, मन, से स्वतन्त्र हो गए परन्तु धन से स्वतन्त्र नहीं हुए। असली अर्थों में हम मन से भी आजाद नहीं हुए। क्योंकि २०० वर्षों की गुलामी की जंजीरों ने हमें तो बांध कर रखा ही था परन्तु हमारे मन को बांध लिया। शारीरिक रूप से हम दास तो बन ही गए थे। मानसिक रूप से भी दास बन गए।

आज भी बहुधा देखा जाता है कि हमारे बहुत भाईयों से सुनने को मिलता है कि जो सुख अंग्रेजों के समय में था वह आजकल प्राप्त होना कठिन है। ऐसी बातें ज्यादातर हमारे बूढ़े महानुभाव ही करते हैं। वह श्री महर्षिदयानन्द जी सरस्वतीकी यह बात भूल गये हैं कि पराधीनता का एक क्षण भी मौत के बराबर है। स्वाधीनता चाहे कैसी भी हो सबसे अच्छी है। उन वृद्ध महानुभावों ने हमारे नवयुवकों को ऐसी कई उल्टी-सीधी बातें करके अपने देश के प्रति उनके मन में विरोधी विचार कूट-कूटकर भर दिए हैं।

आज वर्तमान युग में अगर कोई युग को करवट बदल सकता है तो केवल नवयुवक ही है अपने प्रबल विचारों, उदाहरणों के द्वारा वह सब के सामने यह बात स्पष्ट कर सकता है कि वास्तविक सुख स्वाधीनता में है न कि पराधीनता में। इस बात को हर गांव, शहर यहां तक कि पूरे भारतवर्ष में युवक ही फैला सकता है। यह दूसरी बात है कि इस कार्य को किस ढंग से किया जाए। अकेले युवक से यह काम नहीं हो सकता। इसके लिये हमें एक युवक संगठन बनाना होगा। वृद्ध लोग इस कार्य को नहीं कर सकते क्योंकि ऐसे काम करने की जितनी sPrit जागृति नवयुवकों में होती है उतनी वृद्ध महानुभावों में नहीं होती। वह केवल युवकों के लिए पथ-दर्शक बन सकते हैं समय-समय पर अपने विचार युवकों को देते रहें।

आज समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार की कुरीतियां घर करती जा रही हैं। पत्थर पूजा, पीरों की पूजा, कबरें पूजना आदि तो हर जगह प्रचलित है। हर घर में छोटे से लेकर बड़े तक इसी में मस्त हैं। आर्य युवक ही इस को सुधार सकते हैं उन को सच्ची पूजा किस की की जाए? आदि सब बता सकते हैं। युवकों में जो चरित्रहीनता आ गई है उन को दूर करने के लिये और उन में सत्य विचार भरने के लिये अगर अगर आर्य युवक अग्रसर हो तो बहुत आशा है कि कुछ स्थिति सुधर सकती है। श्री डा० वेदराम जी एम. ए., पी. एच. डी. मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं श्री रविन्द्र जी महामन्त्री आर्य युवक संगठन पंजाब भी समय समय पर अपने विचार युवकों के समक्ष रखते हैं। उन्होंने पूरे पंजाब में घूम कर आर्य युवक संगठन को मजबूर किया है। हमें रविन्द्र जी जैसे युवक पैदा करने हैं जो इस युवक संगठन को तन, मन, धन से सेवा करें। अगर समाज का सुधार चाहिये तो आर्य युवको आगे बढ़ो। देश में फैली हुई बुराईयों का नाश करने के लिये कोई ठोस कदम उठाओ। हर आर्य समाजों के महानुभावों से प्रार्थना है कि अपने-अपने नगर में युवकों का संगठन करें। अगर आप समय नहीं निकाल सकते तो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर से पत्र व्यवहार करें ताकि यहां से आर्य युवक आप के नगरों में आ कर आर्य युवक संगठन बना सकें।

★ साहस भय पर विजय पाता है, धैर्य क्रोध तथा चिड़चिड़ेपन को दूर करता है। प्रेम घृणा पर विजय पाता है। इस प्रतिपक्ष भावना का कीजिए।

ला० गुरचरणदत्त जी भी गए

(पृष्ठ ३ का शेष)

जीवन में समाज का कितना महान् किया—यह तो आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर को देख कर ही अनुमान लगाया जा सकता है। समाज के विशाल भवन के निर्माण एवं समाज कार्य में तो उनका कितना योगदान मिला—यह जब कोई अमृतसर समाज का इतिहास लिखेगा तो चर्चा होगी। लम्बे समय तक समाज के मंत्री रह कर सेवा करते रहे। सारा जीवन समाज सेवा में लगा दिया। सारा परिवार ही तथा सारे आप के भाइयों के परिवार में आर्यसमाज का सच्चा रूप देखने को मिलता है। यज्ञ के बड़े प्रेमी थे। कम्पनी बाग में वर्षों से सत्सङ्ग चलाते थे। अनुभव से कहा जा सकता है कि वह सच्चे आर्य थे। आर्यजगत् उनके सुपुत्रों, भाइयों व परिवार से संवेदना प्रकट करता है। प्रभु धैर्य प्रदान करें।

आदर्श विवाह की धूम

सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज गुरदासपुर कालेज विभाग के माननीय मन्त्री व बी. ए. बी. हाई स्कूल गुरदासपुर के योग्य अध्यापक श्रीयुत मास्टर रामशरणदास जी के युवक सुपुत्र प्रिय श्री. कुन्दनलाल जी बी. ए. बी. टी. का शुभ विवाह जालन्धर में तहसील दार श्री. तिलकराज सोनी पक्का बाग की सुपुत्री सौभाग्यशाली कमलेश जी के साथ जालंधर में बड़े ही समारोह से सम्पन्न हो गया। बारात निवास पर सायं को यज्ञ किया गया फिर यज्ञ के साथ प्रिय कुन्दन लाल जी को शुभाशीर्वाद के साथ सेहरा मुकुट बांधा गया। बारात में गुरदासपुर से श्री बलदेव सिंह जी महाजो एडवोकेट, प्रिंसिपल मल्लाजी आदि परिवार के व गणमान्य सज्जन पधारे थे। कन्यापक्ष की ओर से बारात का बड़ा ही सम्मान-स्वागत किया गया। पं. त्रिलोक चन्द्र शास्त्री ने विवाह संस्कार कराया। प. मदन मोहन जी ने गीत गाये। आदर्श विवाह था—युगल जोड़ी योग्य तथा शिक्षित थे। खूब पुष्प वर्षा से सबने आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर वेदप्रचार में मान्य मन्त्री जी ने ४२ रु. दान दिए। दोनों परिवारों को बधाई हो।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब का यह वार्षिक साधारण अधिवेशन (१) आर्य शिक्षण संस्थाओं द्वारा की गई राष्ट्र सेवाओं को ध्यान में रखते हुए (२) पंजाब भर में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे आगे होने के कारण (३) तथा भारत की स्वतन्त्रता में सर्वाधिक सहयोग प्रदान करने के नाते आज भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं की रक्षा के हेतु यह आवश्यक समझता है कि महर्षि दयानन्द जी महाराज के मन्तव्यों के अनुसार उनकी स्मृति में विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए।

इस अधिवेशन की यह निश्चित धारणा है कि यदि वर्तमान शिक्षा पद्धति को साथ रखना कुछ अनिवार्य भी हो तो इसके साथ वैदिक शिक्षा पद्धति को अपना कर चारित्रिक शिक्षा को लागू करना अत्यन्त जरूरी है। यह प्रयोग दयानन्द विश्वविद्यालयों बना कर सरलता पूर्वक सफल हो सकता है।

अतः यह अधिवेशन पंजाब सरकार से विशेष रूप में साग्रह अनुरोध करता है कि वह शीघ्रातिशीघ्र अपने क्षेत्र में दयानन्द विश्वविद्यालय निर्मित कर भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता को सुदृढ़ बनाने में सहायक बने।

प्रस्तावक-डा० वेदी राम शर्मा सभा मन्त्री

अनुमोदक—श्री दरबारीलालजी एम० ए० मन्त्री दिल्ली उप सभा

आर्यसमाज गोबिन्द नगर कानपुर का निर्वाचन

आर्यसमाज गोबिन्द नगर कानपुर का आगामी आगामी वर्ष के लिए सर्व सम्मिति से निम्न प्रकार से निर्वाचन सम्पन्न हुआ है—

अध्यक्ष—श्री देवीदास आर्य
उपाध्यक्ष—श्री द्वारिकानाथ उप्पल
मन्त्री—श्री शिवदयाल टूटेजा
उप-मन्त्री—श्री शिवकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री शुभकुमार वोहरा
पुस्तकाध्यक्ष—श्री सन्तोषपाल जी
निरीक्षक—श्री वेद प्रकाश शर्मा
अन्तरंग सदस्य—सर्वश्री गिरधारी लाल प्रताप, दीवान चन्द अरूण, मनोहर लाल भाटिया, धर्मवीर हांडा, लाजपतराय।

डी. ए. वी. संस्थाओं में हिन्दी जारी रहेगी

केवल पंजाबी पढ़ने से राज्य के छात्र पिछड़ जाएंगे

प्रिंसिपल भीमसेन बहल से विशेष इन्टरव्यू

शिक्षा संस्थाओं के लिए भाषा नीति तैयार करने से पूर्व शिक्षा शास्त्रियों की राय ली जाए

पंजाब के प्रमुख शिक्षा शास्त्री डी. ए. वी. कालेज जालन्धर के प्रिंसिपल भीमसेन बहल ने पंजाब सरकार के कर्णधारों से आग्रह किया है कि राज्य में शिक्षण संस्थाओं के लिए कोई भाषा नीति निर्धारित करने से पूर्व वे शिक्षा शास्त्रियों की राय जरूर लें।

इस प्रसंग में उन्होंने स्कूल व कालेज शिक्षा के लिए मुख्याध्यापकों प्रिंसिपलों, उपकुलपतियों और अन्य प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों पर आधारित दो सलाहकार समितियों के गठन का सुझाव दिया है और कहा है कि सलाहकार समितियों की सिफारिशों के प्रकाश में ही शिक्षण संस्थाओं के लिए कोई भाषा नीति निर्धारित की जाए।

हिंदीमिलाप के स्टाफ रिपोर्टर के साथ एक विशेष भेंट के दौरान श्री बहल ने राजनीतिज्ञों को परामर्श दिया कि वे भाषा के मामले में किसी तरह की जल्दबाजी मत करें। प्रस्तावित सलाहकार समितियों को यदि स्कूल, कालेज और विश्व-विद्यालय स्तर पर शिक्षा, माध्यम तय करने में यदि एक वर्ष का समय भी लग जाता है तो लग जाने देना चाहिए लेकिन शैक्षणिक ढांचे में जो भी परिवर्तन जिस स्तर पर कब और कैसे करना है : इसका फैसला एक ही बार कर लेना चाहिए। उन्होंने कहा—मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि राजनीतिज्ञों को शिक्षा के मामले में बच्चों के जीवन से खेलना नहीं चाहिए।

प्र०—पंजाब के मुख्य मन्त्री सरदार गुरनामसिंह, उनके कुछ सहयोगियों ने बार-बार कहा है कि चूंकि पंजाब की राजभाषा पंजाबी है इसलिए स्कूलों में प्रथम श्रेणी से पंजाबी भाषा को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाएगा। आप एक शिक्षा-शास्त्री के रूप में क्या मुख्यमन्त्री के कथन से सहमत हैं?

उ०—निस्सन्देह यह एक तथ्य है कि पंजाबी पंजाब की मुख्य भाषा है और यह भी एक सच्चाई है कि हिंदी समूचे भारत की सम्पर्क भाषा है। यदि पंजाब के लोगों को स्वयं को पंजाब तक ही सीमित नहीं रहना तो उन्हें सम्पर्क भाषा हिंदी का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। केवल एक ही भाषा पंजाबी पढ़नेसे हम कूपमंडूक बन जाएंगे। मैं तो इस राय का हूं कि राज्यभाषा और राष्ट्र की सम्पर्क भाषा दोनों का बराबर का दर्जा होना चाहिए और पहली श्रेणी से दोनों भाषाएं एक साथ पढ़ाई जानी चाहिए।

प्र०—क्या पांच वर्ष के बच्चे को एक साथ दो भाषाएं पढ़ाने से उस पर बोझ बढ़ नहीं जाएगा?

उ०—आज भी माडल स्कूलों में बच्चे हिंदी और अंग्रेजी एक साथ पढ़ते हैं। मैं नहीं समझता कि हिंदी और पंजाबी को जिनमें कोई बड़ा अन्तर नहीं है, प्रथम श्रेणी से एक साथ पढ़ाने से बच्चों पर बोझ पड़ेगा। एक बात और भी है, वह यह है कि चौथी या पांचवीं कक्षा से बच्चों को जो भाषा पढ़ाई जाए उस पर उनका पूरा 'ग्रिप' नहीं रहता, उसे वे पूरी तरह सीख नहीं पाते।

प्र०—पंजाब में प्रथम श्रेणी से पंजाबी पढ़ाने और पंजाबी को शिक्षा का माध्यम बना देने का एक साधारण पंजाब निवासी पर क्या कोई प्रतिकूल असर होगा?

उ०—पंजाब के लोग बहुत परिश्रमी हैं उन में हर काम में अग्रणी होने की क्षमता है, लगन है। यदि पंजाब की शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा का माध्यम पंजाबी होगा तो अखिल भारतीय आधार पर वे पिछड़ जाएंगे। केन्द्रीय सेवाओं के लिए प्रतियोगिताओं में वे सफल नहीं हो सकेंगे। भारत भर में आज हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित हो रही है। पंजाबी के शिक्षा माध्यम होने से हिन्दी में महारत नहीं रहेगी और निश्चय ही इस का नुकसान होगा। पंजाब के लोग केन्द्रीय सेवाओं में हैं या सेना में काम करते हैं, वे कभी नहीं चाहेंगे कि उनके बच्चों को हिन्दी का ज्ञान अधूरा रहे या बच्चों को सिर्फ पंजाबी में महारत हो क्योंकि वे समझते हैं कि हिन्दी न जानने वालों की पंजाब से बाहिर कोई पूछ नहीं होगी।

प्र०—त्रि-भाषा फार्मूले के बारे में आपका क्या विचार है?

उ०—प्रथम स्थान सम्पर्क भाषा हिन्दी को दिया जाए, उसके बराबर का दर्जा प्रादेशिक भाषा को और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी पढ़ाई जाए। आज कल स्कूलों में छठी श्रेणी से अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। इस अवस्था में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

प्र०—कुछ प्रमुख शिक्षाविदों की राय है कि स्कूल और कालेज दोनों स्तरों पर शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषा होना चाहिए?

उ०—मैं इस विचार से कदापि सहमत नहीं। शिक्षा का माध्यम ऐसा नहीं होना चाहिए जिस से प्रांतीयता की भावना सुदृढ़ हो और राष्ट्रीय दृष्टिकोण में दुर्बलता आए। विज्ञान और टैक्नालोजी की पुस्तकें तो अभी अंग्रेजी में ही हैं। ये दोनों विषय फिलहाल अंग्रेजी में पढ़े बिना गुजारा नहीं। 'ह्यूमैनिटि' विषयों में छात्रों को यह छूट है कि वे चाहे प्रश्न पत्र हिन्दी में हल करें, चाहे पंजाबी में। ये व्यवस्था बनी रहनी चाहिए। जहां तक कालेजों का सम्बन्ध है वहां शिक्षा माध्यम प्रादेशिक भाषा कदापि नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम अपने बच्चों को पंजाब तक सीमित नहीं रखना चाहते। पंजाबी भाषा का बड़े से बड़ा समर्थक भी अपने बच्चे का कूपमंडूक बनाना पसन्द नहीं करेगा। सिर्फ एक ही भाषा पर निर्भर करना अपने बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करना है।

> आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना और पंजाब में हिन्दी भाषा की स्थिति पर विचार करने के हेतु डा० वेदीराम जी शर्मा सभा मन्त्री ने सभा प्रधान प्रि० भीमसेन जी बहल के आदेशानुसार प्रस्ताव प्रस्तुत किए। दैनिक समाचार-पत्रों ने इनका अच्छा स्वागत किया। दैनिक मिलाप के सम्पादक महोदय ने अपने साक्षात्कार द्वारा उक्त प्रस्तावों पर सभा प्रधान जी से जो स्पष्टीकरण प्राप्त किया। वह कितना ठोस और अनुभव युक्त और श्रेयस्कर है यह सभी के लिए मार्गदर्शक होगे।
>
> —सम्पादक

प्र०—क्या आप राज्य सरकार की वर्तमान भाषा-नीति से सहमत हैं कि जिस बच्चे के माता-पिता चाहे पंजाबी पढ़ाए और जिसके चाहे हिन्दी पढ़ाए?

उ०—यह प्रबन्ध ठीक नहीं है। इसका कोई अच्छा नतीजा निकलने वाला नहीं है। मौजूदा पंजाब में, जैसा कि मैंने पहले कहा पंजाबी भाषा प्रमुख भाषा और हिन्दी देश की सम्पर्क भाषा है। अत: सभी बच्चों के लिए पहली श्रेणी से एक साथ दोनों भाषाओं का पढ़ना अनिवार्य होना चाहिए।

प्र०—लेकिन सुनते हैं कि पंजाब सरकार प्रथम श्रेणी से अनिवार्य रूप में केवल पंजाबी पढ़ाने की नीति को ही चलाना चाहती है और इस पर अमल के लिए वह हर सम्भव पग उठाएगी।

उ०—जहां तक डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति का सम्बन्ध है उसकी यह घोषित नीति है कि डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी की शिक्षा बन्द नहीं होगी। जैसे अब हिन्दी पढ़ाई जाएगी चाहे इसके लिए कुछ भी मूल्य क्यों न अदा करना पड़े। सरकार की ओर से ग्रांटें लेनी हैं या नहीं लेनी यह अलग विचारणीय विषय है। कोई भी भारतीय भारत की सम्पर्क भाषा हिन्दी की उपेक्षा करने का जोखिम नहीं उठा सकता।

श्री भीमसेन बहल ने मुख्यमन्त्री सरदार गुरनामसिंह के इस वक्तव्य

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पंजाब में हिन्दी भाषा की स्थिति

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाना, हिमाचल और जम्मू-काश्मीर के वार्षिक साधारण अधिवेशन चण्डीगढ़ में ९-३-६९ को सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

महर्षि स्वामी दयानन्दजी महाराज की दृष्टि में हिमालय से लेकर हिन्द-महासागर तक फैला हुआ यह भू-प्रदेश, जलवायु तथा प्राकृतिक स्थिति के कारण खान-पान, रहन-सहन, और बोलियों में भिन्न-भिन्न रूप होते हुए भी, सांस्कृतिक दृष्टि से एक ही राष्ट्र है। लगभग दो अरब वर्षों से यहां पर एक ही जीवन धारा बहती रही है। समूचा देश एक ही परम्परा का अनुयायी रहा है। इसी आधार पर महर्षि ने एक आर्य साम्राज्य का स्वर्णिम स्वप्न इस राष्ट्र के लिए लिया था।

किन्तु आज देश में भाषा के आधार पर पृथक-पृथक प्रान्तों की रचना कर दी गई है। अंग्रेजी शासन काल से यहां की जनता को मार्ग-भ्रष्ट करने के लिए भिन्न-भिन्न सांस्कृतियों का पाठ पढ़ाया जाता था। इस भावना के पीछे राष्ट्रीय जीवनदर्शन को समाप्त कर देना ही रहा। किंतु आज भाषा का नाम लेकर प्रान्तों का विभाजन करना अंग्रेजों की उसी विभाजक प्रवृत्ति को आश्रय देना नहीं तो और क्या है?

इसी सन्दर्भ में पंजाब की स्थिति तो इस प्रकार की नीति ने और भी भयावह बना दी है। सीमाप्रांत होने के कारण यहां लोगों में राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के लिए मर मिटने की प्रवृत्ति को हर सम्भव उपायों द्वारा बनाना आवश्यक है। किंतु इस प्रदेश में भाषा विवाद ने अपना जो विषैला प्रभाव डाल कर भाई को भाई से अलग कर दिया। यह सभी के समक्ष कई वर्षों से राजनीतिक प्रपंच दिखला रहा है। स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् आज सांस्कृतिक जीवन में परकीय भाषा को सदा के लिए बनाए रखना अत्यन्त घृणित और राष्ट्रीय अपमान है। अत: आज संविधान द्वारा स्वीकृत हो जाने के पश्चात् हिन्दी भाषा के प्रसार प्रचार और व्यावहारिक जीवन में कार्यान्वित कराने का प्रबन्ध होना भी दृष्टियों से आवश्यक था। भाषा प्रयोग से ही पनपती है इसलिए हर एक क्षेत्र में स्वकीय भाषा, हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना ही सरकार ध्येय होना चाहिए।

किन्तु पंजाब में कुछ राजनीतिक महानुभावों और संस्थाओं की नीति राष्ट्र भाषा हिन्दी को पीछे फेंक कर गुरमुखी लिपि में पंजाबी को हर क्षेत्र में लागू करने की रही है। इस मार्ग के पीछे कुछ एक घातक भावना भी अधिक कार्य करती प्रतीत हो रही है। कई क्षेत्रों में तो इस नीति की आड़ में नागालैण्ड, मिजोलैण्ड के समान सिख-होमलैण्ड के भी नारे लगाने से नहीं हिचकिचाते।

आर्य समाज का दृष्टिकोण सदा ही उदार और निष्पक्ष रहा है। आर्य नेता इस प्रश्न को सदा राष्ट्रीय दृष्टि से सुलझाने का यत्न करते रहे हैं। समस्त पंजाब, हरियाणा हिमाचल के आर्य जगत का प्रतिनिधित्व करने वाली इस सभा की हमेशा मांग रही है कि—

१—भाषा का मामला शिक्षा के साथ सम्बन्ध रखता है। उसे राजनीतिक आधार पर सुलझाने लगता है।

२—बच्चों की शिक्षा का अधिकार माता पिता का है वे अपनी इच्छानुसार हिन्दी या पंजाबी जिस भाषा में शिक्षा दिलाना चाहें दिला सकते हैं। इससे सरकार द्वारा किसी प्रकार की भी अनिवार्यता होना नागरिकता के सामान्य अधिकारों पर कुठाराघात है।

३—पंजाब सदा से द्विभाषा प्रान्त रहा है आज पुनर्गठन हो जाने के पश्चात् भी यहां हिन्दी भाषाई लोग पर्याप्त संख्या में रहते हैं अत: उनके अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें अपने अधिकारों को प्राप्त करने में सर्व प्रकार की सुविधायें प्रदान करना सरकार का कर्त्तव्य है।

आर्य प्रादेशिक सभा समय-समय पर इन तथ्यों को सरकार और जनता के समक्ष रखती रही है तथा आज अपने वार्षिक अधिवेशन में उसी को उसी रूप में पुन: प्रस्तुत कर सरकार से संवैधानिक तथ्यों को दृष्टि में रख कर पंजाब के हिन्दी भाषी लोगों के अधिकारों की रक्षा करें अन्यथा इसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न सभी परिस्थितियों का उत्तरदायित्व उस पर (सरकार पर) होगा।

प्रस्तावक—डा० वेदीराम शर्मा
सभा मन्त्री

अनुमोदक—प्रि० ओ३म्प्रकाश
जी बग्गा होशियारपुर

डी.ए.वी. संस्थाओं में हिंदी जारी रहेगी

(पृष्ठ ५ का शेष)

की भी चर्चा की कि पंजाब सरकार का अमृतसर और जालन्धर में दो विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव है और कहा है कि मुझे यह बहुत खुशी है कि सरकार गुरुनानक देव जी की याद में अमृतसर में गुरु नानक विश्वविद्यालय कायम करने जा रही है कि सरकार जालंधर में जो विश्व विद्यालय कायम करना चाहती है वह देश के महान् सुधारक महर्षि दयानन्द के नाम पर होना चाहिए। दोनों महापुरुषों ने मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य किया। गुरु नानक देव [illegible] के समान महर्षि दयानन्द से भी हमारी कुछ भावनाएं जुड़ी हुई हैं। श्री बहल सुझाव दिया कि डी.ए.वी. कालेज ने जालन्धर को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में बदला जा सकता है।

आर्यसमाज विक्रमपुरा का वार्षिक चुनाव

जालन्धर:—आर्यसमाज विक्रमपुरा का वार्षिक चुनाव १५-३-६९ सायंकाल प्रि० कुमारी विद्यावती जी आनंद जी की प्रधानता में सम्पन्न हुआ। मन्त्री महोदय ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई। तत्पश्चात प्रधान महोदयने अपना १९६८-६९ मन्त्री मंडल भंग करके सभी सदस्यों से प्रार्थना की कि वे १९६९-७० के लिए अधिकारी गणों का चुनाव करें।

श्री देशराज जी महाजन ने कुमारी विद्यावती जी का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया तथा श्री प्यारे लाल जी बेरी ने अनुमोदन किया। तथा सर्व सम्मति से कुमारी विद्यावती जी आनन्द को १९६९-७० के लिए प्रधान पद के लिए निर्वाचित किया गया। तथा इन्हें अधिकार दिया गया वह अपना मन्त्री मण्डल स्वयं मनोनीत कर लें। —मन्त्री

प्रिंसिपल श्री त्रिलोकीनाथ जी का हार्दिक धन्यवाद

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन प्रत्येक वर्ष अलग अलग स्थानों पर संयोजित होता है। इस हेतु आर्य समाजें सभा को निमन्त्रण भेजती हैं। हमारा सौभाग्य है कि इस वर्ष आर्य समाज डी० ए० वी० कालेज सैक्टर १० चण्डीगढ़ ने निमन्त्रण दिया। यह अधिवेशन बड़ी सफलतापूर्वक ९ मार्च १९६९ को २ बजे से ५ बजे तक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज के प्रधान प्रि० त्रिलोकीनाथ जी व मन्त्री प्रो० कृष्ण कुमार जी धवन ने रात दिन लगा कर सभा के प्रतिनिधियों का स्वागत व आतिथ्य का प्रबन्ध किया। दोपहर को सहभोज और सायंकाल स्वल्पाहार का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध था।

प्रत्येक उपस्थित प्रतिनिधि इन भाइयों की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे थे।

सभा की ओर से हम सभी प्रि० त्रिलोकीनाथ जी के अनुगृहीत हैं।

वेदीराम शर्मा
सभा मन्त्री

साप्ताहिक सत्संग

आर्य समाज विक्रम पुरा का साप्ताहिक सत्संग रविवार २३-३-६९ को प्रात: ८-३० बजे आरम्भ होगा। संध्या, हवन, भजनों के पश्चात श्री आदरणीय देशराज जी महाजन का महत्वपूर्ण उपदेश होगा।

मनुष्य और उसकी उन्नति के साधन

(श्री वैद्य ज्ञान चन्द M. D. H. House no 201 W. L
बस्ती गुजां जालन्धर)

संसार के जिस ओर दृष्टि डालें हमें तीन प्रकार की योनियां दिखाई देती हैं।

१. कर्म योनि

२. भोग योनि

३. उभय योनि

कर्म योनि भी दो प्रकार की है।

१. अमैथुनी

२. मैथुनी

सृष्टि के आरम्भ में बिना माता पिता के मुक्ति से लौटे हुए जीव पैदा हुए उन्हें अमैथुनि योनि कहते हैं। जैसे सृष्टि की उत्पत्ति के समय अग्नि वायु आदि ऋषि बिना माता पिता के उत्पन्न हुए। किंतु जो माता पिता के संयोग से पैदा हुए उन्हें मैथुनी योनि कहते हैं। उनका जन्म केवल मोक्ष प्राप्ति के साधन और मुक्ति पाने योग्य ज्ञान प्राप्त करने के लिये होता है। ऐसे जीव जन्म-जन्मान्तरो तप किया होता है। वह अपनी थोड़ी सी कमी को पूरा करने के लिये जन्म लेते हैं। उन पर प्रभु की अपार दया होती है, और कर्म योग ज्ञान योग द्वारा किसी फल की इच्छा किये बिना निष्काम भावना से कर्म करते हैं। इसलिए वह मुक्त हो जाते हैं। इन सब में परमेश्वर की विभूति है। विभूति का अर्थ है, ऐश्वर्य प्रभाव इस लिए विभूति का योग अर्थ हुआ ऐश्वर्य शोभा प्रभाव प्रगट करने का कौशलमय ईश्वरीय सामर्थ्य इस लिए परमेश्वर की विभूति वहा समझे किन्तु जहा ऐश्वर्य नही जहां शोभा नही जहा प्रभाव नही, दरिद्रता निरुपता और दुर्बलता है वहा परमेश्वर की विभूति नही। श्रीराम श्री कृष्ण, महात्मा बुद्ध, भगवान शंकर, स्वामी दयानन्द आदि-आदि महर्षियो मे परमेश्वर की विभूतिया भी इस लिए वह सब पूजा के योग्य हैं। पूजा का यह अर्थ नही कि हम इन की मूर्तिया स्थान-स्थान पर स्थापित करके लाखों रुपये नष्ट करें। वास्तव में इनकी पूजा इनके गुणों पर शांति पूर्वक मनन करके उनके पद चिन्हो पर चलता है। दूसरी योनि है भोग योनि इस में केवल भोग ही भोगा जाता है। कर्म नहीं किया जाता जैसे पशु आदि तीसरी योनि में पिछले कर्मों का फल भी भोगा जाता है। और आगे के लिये कर्म भी किये जाते हैं। इसे उभय योनि-अर्थात मनुष्य योनि भी कहते हैं। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है। अतः मनुष्य इसी योनि द्वारा अपने कर्मानुसार भिन्न-भिन्न योनियों चोलो अथवा शरीरों को धारण करके भोग भोगता है। यही कारण है मनुष्य योनि सब प्राणियों में श्रेष्ट होने के कारण मनुष्य को सर्वोत्तम जीव कहा है। परमात्मा ने केवल मनुष्य को ही अपने मिलाप के साधन प्रदान किये हैं। जो जीव मनुष्य हो कर भी अपने मन में औरों के लिये कुछ दुख दर्द नहीं रखता अपने भोग विलास मे ही मस्त है परमात्मा के पुत्रो के कष्ट कलेशों में कुछ सहानुभूति भी नही रखता उसे मनुष्य कहलाने का हक नही। जैसे उर्दू कवि ने कहा है।

जफर आदमी उस को न जानिएगा
चाहे कैसा ही साहिबे फहमो जका
जिसे ऐश पे यादे खुदा न रहा
जिसे तेश पे खोफे खुदा न रहा।

इसलिए जिस मनुष्य पे उपरोक्त गुण न हों उसे मनुष्य समझना और कहना बड़ी भूल है। एक और कवि ने क्या सुन्दर कहा है। दुःख संकट बंटवान को नर सृष्टि प्रभु ने रची आज्ञा पालन के लिए देव जन कुछ कम न थे।

इसलिए हमे मनुष्य को है।गा से सोचना होगा कि हमारा क्या कर्तव्य है। भगवान ने मनुष्य को संसार में क्यों भेजा जीव को यहा आ कर क्या करना चाहिए। जन्म और मृत्यु क्या है। मनुष्य योनि में आकर क्या कमाई की पशुओं से अपनी अवस्था उच्च है इसको कैसे सिद्ध किया (कारण जो मनुष्य पशु वृत्ति से ही जीवित हैं उनको जीना ही धिक्कार है।

वेद भगवान भी कहतेहैं कि हे मनुष्यो सुनो ईश्वर ने तुम्हे मनुष्य बनाया है। केवल ऊपर उठने के लिए नीचे गिरने के लिए नही। अतः हमें यहां विचारना है कि वह कौन-कौन से कर्म है जो मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर ले चलते हैं।

श्री मद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय में मनुष्य के दो भागों का वर्णन मिलता है।

१. दैवी वृत्ति
२. राक्षसी वृत्ति

दैवी वृत्ति से मनुष्य ऊपर उठता है। और राक्षसी वृत्ति से अधोगति को प्राप्त होता है। इसलिए हमें दैवी वृत्ति के लिए निम्न साधनो पर विचार करना होगा जिससे मानसिक उन्नति होकर सच्ची शांति प्राप्त हो सके। वह साधन यह हैं।

स्वाध्याय

स्वाध्याय का अर्थ है। अपनी सत्ता का अध्ययन करना आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना सत्य विद्या का अभ्यास आत्मा परमात्मा ब्रह्म का सत्य स्वरूप जानने के लिए अध्ययन करने का नाम स्वाध्याय है। अतः मनुष्य को ऐसे ग्रन्थ नही पढ़ने चाहिए जिनसे रुचि बिगड़े, मन मे कुवासना पैदा हो। उत्तम ग्रन्थो के अध्ययन से मनुष्य के विचार विचार विशाल होते हैं। और कोई सत्य विद्या इससे बाहर नही। जो कुछ भी मानवीय हित के लिए जानने योग्य है वह सब स्वाध्याय द्वारा प्राप्त हो सकता है। यह ठीक है स्वाध्याय से प्राप्त ज्ञान व्यक्ति विशेष में रहता है। मगर यह वैयक्तिक होने पर भी फल इसका प्राणीमात्र पर प्रत्यक्ष दिखता है। जब हम स्वाध्याय करते हैं तो निश्चय जानिए कि हम भगवान और ऋषियों से सत्संग करते हैं। और सीधे रूप में उनसे प्रसाद पाते हैं और कितने ही संशय अपने आप मिट जाते हैं। इस लिए नित्य प्रतिवेद उपनिषद् आदि-श्रेष्ठ ग्रन्थो का ही स्वाध्याय करे इससे बेड़ा पार हो जाएगा यह निश्चय जानिएगा।

तप

यह सब का मूल है कारण कोई पुरुषार्थ कष्टो के सहन किए बिना हो नही सकता और नही कुछ प्राप्त हो सकता है। इसलिए धार्मिक जीवन व्यतीत करन पर जो कष्ट आए उन्हें आनन्द के साथ सहन करने का नाम तप है। इसके तीन भेद है। शारीरिक मानसिक वाचिक जैसे शरीर को सरदी-गरमी सहन करने की शक्ति बढाना मन को शांत करना अश्लील शब्द मुख से न बोलना दान देना, अध्ययन करना, सत्य का पालन करना, सरलता का आचरण करना, इन्द्रियों का दमन करना, विकारो का शमन करना, यज्ञ करना, अनशन करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना यह सब तप है। इस प्रकार अनेक तप मनुष्य को दैनिक जीवन मे दृष्टिगोचर होते हैं। उन्हे करके अपना जीवन सफल बनाए जो दुष्प्राप्य है जो दुष्प्राप्य है, जो दुराराध्य है, जो सिद्ध होना कठिन है और जिसके विषय मे उत्साह भंग होता है। वह सब तप से सिद्ध होते हैं। अहिंसा, सत्य भाषण, दान, इन्द्रिया, निग्रह इनसे भी तप श्रेष्ठ है। (क्रमशः)

संतों, भक्तों के अमूल्य उपदेश

—संग्रहकर्ता :—[श्री पं० ठाकुर दत्त शर्मा वैद्य]

प्रभु भरोसा छाडि के, करैं भरोसा और।
सुख सम्पत्ति की क्या कहू, नरक न पावैं ठौर॥
क्या मुख से हंस बोलिये, तुलसी दीजे रोय।
जन्म अमोलक आपना, चले अकारथ खोए॥
नारायण हरिभजन मे, तू क्यो देर लगाए।
क्या जानै या देर मे, श्वास रहै की जाए॥
अपनो साखो आप तू निज मन माहि विचार।
'नारायण' जो खोट है ताको तुरत निकार॥
दो बातन को भूल मत, जो चाहउ कल्याण।
नारायण इक मौत को, दूजै श्री भगवान॥
विद्यावन्त स्वरूप गुण, सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरि भक्ति बिन, यह सब ही हैं रोग॥
नारायण सतसंग कर, सीख भजन की रीत।
काम-क्रोध मद लोभ में, गई आरबला बीत॥
बांट खाय हरि को भजै, तजै सकल अभिमान।
'नारायण ता पुरुष को' उभय लोक कल्याण॥
जो लाखि तब जानिए, जगसो रहे उदास।
नाम रटै निरद्वन्द हो, अनहद पुर में बास॥
कथा कीर्तन करन की, जाके निशि दिन रीति।
कह 'कबीर' का दास से, निश्चय कीजे प्रीति॥

वार्षिक,

सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपने-अपने समाज के उत्सवों का प्रबन्ध कर सभा कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें जिससे प्रबन्ध में सुविधा हो सके। योग्य उपदेशकों का भी कार्यक्रम बनाया जा सके।

वेदीराम शर्मा
सभा मन्त्री

पं. ओमप्रकाशजी महोपदेशक सभा छोड़ गए

आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री पं० ओमप्रकाश जी ने स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण सभा से त्याग पत्र दे दिया है। वे १५ मार्च १९६९ ई० से सभा की सेवा से मुक्त हो चुके हैं। सभी सम्बद्ध आर्य समाजें सूचित रहने की कृपा करें।

वेदी राम शर्मा
सभा मंत्री

उपदेशकों की आवश्यकता

आर्य प्रादेशिक प्र० नि० सभा पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर को अनुभवी, योग्य और विद्वान उपदेशकों की अत्यावश्यकता अनुभव हो रही है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। इच्छुक व्यक्ति अपनी योग्यता आदि के प्रमाणपत्र सहित तुरन्त निम्न पते पर आवेदन पत्र भेजने का कष्ट करें।

—वेदीराम शर्मा, सभा मन्त्री

हिमाचल प्रदेशमें आर्य प्रा. प्र. नि. सभा का प्रचार कार्य

वार्षिक उत्सव एवं प्रचार

इस वर्ष प्रदेश में आर्य समाज जोगिन्द्र नगर, धर्मशाला, नगरोटा बगुआ, मण्डी, कण्डाघाट, हमीरपुर, नूरपुर ऊना तथा सुन्दरनगर कालोनी में सभा की ओर से प्रचार कार्य हुआ तथा कुछ एक समाजों ने सभा के सहयोग वार्षिक उत्सव सम्पन्न किए हैं। इस वर्ष सुन्दर नगर, मण्डी, धर्मशाला में पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपनी मधुर कथा द्वारा वेद का प्रचार किया।

[प्रग]तिशील कदम समाज विकास संबंधित

(क) हिमाचल प्रदेश में ईसाई मिशनरियोंके बढ़ते प्रचारका मुकाबला करने हेतु सर्वप्रथम महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी के अवसर में आर्य समाज जोगिन्दर नगर के अन्तर्गत लाला लाजपतराय पुस्तकालय की स्थापना की है इस वर्ष आर्य समाज ने पं० लेखराम वैदिक वाचनालय तथा पुस्तकालय की स्थापना की जिससे नवयुवक वर्ग वाचनालय से लाभ उठा रहे हैं तथा आर्यसमाज के सम्पर्क में नवयुवकों को लाने में वाचनालय सहायक सिद्ध हो रहे।

(ख) सर्वश्री सुन्दरनगर कालोनी के पदाधिकारियों के कठिन परिश्रम एवं उद्योग से [...] प्रकार के भूमि प्राप्त [...] भवन का प्रथम चरण इस वर्ष पूर्ण हो चुका है शिवरात्री पर ब्रह्मचारी सतीशचन्द्र ने वैदयज्ञ कराया तथा श्री पदमदेव जी मन्त्री हिमाचल प्रदेश ने आर्य-समाज के संगठन में आने के लिये कालोनी के निवासियों को प्रेरित किया जोगिन्द्रनगर तथा मण्डी के आर्य भाइयों ने इस महोत्सव में भाग लेकर प्रदेश की नई समाज को प्रोत्साहित किया। बिलासपुर न्यू-टाउनशिप में भी धर्मदास प्रधान आर्यसमाज ने आर्यसमाज मन्दिर के लिये टूरिस्ट रैस्ट हाऊस के सामने भूमि प्राप्त कर ली है तथा भवन निर्माण हेतु सामग्री तथा धन संग्रह की ओर पग उठाये जा रहे हैं।

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाबके निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी में) १·५०
१२. संध्या पर व्याख्यान-ले०महात्मा हंसराज जी १·००
१३. Dayanand His Life & Work(ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २.००
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र(ले० आनन्द स्वामीजी महाराज)१.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M.A.) ०·५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. ·५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, ·५०
२१. मुंडक उपनिषद(ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०·३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना(ले० स्वामी सोमानन्द जी)उर्दू में ०·३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १·२५
२४. सीता(ले. आनंदस्वामीजी)०·३७
२५. पद्मनी (,, ,, ,,)०·३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० [...] जी M.A.) अंग्रेजी में १.२५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

राजधानी में मनाये जाने वाले आर्य समाज स्थापना दिवस पर

श्री चौ० चरणसिंह जी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री उत्तर प्रदेश भाषण देंगे

आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से दिल्ली में २३ मार्च रविवार सायं ४ बजे आर्य समाज स्थापना दिवस बख्तावरखां पार्क करोलबाग नई दिल्ली में मनाया जायेगा।

स्थापना दिवस पर पं० शिव कुमार जी शास्त्री संसद सदस्य, चौ० चरणसिंह जी, भूतपूर्व प्रधानमन्त्री उत्तर प्रदेश, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य, श्री के नरेन्द्र जी तथा आचार्य कृष्ण दत्त जी आदि भाषण देंगे।

—रामनाथ

प्रादेशिक आर्य युवक संगठन पंजाब, हरियाना, हिमाचल व जम्मू

आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के सभी युवक संगठन के प्रेमियों की सेवा में सविनय प्रार्थना है कि वे अपने समाज एवं विद्यालय के युवक समाज से दो-दो प्रतिनिधियों के नाम पते सहित सभा कार्यालय में तुरन्त भिजवाने का कष्ट कर अनुगृहीत करें जिससे आगामी युवक सम्मेलन में सभी को निमन्त्रित किया जा सके।

आशा है प्रार्थना स्वीकार होगी।

अध्यक्ष युवक समाज
[...]

★ संशय साधक का सब से बड़ा शत्रु है। संशय को जड़ से निर्मूल कर देना चाहिए। मन में दुविधा बनी रहने से अशान्ति बढ़ती है।

★ आचरण में न आने वाला ज्ञान बोझा मात्र है।

जब तुम दिल के मकर छोड़ कर, सरल, सीधे हो जाओगे, तब तुम्हारे भूत, भविष्यत् और वर्तमान तीनों काल सुखदाई हो जायेंगे।

★ हम तभी सफल मनोरथ हो सकते हैं जब सर्वदा अपनी ओर देखें, दूसरों की न देखें।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए.पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालंधर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



डेक्लेरेशन नं० १०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष ३१, अंक १३) १७ चैत्र २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—३० मार्च १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

त्वं वरुण पश्यसि

हे वरुण ! भगवन् ! त्वं-आप सब को सब के [illegible] पश्यसि-देखते हो। अनन्त नेत्र बन कर सब कुछ देख रहे हो।

भाव:-मनुष्य पाप कार्य कहां जाकर कर सकता है? एकान्त स्थान उसे मिलेगा ही कहां पर? दो आंखों वाले अपने पिता-पिता, सम्बन्धी तथा राज्य-कर्मचारियों से तो अपने आप को जैसे कैसे छिपा सकता है। किन्तु भगवान के तो अनन्त नेत्र हैं। सर्वत्र उसका प्रकाश है। वह सर्व दर्शक है। उससे मनुष्य पाप कर्म करने के लिए अपने को कहां छिपा सकता है? पर्वत की कन्दरा हो या सागर का तल हो, घना वन हो या अन्धेरे से भरा भवन हो-जहां पर भी मानव पाप करने जाएगा-वरुण उसे देखता है। फिर पाप कैसे कर सकता है। पाप से बचो। प्रभु देखता है।

—सं.

वेदामृत

प्रभो ! हमें निर्भय करें

यथा द्यौश्च च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यत:। एवा मे प्राण मा बिभे:॥

अथर्व वेद से:

अर्थ:—(यथा) जैसे (द्यौ:च) यह द्युलोक और (पृथ्वी च) पृथ्वीलोक (न) नहीं (विभीत:) भयभीत नहीं होते (न) और न ही (रिष्यत:) किसी की हिंसा करते हैं। (एवा) ऐसे ही (मे) (मेरे प्राण) हे प्राण! (मा बिभे:) मत डरो।

इसका भाव यह है

यह द्युलोक हो या भूमि लोक। जो भी इन की मर्यादा या लोक सेवा का नियत पथ हो-उसी पर निरन्तर अबाधगति से चलते कार्य में लगे रहते हैं। न भूमि ही मर्यादा का परित्याग करती है और न यह द्युलोक के तमाम चमकने वाले सारे प्रकाश के मण्डल किसी से भय करते हैं। न किसी की हिंसा करते हैं। इनका कार्यमार्ग निश्चित है। विश्व के ये दोनों तत्वो को, लोकों को कोई भी शक्ति पथ से विचलित नहीं कर सकती। इसी प्रकार हे मेरे प्राण! तू भी जीवन पथ पर चलता रह। किसी से भयभीत होने की आवश्यकता नही है। इधर उधर चाहे कुछ हो किन्तु मानव निश्चिन्त व निर्भीक हो कार्य में लगा रहे।

—स.

ऋषि दर्शन

एतदालम्बनं श्रेष्ठम

एतत्—यह भगवान् रूपी, आलम्बनं-सहारा, [illegible] अवस्था में श्रेष्ठम्-सर्व श्रेष्ठ है। प्रभु का सहारा सारे सहारों से सब से उत्तम है। उसी का आश्रय पकड़ो।

भाव:—इस विश्व में मानव जीवन के अनेक सहारे हैं। मनुष्य उनको पकड़ कर समझता है कि अब मैं सुरक्षित हो गया हूं। किंतु धन का सहारा हो या जन का, सत्ता का आश्रय हो या महत्तां का, मित्र का आधार हो या वित्त-पुत्र का हो-सारे सहारे हिल जाते हैं। एकमात्र महान् भगवान् का ही ऐसा आलम्बन है, आधार व सहारा ऐसा है-जो कभी नहीं हिलता, कभी नहीं बदलता। इसलिए उसी प्रभु के ही पक्के सहारे को जीवन का सहारा बनाओ।

उपनिषत् से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच० डी० (सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

मनुष्य और उसकी उन्नति के साधन

(श्री वैद्य ज्ञानचन्द्र जी, बस्ती गुजा जालन्धर)

(गतांक से आगे)

तप से पाप दूर होते हैं। ... प्राप्ति होती है तप से ही मनुष्य ... को प्राप्त करता है।

दम

मन के वेगों का दमन करना या अपने आधीन करना अपनी भोग इच्छा को शांत और नियमपित करना यह सब दम के आते हैं। मनुष्य की सभ्यता इसी दम पर अवेलाबित हैं। यदि किसी समाज मे दम कम होगा तो समाज में स्वैर भोग वृत्ति बढ जाएगी और प्रत्येक प्राणी अलग अलग रहेगा इससे समाज नष्ट हो जाएगा अत मानवीय सभ्यता इस दम पर ही स्थिर है। ऐसा जान कर हर एक मनुष्य इन्द्रिय दमन करने का यत्न कर इसी में सब का भला है।

दान

दान का अर्थ है। देना। जो अपने पास हो वह दूसरो की भलाई के लिये देने का नाम दान है। गुरु विद्या का दान देता है। माता-पिता अपने जीवन का दान बच्चो को देते हैं इस का अर्थ यह कि दूसरो से कुछ लेकर हम जीवित रहते हैं। इसलिए हमारा धर्म है कि जब हम दूसरों के दान से जीवित हैं तो फिर क्यो न दूसरों को जीवित रहने के लिए हम दान दें। जो मनुष्य अल्प शक्ति वाला है वह भी कुछ न कुछ विश्व सेवा कर ही सकता है। फिर क्यो न करे। यहां प्रश्न उठता है दूसरो को दान देता जब दूसरा है ही नही एक ही आत्मा सर्वत्र है न कोई दूसरा दान देता है और न कोई दूसरा दान लेता है। दूसरे को दान देना यह अशुद्ध और अज्ञान मूलक भाषा है। विश्व सेवा के लिए आत्म समर्पण करने का आशय स्वयं अपने लिए देता है। इसलिए सब आनन्द होने से दान न देना आत्मघात करता है। आत्मघात से बचने के लिए दान देना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु यह सुपात्र को ही देना उचित है अन्यथा कुपात्र को दिया दान व्यक्ति और समाज के विनाश का कारण बनता है

यज्ञ

यज्ञ अध्ययन दान यह धर्म के तीन आधार हैं। यह यज्ञ धातु से बना है। जिसका अर्थ है। देवा पूजा संगति करण दान जहां यह तीन बात हैं उस कर्म का नाम यज्ञ है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिस से जीव का उद्धार होता है। यज्ञ में दान कर्म तप स्वाध्याय अहिंसा आदि का उत्तम रीति से मिलन है। इसलिए दान तप आदि कर्म त्यागने का विचार न करें यह सब अवस्था में करने योग्य हैं। इससे मनुष्य को पवित्रता मिलती है। गीता में श्री कृष्ण जी ने कितने सुन्दर शब्दों में कहा है।

यज्ञ दान तप कर्म न
त्याज्यं कार्यमेव तत
यज्ञो दान तपश्चैव
पावनानि मनीषिणाम्।

यज्ञ दान और तप रूपी कर्म त्यागने नही चाहिए। इन से मन को पवित्रता प्राप्त होती है। इनके त्यागने से मनुष्य अध पतन को प्राप्त होता है। मनुष्य का जीवन एक यज्ञ है उसमें २४ वर्ष का प्रात सवन ४४ वर्ष का माध्यंदिन सवन और ४८ वर्ष का सायं सवन होता है। इस प्रकार जो अपनी आयु में यज्ञ करता रहता है वह ११६ वर्ष तक जीवित रहता है। इस पूर्ण आयु में १६ वर्ष बालपन के शेष १०० वर्षों की आयु मे मनुष्य को १०० यज्ञ करने चाहिए। इस लिये जीवात्मा का नाम शत क्रतु है। सौ वर्ष की आयु यज्ञ करने वाला यही यज्ञ पुरुष है। ईश्वर यज्ञ और तप का भोक्ता है। उपासक यज्ञ करते हैं। और परमेश्वर को समर्पित करते हैं ... से जिस जब प्राणी पर ... होकर उस यज्ञ चक्र में घूम रहे हैं तब वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते, जब जीव मनुष्य योनि में आता है। तब वह उन्नति करने का अधिकारी बनता है और सुख को प्राप्त करता हुआ परम पद को प्राप्त होकर नर का नारायण और पुरुष का पुरुषोत्तम बनता है। अत मनुष्य का अपना जीवन यज्ञ मय बनाना चाहिये अपनी सहज से वृत्ति से यज्ञ ही होता रहे ऐसा शिक्षा मनुष्य को मिलनी चाहिये क्योंकि यज्ञ मनुष्य के साथ उत्पन्न हुआ है यही मनुष्य का सच्चा साथी है अत इसका त्याग जीवन का नाश है। यदि मनुष्यो मे दान भाव त्याग भाव अर्थात यज्ञ भाग लुप्त हो जाए तो वे मनुष्य ही नही रहते मनुष्यो का मनुष्यपन यज्ञ भाव से ही स्थिर है।

अहिंसा

यह यज्ञ का प्रमुख अंग है। इस का अर्थ है अपने से दूसरो को किसी प्रकार से कष्ट न पहुचे संन्यासी और ब्राह्मण अधिक अहिंसा धर्म का पालन करते हैं। इसलिये उनकी सर्वत्र पूजा होती है। क्योंकि ज्ञानी पुरुष समझता है कि विश्व आत्मा एक रस है। सब के ... हैं, अतः इस में से किसी की हिंसा की तो वह मेरी ही ... हिंसा होगी परन्तु अज्ञानी अपने आप को भोक्ता समझता है। इसलिये वह दूसरो को नष्ट करके अपने भोगों की वृद्धि करता है। इस से विश्व में लूट मार फसाद युद्ध आदि की वृद्धि होकर किसी का जीवन सुरक्षित नहीं रहता और तरह-तरह के अनर्थ बढते हैं इसलिये मनुष्य को अहिंसा व्रत का पालन करना चाहिये। ताकि संसार में सब जगह निर्भयता का राज्य हो।

अदम्भित्व दम्भ न होना सरलता

इसका अर्थ है। मिथ्याचार अपने अन्दर धर्म-भाव न होते हुए भी दूसरों को योगाभ्यासी सिद्ध करना यह सब कर्म अज्ञानी, अर्थात दम्भी पुरुष करते हैं। जनता को मोहित करके ठगते फिरते हैं। ताकि उनकी पेट पूजा मान प्रतिष्ठा बढे मगर ज्ञानी सदा दम्भ से दूर रहता है। जो अन्दर होता है। वही बाहर बतलाता है वह सरल स्वभाव वाला होता है। उसमे टेढापन लोभ कपट नाम को भी नहीं होता सरलता और नम्रता उसके स्वभाविक गुण होते हैं।

सुख-दुःख

सुख दुःख हानि-लाभ उन्नति-अवनति अथवा अधोगति मनुष्य अपनी स्वयं करता है। गीता में भी कहा है —

सुखस्य-दुःखस्य न को अपि दाता
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा

सुख दुःख का कोई देने वाला नहीं, सुख दुख दूसरो से मिलता है ऐसा मानना कुबुद्धि है। अर्थात् मनुष्य अपना सुख दुःख स्वयं निर्माण करता और भोगता है। इस प्रकार आत्मा संयम करने से मनुष्य स्वयं अपना ही मित्र होता है। असंयम करने से स्वेच्छाचार से स्वयं ही अपना शत्रु हो जाता है। क्योंकि वह समझता है कि मैं इससे अलग हूं दूसरे मेरे से भिन्न हैं। मैं अधिक सुखी होने के लिए दूसरो पर अत्याचार करके उनके भोग लूटकर सुख भोगूंगा यह सुख बढाने की बुद्धि मनुष्य को बुरे मार्ग पर ले चलती है। यदि मनुष्य को यह ज्ञात हो जाए कि उससे भिन्न और कोई नहीं तो फिर वह सुख-दुख को समान मानेगा। पर यहां शंका उत्पन्न हो सकती है कि क्या कभी पुत्र जन्म और पुत्र-मरण एक समान हो सकता है।

(क्रमश.)

ईश्वर में प्रणिधान करो

प्रणेता-प्रशस्य मित्र शास्त्री, शास्त्री नगर २३/३ कानपुर-५

ऐ मानव ! तू व्यर्थ खडा क्या यहां तमाशा देख रहा है
ईश्वर सदा सखा है तेरा क्यों उद्यम से भाग रहा है।
मानवता का मान करो तुम क्रांति शंख का नाद करो
जनता का उपकार करो परमेश्वर मे प्रणिधान करो ॥१॥

दूर किया पाखंड विश्व से जिसने सच्चा ज्ञान दिया है
वेदों का करके प्रकाश अज्ञान अंधेरा नष्ट किया है।
दयानन्द की कीर्ति कौमुदी का जग मे विस्तार करो,
निराकार ईश्वर को जानो उसमे ही प्रणिधान करो ॥२॥

भव वापी में जो रहकर भी कमल पत्र सम हो रहता है,
ऐहिक माया छोड वही सच्चा सुख स्वत प्राप्त करता है।
परम पिता के तुम सुपुत्र हो उसका ही अब ध्यान करो
हो विमुक्त विषयो के बन्धन से उसमें प्रणिधान करो ॥३॥

प्रतिमा ही भगवान नही वह प्रभु तो कण-कण मे रहता है,
मूर्ख मनुष्य मन्दिर को दौडे पर विद्वान सदा रमता है।
पुण्य कमाओ तुम अनन्त दुष्कर्म पाप से सदा डरो,
निराकार सच्चिदानन्द उस ईश्वर मे प्रणिधान करो ॥४॥

सम्पादकीय —:

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, ३० मार्च, १९६९ [अंक १३

राज्यपाल का उत्तम सुझाव

गत दिनों हरयाणा प्रान्त के माननीय राज्य पाल श्री चक्रवर्ती जी ने एक संस्था के समारोह में भाषण देते हुए यह कहा कि मैं चाहता हूं कि हमारे स्कूलो व शिक्षण संस्थानो में धर्म शिक्षा पढ़ाने का प्रबन्ध होना चाहिए। पढ़ने वाले छात्र छात्राओ के जीवन मे इस के द्वारा अनेक प्रकार के सद्गुण पैदा होंगे वर्तमान जीवन की अशान्ति दूर होने में इस से पूरा पूरा सहयोग मिलेगा। धर्म शिक्षा से मानवता का मान बढता जायगा। आज के जीवन के नीरस एवं मर्यादापथ से विचलित होने का सब से बड़ा कारण यही है कि शिक्षा में और तो सब कुछ हैं किन्तु जिस से जीवन बनता है, उस धर्म शिक्षा का सर्वथा अभाव हो चुका है।

ऐसे ही विचार पूर्व भी समय २ पर अन्य कई नेताओ ने अपने २ भाषणों में भिन्न २ स्थानो पर प्रकट किये हैं। यह सुझाव राज्य पाल श्रीयुत चक्रवर्ती जी का बड़ा ही भावपूर्ण है, जीवनके निर्माण के लिए परमावश्यक है तथा इस पर जितनी जल्दी आचरण किया जाये अच्छा है। आज की शिक्षा जीवन को किस ओर ले जा रही है। यह कौन नहीं जानता? वर्तमान काल मे इन शिक्षण संस्थाओंमें शिक्षा का जो भी प्रभाव हो रहा है-उसका सारा चित्र सबकी आंखें प्रतिदिन देख रही हैं। आए दिन साधारण सी बातों को लेकर यह शिक्षा लेने वाला छात्र दल क्या क्या तोड़ फोड़ के भीषण काम करता रहता है, अपनी ही मातृ संस्थाओं के भव्य भवनों के दरवाजो, खिड़कियों, शीशों तथा अन्दर रखे हुए कीमती सामान को तोड़ने व जलाने मे लगा रहता है। उसकी कितनी क्षति कर देता है। इतना ही नहीं अपितु इन सरस्वती-मन्दिरों में बैठ कर शिक्षा का काम करने वाले अध्यापकों, प्राध्यापकों, आचार्यों तथा विश्व-विद्यालयों के माम्य उपकुलपतियों के साथ जैसा भद्दा दुर्व्यवहार इस युवक वर्ग की ओर से किया जाता है, उनको कमरों में बन्द करके या उनका घेराव करके, घोर अपमान करके जो अनादर इनका होता है—उसे पढ और देखकर तो लाज को भी लाज आने लगती है। इसके अतिरिक्त राष्ट्र की सम्पत्ति रूप बसो, गाड़ियो तथा अन्य वस्तुओ को अग्नि मे जला कर कैसा ताण्डव होना है। यह एक परम्परा सी बना ली है आज के छात्र वर्ग ने। न उनके दिन आचार्यदेवो भव, की भावना है और गुरुओ के प्रति सम्मान का कर्त्तव्य ही ध्यान में आता है। किनारे तोड़कर मर्यादाहीन बनकर अपार क्षति पहुंचाने वाली नदी की धारा के समान आज के प्रायः छात्र-वर्ग के जोश की नदी भी अपनी सारी मर्यादा के किनारे तोड़कर उत्पात मचाने लग गई है। कोई किसी की सुनता ही नहीं है। कितने दुःख की बात है। इसका एकमात्र कारण यह है कि शिक्षा में केवल पुस्तको का पाठ्यक्रम तो नियत है कि जीवन का निर्माण करने वाली विचारो की पवित्र जीवन-पुस्तको का सर्वथा अभाव हो गया हैं। जिस समय शिक्षा से धर्म को बाहिर कर दिया जाता है, कोरा पुस्तक ज्ञान रह जाता है तो ब्रेक के बिना मोटर या गाड़ी के समान वह शिक्षा भी दुर्घटना का शिकार बनाने में कोई कसर नहीं रखती। कितनी कीमती और सुन्दर गाड़ी हो या कार—किंतु यदि उसमें ब्रेक नहीं है, लगाम घोड़ो की नहीं है तो वह गाड़ी मोटर व रथ निश्चित रूप से गहरे गढ़े मे गिरेगा ही। सवार को भारी चोट लगेगी। यही बात आज की शिक्षा में हो रही है। इस शिक्षा मे और तो सब कुछ है। आकाश-पाताल का ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है—परन्तु धर्म की ब्रेक नहीं है। इसीलिए यह सारी गड़बड़ होती है। रथ टूटते हैं। चारों ओर उत्पात ही उत्पात ताण्डव कर रहा है। सारे नेता अनुभव करते हैं—इस को सुधारने की बातें करके इसे बदलने का भी उपदेश देते हैं। किन्तु खेद तो यह है कि बदलने का प्रयास कोई भी नहीं करता।

भारतीय जीवन की शिक्षा प्रणाली मे कितना आदर्श जीवन का निर्माण होता था। गुरु शिक्षा परम्परा का कैसा पवित्र आदर्श था—राष्ट्र मे शिक्षा का कितना प्रभाव था—यह आज भी इतिहास के पन्नो मे अंकित है। इसे अपनाने की आवश्यकता है। हमे इस बात का आज भी गर्व है कि आर्यसमाज की आज के शिक्षण संस्थानो मे बैठे हुए माननीय प्रिंसिपलो, अध्यापको के ऊंचे जीवन की छाप छात्रो पर पड़ती है। सरकारी स्कूल-कालेजो की अपेक्षा आर्यसमाज के इन सरस्वती केन्द्रो मे लड़को के जीवन में फिर भी गुरु भावना एव मर्यादा है। इस का कारण यह है कि यहां धर्म के प्रति आस्था है। समय-समय पर इस वातावरण मे धर्म की ज्योति किसी न किसी रूप मे प्रदीप्त रहती है। धर्म के बिना शिक्षा सर्वथा अधूरी है। पुरातन भारत में धर्म का ऊंचा स्थान था। आज आवश्यकता है कि शिक्षा में धर्म को विशेष स्थान देकर गवर्नर का सुझाव माना जाए।

—त्रिलोक चन्द

प्रसन्नता की बात

कुछ समय से आर्य प्रतिनिधि सभा के प्यारे परिवार के माम्य सज्जनो मे थोड़ा बहुत मतभेद तथा मनमुटाव भी चला आ रहा है। कभी-कभी यह समाचार-पत्रो का विषय भी बन कर उनमे प्रकाशित होता रहता है। कभी-कभी अदालतो में परस्पर मुकदमो का रूप भी धारण कर लेते हैं। इस बात से दिल में दुःख तो होता ही है। किन्तु एक बात यह भी है कि आर्य समाज में काम करने वालो का परस्पर मन-मुटाव भी प्यार से भरा हुआ होता है। प्यार की रार या तकरार बुरी नहीं होती। हमारी सभा के साप्ताहिक मुख पत्र आर्य जगत् की यह विशेषता है कि इसमे किसी प्रकार के भी समाज के परस्पर कलह या मनमुटाव का समाचार नहीं छपता।

आपस के इस मन-मुटाव को दूर करने के लिए यह बड़ी ही प्रसन्नता का विषय है कि इस समय आर्य समाज के पास पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज जैसा तपस्वी, प्रभावशाली नेता देवता सन्यासी मौजूद हैं, जिनकी वाणी, विचार तथा जीवन की विशेष छाप सारे समाज पर लगी हुई है। परिवार में समय-समय पर पैदा होने वाले मनमुटाव को दूर करने के लिए जैसे वयोवृद्ध, ज्ञान अनुभव वृद्ध, जीवन वृद्ध काम आता है। आर्यसमाज के विशाल परिवार मे वही स्थान पूज्य महात्मा जी को प्राप्त है। सब के हैं। देश विदेश में जीवन का प्रभाव है। यह गौरव का विषय है कि परिवार के दोनो पक्षो ने पूज्य वर महात्मा जी को अपने सारे मतभेद की बातें सौंप दी हैं। आप को अपना निर्णायक चुन लिया है तथा आप के दिये गये निर्णय को दोनो ने सिर झुका कर स्वीकार करने का आश्वासन विश्वास दिया है। इस काम मे महात्मा जी लग गये हैं। अब जल्दी वह शुभ घड़ी आने वाली है जब समाज परिवार के दोनो पक्ष वाले महात्मा जी सत् प्रयत्न से अपने पुराने सारे मतभेद, मनोभेद व मनमुटाव दूर करके दूध शक्कर के समान मिल मिला लेंगे। प्रेम सूत्र मे मनोरम-मनको के समान अपने को पिरो कर माला का रूप बन कर समाज के कार्य को आगे ही आगे ले जाने का व्रत धारण करेंगे विवाद है क्या? समाज व सभाओ का काम तो सेवा का कार्य है। इस यज्ञ कुण्ड मे तो देना ही देना है। तन का योग, मन का सहयोग और धन का दान—सब कुछ देना ही है फिर मनमुटाव है भी क्या? हमे मान है कि पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी जैसा प्रभावशाली पिता बैठा है।

सभा कार्य में जुट जाएं

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर का जिस प्रेम से बजट अधिवेशन चण्डीगढ़ में समारोह से सम्पन्न हुआ। उस देखते हुए मन को बहुत ही प्रसन्नता होती है। कितनी कमाल की सभा परम्परा है कि सभा का प्रधान पद सम्भालने के लिए माम्य प्रतिनिधि प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल से प्रेमभरी प्रार्थना करते थे कि यह सभा का महान सेवा कार्य आप ने सर्वसम्मति से

(शेष पृष्ठ ४ पर)

योग प्रसार सभा (रजिस्टर्ड) यमुनानगर का प्रथम वार्षिक विवरण

हमारी योग प्रसार सभा के संस्थापक श्री रामसिंह वैद्य के जीवन के गत कुछ वर्षों का इतिहास हमारी योग प्रसार सभा के साथ विशेष सम्बन्धित है। लाहौर डी० ए० वी० कालेज में शिक्षा प्राप्त करते हुए उन्हें इस ओर अधिक श्रद्धा बढ़ी और धीरे-धीरे इसके प्रचार और प्रसार को इन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

अय तु परमोधर्मेष्ठ यद् योगेन आत्म दर्शनम् की भावना से प्रेरित होकर इसके अधिक प्रसार के लिए यमुनानगर में रहते हुए प्रारम्भ मे यह कार्य आपके निवास स्थान पर ही चला करता था। किंतु श्री जगन्नाथ जी कपूर, श्री अर्जुनदेव तथा श्री दर्शनलाल गर्ग की प्रेरणा करने पर योग का कार्य माडल टाऊन मार्के मे आरम्भ किया गया।

प्रभु कृपा से १९६३ मे डा. देव वोहरा डायरेक्टर योग डिपार्टमैंट गवर्नमैंट पंजाब से सम्बन्ध हुआ था। इन के शुभ सहयोग से इस कार्य के प्रसार में लगन और भी बढ गई और योग प्रसार के कार्य में विशेष प्रगति हुई।

दिनांक १५, ७, ६५ को श्री लाला खैराती लाल मल्होत्रा तथा अन्य सभा के सदस्यों के सहयोग से लाला खैराती लाल जी के निवास स्थान पर पूज्या शन्नो देवी स्पीकर पंजाब विधान सभा तथा डा. देव वोहरा की उपस्थिति मे एक सभा गठित की गई कि सभा बीबी जी को सरक्षक और सं. दिवान सिंह जी को प्रधान तथा वैद्य राम सिंह को महा मन्त्री तथा चुन्नी लाल मकर को सैक्रेटरी चुना गया। शनैः शनः सभा का कार्य प्रगति करने लगा।

१५ अगस्त १९६६ को श्रीमती शन्नोदेवी की अध्यक्षता मे स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष मे स्वास्थ्य और राष्ट्रीय चरित्र को उन्नत करने के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन नेहरू पार्क मे किया गया। जिस का जनता पर बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा तथा जनता की रुचि इस ओर बढ़ी। जनता की विशेष रुचि को ध्यान में रखते हुए नगर पालिका को ओर से दरिया और भार तोलने की मशीन आदि वस्तुओं के खरीदने के निमित्त ५०० रुपये की धनराशि प्रदान की गई। उपरोक्त बढ़ती हुई उपस्थिति को देखते हुए जब दरिया कम होने लगीं तो श्री खैरातीलाल जी मल्होत्रा की प्रेरणा पर श्री ए० एम० सपड़ा जनरल मैनेजर सरस्वती शूगर मिल की ओर से १०० फिल्टर कनाथ का प्रबन्ध किया एवं पावर इण्डस्ट्रीज, श्री गोपाल पेपर मिल के जनरल मैनेजर श्री एम० एस० त्यागी जी के सहयोग से सभा को ७ रिम कागज लगभग २०० रुपये की लागत का दान दिया और नियम उपनियम छपवाने के लिए दान के रूप में प्राप्त हुआ। इसके लिए सभा इन सब महानुभावों का आभार प्रकट करती है।

दिनांक २८—१०—६६ को सभा का वार्षिक अधिवेशन हुआ तथा श्री रामसिंह को डायरैक्टर, श्री दर्शनलाल गर्ग को प्रधान तथा श्री चन्द्रभान सिंह चौहान को जनरल सैक्रेटरी चुना गया और वही कार्यकारिणी के सदस्य अभी सभा का कार्य कर रहे हैं। इस बैठक के निश्चय के अनुसार सभा का पंजाब नैशनल बैंक में हिसाब खोला गया और जो धनराशि हमें प्राप्त हुई वह इस में जमा कराई गई। यह भी निश्चय किया कि सभा को रजिस्टर्ड कराया जाये।

अतः प्रथम फरवरी १९६७को सभा रजिस्टर्ड हो गई। इस वर्ष सर्व श्री दर्शनलाल गर्ग, श्री मास्टर श्री कृष्ण जी तथा श्री चन्द्रभानसिंह चौहान ने अन्तर्राष्ट्रीय योग शिविर जो मुंघेर बिहार प्रदेश मे हुई थी। उसमे सभा के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलत हुए और जो विशेष अनुभव प्राप्त करके आए तथा सभा के कार्यों में विशेष सहयोग दे रहे हैं। इसके पश्चात् अभ्यास करने वालों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। योग के कार्य के प्रचार और प्रसार के हेतु नगर पालिका ने हमें दो हजार रुपए (चित्र प्रदर्शनी) इत्यादि के निमित्त देना स्वीकार कर लिया है इसके लिए सभा नगर पालिका का हार्दिक धन्यवाद करती है। इसके उपरान्त सभा श्री लालबहादुर माथुर प्रोपराईटर सरन रेडियोज का भी हार्दिक धन्यवाद करती है जो कि एक गरीब और निर्धन बच्चे को उसके दूध के लिए प्रति मास १० रुपए उसे देते है और उस बच्चे की कमजोरी और धीरे-धीरे दूर हो रही है।

विशेष प्रचार केने के लिए यह निश्चय किया गया कि योगासन का एक कप मुकन्दलाल नैशनल कालेज के हाल में दिनांक १६-१०-६७ से २२-१०-६७ तक लगाया जावे। श्री एम. एस. त्यागी जनरल मैनेजर पेपर मिल ने कार्य में व्यस्त होते हुए भी शिविर के उद्घाटन करने की कृपा की और प्रतिदिन ६-३० बजे प्रात: और ८ बजे रात को दो सभायें हुई। जिस से कालेज के विद्यार्थियों के अतिरिक्त डा० देव वोहरा के विशेष सहयोग से इनको कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त लगभग सभी स्थानीय सस्थाओं में भी आसनों का शिक्षण एवं व्याख्यान दिए और कार्यक्रम को सुन्दर बनाने में हाथ बटाया। डा० देव वोहरा साहब के साथ-साथ इन सब भाई-बहनों का भी सभा की ओर से धन्यवाद किया जाता है।

मुकन्दलाल नैशनल कालेज के हाल में शिविर रखने और कार्य संमलन करने और प्रत्येक रूप में हमें श्री प्रिंसिपल बड्ढा साहब तथा प्रोफैसर साहबान व अन्य भाई-बहनों का भी जो सहयोग हमें प्राप्त हुआ उसका सभा की ओर से आभार प्रकट किया जाता है।

स० मेलासिंह जी ने सभापति समारोह की अध्यक्षता स्वीकार कर हमें कृतार्थ किया। इस के लिए हम उनका धन्यवाद करते हैं। अतः मैं सब बुजुर्गों, माताओं, भाईयो, बहनों तथा अन्य सब उपस्थित सज्जनों का सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद करता हू। जिन्होंने अपना बहु-मूल्य समय देकर हमारे उत्सव को सफल बनाने में हमें सहयोग दिया। अन्य जिन भाइयों ने समय समय पर हमारी सहायता की उनका भी धन्यवाद करता हूं।

आजकल योगाभ्यास के लिए सभा के पास उचित स्थान नहीं है। नेहरू पार्क मे योगाभ्यास किया जाता है। उचित स्थान के लिए यथा सम्भव प्रयत्न किये जा रहे हैं। धन्यवाद! (चन्द्रभानसिंह चौहान)

महामन्त्री योग प्रसार सभा
यमुना नगर

महात्मा हंसराज विशेषांक

आर्य जगत् सभा का अपना साप्ताहिक मुख पत्र है। इस वर्ष भी महात्मा हंसराज जी की पुण्यस्मृति में अप्रैल को अपना महात्मा हंसराज विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है जिसमें उस तपस्वी जीवनदानी, त्यागी स्वर्गीय महात्मा जी के जीवन व कार्यों से सम्बन्ध में नेताओं, विद्वानों के अमूल्य लेख होंगे। हमारे पास कितनी बड़ी संख्या में डी. ए वी. स्कूल, कालेज समाजें व अन्य संस्थायें हैं। गुरुकुल जैसे बड़े संस्थान हैं। स्वर्गीय देवता महात्मा जी के श्रद्धालुओं का एक विस्तृत परिवार है। यह विशेषांक तो बहुत बड़ी सख्या में प्रकाशित हो वितरित होना चाहिए। दूसरों के हाथों में पहुचाना चाहिए। विचारों के प्रचार का बड़ा प्रभाव होता है। इसलिए हम अपनी सस्थाओं, समाजों तथा सज्जनो से प्रार्थना है कि इस विशेषांक की अधिक से अधिक प्रतियां मंगवा कर बांटें। इससे बड़ा लाभ व प्रचार होगा। शीघ्र ही अपने आर्डर दे कर कृतार्थ करें—सपादक

सभा कार्य में जुट जाएं

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वीकार करता है। निर्वाचन मे तो एक मिनट ही लगा होगा। यह है सभा के प्यारे विशाल परिवार की पुरातन परम्परा। इस के लिए सभा के सारे परिवार को जितनी भी बधाई दी जाये थोड़ी है।

अब निर्वाचन तथा वार्षिक बजट का काम तो सम्पन्न हो गया। कार्य करने का समय आगया है। माननीय सभा प्रधान जी श्री प्रिंसिपल बहल जी ने अपने अध्यक्ष-पद के संक्षिप्त एवं सारभरे भाषण में सभा के सारे समाज-परिवार से सभा के लिए तन मन-धन के सहयोग देने का प्रेमभरा अनुरोध किया था। सभा महान केन्द्र है जिसे हर प्रकार से उन्नत करना सब का कर्तव्य है। हम सभा के सारे परिवार से निवेदन करेंगे कि अब सभा कार्य में जुट जायें—

एक अद्भुत खिलाड़ी

(श्री करनैल सिंह विद्यार्थी विद्यावाचस्पति)

संसार में कई प्रकार के खिलाड़ी होते हैं और अपनी अपनी खेल में प्रत्येक अपने आप को निपुण समझता है। कोई खेल इसलिए खेलता है कि उसका नाम रौशन हो; उसको इनाम मिले, पर कोई खेल इसलिए खेलता है कि वह अमर हो जाए, उसका नाम रहे या न रहे पर सचाई की ज्योत जलती रहे। ऐसे पतंगे बहुत कम होते हैं जो शमा को देखकर अपने आपकी जान की बाजी लगा दें। ऐसे खिलाड़ी भी कम ही होते हैं जो अपने आपकी परवाह न करके गरीबों के लिए, अनाथों के लिए, दीन दुखियों के खेल खेलें और लुटती जाती की लाज को बचाने के लिए प्रत्येक सम्भव खेल खेलें।

स्वामी श्रद्धानन्द जी भी ऐसे ही खिलाड़ी थे जिन्होंने अपनी खेल को जानने के लिए असम्भव से असम्भव कार्य भी कर दिखाया। देखने वाले चकित हो गए कि ऐसा खिलाड़ी तो इससे आगे कहीं नहीं, कभी नहीं देखा था। अपनी ही बच्ची ने — 'ईसा मेरा राम रमैय्या 'ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया, ईसा-ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल, 'बोल-बोल कर पिता को खेल के मैदान में उतरने के लिए उत्तेजित किया। बच्ची बेचारी को क्या पता था कि इस गाने का एक-एक शब्द मुन्शीराम (श्रद्धानन्द) को मैदान में उतरने के लिए तेल मालिश की तरह लग रहा है।

घी दूध का काम महर्षि दयानन्द का एक-एक शब्द देगा और उसे उस की खेल में मजबूत बनने के लिए प्रेरित करेगा, यह उस मुन्शी राम वकील को क्या पता था। जब काफी मजबूत हो गया तो उतर पड़ा मैदान में वह अदभुत खिलाड़ी।

मैदान में खेल रहा था मुन्शीराम कि किसी ने कहा मुन्शी राम यूं तो लम्बी-लम्बी बातें बहुत बनाता है, मजा तो तब है जब अपने आपको भी अपने कथन पर चलाओ मुन्शीराम ने पूछा क्या कथन है वह। लोगों ने कहा मुन्शीराम दूसरे के लड़कों को भी लाओ। मुन्शीराम ने तनिक अपने आप पर सोचा और कहा कि ले लो मैं अपने भी दोनों लड़कों को इस दाव पर लगाता हूं। फिर क्या था आने आने लगे माताओं के सपूत लाड़ले। और पकड़ने लगा वह उन सब को।

ईक बार फिर मैदान में आया और दाव लगा दिया कि इतना पैसा चाहिये खेल के मैदान की सुन्दरता को बढ़ाने के लिये बच्चों को खिलाने के लिए। लोगों ने एक बार फिर महात्मा जी से अक्त शब्दो से प्रश्न किये। उतर में महात्मा जी खड़े हो गए और लुटा दिया उस खेल मे अपने आपको, अपनी लाखों की सम्पत्ति को, कोठियो को, प्रैसो को। फिर क्या था लोगों ने भी उस खेल के खिलाड़ी को दिल खोल कर इनाम दिया। दिल खोल कर नारों की बुच्छार की। दिल खोल कर स्वागत किया।

अब मुन्शीराम वकील नहीं था, वह करोड़ों की सम्पत्ति का मालिक नहीं था। वह दो पुत्रो का बाप नहीं था। अब वह सन्यासी था स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में, वह खिलाड़ी था, अद्भुत खिलाड़ी। उसने इस खेल को जीतने के लिए अपने बड़े से बड़े सुख को त्यागा, बलिदान किया, क्या हम भी करेंगे।

कथा-प्रचारके समाचार

आर्य समाज तिलक नगर देहली

आर्य समाज तिलक नगर नई देहली में आर्य समाज स्थापना समारोह विशेष ढग से मनाया गया। इतना लम्बा तथा प्रभावशाली यह समारोह बिरली समाजों मे देखने में आता है। समाज के परिवारों मे बडी ही श्रद्धा व समाज प्रेम देखने को मिला। समाज के योग्य विद्वान प्रधान श्री धनपतराय जी एम. ए. बड़े ही प्रभावशाली व्यक्ति हैं। उन के साथ वृद्ध मान्य उपप्रधान श्री. रामदयाल जी, मन्त्री श्री. लछमनदास जी भी काम में जुटे हैं। श्री. पुरीजी का परिवार, श्री पं. हंसराज जी शर्मा तो अनथक रूप से समाज के दीवाने हैं। युवकों में प्रिय नरेश जी व सुरेश जी का उत्साह बड़ा है। बहिन ज्ञान देवी जी, बहिन कुलवन्ती जी आदि स्त्री समाज भी काम करती है। दैनिक रूप से प्रातः यज्ञ सत्संग, रात्रि को कथा चलती रही। इसमें पं: त्रिलोक चन्द शास्त्री, प. राजपाल जी यदन मोहन चिमटा-मडली, श्री. ओप्रकाश जी त्यागी M. P., श्री. रामगोपाल जी शाल वाले M. P श्री के. नरेन्द्र दैनिक प्रताप, श्री प. जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती पधारे। जलूस भव्य था। दीपमाला की गई। बड़ा ही उत्साह था। सभा का १२५ रु. वेद प्रचार मिला। मार्ग व्यय अलग मिला—

आर्य समाजों से नम्र निवेदन

आर्य प्रादेशिक प्र० नि० सभा आज आर्थिक संकट मे है। अधिकारी वर्ग और सभा के हितैषी जन इस स्थिति को सुधारने के पुराने महोपदेशक श्री पं. खुशीराम जी व पं. त्रिलोकचन्द जी आदि भी रात दिन इस कार्य मे जुटे हैं। कष्ट सहन करके भी वे प्रचार कार्य कर रहे हैं। सभा इनके प्रति अनुग्रहीत है।

इनके अतिरिक्त कई सज्जन संकट और कठिनाई के समय सभा को छोड़ रहे हैं कुछ समय हुआ श्री सत्यपाल-सुभाष जी की भजन मण्डली सभा को छोड़ गई थी आर्य जगत के व्यवस्थापक श्री धर्म देव जी भी बिना चार्ज दिए ही सभा को छोड़ कर दूसरी सभा मे चले गए इसी इसी प्रकार अब श्री प. ओ३म प्रकाश जी भी १५ मार्च से सभा से मुक्त हो गए हैं।

मैं सभी सम्बद्ध आर्य समाजों से प्रार्थना करूंगा कि वे सभा की अधिक से अधिक आर्थिक सहायता करके इस अवस्था को सुधारने मे सहायक हों। अपने वार्षिकोत्सवों मे सभा द्वारा किये गए प्रबन्ध को ही मान्यता दें। स्वतन्त्र उपदेशकों को प्रोत्साहन देने से सभा के प्रबन्ध और अनुशासन मे गडबड हो जाने के साथ-साथ सभा मे रात दिन जुटे उपदेशकों और कार्यकर्त्ताओ का उत्साह भी भग होता है।

आशा है सभी सम्बद्ध आर्य समाजे सहायक होंगी।

वेदी राम शर्मा
सभा मन्त्री

★ जब भगवान के आश्रित हो रहे हो, तब यह न हुआ, वह न हुआ आदि चिन्ताओं में मत पड़ो।

★ आत्म विश्वास, आत्म निरीक्षण, आत्म सयम, पुरुषार्थ और प्रभु कृपा का भरोसा, ये मनुष्य का बेड़ा पार लगाते हैं।

अदालती सूचना

ब अदालत श्री पी, आर. अग्रवाल
एच.सी.एच. सीनियर सबजज साहब
बहादुर गुडगावा
मु० न० १ बाबत साल ६९
तिथि पेशी ११ ४-६९

राजकपूर नाबालिग पुत्र व पुत्री राजबाल अनारसिंह पुत्र प्रिथीसिंह सकना मोजा गरोली कला मारफत होशियारसिंह पुत्र प्रिथिसिंह चाचा खुद (नाबाल गान) सकना गाडोली कला तहसील व जिला गुड़गावा।

बनाम :—श्री नेबराज पुत्र जैसाराम ग्रोवर सोहना अड्डा छावनी गुडगावा को आप जनरल इन्सोरेन्स सोसाईटी लिमिटेड नेता जी सुभाष रोड दिल्ली।

बनाम
आम जनता
दरखास्त बरजे लैन मुआवजा
१०,०००) रुपए

श्रीमान् जी मुकद्दमा मुन्दर्जा अनवालवाला में सहिल राजकपूर नाबालिग पुत्र व राजबाला नाबालिग पुत्री अनारसिंह पुत्र प्रिथीसिंह सकना-मोजा गारोली कला मारफत होशियारसिंह पुत्र प्रिथीसिंह चाचा खुद नाबालगान सकना गारोली कला तहसील व जिला गुडगावा ने बतौर-हके वारसान दरखास्त मुतवफी दी है।

अतः बजरिए नोटिस इश्तहार हर खास व आपको सूचित किया जाता है कि यदि किसी को इतराज इस बारे मे हो तो खुद या मारफत अपने एजेण्ट या वकील बराए ति० पेरवी ११-४-६९ के लिए अदालत हजा में पेश कर सकता है।

आज बतारिख २०-३-१९६९ को मेरे हस्ताक्षर व मोहर अदालत के जारी हुआ।

सीनीयर सबजज
गुडगाव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की सच्चर फार्मूला खत्म करने के विरुद्ध कड़ी चेतावनी

सरकार की प्रथम श्रेणी से पंजाबी की जब्री पढ़ाई की योजनाएं नागरिक अधिकारों पर छापा, शिक्षा माध्यम चुनने का अधिकार केवल माता-पिता को: सभा का प्रस्ताव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने पंजाब मे शिक्षण संस्थाओं मे लागू सच्चर फार्मूले को खत्म करने की किसी भी कुचेष्टा के विरुद्ध कड़ी चेतावनी दी है।

सभा के वार्षिक अधिवेशन मे जो प्रधान प्रिंसिपल बी. एस. बहल की अध्यक्षता में हुआ पंजाब की भाषा समस्या पर पारित एक प्रस्ताव में इस बात को दोहराया गया है कि बच्चों की शिक्षा के चयन का अधिकार माता-पिता को है। वे अपनी इच्छानुसार हिन्दी या पंजाबी किसी भी भाषा मे शिक्षा दिलाए। इस अधिकार को छीन कर सरकार की ओर से किसी भी प्रसार की अनिवार्यता का होना सामान्य नागरिक अधिकारों पर एक कुठाराघात है।

इस समय जबकि पंजाब की सरकार राज्य मे प्रथम श्रेणी से पंजाबी की अनिवार्य शिक्षा लागू करने की योजनाए बना रही है, प्रादेशिक सभा का यह प्रस्ताव अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रस्ताव में कहा गया है कि पुनर्गठन हो जाने के पश्चात भी पंजाब में हिन्दी भाषी लोग ४०% संख्या मे रहते हैं, अत: उनके अधिकारों की रक्षा करना और उन्हे अपने अधिकारो को प्राप्त करने में सब तरह की सुविधाएं देकर सरकार का कर्त्तव्य है। यदि सरकार ने अपने इस कर्त्तव्य को भली प्रकार न निभाया तो इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली सभी परिस्थितियो की जिम्मेदारी उस पर होगी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का स्टैंड यह है कि भाषा का मामला शिक्षा से सम्बन्ध रखता है। अत: इसे राजनीतिक आधार पर हल करना गलत है।

सभा ने इस बात पर चिन्ता प्रकट की है कि पंजाब में कुछ राजनीतिक महानुभावों और संस्थाओं की नीति राष्ट्रभाषा हिंदी को पीछे फैंक गुरुमुखी लिपि में पंजाबी हर क्षेत्र मे लागू करने की है। इसके पीछे एक देशघातक भावना भी कार्य करती प्रतीत होती है। कई क्षेत्र तो इस नीति की आड में सिख होमलैंड के नारे लगाने से भी संकोच नहीं कर रहे हैं।

प्रस्ताव मे भाषा के आधार पर प्रांतो के गठन का तीव्र विरोध किया गया है और कहा गया है कि अंगरेजी शासनकाल मे यहां की जनता को मार्ग भ्रष्ट करने के लिए भिन्न-भिन्न सांस्कृतियों का पाठ पढ़ाया जाता था। इस भावना के पीछे राष्ट्रीय जीवन-दर्शन को समाप्त कर देना ही रहा। किंतु आज भाषा के नाम पर प्रांतों का गठन करना अंगरेज की उसी विभाजन प्रवृत्ति को आश्रय देना नहीं तो और क्या है।

डा० वेदीराम शर्मा द्वारा प्रस्तुत श्री दरबारीलाल द्वारा अनुमोदित एक अन्य प्रस्ताव में सभा ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना की मांग की है।

★ दोनों प्रस्ताव अविकल रूप मे अन्यत्र दिए गए हैं।

डी.ए.वी. कालेज जालन्धर को अध्यापन विश्व विद्यालय बनाने का सुझाव

प्रिंसिपल बहल शीघ्र ही राज्य पालसे मिलेंगे

दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना के सुझाव का स्वागत

जालन्धर २१ मार्च (स्टाफ रिपोर्टर से) डी. ए. वी. कालेज जालन्धर के प्रिंसिपल श्री बी. एस. बहल ने राज्यपाल डा० सी. डी. पावते के इस कथन का स्वागत किया है कि दयानन्द विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए।

यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए श्री बहल ने कहा कि वह बहुत जल्द इस संबंध में राज्यपाल, और मुख्यमन्त्री से मिलेंगे। उन्होंने राज्य पाल को एक पत्र भी लिखा है। श्री बहल ने बताया कि चौथी योजना में देश भर में पचास अध्यापन विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव है। इन्हें पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त होगी। पूर्ण स्वातता के अपने मन्तव्य को स्पष्ट करते हुए श्री बहल ने कहा कि इसका अर्थ है, विश्वविद्यालय को पाठ्यक्रम निर्धारित करने और परीक्षा लेने अथवा कक्षोन्नति तरीके का स्वयं चयन करने का अधिकार हो। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे विश्व विद्यालय मे किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। उन्होंने शिक्षण पद्धति मे परिवर्तन का भी सुझाव दिया है और कहा कि ज्ञान की वृद्धि के लिए वर्तमान पद्धति के स्थान पर छात्रों में आपसी वाद विवाद पद्धति को लागू करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अध्यापन विश्वविद्यालय बनाने के बारे में विद्यालय, भवन, पुस्तकालय, अध्यापकों और छात्रों की योग्यता और शिक्षा का जो वांछित स्तर है, उसमें जालन्धर डी. ए. वी. कालेज पूर्ण उतरता है। कालेज में ३५०० से अधिक छात्र है। यहां शिक्षा पद्धति को आधुनिक बनाने की दिशा में कदम उठाए जाते हैं। गवेषणा का काम भी हो रहा है और इसके लिये छात्रों को अनेक सुविधाएं भी उपलब्ध की जाती है।

नई शिक्षा नीति आगामी शिक्षासत्र से लागू नहीं होगी

बस्सी ने एक बार फिर पैंतरा बदला दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना पर विचार होगा

जालन्धर। (स्टाफ रिपोर्टर से) पंजाब के शिक्षा मंत्री श्री सोहनसिंह बासी ने आज यहां पत्रकारों को बताया कि शिक्षण संस्थाओं के लिए नई भाषा नीति आगामी शिक्षा सत्र से लागू नहीं होगी।

दो नए विश्वविद्यालयों की स्थापना के सम्बन्ध मे प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—अमृतसर में गुरुनानक विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव है। यह गुरु जी की ५०० वर्षीय जन्मदिवस के उपलक्ष्य मे है। मैंने समाचारपत्रों मे पढ़ा है कि जालन्धर में दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना की मांग की गई है। इस पर भी सरकार विचार करेगी।

जब उनका ध्यान इस बात की ओर दिलाया गया कि आम नीति यह है कि विश्वविद्यालय किसी धार्मिक व्यक्ति के नाम पर नहीं होने चाहिए तो उन्होंने कहा यह कोई रोक नही है।

अध्यापकों की सेवा सुरक्षा के लिए बिल के सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि यह बिल इस अधिवेशन में पेश किए जाने की आशा है।

आर्यसमाज लक्कड़ बाज़ार शिमला

दिनांक १६ मार्च १९६९ को सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव द्वारा आर्यसमाज शिमला के शिष्ट जनों की यह सभा ६-४५ प्रात: के आराधना कार्यक्रमके अन्तर्गत आकाशवाणी जालन्धर द्वारा संस्कृत श्लोकों को बन्द किए जाने की साम्प्रदायिक एवं निपट एकांगी नीति पर गहरा रोष प्रकट करती है। क्योंकि वेद, उपनिषद गीता और धर्म शास्त्रों पर आधारित ये श्लोक आर्य जनता के प्राण तथा भारतीय संस्कृति की जान है। कुछ दिनों से आकाशवाणी जालन्धर का अर्द्ध प्रादेशिक स्तर पर प्रयोग किया जाने लगा है, जो न्याय संगत नहीं है। यह सभा भारत सरकार के प्रसार विभाग के मन्त्री जी से तथा आकाशवाणी जालन्धर के निर्देशक महोदयसे सानुरोध प्रार्थना करती है कि संस्कृत श्लोकों पर लगाए गए इस प्रतिबन्ध को शीघ्राति-शीघ्र हटाया जाए। इसका प्रसारण पुन: प्रारम्भ किया जाए।

—मन्त्री सुनिला

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (४)

सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी. डी. वी. कालेज गोरखपुर

(गतांक से आगे)

आज भी उसी छटा से शोभित होने वाला, प्रतिदिन नया-नया रूप धारण करने वाला यह चन्द्रमा भी परमेश्वर की आंख है। चन्द्रमा शब्द की व्यवस्था करते हुए निरुक्तकार ने लिखा है। चन्द्रमा चायन् द्रमति, चन्द्रोमाता, चान्द्रं मानमस्येति वा। चन्द्रश्चन्द्रतेः कान्तिकर्मणः, चन्द्रमित्यस्य भवति। चारु द्रमति, चिरं द्रमति, चमेर्वापूर्वम्।

अर्थात् इसको चन्द्रमा इसलिए कहते हैं क्योंकि यह औषधियों पर कृपा दृष्टि रखते हुए चलता है। यह कान्तिमान है और कालमान का कर्त्ता है। चन्द्रश्चासौ मा चन्द्रमाः। यह चान्द्रवर्ष का निर्माता है। वेद मे एक मंत्र आया है।

नवो नवो भवति जायमानोऽह्नां,
केतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्,
चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायु ।

अर्थात् (चन्द्रमा जायमान: नव: नव: भवति) चन्द्रमा शुकलपक्ष मे प्रतिदिन एक-एक कला की वृद्धि से उदित होता हुआ नया-नया होता है (अह्नां केतुः) यह प्रतिपदा आदि तिथि दिनों का प्रकाशक है (उषसां अग्रमेति) और कृष्ण पक्ष में प्रतिदिन उषाकाल के पूर्व आता है। (आयन् देवेभ्यो भाग विदधाति) इस प्रकार यह उदित होता हुआ पूर्णिमा तथा अमावस्या के दिनों मे पर्वेष्टियो के द्वारा विद्वान् लोगों को दक्षिणाश प्रदान करता है। (चन्द्रमा आयु: दीर्घ प्रतिरते) और यह रसदान के द्वारा प्राणियों की दीर्घ आयु को करता है। शुकल पक्ष मे चन्द्रमा उदय होता है तब कला वृद्धि के कारण यह प्रतिदिन नए-नए स्वरूप वाला दृष्टिगोचर होता है। यह चन्द्रमा परमेश्वर की आंख है।

और अग्नि इस परमात्मा का मुख है। मुख से वाणी निकलती है और वाणी ज्ञान को प्रकाशित करती है और मनुष्य आगे बढ़ता है। परमेश्वरी को अग्नि इसीलिए कहते हैं कि वह 'अग्रणी भवति' सदा आगे रहता है। वाणी के विषय में कही सुनी हुई कहानी याद आ रही है। एक बार वाणी और मन में झगड़ा हो गया कि कौन श्रेष्ठ है। कौन मनुष्य को आगे बढ़ा सकता है। वाणी ने कहा चलो प्रजापति से पूछें दोनों प्रजापति के पास गए और अपना-अपना प्रश्न रखा। प्रजापति ने दोनों की बातें सुनने के बाद कहा: 'मन: श्रेष्ठं मन: श्रेष्ठं मन: श्रेष्ठं न संशयम्' मन श्रेष्ट है इसमें कोई सन्देह नहीं। वाणी दु:खी हुई और उसने प्रजापति से फिर पूछा। प्रजापति ने फिर वही बात दुहराते हुए कहा 'परम्, वाणी तु साक्षात् प्रजापति' अरे, मन श्रेष्ठ है यह तो ठीक है पर वाणी तो साक्षात् प्रजापति है। मैं उसका गुण वर्णन नही कर सकता। यह कहानी ठीक हो या नहीं। पर, ज्ञान का प्रचार और प्रसार वाणी से होता है और वाणी से होता है और वाणी मुख से निकलती है। ज्ञान आगे बढाता है। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ाता है। इसलिए मुख अग्नि को परमेश्वर का मुख बतलाया है। इसलिए इन अग्निदेव से आइए हम प्रार्थना करें—

हे अग्निदेव! मेरे प्राणो मे तू बस जा। प्राणो ही से तो जीवन है और तू जीवनयाग का सफल संचालक। जहां आपकी पहुंच है वहा तेरी यह हवा तुझे जगाए रहती है, चमकाये रहती है। जीवन यज्ञ हो तो रहा ही है परन्तु इसकी अनुभूति नहीं होती। मैं यज्ञभाव से जियूं यह भावना मेरे श्वास प्रश्वास मे पैदा कर दे। तू मेरी सास मे। हे अग्निदेव! हमें तो यह आग जलाती ही है। तुम हमारे उपास्य होकर जलो। तुम प्रदीप्त होने की अनुभूति हम मे भर दो। हम भी तुम्हारी प्रेरणा पाकर जीवन में आगे बढें।

अन्त मे हम इस सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि के द्वारा अपनी सत्ता का प्रकाश करने वाले उस महान ब्रह्म के चरणो मे प्रणाम करते हैं। आइए हम प्रभु का इन शब्दों में ज्ञान करें.—

यह चमकीले चतु सूर्य है
जिसके नित्य नवीन नयन
सृष्टि काल में जबकि सदा ही
करता वह इनका प्रणयन
हव्यावहिनी अग्नि बनी है
जिस बिराट का मुख छविमान
उस महान जगदीश्वर को है
अर्पित मेरा नम्र प्रणाम

यस्य वात: प्राणापानौ
चक्षुरङ्गिरसोऽभवन्।
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानी:
तस्मैज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम: ॥

(वात) यह वायु (यस्य प्राणापानौ) जिसके प्राण और अपान रूप है (अङ्गिरस:) यह प्रकाशमान पिण्ड (यस्य चक्षु: अभवन्) जिसके नेत्र है (य:) जिसने (दिश:) दिशाओं को (प्रज्ञानी:) ज्ञान करने वाली पताकाओं के समान) (चक्रे) बनाया हुआ है (तस्मै) उस (ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम:) सर्वतो महान ब्रह्म को नमस्कार है।

हे प्रभु! तुम्हारी लीलाए विचित्र विचित्र हैं। तुम्हारी कृपाए अद्भुत हैं। जिसे तुम्हारी कृपा का एक बार ज्ञान हो जाता है उसे तुम्हारी वास्तविक अनुभूति हो जाती है। उसे अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रभु दर्शन की कामना होने लगती है। ससार की प्रत्येक वस्तुमे प्रभु का रूप दिखाई देने लगता है। उस समय ससार की प्रत्येक गति प्रभु की गति लगने लगती है। उस समय सर्वत्र प्रभु का नाम सुनाई देने लगता है। यह प्रकृति उसका कीर्तन करती उसका उपदेश देती हुई प्रतीत होने लगती है।

मैं चुप था तुम बोल रहे थे—
मन मे मिश्री घोल रहे थे,
ओठो पर मधु तोल रहे थे।
मेरा मौन तुम्हारी टेर,
स्वप्न सुमेरू रहा हम घेर।

ससार मे चलती हुई यह वायु क्या है? वायु उस प्रभु के प्राण और अपान हैं। अर्थात् परमेश्वर जो वायु के रूप मे हमें जीवन दे रहा है, उसकी प्राण और अपान शक्ति काम कर रही है। सचमुच, यह नासिकायें हमारी हैं पर इनमे जो श्वास प्रश्वास वायु के रूप मे चल रहा है, वह प्रभु का है। आखे हमारी हैं पर रूप प्रभु का है, ज्योति प्रभु की है। कान हमारे हैं पर श्रवण प्रभु का है, शब्द प्रभु का है। शक्ति का स्रोत और जीवनदाता यह परमेश्वर ही है। इस तत्व को समझने पर हमे परमेश्वर की महानता की अनुभूति हो जाती है। जिसके हृदय मे यह भाव आया तो उसकी नस-नस, नाड़ी-नाड़ी तन्त्री-सी बज जाती है। वह गाता है और चारो दिशाओ मे प्रभु के गान की मधुरता संचारित होने लगती है। जब वह किसी का अपना दर्शन देता है तो उसकी जादू भरी भोली मुस्कान, उसकी प्रेम-रस से भरी निष्कपट दृष्टि सारे मानव समाज के हृदयो मे स्नेह रस की चादनी सी छिटका देती है। उसका एक-एक कटाक्ष सौ उपदेशों का एक उपदेश होता है। उसका गान हमारे हृदयो में प्रेम की सुधा छलका जाता है। वास्तव में हम मे जो प्राय: अपान के रूप मे जीवन दिखाई देता है यह प्रभु का ही जीवन है।

उस परमेश्वर की ज्योति अङ्गिरस के रूप मे दिखाई देती। अङ्गिरस का अर्थ अङ्गारस्थ होता है अर्थात् जिस ने अपने जीवन को तपस्या की अग्नि से प्रज्वलित कर दिया है। अंगारे के समान बना लिया है। वह प्रभु की ज्योति उसके रूप मे दिखाई देती है। जिन-जिन दिशाओं में पहले अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता था, व सब दिशाये अब एक नए, अद्भुत प्रकाश से चमचमा उठी है। नयी उमगे नए उल्लास ला रही हैं। नई आशाए और नए उत्साह पैदा करती जाती हैं। मनुष्य के जीवन मे अधिकार के समय प्रभु की ज्योति का प्रकाश आता है उस समय हमे सर्वत्र उस परमेश्वर की दिव्य ज्योति दिखाई देने लगता है। उस समय दिव्य आकाश, दिव्य दृष्टि, दिव्य बिजलिया, दिव्य ज्योतिया, सारा दृश्य दिव्य दिखाई देने लगताहै।

पताकाओ के रूप मे ये दिशाए ही उसका ज्ञान करने वाली हैं। मनुष्य अज्ञान के कारण यह समझता है कि परमेश्वर कहा दिखाई देगा? उसे उसके पास पहुचने का रास्ता नही दिखाई देता है। वह राह पूछता है। परन्तु जो मार्ग जानने का इच्छुक है उसे तो राह मिल जाएगी 'दिश: यश्चक्रे प्रज्ञानी' यह दिशाए ही उस प्रभु तक पहुचने का मार्ग बतलाएंगी। देखो तो सही, कितना अद्भुत दृश्य ऊपर, नीचे दाए, बाए दिखाई दे रहा है। चारो ओर रग बिरगी झंडिया लगी हुई हैं। दिशाओं मे लगी हुई ये रग-बिरगी झडिया इस विश्व के आयु-आयु मे व्याप्त विश्वात्मा के स्वागत के लिए उसी की राह बताने के लिए तथा विश्व के प्रति उसका दर्शन कराने के लिए है। ज़रा निगाह उठाओ ये झडिया नज़र पड़ेगी तथा जिस भी ओर ये सकेत करती हैं उसकी झाकी मिल सकेगी।

फूल की पखुडियो मे, तितली के पखो में, परिन्दो के परो मे, बादलो मे, इन्द्र धनुष मे, प्रभात की ऊषा मे सन्ध्या की छिटकती लाली मे वही चित्रकार बैठा अपनी तूलिकासे किस्म किस्म के रग भर रहा है। (क्रमश:)

...चार दर्शन

प्रादेशिक आर्य युवक संगठन ... हरियाणा, हिमाचल व जम्मू काश्मीर

आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के सभी युवक संगठन के प्रेमियों की सेवा में सविनय प्रार्थना है कि वे अपने समाज एवं विद्यालय के युवक समाज से दो-दो प्रतिनिधियों के नाम पते सहित सभा कार्यालय मे तुरन्त भिजवाने का कष्ट कर अनुगृहीत करें जिससे आगामी युवक सम्मेलन मे सभी को निमन्त्रित किया जा सके।

आशा है प्रार्थना स्वीकार होगी।

अध्यक्ष युवक समाज
जालन्धर

आर्य बन्धुओ सचेत हो !

'आर्य गुरुकुल खेडाखुर्द दिल्ली राज्य की ओर से २३ फरवरी से ग्राम प्रचार हो रहा है। जिन ग्रामो में प्रचार किया गया है, उनके नाम इस प्रकार हैं।

खेडाखुर्द, छोटी पूठ, नगली, समयपुर, सिरसपुर, खेडाकला, और नयाबास मे प्रचार हो चुका है। जिसमे खेडा खुर्द और नया बास में ईसाईयों के एजेन्टों ने प्रचार में प्रचार मे विघ्न डाला बिजली फेल कर दी। श्री प० आशानन्द जी से असभ्यता से सामने आए तथा यह भी कहा की ओ पंडित तुझे गोली मार दी जाएगी। नया बास मे जो खेडा खुर्द के पास है पत्थरो की वर्षा की गई।

क्या यह अपमान देहली की आर्य जनता का नहीं है। इस अपमान की पूर्ति करने के लिए खेडाखुर्द में देहली प्रांतीय आर्य सम्मेलन करें।

जिससे कि ग्रामीण जनता को इसाइयत के प्रभाव से मुक्त किया जा सके और सैकडो बच्चो को ईसायत की अराष्ट्रीयता प्रवृति से बचाया जा सके।

खेडा खुर्द में गिरजा घर ईसाई स्कूल, ईसाई अनाथालय है, जिनमें सैकडो हिन्दू लडके ईसाई धर्म की शिक्षा पा रहे हैं। प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारियो से प्रार्थना है, कि वे आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य प्रादेशिक सभा, तथा सार्वदेशिक सभा को पत्र लिखें कि देहली राज्य आर्य महासम्मेलन किसी ग्राम में करके आर्य जनता मे जागृति पैदा करें गुरुकुल खेडा खुर्द आपके इस पुण्य कार्य मे पूरा सहयोग देगा। कृपया एक बार गुरुकुल भूमि में पधार कर उत्साहित करें तथा यथाशक्ति सहयोग देवें।

इतने विघ्नों के होते हुए भी गुरुकुल के आचार्य श्री सत्यप्रिय जी तथा श्री प० आशानन्दजी ने निम्नलिखित ग्रामों में और प्रचार की योजना बनाई है जो कार्यक्रम में परिणत कर दी गई है। छोटी होलम्बी बडी होलम्बी, अलीपुर, मुखमेलपुर, बादली, प्रह्लादपुर, शाहबाद, बखाला, सुलतानपुर, और बुवाना।

—रमेशचन्द्र वेदप्रचारक ... गुरुकुल आश्रम खेडा खुर्द देहली राज्य

आर्यसमाज स्थापना दिवस सहीजपुर में

ता० १९-३-६९ बुधवार को आर्यसमाज मन्दिर सहीजपुर में 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' बडी धूमधाम से मनाया गया। जिस में स्वामी सुदर्शन जी महाराज, स्वामी श्री महाराज एवं स्वामी ... जी महाराज का 'आर्य-समाज की आवश्यकता' इस विषय पर ओजस्वी भाषण हुआ।

मन्त्री—मुख्तारसिंह ...

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी) ...०
३. चन्द्रगुप्त मौर्य
४. अमृत वाणी
५. ऋषि सन्देश
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A. (अंग्रेजी मे) १.५०
१२. सन्ध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १.००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २.००
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र (ले० आनन्द स्वामीजी महाराज) १.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. ऋषि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईदास जी M.A.) ०.५०
१८. प्राचीन ... (ले० ... नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाष्य प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. .५०
२०. „ „ द्वितीय „ „ .५०
२१. मुण्डक उपनिषद (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सोमानंद जी) उर्दू में ०.३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १.२५
२४. सीता (ले. आनन्दस्वामीजी) ०.३७
२५. दमयन्ती („ „ „) ०.३१
२६. पार्वती („ „ „) ०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A.) अंग्रेजी में १.२५
२८ वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १.५०
२९ जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वाध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला शहर में स्थापना दिवस

डा. वेदीराम शर्मा सभा मन्त्री ने अध्यक्षता की

अम्बाला शहर—आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला शहर में आर्य-समाज स्थापना दिवस रविवार २३-३-६९ को बडे समारोह पूर्वक सभा मन्त्री डा० वेदीराम शर्मा की अध्यक्षता में प्रातः ८ से १२ बजे तक मनाया गया। जिस में आ० शिवदत्त ... जी अम्बाला कैंट, स्वामी कृष्णानन्द जी तीर्थ, श्री ईश्वरचन्द्र जी रोपड़ निवासी व प० तेजराम जी महोपदेशक सभा के सारगर्भित व्याख्यान हुए। प० मेलाराम जी रेडियो सिंगर के गीतों से जनता झूम उठी।

इसी सभा में डी ए. वी. कालेज जालन्धर नगर को विश्वविद्यालय बनाने सम्बन्धी प्रस्ताव भी पारित हुए और सरकार से इस कालेज को शीघ्र ही विश्वविद्यालय बनाने की प्रार्थना है।

नव संवत्सर पर्व एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज सहवा पूर्व जिला ... में दि० १९-३-६९ को नव संवत्सर पर्व एव आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ७॥ बजे वेद मन्त्रों के साथ ध्वजारोहण कार्य सम्पन्न हुआ। सायकाल ६॥ बजे वर्ष पद्धति के अनुसार यज्ञ व प्रार्थना के पश्चात श्री डा० रघुनाथसिंहजी वर्मा प्रधान की अध्यक्षता मे मोहन लाल आर्य द्वारा नव पद्धति का लेख पढ कर सुनाया गया। समाज के प्रचारक सुखराम आर्य सि० शा०, बसन्तलाल गुप्ता प्रचार मन्त्री, रामचन्द्र आर्य मन्त्री आदि ने पर्व की विशेषता पर सारगर्भित भाषण दिये।

अन्त में श्री डा० साहब ने नव संवत्सर पर प्रकाश डालते हुए सब का आभार प्रदर्शन किया। शान्ति-पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—बसन्तलाल गुप्ता।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए.पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपये

वर्ष २९, अंक १४) — २४ चैत्र २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४–६ अप्रैल १९६९ — (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

न पापत्वाय रंसिषम्

प्रभुदेव ! मैं अपने तन-मन-धन तथा जीवन को न नहीं पापत्वाय-पाप के कार्यों में रंसिषम् लगाऊं। मेरी कोई भी वस्तु पाप में न लगने पाए।

भाव :–वेद का यह कितना प्यारा, सुन्दर तथा रहस्य से भरपूर उपदेश है कि हे मनुष्यो ! जो भो तुम्हारे पास सम्पत्ति है। वह चाहे तन की है, मन की या धन की है—उसे भूल कर भी पाप में मत लगाना। अपनी किसी भी वस्तु से पाप को बढ़ाना भी तो पापो बनना है। प्रभु का भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है कि परमदेव ! मेरा धन कभी भी पाप के कामों में न लगे। सदैव यह धर्म में तथा विश्वसेवा में लगता रहे मेरी आय भी धर्मपूर्वक हो और इसका व्यय भी धर्म के प्रसार के लिए हो–सम्पादक

वे दा मृ त

सब कुछ आप का है

ओ३म यदिन्द या वतस्त्वमेतावदहमीशीय। स्तोतारमिद दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम ॥ सामवेद ३-८-८

अर्थ—(यत्) जो भी (इन्द्र) हे इन्द्र भगवन् ! याव-(त.) जितना भी जगत् है या जगत् में है–त्वं-आप का ही (एतावत्) यह सब कुछ है। (अहम) मै (अशीय) धन का स्वामी बनूं। (स्तोतारम्) ईश्वर के भक्तों को इत्—ही (दधिषे) सेवा के लिए धारण किया जाता रहे। यह धन (पापत्वाय) पाप के लिए (न) नहीं (रंसिषम्) प्रयुक्त न करू। मेरा धन पाप कर्मों में न लगे।

इस का भाव यह है

वेद भगवान् का उपदेश यह है कि हे मनुष्यो ! यह जितना भी वस्तु समूह इस जगत् में है—सब उसी भगवान् का ही है। परमात्मा ही सब का स्वामी है, मालिक है, अधिपति है। यह तमाम उसी महान् भण्डारी का भण्डार है। धन पर अभिमान मत करना। प्रभुदेव ! मैं आप का उपासक बन कर प्रार्थना करता हूं कि मेरा धन आप के भक्तों की सेवा में लगता रहे। कभी भी पाप कर्मों में इस का प्रयोग न करू। मेरा धन पाप मे न लगने पाए। —सं.

ऋषि दर्शन

जन्माद्यस्य यतः

अर्थ :—यतः जिससे जन्म आदि जन्म या उत्पत्ति स्थिति और प्रलय अस्य इस जगत् का होता है। वही ब्रह्म है उसे ही जानना चाहिए।

भाव :–यह जितना भी विशाल विश्व दिखाई देता है। इसको कौन सी शक्ति उत्पन्न करती है, धारण करती हे तथा इस का प्रलय करती है ? मनुष्य की तो शक्ति बहुत थोड़ी है। उसका तो अपने ही शरीर पर अधिकार नही है। यह सारा जगत् कितने नियम और मर्यादा में व्यवस्थित होकर कार्य कर रहा है। वह ब्रह्म ही है जिससे नियत नियमों से रहते हुए इस विविध विश्व को उत्पत्ति होती तथा इसकी स्थिति और प्रलय का सारा कार्य जिस शक्ति के नियम नियमों में चलता है–वही ब्रह्म है। उसी को जानो–सम्पादक

वेदान्त दर्शन

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच० डी० (सभा मन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

युवक स्तम्भ—

आर्य युवकों से

श्री विशेष शर्मा 'दसूहा'

आर्य जगत में पंजाब आर्ययुवक संगठन के प्रधान माननीय डा० वेदीराम जी शर्मा की आर्य युवको के सामूहिक रूप मे सगठित होने की अपील जो पिछले कुछ सप्ताहो से प्रकाशित हो रही है उसके स्वागतार्थ प्रस्तुत लेख लिख रहा हू।

आज देश की नैतिकता निम्न स्तर तक पहुच चुकी है। जब तक समाज मे धर्म की भावना को जागृत और समृद्ध नही किया जाता। नैतिकता का स्तर कभी ऊचा नही हो सकता है। किसी देश का गौरव उसके युवक व युवतियो के चरित्र पर निर्भर होता है। आज जबकि चरित्र-हीनता, अश्लीलता युवको के जीवन का सौंदर्य बन चुकी है और आर्य समाज जैसी राष्ट्र हित चाहने वाली सस्था चरित्र-निर्माण जैसे महान कार्यों मे रुचि न लेकर अपनी सारी शक्ति उन कार्यों पर लगा रही है जिन से हम लक्ष्य से भटकते जा रहे है तो आर्य समाज के कर्णधारो के मन मे इस समस्या का सात्विक भावना से समाधान सोचना स्वाभाविक ही था।

इसलिये पजाब के आर्य युवक वर्ग का कर्तव्य बन जाता है कि वह नेताओ के सकेतो पर चलते हुए समय की आवश्यकता को पूरा करे। विनाश की ओर गिरते हुए हमे कोई न कोई उपाय करना ही होगा।

आज हमे गुरुदत्त जैसे नव-युवको की आत्माए पुकार-पुकार के कह रही है कि सच्चा सुख भोग मे नही त्याग मे है, मोह मे नही कर्त्तव्य मे है। उत्कर्ष का मार्ग तप, त्याग और बलिदान की नीव पर खड़ा है। आज हमे यह सकल्प करना है कि महर्षि दयानन्द जिस चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य की स्थापना करनी चाहते थे उसके लिए निःसकोच सर्वस्व अर्पण करेगे।

यहा एक बात मैं आर्यसमाज के विद्वानो से कहनी उचित समझता हू जो अपने व्याख्यानो में बड़ा खेद प्रकट करते हैं कि आर्यसमाज मे नवयुवकों का अभाव हो रहा है, इस नए राम का सर्वथा प्रवेश नहीं हो रहा, आर्यों की अपनी सन्तान आर्यो से दूर हो रही है। इससे सिवा निराशा के और कोई लाभ नही। बल्कि दूसरे मतो को कहने का अवसर मिलता है कि आर्यसमाज समाप्त हो रहा है। दयानन्द का शरीर फूल रहा है और आत्मा शरीर को छोड़कर जा रही है।

हम इस प्रकार के निराशावाद से सहमत नही है बल्कि पूरे बल से इसका विरोध करते हैं।

आर्य समाज की विशाल-सस्थाओ के होते हुए यहा हजारों युवक और युवतिया शिक्षा ग्रहण करती है, फिर भी आर्य वातावरण कैसे नही बनाया जा सकता है? पंजाब मे युवक-समाजो की कमी रही और फिर इन को प्रोत्साहन देने वाला भी कोई नही था।

इस समय आर्य समाज मे योग्यतम युवक वर्ग की कमी नही है जिनको समाज के सिवाए और कोई भी रुचि नही परन्तु पता नही कि वह कहां-कहा और किस-किस स्थिति में हैं। जालन्धर में डा० वेदी राम जी, प्रधान युवक सगठन, पजाब जो इस पवित्र कार्य के लिए, अपनी भूमिका निभा रहे हैं इससे पजाब के युवक वर्ग को एक नई चेतना मिलेगी।

और विशेष रूप मे अब जो दयानन्द कालेज जालन्धर को सगठन का केन्द्र बनाया जा रहा है यह और भी भलाई का काम है अत: पजाब के सभी युवको को चाहे वह युवक समाजो से सम्बन्धित या कुमार सभाओ से इस कार्य मे एक दूसरे के कन्धे से कन्धा मिला कर चलना चाहिए।

आर्यसमाज जालन्धर छावनीका वार्षिकोत्सव

आ० स० जालन्धर छावनी का वार्षिक उत्सव १८, १९, २० अप्रैल को बड़े समारोह के साथ मनाया गया। जिस मे स्नातक श्याम सुन्दर जी, वैद्य राम किशोर जी, प० सत्यदेव जी शर्मा, श्री सत्यपाल-वीर भान भजन मण्डली और श्री हरबस-लाल जी हस तथा और कई दूसरे आर्य नेता पधार रहे हैं। श्री श्याम-सुन्दर जी की कथा २४ अप्रैल से आरम्भ होगी।

—भक्तराम भण्डारी
मन्त्री

संगठन और संघर्ष

श्री करनैलसिंह विद्यार्थी

दुनिया में उन्नति के लिए बहुत लम्बी-लम्बी बातें कहने को मिलती हैं और कान इतनी लम्बी-चौड़ी बातों को सुनते-सुनते थक जाते हैं पर उन्नति उतनी नहीं होती जितनी चाहिए क्योंकि किसी का मुख यदि दक्षिण को है तो दूसरी का पश्चिम को ऐसा क्यो है, क्यो सारे यत्न सफल नहीं हो पाते, बस यही बताना इस छोटे से लेख का उद्देश्य है।

कहने को तो यह दो छोटे से शब्द हैं देखने को भी। पर इनमे क्या भरा हैं यह वही जानते हैं जिन्होने इसको काम मे लाया हो या इनको समझने का तनिक भी प्रयत्न किया हो। आओ एक छोटे से उदाहरण से इसे समझने की कोशिश करें: यदि मैं गलती नही करता तो यह कह सकता हू कि प्रत्येक मनुष्य के एक हाथ की उगलिया पाच होती हैं और हा गलती से किसी की छ: भी हो सकती हैं। मेरे कहने का मतलब है यह पाचो ही उगलिया एक जैसी नही होती हैं। कोई छोटी है तो कोई बड़ी। और साथ ही सबकी ताकत भी एक जैसी नहीं होती। पर यदि इन सब को इकट्ठा कर लिया जाए और फिर इनकी ताकत को देखा जाए तो मालूम हो जाएगा कि एक अकेली उगली से सब मिली हुई उगलियों की ताकत कही ज्यादा है

अर्थात् अकेली उगली के सघर्ष से इकट्ठी हुई उगलियो का सघर्ष कही ज्यादा महत्ता रखता है। इन उक्त वाक्यो से पता चलता है कि सगठन और सघर्ष का आपस मे बहुत सम्बन्ध है। और यदि कोई किसी भी काम के लिए सघर्ष करना चाहता है तो उसके लिए सगठन की बहुत जरूरत है। नही तो वह सारे का सारा सघर्ष निष्फल हो जाएगा। और इसी प्रकार यदि कोई सगठन करता रहेगा और उसे किसी सघर्ष की ओर नही मोड़ेगा तो उसका सगठन भी किसी काम का नही है।

सगठन और सघर्ष की किसी देश समाज राष्ट्र व परिवार के लिए कितना जरूरी है यह वही जानते हैं जिन्होंने उन्नति की हो या उन्नति में सफलता मिली हो या सफलता की इच्छा हो। प्रत्येक गति करने वाली संस्था के लिए यह जरूरी है कि संगठन में रहे, तभी संघर्ष कर सकती है तभी उन्नति कर सकती है।

सगठन की आज के भारत को बहुत जरूरत है भारत का एक-एक मानव, एक-एक बच्चा यदि मिलकर अपने देश के लिए सोचे तो उसे संगठन में लाओ, और फिर उनमें सघर्ष की आग भरो संघर्ष की ... जाओ।

भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि चाहे कोई भी जाति कोई भी वर्ग ने उन्नति की है सफलता प्राप्त की है तो संगठन में रह कर पहले सगठन बाद मे सघर्ष। और यदि किसी ने असफलता प्राप्त की है तो फूट और बिखर कर, अपने साथियो, देशवासियो के साथ कधे से कधा न मिला कर। यदि एक पर किसी विदेशी ने हमला किया है तो दूसरे ने यह कह कर कि मुझे क्या संगठन की एकता को तोड़ा जिस कारण वह भी गया और स्वय भी।

अभी इसी युग की बात है भगतसिह और साथियो ने यदि किसी बात में सफलता प्राप्त की तो सगठन के बल पर, संघर्ष के बल पर चीन या पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया। और उसके मुकाबले मे भारत ने केवल सगठन का परिचय देकर सघर्ष किया तो मुसीबत के बादल भाग गये।

आज यदि आर्यसमाज भी उन्नति की ओर चलना चाहती है तो इसे भी स्वय सगठन मे रहकर सघर्ष करना चाहिए इस की **Properties** जो युवक हैं उनको सगठन मे में रखो और सघर्ष में लाइये यही इस लेख का उद्देश्य है।

★★

जालन्धर में दयानन्द विश्वविद्यालय

(प्रिं० भीमसेन जी बहल, एम० एस० सी०, सभा प्रधान)

डी० ए० वी० कालेज जालन्धर के सुयोग्य प्रिं० और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के आस्मनिष्ठ प्रधान माननीय प्रिं० श्री भीमसेन जी बहल ने अपने एक लेख मे पंजाब सरकार द्वारा जालन्धर मे एक विश्वविद्यालय स्थापित करने के निश्चय का स्वागत करते हुए सरकार की भूरि-भूरि प्रशसा की उनका यह लेख आर्य जगत के पाठको के लिए अविकल रूप मे यहा दिया जा रहा है। आशा है पाठक भी इस लेख के प्रभाव मे अपने-अपने विचार प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करेगे। —स०

पजाब सरकार ने अमृतसर और जालन्धर में जो दो विश्व-विद्यालय खोलने का निश्चय किया है वह बडा स्तुत्य और समयोपयोगी निश्चय है। पंजाब प्रदेश भारतवर्ष मे प्रत्येक दृष्टि से सर्वदा अग्रसर रहा है चाहे वह राष्ट्रीय कार्य हो रक्षा के प्रयत्न हों अथवा कृषि और उद्योग। यह प्रदेश सदा ही अग्रणी रहा है। यदि यहां विश्वविद्यालय आरम्भ हो गया तो यह अन्य प्रदेशो के लिए भी एक शैक्षणिक आदर्श उत्पन्न कर देगा। उच्च-शिक्षा और अनुसधान मे लगने वाला धन व्यापार, उद्योग और प्रदेश को हर प्रकार से उन्नति मे सहायक हो सकता है।

यदि पंजाब सरकार निकट भविष्य मे इन स्थानो पर विश्व-विद्यालय आरम्भ करने की इच्छुक है तो मेरी दृष्टि मे इस प्रदेश के अच्छे कालेज को ही विश्वविद्यालय के रूप मे परिवर्तन कर देना ही अच्छा कदम होगा। इस रूप मे मैं सरकार के सामने डी, ए. वी. कालेज जालन्धर को उदाहरण रूप मैं प्रस्तुत कर सकता हू। डी. ए. वी. कालेज जालन्धर आज भी हर प्रकार से विश्वविद्यालीयस्तर स्थापित किए हुए दिखाई देता है और सरकार की वर्तमान योजना अनुसार यह कालेज विश्वविद्यालय बनने की हर रूप मे क्षमता और योग्यता से परिपूर्ण दिखाई देता है।

इस कालेज में विद्यार्थियों की वर्तमान संख्या ३५०० से अधिक है यह संख्या की दृष्टि से ही नहीं अपितु समस्त प्रदेश मे योग्यतम छात्रो परीक्षा परिणामो, छात्र-वृत्तियों की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ कालेज माना जा चुका है। इस कालेज के विद्यार्थियो ने परीक्षा परिणामो मे जो रिकार्ड स्थापित किए, मैरट लिस्ट मे जो सख्या और स्थान प्राप्त किए उनकी दृष्टि से भी इसने प्रदेश के सभी कालेजो मे प्रशसात्मक स्थान निश्चित किया है। कालेज के विद्यार्थियो ने केवल परीक्षा परिणामो मे ही पिछले रिकार्ड नही तोडे अपितु अनुशासन की दृष्टि से भी यह कालेज सर्वत्र विख्यात है। मुझे यह कहते हुए बड़ा गर्व अनुभव हो रहा है कि वर्तमान स्तर में इस कालेज के विद्यार्थियों ने किसी भी आदोलनात्मक कार्य मेएक भी क्षण व्यर्थ नष्ट नहीकिया यद्यपि पजाब मे सर्वत्र छात्र आदोलन वर्ष भर उग्र रहे जिनसे वातावरण आशान्त बना रहा ऐसी भीषण परिस्थिति मे भी इस कालेज के विद्यार्थियो ने जिस सयम का उदाहरण प्रस्तुत किया वह निश्चय रूप में इनके अन्तर मन मे बैठी अनुशासनात्मक धारणा का परिचय कहा जा सकता है।

कालेज भवन वस्तुतः एक शिक्षा मन्दिर का भव्य दृश्य उपस्थित करता है इसके अध्ययन कक्ष, प्रयोग शालाए, विशाल पुस्तकालय और वाचनालय तथा रसायन विभाग, गणित विभाग और भौतिक शास्त्र विभाग के कक्ष तो सोने पर सुगन्धि का कार्य कर रहे हैं। इस कालेज का खुला व्याख्यान स्थल तैरने का तालाब अपने ढग का निराला ही है। आधुनिक सुविधाओ से सम्पन्न कालेज के यह सभी स्थल चार हजार विद्यार्थियों के बैठने की सुन्दर व्यवस्था से परिपूर्ण है। कालेज के छात्रावास में एक हजार विद्यार्थियो के आवास का प्रबन्ध है। जिस में छात्रों को हर प्रकार की सुविधाए प्राप्त हैं। इस कालेज का यह छात्रावास अपने ही ढग का यह अनूठा है। छात्राओं के लिए पृथक छात्रावास का प्रबन्ध है।

कालेज का पुस्तकालय एक विशाल भवन में स्थापित है जहा पर एक समय में ४०० विद्यार्थियों के बैठ कर पढने का प्रबन्ध किया हुआ है। पुस्तकालय मे हम ने ओपन शैल्फ पद्धति आरम्भ कर दी है तथा स्नातोकतर और पी. एच. डी के स्तर तक अनुसधान और शोध कार्यो का भी प्रबन्ध है। वैसे पुस्तकालय मे स्नातोकतर विद्यार्थियो और स्नातक श्रेणियो के योग्यतम विद्यार्थियो के लिए पृथक-पृथक अध्ययन कक्ष सुरक्षित रखे गए हैं जिन मे बैठ कर विद्यार्थी रात्रि को नौ बजे तक अध्ययन करते रहते हैं। इस समय पुस्तकालय मे पाच लाख रुपये से अधिक मूल्य की ४८६७६ पुस्तके हैं।

कालेज मे १५० सयोग्य अध्यापको का प्रबन्ध है जिन मे से काफी सख्या पी. एच. डी. स्वर्ण पदक प्राप्त और रिकार्ड स्थापित करने वाले अध्यापको की है। इस कालेज की प्राध्यापको की विशेषता है कि वह सभी अनुसधान प्रिय हैं और काफी सख्या मे यह लोग **Ph.D** की उपाधि के लिए अनुसधान कार्य मे व्यवस्त है। उन मे से कई विभागो मे शोध प्रतिकाये भी प्रकाशित की गई है तथा काफी से अधिक प्राध्यापको ने श्रेष्ठतम पुस्तके लिख कर विशेष ख्याति प्राप्त की है।

अध्यापन कार्य के साथ ही साथ इस कार्य को तीव्रता प्रदान करने के लिए कई प्रकार की नवीन योजनाओ का भी शिक्षा के क्षेत्र मे प्रयोग किया गया है।

जिनमें डिसकशन ग्रुपस, सैमीनार्ज और टुटोरियल ग्रुपस विशेष रूप मे उल्लेखनीय है। यहा पर अमरीका की पद्धति को दृष्टि मे रखकर वर्ष मे कई बार कुईज परीक्षाओ का भी आयोजन निश्चित है यही नही अपितु इस कालेज मे विद्यार्थियो को स्वावलम्बी बनाने के हेतु 'कमाओ और पढो' के आदर्श को सामने रखते हुए कई प्रकार के सरल कार्य करने का अभ्यास भी कराया जाता है जिनके माध्यम से वह कुछ धन भी प्राप्त कर लेते हैं और पढते भी हैं। विद्यार्थियो मे स्वास्थ्य नागरिकता और प्रशासन का अभ्यास कराने के लिए विद्यार्थी सग और विद्यार्थी सरकार (**Students Govt**) भी स्थापित है। जो विद्यार्थियो के झगडो के फैसले स्वय करते हैं।

शिक्षा के साथ-साथ कालेज ने खेलो के क्षेत्र मे भी काफी नाम कमाया है इस कालेज ने पजाब विश्वविद्यालय की खेल प्रतियोगताओं मे जनरल चैम्पियनशिप सारे अन्य कालेजो को हराते हुए लगातार आठ वर्षों तक प्राप्त की है। इस प्रकार पजाब ही नही भारत भर के कालेजो मे इस कालेज ने शिक्षा के साथ-साथ खेलो के क्षेत्र मे भी नाम कमाया।

इन सभी विशेषताओं के होते हुए यदि इस कालेज को विश्वविद्यालय बनाया जाता है तो सरकार को अधिक व्यय और परिश्रम करने की आवश्यकता नही पडेगी क्योंकि यह तो स्वय प्रत्येक दृष्टि से वैसे भी विश्वविद्यालय जैसा ही कार्य कर रहा है। कुठारी आयोग के अनुसार भी किसी विशिष्ट कालेज को अध्यापन विश्वविद्यालय (**Autonomous Centre of Learning**) बनने की भी सभी शर्तें पूरी कर देता है। इससे राज्य सरकार का लाखों रुपया ही नही बचेगा अपितु इस कालेज ने शिक्षा के क्षेत्र मे जो अनुभव प्राप्त किया है उससे भी जन-सामान्य लाभान्त हो सकता है। डी ए. वी सस्थाओ में अपने जन्म-काल से ही सेवा-त्याग, मानव-प्रेम और सत्यता के मानवीय आदर्श स्थापित किए हैं। अग्रेजी राज्यमे स्वदेश भक्ति की भावना को इन्ही सस्थाओ ने सुरक्षित रखा है।

आधुनिक युग के निर्माता महर्षि दयानन्द जी की स्मृति मे १९१८ मे स्थापित डी० ए० वी० कालेज जालन्धर ने शासक, नीतिज्ञ शिक्षा शास्त्री और अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाडी ही उत्पन्न नही किए अपितु इस सस्था ने बडे से बडे लाला लाजपत राय, शहीद भगतसिंह जस्टिस मेहरचन्द महाजन, बक्शी टेकचन्द जी जैसे देश भक्त और ला० दीवानचन्द, ला० सूर्यभान जी, डा० जी० एल० दत्ता और डा० टी० एन० खोसला जैसे शिक्षा-शास्त्रियो को भी बनाया। खिलाड़ियों की दृष्टि से विश्वविख्यात

(शेष पृष्ठ ४ पर)

डी. ए. वी. कालेज फार वूमैन

अमृतसर में द्वितीय पुरस्कार वितरणोत्सव

अमृतसर, १० मार्च—डी० ए० वी० कालेज फार विमेन अमृतसर का द्वितीय पुरस्कार वितरणोत्सव कल यहा सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्ष श्री अयोध्या नाथ जी खोसला, भूत-पूर्व राज्यपाल, उडीसा एव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध कर्त्ती सभा के उपाध्यक्ष ने की और पारितोषिक बाटे।

श्री खोसला ने अपने भाषण मे कहा कि स्कूलो व कालिजो मे प्रत्येक श्रेणी मे धार्मिक शिक्षा अनिवार्य रूप से लागू होनी चाहिए। इससे धर्म निरपेक्षता मजबूत होगी।

आपने बताया कि धर्म निरपेक्षता से अभिप्राय: धर्महीनता नही है। धर्म शिक्षा के बिना दी गई शिक्षा का कोई महत्व नही। इस समय हम विनाश की ओर बढ रहे हैं और विनाश को रोकने के लिए एक ही मार्ग है कि देश मे फैलती हुई सामाजिक असमानता को रोका जाए। यह असमानता ही है जो कि शिक्षा, समाज और आर्थिक क्षेत्र मे पाई जाती है। देश मे यही बढती हुई अशान्ति का मुख्य कारण है। नक्सलवाडी, नागालैंड जैसी समस्या इन्ही कारणो से उभर रही है, क्योकि कुछ सामाजिक तत्वो की अवहेलना की जा रही है जो कि विद्रोह के मार्ग पर उतरते चले आ रहे हैं।

आपने उडीसा की पिछडी हुई जातियो और हरिजनो की शोचनीय दशाका वर्णन करते हुए कहा कि उनके उद्धार के लिए काफी विस्तृत क्षेत्र है। आप ने पजाबियो से विशेष कर डी. ए. बी. संस्थाओं से अपील की कि वे वहा जा कर उन का उद्धार करे। आप ने अमृतसर मे माडल स्कूल बनाने की अपील की।

श्री खोसला ने इस बात का दु:ख व्यक्त किया कि आज के छात्र व छात्राए भारतीय सस्कृति के बारे मे अनभिज्ञ हैं। हमे विदेशी सस्कृति का दास नही बनना चाहिए, अपितु भारतीय सस्कृति का अनुसरण करना चाहिए। आप ने कहा कि महिलाए सदा भारतीय सस्कृति की रक्षक रही है, उन्होंने छात्राओ से अपील की कि वे भारतीय सस्कृति को मजबूत बनाए और सर्वत्र ससार में इस का प्रचार करे।

हिन्दी और पजाबी के विवाद का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि झगडा सर्वथा निर्मूल है क्योकि उन दोनो भाषाओं का मूल स्रोत सस्कृत है। हम इस झगडे मे न पड कर सदाचार की ओर बढें।

जालन्धर में दयानन्द विश्वविद्यालय

(पृष्ठ ३ का शेष)

उधमसिह, धर्मसिह, हरिपाल, कौशिक जैसे खिलाडी भी राष्ट्र को प्रदान किए।

इन तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए यदि इस सस्था को विश्वविलय का स्थान दिया जाता है तो इस से दुआबा और जालन्धर के लोगो की ही इच्छा और आवश्यकता की पूर्ति न होगी अपितु समस्त राष्ट्र की मर्यादायों का पालन करने वाली समस्यायो को उत्साह देने का भी एक अच्छा आदेश उपस्थित कर राज्य सरकार सभी की प्रशसा का पात्र बन जाएगी। इस वर्ष यह कालेज अपने सेवाकाल के ५० वर्ष पूर्ण करके इसी अक्तूबर मे अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रहा है। राज्य सरकार के लिए यह एक उपयुक्त अवसर होगा यदि वह इस कालेज की सेवाओ को ध्यान मे रखते हुए पूर्ण अधिकार सम्पन्न एक विश्वविद्यालय घोषित कर दे। शिक्षा जगत मे इससे प्रसन्नता की लहर प्रवाहित हो जाएगी तथा पजाब विश्व भर मे प्रसिद्ध इस सस्था के माध्यम से प्रशसा का अधिकारी बन जाएगा।

प्रचार समाचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब, हरियाणा, हिमाचल और जम्मू-काश्मीर ने मुझे अपना उपदेशक रख लिया है। १७ से २१ मार्च तक आर्यसमाज नूरपुर हिमाचल और २५ से २८ मार्च तक आर्य-समाज सरहिद (पजाब) में रात्री को वैदिक कथा का और धर्म का प्रचार करता रहा। रामनवमी का पर्व बड़े प्रेम और लगन से मनाया गया। प० मेलाराम जी सगीताचार्य के मनोहर भजन सत्सग की शोभा को बढ़ाते रहे।

आर्यसमाज माडल टाऊन अम्बाला मे रात्री के सत्सग और आर्यसमाज माडल हाऊस जालन्धर मे रविवार के साप्ताहिक सत्सग में भाषण दिए। इनका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। और आगामी प्रोग्राम बनाए गए।

—तेजराम उपदेशक सभा

सोनीपत में विशाल आर्य महोत्सव

(मन्त्री आर्य समाज लाजपत नगर, सोनीपत)

आर्य प्रादेशिक सभासे सम्बन्धित आर्यसमाज लाजपतनगर सोनीपत का दसवां आर्यमहोत्सव २८-२९-३० मार्च १९६९ में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ हजारों की संख्या में लोग आते रहे इस उत्सव को देखकर लाहौर के उत्सव याद आते थे। उत्सव से पूर्व सभा के चोटी के विद्वान मधुर भाषी श्री प. खुशीराम जी शर्मा महोपदेशक और प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री प. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री बी ए मौलवी फाजिल बड़ी प्रभाव शाली कथा करते रहे २४ से २७ मार्च तक प्रतिरात्री कथा से पूर्व चिमटा मडली के भजन होते रहे। श्री हजारी लाल जी के भजन होते रहे। ला० हसराज जी खन्ना एडवोकेट के दिए गए दान रूप मे पलाट में नया आर्य समाज मन्दिर बन रहा है वहा उत्सव हुआ सभा के योग्य स्टाफ के अतिरिक्त श्री नरेन्द्र जी मालिक प्रताप और वीर अर्जुन देहली, ला० रामगोपाल जी शाल वाले एम. पी, प० पुरुषोत्तम जी एम. ए. उप सभा दिल्ली डा० रामप्रकाश जी एम०ए०पी०एच-डी० चण्डीगढ़, डा० कुमारीसुषमा पाल एम.ए.पी.एच.डी, श्री प. कृष्ण जी शास्त्री, श्री जैदेव जी जतोई वाले व श्री प्रेम जी भिवानी आदि नेता विद्वान पधारे ला० गणेश-दासजी आर्य प्रसिद्ध यज्ञ प्रेमी प्रभुभक्त प्रचार निकेतन जवाहर नगर दिल्ली के कर-कमलो से यज्ञशाला का उद्घाटन कराया गया ५०१/- देने का वायदा एक अपने भक्त के द्वारा दूसरे दिन दिल्ली से कहला भेजा यहा औषधालय खोलने का संकल्प किया गया है। जनता मे भारी उत्साह था श्री खन्ना साहब से एक और पलाट देने की प्रार्थना की गई और पलाट भी देने का उन्होने वचन दिया इस आर्य मन्दिर वास्ते ५०१/- का चैक दिया इनकी धर्म पत्नी ने भी बडी श्रद्धा से १०१/- दान दिया अन्य मित्रो द्वारा भी सहयोग के आश्वासन मिले। ३००/- की अपील पडी और भी आशा है। भाषणो मे हजारो की हाजरी होती थी जनता में उत्साह था इस सारे उत्सव का प्रबन्ध पहले की भांति आर्य प्रादेशिक सभा के सुयोग्यवक्ता तथा लगनशील कार्यकर्ता सोनीपत निवासी पंडित चन्द्रसेन आर्य हितैषी के सद प्रयत्नो का फल है सोनीपत की जनता पडित जी का बड़ा मान करती है। मन्दिर वास्ते चन्दे की भागा दौडी भी प्राय: जब-जब कभी घर आते हैं प्रयत्न करते रहते हैं। इस समाज के सभी अधिकारी व सदस्य विशेष कर वर्तमान प्रधान श्री नन्द जी लूथरा, डा० देवराज जी सपडा और मा० खुशीराम जी हसिजा ये दोनो उप-प्रधान है मा० मेघ राजजी कथूरिया, डा० ठाकुर दास जी दीवान, मा० दियाल चन्द आर्य पडित रामदेव शर्मा, भगत वासदेव, मा० किशनचद जी आर्य ठेकेदार इन्हो ही धर्म-पत्नी श्रीमति देवी बाई और श्रीमति उत्तमी बाई बहन भागवन्ती मलिक, बहन ईश्वर देवी सपडा. श्रीमति सरला ठाकुर श्रीमति वेद कुमारी मदान आदि ने पूर्ण योगदान दिया। उत्सव हर प्रकार से सफल रहा। श्री शाम सुन्दर जी माकन, श्री के० सी० अरोड़ा साहब और ला० हसराज जी खन्ना एडवोकेट ये तीनो सज्जन दोनो दिन यजमान रहे। डा० देवराज जी, ला० नन्दलाल जी लूथरा, श्री पुन्नूराम जी कृष्ण मदिर वाले, डा० ठाकुरदास जी दीवान, मान्य मा० दौलतराम जी आर्य मुख्य अध्यापक हरियाणा हाईस्कूल, ला० देवीदास आर्य, डा० रुद्रमणि जी, म० के० सी० आर्य, म० कवलनैन जी, प्रो० वेद-प्रकाश जी एम० ए० भगत वासदेव जी आदि सभी सज्जनों ने भोजनादि से सत्कार किया, इस उत्सव की सफलता मे ऊपर लिखित सभी सज्जन धन्यवाद के पात्र तो हैं ही, श्री रामदेव जी सपड़ा प्रेस रिपोर्टर, ला. रामगोपाल आर्य म. भरतदेव जी आर्य प्रधान आर्य समाज शांतिनगर को धन्यवाद दिए बगैर भी नहीं रह सकते पंडित चन्द्र सेन जी की धर्मपत्नी कौशल्या देवीने तो उपदेशक मंडल की सेवा करने में

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सभी डी.ए.वी.स्कूलों कालेजोंसे निवेदन

सभी मुख्याध्यापकों से निवेदन है कि अपने-अपने स्कूलों कालेजों में आर्य-विचारों वाले नवयुवकों का संगठन बनाएं। स्वयं उस संगठन का निरीक्षण करें। यदि किसी प्रकार की सहायता लेना चाहे तो महामन्त्री,आर्य युवक संगठन महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी (Cout)जालन्धरC/o A. P. P सभा के नाम पत्र-व्यवहार करें। समय पर वहां से एक-दो कार्यकर्त्ता आपके पास आकर सारे कार्य के बारे में बता कर प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

आशा है सभी स्कूलों, कालेजों व आर्य संस्थाओं को आर्य युवक संगठन का संविधान व नियमावली मिल गई होगी जिसमे इस संगठन का महान लक्ष्य स्पष्ट तौर पर वर्णित है। फिर भी यदि किसी बातकी पूछताछ करनी हो तो डा० वेदीराम शर्मा अध्यक्ष प्रा० आर्य युवक संगठन डी० ए० वी० कालेज जालन्धर से पत्र-व्यवहार करें।

जैसाकि पहले भी सूचना से सूचित किया गया है कि पंजाब के आर्य युवकों मे नव-शक्ति संचित करने के लिए, उनको संगठित करने के लिए प्रा० आर्य युवक संगठन के तत्वधान मे एक वृद्ध संगठन अधिवेशन निकट भविष्य मे किया जा रहा है जिसकी सफलता के लिए सभी आर्य युवक संगठनों से कम से कम दो नवयुवकों की सूचि सभा को जल्दी से जल्दी भेज देवे। आशा है सभी आर्य समाजें डी० ए० वी० संस्थाये इस ओर विशेष ध्यान देंगे।

—करनैलसिंह विद्यार्थी

आर्य समाजों से नम्र निवेदन

जैसे कि पत्रों द्वारा सब आर्य समाजों को सूचना दी जा चुकी है कि मं० हंसराज जी की पुण्य स्मृति मे आर्य जगत साप्ताहिक का म० हंसराज विशेषांक १३ व २० अप्रैल को सम्मिलित होगा। इसलिए सब आर्यसमाजें इस विशेषांककी अधिकसे अधिक प्रतियां खरीद कर धन्यवादी बनावें। जिनसज्जनोंने इस अंकके लिए लेखादि भेजने हों वह १० अप्रैल तक भेज देवें।

—व्यवस्थापक आर्य जगत।

आर्यसमाजों से विशेष निवेदन

प्राय: यह देखा गया है कि छोटी बड़ी सभी आर्य समाजे अपने यहां पुस्तकालय रखती हैं। रखना भी चाहिये क्योंकि यही तो आर्यसमाज का खजाना है। हमने बहुत-सी समाजों के भी पुस्तकालय देखे हैं जिनकी पुस्तको को दीमक तक लगे हुए होते है। कितनी ही कीमती वह पुस्तके होती हैं यह तो वही जानता है जिसने उन्हे खरीदा होता है। कई एक जगह पर वहां के अधिकारी यदि उनको यह कहा जाए कि इन पुस्तको को मुफ्त ही बांट दो, तो उनको खटकता है, उनको दु:ख होता है। पर उनको उस समय तनिक भी दु:ख नही होता जब उन पुस्तको की दुर्गति दीमको द्वारा होती है।

आशा है सभी समाजें मेरे विचारों को समझ गई होंगी। उनसे मैं प्रार्थना करना चाहता हू कि यदि ऐसे पुस्तकालय तुम्हारे पास भी हैं तो उनको बन्द (दीमको के लिए) रखने की बजाय, ऐसी पुस्तको को मुफ्त प्रचारार्थ बांट दे और ऐसे लोगो को वह पुस्तकें दें जो रद्दी न बेचना चाहे बल्कि स्वयं पढना, पढाना चाहें ऐसी पुस्तको की दैनिक पत्रो में यह सूचना भी दी जा सकती है कि १५ न० पै० भेजकर (भार के मुताबिक देख ले) अमुक पुस्तक अमुक पते से मुफ्त ही मंगा सकते है।

आर्य समाजियो, अपना साहित्य बांटो, वितरण करो या ऐसी पत्रिकाओ के मुफ्त ही ग्राहिक दूसरो को बनवाये। यह भी प्रचार का एक साधन है।

—करनैलसिंह विद्यार्थी

मानव जीवन के पांच शत्रु

सत्यपाल 'मधुर' आर्त भजनोपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब अम्बाला मण्डल

गीत

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ये शत्रु पांच बताए।
इनके चक्कर में नर-नारी बचते नहीं बचाए॥
काम का भूत सवार हुआ था रावण के सिर आके।
नही किसी की एक सुनी सब बैठ रहे समझाके॥
भेष बनाकर साधु का सीता को लाया उठाके।
आखिर मे पछताया अपने कुटुम्ब का नाश कराके॥
अन्त समय में रावण ने दुखी होके प्राण गवाए॥१॥
क्रोध का प्रवाह मानव के तन अन्दर जब बहता है।
अपने और पराए का कुछ ज्ञान नही रहता है॥
बुद्धि भ्रष्ट हो जाती मुख से कुछ स कुछ कहता है।
अन्त मे क्रोधी नरतन पर सौ-सौ आफत सहता है॥
इसी क्रोध ने दुनिया मे कितनों के नाश कराए॥२॥
मद रूपी शत्रु जब मानव पर आके चढ़ता है।
विवेक नही रहता आ जाती बुद्धि मे जड़ता है॥
धर्म कर्म को ना जाने उल्टे पथ चल पड़ता है।
बिन मतलब ही बात-बात मे औरों से लडता है॥
अन्त में नखरा झड़ता है जब नशा उतर यह जाए॥३॥
मोह का चक्कर भी जब प्राणी पर आके चलता है।
तृष्णा की अग्नि का मन मैं अंगारा जलता है॥
सुख और शान्ति मिले ना हरदम रहती विकलताहै।
मोह के वश हो प्राणी अन्त मे हाथो को मलता है॥
धृतराष्ट्र ने मोह के वश हो अपने पुत्र खपाए॥४॥
लोभ ही सारे पापो का कहलाया मूल जगत मे।
दया धर्म इन्साफ धर्म जा लोभी भूल जगत मे॥
दिन भर स्वार्थ मे ही रहते मशगूल जगत मे।
लोभ के वशीभूत लोभी पाते दुःख शूल जगत मे॥
'सत्यपाल' इन पाचों से कोई बिरला ही बच पाए॥५॥

सोनीपत में विशाल...

(पृष्ठ ४ का शेष)

बहुत कार्य किया क्योकि जलपानादि का प्रबन्ध इनके घर पर था वे बहुत उदार दिल परिवार है। इन का भी बहुत २ धन्यवाद है।

आशा है आर्य जनता हमारे इस नइ आर्य मन्दिर वास्ते धन से पूर्ण सहयोग देंगे। सभा का भी विशेष धन्यवाद है जिसकी कृपा मे योग्य विद्वान स्टाफ भेजा श्री प० त्रिलोक चन्द जी शास्त्री तो पहली ही बार सोनीपत पधारे इनका बहुत ही प्रभाव पढा, श्री प० खुशीराम जी शर्मा कई वर्षों न आते हैं यहां को जनता इनका बहुत सन्मान करती है।

युवक-स्तम्भ

आर्यसमाज होशियारपुर ने आर्य पाठशालाओं तथा हायर सैकेंडरी स्कूलो मे आर्यकुमार सभाओं के कार्य को बड़े उत्साह से करने के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिया है। श्री चौ० नन्दसिंह जी को इस कार्य के लिए सचालक नियुक्त किया है। आशा है कि इस वर्ष यह कार्य बहुत ही उत्तम होगा।

नन्दसिंह मन्त्री
आ. स. होशियारपुर

आर्य युवकों के लिए

जैसे कि आर्य जगत के प्रत्येक अक मे आर्य युवक स्तम्भ एक पृष्ठ अलग ही रखा हुआ है जिसमें युवको के लेखादि छपते रहते हैं। सभी आर्य युवक समाजो के आर्य युवको से नम्र निवेदन है कि वह अच्छे-अच्छे लेख, कहानियां, चुटकले आदि आर्य जगत मे प्रकाशनार्थ जरूर भेजे जो युवक अपने लेख के साथ फोटो भी छपवाना चाहे वह अपनी फोटो तथा ५ रुपए ५० पैसे मनो आर्डर से आर्य जगत कार्यालय मे भेजे।

व्यवस्थापक आर्य जगत
जालन्धर नगर

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षायें

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षाए आर्य सिद्धान्त विशारद, आर्य सिद्धान्त भूषण, आर्य सिद्धान्त रत्न, धर्माचार्य तथा आर्य पुरोहित, आगामी जुलाई ६९ के अन्तिम सप्ताह मे होंगी। पाठ-विधि, आवेदनपत्र तथा केन्द्रस्थापना कार्य आदि के लिए परीक्षामन्त्री, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१से पत्र व्यवहार करे।

—परीक्षा मन्त्री

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पञ्जाब
के १९६९–७० के लिए पदाधिकारी, अंतरंग सभा के
सदस्यों का निर्वाचन

सभाप्रधान माननीय श्री प्रि० भीमसेन जी बहल ने साधारण सभा दिनांक ६-३-६६के आदेशानुसार १६६६ ७० के लिए सभाके निम्नलिखित पदाधिकारी, प्रतिष्ठित सभासद और अन्तरंग के सदस्यों को मनोनीत किया है–

अधिकारी वर्गः—

१.	श्री भीमसेन जी बहल एम. एस. सी.	प्रधान	जालन्धर
२.	,, यश जी	उपप्रधान	,,
३	,, इन्द्रसेन जी	,,	,,
४.	,, बलबीर सिंह जी	,,	होशियारपुर
५	, बालमुकन्द मुञ्जाल	,,	लुधियाना
६	,, बृज लाल गुप्त	,,	टोहाना (हिसार)
७.	,, वैद्य विद्यासागर	,,	अमृतसर
८	,, वेद प्रकाश मल्होत्रा	,,	जालन्धर
९	,, डा. वेदीरामजी शर्मा एम.ए.,पी.एच.डी.	महामन्त्री	,,
१	, शिवराम जी ओबेराय	उपमन्त्री	,,
११	,, दुर्गादास जी शर्मा	,, आर्यगजट	,,
१२.	,, दरबारी लाल जी	,,	दिल्ली
१३	,, रामविचार जी	सहायक मन्त्री	हिसार
१४.	,, मुरारी लाल जी	,,	मण्डी जोगेन्द्रनगर
१५.	,, ब्रह्मानन्द जी जोशी	कोषाध्यक्ष	जालन्धर
१६.	,, दुर्गादत्त जी शर्मा	पुस्तकाध्यक्ष	,,
१७	,, आनन्द सागर आर्य	सहायक साहित्य विभाग	,,

प्रतिष्ठित सभासदः—

१.	श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज	
२.	ला० सूर्यभानु जी एम० ए०	चन्डीगढ
३.	डा० गोवर्धन लाल जी दत्त एम० एस० सी०	दिल्ली
४.	श्री प्रि० ज्ञानचन्द जी महाजन एम० ए०	हिसार
५.	श्री प्रि० रलाराम जी एम० ए०	होशियारपुर
६.	श्री प्रि० देसराज महाजन	जालन्धर
७.	श्री प्रि० भगवानदास जी एम० ए०	अम्बाला
८.	श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी	अमृतसर
९.	श्री डा० हुकमचन्द जी भल्ला	जालन्धर
१०	श्री भीमसेन जी मेहरा	जालन्धर
११	श्री मलकराज जी भल्ला	दिल्ली
१२	,, रतनचन्द जी सूद	दिल्ली
१३	,, जगन्नाथ जी कपूर	यमुना नगर
१४	, दीवानचन्द जी ठेकेदार	दिल्ली

अन्तरंग सभासद :–

१.	कुमारी विद्यावती जी आनन्द	जालन्धर
२.	,, प्रि० चचल दास जी	जालन्धर
३.	, प्रि० प्यारेलाल जी बेरी	जालन्धर
४.	,, प्रि० सन्तोषपुरी	बटाला
५.	,, प्रि० चमनलाल जी	अम्बाला
६.	,, एम० सी० जोली	अम्बाला
७.	,, रमेशचन्द्र जी कपिला	अम्बाला
८.	,, प० रुद्र दत्तजी शर्मा	अम्बाला
९.	,, प्रि० एस० अहलावत	अमृतसर
१०.	श्री ओ३म प्रकाश खन्ना	जम्मू
११.	श्री डा० देवव्रत जी महाजन	अमृतसर
१२.	श्री प्रि० चमन लाल जी अरोड़ा	अमृतसर
१३.	श्री बलदेव सिंह जी भण्डारी	गुरदासपुर
१४.	श्री प्रि० जुगल किशोर जी	बटाला
१५.	श्री ला० सन्त राम जी	लुधियाना
१६.	सेठ चमन लाल जी	यमुना नगर
१७.	श्री प्रि० सत्यप्रकाश जी	शिमला
१८.	श्री प्रि० कमल सूद—	जालन्धर
१९.	प्रि भगत राम जी—	अमृतसर
२०.	,, विशम्भर दत्त जी	करनाल
२१.	,, प. किशोरीलाल	रोहतक
२२.	,, प्रि० देवराज जी गुप्ता	हिसार
२३,	,, जुगतीराम जी	भभेवा
२४.	,, रामस्वरूप पालटा	कोटईशाखां
२५.	,, बलबीरचन्द जी	जालन्धर
२६.	,, प्रि०एन०डो ग्रोवर	अबोहर
२७.	,, जयकृष्ण जी नन्दा	फिरोजपुर
२८.	,, लम्भूराम जी	होशियारपुर
२९.	,, ओम्प्रकाश जी वग्गा	होशियारपुर
३०.	,, प्रि० सत्यप्रकाश जी सालिक	होशियारपुर
३१.	,, प्रि० त्रिलोकी नाथ जी	चडीगढ
३२	,, प. आशुराम जी पुरोहित	चडीगढ़
३३.	श्रीमती एम०गाय० (प्रिंसिपल)	चडीगढ़
३४	,, आर०एल० सेठी (प्रिंसिपल)	अमृतसर
३५.	श्री प० दयाराम जी शास्त्री	दिल्ली
३६	,, राधा कृष्ण गञ्जू	श्रीनगर काश्मीर
३७.	,, रामनाथ जी सहगल	दिल्ली
३८.	,, राजेन्द्र महता	होशियारपुर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य

१. श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज
२. ,, सूर्यभानु जी एम० ए०
३. ,, डा० गोवर्धन लाल जी दत्त
४. ,, प्रि० भीमसेन जी बहल
५. ,, यश जी दैनिक मिलाप
६. ,, प्रि० विद्यावती जी आनन्द
७. ,, प्रि० प्यारेलाल जी बेरी
८. ,, एम० सी० जोली
९. ,, वैद्य विद्यासागर जी
१०. ,, दरबारी लाल जी
११. ,, डा० वेदीराम जी शर्मा
१२. ,, पं० दयाराम जी शास्त्री
१३. ,, प्रो० वेद प्रकाश जी मल्होत्रा
१४. ,, प्रि० चंचलदास जी

(गताक से आगे)

वह मुक्त होता है। जब सब द्वन्द्व ब्रह्म रूप होगे तब उनका द्वन्द्व होने का दोष दूर हो जाता है और वे द्वन्द्व भाव से मुक्त हो जाता है।

शान्ति क्षमा

क्षमा शब्द के दो अर्थ हैं एक दूसरो के अपराधो को शाति से क्षमा करना और दूसरा अथ है धर्म कम के समय जो कष्ट हो उनको सहन करने की शक्ति अपने मन में उत्पन्न करना। यह दोनो गुण मनुष्य को अपने मे बिठाने चाहिए। जब यह दो गुण मनुष्य मे हो जाते हैं। तो मे अनन्य भाव स्थिर होता है। इस कारण जिसे दूसरा कहा जाये वैसा कोई रहता ही नही इसलिये जो अपराध दूसरे के द्वारा होते हैं। उन मे भी अपना भाग है ऐसा प्रतीत होता है। अपनी अपूर्णता के कारण हुए ऐसा उसे अनुभव होने लगता है। ऐसा मानने वाला मनुष्य दूसरे को दण्ड कैसे दे सकता है। वह दण्ड तो अपने को ही देगा। दूसरो को तो क्षमा ही करेगा, इसलिए ज्ञानी आत्मदण्डत करता है। दूसरो के विषय मे सदैव शान्ति धारण करता है।

इसके विपरीत ज्ञान हीन मनुष्य दूसरो के दोष देखते ही क्रुद्ध हो जाता है। चिढता है आक्रोश करता है। दूसरो को पीड़ा देता है। इस प्रकार जगत में अशाति उत्पन्न करता है। वह स्वय अशात तो होता ही है परन्तु दूसरो को भी अशात करता है। सहनशीलता तो इसमे नाम को भी नही रहती फिर जगत मे शाति का राज्य कैसे रह सकता है। इसलिए मनुष्य को सहनशील होना चाहिए।

सयम

अपना चित्त मन इन्द्रिया शरीर आदि को स्वाधीन करता इन को स्वैराचारी न होने देने को सयमी कहते हैं। सयम करते का उपाय यह है कि मनुष्य के इन्द्रिय सत और असत कर्मो मे प्रवृत्त होते हैं। इसलिए उनको केवल सत कर्मो मे ही प्रवृत्त होते हैं। इसलिए उनको केवल सत कर्मों मे ही प्रवृत्त करता और असत्कर्मों से हटाना मनुष्य का धर्म है। जब अपने बाह्य और अन्तिरिक इन्द्रिय सत्कर्म में ही प्रवृत्त होने लगती है और कभी असत्कर्म की ओर ध्यान तक नहीं जाता। उस समय सत्कर्म के फल का त्याग करते का अभ्यास बढाना

मनुष्य और उसकी उन्नति के साधन

(श्री वैद्य ज्ञान चन्द जी, बस्ती गुजां, जालन्धर)

चाहिए अर्थात अपने सत्कर्म से जो भी फल मिले उसे अपने भोग में लाए। प्रत्युत सर्व भूतो के हित के लिए उसका समर्पण कर देता है। इसके भोग वासना दूर हो कर इन्द्रिय संयम सिद्ध होता है। जब तक सयम नही होता तब तक अपनी निर्बलता अतीत होगी इन्द्रिय सयम दमन और मनो निग्रह से आत्म शक्ति बढ़ती है। और निग्रह न होने से आत्मा निर्बल होती है। मनुष्य के अन्दर दोष रहते रहने से मन चचल होता है। अत: आत्म शुद्धि दोष त्याग काम क्रोध लोभ मोह अहकार गर्व त्याग मान त्याग ममता त्याग करना चाहिए। इसमे मन की मलिनता दूर होकर मनुष्य आत्म सयमी बनता है। अब तक मैंने मुख्य-मुख्य उन्नति के साधनो को आपके सम्मुख रखा। अब आगे हमे विचारना है, कि साधारण मनुष्य भोगो पर विषयो पर जगत पर मन लगाता है। मन इन्द्रियो की प्रवृत्ति बाहर की ओर अधिक है। इसलिये मूढ मनुष्य बाह्य विषयो के पीछे भागता फिरता है, और सदा मृत्यु के जाल मे मे बधा रहता है। इसलिए हम यह कह सकते कि मनुष्य विषयचेता है। आत्मा चेता न हो इस लिए मनुष्य की प्रवृत्ति विषयो भोगो की ओर फलासक्ति से कर्म करने की ओर विशेष रहती हैं। परन्तु उमे यह पता नही कि फलासक्ति के मार्ग मे अनन्त दु:ख हैं। इन दुखो से बचने के लिये और मुक्ति प्राप्त करने के लिये मनुष्य को आत्मचिंता होना जरूरी है। ताकि उसके सम्मुख कोई आशा खडी न रहे। निराशी होने से मनुष्य सहस्त्रो दुखो से बच जाता है। ममता उसके समीप तक नही फटकती और वह दुखो से मुक्त हो जाता है। कारण जिसकी आशा छूट गई जिस की बुद्धि मे ममता नही जिस का ध्यान परमेश्वर मे स्थिर हो गया और कर्म सब ईश्वर के समर्पण कर दिये ऐसा व्यक्ति सदा शात गम्भीर और प्रसन्न चित्त रहता है। मगर ध्यान रहे मनुष्य का उन्नति के लिये इतना प्रयत्न करने पर भी काम, क्रोध लोभ, मोह पीछा नहीं छोडते वह हर समय घात मे रहते हैं। कि कब अवसर आए और मनुष्य पर अपना चमत्कार दिखाए इसलिए अब इन पर कुछ प्रकाश डालने का यत्न करूगा ताकि मनुष्य पग-पग पर सावधान रहकर उन्नति के शिखर पर पहुच सके।

गीता के श्लोक १३-१४ अध्याय सातवें इसका बडे सुन्दर ढग से वर्णन हमे मिलता है। उसमे श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते है कि सपूर्ण जगत भोग पदार्थो से मोहित है। इसलिए मनुष्य ईश्वर को नही पहचान सकता। जब मनुष्य ईश्वर को न पहचान कर उसे प्राप्त नही कर सकता तो फिर वह नराधम आसुरी वृत्ति से युक्त होकर दुराचार करते हुए ज्ञान को नष्ट करके मूढ बनता है और गिरते चला जाता हैं। क्योकि इस दिव्य शक्ति वाली माया को पार करना बडा कठिन है। जो ईश्वर को पा लेते है वह माया से पार हो जाते हैं। इसलिए हमे माया क्या है पर विचारना होगा माया का शब्द अर्थ है कला-कौशल हुनर कारीगरी कोई कारीगर अपनी कला कौशल से मिट्टी का घडा बनाता है। जब तक वह मिट्टी थी तब तक घडे की कल्पना भी नही थी। मिट्टी मे जब कारीगर को माया मिली तो वह घडा बन गया अब यह घडा माया का रूप है। यह मायामय रूप बनते ही मनुष्य उसका उपयोग करके उपभोग करने लगता है। फिर यह भोगते-भोगते उस मे ऐसा फस गया कि घडे के मूल रूप को अर्थात मिट्टी को भूल गया घडा पास मे रहने से आनन्दित और घडा टूटने से दुखी होने लगा यह क्यो हुआ केवल माया द्वारा वह मिट्टी के रूप बनने के कारण इस तरह मनुष्य अपनी कारीगरी से अनन्त वस्तुए बनाता है और उन मे मोहित होता रहता है और अपने को हर एक वस्तु का स्वामी समझने लगता है। उस में मेरापन पैदा हो जाता है। जो कि झगडे का मूल कारण है जब झगडे उत्पन्न हो गये तो फिर शान्ति कहा। इसलिये माया से बचने लिये ईश्वरीय माया से बचें जो मनुष्य की मति को कुठित करती है। कारण सृष्टि की रमणीयता को देख कर उस मे वह फस जाता है। भ्रान्त होता है। लुब्ध होता है। फिर अनर्थ करता है। जगत में ईर्ष्या, द्वेष इसी के कारण होते है। कौन कह सकता है। कि यह सृष्टि का रमणीयता प्रभु की कारीगरी नहीं कौन-सा साधारण मनुष्य इस मे लुब्ध नही होता सुन्दर और कुरूप पदार्थों के सम्मुख आने पर मनुष्य सुन्दर को ही अपने पास रखना चाहता है। यह प्रवृत्ति ऐसी क्यो होती है। यह सब माया का ही प्रभाव है। इस प्रभाव से मोह पैदा होता है। फिर सत्य और असत्य का यथार्थ रीति से जान नही सकता। इसका नाम मोह है। यह मोह जिस को घेरता है। वह सत्य को देख नही सकता और कीचड मे फस जाता है। शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मे पाच विषय कर्ण त्वचा नेत्र रसना और नासिका इन इन्द्रियो द्वारा इन विषयो के कीचड मे फसता है। तब उसका बल क्षीण होता है और मन मे मलिनता प्राप्त होती है। परतन्त्रता का दुख भोगना पडता है। इस अवस्था मे रहता हुआ मनुष्य मानता है कि बाह्य विषयो के उपभोग से ही मुझे आनन्द मिलता है। (क्रमश:)

महात्मा हंसराज विशेषांक

आर्य जगत् सभा का अपना साप्ताहिक मुख पत्र है। इस वर्ष भी महात्मा हंसराज जी की पुण्यस्मृति मे अप्रैल को अपना महात्मा हंसराज विशेषाक प्रकाशित करने जा रहा है जिसमे उस तपस्वी जीवनदानी, त्यागी स्वर्गीय महात्मा जी के जीवन व कार्यो से सम्बन्ध मे नेताओं, विद्वानो के अमूल्य लेख होगे। हमारे पास कितनी बडी सख्या मे डी० ए० वी० स्कूल, कालेज समाजें व अन्य सस्थाए है। गुरुकुल जैसे बडे सस्थान हैं। स्वर्गीय देवता महात्मा जी के श्रद्धालुओ का एक विस्तृत परिवार है। यह विशेषाक तो बहुत बडी सख्या मे प्रकाशित हो वितरित होना चाहिए। दूसरो के हाथो मे पहुचाना चाहिए। विचारो के प्रचार का बड़ा प्रभाव होता है। इसलिए हम अपनी सस्थाओं, समाजो तथा सज्जनों से प्रार्थना है कि इस विशेषांक की अधिक से अधिक प्रतियां मंगवा कर बांटें। इससे बडा लाभ व प्रचार होगा। शीघ्र ही अपने आर्डर दे कर कृतार्थ करें—सपादक

समाचार दर्शन

वेद प्रचार मण्डल

गोविन्द नगर, कानपुर-६

वेद प्रचार मण्डल गोविन्दनगर, कानपुर का साप्ताहिक [illegible] ९-३-६५ को श्री [illegible] की कुन्दरा के [illegible] प्रात: ८ से १० [illegible] उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें हवन-यज्ञ के पश्चात् उनके पौत्र का नाम-करण संस्कार पं० प्रभुदयाल जो तिवारी ने कराया नव-शिशु का नाम संजय-कुमार रखा गया और बच्चे को सब आर्य नर-नारियों की ओर से आशीर्वाद दी गई। इस अवसर पर श्री अमरसिंह जी के भजनों के उपरांत [illegible] जी ने नामकरण संस्कार पर बहुत रोचक ढंग से अपने विचार जनता के सन्मुख रखे। इस शुभ अवसर पर श्री बलदेवराज जी ने मण्डल को ३) दान दिया जिस का मण्डल ने उनको धन्यवाद दिया।

साथ ही आगामी सत्संग श्री दल बिहारी जी निगम के निवास स्थान पर ब्लाक के अगले रविवार को प्रात: ७॥ बजे से १० बजे तक होगा। इसकी सूचना दी गई।

—विप्र शर्मा

आर्य समाज स्थापना दिवस धारीवाल में

आ. स. स्थापना दिवस १२ से १९ मार्च तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सप्ताह भर आर्य विद्वान श्री जगत कुमार शास्त्री जी ने वेद विषयक व्याख्यानों द्वारा आर्य जनता को कृत-कृत्य किया। श्री मनोराम जी आर्य सेवक तथा पं० ज्ञानचन्द जी भजनोपदेशक के मनोहर भजन भी होते रहे।

२३ मार्च को आर्य समाज का वार्षिक निर्वाचन श्री [illegible] जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ नए वर्ष के लिए अधिकारी वर्ग का चुनाव हुआ।

प्रधान : श्री कर्म चन्दजी, उप-प्रधान डा० तेजरामजी व प० आज्ञा राम जी शास्त्री, मन्त्री वेद प्रकाशजी उपमन्त्री सुभाष कुमारजी, कोषाध्यक्ष म. तिलकराज जी, पुस्तकाध्यक्ष प. अमरनाथ शास्त्री, भण्डारध्यक्ष श्री इन्द्र राज जी, अन्तरंग सदस्य श्री वेद प्रकाश जी शर्मा, श्री म. रामधनजी, श्री ओ३म् स्वरूप जी।

—मन्त्री : वेद प्रकाश

नकली पुरोहितों से सावधान

आर्य पुरोहितों की नियुक्ति के समय हमें यह अच्छी प्रकार देख भाल कर लेनी चाहिए कि वह आर्य सिद्धांतों के अनुकूल भी हैं या नहीं।

पिछले दिनों आर्यसमाज सोलन में एक व्यक्ति जो अपने आप को अमरनाथ कहता था चार पांच मास तक आ० स० मन्दिर में पुरोहित का कार्य करता रहा। एक दिन [illegible] के गांव में विवाह संस्कार करवाने के लिए गया तब से वह फिर लौट कर नहीं आया। जाने के बाद मालूम हुआ कि उसका आचरण भी ठीक नहीं था और लोगों से बहुत सा रुपया उधार ले रक्खा था।

आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि वह उस व्यक्ति को भूल से भी आ० स० में पुरोहित न रक्खें वह अपना नाम अमरनाथ शास्त्री बताता था। उसकी बोलचाल की भाषा डिकार की है। कद दरम्याना रंग गेहुंआ।

—व्यवस्थापक आर्यजगत्

ॐ संसार के दुःखों की निवृत्ति और नित्य सुख प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाले सज्जनों को सत्संग द्वारा प्रभु प्राप्ति का ही साधन श्रद्धापूर्वक करते रहना चाहिए।

सब आर्य विद्वानों से कर बद्ध प्रार्थना है कि म. हंस राज विशेषांक जो १३ व २० अप्रैल का सम्मिलित अंक निकल रहा है के लिए लेख कविताएं आदि भेज कर धन्यवादी बनावें। रचनाएं १० अप्रैल तक कार्यालय में आ जानी चाहिएं।

व्यवस्थापक आर्य जगत्

आर्य जगत के सभी प्रेमी ग्राहकों से निवेदन है कि १३ अप्रैल का पर्चा बन्द रहेगा २० अप्रैल को १३ व २० अप्रैल का सम्मिलित अंक म० हंसराज विशेषांक होगा जो आप लोगों के पास १८ अप्रैल तक पहुंच जाएगा। ग्राहक महानुभाव नोट कर लेवें।

आ० समाजों से तथा आर्य प्रेमियों से प्रार्थना है कि प्रचार हेतु अधिक से अधिक प्रतियों का आर्डर भेज कर कृतार्थ करें। इस विशेषांक का मूल्य चालीस पैसा होगा।

सुरेन्द्र पाल व्यवस्थापक
आर्य जगत्

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी में) १.५०
१२. सन्ध्या पर व्याख्यान-ले०महात्मा हंसराज जी १.००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० [illegible] M. A. २.००
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र(ले० आनन्द स्वामीजी महाराज)१.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M.A.) ०.५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समु-ल्लास ले. वाचस्पति M.A. .५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, .५०
२१. मुंडक उपनिषद(ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना(ले० स्वामी सोमानन्द जी)उर्दू में ०.३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १.२५
२४. सीता(ले. आनंदस्वामीजी)०.३७
२५. पद्मनी (,, ,, ,,)०.३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,)०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A. [illegible] में १.२५
२८. [illegible] सुखी क्यों न हों १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वाध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अत: साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए.पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P.

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक १७) १५ बैसाख २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२७ अप्रैल १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्ध

वेद सूक्तः

प्रेता जयता नरः

हे मनुष्यो ! प्रेता-आगे बढ़ो और जयता-शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो । हे नरः—मनुष्यो ! जीवन में आगे बढ़ते जाओ तथा विजय प्राप्त करो—

भाव :—मनुष्य का काम है आगे बढ़ना । निरन्तर आगे ही आगे बढ़ते जाना । सदा उन्नति व प्रगति के पथ पर चलते रहना । हर प्रकार के जीवन वैरियों, विरोधियों पर विजय प्राप्त करते जाओ । मानव जीवन के पथ पर जितनी भी बाधाएं आ जाएं जिनसे जीवन रथ रुक जाए उनको दूर करने के लिए पूरी शक्ति लगाकर आगे बढ़ते जाना होगा । जीवन को हानि पहुंचाने वाले विकारों पर पूरी-पूरी विजय प्राप्त करना ही जीवन का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है । यह जीवन बढ़ने और विजय प्राप्त करनेका नाम है—सं.

वे दा मृ त

प्रभो ! हमें मेधावी करो

ओम् यां मेधां देवगणा
पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने
मेधाविनं कुरुस्वाहा ॥

यजुर्वेद अध्याय ३२ मन्त्र १४

अर्थ :—हे परमात्मदेव । (यां) जिस (मेधां) मेधा बुद्धि की उपासना (देवगणाः) देवगण, विद्वान्, ज्ञानी और पितर—पितर योगी (उपासते) उपासना करते है । (तया) उसी से (माम्) मुझ को (अद्य) इसी वर्त्तमान समय में (मेधया) बुद्धि से (अग्ने) प्रकाशस्व रूप परमेश्वर ! मेधाविनं) बुद्धिमान् (कुरु) कर दीजिए ।

इसका भाव यह है

मानव के पास सबसे बड़ी सम्पत्ति उसकी मेधा बुद्धि है । मेधा वह बुद्धि है जिसके द्वारा मनुष्य सत्य-असत्य में, पुण्य पाप में, धर्म अधर्म में भली-भांति विवेक करता है । जिस मेधा की पूजा विद्वान् लोग, योगी तथा ज्ञानी-जन करते हैं, जिसके कारण उनकी सर्वत्र पूजा होती है प्रभु से उसी मेधा की प्रार्थना की गई है । उसी से मानव केवल मानव ही नहीं वरन् देवता बन जाता है । प्रभु देव ! मुझे उसी मेधा से मालामाल कर दीजिए । इसमें देर मत करें मैं आपकी कृपा से मेधावी बनकर ज्ञान के पथ पर चलता रहूं । मेधा वरदान है । —सं.

ऋषि दर्शन

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म

ब्रह्म—भगवान्, सत्यं-सत्यस्वरूप है । ज्ञानं—ज्ञान रूप है तथा अनन्तं—अन्त रहित है ।

भाव —ब्रह्म को कई नामों से पुकारा जाता है । वह सत्य है । जो सदा ही एकरस रहता है, जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता—वह सत्य है । प्रभु ज्ञान है । सब को जानता है । ज्ञान स्वरूप है । वह अनन्त है । उसका न कोई अन्त है । न ही उसका कोई अन्त पा सकता है । वह ब्रह्म है । सबसे महान् है । उससे बड़ा कोई भी नहीं है । वही सर्वतो महान् है । इसी लिए उसे ब्रह्म के नाम से पुकारा जाता है । उसी को जानो, मानो और उसी की उपासना करो--सं.

तैत्तिरीय उपनिषद्

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच०डी० (सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

युवक स्तम्भ—

आज का युवक किस ओर

(श्री सुरेन्द्र पाल शर्मा - व्यवस्थापक आर्य जगत)

यह संसार परिवर्तनशील है इसमे समय समय पर अनेकों परिवर्तन हुए है। इस ससार की हर चेतन वस्तु परिवर्तन शील है। आज के युवक मे भी युग के साथ-साथ परिवर्तन आना स्वाभाविक बात है। इस युवक परिवर्तन से तो युग ने एक नई करवट बदली है, जिसकी आशा कभी नहीं की जा सकती थी। युवको मे जागृति का समावेश बहुत जोरो से हो रहा हो यह अलग विषय है कि वह जागृति किस प्रकार की है। अध्यात्मिक है या बौद्धिक हे, इस पर विचार करने से विषय बहुत लम्बा हो जायेगा। आज के युग मे प्रत्येक युवक मे नवचेतना का सचार हो रहा है। होना भी चाहिए जो मनुष्य अपने आपको भिन्न २ समय मे उसी वातावरण मे उन्ही परिस्थितियो मे पडा रहने देता है वह मनुष्य मानव कहलाने का अधिकारी नही है। आज का युवक भी इसी तथ्य को सामने रखकर आगे बढ रहा है, परन्तु वर्तमान युवक मे उतना सोचने की क्षमता नही है कि वह जो कार्य करन जा रहा है उसमे वह सफलता प्राप्त कर सकेगा या उसे मुह की खानी पडेगी। जब मेरे युवक भाईयो को इस बात का ज्ञान हो जाएगा तो फिर वह अपने जीवन पथ पर किसी प्रकार का खतरा महसूस नही करेंगे तथा उनका जीवन बिना किसी विघ्न बाधा के उज्जवल होगा परन्तु अफसोस तो इस बात का है कि वर्तमान युवक मे सोचने समझने की शक्ति बिल्कुल लुप्त हो चुकी है उस की बौद्धिक शक्ति का शोषण हो चुका है। हम को पता होना चाहिए कि इन सब का क्या कारण हो सकता है ? सर्व प्रथम समाज दूषित वातावरण हमारे युवको का सत्यानाश करने मे किसी प्रकार भी पीछे नही है। वर्तमान युवक समाज मे रह कर ही सब कुछ सीखता है। इस लिए यह मानना ही पडेगा कि समाज का अच्छा या बुरा प्रभाव नव युवको पर जरूर पडेगा। इस लिए मेरा यह विश्वास है कि युवक पर समाज का क्रूर प्रभाव पडता है क्योकि (**Man is a Social Animal**) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

दूसरे यह बात है कि हमारे पुज्य महानुभावो का भी अपने विचारों द्वारा युवको का उत्साह भग करने में हाथ है। मैंने यह अनुभव किया है कि जो विचार युवको को उनन्ति के शिखर पर ले जाएंगे वह इन महानुभावो के पास नही है। यहा मैं इस का एक उदाहरण देता हू। आज से दो तीन वर्ष पहले की बात है कि मेरा एक युवक दोस्त जो पहले मेरा सहपाठी भी रह चुका था एक बार आर्य समाज मन्दिर मे गया। सध्या, हवनादि के पश्चात् भजन हुए। शान्ति पाठ के बाद एक महानुभाव जो उस समय वहा उपस्थित थे उन के कहे हुए शब्द नीचे अक्षरक्ष लिख रहा हू।

१ आर्य समाज अब क्या काम करेगा इस मे तो अब केवल काफिर भरे हुए हैं।

२ आर्य समाज को अब केवल खण्डन मण्डन के सिवा कोई काम नही।

३ युवको द्वारा समाज का क्या होगा आदि।

लिखने को तो बहुत बाते थी परन्तु मैने केवल मुख्य-मुख्य लिखी है क्या इन विचारो का नवयुवको के दिल दिमाग पर किसी प्रकार का असर नही होगा ? क्या नव-युवको का उत्साह भग करने के लिए यह विचार कहने चाहिए ? इस लिए मैने अनुभव मे लिख दिया है कि यह सब आज कल के महानुभाव कर रहे है।

इस समय युवको मे सुन्दर, वीरता पूर्वक अग्रसर होने मे सहायता देने वाले विचार केवल हमारे महानुभाव हमे प्रदान करने की अपेक्षा कैसे-कैसे विचार युवको के सामने रखते है।

आज का युवक अपने लक्ष्य से भटक गया है। वह अपने आप को भूल चुका है। उनके कर्तव्य क्या है ? वह उन सब को त्याग चुका है। उसमे नवचेतना है परन्तु उस नव-चेतना से वह अपन आप का पूर्णरुपेण नाश करने पर उतारू है। इन सब के होते हुए हमे दिल नही छोडना है। उन युवको की जो अपने लक्ष्य से गिर चुके हैं सच्चा मार्ग दर्शाना हैं उनमे श्री दयानन्द जी महाराज, म० हसराज जी, प गुरुदत्त जैसे प्रबल विचारो का समावेश कराना है। उनमे घर कर गई त्रुटियो की जड से निकाल कर उनके मन मे आर्य विचारो को कूट कूट कर भरना है यह केवल मेरे लिखने से या आप के पढने से नही होगा। युवको आगे बढो। युवक सगठन को मजबूत करो। वर्तमान युग मे आपकी अत्यन्त आवश्यकता है। इसलिए युवको मैदानमे उतरो लोग तुम्हारी सहायता मांगते हैं।

नव युवको मे नव जीवन का,
करो सदा ही प्रचार,
भ्रष्टाचार, व्याभिचार और
दानवपन इनका करो संहार।

बजवाड़ा में म० हंसराज जन्म-दिवस धूमधाम से सम्पन्न

पिछले वर्षो की भाति इस वर्ष भी १९ अप्रैल १९६९ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से प० हंसराज जी की पुण्य स्मृति मे उनके जन्म स्थान बजवाडा जिला होशियारपुर मे एक शानदार उत्सव किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा आर्य युवक सगठन पजाब के अध्यक्ष डा० वेदीराम जी एम० ए०-पी० एच० डी० ने यह कार्य श्री रविन्द्र जी महामन्त्री आर्य युवक सगठन पजाब को सौंपा।

माननीय वेदीरामजी के आशीर्वाद तथा रविन्द्रजी के उत्साह से यह उत्सव बडी सफलता पूर्वक सपन्न हुआ।

१९ अप्रैल प्रातः काल श्री रविन्द्रजी ने हवन कराया हवन पर काफी सख्या मे आर्य बन्धु उपस्थित हुए। माताओ तथा बहिनो ने भी आकर सत्सग को सफल करने मे सहायता की। हवन मे पश्चात् सुरेन्द्र पाल शर्मा के भजन हुए। पूज्य तेजराम जी सभा उपदेशक ने म० हसराज जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला।

दोपहर २ बजे नगर कीर्तन के रूप मे एक जलूस निकाला गया। जलूस मे रविन्द्र जी का उत्साह दर्शनीय था। जलूस को सफल बनाने मे आर्य समाज होशियारपुर का भी सहयोग है होशियारपुर से कई माताओ ने जलूस मे सम्मिलित होकर उसकी रौनक बढाई।

३ बजे श्री नन्दसिह जी मन्त्री आर्य समाज होशियारपुर की प्रधानता मे ईश्वर भक्ति के साथ यह शुभ कार्य शुरू हुआ। श्री रविन्द्र जी स्टेज सैक्रैटरी थे।

श्री तेजराम जी ने अपने मनोहर प्रवचनो द्वारा जनता को मन्त्रमुग्ध किया। उसके पश्चात् श्री आचार्य भद्रसेन जी, प्रिंसिपल रामदास जी, श्री दीनानाथ जी श्री इन्द्रदत्त जी के म० हसराज जी के जीवन पर व्याख्यान हुए। उनके पश्चात श्री नन्दसिह जी ने अपनी श्रद्धाजलि म० हसराज को अर्पित की शाति पाठ के साथ यह कार्य समाप्त हुआ।

आर्य युवक सगठन की ओर से श्री रविन्द्र जी का बहुत-बहुत धन्यवाद है कि उन्होने इस पुनीत कार्य को करने के लिए अपना योगदान दिया श्री नन्दसिह जी का भी धन्यवाद है कि वह होशियारपुर निवासियो को बजवाडा मे लाए तथा उत्सव की शोभा बढाने मे सहायता की। श्री धर्मपाल जी भल्ला मन्त्री आर्य समाज बजवाडा का भी अति धन्यवाद है। जिन्होने सारे उत्सव का कार्यभार अपने कन्धो पर लेकर उपदेशको के जलपान आदि सब का सुन्दर प्रबन्ध किया।

—श्री वेदीराम, सभा मन्त्री

कहानी

एक था राजा। एक बार अपने मन्त्रियो को कहा उसने, 'दो अब के लाओ, दो तब के लाओ और दो ऐसे जो न 'अब के हो न तब के।' बहुत से मन्त्री आश्चर्य चकित हुए कि यह माग क्या है। यह अब के और तब के क्या हुआ ? कौन उसकी खोज करे ? कहा से लाए राजा के पास ? परन्तु एक मन्त्री था समझदार उसने कहा महाराज ! मैं लाता हू और वह दो राजाओ को, दो साधुओ को तथा दो साधारण व्यक्तियो को उनके सामने लाकर बोला महाराज ! ये राजा लोग अब के है, इन्होने पिछले जन्म मे पुण्य किया था, अब इस पुण्य को भोग रहे है और ये दो तपस्वी साधु अब के नही तब के है। आज ये पुण्य के मार्ग पर चलने हुए तप करते हैं, आगे आकर इसका फल भोगेंगे और ये दो साधारण व्यक्ति हैं, इन्होंने न पिछले जन्म मे कोई बडा पुण्य किया, न अब कर रहे हैं, ये न अब के हैं न तब के।

पार्श्वनाथ मन्त्री
आर्य युवक सभा टकारा
राजकोट

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, २७ अप्रैल, १९६९ [अंक १७

दयानन्द विश्वविद्यालय

जालन्धर मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर दयानन्द यूनिवर्सिटी स्थापित करने का प्रस्ताव तो चण्डीगढ आर्यप्रादेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन मे सर्वसम्मति से पारित हो गया। इस समाचार से सारी जनतामे बडे उत्साह व प्रसन्नता की लहर दौड गई। आर्यसमाज अपने जीवन के प्रारम्भ से लेकर इस समय तक देशहित की भावना के साथ अन्य सुधार के कार्यों के साथ २ शिक्षा के व्यापक मैदान मे भी सारे देश का नेतृत्व करता चला आ रहा है। भारत मे इस क्षेत्र मे सबसे प्रथम विद्यालय और महाविद्यालय डी ए वी के रूप मे लाहौर मे खोला गया था। उसी स्रोत से सारे देश मे एव बाहर भी डी ए वी की अनेक शिक्षण सस्थाओ की सरिताओ का प्रवाह बह निकला। लाखो युवको ने इन सस्थाओ मे बैठकर जीवन का निर्माण किया। इन सरस्वती सस्थानो ने राष्ट्र के प्रत्येक कार्य क्षेत्र मे महान नेता प्रदान करके अपने कार्य का सुन्दरता से परिचय दिया। इन सस्थाओ से सारी जनता का बडा ही प्यार है। जिस शिक्षण-कुण्ड मे तपस्वी महात्मा हसराज ने अपने यौवन की आहुति दी हो, वह विशाल सस्थान क्यो नही फैलेगा? आज तो डी ए वी. आदोलन स्वय अपने मे एक व्यापक आन्दोलन बन गया है। इस का देश-व्यापी सगठन, प्रबन्ध, सेवा-कार्य शिक्षण कार्य एव देश-भक्ति का भाव सब के दिल पर गहरी छाप लगाये हुए है। इसका सभी को गौरव है।

दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना इस समय बडी आवश्यक है। जालन्धर पजाब मे इस समय हमारा दयानन्द कालेज कितना विशाल एव शानदार हे। यह देख कर किस को प्रसन्नता नही होती? इसका शिक्षण का कार्य, परीक्षा परिणाम, प्रबन्ध का कमाल एव छात्र सख्या व प्रसिद्धि देख कर गौरव अनुभव होता है। नगर का यह महान कालेज तो स्वय एक विश्वविद्यालय का रूप है। अनुभवी तथा बहुत ही प्रशिक्षित प्राध्यापक मण्डल है। माननीय आचार्य भीमसेन जी बहल तो माने हुए कुशल शिक्षा-शास्त्री तथा लब्ध प्रतिष्ठ अनुशासन रखने मे जगविख्यात है। (दयानन्द यूनिवर्सिटीकी यहा स्थापना बडा भारी काम कर सकेगी। प्रात का दयानन्द विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए सभा ने तो अपने कर्तव्य को निभाया है। इसके लिए जनता का नेतृत्व किया है—सब का ध्यान इस आवश्यक कार्य के लिए आकर्षित किया। सभा के प्रधान प्रिसिपल बहल जी ने इस काम को पूर्णता देने के लिए अपना प्रयत्न जारी कर रखा है। पजाब के राज्यपाल माननीय चक्रवर्ती जी से इस काम के लिए भेंट करके सारी बाते पेश करने का कार्यक्रम बनाया है। वहा जनता का भी कर्त्तव्य है कि इसके लिए अपना कर्तव्य पहिचान कर पूरी आवाज उठाए। दयानन्द विश्वविद्यालय सब का साझा विश्वविद्यालय होगा। इसके द्वारा शिक्षा के मैदान मे और भी अधिक सेवा का काम होता जाएगा। यह युग आवाज का अर्थात शख बजाने का युग है। जब जनता किसी भी महान मिशन के लिए मिल कर अपना शख बजाती है, तो उसका निश्चित रूप से प्रभाव पडता है।

हमारे नेता और शिक्षा शास्त्री महारथी तो अब दयानन्द यूनिवर्सिटी की स्थापना करने के लिए लग गए हैं। प्रत्येक समाज हो या अन्य सभाए हो—अपने-अपने नगर व कस्बे मे बैठी हुई इस के लिए आज और अभी से अपना प्रयत्न आरम्भ कर दे। प्रस्ताव पारित करके समाचार पत्रो मे, श्रीयुत गवर्नर महोदय को तथा पजाब सरकार के पास भेजना शुरू करे। उसमे दयानन्द विश्वविद्यालय को शीघ्र स्थापित करने की बात पर जोर दिया जाए। जितनी जल्दी यह महान् विश्वविद्यालय बन सके उतना लाभ होगा। हम आर्य समाजो व अपनी सारी सभाओ, सस्थाओ से भी कहते है कि इस कार्य मे सक्रिय हो जाए। यह बडा आवश्यक तथा इसी समय करने वाला कार्य है। चारो ओर से आवाज उठे। हम माननीय प्रिसिपल बहल जी से भी निवेदन करते है कि अपनी पूरी शक्ति लगाकर इस दिशा मे जनता का नेतृत्व करते रहे। जब यह काम हाथ मे लिया है तो इसको पूर्णता पर पहुचाने मे भी आगे ही आगे चलते जाए। सरकार का कर्तव्य है कि दयानन्द विश्वविद्यालय जैसे उचित तथा जरूरी मिशन की स्थापना के लिए पूरा सहयोग देकर इसकी भी घोषणा कर दे।

—त्रिलोक चन्द्र

आराधना का कार्यक्रम

आकाशवाणी के जालन्धर पजाब के रेडियो विभाग मे प्रात काल जो आराधना का कार्यक्रम प्रसारित होता है। वैसे तो उसके बारे मे भी हमे गिला शिकायत है कि उसमे अध्यात्मवाद के गीतो को कम समय मिलता है। भारत के पुरातन पवित्र सस्कृति के महान् भण्डार के ग्रन्थो से बहुत कम सुनाया जाता है। किन्तु अब तो यह सुन कर बडा ही दुख हुआ कि प्रारम्भ मे थोडा-सा जो भी सस्कृत के श्लोको का प्रोग्राम चलता था, वह भी अब बन्द कर दिया गया है। यह बडे ही खेद का विषय है। पता नही कि सस्कृत के पवित्र ग्रन्थो के श्लोको से इतनी क्यो घृणा हो गई? सस्कृत मे कितना बडा भण्डार भरा पडा है। भारतीयता का मूल स्रोत ही सस्कृत है। वेद के पवित्र मन्त्रो का पाठ, उपनिषदो व गीता के श्लोको का सन्देश जन-जीवन की शान्ति के लिए कितना बडा प्रसाद है। पश्चिम वाले भौतिकवाद से ऊब कर मानसिक शान्ति के लिए भारतीय सस्कृति के इस महान् अमृत सागर मे स्नान करने के लिए दौड मे लगे हुए है किन्तु एक हम हैं कि थोडा बहुत सस्कृत श्लोको या पवित्र मन्त्रो का जो भी आराधना मे प्रोग्राम चलता था उसे भी बन्द कर दिया गया है। इससे बढकर खेद की और बात क्या होगी? पता नही आकाशवाणी के अधिकारियो को सस्कृत के पवित्र श्लोको व वेद-मन्त्रो से क्यो ऐसी चिड पैदा हो गई है कि वे और सारे ऐसे-वैसे प्रोग्राम तो प्रसारित करते है हालाकि ऐसे गान भी होते है जिनसे लाज को भी लाज आने लगती है। शर्म से सिर नीचे झुक जाता है। शृगार व अश्लीलपन की परिकाष्ठा हो जाती है। किन्तु जिस सन्देश ने जीवन का निर्माण करना है पवित्रता लानी है तथा आदर्श पर चलाना है उसी सस्कृत श्लोको का कार्यक्रम ही बन्द कर दिया जाए। कितना शोक है सत्य यह यह है कि हम लोग निर्बल समझते है इसी का यह परिणाम है। यदि हम जोरदार आवाज उठाए तो ऐसा कभी नहीं हो सकता। हम जनता से अनुरोध करते है कि इसके लिए अपनी जोरदार आवाज उठा कर प्रोटेस्ट करे। हजारो पत्र वहा भेज कर अपना रोष प्रकट करे। जनता की आवाज को कौन दबा सकता है? यदि भारतीय आकाशवाणी के जालन्धर केन्द्र मे गीता के श्लोको के लिए या वेद के पवित्र मन्त्रो के लिए कोई स्थान नहीं है तो और इस से क्या आशा हो सकती है। स्थान-स्थान से प्रस्ताव भेजे। ऊपर शिष्टमण्डल बना कर मिला जाये तथा जोर की आवाज उठाई जाये। यदि और ऐसे-वैसे प्रोग्राम चल सकते है तो आराधना मे यह प्रोग्राम क्यो बन्द हो। निर्बलता का दूसरा नाम पाप है। अपने देश मे अपनी सस्कृति का कार्यक्रम बन्द हो जाये इस से बढ कर खेद और क्या हो सकता है।

जनता आंखे खोले

आये दिन भारतीय सस्कृति तथा महापुरुषो के पवित्र चरित्र पर जो लेखो व भाषणो के द्वारा घिनावने आक्रमण होते रहते है—उन से सारे समाज की निर्बलता का परिचय मिलता ही रहता है। हमे अपने कामो की तो चिन्ता लगी रहती है किन्तु ऐसे-ऐसे लेखो को पहिले तो पढते ही नही, यदि पढे भी तो आखे बन्द कर लेते है। अभी-अभी हिदुस्तान साप्ताहिक देहली के २ मार्च के अक मे 'रामायण पर विलायती समालोचना' के शीर्षक से जो लेख प्रकाशित हुआ है उसमे महामानव श्री रामचन्द्र जी व माता सीता तथा अन्य आदर्श जीवन पर जो भयकर कीचड फेंका गया है—उसकी जितनी निंदा की जाए थोडी है पता नही ऐसे-ऐसे

(शेष पृष्ठ ४ पर)

कल युग का राम

(श्री श्रीराम जी पथिक)

मर्यादा पुरुषोतम राम को वैदिक मभ्यता सस्कृति के उपासक होने से तथा मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सर्वप्रिय राम ने जो आदर्श प्रस्तुत किया था इन्ही विशेष गुणो से ही आज करोडो वर्ष से ही मानव मात्र का सूर्य भाति सत्य पथ दिखा रहा है।

वर्तमान मनातन धर्म एव आत्म ज्योति की शक्ति को न जान कई भाई उसे सत्य युग का प्रताप कह इस युग को कल युग का दोष दे अपने स्वार्थ लोभ मोह वश धर्म कार्य से बचते है या सेवा पथ से पथ भ्रष्ट हो जाते है। युग पवर्तक वेद उद्धारक जगत गुरु महर्षि दयानन्द जी ने गुरु दक्षिणा मे गुरु आज्ञा का पालन कर ससारिक सुखो तथा मुक्ति, के आनन्द को छोड विश्व को वह वेद ज्योति एव ईश्वर के सच्चे स्वरूप तथा अनेक मतो का वास्तविकता का वह पाठ पढाया कि जब तक इस सूर्य का प्रकाश है महर्षि का सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ एव कार्य सत्वत मानव को शान्ति देते रहेगे।

शिष्य तो ऐसा चाहिय..

गुरु को सब कुछ दें।

गुरु भी ऐसा चाहिए

शिष्य से कुछ भी न ले।

महर्षि की पुण्य समृति मे डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना मे कई प्रकार की बाधाओ को देखते हुए कलयुग राम का सा आदर्श दिखाने वाले हसराज जी ने बडे भाई ला० मुलखराज से जीवन निर्वाह की समस्या मे सहयोग प्राप्त करने और जीवन भर ऋषि मिशन के प्रचार-प्रसार मे पूर्ण निस्वार्थ से जीवन दान देने की व भीषम प्रतिज्ञा रूपी व्रत रखने की सविनय प्रार्थना की थी तो त्याग मूर्ति ला० मुलखराज जी ने भी अपनी आधी आय महर्ष मे महात्मा हसराज को देश जाति के नवयुवको के निर्माणार्थ पूर्ण सहायता सहयोग मे महानता का परिचय दे राम-लक्ष्मण की याद कलयुग मे ताज़ा कर दी थी।

धर्म पुत्री सीता की भाति माता जी ने महात्मा जी को प्रत्येक दशा मे पूर्ण सहयोग दे तपस्वी त्यागी को मर्यादा मे स्वय चल, उन्हे चला कलयुग का राम बना नारी जाति का सत्य पथ प्रदर्शन किया है।

महात्मा हसराज जी ने सादगी का जीवन बिता गुरु समृति के डी० ए० वी० स्कूल को कालिज बनाते हुए अनेक मानव सुधार के कार्य कर भारत मे शिक्षा क्षेत्र मे इस भाति प्रकाश किया. जब-जब भी मानव जाति पर कैसा ही सकट आया तो सब प्रकार के भेदभाव मिटा महात्मा जी साथियो सहित पहुचतेथे।

धर्म कार्य क्षेत्र मे कई विकट समस्याए जैसे ला० जी की माली हालत गिरना तो बडे सपुत्र बलदेव जी का स्वतन्त्रता सग्राम मे जेलहोना आदि अपनो का त्याग की साक्षात् मूर्ति पर भी कीचढ उछालना परन्तु कमल भाति हस जी ने हसते हुये हस भाति ही नारि सारे का विवेक कर गुरु की यादगार को महान तप-त्याग पुरुषार्थ से चार चाद लगा पजाब के निर्माता बन आर्यवर्त के सर्वप्रिय बन गये।

आज आर्यजगत मानव मात्र के हितार्थ कल युग के राम को पुण्य स्मृति मे यह अक निकाल हमे भी महर्षि के महान यज्ञ मे महात्मा हस राज भाति तपत्याग पुरुषार्थ मय जीवन बना ऋषि मिशन मे हस जी भाति नीव का पत्थर बननेकी प्रेरणा देता है।

प्रभु हम सबको सच्ची बलशक्ति दे कि हम सब एक हो महात्मा जी भाति सादगी का जीवन बना ऋषिके सच्चे शिष्य बने।

जनता आंखें खोले

(पृष्ठ ३ का शेष)

लेखको को युग-पुरुषो को अपने लेखो मे कलकित करने का साहस कैसे हो जाता है। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्रीयुत रामगोपाल शाल वाले एम पी ने अपने भाषण मे जब वह लेख सुनाया तथा लोकसभा मे इसके बारे मे बोलने को बात कही तब हमने भी वह सारा लेख पढा। लोकसभा मे बैठे सदस्यो का कर्त्तव्य है कि ऐसे-ऐसे लेखको के कान ऐंठे तथा छापने वाले पत्रो की भी खबर लें। यदि और किसी सम्प्रदाय के महापुरुष मे कोई ऐसी बात लिखता तो उसे छठी का दूध याद करा दिया जाता, किंतु हिंदुसमाज की बेबसी!

—स.

मिलाप परिवार में विवाह समारोह

पजाब के पूर्व शिक्षा मन्त्री दैनिक मिलाप जालन्धर के श्री यश जी व स्वर्ण यश जी की विदुषी सुपुत्री विपुलकीर्ति एम-ए का शुभ विवाह श्री सोहन लाल जी के साथ वैसाखी के पुण्यपर्व १३ अप्रैल की मिलाप भवन जालन्धर मे बहुत बडे समारोह से सम्पन्न हो गया। विवाह से पूर्व तीनो दिन वेदो के चुने मन्त्रो के शतको से गायत्री मन्त्र सहित पवित्र यज्ञ सजी और सुन्दर यज्ञ शाला मे होता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी थे। यज्ञ शाला की अत्यन्त सुन्दरता, यज्ञ की प्रमुखता एव सारे मिलाप परिवार की श्रद्धा देखने वाली थी। यज्ञ कुण्ड के चारो ओर सारा परिवार श्री रणवीर जी मान्या सुशील जी, यश जी, स्वर्ण जी ओमप्रकाश जी, चन्द्र प्रकाश जी, सर्वमित्र जी माननीया सीता जी, कुमारी विपुल कीर्ति जी के साथ बैठे हुए आस्था भरे मन से आहुतिया दे रहे थे। यज्ञ प्रात साय दोनो समय होता रहा। वातावरण बडा ही मनोमोहक व शात था। बीच-बीच मे पूज्य महात्मा जी मन्त्रो को लेकर बडा सुन्दर उपदेश भी कर देते। यज्ञ के पुरोहित आसनो पर प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, प० अयोध्याप्रसाद जी शास्त्री, प० हरिश्चन्द्र जी निरुतन्द्र, प० चडीप्रसाद जी, प० टेकचन्द जी बैठे थे। पूर्णाहुति का दृश्य तो बडा दर्शनीय था। महात्मा जी का शुभाशी एव उपस्थित जनता द्वारा सारे परिवार पर भावना भरी पुष्प वर्षा की गई।

रात को बारात के स्वागत, मिलाप भवन की शानदार सजावट, वेदी की छटा तथा आने वालो का सम्मान उपमा से किया गया। मिलनी हुई। कन्या ने वर को जयमाला पहिराई। मिलनी के बाद ही विवाह सस्कार प्रारम्भ हो गया। जम्मू स प० हरिश्चन्द जी शास्त्री विवाह सस्कार के लिए पधारे। प० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री भी साथ थे। वेदी का दृश्य तो देखते ही बनता था। सारा मण्डप सेहन और भवन नर-नारियो से भरपूर था। पूर्ण वैदिक रीति से कार्य सम्पन्न हुआ। पूज्य महात्माजी ने युगल जोडी को सारगर्भित उपदेश से भरा शुभाशी: दिया। सबने खूब पुष्प वर्षा की। इस विवाह मे विवाह संस्कार को बडी प्रमुखता दी गई तनिक भी दिखावा नहीं किया। उस अवसर पर सारे मिलाप भवन मे बडे द्वार से लेकर अन्दर तक इतनी भीड थी कि तिल धरने का भी स्थान न था। वर-बधू को आर्शीवाद देने के लिए नगर के, सस्थानो, समाजो व हर क्षेत्र के गण्यमान्य नर-नारियो के साथ-साथ सरदार स्वर्णसिह जी प्रतिरक्षा मन्त्री, पजाब यूनिर्वसिटी के उपकुलपति प्रि० सूर्यभानु जी, हिमाचल के मुख्य मन्त्री डा० परमार, ज्ञानी जैलसिह जी, ला० जगत-नारायण जी एम पी, प्रिंसिपल बहल जी और सभी बडे-बडे सज्जन पधारे। श्री रणवीर जी, यश जी द्वार पर खडे सबका स्वागत करते थे। प्रभुमगलमयी युगल जोडी को आर्शीवाद दें। सभी परिवार को बधाई।

सर्वोत्तम परीक्षा परिणाम

डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल, यमुनानगर मिडिल स्कूल परीक्षा मे फिर बाज़ी ले गया। पिछले सालो की तरह इस साल फिर डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल यमुनानगर का मिडिल का स्कूल परीक्षा परिणाम बहुत ही अच्छा रहा। परिणाम ९३ प्रतिशत रहा और तमाम लोकल स्कूलो ने बाज़ी ले गया।

स्कूल की इस कार्यवायी का मेहरा स्कूल के काबिल प्रिंसिपल श्री भगत और मेहनती अध्यापक वर्ग पर है। —विमलप्रसाद गोयल

★ यदि किसी मनुष्य के हृदय मे प्रभु भजन तथा सत्सग की रुचि न हो तो जानो कि उसका हृदय रोगी है। यदि वह अपने इस मानस रोग का उपचार न करे तो उसे अधोगति ही प्राप्त होगी।

★ इन्द्रिय सम्बन्धी भोगो का सम्बन्ध तो इस शरीर के ही साथ है और मृत्यु होने पर इसका वियोग हो जाता है, अत. इसके सारे ही भोग नष्ट हो जाते है और उनकी आसक्ति के कारण जीव को बडा कष्ट होता है।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर मे १७ मार्च १९६९ को विद्यालय के प्रागण मे पजाब के डी. पी. आई जी राज बक्शी की अध्यक्षता मे वार्षिक दीक्षात समारोह सोत्साह सम्पन्न हुआ इस वर्ष छः स्नातकोत्तर एवं सत्तासी स्नातक छात्राओ ने प्रमाणपत्र (डिग्री) प्राप्त किये।

अध्यक्षीय भाषण में श्री बक्शी जी ने बताया कि अध्यापक वर्ग को चाहिए कि वह अपने को पावन अध्यापन कर्म मे प्राणपन से लगा दे। आपने अथक प्रयासो द्वारा देश मे शिक्षा के स्तर को ऊचा उठाये। देश शिक्षा स्तर की आलोचना एव दोषो का अन्वेषण ही पर्याप्त नही क्योकि वह आपने आपमे साहयन मात्र है।

डा० बक्शी ने यह भी बताया कि शिक्षा का महत्व पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो के लिए कही अधिक है। इसी प्रसग मे स्वामी दयानन्द का स्मरण दिलाते हुए उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। महर्षि ने भारतीय इतिहास के वैदिक युग के आधार पर स्त्रियो के गौरवमय पद का पुनरुत्थान भी किया उन्होने यह भी बताया कि वैदिक युग मे नारी कितने सम्माननीय पद पर प्रतिष्ठित थी। कालान्तर में नारी अपने इस महान व उन्नत पद से बंचित कर दी गई और वह युगो तक अज्ञान उपेक्षा व निराशा के महनतम अधकारमे पडी रही महर्षिकी महान आत्मा इसे देख कर व्यथित हो उठी। उन्होने नारी को अशिक्षा व अज्ञान के गहनतम गर्त से निकाल कर पुन उसके खोये हुए गौरवान्वित पद पर इमे प्रतिष्ठित किया। आज नारी प्रगति के पथ पर अग्रसर होती हुई स्वय अपने भाग्य का निर्माण कर रही है। विद्वानो ने दृढतापूर्वक स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि नारी शारीरिक शक्ति मे भले ही पुरुषो से कम हो किन्तु बौद्धिक शक्ति मे वह कभी भी पुरुषो से पीछे नही। आज विभिन्न विश्वविद्यालयो के परीक्षा फलो द्वारा भी यह प्रभावित हो गया है कि छात्रो को अपेक्षा छात्राए अधिक सख्या मे उत्तीर्ण होती हैं।

डा० बक्शी ने कहा कि आज नारी दो विभिन्न सस्कृतियो के मिलन बिन्द पर खडी है। आज वह इस प्रशस्त चौराहे पर स्थित है दो युगो का सगम स्थल है

हंसराज महाविद्यालय जालन्धर में विशाल समारोह

इस स्थिति मे उन्होने आज की शिक्षित छात्रायो से प्राचीन एव नवीन के समन्वय का आग्रह किया आज की शिक्षित युवतियो को सन्देश देते हुए उन्होने बताया कि उन्हे पाश्चात्य सस्कृति के मोहक व भड़कीले आकर्षक मे भी अपने को बचाए रखना होगा क्योकि इससे देश की महत्वपूर्ण प्रगति मे बाधा आती है शिक्षित नारी वर्ग का सर्व प्रथम कर्त्तव्य है कि देश भर मे समता का विस्तार। बक्शी जी ने यह भी बताया कि मात्र ज्ञान ही नही अपितु, उसके साथ बुद्धि का योग भी अनिवार्य है जब तक ज्ञान सैद्धातिक है वह उपयोगी नही हो सकता अत इसे कियात्क रूप देना नितान्त आवश्यक है इसके साथ ही शिक्षा मे नए नैतिक मूल्यो की स्थापना की भी आवश्यकता है इन सबके अतिरिक्त शिक्षित महिलाओ का सर्वप्रमुख कर्त्तव्यहै अपनी योग्यतानुसार किए गए प्रत्येक कार्यमे सफूर्ति व माधुर्य की सृष्टि करना।

विद्यालय की प्रधानाचार्य सुश्री विद्यावती आनन्द ने सर्वप्रथम मान्य अतिथि श्री बक्शी जी का स्वागत करते हुये उनकी प्रमुख शिक्षा शास्त्री घोषित किया और साथ ही विद्यालय की शैक्षानिक एव अन्य क्षेत्रो की वार्षिक उपलब्धियो का विवरण दिया।

सुश्री आनन्द के वार्षिक ब्योरे के सम्बन्ध मे अपनामत अभिव्यक्त करते हुये श्री बक्शी जी ने कहा कि विद्यालय आज अपनी आरभिक स्थिति से बहुत उच्च स्तर पर पहुच चुके है। विद्यालय ने शिक्षा मे भी पर्याप्त प्रगति की है केवल पजाब ही नही अपितु हिमाचल, हरयाणा आदि अन्य प्रातो मे मे भी सम्मानित स्थान बना लिया। विद्यालय की यह प्रगति वस्तुत सम्पूर्ण नारी जाति के उत्थान की प्रतीक है। शिक्षा के बल पर ही आज की नारी मध्यकालीन नारी से कही अधिक प्रगतिशील बनकर समाज मे अपने खोए गौरव को पुना प्राप्त कर सकी है।

अन्त मे उन्होंने विद्यालय को उपलब्धियो एव प्रगति पर हार्दिक प्रसन्नता अभिव्यक्त करते हुए विद्यालय को उनकी सफलता पर बधाई दी।

हसराज महिला महाविद्यालय वार्षिक उत्सव हसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर मे दिनाक४-४-६९ को पजाब के वित्तमन्त्री श्री कृष्णलाल की अध्यक्षता मे वार्षिक पुरस्कार वितरणोत्सव सम्पन्न हुआ।

विद्यालय की प्रधान आचार्य सुश्री विद्यावती आनन्द ने विद्यालय की वार्षिक प्रगति का विवरण सुनाया। शिक्षा के क्षेत्र मे भी सन् १९६८-६९ मे अनेक छात्राओ ने छात्रवृत्तिया प्राप्त की। सुश्री आनन्द ने इस बात पर विशेष बल दिया कि आर्थिक योगदान मिलने पर हम विज्ञान सबधी कक्षाए भी विद्यालय मे आरम्भ कर देगे।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री कृष्णलाल जी ने कहा कि मुझे इस विद्यालय मे आकर हर्ष हो रहा है। उन्होने महर्षि दयानन्द और नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक महात्मा हसराज के प्रति अपनी आस्था अभिव्यक्त करते हुए कहा कि गत बाईस वर्षों मे हमे जितनी सफलता प्राप्त होनी चाहिए थी उतनी नही हो सकी, इसका मात्र कारण यही है कि हम स्वामी विवेकानन्द और स्वामी दयानन्द के बताए मार्गों से दूर हटते जा रहे है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे अनेक त्रुटिया है। जिन्हे दूर करने के लिए हमे त्याग तपस्या व परिश्रम पूर्ण जीवन को अपनाना होगा।

श्री कृष्णलाल ने यह भी बताया कि आज हमारे सामने आर्थिक सघर्ष मुह बाए खडा है। परन्तु इस सघर्ष मे घबराकर हमे अपने कर्तव्य पथ से विचलित नही होना चाहिए।

श्री कृष्णलाल ने वार्षिक प्रगति विवरण पर अपनी प्रसन्नता अभिव्यक्त करते हुए कहा कि मुझे यह देखकर ओर हर्ष है कि विद्यालय ने केवल विभिन्न क्रीडा प्रतियोगिताओ मे नही अपितु अन्य सभी क्षत्रो मे पर्याप्त प्रगति की है। इसने पजाब के शिक्षा-क्षेत्र मे एक ऊचा स्थान प्राप्त कर लिया है।

★ अनेक दु:खरूपी कीटाणु आस पास क्यो न घूमते रहे, मत डरो, भगवान् का हाथ अपने सिर पर समझो।

★ हम सभी सफल मनोरथ हो सकते है जब सदैव अपनी ओर देखे, दूसरो को न देखे।

★ अपनी सच्ची आत्मा को इस ससार के मोहक सुखो के बदले न बेचो।

ऋषि उपकार

(श्री सुरेन्द्र पाल जी शर्मा व्यवस्थापक आर्यजगत)

ज्योति ज्योत में रच गई. ऋषि वे थे महान्,
तू भी मन में याद कर, करता सब जहान्।

पाप को जड़ से उड़ा दिया, वैदिक नाद बजा दिया,
सत्य की बात सत्य ही कर, हमको सत्य सिखा दिया।
उसकी राह पे आज चल, चलता सब जहान्।
तू भी मन में याद कर

ब्रह्मचर्य के अन्दर, करते वेद प्रचार थे,
पाखण्डी आगे टिक न सके, कितने प्रबल विचार थे।
तू भी उनकी राह पे चल, चलता सब जहान्।
तू भी मन में याद कर

उनके बल का पार नहीं, प्रचार में भी कोई चाल नहीं,
करना है विश्व कल्याण हमें, इसके बिना काम नहीं।
'सुरेन्द्र' उनकी राह पे चल, बनता क्यों नादान।
तू भी मन में याद कर... ...

आर्य समाज अनारकली की वार्षिक एवसाधारण बैठक जो रविवार दिनाक १६-३-१९६९को आर्य समाज भवन मे हुई की कार्यवाही।

उपस्थिति —

१ डा० जी० एल० दत्त
२ श्री गोपाल कृष्ण दत्त
३ दीवानचन्द
४ चरणजीत लाल कालडा
५ गनपतराय
६ ब्रजभूषण स्वरूप
७ केरान खोसला
८ बृज लाल
९ दरबारी लाल
१० राम चन्द्र थापर
११ प्रकाश चन्द मेहता
१२ परशुराम गुप्त
१३ तिलक राज
१४ ज० ला० थापर
१५ मेहरचन्द
१६ मुन्शीराम सचदेव
१७ वैद्यचन्द
१८ सी० पी० मेहता
१९ मुल्ख राज भल्ला
२० के० प्र० कोहली
२१ मोहन लाल
२२ कोष राज
२३ गिरधारी लाल
२४ राधा कृष्ण ठाकुर
२५ प्रेम चन्द
२६ प्रीतम प्रकाश सेठी
२७ राजेन्द्र कुमार
२८ राजेन्द्र नाथ चोपडा
२९ लाल चन्द खन्ना
३० कृष्ण गोपाल
३१ टी० आर० चोपडा
३२ धर्मेन्द्र दत्त
३३ तीर्थराम तुल्ली
३४ पुरुषोत्तम लाल
३५ रवि प्रकाश
३६ महाराज कृष्ण कपूर

(१) पिछली बैठक की कार्यवाही पढी गई और सम्पुष्ट हुई।

(२) सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रतिनिधि वर्ष १९७०, १९७१ तथा १९७२ के लिये आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभासद चुने गए।

१ महात्मा आनन्दस्वामी सरस्वती
२ डा० गोवर्धन लाल जी दत्त
३ श्री मुल्खराज जी भल्ला
४ श्री दीवान चन्द
५ ला० सुरजभान उपकुलपति
६ श्री रतन चन्द सूद
७ श्री दरबारी लाल
८ श्री दयाराम शास्त्री
९ श्री बृज लाल सोनी

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली—१ का वार्षिक निर्वाचन

१० श्री सोम नाथ गुप्ता
११ श्री मेहर चन्द पुरी
१२ श्री परषोत्तमलाल जी वानप्रस्थ

(३) सर्व-सम्मति मे वर्ष १९६९ के लिये निम्नलिखित प्रतिनिधि आर्य केन्द्रीय सभा नई दिल्ली पर निर्वाचित हुए—

१ श्री दया राम शास्त्री
२ श्री दरबारी लाल

(४) सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी वर्ष १९६९ के लिए निर्वाचित हुए—

प्रधान

१ श्री मुलख राज भल्ला

उप-प्रधान

२ श्री राम चन्द्र जी थापर
३ श्री लाल चन्द खन्ना
४ श्री सेवा राम कपूर
५ श्री शान्ती स्वरूप
६ श्री राजेन्द्रनाथ चोपडा प्रिंसि०
७ श्री टी० आर० तुली

मन्त्री

८ श्री दया राम शास्त्री

उप-मन्त्री

९ श्री दरबारी लाल
१० श्री मुन्शी राम सचदेवा
११ श्री सोम नाथ गुप्ता
१२ श्री गोपाल कृष्ण दत्त
१३ श्री प्रकाश चन्द मेहता
१४ श्री राधाकृष्ण ठाकुर

कोषाध्यक्ष

१५ श्री बृजलाल सोनी

सहायक कोषाध्यक्ष

१६ श्री प्रेमकृष्ण भारद्वाज

लेखा निरीक्षक

१७ श्री कोषराज जी

पुस्तकालय अध्यक्ष

१८ प० सोमनाथ कीर्ति जी

प्रतिष्ठित सदस्य

१९. महात्मा आनन्द स्वामी
२० डा० गोवर्धनदास जी दत्त
२१ डा० सूर्यभान उपकुलपति
२२ जस्टिस जीवन लाल कपूर
२३ डा० अयोध्या नाथ खोसला

प्रतिष्ठित सदस्य

२४ लाला दीवान चन्द जी
२५ डा० महाराज कृष्ण कपूर
२६ श्री बृज मोहन लाल जी
२७ श्री रत्न लाल जी सूद
२८ श्री रामलाल जी हस

अन्तरंग सदस्य

२९ श्री पन्नालाल जी सूद
३० श्री रामकृष्ण जी
३१ श्री गणपत राव जी वकील
३२ श्री बिशन लाल जी कपूर
३३ प्रिंसिपल गिरधारी लाल जी
३४, प्रिंसिपल जगदीश चन्द्र थापर
३५ श्री परषोत्तमलाल वानप्रस्थी
३६ श्रीमती सुशीलावती दुबे
३७ श्री तीर्थराम जी हाडा
३८ श्री अमृतलाल जी हाडा
३९ श्री राज कुमार जी
४० श्री वेद प्रकाश कोहली
४१ श्री राजेन्द्रनाथ जी
४२ श्री शिवलाल जी वर्मा
४३ प्रेमनाथ जी
४४ श्री राजपाल जी चोपडा
४५ श्री परशुराम जी गुप्ता
४६, श्री ओमप्रकाश जी तलवार
४७ श्री हीरालाल चावला
४८ श्रीमती कृष्णा भण्डारी

(४) मन्त्री जी ने मौखिक रूप से आर्य समाज के गत वर्ष कार्य का विवरण दिया। उन्होने यह बताया पिछले वर्ष आर्यसमाज की गतिविधियो मे कुछ प्रशसनीय कार्य हुए है जिस प्रकार अग्रेजी भाषा का आयोजन और आर्यसमाज भवन मे प्रोफ़ेसर श्यामराम जैसे त्यागी एव आर्य समाज हितैषी नवयुवको का उत्साह वर्धक कार्यक्रम का प्रारम्भ इत्यादि। परन्तु कुछ सदस्यो ने इस बात पर आपत्ति उठाई कि आर्यसमाज मे सस्कार करवाने के लिये उचित प्रबन्ध नही है और न ही इस सम्बन्ध मे रजिस्टर आदि रखा गया है। मन्त्री जी ने आगे से इस पर ध्यान देने का आश्वासन दिया और मन्त्री जी के विवरण को नोट किया गया।

मन्त्री—श्री दरबारी लाल

ज्ञान के मोती

✶ सहनशीलता का अभ्यास करना, समय को व्यर्थ न गवाना, निरन्तर प्रभु भजन करना चाहिये।

✶ विश्वास करो मगलमय भगवान तुम्हारे साथ निरन्तर रहते हैं। दु खी क्यों होते हो, दु.खी होना अपने को अविश्वास की अवस्था मे फेंकना है।

नया-प्रवेश

हिसार—दयानन्द ब्रहम महाविद्यालय मे। जुलाई से नया प्रवेश हो रहा है विद्यालय मे पढने वाले छात्रो को भोजन, निवास, पुस्तकादि सभी वस्तुए नि शुल्क दी जाती हैं, अत उपदेशक बनने के इच्छुक सज्जन जो १६ वर्ष से अधिक आयु के हो तथा सस्कृत सहित मैट्रिक अथवा तत्सम योग्यता वाले हो वे शीघ्र ही आचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा) के पते पर पत्र व्यवहार करे।

करनाल में म० हंसराज जन्म-दिवस समारोह

दिनाक १९ अप्रैल को करनाल की समस्त आर्यसमाजो तथा शिक्षण-सस्थाओ की ओर से रात्रि ८ से १०–३० बजे तक महात्मा हसराज जन्म दिन डा० गणेश दास की अध्यक्षता मे बडी धूम-धाम से मनाया गया, जिस मे श्री प० सत्यप्रिय जी शास्त्री (उपाचार्य दयानन्द ब्रह्म उपदेशक म० विद्यालय हिसार) प्रि० मेला राम जी बर्क तथा प. विश्वम्बर दत्त जी आदि वक्ताओ ने महात्मा जी के जीवन की अनेक पावन घटनाओ को स्मरण कराते हुए उनके दिव्य जीवन एव उनके उज्ज्वल कार्यो पर ओजस्वी भाषण दिए। प० सत्यप्रिय जी ने आर्य जनता और महात्मा जी के अनुयाइयो से अपील की कि वे महात्मा जी के त्याग, तपस्या एव सादगी आदि गुणो को ग्रहण कर उनके पद् चिन्हो पर चले उक्त प्रचार और समारोह का जनता पर विशिष्ट प्रभाव रहा।

विनीत
शमशेरकुमार आर्य मन्त्री

आर्यसमाज माडल टाऊन अम्बाला

आर्यसमाज माडल टाऊन अबाला नगर की एक शोक सभा ६-४-६९को हुई जिसमे श्री राम चद्र जी प्रि० की सेवाओ की प्रशसा की गई और उनकी सदगति के लिए प्रार्थना की गई तथा उनके सम्बन्धियो के प्रति सहानुभूति प्रगट की गई।

एक अन्य प्रस्ताव मे भाई हर गोबिन्द सिह जी की धर्म पत्नि की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रगट किया गया और दिवगत आत्मा की सदगति के लिये प्रार्थना की गई तथा भाई जी और उनके परिवार के प्रति सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया गया।

(मन्त्री—मालिक राम)

(गतांक से आगे)

इस भ्रम के कारण वह बाह्य विषयों को बढाता है। जैसे-जैसे वह विषय बढते हैं। वैसे-वैसे उसका दुःख भी बढता जाता है। फिर जब उसे सत पुरुषो के संग से विदित होता है कि इस मोह-ाल से दूर होने के बिना दूसरा कोई उपाय नही तो फिर वह माया मोह के कीचड मे निकलने का प्रयत्न करता है। सब से बडा कीचड काम है। विशेषत स्त्री विषयक भोग इच्छा का धर्म मर्यादा का अतिक्रमण करना बहुत ही भयानक है। इस मे फसा हुआ मनुष्य अनेक प्रकार से गिरता है। यह कार्य बडा पेटू है। कामी मनुष्य को कितने भोग प्राप्त हो उसे कभी तृप्ति नही होती। भोग प्राप्त करने मे कितने भी पाप करने पडे उसका विचार तक वह नही करता। सब पाप इस काम के आश्रय से ही होते हैं। जिस प्रकार अग्नि पर धूम्र का आवरण होता है और दर्पण पर मल का उसी प्रकार मनुष्य को आत्मा पर इस काम का परदा है। इस परदे के कारण मनुष्य मोहित और कर्तव्य भ्रष्ट होता है। यह काम रूपी अग्नि कभी शात न होने वाली है। काम का गढ्ढा कभी भरता नही इस लिये काम को महा पापी भी कहा है। जो पापी होता है वही मनुष्य का वैरी होता है। शत्रु कहलाता है। जहा काम होगा वहा ज्ञात नही रह सकता ओर जहा ज्ञात है वहा काम नही बढ सकता। इस लिये ब्रह्मचर्य आश्रम मे ज्ञानजित करने का कार्य करना। अवश्यक कर्तव्य है कारण इस आश्रम के पश्चात विवाह होने पर ग्रहस्थाश्र मे मनुष्य काम के प्रधीन बना तो ज्ञान प्राप्त करने का कार्य कठिन हो जाता है। यह काम ज्ञान का वैरी है। ज्ञान की मुख्य इद्रिया मन और बुद्धि को यह फेर लेता है। और बुद्धि को यह फेर लेता है। और मन बुद्धि पर मूढता आ जाती है। और काम के वशमे हो जाती है तब उस का स्वामी काम हो जाता है। वही उस का चालक होता है। वैसे तो शरीर का स्वामी और चालक आत्मा है। मगर अब वह इद्रिया काम के अधीन है काम की आज्ञानुसार भोगो मे फसते हैं। और पाप मे प्रवृत्त होते हैं। अतः सब लोग इस काम को अपना शत्रु समझे ओर समय मे इस अग्नि को दवाये यदि इस मे भोग की लकडियों और विषयो का घृत डाला गया तो यह अधिकाधिक अग्नि को जलायेगा। अत सयम और दमन तथा निग्रह का जल इस काम रूपी अग्नि पर छिडके, इस से सब सुख और कल्याण प्राप्त होगे। दूसरा कीचड लोभ इस को धोने के लिये अपरिग्रह का पालन करने की आवश्यकता है। अपरिग्रह का अर्थ है, अपने पास सग्रह न करना, घर के पदार्थ धन सचय आदि अनेक प्रकार के सग्रह मनुष्य अपने पाप बढाता है, और लोभ के कीचड मे फसता है अत अपरिग्रह का पालन कर। लोभ रूपी दोष इस मे दूर रहेगा। तीसरा दोष क्रोध है, यह तब ही दूर हो सकता है जब मनुष्य अहिसा का पालन करे। अर्थात वह अपने विचार आचार स दूसरों को दुःख पहुचाने वाला कोई कार्य न करे। सदैव ऐसे कार्य मे रत्त रहे जिस से सब को सुख पहुचे। इस प्रकार अहिसा से क्रोध का मल दूर होता है। मनुष्य के पाप, कान,त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नाक पाच इद्रिय है, और इन मे शब्द स्पर्श रूप रस और गध का भोग लिया जाता है। इन भोगो पे फसने वाले को रोगादि का दुःख भोगना पडता है। अत भोगो मे न फसने का यत्न करना ही अत्यत आवश्यक है। इसलिए मनुष्य नियम को कि मैं अच्छे शब्दो का प्रयोग करूगा अच्छे ग्रथ पढूगा और अच्छे शब्द सुनूगा रसता की स्वाधीनता के लिये स्वादो मे नही फसूगा। अर्थात स्वाद बढाने का यत्न नहीं करूगा। हर प्रकार से सयमी बनूगा इस प्रकार प्रयत्न करने पर मनुष्य मोह-माया के आवरण को तोड सकता है। फिर उसकी बुद्धि स्वच्छ और पवित्र मलहीन हो जाती है। मनुष्य स्वय ही भोगो से विरक्त हो जाता है। भोगो के विषय से उदासीन होने के बिना मनुष्य कभी भी ब्रह्मचर्य का पालन नही कर सकता अतः बुद्धि का मल धोना और विषयो से उदासीन होना यह दोनो कार्य साथ-साथ करने चाहिए। तभी उन्नति के शिखर पर पहुच सकता है। अब तक हमने ऐसे साधनो पर विचार किया जिसमे बुद्धि निर्मल शुद्ध बने मगर इसमे वह प्राप्ति नही हुई जिस के लिये मनुष्य जन्म मिला है। मनुष्य का जन्म केवल ईश्वर प्रेमलाप के लिये होता है। अब तक हमने इस मिलाप के ओर केवल अपना पग ही बढाया है। प्रभु दर्शन नही किये। जिससे मुक्ति प्राप्त हो सके। इसलिये अब ईश्वर प्राप्ति पर विचार करेगे कि यह ईश्वर भक्ति क्या है। और किसकी करनी चाहिये। यह तो आपको पता ही है कि ईश्वर पूजा दो प्रकार से की जाती है। एक निराकार दूसरी साकार रूप मे। निराकार की पूजा के लिये योगाभ्यास की तैयारी करनी होगी। योग का अर्थ है। मेल करना इस मिलाप के लिए हमे यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि की ओर चलना होगा ताकि चित्र की वृत्तिय एकाग्र हों यदि चित्त म एकाग्रता न होगी तो सिद्धि प्राप्त न होगी। चाहे आप आयु भर साधन करते रहे। इसलिये साधक की बुद्धि योग के साधनो पर लगनी चाहिए। साधक के अन्त करण की शुद्धि के अनुसार तीन से पाच वर्ष के अन्दरही साधक सिद्धि को प्राप्त कर लेता है इसलिए साधक का हर समय योग साधनों मे ही व्यतीत होना चाहिए। यह नही प्रात कुछ प्रासन करे फिर थोडा समय खगोल विद्या सीखे अथवा पत्र आदि पढे अनन्तर स्नान कर के प्राणायाम करे तदनतर भोजन कर के नौकरी के काम करे सायकाल थक कर आने के पश्चात सध्या प्राणायाम करे और रात्रि मे भोजन के बाद सोवे चचल व्यवहार से सिद्धि कर्मी प्राप्त नही हो सकती। यही चचलता मन को एकाग्र नही होने देती क्योंकि विविध कर्मो से वह चित्र को स्वय भ्रान्त कर रहे होते है। फिर एकाग्रता कहा से प्राप्त हो। योगी को परिवार के साथ नही रहना चाहिये। उस का असल स्थान गुरु के चरणो मे है। अन्यथा हानि की सम्भावना अधिक है। गुरु के पास रहते हुए भी उसे एकान्त सेवन करना चाहिये। नही तो अभ्यास सिद्ध होने मे देरी लगती है। इसलिए ऐसा पवित्र स्थान चुने (जैसे नर्मदा गगा हिमालय आदि) जिन का जल वायु उत्तम हो वहा पर अभ्यास के लिये ऐसी जगह देखे जो ऊची नीची न हो अधिक सर्दे गर्म भी न हो ऐसी भूमि पर दर्भासन विद्या कर उस पर कृष्ण जिन और अन्त मे धोती की दो चार तय करके बिछाये। इस प्रकार का आसन न बहुत ऊचा हो न बहुत नीचा कारण ऊचा होने पर चित्त एकाग्र होने के समय झुकाव होकर गिरने की सम्भावना अधिक होती है। जिससे भारी चोट लग सकती है। इसलिए यह आसन भूमि से तीन-चार अगुल ही ऊचा होना उचित है। आसन हिलने वाला भी नही होना चाहिए हिलने से मन की एकाग्रता नही होती ध्यान तुरन्त दूसरी ओर हो जाता है। इतना करने पर अपने शरीर को देखे कि उस के पसीने मे मुह मे दुर्गन्ध तो नही आता यदि आती है तो वह वस्ति धौति नेति त्राटक नौलि कपाल भाति षट कर्म करके शरीर को कफ आदि दोषो से शुद्ध करके प्राणयाम का अभ्यास शुरू करे। श्वास उच्छ्श्वास की गति बन्द करने से जो स्वस्थता आती है। वह प्राणयाम है। प्राणयाम मे कुम्भक का महत्व बहुत ही है। कुम्भक से रोये रध्र शुद्ध होते है। ओर कार्य क्षय होते है। इसी से दीर्घायु और अरोग्य प्राप्त होता है। इसलिये अच्छे गुरु के पास रह कर अभ्यास करे। क्योंकि गुरु ही बतला सकता है। कि उसे कौन-सा प्राणयाम (क्रमश)

मनुष्य और उसकी उन्नति के साधन

श्री वैद्य ज्ञानचन्द जी बस्ती गूजां जालन्धर

आर्यकुमार सभा रोहतक

३०-३-६९ को रविवार आर्य कुमार सभा की ओर से आर्य समाज प्राधाना मुहल्ला के प्रागण मे रामनवमी का पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया। आदरणीय शास्त्री प० मनुदेव जी की अध्यक्षता मे हवन सध्या तथा प्रार्थना हुई। पर्व मे आर्य कुमारो ने उत्साह वर्धक, जोशीले, वीर रस से पूर्ण गीत सुनाए। श्री रामजी के चरित्र पर कविताए सुनाई तथा निबन्ध पढे। श्री शास्त्री जी का राम चरित्र पर भाषण हुआ प्रात काल आर्य समाज मन्दिर मे भी शास्त्री मनुदेवजी का सगठन पर काफी प्रभावशाली भाषण हुआ।

—जगदीश मित्र आर्य

साप्ताहिक आर्यजगत्

का वार्षिक चंदा

आठ रुपये

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे

आ० समाज रुद्रपुर नैनीताल

आर्य समाज रुद्रपुर का वार्षिक चुनाव २९-३-६९ को रविवार सर्व समिति में हुआ जिसमे प्रधान श्री रामशरण जी रस्तोगी ।

उपप्रधान—श्री मुलख राज जी वर्मा
मन्त्री—श्री सोमनाथ जी कालड़ा
उपमन्त्री—श्री यश पाल जी
कोषाध्यक्ष—श्री सत्य नारायणजी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री राम प्रकाश जी वार्ष्णेय ।

प्रधान—राम शरण रस्तोगी

अजमेर क्षेत्र में आर्य सम्मेलन की तैयारी

दिनाक ९ मई से १३ मई ६९ तक अजमेर क्षेत्र मे क्षेत्रीय आर्य-सम्मेलन होने की पूरे ज़ोर से तैयारियां की जा रही हैं । इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गौ-रक्षा सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन, दलितोद्धार नशा बन्दी सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि आयोजित किये जा रहे है, सम्मेलन मे श्री प्रकाश वीर जी शास्त्री ससद सदस्य, श्री महात्मा रामचन्द्र जी 'वीर', श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती, भूतपूर्व ससद सदस्य श्री आचार्य गौरीशकर जी, श्री आचार्य कृष्ण जी, श्री युगल किशोर जी चतुर्वेदी भूतपूर्व मन्त्री राजस्थान, श्री विशम्भरनाथ जी जोशी समाज कल्याण मन्त्री राजस्थान आदि-आदि महानुभाव पधार रहे हैं। सम्मेलन के अवसर पर पर यजुर्वेद परायण महायज्ञ भी सम्पन्न होगा ।

श्री मदन मोहन शास्त्री,
मन्त्री आर्यसमाज ।

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

* समाचार

आर्य प्रादेशिक सभा का

आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर की ओर से हिसार व रोहतक मण्डल ने श्री प० रामविचार जी अधिष्ठाता वेद प्रचार मण्डल हिसार की देखरेख मे निम्नलिखित ग्रामों मे उत्सव व प्रचार किया गया । जिस मे आर्य प्रादेशिक सभा के उपदेशक श्रीभूराराम वानप्रस्थी, प०प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर सुमेरसिंह व रणजीतसिंह जी शामिल हुए ।

१ आ० स० मदीनाढागी जि० रोहतक में आर्य पाठशाला का उत्सव ता० २१-२२-२३ फरवरी को मनाया गया था । यह पाठशाला अरसा बीस वर्ष से आर्य प्रादेशिक सभा के सम्बन्ध से चल रही है । समय न मिलने पर हमारी मण्डली उत्सव पर नही पहुच सकी थी । परन्तु फिर भी इस समाज ने २५) वेद प्रचार दिया है धन्यवाद ।
(ता० ४-५-६ मार्च)

२. ईशापुर खेडी (रोहतक) मे श्री प्रधान शीशराम जी के उद्योग से उत्सव मनाया गया । यज्ञ के ऊपर काफी सख्या मे यज्ञोपवित धारण करवाए गए । कुलदान—४९

३. आ० स० जुलाना जि० जीद आधीन श्री प० घासी राम जी के परिश्रम से कई वर्ष से पाठशाला चल रही है । प०घासीराम जी उन के महान-तपस्वी व्यक्ति हैं । इन के १०-११-१२ मार्च को होने वाले उत्सव पर भी सभा ३१) दान मिला है ।

—प्रभुदयाल आर्य
(ता० १५-१६-१७)

४. आर्य समाज सोरखी जि० हिसार का उत्सव श्री चौ० चतरसिंह व चौ० हीरासिंह के परिश्रम से किया गया । दान—५०
(ता० १८-१९-२० मई)

५ आर्य समाज तालू, जिला हिसार का उत्सव श्री चौ आत्माराम राम जी आर्य, श्री चौ० भरतसिंह जी सरपच व श्री चौ० हरिसिंह आदि के सहयोग मे किया गया । परन्तु सब से विशेष भाग श्री चौ० आत्माराम जी ने लिया है । जो सभा को भाडा और दान आदि भी देते रहते है ।

वेद प्रचार आदि कुल राशी ८५)
(ता० २१-२२-२३ मई)

गाव मंढाल खुर्द जि० हिसार मे चौ० भरथा राम चौ० कर्म सिंह व चौ० देवी राम जी आदि के सहयोग से उत्सव किया गया । श्री चौ० भरथा राम जी विशेष रूप से हमेशा श्रद्धा दिखलाते रहते हैं । वेद प्रचार आदि कुल ७४)
(ता० २५-२६ मार्च)

७. जि० रोहतक में चौ० राम सरूप के सहयोग से गाव पडवाल मे प्रचार किया गया इनकी ओर से सभा को ३४) दान मिला । धन्यवाद
(ता० १८-१९-२०)

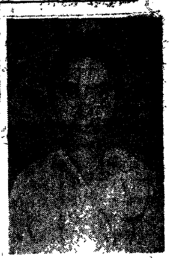
आ० स० भम्सेवा जींद का मिडल स्कूल पुराने समय से चल रहा है—जहां महात्मा आनन्द स्वामी भी कई बार आ चुके हैं । इस समाज ने सभा को बार २ हजारो रुपया दान दिया है । इस गाव की ज़मीन सेम के कारण बिल्कुल बेकार हो चुकी है परन्तु फिर भी इनकी श्रद्धा है । दान—६२ ।

९ आ० स० [illegible] जि० जीद का उत्सव ता० ३१ मार्च १-२ अप्रैल को बडी धूमधाम के साथ किया गया यहा श्री ब्रह्मचारी अग्निदेव जी भीष्म भी शामिल हुए । बड़ा अच्छा यज्ञ किया गया । यज्ञोपवीत भी दिये गए । यहां के प्रधान चौ० सूरतसिंह जी व मन्त्री श्री चौ० धर्मसिंह जी बडे ही उत्साही हैं ।

वेद प्रचार आर्य कुल धन ६९)
(ता० १०-११-१२)

१०. मण्डी जुलाना जिला मे अप्रैल को प० [illegible] सुमेरसिंह व रणजीत सिंह की मण्डली ने प्रचार किया प्रचार का बड़ा ही अच्छा प्रभाव रहा । यह मण्डी जुलाना पुराणको और जैनमत आदि का गढ है परन्तु यही दो उत्साही वीर श्री ला० जगन्नाथ जी टिम्बर मरचेंट, और श्री ला० प्रकाशचन्द जी और आदि कमीशन एजेन्ट बड़ी श्रद्धा के साथ बार-बार हमारा प्रचार करवाते रहते हैं ।

इन सज्जनो का सभा धन्यवाद करती है जिन्होंने स्वय और अपने साथियो से सभा की सहायतार्थ १०७) की राशि दी है ।



साई दास ऐंग्लो सस्कृत हायर सैकण्डरी स्कूल जालन्धर का विद्यार्थी जगजीतसिंह जो ५६६ अक लेकर जिला भरमे प्रथम रहा
प्रि० श्री प्यारेलाल बेरी

साईं दास ऐंग्लो संस्कृत हायर सैकेण्डरी स्कूल जालन्धर को मिडल परीक्षा का सर्वोत्तम परीक्षा परिणाम !

इस वर्ष भी गत वर्षों की भांति साई दास ए एस हायर सैकेण्डरी स्कूल जालन्धर का मिडल का परीक्षा परिणाम बहुत उत्तम रहा । स्कूल का विद्यार्थी जगजीतसिंह ५६६ अक प्राप्त कर जिला भर मे प्रथम रहा । पहली दस पोजीशन मे से पाच भी इसी स्कूल ने प्राप्त की हैं । लगभग ६५० विद्यार्थी परीक्षा मे बैठे और ७०% परिणाम रहा । जब कि डिपार्टमैंट का परिणाम ५६% है । इस उत्तम परिणाम का श्रेय भी श्री प्यारेलाल जी बेरी और उनके मेहनती स्टाफ पर है ।

संक्षिप्त समाचार

★ अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री और वहा की सरकार के निमन्त्रण पर प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गांधी ५ से ९ जून, १९६९ तक अफगानिस्तान की राजकीय यात्रा करेंगी ।

★ रोम मे आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी मे भारतीय वृत्तचित्र 'वाइल्ड लाइफ आफ इंडिया' को गोल्डन स्तपूनिक नामक प्रथम पुरस्कार दिया गया है । चित्र का निर्माण सूचना, प्रसारण और संचार मन्त्रालय के फिल्म डिवीजन ने किया था ।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए पी.एच.डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टीफोन नं० ३८५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक १८) — २२ बैसाख २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—४ मई १९६९ — (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

कृतं मे दक्षिणे हस्ते

अर्थ—कृतं-कर्म पुरुषार्थ मे-मेरे दक्षिणे दाहिने हस्ते-हाथ में हो। [illegible] अपने आप आपको कभी दीन-हीन मत समझना। प्रभु ने और वस्तुओं के साथ-साथ तुझे दोनों हाथ प्रदान किए हैं। यह दाहिना हाथ कर्म का केन्द्र है। यह बड़े पुरुषार्थ वाला है। यह कठिन से कठिन काम करने में समर्थ है। इसके द्वारा जितना चाहे धन कमा ले। जिस भी वस्तु को चाहें प्राप्त कर ले। हां—एक बात यह याद रखें कि इसके द्वारा सदा कर्म तथा पुरुषार्थ करता रहे। कर्मशील बना रहे। कर्म योगी बने रहना जीवन की सबसे बड़ी शिक्षा है। जीवन कर्मयोग है।

अथर्व वेद ७-५०८

वे दा मृ त

दीर्घ आयु प्राप्त करें

आयुषायुः कृतां जीवायुष्मान् जीव मामृथाः।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम्॥

—अथर्व वेद काण्ड [illegible]

अर्थ :—(आयुषा) जीवन के साथ (आयुः कृतां) जीवन बनाने वालों के (जीव) तू जीवित रह (आयुष्मान्) उत्तम दीर्घ आयु वाला होकर तू (जीव) जीवित रह। (मामृथाः) मत मर। (प्राणेन) प्राण से (आत्मवन्तां) आत्मा वालों के (जीव) जीवित रह। (मृत्योः) मौत के (वशम्) वश में (मा) मत (उद्गाः) मत जा।

इसका भाव यह है

हे मानव! यह तेरा जीवन बड़ा प्यारा और कीमती है। जिन लोगों ने दीर्घ जीवन बनाया है। नियम एवं जीवन को बनाने की मर्यादा पथ पर चलकर दीर्घ जीवन रखते हैं। उनको सदा देख-देखकर उनके साथ उसी जीवन पथ पर चलते रहो। मर्यादा पथ पर ही तो चलने से दीर्घ जीवन मिलता है। मौत के वश में नहीं जाना। जीवन वालों के सामर्थ्य से जीवन नियम का सदा पालन करना है। दीर्घ जीवी बनना है। हम मौत के लिए नहीं बने। न जल्दी मरना ही है। —सं०

ऋषि दर्शन

राज्यस्य मूलमिन्द्रियजयः

अर्थ—राज्यस्य-राज्य का, राष्ट्र का मूलं-मूल आधार इन्द्रियजयः-इन्द्रियों का जीतना है आधार है।

भाव—महात्मा चाणक्य का यह वचन है। अपने अर्थशास्त्र के सूत्रों में यह एक अमूल्य सूत्र है। राज्य या स्वतन्त्रता का आधार सदाचार व चरित्र है। जिस देश का राजा, नायक व ऊंचे अधिकारी चरित्र वाले होते हैं—प्रजा भी जीवन के आचार पथ पर चलती है—वह राज्य तथा स्वाधीनता कायम रहती है। किंतु जहां का नायक तथा राज्यकर्मचारी विषयों के दास बनकर अनाचारी हो जाते हैं। भोगविलास एवं सुरा सुन्दरी, स्वर्ण का खुला प्रचार होता है। वह राज्य नष्ट हो जाता है। आचार राष्ट्र का मूल मंत्र है। —सं०

आचार्य चाणक्यः

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच०डी० (सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

सामाजिक क्षेत्र में म० हंसराज

(श्री सुरेश चन्द्र भटनागर एम.ए.,डी.ए.वी. कालेज जालंधर)

महात्मा का महात्मय इसी मे है कि वह जन साधारण के उन्मार्ग-गामी विचार-प्रवाह को सत्यपथ की ओर उन्मुख कर देता है। हवा के रुख की ओर उडने वाले साधारण तिनको के समान साधारण लोग समाज के परम्परागत अच्छे विचारो से सहज ही प्रभावित हो जाते हैं। परन्तु महान पुरुष इस समुद्र रूपी लहरो को दृढ चट्टान के समान टकरा कर पीछे की ओर धकेल देते है। वह समाज भ्रष्ट कुरीतियो के शत्रु तथा वैज्ञानिक एव हितैषी के समर्थक होते हैं।

म० जी के युग मे महर्षि दयानन्द के सुधार कार्यो के बावजूद छूआछूत का प्रकोप उग्र रूप धारण किए हुए था। महात्मा हसराज जी ने इस भेदभाव को मिटाने के लिए भरसक प्रयत्न किया। १९२६ मे दयानन्द कालेज के छात्रावास मे जब एक चमार का लड़का प्रविष्ट हुआ तब अन्य लोग इसके विरुद्ध रोष मे नाक-भौं सिकोड़ने लगे। रसोइए ने भोजन खिलाने से इन्कार कर दिया,परन्तु म० जी ने इसका विरोध किया और समझा बुझा कर सब को एक ही स्थान पर एक ही साथ भोजन कराया। म० जी इस बात से पूर्णतया परिचित थे कि मोची, लुहार, बढई, धोबी आदि को समाज मे निम्न दृष्टि से देखा जाता है। म० जी ने छूआछूत तथा ऊच-नीच को मिटाने के लिए स्वय अपने आप को आगे किया तथा अपने चचेरे भाई धनीराम भल्ला को अनारकली बाजार मे जूतो की दुकान खोल कर दी।

म० जी का दिल विधवाओ की दुर्दशा देख कर कराह उठा उन्होने उनकी स्थिति मे सुधार के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया और रियासत नाभा मे विधवा विवाह लागू करवाने मे सफल हुए।

महात्मा जी बाल विवाह के विरुद्ध थे क्योकि इस मे शारीरिक एव मानसिक उन्नति अवरुद्ध हो जाती है। १९१५ से १९१० तक जब तक वह दयानन्द कालेज कमेटी के प्रधान रहे उन्होंने विद्यार्थियो को ब्रह्मचर्य के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न पालन के प्रति अत्याधिक बल दिया १९१५ मे उन्होने एक प्रस्ताव द्वारा विवाहित छात्रो को दसवी श्रेणी से निकलवा दिया और १९२६ में विवाहित लडको का एफ ए में प्रवेश बन्द करवा दिया। उन का यह सुदृढ़ विचार था किसी प्रकार से स्वस्थ होने के लिये कम से कम २० वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

उनके समय मे लोगो मे अपनी सस्कृति के प्रति बड़े हीन एव सकीर्ण भाव घर कर गए थे जिस से सहस्त्रो अज्ञानी हिन्दू मुसलमान बनने लगे।

इनको पुनः हिन्दू बनाने के बिल्कुल पक्ष में न थे जिस के कारण हिन्दुओ की सख्या दिन प्रतिदिन घटने लगी। महात्मा जी ने हिन्दुओं को भारतीय सस्कृति के मूल्यवान निधियों के दिग्दर्शन करवाये उन मे एकत्व की भावना को उत्पन्न किया और साझी प्रार्थना की प्रथा को चालू किया और सत्य को शिरोधार्य करने का आह्वान किया। मुसलमानो को पुनः हिन्दू धर्म मे दीक्षित करने के कार्य की गति को तीव्र किया। टीपू सुल्तान के समय बने २४ हजार मुसलमानों को पुनः हिन्दू बनाया, मलकाने मे भी मुसलमान राजपूतों की शुद्धि कार्य प्रारम्भ किया। जिससे मौलवी लोग घबराने लगे। आगरे मे भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना की गई। ★★

आर्य समाज शकूर बस्ती

आर्य समाज शकूर बस्ती अपना वार्षिकोत्सव ३ मई से ११ मई १९६९ तक तदानुसार (रविवार से रविवार तक) बडी धूम धाम से मना रहा है जिस मे प० त्रिलोक चन्द महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा (पजाब) की वेद कथा होगी व श्री जय देव जी जतोई वाले के भजन होगें। इस उत्सव मे श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी. श्री अभिविनय भार थी विद्यावाचस्पति, श्री सत्य प्रिय जी. श्री पुरुषोतम जी एम ए प्रो० रमेश चन्द्र जी शास्त्री एम- ए, श्री भागवत शरण जी शास्त्री वेद दर्शनाचार्य आदि विद्वान पधार रहे हैं।

मन्त्री—जुगल किशोर आर्य समाज शकूर बस्ती

पंजाब में दयानंद विश्वविद्यालय

—सत्यपाल 'सहदेव'

यह महान कार्य पहले भी कई बार दुहराया जा चुका है। आज फिर से भारत के कोने २ से यह आवाज आ रही है कि दयानन्द विश्वविद्यालय बनाया जाए। भारतीयता में विश्वास रखने वाला प्रत्येक सज्जन जो साम्प्रदायिकता की सकीर्ण व विषैली धारणाओ से दूर है—अपनी सहमति प्रकट करता है कि भारत के किसी भी भाग मे ऐसे महान बलिदानी तपस्वी महात्मा की याद मे स्वाधीन भारत सरकार द्वारा निर्मित कोई स्मारक होना चाहिए—निश्चय ही यह कार्य प्रशसनीय है इस मे कोई सन्देह नहीं कि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपनी व्यक्तिगत शहादतो के द्वारा हमारे सामने कई स्मारक बना रखे हैं लेकिन हमारी भारत सरकार का भी कर्तव्य बनता है कि महर्षि दयानन्द की याद मे विश्व-विद्यालय रूपी स्मारक की स्थापना करे। ऋषि दयानन्द का नाम १९वी शताब्दी मे एक अद्भुत स्थान रखता है उस समय स्वराज्य का नाम लेना भी मौत को घर में बुलाना था। लेकिन फिर वे निर्भीक साधु अपने विचारो की मधुर बोली बोलता रहा। स्वराज्य की वीणा बजाने वाले देवता के नाम पर यदि कोई विश्वविद्यालय बन जाए तो देश की कितनी अच्छी किस्मत होगी।

सौभाग्य की बात है कि पजाब राज्य सरकार पजाब मे दो विश्व-विद्यालय स्थापित करने जा रही है। क्या ही अच्छा हो कि एक विश्व-विद्यालय ऋषि दयानन्द के नाम पर बना दिया जाए। श्री गुरु नानकदेव जी महाराज के नाम पर विश्वविद्यालय पजाब मे बनना यह कितने गौरव की बात है—यदि इस के साथ दूसरा विश्वविद्यालय ऋषि दयानन्द जी के नाम पर बना दिया जाए तो पजाब प्रान्त का कितना सौभाग्य होगा? यह विचारणीय विषय है राज्य सरकार को विचार करना चाहिए। पजाब की आन्तरिक समस्याओ का विश्लेषण करते हुए भी यदि विचारा जाए तो निश्चय ही इन दो महान् विभूतियो के नाम पर दोनो ही विश्वविद्यालय बनने चाहिए—क्या पजाब सरकार इस सामयिक चर्चा को रचनात्मक रूप देगी?

डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, चित्र गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली

दयानन्द एंग्लोवैदिक कालेज ट्रस्ट मैनेजमैंट सोसाइटी, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन (**Society Meeting**) रविवार दिनांक ११ मई, १९६९ को सायंकाल ४-३० बजे (**On Sunday, the 11th May, 1969, at 4-30 P.M.**) डी ए वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, चित्रा गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली के कार्यालय मे होगा। आप से सविनय निवेदन है कि आप इस मे दर्शन दे कर अनुगृहीत करें।

प्रधान जी की आज्ञानुसार

अमर नाथ पुरी

मन्त्री

कार्य-क्रम

१) पिछली बैठक दिनाक १२-५-१९६८ की कार्यवाही की पुष्टि। (प्रतिलिपि संलग्न)

२) प्रबन्धकर्त्री समिति की वार्षिक रिपोर्ट (१९६८-६९)

३) वर्ष १९६८-६९ का आय व्यय का व्यौरा।

४) प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा प्रामशित वर्ष १९६९-७० का आनु-मानिक बजट का व्यौरा (बजट की प्रति बैठक से कुछ दिन पूर्व भेजी जायेगी)

५) डी ए वी. कालेज प्रबन्ध-कर्त्री समिति की सिफारिश, सोसाइटी की बैठक की तिथि निश्चित करने सम्बन्धी नियम मे सशोधन करने के विषय मे विचार।

६) फुट कर प्रधान की आज्ञा से।

★ दूसरो का सहारा लेने वाला सदा अशान्त दुःखी और दीन रहता है, परमेश्वर पर निर्भर रहने वाला नित्य तृप्त, सुखी रहता है।

★ परमेश्वर आनन्द रूप है मनुष्य उसे छोड कर जब कृत्रिम और इद्रिय जन्य निर्जीव आनन्द की ओर बढता है तभी वह दुःखो के भवर में डूबता है।

★ जो जीवन के मूल में रहने परमेश्वर को साधन का जल नहीं देता, उस का जीवन मुर्झा कर सूख जाता है।

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार, २०२६, ४ मई, १९६९ [अंक १८

मातृ शक्ति का घोर अपमान

कलकत्ता मे रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम के सास्कृतिक समारोह मे ६ अप्रैल की रात को नारी जाति के साथ जो कुछ किया गया। उन पर खुले रूप मे मनुष्य का आकार रखने वाले उन काम-वासना के दानवता भरे पुतलो ने जिस प्रकार से बलात्कार किया। लगातार पाच घण्टे तक बिजली बुझा कर जो अनाचार, बलात्कार एव आजाद भारत के इस महान् नगर नारियो के सतीत्व को लूटा गया। जिसके फल-स्वरूप कई देवियो ने अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए सरोवर मे कूद कर अपनी जीवन लीला को समाप्त करना उचित समझा। वे भारत की बेटियां हमेशा की नीद सो गई, किन्तु वासना के नराकार के उन भेडियो को हाथ नही लगाने दिया। अनेक देवियो, लडकियो के साथ वहां सडको पर उस रात को जो भी किया गया, उस से सारे भारत का सिर लज्जा से झुक जाना चाहिए। देवियो के अधो-वस्त्रो एव शरीर की अंगियो से सारी सडक अटक पडी थी। रात के समय उनकी चीखो-पुकार से आकाश फटा जाता था। समाचार-पत्रो मे देर से यह समाचार आया है। लोक-सभा मे भी पता चला, तथा श्रीमती एला चौधरी ससद् सदस्य ने जो पत्र भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को विवरण सहित लिखा तथा उसके कुछ भाग दैनिक पत्रो मे छपे हैं। उन को पढ़ सुनकर तो कौन है जिस का रक्त नही खौलने लगता? यह सारा नारी जाति का घोर अपमान उस नगर मे प्रान्त मे हुआ, जिसने भारत की बडी-बडी विभूतियो को पैदा किया है। उस कवीन्द्र-रवीन्द्र के महान नाम के सरोवर के समारोह मे किया गया, जिस को राष्ट्र के बडे-बडे नेता भी गुरुदेव कह कर पुकारते हैं। सब से बढ़ कर यह दुःख है कि ऐसा घोर घृणित बलात्कार उस युग में नारियो पर किया गया, जबकि राष्ट्र के प्रधान मन्त्री के ऊचे आसन पर भी इन्दिरा गाधी स्वय भी तो नारी के रूप मे आसीन है। नारी के राज्य मे मातृशक्ति का ऐसा अपमान? हमारे इस कलकत्ता वाले बगाल की सरकार का रूप तो सब के सामने है। उनकी विचारधारा सारे जानते है। पहिले तो इस समाचार को पूरी तरह दबाने का प्रयत्न किया गया, किन्तु जब कुछ स्वाभिमानी लोगों की ओर से पत्रो मे छपा तो लोगो का ध्यान उधर गया। श्रीमती इलापाल चौधरी के पत्र व पत्रो मे दिये गये बयान से लोगो की कुछ आखे खुली। मातृ-शक्ति के खुले बन्दो सतीत्व पर इस बलात्कार रूपी घोर अपमान को बगाल के ही नही अपितु सारे भारत के इतिहासमे घोर काली रात के नाम से याद किया जाएगा। १९४७ मे राष्ट्र विभाजन के समय तो नारि जाति का घोर अपमान पाकिस्तान मे हुआ था। उन कामुक भेडियो के काले कारनामे भारतीय जनता को कभी भूल नही सकते। किंतु कलकत्ता मे अपने स्वतन्त्र भारत मे मातृशक्ति पर इतना बलात्कार किया जाए—इससे बढकर अपमान और क्या हो सकता है। हमे प्रसन्नता है कि लोक सभा मे प्रश्न उठा है। कलकत्ता मे हलचल हुई है। किंतु एक बात सच्ची है कि यह अपमान मामूली घटना नही है जिस पर मौन रहा जाए। इसके विरुद्ध तो सारे देश मे जनमत का एक तूफान खडा हो जाना। कितनी देविया कूद २ करके समाप्त हो गई। कितनी का गुडो ने खुली सडको पर सतीत्व लूटा। उस समय उनके दिल मे क्या विचार होगा कि हम आजाद भारत मे रहती हैं।

जगद्गुरु शकराचार्यजी के अस्पृश्यता सबधी पटना सबधी सविधान विरोधी भाषण के विरुद्ध तो सब जगह हलचल मचा दी गई। उनके पुतले तक जलाए गये। कडे २ शब्दो का प्रयोग किया गया। किन्तु मातृ-शक्ति का रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम कलकत्ता मे खुले बन्दों लगातार पाच घण्टो तक दानवता भरा काण्ड होता रहा। उसके विरोध मे देश मे कितनी हलचल की गई है। जगद् गुरु के विरोधी इस घोर अपमान पर कहा सो गये?

भारतीय सभ्यता मे मातृ शक्ति बडा सम्मानित है। आज उसका घोर अपमान किया गया है। यदि इस समय इसका कडा प्रतिकार न किया गया तो आने वाला समय कैसा होगा तथा ऐसे २ लोगो का कितना हौसला बढ जाएगा इसका अनुमान लगाना कठिन नही है। यह घटना भारत के ऊपर भारी कलक है। उन वासना के भेडियों को ऐसा कडा दण्ड दिया जाए ताकि सदा याद रखें। देविया भी ऐसे २ कार्यक्रमो मे विचार करके जाया करे।

—त्रिलोक चन्द्र

पंजाब और हिन्दी

पजाब मे चालीस प्रतिशत हिन्दी भाषा भाषियो से हिन्दी के सम्बन्ध मे क्या व्यवहार किया जा रहा है। यह सब के सामने है। आज प्रात की सरकार अकाली भाइयो के हाथ मे है। उनका बहुमत है। सत्ता उनके हाथ मे है। उनके लिए यह अवसर था कि प्रान्त की हिन्दुजनता को इस बात का अवसर देते कि प्रात मे अल्पमत की भाषा का पूरा-पूरा सम्मान होगा। हम तो केवल अल्पमत की भाषा के रूप मे ही नही वरन हिन्दी भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप मे इसे देखते है। इसका अपमान तो राष्ट्र की भाषा का ही निरादर है। स्कूलो की प्रारम्भिक भाषा हिन्दी को समाप्त करके पजाबी बना दी जाये। सच्चर फार्मूला समाप्त करके माता-पिता से उनके बच्चो का भाषा माध्यम रखने का अधिकार छीन लिया जाए। इसका विचार तो सस्थाओ के वरिष्ठ अधिकारी ही करेगे।

एक बात और भी पत्रो मे आई है कि पजाब सरकार ने विज्ञापन देने के सम्बन्ध मे एक निर्णय किया है कि चालीस प्रतिशत विज्ञापन पजाबी अखबारो को दिए जाएगे। तीस प्रतिशत इगलिश वालो तथा १५-१५ प्रतिशत विज्ञापन हिंदी-उर्दू पत्रो को दिए जाया करेंगे। यह है इस प्रात मे राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति सरकार का व्यवहार? प्रतिशत मे राष्ट्र की भाषा हिंदी के लिए केवल १५ प्रतिशत ही विज्ञापनो का देना। हिंदी की स्थिति का भविष्य क्या होगा? यह चित्र सामने पता लगाया जा सकता है। जहा पर लोग परस्पर बंटे हुए हो। एक केन्द्र पर केन्द्रित न हो सके। अपने-स्वार्थ की सीमा का छोटा-छोटा ससार हो वहा ऐसा ही होगा। चालीस प्रतिशत हिंदी भाषी होकर भी यह अवस्था देखने को मिल रही है। अपनी ध्वनि का शख केन्द्रित करके बजाया जाए तो उसकी आवाज मे भारी प्रभाव होता है।

सभा की आर्यसमाजों से

सभा के माननीय मन्त्री डा० वेदीराम जी शर्मा एम ए पी एच डी जालन्धर ने सभा मे सम्बन्धित तमाम आर्यसमाजो से आर्यजगत के गताक मे एक विशेष अनुरोध भरी अपील की है कि सारी समाजे अपना वार्षिक उत्सवो का अवश्य प्रबन्ध करे। यह उत्सव जनता तक अपने विचारो को प्रचार का सबसे बडा साधन होते है। इनसे समाज के जीवन का बाह्यरूप जनता की नजर मे भली-भाति आता रहता है। समाज के कार्य मे प्रगति भी आ जाती है। इस प्रकार से केन्द्र रूपी सभा को भी आर्थिक रूप मे वेद प्रचार की निधिरूप मे धन भी पहुचता रहता है। समाजो मे जीवन व जागृति भी बनी रहती है। जिन समाजो मे यदि किसी विशेष कारण व परिस्थितिवश उत्सव नही किये जा सकते, वहा प्रचार कथा का प्रबन्ध तो अवश्य किया जाना चाहिए। इन से भी ठोस लाभ होता है। प्रत्येक समाज का कर्तव्य है कि वह सभा मन्त्री जी के आदेश का पालन करके अपने उत्सव व कथा का प्रबन्ध करे।

—म.

सभा समाचार

आर्य प्रादेशिक सभा के प्रोग्रामो के अनुसार ? से ६ अप्रैल तक आर्यसमाज माडल टाऊन जालन्धर मे श्री तेजराम जी द्वारा रात्रि को वेद की पावन कथा हुई। श्री वेदप्रकाश जी एम०ए० बहुत लगनशील व्यक्ति है। सत्सग मे उनकी विशेष रुचि है।

७ से ११ अप्रैल तक आर्यसमाज मन्दिर रोपड मे रात्रि को वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। श्री हजारीलाल जी भजनीक सभा के मनोहर भजन होते रहे। आर्यसमाज खन्ना तथा आर्य समाज रोपड के उत्सवो पर शानदार व्याख्यान होते रहे। दान के लिए अपील की गई।

[वेद प्रचार, कथा आदि के प्रेमी सज्जन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मे प्रोग्राम लेवे।]

समाज कर्तव्य पहिचाने

डा० वेदीराम जी शर्मा सभा मन्त्री का भाषण

आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर की ओर से २० अप्रैल रविवार के दिन सार्वजनिक रूप से महात्मा हसराज जी का जन्म दिवस बडे ही समारोह मे मनाया गया। इस मे आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर के मान्य मन्त्री श्री डा० वेदी राम जी शर्मा एम ए पी एच डी ने अपना ओजस्वी भाषण देते हुए कहा—

स्वर्गीय महात्मा हसराज जी ऐसे महान नेता थे जिनके उदात्त व कर्मयोगी जीवन रूपी महान ग्रन्थ का एक-एक अध्याय एव पृष्ठ-पृष्ठ बहुत बडा पाठ पढाता है। सारी आयु तप व त्याग मे व्यतीत कर दी। इसी का ही प्रभाव तथा परिणाम है कि इस समय देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक तथा बाहर भी डी ए वी आन्दोलन की एक बडी सरिता प्रवाहित कर शिक्षा के सलिल के द्वारा जनमानस को आप्लावित करती है। ये हमारे सरस्वती केन्द्र ज्ञान ज्योति के महान मनोरम मदिर हैं, जहा से निकली किरणें चारो ओर के सारे वातावरण को प्रकाशित करती हैं। यह सारा तप उसी तपस्वी का ही है।

जैसी परिस्थिति पूज्य महात्माजी के समय मे थी—वैसी आज भी है। आर्य समाज के इन महान शिक्षण सस्थानो डी० ए० वी० स्कूल व कालेजो के रूप मे हिन्दी भाषा ऊचा स्थान देकर सारे देश का नेतृत्व किया था। अग्रेजी सरकार सहायता व अनुदान देती है या नही—इस बात की चिन्ता नही थी। पूज्य महात्मा जी की तपस्या ने इन शिक्षण केन्द्रो को बडा शक्तिशाली बना दिया था। इस समय राष्ट्रीय जीवन मे विविध कार्यों के क्षेत्रों मे कार्य करने वाले जितने भी बडे २ महानुभाव है। इन मे अधिकतर इन्ही सस्थानो की पवित्र देन है जो नहीं भी है उनके जीवन पर भी इन सस्थाओं का बडा प्रभाव पडा है। महात्मा जी ने नेतृत्व करते हुए शिक्षा का मस्तक ऊचा किया। इन सरस्वती मन्दिरो का मान किसी भी रूप से कम नही होने दिया। इनके गौरव व प्रतिष्ठा को पूरी तरह कायम रखा। हिन्दी के विकास तथा प्रचार मे डी० ए० वी० आन्दोलन का बहुत बडा हाथ है। वास्तव मे तो इस का सारा श्रेय इसी आन्दोलन को ही है।

इस अवसर पर मैं अपनी बडी प्रबन्धकर्त्री डी. ए वी. कालेज कमेटी को तो कुछ कहने की स्थिति मे नही हू। हा जनता से जरूर कहूगा कि वह इस समय के वातातावरण को देखते हुए अपना कर्तव्य पहिचाने। आज भी हमारे सामने हिन्दी भाषा की समस्या एक विषम रूप लेकर खडी है। इसके गौरव मान का प्रश्न है? पता नही इस प्रात मे हिन्दी के साथ क्या व्यवहार होना है। इस बारे मे विचारने का महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आ गया है। हमारी इन सस्थाओ मे हिन्दी के साथ क्या नीति वरती जायेगी। इस का अनुमान लगाना कठिन नही है। इसलिए मैं जनता से अनुरोधपूर्वक कहना चाहता हू कि इसके लिए अपना सक्रिय सहयोग जहा अपनी इन पुरानी शिक्षण सस्थाओ को देते रहे जहा उनके हजारो नही वरन लाखो बच्चे-बच्चिया शिक्षा प्राप्त करते हैं। वहा अपनी सारी शक्ति लगा कर इन सस्थाओ के कार्य-कर्ताओं को भी शक्तिशाली बना दे। ताकि प्रत्येक अवस्था में ये हमारी सस्थाए पूज्य महात्मा हसराज जी के युग से प्राप्त अपने गौरव मान के पथ पर चलती रही। किसी भी प्रकार का वातावरण इसके मान को कम न कर सके। जन-जीवन के पूर्ण सहयोग से किसी प्रकार की भी चिन्ता नही रहा करती। इस अवसर पर महात्मा हसराज जी के प्रति यही सबसे बडी श्रद्धाजलि है कि जनता इनके पुरातन गौरव को अक्षुण बनाए रखे। वातावरण तथा अन्य भी किसी भी प्रकार का इन पर प्रभाव न पड सके। आज हमारी परीक्षा का समय है। हम आज के दिन सकल्प करे कि जिस पवित्र सरस्वती मन्दिर की स्थापना उस तपस्वी ने अपना यौवन जीवन देकर की थी, वह अपना उसी प्रकार से मस्तक ऊचा करके बना रहेगा। किसी भी अवस्था मे उसके महान् मिशन को तनिक भी क्षति नही पहुचेगी।

दिनचर्या का महत्व

(श्री रविन्द्र कुमार डी. ए. वी. कालेज जालन्धर)

इस विशाल ससार न जाने कितने पशु पक्षी, नर-नारी निवास करते हैं। यह ससार भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवरो जिनको जानने के लिए बहुत परिश्रम की आवश्यकता है, उनसे परिपूर्ण है। कहने का तात्पर्य है कि इस सृष्टि के जीवधारीयो की चाहे वह जल मे रहने वाले हो भूगर्भ मे छिपे हो या धरती पर रेंगने वाले हो इन सब प्रकार के जानवरो-कीट पतगो की गिनती करना कठिन ही नही अपितु असम्भव है।

अगर हम सब बहुत ध्यान से सोचे तो हमे मालूम होगा कि हर जीव की दिनचर्या होती है। दिनचर्या से मतलब है कि हम जो दिन भर कार्य करते हैं वह दिनचर्या मे आता है। मनुष्य की दिनचर्या तो बनी हुई है। सुबह उठना स्नान करना, सध्या हवन पूजा पाठ आदि उसके पश्चात दिन भर जो वह काम करता है वह उसकी दिनचर्या है। यहा यह बता देना चाहता हू कि दिनचर्या को अच्छे से अच्छा बनाना व्यक्ति के अपने हाथ मे है व्यक्ति जैसे भी कर्म करता है उन कर्मों को लेकर ही हम कह सकते हैं कि उसकी दिनचर्या कैसी है? अच्छी है या, बुरी।

दिनचर्या को अपनाकर ही हमारे महान पुज्यनीय गुरु, बडे-बडे महान पुरुष अपने जीवन को चमकाने मे सफल हुए हैं। समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी, त्यागमूर्ति म० हसराज जी श्री गुरु विरजानन्द जी वर्तमान युग के शहीद भक्तसिह, चन्द्रशेखर आजाद आदि कितने ही ऐसे पुरुष हुए हैं जिनके नाम को ऊचा करने मे उनकी दिनचर्या का बहुत हाथ है।

हर प्राणी की सुन्दर-सी दिनचर्या होनी चाहिए ताकि वह भी अपने जीवन मार्ग मे बिना किसी विघ्न बाधा के सफल हो सके।

तो फिर क्या है!

दयानन्द सा हमें गर, बोध हो जाये तो फिर क्या है,
हमारी आत्मा वैसी ही जग जाए तो फिर क्या है।
यह कैसा शिव हटा सकता नहीं जो नीच चूहे को,
कहीं से खोज सच्चे शिवकी मिल जाए तो फिरक्या है।
प्रबल मृत्यु ने छीनी बहन, छीना प्यारे चाचा को,
कहींसे मौतकी औषध भी मिल जाए तो फिर क्याहै।
लगन ऐसी लगी, तब तोड़ डाले मोहबंधन सब,
है सच,सच्ची लगन इक बार लग जाए तो फिर क्या है।
झेले कष्ट आपतियां नगरों बनों में और पहाड़ों में,
किस विध लक्ष्य मेरा पूरा हो जाए तो फिर क्या है।
मिला गुरुदेव, ज्ञान कपाट खोले शिष्य के जिसने,
अगर ऐसा गुरु हमको भी मिल जाए तो फिर क्याहै।
बने हम मूलशंकर, व्रत रखे शिव के रिझाने को,
जगाने को वही शिवरात्रि मिल जाए तो फिर क्याहै।
मगर है शर्त जगकर फिर दुबारा हम न सो जाएं,
जगा जाए कोई हम फिर भी खोजाए तो फिर क्याहै।
भलाई कर गया 'निस्तन्द्र' स्वामी जानी दुश्मन से,
हमें मित्रो का ही कुछ ध्यान आ जाए तो फिर क्या है।

अनमोल मोती

✶ अपने दोषों को देख कर उन्हे दूर करने और भूलो का सुधार करने से पर निन्दा की आदत छूटती है।

✶ ज्ञानी जन जीवन के पतन को मृत्यु कहते हैं। विसट-घिसट कर, सिसक-सिसक कर जीना मरने से अधिक दुखदाई है।

आर्य विद्वानों द्वारा—

संस्कृत निबंध रचना

(डा० भवानीलाल भारतीय)

आर्यसमाजी लेखको द्वारा रचित उन सस्कृत निबधो पर विचार करेंगे जो आर्यसमाजी संस्कृतज्ञों द्वारा लिखे गये हैं। ललित निबध को गद्य साहित्य की आधुनिक विधा समझा जाता है। यद्यपि सस्कृत मे भी पुराकाल मे दर्शन शास्त्र, धर्मशास्त्र साहित्य शास्त्र, काव्य, अलकार, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि विभिन्न विषयो पर निबध लिखे गये परन्तु उन्हे आधुनिक अर्थ में निबध (Essay) न कह कर प्रबध (Tretise) कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। समाचारपत्रो के साथ-साथ निबध कला का विकास हुआ है और आज स्थिति यह है कि प्रत्येक भाषा की पत्र-पत्रिकाओं मे अन्य रचनाओ की अपेक्षा निबधो की ही अधिकता होती है। किसी भी विषय के सामान्य निरुपण को निबध की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।

आर्यसमाज ने सस्कृत मे पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित की जिनमें सस्कृतज्ञ आर्य विद्वानो के विभिन्न विषयो पर लिखे गए निबन्ध छापते रहे हैं। उदाहरण के रूप यहा ऐसे निबन्धों का नामोल्लेख करना मात्र ही पर्याप्त होगा जो यह सिद्ध कर देंगे कि आर्य समाजी विद्वानो का सस्कृत निबन्ध भण्डार की अभिवृद्धि मे महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आर्य समाज के आद्य पडित भीमसेन शर्मा द्वारा सम्पादित और प्रकाशित मासिक पत्र 'आर्य सिद्धान्त मे धार्मिक विषयो से सम्बन्धित अनेक निबन्ध निकले। ऐसे निबन्धो मे महामोह, विद्राकण का उत्तर (स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के खण्डन मे लिखित राम मोहन शर्मा की पुस्तक 'महामोह विद्रावण उत्तर) मतत्रय समीक्षा, मास भोजन विचार का उत्तर, ब्रह्मचर्य का व्याख्यान गगा दितीर्थत्व विवेचन आदि मुख्य है। इन निबन्धो मे अधिकाश प० भीमसेन शर्मा के ही लिखे होते थे। सस्कृत न जानने वाले पाठको के लाभार्थ लेखक ही अपने सस्कृत निबन्धं का साथ ही हिन्दी अनुवाद भी कर देता था। इन निबन्धो मे आर्य समाज के मन्तव्यो और सिद्धातो पर किए गए आक्षेपो का सटीक और प्रामाणिक शास्त्रोनुमोदित खण्डन-मण्डन प्रणाली से उत्तर दिया जाता था। प० भीमसेन शर्मा की गद्य शैली सरल और प्रसाद गुण युक्त है। उनमे शास्त्रीय रहस्यो के गूढ विवेचन की अद्भुत शक्ति लक्षित होती है। वे अपने पक्ष की पुष्टि वेद मन्त्रो तथा अन्य शास्त्रीय प्रमाणो के आधार पर करते चलते हैं।

मेरठ से प्रकाशित होने वाला 'वेद प्रकाश' यद्यपि हिन्दी का ही पत्र था, तथापि उसमे यदा कदा सस्कृत के निबन्ध भी छपते रहते थे। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध सस्कृतज्ञ विद्वान प० तुलसीदास स्वामी इसके सम्पादक थे। 'वेद प्रकाश' के नवम्बर १९१२ के अक मे आर्य हाई स्कूल अम्बाला सिटी के मुख्याध्यापक प० रामचन्द्र शर्मा का 'सग्राम' शीर्षक एक विचारोत्तेजक निबन्ध प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह निबन्ध लिखा गया उस समय यूरोप के रण-क्षेत्र मे प्रथम विश्वयुद्ध घमासान रूप से चल रहा था। युद्धाक्रात त्रस्त मानवता का सग्राम के तत्वदशन की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक ही था। लेखक ने अपने निबन्ध मे युद्ध के विषयक इसी तत्वचिन्तन को अपना विवेचनीय विषय बनाया है। निबन्ध के आरम्भ मे विषय की स्थापना करता हुआ लेखक लिखता है—'सम्प्रतम् यूरोपदेशीयो घोर संग्राम समाचारपत्रेषु विविधभावैर्विविधरूपेषु च समालोच्यते। 'अहो! प्रवृत्तो एष घोर सग्रामो प्रसारिताननो दानव इव सकल प्राणिजातमाचामितु प्रभवति' इत्यस्ति काञ्चिज्जनोक्ति। अहमप्यद्य अस्मिन् विषये स्वविचारान् प्रेक्षावता सज्जनाना पुरत स्यास्पेयितु समुदितोऽस्मि।'

आर्यसमाज की अन्य पत्र-पत्रिकाओ मे भी इस प्रकार के सस्कृत निबन्ध सदा-कदा प्रकाशित होते रहते है। हिंदी के सुप्रसिद्ध समालोचक और गद्यकार प० पद्मसिह शर्मा सस्कृतगद्य के भी सुलेखक थे। जिस प्रकार उन्होने हिन्दी गद्य को एक विशिष्ट शैली प्रदान की है उसी प्रकार सस्कृत से भी उन्होने प्रौढ, प्रसन्न गम्भीर गद्य लिखा है। प्रबन्धमन्जरी का 'सपादकीय वक्तव्यम्' मन्त्री उनके द्वारा रचित एक सुन्दर निबन्ध है। आधुनिक काल मे सस्कृत पठन-पाठन किस प्रकार एक उपहासनीय विषय बन गया है इसका हास्यपूर्ण शैली मे उल्लेख करते हुए शर्मा जी उक्त निबन्ध मे लिखते है—प्रबले अस्मिन कलिकाले, हसति सप्रदाय, दिगताया देववाण्या, मलेच्छता मापने-भूदेव कुले 'ब्राह्मणेन निष्कारणमिल्लिशभाः ध्येया ज्ञेया चेति' नवीन शासन स्वीकृत्य सर्वात्मना श्रुतिमिव राजभाषा मभ्यस्यति द्विजवर्गे आदि।'

आर्यसमाज द्वारा सचालित गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी, समय २ पर सरस्वती सम्मेलनो का आयोजन करता है। गुरुकुलीय साहित्य परिषदके तत्वावधान मे गुरुकुल के वार्षिकोत्सवो पर आयोजित इन सरस्वती सम्मेलनो मे विविध विद्वानो को सस्कृत निबध पाठ के लिये आमत्रित किया जाता था। कालान्तर मे मैं निबध पुस्तकाकार प्रकाशित हो जाते थे। ऐसे निबधो मे निम्न विशेष तथा उल्लेखनीय है- 'सस्कृत साहित्यस्य वर्तमान दशा-आखिलानन्द शर्मा, षडदर्शन विरोधाविरोध विचार — शिव शकर शर्मा, षडदर्शनी धर्मपद योग्या न वा-इन्द्र चन्द्र मुदालकार, यास्कीया सिद्धाता आर्यमतानुकूला न वा-सत्य चन्द्र विद्यालकार, प्रतिदिनस्य वैदिकी शैली तीपाद दामोदर सातवलेकर, सस्कृत-साहित, विमर्श-हरिश्चन्द्र विद्यालकार, १ आर्याणा सम्यता-ब्रह्मचारी ब्रह्मदत्त, ब्राह्मणालोचनम्-केशवदेव शास्त्री। सरस्वती सम्मेलनो का सभापतित्व करने के लिये देश के सम्मान्य सस्कृतज्ञ विद्वानो को बुलाया जाता था। इन के लिखित अभिभाषण भी निबध कला के उत्कृष्ट उदाहरण है। विधुशेखर महाचार्य तथा प्रो सत्यन्द्र नाथ सेन द्वारा पठित अभिभाषण प्रकाशित हो चुके है।

अनमोल मोती

★ जीने का अर्थ ही है प्रभु को ढूढना, तथा बाधाओ पर विजय प्राप्त करना।

★ यह जीवन प्रभु की उत्तम देन है। अरे साधक ! प्रति क्षण का सुन्दर उपयोग कर।

आर्यसमाज जालन्धर छावनी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज जालन्धर छावनी का वार्षिकोत्सव इस वर्ष १८, १९, २० अप्रैल को आर्यसमाज मन्दिर मे बडे समारोह से मनाया गया जिसमे बडे-बडे उच्चकोटि के उपदेशक पधारे। पूज्य स्वामी अनन्तानन्द जी ने अपने कर कमलो से ओ३म ध्वजारोहण समारोह का उद्घाटन किया। नगर कीर्तन मे आर्य भाई बहिनो तथा आर्य पुत्री पाठशाला की छात्रायो ने समारोह मे भाग लिया। १९अप्रैल को श्री वीरेन्द्र जी एम ए मालिक 'प्रताप' का मनोहर व्याख्यान हुआ। २० अप्रैल को रात्रि समय पूज्य लाला जगत नारायण जी का शानदार भाषण हुआ। २१ अप्रैल को स्त्री समाज के समारोह के पश्चात् वार्षिकोत्सव की कार्यवाही शाति पाठ के साथ समाप्त हुई।

भवतराम भण्डारी
मन्त्री आर्यसमाज
जालन्धर

शोक प्रस्ताव

२८-४-६९ को डी ए वी हा सके० स्कूल के स्टाफ तथा विद्यार्थियो की एक शोक सभा मे प्रि० शाति स्वरूप जी की पूज्य माता जी के निधन पर शोक प्रकट किया गया। परमात्मा से प्रार्थना की गई कि शोक ग्रस्त परिवार को शाति मिले।

अध्यक्ष—
अ० वर्ग तथा विद्यार्थी वर्ग
डी ए वी हा० स्कूल ऊना

२७-४-६९ को आ० स० ऊना के सदस्यो की शोक सभा ने श्री शाति स्वरूप जी की माता के निधन पर हार्दिक शोक-प्रकट किया तथा दिवगत आत्मा की शाति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

आर्य सदस्य गण
आ० स० ऊना।

युवकों को क्या करना है ?

(श्री करनैल सिंह विद्यार्थी)

वैसे तो परमात्मा ने प्रत्येक मानव का दिमाग ऐसा बनाया है जिस को यदि खाली छोड़ दिया जाए तो यह कई प्रकार की उल्टी-सीधी बाते सोचता रहता है। यदि इसका ख्याल अच्छी बात सोचने के लिए तैयार न होगा तो बुरी बात जरूर सोचेगा क्योकि **Empty mind is a Davine Workshop** और यह बात खासकर युवको मे युवा-आयु मे तो और भी ज्यादा होता है। इसलिए युवको को चाहिए कि वह अपने यहा एक ऐसा सगठन बनाये जिस मे रह कर वह अपने मन को बुराइयो से बचा सके और अपने **Empty time** खाली समय का ठीक तरह से इस्तेमाल कर सके।

कई जगह घूम कर यह देखा गया है, युवक यह पूछते हैं कि हम यहा सगठन बना कर काम क्या करे, अपने खाली समय को कैसे व्यतीत करें ? ऐसा प्रश्न करने वाले सब युवको से निवेदन है कि वह कुछ युवकों को साथ लेकर एक जगह पर बैठ जाएं स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर इसके लिए बहुत अच्छी जगह हो सकती है सब को बडे प्रेम से बैठा कर उनको सब से पहले आर्य युवक सगठन का या आर्यसमाज का मतलब समझाए (यह काम कोई आर्य बन्धु अच्छा हो यदि युवक हो ,को करना चाहिए)।

पहले दिन तो इतना ही काफी है कि उनको बताया जाए कि यह सगठन श्रेष्ठ युवको का है इसमे जो भी नवयुवक आएगा वो एक महान-देश भक्त, प्रभु भक्त और कर्मठ मनुष्य बनेगा जो अपने जीवन के किसी भी भाग मे हार नहीं खा सकता यह वास्तविकता है कि जो भी आर्य युवक सच्चे हृदय से इन सगठनो मे भाग लेता है वो एक अच्छा नागरिक बन जाता है। वो एक ऐसा जुगनू का प्यारा बन जाता है कि जनता उनको पूजने लगती है; बेशर्त है कि वो सद्भाव से अच्छी चीज को ग्रहण करने और बुरी चीज को त्यागने की भावना को लेकर आए।

दूसरे दिन जब सब युवक आए तो गायत्री मन्त्र के बाद, सब युवको को पूर्व कहे विचारो के बारे मे पूछा जाए यदि किसी को शंका हो तो उसको दूर किया जाए। नए युवको का परिचय कराया जाए। इस दिन गायत्री मन्त्र का अर्थ कोई सज्जन सब को समझाए या कोई नवयुवक ही किसी महापुरुष का गायत्री मन्त्र का प्रवचन पढ़ कर सुनाए।

एक बात युवको से पूछ लेनी कि वो कितनी देर तक यहां पर आ बैठ सकते हैं। ऐसा न हो कि आप बोलते जाए और वो **Bore** हो जाए।

अच्छा तो यह है कि उसके बाद आप युवको से सोच-विचार करे। एक-दूसरे के सुख-दुःख पूछे उनके प्रति अपनी सद्भावना, शुभाकाक्षा बताए। अच्छा हो यदि आप युवको से ही पूछे कि कल किस विषय पर विचार किया जाए अगले दिन सब को समय दिया जाए थोडा २ बोलने का और बाद मे अपने विचार बडे ठोस शब्दो मे यदि कोई उनके विचारो और तुम्हारे विचारो मे भेद हो तो बडे प्रेम से उस गुत्थी को सुलझाए।

आर्य युवक सगठन के सभी युवको मे प्रेम सद्भाव इतना होना चाहिए जैसे सब एक दूसरे के भाई हो। जब भी मिले एक दूसरे को बडे प्रेम से नमस्ते करे। युवको को इस प्रकार सगठन बनाने के लिए प्रत्येक आर्य युवक को कोशिश करनी चाहिए।

अब मैं सभी युवको से पूछना चाहता हू कि क्या यह समय का सदोपयोग नहीं है ? क्या यह आपकी एक और ताकत नहीं बन गई जिसको लेकर आप हर कठिनाई को दूर कर सकते हैं इस प्रकार के सगठनो मे आप दूसरो के आगे अपना चरित्र पेश कर सकते हैं। वार्षिक उत्सव करके दूसरे लोगो को धर्म का, ईश्वर का, अच्छे विचारो का प्रचार कर सकते हैं।

(शेष फिर)

अपने चुनाव भेजें

प्रत्येक आर्ययुवक से निवेदन है कि वह अपने यहा के आर्य-युवक सगठनो का चुनाव प्रतिनिधियो के नाम, सगठन की प्रत्येक गतिविधि को, हर प्रोग्राम को हमारे यहा भेजें। 'आर्य जगत' मे प्रत्येक इस प्रकार की गतिविधि को प्रकाशित किया जायेगा। अपनी फोटो छपवाने के लिए अपनी फोटो व साथ मे पैसे भी भेज दे आप के पैसो से आप की फोटो का एक ब्लाक बनाया जायेगा और उसके बाद आप की प्रत्येक रचना के साथ आप की फोटो नि:शुल्क छपा करेगी। "आर्य-जगत" प्रत्येक आर्य युवक की प्रत्येक रचना छापेगा। —श्री करनैल

आज की विकट समस्या

[सुरेन्द्रपाल शर्मा व्यवस्थापक आर्य जगत]

इस भूमण्डल मे भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणी निवास करते हैं। सब भिन्न-भिन्न रीतियो से अपने जीवन का पालन पोषण करने मे लगे हुए हैं। किसी को भी एक-दूसरे की चिन्ता नहीं। सब अपने स्वार्थ हेतु काम मे सलग्न हैं। सुबह से लेकर सध्या समय तक कार्य मे रत हैं। वह यह सब क्यो कर रहे हैं ? उनके पास केवल एक ही उत्तर है कि पेट की अशान्त भूख से मिटाने के लिए उस भूख को शान्ति प्रदान करने के लिए हम सब कार्य मे लगे हुए हैं। उन कार्यशील पुरुषों से कहो हे बन्धुओ यह भूख कभी शान्त नही हो सकती। आज तक इसको शान्त करने के लिए कोई दवाई नही बनी जो उसको सदा के लिए खत्म करदे।

मनुष्य के पास ज्यो २ धन की अधिकता होती जाती है त्यों २ उस उसकी इच्छाए भी बढती जाती है। इच्छा से अभिप्राय है किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालसा। इच्छा और आवश्यकता मे बहुत अन्तर है। आवश्यकता मे वह वस्तुए आ जाती है कि जिनका प्रयोग नित्य प्रति जीवन मे जरूरी है। इच्छाए तो दबाई जा सकती हैं उनको खत्म किया जाता है परन्तु आवश्यकताए खत्म नहीं हो सकती है उनमे केवल इतना अन्तर हो सकता है कि कुछ आवश्यकताए बहुत जरूरी हो जाएगी जिनका बिना गुजारा नही हो सकता कुछ उनसे कम जरूरीहोगी। मेरेकहने का तात्पर्य है कि मनुष्य अगर यह बात समझ जाए कि उसकी आवश्यकताएं क्या है ? और इच्छाए क्या हैं तो उस की आर्थिक समस्या हल हो सकती हैं।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है इस मे मनुष्य की बुद्धि को चकित करने के लिए कई ऐसे नये नये उपकरण बने है जिन की कभी आशा नहीं थी। परन्तु उन सब उपकरणों का गरीबो के जिन्दगी से कोई सम्बन्ध नहीं। मान लो कि वैज्ञानिकों ने अगर किसी आसाध्य रोग पर विजय पाने के लिए किसी नई वस्तु की खोज की और उस उपकरण से इलाज करवाने में हजारो रुपयो का खर्च रखा तो क्या एक गरीब उस मशीन का सदप्रयोग कर सकता है ? कभी नही, क्योकि उस को तो दिन रात पेट की चिन्ता है, वह इतना रुपया तो अपनी जिंदगी मे इकट्ठा करने से रहा। यह नये नये उपकरण तो सब अमीरों, पूंजीपतियो के लिए हैं। वह ही इन सब का सब का प्रयोग कर सकते हैं।

मैं आज की वर्तमान निर्धनता का कहा तक वर्णन करू। यह वर्तमान युग की निर्धनता अकथनीय है। नित्य प्रति नए २ उदाहरण देखने को मिलते हैं। इन समस्यायो का क्या कभी हल होगा ? क्या गरीब वर्ग कभी इस निर्धनता के चोले को उतार कर सुख का सास ले सकेगा ?

किसी समय भारत वर्ष को सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा जाता था परन्तु आज क्या वह चिड़िया इन अमीरो के हाथो मे चली गई। हा उस चिड़िया को हड़पने वाले यह पूंजीपति ही हैं। सुना जाता है कि पहले भारत वर्ष मे दूध की नदिया बहती थी। परन्तु आज कल नदिया तो बहती है परन्तु दूध की नही शराब की। ठीक है नदिया तो बहती हैं। चाहे कैसी भी है।

किसी मा के लाल को दूध पिलाने हेतु लाड-प्यार हो रहा है और एक मा का सपूत रो रहा है क्योकि उसके पीने के लिये दूध नहीं इतना परिवर्तन क्यों ? वह नदिया कहा चली गई ? क्या आज के पूंजीपति उन नदियो का दूध पी गए ? क्या वह नदिया सूख गई ?

कहां तक लिखू जितना लिखूंगा विषय लम्बा ही होगा परन्तु दिल मे भरे हुए विचार कभी खत्म न होंगे। गरीबो की दशा मे सुधार आवे यही भगवान से प्रार्थना है।

जीओ और जीने दो

सदा सच बोलो

गतांक से आगे

…ता ठीक रहेगा। तथापि उज्जायी …णायाम सुगम होने से यहा उसकी …धि लिखते हैं। प्राणायाम शुरू …रने से पूर्व आसन पर बैठ कर …र्दन को किंचित नीचा झुका कर रखें। पहले चन्द्र बाए स्वर से श्वास ऊपर खीच कर पूर्ण दाए स्वर से छोडे फिर सूर्य से ऊपर खीच कर चन्द्र से जोडे। इस प्रकार सात आठ बार करने के बाद दोनो स्वरो से प्राण अन्दर ले जाइए और नाभि तक अच्छी प्रकार से वायु पेट मे भर (किंतु ध्यान रहे श्वास छोडने का समय खींचने से दो गुणा और रोकने से ४ गुणा होना चाहिए) कर श्वास को रोके। फिर बाहर फेंक कर पेट को वायु से सर्वथा खाली करें। पेट वायु से खाली करते समय जननेन्द्रिय और पारवाने की जगह को ऊपर की ओर खीचें। यह विधि सब से सुगम और लाभकारी है। इससे आगे किसी सच्चे वीतराग गुरु की शरण लेनी आवश्यक है। इससे कफ दोष दूर होते हैं। शरीर की काति तथा पाचन शक्ति बढ़ती है। और रक्तके सब दोष दूर होते हैं। प्राणायामसे जब प्राणस्थिर होता है। तो मन की चचलता साथ साथ स्वय दूर हो जाती है। और इन्द्रिया स्वयमेव ही काबू मे आ जाती हैं। प्राणायाम का अभ्यास करने के समय केवल दूध और घी का सेवन करे १॥सेर दूध घी एक छटाक ले दूसरा कोई अन्न न ले दोपहर के दूध के बाद एक दो बार जलपात ले सकते हैं। जब प्राणायाम से प्राण स्थिर और चित्त की चचलता दूर हो जाए तो फिर धारणा और ध्यान की ओर अपना पग बढाए किसी बाह्य वस्तु पर चित्त लगाने का नाम धारणा है। चित्त एक स्थान पर स्थिर करने का नाम धारणा हैं धारणा के अभ्यास के लिए आप किसी चित्र मूर्ति अथवा नक्षत्र पर धारणा करने का अभ्यास शुरू करे। प्रथम चित्त वहा स्थिर नही रहता इधर-उधर भागता फिरता है जब तक चित्त स्थिर नही होता तब तक इधर-उधर के नक्षत्र दिखाई देते हैं; परन्तु जिस समय चित्त उसी एक नक्षत्र पर ही स्थिर हो जाए और संपूर्ण आकाश मे केवल वही एक नक्षत्र शेष आकाश नीले रग का दिखाई देता है। इसी अवस्था अनुभव आने का नाम ध्यान है। या धारणा के लिए हृदय अथवा भृकुटि में मन ही से ओ३म का अक्षर लिखा हुआ

मनुष्य और उसकी उन्नति के साधन

(श्री वैद्य ज्ञान चन्द जी वस्ती गूंजा जालन्धर)

देखे और इसी का मानसिक जाप भी करे। पर ध्यान रहे कि जप करते समय जिह्वा न हिले। कण्ठ केवल मन ही से जाप हो। जब ओ३म का अक्षर हृदय अथवा भृकुटि मे लिखना शुरू होगा तो शुरू-शुरू मे पिटता दीखेगा। परन्तु आप उसे बार-बार लिखते हैं और देखने का यत्न करे। इस प्रकार अभ्यास करने से एक समय ऐसा आ जायेगा जब ओ३म सुनहरी अक्षरों मे लिखा हुआ दिखाई देगा और वह पिटेगा भी नही जब ऐसी अवस्था मे आप पहुच जाए तो समझें कि अब ध्यान अवस्था प्राप्त हो गई है, मगर ध्यान रहे दोनो भौहो के बीच दृष्टि रखने से एक प्रकार की मूर्छा सी आ जाती है। मूर्छा होने तक यह अभ्यास कोई न करे। गुरु के समीप रहने का जिसे सौभाग्य प्राप्त हुआ हो वह जितना चाहे उतना अभ्यास करे परन्तु अन्य असहाय मनुष्य मूर्छा तक अभ्यास न बढावे। भौहो के बीच ये दृष्टि रखने से प्रथम अवस्था मे दृष्टि दोष दूर होते हैं। जिन्हे समीप का नही दीखता उन्हे समीप का ठीक प्रकार से दीखने लगता है। इसके अतिरिक्त दूसरा लाभ चित्त की स्थिरता है परन्तु कई लोगो का मस्तिष्क निर्बल होता हैं उनको भ्रूमध्य दृष्टि रखने से शिरो वेदना शुरू हो जाती है। और वे अधिक अभ्यास नही कर सकते। ऐसे निर्बल लोगो को उचित है कि वे प्रथम मस्तिष्क का बल बढाने का उपाय करे। और फिर भ्रूमध्य मे दृष्टि स्थिर करने का अनुष्ठान करे जिनके शिरो वेदना नही होती उनका मार्ग बडा सरल है। उनको इससे पहिले सूर्य दर्शन का अभ्यास करना चाहिए। सूर्य उदय होते समय १०-१५ मिनट तक दैनिक टिकटकी सूर्य की ओर लगाए इससे सब दृष्टि दोष दूर हो जाते हैं। और भ्रूमध्य में स्थिर करना भी सगुम हो जाता है। परन्तु ध्यान रहे ध्यान धारणा करने वाले योगी से कई गुणा उत्तम वह पुरुष है जो सब को समान दृष्टि से देखता है। कारण सर्वत्र सम भाव से देखना ही योग का मुख्य लक्षण है। इसके बिना ध्यान योग हो नही सकता। न ही उसे परम श्रेष्ठता ही प्राप्त होती

और न ही परम श्रेष्ठ योगी का उसे पद ही प्राप्त हो सकता है। ध्यान रहे कि ध्यान तक पहुचना अति कठिन कार्य है। कारण मनुष्य ध्यान लगाने मे प्रवीण होने पर भी अचिन्त्य परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है ऐसा कहना गलत है। क्योकि उसका मन उसी ध्येय विषय के आकार का बना होता है। इसलिये परमात्मा का साक्षात्कार नही होता कारण ध्यान तो साकार का ही हमने किया फिर प्रभु के दर्शन कहा जब ध्यान मे एकता का प्रत्यय आता है वह बहुत काल तय स्थिर रहता है। तब जागृति का मन मूर्छित-सा हो जाता है अथवा अपना कार्य करता छोड देता है। तब यह साधक मनो भूमिका से उच्च भूमिका में पहुच जाता है। यही ध्यान के पश्चात मिलने वाली समाधि है। जागृति का मन सो जाने पर और अभौतिक उन्मनी अवस्था प्राप्त होने पर निर्विषमता सिद्ध होती है। इस मे सदेह नही परन्तु हमे परमात्मा का साक्षात्कार समझना अयोग्य है। क्योकि मन से परे बुद्धि और बुद्धि से परे आत्मा है वह तो बहुत ही दूर है। अत: वह समाधि के अनुभव प्राप्त होने पर भी अचिन्त्य ही रहता है। इसमे स्पष्ट है कि अव्यक्त निराकार की उपासना कोई सहज की बात नही। अव्यक्त उपासना के पीछे पडने वालो को इतने क्लेश सहन करने पडते है और इतना परिश्रम करने पर निश्चयपूर्वक अव्यक्त का साक्षातकार होगा ऐसा भी मानना भूल है। अत: देहधारी लोगो को अव्यक्त की ओर जाने का मार्ग बहुत ही दुख साध्य है। श्री कृष्ण ने भी गीता के १२वें अध्याय श्लोक पाचवे मे क्या सुन्दर कहा है। जरा ध्यान से मनन करें।

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्त चेतसाम्

अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते

अव्यक्त पर जिन का चित्त लगा हुआ है। उनको बहुत कष्ट होता है। क्योकि देहधारियो को अव्यक्त की प्राप्ति बहुत ही कष्ट से होती है। मगर यह नही भूलना चाहिये कि निराकार उपासना करने वाले की लिये कोई शुभ गति प्राप्त होने की सभावना नही यह भी गलत है। उन को शुभ गति अवश्य मिलेगी क्योकि वे ईश्वर है ऐसा मानते ही हैं। ईश्वर की सत्ता को मानने वालो उसकी प्राप्ति के लिये सयम आदि साधन करने वालो की (क्रमश:)

आर्य समाज जोगिन्दर नगर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज जोगिन्दर नगर का वार्षिक उत्सव दिनाक ९-४-६९ को प्रात: गायत्री महायज्ञ से आरम्भ हुआ ९ अप्रैल को गायत्री यज्ञ आरम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति बैशाखी के पवित्र पर्व पर हुई जिसमे जनता ने श्रद्धा पूर्वक भाग लिया प्रतिदिन रात्रि को प० चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी तथा श्री जगतराम वस्ती राम की भजन मण्डली के प्रवचन तथा मनोहर भजन होते रहे। इस महोत्सव मे श्रीमान प्रिंसिपल सीरी राम जी शर्मा तथा स्वामी कृष्णानद जी के भाषण भी हुए जिसमे स्वामी कृष्णानन्द जी ने स्वामी शकराचार्य के वक्तव्य को चुनौती दी। हिमाचल इसाईयो के बढते प्रचार को रोकने के लिए आर्य समाज के सगठन को दृढ बनाने पर बल दिया। राजकीय हाई स्कूल व राजकीय गर्ल हायर सैकण्डरी स्कूल मे पण्डित चन्द्रसेनजी के ओजस्वी भाषण हुए। बैशाखी के दिन पूर्णाहुति के समारोह के उपलक्ष मे प्रिंसिपल सीरीरामशर्माने आर्शीर्वाद देते हुए प्रत्येक आर्य को अपने कर्तव्य के व्यवहारिक पहलुओ पर अपने विचार दिए पूर्णाहुतिके बाद प्रिंसिपल सीरीराम शर्मा ने ध्वजारोहण किया आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ के उद्योग से ऋषि लगर की व्यवस्था बहुत ही उत्तम थी। रात्रि को बैशाखी के पवित्र पर्व के उपलक्ष मे शहीदी दिवस सीरीराम शर्मा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन स्वामी कृष्णा नन्द जी ने किया आर्य समाज जोगिन्दर नगर की ओर सभा को वेद प्रचार फण्ड मे २०१) दिए। हिमाचल प्रदेश के वन मन्त्री पण्डित पद्मदेव जी का वार्षिक उत्सव के सम्बद्ध आया हुआ सन्देश पूर्णाहुति के बाद श्री मुरारीलाल प्रधान आर्य समाज जोगिन्दर नगर ने पढ कर सुनाया तथा भारत की स्वतन्त्रता के शहीदो को श्रद्धाजलि अर्पित की। इस उत्सव मे श्रीमती बलराजी ने कागडा समाज की ओर से भाग लिया। श्रीमान इन्द्रसिंह जी उपप्रधान आर्यसमाज मण्डी ने अपने मनोहर भजन प्रस्तुत किये।

। राजकुमार मन्त्री

भूल सुधार

आर्य जगत के म० हस राज विशेषाक में श्री सत्यप्रिय शास्त्री जी लिखित लेख 'देश प्रेमी महात्मा' पेज १६ पर वर्णित कहानीको पाठकगण इस प्रकार पढ़े।

सन ४२ के आन्दोलन के समय पुलिस जब डी. ए.वी. कालेज लाहौर मे लाठी चार्ज करने गई, तब उन्होंने वहा प्रो० भगवान दास जी की खोज शुरू की क्योकि उनका सम्बन्ध कई क्रांतिकारी समितियो से था। पुलिस उन्हे पीटने के लिए उनके पढ़ाने के कमरे मे गई, परन्तु वह उस समय वहां न थे, अतः उन्हीं जैसी आकृति वाले एक और प्रोफैसर को भगवान दास समझ कर बड़ी बेरहमी से पीटा जबकि वह चिल्लाता भी रहा। कि मैं भगवान दास नहीं हू।

निवेदक—सत्यप्रिय शास्त्री

महात्मा हंसराज जन्म दिवस

१९ अप्रेल १९६९ को आर्य समाज विक्रम पुरा में जालन्धर नगर की सभी आर्य समाजों की ओर से महात्मा हंसराज जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यह महोत्सव श्रीमान यशजी की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस महोत्सव में श्रीमान ला० इन्द्रसेनजी, श्री भीमसेन महेश, ला० जगत नारायणजी, श्री वेदीरामजी, श्रीमान प्रकाश देव जी तथा बडे महानुभावो ने पूज्य महात्मा जी के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की तथा उनके जीवन मे मिलने वाली शिक्षाओ पर प्रकाश डाला। कई सज्जनो ने विचार प्रकट करते हुए कहा कि महात्मा हसराज जी ने हिन्दी शिक्षा के प्रसार के लिए डी० ए० वी सस्थाओ की नीव रखी थी। आज के समय मे हिन्दी पर पजाब मे कुठाराघात हो रहा है। हमे हिन्दी की रक्षा करनी होगी। जालन्धर मे दयानन्द यूनिवर्सिटी खोलने के लिए भी विचार प्रकट किए गए।

कई सज्जनो ने यह भी विचार दिया आर्य समाज ने हिन्दी की रक्षा की है और वह अब भी बलिदान दे,वह भी हिन्दी भाषा की रक्षा करेगा। यदि हिन्दी को मिटाने मे अग्रेज कुछ नही कर सका तो इसे कोई भी नुकसान नही पहुचा सकता। यदि हिन्दी पढाने वाले स्कूलो मे कोई छेड़खानी की गई तो

* समाचार दर्शन *

इसके परिणाम बुरे निकलेंगे। सभा में महात्मा जी के कार्यों की सराहना की गई। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वे हमे भी बल दें जिससे हम उनके जीवन [illegible] पर चलते हुए ससार का उपकार कर सकें।

—आनन्द सा[illegible]

युग प्रवर्तक म० दयानन्द

(विजय सिंह विद्यार्थी मुक्काम हिसार)

स्वामी दयानन्द जी गुजरात काठियावाड के रहने वाले थे १८७५ मे उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। विचार धारा के पर्याप्त विशाल थे। वह वैदिक धर्म को पूर्ण मत का प्रकाश मानते थे। वह केवल एक ईश के पुजारी थे। उन्होंने एक ईश की पूजा के लिए उपदेश दिया। स्वामी जी समाजिक क्षेत्र में भारी क्रान्तिकारी, बहु व्यवहार, बाल वृद्ध विवाह, पूजा छूत जाति पाति के घोर विरोधी थे। स्वामी जी ने ने स्वयं गुजराती होते हुए हिन्दी को भारत वर्ष उन्होंने भारतीय दिलो मे देश शक्ति भरने में बहुत कार्य किया। उन्होंने कहा 'विदेशी राज्य चाहे कितना भी न्याय प्रिय क्यो न हो, फिर भी स्वदेशी राज्य के समान सुखप्रद नही हो सकता। आत्म विश्वास के बल पर उन्होने भारत वर्ष के युवको, वृद्धों, माताओ बहिनो सब के दिल मे आत्म विश्वास भर दिया। स्वामी जी ने भारत वर्ष पर कई उपकार किए।

आर्यवीर सम्मेलन यात्रा

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश [illegible] महा-[illegible] के [illegible] पर [illegible] यात्रा [illegible] गया है। आर्य वीर [illegible] का [illegible] मई, [illegible] में होगा। [illegible] जाने में कठिनाई न हो इसलिए आर्यवीर यात्रा समिति आर्य समाज भीमनगर, गुड़गांव, की ओर से बसों के चलाने का प्रबन्ध किया गया है। यह बसें १५-५-६९को प्रात. ७ बजे बल्लभगढ़, दिल्ली, गुड़गांव, रोहतक आदि से चलेंगी। इस अवसर पर यात्रियों को भाखड़ा, नंगल, तजौर गार्डन, चंडीगढ इत्यादि स्थान दिखाने का विशेष प्रबन्ध किया गया है। जो लोग इस यात्रा में जाना चाहे, कृपया वह पच्चीस रुपये आने-जाने के तथा भोजन के आर्यवीर दल यात्रा समिति, आर्य समाज भीमनगर, गुड़गांव के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

इस विषय में अगर कोई विशेष जानकारी लेना चाहे तो कृपया श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज, नई दिल्ली से सम्पर्क करें।

रामचन्द्र आर्य
मन्त्री आर्यवीर
यात्री समिति, गुड़गांव

सन्त समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ सोय। सुत, दारा और लक्ष्मी पापी के भी होय।

आर्यसमाज [illegible]

११-४-६९ को बैसाखी [illegible] धूमधाम से मनाया गया। [illegible] बाग के शहीदों को [illegible] श्रद्धांजलि भेंट की गई।

पुरी के शंकराचार्य के छूआछूत सम्बन्धी विचारों की निन्दा [illegible] प्रस्ताव पारित करते हुए उन्हें [illegible] अवैदिक विचारों के लिए शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई।

प्रधान—नारायणराव
'विद्यावाचस्पति'

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर का महोत्सव

आर्य समाज, स्त्री आर्यसमाज तथा आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोविन्द नगर कानपुर का महोत्सव ८ से ११ मई ६९ को विद्यालय भवन के मैदान में समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान नेता सर्वश्री आचार्य विश्वश्रवा प्रकाशवीर शास्त्री, रामगोपाल शाल वाले, ओम प्रकाश त्यागी, पंडित शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी, प्रो० रतनसिंह, प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, कुंवर सुख लाल आर्य मुसाफिर, राजपाल मदन मोहन चिमटा मण्डली, ज़ोरावरसिंह, श्रीमती प्रभावती आदि पधार रहे हैं।

८ मई वृहस्पतिवार साय ५ बजे समाज मन्दिर से नगर कीर्तन निकाला जायेगा। महोत्सव की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य करेंगे।

मन्त्री
शिवदयाल

आर्य बन्धु ध्यान दें !

कितना दुःख का विषय है कि पूज्य त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री उपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा सम्पादक "आर्य जगत" के होनहार युवक बेटे श्री दयानन्द जी का अभी तक कोई पता नहीं चला। यह कितने दुःख की बात है कि हम एक आर्य युवक की खोज नहीं कर रहे। आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि जहां कहीं भी श्री दयानन्द जी का सुराग मिले तुरन्त सूचना देने की कृपा करें।

सुरेन्द्रपाल व्यवस्थापक
आर्यजगत जालन्धर

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें



टेलीफोन नं० १०२७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २९, अंक १९) २९ वैसाख २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—११ मई १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

पवस्व विश्वचर्षणे

अर्थ—जगदीश्वर ! आप विश्व चर्षणि—सबके साक्षी हो, सब कुछ देखने वाले हो । कृपा करके हमे पवस्व—पवित्र कर दीजिए । हमें शुद्ध पवित्र कर देवें ।

भाव—परमेश्वर ! आप सब संसार को देखने वाले हो सर्वव्यापक होकर विश्व हरेक कार्य देख रहे हैं । अनन्त नेत्र बनकर हमारे भी शुभ अशुभ कर्मों को जानते व देखते हैं । आपसे कौन क्या छिपा सकता है । कृपा करके हमे पवित्र कर देवें । जहां-जहा और जिस-जिस कार्य में हमारे जीवन में अपवित्रता आ जाती है । अपनी दया करके हमें सब प्रकार से शुद्ध पवित्र बना दें । आप पवित्र हैं । हमे पवित्र करें ।

प्रभु हम आपसे ही प्रार्थना कर सकते हैं और ससार मे आपके सिवाय हमारा है भी कौन ? आप कृपा करके हमें अपने पथ के पथिक बनने की शक्ति दें तथा प्रभुदेव आप पवित्र हैं हमें पवित्र कर दो ।

सामवेद उ० २—१—१

वे दा मृ त

विद्या और अविद्या को इकट्ठा जानो

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥

य० ४० । १४ ॥

पदार्थ—(विद्याम् च अविद्याम् च) विद्या और अविद्या को इन साधनों सहित (यः) जो विद्वान (तत् उभयम् वेद) इन दोनों के स्वरूप को जान लेता है वह (अविद्या) अविद्या से (मृत्युम् तीर्त्वा) मृत्यु को उलांघकर (विद्यया) ज्ञान से (अमृतम्) मुक्ति को (अश्नुते) प्राप्त होता है ।

भावार्थ—जो विद्वान पुरुष, विद्या, अविद्या के यथार्थरूप को जान लेते हैं, वे महापुरुष, जड़ शरीरादिकों को और चेतन आत्मा को परमार्थ के कामों में लगाते हुए, मृत्यु आदि सब दुःखों से छूटकर सदा सुख को प्राप्त होते हैं । यदि जड़ प्रकृति आदि कारण और शरीरादि कार्य न हो तो परमेश्वर जगत् की उत्पत्ति कैसे करे और जीव कर्म उपासना और ज्ञान के सम्पादन करने में कैसे समर्थ हों ? इससे यह सिद्ध हुआ कि, न केवल चेतन से और न केवल कर्म से और न केवल ज्ञान से, कोई धर्मादि की सिद्धि करने में समर्थ होता है ।

ऋषि दर्शन

प्रश्न—ब्रह्मचर्य का क्या-क्या नियम है ?

उत्तर—कम-से-कम २५ वर्ष पर्यन्त पुरुष और सोलह वर्ष पर्यन्त कन्या को ब्रह्मचर्य सेवन अवश्य करना चाहिए और अडतालीस वर्ष से अधिक पुरुष ओर चौबीस वर्ष से अधिक कन्या ब्रह्मचर्य का सेवन न करे किंतु इसके उपरात गृहाश्रम का समय है ।

प्रश्न—प्रमादी ब्रूते-पागलमनुष्य कहता है सुनो जी ! सुनो जी कन्या का पढाना शास्त्रोक्त नही क्योकि जब वे पढ जावेगी तो मूर्ख का अपमान कर इधर-उधर पत्र भेज कर अन्य पुरुषो के प्रति भेज के व्यभिचार किया करेंगी ।

उत्तर—सज्जन समाधत्ते-श्रेष्ठ मनुष्य उसका उत्तर देता है । सुनो जी ! तुम्हारे कहने से यह आया कि किसी पुरुष को भी न पढ़ना चाहिए, क्योकि वह भी पढकर मूर्ख स्त्री का अपमान और एक गाडी चलाकर इधर-उधर अन्य स्त्रियो के साथ सैर सपाटा किया करेगा। ऐसे तुम्हारे विचार शुद्ध नही हैं । सुनो दोनो का पढना आवश्यक है ।

व्यवहार भानु से ।

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच०डी० (सभा मन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

युवक स्तम्भ

समाज निर्माता महर्षि दयानन्द

(श्री सुरेन्द्रपाल शर्मा, व्यवस्थापक आर्य जगत)

अपने महर्षि दयानन्दजी सरस्वती का नाम तो सुना होगा क्या आप उनके उपकार जो हमारे ऊपर ऋण के रूप में चढ़े हुए है कभी जानने की कोशिश की है ? महर्षि दयानन्द जी के उपकारों का बदला आप भलि भान्ति चुका रहे हैं ? नहीं हम ऋषि को भूलते जा रहे हैं उससे चिर समरणीय उपकारों को भूल चुके हैं।

अगर मन्दिर मस्जिद या गिरजा आदि गिर जाए तो उसका पुन निर्माण किया जा सकता है अगर कोई जाति या पूर्ण समाज ही चरित्रहीन हो जाए उसमे नाना प्रकार की कुरीतियां घर कर जावें तो उस जाति या समाज का बचाव मुश्किल ही नही हो जाता बल्कि असम्भव है। उसको पुन पुरानी स्थिति मे लाना अति कठिन है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना आर्य समाज सुधार मे लगा दी। उन्होंने जाति सेवा तथा समाज सेवा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

क्या हम जग हितकारी, देश के प्यारे ऋषि का गुणगान करते है ? नही हम मे इस बात का अभाव है कि हम उस गुरु को याद नही करते जिसने हमारे लिए जहर पिया परन्तु हम उस वेद रूपी पवित्र अमृत का दान दिया। क्या हम उस अमृत को नित्य प्रति पीते है ? नही क्योकि हम नही जानते कि ऋषि ने हमारे लिए क्या उपकार किए। आयो सब आर्य बहिन बन्धु मिलकर उस महान युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्दजी के जीवनपर दृष्टिपात करे। उनके दिए हुए अमृत का पीकर इस जीवन को सफल बनाए।

चौदहा वर्ष की आयु मे पिता की आज्ञा से शिवरात्रि का व्रत रखा उस समय शिव की पूजा मे उनका अटल विश्वास था। रात्रि को सब भक्तजन तथा पुजारी आदि सो गए। परन्तु मूलशंकर जी के मन और दिमाग मे यह धारणा घर कर गई थी कि अगर मैं इस महान शिव रात्रि पर्व की रात को सो गया तो मुझे जो शिव भगवान से इस पूजा का फल मिलना है उससे वंचित रह जाऊंगा। नींद ने अपना पूरा जोर दिखाया फिर भी नही सोए। वाह! इतनी श्रद्धा इतना प्रेम उस शिव भगवान मे कि उस पुनीत फल को पाने के लिए रात्रि की मीठी मीठी नींद हराम कर दी। परन्तु यह क्या?

देखा एक चूहा बिल से निकल सीधा शिवलिंग के गिर्द गिर्द चक्कर काटने लगा। चढावेके फल फूल मिठाई आदि भी सब का स्वाद देखने लगा। उस बालक मूलशंकर के मन ने सोचा यह क्या हो गया ? शिव भगवान और यह चूहा और वह भी इनके ऊपर चढ गया। मन मे शंका हुई। पास मे पिता जी सोए थे उठाया पिता जी को सब बात बता दी, कहा क्या यही आपका शिव है ? अगर यह एक छोटे से चूहे से अपनी रक्षा नही कर सकता तो मेरी या आपकी यह क्या रक्षा करेगा ? पिता जी की डांट से चुप हो गए। मन मे विद्रोह की अग्नि भडक उठी। उसी समय घर आ गए व्रत को भंग कर दिया। पिता जी जब सुबह घर आए तो बिगडे परन्तु यहा तो जीवन ने नया मोड लिया था कुछ परवाह न की। मन मे सोचा कि मुझे सच्चे शिव की खोज करनी चाहिए। बाद मे चाचा की मृत्यु का भी इन पर कोई प्रभाव न पडा। परन्तु दिल मे पूर्णरुपेण से वैराग्य ने डेरा जमा लिया। क्या हम इस बात से किसी प्रकार की शिक्षा लेते हैं चलो सब मिल कर प्रण करे कि पूजा केवल सच्चे ईश उस परम पिता परमात्मा की करेगे जो इस सकल विश्व का रचियता है।

पत्थर पूजा, पाखण्ड, भूत प्रेतादि के भाव से छुटकारा पाने वाले उस महान ऋषि को याद करें। जिनके पुण्य प्रताप से हम आज इन धूर्त पाखण्डियों का मुकाबला करने के योग्य हुए हैं। उसके पुण्य प्रताप से ही हिंदू जाति महर्षि दयानन्द जी के शब्दो मे हिंदू नही आर्य जाति का कल्याण करने वाले उस महान तपस्वी को हमारा कोटि कोटि प्रणाम है जिन्होंने हमें जगाकर नव चेतना का शंख फूका। आखिर मे—

धन्य है तुझ को हे ऋषि
तूने हमे जगा दिया।
सो सो के लुट रहे थे हम।
तूने हमे बचा लिया॥

—०—

आर्य युवक ध्यान दे

आर्य युवकों से नम्र निवेदन है कि वह अपनी रचनाए लेख कविताए शिक्षा प्रद कहानियां आर्य जगत मे प्रकाशनार्थ अवश्य भेजे। हम उन सब को आर्य जगत मे छापेंगे। हमने आर्य जगत पत्रिका मे एक पृष्ठ केवल युवको के लिए रखा हुआ है जिसमे केवल युवको के लेख कविताए आदि ही छपती हैं। हमारे पास जिन युवको की रचनाए आती हैं हम उनको समय समय पर प्रकाशित करते रहते है।

अगर युवक अपनी फोटो अपनी रचना के साथ छपवाना चाहें तो वह एक अपनी कैमरे से खिंची फोटो तथा पाच रु पहले मनीआडर द्वारा भेज देव।

आशा है सब आर्य युवक ध्यान देगे।

व्यवस्थापक

न कोई और होगा

मेरे देवता के बराबर जहा मे कही देवता न कोई और होगा।
जमाने मे होंगे बडे लोग पैदा दयानन्द-सा न कोई और होगा।
चरित्र हैं देखे बडे ऊंचे-ऊंचे नजर भर इधर भी जरा देख लेना।
चरित्र मिलेगा ऋषिवर का ऐसा कि देखा सुना न कोई और होगा।
इधर हो सिर्फ ब्रह्मचारी अकेला उधर हो विरोधी यह सारा जमाना।
विजय पाने वाला दयानन्द जैसा न अब तक हुआ न कोई और होगा।
उठा के जमाने का इतिहास देखो तो अपनों के लाखो हितैषी मिलेंगे।
मगर दुश्मनो का भी हित चाहने वाला ऋषि के सिवा न कोई और होगा।
कहा मुस्करा के यह अन्तिम समय भी कि इच्छा तुम्हारी प्रभु पूरी होवे।
गया जिस तरह से दयानन्द प्यारा जहा से गया न कोई और होगा।
अगर विश्व भर के बडे व्यक्तियो की जो निष्पक्ष होकर तुलना करेंतो
दयानन्द जैसा दयानन्द ही था पथिक फैसला न कोई और होगा।

—सत्यपाल पथिक पुरोहित आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर।

अपनी शंकाएं, कठिनाइयां भेजें

सभी आर्य युवको से निवेदन है कि वे अपनी कठिनाइयो को जो उनको युवक संगठन मे आती है और जो भी शंका उनको या उनके साथियो को हों चाहे वह आर्य युवक संगठन के सम्बन्ध मे हो या आर्यसमाज के उद्देश्यों, नियमो अथवा सिद्धांतों के बारे में हो वो लिखित रूप में अध्यक्ष, आर्य युवक संगठन c/o आर्य प्रादेशिक सभा महात्मा हंसराज भवन 'निकट कचहरी' जालन्धर शहर के पते पर भेज सकते है। उनका उत्तर आर्यजगत मे दिया जाएगा। आर्य युवक संगठन की ओर से अपनी प्रत्येक शंका को दूर करने के लिए पूरी कोशिश की जाएगी। साथ ही आपकी कठिनाइयो को दूर करने के लिए भी जिस प्रकार की भी कठिनाई होगी या किसी को मिलकर या लिखित रूप से दूर करने की भी पूरी कोशिश की जाएगी।

प्रत्येक आर्य युवक को यह समझ लेना चाहिए कि आर्य युवक संगठन का प्रत्येक युवक उनका भाई है। अतः उसको अच्छा बनाने मे कोई कोशिश भी उठा न रखेगा। इसलिए नि संकोच अपनी कठिनाइयो को कार्यों को जरूर भेजें।

—करनैल

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज अलावलपुर और श्री मददयानन्द धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय की बैठक पण्डित बंसीलाल जी रिटायर्ड इन्स्पैक्टर पुलिस के दामाद पण्डित श्री लक्ष्मण देव जी पाठक, सीनियर टैक्नीकल एडवाईज़र ईरान सरकार के आकस्मिक और अचानक स्वर्गवास पर हार्दिक शोक प्रकट करती है भगवान से प्रार्थना करती है कि वह स्वर्गवासी की आत्मा को शान्ति दे उनके परिवार व निकट सम्बन्धियो का यह दु ख सहन करने की शक्ति दे। मृत्यु के सोलहवें दिन यज्ञ के बाद उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी जी ने एक सौ रुपया आर्य समाज को और एक सौ रुपया औषधालय को दान दिया।

गुरु प्रसाद
मन्त्री आ स प्रबन्धक
औषधालय

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, ११ मई, १९६९ [अंक १९

मूल में भूल

आज का विद्यार्थी किस दिशा में

स्कूलो और कालेजो मे पढने वाले छात्रो की ओर से आये दिन जो तोड-फोड करने का खेल खेला जा रहा है। साधारण-सी बातो पर ये प्रतिदिन की हडतालो का क्रम जारी रहता है, अपनी बातें मनवाने के लिए अपने आचार्यों व अध्यापको को जो यह घेराव किया जाता है। बार-बार अवनी मातृ सस्थाओ को क्षति पहुचाई जाती है—इन सारी बातो के साथ जो अपमान अपने ही बडो पूज्यो का इनके द्वारा होता है—उस सारे खेल को देख कर कौन ऐसा है जिस का लज्जा से सिर नही झुक जाता ? स्वतन्त्र भारत मे शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रो का यह जीवन-व्यवहार भारत को कहा पर पहुचा देगा ? यह सोच कर मन को दु:खी कर देना है। सिनेमा की टिकट न मिला तो फर्नीचर तोड दिया। फीस मे कमी न हुई तो स्कूल कालेज की खिडकिया तोड डाली, पेपरो मे नकल न मारने दी तो निरीक्षको ही को पीट डाला और यदि उन की और कोई अवकाश की बात न मानी गई तो दूसरा उत्पात मचा कर सस्था को हानि पहुचा दी गई। पता नही आज का छात्र किस मार्ग पर चलना चाहता है।

विद्या ददाति विनयम्—हमारे शास्त्र तो यह कहते हैं कि विद्या से जीवन मे विनय आती है। शिक्षा लेने वाला विनीत बन जाता है। उसके सामने यदि गुरु आ जाये तो उसके सामने श्रद्धा से सिर झुक जाता है। यदि शिक्षा प्राप्त करते हुए छात्र के विचारो मे तनिक भी अपने वृद्धो के प्रति मान सम्मान की भावना नही पैदा होती तो यह विद्या क्या हुई ? भारतीय सस्कृति मे माता-पिता को तो देवता माना ही है—इस के साथ 'आचार्य-देवो भव' का भी सन्देश दिया गया है। विद्या पढाने वाला चाहे छोटा हो या बडा जिनके पास विद्यार्थी ने बैठ कर विद्या को प्राप्त किया है, वह भी गुरु है, उसे देव भाव से देखना व सम्मान करना है। इस समय की शिक्षा के वातावरण मे प्रतिदिन छात्रो की ओर से किये जाने वाले होहल्लड को देखते हुए सारे नेता बार-बार कहते है, मानते है कि शिक्षा की पद्धति मे दोष है, इस का परिवर्तन करना चाहिए। यही बात हमारे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने स्वीकार करते हुए कही है कि हमने शासन प्रबन्ध की पद्धति और शिक्षा की पद्धति विदेशी सत्ता काल की अपनाई है, इसीलिए छात्रो की ओर से ऐसा होता रहता है। उनकी बात ठीक है। शिक्षा मे रत्तीभर भी परिवर्तन नही है। दो चार पुस्तके इधर-उधर कर देने से तो शिक्षा मे तबदीली नही हो जाती। जब तक पढाए जाने वाले पाठ्यक्रम मे नैतिकता का भाव भरने वाली कोई पुस्तक नही पढाई जाती तब तक सुधार नही होगा। भूल तो मूल मे है, बीमारी तो अन्दर लगी है इलाज बाहर किया जा रहा है। पानी पत्तो व शाखाओ को दिया जाता है तो यह शिक्षा वाटिका कैसे हरी-भरी होगी ? कभी नही हो सकती। भारत शिक्षा मे विश्व का महान् गुरु था। इसके महान् आचार्य वाशिष्ट, बाल्मीकि, व्यास, सन्दीपन, चाणक्य, पतञ्जलि विरजा नन्द जैसो के चरणो मे बैठकर पढे हुए शिष्यो ने क्या कुछ नही किया ? सबसे बडा दु:ख यह है कि इस समय सत्ता पर बैठे अधिकारियो का प्राय सारा दृष्टिकोण ही पश्चिमी है। उनका चश्मा पश्चिमी है। भारत की तो कोई वस्तु भी उन्हे न दिखाई देती है और न भाती सुहाती है। शिक्षा का सारा ढांचा पश्चिमी है। लाख प्रयत्न किए जाए, सुधार नही होगा। जहां पर भूल है उस मूल का किसी को भी ध्यान नही इधर-उधर की बाते बनाई जा रही हैं। अब भी चेतो ! पद्धति बदलो। धर्म और नैतिकता को शिक्षा मे ऊचा स्थान दो। आचार की सुगन्धि लाने के लिए पाठ्यक्रम मे तबदीली करो। तभी परिवर्तन होगा —त्रिलोक चन्द्र

नेताओं की मनोदासता

पता नही कि कब वह शुभ दिन आएगा जबकि भारत के इन राज्यासन पर बैठे हुए सत्ताधारी नेताओ का स्वाभिमान जागेगा। २०-२२ वर्ष बीतने लगे है विदेशी सत्ता से सत्ता अपने हाथ मे लिए। किंतु अभी तक भी अगरेजी भाषा की दासता के बधन सूत्रो से बाहर निकलने का प्रयत्न किया ही नही जाता। अभी तक भी अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति वह गौरव-भरी भावना उभरने नही पाई अभी-अभी फरीदाबाद हरियाणा मे काग्रेस का विशाल अधिवेशन किया गया। सारे काग्रेस के बडे-बडे नेता वहा पधारे ही। समाचार पत्रो मे आया है कि वहा पर कार्यक्रम प्राय: अगरेजी भाषा मे किया गया। रिपोर्ट भी तथा अन्य कार्य भी। थोडा बहुत कार्यक्रम और भाषा मे हुआ होगा। प्राय: भाषण आदि अगरेजी मे रहे।

यह जानकर प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी के दिल पर तो चोट लगती ही है। अभी तक हमारे बडे-बडे लोगो की मनोदासना की यह दशा है कि विदेशी भाषा को छोडने मे भी नही आ रहे। अभी तक भी उनके रोम-रोम मे, श्वास-श्वास मे एव शब्द-शब्द मे अगरेजी का प्रेम भरा है राष्ट्रभाषा हिदी तो केवल नाम के लिए भारत के सविधान के कागजों पर अकित है, उसके प्रसार के लिए हमारे नेता-गण कितना ध्यान देते हैं, यह ऐसे २ अधिवेशनो मे स्पष्ट हो जाता है। बडो के मार्ग पर ही जनता प्रजा चलती है। यही कारण है कि अग्रेजी का व्यामोह बढता जा रहा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी को ऊचा स्थान दिलाने के लिए अभी बडा परिश्रम तथा सघर्ष करना पडेगा।

समाजें आर्य सम्मेलन करें

गत दिनो आर्य समाज तरन-तारन अमृतसर के वार्षिकोत्सव पर सार्वदेशिक सभा देहली के माननीय मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी शाल वाले M. P की प्रधानता मे विशाल आर्य सम्मेलन किया गया। इसमे डा० वेदीराम जी शर्मा एम ए. पी एच डी मन्त्री सभा ने अपना सारगर्भित भाषण देते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रत्येक आर्य समाज अपने २ महोत्सव पर आर्य सम्मेलन का अवश्य ही आयोजन करती रहे जिससे परिवारो के जीवन मे आर्य जीवन का निर्माण राष्ट्र मे चरित्र बनाने की तरफ विशेष बल तथा युवा पीढी के विचारो मे नैतिकता की भावना भरने का कर्तव्य एव अस्पृश्यता के रोग को समाप्त करने पर बल दिया जाए। हम आर्य समाजो का ध्यान इस ओर आकर्षित करते है कि वे सभा मन्त्री जी के उत्तम सुझाव को क्रियात्मिक रूप देवें।

भाषा ओर माता-पिता

पजाब मे भाषा का निपटारा करने के हेतु स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री नेहरू जी के समय मे सच्चर फार्मूला नाम से एक फार्मूला बनाकर लागू किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक माता पिता को अधिकार है कि अपने बच्चे को हिन्दी या पजाबी जिसमे चाहे, भाषा के माध्यम से शिक्षा दिलाने के अधिकारी है। प्रात के विभाजन के बाद अब इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि यह फार्मूला तोड दिया जाए और सारे पजाब के स्कूलो मे पहली कक्षा से पजाबी लागू कर दी जाए। इसके विरोध मे जनता मे पर्याप्त क्षोभ है। माता-पिता को यह पूरा अधिकार है कि वे अपने बच्चो को दोनो मे से मनचाही भाषा मे शिक्षा दिलावे। उनके इस अधिकार को छीनना बहुत बडा अन्याय है। प्रत्येक बच्चा पजाबी भी पढता है उसे हिन्दी भी आवश्य पढनी है। जैसी पद्धति चलती है वही चलती रहनी चाहिए। इस चालीस प्रतिशत हिन्दी भाषियों के प्रान्त मे सत्ता के अधिकारी शासको को न्याय पथ पर चलते हुए हिन्दी के साथ पूरा न्याय करना चाहिए। माता-पिता को दिए गए सच्चर फार्मूला के अधिकार को बनाए रखना चाहिए —सम्पादक

★ जिन जिज्ञासुओ ने प्रभु को इसी जीवन मे पहचानने, साक्षात्कार कर लेने का लक्ष्य बना लिया है वे विषयो को चमकीले सर्प की भाति समझ कर इनसे दूर रहते है वही धन्य है।

'गौ माता और उसकी महिमा'

(श्री सज्जन कुमार जी सन्धीर)

आज समस्त राष्ट्र के अन्दर नाना प्रकार के आन्दोलन होते है। जिन मे से एक आन्दोलन गोरक्षा आन्दोलन है। यह आन्दोलन एक महत्वपूर्ण आन्दोलन है। आज मे आर्य जगत् के पाठको का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हू हमे इस सम्बन्ध मे जब भी कोई समाचार अध्ययन के लिए प्राप्त होता है कि गौ-हत्या पर जब पूर्ण प्रतिबन्ध नही लग जाता यह आन्दोलन समाप्त नही होगा। आपने सन् १९६२ के चतुर्थ आम चुनाव मे देखा कि भारतीय राजधानी दिल्ली के अन्दर काग्रेस को स्पष्ट बहुमत से हाथ धोने पडे और अब वर्तमान ससद के अन्दर **भारतीय जनसंघ को स्पष्ट बहुमत प्राप्त था। और**

जिन-जिन स्थानो पर काग्रेसी मन्त्रिमण्डलो का पतन हुआ। इन सब का कारण था गौमाता की रक्षा न होना! जिस समय कोई भी नेता १९६२ की ससद मे काम रोको प्रस्ताव रखना चाहता था तो भूतपूर्व अध्यक्ष उसी समय उसे सदन से निष्काशित घोषित कर देता था।

यदि आज साधु इत्यादि कोई आन्दोलन इस विषय मे करता है तो उसे उसी समय कारागार भेज दिया जाता है। अभियोग चलाए जाते है। यह अन्याय नही है तो और क्या है? यह इतिहास यही समाप्त नही हो जाता। आगे चलिए कि आज यदि कोई गौमाता और उसका पुत्र(बच्छड) घास इत्यादि खाकर वृक्षोको छत्र छाया मे विश्रामके लिए उपविश होतेहै। तो पशु बाडे के व्यक्ति उस व्यर्थ पशु समझ कर फाटक मे बन्द कर दिया जाता है। यदि वह उनके पंजे मे मुक्त होना चाहते है तो वह उस पर लगु एवम रज्जु प्रहार करते है। यदि उनका स्वामी उन्हे मुक्त करवाने के लिए जाता है तो वह व्यक्ति उसे पहले ही यह कह देत है। कि लाओ पच्चीस रुपए जुर्माने के। हाय यह हमारी गो माता पर अन्याय यह दुर्व्यवहार नही है तो और क्या है? मैं इस विषय मे किसी के प्रति कोई आलोचना नही कर रहा मैं तो केवल विचार प्रगट कर रहा हू।

आज चारो ओर यह हाहाकार मची हुई है कि महगाई ने कमर तोड रखी है! देखिए आर्य लोगो! हमारे राष्ट्र के समुख विभिन्न समस्याए जब तक पूर्ण रूपेण हल नही हो सकती जब तक कि गौमाता की रक्षा न होगी। हमारा भारत राष्ट्र आज क्यो अवनति के पथ पर जा रहा है? इसी लिए कि गौ रक्षा नही होती। **कहां पर तो यह राष्ट्र गौ-रक्षक था? और कहां पर गौभक्षक राष्ट्र बन गया है।**

प्राचीन युग मे यदि किसी गृह मे **कोई अतिथि आता था तो उसका गोघृत, गौदही, गौतक इत्यादि से उसका स्वागत होता था।**

वर्ष वर्षा के लिए शुद्ध गौघृत से यज्ञ इत्यादि हुआ करते थे। **यज्ञ कौन किया करते थे? यह यज्ञ किया करते थे वेदपाठी, विद्वान और विदूषियां!** हमारी बाल्यावस्था की खाद्य-सामग्री ही गौमाता का मिष्टान दूध था। एक एक गौभक्त प्राणी यदि अपने गृह मे गौसेवा करता है तो अन्य व्यक्ति उससे चिढ जाते हैं और प्रश्न करते है कि आपको गौसेवा करने का क्या महत्व है? तो वह गौभक्त उन व्यक्तियो को मुंह तोड उत्तर देता हुआ कहता है कि आपने कभी गौसेवा ही नही की तभी अब चिढ रहे हो! **गौमाता को हिन्दू धर्म माता माना गया है।** इसीलिए तो हम यह जय घोष करते है कि देश धर्म का नाता है गौ हमारी माता है। **गौप्राण, गौशान जयजवान जयकिसान** आप योगीराज कृष्ण की जन्म-भूमि मथुरा मे जा कर देखिए तब आप को ज्ञात होगा कि वह लोग कितने श्रद्धालु हैं।

अपनी प्रिय गौमाता की। किसी की क्या मजाल कि वहा पर कोई व्यक्ति गौमाता पर लगुड या रज्जु-प्रहार कर दे कदापि नही। जिस समय योगिराज (कृष्ण) गौमाताए चरा कर वापस गृह आते थे तो गौमाताए उनकी मधुर मुरली की ध्वनि सुनकर स्वय अग्रसर हो जाया करती थी। हम प्रत्येक वर्ष गोपाष्टमी पर्व मनाते हैं आर्यो परन्तु सरकार के कानो पर कोई जू तक नही रेंगती! सब सम्प्रदायो मे गौमाता को पूजनीय मातृ शक्ति माना है। इसमें मैं कोई सन्देह नही समझता।

अगर आप आर्यो यदि हरियाणा मे इस विषय पर दृष्टिपात करे तो आप को ज्ञात होगा कि वहा पर काग्रेसी मन्त्रिमण्डल का पतन क्यो हुआ? क्यो वहा पर सयुक्त दल मत्रिमडल बना। कारण ही केवल गौ-रक्षा का न होना था। हम तो **प्रातःकाल के समय में नित्य क्रम से निवृत्त होकर सन्ध्या वन्दन करते हैं और कलकत्ता में नित्यप्रति एक लाख गौ-माताएं प्रातःकाल मशीन के आरे में काटी जाती हैं।**

आज कुछ राजनीतिज्ञ विद्वानो का यह मत है कि यह साधु इत्यादि जब आन्दोलन करते हैं। जबकि चुनाव निकट होते है और जनता जनार्दन उन्हे उत्साहित करते हैं। परन्तु आर्य जगत के पाठको! मैं उन महाविद्वानो से पूछना चाहता हू कि यह आन्दोलन आप किस आधार पर महज ढोंग बता रहे है? परन्तु मैं उनको यह बता देना चाहता हू कि **यह कोई नवीन आन्दोलन नहीं है।** इसका उद्घाटन सनातन-धर्म सभा के धुरन्धर विद्वान त्याग-मूर्ति श्री स्वामी करपात्री जी के कर कमलो द्वारा हुआ था। जो कि इस आन्दोलन के सर्वेसर्वा: हैं इस आदोलन मे समस्त राष्ट्र के समस्त सम्प्रदाय एक है। केवल मुसलमान सम्प्रदाय को छोड कर।

काश यदि आधुनिक युग मे भारतवर्ष का वीर त्यागमूर्ति स्वर्गीय द्वितीय प्रधान मन्त्री श्रीयुत श्रीलाल-बहादुर जी शास्त्री जीवित होते तो क्या यह नम्बर १९६२ को दिल्ली मे शान्त गौभक्तो पर लाठिया चलाई जाती? मैं समझता हू यह कदापि नही हो सकता था। **आप को स्मरण होना चाहिए कि सन् १९६२ की संसद में निर्दलीय वर्तमान आर्य नेता संसदस्य पं० प्रकाशवीर शास्त्री जी ने इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव रखा था तो भूतपूर्व खाद्य-कृषि मन्त्री श्री सी. सुब्रह्मण्यम् ने घोर विरोध किया था।** और हमारे श्री छागला ने इस प्रश्न का पूर्ण समर्थन करते हुए यह शब्द कहे थे कि **सोच लो, विचार लो समझ लो इस विषय में अन्यथा इसका कुपरिणाम होगा। और ठीक वही अवस्था आज हो रही है।** इस से स्पष्ट है कि हमारे केन्द्रीय विदेश मन्त्री इस प्रश्न के कितने समर्थक हैं।

एक सस्कृत का वाक्य है कि य देशः इमा सीदति स. कदापि सुखम् प्राप्तुम न शक्नोति! जो व्यक्ति इसे कष्ट देता है, कदापि वह सुख नही प्राप्त कर सकता। लिखने का अभिप्राय गौमाता के विषय मे है। मैं तो गुजरात सरकार के श्री हितेन्द्र देसाई का हार्दिक आभारी हू कि वहा पर एक विपक्षी विधायक ने विधान सभा मे एक प्रस्ताव इस विषय मे प्रस्तुत किया था जो कि वहा के मुख्य—मन्त्री ने सर्वसम्मित स्वीकार किया और भारत स्वशासन ने एक सम्मति की नियुक्ति है। परन्तु अब देखना यह है कि हमारी देवी इन्दिरा 'प्रधानमन्त्री' क्या पग उठाती है? हमारे त्यागी सन्तो की तो यह मांग है कि हम सरकार परिवर्तन नही करना चाहते और न ही हम गद्दी के इच्छुक हैं। हम तो इसके इच्छुक हैं कि 'गाय हमारा ईष्ट देव है। यदि इसकी हत्या बन्द न होगी तो हमे अपनी प्राणहुति देने के अतिरिक्त और कोई उपाय नही रहता। आप को स्मरण होना चाहिए कि जब स्वतन्त्र राष्ट्र के राष्ट्रपति डाक्टर जाकिरहुसैन को जिस समय राष्ट्रपति पद की शपथ दिलवाई थी तो इस समारोह मे से पूर्व श्री जाकिर हुसैन जगदगुरू शकराचार्य के चरणो मे उपस्थित हुए थे तो जगद गुरु जी ने उन्हे यह शब्द कहे थे कि **आप गौवंशकी हत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवाएं। हुसैनजी ने कहा था कि मुझे आपकी जो आज्ञा? आपका ही आर्शीवाद है।** [समाप्त]

धर्म का सच्चा स्वरूप

(ब्र० मनोहर आर्य विद्यावाचस्पति, दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार)

यो तो सभी मनुष्य चाहते हैं कि हम धर्म करे और अधर्म से बचे रहें परन्तु बहुत कम लोग जानते हैं कि किस काम का करना धर्म है और किस का अधर्म। साधारण तथा हमारे देश मे तो वही मनुष्य पवित्र कहलाता है जो किसी के हाथ का न खावे ! चाहे वह झूठ बोलता हो, चोरी करता हो। परन्तु यदि कोई विद्वान धर्मात्मा पुरुष अन्य देशो मे जाता है तो हमारे भाई उसे बिरादरी से निकाल देते थे और उसको पतित समझते थे इससे हमारे देश की बडी अवनति हुई। इस अवनति का यही कारण है धर्म के वास्तविक स्वरूप को न जानना। अथर्व वेद मे एक मन्त्र आता है कि जो धर्म को त्यागता है उसका नाश हो जाता है—इसी प्रकार जिस परिवार, समाज तथा देश मे धर्म नही उसका नाश निश्चित है—

मन्त्र—ओ३म् ओजश्चतेजश्च सहश्च बलच वाक् चेन्द्रियच

श्रीश्च धर्मश्च ॥ अ० १२।५।७॥

इस मन्त्र का भाव यह है—कि मनुष्य के अन्दर ओज-प्रभाव और तेज होना चाहिए तथा वाणी की मधुरता इन्द्रियसयम लक्ष्मी और धर्म आदि गुण होने चाहिए। जिसके अन्दर ये गुण न होगे वह नाश को प्राप्त होता है।

आर्यों को हिन्दु नाम क्यो मिला ? आर्य जाति का ह्रास कैसे हुआ ? इस का अनेक कारणों मे से एक मुख्य कारण यह है कि आर्य जाति धर्म के स्वरूप को भूल कर अविद्या अन्धकार मे फस गई। बस इसका धर्म, मूर्ति पूजा करना, अवतारो मे विश्वास करना, आदि बन गया। हिन्दू अपने आर्यत्व को भूलकर मुगल प्रदत्त चोर, कपटी, काला इत्यादि अर्थ रखने वाला हिंदू, सज्ञा का सहर्ष स्वीकार कर लिया। परन्तु हिन्दु बेचारा विचार न कर सका कि हमारी वास्तविक जाति क्या है, हमारा सच्चा धर्म कौन-सा है ? किसी हिन्दू से पूछो कि तुम्हारा धर्म क्या है तो वह बतायेगा कि 'हिन्दू'। इस को यह भी पता नही कि धर्म कहते किसे हैं। जाति को ही धर्म बना लिया।

पहली बात तो यह है कि हिन्दू अपने धर्म को जानता नही। यदा-कदाचित् कोई जानता भी हो तो उसका निश्चित-निर्णित कोई धर्म नही है। यज्ञ के धर्म मे तो सभी धर्मों को एक समान मानने का सिद्धान्त है। जिस धर्म मे गाय को बलि देना पुण्य समझा जाता है वह भी इनके लिए श्रेष्ठ धर्म है और जिस धर्म मे गाय को माता समझ कर पूजा जाता है वह भी श्रेष्ठ धर्म है। जो ईसा को ईश्वर का अवतार मानते हैं उनको भी मुक्ति मिलेगी और जो श्री कृष्णचन्द्र को ईश्वर का अवतार मानते है। उनको भी मुक्ति मिलेगी।

हिन्दू अपने सच्चे धर्म को न जानने के कारण हिन्दु-जाति की क्षति तो निश्चित हुई ही किन्तु इससे अधिक हानि राष्ट्र की हुई। महर्षि मनुमहाराज उपदिष्ट धर्म को यदि ठीक समझते तो राष्ट्र जाति एव धर्म की इतनी क्षति न होने पाती। महर्षि मनुमहाराज ने तो धर्म की ओर मानव को प्रेरित करते हुए कहा—

वेद: स्मृति: सदाचार: स्वस्य च प्रियवात्मन: ।
एतच्चतुर्विधप्राहु: साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ॥

वेद पढकर उसके अनुसार आचरण करना सर्वप्रथम धर्म है। मनु ने धर्म को पहचानने के लिए वेद को प्रथम स्थान दिया। वेदोपदिष्ट 'न तस्य प्रतिमा अस्तियस्य नाम महद्यश' जिस ईश्वर की महिमा महान् है उसकी प्रतिकृति नही होती—मूर्ति या प्रतिमा नही बन सकती। इत्यादि वेदोपदेश को भूलकर मूर्ति पूजा होने लगी। और—'यदि नो गा हिसी: यद्यश्व यदि पुरुषम्' वाली बात को हिंदु समझ जाते तो क्या साहस था कि महमूदबिन कासिम का जो देवल पर आक्रमण करके हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया। धर्म के यथार्थ स्वरूप को न जानने से हिंदु जाति कभी मुसलमानो की तलवार का आहार बन गई, तो कभी ईसाइयो के प्रदत्त प्रलोभन मे बह गई और वर्तमान मे बडे वेग से बह रही है। हिंदू अपने को यदि सुरक्षित रखना चाहते है तो वेदोक्त-शास्त्रोक्त धर्म को पहचाने और उसी पर दृढ रहकर उसी के अनुसार आचरण करे। अच्छे गुणो को धारण करके उनके अनुसार आचरण करना ही धर्म है। महर्षि कणाद ने तो सुस्पष्ट कहा है कि—यतोऽम्युदयनि श्रेयससिद्धि' सधर्म जिस गुण कर्म स्वभाव के आचरण से इस लोक मे सुयश एव परलोक मे मोक्ष पद प्राप्त हो वही धर्म है। महाभारतकार की सम्मति भी इसी प्रकार है—'धारणाद धर्म इत्याहु.' सद्गुण सदाचार को धारण करना ही धर्म है। और कहा—सर्वस्व धर्म के सार को सुनो और सुनकर उसको धारण करो जो अपने आत्मा को प्रतिकूल हो, वह दूसरो के प्रति व्यवहार मत करो। दूसरो द्वारा हमारी निन्दा होना हमे अच्छा नही लगता तो हमे भी चाहिए कि हम भी दूसरो की निन्दा स्वप्न मे भी न करे। हम नही चाहते कि हमारा धन चोरो द्वारा लूटा जाए तो ठीक उसी प्रकार हम भी दूसरो के स्वत्व को प्रहरण करने का मन मे भी न सोचे। हम चाहते है कि हमारी बहन-बेटियो को कोई दूसरा व्यक्ति बुरी नजर से न देखे, अत. हमे भी चाहिए कि हम भी पर-स्त्री को मातृवत् देखे। बस यही धर्म है इसको धारण करके जो आचरण कर रहा वह धर्मात्मा है—धार्मिक है। और इस लोक मे कीर्तिमान् है। धर्म पर बल देते हुए विद्वान् मनीषियो ने कहा—

धर्म शनै: संचिनुयात् वल्मिकमिव पुका ।
परलोक सहायार्थ सर्व भूतान्यपीडयन् ॥'

किसी भी प्राणी को दुख न देता हुआ शनै शनै धर्म का सग्रह करता रहे। जैसे दीमक बबी तैयार करती है, क्योकि परलोक मे धर्म ही सहायक होता है। इस धर्म का सग्रह हम वेदो से स्मृति ग्रन्थो से करे। हमारा शरीर अनित्य नाशवान् है, धन सम्पत्ति स्थिर नही है, मृत्यु रूपी बाज शिर पर सदैव मण्डरा रहा हैं, अत: धर्म सग्रह सदा करते रहने चाहिए। हमे स्मरण रहना चाहिए कि—

धनानि भमौ पशवश्च गोष्ठे,
नारी गृह द्वारि जन: स्मशाने ।
देहश्चितायां परलोक मार्गे,
धर्मानुगो गच्छति जीव एक. ।

धन बैंको मे या भूमियो मे गडे रह जाते है, पशु एव हमारा प्यारा अश्व-आदि अपने-अपने शाखाओ मे बधे रह जाते हैं, नारी गृह के द्वार पर खडी-खडी जाति हुई अर्थी को देखा करती है। दाह सस्कार करने वाले लोग श्मशान भूमि से लौट जाते है, यह पाच भूतो का पुतला शरीर भी चिता मे भस्म हो जाता है। उसका मित्र केवल मात्र एक धर्म है वही उसके साथ जाता है। अत कहा है—

'एक इव सुहृद धर्मो निधनेऽप्नुयानि य: ।
शरीरेण समं नाशं सर्व मन्यतु गच्छति ॥

एक धर्म ही सच्चा मित्र है जो मरने पर भी साथ जाता है और सब कुछ शरीर के साथ नष्ट हो जाता है।

पाठक वृन्द ! धर्म को यथातथ समझो और अपने अडोसी-पडोसियो को समझाओ, अन्यथा देश धर्म तथा जाति का नाश है।

★ विश्वास रखना चाहिए कि प्रभु हमारी रक्षा करेंगे ही।

★ प्रत्येक अवस्थामे मन का सतुलन बनाए रखो, यह बहुत ही जरूरी है।

मनुष्य और उसकी उन्नति के साधन

(श्री वैद्य ज्ञान चन्द जी बस्ती गुंजा जालन्धर)

(गताक मे आगे)

कदापि अधोगति नही होती। ईश्वर पर विश्वास रख कर उसकी प्राप्ति के लिए ऐहिक सुखो का त्याग करता कोई छोटा तप नही इस तप के कारण निराकार के उपासको को अवश्य शुभ अवस्था प्राप्त होती है। परन्तु मार्ग मे आयास और परिश्रम अधिक होने के कारण बहुत कठिन है। इस पर कोई विरला ही सफलता प्राप्त करके प्रभु के दर्शन कर सकता है। यही कारण है कि आज आर्य समाज के सभा सदो मे प्रभु पर विश्वास नही और उनका मन सध्या वदना मे नही लगता। आर्य भाईयोको इसे ध्यान पूर्वक मनन करना चाहिए। कि हमारे मे त्रुटि कहा है। और किस उपाय से प्रभु के शीघ्र दर्शन हो सकते है।

गीता मे श्रेष्ठ भक्तो के लक्षणो का वर्णन करते हुए श्री कृष्ण कहते है मय्या वेश्य मनो ये

मा नित्ययुक्ता उपासते

श्रद्धया पर योपेतास्ते

पे युक्त तमा मता

अध्याय १२ श्लोक दूसरा

जो मन एकाग्र करके परमेश्वर के व्यक्त रूप का अचल श्रद्धा से उपासना करतेहैं वे सचमुच श्रेष्ठयोगी है। अर्थात साकार रूपकी उपासना बडा श्रद्धा से करते हैं वे ही श्रेष्ठ योगी है। यहा-साकार उपासना का वर्णन है। साकार उपासना क्या है अब हमे यहा विचारना है--

य. या तनु श्रद्धया अर्चितु इच्छति, तस्य तत्र अचला श्रद्धा विदधापि।

जो भक्त जिस तनु की श्रद्धा से पूजा करना चाहता है उसकी वहा ही अचल श्रद्धा हो जाती है। अर्थात श्रद्धा से जहा भी मन लगाता है। वहा ही उसकी श्रद्धा हठ हो जाती है। यहा तनु की उपासता का वर्णन है। तनु का अर्थ है शरीर ये लोग जो तनु के उपासक है वे केवल शरीर के पूजक है। शरीर के सदृश प्रतिमा बनाना और उसका सत्कार करना इनका कार्य होता है। वे समझते है कि उपास्य देव भिन्न है और उस से मै भिन्न हू। इस प्रकार के लोग अन्य-अन्य देवताओ की उपासना करते है। हिंदू लोग मूर्ति और प्रतिमा के पूजक है। उनके अनेक वैदिक और पौराणिक देवता हैं इतना होने पर भी यह कब्रस्तान पूजन के लिए मारे मारे फिरते है मुसलमान भाई अपने आपको एकेश्वर पूजक मानते हैं। परन्तु उनके पीछे भी प्रेत पूजा कब्र परस्ती मस्जिद परस्ती लगी है ईसाई मत वाले भी ईसामसीह की प्रतिमा पूजते है बुद्ध और जैन धर्म मे भी प्रतिमा पूजन की विशेष रीतिया हैं इस प्रकार ईश्वर मानन वाले न मानने वाले मूर्ति पूजा स्वीकार करने वाले और इसके विरोधी भी विविध रीति से प्रतिमा पूजा करते ही रहते है। इसका मूल विभूति पूजा और वीर पूजा मे छिपा है। जहा ऐश्वर्य शोभा अभाव विशेष है वह विभूति पूजनीय है मानी गई है। सैकडो मन्दिर इनके नामो से भारत भूमि और बाहर के देशो मे विद्यमान है। पर यहां विचारना चाहिए कि किसी मूर्ति विशेष की जो पूजा भक्ति है वह ईश्वर को पहुचती है व नही। इसमे प्रत्यक्षता नही यह तो एक विश्वास से मानी जाने वाली बात है अभिमान से जी कहते हैं कि हम जो पूजा करते है उसमे अचिन्त्य का ध्यान होता है। चाहे वह मूर्ति पूजक या निराकारी हम उनसे पूछते हैं। कि ध्यान के समय आपके मन मे कोई विषय था यदि कोई विषय था तो फिर रूप विषय को हटाने से कौन सा प्रयोजन सिद्ध हुआ आखे बन्द करने से भी रूप विषय पूर्णता से हटता नहीं और अन्य विषय तो हटते ही नही यह तो प्रत्यक्ष ही है। फिर केवल बाहर के दृश्य हट जाने से अदृश्य का साक्षातकार हो जाना यह बात भी सत्य नही फिर अचिन्त्य का ध्यान हम करने है यह अभियान कहा तक सार्थक हो सकता है आप ही सोच ले। यह ठीक है आखे बन्द करने से स्थूल दृश्य हट जाता है। परन्तु विश्व दृश्य के सस्कार जो मन पर छपे हुए रहते है। वे जाग उठते है, और मन के सम्मुख वे मानसिक दृश्य खड़े हो जाते है। आखे बन्द करके स्थूल दृश्य को हटाना उतना सहज नही मनुष्य जितना अन्धेरे मे जाप और जितनी आखे बन्द करे और जितना स्थूल को हटाने का यत्न करे उतनी ही स्पष्टता के साथ मानसिक दृश्य उसके सम्मुख खड हो जाते हैं। इन मानसिक दृश्यो को हटाना सम्भव है। मैने अब तक आप को निराकार की उपासना कितनी कष्ट प्रद है। और मूर्ति पूजा द्वारा की गई भक्ति की गई भक्ति ईश्वर को पहुचती नहीं पर अपने विचार आपके सम्मुख रखे। अब कौन-सी सरल विधि है। जिस से मनुष्य को प्रभु के शीघ्र दर्शन हो सकते हैं विचारना होगा वह सरल विधि है। सगुण उपासना। इसी सगुण उपासना का वर्णन गीता मे सर्वत्र मिलता है। मूर्ति पूजा का नही। सम्पूर्ण विश्व रूप परमात्मा का सगुण रूप है। इस विश्व रूप मे सब मानव जाति सब पशु-पक्षियो की जातिया सब कीट पतगो की जातिया सब वृक्ष वनस्पतियो की जातिया सम्मिलित है। इसलिए हमे देखना चाहिये कि विश्व रूप के किस भाग को क्लेश, दुख अथवा कष्ट पहुच रहा है। अशिक्षित दरिद्री अवनत जातिया भी हम मे है। राष्ट्र मे रोगियो की सख्या दैनिक बढ रही है। ये सब कष्टी लोग परमेश्वर के विश्व के भाग है। उन्हे सेवा की जरूरत है इनकी सेवा के लिए हमे आनन्द भाव का आश्रम लेना होगा। क्योकि सच्ची विश्व सेवा यहा से ही प्रारम्भ होती है। यह मेरा घर है ये मेरे लडके हैं यह मेरा परिवार है यह मेरा है यह दूसरे है दूसरो को लूट कर अपने सम्बन्धियो का भला करूगा यह भाव इस ससार मे कार्य कर रहा है। यह अन्य भाव है। यही दुःखो और अज्ञानता की जड हैं। और इसी भाव के कारण ही जगत मे लूट-मार ठगपन विधि रीति से चल रहा है। इस जगत मे मनुष्य मे और मुझ से मित्र दूसरा ऐसे दो पदार्थ मात बैठा है वह दूसरो को लूटकर अपना सुख बढाना चाहता है। मगर यह सब भूल है। जब तक वायुदेव ही सब कुछ है का ठीक ज्ञान नही होता अर्थात् जब तक वायुदेव ही एक सद्वस्तु है। इसके अतिरिक्त दूसरी वस्तु नही ऐसा निश्चय तब होता है। जब उसे ज्ञान हो जाय कि मुझसे भिन्न कुछ भी नहीं इसी को एकात्म प्रत्ययसार कहते है। एक ही आत्मा है दूसरा कोई पदार्थ नही जैसे वैद्य भी वही रोगी भी वही औषध भी वही औषध देने वाला और लेने वाला भी वही है। तो फिर रोगी को रोग मुक्त करना मानो अपने आपको सुखी करना है। रुग्ण अवस्था मे रखना अपने आपको दुखी रखना है। रोगी की सेवा अपनी सेवा है। इस प्रकार एकात्य प्रत्यय होने पर अनन्य भाव स्थिर हो जाता है। अनन्य भाव मन मे सिद्ध होने के पश्चात ही दैवी सम्पत्तिके पोषक सच्चे कर्म होते है। सच्ची विश्व सेवा यहा से ही प्रारम्भ होती है फिर अनन्य भाव होते ही नर का नारायण जीव का शिव हो जाता है। इसलिये चारो वर्णो की सेवा जन समाज की सेवा जाति की सेवा राष्ट्र की सेवा ही परमेश्वर की सेवा है। चातुर्वण्य के रूप मे परमेश्वर प्रत्यक्ष है। यही परमेश्वर का सगुण रूप है। इस मानुषी तनु मे आश्रित ईश्वर को महात्मा लोग जानते हैं। ससार के कष्टी लोग परमेश्वर के सच्चे रूप है। प्रभु इन रूपो मे स्वय उपस्थित होकर आपसे सेवा के लिये पुकार रहे है। उस समय उस कष्टी की सेवा स विमुख होना परमेश्वर का सीधा अपमान है। इसी प्रकार तृषत मनुष्य को जल देना भूखे को अन्न देना भी परमेश्वर को देना होता है। परमेश्वर की ऐसे कर्मों मे पूजा होती है जब प्रत्यक्ष परमेश्वर किसी रूप मे हमारे सामने आते हैं तो उन से जो व्यवहार हम करते है। वह प्रत्यक्ष परमेश्वर से ही व्यवहार होता है। इसलिये आपके सम्मुख जो आये उसे ईश्वर रूप समझ कर यथायोग्य सेवा तन, मन, धन से करे। यही सच्ची प्रभू भक्ति है। इसी के लिए मनुष्य जन्म मिला। विश्व सेवा के साथ-साथ जो कार्य करे उन पर अपनी उपमा द्वारा विचार करे कि इस कर्म से दुख अथवा सुख होगा ऐसा निश्चय अपने आपको उसकी अवस्था में लाकर करने से कर्तव्य का निश्चय ठीक प्रकार से हो सकता है इसके साथ कर्म फल त्याग को भी न भूले। क्योकि यह सबसे सुगम और सबसे परिणामकारी है इसके बिना कोई योग सफल नही हो सकता कर्म फल त्याग का महत्व सबसे उपरि है। इसी से [illegible] गति शीघ्र प्राप्त होती है। संसारिक जीव सच्ची उन्नति के अभिलाषी इस विश्व रूप की सेवा कर्म फल त्याग के साथ करे। इसी मे जीविन का रहस्य छुपा है। इसे सभी समझकर अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाए। जिसके लिए हमें जन्म मिला है।

समाप्त

आर्य समाज (तरण तारन)

आर्य सम्मेलन

आर्य समाज तरनतारन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब का पुराना आर्य समाज है। कई वर्षों से इस समाज ने अपना उत्सव नहा किया था। इस वर्ष सभा के कार्य-कर्त्ताओं के प्रोत्साहन पर उत्सव का बडा ही सुन्दर आयोजन किया गया। शुक्रवार २५।४।६९ को नगर कीर्तन जलूस निकला तथा २६, २७ को उत्सव हुआ। शनिवार २६ अप्रैल को ४ से ७ बजे तक आर्य सम्मेलन हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्रीराम गोपालजी शाल वाले वाले ने की।

सभा मन्त्री डा० वेदीराम जी ने इस सम्मेलन में निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत कर ओजस्वी भाषण दिया। प्रस्ताव निम्नलिखित हैं जो सर्व-सम्पति से पारित हुआ। —स.

आर्य समाज तरन-तारन के वार्षिक उत्सव पर आयोजित यह आर्य सम्मेलन देश की वर्तमान बिगडती हुई परिस्थितियो पर गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि जब तक देश मे युवा पीढी का धार्मिक रीति-नीति से चरित्र निर्माण नही किया जाता। तब तक देश की किसी भी समस्या का समाधान नही हो सकता।

अत: यह सम्मेलन विशेषण रूप से निम्न प्रकार से वैदिक मन्तव्यो को देशवासियो के समक्ष उपस्थित करना अपना कर्तव्य समझता है।

१—पहिला भाग

प्रत्येक शिक्षण सस्था मे नैतिक व धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य स्थान दिया जाये।

२—दूसरा

देशवासियो मे भावनात्मक राष्ट्रीय एकता की स्थापना के लिए विदेशी इसाई मिशनरियों के कुचक्र बचाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पारित किए गए धर्मपरिवर्तन सम्बन्ध प्रस्ताव को केन्द्रीय सरकार से भी पारित करने का अनुरोध करता है। जिससे देश को विधवसकारी प्रवृतीया को प्रोत्साहन न मिले

३—तीसरा

इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है की चीन एव पाकिस्तान समर्थक तत्व अपने घृणित कृत्यो द्वारा पुन. देश का विभाजन करने की योजनाए बना रहे है। अत: हिन्दोस्तान को जाग्रत करके प्रचड सगठन द्वारा विफल बनाने की प्रेरणा करता है।

४—चौथा

यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है। कि वह गोवध अविलम्ब बन्द कर दे।

५—पांचवां

यह सम्मेलन आर्य समाज के सज्जनो से अनुरोध करता है कि वह अपने-अपने घरो ने आर्य समाज के सिद्वातो को पूरी तरह लागू करने की पूरी-पूरी शक्ति लगावे।

६—छ:

यह सम्मेलन छूतछात को शास्त्रो के विरुद्ध समझता है। सब को समानता के अधिकार के सिद्धात को रुचिकम् करता है। पनता मे अनुरोध करता है कि वह राष्ट्र को निर्बल बनाने वाले छूतछात की भावना को सर्वथा समाप्त करने मे पूरा-पूरा सहयोग देवे।

हरिश्चन्द्र खन्ना
प्रबन्धक

चुनाव सूचना

आर्यसमाज हिसार का वार्षिक चुनाव २७-४-६९ को आर्यसमाज मन्दिर मे साप्ताहिक सत्सग के पश्चात हुआ सर्वसम्मति से निम्न-लिखित पदाधिकारी चुन गए।

१ प्रधान—चौ० नत्थनलाल जी
२. उप-प्रधान—श्री दीनदयाल जी
३ उप-प्रधान—प० देवराज जी
४ मन्त्री—श्री नन्दलाल जी
५ उप-मन्त्री—प० मदनमोहन जी
६. कोषाध्यक्ष—श्री जसवत सिंह जी
७ प्रचार मन्त्री—श्री रामविचार जी
८. पुस्तकाध्यक्ष—श्री सन्तलाल जी
९ लेखानिरीक्षक—श्री धानाराम जी

अन्तरंग सदस्य

१. प्रकाशचन्द्र एडवोकेट
२. श्री रामकृष्ण एडवोकेट
३. श्री जगननाथ जी
४ प्रि० देवराज जी गुप्ता
५. श्री गिरधारी लाल जी
६. श्री विजयचन्द्र शास्त्री
७. श्री ओ३म् प्रकाश जी
८. श्री अर्जुनदेव जी
९. चौ० हरिसिंह सैनी
१०. श्री सुरेन्द्रनाथ गुप्त
११. श्री रामधारीमल जी
१२ श्री झण्डाराम जी
१३ प० धर्मदेव जी शास्त्री
१४ ल० जयदेव जी
१५ श्री हीरानन्द जी

—नन्दलाल मन्त्री आ० स० हिसार

महत्ता जगन्नाथ जी दत्त वैदिक मिशनरी की सरगर्मियां

अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के प्रोग्राम अनुसार महत्ता जगन्नाथ जी दत्त वैदिक मिशनरी ने खन्ना, लुधियाना, सरहिन्द, अम्बाला, वराडा, जमनानगर जगाधरी, छछरोली, जमनानगर माडल टाऊन, करनाल ओरी चौक, रामनगर, सदर बाजार स्त्री समाज और माडल टाऊन पानीपत, राजपुरा टाऊनशिप मे आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो डी ए वी हाई स्कूलो कालेजो मे भाषण दिए आपने चेतावनी दी कि इस समय हिन्दू समाज बडे खतरे मे है। आपने कहा कि १९४७ मे भारत मे दो हजार पादरी थे। १९६१ मे उनकी सख्या ५ हजार हो गई है। विदेश मे करोडो रु० भारत की गरीब जनता को इसाई बनाने के लिए आ रहे है। १९६१ मे एक इसाई पादरी बलीमोरीयो भारत मे आया हमारी सरकार ने उसके ठहराने के लिए तमाम प्रबन्ध किया जिसका परिणाम यह निकला — कि उस पादरी ने १३ सप्ताह मे ५० हजार भारतीयो को इसाई बनाया। १९६४ मे बम्बई मे कैथोलिक इसाईयो की कान्फ्रैंस हुई हजारो पादरियो के साथ पोप साहिब बम्बई पधारे महाराष्ट्र सरकार और भारत सरकार ने दिल-खोलकर सहायता की हमारे राष्ट्रपति और प्रधानमत्री बम्बई गए केरल, उडीसा, मध्यप्रदेश नागालेंड, मे इसाई पादरी गरीब लोगो को धडाधडा इसाई बना रहे है। अमेरिका, योरुप, न्यूजीलेंड से हर वर्ष करोडो रु० इनको मिलते रहते है। आपने कहा कि कलकत्ता के न खुदा मस्जिद के नए नायिब अम अमाम ने कहा कि मैने पिछले तीन वर्ष मे १०५०० बगाली हिन्दू मुसलमान बनाए और उनकी शादिया कर दी। आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन भारत के सभी प्रातो मे मुसलमानो और इसाईयो के मुकाबले मे शुद्धि का काम कर रहा है। मगर मिशन के पास धन का अभाव और कार्य-कर्त्ताओकी कमी है। हमारी दान-प्रणाली भी बिगडी हुई है। पिछले दिनो मालेर कोटले का एक मुसलमान एक हिन्दू लडकी किरण वाला जोकि गवर्नमैंट हाई सैकेण्डरी स्कूल सरहिन्द मे ग्यारहवी क्लास मे पढती थी भगा कर ले गया आर्य समाज सरहिन्द की एक चिट्ठी मिशन के दफ्तर मे आई महत्ता जगन्नाथ जी को सरहिन्द भेजा गया महत्ता जी ने सरहिन्द के समाज के अधिकारियो मे और डाक्टर कृष्णलाल डाक्टर कृपालसिंह, जगन्नाथजी की कोशिश से लडकी देहली मे बरामद की गई और मुसलमान गुण्डा मालेर कोटले मे पकडा गया। इन हालात मे हिन्दू-सिखो को मिलकर मुसलमानो और इसाईयो का मुकाबला करना चाहिए महत्ता जी की अपील पर कई मिशन के अजीवन सदस्य बन गए महत्ता जी ने आर्य समाजो स्कूलो और कालेजो मे भी भाषण दिए जनता मे नया जीवन पैदा हो गया।

—श्री रामदास

वेद प्रचार मण्डल

गोविन्द नगर, कानपुर-६

वेद प्रचार मण्डल, गोविन्दनगर, कानपुर का साप्ताहिक सत्सग गत रविवार को श्री कोषराज जी सूरी के निवास स्थान पर बडे उत्साह-पूर्वक मनाया गया। हवन-यज्ञ, सध्या के पश्चात् मण्डल मत्री श्री ज विभूषण जी ने पच महायज्ञ-विधि के ऊपर रोचक ढग से प्रभावशाली व्याख्यान दिया जिस का जनता के ऊपर अच्छा प्रभाव पडा।

आगामी सत्सग श्री चरणजीत लाल जी कपूर के निवास-स्थान पर होने की सूचना दी गई।

प्रचार मन्त्री

राष्ट्रपति डा. ज़ ... देहांत: सर्वत्र शोक

अध्ययन करते समय हृदय गतिबंद

गांधी युग का एक और दीपक बुझ

भारत सरकार द्वारा १३ दिन के मातम की

शव-यात्रा सोमवार ५ मई को दो दिन के लिए का...

हम बड दुख के साथ समाचार दे रहे हैं कि भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसन का शनिवार प्रात ११ २० बजे दिल का दौरा पडने से दिल्ली मे देहावसान हो गया। वह ७२ वष के थे।

राष्ट्रपति को ३ मई प्रात दिल का सख्त दौरा पडा और अचानक ही उनका निधन हो गया। जब दौरा पडा वह राष्ट्रपति भवन मे एडबिना कक्ष मे अध्ययन कर रहे थे। डाक्टरो ने उन्हे कत्रिम श्वासक्रिया द्वारा पनर्जीवित करने का प्रयत्न ११ ५५ तक जारी रखा परन्त सफल न हुए।

१३ मई १९६७ को इस पद पर आरूढ हुए वह देश के ततीय राष्टपति थे।

भारत सरकार ने १३ दिन तक राष्टीय स्तर पर शोक मनाने की घोषणा की है। इस अवधि मे सभी सरकारी इमारतो पर झड आध झुके रहेगे।

सभी कार्यालय जिनमे औद्योगिक प्रतिष्ठान भी शामिल हैं ४ व ५ मई को बन्द रहे।

शव-यात्रा ५ मई को

राष्ट्रपति के शव को साय सात बजे से राष्ट्रपति भवनके दरबार हाल मे दर्शनार्थ रखा गया। हजारो लोग दिवगत नेता के अन्तिम दर्शन कर रहे हैं। शव यात्रा सोमवार ५ मई को पाच बजे साय राष्ट्रपति भवन से शुरू हुई तथा जामिया मिलिया मे जाकर समाप्त हुई जहा उन्हें [illegible]

समाचार मिलते ही उपप्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई तुरन्त राष्ट्रपति भवन गए जहा उनकी अध्यक्षता मे मन्त्रिमडलकी बठक हुई गहमन्त्री श्री चव्हाण महाराष्ट्र के दौरे पर हैं। उन्हे वहा समाचार दिया गया। प्रधानमन्त्री इन्दिरा जी [illegible] की यात्रा पर गई हुई थी। [illegible] बीच में ही [illegible] राजधानी [illegible]

★ श्री अतसुशी उयामा भारतमे जापान के नए राजदूत नामजद किये गए हैं।

★ भारत सरकार ने निश्चय किया है कि रेल मडल के अतिरिक्त सदस्य रेल मत्रालय मे पदेन अतिरिक्त सचिव के रूप में भी काय करेगे।

[आ]र्य समाज, पुरानी मण्डी जम्मू

आर्य समाज पुरानी मण्डी जम्मू का वार्षिक निर्वाचन श्री प० जियालाल जी की अध्यक्षता में ६-४ ६९ को सम्पन्न हो गया और अन्य अधिकारी नियुक्त हुए हैं।

१ प्रधान श्री प्राध्यापक विजय कुमार जी एम ए। २ उपप्रधान श्री शम्भुनाथ जी तुली। ३ उपप्रधान श्री राम[illegible] जी, ४. मन्त्री श्री [illegible] जी खन्ना, ५। कार्यमंत्री श्री [illegible] जी ६ उपमन्त्री श्री [illegible] जी, ७ पुस्तकाध्यक्ष श्री [illegible], ८ कोषाध्यक्ष श्री [illegible] जी।

अन्तरिग सभा के सदस्य जोकि नियमानुसार सर्वसम्मतिसे नियत किए गए हैं।

१ श्री मान्य ला० मुलकराज जी सह २ श्री ला० कृष्णलाल जी बैंक वाले ३ श्री वर्मा जी बक वाले ४ श्री विद्यावती जी ५। श्री सुशीला जी तुली ६ श्री कपूर चन्द जी कपूर। —जगमोहन खन्ना

★ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और पत्रकार स्वर्गीय काशीनाथुनी नागेश्वर राव पतुलु के सम्मान मे डाक-तार विभाग १ मई १९६९ को एक विशेष डाक टिकट जारी कर रहा है। २० पैसे का यह डाक टिकट गहरे भूरे रग का होगा और उस पर नागेश्वर राव का चित्र अकित होगा।

श्री गिरि ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली

नई दिल्ली—मुख्य न्यायधीश जस्टिस हिदायतुल्ला ने ३ मई साय ४ बजे उपराष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि को कार्यकारी राष्ट्रपति के रूप मे शपथ दिलाई। यह रस्म राष्ट्रपति भवन के अशोक कक्ष में पूरी की गई।

श्री गिरि ने संविधान को बनाए रखने उसकी रक्षा करने और समर्थन करने तथा जनता की सेवा के प्रति स्वयं को समर्पित करने की शपथ ली। वह नेपाल [illegible] से लौटे थे। श्री गिरि सफेद चूडीदार पाजामा व काली अचकन पहने हुए थे।

शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमन्त्री श्रीमती गाधी शामिल नहीं हो सकीं। उपप्रधानमन्त्री श्री देसाई तथा अन्य केन्द्रीय मन्त्री और लोकसभा के अध्यक्ष इस अवसर पर उपस्थित थे।

जसे ही मुख्य न्यायाधीश ने शपथ दिलाई, बड ने राष्ट्रीय धुन बजाई। श्री गिरि ने श्री देसाई श्री सजीव रेड्डी तथा मत्रियो से हाथ मिलाए।

आ० स० रेलवे रोड अम्बाला

श्री भाई हरगोबिन्द सिंह जी की प्रधानता मे म० हंसराज जन्म दिवस २० अप्रैल रविवार अम्बाला आ० स० रेलवे रोड मे मनाया गया जिस में आर्य संस्थाओं, माडलटाउन प्रेम नगर आदि के अतिरिक्त जनता भी काफी संख्या में उपस्थित थी।

म० जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें ज्योति स्तम्भ कहा गया।

—शान्तिलाल मन्त्री

सक्षिप्त समाचार

★ राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की पांचवी बटालियन के कास्टेबल श्री रामनाथ सिंह को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान किया है।

★ श्री मोहम्मद फयल्लाह भारत मे लेबनान के नए राजदूत मनोनीत किये गए हैं।

डाकतार विभाग पहली मई १९६९ से बन्द आकार के नए डाक लिफाफ जारी करेगा। बीस पैसे मूल्य के ये लिफाफ आयतकार होंगे और इनकी लम्बाई १४ सटीमीटर और चौडाई ९ सटीमीटर होगी।

★ श्री लियो पियुस आदेरो को भारत मे केनिया का प्रथम उच्चायुक्त जन नामजद किया गया है।

साप्ताहिक आर्यजगत का वार्षिक चंदा आठ रुपये

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आयजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २०) ५ ज्येष्ठ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१८ मई १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

त्वं हि धनदा असि

हे परमेश्वर ! त्वं—आप ही सब प्रकार के धनदा-धन सम्पत्तियों को को देने वाले असि हो । धन के दाता प्रभो आप हैं ।

भाव :—वह भगवान राजा है, वही इन्द्र है । वह तमाम ऐश्वर्य का भण्डार उसी का है । सारी सम्पत्तियों का वही केन्द्र है । वही लक्ष्मीपति, श्रीपति एवं धनपति है । जो कुछ हम अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए मांगना चाहते हैं—वेद-माता लोरी देती हुई कहती है कि उसी इन्द्र से ही मांगो । प्रभु का प्यारा श्रद्धा भरे भावों में विभोर होकर कहता है, प्रभुदेव । आप ही धन के दाता हो । सारी सम्पत्ति को प्रदान करते रहते हो ।

य जु र्वे द से —सं.

वेदामृत

देववाहन महादेव है

ओ३म् वृषो अग्निः समिध्यते ऽ श्वो न देववाहनः । तं हविष्मन्त ईडते ॥

सामवेद उत्तरा. ७-२-२

अर्थ :—वह प्रमुख (वृष·) तमाम सुखों की वर्षा करने वाला है । (अग्नि:) ज्ञान स्वरूप है, वह (समिध्यते) प्रकाशित होता है (अश्व:) प्राण के (न) समान वह प्रभु (देववाहन.) सारे पृथिवी जल, वायु, अग्नि, सूर्य चन्द्रमा आदि देवों का धारक वाहक है । (तं) उस प्रभु को (हविष्यमन्त).) स्तुति करने वाले भक्तजन (ईडते) स्तुति करते हैं । स्तोता उसी का स्तवन करते हैं ।

इस मन्त्र का भाव यह है

वेदमाता का प्यारा २ उपदेश है कि लोगो ! सदा स्मरण रखो कि वह भगवान् वृष है—सदा सभी पर सुखों की वर्षा करता रहता है । वह ज्ञान स्वरूप है । हमारे शरीर में जैसे प्राण महान् देव बन कर बाकी सारे आंख, कान, रसना आदि देवों को धारण करता है । उसी प्रकार भगवान् ही विश्व के सारे देवों का धारक है । वही महादेव है । जो प्रभु प्रेमी होते हैं । भगवान् की निष्ठा वाले है—वे सभी उसी देववाहन की स्तुति करते रहते हैं ।

—सम्पादक

ऋषि दर्शन

पापाय पर पीड़नम्

अर्थ —पापाय—पाप के लिए है पर-पीड़नम्—दूसरो को सताना तपाना पाप कहलाता है ।

भाव —व्यास मुनि जी ने अपने महान् ग्रन्थ महाभारत में उपदेश देते हुए मनुष्यों को कहा है—कि दूसरों को कष्ट पहुंचाना पाप है और जो भी किसी जीव को, प्राणी को कष्ठ देता है, सताता है या अपने किसी स्वार्थ के लिए उनको दु ख देता है । वह पापी है । ऐसा कार्य उसका पाप की गिनती में आता है । किसी को मत सताओ वर्ना पापियो की श्रेणी में गिने जाओगे । पर पीड़ा ही सबसे बड़ा पाप है । यह पाप जीवन में नहीं करना चाहिए । पापी मत बनो ।

म हा भा र त से—सं.

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच०डी० (सभा मन्त्री) | सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

युवकों को क्या करना है

(श्री करनैल सिंह विद्यार्थी)

आर्य युवक संगठन क्या है ? इस मे, दूसरे सब सगठनो से विशेषता क्या है ? आर्य युवक संगठन मे हम सब युवक क्यो आए, क्या करने आए, इस सम्बन्ध मे पहले भाग मे युवको ने पढा ही होगा यदि इस सगठन मे द्वारा किसी युवक के जीवन मे थोडी-सी भी अच्छाई आ जाए तो भी प्रादेशिक आर्य युवक सगठन अपने प्रयत्न को सफल समझेगा। खासकर आर्य सस्थाओ, डी ए. वी स्कूल के युवको मे।

सभा लगाएं, बैठक बुलाएं

अपने प्यारे प्रत्येक सगठन से जो बन चुका है, मे मैं यहा यही कहना चाहूगा कि वह अपनी बैठक (प्रति सप्ताह मे दो बार या एक बार जैसा भी मुनासिब समझे), करे। प्रत्येक बैठक मे पिछली बार (पहली हुई) (**meeting**) के कामो की ओर देखे, उनकी पडताल करें कि सब काम जो करने के लिए निश्चय किया गया था हुए है या नही (जैसे, नए युवको को मिलना, आर्यजगत मे अपनी गतिविधि भेजने के सम्बन्ध मे अथवा प्रादेशिक युवक सगठन से पत्र व्यवहार के सम्बन्ध मे अथवा अपना धार्मिक सत्सग करने के बारे, उसमे भाषण देने वाद विवाद, आदि के मे) इस आवश्यक बैठक मे आपके सब कार्य-कर्ता उपस्थित होने चाहिए। इस बैठक मे अपने धार्मिक सत्सग मे न आने वाले अथवा कम आने वाले युवको को और प्रेरणा देने के बारे मे भी सोचना चाहिए।

धार्मिक सत्संग

आर्य युवको को चाहिए कि वे अपने प्रत्येक सत्सग को बडे प्रेम, स्नेह व लग्न से लगाए। जिस मे आप भजन, सन्ध्या (या ईश्वर-स्तुति के मन्त्रो का पाठ) व किसी युवक का अथवा बडे का थोडे समय तक का उपदेश करें, करवाये। यदि कोई उपदेश देने वाला न मिले तो किसी महापुरुष की पुस्तक मे पाठ ही कर ले। बाद मे शान्ति पाठ।

यहा मे अपने प्रत्येक भाई, युवक से यह कह देना उचित समझूंगा कि वो इस उक्त बताये कार्य को व्यर्थ ही न समझे, मखौल ही न समझे। मैं यह दावा है कि जो भी युवक प्रेम पूर्वक उक्त सत्सग में एक मास सम्मिलित होकर प्रत्येक कार्य-क्रम में लग्न से हिस्सा लेता है वह युवक अब आर्य युवक बन जायेगा यदि उस में काफी अच्छाई यदि न आए तो मुझे कह दे कि तुम ने झूठ कहा है। यह एक ऐसी सच्चाई है जो आर्य युवक ही समझ सकते हैं। उस युवक का जीवन बदल जायेगा, वह जिस काम को भी करने के लिए प्रयत्न करेगा सफल और अच्छी तरह सफल होगा। जिस प्रकार आग के पास बैठने से सरदी धीरे-धीरे दूर होने लगती है और गर्मी धीरे शरीर मे आने लगती है ऐसे ही इस सत्सग के समीप आने से कई तरह की सरदी दूर होने लगती है और अच्छाई रूपी गर्मी शरीर मे आने लगती है।

धार्मिक सत्संगों का फैलाव—

अब यदि १० युवको मे ज्यादा युवक आर्य युवक हो गए हैं तो आप अपने सत्सग को अपने घर से बाहिर ले आए यानि सप्ताह मे एक दो बार सत्सग अपनी समाज से बाहिर किसी और जगह पर लगाए और लोगों को युवक सगठन की अच्छाइयो के बारे मे बताए आर्यसमाज के गुणो का वर्णन करे (अच्छा तो यही होगा कि आपके प्रत्येक युवक का जीवन, चाल चलन ही स्वच्छ प्रचारक होना चाहिए।

साहित्य युवकों को दें

प्रत्येक आर्यसमाज से आपको अच्छा साहित्य मिल सकता है। कुछ ट्रैक्ट जो वहां से मुफ्त बांटने के लिए आपको मिल सकता है वह युवको में बांटें। 'आर्य जगत' साप्ताहिक पत्रिका इस काम के लिए सर्वोत्तम हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप आर्य युवको को कुछ पुस्तकें आर्यसमाज से लेकर पढने दें। साहित्य से क्या मिलता है यह आपको पढने से ही मालूम होगा।

गतिविधिया भेजें :

अपने युवक सगठन की (इस उक्त लिखित) प्रत्येक अच्छाई को सूचनार्थ प्रादेशिक आर्य युवक सगठन **c/o A.P.P.** के नाम भेजें। यदि कोई चीज प्रकाशनार्थ होगी तो वो जरूर प्रकाशित की जाएगी। प्रत्येक नए युवक की लग्न, उत्साह भी भेजे। प्रत्येक नए कार्य उनकी सफलता भी भेजें। यानि मासिक रिपोर्ट भेजें।

ऋषि उपकार

ज्योति ज्योत में रच गई, ऋषि वे थे महान्:
तू भी मन में याद कर, करता सब जहान्।
पाप को जड़ से उड़ा दिया, वैदिक नाद बजा दिया,
सत्य की बात सत्य ही कर, हमको सत्य सिखा दिया।
उसकी राह पे आज चल, चलता सब जहान्।
तू भी मन में याद कर ... ...

ब्रह्मचर्य के अन्दर, करते वेद प्रचार थे,
पाखण्डी आगे टिक न सके, कितने प्रबल विचार थे।
तू भी उनकी राह पे चल, चलता सब जहान्।
तू भी मन में याद कर ... ...

उनके बल का पार नहीं, प्रचारमें भी कोई चाल नहीं,
करना है विश्व कल्याण हमें, इसके बिना काम नहीं।
'सुरेन्द्र' उनकी राह पे चल, बनता क्यों नादान।
तू भी मन में याद कर... ... ...

आर्य जगत् को बांटो

'आर्य जगत्' को प्रकाशित करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि यह प्रत्येक उमर वाले व्यक्ति के लिये उपयोगी हो। बच्चों से लेकर बूढ़े तक के काम आने वाली बातों को इस में स्थान दिया जाता है। प्रत्येक बच्चे बूढ़े, युवक को चाहिए कि वो स्वयं इसे ध्यान से पढ़े तथा औरों को पढ़ने के लिए दे। समर्थशाली व्यक्ति इसको मुफ्त बांटे। प्रत्येक बार आपको आवश्यकता से ज्यादा प्रतियां मंगवायें और उनको बांटें मुफ्त बांटें या आधी कीमत पर बांटें। बड़े परिवार वाले व्यक्ति इसको एक से ज्यादा मंगवायें और घर के बच्चे, बूढ़ों को पढ़ायें। बच्चों को इस में अपनी फोटो भेजनी चाहिये तथा में अपनी रचनायें भी।

आज कल के जमाने में साहित्य का बड़ा ज़ोर है। जिसके पास ज्यादा साहित्य है, जो ज्यादा साहित्य बांटता है उसका ज्यादा प्रचार होता है। क्योंकि साहित्य लिखित रूप में प्रचारक का काम करता है।

बड़ी समाजों से निवेदन है कि वो अपने सत्सग मे सूचनाओं के साथ यह भी सूचना दे दिया करें कि **१६ पैसे केवल** में जो भी सज्जन आर्य जगत लेना चाहे ले ले। इस प्रकार आपकी कितनी ही 'आर्य-जगत' की प्रतिया लोगों के हाथो में जाएगी और वो आर्य-समाज के समीप आएंगे।

यदि आप युवकों मे आर्य जगत बांटेंगे तो युवक इसके नजदीक आएगे यह हमारी **Surity** है। अत: 'आर्य-जगत' को बाटो, ज्यादा से ज्यादा बाटो।

सुरेन्द्र—करनैल—रवीन्द्र

अपने सुझाव भेजें

'आर्य जगत' आपका अपना पत्र है इसमे जो भी अच्छाइयां है वह सब आपकी हैं और जो भी त्रुटियां हैं वह सब हमारी हैं। इसको बढ़िया, रोचिक, आपका प्यारा बनाने के लिए हम सब कोशिश करते हैं फिर भी इसमे जो भी त्रुटि आप पाठकगण की नजर में आयें अथवा इसको और भी रोचिक, बढ़िया आर्य समाज का प्रचारक बनाने के लिए आपको कोई भी कमी नजर आए या कोई और नया सुझाव देना चाहे तो जरूर 'आर्य जगत' को अपना समझ कर नि:संकोच भेजे। आर्य जगत को बढिया बनाने वाले आपके प्रत्येक सुझाव का हम स्वागत करेंगे। आपके पत्र हम 'सम्पादक के नाम' के शीर्षक के नाम के नीचे प्रकाशित करेंगे।

—करनैल, सुरेन्द्र

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, १८ मई, १९६९ [अंक १९

यह अश्लील साहित्य

साहित्य का मानव जीवन पर बडा प्रभाव पडता है। प्रत्येक साहित्य में कोई न कोई विचार भरा होता है। जैसे उसके विचार मे मनुष्य अपना जीवन बिताता है वह उसी प्रकार का बन जाता है। यदि साहित्य उत्तम है तो जीवन भी उसी प्रकार का बन जाता है और यदि साहित्य ऐसा-वैसा होगा तो उसका प्रभाव भी उसी प्रकार का होगा। व्यक्ति, परिवार, समाज एव राष्ट्र के जीवन निर्माण के लिए उत्तम साहित्य का लिखना, पढना, प्रचार करना बडा आवश्यक है। यही कारण है कि हमारे महापुरुषो ने साहित्य की ओर बडा ध्यान दिया है। चाहे वह पुस्तको के रूप मे हो अथवा किसी और रूप मे। यह साहित्य वीरता की भावना भर देता है, आचार की सुगन्धि पैदा करता है तथा मानवता की ज्योति भर देता है। यही साहित्य यदि आचार से गिरा हो, विलास व श्रृगार की वासना भरने वाला हो तो इससे केवल एक व्यक्ति ही नही सारा राष्ट्र ही विनाश के कगार पर खडा हो जाता है। यही कारण है कि राष्ट्रीय विधान एवम देश जीवन में आचार सहिता को बडा ऊचा स्थान प्राप्त है। यदि कोई बालको, युवको और नरनारियो के सद्‌विचारो को बिगाडने वाले साहित्य लिखने वाला व्यक्ति अपराधी होता है। अग्नि उतना राष्ट्र की हानि नही पहुचा सकती जितना कि जीवन गिराने वाला साहित्य राष्ट्र को मार करके रख देता है। हमारे भारत के ऋषियो ने इस बात पर विशेष बल दिया है। अश्लील चित्रो का दर्शन करना, अश्लील पुस्तकों का, पढना, विकार पैदा करने वाले समाचारपत्रो मे ही जिसकी आंखें तृप्त होती हैं तथा अश्लीलता भरे ग्रन्थ जिनकी मेज पर रखे हुए हों—जो सिनेमा घरो मे जाकर शृंगार के वातावरण मे मौज अनुभव करता हो तो उसके जीवन की दिशा और दशा का पूरा अनुमान किया जा सकता है। साहित्य मानव को देवता बना देता है और यही दानव भी बना देता है। भारत के पुरातन युग मे सत साहित्य के सृजन का पूरा ध्यान रखा गया है। इसी-लिए हमारे देश मे जितना भी बढिया साहित्य मिलता है वह सारे विश्व की थाती है, अमर भण्डार है, जीवन ज्योति है। आदर्श का केन्द्र है। इस समय स्वाधीन भारत मे साहित्य की जितनी मिट्टी पलीद हो रही है उतनी किसी और की नही। जितना अश्लील साहित्य इस समय लिखा जा रहा है। इससे देश के जीवन पर जितना बुरा प्रभाव पड रहा है, नैतिकता का जितनी तीव्रता से पतन हो रहा है और अनाचार का प्रवाह जितने वेग से वह रहा है—उसे देख कर दिल काप उठता है। सिनेमा के प्रचार के लिए कैसे-कैसे नग्न व अश्लील चित्र बना कर उनका प्रचार होता है। अश्लीलता से भरे समाचार पत्र प्रकाशित होते है जिनको देखकर लाज को लाज भी आने लगती है। अनाचार को प्रसारित करने वाली पुस्तके प्रकाशित हो रही है। युवा पीढी के विचारो की क्या अवस्था है? नैतिकता का कितनी बुरी तरह से दिवाला निकलता जा रहा है यह भारत का अभागापन है।

आर्य समाज इस अश्लीलता भरे हर प्रकार के बुरे साहित्य को रोकने रुकवान के कार्य आन्दोलन मे भी अपनी ताकत पूरी लगाता है। इसके आचार सम्मेलन इसीलिए हैं। इन दिनो तो साहित्य बहुत ही निम्नकोटि का छापा जा रहा है। सारा समाज विशेष सक्रिय होना चाहिए। इस प्रवाह को पूरी शक्ति से रोकना चाहिए। बडी ही प्रसन्नता की बात है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई देहली के जागरूक मन्त्री श्री ला. राम गोपाल जी शाल वाले **M. P.** ने इस दिशा मे विशेष कदम उठाते हुए गृह मन्त्री मान्यवर श्री० चवन को एक विशेष पत्र लिख कर सरकार की ओर से ऐसे अश्लील साहित्य पर रोकथाम लगाने मे सक्रिय हो। श्री. गृहमन्त्री जी का इस पत्र के उत्तर मे आशावर्द्धक पत्र आया। इस विषय की ओर विशेष ध्यान देने का विश्वास दिलाया है। प्रसाद का विषय है कि आर्यसमाज अश्लील साहित्य के विरोध मे खडा हो गया है। इस समय जीवन को नैतिकता से गिराने वाला ऐसा अश्लील साहित्य नगे चित्रो के रूप मे, नग्न साहित्य की शक्ल तथा बहुत २ गन्दी २ पुस्तको के प्रकाशन से सामने आ रहा है, उसको पूरी शक्ति लगाकर रोकना होगा। यदि इस समय इसे न रोका गया, इसके विरुद्ध प्रबल आदोलन न किया गया तो राष्ट्र के जीवन का ऐसा भयकर पतन होगा कि जिसका अनुमान भी नही लगाया जा सकता। युवक हो या युवतिया, बच्चे हो या अन्य—सबके हाथो मे ऐसा साहित्य देना चाहिए, जिससे व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के निर्माण मे पूरा२ सहयोग मिल सके। हम आर्यसमाजो से अनुरोध करेगे कि वे अश्लील साहित्यको रोकने के लिए पूरी शक्ति लगा देवे—

—त्रिलोक चन्द्र

आर्य समाज की विजय

आर्यसमाज के बलिदान ने, तप त्याग ने वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार मे वह शानदार काम किया जिसका प्रभाव इतिहास मे अमर बना रहेगा। अपने विचारो के प्रचार मे इसके दीवानो मस्तानो को कितने कष्ट उठाने पडे, क्या क्या अपने ही लोगो से यातनाए सहनी पडी तथा कटु वचन गालिया तक सुननी पडी—जिस से आर्यसमाज का सारा इतिहास भरा हुआ है। परन्तु सब कुछ सहन करते हुए आर्यसमाज अपने सिद्धान्त-वाद के पथ पर आगे ही आगे बढता गया। जिन बातो पर बडे-बडे शास्त्रार्थ होते थे—उन बातो को सारे सम्प्रदायो ने अपना लिया है। वे सारी बाते अब उनकी आस्था की अग बन चुकी हैं।

अभी-अभी जगद् गुरु शकराचार्य जी पुरी ने छूतछात के बारे मे पटना मे विश्व हिन्दु सम्मेलन मे कुछ विचार प्रकट किये। उनका कोने-कोने से विरोध किया गया। उनके बारे मे ससद मे बडी कडवी बाते भी कही गई हैं। उनका अभियोग भी चल पडा है। सभी ने जन्मना छूतछात का कडा विरोध करते हुए इसे अवैदिक बताया है। सब गुण कर्म स्वभाव से वर्ण माना है। जन्म से सभी समान हैं। कोई छोटा नही और कोई बडा नही। वेदो मे, भारतीय सस्कृति मे कही भी छूतछात का विधान नही पाया जाता। इस अस्पृश्यता के विचारने भारत को बडी हानि पहुचाई है। आज देश को जिन अनेक दुखो विनियो का सामना करना पडा है—इनमे से जन्मना वर्ण की विचारधारा भी इस पतन का का एक बडा कारण है। भारत के सविधानमे किसी प्रकार की अपपृश्यता के लिए कोई भी स्थान नही रखा गया। सभी के समान अधिकार माने गए है। जगद्‌गुरु शकराचार्य जी के छूतछात विषयक प्रवचन का सभी ने विरोध किया है। जिस सिद्धात का प्रचार आर्यसमाज अपने जीवन के प्रारम्भ काल से करता चला आताहै। आज वही सारा भारत बिना किसी भेदभाव के कहने लगा है। यह वैदिक धर्म की सबसे बडी विजय है। आर्य समाज ने जिस बात के लिए लाठिया खाई, अपने जीवन से कई स्थानो पर हाथ धोये, हर प्रकार का कष्ट सहन किया। आज उसी सिद्धात को सबने सिर झुकाकर स्वीकार कर लिया है। यह देवदयानन्द की भारी विजय हैं। विश्व वेद मार्ग पर आ रहा है।

आर्य नेता देवीदास आर्य

सारा आर्य समाज आर्य समाज गोबिन्द नगर कानपुर उत्तर प्रदेश के मान्य, वीरवर आर्य नेता श्री देवीदास जी आर्य पर सदा मान गर्व करता रहेगा। समाज व आय कन्या हायर सेकडी स्कूल गोविन्द नगर के तो आप स्तम्भ है ही। कानपुर कारपोरेशन के भी मान्य स्तम्भ सदस्य है। साथ-साथ हमे जो इन पर सब से बडा गौरव है वह श्री आर्य जी के सारे परिवार मे आर्यत्व की भावना व अनथक लगन। आर्य समाज मे तो बडे-बडे परिवारो का प्रवेश है किन्तु ऐसे विरले परिवार है जिन मे आर्य समाज का प्रवेश है। इनके घर के प्रत्येक परिवारी मे आर्य समाज का सच्चा प्रवेश है। गोविन्द नगर का समाज समारोह तक एक कन्या स्कूल की इतनी शानदार प्रगति पर मन गद-गद प्रसन्न हो जाता है। बडी विशेषता श्री आर्य जी के जीवन मे निर्भीकता है। कानपुर के हिन्दुपरिवारो मे जिन हिन्दु लडकियो को मुसलमान ले जाते है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मानव ! तू कितना क्रूर है ?

श्री रघुवीरजी मुमुक्षु व्या. आचार्य वेद विद्यालय गु.कु.कांगड़ी

मानव, कितना रहस्य भरा है इस शब्द मे। उस जगत पिता निर्माता की सर्वश्रेष्ठ कृति, अहो ! इसका सौंदर्य, इसकी महानता, इस की शरीर रचना, इसकी बुद्धि सभी कुछ विलक्षण है। दूसरे प्रणियो मे यह बाते कहा ? सचमुच मानव विलक्षण है किन्तु...। उपनिषद मे कथा आती है परमेश्वर ने हाथी, घोडे, ऊट सभी जीवो के शरीर बनाये किन्तु जीव को वे शरीर पसन्द न आये अन्त मे प्रभु ने मनुष्य का शरीर रचा। मनुष्य शरीर देखते ही वे हर्ष से उछल पडे तथा कहा, 'अहो रूप लावण्य महो रूप लावण्यम्' इतना कह कर वे मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट हो गये।

इस कथानक के द्वारा उपनिषद का ऋषि यही कहना चाहता है कि मानव शरीर सभी प्राणियो मे श्रेष्ठ है। श्रेष्ठ तो है किन्तु यही मानव— 'धर्मेण हीना पशुभि समाना' धर्म से हीन तो पशु तुल्य ही है। केवल पशु तुल्य ही नहीं अपितु महर्षि के शब्दो मे—जो मनुष्य होकर भी पशुओ के समान क्रूर कर्म तथा अधर्म करता है वह मानो पशुओ का भी बडा भाई है : जहा इस मानव की महानता हम देखते हैं वहा जरा क्रूरता, पशुत्व पर भी एक नजर डाल लीजिए—

मानव दूध पीता है। घी खाता है। किस लिए ? स्वस्थ्य के लिए। किन्तु दूध घी ही नही वह तो . । वह तो पशुओ को भी नही छोडता। हरे हरे ! मानव पशु को भी चबा डालता है। परम पिता ने असख्य पदार्थ मानव के खाने को रचे किन्तु यह क्रूर मानव तो पशुओ के द्वारा ही अपनी उदर कबर भरने लगा ? काट कर तो खा ही जाता है किन्तु दूसरे अप्रत्यक्ष रूप मे भी पशुओ को खाता है। अपने को शाकाहारी कहने वाले भी परोक्ष से पशु हत्या करने है। कैसे ? गाय का स्वस्थ बच्चा। दूध निकालने के समय गाय बच्चे को देखकर हुकार करती है। बच्चा आशा की दृष्टि से मा के मुख को देखता है। किंतु ऐ क्रूर मानव ! तू गाय का, बच्चे की मा का दूध निकालते समय सारा दूध अपने उदर के लिए निकाल देता है। बच्चा. मा का प्यारा बछडा मन को मारकर रह जाता है। दिन बीते। बच्छा शनै-शनै जीर्ण हो गया। अरे ! आज तो वह मरणा सन्न है। लो आज वह मर ही गया। क्यो मरा ? दूध न मिलने से। किन्तु मानव ! तुझे अभी सन्तोष नही हुआ। तूने उसकी खाल निकलवायी। उसमे भूस भरवाया तथा गाय को ठगने के लिए उसके सामने खडा कर दिया। हायरे छलिया ! तुझे शर्म न आई। दूध के साथ ही तूने निर्दोष बच्चे की जान भी ले ली।

(२) एक पक्ति में लाखों गाय खडी हैं। उनके हाथ पैर मुह सभी कुछ बधा है। सभी तरह से अशक्त। ऊपर से गर्म पानी के नल उन की पीठ पर खौलता पानी छोड रहे हैं। उन की पीठ पर बैंते पड रही हैं। खाल मास मे अलग हो गई। सामने हरा हरा घास डाल दिया गया। किंतु यह क्या हुआ एक मिट मे बटन दबाया कि सबकी खाल खिच कर अलग हो गई। त्वचा बिना अस्थि-पजर खडा है। प्राण शेष हैं। यह खाल क्यो खिची ? इस से कुरम बनेगा। बाबू जी ३०) ३५) का जूता इसी कुरम का खरीदकर शान से मुह ऊचा किए बाजार मे फिरेंगे। अरे निर्दयी मानव ! मानवता कहा गई ? तेरे पैर मे काटा लगता है तो 'सी' निकलती है गरम पानी मे हाथ डालने से हाय होती है। किन्तु क्या इन मूक प्राणियो मे जीव नही, जिनके प्राण निकलने से पहले यो तू खाल खींच लेता है। हाय रे स्वार्थी, तेरा सत्यानाश हो।

(३) गाडी मे भैंसा जुडा हुआ है। ज्येष्ठ मास की कडकती हुई धूप। गाडी मे सामान भरा है भैंसा भूखा है प्यासा भी है किन्तु साथ ही साथ गर्मी से व्याकुल है। जीभ मुह से बाहर निकली है। गाडी रेत मे रुक गई। भैंसा चलने मे अशक्त है किन्तु तभी चालक का कोडा गुजार करता हुआ भैंसे की पीठ पर आ पडता है। अरे— क्रूर मानव ! क्या तूने सोचा है कि इस पशु को भूख लगी है या प्यास ! क्या तेरे जैसा आत्मा इसमे नही ? चालक भी क्या करे ? वह तो उन पेटू लोगो के लिए कमा रहा है जो पखो के नीचे लेटे-लेटे, पेट फुलाए निकम्मे बने, गरीब मजदूर का खून चूसते रहते हैं।

(४) बाबू जी भोजन कर रहे हैं। पास मे ५००) का कुत्ता भी दूध पी रहा है। किन्तु तभी एक दूसरा कुत्ता आता है। शरीर मे खाज है। मुह से राल टपक रही है। खुजलाता हुआ बेचैन हुआ आता है। किसलिए ? तुझ से एक टुकडा लेने के लिए। शरीर में घाव हैं। मक्खिया भिनभिना रही हैं। रोटी के टुकडे की आशा। मूक फकीर। बिना झोली का फकीर। किन्तु बाबू जी...! कुत्ते को देखते ही बाबू जी नौकर को आदेश देते हैं 'दूर भगा दो इसे' नौकर बेचारा पैसे का गुलाम। जोर से एक लट्ठ कुत्तेकी पीठ पर लगाता है। कुत्ता छटपटाता हुआ यमपुर की राह लेता है। अरे हत्यारे ! तेरे कुत्ते तो दूध पीते हैं क्या उस बदनसीब को एक टुकडा भी नही दे सकता था। नही देना था तो बेचारे के प्राण क्यो ले लिये ? यह कर्म फल भोग रहा था। क्या तुझे यह पाप फल नही भोगना पडेगा। जिस पत्नी के पुत्र के रूप लावण्य पर तू आज मुग्ध है उन्हे कल को कोढ हो जाए तो क्या करेगा ? निर्दयी ! मूक प्राणियो पर दया कर !

(५) कारखाने मे मजदूर कार्य कर रहा है। तन पर कपडा नही। रात खाने को भी नही मिला। शरीर सर्दी से काप रहा है। मालिक आया, गरज कर पूछा देर करके क्यो आये बाबूजी? मालिक फिर गरजता है, उत्तर दो। गिडगिडाता हुआ नौकर बोला 'बाबू जी घर मे बच्चे बीमार थे' अरे यह क्या होने लगा। दमादम नौकर पर बाबू जी की बैंते पडने लगी। प्राण पखेरू उड गये। घर पर बच्चे बीमारी से चल बसे। पत्नी अनाथ हो गई। अरे दयाहीन बाबू ! इस दुखिया की हाय से क्या तू नष्ट नही होगा ? क्या मजदूर तेरे जैसा जीव नही था? थोडे दिन मे तू भी नष्ट होने वाला है।

(६) भाद्रपद की तीव्र प्रचण्ड दोपहरी मे किसान हल जोत रहा है। स्वय भूखा। बैल भूखे। बैलो के मुख बधे है। दनादन कोडा पटक रहा है। प्रात आया था दोपहर हो गई। यह लो बैल का जीवन समाप्त हुआ। किसान की मानो दक्षिण भुजा टूट गई। दिन रात कमाता है फिर भी गरीब को पेट भर खाने को नही। इसका पाप किस पर ? फसल आने पर किसान की फसल को सस्ते दामों पर लेकर बाद मे दुगने तिगने दामों पर बेचने वाले दुष्ट पर इसका पाप है। यह पेटू बिना कमाए मौज लेता है। किसान भूखा नगा रहता है।

पाठकवृन्द ! जो-जो उदाहरण मैंने लिखे हैं मेरी कल्पना का परिणाम तो नही ? क्या प्रतिदिन जीवनमें आप इस प्रकार की घटना नही देखते ? अन्तरात्मा से आवाज आती है क्या यही मानवता है ? क्या इस प्रकार के दुष्कर्मों के लिए ही यह सुन्दर शरीर मिला है। सोचिए तो सही, दया, धर्म के बिना इस मानव का क्या मूल्य है। मानव तू स्वतन्त्र है कुछ भी कर, किन्तु जरा ध्यान दे इस वाक्य पर—

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
तत सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति ॥ (मनु०)

अधर्मात्मा पुरुष धर्म की मर्यादा छोडकर छल, कपट, पाखण्ड अन्याय आदि के द्वारा पहले तो बढता है, शत्रुओं को जीतता है किंतु बाद मे जड सहित नष्ट हो जाता है। कुछ भी कर तू स्वतन्त्र है किंतु बाद मे याद रख, इसका परिणाम बडा भयंकर होगा। वह तुझे भुगतना पडेगा। कोई भी परमात्मा की न्याय व्यवस्था से तुझे नही बचा सकता। तेरे क्रूर कर्मो का दण्ड मिलेगा अवश्य मिलेगा। मौज करले। अत्याचार कर ले। किंतु यह मौज थोडे दिन की है। यह विवाद सुख अति स्वल्पकाल का है। धन विद्युत की भाति चञ्चल है। रूप बादल के समान है जिसे बुढापा उडा ले जाता है। अन्त मे तेरी गठरी में शेष रहते हैं तेरे शुभ कर्म या अशुभ कर्म। इनके साथ ही तुझे परलोक जाना होगा। तेरे अभद्र कार्यों को देख कर ही प्रश्न होता है—मानव तू कितना क्रूर है।

ऋषि दयानन्द की राष्ट्र भावना

डा० भवानी लाल भारतीय

१९ वी शताब्दी मे पुनर्जागरण का जो आदोलन प्रारम्भ हुआ, उसकी प्रत्येक प्रवृत्ति मे राष्ट्रीयता का भाव विद्यमान था। राम मोहनराय मे यह अत्यन्त क्षीण रूप मे दिखाई देता है। उन्होने धर्म और अध्यात्म की दृष्टि से यद्यपि पश्चिम के महत्व को स्वीकार नही किया, परन्तु अन्य अनेक बातो मे वे यूरोपीय जातियो का ऋण स्वीकार करने के लिए तैयार थे। हमने अपनी राजा मोहनराय विषयक पुस्तक मे इस पर पर्याप्त विचार किया। हिन्दू पुनरुत्थान के दूसरे सचालक स्वामी दयानन्द मे राष्ट्रीयता की यह प्रवृत्ति प्रवृद्ध और प्रोज्जवल रूप मे प्रकट हुई है। कन्हैया लाल मुन्शी लिखते हैं 'भारत मे ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित होने के बाद, दयानन्द सरस्वती के साथ राष्ट्रीयता की पहली मजिल का उदय हुआ। १८५७ के विद्रोह की असफलता मे निहित अपमान से परितप्त, उन्होने ही सर्वप्रथम राष्ट्रीयता का विकास किया। वास्तव मे उनके प्रयत्नो ने हिन्दू धर्म के पुनरुद्धार का रूप ग्रहण किया, और इसी कार्य मे वे नई राष्ट्रीय भावनाए भी सहायक हुई जो योरुप मे प्रबल होती जा रही थी। दयानन्द की प्रेरणा मे धर्म राष्ट्रीयता के ओत प्रोत हो गया।'

प्रसिद्ध इतिहासकार जयचन्द्र विद्यालकार ने सर्व-प्रथम यह मत व्यक्त किया कि १८५७ के स्वातन्त्र्य समर का दयानन्द ने ही सूत्र सचालन किया था उनके इस सत मत को उन्ही के शिष्य श्री पृथ्वीसिंह महता विद्यालकार ने अधिक विशद रूप मे व्यक्त किया। श्री महता ने अपने विचार की पुष्टि मे जो तर्क उपस्थित किये हैं उनको हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं—

(१) गगा के किनारे के स्थानो मे भ्रमण करने के पश्चात स्वामी दयानन्द नर्मदा के उद्गम स्थल तक गये। उसके पश्चात वे लगभग ३ वर्ष तक कहा रहे, उसका कुछ पता नही चलता। ये ही दिन १८५७ की उथल-पुथल के थे। दयानन्द जैसे तेजस्वी और भावुक सन्यासी के लिए इस स्वतन्त्रता सग्राम से पृथक रहना सर्वथा असम्भव था। अत. अवश्य ही वे गुप्त रूप से इस आदोलन का सचालन कर रहे थे।

(२) १८५७ के युद्ध मे साधु सन्यासियो ने नीति निर्माण के कार्य मे भाग लिया था। स्वातन्त्र्य युद्ध के सेनानियों के सदेशो के आदान-प्रदान मे भी इन लोगो ने भाग लिया था। साधारणत: सासारिक बधनो से मुक्त समझे जाने के कारण इन लोगो के लिए यह सहज ही विश्वास नही किया जा सकता कि ये ऐसा कार्य गुप्त रूप से करते होगे।

(३) मथुरा मे गुरू विरजानन्द जैसे तेजस्वी सन्यासी के चरणो मे बैठ कर दयानन्द ने देश सेवा का व्रत धारण किया और उनसे स्वदेश कल्याण के लिए सम्पूर्ण जीवन लगा देने की दीक्षा ग्रहण की।

इन इतिहासकारो ने स्वामी दयानन्द के क्रातिकारी रूप के सम्बन्ध मे जो सम्मत्ति व्यक्त की है, उससे केवल सब विद्वान् सहमत नही हैं। फिर भी इस तथ्य को स्वीकार करने मे इतिहासकारो को कुछ भी विपत्ति-नही है कि दयानन्द ने ही भारत के राजनैतिक स्वातन्त्र्य का स्वप्न देखा था और उनकी वाणी मे ही सर्वप्रथम लोगो को विद्रोह का स्वर सुनाई पडा था। दयानन्द के कार्यों और वचनो मे इस तथ्य को भली प्रकार सिद्ध किया जा सकता है। उनके भाषणो और लेखो, उपदेशो तथा प्रवचनो मे भारतीय राष्ट्र के पुरातन गौरव और उसके वर्तमान अभ्युत्थान के सुर प्रबलता से गूज रहे है। चाहे हम सत्यार्थ प्रकाश के किसी प्रकरण को पढे, या आर्याभिविनय की किसी प्रार्थना पर मनन करे, अथवा गोकरुणानिधि के लेखन की मूल प्रेरणा पर विचार करे या उनके पूना के व्याख्यानो पर दृष्टिपात करे। हमे सर्वत्र ही दयानन्द की उस शुभ और उज्जवल राष्ट्र-भावना के दर्शन होगे जिसने भविष्य मे मे अनेको के लोग को देशोद्धार के लिए मर मिटने की प्रेरणा दी।

देशोद्धार का उनका एक निश्चित कार्यक्रम था। उसी को पूरा करने के लिए उन्होने दिल्ली मे स्वदेश के विभिन्न नेताओ को एकत्रित किया और उन्हे राष्ट्रीय उत्थान के लिए कार्यक्रम बनाने की उत्तेजना दी। इसी के लिए वे अपने जीवन के अन्तिम भाग में राजस्थान के विभिन्न क्षत्रिय राजाओ से सम्पर्क स्थापित करते रहे। उन्होंने उदयपुर के महाराणा और शाहपुरा के अधीश्वर को मनुस्मृति और शुक्रनीति के राजनीति विषयक अश पढाए और उन्हे प्रजापलन मे ध्यान देने के लिए सावधान किया। जोधपुर के प्रशासक स्व० महाराजा सर प्रताप को उन्होंने जो प्रेरणादायक एवं स्फूर्ति जाग्रत करने वाले पत्र लिखे हैं वे इस बात के परिचायक हैं कि स्वामी जी को इन देशी नरेशो से क्या-क्या आशाए थी? यद्यपि राजपूत राजाओ की विलासता और उनके आलस्य एवं प्रमाद ग्रस्त होने के कारण स्वामी जी की आशाए धूमिल हो गई थी, फिर भी उनका दृढ विश्वास था कि यदि समस्त देशवासी एक धर्म, एक उपासना और एक भाषा के उपासक बन जाए और उनके आचार, व्यवहार तथा रहन-सहन मे एकता का समावेश हो जाए तो राजनैतिक स्वाधीनता उनसे अधिक दूर नही रहेगी।

अभी ऋषि दयानन्द के इस राष्ट्रीयता के उन्नायक भाव का अध्ययन किया जाना शेष ही है। प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार प० सत्यदेव विद्या-लकार ने यद्यपि अपनी पुस्तक राष्ट्रवादी दयानन्द के द्वारा महर्षि के इस स्वरूप का यतकिचित परिचय हमे दिया है, परन्तु इस बात की आवश्यकता है कि ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व और वागमय मे निहित सभी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो का धार्मिक विवेचन हो।

जहा एक ओर स्वामी दयानन्द अतीत आर्यावर्त के गौरवपूर्ण इतिहास की स्मृति दिलाकर भारतीय राष्ट्र को उद्बुद्ध और सप्रणाम करने की चेष्टा कर रहे थे, वहा ब्रह्म समाज के तृतीय नेता केशव सेन अपनी पाश्चात्य शिक्षा पद्धति और यूरोपियन विचार धारा के कारण विदेशी सस्कृति के अनुकरण मे ही अपने कर्तव्य की इति श्री समझते थे। केशव और उनके इन पश्चिमी रग मे रगे भक्तो की दृष्टि मे रखते हुए ही दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ब्रह्मसमाज समीक्षा प्रकरण मे वे बाते लिखी हैं जो ब्रह्म लोगो की स्वदेश और स्वधर्म के प्रति उपेक्षा सूचित करती हैं। उदाहरणार्थ वे लिखते है—(१) अपने की प्रशसा व पूर्वजो की बडाई करना तो दूर रहा, उसके बदले भर पेट निन्दा करते हो। (२) अपने माता,पिता, पितामहादि का मार्ग छोड कर दूसरे विदेशी मतो पर अधिक झुकते हो। (३) जिस देश को रोग हुआ है, उसकी औषधि तुम्हारे पास नही और यूरोपियन लोग तुम्हारी अपेक्षा नही करते और आर्यावर्तीय लोग तुमको अन्य मतियो (मत वालो) के सदृश समझते हैं।' इस प्रकार के और भी अनेक आक्षेप ऋषि दयानन्द ने ब्राह्म लोगो की अराष्ट्रीय मनोवृत्ति पर किए है जिन्हे देखने के लिए सत्यार्थ प्रकाश का मूल अश ही देखना चाहिये।

केशव की वह राष्ट्र विरोधी भावना किसी से अप्रकट नही थी। उन के हिंदी जीवनी लेखक ने केशव को लक्ष्य मे रखकर ब्राह्म लोगो की इस अराष्ट्रीय मनोवृत्ति का उल्लेख करते हुए लिखा है 'बहुत से ब्राह्मसमाजियो पर यह अपराध लगाया जा सकता है कि वे धार्मिक शिक्षाके लिए पाश्चात्य लोगो का मुह ताकते है। अनन्त शिक्षाओ के भडार वेदो को छोडकर बाइबल मे पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के सिद्धात को तलाश करते फिरना हमारी समझ में अनुचित है और हास्योपादक है। यज्ञोपवीत का तो विरोध करना और बपतिस्मा की विधि को प्रचलित करना क्या किसी भारतीय को शोभा दे सकता है? भगवान कृष्ण का कभी अपने व्याख्यान मे नाम तक न लेना और 'प्रभु ईसा मेरे प्राण बचैया' गाते रहना क्या इसे कोई भारतवासी पसन्द करेगा?

★★★

वेद नि:सन्देह ससार मे सब से पुरानी पुस्तक है। ससार को बने हुए आज कल के वैज्ञानिक २ अरब साल से अधिक बनाते है। भूगर्भ विज्ञान के अनुसार पृथ्वी की आयु २ और ४ अरब साल के दरमयान बताई जाती है। यह अनुमान वैदिक सम्वत् के साथ मेल खाता है। मानव इस भूतल पर कब से है, इस विषय मे हमारी धारणा तो करोडो साल पीछे जाती है। परन्तु आज के मानव-विज्ञान के अनुसार मानव कम से कम १५ लाख साल से इस पृथ्वी पर उसके वर्तमान रूप मे मौजूद है। अभी विलासपुर (जिला कागडा) मे मानव के कुछ एक जबडे मिले हैं जिन से ऐसा प्रतीत होता है कि मानव कम से कम ३० लाख साल से इस भूतल पर विद्यमान है। परन्तु अभी तक यह अनुसन्धान का विषय है जिस पर कि पजाब विश्वविद्यालय तथा येल विश्वविद्यालय (USA) के विशेषज्ञ काम कर रहे हैं। इतना तो निश्चय से विज्ञान बतलाता है कि मानव जाति की आयु पन्द्रह लाख जो मानव बौद्धिक मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास हुआ उस मे वेद का प्रथम स्थान आता है! मानव जाति का इस से पुराना अभिलेख नही मिलता।

वेद प्रचीनतम ग्रन्थ है इसलिए इसकी भाषा को समझना कठिन है। इसका कारण सरल है। भाषा हर तीन चार सौ साल के बाद इतनी बदल जात है कि इसके नवीनतम रूप तथा पुरातन रूप मे बडा अतर आ ज ता है। यह स्वाभाविक ही है। सारा ससार परिवर्तनशील है। मानव भी परिवर्तन शील है, फिर भाषा स्थिर तथा परिवर्तन-रहित कैसे हो सकती है। यह नियम सब प्रचलित भाषाओ पर लागू होता है। कुछ एक बहुमूल्य भाषाए अब बोली तो नही जाती परन्तु उनका महत्व महान है। उन मे मे एक इस समय सस्कृत है। उसमे कई शताब्दियो से परिवर्तन नही आया, क्योकि अब बोली नही जाती है।

यह सौभाग्य तथा गर्व की बात है कि वेद के समझने मे जो कठिनाईया आती हैं उनका हल बहुत हद तक हमारे वाङ्मय मे मिलता है। ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, निरुक्त, निघण्टु, वेदाग तथा उपवेद इनके समझने मे बडी सहायता प्राप्त हुई हैं। यह ठीक है कि सायणाचार्य से

वेद तथा आर्यसमाज का कर्त्तव्य

(श्री प्रिंसिपल रलाराम जी होशियारपुर)

पहले चारो वेदो पर किसी एक महा-पुरुष की टीका नही मिलती परन्तु खण्डश: शाखाओ पर टीकाए प्राप्य हैं। आर्यसमाज धर्म के क्षेत्र मे वेद जो परम प्रमाण मानता है। इसी लिए आर्यसमाजी दयानन्दी नही हैं वैदिक धर्मी हैं। आर्यसमाज के भव्य भवन को वेद पर आधारित करके महर्षि दयानन्द ने असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया। शताब्दियो के झाड-झकार ने वेदो की आवृत तथा आच्छादित कर दिया था। इसके दिव्य रूप को विकृत ही नही घिनौना बना दिया था। ऋषिदयानन्द ने अकाट्य प्रहारो से इस घने जगल को साफ कर दिया। अब आर्यसमाज का कर्त्तव्य है कि वेद को सरल यथार्थ शुद्ध तथा अचूक रूप मे पेश करे। स्वामी दयानन्द का इस बारे मे ससार के बहुसख्यक विद्वानो के साथ गहरा मतभेद फूक से उडाया नही जा सकता। इन मतभेद रखने वाले विद्वानो ने आजीवन वेद का अध्ययन तथा अनुशीलन करने के बाद टीकाए लिखी निमन्य-सा है साधारण जनता के लिए वेद के उद्धरण काफी सख्यामे छापकर वितरण होने चाहिए। सर्वसाधारण से यह आशा रखना कि वे चारो वेदो को पढेगे एक गलत आशा है। विद्वानो के लिए हमे सामग्री जो युक्ति तथा यथार्थता मे अकाट्य हो पैदा करनी चाहिए। इस समय तक ऐसी सामग्री बहुत कमजोर पड जाएगी।

जीवन के प्रति वेद का दृष्टिकोण साहस, निर्भयता तथा बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण है। यह दृष्टिकोण तेज,पराक्रम, शक्तिशील, तथा आशीर्वाद से भरपूर है। यह बात निर्विवाद है कि हमारा पतन निरुत्साह भीरुपन तथा हृदय की सकीर्णता के कारण हुआ। भय हमारे सारे जीवन पर छा गया था। इसका प्रभाव हमारी राजनैतिक स्थिति पर पडा और हम अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध-क्षेत्र मे ऐसे पछडे कि लगभग एक हजार साल तक हम बुरी तरह पादाक्रात हुए। अभी तक भी पूर्णतया नही सभल सके। दुनिया के सम्पन्न तथा शक्तिशाली देश हमे निर्बल तथा आत्मसरक्षण के असमर्थ समझते है और है भी ठीक। १९६२ मे चीन के आक्रमण ने हमारी वास्तविक दशा का चित्र हमारे सामने ला खडा किया। एक बडे अमेरिकन नितिज्ञ ने अमेरिकन रिवियू मे लिखा भारत वस्तुत: एक निर्बल देश है क्योकि यह अपनी देश सीमाओं के सरक्षण के लिए दूसरो पर निर्भर है। यही चीन सिद्ध करना चाहता था!

इस कमजोरी का ठीक २ उपचार वेद की शिक्षा है। उसका प्रसार ही एक मात्र भेषज है।

अभ्य पश्चादभ्य पुरस्तादुत्तराद-धरादभय नो अस्तु, हे भगवन पीछे से सामने से, ऊपर से और नीचे से हम सबको अभ्य करो।'

'यतइद्र भयामहे ततो नो अभ्य कृधि मघवछग्धि तव तन्व ऊतिभिर्वि द्विषो वि मृधोजहि, हे सर्वशक्तिमान प्रभु जिस वस्तु से भी हम नेरी दुनिया मे डरते है उस-उस से हमे अभय दान दीजिए। हे सकल ऐश्वर्य सम्पन्न परमात्मन आप सभ्य हैं, इस हेतु आप अपनी रक्षाओ से हमारे शत्रुओ को विनष्ट कीजिए। मनुष्य को धोखा देने वाले कपटी, वचक पुरुषो का नाश कीजिये।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीता न रिष्यत.।

एवा मे प्राणा मा विभे। जिस प्रकार सूर्य तथा चन्द्र डरते नही इस लिए अपने पथ से विचलित न होते हुये हानि को नही प्राप्त होते, इसी प्रकार हे आत्मा तू न डर। भय मानव का सबसे बडा शत्रु है। खतरे को देखना तथा उसका सामने करने के लिए तैयार हो जाना हमारा परम कर्त्तव्य है। परन्तु भयभीत तथा त्रसित हो जाना मानवता से गिराने वाली तथा मृत्यु के जबडे से धकेलने वाली वृत्ति है। वेद पग-पग पर इस से बचने का हमें उपदेश देता है। डर से बचाव का एकमात्र उपाय यह है कि हम भगवान को अपना सख बनाए।

'सख्ये ते इन्द वाजिनो।
मा भेम शवसस्ते।
त्वामभि प्रणो नमो
चेतारमपराजितम ॥

'हे शक्ति के पुञ्ज प्रभु तेरी मित्रता मे हम बलवान होने-होते हुए ससार मे किसी वस्तु से न डरे। आप के सदैव-विजयी तथा अपराजित होने के कारण हम आपको ही नमस्कार करते हैं।'

वेद का धर्म वीरता,, पराक्रम, उत्साह तथा पुरुषार्थ का धर्म है। वैदिक ऋषियो ने जीवन को यथार्थ रूप में देखा। जीवन आध्यात्मिक विकास तथा निवृत्ति एवं आत्म-स्वराज्य का एक अनुपम साधन है। भगवान की इस बहुमूल्य देन का तिरस्कार करना निताव मूर्खता है। जीवन सग्राम मे घबराना विनाश तथा अल्पमृत्यु को बुलावा देना है। विषाद तथा निराशा मानव के घोर शत्रु हैं। इसी लिए अथर्व वेद पुकार करके कहता है।

अय लोक:प्रियतमो देवानाम पराजित:
यस्मै त्वमिह मृत्यवेदिष्ट. पुरुषजज्ञिषे।
स त्वानुह्वयामसि मा पुरा जरसीमृथा॥

यह मानव लोक देवताओ का प्यारा है, यह पराजय को प्राप्त नही होता। ऐ मानव जो तू अपने आपको मौत के लिए निर्दिष्ट मानता है वह ठीक नही। मैं तुम्हे मौत और विनाश से वापिस बुलाता हू सौ वर्ष के बुढापे से पहले तू क्यो मरता है?'

अनुहूत तुनरेहि विप्रानुदयनम् पथ:
आरोहनम् आक्रमण जीवतो जीवतो-ज्यनम्।

हे मनुष्य! तुम मौत की ओर जा रहे हो मैं तुम्हे उन्नत जीवन के लिए वापिस बुलाता हूं। तुम ऊपर उठने, आगे बढने के लिए बने हो। जीने जागने के पथ का अवलम्बन करो।' और हम वेद के बताए हुए इस पथ को सहर्ष तथा नि:सकोच ग्रहण करे। इसमे सुख शाति तथा समृद्धि है। इस का प्रचार हमारा पुनीत कर्त्तव्य हैं।

आर्य नेता देवी दास आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री आर्य जी अपना जीवन जोखम मे डाल कर उन लडकियो को वापस ले आते हैं। इतिहास लिखने वाला है आर्य समाज श्री देवी दास आर्य जैसे अपने महान सपूतो पर उचित मान करता है। —स.

★ परमेश्वर आनन्द रूप है मनुष्य उसे छोड कर जब कृत्रिम और इन्द्रिय जन्य निर्जीव आनन्द की ओर बढता है तभी वह दु:खो के भवर मे डूबता है।

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

डी. ए. वी. कालिज की स्थापना में पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का योगदान

(राम प्रकाश पी. एच. डी. चण्डीगढ़)

ऋषि दयानन्द के देहावसान के कारण सर्वत्र उदासी छा गई। स्थान-स्थान पर शोक सभाएं हुईं। ऐसी ही एक सभा का आयोजन आर्य समाज लाहौर में पहली नवम्बर की रात को किया गया। ऋषि राज को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सारा नगर उमड़ पड़ा। आर्य समाज मंदिर के प्रागण, छत, दीवारो तथा दरवाजो पर आदमी ही दिखाई देते थे। जिसे जहा स्थान मिला वह वही अटक गया। इस पर भी कितने ही लोगो को स्थानाभाव के कारण निराश लौटना पड़ा। इस सभा मे लाजपतराय मुख्य वक्ता थे। और भी कई सज्जनो ने ऋषि जीवन पर प्रकाश डाला। तदनन्तर ऋषि के आदर्शों के अनुकूल उनका स्मारक बनाने का विचार उत्पन्न हुआ। स्मारक क्या हो—यह निश्चित न हो पाया। इतना अवश्य था कि सभी उसे वैदिक सस्कृत और वेद की शिक्षा का केन्द्र बनाना चाहते थे।

इतने मे गुरुदत्त व जीवन दास भी अजमेर से लौट आए। तब ६ नवम्बर १८८३ को आर्य समाज लाहौर की अन्तरग सभा की बैठक हुई जिसमे दयानन्द एग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना करने का निश्चय किया गया। धन सग्रहार्थ लालचन्द एम. ए.। मदनसिंह बी ए जीवनदास व गुरुदत्त पर आधारित एक उपसमिति बना दी गई। कार्य आरभ कर दिया गया

८ नवम्बर वीरवार साय को आर्यसमाज मन्दिर मे एक सार्वजनिक सभा की गई। उस सभा मे लालचन्द ने भाषण देते हुए कहा—'महर्षि का कार्य केवल आर्यों के लिए नही अपितु सारे भारतवर्ष के लिए था। स्वामी जी का लक्ष्य वेदो का प्रचार था, जिसके लिए उन्होने समस्त प्रयत्न किए। भारत की दुर्दशा देखकर महर्षि का दिल पिघला और उसके सुधार के लिए उन्होने अपना जीवन लगा दिया। भारत के सुधारको मे उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ है। वह महात्मा अब नही रहे। इसलिए आवश्यक है कि उनका स्मारक स्थापित किया जाए। इसी उद्देश्य से दयानन्द कालिज स्थापित किया गया है। जहा पाश्चात्य विद्या के साथ पूर्वी ज्ञान और विशेषकर वेदो की शिक्षा दी जा सके। फिर गुरुदत्त ने भावपूर्ण एव हृदय-द्रावक शब्दो मे ऋषिवर के स्वर्गवास होने का वृतात सुनाया। कहने और सुनने वालो की आखो से गगा-यमुना बह निकली। पाषाण दिल भी पिघल गए। गुरुदत्त व उनके साथियो ने डी.ए.वी स्कूल व कालिज के रूप मे ऋषि का स्मारक बनाने का जो सुझाव रखा, उसे जनता ने बहुत पसन्द किया। एतदर्थ वही सभा मे सात हजार से अधिक धन सग्रहित हो गया। देवियो ने अपने आभूषण तक दिए। गुरुदत्त ने भी अपनी एक मास की छात्रवृत्ति के २५ रुपए दान मे दे दिए।

आर्यजन पूरी श्रद्धा से अपने आचार्य का स्मारक बनाने मे जुट गए। शोक का स्थान उत्साह ने ले लिया कालिज के लिए पहली अपील २३ दिसम्बर १८८३ को प्रसारित की गई। इस अपील को लिखने मे आर्यसमाज लाहौरके मन्त्री व गुरुदत्त का हाथ था। इसमे लिखा था—आर्य समाज ने बहुत विचार-विमर्शके पश्चात यह योजना बनाई है कि उसे महात्मा तथा ब्रह्मर्षि के स्मारक के रूप मे एक ऐसा महाविद्यालय बनाया जाए जिसमे सस्कृत भाषा का उच्च कक्षा तक अध्ययन हो और वेद तथा वेदविद्या के ग्रन्थ पढाए जाए। उसमे अंग्रेजी शिक्षा भी उच्च कक्षा तक हुआ करेगी क्योकि जीवकोपार्जन तथा पाश्चात्य विद्याओ की प्राप्ति के लिए अंग्रेजी शिक्षा का होना भी आवश्यक है। इस प्रकार के कालिज को दृढ करने के लिये एक बहुत राशि की आवश्यकता है जिसके ब्याज अथवा लाभ मे उसका सम्पूर्ण व्यय सदा के लिए निकलता रहे। इस का अनुमान दस लाख रुपया लगाया गया है।

स्मारक स्थापित करने की योजनाए कई स्थानो पर बनी थी। पर लाहौर वालो के उत्साह ने उन्हे सब मे आगे निकाल दिया। गुरुदत ने भी अन्य लोगो के साथ कालिज के लिए गले मे झोली डाल ली। स्थान-स्थान पर जाकर भिक्षा मागी। धन सग्रहार्थ आर्यसमाजो के उत्सवो पर जाकर भाषण दिये। लेख लिखे। यद्यपि १८८४ मे उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक नही रहा तो भी कार्य मे जुटे रहे।

उन दिनो आर्य समाजो मे गुरुदत्त की बडी माग थी। उन्हे सुनने के लिए जनता उमड पडती थी। उनकी विद्वता, चरित्र की निर्मलता तथा ऋषि के सिद्धातो मे श्रद्धा के कारण लोग स्वत. आकर्षित हो जाते थे। आर्य जन उनकी मन मोहक एव प्रभावशाली अपील पर दिल खोल कर दान देते थे। वस्तुत दयानन्द कालिज आदोलन की सफलता के लिए गुरुदत्त सरीखे ऐसे विद्वान् की महती आवश्यकता थी जिस ने पूर्व और पश्चिम दोनो का अवलोकन किया हो, जो न केवल पाश्चात्य विज्ञान का ही विद्वान् हो अपितु वेद शास्त्रो का भी पूर्ण ज्ञाता हो और जो तुलनात्मक विवेचन कर प्राचीन आर्य गौरव की पताका लहरा सके। शिक्षित वर्ग कपिल और कणाद को भूल बैठा था। डारविन, हक्सले, विलसन, मोनियर विलियम्स प्रभृति पाश्चात्य विद्वानो का अन्ध श्रद्धालु बनता जा रहा था। जन साधारण रूढिवाद के भवर मे फसे हुए थे। ऐसे समय मे गुरुदत्त ने न केवल उन सब से टक्कर ली अपितु स्थान-स्थान पर भाषण देकर कालिज के लिए धन भी एकत्रित किया। गुरुदत्त कही वेदवेदाग, कही वैदिक सस्कृति, कही ब्रह्मचर्य, कही सस्कृत, कही प्राचीन शिल्प आदि के पुनरुद्धार के नाम पर दयानन्द कालिज के लिए जब धन मागते तो लोग धन की वर्षा कर देते थे। देविया हाथो की चूडिया और अनन्त तक उतार कर दे देती थी।

सन् १८८५ मे एक महत्व पूर्ण प्रश्न ने आर्य समाजियो का ध्यान खीच लिया। समस्या थी दयानन्द कालिज प्रबन्धक सभा के सम्बन्ध मे। कालिज कमेटी का प्रत्येक सदस्य आर्यसमाजी ही होना चाहिये या कोई गैर आर्यसमाजी भी सदस्य बन सकता है? निर्वाचन की विधि क्या हो? निर्वाचन का अधिकार किन्हे दिया जाए? ऐसे अनेक प्रश्नो ने आर्य समाज रूपी शान्त सागर मे ज्वार-भाटा पैदा कर दिया। कही इस वैधानिक विवाद के कारण मनोमालिन्य न हो जाए। सीधे धागे मे गाठ न पड जाए। ऐसी आशकाए पैदा होने लगी।

प्रश्नो के महत्व से इन्कार नही किया जा सकता। पर समस्या सुलझ न पा रही थी। सुलझाए भी कौन? ऋषिवर चले गए। पहले कोई समस्या होती तो वह झट उसका समाधान कर देते थे। माली सिर मे मिट्टी पडने की चिन्ता किये बिना पौधे की देख देख-भाल कर रहा था। अब इस पौधे की रक्षा नियमो की बाड ने ही करनी है। यदि बाड सुदृढ न बन पाई तो पौधे की रक्षा कैसे होगी? कही से भी कमजोर रह गई तो शत्रु अन्दर घुस पौधे को कुचल देगे। सारी तपस्या व्यर्थ चली जाएगी। इसीलिए समस्या गम्भीर तथा विकट थी।

गुरुदत्त का अधिक समय इन समस्याओ के समाधान मे व्यतीत होने लगा। आर्य समाज लाहौर की अन्तरग सभा मे कई मास तक इन प्रश्नो पर विचार विमर्श होता रहा। आर्य समाज मन्दिर में अधिवेशनो द्वारा भी वाद विवाद हुआ। आर्य बन्धु पूरी लग्न मे जुटे रहे। अततोगत्वा अन्तरंग सभा दो दलो मे बट गई। एक के नेता साईंदास तथा दूसरे के अग्रणी लाल चन्द एम ए. थे साईंदास कालिज का प्रबन्ध केवल आर्य समाजियो के हाथ से रखने के पक्ष मे थे पर लाल चन्द अन्य लोगो को भी प्रतिनिधित्व देना चाहते थे। ये दोनो सज्जन परस्पर सम्बन्धी थे। फिर भी जम कर बहस होती थी। प्राय बैठके साय काल को आरभ कर आधी रात तक चलती रहती। दोनो पक्ष आर्य समाज के हित-भावना लेकर वाद-विवाद मे उलझे हुए थे। वे सत्य के निर्णयार्थ ऊहापोह कर थे। कोई व्यक्तिगत आक्षेप या दुराग्रह न था। गर्मी थी पर कटुता न थी।

गुरुदत्त व साईंदास की सूझबूझ मे समस्या सुलझ ही गई। नियम बन गए तथा दूसरे दल ने उदार हृदय से उन्हे स्वीकार कर लिया। निश्चित हुआ कि जो आर्य समाज एक सहस्र रुपया नकद चन्दा दे, वह एक सदस्य कालिज प्रबन्धक सभा मे भेज सकती है। इस प्रकार निर्वाचित सदस्य यदि चाहे तो किसी गैर आर्यसमाजी को उसकी विशेष योग्यता एव उपयोगिता के कारण सदस्य बना सकेगे। पर ऐसे सहयोगी सदस्यो की सख्या कुल सदस्यो की सख्या के एक तिहाई से अधिक न होगी।

(क्रमश)

✶ दो बातो को भूल मत जो चाहत कल्याण नारायण इक मौत को दूजे श्रीभगवान्।

विश्व शांति यज्ञ का सातवा वेद सप्ताह

आर्यसमाज मन्दिर माडल हाऊस जालन्धर मे ३० अप्रैल से ६ मई तक यह वेद सप्ताह श्रद्धा से मनाया गया प तेज राम जी पुरोहित उपदेशक सभा विधि से प्रात यह वैदिक यज्ञ कराते रहे इसमें सात यजमानो ने भाग लिया पंडित जी ने प्रात के सत्सग में यज्ञ के लाभ बतलाए और ईश्वर उपासना ज्ञान गृहस्थ सुधार, नारी धर्म वैदिक संस्कारों की महत्ता कर्म योग राज्य धर्म पर उत्तम विचार दे कर जनता को प्रसन्न किया। रात्री को ९ से १० बजे तक सात दिन कथा करते रहे, [illegible] बल की प्राप्ती सघटन के लाभ, सत्सग की महिमा तथा सात्विक दान की प्रणाली रामायण से शिक्षा और राष्ट निर्माण पर सार गर्भित भाषण दिए। जनता पर इस का बहुत अच्छा प्रभाव पडा पूर्णा आहुति का नजारा और अनुशासन बहुत सुन्दर था, धनवान पुरषो दानी सज्जनो ने सहायता की और आय समाज के अधिकारियो ने बहुत अच्छा काम किया। वेद सप्ताह निर्विघ्न और शान्ति से समाप्त हुआ।

चुनी लाल प्रधान

शोक प्रस्ताव

जिला वेद प्रचारिणी सभा होशयारपुर भारत रत्न महा महीम श्री डाक्टर जाकिर हुसैन राष्ट्रपति के अकस्मात निधन पर हार्दिक शोक तथा सवेदना प्रकट करती है और उनकी पवित्र आत्मा की सदगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है।

श्रीमान डाक्टर साहिब न केवल भारत के ही सम्राट थे। बल्कि वे हर एक भारतीय के भी हृदय सम्राट थे क्योंकि आप मानवता के समस्त गणो से सम्पन्न थे विशेषतय प्रत्येक धम के लिए निष्ठावान और सहषणता के भावो स भरपूर थ ऐस ऐसे नक शरीफ और इरवलाक के उच्चतम आदश को पहुचे हुए महान राष्ट्रपति के निधन से देश को जो अपार क्षति हुई है उसकी पूर्ति अत्यत दुष्कर है प्रभ उनकी पवित्र आत्मा को शाति तथा सदगति प्रदान कर।

मन्त्री बूटाराम

* समाचार दर्शन *

ग्राहक महानुभा[illegible]

आर्य जगत' के [illegible] प्रार्थना है कि वह [illegible] आर्य जगत कार्यालय [illegible] की कोशिश करें। [illegible] ग्राहकों को रिमाइंडर [illegible] हैं परन्तु खेद है कि अभी तक उनका चन्दा कार्यालय में नहीं पहुचा। यदि इस सूचना के बाद भी जिन ग्राहकों का चन्दा नहीं आया तो उनका आर्यजगत वी पी पी. के द्वारा भेजा जाएगा। वी पी छुड़वा कर उनका [illegible] [illegible]।

चुनाव समाचार

आर्य समाज दयानन्द भवन [illegible]ल्ला डोगरा हिसार का वार्षिक चुनाव २९ ४ ६९ दिन मंगलवार को श्रीमती वीरा बाई जी की प्रधानता मे नीचे लिखे अनुसार सवसम्मति से किया गया —

प्रधान —श्रीमती वीरा बाईजी

उपप्रधान —श्रीमती विद्यावती जी माता शीलादेवी जी श्रीमती दौलती देवी जी।

मन्त्री तथा वस्तु भण्डारी — श्री [illegible] जी [illegible]

तथा पुस्तकाध्यक्ष — श्रीमती राजकुमारी जी, [illegible] — श्रीमती कृष्णा [illegible] निरीक्षक —[illegible]

[illegible]।

आर्य प्रादेशिक सभा म० हसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१ सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०.००
२ वैदिक गुटका [पजाबी में] (ले० डा० धर्मसिंह जी) १०.००
३ चन्द्रगुप्त मौर्य ० ५०
४ अमृत वाणी ० ५०
५ ऋषि सन्देश ० २०
६ दयानन्द शतक (ले० [illegible] चन्द जी)
७ व्याख्यान माला मूल्य १ २५
८ ऋग्वेद शतक ० ५०
९ यजुर्वेद शतक ० ५०
१० अथर्ववेद शतक ० ५०
११ महात्मा हसराज-मोडर्न पजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M A (अंग्रेजी मे) १ ५०
१२ सध्या पर व्याख्यान ले० महात्मा हसराज जी १ ००
१३ Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानुजी M A २ ००
१४ [illegible] आनन्द स्वामीजी महाराज) १ २५
१५ प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १ २५
१६ महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १ ००
१७ स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M A) ० ५०
१८ नवीन प्राचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९ [illegible] भाग प्रथम चमु[illegible] वाचस्पति M A ५०
२० ,, द्वितीय ,, ,, ५०
२१ मुण्डक उपनिषद (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A) ० ३७
२२ राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सोमानन्द जी) उर्दू मे ० ३७
२३ षट् दर्शन समन्वय (ले० सुखदेव जी मीमपुरी १ २५
२४ गीता (ले आनन्दस्वामीजी) ० ३७
२५ पगनी ( ) ० ३१
२६ पार्वती (,) ० २५
२७ Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M A) अग्रजी में १ २५
२८ वाइक धर्म मुझे क्यों प्यारा [illegible]
२९ जीवन ज्योति ० ६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार कर।

विशेष सूचना—महात्मा हसराज साहित्य विभाग की दूसरो शाखा आय प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा (आय समाज अनारकली मन्दिर माग) नई दिल्ली मे भी खोल दी गई है अत साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तक प्राप्त कर सकते है। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भजे।

डा. जाकिर हुसैन के प्रति आर्यसमाज विक्रमपुरा की श्रद्धांजलि।

आर्यसमाज के सर्व सदस्यों की विशेष सभा ४ ५ ६९ रविवार प्रातः १० ३० बजे संपन्न हुई जिसमें भारत के सपूत डा० जाकिरहुसैन (राष्ट्रपति) के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया।

डा० जाकिर हुसैन भारत माता के [illegible] तपस्वी कह कर पुकारा जायेगा। आप संसार के महान् शिक्षा शास्त्रियों मे से एक थे। [illegible] की योग्यता ससार में अपना एक विशेष स्थान रखती है।

यह सभा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान कर तथा उनके परिवार इष्ट मित्रो, भारत निवासियों तथा ससार के हितैषी जनो को इस महान दुख सहन करने की शक्ति द।

आनन्द सागर आर्य

शोक

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब हरियाणा हि० प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के सभी सभासद व समस्त आर्य जगत श्रीयुत त्रिलोकचन्द जी एडवोकेट के असामयिक निधन पर दु:खी है। स्वर्गवर त्रिलोकचन्द जी पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के सहोदर थे। उन्हें सभा और आर्य-समाज से हार्दिक स्नेह था। ऐसे हितैषी के एकदम विमुख हो जाने से आर्यसमाज की काफी क्षति हुई है। प्रभु से प्रार्थना है कि वह उन्हें सदगति प्रदान कर दु:खी जनों को कष्ट सहन करने की सामर्थ्य प्रदान करे।

* आय प्रादेशिक सभा पजाब हरियाणा हि० प्रदेश और जम्मू-काश्मीर के सभी सभासद व समस्त आय जगत डी ए वी कालेज कमेटी देहली के उपप्रधान श्री डा० महाराज कृष्ण जी के देहान्त पर दु:खी है प्रभु से प्रार्थना है कि वह उन्हें सदगति प्रदान कर दु:खी जनों को कष्ट सहन करने की सामर्थ प्रदान कर। —वेदीराम सभा मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आयप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रस मिलाप रोड जालन्धर तथा आयजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पजाब



फोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २१) | १२ ज्येष्ठ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२५ मई १९६९ | (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

मे मनः शिवसंकल्पम्

हे प्रभुदेव ! मे-मेरा, मनः-मन शिव संकल्वम्—शुभ संकल्प वाला पवित्र विचारों वाला बन जाए। इसमें किसी प्रकार का बुरा विचार पैदा ही न हो ताकि वह जीवन को बिगाड़ने न पावे।

भावः—यह मन बड़ा शक्तिशाली है। यह जीवन को ऊंचा उठा देता है तथा यह हमारा मन ही हमें अधः पाताल रसातल में गिरा भी देता है। जैसे विचारों की इसमें तरंगें चलती हैं, वैसा मानव का जीवन बनता जाता है। बुरे-बुरे क्षुद्र, गिरे विचारों की तामसी तरंगें जीवन को तामसी तथा राजसी लहरें राजसी व सतोगुण की लहरें सतोगुणी बना देती हैं। प्रभु हमारे मन को शिव संकल्पी बना दें ताकि हमारा सारा जीवन पवित्र बन जावें।

य जु र्वे द से

वे दा मृ त

सबसे प्यारा सखा

ओम् त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्य ॥

सामवेद उत्तरा० ७-२-१

अर्थ :—हे परमेश्वर ! (त्वं) आप (जामिः) बन्धु हैं (जनानाम्) सब जनों के (अग्ने) हे अग्निमय ज्ञान स्वरूप देव आप सबके (मित्रः) मित्र (असि) हैं (प्रियः) बहुत ही प्यारे मित्र है। आप ही तो सभी के (सखा) सखा हैं। इसलिए (सखिभ्यः) हमसे जो आपके सखा हैं, (ईड्यः) स्तुति के पूजा के योग्य हैं।

इस मन्त्र का भाव यह है

वह परमात्मा सबका सच्चा बन्धु है। त्वमेव बन्धुश्च आप ही प्रभुदेव ! सबके प्यारे बन्धु है। वही सभी का अद्भुत प्यारा मित्र है। संसार में मनुष्य के समय-समय पर अनेक मित्र बनते है। कोई धन मित्र, कोई सत्ता-मित्र, कोई बाल मित्र, कोई काम मित्र, कोई स्वार्थ-मित्र। इसीलिए ये सारे मित्र बदलते रहते हैं धूप छाया इन सबकी मित्रता एक रस नहीं रहती। किंतु प्रभु की मित्रता नित्य है। वह सबका मित्र व परम सखा है। इसके लिए लोगो ! सदा उस सखा की पूजा किया करो। वही परम मित्र है।

—सं०

ऋषि दर्शन

कर्मण्येवाधिकारस्ते

हे मानव ! (कर्मणि) कर्म में ही (अधिकारः) अधिकार है (ते) तेरा। तेरा अधिकार तो कर्म करने में ही है। कर्म करते चले जाना ही मनुष्य का कर्तव्य है।

भाव :—योगेश्वर महात्मा कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देने के नाते सबको यह उपदेश दिया है कि मनुष्य का अधिकार तो लगातार कर्म करने में ही है। कर्म के फल की इच्छा मत करें। जीवन में निरन्तर कर्मयोग के पुनीत पथ पर आगे ही आगे बढ़ता चलता जाए। फल तो कर्म का मिलेगा ही। किंतु सबसे उत्तम कर्म यह है कि कर्म तो किया जाए किंतु उसके फल का ध्यान न रखा जाए। यही निष्काम कर्म की परिभाषा है। सं०

भ ग व द् गी ता से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच०डी० (सभा मन्त्री) | सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

युवक स्तम्भ —

केरल में युवक संगठन का कार्य

(श्री चन्द्र जी सत्यार्थी आ० महाविद्यालय, बरनाला)

भारत पर एक विदेशी के रूप मे सिकन्दर का पहला आक्रमण था। वह भारतीय जन-जीवन पर विशेष प्रभाव नही डाल सका। इसके बाद तो जब-जब भी किसी सशक्त विदेशी को भारत की आतरिक कमजोरी का आभास हुआ, वही भारत की ओर बढा चला आया। यहा के धन और जन को जी-भरकर लूटा अत्याचारो का काफिला बढता चला गया। भारत के दु ख दर्द की कहानी शैतान की आत की तरह समेटे नही सिमट रही थी। कभी गजनबी ने जर और जोरू को लूटा तो कभी गौरी ने क्षमा की भीख पर हमे वो पटखनी दी कि हम ऐसे उल्टे मु ह गिरे कि सदियो तक उठने का नाम नही लिया।

परन्तु स्थिति ने उस समय आकर पलटा खाया जब इन मुगल अत्याचारियो ने तलवार की नोक पर राज्य किया। भारत के प्राचीनतम वैदिक धर्म के प्रमाणोको नष्ट किया। जबरदस्ती लोगो को मुसलमान बनाया जाने लगा। सारा का सारा देश हैरान-सा होकर रह गया। मुगलो के पतन के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापार ने भारत मे पाव फैलाए और इनके साथ-साथ ही ईसाई पादरी भी भारत मे आये। इन्होने भारत के सस्कृति और धर्म पर जी भर कर कुठाराघात किया। एक वक्त आया कि इनका सारे ससार पर एक छत्र शासन हुआ। रोम के पोप की सेना ने भारत के दिल और दिमाग को बदल कर रख दिया। इसका मूल आधार शिक्षा-पद्धति और सरकारी प्रश्रय था।

यह सोची समझी योजना थी कि भारतीय रग के काले अवश्य हो पर दिल से अग्रेज बन जाए। भारतीयो मे भारतीयता नाम का कोई तत्व न रहे। अग्रेजो की इस कुटिलता को क्राति दर्शी दयानन्द ने खूब समझा था। उसने भारतीयो को प्रमाण सहित प्राचीन गौरव समझाया। वेदो का वास्तविक स्वरूप लोगो के सामने रखकर मानो ज्ञान का भण्डार खोल दिया। भारत के एक कोने ने अगडाई ली वह कोना था पजाब। पजाब के लोगो ने ऋषि की भावना को समझा। युगों-युगो से अभ्यस्त पजाब निवासियो ने विदेशी सस्कृति के विरुद्ध भी खतरा मोल लिया। पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, मं० हंसराज, महाशय राजपाल और न जाने कितने देश भक्त, देश धर्म के दीवाने शुद्धि के के आन्दोलन मे कूद पडे। पजाब के आर्य नेताओ ने जी भर कर शुद्धि का कार्य किया। तर्क के सामने कोई भी विधर्मी आर्य समाज के सामने नही ठहर सका।

वैदिक धर्म, वैदिक सस्कृति और वैदिक मर्यादाओ की पुनः स्थापना के लिए आर्य समाज का निर्माण हुआ था। इससे सम्बन्धित सभी क्षेत्रो के विस्तार का भी यही तात्पर्य था। आजादी के बाद आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन की ओर विशेष ध्यान नही दिया। क्या हुआ अगर एकाध ईसाई लडका हिन्दू लडकी से शादी करने हेतु शुद्ध हो गया।

परन्तु ईसाई पादरियो का यह चक्र पूर्ववत ही चलता रहा। और आज कल केरल प्रात इसका सबसे अधिक शिकार है। सुदूर दक्षिण मे जिस प्रात को वेदान्तियो के गुरु शकराचार्य को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। प्रकृति की सुहावनी रम्य स्थली हो। इलायची लौग का सबसे अधिक व्यापार होता हो। जिसके किनारो को दूर तक समुद्र छूता हुआ जा रहा हो। भला ऐसे सुन्दर प्रात को कौन अपना निवास स्थान न बनाना चाहता हो। रोमन कैथोलिक पादरियो ने इस सुन्दर प्रात को अपना कार्य क्षेत्र बनाया है। उनके यहा बहुत बडे २ चर्च हैं। अस्पताल हैं, स्कूल हैं। हजार की सख्यामे पादरी हैं। ऐसे शक्तिशाली गढ पर आर्यो की छोटी-सी सेना ने आक्रमण किया उस सेना के सेनापति थे आर्य युवक हृदय सम्राट प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु। उनके एक हाथ मे निर्भयता है दूसरे हाथ मे आत्म-विश्वास। उस महान् सेनानी ने केरल की धरती मे हीं एक और योद्धा को यों ढू ढ लिया जैसे गुरु गोविन्दसिंह ने बन्दा वैरागी को को ढूंढ लिया था। वह योद्धा है नरेन्द्र भूषण। नरेन्द्र भूषण ने अपने सहयोगियों को साथ लेकर केरल में क्राति कर दी है। ईसाई के गढ पर गुरिला पद्धति से आक्रमण हो रहा है, और आज वहा हजारो की सख्या मे ईसाइयो को शुद्ध किया जा चुका है। इन्ही युवको ने एक छोटी-सी सस्था बनाई जिसका नाम आर्यन यूथ लीग है। इस सस्था की लोकप्रियता बढती जा रही है। केरल के बडे-बडे समाचार-पत्रो मे इसकी कार्यवाहियो की चर्चा होती है। पजाब से इस सस्था को विशेष मदद की आवश्यकता है। पजाब के युवको केरल की क्रान्ति मे सहयोग दो। यह समय आ चुका है। हम सिर पर कफन बाध दक्षिण को पुन चले। केरल के आर्य युवको को भरपूर सहायता दे। केरल मे दवाईया, कपडे, धन भेजा जा रहा है। इसी प्रकार प्रति वर्ष गर्मी की छुट्टियो मे कुछ युवक प्रचार के लिए भी जाते है। पजाब के आर्य युवको इस पुनीत कार्य मे जुट जाओ। केरल की क्राति की मशाल बुझने न पाए। हमारी इतनी शिक्षा सस्थाए हैं, सभी मे जून मास को ग्रीष्मावकाश होता है क्या यह मास विद्यार्थी केरल के लिए नही दे सकते बेशक केरल दूर है फिर भी समय रहते इन पोप के पादरियो की बाढ को रोकना है यह काम केवल पजाब का युवक वर्ग ही कर सकता है। केरलमे अज्ञान, अन्याय का अधेरा छाया हुआ है उसे वैदिक धर्म की मशाल से दूर करके सत्य का प्रकाश करना है।

नूर की हर किरण,
जुल्मात पे भारी होगी।
रात जो उनकी है,
सुबह हमारी होगी॥

चुटकुले

★ सरकस मे एक आदमी ऐसा है जो घोडे की पीठ पर कूद कर नीचे फिसल जाता है, कभी उसकी पूछ और कभी गरदन पकड कर लटक जाता है 'यह तो बहुत आसान है' ये सारे करतब मैंने तब किये थे जब मैं पहली बार घोडे पर चढा था।

★ एक नेता भाषण दे रहा था। श्रोताओ मे तीन कजूस सेठ भी थे। भाषण के बीच नेता ने चन्दा मागना शुरू कर दिया। चदे का पात्र जब सेठो के पास आया तो उन मे से एक बेहोश होकर गिर गया। बाकी दोनो फौरन उसे उठा कर चलते बने।

आर्यसमाज, होशियारपुर

आर्य समाज होश्यारपुर का वार्षिक निर्वाचन २७-४-६९ को श्री ओम प्रकाश जी बग्गा प्रिंसीपल की प्रधानता मे हुआ-निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गए—

१ प्रधान—श्री ओम प्रकाश जी बग्गा।

२. उपप्रधान—श्री बलवीर सिंह चौहरी श्री डा. सत्यपाल वाली श्री प लब्भू राम जी शर्मा।

३. मन्त्री—श्री सदा राम जी चौधरी।

४ मत्री कार्यालय व वाचनालय—श्री नन्द सिंह जी।

५. कोषाध्यक्ष—श्री प. हरवंश जी महता।

६ प्रचार मन्त्री—श्री प्रो, कुन्दन लाल जी श्री देवी दास जी शास्त्री।

७ प्रतिष्ठित सभासद—श्री चौ. बलवीर सिह जी एम एल ए. श्री बशेषर दास भडारी।

३. श्री राम प्रकाश जी शर्मा-एम ए

४ श्री वैज नाथ जी मोहिन्द्रू।
५ श्री राजेन्द्र पाल महता।
६ श्री जगदीश चन्द्र मरवाहा।
७ श्री जगन्नाथ सौंधी।
८ श्री प्राण नाथ शास्त्री।
९ श्री तेजा सिह वालिया।
१०. श्री कैलाश चन्द्र मरवाहा।
११ श्री राम देव जी प. ने बैंक
१२ श्री भगवान दास चौधरी
१३ श्री सुखदेव जी बी ए।
१४ श्री हकीकत राय जी।
१५ श्री राम रखा जी।
१६ श्री ससार चन्द जी सूद।
१७ श्री देश राज खन्ना।
१८ श्री दीना नाथ पडित।

विचारों का परिणाम

व्यक्ति दोष देता है अपने भाग्य को परन्तु वह यह बात नही जानता कि अपने भाग्य का निर्माता वह स्वय है। कई लोग योग्यता के अभाव मे भी बहुत उन्नति करते दिखाई देते है। इनकी तुलना मे दूसरे व्यक्ति अच्छी योग्यता के बावजूद भी असफल होते दीखते हैं। जो असफल होते हैं यही सोच कर बैठ जाते है कि दूसरे लोगो की सहायता विधाता कर रहा है। विधाता ने उनके भाग्य मे भाग्यशाली होना लिख दिया है और उनका अपना भाग्य अच्छा नही क्योंकि विधाता उनके विरुद्ध है। काश! इन्हे ज्ञात होता कि दूसरो का भाग्यशाली होना और उनका अभागा होना अपने विचारो का ही परिणाम है।

—पार्श्वनाथ निरञ्जनदेव

सम्पादकीय :—

आर्यजगत

वर्ष २९] रविवार २०२६, २५ मई, १९६९ [अंक २१

बहुत ही लज्जा-जनक

शिक्षा का प्रयोजन यह होता है कि राष्ट्र की भावी सन्तति योग्य बन कर देश को ऊंचा ले जाने मे सहयोग देवे। इसका यह अर्थ नही कि उसके बालपन मे ऐसे-ऐसे विचार भर दिए जाए जो उस के जीवन की मर्यादा को ही समाप्त कर दे। देश का यह दुर्भाग्य ही अभी तक बना हुआ है कि इतने वर्षों के बाद भी इसके शिक्षा क्रम मे कोई परिवर्तन नही किया गया। एक दो पुस्तक के बदलने के हेर फेर से शिक्षा पद्धति मे परिवर्तन नही हुआ करता। तबदीली तो वह होती है जिसके द्वारा हमारे युवक युवतिया राष्ट्र के पूरे-पूरे भक्त बन कर कल को इसकी उन्नति मे सुन्दर स्तम्भ बन सके। इनके जीवन मे नैतिकता की सुगन्धि भरी हो, आचार एव देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हो। तभी शिक्षा का लाभ होता है। हम तो उसी विदेशी सत्ता द्वारा चलाई गई पुरानी परिपाटी की लकीर ही पीटते जा रहे है। उसका परिणाम आज सारे देश को भुगतना पड रहा है। इस समय की युवा पीढी हमारे हाथ से निकलती जा रही है। मर्यादा के दोनो ही जीवन के किनारे टूट रहे हैं और यौवन सरिता का प्रवाह बाढ बनता जा रहा है। इस का बडा कारण शिक्षा के क्षेत्र मे बेकारो की फौज है पार करने वाली शिक्षा पद्धति व पाठ्य-प्रणाली है। एक शिशु के शरीर के वजन से उसके बस्ते मे भरी हुई पुस्तको व कापियो का भार कहीं अधिक है। वह तो इतने बोझ को उठा भी नही सकता। उसने पढना भी क्या है? सरकार के नेता न ध्यान देते हैं और न किसी की बात सुनना ही पसन्द करते है। ऐसी-ऐसी पुस्तके तथा उनकें लिखे पाठ बच्चो को पढाए जाते हैं कि कभी-कभी तो लज्जा को भी लज्जा आ जाती है। इस लेख द्वारा आर्य जगत के पाठको, आर्य समाजो एव देश-प्रेमियो का ध्यान राजस्थान सरकार की नौवी कक्षा मे पढाई जाने वाली अग्रेजी की पाठ्य-पुस्तक **'Dawn Reader'** डान रीडर के उस पाठ की वाहियात पक्तियो की ओर दिलाना चाहते है, जिन से गोमास के खाने-खिलाने का खुलम-खुला प्रचार किया गया है। भोजन की चर्चा करते हुए उस पुस्तक के पाठ मे कहा गया है कि अब खाने का समय हो गया है आओ—खाना खाने चले। गोमास भी खावे वह बडा स्वादु व पौष्टिक होता है। पाठ के इगलिश शब्दो का लगभग ऐसा ही अनुवाद हो सकता है। हमे तो ऐसा पढकर लज्जा आई कि राजस्थान की सरकार ने ऐसे पाठ को पाठ्यक्रम मे स्वीकृत कैसे किया? क्या वे सभी बच्चो को गोमास खिलाना चाहती है? उसी का अभ्यस्त करा कर उसे भोजन का आवश्यक बनाना चाहती है? कितनी लज्जाजनक बात है कि राजस्थान के स्कूलो मे गोमास खाने खिलाने के विचारो का इतना खुला पुस्तको मे लिखा जाकर प्रचार किया जाये। पता नही जनता के स्वाभिमान को हो क्या गया है? ऐसी लज्जाजनक बात पर भी उसने आवाज क्यो जोरदार नही उठाई? प्रत्येक मोर्चे पर आर्यसमाज को खडे होना पडता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई देहली के मान्य मन्त्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले हमारे बधाई के पात्र हैं, जिन्होने आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक की ओर से राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल जी सुखाडिया को तार देकर इस पुस्तक के गोमास प्रचार सम्बन्धी इस निन्दनीय पाठ के विरुद्ध प्रोटेस्ट किया है तथा तुरन्त इन पक्तियो को निकाल देने का बल दिया है। पता नही वहा के शिक्षा-मन्त्री आखे बन्द कर पाठ्क्रम की किताबो को स्वीकार करते हैं। हम चाहते हैं कि इस पुस्तक के लेखक को दण्ड मिलना चाहिए। उसने गोमास को खाने-खिलाने का प्रचार करके भारी अपराध किया है। क्यो ऐसा पाठ लिखा गया? लेखक को ऐसा लिखने का साहस कैसे पडा? लज्जा आनी चाहिए। यदि सभा के मान्य नेता इस ओर ध्यान न दिलाते तो पता नही यह पुस्तक कब से चल रही है और कब तक चलती रहती। हम राजस्थानी सरकार के माननीय मुख्य मन्त्री श्री सुखाडिया से अनुरोध करेगे कि वह पहला कार्य तो इस पाठ की इन घृणित पक्तियो को तत्काल निकलवा देने का करे तथा साथ ही लेखक को भी दण्ड दे ताकि भविष्य मे ऐसे अनाप-शनाप पाठ पुस्तको मे शामिल न किए जा सके। सारे पत्र ही आर्य सनातन, जैन हिन्दु सस्थाए इसका प्रबल विरोध करे। आदोलन करे। सरकार आदोलन की बात सुनती है। प्रस्ताव पारित करके भेजे ताकि गोमास का ऐसा खुला प्रचार रोका जा सके। यह पक्तिया पुस्तक मे लिखी अत्यन्त लज्जजनक हैं। तुरन्त आज, अभी और इसी समय ये निकाल दी जाए। तभी जनता का रोष शात होगा। पता नही लोगो ने, सरकार ने तथा शिक्षा विभाग के कर्णधारो ने इतना दुर्बल समझ क्यो लिया है? स्वाभिमान को जगाना होगा। —त्रिलोक चन्द्र

हमारे प्यारे राष्ट्रपति

स्वर्गीय डा जाकिर हुसैन जी हमारे देश के महान शिक्षाशास्त्री, कुशल प्रबन्धक, योग्य वक्ता व लेखक तो थे ही—किंतु बहुत प्यारे राष्ट्र-पति भी थे। उनके राष्ट्रपति काल की जो बाते इस समय पत्रो मे आ रही हैं—उनसे पूरा परिचय मिलता है कि सभी के प्यारे थे विचारो मे मुस्लिम होते हुए भी सबका सामान आदर करते थे। सभी के धार्मिक विचारो का पूरा २ सम्मान करते थे। किसी प्रकार का भी पक्षपात उनकी आखो व दिल मे नही था। समूचे राष्ट्र के पति थे। जहा इस्लाम की पुस्तक का पाठ सुनते थे, वहां गीता और वेद के भी बडे प्रेमी थे। यज्ञ भी आपके राष्ट्रपति भवन मे किया गया। सचमुच ही धर्म निरपेक्ष राष्ट्र के जनो के प्यारे राष्ट्रपति थे। जब भी राष्ट्र के नाम सन्देश देते थे, ससत मे बोलते थे—तो प्रथम राष्ट्र की भाषा हिंदी मे फिर अगरेजी मे। स्वस्थ परम्परा स्थिर रखी। मान्य डा० हुसैन जी का चला जाना सारे देश के लिए कभी न पूरी होने वाली क्षति है। उनके जीवन के प्रति सबसे बडी श्रद्धांजलि यह है कि उनके समय २ पर दिए सन्देश को सदा स्मरण रखे। राष्ट्र को उसी पथ पर चलाने का सत्प्रयत्न करे। तभी भला होगा।

सभा का विशेष साहित्य

साहित्य जीवन पर बडा प्रभाव डालता है। आर्य समाज ने जहा अपनी व्यवस्थित वेदी के द्वारा धर्म प्रचार के महान् मिशन को दूर-दूर फैलाने मे बडा कार्य किया है, वहा अपने प्रेस या साहित्य के प्रकाशन से जनजीवन को जाग्रत करने मे तप तपा है। आर्यसमाज के विशाल परिवार मे हमारी आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर इस साहित्य प्रकाशन के सिलसिला मे बडा ही सुन्दर कार्य करती है। बहुत उत्तम साहित्य छपवाया है। सामवेद भाष्य इसकी साहित्य के सारे इतिहास मे अनुपम कृति है। तपोमूर्ति महात्मा हसराज जी **संध्या पर व्याख्यान** नाम की जो पुस्तक प्रकाशित की है—वह तो देखने व पढने के योग्य है। यह तो घर-घर तथा प्रत्येक के हाथो मे जानी चाहिए। प्रिंसिपल सूर्यभानु जी उपकुलपति पजाब विश्व-विद्यालय लिखित पुस्तक **Swami Dayanand** बहुत ही उपयोगी है। हरेक युवक युवती छात्र के हाथो मे देनी चाहिए। साहित्य का युग है। सभामन्त्री डा० वेदीराम जी शर्मा एम. ए पी एच डी इस मे बडे ही सक्रिय है। प्रो वेदप्रकाशजी मलहोत्रा का भी सभा को सहयोग है। तमाम समाज व सस्थाए यह साहित्य मगवा कर प्रचार करें। —स०

गोविन्द नगर कानपुर में

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर के अनथक, प्रभावशाली, निर्भीक प्रधान श्री देवीदास जी आर्य बडे ही प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता हैं। इन पर सारा समाज जितना भी गर्व करे उत्तम है। स्वर्गीय महात्मा हसराज जी व हमारी सभा से बडा ही इनका स्नेह है। कानपुर जैसे विशाल नगर मे विद्वान वक्ताओ की क्या कमी है? फिर भी पुराने सभा प्रेम के नाते समाज के महोत्सव मे स्मरण कर लेते है। समाज के मान्य मन्त्री श्री शिवदयाल जी हो या या श्री उप्पल जी हो—सारा समाज परिवार ही खूब लग्न से कार्यकर्ता

(शेष पृष्ठ ४ पर)

एक आर्य विद्वान् का वियोग

—स्वर्गीय श्री पं० अर्जुन देव जी शास्त्री

आर्य समाज के आजन्म उत्साही कार्यकर्ता संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान्, और सुयोग्य वक्ता श्री प० अर्जुनदेव शास्त्री जी का १३ मई मगलवार रात्री एक बजे के लगभग पजाबी बाग नई दिल्लीमे आकस्मिक देहावसान हो गया। ६५ वर्षीय प० जी मूलत. शाहपुर (पश्चिमी पाकिस्तान) निवासी थे, और बाल्यकाल से ही आर्य समाज के सम्पर्क मे आ गए थे। छात्रावस्था मे आप समाज के सत्सगो मे और उत्सवो मे नियमित रूप से भाग लेने लगे गए थे। आप अविभक्त पजाब मे स्यालकोट जिले के अन्तर्गत भोपाल वाला नगर के हाई स्कूल मे सस्कृत अध्यापक थे। स्कूल के कार्य के साथ-साथ इस नगर के आर्य समाज को समुन्नत कराने मे प० जी का विशेष हाथ था। आस-पास के ग्रामो मे शुद्धि का कार्य खूब उत्साह से करते थे।

विभाजन के बाद शास्त्री जी दिल्ली आ गए और दिल्ली प्रशासन शिक्षा विभाग के अन्तर्गत दिल्ली छावनी विनय नगर इत्यादि स्कूलो मे अध्यापक रहे। पर अध्यापन कार्य करते हुए भी आर्य समाज की नियमित रूप से सेवा करने मे आपने कभी शिथिलता नही आने दी। आप जिस स्कूल मे तथा जिस आबादी मे रहे, वहा के छात्रो और युवको मे धार्मिक जीवन तथा समाज सेवा की भावनाओ को पुष्ट व जागृत करने तथा स्थायी बनाने के लिए आर्यकुमार सभाओ के सगठन पर विशेष ध्यान देते थे। दिल्ली छावनी की डी ए वी स्कूल की स्थापना जहा आपके सदुद्योग से हुई वहा उस नगर की आर्य समाज की स्थापना भी आपकी ही प्रेरणा से हुई। इस स्कूल के व्यवस्थापक भी आप कई वर्ष तक रहे। सरकारी सेवा से निवृत्त होकर प० जी पजाबी बाग नई दिल्ली मे रहने लगे थे। आपका व्यक्तिगत जीवन सरल, शुद्ध और त्यागमय था। सस्कृत मे सुयोग्य विद्वान् होने के रूप मे आपने सस्कृत व्याकरण और हिन्दी की कई छात्रोपयोगी पुस्तके लिखी। डी ए वी स्कूलो मे धर्म शिक्षा को कक्षानुसार क्रमिक रूप से चलाने के लिए पाठ्य पुस्तके प० जी ने लिखी जिनका प्रकाशन डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा की ओर से हुआ। आपके इस लेखन कार्य मे आपके परमबन्धु प० हरनामदेव शास्त्री जी का विशेष सहयोग रहा। लेखक के अतिरिक्त प० जी सुयोग्य वक्ता भी थे और अपने प्रवचनो द्वारा आर्य समाज के सिद्धातो की प्रभावशाली ढग से पुष्टि करते थे। पजाबी बाग मे रहते हुए प० जी यहा के आर्यसमाज के साथ अत्यन्त निकट, सतत तथा सक्रिय सम्पर्क रहा।

ऐसे सुयोग्य आर्य विद्वान् के आकस्मिक देहावसान से आर्य जगत की जो क्षति हुई है वह सहज पूरी तो नही हो सकती। आर्यसमाज पजाबी बाग नई दिल्ली ने श्री प जी की आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की और सन्तप्त परिवार के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हुए धैर्य व शाति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की।

—श्री दीनानाथ सिद्धातालकार

आर्य समाज मालवीय पथ अमृतसर में वेद प्रचार

आर्यसमाज मन्दिर मालवीय पथ अमृतसर मे ७ मई से तक प तेज राम जी उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा ने वेद प्रचार किया।

पाच महायज्ञ, ऋषि के मिशन, यम नियम, राम चरित्र, सह सघ के लाभ, आर्य समाज के उपकार, धर्म के लक्षण, दान आदि पर सार गर्भित भाषण दिये, आर्य कन्या हाई स्कूल के यज्ञ मे भाग लेकर सन्ध्या और प्रार्थना कराई। धर्म शिक्षा का प्रचार किया, आर्यसमाज के अधिकारियो के सामने जाति के सघठन और सुधार के सुझाव रखे, और राष्ट्र निर्माण की ज़रूरत बतलाई। आपके प्रचार का तरीका सरल था। जनता ने इसको पसन्द किया, और इन पर पडित जी के विचारो का अच्छा प्रभाव पडा।

—मन्त्री आर्यसमाज

हर्ष प्रद विज्ञप्ति

आर्य जनता और आर्य विद्वानो को यह जान कर हर्ष होगा कि प्रतापसिह ट्रस्ट की ओर से—

'वेद भाष्यकार के रूप में महर्षि दयानन्द का महत्व तथा विशेषताएं।'

इस महत्वपूर्ण विषय पर एक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता के आयोजन का निश्चय किया गया है। जिसके निम्न नियम निर्धारित किए गए हैं।

(१) इस निबन्ध प्रतियोगिता मे कोई भी विद्वान सज्जन व विदुषी देवी भाग ले सकती हैं। जिन्होने तुलनात्मक दृष्टि से वेद भाष्यो का अनुशीलन किया हो।

(२) निबन्ध की भाषा हिन्दी होगी और लिपि देव नागरी होगी। किन्तु तुलनात्मक अनुशीलन होने के कारण अन्य भाषाओ के उदाहरण भी दिए जा सकेंगे।

(३) निबन्ध की पृष्ठ सख्या फुलस्केप आकार के पृष्ठो की कम से कम २५० और अधिक से अधिक ५०० होनी चाहिए। जिस से प्रैस मे छपा हुआ मैटर अधिकतम २५० पृष्ट मे आ सके। निबन्ध की तीन प्रतिया स्पष्टतया टाइप की हुई होनी चाहिए ताकि पढने मे सुगमता हो।

(४) निबन्ध भेजने की अतिम तिथि ३० जून १९६९ ई० है। इसके पश्चात प्राप्त कोई निबन्ध प्रतियोगिता के लिए स्वीकृत न किया जायेगा।

(५) परीक्षक विद्वान्मडल द्वारा स्वीकृत सर्वोत्तम निबन्ध के लेखक महानुभाव को ट्रस्ट की ओर से सम्मानार्थ १०००) रुपया का पुरस्कार समर्पित किया जाएगा।

(६) परीक्षक विद्वान्मंडल का निर्णय अन्तिम होगा।

(७) निबन्ध भेजने का पता—

चौ० प्रतापसिंह ट्रस्ट,
५७ एल माडल टाऊन
करनाल (हरियाना प्रान्त)

गोविन्दनगर कानपुर में

(पृष्ठ ३ का शेष)

है। एक वर्ष आर्य कन्या हायर सेकंड्री स्कूल का सुन्दर भवन खडा कर देना अभिनेता श्री आर्य जी व उनके सहयोगियो का ही काम है। जल्सा तो बडे ही ठाठ का होता है। जनता का समुद्र तो पण्डाल मे ठाठे मारता है। उत्सव मे शास्त्रार्थ महारथी प शान्ति प्रकाश जी, सार्वदेशिक के मन्त्री ला. राम गोपाल जी शाल वाले M. P प त्रिलोकचन्द शास्त्री जालन्धर प. राजपाल जी मदन मोहन जी चिमटा मण्डली, प.बलवीर सिंह जी आदि आए। पाठशाला की पुत्रियो का कार्यक्रम कमाल का था। जलूस व जल्सा, स्त्री समाज का सहयोग सभी उत्तम था। जल्सा बहुत ही धूमधाम से हुआ। सभी को बधाई।

आर्यसमाज मन्दिर सहीजपुर (बोघा)

अहमदाबाद का १०वा वार्षिकोत्सव बडे उत्सव पूर्वक मनाया गया। जिस मे हरिद्वार के ब्रह्मचारी श्री याज्ञवल्क्य, स्वामी श्री चेतनानन्द जी, स्वामी श्री विशुद्धानन्द जी, स्वामी श्री शकरानन्द जी एव माघताल नारायणदास आर्य के व्याख्यान हुए।

अनमोल वचन

★ सहनशीलता का आभ्यास करना, समय को व्यर्थ न गवाना, निरन्तर प्रभु भजन करना चाहिये।

★ विश्वास करो मगलमय भगवान तुम्हारे साथ निरन्तर रहते हैं। दु:खी क्यो होते हो, दु:खी होना अपने को अविश्वास को अवस्था में फेंकना है।

★ सारी परिस्थितियो के रचयिता ईश्वर हैं। जिस प्रभु ने तुम्हे उत्पन्न किया है वह सदा तुम्हरी देख-भाल कर रहा है, तुम तो बस अनन्य भाव से उसकी शरण लो और प्रेमपूर्वक उसका भजन ध्यान करो।

★ जो मनुष्य स्वार्थी और कृपण है, जिसका हृदय उदार नही है और भजन, ध्यान, सत्सग मे जिसकी रुचि नही, उसका जीवन व्यर्थ है। यदि मनुष्य मे अभिमान, कामना तथा अहकार का लेश भी रहेगा तो ईश्वर का साक्षात्कार नही कर सकता।

★ मनुष्य मे यदि मनुष्यत्व नहीं है, यदि उस मे करुणा, प्रेम, दया, आत्म-सयम, सदाचार, शील तथा सत्संग, प्रभु भजन, ध्यान-नम्रता आदि गुण नहीं है तो वह

★ जाच की घड़ियों में अपने मन को सदा शात बनाये रखिये।

(गताक से आगे)

गुरुदत्त ने इस पारस्परिक विवाद को मिटाकर शाति स्थापनार्थ विशेष परिश्रम किया। वर्ष भर नभ धूलि धूसरित रहा, जल मे बडे वेग से तूफान उठते रहे पर उसके पुनीत प्रयासो के कारण नैय्या सुरक्षित किनारे पर पहुच गई।

कालिज रूपी यज्ञ के लिये हवन सामग्री का सग्रह किया जा रहा था। बहु और व्यापक उत्साह था।

जनसाधारण ने अपनी थैलियो के मुह खोल दिए थे। देवियां अपने आभूषण तक दे रही थी। छोटे २ बच्चे भी किसी से पीछे न थे। इस प्रकार १८८५ तक बीस सहस्र रुपया नकद तथा इकतीस सहस्र रुपए की प्रतिज्ञाए प्राप्त हो चुकी थी। हस राज ने भी इस यज्ञ मे भाग लेना चाहा। सोचा, क्या धन ही सर्वोत्तम हव्य पदार्थ है? क्या इस से अधिक मूल्यवान और कोई हवि नही? उत्तर मिला है क्यो नही। है तो—यह दुर्लभ मनुष्य जीवन। पर कोई दे भी? बस हसराज ने यह हव्य पदार्थ स्वय भेट करने की ठान ली। अपने बडे भाई मुल्खराज से सलाह की। उन्होने भी थपकी दे दी, 'बहुत शुभ कार्य है। तुम उन्हे अपना जीवन दो। मैं तुम्हे अपनी कमाई का आधा भाग दूगा।' लक्ष्य पवित्र था। दोनो की भावनाए शुभ थी। बस निश्चय होते क्या देरी लगनी थी।' हसराज की आखो मे उन दिनो कुछ तकलीफ थी। अतः मुल्खराज ने हसराज की ओर से आर्यसमाज लाहौर के प्रधान को पत्र लिख दिया कि 'दयानन्द स्कूल खुलने पर मैं अवैतनिक हैडमास्टर बनने के लिए तैयार हू।' इस पत्र पर हसराज ने हस्ताक्षर कर दिए। बस फिर क्या था। आर्यो मे नवजीवन का सचार हो गया। जो चाहिए था, वह मिल गया। अब उनका यज्ञ कोरी कल्पना नही, वास्तविकता है—इस विचार ने उन्हे गुदगुदा दिया।

एक बार हसराज तथा लाजपतराय ने सलाह की कि लाजपतराय भी क्यो न स्कूल को अपनी अवैतनिक सेवाए दे दे और सैकिण्ड मास्टर बन जाए? पर निर्वाहार्थ धन कहा से आएगा? फिर बी. ए भी तो नही कर रखी। न जाने उनकी सेवाओ का कोई लाभ समझा भी जाएगा या

डी.ए.वी. कालेज की स्थापना में पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का योगदान

(श्री राम प्रकाश जी पी. एच. डी. चण्डीगढ़)

नही। इस कारण लाला जी दुखी रहने लगे। कई बार तो घण्टो रोते रहते। ऐसी अवस्था में एक दिन गुरुदत्त ने उन्हें देख लिया। बहुत प्यार से समझाया, तुम वकालत करो और धन द्वारा स्कूल को सहयोग दो। यही सर्वोत्तम सेवा होगी।'

३१ जनवरी १८८६ को आर्य समाज लाहौर के निमन्त्रण पर प्रमुख आर्य समाजो के प्रतिनिधि लाहौर एकत्रित हुए। सारी स्थिति पर विचार कर दयानन्द कालिज प्रबन्धक सभा तथा ट्रस्ट सोसाइटी का औपचारिक रूप से निर्माण कर दिया गया। कालिज कमेटी की पहली बैठक २० फरवरी को हुई। फिर २० मार्च को चुनाव हुआ। लाल चन्द एम. ए प्रधान तथा मदन सिह बी ए मन्त्री निर्वाचित हुए।

१ जून १८८६ का दिन डी ए वी स्कूल की स्थापना के लिए निश्चित हो चुका था। अत ३१ मई को आर्यसमाज मदिर लाहौरमे गुरुदत्त ने सर्वसाधारण के समक्ष एक भाषण दिया तथा जिनमे स्कूलकी आवश्यकता और उद्देश्यो पर प्रकाश डाला तथा जनता मे इस पवित्र कार्य के लिए उत्साह भर दिया।

आखिर प्रतिक्षा की घडिया समाप्त हुई और १ जून को आर्य समाज मन्दिर गली बिच्छो वाली मे एक सार्वजनिक सभाकरके डी ए बी स्कूल की स्थापना कर दी गई। अधिक गर्मी के कारण कोई बहुत बडा आयोजन नही किया गया। इस अवसर पर गुरुदत्त का भाषण हुआ। हसराज हैडमास्टर तथा दुर्गाप्रसाद सैकिंड मास्टर नियुक्त हुए। उनके अतिरिक्त ९ और अध्यापक रखे गए। अगले दिन मन्दिर मे ही विद्यार्थियो को प्रविष्ट करना आरम्भ कर दिया। बालक एकदम इस स्कूल की-ओर आकर्षित हो गए और पहले सप्ताह मे ही सख्या तीन सौ से ऊपर चली गई। एकमासकी समाप्तिपर सख्या ६०० तक पहुच गई। बडी कक्षाओ मे विद्यार्थी ऐसे स्कूलो से आए थे जिनमे हिन्दी की पढाई का प्रबन्ध न था अत. आरम्भ मे उर्दू का बहिष्कार न किया जा सका। पर उन्हे भी हिंदी तथा सस्कृत पढाने का प्रबन्ध किया गया। हा, प्राईमरी कक्षाओ मे शिक्षा माध्यम केवल हिंदी था और सस्कृत भी अनिवार्य थी। उर्दू की पढाई चौथी कक्षा से आरम्भ की गई और वह भी केवल काम चलाऊ।

गुरुदत्त स्कूल मे बहुत रुचि लेने लगे। वह कभी-कभी अध्यापन भी कर देते थे। वैसे लाला गगाराम सी०ई०, प्रबन्धक इजीनियर लाहौर और गुरुदत्त स्कूल के निरीक्षक नियुक्त किए गए तथा उनसे प्रार्थना की गई कि वे पन्द्रह दिन मे एक बार अवश्य स्कूल जाया करे और इस प्रकार मुख्याध्यापक को स्कूल के कार्यों मे सहयोग प्रदान करे।

आर्य समाज पेशावर ने जून १८८६ मे अपनी ओर से गुरुदत्त को डी ए वी कालिज की प्रबन्धक सभा मे प्रतिनिधि बनाकर भेज दिया। इस मास पण्डित जी स्कूल की उप-सभा के सदस्य भी बन गए। फिर १८८७-८८ मे कालिज कमेटी के सयुक्त मन्त्री तथा १८८८-८९ मे मन्त्री रहे।

२७ अगस्त १८८६ को दयानन्द एग्लो वैदिक कालिज सोसाइटी की रजिस्ट्री करवा दी गई। उस समय लाल चन्द एम ए, ईश्वर दास एम. ज्वाला सहाय, गुरुदत सार्ईदास, मदन सिह, द्वारिका एम ए। (क्रमश)

★ आप स्वय ही शोक एव चिन्ता के जगत का निर्माण करते है, कोई व्यक्ति उसे आप के ऊपर नही लादता।

★ सर्वतो भावेन अपने को उसके ऊपर छोड देने की आवश्यकता है। अपनी सारी अहमता और ममता ही बन्धन है, बन्धन मे क्यो पडे हो, इस महा दुखदायी बन्धन को अपना महान शत्रु समझ कर इस से छूटने का उपाय करो।

★ एक ओर प्रभु है, दूसरी ओर ससार है। हमे एक से प्रेम करना है तो दूसरी जगह छोडना होगा।

★ ज्ञानी और भक्तो को त्रिकाल मे भी दुख नही होता, और ससारी जनो का दुख त्रिकाल मे भी नही छूटता।

लोक मान्य बालगंगाधर तिलक

लोकमान्य बाल गगाधर तिलक के जीवन पर हमारी दृष्टि जाती है तो उनके सकल्प बल मे यह शक्ति मिलती है कि गोरो के अत्याचारों की जजीरो मे जकडने पर कारागृह के सकोचो मे गीता रहस्य जैसे अनमोल ग्रन्थ को लिख कर आत्म ज्ञान की दिव्य ज्योति का प्रकाश कर जाते हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी

स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन से आत्मबल मिलता है जब वे अमेरिका मे जाते हैं तो उन्हे शून्य विषय पर बोलने के लिए महती सभा मे समय दिया जाता है इस विषय का प्रतिपादन धाराप्रवाह स्वामी विवेकानन्द जी करते हैं।

वेदान्त दर्शन पर अमेरिका मे धूम मचाया था स्वामी विवेकानन्द जी ने।

स्वामी विवेका नन्द जी का सकल्प बल महान था।

महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध को सकल्प बल से ही बोधित वृक्ष के नीचे गया मे बोध प्राप्त हुआ था और वे राज्य पाट त्याग कर मानव मात्र की सेवा मे लग गये थे। महात्माबुद्ध ने विश्व-व्यापी अहिंसा का प्रचार किया था।

स्वामी शंकराचार्य जी

स्वामी शकराचार्य जी ने अपनी सकल्प शक्ति और अपनी प्रखर बुद्धि से शास्त्रार्थो की धूम मचायी थी स्वामी शकराचार्य जी अद्भुत और अलौकिक महापुरुष थे।

अमर हुतात्मा

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द

शहीदे आज़म शुद्धि और सगठन के अग्रदूत श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी को सकल्प बल से ही शक्ति मिली कि वे शुद्धि का बिगुल बजा कर लाखो लाल ललनाओ को विधर्मी होने से बचा गये।

दिल्ली के चादनी चौक मे गोरो की सगीनो के सामने छाती तान कर खडे होने वाले स्वामी श्रद्धानन्द को देखिये यह था देश प्रेम और यह थी शहादत और यह था सकल्प बल।

शुद्धि के लिये अपने सीने मे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महर्षियो का युग लाने के लिये गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को चालू किया था।

ऋषि दयानन्द की अज्ञात जीवनी—आलोचनात्मक विश्लेषण

(श्री डा० भवानी लाल भारतीय एम. ए., पी. एच. डी.)

गत जनवरी से साप्ताहिक सार्वदेशिक मे कलकत्ता, आर्यसमाज के आचार्य प० दीनबन्धु वेदशास्त्री द्वारा प्रस्तुत ऋषि दयानन्द की अज्ञात (?) जीवनी का प्रकाशन हो रहा है। वेद शास्त्री जी ने ऋषि दयानन्द के जीवन का अनुसन्धान करने मे पर्याप्त काम किया है। हम यह भी स्वीकार करते है कि उक्त प्रशसित पडित जी ने महर्षि के बगाल प्रवास काल के तथ्यो की विस्तृत खोज करने का प्रशसनीय प्रयास किया है। आलोच्य, अज्ञात जीवनी के १३ अशो का प्रकाशन हो गया है। भविष्य मे, और भी प्रकाशित होगे।

मैं स्वय महर्षि के जीवन और आर्यसमाज के इतिहास का एक जिज्ञासु विद्यार्थी हू। मैंने ऋषि के लगभग सभी हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत व गुजराती भाषाओमे प्रकाशित जीवन चरितो तथा ऋषि के जीवन विषयक अन्य सामग्री का विशद अध्ययन किया है। सम्प्रति ऋषि के जीवन के सम्बन्ध में मेरा शोध कार्य चल रहा है। मैं उन सभी ज्ञात तथा अज्ञात सदर्भो की सूची बना रहा है। जिन मे येन केन प्रकरण महर्षि का उल्लेख हुआ है। अस्तु ! यहा महर्षि के जीवन-चरित की खोज करने मे अमर शहीद प० लेखराम तथा धुन के धनी देवेन्द्र बाबू जैसे महापुरुषो ने कुछ भी नही उठा रखा तथापि यह निर्विवाद तथ्य है कि श्री महाराज का एकनितान्त प्रामाणिक जीवन-चरित अभी लिखा जाना शेष है। अस्तु !

प० दीनबन्धु वेदशास्त्री द्वारा प्रस्तुत सामग्री को ध्यान पूर्वक मैंने पढा। उसे समग्र रूप मे विश्वस्तरीय नही कहा जा सकता। अत सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र सार्वदेशिक सभा के लिए यह नितान्त उचित था कि वह इस सामग्री की पूर्व से ही छानबीन कराकर प्रकाशित करता अथवा इस लेखमाला के साथ यह आवश्यक टिप्पणी प्रकाशित करता कि यह सामग्री तथ्य की दृष्टि से अभी साध्याकोटि मे ही है। ऋषि के जीवन से परिचित पाठक यह भलीभाति जानते हैं कि महर्षि ने अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग पर प्रकाश डालते हुए अपनी आत्मकथा स्वय लिखी थी। उनकी स्वलिखित आत्मकथा मैडम एच० पी० ब्लैकवेटस्की द्वारा सम्पादित थियोसोफिस्ट नामक अग्रेजी पत्रमे धारावाही रूप मे ऋषिके जीवनकाल ही मे प्रकाशित हुई थी। श्री महाराज ने पूना मे दिए अपने व्याख्यानो मे अन्तिम व्याख्यान अपने आत्मवृत्तान्त का वर्णन करते हुए दिया था। अत. निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि श्री महाराज के जीवन का प्रारम्भिक वृत्तान्त (नर्मदा स्त्रोत गवेषणा पर्यन्त) वही प्रामाणिक हैं जो स्वय उनके श्रीमुख से कहा गया था तथा उनकी लेखनी से लिखा जाकर प्रकाशित हुआ था। यह सम्भव है कि श्रीमहाराज का स्वकथित वृत्तान्त सक्षिप्त है और वेदशास्त्री जी द्वारा प्रस्तुत उस काल की सामग्री कुछ अधिक विस्तृत तथ्यो पर प्रकाश डालती है परन्तु इस सामग्री का सत्यता को तो प्रमाणित करना ही होगा। अस्तु।

वेद शास्त्री जी लिखते हैं कि अपने कलकत्ता प्रवास काल मे महाराज मे विभिन्न स्थानो पर विभिन्न लोगो के वर्णन तत्कालीन देवेन्द्रनाथ ठाकुर बगाल के आदि महापुरुषो की आज्ञा से नियुक्त विभिन्न लोगो ने लेखनबद्ध किया। यह सामग्री दशाब्दियो तक विलुप्त रही और अब उन्होने (प० दीनबन्धु जी ने) इसका अत्यन्त परिश्रम पूर्वक जोर्णोद्धार किया है। हम प दीनबन्धु जी की इस बात पर शंका नहीं करते परन्तु जो विवरण उन्होंने अद्यतन प्रकाशित १३ लेखो मे प्रकाशित किया है उसमे से कुछ बातो पर हमारी स्पष्ट आपत्ति है। प. दीनबन्धु जी द्वारा प्रस्तुत सामग्री के महत्व को स्वीकार करते हुए भी हमारी यह मान्यता है कि महर्षि स्वामी द्वारा लिखित एव कथित आत्मकथा को पूर्ण रूप से प्रामाणिक मानना होगा, फलत: जो तथ्य, आत्मकथा मे उक्त (कहे गए) तथ्यो के विपरीत पडेगे उनकी सत्यता के आगे प्रश्नचिन्ह लगाना ही पडेगा। द्वितीयत. देवेन्द्र बाबू की खोज का आदर करते हुए यह मानना पडेगा कि उन्होंने महर्षि के जीवन की जिन घटनाओं का सग्रह किया और पुण्यश्लोक महर्षि की जीवनी के प्रारम्भिक चार अध्याय लिखे, इन देवेन् नाथ मुखोपाध्याय द्वारा प्रस्तुत जीवनी विषयक तथ्यो के विरुद्ध भी जो बातें प दीन बन्धु जी द्वारा प्रस्तुत अज्ञात जीवनी मे आई हैं, उन्हे अप्रमाणिक अथवा सदिग्ध मानने के लिए हम बाध्य है।

इस प्रारम्भिक कथन के पश्चात् हम 'सार्वदेशिक' मे प्रकाशित अज्ञात जीवनी के कतिपय अशो की आलोचना करेंगे। १२ जनवरी के सार्वदेशिक मे अज्ञात जीवनी का दूसरा लेख छापा है। इसमे अवधूतावस्था मे श्री महाराज के भारत भ्रमण का उल्लेख करते हुए लिखा है कि स्वामी जी ने गगोत्री से सेतुबन्ध रामेश्वर तक भ्रमण किया था। अब तक महर्षि के जीवन के विषय मे जो हुए हैं उनसे पता चलता है कि स्वामी जी का दक्षिणवर्त मे भ्रमण पूना पर्यन्त था। उससे आगे द्रविड भाषा भाषी प्रान्तो मे उनका पधारना नही हुआ; अत यह कथन साध्य कोटि मे ही है। इसी प्रकार स्वामी जी की मराठे नेता नाना साहब पेशवा और अग्रेजी सेना के विद्रोही सिपाही मगल पाडे से भेंट और, आशीर्वाद याचना भी साध्य कोटि मे ही है।

(क्रमश)

भजन

प्राणी मन मे बसे भगवान,
क्यो बनता नादान ओ बन्दे,
मन मे बसे भगवान।

पत्थर काला, मन भी काला,
बन जाता तू भी मतवाला,
पूजा के दो फूल चढाकर,
मन मे करे अभिमान।

क्यो बनता नादान ओ बन्दे,
मन मे बसे भगवान।

गगा मे जो डुबकी लगाई,
फिर भी मूर्ख होश न आई,
मन की मैल मिटी न तेरी,
बाहर की काया का ध्यान,

प्राणी मन में बसे भगवान !
जादू टोना भूत प्रेत,
इनको क्या तू लेता देख,
भय का भूत भगा कर पगले,
बन जा तू इन्सान !
प्राणी मन मे बसे भगवान !
क्यो बनता नादान ओ प्राणी !
मन मे बसे भगवान !

आर्यजगत के प्रेमियों

आर्यजगत के सभी प्रेमी महानुभावो से विनम् निवेदन है कि वह अपने विचारो को जनता तक पहुचाने के लिए अपनी प्रिय पत्रिका आर्य जगत मे लेख, कविताए आदि भेजते रहा करे। आर्यजगत की लोकप्रियता का श्रेय आप सब महानुभावो को ही है। इसलिए प्रार्थना है कि आप अपने लेख, कविताए आदि आर्यजगत मे प्रकाशनार्थ सभा कार्यालय मे भेजे! हम उन सब का स्वागत करेंगे।

—व्यवस्थापक

प्रादेशिक आर्य युवक संगठन पंजाब, हरियाना, हिमाचल व जम्मू

आर्य समाजो एव आर्य शिक्षण सस्थाओ के सभी युवक सगठग के प्रेमियो की सेवा मे सविनय प्रार्थना है कि वे अपने समाज एव विद्यालय के युवक समाज से दो-दो प्रतिनिधियो के नाम पते सहित सभा कार्यालय मे तुरन्त भिजवाने का कष्ट कर अनुग्रहीत करे जिससे अगामी युवक सम्मेलन मे सभी को निमन्त्रित किया जा सके।

आशा है प्रार्थना स्वीकार होगी।

अध्यक्ष युवक सगठन
जालन्धर

आर्य समाज गुरनाम-सरकार की हिन्दी-घातक नीति को और सहन नहीं करेगा

जिला केन्द्रीय आर्य सभा गुरदासपुर

जिला केन्द्रीय आर्य सभा का वार्षिक चुनाव दिनाक ११-५-६९ को दयानन्द मठ दीनानगर मे श्री जुगल किशोर प्रधान जी की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—प्रिंसिपल जुगल किशोर जी भारद्वाज बटाला।

उपप्रधान—श्री शिवदयाल जी पठानकोट।

श्री जितेन्द्र जी गुरदासपुर।

मन्त्री—श्री दर्शन कुमार जी हाण्डा बटाला।

उपमन्त्री—श्री ओ३म् प्रकाशजी बब्बर बटाला।

श्री जगदीशराज जी गुरदासपुर।

श्री रामसरन दास जी नरोट जैमलसिंह।

कोषाध्यक्ष—श्री ओ३म् प्रकाश जी शर्मा, गुरदास पुर।

आडीटर—श्री सत्य प्रकाश जी गुरदास पुर।

अन्तरिंग सदस्य—सेठ कुलदीप चन्द्र जी पठानकोट।

श्री देसराज भाटिया भट्टे वाले लेखराम नगर कादियां।

प० पूर्णचन्द जी पठानकोट। स्वामी प्रकाशचन्द जी गुरदासपुर। श्री कर्मचन्द भारद्वाज पठानकोट। श्री कुंज बिहारी लाल रब्बे कादियां बटाला।

दानी महानुभाव सावधान रहें

मालूम हुआ है कि किसी ने 'अखिल भारतीय श्रद्धानन्द साल्वेशन मिशन' के नाम से एक सस्था चलाई हुई है जिसके लिये लिये लोगो से धन भी एकत्रित किया जा रहा है। इस सस्था का नाम अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन' से बहुत मिलता-जुलता है। इसलिये दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि 'अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन' मिशन होशियारपुर एक पृथक पुरानी एव रजिस्टर्ड सस्था है। इसलिये दान देते समय इस बात का ध्यान रखें कि यह दोनों सस्थाएं एक ही नही हैं परन्तु भिन्न-भिन्न हैं।

—रामदास

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा, हिमाचल व जम्मू-कशमीर के प्रधान श्री भीमसेन जी बहल की घोषणा

६ जुलाई को हिन्दी-प्रेमी सम्मेलन बुलाने का निश्चय

मन्त्रियों के सच्चर फार्मूला समाप्त करने के बयानों पर चिन्ता

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने पंजाब ने राज्य की अकाली-जनसघ सरकार की हिन्दी घातक नीति पर कडा रोष प्रकट किया है और घोषणा की है कि आर्य समाज इस वस्तु स्थिति को ज्यादा देर सहन नही करेगा।

आज यहा सभा की कार्यकारिणी की एक हगामी बैठक प्रधान श्री भीमसेन बहल की अध्यक्षता मे हुई जिसमे पजाब की वर्तमान स्थिति पर साधारणतया और सच्चर फार्मूला पर विशेषतया विचार किया गया। कार्यकारिणी ने राज्य सरकार के मन्त्रियो के सच्चर फार्मूला को समाप्त करने सम्बन्धी बयानो पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गई। बैठक मे सर्वसम्मति से यह फैसला किया गया कि ५-६ जुलाई को जालन्धर मे पजाब के सभी हिन्दी प्रेमी सस्थाओ का एक विशाल सम्मेलन बुलाया जाए जिसमे पजाब की हिन्दी घातक नीति के विरुद्ध प्रभावी पग उठाने का निश्चय किया जाएगा। इसके लिए उपप्रधान श्री इन्द्रसेन को सयोजक नियुक्त किया गया है। उसके अतिरिक्त सभा ने सभी शिक्षा सस्थाओ से प्राईवेट तथा सरकारी दोनों से अपील की कि वे सच्चर फार्मूले पर सख्ती से अमल करें। क्योकि सभा के विचार मे बच्चो का शिक्षा माध्यम चुनने का अधिकार केवल अभिभावको को है। जिस भी स्कूल मे किसी भी श्रेणी मे कम मे कम १० बच्चे और स्कूल मे ४० बच्चो के मात-पिता जिस भी भाषा मे चाहे शिक्षा दिलवा सकते है।

★ जगत् मे मनुष्य जीवन का एकमात्र लक्ष्य परमेश्वर को प्राप्त करना है। इसके लिए पुरुषार्थ ही वास्तव मे पुरुषार्थ है। जो परमेश्वर की ओर बढता है उसे वे अपनी गोदी मे अवश्य लेते है।

वेद प्रचार

आर्य समाज खडवा कि ओर से समाज के स्थाई प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धान्ती ने दि २३ अप्रैल व ११ मई तक निम्नलिखित स्थानो मे वेद प्रचार किया। दि २३ व २४ अप्रैल को उज्जैन कुम्भ मेले मे और दि. २६ व २७ अप्रैल को रतलाम आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सग मे वेद प्रचार की आवश्यकता पर भाषण दिया। उसी दिन साय काल इन्दौर दयानन्द नगर आर्य समाज के सत्सग मे भजनोपदेश दिया। दि ३० अप्रैल को खडवा में श्री डा रघुनाथ सिंह जी वर्मा के नाती का मुडन सस्कार किया। दि ६ मई को श्री बालाराम जी आर्य के लडके के विवाह के उपलक्ष मे पारिवारिक यज्ञ हुआ। जिसमे विवाह सस्कार कि विशेषता पर भाषण दिया।

दिनाक ९ मई ११ मई तक ग्राम खार व ग्राम देवलीमे (रामायण) का राष्ट्रीय स्वरूप पर एव भारत मे भयकर ईसाई पादरियो के षडयन्त्र पूर्ण गतिविधियो का भण्डा फोड किया। ग्रामीण जनता एव आदिवासी कोरकुओ पर अच्छा प्रभाव पडा। जनता मे प्रचारार्थ धार्मिक ट्रैक्ट भी निशुल्क बाटे गए। ग्राम प्रचार मे मोहनलाल आर्य एव विनोद कुमार निगम भी साथ मे थे।

—बसन्त गुप्त।

संत-वचन

★ मन जैसा सकल्प करता है वैसा ही चित्र उस पर खिच जाता है। जीव अपने सकल्प मे ही बधा है और अपने पुरुषार्थ मे ही छूट सकता है।

★ स्वतन्त्रता बाजार मे खरीदी जाने वाली वस्तु नहीं है, यह तो कठोर साधना द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

★ दूसरो को सलाह देना सब से सुगम है और उस के अनुसार अपना जीवन बनाना सब से कठिन है।

★ जिन के जीवन का लक्ष्य भगवान होता है, जगत की उलझनें उनके मार्ग मे रोडे नही अटका सकती।

आर्य कुमार परिषद जिला मेरठ

आर्य समाजों से प्रार्थना :—

प्रत्येक आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि आर्य कुमार सभाओ का एक संगठन 'भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद' का निर्माण २१, २२, २३, जून को आर्यसमाज थापर नगर मेरठ मे किया जा रहा है। जिससे कि आर्य समाज का प्रचार कुमारो मे हो सके। अतः सभी आर्य समाजें अपने नगर एव जिले की आर्य कुमार सभाओ की सूचि भेजने का कष्ट करे। पत्र व्यवहार मन्त्री, आनन्द प्रकाश आर्य, २८ खिडकी बाजार, हापुड़ (मेरठ) से करें।

आर्यकुमार सभाओंको सूचना—

प्रत्येक आर्यकुमार सभाओ को सूचना दी जाती है कि आर्यकुमार परिषद का अधिवेशन दि० २१, २२, २३ जून को आर्य समाज थापर नगर मेरठ मे होगा। जिसमे भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद का निर्माण भी किया जाएगा। अतः सभी आर्यकुमार सभाएं अपने प्रतिनिधियो के नाम शीघ्र भेजे। अधिवेशन मे श्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ, श्री ला० रामगोपाल शालवाले, श्री रघुवीर सिह शास्त्री, श्री ओम प्रकाश त्यागी, श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री आदि ससद सदस्य, श्री देवव्रत धर्मेन्दु, श्री प्रेमचन्द जी M. L A श्री प्रो० रत्नसिह श्री डा० भगवतदत्त जी आदि पधार रहे हैं। पत्र-व्यवहार मन्त्री, आनन्द प्रकाश आर्य, २८ खिडकी बाजार, हापुड (मेरठ) से करें।

—आनन्द प्रकाश आर्य।

* स[माचार] दर्शन *

साप्ताहिक आर्यजगत का वार्षिक चंदा आठ रुपये

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

शोक प्रस्ताव

आज प्रातः १४-५-१९६९ को स्कूल स्टाफ तथा विद्यार्थियों की शोक सभा हुई जिस मे श्री शान्ति-स्वरूप शर्मा प्रिंसीपल डी. ए. वी. हायर सैकण्ड्री स्कूल ऊना की धर्म-माता जी के निधन पर शोक प्रकट किया गया और भगवान से प्रार्थना की गई कि वे मृतक की आत्मा को शान्ति तथा सदगति प्रदान करें तथा उनके पीडित परिवार को इस महान दुःख को सहन करनेकी शक्ति तथा धैर्य प्रदान करें।

स्कूल स्टाफ और विद्यार्थीगण
डी. ए. वी. हा सैं स्कूल
(ऊना (कागडा) हि. प्रदेश

★ ईश्वर जिस पर प्रसन्न होता है उसे नदी जैसी दानशीलता, सूर्य जैसी उदारता और पृथ्वी जैसी सहन-शीलता प्रदान करता है।

आर्यसमाज, पंजाबी बाग

दिल्ली—२६

भवन-निर्माण के लिए [दानी] महानुभावों से अपील

आर्यसमाज, पंजाबी बाग, दिल्ली—२६ के कार्यकर्त्ता गत एक दो वर्षों से समाज के भवन-निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। भवन का नक्शा नगर निगम से विधिवत स्वीकृत हो चुका है। इसके निर्माण का अनुमानित व्यय ढाई लाख रुपए है। समाज के पास १८११ वर्ग गज भूमि है। भवन में एक हाल ६०'×४०' का तथा चार कमरे नीचे व चार कमरे ऊपर बनाये जाने हैं। इन कमरो में औषधालय, पुस्तकालय, अतिथिशाला तथा पुरोहित के निवास की व्यवस्था की जाएगी। इसके अतिरिक्त यज्ञशाला, बराण्डो, गैलिरी तथा चारदीवारी का निर्माण भी होना है। इन सब कार्यों के लिए आप सब से आर्यसमाज के अधिकारी तथा कार्य-कर्त्ता उदारता पूर्वक इस यज्ञ मे आहुति देने के लिए सानुरोध प्रार्थना करते हैं।

परमादरणीय श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती २-२-६९ को भवन का आधार-शिलान्यास कर चुके हैं।

अब तक आर्य समाज के कार्यकर्त्ता ७५,०००) रु० की राशि इस कार्य के लिए एकत्रित कर चुके हैं। यह राशि लगभग १५० परिवारो से प्राप्त हुई।

समाज के अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता आपके पास भी यथाशीघ्र पहुच रहे हैं। कृपया इन्हे पूर्ण सहयोग प्रदान कीजिए तथा इस यज्ञ मे अपनी आहुति यथाशीघ्र भिजवा कर पुण्य के भागी बनें।

विनीत

गुरुदत्त वैद्य — प्रधान, आर्य समाज
नारायणदास कपूर — प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा
गोवर्धनलालदत्त — प्रधान, डी. ए. वी. कालेज प्रबधकर्त्री समिति
बिहारीलाल — मन्त्री, आर्य समाज
सावित्री देवी — प्रधाना, स्त्री समाज
सुशीलादेवी — मन्त्रिणी स्त्री समाज
कान्हचन्द — (स्वामी चर्खा सोप) सयोजक

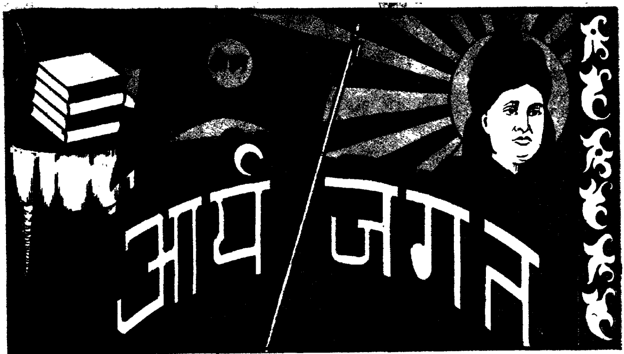
आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मसिंह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. [illegible] ०.५०
५. [illegible] सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.१०
७. व्याख्यान माला मूल १.३५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A. (अंग्रेजी में) १-५०
१२. सन्ध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १-००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानु जी M. A. २.००
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र (ले० आनन्द स्वामीजी महाराज) १.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईदास जी M A) ०.५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. .५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, .५०
२१. मुंडक उपनिषद (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सोमानन्द जी) उर्दू में ०.३७
२३. षद् दर्शन समन्वय (ले० गुरुदेव जी मीरपुरी १.२५
२४. सीता (ले. आनंदस्वामीजी) ०.३७
२५. पद्मनी (,, ,, ,,) ०.३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUp nishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A.) अंग्रेजी में १ २५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यो प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहा से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए पी एच.डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब।



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे	वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २२)	१६ ज्येष्ठ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१ जून १९६९	(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अग्निा रयिमश्नवत

अर्थ :—हे मनुष्यो! अग्निा—उस अग्निदेव के द्वारा रयिम सब प्रकार की रयि को, धन सम्पत्ति को, अश्नवत्—भोगते रहो।

भाव :—भगवान के अनन्त नामों में अग्नि भी बड़ा प्यारा नाम है। वेद माता का यह मनुष्यों को उपदेश है कि जीवन में जो कुछ भी धनसम्पत्तियों को प्राप्त करके उनको भोगना चाहते हो तो अग्निमय महान भगवान को जीवन का आधार बनाओ उसी की कृपासे मानव को अतुल सम्पदा की प्राप्ति होतीहै। प्रभु धन का स्वामी व भंडार है। जो उसका बन जाए यह रयि ही या लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। उस प्रभुसे सब कुछ मिलेगा।

ऋग्वेद १ मंडल

सं.

वेदामृत

महादानी के दान

ओ३म् इन्द्रमीशानमोजसा,
ऽभिस्तोमैरनूषत।
सहस्रं यस्य रातय :
उतवा सन्ति भूयसी :॥

सामवेद उत्तरा ५-१-२०

अर्थ :—हे नरनारियो! उस (इन्द्रम्) इन्द्र भगवान को (ईशानम्) सबके स्वामी को (ओजसा) बल से शासक बने हुए को (अभि) भलीभांति (स्तोमै :) स्तुतियों स्तोमों से (अनूषत) स्तुति करो। (सहस्रं) हजारों प्रकार के (यस्य) इन्द्र के (रातय :) दान है (उतवा) और भी (सन्ति) हैं (भूयसी :) बहुत दान। उसके तो अनंत दान है।

इस मन्त्र का भाव यह है

वेदमाता की सबके लिए उपदेश के रूप में यह प्यार भरी लोरी है कि सारे मिलकर उसी महान इन्द्र भगवान के स्तोम गाओ। उसी की स्तुतियां करो। वही अपनी शक्ति से सारे चराचर का अधपति बना है। जरा जगत में उस महादानी के हजारों नहीं २ अनन्त दानों के लगातार चलने वाले प्रवाहों को तो देखो निरन्तर चल रहे हैं। कभी कम नहीं होते और न ही सूखते ही हैं। उसी महादानी से सब कुछ मांगों। उसी को नमस्कार करो। —सं.

ऋषि दर्शन

मन : सत्येन शुद्धयति

यह मन:—मन सत्येन सत्य से शुद्धयति—शुद्ध पवित्र होता है। सत्य रूपी अमृत मन की मैल को दूर करने में सहायक बनताहै।

भाव :—यदि कपड़ा मैला गंदला हो तो जल से उसको निर्मल किया जाता है और यदि सोना चांदी धातु मैली मिलाव वाली हो तो उसे अग्नि से शुद्ध किया जा सकता है। किंतु मैला मन तो पानी या अग्नि से शुद्ध नहीं होता। महात्मा मनु जी महाराज अपने धर्मशास्त्र में कहतेहै कि उसे सत्य के द्वारा शुद्ध पवित्र बनाया जा सकताहै। सत्य विचार, सत्य संकल्प, सत्यनिष्ठा से मन निर्मल बन जाता है। सत्य अमृत है। यही मन को पवित्र कर देता है।

मनु स्मृति —सं०

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच०डी० (सभा मन्त्री)	सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

युवकों के लिए   युवक स्तम्भ

आपको क्या करना है

करनैल सिंह विद्यार्थी

बडी खूबसूरत इमारत को देख कर तो सब का दिल चाहता है कि काश मेरे पास भी ऐसी सुन्दर इमारत होती। पर इस सुन्दर इमारत के पीछे कितनी मेहनत हुई यह कम ही लोग सोचते हैं। सोचने पर स्पष्ट पता चल सकता है कि इसकी एक-एक ईंट रखते हुए उसे सीमिंट में या गारे में [illegible] हुए [illegible] इमारत बनाने वाले मिस्त्री को कितनी मेहनत करनी पडी होगी। कितने कष्ट उसने सहे होंगे। उस अकेले ही ने नही परन्तु उसके साथ [illegible] को क्या क्या सहना पडा होगा ये वही जानते हैं जिन्होंने उस खूबसूरत इमारत को बनाया होगा।

इसी तरह खूबसूरत, गुणवान, सेहत वाले बच्चो को सब चाहते हैं प्रत्येक यह चाहता है कि उसकी सन्तान सदाचारी गुणग्राही, आदर करने वाली हो। दूसरे शब्दोमे सरवन जैसे पुत्रों को सब अपनाना चाहते है ताकि बुढापे मे उनकी लाठी बन सके। जिसके लिए उस आदमी को, उस परिवार को एक सुन्दर मकान बनाने वाले मिस्त्री की तरह मेहनत करनी चाहिए। दिन रात, सर्दी गर्मी, धूप-छाव की परवाह न करते हुए उसे भी अपनी सन्तान को सुधारने के लिए कोई कोशिश उठा नही रखनी चाहिए

पुराने समयमे सन्तान को स्वच्छ उज्जवल बनाने के लिए आचार्यों, गुरुओ, साधु, महात्माओ का बडा भारी (दायित्व) साथ होता था। घर वाले, नि सकोच अपनी सन्तानों को इन आचार्यों के पास आश्रमो मे शिक्षार्थ भेज देते थे। आचार्यों के चरणो मे रहकर, शुद्ध वातावरण मे पलकर वह सन्तान, सोना बन कर निकलती थी।

पर, अब वह **System** नही रहा। यदि है भी कही तो बहुत कम **(Rearly)**। जिस कारण आज की सन्तान अपने चरित्र, सेहत को खोकर घर की, मा-बाप की समाज व देश की इज्जत की कोई परवाह नही समझती।

ऐसे विकट समय मे चरित्र की रक्षक, आदर की शिक्षा देने वाली सस्था केवल और केवल आपकी प्यारी आर्यसमाज ही है जिसे देश, समाज, राष्ट्र व आपके परिवार को सुन्दर, स्वच्छ बनाने की चिता है एतार्थ अपनी पुरी कोशिश कर रहा है। चाहे यह कोशिश डी ए वी. स्कूलो के रूप मे हो या आर्यसमाजो के रूप मे हो।

अपनी इन सब संस्थाओं के नाम एक निवेदन करना चाहता हूं।

आर्यसमाज के मुख्याधिकारी क्या करें :—

बच्चों को, युवकों को, आज की सन्तान को स्वच्छ उज्जवल बनाने के लिए आर्यसमाज के मान्य सज्जन अपना पूरा सहयोग दे सकते हैं। इन सज्जनो से निवेदन है कि वे अपने समीप वाले प्रत्येक युवक को आर्य युवक सगठनमे लाने की कोशिश करे उन को अपने साथ सत्सग मे लाए सत्सग के बात उनके विचारो को जानने के लिए पूछे कि इस सत्सग से, उपदेश से आपको कौन-सी चीज अच्छी लगी है। और कौन से विचार बुरे लगे। अर्थात् कौन से विचार उसने ध्यान से सुने है। उन विचारो को बाद मे आप शका समाधान द्वारा बता सकते हैं। सबसे बडी बात तो यह है कि आपका प्रभाव उन बच्चो पर ज्यादा पहले से ही होना चाहिए। समाज के प्रधान मन्त्री ऐसे, नए युवकों का परिचय भी यदि सत्सग मे दे दिया करे तो क्या ही अच्छा हो।

युवको को काम दें

जिन युवको को समाज के अधिकारी योग्य समझे, उनको छोटे-छोटे काम देते रहना चाहिए जैसे चार्ट (मन्त्रो का) लिखना सरल लेख लिखना, सरल भाषण बोलना, किताबो की सूची बनाना अथवा **Liberary** पुस्तकालय या वाचनालय का काम या समाज मे आने वाली सभी पत्रिकाओ मे नई खबरो की सूची देना, अतिथियो का सत्कार करना आदि !! मेरा यह दावा है, **Surity** है कि यदि आपकी समाज केमुख्याधिकारी या बडे सज्जन ऐसा करेंगे तो वो आर्यसमाज का आधा काम इसी से कर सकने यानि युवको का बच्चों का भला कर सकते हैं।

अपने सत्संग को आकर्षक बनाएं

इसके लिए समाज के अधिकारियो मे प्रेम, आदर की भावना का होना अत्यावश्यक है क्योकि नया आदमी खासकर बच्चा युवक आपके चरित्र, बोल-चाल, व्यवहार से बहुत प्रभावित हो सकता है। [illegible] की [illegible] आदर से, प्रेम से हाथ जोड कर एक दूसरे को नमस्ते [illegible] बातें हैं, कला है जिसको देख कर युवक, बच्चा बहुत कुछ सीखता है।

आप की समाज के, भाइयों के आपस में वैर विरोध, विचारों का विरोध हो सकता है पर उस विरोध को समाज के सत्संग में [illegible] अच्छा नही है। इसका नये आदमी पर बहुत बुरा प्रभाव पड सकता है।

प्रतियोगताओंका आयोजन करें

बच्चो के, युवको के काम को उत्तेजित करने के लिए आप उनकी छोटी-छोटी प्रतियोगितायें जैसे भाषण प्रतियोगिता, लेखन - प्रतियोगिता, लेखन-प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिताओ का आयोजन करके उनके ज्ञान को बढा कर उनके आर्य-युवक बनाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।

युवकों के कार्यक्रमों में शामिल हों

युवक, बच्चे अपने बीच, बडे को देख कर जिस का उन पर काफी प्रभाव हो। उनका सही पथ प्रदर्शन आप उनके सत्संगो मे प्रोग्रामों में शामिल हो कर ही कर सकते हैं। उनकी बुराई को, भूलको, त्रुटि को उनके बीच घुस कर ही याद दिला सकते हैं।

पुस्तकें दें :

युवको को आर्य (श्रेष्ठ) बनाने के लिए साहित्य भी अपना बडा योगदान दे सकता है। युवको को पढने के लिए रोचिक, शिक्षाप्रद पुस्तकें दें।

गरीब युवकों की सहायता

यह देखा गया है कि गरीब बच्चा, युवक जितना आपके पास आ सकता उतना अमीर धनी बच्चा, युवक आपके पास नही आ सकता और जितना काम गरीब आपको दे सकता है उतना अमीर नहीं। एक गरीब बच्चे को यदि आप, आपकी समाज थोडी-सी भी यदि सहायता कर सके या करनी है तो वह युवक उसका परिवार आपका, आपकी समाज का सदा अमर कृतज्ञ रहेगा। [illegible] आपके, [illegible] के नजदीक नहीं आ सकता ? आप उस [illegible] की [illegible] के रूप में, पढ़ने के [illegible] मे [illegible] १० रु. की सहायता कर सकते हैं।

डी. ए. वी, संस्थाओं (स्कूलों, कालिजों) के

[illegible] अपनी [illegible] की भिन्न-भिन्न [illegible], कक्षाओं [illegible] के अध्यापक [illegible] की सूची लेकर [illegible] ऐसे बच्चों को कुमार [illegible] मे आर्य युवक [illegible] सकता है। स्वय या किसी अध्यापक को जो आर्य विचारो वाला हो उन बच्चो का निरीक्षण करने के लिए नियुक्त कर सकता है। यह कुमार सभा साप्ताहिक हो सकती है। इस मे वही युवक (पहले) शामिल हो। वो अध्यापक महोदय उनका नेतृत्व कर सकता है उनका काम क्या हो सकता है इस सम्बन्ध मे—

साप्ताहिक भाषण या कहानियां

चार-पाच बच्चे किसी सप्ताह भाषण किसी सप्ताह कहानिया, चुटकले आदि पेश कर सकते हैं महापुरुषो के जीवन के सम्बन्ध मे भाषण दे सकते हैं।

हवन, संध्या सत्संग

सप्ताह मे कम से कम एक बार तो जरूर सारा **Staff**, स्कूल मिल कर सध्या, हवन, भजन आदि का प्रोग्राम बडे प्रेम और लग्न से करें। बच्चो को इस से भी बहुत रुचि शौक पैदा होता है।

प्रतियोगिता का आयोजन

मासिक प्रतियोगिता चाहे वह भाषण प्रतियोगिता हो या वाद-विवाद की या कहानी आदि की प्रतियोगिता हो जिस मे **1st** या **2nd** आने वाले प्रत्येक युवकको पुस्तको द्वारा या किसी और चीज को प्रतियोगिता के रूप में दे सकते हैं।

युवको की सूचि भेजें

जिन युवकोको आप अ[illegible] समझे उनकी सूची **आर्य युवक संगठन c/o A P P.** को भेजें जिस से कि प्रादेशिक आर्य युवक सगठन उनके साथ सम्बन्ध कर सके ताकि उनको और भी आर्यसमाज के साथ लाया जाए। यदि आर्य सज्जन कुछ भी इस सम्बन्ध मे करेंगे तो हम अपना काम सफल समझेंगे।

सम्पादकीय :—

आर्यजगत

वर्ष २९] रविवार २०२६, १ जून, १९६९ [अंक २२

वह दिन कब आयेगा

दिन तो सारे ही अच्छे हैं। इनका क्रम लगातार चलता रहता है। किन्तु उस दिन की ओर आंखे लगी हुई है जिस दिन दिल का स्वप्न केवल स्वप्न न रह कर वास्तविकता का रूप धारण कर लेगा। बात यह है कि आर्यसमाज के पास बड़ी-बड़ी संस्थाएं व अन्य संस्थान हैं। विशेष-रूप से शिक्षण संस्थाओं का महान जाल चारो ओर बिछा हुआ है। आर्यसमाज के लिए ये बड़ी भारी शक्ति का काम करते हैं भारत की तथा विदेशो मे कार्य करने वाली ये प्रसिद्ध शिक्षण संस्थाएं शिक्षा के विशाल क्षेत्र मे सर्वतोभावेन आगे हैं। अपने पराये सब इन की खुले दिल से प्रशंसा करते रहते हैं। सभी बातो मे इनकी सब जगह प्रतिष्ठा है। जन-जीवन का निर्माण करना इनका प्रयोजन है। इसी संकल्प को लेकर अपने आरम्भकाल से प्रगतिपथ पर बढ़ती जाती है यह बात सब के लिए गौरव की है।

यह सब कुछ तो ठीक है। किन्तु इस बात के अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के पवित्र नाम को अथवा आर्यसमाज के ऊंचे नाम को लेकर कार्य करने वाले इन संस्थानो के द्वारा एक विशेष बात और भी सबकी आखे देखना चाहती हैं। यह महान् मिशन भी इनके द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता है। यह इसलिए कि इनमे बड़े-बड़े विद्वान्, गम्भीर चिंतक एवं महान् लेखक हर विषय के बैठे हैं। उनको बड़ा अनुभव तथा स्वाध्याय है। उनके पास विविध विचारो का संचय है। संस्थाओं में बैठने वाला युवक वर्ग तो लाभ उठाता ही है—किंतु बाहर की जनता भी पूरा लाभ उठा सके—ऐसी मन की इच्छा है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना सारा यौवन और जीवन वेद प्रचार मे अर्पित कर दिया था। उनकी सारी प्रवृत्तियां विविध क्षेत्रों मे कार्य करती हुई भी वेद के परमधर्म रूपी केन्द्र के चारों ओर घूमती रही। उनकी निष्ठा हो या संकल्प हो, व्रत हो या लक्ष्य हो—एक मात्र वेद ही था। आर्यसमाज की स्थापना भी तो इसी वेद प्रचार के महान् मिशन की पूर्ति के लिए की थी। आर्यसमाज निरन्तर अपने जन्म दिन से लेकर इसी कार्य मे जुटा है।

हम चाहते यह है कि आर्य समाज की प्रत्येक संस्था चाहे वह कालेज हो या स्कूल, गुरुकुल हो या अन्य कोई संस्थान—जिस के नाम के साथ स्वामी दयानन्द का नाम जुड़ा है अथवा आर्य शब्द है या आर्य समाज के साथ किसी प्रकार का भी सम्बन्ध है—वर्ष मे एक छोटी या बड़ी पुस्तक प्रति वर्ष प्रकाशित करने की निश्चित योजना बना कर उसे छपवाया करे। आर्य-समाज के बड़े-बड़े स्कूलो कालेजो, गुरुकुलो मे हर विषय के बड़े-बड़े विद्वान् है। किसी एक विषय पर जिसका सम्बन्ध वेद के साथ हो, लिखवा कर उसे प्रकाशित करना चाहिए। विशेष कर तो यह कहना है कि प्रति वर्ष प्रत्येक संस्था वेदो मे से भिन्न-भिन्न विषयो के सूक्तो के मन्त्रो को लेकर उनका सरल अर्थ कुछ व्याख्या सहित नाना भाषाओ मे जिस मे अंगरेजी भी शामिल है—पुस्तकाकार प्रकाशित किया करे। कितना बड़ा प्रचार इस से होगा। कितने पढ़े लिखे लोगों तक वेद का सन्देश पहुंचेगा। पता नही इस से कितने जीवनो को प्रेरणा मिलेगी—यह स्वयं अनुमान लगाया जा सकता है।

इस बात के लिए प्रत्येक संस्था को पूरी-पूरी स्वतन्त्रता है कि वह छोटी पुस्तक निकाले या कुछ बड़ी। हम तो यहां तक निवेदन करना चाहते हैं कि बेशक बत्तीस या अड़तालीस पृष्ठ की ही लघुपुस्तिका ही निकाले किन्तु निकाले अवश्य ही। हां एक बात की बड़ी आवश्यकता है कि ऐसी प्रकाशित की जाने वाली पुस्तक हर बात मे बहुत ही ऊंचे स्तर की हो। कागज, छपाई तथा अन्दर की सामग्री का पाठक पर बड़ा प्रभाव पड़े। आज के वातावरण मे ऐसे २ साहित्य की कितनी आवश्यकता है—यह कौन अनुभव नही करता? इतनी संस्थाओ से प्रतिवर्ष वेदो के भिन्न २ सूक्तो को लेकर सरलता से जिस समय उनका विविध भाषा मे अनुवाद करके पुस्तकें प्रकाशित होने लगेगी तो इसका बड़ा भारी प्रभाव पड़ेगा। विशेषकर इस समय का युवक वर्ग प्रभावित होकर नास्तिकता के पथ से हट कर आस्था व नैतिकता के मार्ग का मार्गी बन जाएगा। यह कार्य कोई कठिन नही है। थोड़े से परिश्रम की आवश्यकता है। मामूली सा पैसा लगेगा। उसी दिन को देखने को आंखे तरसती हैं जब हमारी प्रत्येक संस्था सुन्दर रूप मे वेद सूक्तो को छोटी-बड़ी पुस्तकों मे प्रतिवर्ष प्रकाशित करेगी। देखें वह शुभ दिन कब आता है —त्रिलोकचन्द।

युवक वर्ग के लिए

होशियारपुर डी ए वी कालेज मे श्री नन्द सिंह जी ने छात्रो को ट्रेनिंग देने का बड़ा कार्य किया है। वहां से अभी-अभी सेवा मुक्त होकर आर्य समाज के कार्य मे लगे हुए हैं। साथ ही कुमारों व युवको को संगठित करने एवं उनको आर्य समाज के विशाल परिवार का शक्तिशाली अंग बनाने मे विशेष कार्य सम्भाल लिया है। मान्य चौधरी बलवीरसिंह जी एम एल. ए. प्रधान दयानन्द कालेज प्रबन्ध समिति ने उनको आर्य युवको के संगठन के कार्य पर लगा दिया है। अभी-अभी उनके साथ बैठने व युवक वर्ग की प्रवृत्तियो पर विचार का अवसर मिला। प्रेरणामय उनके विचारो मे प्रसन्नता मिली। नौ स्कूलो मे युवा-शक्ति का संगठन कर लिया है। कालेज का अनुभव है। अपनी आर्य प्रादेशिक सभा ने डा वेदीराम जी सभा मन्त्री के नेतृत्व मे युवक वर्ग के संगठन का कार्य भी प्रारम्भ किया हुआ है। हम चाहेंगे कि इस कार्य मे चौधरी नन्द सिंह जी का पूरा सहयोग लेकर स्कूलो मे युवक संगठन का कार्य किया जाए तो बड़ा काम हो सकता है इनके अनुभव से लाभ उठाया जाए।

छूतछात निवारण

आर्यसमाजो की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई देहली के आदेश पर गत २५ मई रविवार के दिन प्राय सारे समाजो में छूतछात निवारक सम्मेलन समारोह सम्पन्न हो गए। आर्यसमाज ने अपने सामूहिक रूप मे इनके द्वारा अपने वैदिक सिद्धान्त के अनुसार इस बात का पूरी तरह प्रचार किया कि वैदिक धर्म मे किसी प्रकार की भी छूतछात की बात नही है सारा मानव समाज एक है, समानता के अधिकार रखता है जन्मना ऊंच नीच का प्रश्न गलत है। सभी प्रभु के अमृतपुत्र है। सबके अधिकार समान हैं। आर्य समाज ने तो अपने कार्य मे इस सिद्धान्त को आरम्भ मे ही क्रियात्मिक रूप दिया है। प्रारम्भ मे इस विषय पर बड़े २ शास्त्रार्थ तक किए गए। आर्यसमाज की तमाम संस्थाए, मन्दिर तथा अन्य कार्य संस्थानों मे किसी के लिए भी किसी प्रकार की रुकावट नही है छूतछात ने भारत को बड़ी हानि पहुंचाई है। अब समय है कि इस महारोग को देश से सर्वथा निकाल दिया जाए।

प्रिय दयानन्द के बारे में

भिन्न भिन्न नगरो व समाजो से सज्जनो व बहिनो के पत्र आते रहते हैं जिनमे मेरे बेटे प्रिय दयानन्द एम ए के साधु आश्रम होशियारपुर मे गत २ नवम्बर ६८ से लापता होने के बारे मे किसी प्रकार का सुराग लगने की बात पूछी होती है। आर्य भाई बहिनो व कई दूसरो का मुझ पर बड़ा स्नेह है—प्रिय दयानन्द के साथ भी स्नेह रहा है। अब तो पूरे सात महीने उसे लापता हुए हो गए हैं—तनिक भी सुराग नहीं लगा। बहुत कुछ हो रहा है किंतु पता नहीं लग रहा। साधु आश्रम होशियारपुर से लापता हुआ है। वहां से यदि कड़ाई के साथ पता लगाने की कोशिश की जाए तथा आए हुए गुमनाम पत्र मे लिखे लोगो से पूरी पूछताछ की जाए तो शायद पता चल सके। यह काम तो सारा समाज ही कर सकता है। मेरी सारी शक्ति तो समाज ही है। मैं तो अपना युवक बेटा वहां खो बैठा हूं। किसे और क्या कहूं?

—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री
सम्पादक आर्यजगत

★ परमेश्वर उनपर अनुग्रह करता है जो परमेश्वर को अपने हृदय मन्दिर मे आसन देकर उसकी देख-रेख मे अपना जीवन व्यतीत करते है।

★ परमेश्वर का आश्रय लेना जीवन है और उसका साथ छोड़ देना मृत्यु।

'असतो मा सद्गमय'

(श्री सुरेन्द्र भटनागर एम. ए. डी. ए. वी. कालेज,जालन्धर)

आगरे के ताजमहल आदि सुप्रसिद्ध दर्शनीय स्थलो को देखता हुआ जब मैं आगरा-विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर पहुचा तो मोटे-मोटे अक्षरो मे उत्कीर्ण 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के सन्देश पर मेरी चचल दृष्टि टिक गई, वाणी मूक और मस्तिष्क चिन्तनशील हो उठा। सचमुच शिक्षा-संस्थानो का परम उद्देश्य है कि मानव को अज्ञान गर्त्त से निकाल कर ज्ञानमार्तण्ड के दर्शन करवाना। तमस अर्थात अन्धकार अज्ञान का द्योतक ही। अज्ञान ही मनुष्य के पतन का कारण है। इसे यदि विश्व के अधिकाश कलहो का जनक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। इसलिए मानव को ज्ञानोपार्जन के लिए निरन्तर सलग्नशील रहना चाहिए। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सत् अथवा सत्य की प्राप्ति है। सस्कृत मे सत् शब्द सत्य का पर्याय वाची है। जो शिक्षा हमे सत् से विमुख करके असत् की ओर उन्मुख करती है वह सर्वदा सर्वथा त्याज्य है। सत् की प्राप्ति के पथ पर सहस्त्रो सकटो का सामना करते हुए मनुष्य को अपने स्वत्व को समाप्त करने मे तनिक भी सकोच नही करना चाहिए। तभी तो भक्त भगवान से सच्चे दिल से प्रार्थना करता है 'असतो मा सद् गमय' अर्थात् असत् से सत् की ओर ले चलो। सत् शाश्वत एव अटल है और असत् निराधार एव झूठा है। तभी तो वेद मे कहा गया है कि मैं अनृत अर्थात् असत् को छोडकर सत्य की प्राप्ति करू 'अहमनृतात्सत्यमुपैमि' यजु० १-५

म० गाधी सत्य को तो परमात्मा का रूप मानते हैं। वह अपनी आत्मकथा मे लिखते है **For me truth Is souereign Princtpal which includes numerous other princidles .. I worship god as truth ouly।'** प्राचीन मनीषियो ने भी सत्य को परमब्रह्म एव सर्वोच्च माना है 'सत्य रूप पर ब्रह्म सत्य हि परम तप। सत्यमूला . क्रिया सर्वा . सत्यात्परतर नहि गुरुनानक देव की वाणी का नाद कर रहा है कि सत्य पर अवलम्बित आचरण के बिना परमात्मा की प्राप्ति सभव नही 'साच विना हरि सि झे न कोई' मारूसोहले, म० १, स० ७।

महर्षि दयानन्द ने वेद के सत्सदेश की दुन्दुभि बजाकर तत्कालीन पाखडी पडितो सन्यासियो, एव ब्राह्मणो की धूर्तता को समाप्त करके स्त्री, शूद्र आदि वर्गों को समाज मे सम्मानित रूप से प्रतिष्ठित करवाया, तथा मूर्तिपूजा एव सहस्रो प्रकार के अध-विश्वासो को वृथा जतला कर केवल एकमात्र सर्वशक्तिमान अखिलेश की आराधना का मधुर उपदेश दिया था। उनके तन का रोम-रोम में सत्य के स्वर का गायन गूज रहा था। तभी तो आर्यसमाज के चौथे नियम मे कहा है कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये, 'इसी के साथ पाचवे नियम मे इसे और स्पष्ट करते हुए कहते है कि 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार कर करने चाहिए।' धर्म वही है जो सत्य पर आधारित हो। सत्य धर्म का पर्यायवाची है।

इस सत्य की प्राप्ति को जीवन का प्रमुख लक्ष्य समझना चाहिये। जीवन के तीनो पक्ष—मानसिक, कायिक, वाचिक इसी सत्य के लय मे लीन रहने चाहिए। सत्य का अनुसरण करने वाला व्यक्ति सदैव विवेकी, ज्ञानी एवं व्यापक दृष्टिकोण वाला होगा। उस मे कट्टरता, असहिष्णुता का नितान्त अभाव होगा। अधविश्वास मूक श्रद्धा एव कट्टरता आदि सत्य के कटु विरोधी हैं। आज कितने शोक का विषय है कि विभिन्न धार्मिक सम्प्रदाय जो सत का प्रचार करने का दावा तो करते हैं इन्ही निर्बलताओ से ग्रस्त होकर सत्पथ से भ्रष्ट हो रहे हैं। आज वे गुरु ग्रथ साहिब, कुरान आदि के खूब पाठ करते हैं उसके आगे माथा टेकते ही पैसे चढाते है, चवर हिलाते है परन्तु उन श्रद्धालुओ को उनके अर्थो का ज्ञान नही। यदि सही अर्थों का जब ज्ञान भी हो जाए तो सत्य एव विवेक के कपाट बिल्कुल बन्द करके उन्हे वह सत्य की कसौटी पर नही कसते प्रत्युत अध श्रद्धा के वशीभूत उन्हे बिल्कुल सत्य मान कर स्वीकार कर लेते हैं।

आज वैदिक पथ के अनुगामी आर्य बन्धुओ मे भी अविवेक, असत्य आदि के किटाणु सत्य एव विवेक, रूपी अमृत को खाए जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने जिस कीचड में हमे निकाल कर सत्पथ पर चलने के लिए आह्वान किया था उसी पथ का आज हम निरादर कर रहे हैं। महर्षि का यह सिंहनाद था कि जीवन का प्रत्येक क्रियाकलाप सत्य की कसौटी मे खरी २ उतरनी चाहिए। क्या सचमुच हम उनके अनुयायी ऐसा व्यवहार कर रहे हैं?

अर्थविहीन वैदिक मत्रो के केवल उच्चारणमात्रसे निश्रेयसिद्धिकी प्राप्ति स्वीकार न करने वाले विद्यामार्तण्ड दयानन्द के सदाचरण पर अत्यधि बल दिया परन्तु आज उनके नामलेवा अनुयायी केवल साय प्रात शुबह अथवा अशुद्ध उच्चारण करके दैनिक सध्या तो करते हैं परन्तु उनके अर्थों का लेशमात्र भी ज्ञान नही। भला जब हमको पता ही नही कि हम बोल क्या रहे है उसका हमारे मन-मस्तिष्क पर क्या खाक प्रभाव पडेगा? यही कारण है कि बहुत से आर्य बन्धुओ के जीवन मे आर्यत्व की झलक कम ही झलकती है।

(क्रमश)

प्रचार समाचार

आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला नगर मे २० मई से २५ मई तक प० तेजराम जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा बडी लगन, सपष्टता, विद्वता से ओजस्वी प्रमाणिक भाषण देते रहे आपका अध्ययन बहुत विशाल है, आपके व्याख्यानो की शैली चित्ताकर्षक है। भाषण का ढग बहुत गम्भीर तथा प्रभावशाली है। इस से पहले श्री मेलाराम जी के मनोहर भजन होते रहे। इन विचारो से लाभ उठाने के लिए समाज मन्दिर मे बहुत सख्या मे भाई-बहिन इकट्ठे होते थे। जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

भवदीय

प्र० आर्यसमाज अम्बाला नगर

आर्य समाज कालकाजी

आर्य समाज कालका जी नई देहली के सज्जन श्री सोमदेव जी प्रधान, श्री इन्द्र सेन जी कोहली, श्री लूथरा जी, वैद्य अमी चन्द जी और पुरोहित जी बड़े ही उत्साही सज्जन हैं। समाज के विशाल हाल का निर्माण हो रहा है। वहां पर सभा की प्रसिद्ध मण्डली प. राजपाल जी मदन मोहन जी के साथ मुझे प्रचार के लिए अवसर मिला। जनता की रुचि एव माता माया देवी जी के नेतृत्व मे स्त्री समाज का उत्साह देख कर प्रसन्नता हुई। खूब प्रचार होता रहा। नवम्बर में वार्षिक उत्सव का विचार हुआ। सभा को वेद प्रचार मे ५० रुपए मिले। मार्ग व्यय भी मिला। सभी के सभी प्रेम के लिए बधाई।

—स.

पं० मेहरचन्द शर्मा चले गए

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धरके मान्य मन्त्री डा० वेदीराम जी शर्मा एम ए. पी एच डी. ने आर्य समाज के पुराने अनथक कार्य-कर्त्ता, ऋषि के अनन्यभक्त आर्यवीर पत्र के सफल सम्पादक प० मेहरचन्द जी शर्मा आर्यवीर के दुःखद निधन पर अपनी सम्वेदना निम्न शब्दो मे प्रकट करते हुए लिखा हैं]—प० मेहर चन्द जी आर्यवीर प्रारम्भ से हा आर्य समाज के दीवाने थे। समाज के सिद्धान्तो मे पक्के थे। आर्यवीर साप्ताहिक पत्र निकालकर जितनी सेवा लेखो द्वारा समाज की वह स्मरण रहेगी। वैदिक सिद्धान्तो पर जिसने भी जब आक्रमण किया, आर्य वीर के द्वारा उस का मुंहतोड जवाब दिया। सिद्धान्तो पर तो किसी से भी समझौता नही करते थे आर्यवीर के विशेषाक तो स्वाध्याय का बडा भण्डार है। इस सेवा कार्य मे ही अपना सारा जीवन लगा दिया। अपना बहुत कुछ इसमे दे डाला पुराने समाज युग के आर्यवीर थे। उनकी लेखनशैली बडी प्रभावशाली थी। समाज मे जितने भी बडे २ आन्दोलन हुए, उनमे उनके आर्यवीर का बडा भाग है। वह बडे ही सरल सादा प्रकृति के थे। आर्यसमाज के कार्यों मे ही लगे रहते थे। गत हिन्दी आन्दोलन मे फिरोजपुर जेल मे हुए लाठी चार्जमे उन्हे चोटे आई थी कई वर्षों से बीमार थे। बीमारी उनको ले गई। आज वह हमारे मध्य नही रहे। किन्तु उनकी लग्न, समाज प्रेम, सिद्धान्तनिष्ठा तथा सरलता नही भूलेगी। हमे उनके निधन पर अतीव शोक है। उनके सुपुत्रो के साथ हार्दिक सवेदना है। प्रभु दिवगत आत्मा को शाति दे तथा परिवार में धैर्य प्रदान करें।

—वेदीराम शर्मा

मन्त्री

आर्य प्रादेशिक सभा,

जालन्धर।

शिवरात्रि का महोत्सव धूमधाम से आया और चला गया। उत्सव मे इस वर्ष व्यय पहले की तरह ही लगाया आठ हजार हुआ पर आय पहले की अपेक्षा बहुत कम लगभग चार हजार हुई।। शेष व्यय ट्रस्ट के फण्ड से हुआ। आय की कमी का कारण पजाब, दिल्ली तथा बम्बई आदि स्थानो से अपेक्षा कृत कम आदमियो का आना था।

उत्सव के कारण उपदेशक विद्यालय मे पठन-पाठन का कार्य प्राय: एक मास शिथिल रहा। मार्च और अप्रैल मास मे पढाई तथा अन्य कार्य नियमित रूप से चले। अब परीक्षण समीप आ रही है।

इस वर्ष उत्सव के बाद श्री सत्यव्रत जी स्नातक गुरुकुल झज्जर अध्यापन कार्य के लिए आ गए हैं। उन्होने मनोयोग से कार्य भी प्रारम्भ कर दिया है। वे सरल स्वभाव मे परिश्रमी तथा सदाचारी स्नातक हैं। उनसे महालय के कार्य मे अच्छी सहायता प्राप्त होगी।

इस समय महालय ने जो मुख्य २ प्रवृत्तिया चल रही है उनका ब्योरा निम्न हैं :—

१ गौशाला :—इस समय गौशाला मे २० के लगभग पशु हैं। दूध उत्पादन २३'२४ किलो प्रति दिन है, जो-/९० पैसे प्रति किलो के भाव से बेचा जाता है। सौराष्ट्र मे इस वर्ष वर्षा की अत्यन्त कमी के कारण चारा बहुत महगा और दुर्लभ है। इसलिए गौओ की खुराक पर लगभग सात सौ मासिक खर्च है, कार्यकर्त्ताओ पर दो सौ पचास, पर दूधादि की आय लगभग छ: सौ रुपएहैं। इस प्रकार ३५०।

महालय समाचार

-३००।- का प्रतिमास घाटा रहता है। हमारे विचार मे गो-सवर्धन सदन अथवा गौशाला चला कर गो वश का विकास करना ही वास्तव मे भी हत्या निरोध का उपयुक्त साधन है, पर यह कार्य खूब कठिन है। ट्रस्ट की गौशाला का घाटा पूरा करने के लिए धर्म-प्रवण सज्जनो का सहयोग अपेक्षित है।

११ उपदेशक विद्यालय—इस वर्ष सिद्धान्त प्रवेश, सिद्धान्त परिचय तथा सिद्धान्त विशारद तीनो ही श्रेणियो का कार्य ठीक-ठीक चल रहा है। नए वर्ष मे विद्यार्थियो की सख्या २० तय करने का अधिकारियों का निश्चय है। ट्रस्ट की ओर से प्रति विद्यार्थी लगभग ७०-७५/- प्रतिमास व्यय किया जाता है।

विद्यार्थियो का स्वास्थ्य सामान्यत. ठीक है। इनमे मानसिक विकास और रुचि परिष्कार के लिए चार कार्य कलाप चलाए जाते हैं।

क—महालय आर्यसमाज—नियमित साप्ताहिक सत्सगो के अतिरिक्त विशेष उत्सव भी इसके तत्वावधान मे मनाए जाते हैं। २७ मार्च को राम जन्मोत्सव मनाया गया था। इसमे श्री रामसुभगसिह, श्री हरिश्चन्द्र तथा श्री वेदव्रत शर्मा, इन विद्यार्थियो ने अपने विचार रखे। अध्यापको मे श्री सत्यव्रत जी स्नातक तथा श्री सत्यदेव विद्यालकार ने राम जीवन पर प्रकाश डाला। इन्होंने राम-जीवन की कुछ समस्याओ को भी विद्यार्थियो के सामने उपस्थित कर, समाधान खोजने की प्रेरणा की।

ख—वागवर्धिनी सभा.—इसमे विद्यार्थी हिन्दी मे भाषण तथा वाद-विवाद का अभ्यास करते हैं। इसका पाक्षिक अधिवेशन होता है। मार्च मे एक अधिवेशन मे श्री सत्यव्रत जी स्नातन ने विवेद विषय पर प्रवचन किया, दूसरे मे विद्यार्थियो मे 'मूर्ति पूजा' विषय को लेकर वाद-विवाद हुआ। अप्रैल के अधिवेशन को श्राद्ध' विजय पर विवाद हुआ।

ग—सस्कृत परिषद—इस मे विद्यार्थी सस्कृत-भाषण तथा अत्याक्षरी आदि का अभ्यास करते हैं। इसके भी पाक्षिक अधिवेशन होते हैं।

घ—आर्य युवक सभा—विशेष प्रसङ्गो पर आर्य युवक सभा अपने कार्यक्रम रखती है।

अभ्यागत अतिथि—इन मासो मे दो विशेष व्यक्ति पधारे—एक परमहस स्वा स्वतन्त्रानन्द जी पूर्णतया निस्सङ्ग उच्च कोटि के महात्मा आए, जिनकी सम्पत्ति एक कमण्डलु, एक कोपीन तथा एक मीना इतनी ही थी। दूसरे जैन महासती शारदा वाई जी अपनी मण्डली के साथ आई। इनके अतिरिक्त मेरठ की श्रीमती लीलावती गोयल तथा दिल्ली के श्री वेद प्रकाश गुप्त भी पधारे। ★★

★ साहस तथा धैर्य है उन्हे ही सफलता मिलती है।

★ आन्तरिक सग्राम मे वीर योद्धा बनो और इस आध्यात्मिक सग्राम मे विजयी होओ।

★कैसी भी परिस्थिति क्यो न आवे सदा बहादुर बने रहो और विजय प्राप्त करो।

★ जीने का अर्थ ही है प्रभु को ढूढना, तथा बाधाओ पर विजय प्राप्त करना।

★ यह जीवन प्रभु की उत्तम देन है। अरे साधक ! प्रतिक्षण का सुन्दर उपयोग कर।

★आलस्य मे पडे रहने और व्यर्थ की बातचीत करने मे परमेश्वर का साथ छूट जाता है।

आर्य समाजों की सेवा में

मान्यवर मन्त्री जी,

सादर नमस्ते।

सेवा मे प्रार्थना है कि कृपया शीघ्रातिशीघ्र निम्न सूचनाएं प्रेषित कर कृतार्थ कीजिए)—

१ सभा से सम्बद्ध कुछ आर्य समाजे ऐसी है जिनको ऐसे सज्जनो का ज्ञान होगा जिनके पास पाकिस्तान मे रह गई आर्य समाजो के कुछ कागज अथवा शेष धन की रकम होगी। यदि ऐसे सज्जनो को आप जानते हैं तो सभा को पूरे पते सहित सूचित की जाए जिससे उनसे मिलकर उक्त धन की पूरी जानकारी ली जा सके।

२ सभा के पास एक रसीद १९६०० रुपये की है। यह रुपया १७-१-१९४७ तारीख को **The Babu-ud-dhin Eletric Supply & Industrial Corporation Ltd Mondi Bahauddin** कम्पनी ने Bahauddin आर्यसमाज मे उधार लिया था। क्या कोई सज्जन इस रुपये के दिलवाने मे सभा की सहायता कर सकते हैं ?

३ जिन आर्यसमाजो ने पुरोहित जी को नियत किया हुआ है वे तुरन्त सभा को पुरोहित जी के पूरे विवरण भेजने का कष्ट करे तथा जिनके पास नही है वे एक पक्ति लिख कर यह भी सूचित कर दे कि हमारे पास पुरोहित जी की व्यवस्था नही है। यदि वे सामर्थ्य रखते हो तो इस बात का भी सकेत दे दे।

४ जिन समाजो के पास चन्दे के अतिरिक्त अन्य आय के किराये आदि के साधन सूचित करने की कृपा करे कि समाज मे कितने सदस्य है। कितनी चन्दे से आय होती हे। तथा कितनी अन्य प्रकार से।

यदि आपने अपना वार्षिकोत्सव अभी तक नही कराया तो शीघ्र ही इसका प्रबन्ध कर सभा को सूचित करे। यदि उत्सव न कराकर केवल कथा व एक दो दिन का प्रचार हो कराना हो तो उस सबध मे भी तुरन्त सूचित करने का कष्ट कीजिए।

आशा है उपयुक्त सूचनाए शीघ्र ही भेज कृतार्थ करेंगे।

वेदी राम शर्मा
सभा मन्त्री

(पृष्ठ ५ से आगे)

६ अप्रैल के अंक मे सिद्धपुर के मेलेमे ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्यकापिता द्वारा पकडा जाना वर्जित है। इस प्रसग मे अज्ञात जीवनी मे लिखा है कि हमने एक पुराने सिपाही से पूछकर सुन भी लिया था कि मेरे शोक के कारण ही माता जी का देहान्त हो गया और श्राद्ध के लिए मेरा (दयानन्द का) वहा पहुचना जरूरी है।' तथ्य यह है कि श्री महाराज के सिद्धपुर मे पिता द्वारा गृहीत हो जाने तक उनकी मातुश्री का देहपात नही हुआ था। श्री महाराज ने अपनी आत्मकथा मे इतना ही लिखा है—'पिता बोले, तू अपनी माता की हत्या किया चाहता है।' इस कथन का यह अभिप्राय नही है कि तब तक महाराज की माता का देहान्त हो गया था और श्राद्ध के लिए उनकी तलाश की जा रही थी। थियोसोफिस्ट मे प्रकाशित आत्मकथा तथा पूना प्रवचन मे तो इतना ही उल्लेख है कि पिता ने ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य की गर्हा करते हुए यही कहा कि इसने अपने इस वैराग्य धोरण रूपी कृत्य से कुल को अपयश का पात्र बनाया है—'**He reproached me violentry accusing me of bringing an tetnal disgrace upon my family**' इसी आधार पर देवेन्द्र बाबू ने इतना ही लिखा— 'मेरे हाथ से तूम्बी छीन कर फेक दी और मुझ पर गालियो की बौछार करने लगे, और अन्त मे मुझे कहा तू मातृहन्ता है, यहा 'मातृहन्ता' का अभिधार्थ मे न लेकर 'माता को कष्ट देने वाला' इस व्यंग्यार्थ मे ही लेना चाहिए। अस्तु।

अज्ञात जीवनी के १२वे व १३वे लेख पर कुछ विशेष रूप से आलोचना करनी है। स्वामी जी के सभी जीवनी लेखक इस बात से सहमत है ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्य ने अपनी कुछ कठिनाइयो को ध्यान मे रखकर पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास दीक्षा ली और 'दयानन्द सरस्वती' बने। परन्तु अज्ञात जीवनी लेखक ने उसे अपने १३वे लेख तक शुद्ध चैतन्य ही लिखा है। परन्तु एक बडी आपत्ति तो दूसरी ही है। सन्यस्त ही श्री महाराज ने जो उत्तरापथ की ओर प्रस्थान किया तो उनका भ्रमण का क्रम इस प्रकार था—चाणोद (करनाली) यहा महाराज ने

ऋषि दयानंद की अज्ञात जीवनी

श्री डा० भवानीलाल भारतीय एम. ए. पी. एच. डी.

सन्यास की दीक्षा ली। इसके पश्चात क्रमश. वे व्यासानाम, पुन छिकूर (मिनोर) चाणोद, अहमदाबाद, आबूशिखा, हरिद्वार हृषिकेश, टिहरी, पुन उत्तराखण्ड (गुप्तकाशी) होकर, ओखीमठ जोशीमठ, अलकनन्दा स्त्रोत, वसुधारा, बद्रीनाथ) होकर रामपुर, काशीपुर, द्रोणसागर पुन. मुरादाबाद मे आए। परन्तु अज्ञात जीवनी लेखक उन्हे चेतनमठ (बडौदा) से काशी भेज देता है, और काशी मे उनके विशद शास्त्रीय अध्ययन का उल्लेख करता है। हमारी आपत्तिया निम्न हैं.

श्री महाराज का प्रथम बार काशी गमन उनके उत्तराखड भ्रमणके पश्चात हुआ। हिमालय के पार्वत्य प्रदेश से उत्तरप्रदेश के मैदान मे उतर कर वे मुरादाबाद, सम्भल, गढमुक्तेश्वर, कानपुर, प्रयाग और मिर्जापुर होते हुए प्रथम बार काशी पहुचे। उनका यह प्रथम काशी प्रवास केवल १० दिन का रहा। इस समय वे वरणा सगम के पास एक गृह मे रहे, और काशी के प्रसिद्ध काशीराम राजाराम आदि विद्वानो से वार्तालाप करते रहे। अज्ञात जीवनीकार ने इस तथ्य की उपेक्षा कर श्री महाराज का लबा का लबा काशी निवास और कई पडितो से उनका विभिन्न शास्त्रो का अध्ययन बताया है। यह ११ मई के अक मे प्रकाशित सम्पूर्ण लेख ही कल्पित प्रतीत होता है, इसके निम्न कारण हैं:—

अज्ञात जीवनीकार ने स्वामी जी के काशी मे विद्या पढाने वाले अच्युतानन्द शास्त्री, रत्नाकर शिरोमणि तथागत धर्मपाल (बौद्ध) युगल किशोर पारेख (जैन), साधु बेताल भैरव (तन्त्र शास्त्र के ज्ञाता) विभूति भूषण तर्क वागीश, सच्चिदानन्द स्वामी आदि का उल्लेख किया है। यह सारी सूचि ही कपोल कल्पित और मिथ्य है। कारण कि काशी तत्कालीन पण्डितो की सूचि का उल्लेख हमे प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ (१६ नवम्बर सन १८६९) के प्रसंग मिलता है। उस समय काशी मे स्वामी विशुद्धानन्द, पं बाल शास्त्री, जयनारायण तर्क पचानन, प शालिगाम प मामनाचार्य, ताराचरण तर्करत्न, प माधवाचार्य, आदि पण्डित तो

परन्तु जो सूचि, अज्ञात जीवनीकरण ने प्रस्तुत की है कि स्वामी जी ने इसी समय बौद्ध जैन और तन्त्र सिद्धान्त का अध्ययन किया, यह कथन भी मिथ्य है। तन्त्रों के प्रति तो उनकी श्रद्धा ही समाप्त नही हो गयी थी। सर्वप्रथम टिहरी (गढवाल) मे स्वामी ने तन्त्रग्रथ पढ, और उनकी अश्लीलता को देखकर उनके प्रति उनकी श्रद्धा ही समाप्त नही हो गयी वे आजीवन तन्त्र साहित्य को घृणा की दृष्टि से रहे। अत यह कहना नितान्त अनुचित है कि काशी मे रहकर किसी बेताल भैरव नामक तान्त्रिक से उन्होने तन्त्रो का अध्ययन किया था। वस्तुत काशी का यह अध्ययन का सम्पूर्ण प्रसग ही मन कल्पित प्रतीत होता है। जब स्वामी जी गुजरात से निकलकर आबू, हरिद्वार होते हुए उत्तराखण्ड मे चले जाते है और वहा से उतरकर गगा के किनारे-किनारे भ्रमण करते नर्मदा के स्त्रोत तक पहुचते है, और पुन नर्मदा स्त्रोत गवेषणा के पश्चात तुरन्त मथुरा मे दण्डीजी की सेवा मे पहुच जाते हैं, पुन. उनके काशी मे रहकर वह सब पढने का वर्णन करना एक गल्पमात्र कहा जा सकता है जो उक्त अक मे लिखा गया है।

जिस सच्चिदानन्द सरस्वती का अज्ञात जीवनी कारने इस कल्पित काशी प्रसग मे वर्णन किया है उनसे श्री महाराज की भेंट बडौदा, अंचल मे ही हुई थी और वहा पर ही वे उक्त सच्चितानन्द परमहस से तत्वज्ञान विषयक वार्तालाप करते रहे थे। अज्ञात जीवनीकारने लिखाहै कि काशी मे शिक्षा समाप्त होने पर शुद्ध चैतन्य (अभी तक वे दयानन्द सरस्वतीको शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी ही लिखते हैं जबकि शुद्धचैतन्य तो दयानन्द सरस्वती के रूप मे प्रवज्या ग्रहण करने के पश्चात ही अपने प्रदेश गुजरात से बाहर निकलते थे। को दरभगा के नरेश ने ५०० रु० भेजे जिसे उन्होने अपने गुरुओ को दक्षिणा के रूप मे वितरित किया। यह सारा कथन की उपन्यासवत कल्पित ही है। इस अज्ञात और अप्रसिद्ध अवस्था मे न दयानन्द स्वामी का दरभगा या अन्य किसी नरेश से कोई परिचय ही हुआ और न उन्होंने अपने इन गुरुओं को ५०० रु० दक्षिणा स्वरूप ही दिए। आर्षप्रतिभा को पुन प्रस्फुटित करने वाले अशेष मेधा सम्पन्न स्वगुरु विरजानन्द दण्डी को भी देने के लिए दयानन्द के पास सिवा लोगो के कुछ नही था और वह भी तब जबकि मथुरा के अनेक श्रीमानो से उनका परिचय हो गया था, पुनः लिखना कितना उपहासास्पद है कि दयानन्द (शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी ने) एक नरेश से ५०० रु० लेकर अपने शास्त्र गुरुओ मे बाटे। अज्ञात जीवनीकार ने तो काशी के उन पण्डितो की एक लम्बी सूची दी है जिन मे महाराज ने कुछ न कुछ शास्त्र-ग्रथो को पढा। रामनिरजन शास्त्री तो श्री महाराज के विद्यागुरु थे परन्तु उनके अतिरिक्त जो नाम आए है वे सभी गवेषणीय है—यथा विशम्भर तर्क रत्न, हर प्रसाद विद्यारत्न, रासमोहन सिद्धान्त वागीश, निरखिलेश शास्त्री, रुद्रदेव विद्यालकार, सोमदेव तर्करत्न, महादेव शास्त्री, विमलेन्दु काव्यनिधि, शशिकात भट्ट, प्रखिला महाचार्य, महावीर शर्मा, राहुल मणिभद्र (बौद्ध) क्षेमकारण दर्शन शास्त्री।

यह आलोचना सकेत मात्र है। अभी तो अज्ञात-जीवनी का शेष अश प्रकाशित होना है। वस्तुत ऋषि जीवनी की शोध एक कटकाकीर्ण मार्ग है। आश्चर्य है कि सार्वदेशिक ने इस विवादस्पद सामग्री को बिना किसी टिप्पणी के प्रकाशित किया। वेद शास्त्री जी से प्रार्थना है कि वे हमारी शकाओ का समाधान करे।

सन्त वचन

★जो परमेश्वर से दूर रहता है उससे परमेश्वर भी दूर रहता है।

★शरीर बहुमूल्य है परन्तु जैसे रत्न का मूल्य उसकी आब पर निर्भर है वैसे ही शरीर का मूल्य अन्तःकरण की पवित्रता पर निर्भर है।

★द्वेष के आते ही उसका पुत्र पतन भी आ धमकता है अतः श्रेष्ठ पुरुष द्वेष से बहुत दूर रहते है।

★मनुष्य ससार के क्षणिक सुखों में जी बहलाना चाहता है परन्तु इस कृत्रिम सुख से आत्मा को सन्तोष नही मिलता।

गंगा राम, काशी राम तथा मूलराज एम. ए. आदि सोसाइटी के सदस्य थे। रजिस्ट्री कराते समय डी ए वी. कालिज सोसाइटी के निम्न-लिखित उद्देश्य घोषित किए गए :

१. पजाब मे स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्मान में स्मारक के रूप में एक एंग्लो वैदिक कालिज सस्था जिसमे एक स्कूल, एक कालेज, एक छात्रालय होगा, की निम्नलिखित उद्देश्यो सहित स्थापना करना,

(क) हिंदु साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित, उन्नत तथा लागू करना।

(ख) प्राचीन सस्कृत और वेद के अध्ययन को उत्साहित और प्रचलित करना।

(ग) अग्रेजी साहित्य, सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक विज्ञान को उत्साहित और प्रचलित करना।

२. दयानन्द एग्लो वैदिक कालिज सस्था के साथ तकनीकी शिक्षा देने के साधन प्रदान करना जहा तक वे प्रथम उद्देश्य की पूर्ति मे बाधक न हो।

लाला लाजपत राय ने १९२१ मे 'स्वामी दयानन्द और आर्य समाज को मौजूदा हालत' नामक अपनी पुस्तक मे लिखा था कि 'दयानन्द एग्लो वैदिक कालिज के बानियान का यह मन्शा था कि, सस्कृत और हिंदी की तालीम को अग्रेजी तालीम के साथ लाजमी करार देकर वह उन नुकायस को दूर कर सके जो एक तरफ महज संस्कृत की तालीम और दूसरी तरफ महज अंगरेजी की तालीम से पैदा होते है। उनकी गरज यह थी कि तालीमयाफ्ता जमाअत और अयाम उल्नास के दरम्यान जो दीवार हायल होती जाती है, उसको दूर किया जाए, ऐसी तालीम की जाए,जिससे तालीमयाफ्ता लोग अवामउल्नास के साथ ऐसे गहरे ताल्लुकात पैदा कर सके कि उनके ख्यालात का असर जाम हो।'

स्पष्ट है कि स्कूल के सस्थापक इसे ऐसी सर्वांगीण सस्था बनाना चाहते थे जहा सस्कृत के उच्च ज्ञान के साथ पाश्चात्य विज्ञान, शिल्प तथा अग्रेजी की शिक्षा का भी समुचित प्रबन्ध हो ताकि छात्र विश्वविद्यालय से उपाधिया प्राप्त कर जीविकोपार्जन सुविधापूर्वक कर सकें। यह पूर्व और पश्चिम के समन्वय का सकल्प था जिसमे प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान को पाश्चात्य शिक्षा की अपेक्षा प्रथम स्थान देना अभीष्ट था।

डी. ए. वी. कालेज की स्थापना में पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का योगदान

(श्री राम प्रकाश जी पी. एच. डी. चण्डीगढ़)

सचालको ने किसी समय भी कालिज का लक्ष्य आर्य समाज के लिए उपदेशक तैयार करना नही बताया। वस्तुत. कागज पर लिखे उद्देश्यो और जनता के स्वप्नो मे भारी अन्तर आरम्भ से ही रहा। दो भिन्न-भिन्न मनोवृत्तिया कार्य कर रही थी। लाहौर का नेता वर्ग कालिज को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखता था और गुरुदत्त तथा सामान्य आर्य जगत उसे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न साकार करने का हेतु समझता रहा। जनता अपने स्वर्णिम भविष्य की कल्पना और धार्मिक जोश मे ऐसी मस्त रही कि उसने लिखित उद्देश्यो की ओर गम्भीरतापूर्वक कभी ध्यान ही नही दिया। दे भी कैसे? कागज पर भले कुछ लिखा होता था पर जनता से अपील तो धर्म, ऋषि दयानन्द वेद सस्कृत और ब्रह्मचर्यादि के नाम पर की जाती थी। यह समूचा धन भी 'एग्लो' और 'वैदिक' के समन्वय मात्र के लिए नही अपितु 'एग्लो' पर 'वैदिक' की प्रभुता के लिए दिया गया था। दान अधिकतया धनियो ने नही, साधारण जनता ने दिया था पर उसका स्वप्न स्वप्न ही रह गया।

डी ए वी हाई स्कूल का दसवी कक्षा का परीक्षा फल १८८८ मे प्रान्त मे सर्वोत्तम रहा। इस आश्चर्यजनक सफलता से प्रभावित होकर जनताने इसे कालिज बनाने की माग की। गुरुदत्त व साईदास ने इसका समर्थन किया। इस प्रकार कुछ लोग सविलम्ब कालेज खोलने के पक्ष म हो गए। पर लाल चन्द आदि कुछ सज्जन इस पक्ष मे न थे। उनके विचारानुसार अभी समय उपयुक्त नही था तथा स्कूल की अवस्था और सुदृढ बनाना आवश्यक था। उनकी नीति थी--'धीरे चलो'। फलतः आर्य जनो मे दो विचार हो गए। आर्य समाज लाहौर का अधिवेशन कालिज खोलने के विषय मे निर्णय करने के लिए बुलाया गया। उस समय पण्डित गुरुदत्त बहुत बीमार थे तो भी वह बैठक मे शामिल हुए। मीटिंग मे गुरुदत्त, हसराज, साईदास, लाजपत राय आदि कालिज खोलने के पक्ष मे थे। पर लाल चन्द, द्वारिका दास, राय गगा राम, और मदन गोपाल विरोध कर रहे थे। सयोग देखिए कि मतदान मे ठीक पूर्व मदन गोपाल उठ कर चले गए और साई दास का प्रस्ताव एक मत की अधिकता से पारित हो गया। पक्ष मे १३ मत पडे तथा १२ विपक्ष मे। कालिज चलाने के लिए गये। तत्काल धन सग्रहादि का कार्य उत्साह पूर्वक आरम्भ कर दया गया। ज्वाला सहाय ने ५५ रुपये मासिक तथा गुरुदत्त ने एक वर्ष के लिए १० रुपया मासिक दान लिखवाया।

कालिज की प्रथम वर्षीय कक्षा १८८९ मे नियमित ढग से खोल दी गई। गुरुदत्त गणित तथा विज्ञान पढाने लगे। गणित का प्राध्यापक मिलने पर गणित की कक्षाए आपने छोड दी पर विज्ञान का अध्यापन कई मास तक किया। पजाब विश्व-विद्यालय की सिंडिकेट ने १८ मई १८८९ को एक प्रस्ताव द्वारा कालिज मान्यता प्रदान की। पौधा धीरे-धीरे विशाल वृक्ष बनने लगा।

ऋषिगुण गान

हम ऋषि तुम पे सदके है। (टेक)

जो भी सत्सग मे तेरे आया है। उच्च पदवी को उसने पाया है।
मुक्त कडियो से कर दिया तूने। और खुशियो से भर दिया तूने।
भटकते दुनिया वाले फिरते थे। पाप के गड्ढे मे जा गिरते थे।
वेद मार्ग जो दिखलाया था। कर्म करके जीना समझाया था।
चाहे सम्भव हो गिनती तारो की। पर असम्भव तेरे उपकारो की।
हम ऋषि तुम पे सदके हैं . .. ..

तेरी राहो मे चाहे काटे थे। फूल ही तूने सबको बाटे थे।
तेज खजर दिखलाए जाते थे। ईंट पत्थर बरसाए जाते थे।
गालिया देते थे हम खाने को। जहर देते थे हम पी जाने को।
ईश भक्ति से मुह को मोडा ना। सहन शक्ति को तूने छोडा ना।
क्रोध ना आने दिया तन-मन मे। प्यार ही देखा तेरे जीवन मे।
हम ऋषि तुम पे सदके है.........

घोर बेचैनी थी हथकण्डो से। पोप और पडो के पाखण्डो से।
लोग ईसाई बनते जाते थे। कई इस्लाम धर्म अपनाते थे।
बेरुखो विधवा और अनाथो से। छीन ली खुशिया इनके हाथो से।
मानते नफरत लोग अछूतो से। डरते थे, कल्पित भूतो से।
हाल बिगडा था नारी जाति का। तूने रुख बदला सारी जाति का।
हम ऋषि तुम पे सदके हैं. ......

जो ना माली बनके तू आ जाता। आज यह गुलशन ही मुरझा जाता।
खून से इसको है सीचा तूने। पाप की दलदल से खीचा तूने।
दिलमे लोगो ने पर बिठलाया ना। और तुझे जीवन मे अपनाया ना।
भाग्य दुनिया का धुल गया होता। काश! तुमको पहले समझा होता।
आज पछताने से ना रहते है। 'पथिक' सब दुनिया वाले कहते हैं।
हम ऋषि तुम पे सदके हैं... . .

—श्री सत्यपाल जी 'पथिक'

संक्षिप्त समाचार

★ अन्तराष्ट्रीय सद्भावना के लिए १९६७ का जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार खान अब्दुल गफ्फार खां को दिया गया है।

★ श्री ब्लादमीर दि एमेरेल मुतिन्हो को भारत मे ब्राजील का अगला राजदूत नामजद किया गया है।

टकारा समाचार

आज ११ ५ ६९ को श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा की यज्ञशाला मे रविवार के सत्सग के अनन्तर ट्रस्ट के आधीन काय करने वाले कायकर्ताओ तथा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियो की शोकसभा हुई। इसम महामहिम राष्ट्रपति ना० जाकिर हुसैन जी के स्वगवास होने पर शोक प्रकट किया गया। डाक्टर साहिब जसे महान गाधीवादी तथा व्यवहारिक शिक्षाशास्त्री के के निधन रो जो राष्ट्र को क्षति हुई उसके लिए चिन्ता प्रगट की गई तथा डाक्टर साहिब की आत्मा की सद्गति के लिए विशेष प्रार्थना की गई।

—सत्यदेव विद्यालकार
व्यवस्थापक

शोक समाचार

आर्य समाज साच जिला करनाल के प्रधान श्री नन्दराम जी का १९ मई को देहान्त हो गया आप जिला बोड मे मेबर रहे रोड सभा के प्रधान भी रहे आय समाज के प्रधान पद पर रहत हुए आय समाज की बहुत सेवा की आप सच्चे अर्थो मे आय थे भगवान इनकी आत्मा को सदगति प्रदान करे।

प्रवेश सूचना

अन्तर राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टकारा मे इस वष प्रवेश जून मास मे होगा प्रवेशार्थी विद्यार्थियो की योग्यता

क मट्रिक अथवा समकक्ष कोई परीक्षा पास हो।

ख स्वस्थ रोग रहित शरीर हो और सिगरेट पान आदि का व्यसन न हो।

ग—समाज के प्रचार कार्य म ही जीवन लगाने का विचार हो

घ ५ ६ वष तक अध्ययन के लिए प्रस्तुत हो

सुविधाए

भोजन वस्त्र पुस्तक निवास आदि का सब प्रबन्ध विद्यालय की ओर स होगा इसके अतिरिक्त कोई धन न दिया जाएगा

प्रवेशार्थी पूण विवरण के साथ पत्र द्वारा सूचना द

सत्यदेव विद्यालकार
व्यवस्थापक

* समाचार दर्शन *

सूचना

उपनयन तथा नामकरण सस्कार

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टकारा के तीन विद्यार्थियो के नाम परिवर्तित किए गए। पहले नाम उपयुक्त न थे।

पूवनाम	नवीन नाम
क मनोहर भाई	वेद भिक्षु
ख राम जन्म आय	सोमदेव आर्य
ग नत्थाराम	वेद प्रकाश

नाम परिवतन के साथ ही उनका उपनयन सस्कार भी किया गया। श्री सत्यदेव विद्यालकार तथा श्री सत्यव्रत जी स्नातक ने सुसस्कृत नामो की महत्ता पर प्रकाश डाला।

साप्ताहिक आर्यजगत का वार्षिक चन्दा आठ रुपये

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे

आर्य प्रादेशिक सभा म० हसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१ सामवेद भाष्य (ले० आचाय वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२ वदिक गुरमत [पजाबी मे] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी) १० ००
३ चन्द्रगुप्त मौर्य ० ५०
४ अमृत वाणी ० ५०
५ ऋषि सन्देश ० ७५
६ दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी)
७ व्याख्यान माला मूल १ २५
८ ऋग्वेद शतक ० ५०
९ यजुर्वेद शतक ० ५०
१० अथववेद शतक ० ५०
११ महात्मा हसराज मोडर्न पजाबके निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M A (अग्रजी में) १ ५०
१२ सध्या पर व्याख्यान ले० महात्मा हसराज जी १ ००
१३ Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २ ००
१४ महात्मा हसराज जी सचित्र(ले० आनन्द स्वामीजी महाराज)१ २५
१५ प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १ २५
१६ महर्षि दशन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M A) १ ००
१७ स्वाध्याय सग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M A) ० ५०
१८ नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १ ००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले वाचस्पति M A ५०
२० द्वितीय ,, ५०
२१ मुडक उपनिषद(ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A) ० ३७
२२ राधास्वामी मत आलोचना(ले० स्वामी सोमानन्द जी)उर्दू मे ० ३७
२३ षट दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १ २५
२४ सीता(ले आनदस्वामीजी)० ३७
२५ पद्मनी ( )० ३१
२६ पावती (,,) ० २५
२७ Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M. A.) अग्रजी में १-२५
२८ वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १ ५०
२९ जीवन ज्योति ० ६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार कर।

विशेष सूचना—महात्मा हसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा आय प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा (आय समाज अनारकली मन्दिर माग) नई दिल्ली मे भी खोल दी गई है अत साहित्य प्रेमी वहा से भी पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भजें।

★ श्री नयदेन पैनैव देवर्चेव को भारत मे बलगारिया का बगला राजदूत नामजद किया गया है।

★ अमरीका के विदेश मन्त्री श्री विलियम पी० रोजस २३ मई १९६९ को विशेष विमान से बकाक से यहा पहुचेंगे। श्री विलियम पी० रोजस विदेश मन्त्री श्री दिनेश सिंह तथा विदेश मन्त्रालय के अन्य अधिकारियो के साथ विचार विमर्श करगे।

★ आखिल भारतीय खेल कूद परिषद की सिफारिश पर भारत सरकार न देश के सात प्रमुख खिलाडियो को १९६८ के अर्जुन पुरस्कारो क लिए चुना है। वे खिलाडी हैं एथलीट कैप्टन जोगिन्दर सिंह और कुमारी मजीत वालिया बास्केटबाल के खिलाडी श्री गुरदयालसिह मुकेबाज हवालदार डनिस स्वामी क्रिकेट के खिलाडी श्री प्रसन्ना हाकी के खिलाडी श्री बलवीर सिंह (सेना) जैन बीकानेर की निशानबाज राजकुमारी सत्यश्री।

★ पाच कम्पनियो को २५ लाख ६१ हज़ार रु० के बोनस शेयर जारी करने की अनुमति दी गई है। बोनस शेयरो की राशि १ लाख २३ हजार रु० से लेकर १२ लाख ५० हज़ार रु० तक है।

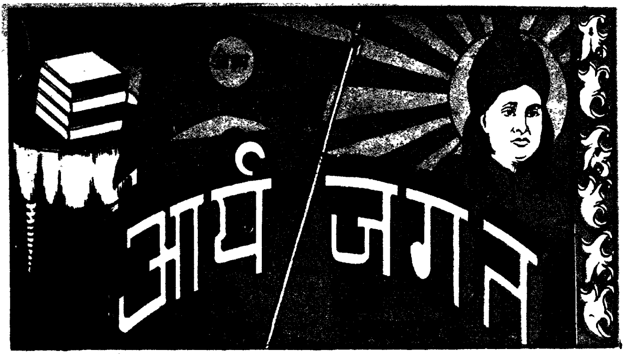
शोक प्रस्ताव

आज दिनाक २१ ५ ६९ को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के छात्रगण तथा प्राध्यापक वृन्द की सभा दानवीर श्री बद्रीप्रसाद पोद्दार बम्बई निवासी के निधन पर अति शोक प्रकट करती है तथा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत की आत्मा को सदगति और शान्ति प्रदान कर एव उनके दुखित परिवार को इस असह्य दुख के सहन करने की शक्ति तथा धय प्रदान कर।

त्रिलोकचन्द्र शास्त्री कन्ने
आचाय दयानन्द ब्राह्म
महाविद्यालय हिसार

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आयप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रस मिलाप रोड जालन्धर तथा आयजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर पजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २३) २६ ज्येष्ठ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—८ जून १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

स एक एव वृदेक एवं

स :—वह परमेश्वर एक :—एक एव ही हैं। वृत—निश्चित रूप से वह एक एव—एक ही है।

भाव :—वेदमाता ने अपने सारे ही पुत्र-पुत्रियों को भगवान के बारे में उसके एक ही होने का कितने साफ शब्दों में उपदेश दिया है। कि परमात्मा एक और एक ही है सारे चर-अचर विश्व का स्वामी वह एक ही है। वह एक होनेसे सारे जड़ चेतन देवों के ऊपर महादेवहै। भगवान के नाम अनेक हैं किंतु है एक। वही ब्रह्मा है, वही विष्णु और शिव है। जो अनेक प्रकार के भगवान मानकर उसकी पूजा करते हैं, वे अनजान हैं। एक प्रभु ही सारे विश्वमें व्यापक हो रहा है। उसे एक मानो, एक जानो और उसी एक की पूजा करो।

यजुर्वेद से—सं.

वेदामृत

एक सहारा तेरा नाम

ओ३म् इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे
जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवल :॥

सामवेद उत्तरा० ८-१-२

अर्थ :—हे इन्द्रं! हम सभी आपके पुत्र-पुत्रियां आप (इन्द्रं) इन्द्र को विश्वत परि) सारे विश्वके पदार्थों से भी तथा तमाम (जनेभ्य:) लोगों से (परि) उत्तम व श्रेष्ठ, सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ को (हवामहे) पुकारते है। (अस्माकम्) हम सभी के लिए (केवल) आप ही सहारा आधार है (अस्तु) हो। एकमात्र आधार आप ही है।

इस मन्त्र का भाव यह है

वह मंगलमय परमेश्वर विश्वके तमाम पदार्थों व मनुष्यों में सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ हैं उससे कोई भी प्यारा तथा उत्तव नहीं है वही इन्द्र है। हम सभी उस की सेना है।) उसे ही पुकारते है। किसी को धन का सहारा हो, किसीको बल का, किसी की सभा या विद्या का अभिमान होगा—किंतु हे प्रीतम! हमें तो केवल-मात्र आपका ही आधार है। एक सहारा तेरो नाम! आपको आधार मान कर हम निश्चिंत हैं आपको ही अवलम्बन माना है— सं.

ऋषि दर्शन

ध्यानं निर्विषयं मन :

अर्थ —ध्यानं-ध्यान उसे कहा जाता है जिसमे निर्विषयं-बिना किसी विषय के हो जावे यह मन :—मन का संसार। जब मन में किसी भी वस्तु का कोई विषय नहीं रहता। किसी भी प्रकार की कोई विषय नही रहता। किसी भी प्रकार की कोई विषय तरंग नहीं उठती—उस मन की अवस्था का नाम ध्यान है।

भाव —योग की आठ प्रकार की भूमियों में ध्यान भी एक आवश्यक भूमि है। ध्यान मन की उस अवस्था का नाम है—जबकि मनमे किसी भी प्रकार का विषय प्रकृति जगत का पदार्थ का मान नहीं रहता। मन बिल्कुल ही निर्विषय बन कर रहता है। सर्वथा जिसे खाली का नाम दिया गया है। मन की ऐसी दशा, परिस्थिति का नाम ध्यानहै।

योगदर्शन से—सं.

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम०ए०पी०एच०डी० (सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

पंजाब प्रान्त में

युवकों का संघठन

(श्री सत्यपाल 'सहदेव' लेख राम नगर (कादियां)

सारे देश मे यह क्रान्ति सी मची हुई है कि युवक सघठन किस ढग का हो—प्रत्येक दल व सम्प्रदाय का अपना-अपना दृष्टिकोण है, अपने-अपने विचारो पर आधारित युवक-सघटन बनाना चाहते हैं यही कारण है कि आज प्रायः प्रत्येक राज्य मे युवको की कई तरह की सेनाओं का निर्माण हो रहा है शिव सेना, मुसलिम सेना, इत्यादि यह सब राष्ट्र विरोधी तत्वो को सहारा देने मात्र ही है। मा-धरती की मानसिक सस्कृति को परिवर्तन करने के लिए आज जो पग विदेशी ईसाई मिशनरियो के द्वारा उठाए जा रहे है ऐसा कभी हम ने स्वप्न मे भी नही सोचा था। आजाद भारत के प्रागन मे विदेशी मिशनरियो का जमघट हो—खुलम-खुला अपने विचारो का प्रचार करें, गरीब भोली जनता को झूठ विचार देकर उनके धर्म परिवर्तन पर गर्व करें। लेकिन भारत की युवाशक्ति अपने ही विचारो मे मग्न हुए भारत-माता की दुर्दशा को देखते हुए भी मौन है आखिर यह कब तक ?

कभी समय था कि यही शक्ति ऊधमसिहका रूप धारण करके साडरस की मृत्यु का कारण बनी। प० राम प्रसाद 'बिस्मिल' की महान शहादत ने अग्रेजो के दात खट्टे कर दिए। वीर सावरकर की लेखनी के मातृभूमि की वाचिक व आत्मिक शक्तियो को नया जीवन दिया। स० भक्तसिह ने अपनी मा की पुकार को सुन कर अपने खून से युवा-शक्ति के गौरव को बनाए रखा। वीर सुभाष ने आजाद हिन्द फौज का निर्माण करके करके 'अग्रेजो भारत छोडो' का नाद वायुमण्डल मे गुजा किया। शेरे पजाब लाला लाजपतराय ने गोरो की लाठिया सहते हुए अपने प्राणो को देश हित न्योच्छावर कर दिया। सच ही वह कितना अच्छा समय होगा। देश की आजादी लेना एव देश को खुशहाल बनाना—यह थे उन दिनो युवको के उदगार।

परन्तु आज की युवाशक्ति किस मार्ग को अपना रही है यह तो प्रत्येक देश भक्त अनुभव कर रहा है—यदि आज इन नवयुवको का पथ-प्रदर्शन वास्तविक रूप मे न हुआ तो जल्द ही भारत की आतरिक अवस्थाओं मे तबदीली आएगी। अब समय है कि हम अपने प्रिय युवको के दिलों को देशीय विचारों में रग दें। आज का युवक कम्यूनिज्म व साम्यवाद के अर्थ-हीन सिद्धातो को भौतिक रूप मे सोचकर अपनाने लगा है—साम्यवाद के अर्थहीन सिद्धातों को भौतिक रूप मे सोचकर अपनाने लगा है—साम्यवादी तत्वों का अब जोर नवयुवक के कोमल हृदयो को बदलने के लिए लग रहा है। यदि इसकी ओर ध्यान न दिया गया, इसकी रोक-टोक न की गई तो भारत-माता की सच्ची युवा पीढी अपने भविष्य से डगमगा जाएगी। हमारे नवयुवक मण्डल का अध्यात्मिक अध्ययन है ही नहीं, यही कारण है कि हम अपने युवको के दिलो को अपनी तरफ खीच नही रहे या वे हमारी तरफ आ ही नही रहे। इसीलिए वे अपनी सुसस्कृति को अच्छे ढंग से पहचान नही सके प्रश्न होगा कि इसके लिए दोषी कौन ? दोषी केवल आधुनिक भारतीय समाज है हमारे देश के नेतागण व धर्म पण्डित ही इन समस्याओ का समाधान कर सकते हैं आर्य-समाज भारतीय समाज में एक बहुत बडा स्थान रखता है इसे ही मैदान मे आकर भारतीय युवको का पथ प्रदर्शन करना चाहिए।

पजाब भारत का एक छोटा-सा राज्य है। कभी समय था कि यह बहुत बडा राज्य था परन्तु इस समय यह एक छोटी-सी (सूबी) ही बन कर रह गया है। ऐसा क्यो ? इसका विवरण यहा देना उचित नही। इस सीमा प्रान्त मे आर्यसमाज का बहुत प्रभाव रहा है और अब भी है। यही कारण है कि पजाब का युवक कम्यूनिज्म विचारो की लपेट मे ज्यादा न आ सका। अब समय की विडम्बना है कि देशीय बेढगी राजनिति एव पश्चिमी विचारधारा इतनी पनप रही है कि आज का युवक अपने आपको ही भूलता चला जा रहा है। इसलिए यह अतिआवश्यक है कि पजाब प्रान्त का आर्य समाज अपने युवको को इस आन्धी से बचाए। नही तो युवक मण्डल अराजकता और असन्तोष के गढे मे गिर कर अपने आप को तबाह कर बैठेगा।

पजाब प्रान्तीय युवको की मानसिक चेतना को जाग्रत रखने हेतु, प्रादेशिक सभा के आधीन पजाब प्रान्तीय युवक संघठन का कार्य किया जा रहा है इस सघठन के पथ-प्रदर्शक हैं सम्माननीय श्री० वेदी राम जी 'शर्मा' **P. H D.** सभा-मन्त्री पंजाब प्रादेशिक सभा। सच्च ही प्रोफैसर साहिब हम युवकों का एक सहारा बने हुए है। आर्य-युवकों के निडर नेता प्रो० श्री राजेन्द जी जिज्ञासु **M. A.** (कादियानी), श्री राम प्रकाश जी **P. H. D.** (चण्डीगढ़) कितने उत्साह से अपने प्रिय युवको का पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। निश्चय ही प्रशंसनीय है। पजाबी आर्यो (हिन्दुओ) का कर्त्तव्य बनता है कि वे पजाब मे अपने नव-युवको का सघठन ऐसा सुदृढ बनाए कि कोई भी शक्ति उनके मार्ग मे बाधा पैदा न कर सके। तभी हम अपने युवको के हृदयो के हृदयों को कम्यूनिजम,ईसाईयतके प्रचार,साम्यवाद की काल्पनिक विचार धाराके प्रवाहसे बचा सकते हैं। सारे इस पजाब (हरियाना व हिमाचल) मे आर्य हिन्दुओ की कितनी ही धार्मिक सस्थाए हैं यदि उनके सभी अधिकारी युवक-सघठन पर विचार करे, और अपनी-अपनी सस्था मे युवको का सघठन बनाए अच्छे-अच्छे विचार युवा शक्ति को मिलें तो निश्चय ही विद्यार्थी गण अराजकता और असतोष को दूर कर सकते हैं। तभी आज का युवक अपने जीवन को देश की भलाई के लिए अर्पित करेगा यही आज का तरुण हृदय, स० ऊधमसिह, प० रामप्रसाद 'बिस्मिल', वीर सावरकर, वीर सुभाष का रूप धारण करके अपने देश की सभ्यता व सस्कृति को बचा सकता है।

पंजाब वासी आर्य सज्जनो ! अब वक्त की पुकार है कि अपनी समाज व सस्था मे युवको का सघठन बना कर वैदिक विचारो का प्रचार व प्रसार करें। ताकि राष्ट्र के सच्चे सपूत बन सकें।

बडे हर्ष का विषय है कि पजाब, हरियाना हिमाचल की आर्य-समाजें व सस्थाए उत्साह पूर्वक युवको के सघठन की ओर ध्यान देने लगी हैं। परमात्मा करे कि हमारा यह कार्य अच्छी गति के साथ चले।

—जय भारत

चुटकले

(श्री रविन्द्र कुमार)

१ एक बार एक पागल एक होटल की सबसे ऊपर की मजिल पर चढ कर चिल्लाने लगा कि मैं अभी नीचे कूद कर आत्महत्या कर लू गा। खबरदार ! मुझे कोई रोकने की कोशिश न करे। नीचे से सब लोग चिल्ला रहे थे कि नीचे उतर आओ परन्तु वह किसी की भी बात नहीं सुन रहा था। उसी समय एक डाक्टर आ गया। डाक्टर ने नीचेसे चिल्लाना शुरू किया कि अगर तुम शीघ्र नीचे नही उतरे तो मैं इस इमारत को ही काट दू गा। पागल इतनी बात सुन कर डर गया और फौरन नीचे उतर आया।

२ एक बार एक ग्रामीण रेलवे स्टेशन पर जा कर स्टेशन मास्टर के कमरे मे घुस कर स्टेशन मास्टर से पूछने लगा कि नागपुर को गाड़ी कब जाएगी स्टेशन मास्टर ने समय बता दिया, फिर पूछा कलकत्ता से गाडी कब आएगी। स्टेशन मास्टर ने फिर समय बता दिया। वह फिर कहने लगा कि पठानकोट से गाडी कब आएगी, स्टेशन मास्टर ने फिर बता दिया। वह पूछने लगा कि पठानकोट को गाड़ी कब जाएगी। इस बार स्टेशन मास्टर तग आ कर पूछने लगा कि आपको जाना कहा है ?

ग्रामीण ने हस कर कहा कि जाना तो कही नही केवल रेल लाईन पार करनी है।

३ एक बार एक अफीमची ने एक नई जूती खरीदी, शाम को वह जूती पहन कर बडे चाव से घूमने के लिए सडक की ओर खुली हवा मे निकल गया। अफीम के नशे मे तो था ही, हरी घास पर लेटते ही नीद आ गई। कोई शरारती लडका आया और उसका जूता उतार कर चलता बना। उसी समय एक तागे वाला तागा लेकर आ रहा था। तागे वाले ने कहा कि अरे ! टागे तो पीछे कर। अफीमची ने उठ कर कहा कि क्यो चिल्लाता है, लेजा टागा ऊपर से ही क्योकि यह टागे मेरी नही है मैं तो नया जूता पहन कर आया था।

आर्यजगत

वर्ष २९] रविवार २०२६, ८ जून, १९६९ [अंक २३

गुलाब का फूल—आर्यसमाज

(ब्र० कर्मवीर जी विद्या-वाचस्पति)

एक माली था उसने अपने बाग के अन्दर अनेक प्रकार के फूल तथा फलो के (पौधे) वृक्ष, को लगाया। एक ओर अनार, सन्तरे आदि और दूसरी ओर फूलो मे चमेली, गेदा, रातरानी सेवन्ती आदि। बहुत ही सुन्दर रूप से उसका बीजारोपण करने से उसके फल, फूल भिन्न-भिन्न रग-बिरगे प्रकार के पल्लवित तथा पुष्पित हो गये। फूलो की गन्ध से वायुमडल सुगन्धित हो उठा। उन्होंने (मालीने) देखा कि मेरे बागमे भिन्न प्रकार के फूलो के पौधेहै परन्तु इसमे गुलाब के फूल का पौधा नही है। इसको देख—बहुत ही दु ख हुआ और अपने मन मे सकल्प तथा निश्चय कर लिया कि हर प्रयत्न करके गुलाब का वृक्षारोपण करना चाहिए। और भविष्य मे अपना सकल्प परिपूर्ण किया। आयुर्वेद की दृष्टि से गुलाब के फूल की महत्ता बहुत ही श्रेष्ठतम है। इसके फूलो से जो गुलकन्द बनता है वह अनेक प्रकार के रोगो को दूर करने वाले होता है आप भी मेरे बुजुर्ग लोग इस से परिचित है। और भी अनेक प्रकार के लाभदायक औषधिया इस से तैयार होती है। ठीक इसी प्रकार मेरे परम गुरु आचार्य

दयानन्द रूपी माली सन १८२४ के अन्दर इस पवित्र भारत रूपी बगीचे मे अवतरित हुए। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने उस माली की तरह सारा भारतवर्ष ही नहीं अपितु संसार के ऊपर एक सूक्ष्म दृष्टि से देखकर मुग्ध कण्ठ से व्यक्त किया कि—अह ! अह! मेरे भारतवर्ष के अन्दर अनेक प्रकार के मत-मतान्तर तथा विविध प्रकार के पार्टिया रूपी फल पुष्प उत्पन्न हो गई और रंग-बिरगे फलों के चमत्कार रूपी रस को इस अज्ञान में पडे हुए जनता के चखाने मे लगे थे। लोग क्षणिक रस को चख कर आनन्द मनाने लगे। मेरे आचार्य दयानन्द को देख बहुत दुःख हुआ और मन मे विचार कर ऐसा जादू-सा फेर दिया जो कि इन मतमतान्तरो रूपी दुष्ट भ्रमरों से स्वय बच तथा लोगो को बचाने मे सहायक हो गयी और भी इस का कल्याण अधिक हो इसलिए इस भारत-वर्ष रूपी उद्यान (बाग) मे आर्य समाज रूपी गुलाब के पौधे को लगाया। गुलाब का पौधा अपने यौवनावस्था मे अनेक फूलो को पल्लवित तथा पुष्पित करता है ठीक इसी प्रकार आर्य समाज रूपी पौधे ने अनेको नवरत्न रूपी फूलो को विकसित किया है। अर्थात आर्य समाज अपने यौवनावस्था मे स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम, म० हसराज, ला० लाजपतराय आदि नवरत्न हीरो को पैदा किया। कौन ऐसा व्यक्ति है जो इनके जनहितार्थ किए हुए अनेको शुभ कार्यों से अपरिचित हो? अर्थात् सभी को विदित है।

गुलाब का फूल अपने यौवनावस्था मे आकर पुष्पित हुआ इस सौरमण्डल के राजाधिपति सूर्यदेव की प्रखर किरणो से फूल की गुलाबी छटा (रग) को अत्युदीप्त करने लगे तो मनुष्य मोहित हो कर उसको ग्रहण करने लगता है। क्या आर्य समाज गुलाब के फूल के समान है? हा ! हा। गुलाब के फूल के समान है। आप देखेगे कि जैसे गुलाब का फूल अनेक काटो से ऊपर खिलता है और सदैव हस मुख एव प्रसन्नता पूर्वक रहता है। ठीक इसी प्रकार आर्य समाज है। इस भारतवर्ष मे ही नही अपितु ससार भर मे जितने मत-मतान्तर रूपी काटो के ऊपर आर्य समाज रूपी फूल सदैव प्रसन्न

रहता है। इन सब काटो को मात करके गुलाब का फूल अपनी गुलाबी छटा (रग) को हस मुख करता हुआ उस मन्द गति से बहने वाले वायु से डौलता रहता है ठीक आर्य समाज को वेद के विरुद्ध चाल चलन करने वाले ईसाई-मुसलमान तथा काग्रेस-जनसघ-कम्युनिस्ट आदि अनेको पार्टियो का सामना करता हुआ एवं इनके छूटे हुए वायुसे डौलता रहता है। याद रखो ! यह गुलाब का फूल (आर्य समाज) डौलता ही रहेगा। आज की जनता उस गुलाब के फूल को लेना चाहती है परन्तु इन विविध पार्टियों रूपी काटो के कारण उनके हाथ फूल तक पहुच नही पा रहे। समय आएगा। जब कि इन काटो को छिन्न-भिन्न करके आर्य समाज रूपी फूल को अपना लेगी।

भारत की जनता मन मे सोचती है कि प्राचीनकाल के राज धर्म को अपनाएगे तभी हम सुख एव शांति से जीवनयापन कर सकते है। इसलिए श्री राम और श्री राम कृष्ण की राजनीति को लाना चाहती है। सारे ससार मे रामराज्य करना चाहती है। इसी उद्देश्य को सम्मुख रखकर भारतीय जनता ने तथा आर्यसमाज ने काग्रेस को बढावा दिया। काग्रेस की स्थापना १८८५ मे मि० ह्यूम नामक एक अग्रेज ने की थी इस का उद्देश्य प्रथम और ही कुछ था परन्तु जब आर्यसमाज जैसी सस्था की पुट मिल गई अर्थात् ला० लाजपतराय, स्वा० श्रद्धानन्द जैसे विशुद्ध आर्यसमाजी नेताओ की बुद्धि इस काग्रेस सस्था के अन्दर कार्य करन लगी तब इसका पूरा उद्देश्य स्वतन्त्रता प्राप्ति का एव रामराज्य लाने का हो गया और स० १९२७ मे

रावी नदी के किनारे काग्रेस अधिवेशन मे घोषणा करदी गई की भारत को स्वतन्त्र करने का हमारा उद्देश्य है। इस प्रकार आर्यसमाज ने काग्रेस को बढावा दिया। इसका परिणाम आज वे इतने उन्नति के शिखर पर चढ गए हैं। फिर क्या हुआ। जैसे काले साप को दूध पिलाए क्योंकि काग्रेस को पूर्ण रूपेण आर्यसमाज ने हर प्रकार की सहायता दी—और जब काग्रेस को राज्यगद्दी प्राप्त हो गई तो आज कौन आर्यसमाज होता है? मुख कण्ठ से कहते फिरते है। वे आज अपने पुराने उपकारो, सहायताओ एव विचार परामर्श को भूल गए। आर्यसमाज ने काग्रेस की ओर से दृष्टि हटा कर जनसघ की ओर लगा दी और इसको भी बहुत साथ देकर देख लिया। परन्तु इसका परिणाम वही हुआ जो काग्रेसियो ने किया था? बल्कि उस से बढ कर ये सघी है। क्योकि इन मे सहिष्णुता नही है। काग्रेस को कुछ कहे या अपशब्द भी कहे तो चुप रहेगा। परन्तु ये जनसघी काले सांप की तरह दश करने वाले है। उदाहरण के तौर पर बताना चाहता हू—जिस समय हिन्दी आदोलन १९५७ मे चला और अनेक प्रकार के विरुद्ध आर्यसमाजी एव भारतीय सस्कृति सम्पन्न को अपनाने वाले अन्य मतस्य सत्याग्रहियो ने सत्याग्रह किए। उन मे जनसघ आदि भी थे। सरकार ने जेलो के अन्दरठूसा। मेरे परम गुरुवर तथा अन्य शुद्ध आर्य समाजी-जनो को फिरोजपुर जेल के अन्दर सघियो के साथ टकराना पडा प्रात काल का समय था वेद के अनुयायी के यज्ञ को रचाए यज्ञ मे घृत एव सामग्री की आहुति से वातावरण शुद्ध पवित्र हो रहा था। वायुमण्डल सुगन्ध से फैलता जा रहा था तो साथ ही के मैदानमे जनसघी वाली बाल (गेम खेल रहे थे और खेलते समय मे बाले बाल सीधे यज्ञ कुण्ड के समीप आ उलटा कर गया। उस समय सत्सग मे एक सज्जन उठकर कहने लगे कि आप अन्य स्थान पर खेले। आप खेल के बजाय आप सभी इसमे सम्मिलित होते तो अच्छा होता! तो उसमे एक सघी था वह आगे बढकर कहने लगा कि हवन कुण्डबाजी बाल से उलटा है यह अच्छा है ! हम तो ठोकर मारकर उल्टाने वाले है? वेद को मानने वालो तथा भारतीयता को सुसम्पन्न करने वाले आर्य वीरो ! सुनो ! यह अपशब्द—जनसघ के। जनसघ को दर्शिष्ट करने का यह परिणाम। यह ठीक है कि देशके विषय मे जो कुछ कार्य किया है। परन्तु इनके जैसे असहिष्णुता वाले और आप को नहीं मिलेंगे। और भी अन्य पार्टियो की ऐसी करतूतें है। इसलिए इस सुअवसर पर उस महान् दाघदशा—कृतदशा। गुरु पर दयानन्द जी के बनाए हुए वेदमार्ग का अवलम्बन कीजिए।

आर्यसमाज अनेक प्रकार के कष्टो को सहन करते हुए आगे बढा है। अब इन दुष्ट पार्टियो से सचेत होकर अपना मार्ग निकाल रही है। या यो कहिए कि स्थान-स्थान पर से आर्य समाज भी राजनीति के कूद पडने का विचार कर रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज की वेदी पर से सर्वत्र राजधर्म युक्त व्याख्यानों की बौछार होनी चाहिए। हम वेद के आधार पर मनुस्मृति रामायण आदि के द्वारा जनता को समझाए कि हमारी प्राचीन राज्य प्रणाली इस प्रकार की थी। [illegible] दिन हम ईश्वर [illegible] व्याख्यान देते रहे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की

शिक्षामाध्यम पर किसी भी एकपक्षीय फैसले के विरुद्ध चेतावनी

माध्यम के चयन का अधिकार माता-पिता को है

शिक्षा नीति में किसी भी परिवर्तन से जनता के हितों पर ध्यान दिया जाए : सभा के प्रधान की मांग

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रिंसिपल श्री एस बहल ने आशा प्रकट की है कि राज्य सरकार अपनी शिक्षा नीतियों में कोई परिवर्तन करने से पहले जनता के हितो पर पूरी तरह विचार करेगी।

एक वक्तव्य मे उन्होने कहा है कि सभा की कार्यकारिणी ने अपनी विगत बैठक मे एक प्रस्ताव पास करके अपने इस पूर्व-निर्णय की पुष्टि की थी कि सच्चर फार्मूला समय की कसौटी पर खरा उतरा है। इसलिये इसे पंजाब के सभी सरकारी और गैर सरकारी स्कूलो मे जारी रखा जाना चाहिये। शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने का अधिकार बच्चो के माता पिता के हाथ मे ही रहने दिया जाना चाहिए और इस के लिए राज्य सरकार द्वारा जब्र नही किया जाना चाहिये प्रजातन्त्र के इस युग मे लोगो को अपने बच्चो के हितो का पूरा ज्ञान है, शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध मे कोई भी अनिवार्यता भारी बेचैनी का कारण बनगी।

सभा की कार्यकारिणी ने शिक्षा मन्त्री श्री बस्सी के उस वक्तव्य की प्रशंसा की जिसमे कहा गया था कि शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखने का निर्णय करने वाले स्कूलो की ग्रांट बन्द नही होगी।

उन्होने कहा कि हम मन्त्री महोदय के इस प्रगतिशील वक्तव्य का स्वागत करते हैं कि सरकारी या गैर-सरकारी स्कूलो मे पढ रहे छात्रो को शिक्षा का माध्यम चयन करने मे स्वतन्त्रता दी जायेगी और स्कूलो को उनके अनुसार साधन जुटाने होगे। जहा तक ग्रांटे बन्द करने की धमकी का सम्बन्ध है, यह प्रजातान्त्रिक ढाचे के सर्वथा विपरीत है क्योकि सभी वर्गों के हितो की देखभाल करना निर्वाचित सरकार का प्रमुख काम है। पंजाबी अपने उदारवादी विचारो के कारण प्रसिद्ध है, मुझे आशा है कि राज्य सरकार वर्तमान शैक्षणिक नीतियो मे कोई परिवर्तन करते समय लोगो के हितो को ध्यान मे रखेगी। सभी आर्य समाजो के प्रतिनिधियो की जुलाई मे एक कान्फ्रेंस बुलाने का भी फैसला किया गया है जिस मे स्कूलो मे शिक्षा के माध्यम पर विचार किया जायेगा।

संक्षिप्त समाचार

★ केन्द्रीय वित्त मन्त्रालय ने आन्ध्र प्रदेश सरकार को राज्य के तटवर्ती जिलो के तूफानग्रस्त क्षेत्रो मे तुरन्त राहत कार्य शुरू करने के लिए एक करोड रु० दिया है।

★ राज्य सरकार को आवश्यकता-अनुसार और सहायता दी जाएगी। तूफान से हुई क्षति के बारे मे राज्य सरकार से विस्तृत रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।

★ भारत सरकार शीघ्र ही तूफानग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने के लिए एक केन्द्रीय दल भेजेगी जो राज्य मे राहत कार्यों के लिए आवश्यक रकम का अनुमान लगाएगा।

असतो मा सद्गमय

(श्री सुरेश जी भटनागर एम. ए. डी.ए.वी. कालेज जालंधर

(गतांक से आगे)

हम यज्ञ तो करते हैं परन्तु यज्ञ के भाव का ज्ञान नही। यदि यज्ञ का भाव केवल अग्नि मे कुछ घृत सामग्री डालने तक ही सीमित होता तो सम्भवत: महर्षि इसको भी पाखण्ड कहते। यज् धातु का अर्थ है देवपूजा संगतिकरण एवं दान करना। यज्ञ तो केवल प्रतीक (**symbol**) है त्याग का। अपने तन, मन, धन को जाति, समाज और राष्ट्र के लिये समिधा के समान स्वाह कर देना ही वस्तुत: यथार्थ रूप मे यज्ञ है। इसी यज्ञ का रूप पिण्ड एव ब्रह्मांड मे भी दृष्टिगोचर होता है। वैदिक मंत्रो को बिना समझे बूझे लगातार महीनों तक पाठ करते हुए यदि हम यज्ञ को निष्पन्न करते हैं और यज्ञ के निहित भाव को हृदयगम नही करते यह वास्तविक अर्थों मे यज्ञ नही प्रत्युत ढकोसला है।

आजकल आर्य बन्धुओ मे आलोचनात्मक दृष्टिकोण तो बढता जा रहा है पर स्वाध्याय द्वारा ज्ञान-वर्धन एव तद्वत् आचरण के प्रति उदासीनता आती जा रही है जब तक हम ज्ञानसुधा सागर मे भली प्रकार अवगाहन करके कथनी एव करनी के अन्तर को समाप्त नही कर लेते तब तक हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के स्वप्न को साकार नहीं कर सकते।

अत: परम प्रभु परमात्मा से यही हार्दिक प्रार्थना है कि हम सब आर्य-बन्धुओ का जीवन सत्य पर अवलम्बित हो, कट्टरता का ह्रास एव विवेक का विकास हो। पद-लोलुपता का शमन एव त्याग भाव का उन्नयन होना चाहिए। अन्यथा आर्य बन्धुओ के परस्पर सारहीन कलह एव अन्य निर्बलताए शनै:-शनै: एक दिन शक्तिशाली आयसमाज को जर्जित करके समाप्त कर देगी।

अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये।

(यजु० १९-७७)

अर्थात् सत्य मे श्रद्धा रखनी चाहिए, असत्य में नहीं—वेद के इस वाक्य के हृदय सदैव सततरूप से गुञ्जायमान रहना चाहिए। क्योकि केन उपनिषदकार के अनुसार आत्मिक रहने का स्थान सत्य है :—'तस्य सत्यमायतनम्।'

आर्य जगत के ग्राहक महानुभावों से

आर्य जगत् के ग्राहको से विनम्र प्रार्थना है कि जिन सज्जनो का आर्य जगत् का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है वह अपना शुल्क सभा कार्यालय मे शीघ्र भेजने की कृपा करें।

कई ग्राहको के पत्रों द्वारा मालूम हुआ है कि उनको आर्य जगत् पत्रिका प्राप्त नही होती जबकि हम प्रति सप्ताह नियमित रूप से भेज रहे हैं। ऐसे सज्जनो से प्रार्थना है कि वह अपनी जोन के डाकिए से पूछताछ करे। हो सकता है कि आपके नाम की पत्रिका कोई दूसरा व्यक्ति प्राप्त कर रहा हो।

—व्यवस्थापक

★ अनावश्यक कर्म का त्याग करना चाहिए तथा प्रभु सदा मेरे समीप हैं ऐसा निश्चय रखना चाहिए। जीवन में सरलता होनी चाहिए।

★ सरलता भक्ति मार्ग का सोपान है, तथा सन्देह और बनावट अवनति का चिन्ह है।

★ प्रभु चिन्तन में समय व्यतीत करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। भक्त को प्रभु की सम्पत्ति का अपव्यय करना महापाप है।

★ अनेक विघ्न उपस्थित होने पर भी जो धीर अपने कल्याण मार्ग से चलायमान नहीं होता, वही प्रभु का कृपापात्र है।

★ जिस समय चित्त मे राग द्वेष का अभाव हो जाए, और चित्त किसी भी दृश्य पदार्थ में आसक्त न हो, उस समय समझना चाहिए कि चित्त शुद्ध हुआ है।

★ प्रभु नाम के जप से वाणी शुद्ध होती है। दान से धन शुद्ध होता है। और ध्यान से अन्तःकरण शुद्ध होता है।

'संसार की नश्वरता'

संसार नश्वरशील है । इसमें जो प्राणी जन्म लेता है, वह मरता भी अवश्य है । जन्म-मरण का चक्र लगातार चलता रहता है। प्रतिदिन लाखो ही जीव मृत्यु का ग्रास बनते हैं । पशु पक्षी इन्सान-हैवान, बच्चा-बूढ़ा, अमीर-फकीर कोई भी इसके क्रूर पंजो से छुटकारा नहीं पा सकते । इसके सामने सभी को घुटने टेकने पड़ते हैं । इसी के बारे मे कबीर ने एक दोहा लिखा है ।

'माली आवत देखि कर,
कलियां करी पुकार ।
फूली-फूली चुन लई,
काल्हि हमारी बार ।'

इस दोहे ने कबीर जी ने एक गम्भीर सत्य का निरुपण किया है । ससार एक बाग के समान है जिसमे मौत माली की तरह आती है और नित्यप्रति जिन्दगी की खिली हुई कलियो को चुनकर ले जाती है । जो कलिया आज बची उन्हे कल ले जाएगा । ससार वास्तवमे एक मातमखाना ही तो है । मृत्यु एक हिसक पशु के समान है जो समस्त ससार को खाए जा रहा है । कबीर जी हैरान है कि लोग फिर भी सुखो पर रीझ रहे हैं । ससार की इस नश्वरता को देखकर ससार के विचारकों का ध्यान एक ऐसे तत्व पर गया जो न जन्माता है, न मरता है ।

यह आत्मा है । आत्मा की कल्पना भले ही मनुष्य की अमरता की उस इच्छा का नतीजा हो जिसे जर्मन दार्शनिक शोपनहार ने एक बड़ी भूल को हमेशा बनाए रखने की इच्छा कहा है । लेकिन इसमे सदेह नही कि आत्मा को अमर मानने से मृत्यु का डर जाता रहता है । इस सम्बन्ध मे ससार के कुछ विचारकोके भाव यह हैं ।

गीता मे श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं :—हे अर्जुन । आत्मा न पैदा होती है ओर न मरती है । वह सदा से चली आती है । और सदा रहेगी । शरीर के नाश होने पर आत्मा का नाश नही होता । आत्मा अमर है । इसे न शास्त्र काट सकते हैं । न अग्नि जला सकती है न हवा सुखा सकती है, न पानी गीला कर सकता है । मृत्यु केवल परिवर्तन का नाम है । जिस प्रकार मानव पुराने वस्त्र उतार कर नए पहनता है उसी प्रकार आत्मा भी पुराना शरीर त्याग कर, नया शरीर धारण करती है ।

इसी प्रकार उर्दू के प्रसिद्ध कवि 'मीरतकी' का एक शेर है—

मौत इस जिन्दगी मे वकफा है,
यानी आगे चलेगे दम लेकर ।'

इसका अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार राही चलते-चलते थक जाता है तो मार्ग मे आराम करने के लिए ठहर जाता है और फिर ठहर कर चल देता है । उसी प्रकार जिन्दगी के सफर मे मौत भी एक पडाव है ।

मौत की इस असलियत को समझने वाले के लिए मौत कोई भयानक चीज नही रह जाती । यही कारण है कि कबीर जी मृत्यु की प्रतीक्षा उत्सुकता से करते हुए कहते हैं—

'जिस मरने से जग डरे,
मेरे मन आनन्द
कब मरिहों, कब पाइहों,
पुरण परमानन्द'

'लेखक'
विश्वमित्र चड्ढा,
किला, जालन्धर

वेद तथा संस्कृत पढ़ो और आगे बढ़ो

आर्य साधु वैदिक साधनाश्रम-पो० लाडवा (करनाल) की उन्नति के लिए कार्य कारिणी सभा की बैठक में आश्रम द्वारा सस्कृत विद्यालय नि:शुल्क जिसमे वेद-शास्त्र एव ऋषि कृत ग्रन्थों का पठन पाठन हो शीघ्र प्रारम्भ करने के लिए शिक्षा समिति बनाई गई जिनके नाम इस प्रकार हैं ।

स्वामी अभया नन्द सरस्वती जी सचालक आश्रम लाडवा । श्री स्वामी परमानन्द सरस्वती जी प्रचार मन्त्री आश्रम लाडवा श्री कवि राज हरनाम दास जी बी ए. मन्त्री सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर ।

श्री ला नौतन दास जी चाँवला गुडगाव (कोषाध्यक्ष मण्डल)

श्री ला. साधु राम जी एम. ए. प्रधान आर्य समाज लाडवा ।

श्री राजेन्द्र पाल जी आडती मन्त्री आर्य समाज लाडवा सस्कृत विद्यालय में आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ सरकार से मान्यता प्राप्त परीक्षाएं भी दिलाई जाएगी-आश्रम में रहने वाले विद्यार्थीयो का पूर्ण प्रबन्ध होगा । मास-अण्डा-शराब तथा नशीली वस्तु के प्रयोग करने व सिनेमा-ताश आदि खेल देखने वाला विद्यार्थी प्रविष्ठ न हो सकेगा, विद्यार्थी का सदाचारी सुयोग्य तथा सादे वेश मे रहना अनिवार्य होगा । विशेष जानकारी के लिए अध्यक्ष आश्रम से पत्र व्यवहार करे ।

निवेदक
स्वामी अभयानन्द सरस्वती

छूआछूत मनुष्यपन के बाहर

(श्री सुखलाल जी वानप्रस्थी)

मनुष्य मनुष्यो से छुआछूत माने और रखे तथा करे यह बात मनुष्यपन के बाहर की बात है । देखने सुनने और पढने से पता चलता है कि मनुष्य मनुष्य मे किसी प्रकार का भेद नही है तो स्वाभाविक और ईश्वरकृत है उस मे सृष्टि से आज तक ससार के किसी मनुष्य का ईश्वर को बनावट मे कुछ फर्क पड जाए यह देखा नही जाता । हा, देश, काल और जल वायु अनुसार काला गोरा कुछ चपटा आदि हो सकते हैं लेकिन यह नही हो सकता कि ब्राह्मण के तीन नेत्र, क्षत्रिय के दो और वैश्य के एक तथा शूद्र के एक भी नही, परम पिता परमात्मा को इसी से तो न्यायकारी कहा गया है । ससार के सब मनुष्यो मे सभी कुछ एक-सा पाया जाता है । ईश्वर की ओर से मिलने वाले सुख दु ख और सभी प्रकार की सुखसुविधाए कर्मानुसार सब को एक जैसा देखने मे आती हैं । जैसे एक ब्राह्मण के जहा वही अग्नि धूप, प्रकाश आदि है वहीं एक शूद्र से शूद्र हरिजन भाई के भी यहा है। जहा ससार के रचयिता प्रभु ने ससार के मनुष्यो का कर्मानुसार एक-सा माना और देखा तथा देख भी रहा है वहा धर्म, जाति के अभिमानी और ठेकेदार तथा ईश्वर राम, कृष्ण के भक्त कहाने वालो ने आज हमारे हरिजन भाइयो को नीच दृष्टि और अछूत मानते है । मुझे तो हसी आती है कि पुरी के स्वामी शकराचार्य जी पर की घटना के विश्वहिन्दु धर्म सम्मेलन मे समस्त हरिजनो का अछूत समझ कर अथवा छुआछात को धर्म का अग माना है । अगर यह बात एक अनपढ मूर्ख और अधार्मिक पौराणिक कहता तो उसके लिए कुछ क्षम्य था पर स्वामी शकराचार्य ऐसे महान विद्वान दार्शनिक जगद्गुरु और सन्यासी हो कर भी भारतवर्ष की जनसख्या के चौथाई भाग हरिजनो के जनमानस पर कुठाराघात किया है जिस से सन्यास शब्द भी कलकित हो गया है । जहा शास्त्र और धर्म यह कहता है कि—

वेदाम्मृति: सदाचोर
स्वस्य प्रियात्मन ।
एतैकचतुर्विधा प्राहू
साक्षाद धर्मस्य लक्षणम् ।।
(मनुस्मृति अध्याय २।१२)

स्वामी जी ने छुआछूत को धर्म का अग माना है तो क्या मैं पूछ सकता हू कि यह छुआछूत वेदो मे है ? स्मृतियो मे है ? या सदाचारियो ने माना है । क्या आपकी आत्मा जो राग, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा से रहित है वह भी मानती है । भगवान कृष्ण ने गीता मे भी कहा है—अद्वेष्टा सर्वभूताना मैत्र करुण एव च । (गीता अध्याय १२।१३) क्या यह उपदेश आप जैसे सन्यासियो के लिए नही है ? क्या आप को पता नही है कि शास्त्र ने कहा है कि— जन्मनाजायदे शूद्र: सस्कार द्विज उच्यते । जन्म से सभी शूद्र पैदा होते हैं और संस्कार द्वारा ही द्विज यानी ब्राह्मण होते हैं । सद्शास्त्रो के पढने से ही पडित, क्षत्रिय, वैश्य आदि होते हैं । गीता मे पुन कहा है कि—चातुर्वर्ण्य मया सृष्ट गुणवर्ण विनाशज्ञ । क्या उपरोक्त प्रमाण माननीय नही है ? तो किस धर्म और शास्त्र को मानते है ? और किस आधार पर छुआछूत को मानते हैं ?

हरिजन और अस्पृश्य तो उन नीच आलसी और कुकर्मी तथा निष्क्रिय मनुष्यो का पैदा किया हुआ है । हरिजनो मे सब से ज्यादा तिरस्कृत हमारे भगी और डोम भाई हैं । इन दोनो को सब से नीच समाज समझता आया है और अभी भी इस युग मे समझ रहा है कि इस देश मे समानाधिकार हरवासियो का है । आज बडे-बडे सन्यासी, सन्त, महन्त, पडित, पुजारी कहाने वाले इन हरिजनो से मत (वोट) ले लेकर लोकसभा और विधानसभा की शोभा बढा रहे हैं और जा आकर लखपति और करोडपति बन रहे है ।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

छूआछूत 'मनुष्यपन के बाहर'

(पृष्ठ ५ का शेष)

हरिजन भगी नाई तो समाज के हर घर मे व्याप्त है। ससार मे कौन-सा घर बाकी है कि उस घर की माता ने अपने-अपने बच्चो का पाखाना नही उठाया हो। और कौन-सा आदमी है जो अपना पाखाना स्वय साफ नही करता? चाहे स्त्री हो या पुरुष इस कर्म से कोई वचित नही रह सकता। क्या हमने कभी अपनी माता को या अपने को कभी अछूत माना है? कभी ऊच-नीच का भाव नही रक्खा। तो क्या कारण है कि जो हरिजनभाई समाज की कठोर से कठोर सेवा मे दिन रात रत हे जिसके बल पर आज समाज के हर व्यक्ति सिर उठा कर अकड कर चलता है। उस आदमी के साथ इस प्रकार दुर्व्यवहार करना महान् नीचता है। इन हरिजनो के बिना हम कपडे साफ नही पहन सकते। जूता आदि नही पहन सकते। बहू बेटियो की इज्जत भी नही बचा सकते। शहरो कस्बो तथा बडे-बडे नगरो की सफाई भी नही रख सकते है। जहा जब कभी भगियो की अपनी मागो को लेकर हडताल होती है तो सरकार और समाज के सामने एक कठिन समस्या उपस्थित हो जाती है। फिर ऐसे त्यागी, तपस्वी महामानव के साथ ऊचनीच का भेदभाव रखना महाननीचता है। यह कहा का न्याय है कि जो गदा करे वह ऊचा और जो सफाई करे वह नीच कहलाये। नीच तो वह है जो साफ जगहो को गन्दा करे और ऊच वह है जो गन्दी जगह को साफ करे। यही अन्याय दुर्व्यवहार के कारण है। हम मे से हजारो भाई आज विधर्मी हो गये हैं और आज देश का टुकडा पाकिस्तान बन गया है। और न जाने क्या बनेगा? हम को बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता से काम लेना चाहिये। इस लिये पुरी के स्वामी शकराचार्य जी को अपनी गलतियो पर विचार कर गलती को स्वीकार कर लेना चाहिये। नही तो आर्यमित्र के आवाहन पर शास्त्रार्थ मे जुटजाये उन लेखक की प्रशसा करता हू जो लेख छूआछात के सम्बन्ध मे आर्य-मित्र ११ मई १९६९ मे लिख कर स्वामी शकराचार्य को शास्त्रार्थ की चुनौती दी है।

ईश्वर सद्बुद्धि दे।

उड़ीसा राज्य में वेद प्रचारकी आवश्यकता

(सुरेन्द्र पाल शर्मा व्यवस्थापक आर्यजगत)

वैसे तो प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह सब विश्व को आर्य बनावे प्रत्येक पुरुष मे वैदिक धर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न करे परन्तु भूमडल को आर्य बनाने का शुभ कार्य तो एक मनुष्य अपनी जिदगी मे नही कर सकता। वह केवल अपने गाव पडौसी गावो मे यदि सामर्थ्य रखता हो तो विदेशो मे भी आर्य सस्कृति को फैला सकता है। बडे हर्ष का विषय है कि हमारे कुछ महानुभाव विदेशो मे जा कर वैदिक धर्म के प्रचार करने मे रत है। परन्तु सबमे पहले जो हमे महान कार्य करना है वह यह है कि अपने देश मे जो लोग अज्ञान के अन्धेरे कुए मे गिरे पड़े है उनको इस सत्य सनातन धर्म का सहारा देकर निकालना है। अगर हमारे देश के लोगो को वैदिक धर्म के प्रति प्रेम हो जाए तो फिर विदेशो मे प्रचार करने मे किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव नही होगी क्योकि वह सब तन, मन धन से सहायता करने मे गौरव समझेगे।

हम सबको यह तो मालूम ही है कि वर्तमान समय मे ईसाईयत का प्रचार कितने जोरो मे हो रहा है। पादरी लोग भोली-भाली जनता को रुपए पैसो के लालच देकर अपने धर्म मे लीन करने मे लगे हुएहैं। अशिक्षित लोग धडाधड ईसाई होते जा रहे हैं। यह सब क्यो? क्योकि उनके पास प्रचुर अर्थ सम्पति है इसके अतिरिक्त विदेशो से प्रचार के लिए लाखो रुपए आते हैं। सबसे बड़ा कारण है किहम अपने धर्म को अच्छी प्रकार जानते नही।

इस समय ईसाईयत का प्रचार जितना उडीसा मे हो रहा है उतना कही दूसरी जगह देखनेमे नही आता। क्योकि उडीसा स्टेट मे आदिवासी जातिया रहती हैं जिनको यह पादरी लोग धनादि के लालचसे जल्दी बहका लेते है। उड़ीसा राज्य के सुन्दरगढ जिला तथा बिहार के चाई-बासा जिला मे तो काफी सख्या मे ईसाई बनाए गए है। उडीसा की एक पत्रिका वनवासी सन्देश जो कि वनवासी सास्कृतिक समिति लुगेइ राऊरकेला से निकलती है, इसाईयत के प्रचार कार्य को खत्म करने मे बहुत सहायक सिद्ध हुई है। क्योकि इस पत्रिका द्वारा ईसाईयत का पोल खोला गया है। अब लोगो को थोडी-सी चेतना आई है। वैसे तो उडीसा सरकार ने भी 'बलात्धर्म परिवर्तन कानून' बनाया है जिसके द्वारा कोई भी किसी का धर्म परिवर्तन जबरदस्ती नही कर सकता। वेद व्यास आश्रम (पानपोस) के श्रद्धेय स्वामी जी भी कई ईसाईयो को शुद्ध करके पुन हिंदू धर्म मे ला चुके है। उनका यह धर्म कार्य सराहनीय है। उडीसा के कई मान्य सज्जन इस कार्य मे काफी सहयोग देते रहते है। राऊर केला न० ७ (माडरन इडिया) के श्री सम्भल बाबू व जना बाबू मुख्य बाबू यह भी इसाईत के प्रचार को बन्द करने मे काफी सहयोग दे रहे है। राऊर केला न० १ के कई महा-नुभाव इस पुनीत कार्य मे लगे हुए है।

अब इन ईसाईयो ने प्रचार के लिए एक नया रूप धारण किया हुआ है। यह अपने स्कूलो मे बच्चो को शिक्षा ही अपने धर्म के प्रति देते है। इन सुकुमार बच्चो के कोमल दिलो पर वह बाते जल्दी प्रभाव डालती है। इनके पाठ्यक्रम मे बाईबिल का पाठ अनिवार्य है इसके न पढने वाले स्कूल मे नही पढ सकते। परन्तु श्रद्धेय स्वामी जी की कृपा से तथा उनके पास पढने वाले ब्रह्मचारियो के सह-से ईसाईयो के प्रचार मे काफी रुकावट आ गई है। स्वामी जी को जब भी कभी सूचना मिलती है कि अमुक स्थान पर आदिवासी ईसाई होने जा रहे है तो वही पर पहुच जाते हैं।

स्वामी जी आजतक कई ईसाईयो को शुद्ध करके वैदिक धर्म पे ला चुके है।

लोगो मे दिन-प्रतिदिन नव-जाग्रति आ रही है। जैसे पहले इसाई पादरी खुले रूप में प्रचार करते थे वैसे अब नहीं। राऊरकेला—७ मे तो एक बार रविवार बजार के दिन एक इसाईयत का प्रचार करने वाले की तो मुरम्मत तक कर दी थी। परन्तु जो भी हो हमे अपने तन मन धन से इस बढ रही बिमारी को रोकना है। क्योकि हिन्दू धर्म की जडी खोखली करने मे इसाई धर्म बहुत जोर लगा रहा है। परन्तु हमें इन से इस प्रचार को ठप्प कर देना है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर (पजाब) के श्री पात्र बाबू उडीसा मे प्रचार कार्य बडे जोर-शोर से कर रहे हैं परन्तु उनके अकेले रहने से कुछ नहीं होगा हम सब को मिलकर पूज्य स्वामी जी के साथ तथा पात्र बाबू के साथ ईसाईयो के इस मिशन को विफल करना है। हमे लोगो मे (आदिवासी भाईयो मे) वीर हकीकत राय की कहानी पेश करनी है। जिसने अपना सिर तो कटवा दिया था! परन्तु धम नही छोडा। इसलिए मेरी यह प्रार्थना है कि ऐ उडीसा निवासियो उठो नीद छोडो। तुम्हारे घर मे यह विदेशी चोर घुस आए है। उठो इनको वैदिक ज्ञान के प्रकाश से चकाचौंध कर दो। तभी तुम्हारा कल्याण है।

★ भूल करके जो नही पछताता, उसे सदा ही पछताना पडता है। जो अपने अपराधो को स्वीकार नहीं करता, वह सदा अपराधी बना रहता है। जो क्षमा नही मागता, उसका सौभाग्य अस्त हो जाता है।

★ जैसे प्यासे को जल, भूखे को भोजन, लोभी को धन और थके हुये को विश्राम चाहिये, इसी प्रकार जिसे परमेश्वर की चाह है उसे परमेश्वर मिलता है।

★ दर्शन ६ प्रकार हैं —

१ गौतम मुनि कृत—न्याय शास्त्र
२ कणाद मुनि कृत—वैशेषिक शास्त्र
३ कपिल मुनि कृत—साख्य शास्त्र।
४ पतजलि मुनि कृत—योग शास्त्र
५ जैमिनि मुनि कृत—मीमासा शास्त्र
६ व्यास मुनि कृत—वेदांत शास्त्र

वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप

आर्य जाति के गौरव गगन के सूर्य, सूर्य वन्शी महाराणा प्रताप के सकल्प शक्ति के ऐश्वर्य को जब हम देखते हैं तो हृदय फूला नही समाता है।

मुगलो की फौजो के छक्के छूटते देखा जाता है। धन्य है महाराणा प्रताप का जीवन। जब तक नभ मे सूर्य चन्द्र और तारे रहेंगे। जब तक भूतल पर एक भी आर्य जाति का बच्चा रहेगा संकल्प के धनी महा-रथियों का नाम गाता रहेगा।

ओ३म्

दयालु बाबा

(श्री जगदीश चन्द्रार्य अध्यापक डी.एम.हाईस्कूल, करनाल)

शंकर भोले बाबा थे कहा जाता है। शायद यह ठीक बात हो पर मूल शंकर दयालु बाबा बने। यह एक ध्रुव सत्य है। धन ऐश्वर्य छोडा और दर २ की ठोकरें खाई। पाव तक बर्फ मे सूज जाते। कभी खाने को कुछ मिलता तो कभी कुछ भी नही। कभी मिलते खाने को पत्थर और पीने को विष के प्याले। पर दयालु बाबा दया ही करते रहे और सत्य मार्ग से हटे नही।

इलाहाबाद मे पं. सुन्दरलाल जी मित्रो सहित दयालु बाबा के दर्शन करने गए। बाबा जी ध्यान मे मग्नथे। आध घण्टे मे बाबा जी उठे और हसे। उपस्थित बन्धुओं ने निवेदन किया 'बाबा हसते हो ? क्या बात है ?' बाबा बोले एक व्यक्ति आ रहा है ! आप एक कौतुक देखना आध घण्टे मे एक व्यक्ति आया हाथ मे मिठाई लिए। बाबा जी को भेट करी। बाबा जी बोले, 'थोडी आप भी खाइये' मिठाई मे विष था। वह कापने लगा! प. सुन्दर लाल जी के साथी पुलिस लाने के लिए उठे। पर दयालु बाबा हसे और उन्होने पडित जी ने कुछ मिठाई कुत्ते को खिलाई वह मर गया। पंडित जी के मुह से अचानक निकल पड़ा' बाबा दयानन्द बड़े दयालु हैं !'

अनूप शहर मे एक पापी ब्राह्मण ने बाबा को विष दे दिया। न्यौली कर्म कर बाबा जी फिर स्वस्थ हो गए। सैयद मुहमद, तहसीलदार को पता लगा और उन्होने ब्राह्मण पर अभियोग चला कैद कर दिया ! बाबा जी के पास पहुचे पर बाबाजी अप्रसन्न हुए और बोले 'मैं दुनिया को कैद कराने नही आया अपितु कैद से छुडाने आया हू।' तहसीलदार ने ब्राह्मण को छुडा तो दिया पर बोला बाबा बड़ा दयालु है।

कानपुर मे बाबा जी के दर्शन करने लोग आते ! अपने साथ मिष्ठान व फल भी लाते ! दर्शन कर लाभ उठाते। पर एक गंगापुत्र (पण्डा) भी नित्य बाबा जी को गालियों की भेंट सारा दिन चढाता रहता ! बाबा हस देते ! भेंट किए गए फूलो को बाबा लोगो में बाट देते। उन्होंने गंगा पुत्र को भी फल भेजे ! वह हैरान था ! पर स्वामी जी ने कहा 'गंगापुत्र आपनित्य सारादिन गालिया निकालते हो आपकी शक्ति क्षीण हो जाती है इन्हे खाओ और फिर शक्ति को प्राप्त करो।' इस दयालुता के व्यवहार से गंगापुत्र बडा प्रभावित हुआ।' क्षमा याचना करते हुए बोला 'बाबा आप तो बडे ही दयालु हैं !

दुष्ट जगन्नाथ बाबा जी की सेवा करने लगा! पापी ने संसार का महानतम पाप किया। दूध में काच पीसकर पिला दिया। काच बाबा के रोम २ से फूट पडा। बाबा ने पापी को बुलाया और पापी के पाप का कारण पूछा ! विचारा शायद इसे धनयन्त्रकर्ता धन दे या न दे। और बोले 'लें धन और दूर नेपाल देश को भाग जा ताकि सरकार तुझे पकड़ न सके!' वह चला गया। बाबा ने किसी को बतायानही। मृत्यु से जूझते रहे। बहुत उपचार किए पर सभी व्यर्थ हुए। ३० अक्तूबर सन १८८३ का दिन आया। सभी उपचार बन्द कर दिए गए। सभी लोगो को पीछे खडे हो जाने की आज्ञा हुई। चारो तरफ के द्वार तथा दो रोशनदान खोल दिए गए। बाबा ने वेदमन्त्रो का गान किया गायत्री का पाठ किया। 'प्रभु तेरी इच्छापूर्ण हो' कहकर हसते हुए अपने प्राण दे दिए।

उस साय सूर्य अस्त के साथ वेद सूर्य भी सदा के लिए अस्त हो गया। अन्धेरा छा गया। बाबा प्यारे पिता की गोद मे जा बैठे। लोग उन्हे ढू ढने लगे। लोगो ने घरो तथा चौराहो पर दिए जलाए। दयालु बाबा को ढू ढने के लिए। पर भोला बाबा नही मिल सका। इसीलिए भारत मे लोग ठीक उसी दिन दीप जलाते हैं इस आशा से कि कही वह भोला बाबा किसी पर दया करता मिल जाए।

कार्यकारी मन्त्री,
आर्य युवकसमाज,
करनाल।

★ पजाब मे कार्य कर रहे आल इडिया दयानन्दसाल्वेशन मिशन होशयारपुर के कार्यकर्ताओकी रिपोर्टोसे विदित हुआहै कि हरिजन अकालियो द्वारा नाना प्रकार से पीड़ित किए जा रहेहै और उनको अपने पैतृक धर्म को छोड़ कर अमृतपान करने पर मजबूर किया जा रहा है। यदि पजाब मे हरिजनो का यही हाल रहा तो इसके परिणाम भयानक हो सकते हैं। रामदास
प्रधान मिशन

गऊ-माता

★

सबको दूध पिलाने वाली गऊ माता,
मैं तेरा शुभ आशीर्वाद चाहता ।

★

'गौ-वन्दना'

★

गऊ माता—माता—माता हे,
मैं तुम्हें चराने जाता हे । टेक ।
१ तुम कृपा करो अति-भारी हे,
मै सदा रहू ब्रह्मचारी हे ।
दूध पी बलवान बनू मैं,
अपने वतन की आन बनू मैं ।
पढ—लिख कर विद्वान बनू मैं,
वरदान यही मैं चाहता हे ।
तुम दया करो गऊ माता हे । १ । गऊ माता .

★

२ वेद—शास्त्र मैं पढना जाऊ,
दीन-दुखी के कष्ट मिटाऊ ।
दुश्मन भी आये नही घबराऊ,
गौ-हत्यारे को मजा चखाऊ ।
आशीष देओ गऊ माता हे,
गौ-वध बन्द करने जाता हे । २ । गऊ......

★

३ कृष्ण बन मैं गऊ चराऊ,
दयानन्द बन गौशाला खुलाऊ ।
आन्दोलन मे भाग जाऊ,
गौ—हत्या को बन्द कराऊ ।
बस यही मेरी अभिलाषा हे,
तुम पूर्ण करो गऊ माता हे । ३ । गऊ. . . .

४ जो गऊ को मार कर खाता है,
वह नष्ट—भ्रष्ट हो जाता है ।
जो गऊ को नही बचाता है,
वह 'आर्य' नही कहलाता है ।
मेरी छात्र—अवस्था है माता हे,
अति सेवा नही कर पाता हे । ४ ।
गऊ माता—माता—माता हे,
मैं तुम्हे चराने जाता हे ।

★

१ वेदाचार्य ब्रह्मचारी जीवानन्द आर्य,
गौ—भक्त है, इतना और विचारिये ।

★

२. महर्षि—दयानन्द यदि नही आते,
तो—हिंदू जाति मिट्टी मे मिल जाती।
गुरु—देव दयानन्द यदि अब तक,
इस दुनिया मे जीवित रह जाते।
तो गौ—हत्या बन्द हो जाती ।।

★

श्री उपाचार्य ब्र० जीवानन्दार्य। गुरुकुल—आर्यनगर—हिसार

शोक सभा

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के कार्यकर्ताओ तथा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियो की यह शोक सभा, ट्रस्ट के सम्माननीय ट्रस्टी श्री बद्रीप्रसाद जी भास्कर के स्वर्गवास पर अत्यन्त शोक प्रगट करती है।

श्री भासकर जी एक दृढ आर्य सज्जन, ऋषि दयानन्द के अपूर्व भक्त तथा आर्यसमाज के प्रसिद्ध दानी थे।

आपने अपने ही परिश्रम से उपार्जित सम्पत्ति का उपयोग धर्म कार्यों मे दान देने मे किया। ट्रस्ट के कार्यों मे उन्होंने सदा मुक्त हस्त से दान दिया। उन्हे ट्रस्ट के कार्यों की सफलता, विशेष कर गोशाला और उपदेशक विद्यालय की सफलता की विशेष चिंता थी।

टकारा ट्रस्ट को उनके स्वर्गवास होने से बहुत अधिक क्षति हुई है।

इस सभा मे उपस्थित सब व्यक्तियो की यह हार्दिक प्रार्थना है परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार के लोगो, पत्नी पुत्र-पुत्रियो तथा सम्बन्धियो को इस महान् ट्रस्ट के सहन का सामर्थ्य दें,

निवेदक —
ट्रस्ट के कार्यकर्ता तथा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी।

प्रधान—श्री [illegible] चन्द [illegible] मीरपुरी।

उपप्रधान—श्री [illegible] लाल जी व द्वारका नाथ जी।

प्रधान मन्त्री—श्री नेम राम जी

मन्त्री—श्री प्राण नाथ [illegible] योगराज, सुरेन्द्र नाथ जी।

खजाची—श्री कृष्ण

सहायक खजाची—श्री [illegible]

लायब्रेरियन—श्री [illegible] जी, ऐडिटर—कैप्टन यशपाल जी।

निवेदक—मन्त्री समाज

आदर्श विवाह

गत रविवार १८ मई श्री रुद्रदत्त [illegible] प्रधान आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर के सपुत्र श्री जितेन्द्रदत्त का शुभ विवाह पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ, अमृतसर की सभी आर्यसमाजो के अधिकारी और प्रमुख व्यक्ति तथा नगर के प्रतिष्ठित [illegible] भारी सख्या में सम्मिलित [illegible]

[illegible] प० रुद्रदत्त जी ने इस शुभ अवसर पर आर्यसमाज तथा स्त्री आर्यसमाज और गोचर भूमि सभा के अतिरिक्त आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के लिए भी २१) (इक्कीस) रुपये दान दिए।

भवदीय
रमेश चन्द वोहरा
मन्त्री—आर्यसमाज लक्ष्मणसर
अमृतसर

लेखकों से निवेदन है काापी एक ओर लिखें

आर्यसमाज माडल टाऊन अम्बाला

आ० समाज माडल टाऊन अम्बाला शहर में प० त्रिलोक चन्द्र जी राघव भजनोपदेशक महर्षि दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा सहायक समिति दिल्ली द्वारा २४-५-६९ से २८-५-६९ तक प्रचार कार्य हुआ। जनता पर आर्य विचारों तथा टंकारा मे हो रहे कार्य का अच्छा प्रभाव पड़ा। ५८) रुपए टंकारा के लिए दान के रूप में एकत्र हुए।

मालिक राम मन्त्री

भूल सुधार

'आर्य जगत साप्ताहिक' के १ [illegible] के [illegible] में [illegible] लेख के लेखक श्री सुरेश जी भटनागर के स्थान पर गलती से सुरेन्द्र [illegible] नागर छप गया था। वास्तव में लेखक श्री सुरेश जी भटनागर एम ए थे। लेखक महोदय से हम क्षमा के प्रार्थी हैं। —व्यवस्थापक

डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर

प्रवेश सूचना

प्री-युनिवर्सिटी, प्री-मैडिकल, प्री-इजीनियरिंग, बी ए/बी एस सी. प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय भाग, तथा एम० ए० प्रथम तथा द्वितीय भाग की श्रेणियो मे १९६९-७० के सत्र के लिए प्रवेश के लिए अंकित रूप से निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन-पत्र आमंत्रित हैं। कालेज अंग्रेजी, गणित, राजनीतिक शासन, अर्थशास्त्र, इतिहास, संस्कृत, हिन्दी तथा पंजाबी, लडके तथा लडकियो दोनो के लिए, विषयों मे एम० ए० पाठ्क्रमों की पेशकश करता है।

पूर्ण रूप से भरे हुए प्रवेश फार्म प्रिंसिपल के पास ३० जून १९६९ तक पहुच जाने जाने चाहिए। यदि तब तक पहली परीक्षाओ की घोषणा विश्वविद्यालय की ओर से नही की जाती, तो इससे सम्बन्धित कालम को खाली छोड दिया जाए, जो कार्यालय द्वारा पूरा किया जाएगा। अन्य विश्वविद्यालयो के छात्र अपने आवेदनपत्रो के साथ अपने परिणाम भेजें तथा रजिस्ट्रार, पजाब विश्वविद्यालय के योग्यता-प्रमाणपत्र प्राप्त करें। प्रवेश के लिए योग्य उम्मीदवारो को इटरव्यू के लिए बुलाया जाएगा और यदि चुने गए, तो उन्हे अपनी फीसे जमा करानी होगी।

विज्ञान विषयो मे स्थान सीमित हैं। छात्रो को होस्टल मे प्रवेश 'पहले आने वाले की पहले सेवा, के आधार पर दिया जाएगा। सीमित स्थानो के साथ एम० ए० छात्राओ के लिए एक अलग होस्टल की भी व्यवस्था है। प्रतिभाशाली छात्रो के लिए भारी सख्या मे छात्रवृत्तिया तथा वजीफे उपलब्ध हैं और खेलो तथा पाठ्क्रम सम्बन्धी गतिविधियो मे विशिष्टता रखने वाले छात्रो को समुचित ध्यान दिया जाएगा।

कालज प्रास्पैक्टस, जिसमे प्रवेश प्रपत्र भी शामिल हैं, अकाऊटस कार्यालय स २.५० रुपए की अदायगी पर प्राप्त किए जा सकते हैं। यदि प्रास्पैक्टस डाक द्वारा मगवानी है, तो काफी समय पहले ही ४ रुपये का पोस्टल आर्डर प्रिंसिपल को भेज दिया जाए।

प्रिंसिपल
बी० एस० बहल

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २४) २ आषाढ़ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१५ जून १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

देवं वहन्ति केतव :

देवम्—उस महान देव को, वहन्ति धारण करते है, केतव :—यह झंडियों का समूह। ये सारे विश्व के छोटे बड़े झंडियां बन कर उस महान भगवान को सर्वत्र बताती हैं।

भाव :—कौन कहता है कि भगवान को बताने और दिखलाने वाली निशानियां नहीं हैं। इस जगत में सूर्य हो या चन्द्र, पर्वत हो या नदियां, वृक्ष हों या पौधे ये सारी भगवान को बताने वाली झंडियां ही हैं। इनमें से एक २ पदार्थ उस प्रभु का पता देता है उसी की महिमा की ओर संकेत करता है। इन सारे पदार्थों से प्रभु का ज्ञान होता है। प्रभु के नियम, अनुशासन का पूरा परिचय यजुर्वेद से मिलता है। —सं.

वे दा मृ त

वरुण! मेरी टेर भी सुनो

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवम

द्याच मृडय। त्वामवस्युराचके।।

सामवेद उत्तरा० ७-१-६

अर्थ :—हे वरुण! सबसे श्रेष्ठ देव! (इमं) इस (मे) मेरी (श्रुधी) सुनें (हवम्) टेर पुकार को सुनें और कृपा करते हुए (अधाच) आज और अभी मुझे (मृडय) सुखी करें। प्रभो! मैं (त्वाम) आप की ही (अवस्यु) रक्षा चाहता हुआ मैं (आ चके) आपकी सदैव स्तुति करता हूं।

इस मन्त्र का भाव यह है

प्रभो! आप वरुण हैं, सबसे श्रेष्ठ हैं। आप सभी की पुकार सुनते हैं, टेर सुनते हैं! सबको सुखी बना देते हैं प्रभुदेव! मै भी तो आपका प्यारा हूं। कब से पुकार रहा हूं टेर लगा रहा हूं। सबकी सुनते हो तो मेरी भी तो सुनो। आपके सिवाय और कौन सुनेगा। कृपा कर के अपने भक्तजन की टेर सुनो। सारे संकट को काटो। आज ही मुझे सुखी बना दो। मैं तो आप का ही स्तोता हूं। जीवन रक्षा के लिए आप को ही सदा पुकारता रहता हूं। मेरी टेर भी सुनो। —सं.

ऋषि दर्शन

न वितेन तर्पणीयो मनुष्य:

न—नहीं वित्तेन—धन से या भोगों से तर्पनीय:—तृप्त होता, सन्तुष्ट होता है मनुष्य.—कोई भी मनुष्य भोगों से कोई भी तृप्त नहीं होता।

भाव :—यदि कोई चाहे कि मैं धन से मन और आत्मा की शांति को प्राप्त कर लूं। ऐसी बात नहीं धन से भोग्यपदार्थ तो मिल सकते हैं, किंतु मन की शांति कभी नहीं मिलती कितना भी धन कमा लिया जाए, कितने भोगों को मनुष्य भोगता जाए किंतु सन्तोष नहीं मिलता। लालसा और वासना बढ़ती ही जाती है। न धन में न भोगों में सुख है। न ये तृप्ति व शांति दे सकतेहै। ये तो प्यास बढ़ाते हैं।

कठोपनिषत से—सं.

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०(सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोलचन्द्र शास्त्री

आर्य वीरो जागो

(श्री जगतनारायण पानीपत)

वह जीवन ही क्या जिसका कोई लक्ष्य नही ! वह पथिक ही क्या जिस की कोई मजिल नही । आज के युग मे लक्ष्य की प्राप्ति समस्या ही बन कर रह गयी है । आज का नवयुवक अपने लक्ष्य को निर्धारित करने मे ही सफल नही हो पाता तो उसे पायेगा क्या ?

वह लक्ष्य है क्या जो परिस्थितियो के अनुसार बदलता रहे । लक्ष्य की प्राप्ति वही व्यक्ति कर सकता है जो परिस्थितियो का परिचय न हो बल्कि परिस्थितियो को अपना परिचय बना लेते !

प्रश्न होता है कि जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए । आज का मानव भोग-विलास मे ही अपना क्षण भगुर जीवन खो देता है । उसको यह जीवन जो कि मानव उत्थान समाज सेवा और अध्यात्मिक कर्मों के लिए प्राप्त हुआ है, भोगवाद मे ही व्यतीत कर देता है । अन्त मे जब उसको होश आता है तो पछताता है । इस बारे मे एक उदाहरण प्रसिद्ध है कि एक बार एक वीणावादक को किसी समारोह मे बोलने का समय दिया गया । उनको दस मिन्ट का समय मिलना था । लेकिन दुर्भाग्यवश उनकी वीणा बिगड गई थी अत: काफी समय उन्होने अपनी वीणी के पासे, तथा तार ठीक करने मे लगा दिया । वीणा ठीक करने के बाद वह बोले भाईयो तथा बहिनो मैं अभी वह इतना कहने पायेथे पीछे से एक आवाज सुनाई दी । एक व्यक्ति कह रहे थे, समय हो गया कृपया अपना कार्यक्रम बन्द कीजिए । वीणावादक महोदय को मजबूर होकर मंच से नीचे आना पडा । वीणावादक को बहुत दु:ख हुआ वह सोचने लगा क्या उसने मंच पर आने से पूर्व ही वह वीणा को ठीक कर लेता । लेकिन 'अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत ।'

इसी प्रकार यदि हम जीवन को सजाने-सवारने मे ही खो देंगे तो जीवन का लक्ष्य दूर हो जाएगा । हमारे सामने हर घडी, हर पल, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते अपना लक्ष होना चाहिए, तभी हम इसे पाने मे सफल रहेंगे । हमे इसका तनिक भी ध्यान नही देना चाहिए कि ससार क्या कहता है । लक्ष बलिदान चाहता है ।

इस महान लक्ष की प्राप्ति के लिए कितने महापुरुषो ने अपने जीवन की आहुति दी । यदि स्वामी दयानंद, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, राम प्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय आदि महान आत्माएं अपना बलिदान न कहती तो क्या वह अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्ती कर सकते थे ।

आर्य वीरो उठो—यदि अपने लक्ष्य को पाना चाहते हो ससार को श्रेष्ठ बनाना चाहते हो तो याद रखो हमे किसी भी बलिदान के लिए तैयार रहना होगा । प्रत्येक उस अत्याचार

(शेष पृष्ठ ८ पर)

भंगड़े का निर्लज्जतापूर्ण नंगा नाच

(श्री हरिदेव हांडा)

मनुष्य जीवन में विवाह संस्कार का विशेष महत्व है । सामान्यत: सभी धार्मिक संप्रदाय इस संस्कार को धार्मिक स्वरूप देकर इसकी पवित्रता और महानता को बनाए रखने के लिए अनेकानेक धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन कर गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट हो रहे नव-दम्पति को उसके कर्तव्यों और सासारिक जिम्मेदारियो के प्रति सचेष्ट करने का प्रयास करते हैं । उसके साथ ही विवाह के अवसर पर एकत्रित सभी बन्धु अपने पुनीत सम्बन्धो को दोबारा करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं । बडे बुजुर्गों का आदर सम्मान तथा छोटो के प्रति स्नेह का नयनभिर दृश्य हृदय मे हर्षोल्लास तथा जीवन मे नव-स्फूर्ति प्रदान कर विवाहोत्सव की सार्थकता को सम्पन्न करते हैं । ऐसे विवाह के महत्वपूर्ण समय पर, मनुष्य की अध्यात्मनिष्ठ व नैतिकता को ठेस पहुचा कर उसे राक्षसी प्रवृत्तियो की ओर प्रवृत्त करने वाला करने वाला कोई कार्य नहीं होना चाहिए । भगडा नाच अपना टविस्ट राक्षसी वृत्ति का नगा नाच ही तो है जो ऐसे पवित्र समय पर एकत्रित भद्र पुरुषों एवं देवियों के हृदयो में कलुषित भावना का जागरण करण करता है । जिसका दुष्परिणाम समाज मे सर्वत्र परिलक्षित हो रहा है । हम सभी मानव हैं । मानवता के बन्धन मे बधे रह कर ही तो हम सर्वप्रकारेण धार्मिक सास्कृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियो मे सफलतापूर्वक प्रगति कर सकते हैं । हमारी युवा पीढी का कितना पतन हो चुका है । इसका प्रदर्शन बारात के समय पर युवको और युवतियो के भरे बाजारों मे हृदय को कम्पा देने वाले घृणित हावभावो से परिपूर्ण भगडा नाच के रूप मे होता है । बुराई अकेली ही से नही आती अपितु अन्य बुराईयो को भी उत्पन्न कर देती है । शराब का इसके साथ खुल कर प्रयोग होता है ताकि मानवता की रही सही तमीज समाप्त करके कामुकतापूर्ण ढग से भगरा हो सके । अब तो युवतिया भी युवको के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर इस मे होड़ लेने लगी हैं । अभी-अभी साप्ताहिक स्वय सेवक ने अमृतसर की एक घटना का वर्णन आया है जिस मे बारात के समय पर युवतियो को युवको ने चुम्बन किया । क्या इसी से हमारे देश व जाति का सम्मान तथा गौरव अन्य सहयोगी राष्ट्रों की दृष्टि मे बढ़ सकेगा । इतनी निर्लज्जता भारत का सभ्य समाज अब सहन न कर सकेगा । भारतीय नागरिक सभा ने इस बुराई को मूलोच्छेद करने के लिए दृढ़ संकल्प कर लिया है, परन्तु इस संकल्प की पूर्ति के लिए नगर-निवासियों के प्रत्येक वर्ग का सहयोग होना आवश्यक है । यह सभा विवाह शादियो के अवसर पर होने वाली आतिशबाजी को भी समाप्त करना चाहती है । इस आतिशबाजी तथा पटाखों की कम्पा देने वाली आवाज से नगर में ।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, नव निर्वाचन सन् १९६९-७० की सूची

प्रधान :—प्रोफैसर श्री रामसिह जी एम०ए० दिल्ली,

उपप्रधान —(१) पडित श्री प्रकाशवीरजी शास्त्री ससद सदस्य दिल्ली

(२) चौधरी श्री देशराज जी दिल्ली,

(३) नरदेव स्नातक, ससद सदस्य, दिल्ली,

(४) श्री राजेन्द्रसिह जी मलिक कलकत्ता (बगाल प्रदेश)

मन्त्री :— (१) श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम०ए०,

उप-मन्त्री .—(१) श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम०ए०

(२) श्री जगीलाल जी कलकत्ता,

(३) श्री अम्बिका प्रसाद जी सिन्हा बिहार,

(४) श्री बेणी भाई अहमदाबाद,

पुस्तकाध्यक्ष : (१) आचार्य श्री विश्वश्रवा जी दिल्ली,

कोषाध्यक्ष : (१) मास्टर श्री शिवचरणदास जी दिल्ली,

अन्तरंग सदस्य

(१) श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम०एल०ए०, उत्तर-प्रदेश की ओर से,

(२) श्री धर्मेन्द्र आर्य एम०ए० उत्तर-प्रदेश की ओर से,

(३) श्री रामनारायण जी शास्त्री बिहार,

(४) श्री रामनगीना पाण्डे, बगाल,

(५) श्री हरगोविन्द कोचवाला बम्बई,

(६) श्री राघेलाल जीव बम्बई (आजीवन),

(७) श्री शिवकुमार शास्त्री, ससद सदस्य,

(८) श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री,

(९) आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब दो सदस्य सुरक्षित

आर्य प्रादेशिक सभा एक सदस्य,

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एक,

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-प्रदेश एक,

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-भारत एक,

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-दक्षिण, हैदराबाद

भवदीय :—
मन्त्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री
सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

धर्म का सच्चा स्वरूप

(ब्र० मनोहर आर्य विद्यावाचस्पति, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार)

यो तो सभी मनुष्य चाहते हैं कि हम धर्म करे और अधर्म से बचे रहे परन्तु बहुत कम लोग जानते हैं कि किस काम का करना धर्म है और किसका अधर्म। साधारण तया हमारे देश मे तो वही मनुष्य पवित्र कहलाता है जो किसी के हाथ का न खावे ! चाहे वह झूठ बोलता हो, चोरी करता हो। परन्तु यदि कोई विज्ञान धर्मात्मा पुरुष अन्य देशो मे जाता है जो हमारे भाई उसे बिरादरी से निकाल देते थे और उसको पतित समझते थे इससे हमारे देश की बडी अवनति हुई। इस अवनति का यही कारण है धर्म के वास्तविक स्वरूप को न जानना। अथर्व वेद मे एक मन्त्र आता है कि जो धर्म को त्यागता है उसका नाश हो जाता है—इसी प्रकार जिस परिवार, समाज तथा देश मे धर्म नही उस का नाश निश्चित है—

मन्त्र—ओ३म् ओजश्चतेजश्च सहश्च बलच वाक् चेन्द्रियच श्रीश्च धर्मश्च ।। अ० १२।५।७।।

इस मन्त्र का भाव यह है—कि मनुष्य के अन्दर ओज-प्रभाव और तेज होना चाहिए तथा वाणी की मधुरता इन्द्रियसयम लक्ष्मी और धर्म आदि गुण होने चाहिए। जिसके अन्दर ये गुण न होगे वह नाश को प्राप्त होता है।

आर्यों को हिन्दु नाम क्यो मिला ? आर्य जाति का ह्रास कैसे हुआ ? इसका अनेक कारणो में से एक मुख्य कारण यह है कि आर्य जाति धर्म के स्वरूप को भूल कर अविद्या अन्धकार मे फस गई। बस इसका धर्म मूर्ति पूजा करना, अवतारो मे विश्वास करना, आदि बन गया। हिन्दू अपने आर्यत्व को भूल कर मुगल प्रदत्त चोर, कपटी, काला इत्यादि अर्थ रखने वाला हिन्दू, संज्ञा का सहर्ष स्वीकार कर लिया। परन्तु हिन्दु बेचारा विचार न कर सका कि हमारी वास्तविक जाति क्या है, हमारा सच्चा धर्म कौन-सा है ? किसी हिन्दू से पूछो कि तुम्हारा धर्म क्या है तो वह बतायेगा कि 'हिन्दू'। इस को यह भी पता नही कि धर्म कहते किसे है। जाति को ही धर्म बना लिया।

पहली बात तो यह है कि हिन्दू अपने धर्म को जानता नही। यदा-कदाचित् कोई जानता भी हो तो उसका निश्चित-निर्णित कोई धर्म नही है। इस के धर्म मे तो सभी धर्मों को एक समान मानने का सिद्धात है। जिस धर्म में गाय को बलि देना पुण्य समझा जाता है वह भी इनके लिए श्रेष्ठ धर्म है और जिस धर्म मे गाय को माता समझ कर पूजा जाता है वह भी श्रेष्ठ धर्म है। जो ईसा को ईश्वर का अवतार मानते हैं उनको भी मुक्ति मिलेगी और जो श्री कृष्णचन्द्र को ईश्वर को अवतार मानते हैं उनको भी मुक्ति मिलेगी।

हिन्दू अपने सच्चे धर्म को न जानने के कारण हिंदू-जाति की क्षति तो निश्चित हई ही किंतु इससे अधिक हानि राष्ट्र की हुई। महर्षि मनुमहाराज उपदिष्ठ धर्म को यदि ठीक समझते तो राष्ट्र जाति एव धर्म की इतनी क्षति न होने पाती। महर्षि मनु महाराज ने तो धर्म की ओर मानव को प्रेरित करते हुए कहा—

वेद: स्मृति: सदाचार: च प्रियमात्मन: ।
एतच्चतुर्विधप्राहु: साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ।।

वेद पढ़कर उसके अनुसार आचरण करना सर्वप्रथम धर्म है। मनु ने धर्म को पहचानने के लिए वेद को प्रथम स्थान दिया। वेदोपदेश 'न तस्य प्रतिमा अस्तियस्य नाव महद्यश:' जिस ईश्वर की महिमा महान् है उसकी प्रतिकृति नहीं होती—मूर्ति या प्रतिमा नही बन सकती। इत्यादि वेदोपदेश को भूलकर मूर्ति पूजा होने लगी। और—'यदि नो गा हिंसी: यद्यश्व यदि पुरुषम्' वाली बात को हिंदु समझ जाते तो क्या साहस था कि महमूदबिन कासिम का जो देवल पर आक्रमण करके हिंदुओं को मौत के घाट उतार दिया। धर्म के यथार्थ स्वरूप को न जानने से हिंदु जाति कभी मुसलमानो की तलवार का आहार बन गई, तो कभी ईसाईयो के प्रदत्त प्रलोभन मे बह गई और वर्तमान मे बडे वेग मे बह रही है। हिंदु अपने को यदि सुरक्षित रखना चाहते हैं तो वेदोक्त-शास्त्रोक्त धर्म को पहचाने और उसी पर दृढ रहकर उसी के अनुसार आचरण करे। अच्छे गुणो को धारण करके उनके अनुसार आचरण करना ही धर्म है। महर्षि कणाद ने तो सुस्पष्ट कहा है कि—'यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि सधर्म' जिस गुण कर्म स्वभाव के आचरण से इह लोक मे सुयश एव परलोक मे मोक्ष पद प्राप्त हो वही धर्म है। महाभारत की सम्पत्ति भी इसी प्रकार है—'धारणाद धर्म इत्याहु सद्गुण सदाचार धारण करना ही धर्म है। और कहा—सर्वस्व धर्म के सार को सुनो और सुनकर उसको धारण करो जो अपने आत्मा को प्रतिकूल हो, वह दूसरो के प्रति व्यवहार मत करो। दूसरो द्वारा हमारी निंदा होना हमे अच्छा नही लगता तो हमे भी चाहिए कि हम भी दूसरो की निंदा स्वप्न मे भी न करे। हम नही चाहते कि हमारा धन चोरो द्वारा लूटा जाए तो ठीक इसी प्रकार हम भी दूसरोके स्वत्व को प्रहरण करने का मन मे भी न सोचे। हम चाहते है कि हमारी बहन-बेटियो को कोई दूसरा व्यक्ति बुरी नजर से न देखे, अत: हमे भी चाहिए कि हम भी पर-स्त्री को मातृवत् देखे। बस यही धर्म है इसको धारण करके जो आचरण कर रहा है वह धर्मात्मा है—धार्मिक है। और इस लोक मे कीर्तिमान है धर्म पर बल देते हुए विद्वान मनीषियो ने कहा—

धर्म शनै : संचिनुयात् वल्मिकमिल पुत्रिका ।
परलोक सहायार्थ सर्व भूतान्यपीडयन् ।।

जैसे अच्छा मनुष्य भी प्राणी को दु:ख न देता हुआ शनै शनै: धर्म का करताहै जैसे दीमक बबी तैयार करतीहै क्योकि परलोकमे धर्म ही काम आता है। इस धर्म का सग्रह हम वेदो मे स्मृति ग्रन्थो मे करे। यह शरीर अनित्य नाशवान् है, धन सम्पत्ति स्थिर नही है, मृत्यु रूपी काल शिर पर सदैव मडरा रहा है, अत धर्म सग्रह सदा करते रहना चाहिए। हमे स्मरण रहना चाहिए कि—

धनानि भूमौ पशयश्च गोष्ठे,
नारी गृह द्वारि जन: स्मशाने ।
देहश्चितायां परलोक मार्गे,
धर्मानुगो गच्छति जीव एक. ।

धन बंको मे या भूमियो मे गडे रह जाते हैं, पशु एव हमारा अश्व आदि अपने २ शालाओ मे बन्धे रह जाते है, नारी गृह के द्वार पर खडी जाति हुई अर्थी को देखा करती है। दाह सस्कार करने वाले लोग श्मशान भूमि से लोट जाते हैं यह पाच भूतो का पुतला शरीर भी चिता मे भस्म हो जाता है। उसका मित्र केवल मात्र एक धर्म है वही उसके साथ जाता है। अत: कहा है—

'एक इव सुहृद धर्मो निधनेऽप्नुयानि य ।
शरीरेण समं नाशं सर्व मन्यतु गच्छति ।।

एक धर्म ही सच्चा मित्र है जो मरने पर भी साथ जाता है और सब कुछ शरीर के साथ नष्ट हो जाता है।

पाठक वृन्द ! धर्म को यथातथ समझो और अपने अडोसी पडोसियो को समझाओ, अन्यथा देश धर्म तथा जाति का नाश है।

★ विश्वास रखना चाहिए कि प्रभु हमारी रक्षा करेगे ही।

★ प्रत्येक अवस्थामे मन का सतुलन बनाए रखो,यह बहुत ही जरूरी है।

समाज के दो सांघातिक रोग !

[प्रिंसीपल रलाराम जी होशियारपुर]

समाज की नीव धर्म है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नही। जैसे महाभारत मे लिखा है, धर्म उन नित्य नैतिक सिद्धान्तो का नाम है जो समाज तथा प्रजा को धारण करते हैं। धर्म वह सीमेन्ट है जोकि समाज के भव्य भवन मे लगी ईंटो को परस्पर जोडने का काम करता है। मानव निश्चय ही एक सामाजिक प्राणी है। समाज रचना के बिना मानव का विकास तथा उस की सर्वांगीन उन्नति असम्भव थी। परन्तु समाज का अस्तित्व ही प्रत्येक प्राणी पर कुछ प्रतिबन्ध या पाबन्दिया लगाने का सूचक है। जहा न तो कोई सयम और न कोई व्यक्ति पर निरोध या पाबन्दी हो वहा समाज का ढाचा अस्त-व्यस्त हो जाता है। जब व्यक्ति अपने ऊपर पाबन्दिया लगा कर उन का स्वेच्छापूर्वक प्रतिपालन करता है तो वह व्यक्ति सात्विक जन है। वह वस्तुत. धार्मिक है। जब व्यक्ति समाज के भय मे सदाचार के नियमो का पालन करता है तो वह राजसिक वृत्ति का है। जो मानव नीति अर्थात् सदाचार के नियमो एव इखलाक की प्रमादवश अवहेलना करता या उन नित्य नियमो का उल्लंघन करता है तो वह मनुष्य तामसिक कहलाता है धार्मिक पाबन्दियो या बन्धनो का उल्लघन सदैव स्वार्थ का परिणाम है। कोरा स्वार्थ सगठन का विनाशक है। पूणतया स्वार्थी व्यक्ति समाज का परम शत्रु है। कोरा स्वार्थ सामाजिक जीवन के लिए हलाहल विष है। विख्यात विचारक जैन्गविल ने कहा है कि स्वार्थ से बढ कर कोई पाप नही और परमार्थ से बडा कोई धर्म नही। जब व्यक्ति केवल अपने लिए सोचता तथा अपने लिए कर्म मे प्रवृत होता है तब वह स्वार्थी कहलाता है। जब वह अपने हित के साथ दूसरो के हित मिला देता है, जब वह अपनी भलाई समाज की भलाई मे देखता है तो वह धर्म के सार को समझ लेता है। किसी ने कनफयूशियस से पूछा कि क्या आप धर्म का सार मुझे एक मिनट मे बता सकते हैं तो कान्फयुशियस ने उतर दिया 'परहित चिन्तन या पर पीडा को जानना।'

उन्नीसवी शताब्दि मे पश्चिम मे अनेको विद्वानो ने विज्ञानवाद के नाम पर ऐसा मत प्रकट किया कि नीव धर्म अथवा नीति या इखलाक नही। अपितु कोरा स्वार्थ ही है। पारस्परिक सुविधाके लिए ही समाज का निर्माण हुआ है। इसकी भित्ति अर्थशास्त्र पर आधारित है। अर्थशास्त्र के अटल नियम, मानव ससार को नियन्त्रित करते हैं। 'अर्थस्पे पुरुषो. दासे ! र्थो दासो न कस्यचित।' पुरुष धन का दास है। अर्थशास्त्र के नियम उसके नाक मे नकेल हैं। जैसे वे इन्सान को घुमाते हैं वैसे वह घूमता है। इसे और कोई चारा नही। नीति, सदाचार या इखलाक आर्थिक नियमोका रूपातर हैं। यह नियम प्रबल हैं। सब मनुष्य अर्थ के इर्द-गिर्द इस प्रकार घूमते हैं जैसे नक्षत्र तथा ग्रह सूर्य के इर्द-गिर्द! सम्यता तथा सस्कृति आर्थिक विकास और आर्थिक ह्रास पर आधारित है। पौंड या डालर सम्यता तथा धर्म की आत्मा है।

यह आर्थिक बाद एक खोखला सिद्धात है। धन का प्रभुत्व सदैव दुराचार, स्वार्थ तथा अनीति की राह पर ले जाता है। जैसे गोल्डस्मिथ ने अपनी कविता मे लिखा है। 'जहा धन एकत्रित होकर प्रचुरता को प्राप्त होता है, वहा मानव अवनत हो कर ह्रास की ओर अग्रसर होताहै।' रोम तथा यूनान का पतन काल उनके आर्थिक वैभव का काल था। हिंदुओ का अपना पतन उस समय हुआ जब कि उनका ऐश्वर्य शिखिर पर था। महमूद गजनवी यहां से रत्न, ज्वाहरात तथा सोना चादी ढोते-ढोते थक गया। धन तथा स्वार्थ इकट्ठे चलते हैं। स्वार्थ समाज मे विगठन को पैदा करता है। समाज मे ईर्षा, द्वेष, द्रोह तथा पारस्परिक कलह को प्रज्जलित करके प्रेम, सघठन एकता तथा वीरता को भस्मसात कर देता है। धन सदैव धर्मानुसार सग्रहीत हो और सुख सुनीति तथा सदाचार के अधीन चले तो समाज को सुखी और मानव को उन्नत करता है। मानवो को प्रेम तथा सदाशायो की लड़ी मे पिरोकर सबल तथा वीर बनाता है। अत: वेद स्थान-स्थान पर कहता है 'अग्निना रायिमश्नन्वद् पोषमेव दिवेदिवे' यशस वीरवत्तयम् (भगवान से प्राप्त किया हुआ धन दिन प्रतिदिन समाज को सबल तथा मानव को पुष्ट करता है, यह धन यश कीर्ति और वीरता को लाता है।

अधर्म से सचित धन कायरता पैदा करता है। इसलिए जब भी देश मे सकट पैदा होता है तो धनी लोग भाग जाने का मार्ग प्रदर्शन सब से पहले करते हैं।

आज के भारत मे धन सचय जीवन का लक्ष्य बन गया है। १९४७ के बाद भारतवासियो ने, बहुत अधिक सख्या मे, धन को ही अपना इष्टदेव बना लिया है। राजनीतिक सत्ता को देश की एकता सुदृढ करने के लिए, नव प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए भारत की प्रतिष्ठा तथा इसके गौरव को बढाने के लिए नही अपितु अधिकतया धन सचय तथा स्वार्थसिद्धि के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। मन्त्री हो या विधान सभाओ के सदस्य, व्यापारी हो या सरकारी कर्मचारी सब धन-सचय की होड मे जुट गए हैं। देश के वास्तविक निर्माता, अध्यापक तथा प्राध्यापक सपने ऊचे आदेशो को भूलकर येन केन प्रकारेण धन-सग्रह की दौड मे सम्मिलित हो गए हैं। इने-गिने लोगो को छोड त्वरा से लाखपति बनना, मोक्ष तथा मुक्ति की बजाए जीवन का परम लक्ष्य बन गया प्रतीत होता है। भ्रष्टाचार चारो ओर से मुह फाड़े हुए अजगर की भाति समाज पर आक्रमण कर रहा है। विख्यात लेखक, वैलेज़ हैंजन जिन्होने प्रसिद्ध पुस्तक 'आफटर नहस हैं ?' लिखी अपनी इस पुस्तक मे कहते हैं कि भारतीय व्यापारी के लालच की सीमा आकाश ही है, छोटी-मोटी छत उसने अपने लाभ पर बनाई ही नही। नोटों की बोरिया उस से सम्भाली नही जाती। विवाह उत्सवो पर इसी कारण प्रदर्शन अथवा नुमायश इतनी बढ गई है कि निर्धन तथा मध्यम वर्ग के लोगो के लिए एक अभिशाप बन गई है। दहेज की सीमा ही नही। मुह फाड कर लोग लेते हैं और हमारी समाज के नए नवाब तथा राजा धन प्रलोभन का खूब प्रयोग करते हैं। बारातें फिर से बडी बडी सेनाओ का रूप धारण कर रही हैं। आतशबाजी फिर से बडे हाव भाव के साथ वापिस आ गई है। निराशा की बात यह है कि कल के सुधारक आज फजूलखर्ची के अग्रगण्य नेता बन गए हैं। आजकल जबकि गरीब अधिक निर्धन और अमीर अधिक धनवान, बन रहे हैं सुधार तथा सुनीति का पक्ष लेने वाली कोई सस्था ही नजर नहीं आती सुधार के प्रचारक बडे समर्थक बन बैठे हैं। ईमानदारी, सरलता, सादगी त्याग मूर्खों के लक्षण माने जाते है। जिस वर्ग को दयानन्द ने इन आदर्शो के क्रियात्मक प्रचार के किए सगठित किया था वह अग्रश्रेत्र का पूर्ण परित्याग कर बैठा है। कई सज्जन कहते हैं कि सारा भ्रष्टाचार हमारी निर्धनता पर महगाई के कारण हैं। यह धारणा प्राय: निराधार ही है सब से अधिक चोर बाजारी तो धनी लोग या बडे व्यापारी करते हैं। सब से अधिक रिश्वत तो बडे-बडे कर्मचारी लेते हैं, जिन पर महगाई का कोई विशेष प्रभाव नही होना चाहिए। असली कारण यह है कि दुर्भाग्यवश हमारे नैतिक आदर्श गिर चुके है, सुनीति, सदाचार, इखलाक।

हमारे जीवन मे प्रचलन-शक्ति नही रहे। जो इन का अवलम्बन करते है आज की समाज मे उनकी गणना बुद्धूओ मे की जाती है। ससार का सब से बडा नीतिज्ञ, चाणक्य, अपने अर्थ-शास्त्र मे धर्म को जीवन तथा ससार का अमर और शाश्वत अधिपति बताता है, जिसको यदि मार दिया जावे तो मानव विनष्ठ हो जाता है। परन्तु हम हैं जो इस सर्वोपरि शक्ति की अवहेलना करते हुए इसे गोबर के ढेर पर फेंकने का व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं। हम स्वय अपने विनाश का आवाहन कर रहे हैं। यह धनलिपसा हमारा पहला बडा शत्रु है।

जिस समाज का लक्स धन सचय हो जाता है, उसमे भोग विलास की प्रवृत्ति प्रबल रूप से जागृत हो जाती है। भोग-विलास का भवन दो स्तम्भो पर खड़ा है, मद्य तथा मैथुन। शराब का प्रचार हमारे समाज मे भयानक तेजी से हो रहा है। पश्चिमी क्लब—जीवन के आदर्श हमें पराभूत कर रहे हैं। जहा शराब तथा व्यभिचार या कामलोलुपता आ जाती हैं वहा से वीरता और निडरता भाग जाते हैं। जब हिटलर ने फ्रास को पादाक्रान्त १९३९-४० मे किया तो मार्शल पैतान ने कहा था कि फ्रांस की पराजय का बड़ा कारण नवयुवक तथा नवयुवतियो मे शराब पीने की बढी हुई आदत है, जिसने

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य समाज की विजय

सामाजिक क्रांति

(श्री करनैल सिंह विद्यार्थी)

कौन ऐसा आदमी है भारत का जो आज आर्य समाज के नाम से परिचित न हो। भारत ही नही विदेशी भी आर्यसमाज के नाम से अच्छी तरह से परिचित है। और वो आदमी भी, जो कभी आर्यसमाज को गालिया दिया करते थे अथवा आर्य समाजके नाम से वो खटकते थे चिल्लाते थे, वह भी अब आर्य समाज की जय-विजय के गीत गाते नही थकते। चाहे वह आर्यसमाज के नाम से अब भी अपने आपको दूर रखे जुबा पर इस का नाम लाए या न पर आर्यसमाज से सामाजिक तौर पर, इसके कामो को सिद्धातों को दिल से मान चुके हैं।

आर्यसमाज ने सामाजिक कार्यों मे महत्वपूर्ण कार्य किया है। कई कायो में महत्वपूर्ण सफलता भी प्राप्त की है पर नये कार्य अभी भी बाकी हैं जिनमे पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये सरकार, लोगो की सहायता बहुत जरूरी है।

आर्य समाज के महत्वपूर्ण कार्य

स्त्री शिक्षा —आर्यसमाज का यह एक महत्वपूर्ण कार्य था जिसके लिए आर्यसमाज को कई तरह के कष्ट सहने पड़े शास्त्रार्थ करने पड़े। आज जो आदमी स्त्रीको 'ढोल गवार, पशु और नारी यह सब ताडन के के अधिकारी', कहकर स्त्री को चार दीवारी मे बन्द रहने वाली, पांवो की जूती कहते है उन को मूर्ख बेवकूफ कहा जा सकता है। और वो आदमी जो स्त्री मे, आत्मा नहीं नही समझते थे उनको आज का पढा लिखा आदमी जानवर पशु अथवा बेवकूफ समझेंगे।

जो लोग कल को आर्य समाज की इस बात की खल्ली उडाते थे आज वही आर्य समाज के स्त्री-शिक्षा के कार्य के परम-समर्थक हैं बेशक आर्य समाज को अपने नाम पर न लाएं, आर्य समाज की यह महान विजय है कि आज भारत के ही नही बल्कि दूसरे देशो के बडे-बडे पदो पर स्त्री अपने दिमाक से, बुद्धि से विराजमान है।

छूत-छात जात-पात

आर्य समाज ने छूत-छात के विरोध मे अपनी पूरी शक्ति लगा दी यह इसके अपने इतिहास से स्पष्ट हो जाता है। इस कार्य के लिए ऋषि दयानन्द को अनेक कष्ट सहने पडे अपने से तथा परायो से। कई आर्य भाईयों को तो अपनी बरादरी से भी निकलना पड़ा कइयों को घर से। पर आर्य समाज के भाईयो को यह सब कष्ट सहते हुए भी खुशी उत्साह तथा प्रेम होता था कि हम अपने बिछडे साथियो को गले लगा रहे हैं।

देश स्वतन्त्र होने के बाद भी आर्य समाज को इस कार्य के लिए कई धार्मिक युद्ध करने पडे क्योंकि प्रत्येक आर्य यह मानता था कि आदमी अपने कर्मो से पहचाना जाता है कि न कि जन्म से।

ऐ देशवासियो, नेताओ! आर्य समाज के, ऋषि दयानन्द के, इस सन्देश को स्वीकार करके तुम को खुशी होनी चाहिए प्रसन्नता होनी चाहिए कि बिछडे भाई फिर उठ रहे है। धन्यवाद हो **ऋषिदयानंद को (म० गांधी के गुरू को)** जिसने तुम को ऐसा पवित्र सीधा रास्ता दिलाया कि भारत की बडी से बडी नौकरी मे आज हमारे यह भाई बैठे। सामाजिक कार्यो मे भी किसी से कम नही हैं। यह आर्यसमाज की क्राति की दूसरी विजय है जिसको आज की राजनीति ने भी स्वीकार कर लिया और गुरु शकराचार्य जैसे लकीर के फकीर को छूतछात का समर्थक होने पर उसके विरुद्ध आवाज उठाई। ससद मे विरोध हुआ, देश के कोने २ मे छूतछात के समर्थको के विरोध मे सभाए हुई, प्रस्ताव पास हुये। आर्यसमाज को मानहै, प्रसन्नता है कि उसके कार्यो को आज की जनता समझ चुकी है चाहे जुबा पर लाए या न लाए।

बाल विवाह

भारत के प्राचीन ग्रन्थो मे मनुष्य के जीवन के लिए बहुत उपयुक्त वर्णन है। बच्चा जब गर्भ मे होता है तब से लेकर जब तक उसकी अत्येष्टी नही हो जाती तब तक उसको क्या करना चाहिए यह सारा कुछ अपने प्यारे इन ग्रन्थो मे वर्णित है। जिस मे विवाह-सस्कार एक ऐसा काम है जो अपना ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विवाह किस आयु मे कब होना चाहिए इस बारे मे महर्षि दयानन्द तथा पुराने सब ऋषि लोगो ने बहुत सुन्दर अपन ग्रन्थो मे वर्णन किया है। २५ साल की आयु लड़के की और १८ साल की आयु लड़की की बहुत सुन्दर, कम से कम उम्र है। इस से कम की आयु मे विवाह करना कराना अपने पावो पर आप कुल्हाडी मारना है। **बाल-विवाह**भी इसी को कहते है। आर्यसमाज ने इस कुरीति को दूर करने के लिए अपनी पूरी कोशिश की और अनेक प्रकार के कष्ट भी इस कार्य के लिए सहे।

देश आजाद हो गया पर राजनैतिक लोगो का इस ओर कम ध्यान गया। आर्य समाज अपनी आवाज बुलन्द करता रहा।

कुछ देर बाद देश के नेताओं का ध्यान **परिवार नियोजन** की ओर गया और लगे ज़ोर देने परिवार को सीमित रखने के लिए। करोडो की सख्या मे पैसा भी खर्च होने लगा। सफलता मिली पर बहुत कम। किसी ने इन को सलाह दी कि तन्दरुस्त सन्तान के लिए तन्दरुस्त मा-बाप का होना बहुत जरूरी है। बिना तन्दरुस्त मा-बाप के स्वास्थ्य, स्वच्छ सन्तान नही हो सकती। तब इन नेताओ को अकल आई कि बाल-विवाह की कुरीति को दूर किया जाए जिस कारण कानून बनाना पडा। बाल-विवाह बन्द हो गया काफी, पर आर्यसमाज की बताई हुई गणना (यानि १८ साल की लडकी, २५ साल का लडका) पर अभी तक भी नही आए।

अब सुना है कि भारत मे ऐसा कानून आ रहा है जिसके अधीन कोई भी दम्पति विवाह के समय २५ साल तथा १८ साल से कम नही होगी। यह है आर्यसमाज की तीसरी विजय जिस को दिल से सब मान चुके हैं।

ऐ परिवार नियोजन (**Family Planning**) के समर्थको, नेताओ, लौटो आर्यसमाज की ओर जो तुम को स्वास्थ्य, स्वच्छ सन्तान के उपाय बताता है।

आर्यसमाज लडके की आयु २५ साल और लडकी की आयु १८ साल क्यो बताता है इसमे भी एक राज है राज यह कि इस आयु से पहले लडके और लड़की की इच्छा आज के वातावरण (**Sex**) की और बहुत होती है। जल्दी से हुई शादी मे एक तो उनको सन्तान पैदा करने की इच्छा ज्यादा तीव्र होती है जिससे जल्दी से कितने ही बच्चों के वे मां-बाप हो जाते हैं, दूसरे अपने तथा बच्चो के स्वास्थ्य से हाथ धो बैठते हैं जिस कारण उनका सारा जीवन दूभर-सा हो जाता है। दूसरी ओर यदि (२५ साल के बाद लडका और १८साल बाद लडकी की) शादी होती है तो दम्पति की (**Sex-Relation**) की इच्छा कुछ धीमी हो जाती है जिससे उनका स्वास्थ्य भी कायम रहता है साथ मे सन्तानभी कम और तन्दरुस्त पैदा करने की भी उनकी इच्छा हो जाती है।

क्या आज के नेता आर्यसमाजकी इस खोजपूर्ण बताई हुई उमर के लिए कानून जल्दी से जल्दी बना देगे? परिवार नियोजन के लिये आर्यसमाज का यह सबसे महत्वपूर्ण सुझाव है देश के नेताओ को। (क्रमश)

समाज के दो सांघातिक रोग!

(पृष्ठ ४ का शेष)

हमे कायर तथा पामर बना दिया है। क्या भारत मे यही नही हो रहा? अध्यापक, विद्यार्थी तथा स्त्रिया अब भारी सख्या मे शराबियो की पक्ति मे खडे हो गये हैं। दो बडे शत्रु, चीन तथा पाकिस्तान हमारे सिर पर दनदना रहे है, और हम है कि मतवाले हुए पडे हैं। हमारी सरकार अपने बजट के घाटो को शराब मे बढौती करके पूरा करने के लिए पग उठा रही है। इसका प्रभाव हमारे राष्ट्रीय जीवन पर क्या पडता है इसकी उन्हे कोई चिन्ता ही नही। हमे चरित्र रक्षा तथा राष्ट्र के लिए मद्यपान तथा धन और धनी पूजा हमारे दो साघातिक शत्रु हैं इनके सहार के लिए आर्य समाजियो को कटिबद्ध होना चाहिए।

संत-वचन

★ चालाकी और तर्क मे प्रभु दूर रहते हैं।

★ जो सच्चे मन से उस प्रभु को चाहेगा, उसे वे अवश्य मिलेंगे, नकल मे वे बहुत अप्रसन्न होते हैं।

★ विश्वास रखना चाहिए कि प्रभु हमारी रक्षा करेंगे ही।

हम रास्ता भूल गये-एक मनन

(श्री गजानंद आर्य, मंत्री-आर्यसमाज बड़ाबाजार कलकत्ता-७)

शायद हम ऋषि को समझ न सके क्योकि यदि हमने ऋषि को पूरी तरह से समझा होता तो उनकी लगाई हुई यह आर्यसमाज रूपी वाटिका बहुत ज्यादा हरी भरी होती। जो काम स्वामी जी अकेले कर गये उसी काम को और अधिक हम बढा न सके। स्वामी जी के निर्वाण के पश्चात् उनका बनाया हुआ वातावरण काम करता रहा बहुत अच्छे-अच्छे सन्यासी, प्रचारक मिलते रहे। आर्यसमाज से सर्वसाधारण को बहुत आशाये बधी। लोगो ने आर्यसमाज को बडी उदारता से अपनाया। किन्तु वे प्रचारक, वे आशाये हम से दूर होते जा रहे हैं। आर्यसमाज अब धार्मिक दृष्टि से एक सम्प्रदाय और सगठित दृष्टि मे एक राजनीतिक पार्टी की तरह ही समझी जानी लगी है जिस मे मिथ्या विश्वास—दुराग्रह और गुटबाजी की गध आने लगी है। यह हम लोगो की करामात का ही फल है कि उदार हृदय क्षमाशील—सत्यानुयायी महर्षि को हम ने असहिष्णु — की सज्ञा लोगो से दिलवा दी। पौराणिको से हमे शिकायत है कि उन्होने हमारे महापुरुषो के चरित्र विकृत कर दिये किन्तु हम भी तो सोचे कि हमने उस ऋषि के प्रति कितनी कृतज्ञता उऋणता दिखलाई है। हमारे लिए लोग कह सकते हैं—'बडे ध्यान से सुन रहा था जमा, तुम्ही सो गये दास्ता कहते। कहते।

आइए महर्षि की कल्पना का आर्यसमाज का अनुमान तो लगावे। आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य आर्य कहलावे। उस आर्य मे क्या-क्या विशेषताए होवे यह उन १० नियमो मे वर्णित है जिसकी स्वीकारोक्ति के पश्चात ही आर्य आर्यसमाजी बनता है। आर्यसमाज के प्रथम और द्वितीय नियम मे हमे ईश्वर विश्वासी और ईश्वर भक्त बनने को कहा गया है। हमारा यह विश्वास कहने मे तो यथावत बना हुआ है किन्तु हमारा मन इस विश्वास से कोसो दूर है। यदि हमने दो नियमो पर आचरण कर लिया होता तो आज का आर्यसमाजी सर्वसाधारण से काफी ऊचा समझा जाने लगता। एक समय वह भी आर्यसमाजियो को मिला हुआ था कि अदालत का न्यायाधीश आर्य समाजियो के पक्ष मे बिना किसी साक्षी के निर्णय दे देता था कि आर्यसमाजी जो कह रहा है वह असत्य नही हो सकता वैसा सुनहला युग आर्य समाज को वैसे ही नही आ गया था उस युग के लाने मे महर्षि का जीवन—स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम आदि दीवानो का बलिदान काम आया था। किन्तु आज का आर्य समाजी उस युग को गवा बैठा। हमने अपने स्वार्थ के लिये ईश्वर के नियमो की तिलाजलि दे दी। तभी तो रूस जैसे कम्युनिस्ट देशो को कहने का मौका लग गया कि धर्म और ईश्वर कुछ नही सिर्फ अमीरो के चोचले है धर्म भी एक अफीम है आदि आदि

आर्य समाज के अनभिज्ञ आदमी को तो यह ख्याल बना रहताहै कि आर्य समाजी धर्म, कर्म कुछ नही मानता। अर्थात् वे लोग आर्यसमाजी को नास्तिक की श्रेणी मे ला बैठाये हैं तो ऐसा क्यो है शायद हमारे आचरण हमारा कार्यक्रम यह समझने को उन्हे बाध्य कर देता है यही कारण है कि हमारी युवा पीढी और कामो मे तो सक्रिय हिस्सा लेती है किन्तु हवन सन्ध्या आदि कर्म काण्डो मे उन्हे भी रुचि नही होती है हमारे प्रचारको की कृपा से लोगो की मूर्ति पूजा—अवतारवाद व्रत, तिलक, कठी आदि का खोखलापन तो विदित हो गया पर उन कर्म काण्डो के बदले हमे क्या अपनाना चाहिये था यह मडनात्मक दृष्टिकोण हम लोगो के गले पूरी तरह नही उतार सके। इसको नही उतार सकने का प्रधान कारण है बने हुए आर्यसमाजियो का आचरण और उनकी ईश्वर के प्रति उपेक्षा।

कोई भी शुभ कार्य के लिये पहले पहल बाधा आता है लोगो की गालिया सुननी पडती हैं ई ट पत्थर तो उस काम के करने वाले को साधारण हो जाते हैं जब कि मुकाबला जहर के प्यालो—छुरो की नोक और पिस्तौल की गोलियो से करना होता है पर कोई भी बाधा—कोई भी प्रलोभन—कोई भय—'न्यायात्पथ' प्रविचलन्ति पद न धीरा'—के दीवाने को विचलित नही कर सकता। अपनी सत्यता कार्य क्षमता और निस्वार्थता: से प्रेरित प्रचारक जब अपने विचार देते है तब उसे खडनात्मक रूप भी अपनाना पडता है। क्योकि गलत मान्यताओ, अधविश्वासो एव अविद्या युक्त कार्यों को हटा कर नये विचार दिये जा सकते हैं। उन कायो को हटाना ही खडन है किन्तु उस खडन के साथ हमारी मडन शक्ति ज्यादा मजबूत होनी चाहिए। एक जगल को हमे यदि उपजाऊ बाग बनाना है, एक वस्त्र के थान को अच्छा उपयोगी वस्त्र बनाना है अथवा एक लकडी से फर्नीचर बनाना है तो उन सब के लिये पहले प्रक्रया तोड फोड काटने पीटने की ही होगी पर उसके आगे की दूसरी प्रकृया सवारने बनाने की हम नही कर पाते तो वह सब करा कराया व्यर्थ साबित होता है। हम जरा सोचे क्या कुछ अशो मे हमारी प्रचार शैली उपरोक्त प्रचार की नही रही। हमने जो प्रचारक प्रचार के लिए तैयार किए उनकी मडन शक्ति को कभी आका। हम यह क्यो भूल जाते है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश का पूर्वार्ध भाग सर्वप्रथम और अधिक समुल्लायोमें लिखनेके बाद ही उत्तरार्ध भाग सिर्फ चार समुल्लाओ का लिखा जिसमे खडन की सामग्री कही जा सकती है। मडन के १० समुल्लाओ के ज्ञाता और आचरण कर्ता को ही खडन का अधिकार होना चाहिये था।

ऋषी के जीवन मे हम पढ़ते हैं कि गुरु विरजानन्द जी से गुरु दक्षिणा के रूप मे सत्य प्रचार का दायित्व लेकर स्वामी जी प्रचार क्षेत्र मे आये। पाखड पताका को लेकर सब मत-मतातरों को चैलेज किया किन्तु कुछ समय के बाद उन्हे फिर एकांतवास करना पड़ा शायद इसीलिए कि उन्हें अपनी तपस्या मे मडन शक्ति में कमी अनुभव हुई। एकातवास के बाद इतने तपे हुए निकले कि कोई भी विरोधी उनकी विद्वता पर उनके चिरित्र पर गन्दा आक्षेप न कर पाया।

तो फिर ऐसे तपस्वी ऋषि के भक्तो को प्रचार का पूरा फल न मिले तो सम्भव है हमारी प्रचार शैली मे हमारे व्यक्तिगत जीवन मे कुछ दोष है तर्क का हथियार एक ऐसा अस्त्र हमे ऋषि से मिला था जिसकी हमे अपने कार्यो से अधिक से अधिक चमका कर रखना था।

हम शायद कुछ विषयान्तर हो गये। सोच रहे थे आर्य समाज के नियम प्रथम और द्वितीय पर और जा पहुचे खडन मडन की समीक्षा पर'। क्योकि वैदिक प्रचार कार्य के लिये ईश्वर विश्वासी ईश्वर का उपासक होना आमश्यक होता है। इसी आवश्यकता का अनुभव करते हुए स्वामी जी ने सर्वप्रथम हमें जो नियम दिए वे ये थे।

(१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

(२) ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। ★★

★ भारत सरकार ने केन्द्रीय भूमि विकास बैंको के साधन बढाने के लिए इस वर्ष से सीधी इन बैंकों के ऋणपत्र (डिबेंचर) खरीदने का निश्चय किया है। पहले इस काम के लिए राज्य सरकारो को केन्द्र द्वारा ऋण दिया जाता था।

मानव जीवन का उद्देश्य

(श्री विश्वामित्र जी चड्डा किला, जालन्धर नगर)

मानव जीवन का उद्देश्य सफलता रूपी अमृतफल तोडने के लिए कठिनाईयो के ऊंचे वृक्षो पर चढना है। मानव जीवन का लक्ष्य प्रगति के हेतु निरन्तर कर्म और सघर्ष करते रहना है। सारे ससार मे रहने वालो को आत्मत्व की दृष्टि से देखना मानव जीवन का एक अनिवार्य और अपरिहार्य उद्देश्य है। पूर्व जन्मो के अनेक पुण्यो तथा सत्य कार्यो के परिणाम स्वरूप यह यह बहुमूल्य मानव जीवन हमे जगत नियन्ता ईश्वर की अमानत के रूप मे प्राप्त हुआ है। मानव जीवन एक सत्य हैं और चट्टान की तरह कठोर और सुदृढ है।

'हमारा जीवन ही हमारा समस्त ससार है।' कथन के अनुसार हमे अपने जीवन को सुगन्धित फूलो की तरह महकाए, अपनी सुवास से दूसरो के जीवन को भी सुगन्धयुक्त बनाए। मनुष्य का व्यक्तित्व समुन्द्र से भी गम्भीर, निष्फल और प्रशात है। उसमे सूर्य जैसी प्रतिभा-प्रखरता और तेजस्विता है। उनके बुद्धिधन आत्मफल और कला कौशल की कोई थाह नही। चाहे तो सारे ससार को सदृढ ज्ञान के प्रकाश से आलोकमय कर सकता है। इस दुनिया मे विज्ञान ही एक सत्य है और सब झूठ है। (विज्ञान का गलत अभिप्राय: न लगाया जाए) विज्ञान की प्रायुक्तियों के सहारे चलना मानव जीवन का उद्देश्य है। वैज्ञानिक दृष्टि से समस्त ब्रह्माण्ड का विश्लेषण करना मानव जीवन का लक्ष्य है। स्मरण रहे विज्ञान कभी भी किसी को अनुचित कार्य करने की प्रेरणा नही देता। मानव जीवन विज्ञान का ही एक रूप है।

हमे अपने अन्दर ईश्वर के गुणो, 'जिन्हें हम नैतिकता और मानवता कहते हैं' को विकसित करना चाहिए।

धर्म और संस्कृति का विशाल ढाचा इसलिए खड़ा किया गया है कि उनसे प्रभावित होकर मस्तिष्क के सयम से रहने और सदव्यवहार करने की आस्था उत्पन्न हो। अस्तिकता और ईश्वरीय न्याय का मूल प्रयोजन यह है कि मनुष्य अपने ऊपर उद्देश्य शासन का निमन्त्रण अनुभव करे। और गुप्त रूप से भी शरीर से ही नही, मन से भी दुष्कर्म दुर्विचार अपनाने का साहस न करे। आत्म नियन्त्रण ही मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। प्रत्येक मानव को चाहिए कि वह अधिक से अधिक निस्वार्थी और निःस्पृदा रहे। एक दूसरे के लिए सहानुभूति और सह-अस्तित्वका भाव रहे। भगवान ने बडी कारीगरी से मानव के शरीर मस्तिष्क और आत्मा को बनाया है। अपने सभी अवयवो का सुचारूरूप से उपयोग करना मानव जीवन का उद्देश्य है।

वेदो मे कथन है! 'मनुष्य, तू अपने दाहिने हाथ से पुरुषार्थ कर। बाए हाथ मे सफलता निश्चित है। गोधन, अश्वधन स्वर्ण आदि अन्य सम्पदाओ को तू अपने खुद के परिश्रम से प्राप्त करे।' सक्षेप मे मानव जीवन का उद्देश्य सभी देवी गुणो को प्राप्त कर, शास्त्र मार्ग का अनुकरण करते हुए प्रकृति पर सफलता प्राप्त करे। सारे ब्रह्माड को एक सुवासित उपवन बनाना है।

★ एक ओर प्रभु है, दूसरी ओर ससार है। हमे एक से प्रेम करना है तो दूसरी जगह छोडनी होगा।

★ ज्ञानी और भक्तो को त्रिकाल मे दुःख नही होता, और ससारी जनो का दु.ख त्रिकाल मे भी नही छूटता।

पं० लेखराम के जीवन से प्रेरणा लें

[श्री दिलबागसिंह आर्य मुकलान हिसार]

आर्यसमाज के व्यापक महान् विश्वसेवा—यज्ञ के पवित्र कुण्ड मे जिन महान् आत्माओ ने अपने जीवन की आहुतिया दी है, जिनके बलिदान से यह वैदिक मिशन की प्रदीप्त ज्वाला इस समय भी अपने प्रकाश की और सुगन्धि से सारे समाज को आलोकित एव सुगन्धिमय कर रही है। उन मे से स्वर्गीय आर्य पथिक लेखराम जी का नाम प्रथम पक्ति मे आता है! ऋषि दयानन्द के पश्चात् जिन तेजस्वी वैदिक धर्म की लगन मे ओत-प्रोत और अपने जीवन को वैदिक धर्म के प्रचार मे ही लगा देने वाली विभूतियो का वरदान प्रभु की कृपा से आर्यसमाज को मिला, उसी का प्रताप है। प० लेखराम ने अपना उपनाम आर्य मुसाफिर रखा था और सचमुच ही धर्म प्रचार के लिए जितना सफर इनको करना पडा उसकी तुलना नही की जा सकती। शास्त्रार्थों के लिए विधर्मियो की शुद्धि के लिए और वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जैसी लगन प० लेखराम मे थी वैसी लगन आज भी आर्य समाज के उपदेशको के लिए स्पृहणीय आदर्श बनी हुई है। पं० लेखराम अन्य सभी लाभदायक धन्धो का प्रलोभन छोड कर केवल २५ रुपये मासिक पर चिरकाल तक अपना निर्वाह करता रहा और अपनी त्याग तथा तपस्या से पडित जी ने उन ब्राह्मणो को भी मात कर दिया जिनको त्याग और तपस्या के गुण वश परम्परा से प्राप्त होते हैं। प० लेखराम की पत्नी भी अपने पति के समान ही आदर्श की उपासक थी। अपने पति के स्वर्गवास के बाद जब उसे दो हजार रुपए की राशि जीवन यापन के लिए मिली तो उसने वह राशि भी गुरुकुल कागडी के कोष मे जमा करा दी। उसकी त्याग वृत्ति को देख कर दातो तले उगली दबानी पडती है। लेखराम का नाम आर्य इतिहास मे सूर्य की तरह चमकता रहेगा। [शेष फिर]

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएं

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी सत्यार्थ रत्न, भूषण, विशारद तथा शास्त्री की परीक्षाएं सारे देश में ७ सितम्बर १६६६ को सम्पन्न होंगी।

परीक्षा शुल्क नाम मात्र प्रमाण पत्र बड़े आकर्षक तथा प्रत्येक परीक्षा केन्द्रों में अनेक भारी भारी पारितोषिक।

परीक्षा सम्बन्धी सभी प्रकार की जानकारी के लिए श्री चमनलाल एम. ए. परीक्षा मन्त्री, आर्य समाज दरिया गंज २ अन्सारी रोड, दिल्ली—६ के पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

देवव्रत धर्मेन्दु	ओ३म् प्रकाश
आर्योपदेशक	एम. एस. सी.
प्रधान	मन्त्री

आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०)

ला० जय राम सूरी जी का २५०००का दान

श्री जय राम सूरी रावलपिडी मे बडे ठेकेदार रहे और पाकिस्तान बनने के पश्चात उन्हे अपना निवास स्थान अम्बाला मे बनाना पडा। अबाला मे भी उन्होने और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती पार्वती देवी जी ने कई धर्मस्थानो को अपनी कमाई मे से दान दिया। अभी उन्होने २५०००रु. का दान डी. ए. वी कालेज प्रबन्ध की समिति को दिया है। इससे समिति अम्बाला नगर मे श्री जय राम सूरी शिशु विकास मन्दिर खोलेगी और इसके लिए श्री जयराम सूरी जी २५००० रु और देंगे। इसी धन मे से श्रीमति पार्वती देवी प्रार्थना भवन बनेगा जिसमे बच्चो के अन्दर शील आदि विशेष गुणो का विकास किया जाएगा। भगवान दास

प्रिंसिपल

भारत केसरी श्री चन्दगी राम जी

कितने हर्ष का विषय है कि हरियाणा के आर्य सपूत श्री मास्टर चन्दगीराम जी इस वर्ष भारत केसरी बने हैं। हमे श्री चन्दगी राम जी पर गर्व है कि इन्होने फिर हरियाणा प्रात का नाम रोशन कर दिया है। श्री चन्दगीराम जी निरामिष भोजी हैं इनके कथनानुसार इन्होंने महर्षि दयानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को चमकाया है। इस बार इन्होंने पजाब के श्री मेहरदीन को मलयुद्ध मे पछाड कर भारत केसरी की उपाधि प्राप्त की है।

समाचार

योग प्रसार सभा (रजि०) के द्वितीय वार्षिक योग शिविर विवरण १९६८-६९

योग जीवन की वह श्रेष्ठ विधि है जिसके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता हुआ मानव अपने इस जीवन मे सुख, शान्ति, प्रसन्नता, सफलता प्राप्त करता हुआ अन्त में अपने आत्मा को उस परम पिता के हाथ जोड कर मोक्ष का अधिकारी बन सकता है।

योग भारत वर्ष की समस्त ससार की एक महान् देन है। प्राचीन समय मे योग शिक्षा के आरम्भ के साथ-साथ ८ वर्ष की आयु मे सीखना आरम्भ किया जाता था। जब तक भारत वर्ष मे योग और यज्ञ की भावना का पालन होता रहा तब तक भारत ससार का गुरु रहा। महर्षि दयानन्द आदि महापुरुषो के पुरुषार्थ के परिणाम स्वरूप अब पुन इसका प्रसार आरम्भ हुआ है। विदेशी लोग तो अब बडी तेजी के साथ इसे अपना रहे है। पूज्य गुरुवर महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद तथा यहा की उत्साही जनता के शुभ सहयोग से १५ जुलाई सन् १९६५ को योग प्रसार सभा की स्थापना की गई। मानव समाज की हर श्रेणी में विशेष कर विद्यार्थियों मे इसके प्रसार के लिए १३ अक्तूबर से २० अक्तूबर १९६८ तक द्वितीय योग प्रसार शिविर आयोजन मे कालेज में विद्यार्थी छात्र और छात्राए प्रात: साय योगासन प्राणायाम का शिक्षण प्राप्त करते रहे। स्थानीय सभी डी० ए० वी० ए० एवं राजकीय संस्थाओ के छात्र छात्राओं ने इस विद्या के प्रसार के लिए डायरैक्टर महोदय अपने स्टाफ तथा वैद्य रामसिह सचालक स्थानीय सभा सहित जाते रहे। योग पर भाषण तथा क्रियात्मिक रूप से आसनों का प्रदर्शन होता रहा। प्रात: साय दोनों समय नियत रूप से मुकन्दलाल कालेज हाल मे शिक्षण प्राप्त करते रहे। स्थानीय व्यक्तियों मे प्राय. सभी प्रमुख सज्जन इस में भाग लेते रहे। प्रशिक्षित व्यक्तियों को दिनाक ११-१०-६८ प्रमाण-पत्र दिए गए। छात्र-छात्राओं के लिए १ नवम्बर से ३० नवम्बर तक श्री [illegible] जी देख-रेख में एक मास के लिए योग शिक्षण श्रेणी लगाई। जिसमें ६७ छात्र और ३ छात्राओं ने भाग लिया और शिक्षण के उपरान्त प्रमाण-पत्र प्राप्त किए।

स्थानीय संस्थाओ के अतिरिक्त श्री देव वोहरा जी अपने स्टाफ एवं वैद्य रामसिह सहित जिन २ स्थानों पर गए उनमें से निम्न संस्थाओं के नाम विशेष उल्लेखनीय हों।

गवर्नमेंट स्कूल दामला, गवर्नमेंट स्कूल मुलाना, एम एल. एन. स्कूल रादो इत्यादि योग प्रसार सभा के लिए ५ बीमा तथा २० हजार रुपए भवन निर्माणार्थ नगर मालिक ने पार्क में प्रदान किये हो भवन का निर्माण आरंभ हो चुका है और यह आशा की जाती है कि आगामी योग शिविर अपनी सभा के अपने नये भवन मे सपन्न हो सकेगा नगर पालिका के सभी सदस्यो का इस शुभ सहयोग के लिए सभा बहुत ही धन्यवाद करती है। सब सज्जनो भाईबहनो और बच्चोंका भी म । धन्यवाद करती है जिन्होंने इस शुभ राष्ट्र निर्माण के कार्य मे भाग लेकर सभा का उत्साह बढाया। उस परम पिता परमात्मा के तो हम सदा ही धन्यवादी हैं। जिस की अपार प्रेरणा से हमें इस शुभ काम में सहयोग मिल रहा है।

(कविराज रामसिह वैद्यवाचस्पति)
कार्यालय : आरोग्य मन्दिर यमुनानगर
सचालक : योग प्रसार सभा यमुनानगर

आर्य वीरो जागो

(पृष्ठ २ का शेष)

को रोकना होगा जो मानव जाति के किसी भी व्यक्ति पर होता हैं।

अपने लक्ष्य की प्राप्ति का इसका बडा साधन है विनम्रता जो आजकल की आर्यसमाज की पीढी मे सब से बडे अभाव के रूप मे खटकती है। स्वामी दयानन्द अपने युग के सभी मतो का खण्डन करते रहे फिर भी उनकी वाणी ही थी जो विरोधियों से भी आकर्षित करने मे सफल ही हुई! यदि हम को आगे बढना है अपनी आर्य सस्कृति तथा सभ्यता का प्रचार करना है तो दूसरो को उनके अवगुण बताने की अपेक्षा अपने गुणो द्वारा उनको आकर्षित करे।

हम को तीसरी बात ध्यान मे यह रखनी है को हम कभी अवसर की प्रतिक्षा न करे वर्तमान ही सबसे अमूल्य है जो तुम्हारा साथी है। इसी उपलक्ष के एक फासीसी कहावत है कि 'वृद्ध यह बताते है कि उन्होने अतीत में किया था ? युवक यह बताते है कि वह क्या कर रहे हैं और मूर्ख यह बताते हें वह क्या करेगे ! कितनी सार्थकता है इन शब्दो मे। क्या इम मे दो मत हो सकते है।

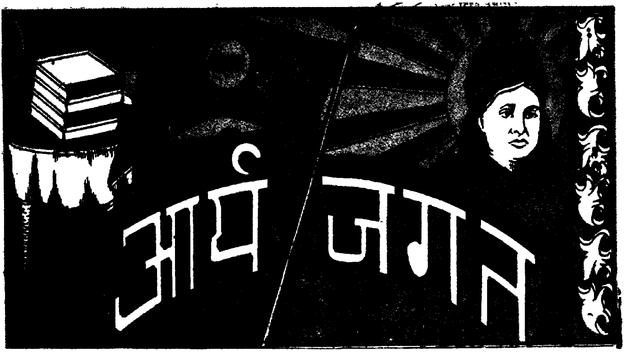
आर्य वीरो जागो ! हम सभी युवक है और हमे युवको की भाँती वर्तमान पर विश्वास रखने हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए इसी मे हमारा उत्थान है और हम अपनी विचारधारा ससार के कोने-कोने मे फैला सकते है।

भंगड़े का निर्लज्जता...

(पृष्ठ २ का शेष)

तथा सगर्भा स्त्रियो के जीवन खतरे मे पड़ जाते हैं। यह किसी से भी छिपा नही, आवश्यकता इस बात की है कि हम इन चरित्र विनाशक कुरीतियो का तुरन्त त्याग करे और इसके स्थान पर अपनी पुरानी नैतिक मर्यादाओं का सम्मान करते हुए विवाहोत्सव को सम्पन्न करें, पहले भी ऐसे शुभावसरों पर औरतें मंगल गान किया करती थीं। घरो में ही एकान्त स्थान पर स्त्रियां प्रसन्नता में नृत्य किया करती थीं और इस प्रकार अपनी खुशी को प्रकट किया करती थी। आइये हम सब मिल कर विवाह की धार्मिक पवित्रता को बनाए रखने के लिए भगड़े की इस दुष्प्रवृत्ति को त्याग देने का प्रण करे जिससे हमारे देश का कल्याण हो और यह देश जगद्गुरु बन कर इस उक्ति को चरितार्थ करे।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर, तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २५) ६ आषाढ़ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२२ जून १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

'स एक एव वृदेक एव'

वह भगवान् एक और केवल एक ही है। स:—वह प्रभु देव एकाएक एव ही है वृत-निश्चय से वह एक एव-ही है। परमेश्वर एक ही है।

भाव:—वेद माता की कितनी मधुरता से भरी लोरी है, कितना जीवन दायक सन्देश है यह। वह परमात्मा एक है। इस सारे विश्व के चित्र का विचित्र चित्रकार वह परमेश्वर है। वही देवों का महादेव तथा आत्माओं का परम आत्मा है। वह भगवान् एक है। वेदो में एक भगवान् की भक्ति का विधान है। अनेक देवी देवताओंकी कल्पना सर्वथा निराधार है। उसे एक जानो एक मानो और एक ही की आराधना, उपासना किया करें वह एक और एक ही है—सं.

वे दा मृ त

पूजनीय परमेश्वर

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
होतारं रत्नधातमम् ॥१।१।१॥

पदार्थ—(अग्निम्) ज्ञानस्वरूप, व्यापक, सबके अग्रणीय नेता और पूज्य परमात्मा की मैं (ईडे) स्तुति करता हूं। कैसा है वह परमेश्वर? (पुरोहितम्) जो सबके सामने स्थित, उत्पत्ति से पूर्व परमाणु आदि जगत का धारण करने वाला (यज्ञस्य देवम्) यज्ञादि उत्तम कर्मों का प्रकाशक, (ऋत्विजम्) बसन्त आदि सब ऋतुओं का उत्पादक और सब ऋतुओं में पूजनीय, (होतारम्) सब सुखों का दाता तथा प्रलयकाल में सब पदार्थों का ग्रहण करने वाला (रत्नधातमम्) सूर्य चन्द्रमा आदि रमणीय पदार्थों का धारक और सुन्दर मोती, हीरा, सुवर्ण, रजत पदार्थों का अपने भक्तों को देने वाला है।

भावार्थ—ज्ञानस्वरूप परमात्मा सर्वत्र व्यापक सब प्रकार के यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों का प्रकाशक और उपदेशक, सब ऋतुओं में पूजनीय और सब ऋतुओं का बनाने वाला सब सुखों का दाता, और सब ब्रह्मांडों का कर्त्ता धर्त्ता और हर्त्ता है, हम सबको ऐसे प्रभु की ही उपासना प्रार्थना और स्तुति करनी चाहिए।

ऋषि दर्शन

सर्वोत्कृष्टत्वात्

हे महान् देव। आप सबसे ही उत्कृष्ट हैं, ऊंचे हैं, सब से श्रेष्ठ हैं। आप से बढ़ कर सारे विश्व में कोई भी तो श्रेष्ठ व ज्येष्ठ नहीं है आप सर्वोत्तम हैं। आप को प्रणाम हो।

परमेश्वर अनंत विद्या युक्त

हे परमेश्वर! अनन्त विद्याओं के भण्डार हैं। सारी विद्याओं के केन्द्र आप ही हैं। सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जातेहैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

विद्वांस: क्रांत दर्शना:

विद्वान वे कहलाते हैं जो क्रांत दर्शी होते हैं। जो बहुत ही दूर की सोचते है, उनकी दृष्टि व मन का चिंतन बहुत दूर जाने वाला होता है। बड़े दूरदर्शी हुआ करते हैं। ऐसे लोग विद्वान् कहलाते हैं।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०(सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

आर्य जनता वर्ण-व्यवस्था के प्रचार और अस्पृश्यता निवारण के कार्यक्रम को आगे बढ़ावे

एक अशुद्ध प्रश्नके शुद्ध उत्तर की खोज

सामायिक समस्याएं

श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

यू तो शूद्रो के साथ मानवोचित सद्व्यवहार की समस्या देर से एक उलझी हुई गुत्थी है क्योकि इस ओर अतीत मे बडे-बडे विद्वान और सुधारक भी उसी प्रवाह मे बहते रहे। आचार्य शकर जैसे दिग्गज विद्वान ने बिना शास्त्रीय आधार के वेदान्त दर्शन के भाष्य मे लिख दिया—

अथास्य वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्या श्रोत प्रतिपूरणम् ।

उच्चारणेजिह्वा छेद । धारणे शरीर भेदा ।

अर्थात शूद्र जब वेद सुन ले तो रागा और सीसा पिघला कर उसके कानो मे भर देना चाहिये। यदि वेद का उच्चारण करे तो जीभ काट लेनी चाहिए. और वेद केअनुसार आचरण करे तो शरीर चीर देना चाहिए। किन्तु यह गुत्थी तब मे और भी उलझ गई जब मे राजनीतिक उद्देश्य से अग्रेज ने यह स्थापना की कि आर्य लोग मध्य एशिया से आये, उनसे पहले यहा कोल भील, द्रविड और शूद्र आदि रहते थे। आर्यो से इन आदिवासी जातियो के युद्ध हुए और उनमे आर्यो की जीत हुई। फलत ये जातिया पहाडो और जगलो मे भाग गयी और वही रहने लगी।

अग्रेज ने इस बात को भारतीय इतिहास का एक अग बना कर पठन-पाठन के द्वारा हमारे मस्तिष्क मे बैठा दिया।

अब ऐसी भेड चाल चल गई है कि १०० मे से ९९ प्रतिशत भारतीय यही मानते और कहते हैं कि भारत की ये पिछडी जन-जातिया ही यहा की मूल निवासी है। स्वतन्त्र भारत के सविधान मे उन्हे 'आदिवासी' शब्द से पुकारा गया।

इस समय राजनीतिक और शैक्षणिक चेतना से यह वर्ग कुलबुलाया। भारत की तथाकथित उच्च जातियो मे भी आर्यसमाज की विचारधारा के प्रभाव से तथा राजनीति स्थिति मे भी इनके प्रति सहानुभूति के भाव उत्पन्न हुए। सविधान मे प्रदत्त अधिकारियो से भी एक बहुत बडी प्रेरणा प्राप्त हुई। किन्तु उस मूल की भूल के कारण इन पिछडी जातियो के मन मे एक विद्वेश और प्रतिशोध की भावना भडक गई। आज ९९ प्रतिशत इस वर्ग का व्यक्ति प्रत्येक द्विजाति को अत्याचारी समझता है। उसके मन मे उसके प्रति एक घृणा है और वह बदला लेने के लिए उतावला हो उठता है।

इधर इनको समान स्तर पर लाने के लिए शासन ने इन्हे कुछ सुविधाए प्रदान की—इन सुविधाओ की उपलब्धि से जहा इन पिछडी जातियो के मन मे कृतज्ञता उत्पन्न होनी चाहिए थी वहा और लिप्सा भडक उठी। इस समय सारा वातावरण अशात और क्षुब्ध है। समस्या के समाधान के लिए अनेक उपाय बरते जा रहे है। किंतु किसी का परिणाम सन्तोषप्रद नही है।

इस समस्या का स्वास्थ्य और निर्दोष समाधान महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत किया है। उस समाधान को स्वीकार किए बिना यह अशाति कदापि दूर नही हो सकती तथा सौहार्द और सौमनस्य की भावना उत्पन्न होकर उन्नति की ओर प्रगति नही हो सकती।

ऋषि दयानन्द ने इस बात का युक्ति युक्त निराकरण किया है कि आर्य लोग बाहर से आए है। अगरेज की कूटनीतिक चाल के भारत के लोग शिकार हो गए हैं और गलत दृष्टिकोण स्वीकार करके सर दर्द मोल ले लिया है। आर्यो के बाहर से आने के विषय मे एक भी युक्ति नही है।

बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर श्री 'ऐलफिन्स्टन' अपने भारतीय इतिहास मे लिखते है—

'It is opposed to their (Hindus) foreign origin, in that neither in the code of manu nor beleve in the Vedas, nor in any book that is certainly older than the code (of Manu) is there any allusion to prior residence, or to a knowledge of more tuan the name of any conutry out of india Even mythology goes no further than the Himalyan chain, in which is fixed the habitaien of the God'

—(Hislory of the India Vol. I)

हिन्दुओ के विदेश से आ कर भारत को जीत कर बसने का खण्डन तो इसी बात से हो जाता है कि इस का उल्लेख न तो मन मे किया गया है न मेरे विश्वासानुसारे वेदो मे और नाही मनु से पहले रचे गए किसी अन्य पुस्तक मे भी कुछ लिखा मिलता है कि हिंदू लोग बाहर से आकर भारत मे फैले अथवा बसे है। पुराणगत कथाए भी अपने वर्णनो को और कथाओं को देव की भूमि अर्थात हिमालय पर्वत माला से आगे ले नही जाती।

डा० जे० म्यूर का मत है।

I must, however, begain with a candid admission that. so far as I know, none of the Sanskrit books, not even the most ancient, contain any Distinct reference or allusion to the foreign origina of tce Indians —(original Sanskrit Texts Vol.2)

मैं सरल हृदय मे स्वीकार करता हू कि जहां तक मेरे ज्ञान की पहुंच है, किसी सस्कृत ग्रन्थ के प्राचीनतम पुस्तको मे भी भारतीय आर्यों के विदेशी होने का कोई प्रमाण का उल्लेख अथवा सकेत नही मिलता।

इसी पुस्तक मे एक दूसरे स्थान पर लिखा है कि —

'ऋग्वेद मे जिन दास, दस्यु एवं असुर जैसे नामो का उल्लेख किया

(शेष पृष्ठ ८ पर)

दी पंजाब को-आप्रेटिव बैंक लि०

THE PUNJAB CO-OPERATIVE BANK LTD.

प्रधान कार्यालय : अमृतसर

शाखाएं देहली चांदनी चौक, जालन्धर तथा रोपड़

संचालकों की विज्ञप्ति

भागधरो की सेवा मे

वर्ष १९६८ के काम काज पर सचालको की विज्ञप्ति —

१ इस वर्ष का लाभ रुपए १,०३,२१७/७४ हुआ इसमे रुपए ९१२/८५ पिछले वर्ष से आनीत जोड कर कुल रुपए १,०४,१३०/५९ हुए जिसको सचालक नीचे लिखे अनुसार उपयोग मे लाने की सम्मति देते है—

(क) लाभ का २० प्रतिशत स्थाई कोष (General Reserve) मे Banking Regulation Act 1949 के अनुसार डालना जरूरी है	रु०	२१,०००
(ख) भागधरो को सात प्रतिशत लाभाश	रु०	७०,०००
(ग) आगामी वर्ष को बिना बांटे	रु०	१३,१३०/५९
	रु०	१,०४,१३०/५९

२ इस वर्ष भी रिजर्व बैंक को लाभाश देने की स्वीकृति के लिए लिखा है। सचालको के विचार मे ७ प्रतिशत लाभाश देने मे रिजर्व बैंक को कोई रुकावट नही डालनी चाहिए।

३ आयकर विभाग द्वारा आयकर वर्ष १९६७-६८ तक निर्णय हो चुका है। आयकर का लेखा निपटने पर एक लाख रुपये से ऊपर वापस मिल गया। उच्च न्यायालय चण्डीगढ मे जो अपील की हुई है उसका निर्णय अभी नही हुआ पर जल्दी ही होने की आशा है। जब अपीले मन्जूर होंगी तब एक लाख रुपया और मिलेगा।

४ संचालक वर्ष के कार्यफल आजकल की व्यवस्था को देखते हुए सतोषजनक समझते है और आगे के लिए आशावादी है।

तिथि २९ मार्च, १९६९

जगराज
चिरजीव लाल अग्रवाल
चन्द्र गुप्त
दीनानाथ
} सचालक

Report of the Auditors to the Members of

The Punjab Co-operative Bank Ltd.

AMRITSAR

1. We have audited the annexed Balance Sheet of the Punjab Co-operative Bank Ltd , as at 31st December, 1968 and also the annexed Profit & Loss Account of the Bank for the year ended on that date in which are incorporated audited returns from all branches of the Bank in India visited by us for the purpose of this report.

2. In accordance with provisions of section 29 of the Banking Regulation Act, 1949 read with the proviso to Sub-sections (1) & (2) of section 211 and Sub-section (5) of Section 211 and 227 of the Companies Act, 1956, the Balance Sheet and the Profit & Loss Account are not required to be and are not drawn up in accordance with the Sixth Schedule to the Companies Act, 1956. These are therefore, drawn up in conformity with form, A' and 'B' of the Third Schedule to the Banking Regulation Act, 1949

3. We report that

(a) We have obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit, and have found them to be satisfactory

(b) The transactions of the Bank which have come to our notice have been within the powers of the Bank

(c) In our opinion proper books of account as required by law have kept by the Bank so far as appears from our examination of those books and proper returns adequate for the purpose of our audit have also been received from branches of the Bank

(d) The bank's Balance Sheet and Profit & Loss Account dealt with by this report are in agreement with the books of account and the returns and

(e) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said accounts give the information required by the Companies Act, 1956, in the manner so required for Banking Companies and on such basis the said Balance Sheet, read along with notes appearing thereon, gives a true and fair view of the state of affairs of the Bank as at 31st December, 1968, and the Profit & Loss Account gives a true and fair view of the Profit for the year ended on that date.

1/24, Asaf Ali Road,
New Delhi
Dated 26 March, 1969

V. K. MEHTA & CO.
Chartered Accountants.

THE PUNJAB CO-OPERATIVE

BALANCE SHEET AS

Previous Year's Figures	CAPITAL & LIABILITIES		AMOUNT Rs. P.	TOTAL Rs. P.
	1 Capital			
2500000	Authorised . 50000 Shares of Rs. 50/- each		2500000 00	
1000000	Issued, subscribed and paid up 20000 Shares of Rs 50/- each fully paid up (Including 3890 shares of Rs. 50/- each issued fully paid up as bonus shares)			1000000 00
	2. Reserve Fund & other Reserves			
1027000	(i) General Reserve ..		1040000 00	
45296	(ii) Contingent Reserve .		46794 74	1086794 74
	3 Deposits & other Accounts			
4811377	Fixed Deposits ...		4570411 95	
1033128	Saving Bank Deposits ...		1109348 77	
1488376	Current Accounts and contingency accounts etc. ...		1278040 51	
13628	Employees security deposits ...		13112 48	6970913 71
	4. Borrowing from other Banking companies, Agents etc.			
Nil	In India ...		Nil	
Nil	Outside India ...		Nil	Nil
	Particulars			
Nil	(i) Secured (against pledge of Govt. Securities) ...		Nil	
Nil	(ii) Unsecured ...		Nil	
95663	**5. Bills Payable** ...			125189 03
	6. Bills for Collection being Bills receivable as per contra			
810342	Payable in India ...		867171 26	
Nil	Payable outside India ...		Nil	867171 26
	7 Other Liabilities			
1240	(i) Rebate interest ...		8213 57	
9970	(ii) Dividend unclaimed ...		16539 29	
1513	(iii) Dharmada (Benvolent Fund)		1512 89	
10000	(iv) Gratuity & Pension Fund ...		10000 00	
44874	(v) Investment Depreciation reserve ...		18538 06	
86290	(vi) Provision for bad & doubtful debts ...		Nil	
	(vii) Provision for interest charged on specified accounts or bad & doubtful debts			
14625	as per last balance sheet	16249 03		
	Add Amount transfered from			
1624	contingent Reserve	Nil		
		16249 03		
Nil	Less Written off	1640 78	14608 25	
33800	(viii) Provision for income-tax ...		6719 00	
7396	(ix) Provision for bonus to staff ...		8039 56	84170 62
222627	**8. Acceptances Endorsements and other Obligations as per Contra** ...			172050 00
	9. Profit & Loss Account			
54921	Profit as per last balance sheet ...		65411 32	
	Less Appropriations : ...			
11000	To General Reserve	13000 00		
43008	To Contingent Reserve	1498 47		
Nil	To Dividend	50000 00	64498 47	
913	Balance brought Forward ...		912 85	
64498	Add profit for the year as per the Profit & Loss Account ..		103217 74	104130 59
	10. Contingent Liabilities			
	Guarantees given on behalf of customers (including Rs. Nil on behalf of Directors, Previous year Rs. Nil) Rs. 172050 Previous year Rs. 222627.			
10824180	Total			10410419 95

NOTE :—Previous year's figures have been suitably recast wherever necessary to make them comparable with those of the current year

Certified in terms of our annexed Report of even date.

NEW DELHI
Dated 26th March, 1969

V. K. MEHTA & CO.
Chartered Accountants

BANK LIMITED AMRITSAR.

AT 31ST DECEMBER, 1968

Previous year's	PROPERTY & ASSETS		AMOUNT Rs P.	TOTAL Rs P.
	1. Cash			
973424	In hand and with Reserve Bank and State Bank of India (including foreign currency notes)			663518 2
	2. Balances with other Banks			
	A In Current Accounts			
391024	(i) In India	418283 01		
Nil	(ii) Outside India	Nil	418283 01	
	B. In Deposit Accounts			
1810000	(i) In India	1775000 00		
Nil	(ii) Outside India	Nil	1775000 00	2193283 0
Nil	**3. Money at call & short notice**			Nil
	4. Investments at cost			
1900828	(i) Securities of the Central & State Govts and other Trustee Securities including treasury bills of the Central & State Govts. (Market value Rs. 1910283)		1961211 43	
	(ii) Shares			
7858	(a) Ordinary shares fully paid up	7857 75		
268324	(b) Preference shares fully paid up	185094 19	192951 94	
	Notes (a) Shares on which market quotations are previous year available			
	267154 Book Value	183924 19		
	398307 Market Value	333954 50		
	(b) Shares for which market quotations are not available Book Value	9027 75		
	(Previous year 9027 75)			
Nil	(iii) Debentures or Bonds		Nil	
Nil	(iv) Other investments		Nil	
Nil	(v) Gold		Nil	2154163 37
	5. Advances			
	(a) Loans, Cash Credits & Overdrafts			
3652496	(i) In India		3649965 19	
1	(ii) Outside India		1 00	
	(b) Bills Discounted & purchased (excluding treasury bills of the Central and State Govts.)			
90656	(i) In India		229236 00	
Nil	(ii) Outside India		Nil	3879202 19
	Particulars as per separate schedule attached.			
	6. Bills receivable being Bills for collection as per contra			
810342	(i) Payable in India		867171 26	
Nil	(ii) Outside India		Nil	867171 26
222627	**7. Constituents liabilities for acceptances endorsements and other obligations as per contra**			172050 00
131523	**8. Premises** at cost as per last Balance Sheet		131522 92	
49576	Less depreciation to date		50839 46	80683 46
81947				
45782	**9. Furniture & Fixtures** at cost as per last Balance Sheet		45781 97	
Nil	Additions during the year		18 00	
			45799 97	
35080	Less Depreciation to date		36149 50	9650 47
10702				
	10. Other Assets			
64560	(i) Interest accrued on investment but realised		69303 41	
21106	(ii) Misc. accounts recoverable		21192 52	
2009	(iii) Due from Banks in Liq. and under scheme		Nil	
133173	(iv) Income Tax deducted at source on yield of investments		57957 22	
326	(v) Stamps in hand		235 12	
22994	(vi) Advance payment of Income Tax		Nil	
976	(vii) Advance payment of deposit insurance premium		871 04	
5013	(viii) Compensation due from Govt.		23433 07	172992 38
	11. Non Banking Assets Acquired in Satisfaction of claims			
176820	(i) Land & House property at Cost	174980 39		
2160	Additions during the year	Nil		
178980	Total	174980 39		
4000	Less Sales during the year	111436 02	63544 37	
174980				
177227	(ii) Other assets at cost as per last Balance Sheet	178813 69		
2067	Addition being expenses	Nil		
179294	Total	178813 69		
480	Less sales during the year 5652 45			
178814	Transferred to compensation			
Nil	due from Govt. 18420 00			
Nil	Written off 580 00	24652 45	154161 24	217705 61
10824180	Total			10410419 95

JAG RAJ
CHIRANJIV LAL AGGARWAL
CHANDRA GUPTA
} Directors.

VED PAL SURI

THE PUNJAB CO-OPERATIVE BANK LTD., AMRITSAR.

PROFIT & LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31—12—1968

Previous Year's Figures		EXPENDITURE	AMOUNT Rs.	P.	TOTAL Rs	P.
309899	1	To interest paid on deposits, borrowings etc. ..			288960	31
193123	2	To Salaries & Allowances to staff ...			205291	69
900	3	To Directors & Local Committee member's fee & allowances	1100	00		
6649	4	(a) To Rent, Taxes, Insurance, Lighting etc, Rs. 7187 24				
3921		(b) To Deposit insurance premium 3538 90	10726	14		
3927	5	To Law Charges ..	7006	99		
9078	6	To Postage, Telegrams & Stamps .	11030	84		
900	7	To Auditor's Fee ...	900	00		
2899	8	To Depreciation on and repairs to the Banking company's property ..	2335	43		
7284	9	To Stationery, Printing and Advertisement ..	6227	29	39326	69
11614	10	To Other Expenditure ...			13880	09
Nil	11.	To loss on sale of shares of Tata Iron & Steel Co Ltd, of an earlier year appropriated to investment Depreciation Reserve as per contra. ...			13106	25
41898	12	To Loss on sale of Shares of Tata Iron & Steel Co. Ltd. of an earlier year appropriated to Contingent Reserve as per contra. ..			Nil	
12000	13.	To Provision for Bad and Doubtful debts ...			Nil	
	14	To Assets written off .				
41347		(i) Pakistan Cash and Bank Balances etc. .	Nil			
6370		(ii) Other Advances ...	10649	87	10649	87
7375	15.	To Provision for Payment of Bonus ...			8000	00
33370	16	To Provision for Income Tax ...			Nil	
64498	17.	To Balance of Profit ...			103217	74
		Particulars of the remuneration paid to the General Manager during 1968				
		9000 (i) Salaries 9000 00				
		Nil (ii) Allowances Nil				
		Nil (iii) Sitting fees Nil				
		360 (iv) Bonus 360 00				
		562 (v) Employers contribution to provident fund, pension fund or any other superannuation Fund 562 44				
		Nil (vi) Payment by way of gratuities pensions or otherwise, in excess of employer's contribution and interest thereon Nil				
		720 (vii) The monetary value of any other benefits or prequisites 720 00				
		10642 10642 44				
757052		Total			682432	64

Previous Year's Figures		INCOME	AMOUNT Rs	P	TOTAL Rs	P.
	1	By Interest and Discount				
462120		(a) Interest and discount .	452606	75		
78949		(b) Interest on Govt Securities ...	75116	69	527723	44
36614	2	By Commission Exchange & Brokerage ..			41225	52
8560	3.	By Rent ...			8682	59
500	4.	By net profit on sale of investment, gold and silver, land premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account)			Nil	
Nil	5.	By net profit on revaluation of investment, gold and silver, land, premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account) ...			Nil	
	6	By income from non-banking assets and profit from sale of or dealing with such assets ...				
4012		(a) Rent on property .	5358	44		
86		(b) Income from agricultural land	477	80		
Nil		(c) Profit on sale of property ..	16487	71	22323	95
	7.	By other Receipts				
8162		(a) Miscellaneous earnings .	8775	46		
73644		(b) Dividend on shares	54070	50		
1160		(c) Written off bad debts realised .	250	00		
		(d) Transferes from				
41898		Contingent Reserve being loss on sale of shares as per contra ..	Nil			
Nil		Provisions for Bad & Doubtful debts written back ..	1274	93		
41347		Pakistan Deposits (Lahore Branch) ...	Nil			
Nil		Investment Depreciation reserve as per contra .	13106	25		
Nil		(e) Refund of capital Gains Malwa Ginning & pressing Co Ltd ..	5000	00	82477	14
757052		Total			682432	64

THE PUNJAB CO-OPERATIVE BANK LIMITED, AMRITSAR

Schedule of Particulars of advances required by the Banking Regulation Act, 1949 (Act X of 1949) attached to and forming part of Balance Sheet as on 31st December, 1968.

Previous Year's Figures			Loans, Advances, Cash Credits and overdrafts	Rs.	P
3147146	(i)	Debts considered good in respect of which the bank is fully secured ..		3351350	08
596006	(ii)	Debts considered good, for which the bank holds no other security than the debtor's personal security. ...		527852	11
Nil	(iii)	Debts considered good, secured by the personal liabilities of one or more parties in addition to the personal security of the debtors .		Nil	
Nil	(iv)	Debts considered doubtful or bad not provided for .		Nil	
3743152					
Nil	(v)	Debts due by Directors or Officers of the bank or any of them either severally or jointly with any other person. ...	Nil		
Nil	(vi)	Debts due by companies or firms in which the Directors of the bank are interested as directors, partners or managing agents or in the case of private companies, as members	Nil		
Nil	(vii)	Maximum total amount of advances including temporary advances made at any time during the year to Directors or Managers or Officers of the bank or any of them either severally or jointly with any other persons ..	Nil		
Nil	(viii)	Maximum total amount of advances including temporary advances, granted during the year to the companies or firms in which the directors of the Bank are interested as Directors, Partners or managing agents or in the case of private companies as members	Nil		

विचित्रता ही ससार है। वास्तव मे यह ससार है क्या ? क्या जीवो का मरना और जीना ही इसके अन्दर आते है ? परन्तु यह बात नही। इस भेद को जानने के लिए बौद्धिक ज्ञान की आवश्यकता है जिसको प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। जब बच्चा इस ससार मे प्रवेश करता है तो उस समय वह सब प्रकार के इन सासारिक बन्धनो से दूर होता है। उसकी पवित्र और सुकोमल भावनाए होती हैं। उसका जीवन एक कच्चे घडे की तरह कोमल होता है। जिसको जिस रूप मे चाहे बदला जा सकता है।

मनुष्य का जीवन क्या है ? क्या इस ससार मे कुछ समय रह कर, भोग-विलास का आनन्द लेकर नि सहाय मनुष्यो को तग करके स्वर्ग सिधार जाना ही उसके जीवन का लक्ष्य है। ज्यो-ज्यो मनुष्य वृद्धि को प्राप्त करता है त्यो-त्यो उसका जीवन अधिक सघर्षमय और कठोर जटिल बनता जाता है। जो मानव इस सघर्षमय जीवन को खुशी से स्वीकार कर उन सघर्षो से लडने की ताकत एव क्षमता रखता है। वही सच्चे शब्दो मे मानव है। मनुष्य की भावनाए कोई जन्म-जात तो होती नही। ज्यो-ज्यो वह इस जीवन मे बढता जाता है और सासारिक मोह माया के लिए आकर्षित होता है। त्यो-त्यो उसकी भावनाए उसी ढाचे मे ढल जाती है। भावनाओ के सम्बन्ध मे तो यह लोकोक्ति चरितार्थ होती है कि 'खरबूजे को देख कर खरबूजा रग बदलता है।' अर्थात् जिस प्रकार का मानव स्वय को निर्मित करना चाहता है उसी प्रकार की भावनाए उसके सामने आकर उपस्थित हो जाती हैं।

मानव की प्रवृत्तियो पर वातावरण का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। जिस प्रकार के वातावरण मे बच्चे का पालन-पोषण किया जाता है, तो यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, कि बच्चा भी वैसा ही बन जाता है। यद्यपि बच्चे मे जन्मजात कोई भी हिंसक प्रवृति नही होती लेकिन जब वह अपने परिवार के सदस्यो को हिंसक भावनाओ मे युक्त देखता है तो वह भी हिंसक बन जाता है। आधुनिक युग में तो यह हिंसात्मकता की प्रवृति मानव-मन मे सहसा ही आ जाती है। यही कारण है कि

मानव दानव बन गया है

(श्री विश्वमित्र चड्डा किल। जालन्धर)

आज का मानव-मानव नहीं बल्कि दानव बन गया है। दानव का अर्थ है—राक्षस। सचमुच ही आधुनिक मानव मे मानवता के स्थान पर दानवता आ रही है।

आधुनिक मानव का मन दया करुण कोमलता पवित्रता और सहनशीलता के भावो से कोसो दूर है। जबकि मानव मे दया करुण और पवित्रता जैसी भावनाए ही नही रही तो वह मानव ही क्या ? वह वास्तव मे दानव ही है।

जिन अन्त करणो मे दया और करुण जैसी भावनाए नही पनपती वे दिल, दिल नही पत्थर है। पत्थर पर जितना भी जल डालो, वह अपनी पूर्व स्थिति मे ही दृष्टिगोचर होताहै। उसी प्रकार दयारहित मानव का मन चाहे कितने ही दुखियो को देखे, परन्तु वैसे का वैसा ही निष्ठुर रहता है। जब तक मानव मन मे समानता की भावना नही पनपती तब तक उस से मानव के प्रति प्रेम देखना व्यर्थ है। नेहरू जी भी आरम्भ मे यह अनुभव करते थे कि भारत मे यदि किसी महत्पूर्ण तत्व का अभाव रहा है, तो वह है समानता का तत्व। १९२९ मे लाहौर काग्रेस के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए उन्होने कहा था 'यद्यपि भारत एक स्थिर समाज के विकास मे बहुत सीमा तक सफल रहा है, तथापि वह एक महत्वपूर्ण दिशा मे बुरी तरह असफल रहा, जिसके कारण उसका पतन हुआ तथा वह अभी तक उसी अवस्था मे है। भारत इस समस्या कोई हल नहीं ढूढा। भारत ने जानबूझ कर उसकी उपेक्षा की तथा उसन अपना सामाजिक ढाचा असमानता पर खडा किया। इसका भयकर परिणाम हमारे सामने है। हमारे देश के करोडो लोग घुटन की अवस्था मे जीते है तथा उन्हे विकास का कोई अवसर नही मिलता।

इस असमानता के अतिरिक्त शायद निर्धनता भी मानव की इस दानव प्रवृति का एक मूलभूत कारण हो सकती है, क्योकि भारत मे फैली हुई निर्धनता ही मानव को हिंसक कार्य करने को प्रेरित करती है। मानव को विवश होकर ही इस हिंसक भावनाओ को अपनाना पडता है। यह विश्वास घाती पेट भरने के लिए मानव को न जाने क्या कुछ करना पडता है। झूठ बोलना पडता है, चोरी करनी पडती है परन्तु चाहे कुछ भी है। फिर भी मानव वास्तव मे मानव ही है। उसके मन मे तो ऐसी दूषित भावनाए नही होनी चाहिए। मानव के मन मे परोपकार की भावना तो इस प्रकार लोप हो गई है जिस प्रकार कि जल मे बुलबुला उठता है और मिट जाता है। मानव को इस बात का बिल्कुल ध्यान नही रहता कि यह जीवन क्षण भगुरता और अनित्यता के लिए हुए हैं। अगर इस क्षणिक जीवन मे वह उत्तम कर्म करे तो उसका नाम सितारे की भाति चमकने लगेगा परन्तु पता नही उसके मन मे ऐसी हिंसक भावनाए कैसे घर कर गई है जो कि करोड चेष्टाए करने पर भी दूर नही होती। अखबारो मे प्रतिदिन पढने मे आता है कि एक मानव ने दूसरे मानव की हत्या कर दी। यही है वास्तव मे दानवता की प्रवृति। यह दानवता की भावना मनुष्य के अन्त करण मे तब तक नही मिट सकती जब तक कि मानव-मन परोपकार की भावना से दूर है।

आवश्यकता है

गुरुकुल विद्यालय आश्रम मे ब्रह्मचारियो के साथ रहने के लिए शिक्षित आर्य समाजी अधिष्ठाताओ की आवश्यकता है। आयु लगभग ४० वर्ष हो। अल्प पारिश्रमिक के अतिरिक्त आवास तथा भोजन निशुल्क होगा। इच्छुक व्यक्ति शीघ्र आवेदन करे।

आचार्य गुरुकुल कागडी
महारनपुर (उत्तर प्रदेश)

वर की आवश्यकता

आर्य परिवार की एम ए मे पढ रही ब्राह्मण कन्या के लिए सुशिक्षित सुन्दर व स्वस्थ, तथा कार्य पर लगे ब्राह्मण वर की आवश्यकता है। फोटो सहित निम्न पते पर पत्र-व्यवहार कीजिये।

मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
निकट जिला कचहरी
जालन्धर शहर

तुम आज मेरे सग हंस लो !

श्री द्वारकादास 'रहेला'

★ मास्टर—राम आज तुम नहा कर क्यो नही आए ?

राम—मास्टर जी मै गरीब हू।

★ एक मनुष्य किसी मित्र के यहा खाना खाने के लिए गया। उस मनुष्य ने खूब पेट भर कर खाना खाया। कुछ देर बाद उसके पेट मे दर्द होने लगा। वह डाक्टर के पास गया और बोला कि मेरे पेट मे दर्द हो रहा है। तब डाक्टर ने उसे दवाई दी और कहा कि यह दवाई अभी खा लो। इस पर उस मनुष्य ने कहा कि अगर दवाई खाने के लिए पेट मे स्थान होता तो थोडा खाना और न खा लेता।

★ एक बार एक अनपढ व्यक्ति तृतीय श्रेणी का टिकट लेकर गाडी के प्रथम श्रेणी के डिब्बे मे बैठ गया। गाडी अभी चली ही थी कि टिकट निरीक्षक देखने के लिए उसी डिब्बे मे आ गया। निरीक्षक ने उस व्यक्ति से टिकट मागा। टिकट देखकर निरीक्षक ने कहा कि आपका टिकट तो तृतीय श्रेणी का है। और सफर प्रथम श्रेणी मे कर रहे है। इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि क्या यह डिब्बा उस तृतीय श्रेणी के डिब्बे से पहले पहुच जाएगा। तब निरीक्षक ने कहा कि नही इस डिब्बे मे लचकदार सोफे लगे हुए है तब उस उस व्यक्ति ने सोफे को उठाकर दूर रख दिया और बोला अब तो खुश हो।

उत्तम परीक्षा परिणाम

वेद कौर आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कादिया जि० गुरदासपुर का परीक्षा परिणाम इस वर्ष भी अति उत्तम रहा। परीक्षा परिणाम ८९.३% आया।

मिडिल परीक्षा का परिणाम भी अति उत्तम रहा। स्कूल की एक छात्रा ने ४९९ अक प्राप्त करके छात्रवृत्ति प्राप्त की।

इसका श्रेय माननीया प्रिंसीपल महोदया तथा स्कूल के अनुभवी स्टाफ को है। —व्यवस्थापक

सामयिक समस्याएं

(पृष्ठ २ का शेष)

गया है, उन्हे भी इस धारणा से समझने का यत्न किया कि शायद ये सब अनार्यमूलक अर्थात् आदिम जातियो के लिये ही प्रयुक्त हुये हो। पर मुझे कोई इस प्रकार का प्रमाण या सकेत नही मिला।'

तो आज की आधी उलझन तो इसी बात से सुलझ जाती है कि यहा की पुरानी जातिया यही की रहने वाली हैं। इन मे कोई बाहर से नही आया।

इसके आगे आधी बात रह जाती है नीच-ऊच की। वेद में इसका कुछ मत्र भी उल्लेख नही है। वेद में आर्य की दृष्टि से मानव

★ चालाकी और तर्क से प्रभु दूर रहते हैं।

★ जो सच्चे मन से उस प्रभु को चाहेगा, उसे वे अवश्य मिलेंगे, नकल से वे बहुत अप्रसन्न होते हैं।

★ विश्वास रखना चाहिए कि प्रभु हमारी रक्षा करेंगे ही।

समाज को चार वर्णों में विभक्त किया है। उसमे कोई छोटा बड़ा नहीं है। सब का सुख-दुःख समान है। महत्ता है तो उपयोगिता की दृष्टि से किसी अग को मानी गई है, अन्यथा नहीं।

आज राष्ट्र की इस समस्या का समाधान ऋषि दयानन्द के प्रकाश मे करना चाहिये। इसके [illegible] और कोई मार्ग नहीं है।

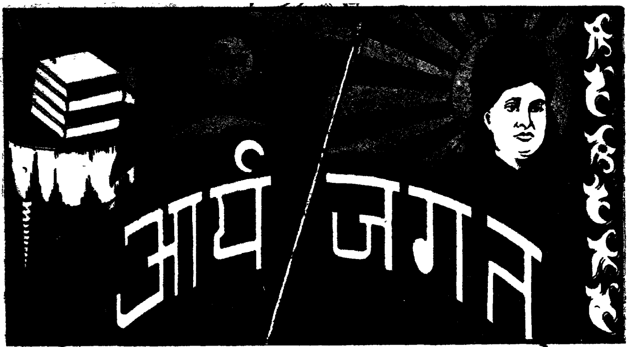
[illegible] आर्य सभा अमृतसर का वार्षिक चुनाव

८—६—६९ रविवार को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द में केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की एक साधारण बैठक आयोजित की गई। जिस मे श्री धर्मपाल जी बी० ए० को प्रधान निर्वाचित किया गया। तथा बाकी [illegible] सभा [illegible] उन्हे सौंप दिया [illegible] उन्होंने उसी समय निम्नलिखित पदाधिकारी घोषित कर दिये—

१. मन्त्री ला० नन्द किशोर जी एम० ए०। २ कोषाध्यक्ष श्री रामकिशन जी खोसला। ३ आय व्यय निरीक्षक ला० [illegible]दास जी।

—नन्द किशोर मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P.

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २६) १६ आषाढ़ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२९ जून १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

धाता दधातु नो रयिम्

अर्थ : धाता—वह विधाता भगवान दधातु—प्रदान करें नः-हमें रयिम-धन ऐश्वर्य आदि को।

भाव : प्रभुदेव आप धाता विधाता हैं। सारे विश्व के आप ही धारक विधारक है। ऐसी कृपा करो कि हम धन वाले बनें जीवन यात्रा में काम आने वाले तमाम पदार्थ हमें प्राप्त हो स्वास्थ्य का धन, विचार का धन, चरित्र का धन, ज्ञान-विज्ञान आदि का नानाविध धन हमें चाहिए। आप सारे ऐश्वर्य के स्वामी हैं। आप ही सबके भंडार हैं। महादानीहैं कृपा करो-कि आपकी दया से हमें सब प्रकार का धन सब प्रकार से जीवन में मिलता रहे। हम सम्पत्तियों से मालामाल बने रहें। धन में खेलते रहें। —सं.

वे दा मृ त

हम प्रकाशमान् बनें

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि । स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम्॥

अथर्व वेद कांड १७-१-२०

अर्थ :—हे प्रभो ! आप (शुक्र :) शुद्ध निर्मल (असि) हैं आप (भ्राज :) प्रकाशमान (असि) हैं (स :) वह (यथा) जैसे (त्वम्) आप (भ्राजता) प्रकाशमान के साथ (भ्राज :)प्रकाशमान (असि) हैं (एव अहं) वैसे मैं भी (भ्राजता) प्रकाशमान के साथ (भ्राज्यासम्) प्रकाशमान बन जाऊं॥

भाव यह है

प्रभुदेव ! आप प्रकाश के भण्डार हैं। विश्व के तमाम चमकने वाले सूर्यादि पदार्थों में जितना भी प्रकाश है। यह सारा आपका ही दिया है। आप प्रकाश के केन्द्र हैं। हम भी आपके बच्चे-बच्चियां हैं। आपके सम्पर्क में रहते हुये हम भी प्रकाश को प्राप्त करते रहें। आपकी कृपा से ही तो हमारे जीवन में हर प्रकार के आचार-विचार की ज्योति मिलती जाएगी। प्रकाश के भण्डार से ही तो हमें ज्योति मिलेगी। कृपा करें। हमारे जीवन में समय-समय पर आकर अन्धकार आकर हमें विपत्तियों में फंसा लेता है। पिता जी ! अपने प्रकाश से हमारे जीवन में भी चमक पैदा कर देवें। —सं.

ऋषि दर्शन

तस्य वाचकः प्रणवः

अर्थ :—तस्य उस परमेश्वर का वाचक:-नाम प्रणव:—ओ३म् है। प्रभु का सर्वोत्तम नाम ओ३महै। बाकी नाम गौण हैं।

भाव :—योग दर्शनके लिखने वाले मुनिवर पतंजलि ने अपने शास्त्र योग-दर्शन में इस सूत्र में एक बहुत उत्तम सन्देश देते हुए कहा है कि भगवान के अनेक नाम हैं। नामों में इन्द्र, विष्णु, प्रजापति, हर आदि नाम ठीक हैं। किंतु परमेश्वर का मुख्य नाम प्रणव है, ओ३म है। इस का स्थान और कोई नाम नहीं ले सकता। सारे शास्त्रों में ओ३म जाप का विधान आता है। ओ३म नाम सर्वोत्तम है। इसका अर्थ बड़ा विशाल तथा महत्व भरा है। —सं.

यो ग द र्श न से

[illegible]काता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०(सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोलचन्द्र शास्त्री

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, २९ जून, १९६९ [अंक २५

समाज के दो घातक रोग

माननीय प्रिंसिपल रलाराम जी एम ए. होश्यारपुर जहा माने हुए शिक्षा शास्त्री है, वहा बहुत बडे स्वाध्यायशील और गम्भीर चिन्तन मनन करने वाले भी है। उनके प्रवचनो एव लेखो मे चिन्तन का भण्डार भरा होता है। आर्यजगत् मे कभी कभी अपने चिन्तन के मधु भण्डार मे से कुछ लेख के रूप में भेजने की कृपा करते रहते है। गत आर्यजगत् के अक मे आप ने अपने लेख मे इस समय के समाज के दो घातक रोगो की बडी ही गम्भीरता मे चर्चा की है। ये दोनो महारोग सारे समाज के विशाल शरीर को अन्दर ही अन्दर बुरी तरह खोखला बनाते चले जा रहे है। प्रतिदिन समाज इन के कारण गिरता चला जाता है। यदि सोसायटी के हित चिन्तको ने इस की ओर तत्काल ध्यान न दिया तो देखते-देखते सारा समाज सर्वथा खोखला हो कर रह जायगा। इन रोगो ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे अपना जोरदार चहुमुखी आक्रमण कर रखा है। यह एक तथ्य है कि जितना भय सारे समाज को इन दोनो घातक रोगो से है उतना बाहिर के विदेशी आक्रमण से नही है।

समाज के ये दो घातक रोग कौन से हैं? ये है धन की कोई लिप्सा या इससे खुले रूप मे पैदा होने वाली बुराईया जोकि अनाचार तथा शराब आदि का बहुरूप बनाकर समाज को गिरावट के गहरे गर्त्त मे गिरा देती हैं। तपोमूर्ति प० रलाराम जी प्रिंसिपल का यह लेख इतना अच्छा व भाव भरा है कि दिल चाहता है कि इस लेख को हजारो की प्रतियो मे अलग कई भाषाओ मे छपवा कर जनता के हाथो मे पहुचाया जाये। अपने लेख मे लिखते है—

समाज की नीव धर्म है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नही। धर्म वह सीमेंट है जोकि समाज के भव्यभवन मे लगी ईंटो को परस्पर जोडने का काम करता है...आर्थिक वाद एक खोखला सिद्धान्त है। धन का प्रभुत्व सदैव दुराचार, स्वार्थ तथा अनीति की राह पर ले जाता है...अधर्म से सचित धन कायरता पैदा करता है। इसलिए जब भी देश मे सकट पैदा होता है तो धनी लोग भाग जाने का मार्ग प्रदर्शन सबसे पहले करते है... आज के भारत मे धन संचय जीवन का लक्ष्य बन गया है...विवाह उत्सवो पर इसी कारण प्रदर्शन व नुमायश बहुत बढ गई है। निर्धन व मध्यम वर्ग के लिए एक अभिशाप बन गई है। दहेज की सीमा नही। मुह फाड कर लोग लेते है। बाराते सेनाओ का रूप धारण कर रही हैं। आतिश बाजी फिर आ गई है। निराशा की बात यह है कि कल के सुधारक आज फजूल खर्ची के अग्रगण्य नेता बन गए है। सुधार व सुनीति का पक्ष लेने वाली कोई सस्था ही नजर नही आती। भोगविलास का भवन दो स्तम्भो पर खडा है—मद्य और मैथुन। शराब का प्रचार हमारे समाज मे तेजी से हो रहा है। पश्चिमी क्लब—जीवन के आदर्श हमे पराभूत कर रहे हैं। अध्यापक, विद्यार्थी तथा स्त्रिया अब भारी सख्या मे शराबियो की पक्ति मे खडे हो गए है। राष्ट्र के लिए मद्यपान तथा धन और धनी की पूजा' हमारे दो शत्रु हैं...' इन समाज के दो रोगो को समाप्त करने की किसे चिन्ता है? सारे समाज को कितना बडा चैलेञ्ज है। इसे तो स्वीकारना ही होगा। धर्म का आधार बहुत निर्बल होता जा रहा है। शराब का तो इतना प्रचार हो रहा है कि प्रभु ही बचा सकते हैं। शराब पीना सभ्यता का एक मुख्य अग बनता जा रहा है। प्रान्तीय सरकारे सरकारे भी जनता के लिए स्थान २ पर शराब के खुले ठेके खोल कर उन से करोडो रुपये कमा रही हैं। शराब पिला कर आय को बढाना दुर्भाग्य की निशानी है। विवाहो मे, समारोहों तथा अन्य ऐसे कार्यों मे शराब का खुला प्रचार है। भंगडा डालते समय शराब के प्रयोग की नदियां चलती हैं। लडकिया-लडके नगे रूप मे भगडा डालते हैं। धन ही सभी कुछ बन गया है। बडे से बडा विद्वान्, सदाचारी यदि धनहीन है तो समाज में घृणा से देखा जाता है। धन की पूजा होती है। धन धर्म पर सवार हो गया है। आर्य समाज इसी प्रवाह को रोकने के लिए पैदा हुआ है। आर्यसमाज इस दिशा मे विशेष सक्रिय हो। जनता समाज के साथ हो जाएगी।

—त्रिलोकचन्द्र

शानदार परीक्षा परिणाम

आर्यसमाज का विशाल डी ए वी परिवार पजाब विश्वविद्यालय की परीक्षाओं मे अपनी पुरानी शानदार परम्परा के अनुसार फिर कमाल कर गया। चारो ओर डी ए वी सस्थाओ को बधाई एव साधुवाद मिल रहा है। मिले भी क्यो न? तप और परिश्रम का फल तो मिलता ही है। इस समय भिन्न-भिन्न परीक्षाओ के परिणाम निकल चुके है, और भी घोषित हो रहे हैं। उनमे स्कूलो मे डी ए वी सस्थाओ सैकण्ड्री स्कूल एव डी०ए०वी० स्कूल अमृतसर व साईदास स्कूल जालन्धर ने कमाल करके रख दिया है। मैरिट लिस्ट मे सभी जगह डी ए वी ही दिखाई देता है। छात्रवृत्तियो की भी यही भरमार है।

यही बात डी०ए०वी० कालेजो के बारे मे कही जा सकती है। प्रतिकी भाति इस वर्ष भी अब तक जितने परिणाम सामने आये हैं उन मे हमारा डी ए वी कालेज जालन्धर बहुत ऊचा स्थान ले गया है। कई-कई विषयो में तो सारे विश्वविद्यालय मे सर्वप्रथम इसी के छात्र आये हैं। इसी प्रकार अमृतसर, चण्डीगढ, हिसार के अपने डी. ए. वी. कालेजों की बात है। ऐसा प्रतीत होता है कि तीनो प्रान्तो मे डी. ए. वी. के सिवाय और कोई कालेज ही नही है। सरकारी कालेजो का तो नाम तक नही। न ही सरकारी स्कूलो की कही चर्चा ही है। डी ए वी. परिवार की बुनियाद तप-त्याग-सेवा परिश्रम पर रखी है। उसी निष्ठा को लेकर यह विशाल परिवार सदा चलता जाता है। इस परिवार ने सारे देश को स्वाधीनता संग्राम के सेनानी, बलिदानी दिये बडे बडे वैज्ञानिक दिये, शिक्षा-शास्त्री तथा प्रसिद्ध राजनीति के नेता दिए क्या कुछ नही दिया—सभी क्षेत्र मे सब कुछ दिया। तथ्य तो यह है कि हमारे इन शिक्षा मन्दिरो में नाच-गान ही या अर्धनग्न रूप का सास्कृतिक कार्यक्रम नहीं होता रहता—वरन् जीवन का पाठ पढाने का कार्यक्रम होता है, राष्ट्र सेवा का व्रत एव आचार की दीक्षा का व्रत दिया जाता है। पढाई में तो इतना परिश्रम होता है कि कुछ पूछिए नही माननीय आचार्य लोग दिन-रात देव दयानन्द के पवित्र नाम की इन संस्थाओ मे बैठे हुए अपना सभी कुछ इनकी उन्नति मे लगाए हुए हैं। सरकार की दृष्टि इन पर टेढी रहती है—फिर भी परिणामो पर सरकार की आखे भी झुक जाती होगी हम इन शानदार परिणामो पर अपने माननीय आचार्यो तथा सारे सहयोगियो को बधाई देते है। प्रभु कृपा उनके द्वारा समाज का नाम बडा ऊचा है!

सभा का ध्यान रखें

शरीर मे जो स्थान अगो का है वह स्थान आर्य समाजो व सभा से सम्बद्ध सस्थाओ का है तथा जो महत्व आत्मा को प्राप्त है, वही सभा का है। आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर अपने धर्म प्रचार के कार्य क्षेत्र मे पुराने समय से काम कर रही है। यह केन्द्र का रूप रखती है। हम सारे समाजो एव इससे सम्बन्धित परिवारी सज्जनो व अन्यो से प्रार्थना करते है कि प्रत्येक अवस्था मे अपने इस केन्द्र का सदा पूरा-पूरा ध्यान रखे। इतना विशाल इसका परिवार हो, सम्पन्न सहयोगी हो विराट सस्थाए हो, फिर हमारी सभा आर्थिक रूप से पीछे हो। इस केन्द्र को धन का सहयोग देकर भर दे। ईसाईयो का मुकाबिला कोरी बातो मे नही होगा। धन से सभा को मालामाल कर दे।

—स०

★ एक जून, १९६९ से देश भर मे चेचक का टीका लगाने की एक नई विधि इस्तेमाल की जाने लगेगी। इस नई विधि मे ऐसी सुई काम मे लाई जाएगी, जिसकी नोक दो हिस्सो मे चिरी होगी। यहविधि अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी है। इस मे टीके की दवा कम खर्च होगी तथा दर्द भी कम होगा।

BARI DOAB BANK LIMITED

Registered Office :

Gowshala Bazar, HOSHIARPUR

Subscribed and paid up Capital	Rs. 2,00,000
Reserves	Rs. 11,15,000

FIFTY FOURTH REPORT BY THE DIRECTORS

The Directors beg to submit to the shareholders the Balance Sheet and Profit & Loss Account of the Bank for the year ended 31st December, 1968 together with the Auditors Report.

The net profit for the year amounts to Rs. 1,35,849·70 which with Rs. 1,74,411·70 brought from the previous year, makes a total Rs. 3,10,261·40 available for disposal.

The Directors recommended the amount to be disposed of as under :—

To Statutory Reserve Fund	...	80,000 00
To Dividend @ 16% p. a.	...	32,000 00
To provision for Income tax	...	50,000 00
To Dharmada	...	1,000 00
To carry forward	...	1,47,261 40
Total	...	3,10,261 40

To payment of dividend proposed is subject to the sanction of the Reserve Bank of India.

The Bank's business continued to function satisfactorily

HOSHIARPUR
25th March, 1969.

JAS RAJ
SHAM SINGH } Directors
JANAK RAJ

Report of the Auditors to the Shareholders of

BARI DOAB BANK LIMITED

HOSHIARPUR

We have audited the foregoing Balance Sheet of Bari Doab Bank Limited, Hoshiarpur as at 31st December, 1968, and also the foregoing Profit & Loss Account of the Bank for the year ended upon that date.

In accordance with the provision of Section 29 of the Banking Regulation Act, 1949, read with the provisos to sub-section (1) and (2) of section 211 and sub-section (5) of Section 211 and 227 of the companies Act, 1956, the Balance-Sheet and Profit & Loss Account are not required to be and are not drawn up in accordance with the Sixth Schedule to the Companies Act, 1956, they are, therefore, drawn up in conformity with Forms A and B of the Third Schedule to Banking Regulation Act, 1949.

We report that :—

(a) We have obtained all the information and explanations which, to the best of our knowledge and belief, were necessary for the purpose of our audit and have found them to be satisfactory.

(b) The transactions of the Bank which have come to our notice have been within the powers of the Bank.

(c) In our opinion proper books of accounts as required by law have been kept by the Bank so far as appears from examination of those books.

(d) The Bank has got no branch.

(e) The Bank's Balance-Sheet and Profit & Loss Account dealt with by this report are in aggreement with the books of accounts.

(f) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said accounts give the information required by the Companies Act, 1956, in the manner so required for banking Companies and on such basis the said Balance-Sheet give a true and fair view of the state of the bank as at 31st December, 1968 and the Profit & Loss Account gives a true and fair view of the Profit for the year ended upon that date.

NEW DELHI
23rd March 1969

SODHBANS & Co
Chartered Accountants

Bari Doab Bank Limited, Hoshiarpur.

Schedule of Particulars required by the Banking Regulation Act, 1949 (Act X of 1949) attached and forming part of Balance Sheet as on 31st December, 1968.

31-12-1967 Rs.		Loan, Advances Cash, Credits and Overdrafts	
	Particulars of Advances :		
12,89,712	(i) Debts considered good in respect of which the bank is fully secured.		12,27,190 06
12,277	(ii) Debts considered good for which the bank holds no other security than the debtor's personal security. ...		11,731 88
Nil	(iii) Debts considered good, secured by the personal liabilities of one or more parties in addition to the personal security of the Debtors. ...	Nil	Nil
Nil	(iv) Debts considered doubtful or bad, not provided for	Nil	Nil
Nil	(v) Debts due by directors or officers of the Bank or any of them either severally or jointly with any other person.	Nil	Nil
Nil	(vi) Debts due by companies or firms in which the directors of the bank are interested as directors, partners, or managing agents or in the case of private companies as members. ...	Nil	Nil
Nil	(vii) Maximum total amount of loans, including temporary advances made at any time during the year to directors or managers or officers of the Company or any of them either severally or jointly with any other person. ...	Nil	Nil
Nil	(viii) Maximum total amount of loans, including temporary advances granted during the year to the companies or firms in which the directors of the Bank are interested as directors, partners or managing agents, or in the case of the private companies as members. ...	Nil	Nil
Nil	(ix) Due from Banking companies.	Nil	Nil
13,01,989	TOTAL ...		12,38 921 94

SODHBANS & Co.
Chartered Accountants

HARI CHAND PATHAK
Manager,

JAS RAJ
SHAM SINGH } Directors.
JANAK RAJ

BARI DOAB BANK

BALANCE SHEET AS

31-12-67 Rs	CAPITAL & LIABILITIES	Rs.	P.	Rs.	P.	Rs.	P.
	1. Capital						
(2,00,000)	Authorised Capital, 4000 equity shares of Rs. 50 each ...					2,00,000	00
	Issued, Subscribed and paid up Capital						
2,00 000	4000 equity Shares of Rs. 50 each fully paid up ...					2,00,000	00
10 35 000	**2. Reserves**					11,15,000	00
	3. Deposits and other Accounts :						
15,05,424	Fixed Deposits ...			15,63,930	80		
4,23,036	Saving Bank Deposits ...			4,33,434	78		
4,08,943	Current accounts, Contingency accounts etc. ...			5,21,495	53		
1 000	Employee's Security Deposit			2,000	00	25,20,861	11
23,38,403							
	4. Borrowing from Banking Companies, agents etc. ...					Nil	
—	**5. Bills payable** ...					Nil	
[illegible]	**6. Bills for Collection being bills receivable as per contra** ...					Nil	
	7. Other Liabilities						
	Provision for Income-tax						
1,10,999	Balance as per last Balance Sheet	86,076	94				
58 000	Additions during the year	60,000	00				
1,68,999		1,46,076	94				
82 922	Less Income-tax paid	57,802	75	88,274	19		
86,077							
9,063	Dharmada ...			9,328	56		
354	Dividend unpaid ...			501	99	98,104	74
95,494							
—	**8 Acceptances, endorsements and other obligations as per contra** ...					Nil	
	9 Profit and Loss Accounts .						
3,55,327	Balance as per Balance Sheet as at 31st December, 1967 ...			3,47,411	70		
	Less appropriations :						
70 000	To Statutory Reserve	80,000	00				
32 000	,, Dividend	32,000	00				
1,000	,, Dharmada	1,000	00				
58,000	,, Provision for Income-tax	60,000	00	1,73,000	00		
1,61 000							
1,94 327				1,74,411	70		
1 53 085	Add Profit for the year ended 31-12-1968 ...			1,35,849	70	3,10,261	40
3,47 412							
	10 Contingent Liabilities :						
(10,300)	On Partly Paid Shares Rs. 9,050						
40,17,981	TOTAL					42,44,227	25

LIMITED, HOSHIARPUR

ON 31ST DECEMBER, 1968

31-12-67 Rs.	PROPERTY & ASSETS			Rs. P.	Rs. P.
	1. Cash				
1,01,874	In hand & with Reserve Bank & State Bank of India (including foreign currency notes) ...				1,55,657 34
	2. Balance with other Banks				
	(a) In India				
12,797	(i) On current account ...			20,300 13	
13,26,000	(ii) On deposit account (including Rs. 2000/- on account of Employee's Security Deposit) ...			13,52,000 00	
—	(b) Outside India .			Nil	13,72,000 13
13,38,797					
—	**3. Money at call and short notice** ...				Nil
	4 Investments at cost below market value				
8,30,621	(a) Securities of the Central and the State Governments			10,03,897 69	
—	(b) Shares—Preference (fully paid up)			Nil	
2,31,816	Ordinary (fully paid up)			2,30,065 46	
22,944	Ordinary (partly paid up)			20,785 61	
—	(c) Debentures or Bonds			Nil	
—	(d) Other investments			Nil	
—	(e) Gold ...			Nil	12,54,748 76
10,85,381					
	5. Advances (Other than bad and doubtful debts for which Provisions has been made to the satisfaction of the auditors)				
	(a) Loans, Cash Credits and Overdrafts			12,38,921 94	
13,01,989	(i) In India			Nil	
—	(ii) Outside India			Nil	12,38 921 94
—	(b) Bills discounted and purchased .				
13 01,989	For particulars see separate schedule attached.				
1,672	**6. Bills receivable being bills for collection as per contra** ...				Nil
—	**7. Constituents liabilities for acceptances endorsements and other obligations as per contra** ...				Nil
—	**8. Premises less depreciation** ...				Nil
	9. Furniture and Fixture less depreciation				
4,420	Last Balance		6,522 94		
2,103	Additions during the year		387 23	6,910 17	
6,523	Less Sales during the year			161 00	
2 502	Less depreciation upto 31-12-67	2,720 61		6,749 17	
218	Depreciation for the year	415 70			
2,720		3136 31			
3,803	Less Depreciation w/o	128 00		3,003 31	3,740 86
	10. Other Assets.				
122	(a) Miscellaneous recoverable			25 00	
69,038	(b) Interest accrued but not realised			79,387 21	
18,979	(c) Agricultural machinery at cost		22,279 08		
3,300	Adition during the year		Nil		
91,439			22,279 08		
	Less depreciation upto last year	15,949 46			
15,949	" for the year	949 50	16,898 96	5,380 12	
75,490					
65,975	(d) Advance Tax Paid ..			89,029 00	1 73,821 33
1,41,465					
	11. Non-Banking Assets acquired in satisfaction of claims (at cost)				
	Last Balance				
30,557	Agricultural land at Ferozepur		30,557 06		
13,936	" " " Hoshiarpur		4,767 24		
44,493			35,324 30		
9,169	Less sale during the year		Nil	35,324 30	
35,32					
5,000	Thatched house at Hoshiarpur		7 676 50		
40,324	Less depreciation		37 50	7,639 00	
2,676	Cost of renovation of the house			2,073 59	45,036 89
43,000					
40,17,981	TOTAL				42,44,227 25

BARI DOAB BANK LIMITED, HOSHIARPUR

PROFIT & LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDING 31ST, DECEMBER, 1968

31-12-67 Rs.	EXPENDITURE	Rs.	P.
1,03,535	1. Interest paid on Deposits, borrowing etc. ..	1,02,248	11
29,469	2. Salaries, allowances and Provident Fund ...	28,314	33
	3. Director's and Local Committee Member's Fees and allowances ...	Nil	
3,022	4. Rent, Taxes, Insurance, Lighting etc. ...	3,585	28
861	5. Law Charges ...	26	00
547	6. Postage, Telegrams and Stamps ...	655	90
300	7. Audito'r Fees ...	300	00
1,044	8. Depreciation on and Repairs to the Banking Company's Property ...	1,715	38
857	9. Stationery, Printing and advertisements etc. ..	1,111	94
—	10. Loss from sale of or dealing with non-banking assets ...	Nil	
—	11. Net loss on sale of shares and securities ..	Nil	
23,484	12. Other expenditure (including income-tax paid at source Rs. 20,280)	23,027	88
25,000	13. Bad debts written off ...	Nil	
1,53,085	14. Balance of Profit (Subject to Taxation) ...	1,35,849	70
3,41,204	TOTAL	2,96,834	52

Note :—Particulars of remuneration paid to the Chief Excutive Officer during 1968 : Salary Rs. 6,600, (Rs. 6,600) Bonus Rs. 550* (Nil). Figures in the brackets are for 1967.

*The amount shall be paid subject to the approval of Reserve Bank of India.

31-12-67 Rs.	INCOME (Less provision made during the year for bad and doubtful debts and other usual or necessary provision)			Rs.	P.
2,16,328	1. Interest and Discount ...			2,22,350	36
270	2. Commission, Exchange and Brokerage ...			328	65
—	3. Rents ...			Nil	
	4. Net profit on sale of investments, Gold and Silver, Land, premises and other assets (not credited to Reserves or any particular Fund or Account)				
34,955	Gain on sale of Gold purchased in 1942	Nil			
5,226	Profit on maturity of Government securities	172	50		
3,480	Profit on sale of shares of joint stock companies	Nil		172	50
43,661					
—	5. Net profit on revaluation of investments, Gold and Silver, Land premises and other assets (not credited to Reserves or any particular Fund or Account)			Nil	
	6. Income from non-banking assets :				
45,074	(a) Income from agriculture	58 403	60		
29,864	Less expenses on agriculture	46,100	62		
15,210		12,302	98		
816	(b) Income other than agriculture	760	00	13,062	98
16,026					
	7. Other Receipts				
63,447	(i) Dividend on shares	59,361	00		
1,472	(ii) Miscellaneous Earnings	1,559	03	60,920	03
64,919					
3,41,204	TOTAL			2,96,834	52

SODHBANS & Co.
Chartered Accountants

HARI CHAND PATHAK
Manager,

JAS RAJ
SHAM SINGH
JANAK RAJ
Directors.

आर्यसमाज लाजपतनगर हीरानन्द हाल सोनीपत की विशेष मिटिंग तथा वार्षिक चुनाव

गत सप्ताह समाज मे आम सदस्यो की मिटिंग हुई जिस मे समाज की ओर से फ्री औषधालय खोला जाए, निश्चय हुआ।

चुनाव इस प्रकार से सर्वसम्मति से हुआ।

लाo नन्नलाल जी लूथरा प्रधान
डाo देवराज जी सपडा उपप्रधान
माo खुशीराम जी हसीजा ,,
हकीम खट्टूराम जी ,,
महाशय कवरभानजी मलहोत्रा मन्त्री
पडित वासदेव जी शर्मा उपमन्त्री
भगत वासदेव उपमन्त्री ,
मo दियालचन्द जी प्रचार मन्त्री
माo मेघराज जी कथूरिया कोषाध्यक्ष
लाoभगवानदास जी आर्य पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरंग सदस्य

सर्वश्री डाo ठाकुरदास जी, दीवान बाबू रामलाल जी दीवान, मo किशनचन्द जी आर्य, लाo मोहनलाल जी चादना, लाo पोखरदास जी कालडा, पo चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी।

मन्त्री—आर्यसमाज
लाजपतनगर सोनीपत

डी. ए. वी. कालेज जालन्धर का शानदार परिणाम

डीo एo वीo कालेज, जालन्धर का प्री मैडीकल का परीक्षा परिणाम शानदार रहा। कालेज के अनिल कुमार ने ५८३ अक लेकर प्री-मैडीकल परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया। वह गत वर्ष प्री-यूनिवर्सिटी (मैडीकल) परीक्षा मे भी प्रथम था।

डीo एo वीo कालेज का छात्र अनिल जैन जो ५११ अक लेकर प्रिo इजीनीर्यरिग परीक्षा मे पजाब तृतीय रहा।

इस शानदार परिणाम का श्रेय प्रिंसीपल श्री बीo एसo बहल तथा उनके अनुभवी स्टाफ को है।

सत्संग की महमा

महात्मा तुलसी दास जी ने ठीक ही कहा है कि —

सन्त समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोए।
सुत दारा और लक्ष्मी पापी के भी होए॥

इस चोपाई मे महात्मा जी ने ईश्वर भक्ति का और सत्सग का कैसा उत्तम उपदेश दिया है। जबकि यह दोनो चीजे ही (सत्सग—हरि कथा) मनुष्य जीवन मे कोई सत पुरुष ही अपने अन्दर धारण करता है इन्हे प्राप्त करके ही जीव सुख और शान्तमय जीवन व्यतीत कर सकता है। मात्र ही इन पर आचरण करने से ईश्वर्य ज्ञान और मोक्ष भी पाने का अधिकारी हो जाया करता है। वरना धन दौलत स्त्री बच्चे और अन्य ससारी चीजे जोकि मोह का जाल है मनुष्य इन्हे समय-समय पर पाता रहता है। जोकि उसके पुरुषार्थ का परिणाम होता है। कभी न कभी ऐसा कष्ट का समय भी आ जाया करता है कि वो इन सब से हाथ धो बैठता है। इन ससारी वस्तुओ को पा कर मनुष्य ससार चक्कर ही मे फसता रहता और इन्ही मे घिरा रहता है फिर इस चक्कर मे से निकला अति दुष्कर है। परन्तु यदि सत्सग और ईश्वर भक्ति का रग मनुष्य पर चढ जाए तब समझो उसका बेडा पार है और जीवन सफल है। परन्तु इन को पाने का कोई-कोई ही अधिकारी बनता है। सत्सग मे जाना प्रभु भक्ति का पाना और स्वय को इसी रग मे रग लेना यदि ऐसा जीवन मे कोई पाले उसका क्या कहना, यही सही अर्थो मे ईश्वर प्राप्ति का शुद्ध मार्ग है। सत्सग की महिमा क्या है और क्या-क्या रग दिखाती है। इसे आप श्री चन्द्र कवि जी की बनाई कविता मे जो निम्न है पढे।

सदा तुम करते रहो जी सत् पुरुषों का संग।

सत् सगत की महिमा को जी क्या करे कोई ब्यान।
सदाचार सत्सग के कारण होता है कल्याण। मदा .
खोटे पुरुषो की सगत मे होती है मति भग।
दूध से अमृत को भी पीकर कर दे जहर भुजग॥ मदा
सत पुरुषो का सग करो तुम यही धर्म का अग।
गहरे जल मे तर जाता है लोहा काठ के सग॥ सदा...
पानी ढलते-ढलते मित्रो घिस जाता पाषाण।
ऋषि सग ने किया भील को बाल्मीक गुणवान्॥ सदा ..
वन-वन फिर के ऋषि दयानन्द कीना खूब विचार।
आखिर विरजानन्द के सग से कीना देश सुधार॥ सदा .
अन्तिम विनती है 'चन्द्र' की लीजो मन मे धार।
आर्य जनो की सगत से तुम हो जाओगे पार॥ सदा ..

**श्री मास्टर हरिचन्द गुप्त, मन्त्री आर्यसमाज
जाखल (हिसार)**

डेरा समाज महरौली

डेरा आर्यसमाज महरौली देहली की कथा व उत्सव बडे ही समारोह मे हो गए। जलूस व जलसा कमाल के थे। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज पo शिव महाराज, पo शिवकुमार जी शास्त्री एमo पीo प्रोo श्याम राव जी एम ए तपोमूर्ति, पo त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, लाo रामगोपाल जी शाल वाले सम पी पo राजपाल जी मदनमोहन जी मडली शास्त्रार्थ महारथी पo शातिप्रकाश जी, विजया एमo ए० जयदेव जी जतोई वाले आदि सज्जन पधारे। जलूस मे देहली व गुडगाव से बसे आई। जल्सा शानदार था। समाज के सरपरस्त चौo गौनकीराम जी, प्रधान लालचन्द जी मन्त्री चोखानन्द जी, श्री भोलाराम जी श्री भगवानदास जी, मदन जी मन्त्री को बधाई। सभा को ५००)रु० वेद प्रचार मिला। मार्ग व्यय अतिरिक्त।

प्रचार समाचार

बस्ती बाबा खेल मे मै ने अपने निज घर मे ही वेद प्रचार का प्रबन्ध किया था आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के महोपदेश श्री पo खुशीराम जी शास्त्री व श्री मेलाराम रेडियो सिगर सभा के श्रीमान मन्त्री डाo वेदीराम जी की आज्ञानुसार १६ जून १९६९ से २२-६-६९ तक रात्री को पौने दस बजे से ११ बजे तक श्री पo खुशीराम जी का उच्च-कोटी का भाषण होता रहा। जिस को जनता ने बहुत पसन्द किया। साथ ही ८॥ बजे से पौने दस बजे तक श्री मेलाराम जी के सङ्गीत व भजन गीत होते रहे जिनका जनता पर बहुत ही प्रभाव पडा है मैं आर्यप्रादेशिक सभा के महामन्त्री जी का धन्यवाद करता हू जिन्होंने दोनो महानुभावो को भेज कर जनता को अमृत पान कराया है।

**शिवलाल भाटिया बस्तीखेल
जालन्धर**

आर्य समाज खेल ...

स्थानीय आर्य समाज खेल ... का चुनाव २६६९ को इस प्रकार से सम्पन्न हुआ

प्रधान—श्री सोमनाथ जी आर्य बी० ए० बी० टी० ।

उपप्रधान —श्री देवराज जी आर्य

मन्त्री— श्री जगन्नाथ जी आर्य।

उपमन्त्री —जगतनारायण ।

प्रचारमन्त्री—श्री प्यारा लाल 'प्यार' तथा भण्डारी।

कोषाध्यक्ष—वैद्य ओइमप्रकाश जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री दयानन्द जी आर्य ।

आडीटर— श्री भागमल जी ।

—जगतनारायण

तुलसी इस ससार मे भांति-भांत के लोग
सबसे मिलजुल बैठिओ नदीनाम सयोग

...बी. हाई स्कूल उड़मुड का भव्य परिणाम

इस वर्ष डी० ए० वी० हाई स्कूल उडमुड (जिला होशियारपुर) का मैट्रिक परिणाम बहुत भव्य रहा। १११ छात्रो में १०३ उत्तीर्ण हुये तथा परिणाम ९३ प्रतिशत रहा। रक्षवीर ने ७४६ अक प्राप्त कर होशियारपुर जिले मे सर्वप्रथम तथा पजाब राज्य मे तृतीय स्थान प्राप्त किया। अन्य छात्रो क्रमश ७३६, ६७२ और ६७१ अक लेकर छात्र-वृत्ति प्राप्त की। इस प्रकार कुल चार छात्रो ने छात्रवृत्तिया ली। इसका श्रेय मुख्याध्यापक श्री भगवान दास जी तथा उनके सहयोगियो को है।

र
स
ह
F

परिणाम

इस वर्ष भी साईदास ए० एस० हायर सैकण्डरी स्कूल जालन्धर नगर का हायर सैकण्डरी **Part II** का परिणाम शानदार रहा। स्कूल का विद्यार्थी जोगेन्द्रपाल कोहली ९१३ अक लेकर जिला भर मे प्रथम रहा और पजाब भर मे नवी पोजीशन में आया। २१ विद्यार्थी मैरिट लिस्ट पर आए। यह सख्या जिला भर मे किसी भी स्कूल मे सबसे अधिक है। स्कूल के ३५० विद्यार्थी परीक्षा मे बैठे और परीक्षा ... % रहा। इस उत्तम परिणाम का श्रेय स्कूल के प्रिंसीपल श्री प्यारेलाल बेरी और उनके परिश्रमी सहयोगी अध्यापको पर है।

—प्रि० प्यारेलाल बेरी
जालन्धर

आर्य समाज हमीरपुर (हिमाचल) का उत्सव

आर्य समाज हमीरपुर हिमाचल प्रदेश जिला कागडा का उत्सव बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री प खुशीराम जी महोपदेशक, श्री मेलाराम जी भजनोपदेशक तथा श्री हजारी लाल जी भजनोपदेशक के सुन्दर भजन होते रहे। कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर रहा। आर्य जनता ने उत्सव मे काफी सख्या मे सम्मिलित होकर उत्सव की शोभा बढाते हुए धर्म लाभ प्राप्त किया। माग व्यय के अतिरिक्त सभा को वेद प्रचारार्थ १११/-६० की राशि प्राप्त हुई।

डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर

प्रवेश सूचना

प्री-यूनिवर्सिटी, प्री-मैडिकल, प्री-इजीनियरिंग, बी ए/बी एस सी प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय भाग, तथा एम० ए० प्रथम तथा द्वितीय भाग की श्रेणियों मे १९६९-७० के सत्र के लिए प्रवेश के लिए अग्रिम रूप से निर्धारित प्रपत्र पर आवेदनपत्र आमन्त्रित है। कालेज अग्रेजी, गणित, राजनीतिक शासन, अर्थशास्त्र, इतिहास, संस्कृत, हिन्दी तथा पजाबी, लडके तथा लडकियो दोनों के लिए, विषयो में एम० ए० पाठ्यक्रमो की पेशकश करता है।

पूर्ण रूप से भरे हुए प्रवेश-फार्म प्रिंसिपल के पास ३० जून १९६९ तक पहुच जाने चाहिएं। यदि तब तक पहली परीक्षाओ की घोषणा विश्वविद्यालय की ओर से नही की जाती, तो इससे सम्बन्धित कालम को खाली छोड दिया जाए, जो कार्यालय द्वारा पूरा किया जाएगा। अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र अपने आवेदनपत्रो के साथ अपने परिणाम भेजे तथा रजिस्ट्रार, पजाब विश्वविद्यालय से योग्यता-प्रमाणपत्र प्राप्त करे। प्रवेश के लिए योग्य उम्मीदवारो को इटरव्यू के लिए बुलाया जाएगा और यदि ... तो उन्हें अपनी फीसें जमा करानी होंगी।

विज्ञान विषयो मे स्थान सीमित हैं। छात्रो को होस्टल मे प्रवेश 'पहले आने वाले की पहले सेवा, के आधार पर दिया जाएगा। सीमित स्थानो के साथ एम० ए० छात्राओ के लिए एक अलग होस्टल की भी व्यवस्था है। प्रतिभाशाली छात्रो के लिए भारी सख्या मे छात्रवृत्तिया तथा वजीफ उपलब्ध हैं और खेलो तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियो मे विशिष्टता रखने वाले छात्रो को समुचित ध्यान दिया जाएगा।

कालेज प्रास्पैक्टस, जिस मे प्रवेश प्रपत्र भी शामिल है, अकाऊट्स कार्यालय से २.५० रुपए की अदायगी पर प्राप्त किए जा सकते हैं। यदि प्रास्पैक्टस डाक द्वारा मगवाने है, तो काफी समय पहले ही ४ रुपये का पोस्टल आर्डर प्रिंसिपल को भेज दिया जाए।

प्रिंसिपल
बी० एस० बहल

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टैलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २७) १६ आषाढ़ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—६ जुलाई १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

आयुष्टे शरदः शतम्

अर्थ—मानव ! आयु—जीवन ते—तेरा शरद शतम् सौ वर्ष तक चलता रहे। सौ वर्ष जीवे।

भाव—मनुष्यका जीवन मामूली नहीं हम मौत के लिए नहीं पैदा हुए पूरी आयु भोगने से पूर्व मर जाना पाप कहा है पूर्ण जीवन मानव जीवन के लिए आवश्यक है। इसके लिए वेद उपदेश देते है कि हे मनुष्य ! तेरा जीवन कम से कम सौ वर्ष तक तो जरूर ही चलता रहे। शतायु होना है। इससे पूर्व मौत को अपने समीप मत आने देना। तेरी आयु सौ वर्ष की है। इसे बड़े नियम से भोग तथा विशेष कर्म करता रहे। सौ वर्ष की आयु को रखने के लिए जीवन की प्रत्येक मर्यादा का पूरा-पूरा ध्यान रखना होगा। शतवर्षी हो —सं.

वे दा मृ त

वेद का मार्ग

यमो नो गातुं प्रथमोविवेद नैषा गव्यूतिर पभर्तवा उ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेता एना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः ॥

अथर्ववेद कांड १८-१-५०

अर्थ :—(यम.) न्यायकारी परमात्मा ने (न) हमारे लिए (गातुम्) मार्ग (प्रथमः) पूर्व वर्तमान (विवेद) जाना। (न एषा) यह नहीं है (गव्यूति) मार्ग (अपभर्तवे) हटाने के योग्य (उ) कभी। (यत्र) जहां से (न) हमारे (पूर्व) पहले (पितरः) पालन करने वाले बड़े लोग (परेता) चलतेहै (एना) उसी से (यज्ञानाः) उत्पन्न हुए (पथ्या अनु) उन्हीं मार्गों पर चलें (रचाः) अपने-अपने।

भाव यह है

वेद का पवित्र पथ प्रभु ने सर्व प्रथम सबके लिए बनाया है। बड़ा सुन्दर और सरल पथ है। यह कभी टालने योग्य नहीं है। न ही परित्याग के योग्य है। इसी पर ही तो ज्ञानी, पालक लोग सदा चलते है। जीवन में इसी पुनीत वेद पथ पर निरन्तर चलने रहने से ही सुख प्राप्त होता है। इससे भटकना जीवन की विपत्तियों मे डालना है। सबका कर्त्तव्य है कि वेद पथ पर सदैव चलते हुए दूसरों को भी चलावें। सं०

ऋषि दर्शन

जन्माद्यस्य यतः

अर्थ—जन्म आदि-जन्म अर्थात उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय अस्य—इस सारे जगत की यत.—जिससे होतीहै। वही ब्रह्म है।

भाव—मुनिवर व्यास जी अपने वेदांत दर्शन जिसे ब्रह्म सूत्र भी कहा जाता है कहते है कि ब्रह्म वह है जिससे इस सारे विशाल जगत की उत्पत्ति होती है वही इसका उत्पादक है, धारक है तथा सहारक है। मनुष्य तो एक मामूली पत्ता तक भी नही बना सकता। उसे तो अपने जीवन पर भी अधिकार नहीहै। देखते देखते चल देता है। यह ब्रह्म ही है—जो इतना विविध विशाल ब्रह्मांड को नियम में रखे है।। वह प्रजापति है, विष्णु रुद्र है।

महात्मा व्यास

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी० (सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोलचन्द्र शास्त्री

युवक स्तम्भ

युवक जाग रहा है

(करनैलसिंह विद्यार्थी)

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित ।

यह महान वाक्य कर्मशील, उत्साही, व्यक्ति के लिए सोने पर सुहागे का काम करता है । वेद का पवित्र यह सन्देश आलस्य, सुस्ती को दूर भगा कर मनुष्य को निडर, निर्भय तथा कर्मशील के महान खजाने का मालिक बना देता है । और वह सिंह गर्जना करता हुआ कहता है कि मेरे दाहिने हाथ मे शक्ति हे, सामर्थ है ताकत है, गति है कार्य करने की क्षमता है और विजय, जय, महान लक्ष्य की प्राप्ति मेरे बाए हाथ मे है ।

महान से महान कार्य को भी वह आदमी कर सकता है, यदि वेद का उक्त सूक्त उसके पास हो। कितना महान वेद का यह सन्देश है। यही सन्देश यदि युवक वग मे हो तो समझो युवको को सफलता के खजाने की चाबी मिल गई है ।

कर्म के आगे सब कुछ झुक जाता है, हर प्रकार की ताकत कम के पाव दबाती है । प्रत्येक प्रकार की इज्जत, धन, दौलत सभी कम का पानी भरते हैं ।

आय समाज का प्रवत्तक एक महान कर्मशील निडर सन्यासी था, जिसके पास यदि कोई अस्त्र-शस्त्र, (हथियार)था तो वह केवल कर्मशीलता। कमशीलता ही ऐसा हथियार था जिसको लेकर वह सन्यासी, वेद का सन्देश, देश के कोने-कोने मे फैलान मे सफल हुआ । और अपने पीछे एस नवयुवको की टोलियो को छोड गया वह योगी कि सभी ओर आय समाज वेद, सामाजिक सुधार, देश रक्षा की आवाज गू ज उठी । घर घर मे देश-भक्त पैदा होने लगे ।

आय समाज मे ही नही बल्कि किसी दूसरी सस्था मे भी यदि कोई काम हुआ सफलता मिली तो वह **कर्म की महानता** के कारण ।

कुछ देर हुई आर्य समाज की गति चाल कुछ धीमी-धीमी चल रही है । ऐसा क्यो है । सोचने पर फिर हमे कर्मशीलता पर ही आना पडेगा समाज के सभी अधिकारी वर्गों से मैं नम्र निवेदन करना चाहता हू कि वे कुछ कमशील बनें खासकर समाज के कामो मे । यदि आप पुरुषार्थ करेंगे, कर्मशील बनेंगे तो धन, दौलत इज्जत, प्रचार सभी कुछ आपको, आपकी समाज को मिल सकेंगे । यह सब चीजें पीछे पीछे चक्कर लगाएगी ।

हर्ष की बात है कि आर्य समाज की गति पुन तीव्र होने जा रही है । ऐसा क्यो है, इसलिए कि आर्यसमाज की युवा-शक्ति कुछ कर्मशील हो रही हैं । अर्थात युवक जाग रहा है। प्रादेशिक सभा पजाब के अन्तर्गत आर्य युवक सगठन का आयोजन किया गया है । युवको का ठीक पथ-प्रदर्शन करना, उन्हें आर्य समाज के समीप लाना, देश-भक्त बनाना ईश्वर भक्त बनाना आदि महान इस सगठन के लक्ष्य हैं । कुरीतियो का, बुराइयो का दमन करना, इनके विरोध के आवाज उठाना इस सगठनके कार्य हैं।

अपने थोडे से काल मे इस सगठन ने काफी सफलता प्राप्त की अपने कार्यों मे, कई नए सगठन बने हैं उदाहरणार्थ एक आर्य कुमार सभा रोहतक मे, एक आर्य युवक सगठन नाभा के स्थापित हुआ । होशियारपुर में श्री नन्द सिंह जी बहुत अच्छा काम आर्य युवक सगठन का कर रहे हैं । कई स्कूलो, कालेजो मे भी युवको के कायक्रम शुरू हो गए हैं। अमृतसर मे आर्य युवक श्री चूनीलाल जी चान्द बहुत अच्छा काय कर रहे हैं। साथ ही श्री सत्यपालजी पुरोहित आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार भी किसी से कम नही है । ★★

हार्दिक बधाई

श्री जितेन्द्र दत्त जी पूज्य प० रूपदत्त जी शर्मा, प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर के सपुत्र हैं। सुयोग्य आय युवक हैं । आर्य समाज को इस युवक पर गर्व है ।

बहुत खुशी की बात है कि इस युवक की शादी १८ मई को बडी धूमधाम से वैदिक रीति से सम्पन्न हुई है ।

प्रादेशिक आय युवक सगठन की ओर से, मैं मान्य आय युवक को, माता-पिता तथा सभी सम्बन्धियो को बहुत-बहुत बधाई देता हू । परमात्मा से प्राथना है कि नव-दम्पत्ति का चिरायु देकर आय समाज की सेवा करने के लिए समर्थ देवे ।

पुन सब को बहुत-बहुत बधाई ।

—करनैल

प्रसन्नता है

प्रसन्नता है कि स्कूलो और कालेजो में युवक सगठन, कुमार सभा के प्रोग्रामो का आयोजन बडी तेजी के साथ हो रहा है । कई मुख्याध्यापक जो अपना विशेष ध्यान इस ओर दे रहे हैं और आर्य समाज के कार्य मे युवकों को कुमारों को साथ लेते हैं । उदाहरण के तौर पर डी ए वी हायर सैकण्डरी स्कूल,कादिया,बटाला, गुरदासपुर के मुख्याध्यापक युवको को आर्य समाज के पास लाने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं। कादिया के स्कूल मे तो प्रति सप्ताह हवन यज्ञ, सध्या के अतिरिक्त युवको को, कुमारो को विशेष रूप से अच्छा बनने के लिए उपदेश, प्रवचन का भी आयोजन होता है । कई बार तो बच्चे अपना काम आप चलाते हैं ।

होश्यारपुर में श्री नन्द सिंह जी जिस तरीके से आर्य कुमारो, युवको को एकत्रित करते हैं वह नि सन्देह सराहनीय है । अमृतसर मे श्री चूनी लाल चानद, श्री सत्यपाल जी गायक, पुरोहित श्रद्धानन्द-बाजार समाज, श्री जीतेन्द्र जी, श्री नरदेव जी अच्छा काम करते हैं ।

प्रसन्नता है कि आय युवक जाग रहा है वो समाज के करीब आना चाहता है। वह प्यार का भूखा है। वह प्यार चाहता है।

आवाज उठायें

आज देश कई विकट समस्याओं में से गुजर रहा है । कहीं **छात्रों की अनुशासन-हीनता** तो कहीं **अलग प्रवेश की मांग।** देश की आन्तरिक स्थिति तो बहुत कमजोर होती जा रही है । लोगों का जीवन चरित्र किस ओर जा रहा है देख कर बहुत दुःख होता है। स्त्री-जाति, मां-बहिन की इज्जत जाती रही है देश गरीब हो गया है, सदाचार चरित्र और सच्चे प्यार मुहब्बत के पवित्र बंध थे, पर अमीर हो रहा है **फजूल-खर्ची**, दुराचार भ्रष्टाचार, धोखा, फरेब आदि राक्षसी वृत्तियो से ।

इन सब की ओर कौन आवाज उठायेगा, कौन इनका विरोध करेगा । सिवाय आर्यसमाज के और किसी को इस ओर ध्यान नही है और आर्य-समाज की भी युवा शक्ति ही इसे कर सकती है । युवा-शक्ति उस बूढे मे भी हो सकती है जो युवको जैसी गर्जना रखता है । यही कारण है कि ऐसा आर्य युवक(चाहे वह आयुमे बूढा ही हो) यदि लोक सभामेबैठाहै तो भी अपनी गर्जना से देश को बर्बादी से बचाता है और चाहे वह युवक किसी गाव मे एक दुकानदार या मजदूर है । उसकी सिंह गर्जना वहा से भी भडक उठती है ।

मान्यश्री **हरिदेव जी हांडा** बेशक आयु मे बडे हैं चाहे शरीर उन्हे पूरा सहयोग देने से इन्कार कर रहा पर वह अपनी आवाज को दबने नही देते, बुराई के विरोध मे आवाज उठाते ही रहते हैं । बरात मे किस प्रकार चुम्बन होता है उसका चित्र उन्होंने अपने पिछले लेख मे दर्शाया है । अमृतसर के सारे के सारे बूढे युवक हैं चाहे वह रुद्रदत्त के रूप मे हो या गगाराम के, चाहे वह धर्मपाल के रूप में हो मदनमोहन के रूप मे सब के सब युवक हैं ।

मेरी सभी आर्य सज्जनो से निवेदन है कि आज देश मे फैल रही बुराई के विरोध में आवाज उठाओ। कुरीतियों को दूर करने का यह अच्छा साधन है ।

—करनैल

प्रसन्नता है कि समाज के अधिकारी भी इन्हें अपना रहे हैं। और क्या ही अच्छा हो कि यदि दूसरे स्कूल और कालेज भी युवकों को आर्य विचार देकर उनके जीवन को स्वच्छ बनाने की ओर ध्यान देवें। हमें प्रसन्नता होगी यदि ऐसे संगठन **अपनी गतिविधियां 'आर्य जगत' में** प्रकाशनार्थ भेजें।

'आस्तिकता की परमावश्यकता'

(श्री देवव्रत शास्त्री, पुरोहित—जिला वेद प्रचारिणी सभा)
—चौड़ी सड़क लुधियाना—

भारतीय दर्शन शास्त्र और वेदों में आस्तिकता की ओर आने का विशद वर्णन मिलता है। आस्तिकता सृष्टि का एकमुख्य अधिनियम है। जो स्वभावतया चला आ रहा है। यदि जीव को किसी का भय न हो तो वह स्वच्छन्द विचरेगा और संसार मे हाहाकार मच जाए। दुकानदार पूरा क्यों तोले! ईमानदारी डेरा उठाकर भाग जाएगी। इस अधिनियम के बिना ससार का कोई भी काम नही हो सकता। यद्यपि भौतिकता के रस में मस्त हुआ जीव आस्तिकता को नही अपनाना चाहता तथापि ईश्वरीय नियम बलात इस ओर खींच लाते हैं। आस्तिक मनुष्य जहां शरीर से बलवान है वहा वह एक और भी बल रखता है जिसे आत्मिक बल कहा जाता है और उसके सहायक मन तथा बुद्धि भी बन जाते है जबकि उसके मुकाबले पर नास्तिक व्यक्ति इन सब शक्तियो से हीन है।

नास्तिक व्यक्ति ससार मे अकेला विचरता है। वह केवल विषय वासनाओ मे लिप्त मन को भोगो द्वारा तृप्त करना चाहता है जबकि उसकी भूख और भी बढती जाती है। जैसे कोई व्यक्ति तेल से आग को बुझाना चाहता हो।

मन एक सिद्ध करने की वस्तु है। इसकी सिद्धि आस्तिकता के मार्ग से होती है। सिद्धि मनुष्य को मनोवाच्छित फल देती है। मन की खुराक कामना अर्थात विषय है। आत्मा की खुराक भावना अर्थात ईश्वर प्राप्ति की भूख और तडप है। सृष्टि के आरम्भ से आज तक मनुष्य ने अपने पेट को भरना चाहा जबकि पेट नही भरा और अत्यन्त भूख ने मन को भी आ घेरा। ऐसी अवस्था मे परेशानी क्यों नही होगी। यह झगडा कब तक चलेगा? जब तक मानव आस्तिकता के मार्ग पर चलने के लिए तैयार नही होगा अग्नि काष्ठो से तृप्त नही होने वाली। यह पेट और मन की भूख ही दुःखों का कारण है। पेट और मन तब तक नहीं भरेगे जब तक कि आत्मा की भूख पैदा नही की जाएगी। आत्मा को भूख लगने पर पेट की चिन्ता नही रहती। मन दुबक कर बैठ जाता है। आत्मा को जब भूख लगती है तो अन्य भूखें समाप्त हो जाती हैं। ऐसी अवस्था में आस्तिक व्यक्ति एक अलौकिक आनन्द रस मे विचरता है जिसके मुकाबले में सासारिक सब रस फीके लगते हैं। मनुष्य कर्मयोगी बन जाता है। उस समय इन्द्रिया विराम हो जाती हैं।

आत्मिक बल से हीन व्यक्ति भला सासारिक सग्राम मे कब तक लड़ता रहेगा। उसे अवश्य उस शक्ति का आश्रय लेना होगा कि जब मनुष्य सासारिक आश्रयो से अनाश्रित होकर भी बलवान बना रहता है। असख्य बाधाओं को चीर कर निकल जाने की असीम शक्ति उसमे आ जाती है।

आज का मानव अत्यन्त दुःखी है। तलाश तो करता है सुख की परन्तु कर्म करता है दुःख देने वाले। मनुष्य ने धरती, आकाश और सितारो को छान मारा, दौड लगाई कि वह ससार का विजेता बन सके। ज्यो २ मानव ईश्वरीय नियमो का उल्लघन करता है और ईश्वरीय कर्म फल व्यवस्था मे बाधक बनता है त्यो २ वह उस मृग की भान्ति उलझता जाता है जिस की टागे और सीग जाल मे उलझे हुए है किन्तु फिर भी भागना चाहता है।

मनुष्य सुख प्राप्ति के लिए नए-नए आविष्कार कर रहा है परन्तु यह कब तक चलेगा। कोई सीमा भी होगी जहा रुक कर इसे सुख मिल जाएगा। यह लम्बी दौड थका देगी। प्राणो पर आ बनी और सुख का नाम निशान नही दिखाई देता। केवल मृग तृष्णा।

आज का पढा लिखा वर्ग आस्तिकता से त्याग पत्र दे रहा है क्योकि भौतिकता इतनी बढ गयी है कि जिसने वातारण ो ही दूषित कर दिया है। पाश्चात्य सभ्यता ने मनुष्य पर ऐसा प्रभाव डाल दिया है कि उसे सिवाए विलासित के और कुछ सूझता ही नही है। आस्तिकता से दूर नवयुवक वर्ग जीर्ण शीर्ण हो चुका है। उसके पास अपना कुछ भी तो नही। भडकीला पहरावा, चटकीले पदार्थ और अनुशासन हीनता की साक्षात् प्रतिमाए घूमती-फिरती दिखायी दे रही है। विषयासक्ति से बेचैन होता हुआ भी विषयो मे ही चैन पाना चाहता है। अन्धेरी कोठरी से दीपक टटोल रहा है।

इस समय विज्ञान बहुत उन्नति पर है। नये २ हिसक अस्त्रो का आविष्कार हो रहा है मनुष्य आस्तिकता के मार्ग से प्राप्त होने वाली आत्मीयता से परे हटता चला जा रहा है। मनुष्य मनुष्य से घृणा कर रहा है अथवा मनुष्यता से घृणा कर रहा है! पता नही मनुष्य को मनुष्य से बदबू क्यो आ रही है। आत्मीयता से क्लेशों का बटवारा हो जाता है। वैरी की आत्मा पता नही रात दिन अपने आप ही क्यो कापती रहती है? आत्मदर्शी सुख की नींद सोता है। अपनापन तो आस्तिकता से ही प्राप्त होगा। यजुर्वेद मे आत्मीयता को ही सुख का साधन कहा गया है। जब मनुष्य सब प्राणियो में अपनापन देखता है तो उसकी आखो से मोह और शोक का पर्दा हट जाता है। विज्ञान हमे मनुष्यता से परे रखता है। कोरा विज्ञान तो दमकल वालो की उस घण्टी के समान है जो अपने पराये सबके लिए खतरनाक है। विज्ञान और आस्तिकता का साथ-साथ रहना आवश्यक है।

आस्तिक व्यक्ति है। उसकी सत्ता है। परन्तु नास्तिक व्यक्ति नही है क्योकि वह अपनी सत्ता से स्वय इन्कार कर रहा है। वह अकेला है। भला कोई अकेला व्यक्ति अपने पर ही कब तक आश्रित रह सकेगा क्योकि आस्तिक अपने आपको ही हर काम का जिम्मेदार समझता है। चलो, उसकी इच्छा। परन्तु आस्तिकता की पराकाष्ठा इससे भिन्न है। जब हम अपने नौकरो को कहते है कि तुम मेरे नौकर हो, मैं ही सब कुछ करने वाला हू, मेरे बगैर कोई भी काम नही हो सकता तो नौकर इस बात से चिडता है और वह जानबूझ कर हमारे काम को बिगाडता है। उसकी जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है क्योकि मालिक अपने आप को ही जिम्मेदार समझता है। ऐसी हालत मे उस मनुष्य के काम काज कब तक चल सकेंगे जो अपने पर ही आश्रित है। आस्तिकता का रूप हमे इस से भिन्न दिखाई देता है। जब एक समझदार मालिक अपने नौकरो को बडप्पन देता है और कहता है—तुम ही मेरे कामकाज को चलाने वाले हो। तुम न होवो तो मेरा कौन सा काम सुधर सकता है। मै तो केवल पैसा खर्च कर सकता हू और यही कर सकता हू। मेरे लाभ हानि तुम्हारे हाथो मे है तो इस बात को सुन कर समझदार नौकर कभी भी मालिक के काम को नही बिगडने देगा। क्योकि वह जिम्मेदारी मालिक के कन्धो से हट कर नौकर के कन्धो पर आ पडी है। जब हम ईश्वर को न मान कर यह समझ लेते है और अहकार से यह कह देते हैं कि मै ही सब कुछ करने वाला हू तो ईश्वर की जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है। और सारा बोझ उस व्यक्ति पर आ पडता है जो कि ईश्वर की सत्ता से इन्कार करता है। इसके विपरीत जब हम अपना कुछ भी न समझ कर ईश्वर का ही सब कुछ समझते हैं तो परमात्मा को जिम्मेदार बनना पडता है। फिर हमे अपने बाल-बच्चो और अपने सुख दुःख की चिन्ता नही करनी पडेगी। जिसका ईश्वर सहायक हो भला वह कब दुःखी हो सकता है क्योकि वह अपनी सत्ता को स्वीकार कर चुका है और विश्व बन्धु बन चुका है।

आर्यसमाज के तीसरे नियम को यदि हम सब आर्यसमाजियो के पास ऋषि की धरोहर समझें तो शायद अत्युक्ति न होगी। ये नियम बनाते समय शायद ऋषि ने इस नियम को पहला नियम बनाने का सोचा फिर अनायास ही उनका ध्यान कुछ पुराने भाष्यकारो जैसे महीधर, सायणाचार्य एव प्रो० मैक्समूलर की ओर आकर्षित हो गया होगा जिन्हो ने वेद ज्ञान देने वाले उस सृष्टिकर्ता के गुण और नियमो को बिना समझे बूझे मनमाने अर्थ कर डाले। अत. वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना परम धर्म बताने से पहले उन्होंने ईश्वर के प्रति विश्वास और ईश्वर की सत्ता का ज्ञान समझ लेना आवश्यक समझ कर प्रथम दो नियम ईश्वर सम्बन्धी बनाए।

वेद स्वामी जी को कितने प्रिय थे। यह उनकी रचनाए और जीवन चरित पढने से अन्दाजा लगता है। वेद के नाम से विभिन्न सम्प्रदाय वालो ने अपनी-अपनी अलग गलत और भ्रात धारणाए जो बना रखी थी उससे स्वामी जी कितने दुखी होते थे इसका आभास उनके लिखे ग्यारहवे समुल्लास मे मिलता है। स्वामी जी ने अपने जीवन को समाप्त करने वाले आततायी को क्षमा किया, ईंटे व पत्थर बरसाने वाले, पान मे जहर देने वाले को क्षमा दान दिया। किन्तु वेद का अपमान उन्हे सह्य नही था। जहा कही वेद की अवज्ञा होती उसका डडे की चोट से विरोध करते। दिल्ली दरबार के अवसर पर स्वामी जी ने प्रयास किया था कि भारत के सब विद्वान व नेतागण एक मन हो कर देश के उत्थान का कार्य करे। किन्तु उस प्रयास को भी असफलता मिली। लोगो ने वेद को सर्वमान्य सिद्धान्त स्वीकार नही किया और वेद को छोड कर ऋषि किसी बात पर समझौता करने वाले न थे।

वेद पर इतनी श्रद्धा शायद ही वर्तमान युग मे अन्य किसी का रही हो। वेद की कसौटी से वे सब मत-मतातरो का, धार्मिक ग्रन्थो का परीक्षण करते थे। वेद के अनुकूल सिद्धात उन्हें ग्राहय था और वेद के प्रतिकूल सर्वथा त्याज्य। इसीलिए तो लोग उन्हे वेदो वाला स्वामी कहने लगे थे। वास्तव मे वे वेदोंवाले ऋषि थे। वेदो को जो तथाकथित ब्राह्मण अपनी बपौती समझते थे। वेद का मन्त्र किसी ब्राह्मणोतर के कान मे पड जाना बहुत बडा पाप गिनते थे उनके नियत्रण से उद्धार करने वाले को यदि वेदो वाला ऋषि नाम मिला था तो सार्थक ही था। आर्यों के जीवन को ऋषि वेद से ओत-प्रोत देखना चाहते थे। जन्म की घूटी के साथ वैदासृष्टि का घोष बालक के कान मे डालने से लेकर अत्येस्टि सस्कार तक के सब सस्कारो मे—पच महायज्ञों मे उन्होने वेद मत्रो की प्रधानता रखी। लोग शंका करते थे कि हवन की घृताहुति और सुगन्धित सामग्री के साथ वेदमन्त्रो का होना क्यो आवश्यक है जबकि शुद्ध वायु तो मन्त्रो बिना भी हो सकता है। कितना युक्तियुक्त उत्तर उनका था कि हवन के साथ साथ मन्त्रो से हम हवन की महिमा का वर्णन तो करते ही है किंतु सबसे बडा प्रयोजन यह है कि इससे वेद की रक्षा होगी। वेद का पठन-पाठन जारी रहेगा। ऋषि के उस प्रयास का कितना उत्तम परिणाम निकला यह अपनी आखो के सामनेहै। चारो वेदो के नाम तक का ज्ञान जिस जाति का नही रह गया था उसी जाति के बच्चे बच्चियो मे वेद के मधुर मन्त्रो को सीखने लगे।

वेद व सत्य का पुजारी—स्वामी दयानन्द

(श्री गजानंद आर्य मन्त्री आर्यसमाज बड़ा बाजार कलकत्ता)

पर जिस विश्वास के साथ उस वेदो वाले ऋषि ने अपनी थाती आर्यो को सौपी थी। उसकी रक्षा के लिए हमने और क्या किया? क्या यह सत्य नही है कि आज हम अपने छोटो बच्चो के मुख से अग्रेजी कविता सुन कर कितने प्रसन्न होते है। अग्रेजी कविता के साथ-साथ क्या हमने सस्कृत के सुन्दर मत्र और लोक कहलवाने की उनकी प्रेरणा दी है। लोग कह दिया करते है कि जिस सस्कृत का अर्थ ही न समझ सके उसे याद करके बोलने भर से क्या लाभ पर वे यह क्यो भूल जाते है कितने एक विदेशी शब्द हम अपनी बातचीत मे बोलने मे गर्व अनुभव करते है जिसके कि पूरे शब्द का भी ज्ञान नही है। जैसे अग्रेजी के 'ओ०के०' 'टाटा' और 'बाई बाई' शब्दो के शब्दार्थ हमे मालूम हैं क्या? हो सकता है कुछ विद्वान लोगो को मालूम हो पर सर्व साधारण को ज्ञान नही है।

देश मे सास्कृतिक कार्यक्रम मे किसी ने वेद का ज्ञान भी देने की सोची है क्या? आकाशवाणी के कार्यक्रमो में कोई वेद, संगीत प्रोग्राम हुआ क्या? गीता मंदिर स्थान-स्थान पर बनते सुने गए, उसकी जगह वेद मंदिर बनने की योजनाए कार्यान्वित हुई क्या? आर्य समाजी पाठशालाओ मे कालेजो में दीक्षित होकर निकले क्या? सरिता जैसी पत्रिकाओ का (जिसमे वेद की खिल्ली उडाई जाती है और जिसका प्रकाशन दिनों-दिन बढता जा रहा है) का तर्कसंगत उत्तर देने का बीडा हमने उठाया क्या? वेदो के नाम ऋषि की कृपा से याद हो गए पर उन वेदो को घरो मे रखने की एव स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति हम मे आई क्या? यदि इन सब बातों का उत्तर नकारात्मक मे देना पडे तो समझ लीजिए हमने उस महर्षि की कल्पना का आर्य समाज बनाने मे योग नही दिया।

बालक मूलशकर से महर्षि दयानन्द बनने वाले के जीवन का सार यदि थोडे शब्दो मे वर्णन करना हो तो यही होगा कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे उद्यत रहना चाहिए। बालक मूलशकर का शिवरात्रि की घटना ने सत्य की खोज करनेको प्रेरणा ऐसी दीकि जीवन पर्यन्त उसी खोज मे लग रहे। कन्या कुमारी से गगोत्री तक के तत्कालीन साधु सन्यासियो, पडितो और विद्वानो मे मिल-मिल करके उन्होने कितनी छानबीन की होगी यह तो कोई प्रत्यक्षदर्शी ही बतला सकता। किन्तु विभिन्न मतमतान्तरो के ग्रथो का कितना अध्ययन उन्होने किया इसकी झलक उनके लिखे ग्रथो से मिल सकती है। एक ग्रन्थ की सच्चाई की जाच के लिए उन्होने नदी मे तैरते हुए एक शव को निकाल कर उसकी चीर-फाडकर करके ग्रथ की असत्यता का पता लगाया। पता नही इसतरह के कितने परीक्षण स्वामीजीने किए होंगे। अलखनन्दा के पास बर्फीली चट्टानो मे कितने कष्ट सहे होगे, पता नही सर्दी भूख से व्याकुल उस सत्याग्रही को कितनी-कितनी कठिनाइयो से गुजरना पडा होगा। उन कठिनाइयो का परीक्षणो का बहुत सुन्दर फल हमें मिला उनकी अमर कृति सत्यार्थप्रकाश के रूप मे।

तो सत्य के उस पुजारी को 'सत्यमेव जयन्त नानृतम के सिद्धात पर अटल विश्वास था और इसी विश्वास के साथ उन्होंने आर्य समाज चौथा नियम दिया। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। 'वे' प्रत्येक आर्य समाजी को सत्याग्रही' देखना चाहते थे। सम्प्रदायवादियो की तरह कभी उन्होने नही कहा कि मेरा वाक्य ब्रह्म वाक्य है। बल्कि उनका आग्रही यही रहा कि मेरे लिखने का प्रयोजन सत्यासत्य का निर्णय करना है। मजहब मे अक्ल की दखलन्दाजी नही वाली बात वे कभी मानने को तयार न थे। इसीलिए तो उन्होंने सब तथाकथित धार्मिक ग्रंथों का साराश बता-बता कर उन ग्रंथो की सत्यता का दिग्दर्शन कराया।

(क्रमश.)

भूल सुधार

'आर्य समाज की विजय सामाजिक क्रान्ति' मे लडकी की आयु १६ साल की बजाए १८ साल की प्रकाशित हो गई है। पाठकगण १८ साल की बजाए १६ साल पढे। धन्यवाद —करनैल

फार्म समाचार

ज्वार की अधिक पैदावार सिफारिश किए गए तरीके

ज्वार की अधिक पैदावार लेने के लिए उचित फासला रखना और बीज तथा उर्वरक उचित मात्रा मे डालना जरूरी है। यह गुजरात के दीसा कृषि अनुसन्धान केन्द्र मे किए गए अध्ययनो से पता चला है।

अध्ययनो मे कतारों के बीच कम कम फासला रखने के मुकाबले ४५.७ सेंटीमीटर रखना अधिक उपयुक्त पाया गया। फी हैक्टर १८ किलो बीच की मात्रा और फी हैक्टर ११२ किलो कल्शियम अमोनियम नाइट्रेट तथा इतना ही सुपरफास्फेट डालने पर ज्वार की सबसे अधिक पैदावार मिली और खर्चा भी सबसे कम हुआ।

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, ६ जुलाई १९६९ [अंक २७

एक ही पथ

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी भारत के पुराने राजनीतिक नेताओ मे गिने जाते है। उनकी कई बातो से मतभेद हो सकता है। किन्तु कई बार वह बडे काम की बात कहते व लिखते हैं। वयोवृद्ध भी हैं तथा ज्ञानवृद्ध भी। लेखक भी और वक्ता भी हैं। भारत के एक राजनीतिक दल के जन्मदाता भी है। अभी-अभी उन्होने मद्रास मे एक उतम एव स्वीकारने योग्य बात कही है जिस का भारत की पुरातन परम्परा के साथ बडा गहरा सम्बन्ध है। इस देश की सस्कृति का मौलिक सिद्धात है। आज के राष्ट्रीय जीवन के चारो ओर से अशातमय वातावरण को देखते हुए उन्होने अपने एक भाषण मे कहा कि इसे दूर करने के नानाविध प्रयत्न किये जा रहे है—परन्तु कुछ भी नही बन रहा। इसका कारण यह है कि ये सारे प्रयत्न बेकार है। इन से कुछ भी नही बनने का। पत्तो को पानी देने के समान है। पत्तो को सीच कर किसी भी पौधे या पेड को हरा भरा नही बनाया जा सकता। उसके मूल को सीचना होगा। सारा जीवन ता मूल से उसे मिलता है। यही बात राष्ट्रीय जीवन की हे।

इतने साधनो का प्रयोग किया जा रहा है, इतनी पुष्कल राशि व्यय हो रही है और इतनी विशाल योजनाए प्रस्तुत की जाती हैं—किन्तु इतने बर्षों के बाद भी राष्ट्र का जीवन शान्तिमय क्यों नही बन रहा। प्रतिदिन अधिक मे अधिक अशान्त क्यो हो रहा है। जीवन को सुखी बनाने के लिए कितने और कैसे-कैसे नवीन ज्ञान-विज्ञान के आधार पर साधनो का भण्डार जुटाया जाता है—फिर भी मानव समाज का रोगी अपने रोग से मुक्त क्यों नही हो पाता? इसका कारण यह है कि इलाज गलत है। भौतिकवाद का बढ़ावा दिया जा रहा है। भौतिकता की वस्तुए समेटी जा रही हैं। इससे साथ प्यार बढाया जाता है जीवन का मान दण्ड ही भौतिक वाद बन गया है। अध्यात्म वाद का सर्वथा बहिष्कार किया जाने लगा है। जिस आध्यात्मिकता से सारे जीवन मे शान्ति लाभ मिलना था—उसे दूर कर दिया गया है। सभी कुछ भोगवाद को मान लिया गया है। इसीलिए व्यक्ति हो या राष्ट्—कभी शान्ति नही प्राप्त की जा सकेगी। भोगो का अपना सीमित स्थान है—जहा पर ये समाप्त हो जाते हैं उससे आगे अध्यात्मवाद चलता है।

भारतीय जीवन मे भौतिकवाद को कम करके उसके स्थान पर अध्यात्मवाद व नैतिकता को देना होगा। तभी वर्तमान अशान्ति का सारा वातावरण बदलेगा। वर्ना और कोई भी जीवन-पथ नही है।

इस भाव के विचार जो श्री राजगोपालाचार्य जी ने व्यक्त किए हैं। भारतीय ऋषियो के विचारो के आधार पर ही रखे। आर्यसस्कृति के दर्शन हो या उपनिषदे—सभी ने पुरातन युग से ही वेद का आधार लेकर इसी तथ्य का दर्शन किया था—अपने अनुभूति भर विचारों का प्रतिपादन किया था। वेद के अश्वत्थे वो निषदनम् या यत् किंच जगत्या जगत—अन्धन्तम प्रविशन्तिये सम्भूतिमुपासते—आदि मन्त्रो को आधार मानकर उपनिषदो मे कोरे भोगवाद की निस्सारता को व्यक्त किया था। भौतिकवाद को विरोचनवाद का नाम दिया था। कठोपनिषत तो है हो इसी विवेचन का अमर सन्देश—न वित्तेन तर्पणीया मनुष्य'—जरयन्ति तेज.—कहकर ऋषि ने कमाल कर दिया। महात्मा याज्ञवाल्क्य का मैत्रेयी को दिया गया उपदेश सुनहला जीवन अध्याय है—जो कि विश्व शान्ति के लिए अनुपम थाती है। भारत ने अपने पुरातन युग मे ज्ञान-विज्ञान मे बडी भारी उन्नति की थी—किन्तु भौतिकवाद के मस्त हाथी पर अध्यात्मवाद का अंकुश सदा बनाये रखा। तभी सारे धरातल पर जीवन को शान्ति प्राप्त थी।

आज का सारा जीवन अशान्त इसीलिए है कि इस समय कोरे भौतिक पदार्थों से ही जीवन सुख की आशा की जाती है। उसी के साधनो को जूटाने मे सारा दिन मनुष्यो की होड लगी हुई है। इन से तृप्ति न कभी हुई है और न होगी ही। पश्चिम के ससार ने भोगो की भक्ति का सब कुछ देख लिया है। अब उनकी तो आखे खुलने लगी हैं। उनको अब इन भौतिक पदार्थों से घृणा होती जा रही है। अध्यात्मवाद की तलाश मे भारत की ओर भागने लगे है। किन्तु खेद तो यह है कि भारत की जनता भूखे मनुष्य की भान्ति भोगो मे लिप्त होने की ओर दौडती जाती है। गत २२ वर्षो मे भारतीय जीवन मे भोगवाद बहुत बढ गया है। यही कारण है कि आज सारे राष्ट्रीय जीवन मे व्याकुलता है, अशान्ति है, नैतिकता गिरती जाती है। उसे बदलना होगा और कोई मार्ग ही नही है। यही केवलमात्र जीवन की शान्ति का एकमात्र पथ है—

—त्रिलोकचन्द्र

चरित्र निर्माण की ओर

भारतीय सेना के माननीय सेनापति श्री कुमार मगलम् अपने उत्तरदायित्व कार्यभार से अभी सेवामुक्त हो गए। उन्हने अपने पहने पहिले पत्र प्रतिनिधि सम्मेलन मे आज के युवक-वर्ग के बारे मे एक आवश्यक एव बडे ही महत्व से भरी हुई बात कही कि इस समय भारतीय युवक-वर्ग के चरित्रनिर्माण की ओर ध्यान नही दिया जाता। यही कारण है कि आज की युवा पीढी हमारे लिए चिंता का विषय बन रही है। आए दिन हमारे युवको मे यह जितनी भी गडबड चलती है। उनमे असन्तोष की लहर उठती है तथा तोडफोड के कार्य चलते रहते हैं—इसकी ओर विशेष ध्यान दिया जाए तो इसके मूल मे एक ही बात काम करती है कि उनमे चरित्रनिर्माण की कमी है। शिक्षण का प्रबन्ध है पर उसमे भी चरित्र बनाने की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। पुस्तके पढना पढाना दूसरी बात है तथा चरित्र निर्माण और बात है। सेना के जवानो मे इसकी ओर विशेष ध्यान है तभी तो हमारे ये वीर जवान राष्ट्र की निष्ठा वाले हैं। कितने महत्व की तथा अनुभव से भरी हुई हमारे सेनापति जी ने बात कही हैं आज हमारी यह युवा पीढी जिसने कल भारत बनना है। सारे राष्ट्र का विविध कार्य भार सम्भालना है। इस समय किस ओर भागी जाती है। साधारण-सी बात पर अपन ही शिक्षण सस्था के कीमती पदार्थों को तोड-फोड कर रख देती है। आग लगा देती है। अपने ही मान्य अध्यापक वर्ग व आचाय जनो का भी तिरस्कार करने मे भी सकोच नही करती। राष्ट्र की सम्पत्ति की क्षति करके रख देती है। क्या विद्या यही सिखाती है। विद्या से भी तो किसी के भी जीवन मे विनय-नम्रता आ जानी चाहिए। आचार्य को देवता मान कर उस का सम्मान किया जाए, किन्तु सच्ची बात यह है कि जिस समय विद्या के बनी और कोरी किताबी विद्या ही रह जाती है—उसमे मर्यादा व विनय की भावना की सुगन्धि निकल जाती है तो कागजी पुष्पो की भान्ति रह जाती है। चरित्र निर्माण भारत परम्परा का सब से सुन्दर मौलिक सिद्धान्त है—जिसमे जीवन मे निखार आता है। आचार्य वसिष्ठ ने राज कुमार राम आदि को बनाया, गुरु सान्दीपन ने कृष्ण को बनाया वेद व्यास ने जैमिनि आदि शिष्य बनाए, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का जीवन बनाया। समर्थ ने वीर शिवा को बनाया गुरु विरजानन्द ने शिष्य दयानन्द का निर्माण किया, परमहस रामकृष्ण ने विवेकानन्द जैसे शिष्य बनाए। इस युग मे महात्मा हसराज और स्वामी श्रद्धानन्द न अपने शिष्य बनाए—कितना काम किया इन निर्मित जीवन के युवक वर्ग ने। इस समय सब से बडा आवश्यकता यहा है कि आज की युवा पीढी का चरित्र निर्माण किया जाए। इस दिशा मे इस समय जीवन गिरावट की ओर जा रहा है। यदि इस प्रवाह को अभी से रोकने का प्रयत्न न किया गया तो वातावरण मे बडी अशांति फैलती जाएगी। समय है कि युवक वर्ग मे नैतिक शिक्षा देने का प्रबन्ध करके उसे चरित्र निर्माण की दिशा मे मोड दी जाए। इसके बिना देश का भविष्य अन्धकारमय होता जाएगा। समय रहते सरकार को देखना होगा ताकि यह युवा पीढी भारत के भाग्योदय का उज्ज्वल पक्ष बन सके।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

मानव जीवन क्या है ?

श्री पं. वेदप्रकाश विद्यावाचस्पति सि. शास्त्री, आर्यसमाज हिसार

चाहे प्राचीनकाल के विद्वान हो या अर्वाचीन अथवा बडे से बडे बडे विज्ञानवेत्ता। सभी के सम्मुख यह प्रश्न सदैव से रहा है कि आखिर यह मनुष्य जीवन है क्या ? विभिन्न दार्शनिको, विद्वानो, अध्यात्मवेत्ताओ ऋषियो, मुनियो और आधुनिक विज्ञान वेत्ताओ ने विभिन्न प्रकार से मानव जीवन का विश्लेषण किया है।

धर्मराज युधिष्ठिर जिस समय भीष्मपितामह के पास गए और उन से यह प्रश्न किया कि इस ससार के अन्तर श्रेष्ठ क्या है ? इसके उत्तर मे भीष्मपितामह बोले—

'गुह्य हि तदिद ब्रवीमि नःह
मानुषात् श्रेष्टतर हि किञ्चित॥

अर्थात मैं तुम्हे बडे ही रहस्य की बात बताता हू कि मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ भी नही है। यह है मनुष्य के जीवन का महत्व। पशु और पक्षियो के जीवन को किसी ने भी श्रेष्ठ नही कहा। यद्यपि बहुत से पशु और पक्षी अपनी विशेषताओ के कारण सर्व प्रसिद्ध है। मनुष्य के नयनो की तुलना करनी हो तो मृग के नयनो से करते हैं, भगवती सीता का तो नाम ही मृग नयनी था। नाक की उपमा तोते की नाक से दी जाती है, शक्ति मे शेर की उपमा दी जाती है। मोर की सुन्दरता का तो कहना ही क्या ? यहा तक कि वह राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है। कहने का तात्पर्य वह कि मनुष्य से पशु-पक्षियो मे विशेषताए अधिक अधिक दृष्टि-होती है परन्तु इतना होते हुए भी मनुष्य को श्रेष्ठ क्यो कहा—

'धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीन. पशुभिः समान: ॥'

मनुष्य मे धर्म की अधिकता होने के कारण ही वह विशेष है वरन् उसमें और पशु मे कोई भेद नही। मनन-शील होने के कारण ही वह मनुष्य कहलाता है।

परन्तु मनुष्य इस बात को भूल जाता है और खाने-पीने, घर बनाने और शरीर सजाने मे ही अपने कार्य की इति श्री समझ लेता है। इसके अतिरिक्त वह अपना कोई भी कर्त्तव्य नही समझता। इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करता हुआ वह यह समझ लेता है कि हम दिन प्रतिदिन बडे होते जा रहे है, आयु बढती जा रही है लेकिन वास्तविकता यह है कि—

जेर१ गर्द२ उम्र अपनी
दिन बदिन कटती गई।
जिस कदर बढते गए
हम जिन्दगी घटती गई॥

एक अन्य कवि ने भी कहा—

गाफिल तुझे घडियाल
यह देता है मुनादी।
गर्दूं ने घडी उम्र की
इक और घटा दी॥

ऐ मनुष्य ! सोच और विचार कर अपना जीवन बिता कहीं यह यूं ही न चला जाए। अनेक शुभ कर्मों के पश्चात-कही यह मनुष्य तन मिला है। इसे तो देव पुरी अयोध्या कहा गया है, इसे ब्रह्मपुरी भी कहते हैं। इतना होते हुए भी उसके सामने यह प्रश्न बना रहता है कि मानव जीवन क्या है ?

एक स्थान पर बहुत बडी विद्वत सभा हो रही थी। बडे-बडे मनीषी, विचारवान लोग उपस्थित थे। उनमे भी मनुष्य जीवन पर ही विचार चल रहा था। उनमे से एक ने कहा मानव जीवन एक युद्ध क्षेत्र है। मनुष्य हर घडी युद्धरत रहता है, कभी प्राकृतिक शक्तियो के साथ युद्ध करता है तो कभी इच्छाओ के विरुद्ध और कभी देश के लिए। कभी परिवार के लिए लड़ता है तो कभी अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार के विरुद्ध कदम उठाता है। उसके अपने ही अन्दर बुरे संकल्प और बुरे विचार उठते हैं उनसे भी तो वह युद्ध ही करता है। कभी आसुरी प्रवृत्तियां प्रबल हो उठती है और कभी दैवी। निरन्तर युद्ध चलता ही रहता है और यह तब समाप्त होता है जब मनुष्य के जीवन का अन्त हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, धर्मवीर पं. लेखराम आदि विद्वान अज्ञान, अविद्या, अशिक्षा, अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध सम्पूर्ण जीवन लडते रहे।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती मृत्यु शैय्या पर पडे थे। अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी,अन्तिम घडियां गिन रहे थे। लोगो ने पूछा—स्वामी जी और कोई इच्छा है? स्वामीजी ने स्वीकार-आत्मक उत्तर दिया। लोग परस्पर एक-दूसरे को देखने और सोचने लगे—देखो स्वामी जी की अन्तिम श्वास चल रही है, सन्यासी हैं फिर भी इच्छाए उसी प्रकार बनी हुई हैं, तृष्णा अभी तक नही गई। इतना होते हुए भी शिष्टाचार के नाते कहा—कहिए स्वामिन् ! क्या इच्छा है ? स्वामी जी ने कहा—अन्य मतावलम्बियों से कह दो कि दर्शनानन्द मर रहा है। यदि अब भी वैदिक धर्म के प्रति कोई शंका हो तो निवारण कर लें। बाद में यह न कहे कि मेरी अमुक शका तो रह ही गई। यह था सघर्ष ! अन्तिम श्वास तक अज्ञान के विरुद्ध लड़ते रहे। इसलिए जब यह जीवन समाप्त होगा तभी यह जीवन-सघर्ष भी समाप्त होगा। (क्रमशः)

१ नीचे २. आकाश

गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय हरिद्वार

गुरुकुल कागडी, हरिद्वार में नये नये (६ से १० वर्ष तक की आयु के) ब्रह्मचारियो का प्रवेश १ जुलाई १९६९ से आरम्भ होगा। शिक्षा निःशुल्क। सब विषयो की शिक्षा-आश्रमवास। विशेष देख-रेख। सीधा-सादा भारतीय जीवन। कडा अनुशासन। एक-सा रहन-सहन प्राकृतिक, सुन्दर स्वास्थ्यप्रद वाता-वरण। सात्विक भोजन। पालन-पोषण का साधारण व्यय। उपाधिया सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। नियमावली मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कागडी हरिद्वार (जि० सहारनपुर) से मंगावें। —मुख्याधिष्ठाता

(पृष्ठ ३ का शेष)

भारत केसरी चन्दगी राम

भारत केसरी वीर चन्दगी राम जी इस समय हमारे भारत की विभूति हैं। इन पर जितना भी गर्व किया जाए उतना ही थोडा है। हमे आर्य जनता को यह समाचार देते प्रसन्नता होती है कि यह विभूति भी हमारे दयानन्द टैक्नीकल कालेज जालन्धर की देन है। गत दिनो जब हमे अपनी सभा के मान्य मन्त्री डा० वेदीरामजी शर्मा एम० ए० पी० एच० डी० से पता चला कि भारत केसरी वीर चन्दगी राम जी ने डाक्टर जी को श्रद्धा से नमस्कार करते कहा कि यह सारा तो आपका तथा मान्य प्रिंसिपल जी का शुभाशी है आपके कालेज जालन्धर मे रहकर ही तो मैंने यह शक्ति अर्जित की है। तो हमारा सिर गौरव से ऊचा हो गया। कालेज ने कितनी विभूतिया दी। विस्तार से फिर लिखा जाएगा—

बीमारी के कारन

मैं डेरा आर्य समाज महरौली देहली की कथा जलसे पर गया। वहा टायफायड बुखार हो गया। बीमारी के कारण जगत का लेख न लिख सका। प्रेमी पाठको को कमी नही रही। कमजोरी बड़ी शरीर में हैं। फिर भी आपकी सेवा में प्रस्तुत है। —सम्पादक

मानव एवं मानवता

(श्री बनवारी लाल 'सहदेव' काहुनोवान)

यदि इस प्रश्न का उत्तर मांगा जाए कि पहले मुर्गी बनी या पहले अण्डा बना ? निश्चय ही प्रभु की लीला देख कर हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इसी प्रकार मानव और मानवता दोनों की परिभाषा देते समय वही उलझन पडती है जो ऊपर वाले प्रश्न का उत्तर देते समय मानव असमजस में पड जाता है। इसी प्रकार मानव और मानवता दोनो ऐसे है कि मानव के बिना मानवता नहीं और मानवता के बिना मानव नहीं। आत्मा को परम-आत्मा और मानव को भगवान (भाग्य वाला) बनाने वाली एक ही मंजिल हैं जिसे हम मानवता कह सकते हैं और दूसरी तरफ ऐसा जीव जिस मे मानवता है वे मानव कहलाने योग्य है। मानवता के बिना मानव को मानव कहना यह बिल्कुल आधारहीन है। वास्तव मे मानवता की शाखाए यानि सचाई, सेवाभाव, अहिंसा, सहनशीलता, संयम, उपकार, मिल-जुल कर रहना, किसी की आत्मा को दुःख न देना इत्यादि यह सब हमारे ऋषियो मुनियों ने मानव के गुण बताए हैं। यदि हम इन गुणो को अपने में नही रखते तो हमे मानव कहलाने का हक नही है। तभी तो वेद भगवान मे कहा भी गया है कि मनुर्भव अर्थात् मानव बनो। वेद भगवान ने कितनी सुन्दर मजिल का आह्वान् किया है परन्तु हम अपनी मजिल के वास्तविक रास्ते से पथ-भ्रष्ट हो चुके हैं। यही कारण है कि हम सत्य, अहिंसा, सेवाभाव, उपकार, सहनशीलता इत्यादि को त्याग कर झूठ, धोखा, अत्याचार अनाचार, भ्रष्टाचार और दौलत की सहायता लेकर खुशी को प्राप्त करना चाहते हैं।

परन्तु इस रास्ते पर चलते हुए हम असली प्रसन्नता को प्राप्त नही हो सकते। जैसे ही हम सुख की ओर भागते हैं, दुःखो मे फसते जाते हैं। जैसे कि एक मकड़ी अपने सुख के लिए जाला बनाती है और स्वय उसमें फस जाती है। मकड़ी सुख को प्राप्त करने की बजाए दुःख मे पड़ जाती है जब तक सत्य और अहिंसा के हम शत्रु हैं—हम मकड़ी जैसे स्वय बनाए हुए जाल को तोड़ नही सकते। आज के युग में तो सत्य कहने वाले को पागल भी कहा जाता है। आजकल तो सब तरफ झूठ का बोलबाला नजर आ रहा है। वास्तविकता को त्याग-कर हम अनाचार की ओर जा रहे हैं। परम-आनन्द को त्यागकर बुराई को धारण कर रहे हैं। विजय को त्याग कर पतन को अपना रहे हैं। किसी को सुख देने की बजाए कष्ट देकर खुश होते हैं। अन्त मे हम यही कहेंगे कि हम अपनी पुरातन संस्कृति को त्याग कर विदेशी ढाचे मे ढलना चाहते हैं।

यही कारण है कि आजका विद्यार्थी निराश हो चुका है। अराजकता व असन्तोष के महासागर मे बढता हुआ नजर आ रहा है इसका उपचार तो हमारे विद्वान-जन ही कर सकते हैं।

आज के वातावरण को देखकर बहुत हैरानी होती है कि आखिर हमारा बनेगा क्या ?

इस टैरालीन के युग मे हमारी दौड अपनी बाहरी सुन्दरता बडाने में लगी रहती है तग कपडे पहना, नये ढंग से बालो को सवारना, नये-नये ढग से अपनी चाल को बनाना हम अपनी विशेषता समझते हैं। कितना अच्छा युग था वह। स्वामी दयानन्द जी महाराज एव स्वामी विवेकानन्द जी कितने साधारण वेश-भूषा मे रहा करते थे। हमारे अमर शहीद प० राम प्रसाद 'बिस्मिल' कितनी सादगी को धारण कर अपनी शहादत को भारत माता के इतिहास मे एक चिरस्थाई स्मरणीय विषय बना कर हम से जुदा हुए। सही रूप मे मानवता को अपना-कर सच्चे मानव बने। परन्तु आज की तरुण-क्राति उल्ट दिशा की ओर जा रही है।

भारत की धरती ऋषियो-मुनियों की पवित्र धरा है। आकाशीय वायु-मण्डल की ओर जब चन्दा की एक एक किरण रात को पलो मे और वृक्षो मे गुजर कर धरती के आवरण पर पडती है तो नव-प्रभात की शुभ-बेला मे पक्षी-गण भी मानवता का सन्देश देते हैं। वह देश कितना भाग्यशाली है। जिसकी जनता मानवता के अर्थों को समझ कर मानव का सही रूप धारण कर लेती है। हमारा मानव समाज एक उज्जवल समाज का रूप धारण कर सकते हैं बशर्ते कि हम मानवता के सन्देश को समझ सके।

आक के पौधे की शिकायत

[श्री पंडित दौलतराम जी शास्त्री अमृतसर]

कवि लोगो ने मेरी बहुत करी बदनामी—
मैंने तो उनके नही कोई माह मारे।
किसी दुष्ट को जब देनी हो उपमा कोई—
तो आक वृक्ष की देते विना विचारे॥

(१)

वे कहते ग्रीष्म मे सब पौधे मुरझाते—
जलती सिकता मे आक हरा रहता है।
सत्पुरुष अन्य को गर्म देख घबराता—
का पुरष आक शम खडा अडा रहता है॥

(२)

कवि तो क्या ! कविराज जानते मुझ को—
आयुर्वेदिक ग्रन्थो ने गुण मेरे गाये।
जब विसूचिका डायन का होता है हल्ला—
मम पुरुषो ने मृत कल्पो के प्राण बचाये॥

(३)

मूड काट ले शीघ्र डंक पर दूध लगा दो—
नही शोध को रचक आगे बढने देगा।
बदहजमी की कितनी सेना करे चढाई—
एक बीज ही मेरा उसे न लडने देगा॥

(४)

घोरघाम मे मस्त रहूं यह दोष नही है—
कठिनाई सह सकने हैं कोई महा तपस्वी।
लाजवती मैं नही अबल सतान जने जो—
ऊर्द्ध बाहु कर खडा रहू इसलिये यशस्वी॥

(५)

शिक्षा संकेत

कोरा मानव नही मान का होता भूखा—
अन्दर मे सद्भाव प्रकट हो कितना रूखा।
रूपवान् भी बेर गले में करे खराबी—
हरे कष्ट के दोष मुनक्का खाइये सूखा॥

मूली में उर्वरक

पत्तियों पर छिड़कना फायदेमंद

भारतीय कृषि अनुसन्धानशाला नयी दिल्ली के अनुसार सिफारिश की गयी उर्वरक की आधी मात्रा पत्तियो पर छिडकने से मूली की फी हैक्टर ६८५ क्विटल अतिरिक्त पैदावार मिलती है।

परीक्षण मे मूली की जापानी किस्म बोयी गयी थी।

छिडकने के लिए यूरिया, तीन गुनी सुपरफास्फेट और म्यूरिएट आफ पोटाश उर्वरक मिला कर घोल बनाया गया। उसका छिडकाव फसल बोने के २७ दिन के बाद मे पाच दिन के अन्तर मे तीन बार मे किया गया।

पत्तियो पर छिडकाव करके फी हैक्टर ५८५ रुपए का अतिरिक्त फायदा होता है।

डी.ए.वी. कालेज जालंधर का एम.ए. का शानदार परीक्षा परिणाम

डी० ए० वी० कालेज जालन्धर का एम ए का परीक्षा परिणाम इस वर्ष भी अति उत्तम रहा। कालेज की कुमारी कांता ने संस्कृत एम ए (भाग १) मे, २१६ अक लेकर पजाब भर मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।

एम ए संस्कृत (भाग १) मे सुनीता कुमारी ने २५१ अक लेकर पजाब मे तृतीय स्थान प्राप्त किया।

रजिस्टर्ड नं० पी० १२१

दयानन्द कालेज हिसार

शानदार परीक्षा परिणाम

अपनी परम्परा के अनुकूल दयानन्द कालेज ने इस वर्ष भी परीक्षा परिणामो में भव्य सफलताए प्राप्त की हैं।

प्री ईन्जीनियरिंग :

★ रघुनन्दन गुप्ता ने ५३३/६५० अक लेकर विश्व विद्यालय मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।

★ नरेन्द्रकुमार और सुधीर बेरी ने विश्व विद्यालय की योग्यता सूची मे स्थान प्राप्त किया।

★ कालेज ने १० प्रथम श्रेणिया प्राप्त की जोकि हरियाणा मे सबसे अधिक सख्या है।

★ कालेज का परीक्षा परिणाम ७२.४% है जबकि यूनिवर्सिटी का ४६.३% है।

प्री मैडीकल :

★ रामबिलास से ५००/६५० अक लेकर विश्वविद्यालय मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

★ अशोककुमार गुप्ता ने ४८८/६५० अंक लेकर विश्वविद्यालय मे छटा स्थान प्राप्त किया।

★ प्रमोद अरोडा और कृष्णलाल जागल ने योग्यता सूची मे स्थान प्राप्त किया।

★ कालेज ने २० प्रथम श्रेणिया प्राप्त की जोकि हरियाणा मे सबसे अधिक सख्या है।

★ कालेज का परीक्षा परिणाम ७२.५% है जबकि यूनिवर्सिटी ४२% है।

टी डी सी पार्ट सैकिण्ड (साइंस)

१ एक छात्र मैरिट लिस्ट मे आया।

२ चार छात्रो ने प्रथम डिवीजन प्राप्त की।

कालेज का परीक्षा परिणाम ८७% रहा जबकि यूनिवर्सिटी का ६७% है।

मन्त्री —

आर्य समाज

हिसार।

प्रवेश सूचना

दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज, जालन्धर

उपवैद्य (PHARMACIST) श्रेणी के एक वर्षीय कोर्स के लिए विद्यार्थियो के प्रार्थनापत्र १० जुलाई १९६९ तक निमन्त्रित हैं। प्रवेश के लिए कम से कम योग्यता हिदी के ज्ञान सहित मिडल, कोर अथवा मैट्रिक पास होना चाहिए। अच्छे अक लेकर उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी को आयुर्वेदाचार्य जी० ए० एम० एस० कोस मे लेने पर विचार किया जा सकता है बशर्ते कि उक्त विद्यार्थी की बेसिक योग्यता कोर अथवा मैट्रिक साईस अथवा सस्कृत अथवा हाईजीन फिजालोजी सहित हो। शिक्षा के सब साधन उपलब्ध है। नियमावली तथा प्रार्थनापत्र केवल २ रुपये मनीआर्डर प्रिंसिपल के नाम भजकर प्राप्त कर सकते है। विद्यार्थी की आयु १.७.६९ को १६ वष होनी चाहिए।

प्रिंसिपल

कन्या महा विद्यालय जालन्धर नगर

प्रवेश सूचना

निम्नलिखित श्रेणियों का दाखिला ७ जुलाई १९६९ से आरम्भ होगा और बिना लेट फीस १५ जुलाई १९६९ तक चलेगा।

१ प्री यूनिवर्सिटी (आर्टस, फाईन आर्टस तथा साईस ग्रुप), २ प्री मैडीकल, ३ बी ए/बी एस, सी (तीन वर्षीय कोर्स), ४ एम ए प्रथम तथा द्वितीय भाग (सगीत, हिंदी और अग्रेजी)

पूरी जानकारी के लिए कालेज का प्रास्पैक्टस २ रुपए या २.५० रु. का पोस्टल आर्डर भेजकर प्राप्त किया जा सकता है।

प्रिंसीपल

आवश्यकता

गुरुकुल विद्यालय आश्रम मे ब्रह्मचारियों के साथ रहने के लिए शिक्षित आर्यसमाजी अधिष्ठाताओंकी आवश्यकता है अतिरिक्त आवास तथा भोजन निशुल्क होगा इच्छुक व्यक्ति शीघ्र आवेदन करें।

आचार्य गुरुकुल कांगडी,
सहारनपुर (U P)

वैदिक साहित्य के विद्वान् रचि० राजमित्र राजरत्न आत्मारामजी अमृतसरीकी पुस्तकें

वैदिक संस्कारमाला

अन्नप्राशन निष्क्रमण सस्कार २५ पैसे। नामकरण सस्कार १६ पैसे। कर्णवेध सस्कार ३७ पैसे। उपनयन सस्कार ७५ पैसे। वेदारम्भ सस्कार १-५० पैसे। कुम्भमुनि ज्ञानामृत १.५० पैसे। चीन की सस्कृति १-५० पैसे। बालोद्यान पद्धति का गृहशिक्षण १-५० पैसे। आलमबीर के पत्र ७५ पैसे। मेरी योरुप की यात्रा स्व० सोमानी १) रुपया। गीतासार सप्तम सस्करण ७५ पैसे। त्रिदेवनिरूपण ३१ पैसे। हिंदुस्तान भाषा कविता में शुभ सवाद ३७ पैसे। महर्षि दयानन्द की आत्मकथा १३ पैसे। वैदिक वीर गर्जना ७५ पैसे। धर्म की उत्पत्ति और विकास २) रुपए।

श्री आचार्य शिवपूजनसिह कुशवाहा 'पथिक M A रचित उत्कृष्ट ग्रन्थ अदभुत वैज्ञानिक जादू विद्या कौशल मू० रु० ५। लडखडाते जीवन ५० पै० (उपन्यास) अथर्ववेद की प्राचीनता ३७ पै०। भारतीय इतिहास की रूपरेखा पर एक समीक्षात्मक दृष्टि २५ पै०। आर्य समाज के द्वितीय नियम की व्याख्या ५० पै०। महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्यानुशीलन रु०१)। भारतीय इतिहास और वेद १९ पै० आर्यसमाज मे मूर्तिपूजा भ्रान्ति निवारण ३१पै० उपनिषदों की उत्कृष्टता १३ पै० वैदिक एज पर समीक्षात्मक दृष्टि ७५ पै० पाश्चात्यो की दृष्टि मे वेद ईश्वरीय ज्ञान ३७ पै०।

जादू विद्या रहस्य बीसरुपए २०, मनोवैज्ञानिक जादू विद्या के चमत्कार मू ५, बाइबल में वर्णित बर्बरता तथा अश्लीलता का दिग्दर्शन ३१ पै बाईबल की विध्वसकारी शिक्षा ६ पै ईसाईमतका कच्चा चिट्ठा ६ पै पाश्चात्यो की दृष्टि मे इस्लामीमत प्रवर्तक २५ पै महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास की सारगर्भित व्याख्या ५० पै शिवलिंग पूजा पर्यालोचन २५ पै मेरी आठ रोचक कहानिया ७५ पै जयदेव ब्रदर्स बडोदा—१

साठ पैसे मे पुस्तकालय अढाई वर्ष तक **साहित्य प्रचारक** मुफ्त पा सकेंगे क्योकि डाक व्यय न्यून हो गया है। प्रथमाक से ग्राहक बने। प्रकाशक अथवा प्राप्ति-स्थान

[साहित्य प्रचारक आत्माराम मार्ग बडोदा—१]

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे   वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २८)   ३० आषाढ़ २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१३ जुलाई १९६९   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

स जनास इन्द्र :

अर्थ :—स:—वह प्रभु जनास:—हे लोगो ! इन्द्र:- इन्द्र है, ऐश्वर्यवाला है।

भाव ,—हे मनुष्यो ! वह भगवान इन्द्र है। उसके विविदनामों में इन्द्र भी उसी का प्यारा गुणवाचक नाम है। इस जड़ और चेतन जगत का जितना भी ऐश्वर्य है, भव्य भण्डार है, राज्य है—यह सब उसी का ही है। इसका एकमात्र वही स्वामी है, राजा और अधिपति है। इसलिए वह इन्द्र है। उसी महान भगवान का इन्द्र जानो और मानो। उसी की आराधना, उपासना सदा करते रहो। उसके सिवाय और कोई भी इन्द्र नहीं है। किसी और के पीछे भाग कर जीवन को बेकार मत करो। अथर्ववेद २०-३४-१

वे दा मृ त

सारे विश्व का महाराजा

ओ३म् त्वं विश्वेषां वरुणासि
राजा ये च देवा असुर ये च मर्त्ताः।
शतं नो रास्व शरदो विचक्षे
अश्यामायूंषि सुधितानो पूर्वी॥

ऋग्वेद २ मण्डल २७-१०

अर्थ:—(त्वं) आप (विश्वेषां) सभी के (वरुण) हे वरुण देव (असि) हो (राजा) राजा स्वामी (ये च)जो भी (देवा:) देवता हैं (असुर) हे प्राणों को देने वाले प्रभो ! (ये च) और जो भी (मर्त्ता:) मनुष्य हैं (शतं) सौ (न:) हमें रास्व देवें (शरद:) वर्ष की आयु (विचक्षे) देखने के लिए (अश्याम) हम पावें (आयूंषि) आयु को (सुधिततानि)भली-भांति (पूर्वी) मुख्य आयु प्रान्त करें।

इस का भाव यह है

वरुणदेव ! आप तमाम विश्व के राजा महाराजा हैं। जितने भी इस जगत में प्रकाशकारी देव हैं—जड़ या चेतन देवता हैं चाहे वे देव हैं या मनुष्य—सभी के आप स्वामी हैं, महाराजा हैं। आप असुर हैं—प्राणदाता हैं आपसे ही हम सौ वर्षों की आयु चाहते मांगते हैं। आप की कृपा से हम वर्षों की उत्तम एवं भली-भांति कार्य में आने वाली तथा प्रमुखता देने वाली स्वस्थ जीवनायु को प्राप्त करके आपके इस बिशाल विविध विश्व के विचित्र नाटक के खेलों को लगातार देखते रहें। आपकी कृपा ही चाहते हैं। आप ही तो प्राणदाता है। आयुर्दा हैं —सं.

ऋषि दर्शन

सात्वस्मिन् परमप्रेमरूपा

अर्थ:—सा—वह प्रभु-भक्ति अस्मिन—इसमें भगवान् में परमप्रेमरूपा-पूर्ण रूप से प्रेमरूप है। उसका पूरी तरह से प्रेमी बन जाना है।

भाव:—भक्ति की सब से सरल और सीधो परिभाषा मुनिवर नारद जी यह करते हैं कि भक्त का जिस समय अपने प्यारे प्रीतम से, प्रभु से पूरा प्रेम हो जाता है। मन से,वाणी से और कर्म से इन तीनों से ही जब प्रभु का प्रेमी कोई बन जाता है—तब उस परमप्रेम को, परम निष्ठा को ही प्रभुभक्ति का नाम दिया जाता है। मन में तो माया के पदार्थों से प्यार है, उनकी लालसा है केवल बाणी से प्रभु का नाम लेता है—यह प्रभु-भक्ति नहीं। प्रवंचना-मात्र है।

नारद के भक्तिसूत्र २

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०(सभा मन्त्री)   सम्पादक—त्रिलोलचन्द्र शास्त्री

मेवात में आर्ययुवक संगठन

हरियाणा-उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान शहर की सीमाओ से छूते हुए भूखण्ड को मेवात के नाम से पुकारा जाता है। क्योकि यहां पर मेव राजपूत बसते हैं इसलिए इस भूभाग को मेवात कहा जाने लगा। औरङ्गजेब के शासनकाल से पहले ये सभी हिन्दू राजपूत थे। परन्तु उसकी अत्याचारी तलवार के सामने इन्होंने चोटी कटवा लेने मे ही अपना कल्याण समझा। बाद मे ये ज्यो-ज्यो मुसलमानो के सम्पर्क मे आए त्यों-त्यो और भी कट्टर मुसलमान हो गए। यो तो सारे मेवात मे मुसलमानो की जनसख्या २० लाख के लगभग है परन्तु आज मैं हरियाणा प्रात के अन्तर्गत मेवात के इलाके की ही चर्चा करूंगा। गुडगावा जिले की दो तहसील नूह और फिरोजपुर झिरका को मेवात का अग माना जाता है। इन दो तहसीलों मे मुसलमानो की जनसख्या ४ लाख के लगभग है। १९६७ की वोटर लिस्ट के अनुसार यहा मुसलमानो के १० हजार वोट ही हैं। शेष वोट अलीगढ और मेरठ के चुनाव क्षेत्रो मे सम्मिलित करवाए हुए हैं जो कि अवैध है। नगीना इस मेवात का केन्द्र बिन्दु है। इसके चारो ओर १५-१५ मील का प्रदेश मुस्लिम बहुमत का क्षेत्र है।

यहा के मेव शरीर से स्वस्थ हैं लम्बा कद है। हाथ मे हर समय लाठी रखते हैं। मुख्य धन्धा खेती करना और पशु पालना है। स्वभाव से लडाके हैं। मरने मारने को हमेशा तैयार रहते हैं। इनके स्वभाव का इसी बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि जब शेख अब्दुल्ला मेरठ मे आए और वहा जो साम्प्रदायिक दगा हुआ उसकी सारे भारत में चर्चा हुई। वह एक पूर्व नियोजित दगा था। उस मे मेवात का प्रसिद्ध आवामी नेता मास्टर रहमत खां अपने ३०० युवक साथियों सहित शामिल हुआ था और वह वहीं पर साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर भेट चढ गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इन मेवो को कट्टरता के रग मे रगा जाने की पूरी कोशिश की जा रही है। उसका एक कारण है कि मुसलमान होने के बावजूद ये मेव हिन्दुओं की कई सामाजिक प्रथाएं नही छोड़ रहे। ये अभी होली, दीवाली मनाते हैं। दशहरे के दिन ढोल बजाते हैं। अपनी लडकियों की शादियां नजदीकी रिश्तों में नहीं करते। जिसके कारण इनके खून की पवित्रता अभी भी कायम है। मेव अपनी बहिन के बच्चो की शादी मे भात भरता है। यह भी हिन्दू प्रथा है। इस प्रकार अभी भी मेवों मे हिन्दुत्व के कुछ लक्षण दिखाई देते हैं। पहले स्वामी श्रद्धानन्द और बाद मे महात्मा हंसराज ने इस क्षेत्र में प्रचार किया था। उन्होंने कई गाव शुद्ध किये थे। अब सुनने में आया है कि मथुरा जिले की सीमा के पास का कोई गांव फिर मुसलमान हो गया है। क्योकि हिन्दुओ ने उस गाव से रिश्ते-नाते नही किये और न ही उस गांव वालो को अपने हुक्के-पानी मे शामिल किया। इस प्रकार उन पुण्यात्माओ का वह प्रयत्न भी निष्फल हुआ।

आज के सेक्यूलर स्टेट के नारे ने इन मुसलमानों के होसले और भी बढा दिए। ये चोरी छुपके आस-पास के इलाको से गऊए चुरा लेते हैं और उनका वध करते रहते हैं। हिन्दू हरिजनो पर धर्म परिवर्तन का दबाव डाला जाता है। उन्हे कई बार पीटा जाता है। वे रोटी छिन जाने के भय से किसी के सामने अपनी दर्द कहानी कहकर नही सुनाते। ऐसा केवल बड़े-बडे मौलवियो, मुलाओ के इशारे पर हो रहा है। दस-दस मुसलमानो की टोलिया पैदल एक गाव से दूसरे गाव मे इस्लाम का प्रचार करती हुई घूम रही हैं। इन्हे तबलीगी दस्ता कहा जाता है। इन तबलीगी दस्तों मे बड़े-बडे विद्वान मौलवी, हज्जी, हाफिज और नबी शामिल होते है। ये मौलवी अरब, ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान से केवल-मात्र इस्लाम के प्रचार के लिए आते हैं। एक और तो वे हैं कि विदेशो से आ-आकर हमारे यहाँ प्रचार करते हैं एक ओर हम हैं कि घर मे ही घर की देहरी से बाहर नही निकलना चाहते। कितनी बडी चुनौती है। हमें कुछ खबर भी है व नही। इन मुसलमानों ने भारत को अपना घर नही समझा। भारत के इतिहास, मर्यादा, सस्कृति को अपना इतिहास, मर्यादा और संस्कृति नहीं माना। अकेली आर्य समाज के अलावा और कोई भी ऐसी संस्था नहीं है जो कि इनके विरुद्ध आवाज उठाए। यदि कोई इन मुसलमानों को खरी-खरी सुनाता है तो उसे साम्प्रदायिक कहा जाता है। इनकी साम्प्रदायिक एवं देश द्रोहिता से पूर्ण घटनाओं को कड़वा घूंट पी कर रह जाना पड़ता है। यदि ये मुसलमान भारत हितैषी हैं तो क्यो मुल्लापुरम की मांग करते हैं? लद्दाख के मुसलमान क्यों कारगिल का अलग जिला बनवाने के लिए हड़ताल करते हैं! भारतकेसरी चन्दगी राम की विजय से ईर्ष्या करके इन्दौर में क्यो फसाद खड़ा करते हैं? क्या इन प्रश्नों का किसी राष्ट्रवादी मुसलमान के पास उत्तर है? किसी के पास नही।

मैं मेवात की चर्चा कर रहा था। पिछले दिनो प्रान्तीय आर्य वीर दल के मुख्य शिक्षक श्री सत्य पाल जी मण्डल पतिको गुडगांवके निमन्त्रणपर मेवात के क्षेत्र मे जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्होने नूह मे ५ दिन शिविर लगाया था। जिसमे मानवीय स्वामी प्रेमानन्द जी, श्री बालदिवाकर हस आदि-आदि भी सम्मिलित हुए। वही पर रहते हुए मेवात की समस्या का परिचय हुआ। यहा के आर्य युवको ने अपना एक सगठन बनाया हुआ है। जिसका नाम है 'आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात' नगीना मे इसका केन्द्रीय कार्यालय है। श्री पदमचन्द आर्य इसके महामन्त्री हैं। इकहरा शरीर-नाटा कद-और गूढ गम्भीर आकृति वाले इस युवक ने यहा मेवात मे वेद प्रचार की धूम मचा रखी है दिन और रात इसे वेद प्रचार की तडफ ही तड़फाती रहती है। कहना न होगा इस युवक ने आज मेवात को जगा दिया है। मुसलमानो की तरह ही दो टोलिया यहां पदयात्रा के लिए निकली हुई हैं एक का नेतृत्व स्वामी प्रेमानन्द जी कर रहे हैं और दूसरी का श्री चन्द्रपाल आर्य। यह दिवानो और मस्तानो की टोलियां हैं। मैंने इनसे साक्षात्कार किया था। आज जब गर्म लू चल रही हैं धरती और आकाश दोनों तप रहे हैं। कुएं और तालाब सूखे पड़े हैं। हरे-भरे जगल के जंगल मुरझाते चले जा रहे हैं। चारों ओर गर्मी-तूफान-लू-प्यास का साम्राज्य है। ऐसे में ये दयानन्द के दिवाने रेतीली धरती पर [illegible] की [illegible] वैदिक धर्म के [illegible] रही हैं। इनके थैलों में भी सामग्री सत्संग गुटका-सत्यार्थ प्रकाश-भुने हुए चने-गुड और प्याज होता है।

यही इनकी चल और अचल सम्पत्ति है जहां रात हुई वहीं ठहर गए और प्रचार कर दिया दिन निकला तो हवन किया ईश्वर भक्ति के गीत गाए और अगले ग्राम की ओर चल पड़े। किसी ने रोटी दी तो खा ली नहीं तो गुड़ और चने खाकर ऊपर से रेत मिला हुआ पानी पी लिया। यह है इनकी जीवन कहानी। ये कोई दक्षिणा नहीं लेते इसी प्रकार कई दूसरी टोलियां भी इनसे पहले प्रचार कर चुकी हैं। नूह-फिरोजपुर फिरका, सोना, पलवल होडल, वल्लभ गढ़ के आर्य पुरुष भी कई-कई दिन का समय देकर इन पद-यात्रियों में सम्मिलित हो जाते हैं। इनका इरादा है कि प्रत्येक गाव जिसकी जन-सख्या १००० है हम उसमें आर्य समाज स्थापित करना चाहते हैं। देहात के बच्चो को वैदिक धर्म से परिचित कराने के लिए शिविर लगाना चाहते हैं। हम कम से कम दो भजन-मण्डलिया और दो उपदेशक वैतनिक तौर पर रखना चाहते हैं। इसके लिए धन की आवश्यकता है। कार्यकर्त्ताओं की भी आवश्यकता है। तथाकथित नेताओं का साधुवाद भी चाहिए।

इस प्रकार के लग्नशील कार्य-कर्त्ताओं को सहयोग तो मिलना ही चाहिये। नगरों मे सफेद चादनी की छाती पर ऊचे २ मचो पर खड़े होकर सफेद ट्यूबो की रोशनी तले ध्वनि विस्तारक यन्त्र का सहारा 'भाषण' करने वाले तो अनेकों मिल आएगे। चिकनी चुपडी बातो से जनता का तालियों की गड़गड़ाहट द्वारा आशीर्वाद भी प्राप्त कर लेंगे। परंतु वास्तविक आनन्द तो तब है जब कोई प्रचारक इस पिछड़े और समस्याग्रस्त क्षेत्र को भी सम्भाले। महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस दिव्य सन्देश को गुंजाया उसे फिर गुंजाए। धन्य हैं स्वामी प्रेमानन्द जी जिन्होंने यहां अलख जगाई है। [illegible] पर स्वामी जी ने बताया कि देहली से अलवर तक मैं एक बार नहीं कई बार घूमा हूं और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार २०२६, १३ जुलाई १६६६ [अंक २८

न्याय को दबाना पाप

बच्चे की मातृ भाषा कौन सी है—इसका निर्णय सन्तान के माता-पिता को ही है। और किसी को भी नही हो सकता। सन्तान की माता या पिता अपने बच्चो को भाषा बताते या लिखाते है—वही भाषा सभी को स्वीकार्य होती है। यह सीधी सी बात है। इसमे तो कोई टेढापन नही है। दूसरे किसी को अधिकार भी कैसे हो सकता है किसी बच्चे की भाषा स्वय निश्चित करे। माता-पिता के सर्वमान्य अधिकार को और ले भी कौन सकता है? यदि कोई ऐसा करता है तो वह न्याय को दबाने का प्रयत्न करता है। न्याय को यदि किसी भी स्तर पर दबाया जाए तो इस का अर्थ यह है कि अन्याय पनपेगा। जहा न्याय को दबाया जाता तथा अन्याय को पनपने का प्रोत्साहन दिया जाता है—ऐसा राज्य देर तक नही चला करता। विधान तो ऐसा कहता है कि माता पिता अपने बच्चे की मातृ भाषा का फैसला करते है। बच्चा उसी भाषा को अपना माध्यम बनाता है।

पजाब का विभाजन हो गया। अब यहा एक विवाद चल पडा है कि सभी को प्रथम कक्षा से पजाबी पढाई जाए सच्चर फार्मूला को समाप्त कर जाए। क्यो? क्या न्याय यही है या विधान ऐसा कहता है? दोनो ही बाते गलत है। पजाब मे पजाब का प्रचार हो। इससे तो कोई इन्कार नही करता। प्रत्येक छात्र इसे पढे किंतु राष्ट्रभाषा हिंदी को दबाकर नही, पजाब मे एक ऐसा पर्याप्त सख्या मे अल्पमत है जिसकी भाषा हिंदी है। उनके बच्चे आरम्भ कक्षा से राष्ट्रभाषा हिंदी पढते हैं। यही इनका माध्यम भी होता है। सच्चर फार्मूला भी यही कहता है। पजाब के पुनर्गठन के बाद हरियाणा प्रात बना। वहा की भाषा हिंदी बन गई। किंतु वहा भी सच्चर फार्मूला उसी रूप से आज भी लागू है। माता-पिता को अपनी सन्तान को अपनी मातृभाषा में आरम्भ की कक्षा मे पढाने का वहा की सरकार ने पूरा-पूरा अधिकार दे रखा है। पजाबी की पढाई का जहा भी माता-पिता चाहे पूरा प्रबन्ध हो जाता है। न्याय भी यही कहता है। किन्तु पजाब मे न्याय को दबाने की चेष्टा क्यो होती है। यहा माता-पिता का अपनी सन्तान को जिस किसी भाषा मे शिक्षा देने पर क्यो प्रतिबन्ध लगाया जाने की बाते की जाती हैं?

पजाब मे हिन्दीभाषियो की सख्या कम नही है। चालीस प्रतिशत से भी अधिक ही होगी। अन्य गैर हिंदी भाषी प्रातो से पजाब की स्थिति सर्वथा भिन्न है। यहा पर तो प्राइवेट स्कूलो की ऐसी बडी गिनती है जो वर्षो से बरन अपने आरम्भ काल से ही हिन्दी मे शिक्षा देते चले आ रहे हैं। वहा माता-पिता के अधिकार को माना जाता है। इस बार के परीक्षा परिणामो मे भी यह बात दिन के समान स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दी लेने वाले छात्रो की सख्या बहुत अधिक है। परिणाम भी सरकारी स्कूलो से बहुत शानदार है। इस अवस्था मे फिर क्यो न्याय को दबाया जाता है। हिन्दी राष्ट्र-भाषा भी तो है। राष्ट्र की भाषा का निरादर राष्ट्र का अपमान ही तो है। हम तो केवल एक बात कहते व चाहते है कि विधान के अनुसार माता-पिता को जो यह अधिकार मिला हुआ है कि वे अपने बच्चो को जिस भाषा मे प्रारम्भ मे शिक्षा दिलाना चाहे उसी का प्रबन्ध होना चाहिए। यह प्राईवेट स्कूलो की परम्परा चलती आ रही है। हम तो यह भी चाहते हैं कि सच्चर फार्मूला के अनुसार जिस भी स्कूल मे एक कक्षा मे दस और सारे स्कूल मे चालीस छात्र यदि किसी भाषा हिंदी या पजाबी मे पढने वाले हो तो उस भाषा की पढाई का प्रबन्ध होना चाहिए। पजाब में इसलिए बेचैनी हो रही है, परस्पर कटुता बढती है क्योकि इस न्याय को दबाने की बातें की जाती हैं। कभी प्राईवेट स्कूलो को जबरी पहली से हिन्दी के स्थान पर पजाबी पढाने की बात कह कर वर्ना उनकी ग्राट बन्द कर देने की धमकी दी जाती है। कभी कुछ और कहा जाता है। याद रखिये किसी भाषा को दबा कर कोई भी उसके स्थान पर जबरी लादी जाने वाली भाषा पनप नही सकती। न उसका विकास ही हो सकता है। यहा राष्ट्रभाषा हिन्दी भी चले और पजाबी भी। बच्चे दोनो पढे। किन्तु उनको इस बात की सर्वथा छूट हो कि कौन-सी प्रथम कक्षा से पढे। उनकी अपनी इच्छा है। माता पिता को अधिकार है कि जिस मे चाह भाषा का माध्यम बनवावे। किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नही होना चाहिए। इसी आधार पर ही हमारा यह प्रान्त फूलेगा फलेगा। कटुता समाप्त हो जायेगी। इस न्याय-सगत अधिकार को कायम रखा जाये। सत्ता के आसन पर जो कि हिन्दी भाषियो के प्रतिनिधि बन कर बैठे है। उनको भी यह बात समझनी है। सत्ता सदा नही रहती किन्तु कार्य बाद भी याद आते रहते है। —त्रिलोकचन्द्र

इतिहास में पहली बार

आर्य समाज के महान् आन्दोलन को लेकर ऋषि दयानन्द सरस्वती प्रदर्शित वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे आरम्भ मे जिन दिव्य विभूतियो ने अपना जीवन लगा दिया था—उनमे श्री प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी एम ए का स्थान भी महत्वपूर्ण है। उनके फिलास्फीक लेख आज भी बडे-बडे पश्चिमी मस्तिष्को को हिला देत है। किन्तु खेद यह है कि आर्य समाज ने इस विभूति को प्राय भुलाए रखा। न तो उनका जन्म दिवस का पर्व मनाता है और उनकी स्मृति ही होती है। इनका जीवन वृत भी पूर्ण रूप से किसी ने लिखने का प्रयास ही किया है।

आर्य समाज के इतिहास मे इस ओर पहली बार आर्य नव-युवक नेता तथा बडे ओजस्वी वक्ता डा० रामप्रकाशजी **M Sc Ph D.** ने श्री प० गुरुदत्त जी एम० ए० का विस्तृत जीवन लिखकर कमाल कर दिया है। इतनी खोजपूर्ण सामग्री दी है कि इस पर भूरि-भूरि प्रशसा करने का जी चाहता है। श्री डा० रामप्रकाश जी को तो इस शानदार कृति पर पुरस्कृत किया जाना चाहिए। उनका विशेष सम्मान होना चाहिए। 'पडित गुरुदत्त विद्यार्थी' नामक की पुस्तक लिखकर बडी कमी को पूर्ण किया है। इस पर विस्तार से फिर लिखा जाएगा। —सम्पादक

जिला अम्बाला में उत्सवों की धूम

गत दो मास मे अम्बाला मण्डल के ककड, माजरा कोट, बुर्ज, फतेहगढ अम्बाला छावनी, गोबिन्द गढ, लुकन्डी, शाहपुर नवा गाव, नानपुर ठाकुरपुर मिर्जा पुर, मौघल सैदपुर शहजादपुर के नगरो और ग्रामो मे वार्षिक उत्सव बडी धूमधाम से मनाए गए उपस्थिति सतोषजनक रही। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री हजारी लाल जी, श्री बस्ती राम जी, के मनोहर भजनो और सुरीले गानो मे प्रसन्न चित हो कर लोग रात्री को बहुत देर तक बैठे रहते थे। प० नेत राम जी महोपदेशक सभा ने भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए चरित्र निर्माण राष्ट्रीय भावना, सुधार, आध्यात्मिक वाद, और जाति सघर्ष पर प्रभावशाली ओजस्वी सार गर्भित भाषण दिए। अध्यक्ष महोदय के सुप्रबन्ध से यह उत्सव हर प्रकार से सफल रहे, आर्य बन्धुओ और ग्रामो के धर्म प्रेमी सज्जनो, धनवान पुरुषो और दानी सज्जनो ने बडी उदारता से सहायता और दान दे कर सभा के कार्यकर्ताओ का उत्साह बढाया धन्यवाद।

(अमर सिंह उपदेशक)

कादियां समाचार

डी. ए. वी. हा. स. स्कूल का शानदार परीक्षा परिणाम

डी० ए० वी० हायर सकेंडरी का भाग २ का परीक्षा परिणाम अति उत्तम रहा। गुरदास पुर भर मे स्कूल ने काफी अच्छा स्थान प्राप्त किया। परीक्षा परिणाम ८२ प्रतिशत रहा इसका श्रेय प्रिंसिपल श्री दयराज जी भाटिया और उनके अनुभवी स्टाफ को है।

वेद कौर गर्ल्ज स्कूल का परीक्षा परिणाम

पिछले वर्षो की भाति वेद कौर गर्ल्ज स्कूल ने परीक्षा परिणाम मे ख्याति प्राप्त की है। मैट्रिक का परीक्षा परिणाम अति उत्तम रहा। परीक्षा परिणाम ९२ प्रतिशत रहा।

इस वर्ष गर्ल्ज कालेज के प्रागण मे डी० ए० वी० मैनेजिग कमेटी ने गर्ल्ज कालेज खोल दिया है जिसका दाखिला शुरू है।

महात्मा आनन्द स्वामी जी ने आर्य सभाओं के विवाद निपटाने का दायित्व छोड़ा

दीवान रामसरन 'पक्षद्वारा मनमानियां व वचन भंग

महात्मा जी का प्रो० रामसिंह को प्रधान पद संभालने का आग्रह

नई दिल्ली । पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती आर्य सभाओ के झगडे निपटाने के लिए उन्हे हैदराबाद आर्य महा-सम्मेलन द्वारा प्रदत्त अधिकारो को त्याग दिया है ।

उन्होने एक वक्तव्य मे कहा है कि जबकि एक पक्ष लगातार मन-



मानी कर रहा, वह नही समझते कि झगडे निपटाने के सम्बन्ध मे उन का कोई कर्तव्य बाकी रहता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि झगडे निपटाने मे दीवान रामसरनदास ने उन्हे कोई सहयोग नही दिया । महात्मा जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान प्रो रामसिह को लिखा है कि वह प्रधान के रूप मे सभा का कार्यभार उसी प्रकार सम्भाल ले जिस प्रकार सभा का चार्ज महात्मा जी को सौपे जाने से पहले सम्भाले हुए थे ।

अपने वक्तव्य मे उन्होने कहा है—सबसे पहले मैं यह निवेदन करना आवश्यक समझता हू कि मैं अपनी एक गलती का उल्लेख कर दू और वह यह कि सन्यास लेने के पश्चात् मेरा क्षेत्र वेद-प्रचार तथा योगसाधना रहा और बडी मस्ती के साथ मैं इस पथ पर चलता गया, परन्तु आर्यजगत मे एक आर्तनाद उठा कि आर्यसमाजो तथा सभाओ के पारस्परिक झगडे आर्यसमाज को कलक लगा रहे हैं मुझे नाम ले लेकर पुकारा गया कि आर्यजगत मे आग लगी है और तुम्हे 'योग साधना की पडी है' तब ला० मेलाराम जी प्रधान आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के भवन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मुखिया के महानुभावो को श्री नारायण-दास जी कपूर प्रधान केन्द्रीय आर्य-समाज दिल्ली ने निमन्त्रित किया, झगडो को मिटाने के लिए विचार हुआ और मेरे इन्कार करने पर भी सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि आनन्द स्वामी सरस्वती को सर्व अधिकार दिए जाते हैं कि वह सभाओ के झगडे निपटा दे । और सार्वदेशिक सभा तथा पजाब सभा इसी विषय के प्रस्ताव अपनी अन्तरग सभाओ से स्वीकार कराए ।

पजाब सभा ने तो स्पष्ट शब्दो मे ऐसा प्रस्ताव पारित कर दिया और सार्वदेशिक सभा ने अपने बबई के अधिवेशन मे यह स्वीकार किया कि झगडे निपटाने के सर्वाधिकार सार्व-देशिक सभा के प्रधान को दिए जा चुके है वह आनन्द स्वामी सरस्वती का सहयोग ले सकते है—परन्तु मुझे इस सम्बन्ध मे किसी ने कभी नही पूछा, हा यह सुना गया कि पजाब सभा के मुकाबले मे एक नई पजाब सभा की स्थापना कर दी गयी है । इस पग ने वमनस्य की अग्नि पर तेल का काम किया—और समस्या सुलझाने की अपेक्षा अधिक उलझ गई । तब मुकदमे बाजी बढने लगी—स्थिति अधिक गम्भीर हो गई, आर्य समाजके इन झगडो तथा अभियोगो की चर्चा आर्य जगत से बाहर भी तीव्रता से होने लगी, तब हैदराबाद मे सार्व-देशिक आर्य महा-सम्मेलन मे सबसे पूर्व इन झगडो को समाप्त करने की बात चली । इस महा-सम्मेलन मे कहा जाता है कि एक लाख से अधिक आर्य नर-नारियो ने भाग लिया । झगडे समाप्त कराने के लिए मेरे दुर्भाग्य से मुझी पर दृष्टि पडी मैंने कहा 'मेरा पथ वेद प्रचार तथा योग साधना है, परन्तु बार-बार मुझे ही पुकारा गया—मैंने कहा ऐसा यत्न पूर्व भी हो चुका है किन्तु सफल नही हुआ । इस पर सम्मेलन मे उपस्थित सभी लोगो ने स्पष्ट तौर पर यह स्वीकार किया कि मेरे ऊपर अब कोई शर्तें या पाबन्दी नही रहेगी ।

मुझे निर्णय करने का पूर्ण अधि-कार होगा । इस स्पष्टीकरण के साथ मुझे पूर्ण अधिकार देने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ ।

इसके पश्चात मैंने सब सम्बन्धित पक्षो को अदालत मे चल रहे सब अभियोग वापिस लेने के आदेश दिए जिसे सब ने स्वीकार किया, परन्तु कोई अभियोग लौटाया नही गया । बार-बार जब ऐसा हुआ तो फिर मैंने यह घोषणा की कि यदि एक सप्ताह के भीतर मुकद्दमे लौटाये न गए तो मैं तथा डा मथुरादास जी हनुमान रोड, आर्यसमाज मे आमरण-व्रत शुरू कर देंगे, तब दोनो पक्षो ने मुकद्दमे लौटाने के हस्ताक्षर कर दिये । तब प्रो० रामसिह जी के पक्ष ने तुरन्त सारे अभियोग वापस ले लिए, परन्तु दीवान रामसरनदास वाले पक्ष ने नही लिए ।

मैंने सम्बन्धित पक्षो की सम्मि-लित बैठकें बुलाई, जिन मे दीवान रामसरनदास तथा उनके सहयोगी बार-बार मुकद्दमे वापस लेने के आश्वासन देते रहे परन्तु कोई फल न निकला ।

इसी बीच मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के दोनो पक्षो मे सद्-भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से दोनो पक्षो की अतरग सभाओ को भग करके एक प्रबधकर्त्री समिति बनाकर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की प्रबन्ध व्यवस्था का सचालन शुरू कर दिया । दोनो पक्षो के वेद प्रचार विभाग का कार्य इकट्ठा करने के लिए महात्मा आनन्दभिक्षु जी को इन्चार्ज बनाकर दोनो मे कहा कि अपने-अपने उपदेशको तथा प्रचारको के नाम भेजिए—प्रो० रामसिंह पक्ष ने उस पर अमल किया परन्तु दीवान राम-सरनदास पक्ष ने पत्र का उत्तर भी नही दिया ।

दोनो पक्षो से कहा गया कि अपने कार्यालय समिति के हवाले कर दे । प्रो. रामसिंह जी ने इस आदेश को तत्काल स्वीकार कर दिल्ली का कार्यालय, स्टाफ तथा सामान सहित समिति के सुपुर्द कर दिया । परन्तु दूसरे पक्ष की ओर से मौन ही रहा ।

दोनो पक्षो से सारा हिसाब-किताब मागा गया । प्रो. रामसिंह जी के पक्ष के कोषाध्यक्ष श्री राम-नाथ भल्ला ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम एक लाख तीस हजार रुपया जमा करा कर रसीद समिति के हवाले कर दी, परन्तु दूसरे पक्ष ने उत्तर ही नही दिया ।

चू कि मैं पजाब सभा के दोनो पक्षो की अन्तरङ्ग सभाओ को भङ्ग कर चुका था इसलिये किसी भी पक्ष का कोई प्रतिनिधि सार्वदेशिक मे जा नही सकता था अत. मैंने दीवान रामसरनदास को पत्र लिखा कि आप ने जिन प्रतिनिधियो के नाम सार्वदेशिक मे भेज रखे है उन्हे सूचना दे दीजिये कि वे सार्व-देशिक की बैठक मे भाग न ले परन्तु उन्होने ऐसा नही किया । यहा मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि मैंने सार्वदेशिक मे कोई हस्तक्षेप नही किया । न मैने उनके नाम पत्र लिखा केवल दीवान जी को इस विषय सम्बन्धी पत्र लिखा ताकि प्रातीय झगडा अधिक बढने न पावे । भङ्ग हुई सभा के प्रतिनिधि हो ही नही सकते ।

६ मास व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी दीवान पक्ष वालो ने जब मुकद्दमे नही लौटाये तो मैंने महात्मा आनन्द भिक्षु जी से प्रार्थना की कि वह जालन्धर जाकर महाशय वीरेन्द्र तथा दूसरे महानुभावो को प्रेरणा करे कि मुकद्दमे समाप्त हो जाए ।

जो फौजदारी मुकद्दमा चल रहा था, उसमे यह समझौता हुआ कि सभा के कार्यालय पर पुलिस का ताला लगा हुआ है, जब वह खुलेगा तो उसका चार्ज प्रिंसिपल रामचन्द्र जावेद को दिया जाएगा । पुलिस का ताला खुला परन्तु महात्मा आनन्द भिक्षु जी को जो वचन दिया गया था उसे तोड कर दीवान रामसरनदास पक्ष के किसी एक सज्जन को चार्ज दे दिया गया । पिछले ६-७ मास से दीवान रामसरन पक्ष की ओर से इतने वचन भग हुए कि मैं निराश हो गया और समझ लिया कि यह कार्य तो होने वाला नही ।

यहा यह तथ्य भी लिखना उचित होगा कि जब सर्वसम्पति से

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यों की ज्वलन्त समस्या

आर्य परिवारों की वैवाहिक समस्याएं

(मनुदेव अभय, विद्यावाचस्पति, एम. ए. बी. एड. इन्दौर)

आर्य समाज विशाल हिन्दू-जाति का एक श्रेष्ठ एव सुरक्षित समूह है। आर्य समाज के सदस्य हिन्दू-परिवारो से ही आते हैं। उनके मानसिक पटल पर मध्ययुगीन पौराणिक सस्कार अंकित रहते हैं। कई परिवारो मे पुरुषगण आर्य समाज के सदस्य होते है कि उस परिवारो की महिलाए एव किशोर-किशोरिया पौराणिक विचारो एव पूजापाठ के अन्धकार मे भटकते रहते है। एक बार इन पक्तियो के लेखक को एक आर्य समाज मे उपदेश देने के लिए आमन्त्रित किया। यद्यपि वहा श्रोताओ की अच्छी उपस्थिति थी, परन्तु उस सभा मे न तो महिलाए ही थी और न बच्चे। इन 'पक्तियो के लेखक ने अपने व्याख्यान के उपसहार मे कहा कि शायद इस आर्य समाज के सदस्य सभी रडुए है जिनके न तो बाल-बच्चे हैं और न परिवार मे स्त्रिया ही। शाति पाठ के पश्चात समाज के प्रधान और मन्त्री महोदय पहले तो कुछ रुष्ठ हुए, परन्तु बात समझाने पर उन्ही लोगो को आत्म-ग्लानि अनुभव हुई। कहने का तात्पर्य है कि आज का आर्य समाजी बन्धु न जाने क्यो अपनी पत्नी और सन्तानो को आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के विचारो को हवा नहीं लगने देते। यदि यही स्थिति बनी रही तो आर्य समाजियो की अगली पीढी कैसी बनेगी।

द्वितीयत: प्रौढ आर्यों एव कट्टर आर्य समाजिको के परिवारो मे एक दम घोटू समस्या लक्षित होती है। आर्य समाज ने अपने जन्म काल से ही छुआ छूत एव जन्मनाजाति-पाति का मौखिक एव सैद्धान्तिक रूप को लेकर लिखित रूप मे खूब खडन किया। ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त इन सामाजिक कुरीतियो का जूडा अपने सिरो से फेंक चुके हैं। परन्तु कई आर्य परिवार के मुखिया अभी भी अपने पुत्र-पुत्रियो का अन्तर्जातीय विवाह अथवा आर्यो मे पारस्परिक वैवाहिक बन्धन स्थापित करने का साहस नहीं करते। इतना ही नहीं, आर्य-विचारो से अनुप्राणित एव संस्कारित पुत्रियो का विवाह कट्टर सनातनियो मे कर दिया जाता है। हमने तो ऐसी अनेक आर्य-पुत्रियो का गृहस्थ जीवन बिगडा हुआ देखा है, जिन्हें परित्यक्ता के रूप मे शेष जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होना पड़ रहा है। इन निरपराध आर्य पुत्रियो को उनके पालको की मूर्खता का परिणाम का भोगना पड रहा है। मेरे सम्बन्धी की एक आर्य पुत्री को केवल इस आधार पर परित्यक्ता जीवन व्यतीत करना पड रहा है कि पति-परिवार मे उससे अण्डे उबालने एव मास पकाने के लिए बाध्य किया गया। जब उसने नैतिकरूप से इसका विरोध किया तो उसके पति एव ससुरालवाले उसके पिताके यहा उसे सदैव के लिए छोड गए। मेरी एक प्रिय आर्य छात्रा को उसकी सास ने उसके शरीर पर लोहे के सरिए गर्म करके केवल इसलिए लगाए कि उसने मूर्ति पूजा करने की अपेक्षा सध्या हवन करने की बात और मूर्ति पूजा करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। यहा जीवन का मूल्य कितना महगा है यह स्पष्ट परिलक्षित होता है। क्या ऋषि दयानन्द के विचारो को ग्रहण करने एव सभ्य एव सुशिक्षित जीवन व्यतीत करना एक अपराध है? क्या हमने आर्यसमाज की सदस्यता स्वीकार कर कोई बडा भारी पाप कर दिया है?

यह सत्य है कि अन्तर्जातीय विवाह आज भी हिन्दू समाज मे एक गम्भीर समस्या है। अन्तर्जातीय विवाह हिन्दू समाज के धनिक वर्ग निम्न वर्ग मे ही सफल हुए है। मध्यम वर्गीय हिन्दू परिवारो मे अन्तर्जातीय विवाह शत-प्रतिशत असफल हुए है। केवल कुछ ऐसे युवक जिनकी सख्या उगली पर गिनी जा सकती है, वे ही अन्तर्जातीय विवाह करने मे सफल हुए है। इन पक्तियो के लेखक ने अपने गुरु स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती (पूर्व नाम राम प्रताप तितिक्षु, इन्दौर) के उपदेशा अन्तर्जातीय विवाह किया। पूज्य गुरू देव हम युवको को धूम्रपान निषेध, जातीय विवाह निषेध, आदि का उपदेश देते थे। वे अपने उपदेशो मे हम युवको को आस्तिक, देशभक्त लेखक, खद्दर धारी, हरिजनो द्वार, दलित-सेवा एव नारी जाति की सेवा एव आदर तथा अपरिग्रह के सिद्धातो के व्यवहार पक्ष पर अत्यधिक बल थे। इस का हम युवको पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

आर्य सामाजिक परिवारो मे वैवाहिक समस्या अत्यन्त जटिल एव दरूह बनती जा रही है। आर्य समाज के सदस्य बनने एव अपने आपको आर्य समाजी घोषित करने पर स्वय के पौराणिक-परिवार से बहिष्कृत होना पडता है. दूसरी ओर आर्य समाजी बन्धु भी कौटुम्बिक एव सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा नही रखते। ऐसी स्थिति एक आर्य परिवार अपना कौटुम्बिक जीवन किस प्रकार व्यतीत करे? दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आर्यसमाजी वातावरण मे पले-पोसे पुत्र-पुत्रियो का विवाह किस आर्य समाजी के परिवार से किया जाए! ऐसी स्थिति मे औसत आर्य के सम्मुख अपने पुत्र-पुत्रियो के भावी जीवन के प्रति अत्यधिक चिन्ता उपस्थित हो जाती है। इन पक्तियो के लेखक को ऐसे अनेक आर्य परिवारो का स्मरण है जिनके पुत्र-पुत्रियो योग्य आर्य वर एव आर्य वधु के मिलने के अभाव मे अविवाहित जीवन व्यतीत कर रहे है। मानो वो एक प्रकार का अभिशापित जीवन से बन्ध गए हो।

इस विषय मे मेरा एक विनम्र सुझावहै कि सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा तथा विभिन्न प्रान्तो की प्रतिनिधि अथवा उप-प्रतिनिधि सभाए मिलजुल कर कुछ योजना बनाये उस मे आर्यों की उस विषम एव भयकर समस्या के हल के लिए कोई ठोस कार्यक्रम बनाया जावे। मै यह समस्या आर्यजगत के सम्मुख इसलिए प्रस्तुत कर रहा हू जिस से आर्य जनता जो इस कष्ट से पीडित है उसे कुछ मार्ग दर्शन प्राप्तहो। ★★

चुटकले

★ एक बार की बात है कि लडके स्कूल मे पढ रहे थे। अध्यापक महोदय ने अचानक ही लडको मे मिण्ट भर मे ही दो तीन प्रश्न पूछ लिए। लडके उनका उत्तर नही दे सके। तब मास्टर जी से एक लडके ने पूछा कि आप बताए इनका उत्तर क्या हो सकता है। मास्टर जी ने कहा कि अगर मुझे इनके उत्तर आते तो मै तुम से क्यो पूछता।

★ एक बार दो शराबी रात को नशे की धुन मे जा रहे थे। एक शराबी ने जिसके पास टार्च थी और प्रकाश ऊपर की ओर पड रहा था, ने दूसरे शराबी से कहा कि क्या तुम इस प्रकाश पर चढ सकते हो। दूसरे ने कहा कि यह भी कठिन बात है परन्तु पहले तुम कसम खाओ कि जब मै ऊपर चढ गया तो टार्च का प्रकाश बन्द नही करोगे। क्योकि मेरे गिरने का बहुत खतरा पदा हो जाएगा।

महात्मा आनन्द स्वामीजी ने आर्यसभाओं के....

(पृष्ठ ४ का शेष)

मुझे सर्वाधिकार दिया गया तो मैंने दो-तीन सज्जनो को कह दिया कि मेरी अन्तरात्मा यह कहती है कि 'इस कार्य मे सफलता नही मिलेगी और ऐसा ही हुआ।'

जालन्धर की इस घटना के पश्चात मैंने उचित समझा कि जब एक पक्ष अपनी मनमानी कर रहा है तो मै दूसरे पक्ष को दबाए क्यो रहू। तब मैंने प्रो० रामसिह प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब का तार तथा पत्र द्वारा यह लिख भेजा कि आप प्रधान के रूप मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का भार उसी प्रकार सम्भाले जैसे मेरे चार्ज लेने से पूर्व सम्भाले हुए थे। और सभा के साथ जो सस्थाए, गुरुकुल, कालेज, स्कूल इत्यादि सम्बन्धित हैं उनका चार्ज भी सम्भाले। क्योकि इनका प्रबन्ध आप ही से लिया गया।

अब तो इस झगडे को निपटाने के सम्बन्ध मे मेरा कोई कर्त्तव्य शेष नही। मैंने सर्वाधिकार लेने की जो गलती जो उसका फल मैंने पा लिया है, अब आर्य जगत् स्वय देख ले कि इन झगडो का स्रोत कहा है?

मानव जीवन क्या है ?

(श्री पं० वेद प्रकाश विद्यावाचस्पति सि. शास्त्री आर्यसमाज हिसार)

(गताक से आगे)

दूसरे विद्वान् ने कहा—यह जीवन युद्धक्षेत्र नही बल्कि यात्रा है। यह इस प्रकार की यात्रा है। जिसका मोक्ष मे पूर्व अन्त नही होता। प्रत्येक वस्तु चल रही है, गति कर रही है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह सभी तो चल रहे हैं। चलते रहना ही जीवन है, स्थिर होना मृत्यु है। आर्य कहते ही उसे है जो चलता रहे। 'आर्य' शब्द ऋ गतौ से सिद्ध होता है जिसका अर्थ ही है गति करना। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

हर सुबह सफर हर शाम सफर।
इस जीवन का है नाम सफर॥

जीवन मे एक पडाव से दूसरे पर पहुचना है और फिर आगे चलते जाना है जब तक कि हम अपने लक्ष्य पर नही पहुच जाते। अत मनुष्य का जीवन एक यात्रा है दिन रात यात्रा ही करनी है।

तीसरे विद्वान् ने कहा—एक सज्जन कहते है यह जीवन युद्ध क्षेत्र है, दूसरे कहते है यह यात्रा है—परन्तु वास्तव मे यह जीवन एक नौका है। मनुष्य इस पर सवार हो कर भव-सागर को पार करना चाहता है। स्वस्तिवाचन मे हम एक मन्त्र पढते है—

सुत्रामाण पृथिवी द्यामनेहस
सुशर्मा रममदिति सुप्रणीतिम्।
दैवी नाव स्वरित्रामनागसमस्र
वन्तीमा रूहेमा स्वस्तये॥

इसमे शरीर को दिव्य नौका के नाम से कहा गया है। इस शरीर रूपी नौका के द्वारा ही हमे भवसागर पार करना है। इसलिए कील-काटो से दृढ हो, कही छिद्र न हो वरन् नौका डू‸ जाने का भय है। नौका मे छिद्र होगा तो पानी भर जाएगा और नौका डूब जाएगी इसी प्रकार शरीर मे भी—

पञ्चेन्द्रिय मर्त्यस्य छिद्र
चेदेकमिन्द्रियम्।
प्रज्ञाहनेन स्रवति यथा
पात्रादिवोदकम्॥

पाचो इन्द्रियो मे से यदि एक इन्द्रिय मे भी छिद्र हुआ तो उस से बुद्धि उसी प्रकार निकल जाती है जैसे पात्र मे छिद्र होने पर जल निकल जाता है। अतः मनुष्य अपनी जीवन की नौका को उस प्रकार खेवे जिससे बीच भवर मे ही न डूब जाए।

चौथे दार्शनिक ने उक्त सभी विद्वानो की बात को तर्क पूर्ण मानते हुए भी कहा कि मेरी समझ मे तो यह एक लेन देन की मण्डी है। कुछ लोगो से हमे कुछ लेना है और कुछ को देना है। यह लेन देन का चक्र तभी समाप्त होता है जब जीवन चक्र समाप्त होता है।

पाचवे विद्वान ने कहा—यह तो एक रथ है जिसके सहारे हमे एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना होता है इसके सहारे ही हम अपने जीवन को पारकर सकते है। महाभारत में भी कहा है—

आत्मान रथिन विद्धि,
शरीर रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथि विद्धि,
मन प्रग्रहमेव च॥
इन्द्रियाणि हुहयाना हुविषया,
स्तेषु गोचरान॥

अर्थात—आत्मा को रथी और शरीर को रथ जान, बुद्धि सारथी है और मन लगाम है। इन्द्रिया घोडे है और विषय उनके मार्ग है।

यदि सारथी अच्छा हुआ और मन रूपी लगाम अपने हाथ मे हुई तो अपने लक्ष्य पर पहुच जाएगे वरन इन्द्रिय रूपी घोडे विषय रूपी मार्ग मे ही भटका देगे। अत सोच और समझ कर चले।

इस प्रकार बहुत देर तक उस गोष्ठी मे विचार होता रहा। एक ने कुछ कहा तो दूसरे ने कुछ। परन्तु यह तो निश्चित ही है कि चाहे हम इसे युद्ध क्षेत्र कहें या जीवन-यात्रा नौका कहे या लेनदेन की मण्डी अथवा रथ। इन मे शान्ति नही। यदि जीवन युद्ध क्षेत्र है तो उस मे भी अनेको कष्ट उठाने पडते है। भूखे और प्यासे रहना होता है। भारत चीन के युद्ध मे अनेको सैनिक क्षुधा से पीडित होकर ही मर गए। राशन वहा तक पहुचा ही नही। फिर इस मे शाति कहा? यदि यह जीवन-यात्रा है तब भी सुख नही। यह तो यात्रियो को ही पता है मार्ग मे कितनी बाधाए आती हैं, कठिनाई उठानी पडती है। लेनदेन की मण्डी का भी यही हाल है उस मे भी 'लिया और दिया' चलता रहता है। चिन्ता लगी रहती है कही घाटा न हो जाए, किसी प्रकार की हानि न हो जाए। नौका के भी डूबने का भय बना रहता है कही आधी-पानी और तूफान आ गया। तब तो कहना ही क्या? रथ के भी इधर-उधर मार्ग से अलग होने की शका बनी रहती है पता नही घोडे कहा ले जाकर डाल देवे, कही रथ टूट न जाय, सारथी कही धोखा न दे देवे आदि चिताए लगी रहती हैं और चिताओ के रहते सुख कहा?

तब प्रश्न होता है कि मनुष्य किस प्रकार सुखी रह सकता है। क्या भोजन, वस्त्र और मकान प्राप्त करके सुखी हो सकता है? यदि हा तो बडे-बडे सेठ, साहूकार, राजे महाराजे जिनके पास ये तीनो चीजें होती है उन्हे शात होना चाहिए। पर वे भी तो अशात ही दृष्टिगोचर होते हैं। अमेरिका, रूस, इगलैड, जर्मनी और जापान आदि देश काफी धनवान हैं, अच्छे-अच्छे मकान हैं, आने जाने के लिए सुलभ साधन है, पहनने के लिए पर्याप्त वस्त्र हैं, खाने के लिए अन्न है और वह भी इतना अधिक कि विदेशो को भेज देते है और बाजार का सन्तुलन रखने के लिए समुद्र मे डाल देते है या जला देते है। परन्तु इतना होते हुए भी वे दुःखी है। तमाम लोग आत्महत्या कर लेते हैं कोई हथियार से तो कोई विषद्वारा।

वास्तव मे मनुष्य जीवन को समझनेके लिए मानसिक एव आत्मिक शाति की आवश्यकता है। इसके बिना वह दुःखी ही रहेगा और वह जीवन के रहस्य को नही समझ सकेगा। वैदिक धर्म सर्वस्व त्याग के लिए नही कहता कि सब कुछ छोड कर सन्यासी बन जाओ बल्कि यह तो कहता है कि-त्येन त्यकवेन भुञ्जीथाः॥ यजु।

त्याग के साथ उपयोग करो। यही सब से बडा धर्म है। धर्म तो मनुष्य की आत्मिक एव भौतिक दोनो प्रकार की उन्नति करने को कहता है। वैशेषिक दर्शनकार ने कहा—

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः॥

जिससे लोक और परलोक दोनों की सिद्धि हो वह धर्म है।

आत्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की शक्तियो का विकास करो तभी वास्तविक शाति प्राप्त हो सकेगी। यही तो मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। भौतिकवाद से अध्यात्मवाद की ओर, प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर, प्रेय से श्रेय की ओर चलें।

अतएव ऐ मनुष्य! यह अमूल्य जीवन अनेक शुभ कर्मों के पश्चात मिला है बार-बार नही मिलना, इसलिए सोच समझकर चल, अपने कर्त्तव्य को पहचान। अपने लक्ष्य (ब्रह्मलोक) को प्राप्त करने प्रयत्न कर। पर मनुष्य भूल जाता है कि ससार मे आकर मेरा और भी कुछ कर्त्तव्य है—

एक परिवार मे चार व्यक्ति थे, पति-पत्नी और दो पुत्र। अकस्मात् पति के बीमार हो जाने पर उसकी स्त्री ने अपने छोटे पुत्र से कहा कि जाओ अपने पिता जी के लिए औषधि ले आओ। वह आज्ञा मान कर चल पडा। लेकिन बाजार मे उसने क्या देखा कि एक स्थान पर तमाशा हो रहा है। ठहर गया, देखने लगा। उसे दवा लेने का ध्यान ही न रहा। तमाशा समाप्त हुआ आगे मदारी बन्दर का नाच दिखा रहा था, उसे देखने लगा। इधर पिता की हालत चिन्ताजनक थी। अत· बडे लडके को भेजा गया कि वह देखे कि उसका छोटा भाई दवा लेकर क्यो नही आया। वह गया रास्ते मे देखा कि वह मदारी का नाच देखने मे व्यस्त है। इसी प्रकार से तो हमारा जीवन भी है हम अपने गन्तव्य स्थान को भूल जाते है और बाह्य चीजो मे फसे जाते है। हम भी उस बालक की तरह ससार के तमाशे देखने मे ही मस्त रहते है।

यह चन्द दिनो का जीवन यू व्यतीत कर देते हैं पर ऐ मनुष्य! यह सब चीजे यही रह जायेगी। यह तो कुछ साथ नही जाना। किसी कवि ने कहा है—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे,
भार्या गृह द्वारे जनाः श्मशाने।
देहश्चिताया परलोकमार्गे कर्म,
नुगो गच्छति जीव एकः॥

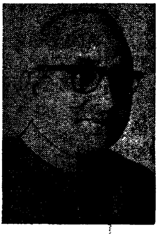
धन भूमि पर ही रह जाएगा, पशु पशुशाला मे बधे ही रह जाएगे, पत्नी द्वार तक जाएगी, बन्धु बाधव श्मशान तक जाएगे, यह शरीर चिता जाएगा। परलोक मे तो केवल एक कर्म ही जाएगा। अर्थात् जैसा भी कर्म करोगे अच्छा या बुरा, वही साथ जाना है और कुछ भी नही।

माता-पिता से शिक्षा माध्यम चुनने का अधिकार छीनना अप्रजातांत्रिक

प्रि. बहल की भाषा प्रश्न पर शिक्षाविदों, प्रशासकों व जन प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाने की मांग

कोई सर्वस्वीकार्य हल मिलने तक सच्चर फारमूला जारी रहे

जालन्धर। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान प्रिंसिपल भीमसन जी बहल ने पजाब सरकार द्वारा सच्चर फारमूले की जगह एक नया भाषा फारमूला लागू किए जाने की कडी आलोचना की है और राज्य सरकार के फैसले को, जो माता-पिता से अपने बच्चो का शिक्षा-



माध्यम हिन्दी या पजाबी चुनने का अधिकार छीन लेना है, अप्रजातात्रिक और सूझबूझ से रहित करार दिया है।

एक वक्तव्य मे प्रिंसिपल बहल ने कहा है कि सच्चर फारमूला समय की कसौटी पर खरा उतरा है और राज्य के स्कूलो में शिक्षा माध्यम का प्रश्न फिर से खोलने का कोई कारण ही नही था। वास्तव मे सरकार के नए फैसले से जो माता-पिता से अपने बच्चो का शिक्षा माध्यम चुनने का वैध अधिकार छीनता है, प्रगति प्रजातन्त्र और स्वतन्त्रता प्रेमियो मे आम तौर और हिन्दी प्रेमियों मे खास तौर पर भारी रोष पैदा कर दिया है। शिक्षा शास्त्री के रूप मे हमारा कर्तव्य है कि राजभाषा पजाबी के विकास के लिए समुचित प्रयत्न करें लेकिन हमें स्पष्ट रूप से यह समझ लेना चाहिए कि राष्ट्रभाषा के हितों की उपेक्षा करना हमारे लिए हानिकर होगा। उच्च शिक्षा के हित में यह जरूरी है कि पहली श्रेणी से ही पंजाबी के साथ-साथ हिंदी की पढाई जारी रखी जाए। पंजाब के लोगों की एकता और नए पंजाब राज्य की सस्कृति के विकास के लिए यह बहुत जरूरी है।

उन्होने कहा कि यह आश्चर्य की बात है कि एक विशुद्ध शैक्षणिक मामले पर, जिसे शिक्षाविदो द्वारा हल किया जाना चाहिए था, पर पर्याप्त ध्यान नही दिया गया। प्रजातन्त्र के इस युग मे लोग अपने हितों तथा अपने बच्चो के हितों को बहुत अच्छी तरह समझते है। शिक्षा के माध्यम मे किसी भी प्रकार की जबरदस्ती व्यापक मात्रा मे असतोष पैदा कर देगी सरकार का यह निर्णय अप्रजातात्रिक होने के अतिरिक्त पजाबियो के लिए अखिल भारतीय प्रशासकीय और अन्य सेवाओ के मामले मे भी हानिकर होगा। पजाबी अदम्य साहसिक है और सारे पजाब मे फैले हुए हैं। हिंदी शिक्षा माध्यम को सीमित करके उसे अग्रेजी के स्थान पर सम्पर्क भाषा का स्थान देना अनुचित है और हमारे हितो के लिए घातक है।

उन्होने कहा कि यह अधिसूचना चालू शिक्षा स्तर के दौरान जारी की गई है जो कि शैक्षणिक रूप से अनुचित है। श्री बहल ने कहा कि यह स्वागत योग्य बात है कि प्राइवेट स्कूलो मे शिक्षा के माध्यम की छूट दे दी गई है लेकिन यह कठिनता से पाच या छ प्रतिशत हैं। सही पग यही होगा कि सरकारी स्कूलो मे भी वर्तमान व्यवस्था को बनाये रखा जाए जब तक कि शैक्षणिक रूप से ठोस तथा स्वीकार्य फार्मूला तैयार न हो जाए।

प्रिसिपल बहल ने सरकार विशेषकर मुख्यमन्त्री श्री गुरनामसिह से अपील की है कि इस सारी समस्या पर शात और सौहार्दपूर्ण वातावरण मे शैक्षणिककोण से विचार किया जाये। सरकार शीघ्र ही सही प्रतिनिधित्व करने वाले शिक्षाविदो, प्रशासको और सास्कृतिक क्षेत्र के जनमत के प्रतिनिधियो का सम्मेलन बनाया जाए। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की, जो अनेक शैक्षणिक संस्थाओ को चलाती हैं, एक बैठक १३ जुलाई को जालन्धर मे होगी। जिस मे इस सारे मामले पर विचार होगा।

जिला करनाल में वेद प्रचार की धूम तथा उत्सव

१. आर्य समाज अमीन जिला करनाल का उत्सव २८ से ३० मई तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया प्रादेशिक सभा के सुयोग्य भजनीक प ज्ञानचन्द जी तथा चन्द्रसेन जी अन करनाल वेद प्रचार मण्डल ठा० दुर्गासिह आर्य तूफान महाशय नत्थू राम जी आदि के उपदेश तथा सगीत हुए वेद प्रचार के लिए ४१) मिले मार्ग व्यय अलग मिला।

२ श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल का उत्सव ३० से १ जून का सपन्न हुआ। श्री प० ज्ञान चन्द तथा ठा० दुर्गासिह आर्य तूफान तथा म० नत्थू राम जी के मधुर सगीत तथा उपदेश हुए। वेद प्रचार के लिए मार्ग व्यय के अतिरिक्त ३१ रुपये मिले।

३ आर्यसमाज तरावडी जि० करनाल का उत्सव ६ से ८ जून तक बडी धूमधाम से मनाया गया। श्री प० सत्यव्रत जी प्रादेशिक सभा जालन्धर, श्री प० ज्ञानचन्द जी, श्री चौ० नत्थासिह जी, श्री ब्रह्मचारी रामकिशन जी, ठा० दुर्गासिह जी आर्य तूफान, श्री चौ० शिवराम जी जिला प्रधान रोड सभा, श्री डा० गणेशदास जी, श्री प० वीरू राम जी आदि महानुभाव पधारे।

नगर निवासियो ने समाज को बडा सहयोग तथा तथा दान दिया। ३० बोरे सीमेन्ट तथा २ हजार ईंटे कई सौ रुपये दान दिये। मार्गव्यय के अतिरिक्त ८) जगत का चन्दा तथा १०१) सभा के लिये वेद प्रचार दिया।

४ आर्यसमाज भैणीखुर्द जिला करनाल का उत्सव ९ से ११ जून तक बडी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव पर आर्य प्रादेशिक सभा के सुयोग्य वक्ता श्री प० सत्यव्रत जी, श्री प० ज्ञानचन्द जी, ठा० दुर्गासिह आर्य तूफान वेद प्रचार मण्डल करनाल, श्री म० नत्थूराम जी, श्री ब्रह्मचारी रामकिशन जी, श्री चौ० नत्थासिह जी प्रसिद्ध गायक उनके साथी श्री शेरसिह जी, सब उपदेशको ने बडी लगन से कार्य किया नगर निवासी सज्जन श्री धनसिह जी प्रधान श्री वेदपाल जी मन्त्री श्री भोलूराम जी उपप्रधान आदि समाज के तथा उत्सव के कार्य

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अन्योक्ति अग्नि के द्वारा

अग्नि देव प्रत्येक को देते तुम प्रकाश।
कितना भी दुर्गन्ध हो कर देते हो नाश॥
कर देते हो नाश कौन तुमसा समदर्शी।
चरित तुम्हारा परम मनोहर हृदय कर्षी॥
स्वय इधन कोयला खा कर करो तपस्या।
हल करते हो विश्व मात्र की खाद्य समस्या॥

१

एक मात्र तुम साधन हो यन्त्रो शिल्पो के।
सभी भात के कर्म अधूरे बिना तुम्हारे॥
सकल यज्ञ उद्योग होटलो के तुम दैवत।
सब के हो तुम प्राण आपके चले सहारे॥

२

दोष एक दिल-खोल मिले तुम वैरी दल से।
अब सह पा कर तुम्हे मिटा देगा वह छल से॥
वैरी पर विश्वास तुम्हे नहीं करना चाहिए।
कितना भी मिल जाए दुष्ट से डरना चाहिए॥
जल को अपना गुण देकर भी समझाया अजमाया।
उसको गोद उठाया या उसने तुम्हे बुझाया॥

(रचियता—श्री पं० दौलतराम जी शास्त्री, अमृतसर)

मेवातमें आर्ययुवक संगठन

(पृष्ठ २ का शेष)

पैदल ही घूमा हू। स्मरण रहे कि देहली से अलवर सवा सौ मील के लगभग है। उस सन्यासी की तपस्या का कर्मठता का अनुमान लगा लीजिए। इस प्रकार के वीतराग संन्यासी और कार्यकर्त्ताओं को देख कर सिर गौरव से ऊंचा उठ जाता है। छाती आत्म-विश्वास से फूल जाती है। हाथ अनायास ही इनके चरणों की ओर चले जाते हैं एक विश्वास की चमक आंख पकड़ती है इक आशा की लौ की आग पकड़ती है कि आर्यसमाज कभी नहीं मरेगा। देव दयानन्द का नाम कभी नहीं मिटेगा। कल्याणी वेद वाणी की आवाज सदैव गूंजती रहेगी और हम मस्ती के साथ वही गीत गुंजाएंगे।

आई फौज दयानन्द वाली।

अब रस्ता कर दो खाली॥

जिल...

...मे अति लगनशील रहे। २००) सभा को दान ८) आर्यजगत ... मार्गव्यय आदि अलग।

५. आर्यसमाज मोहद्दीपुर जि... करनाल का उत्सव १३ से १५ ... बडे आनन्द से सम्पन्न हुआ ... प्रादेशिक सभा के उचकोटी के ... श्री पं० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री श्री प० चन्द्रसेन जी श्री प० सत्यव्रत जी श्री पं० ज्ञानचन्द जी श्री हजारीलाल जी चौ० नत्थासिंह जी मधुर गायक ठा० दुर्गासिंह जी वेदप्रचार मडल करनाल म० नत्थूरामजी श्री ब्रह्मचारी ...श्री डा. गणेशदास जी ... म० रणधीर सिंह जी एम्. एल. ए. नगर के कर्मठ आर्य मास्टर धर्मसिंह जी श्री चौ० दयालचन्द जी प्रधान श्री उदय मान जी मन्त्री वेद ...जी आदि सज्जनों ने बडी ... साथ उत्सव का कार्य किया ...ो वेद प्रचार के हेतु १०३) मार्ग व्यय आदि अलग दिया।

६. आर्य समाज बस्तली जिला करनाल का उत्सव १६ से १८ जून सम्पन्न हुआ सभा की तरफ से श्री पं० सत्यव्रत जी श्री ज्ञानचन्द जी श्री चौ० नत्थासिंह जी ब्रह्मचारी रामकिशन जी ठा० दुर्गासिंह आर्य तूफान वेद प्रचार मण्डल करनाल मं० नत्थूराम जी आदि पधारे, आर्य समाज के कर्मठ नेता श्री बलवन्तसिंह जी प्रधान श्री प० धर्मदेव जी चौ० पूरनचन्द जी आदि उत्सव के कार्य के बडे लगनशील रहे सभा को वेद प्रचार की राशि मार्ग व्यय के अतिरिक्त १५४) दिए।

(क्रमशः)

आइये दयानन्द की फौज में भरती होइए फिरकापरस्ती के मुतस्सिबी जनून मे रगे हुए मुसलमानों की मजहब परस्ती पर डट कर कुठाराघात कीजिए।



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक २६) ५ श्रावण २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२० जुलाई १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तस्मै रुद्राय नम:

अर्थ :—तस्मै— उस रुद्राय—रुद्र के लिए, रुद्र भगवान के लिए नम :—नमस्कार हो। महान रुद्र की वन्दना करते हैं।

भाव :—वह प्रभु जहां विष्णु है वहां रुद्र भी है। रुद्र भी उसी का नाम है। वह रुलाता है इसलिए उस का नाम रुद्र है। मनुष्य जब ऐसे वैसे काम अपने धन, बल या ज्ञानके अभिमान में चूर होकर करता है उस परम सत्ता को भूल जाता है। तो उसका फल प्राप्त करके जब अपराधी होने लगता है तभी वह भगवान को याद करता है। उसकी यह रुद्र शक्ति फिर मानने लगता है। इसलिए जीवन में सदा उस महान रुद्र से डरते रहना चाहिए। उसके इस रुद्र रूप को नमस्कार करना चाहिए। दुष्टों को दण्ड देता है। रुद्र देव! आपको नमस्कार हो। अथर्ववेद ७-८७-१

वेदामृत

भगवान सब का मित्र है

ओ३म् त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस्त्वं मित्रो भवसि दस्म ईडय:। त्वमर्यमा सत्पति र्यस्य सम्भुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयु:॥

ऋग्वेद मण्डल २-१-८

अर्थ :—(त्वम्)आप(अग्ने) अग्निदेव सबके पूज्य प्रभो! (राजा) स्वामी हो आप ही (वरुण:) वरुणदेव हो(धृतव्रत:) व्रतों नियमों को धारण करने वाले हो। (दस्म:) दर्शनीय और (ईडय:) पूजनीय हो। (मित्र:) मित्र (भवसि) हो। और (त्वम् अर्यमा) आप न्यायकर्ता हो (सत्पति:) सत्पुरुषों के पालक हो (यस्य) जिस आपका (सम्भुजं) दान सर्वत्र है (त्वम् अंश:) आप ही बांटने वाले हो देव! (भाजयु:)सेवन के योग्य होता है (विदथे) तमाम यज्ञादि में। आपका फैला दान सारे शुभकर्मों में सेवनीय है।

इसका भाव यह है

वरुणदेव! आप हमारे लिए राजा हो, नियमों के धारक हो, सदा न्याय करते हो, सज्जनों के रक्षक पालक हो। आपका दान विश्व में चारो ओर फैला हुआ है। सभी को बांटते रहते हो। सारे यज्ञों में, शुभ कार्यों में आपका महान दान चलता रहता है। आप ही सेवन के योग्य हो। कृपा करो हमें भी इस महादान से मिलता रहे। इस दान के समान जीवन में कौन-सा और पदार्थ है। —सं.

ऋषि दर्शन

इयं भूमि र्वरुणस्य राज्ञ:

अर्थ :—इयं— यह भूमि :—धरती और उसके सारे पदार्थ वरुणस्य-वरुण भगवान के राज्ञ :—प्रकाशमान राजा प्रभु के ही हैं। वही सभी का अधिपति है।

भाव :—यह जितना भी भूमण्डल है तथा इस पर नाना प्रकार के छोटे या बड़े पदार्थ हैं—ये सब उसी प्रभु के हैं। वही राजा है। उसी का यह सारा राज्य है। हम तो उस पिता के जीवन की यात्रा को सुखी बनाने के लिए दिए हुए हैं। और तो और हमारा यह अपना शरीर भी एक भूमि है। यह भी उसी की देन है। फिर लड़ाई झगड़ा किस लिए है? हमारे पास सदा के लिए यह रहती नहीं। आज है तो कल होनी हैं। इसके लिए प्यारे प्रभु को मत भूलो।

अथर्व वेद ४-१६-३

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०(सभा मन्त्री) | सम्पादक—त्रिलोलचन्द्र शास्त्री

आर्य युवकों का सम्मेलन

(श्याम राव संयोजक)

महात्मा आनन्दभिक्षु जी की अध्यक्षता में आर्यवीरदल, पजाब, हरियाणा, सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद, आर्य यूथ ग्रुप, प्रादेशिक आर्य युवक सगठन, आर्य युवकसंघ महाराष्ट्र के तत्वावधान मे बुलाई गई २९ और ३० जून १९६९ की दो दिवसीय सम्मिलित बैठकों मे आर्य युवक कार्यकर्ताओ ने सर्वसम्मति से निम्नलिखित विषयो पर निर्णय लिये—

विचारणीय विषय

१ आर्ययुवक शक्ति का एक सघठन। इस विषय मे निर्णय हुआ—

कि सारे वर्तमान युवक सगठनो का विलय कर एक नया आर्य युवक सगठन बनाया जाय और इसे क्रियान्वित करने के लिए निम्न व्यक्तियो की एक उपसमिति गठित की गई —

१ श्री प्रो० उत्तमचन्द जी 'शरर
२ श्री वीरूराम जी
३ श्री ब्र०इन्द्रदेवजी मेधार्थी
४ डा० वेदीराम जी,
५ प्रो०राजेन्द्र जी जिज्ञासु
६ श्री हरिश्चन्द्र जी सूर्यवशी
७ प्रो० श्याम राव जी।

इस सम्बन्ध मे यह भी निश्चय हुआ कि जब सार्वदेशिक सभा के झगडे समाप्त हो जाए और त्रिसूत्री सिद्धातो के आधार पर सभा का गठन हो जाए उस समय यह युवक सगठन अपना सम्बन्ध सावदेशिक सभा से कर ले।

व्याख्या-त्रिसूत्री सिद्धांत

१ सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय आय प्रतिनिधि व सभा एव स्थानीय आय समाजो के पदाधिकारी तथा अन्तरग सदस्य किसी भी राजनीतिक दल के सदस्य न हो।

२ सावदेशिक एव प्रान्तीय सभाओ के प्रधान तथा मन्त्री सगठन के लिए २४ घण्टे का पूरा समय देने वाले हो।

३ जो व्यक्ति महर्षि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक वर्णाश्रम के सिद्धातो पर क्रियात्मिक आचरण करता है वही सावदेशिक प्रान्तीय एव आर्य समाज के सगठनो का अधिकारी हो सकता है।

इस दिशा मे यह निर्णय किया गया कि उपयुक्त उपसमिति आगामी विजय दशमी तक सामूहिक कार्यक्रम बना कर सभी युवक सगठनो की अन्तरग सभा मे पहुच कर उन्हे विलय के लिये तैयार करले।

२ आर्यसमाज के दलगत झगडों के बारे मे आर्य युवकों का निर्णय—

यह सम्मेलन सार्वदेशिक एव प्रान्तीय स्तर पर हो रहे विघटनात्मिक नेतृत्व की आयसमाज के पवित्र सगठन एव आर्यों के लिये अत्यन्त दुखद तथा लज्जाजनक समझता है। इस सदर्भ मे नैतिक मूल्यो को भुला कर सार्वजनिक प्रचार और परस्पर विवादास्पद झगडो को लेकर राजकीय न्यायालयो मे जाना सगठन की दृष्टि से अत्यन्तन्त घातक, अशोभनीय एव अवाछनीय है। सार्वदेशिक सभा के वतमान निर्वाचन से दो सार्वदेशिक सभाओ के बन जाने से आर्य जगत के उच्चतम नेतृत्व के पतन की भी आशका दिखाई देने लगी है जो इस सम्मेलन की दृष्टि मे अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। इन परिस्थितियो मे युवकों की यह गोष्ठी आर्यजगत की प्रतिक्रियात्मिक भावनाओ का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करने के उपरात सर्वसम्मति से इन सभी विवादो को समाप्त कराने और शातिमय वातावरण निर्माण कराने की दृष्टिसे महात्मा आनदभिक्षुजी महाराज को सर्वाधिकारी घोषित करता है जो अधिक से अधिक १५ व्यक्तियो की परामर्शदातृ सर्वोच्च समिति बनाकर आर्यजगत पर आए हुए अप्रत्याशित सकट को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त कराने का प्रयत्न करे। यह सम्मेलन स्वामी जी तथा इस सर्वोच्च समिति को पूर्ण विश्वास दिलाता है कि उसके आदेश एवं निर्देश पर सारे भारत की आर्य युवा शक्ति तथा भद्र आर्य जाम हर प्रकार का बलिदान करने के लिए उद्यत रहेगे।

स्वामी जी ने निम्न सदस्यों की सीमिति गठन की घोषणा की,—

१ पूज्य स्वामी आनन्द भिक्षु जी (सर्वाधिकारी)
२ पूज्य वेदानन्द स्वामी जी
३ प्रिंसिपल भगवान दास जी
४ श्री ब्र० इन्द्रदेव जी मेधार्थी
५ प्रो० श्यामराव जी
६ ब्र० जबदीश जी विद्यार्थी
७ श्री बाल दिवकार जी 'हस'
८ प्रो राम प्रकाश जी
९ डा० वेदी राम जी
१० प्रो उत्तम चन्द जी 'शरर'
११ प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु
१२ श्री राम नाथ जी सहगल
१३ श्री हरिशचंन्द्र जी सूर्यवशी (महाराष्ट्र)

३–१९७५ मे होने वाले आय समाज के शताब्दी के लिये आर्य युवको का विश्व व्यापी कार्यक्रम —

यह गोष्ठी आर्य राष्ट्र की स्थापना का लक्ष्य लेकर १९५७ तक के लिये निम्नलिखित कार्यक्रम स्वीकार करती है —

१ महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक और ऋषि के आर्थिक नीति के आधार पर राजनीतिक मञ्च तैयार करना।

(क) राष्ट्र मे व्याप्त भयंकर आर्थिक विषमता एव शोषण को ऋषि के वर्णाश्रम सिद्धान्त के आधार पर दूर करना—अर्थात् जन्म के आधारे पर सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारो को स्वीकार न करते हुए, व्यक्ति के गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित आर्थिक सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना।

२ महर्षिदयानन्द द्वारा लिखित साहित्य और वेदादि ग्रन्थो का अत्यधिक प्रचार एव प्रसार तथा उन पर अनुसन्धान एवं शोध के लिए आर्य समाजान्तर्गत शिक्षा सस्थाओ विशेष कर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे शोध विभाग खोलने के लिए प्रेरित करना तथा देश के अन्य विश्वविद्यालयो से अन्य महापुरुषों की भाति दयानन्द पीठ स्थापित करने की माग करना। इस दिशा मे एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना के लिए प्रयत्नशील होना।

३, समय-समय पर वेद वैदिक धर्म आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों पर होने वाले आक्षेपो का प्रबल प्रतिवाद कर सत्य पक्ष की स्थापना करना।

४ मद्य निषेधानदोलन को और अधिक प्रभावशाली पग उठाना।

५ राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रशिक्षण केन्द्र का स्थापना कर एक मास के ठोस कायक्रम के द्वारा आर्य सिद्धान्तो एव कायक्रमो मे प्रशिक्षित करना।

अश्वत्थे वो निषदनम्

(श्री पं० दौलतराम जी शास्त्री, अमृतसर)

(१)

प्रात गई मध्यान्ह हुई अब साय आन पडी।
दिन क्रीडा करते बीत गया अब रह गई एक घडी॥

(२)

उस घर से जो कुछ लाया था सब खा-खा कर बर्बाद किया।
रे भविष्य के लिये न जोडा पैसा कौडी औ दमडी॥

(३)

मानव तन के विद्यालय मे दाखल हुवा न जोडा कुछ।
रे अवधू क्या उत्तर देगा जब प्रश्नो की लगे झडी॥

(४)

पुण्यो के सचय से तुम को मानुष तन की रेल मिली।
सावधान रह कहीं तले से फिसल पडे नहीं फिर पटडी॥

(५)

ऐसा तू बन महा वृक्ष पल जाए तले के पौधे भी।
टल जाए धूप, फल खाये विहग ले जायें दीन सूखी लकडी॥

आर्यजगत

वर्ष २९] रविवार २०२६, २० जुलाई १९६९ [अंक २९

पंजाब सरकार की भाषा नीति

पजाब सरकार की भाषा नीति के सम्बन्ध मे प्रकाशित हो रही घोषणाए ४५ प्रतिशत हिन्दी के लिये भारी चिन्ता का कारण बन रही है। स० कपूर सिंह और स० आत्मासिह के अत्यन्त विषैले लेखों के अतिरिक्त अब तो स० गुरनामसिह भी खुल-खेल रहे हैं, और प्राईवेट स्कूलो को भी आरम्भ से हिन्दी पढाने का अधिकार देने को तैयार नही हैं अर्थात् पजाब को खालिस सिक्ख स्टेट बनाने की अकालियो की पुरानी चाले सामने आ रही हैं। और तो और अकाली नेताओ और वज़ीरो के साम्प्रदायिकता पूर्ण रवैया ने जनसघी नेताओं की आखें खोल दी है जो अपनी सद्भावना से पजाब की बेहतरी और उन्नति के लिये अपने जज्बात को दबा कर भी अकाली सरकार को पूरा सहयोग देते रहे हैं परन्तु अकालियो की प्रत्येक चेष्टा और वक्तव्य यहा कट्टर मजहबी सिक्ख सरकार स्थापित करने की पुष्टि कर रहा है। हमे विश्वास है कि भाषा के प्रश्न पर जनसघी नेताओ के दृढता से डटे रहनें की अवस्था मे अकाली नेताओ को उनके आगे झुकना पडेगा। और कहीं जनता की वास्तविक भावनाओ का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्हे वज़ारत को छोड़ना भी पडे तो यह सौदा इनके लिए महगा नही होगा। हां, हिंदी और हिंद के हितो को कुर्बान करके वजारतो से चिमटे रहना इन्हे कही का नही छोड़ेगा।

आज काग्रेसी, जनसघी, आर्यसमाजी, सनातनधर्मी सभी विचारो के हिदुओ को अपने मतभेद भुलाकर एक आवाज़ के साथ पजाब सरकार को बता देने की आवश्यकता है कि पंजाब के हिंदु को यहां मान और गैरत के साथ रहने का उतना ही अधिकार है जितना किसी सिख को और हम अकाली नेताओं के षड्यन्त्रो का शिकार बनकर अपना धर्म या देश छोड़ने को सर्वदा तैयार होंगे। इस बात मे किसी को इन्कार नही हो सकता कि पजाब केवल हमारी बोली है। ३-४ सौ वर्ष से उत्पन्न गुरमुखी लिपि को यहा की मातृभाषा कहना ससार को नही, अपितु अपने आपको धोखा मे रखना है और इसे सब पर बलात ठोसना हिदुओ ही के नही सिखों के साथ भी भारी अन्याय होगा क्योकि वह कुए के मेडक बनकर रह जाएगे।

हिंदी पजाब की ४५% जनता की न केवल प्रयोग भाषा अपितु सस्कृति और धर्म की प्रतीक और साधन है। इसलिए भी और देश की राष्ट्रभाषा होने के नाते भी इस दूसरी भाषा का स्थान देना होगा जहा तक प्राइवेट स्कूलो की भाषा नीति का सम्बन्ध है इसके निर्णय मे हस्ताक्षेप करने का पजाब सरकार को कोई अधिकार नही अकाली नेता जनता को धोका देने के लिए व्यर्थ इसमे टाग अडा रहे है अन्यथा प्राईवेट स्कूल अपनी भाषा मे सदैव स्वतन्त्र रहे हैं और रहेगे। इसका विरोध तो सरकारी स्कूलो मे भाषा और माध्यम चुनने का अधिकार बच्चो के माता पिता को देने की माग को रोकने मात्र के लिए हो रहा है। हालाकि सरकारी स्कूलो की नीति भी हिन्दु और सिक्ख दोनो की अनुमति से निश्चित होनी चाहिए क्योकि यह उस सरकारी खजाना से चल रहे हैं जिनका बहुतान्त हिन्दुओ की जेबो से भिन्न प्रकार के टैक्सो के रूप मे निकल कर जाता है। अकाली नेताओ के हठ सङ्कीर्णता से ऊपर उठ कर पञ्जाब की उन्नति को दृष्टि मे रखते हुए ४५ प्रतिशत हिन्दी प्रेमियों को साथ लेकर चलना होगा। इन्हे इतनी जल्दी भुला नही देना चाहिए कि इससे पजाब के ७१% हिन्दुओ ने केवल २९% सिक्खो को सदैव बराबर के अधिकार दे रखे थे और भाषा या किसी विषय में कभी शिकायत का अवसर नही दिया था। आज भी हरयाणा सरकार ने भाषा चुनने का अधिकार बच्चो के माता पिता को देने और केवल १० छात्रो की माग पर गुरमुखी पढाने का प्रबन्ध करने की घोषणा करके एक सुनहरी मिसाल प्रस्तुत कर दी हैं। हालाकि वहा ५% से अधिक सिक्ख नही रहते।

परतु यह अति गभीर प्रश्न परस्पर हिन्दी प्रेमियो की एकता के बिना नही सुलझेगा। आपिसमे कटे और फटे रहने तथा एक दूसरे की टागे खेंचने से हालात और भी बिगडेंगे। अत सम्मिलित और सघठित होकर ही यह विकट समस्या सुलझाई जा सकेगी इसी लक्ष्य से बहुत शीघ्र पजाब भर के हिन्दी-प्रेमियो का एक सर्वदलीय सम्मेलन अमृतसर मे बुलाया जा रहा है जिसकी सफलता के लिये सब को तन, मन और धन द्वारा सहयोग देने के लिये तय्यार रहना चाहिये।

रुद्रदत्त शर्मा प्रधान
आर्यसमाज लक्ष्मणसर
अमृतसर

पंजाब की भाषा समस्या के सम्बन्ध में समयानुकूल निर्णय

आ० प्रा० प्रतिनिधि सभा पंजाब की हंगामी बैठक

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब की एक अत्यावश्यक बैठक रविवार दिनाक १३-७-६९ को जालन्धर कार्यालय मे हुई। इस बैठक मे समस्त पजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू व काश्मीर के प्रतिनिधियो ने भाग लिया जिसमे पजाब सरकार द्वारा निर्धारित भाषा नीति के सभी पक्षो पर लगातार दो घण्टे तक गम्भीर विचार होता रहा। इस बैठक मे सर्वसम्मति से निर्णय किए गए कि —

१. सरकारी और गैर सरकारी सभी स्कूलो मे बच्चो की शिक्षा का माध्यम चुनने का एक मात्र अधिकार माता-पिता को ही है इसमे सरकारको किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करना नागरिकता के अधिकारो पर कुठाराघात है।

हरियाणा सरकार ने शिक्षा के सम्बन्ध मे किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नही रखा। इसी प्रकार का आदर्श पजाब सरकार से भी अपेक्षित है।

२ सच्चर फार्मूला वर्तमान स्थिति मे सभी वर्गों को स्वीकार है अत जनता की सरकार को उचित है वह अपने प्रदेश की जनता की भावनाओ का आदर करते हुए सभी शासन सम्बन्धी स्थानो पर तथा स्कूलो मे इस फार्मूले को तुरन्त लागू करने की कृपा करे।

३ इस बैठक की सम्मत्ति मे केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड (**Central Board of Education**) द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ मे भारत के प्रत्येक प्रान्त मे क्षेत्रीय भाषाओ के अतिरिक्त भी माध्यम स्वीकृत है। इस पर किसी भी प्रान्त ने आज तक न ही तो किसी प्रकार का आक्षेप किया है और न ही जनता ने इसकी अवहेलना की है। यह शिक्षा सस्थान बडी सफलता पूर्वक अपना कार्य कर जनता मे शिक्षा प्रसार कर रहे हैं अत. पजाब को इसी प्रकार की भाषा सम्बन्धी नीति को अपना कर चलना उचित है।

शिक्षा सम्बन्धी इसी भाव को दृष्टि मे रख कर ३ अगस्त को पजाब की सभी हिन्दी-प्रेमी शिक्षण सस्थाओ का एक सम्मेलन जालन्धर मे बुलाया जा रहा है जिस मे पजाब की वर्तमान भाषा नीति पर विचार करके भावी कार्यक्रम निर्धारित किया जाएगा। इसका सयोजन करने का भार प्रि० प्यारेलाल जी बेरी के ऊपर है।

वेदीराम सभा-मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पजाब

सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद का वार्षिक अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद का वार्षिक अधिवेशन २० जुलाई रविवार १२ बजे से गुरकुल इन्द्रप्रस्थ मे होना निश्चित हुआ है। आर्यकुमार सभा, आर्य युवक परिषद तथा अन्य आर्य युवक सगठनो के स्थानीय अधिकारियोंसे प्रार्थना है कि अधिवेशन मे भाग लेने वाले प्रतिनिधियो की सूची शीघ्र कार्यालय मे भेज दे।

बलजीत आर्य—मन्त्री

विशेष—गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली से मथुरा जाने वाली सडक पर १९ मील दूरी पर स्थित है।

अस्पृश्यता तथा श्री शंकराचार्य

(प्रिंसिपल रला राम जी, होश्यारपुर)

बिहार मे एक वृद्ध हिन्दू धर्म सम्मेलन मे श्री शकराचार्य (पुरी) ने एक भाषण दिया जिससे ऐसा प्रतीत हुआ कि हिन्दू धर्म अस्पृश्यता का समर्थक है। बाद में उन्होने इस प्रैस रिपोर्ट का खण्डन किया और कहा कि वे अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म का एक नित्य एव शाश्वत सिद्धान्त नही मानते। परन्तु उनका केवल-मात्र इतना ही कहना है कि अस्पृश्यता किसी न किसी रूप में प्रत्येक मानव के सम्बन्ध मे रहती ही है रजस्वला नारी पति के लिए अस्पृश्य है। सांक्रामिक रोग से पीडित व्यक्ति रोगावधि के लिए अछूत है। मलीन व्यक्ति जब तक स्नान करके शुद्ध नही हो जाता तब तक वह अस्पृश्य है यह उदाहरण आपत्तिरहित है। यदि उनकी अस्पृश्यता केवल इतनी मात्र ही है तो ठीक है। परन्तु जो स्पष्टीकरण आपने अमृतसर में दिया वह भ्रान्तिजनक है। उन्होंने एक उदाहरण रामेश्वर के मन्दिर का दिया जहा ब्राह्मण भी मन्दिर के अन्दर नही जा सकता, केवल उसे बाहिर खडे होकर ही देखने का अधिकार है। आपने फिर पैंतरा बदला प्रतीत होता है मौलिक प्रश्न तो यह है कि देव-दर्शन के सम्बन्ध मे वह अधिकार एक स्वच्छ वस्त्र पहने हुए तथा-कथित शुद्र को है या नही। कोई हरिजन भाई रामेश्वरम मे एक ब्राह्मण के साथ बाहर खडा होकर भगवान के दर्शन करने मे अपनी मानहानि या हीनता अनुभव नही करेगा। प्रश्न तो केवल यह है कि क्या श्री शकराचार्य उस मन्दिरमे जहा ब्राह्मण को जाने की आज्ञा है एक तथा-कथित अछूत भाई का अन्दर न जाने के लिए बाध्य करने के समर्थक तो नही? यह उन्हे स्पष्ट कर देना चाहिए। आये बाये शाये का कोई लाभ नही, यह स्थिति को और गम्भीर बनाता है। यह खेद है कि उन्होन अभी तक अपनी धारणा को स्पष्ट नही किया। एक उच्च नेता होनेके नाते उन्हे यह समझना चाहिए कि इस दुविधा का दुष्परिणाम हिदु जाति के लिये महा हानिकारक है एव घातक है।

अस्पृश्यता अर्वाचीन बीमारी है। यह पुरातन रोग नही। इस बारे मे तो सभी विद्वान,प्राच्य तथा पाश्चात्य सहमत हैं। वैदिक काल मे तो अस्पृश्यता की गन्धमात्र भी नहीं। ऋग्वेद तो असदिग्ध शब्दों में कहताहै, 'हे मानवो, तुममे न कोई बडा और न कोई छोटा है, तुम सब भाई हो, ऐश्वर्य के लिये इकट्ठे हो करके प्रयत्न करो, तुम्हारा युवक पिता रुद्र है, तुम्हारी नाना स्वादु पदार्थ देने वाली माता पृथ्वी है। जो मानव इस जीवन मे रोते चिल्लाते नही जाते वे सुख समृद्धि के दिन देखते हैं (ऋग्वेद, ५, ६०, ५)। ऋग्वेद मे इसी मण्डल के ५९ वे सूक्त का छटा मन्त्र हमे उपदेश देता है, 'वे सब बडे नही, वे सब छोटे नही, और न ही वे दरम्याने हैं। वे सब ऊपर उठने वाले हैं, इसलिए उत्साह के साथ आगे बढो, जन्मसे ही वे सब कुलीन (ऋषि-सन्तान) हैं। पृथ्वी को माता मानने वाले हैं। हे दिव्य प्रभु की सन्तति, हमारी और सुचारू रूप मे आओ।' पुरुष सूक्त मे जहां वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन है वहा चारों वर्णों को एक ही दिव्य शरीर के अवयव के रूप मे दिखाया गया है। 'ब्राह्मण विराट पुरुष के मुख से, उसके बाहु से क्षत्रिय, उसकी जघो से वैश्य तथा उसके पाओ से शुद्र पैदा हुए।' वे पृथक-पृथक नही, एक ही शरीर के अग है। काम के लिए जुदे-जुदे होते हुए भी वस्तुतः एक ही शरीर के सजीव अवयव हैं। इसी भाव की पुष्टि ऋग्वेद मे अन्यत्र होती है। मैं कारीगर हूं (अथवा कवि हू), मेरा पिता वैद्य है, मेरी माता चक्की पीसती है, भिन्न-भिन्न कौशल या योग्यता रखते हुए, हम धनोपार्जन का प्रयत्न करते हैं। जैसे गौए एक वाडे मे रहती हैं वैसे हम एक घर मे इकट्ठे रहते है, हे आवन्द स्वरूप परमात्मन सब दु ख निवारण के लिए हम सब पर कृपा दृष्टि कीजिए।

(ऋग्वेद ९,११२,३)।

मैं तुम्हारी स्तुतियो द्वारा तुम दोनो (उपदेश तथा उपदेश्य) को सनातन ब्रह्म से जोड़ता हू। तुम को सुकीर्ति उस प्रकार प्राप्त हो जिस प्रकार ज्ञानी को धर्म मार्ग प्राप्त होता है। हे अमृत के सब पुत्रो सुनो, जिस प्रकार पूर्वजो (ऋषियों) ने दिव्य स्थान प्राप्त किया उस प्रकार तुम भी प्राप्त करो (यजुर्वेद ११५)।'

वेद पढना सब का अधिकार है इसकी पुष्टि मे तो भगवान दयानन्द ने ऐसा अकाट्य वेद प्रमाण पेश किया कि आज सब वेद—विद्वान उसे उद्धृत करते हैं। 'जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याणकारी वेद वाणी का उपदेश करता हू। (वैसे तुम सब) इस पवित्र वेद वाणी का प्रसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, स्त्री तथा भृत्य सब में करो (यजुः २६, २)।' भगवान कृष्ण ने गीता मे कहा है 'हे पार्थ, निश्चय ही मेरा आश्रय ले करके जो पापयोनियो वाले हैं, स्त्री, वैश्य तथा शुद्र, यह सब परमगति को प्राप्त होते हैं (गीता ९, ३३)।'

इस बात से तो इन्कार नही हो सकता कि हमारे इतिहास मे एक अन्धकारमय युग आया जब कुछ मानवो को अस्पृश्य कह कर पशुओ से भी बुरा बर्ताव उनके साथ किया गया। यह उनका अपमान नही मानवता का अपमान था, वीभत्स, अक्षम्य। इसके विरुद्ध समय-समय पर आवाज उठी। महात्मा बुद्ध ने इस के विरोध में अपनी प्रबल आवाज उठाई। सब मनुष्यो को जात पात का विचार किए बिना अपने सघ मे उन्होंने एक सम्मान पूर्वक स्थान दिया। परन्तु यह क्षयरोग कुछ शताब्दियो के बाद फिर जोर पकड गया। मध्य काल मे तो इस ने एक घोर रूप धारण कर लिया। अनेक सन्त महात्माओं तथा गुरू साहबान ने इस की निन्दा तथा इसका विरोध किया। परन्तु उन्नीसवी शताब्दी मे युगप्रवर्तक दयानन्द ने जो क्रियात्मक आदोलन चलाया वह महात्मा बुद्ध के बाद किसी अन्य सुधारक ने नही चलाया था। जिन से लोग छूते नही थे उनके सम्बन्ध मे दयानन्द ने यह कहा कि पाचक की सेवा तो कर ही शुद्र सकता है, किसी अन्य वर्ण का तो यह अधिकारक्षेत्र ही नही। चमार या भगी जब सफाई या जूता बनाने का काम हाथ से कर रहा हो तो उसके हाथ का मत खाओ, परन्तु जब वह हाथ साफ करके स्नानादि से शुद्ध पवित्र हो कर कुछ देता है तो अवश्य खाना चाहिए। पाचन का काम तो सुपुर्द ही इनके होना चाहिये। आर्य समाज ने इस आदेश को अमली जामा पहनाया। जगह-जगह पर आर्य समाजियो का इस लिये सामाजिक बहिष्कार हुआ, क्योकि वे तथा-कथित अछूतों के साथ सह भोज तथा सह जलपान करते थे और उनको कूओं पर चढ़ाते थे। आर्यसमाज के स्कूल तथा कालिज थे यहा अछूत कहलाने वाले विद्यार्थी एक पक्ति में दूसरे सवर्ण के बालकों के बराबर बैठते थे। सरकारी शिक्षणालयो में यह प्रथा बाद में आर्य सस्थाओं की देखादेखी आरम्भ हुई। इस देश-निर्माणात्मक कार्य का श्रेय दयानन्द तथा उसके अनुयाइओं को है। महात्मा गांधी ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया कि दलितोद्धार के मामले मे दयानन्द उनका पथ-प्रदर्शक है।

कर्मयोगी दयानन्द स्वर्ग या मुक्तिधाम में निठल्ला तो बैठा नही होगा। यह कर्मठ निकम्मा बैठ ही नही सकता। न जाने यह दिव्य आत्मा कहा किस रूप मे दलितों तथा दु.खियों के उद्धार तथा दु.खनिवारण मे लगा होगा। परन्तु वह अपने अनुयाईओ की गतिविधियों का अवश्य अवलोकन कर रहा होगा। यह अद्वितीय सुधारक परेशान होगा कि इतनी जल्दी आर्य जन भूल गये कि न तो कोई सरकार और न ही कोई कानून अछूतपन जैसी सामाजिक बुराई का उन्मूलन कर सकता है। उन्मूलन तो जन-साधारण मे चलाया गया सामूहिक आन्दोलन ही निष्पन्न कर सकता है। सरकार तथा कानून तो सामूहिक आन्दोलन की सहायता कर सकते हैं। श्री शकराचार्य की भ्रामक आवाज़ ने सब हिन्दुओ को फिर से सचेत किया है कि यह अछूतपन का राक्षस छिपा पडा है, उसका विध्वस नही हुआ। आर्य जनो को दयानन्द के सन्देश का तकिया बना कर चैन की नींद नही सो जाना चाहिये, अछूतपन का सहार अभी बाकी है तथा हमारा कर्त्तव्य भी शेष है।

एक शब्द अपने हरिजन भाईयो से भी कहना उचित समझता हू। उनकी यह आशा दुराशा मात्र ही है कि ४५ करोड हिन्दुओ मे कोई भी ऐसा प्रतिगामी व्यक्ति नही होगा जो अछूतपन का खुला या छिपा हुआ समर्थक हो। एक प्रतिगामी व्यक्ति के विरोधी विचारों से इतने उत्तेजित हो जाना कि अपने सम्मेलनों हिन्दू धर्म के परित्याग की वे चर्चा करें यह बात उन्हे शोभा नहीं देती। अब जबकि समाज अधिकतया और शासन पूर्णतया उनके हितो के सरक्षण में सलग्न हैं उन्हें निराशावाद का शिकार नही बनना चाहिये। सिरफिरे संसार में हमेशा रहे हैं और सदा रहेंगे।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मन्तव्यामन्तव्य प्रकाश

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपना अमर और अमूल्य ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश हमारे सामने रखा—जिसमें पहले भूमिका मे इस ग्रंथ के पढ़ने की विधि तथा इस ग्रंथ के लिखने का आशय लिखा । पहले समुल्लास मे ईश्वर के नामो की व्याख्या, दूसरे मे बाल शिक्षा, भूत. प्रेत, जन्म पत्री आदि के सम्बन्ध मे, तीसरे समुल्लास मे पढनेपढाने, सन्ध्या हवन-यज्ञ, ब्रह्मचर्य तथा स्त्री शूद्र की शिक्षा सम्बन्धी विचार, चौथे समुल्लास मे गृहस्थ आश्रम का पूरा ब्योरा, पाचवी मे वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम विधि लिखकर मानव धर्म हमारे सामने रखा । छटे समुल्लास म राजा का धर्म, राजनीति, दण्ड विधान आदि सातवे मे ईश्वर विषय, आठवे मे सृष्टि उत्पत्ति, नावे मे विद्या-अविद्या, बाध मोक्ष विषय और दसवे मे आचार-अनाचार भक्ष-अभक्ष सबधी हाल लिखकर पुस्तक का पूर्वार्द्ध (पहला भाग) समाप्त किया । इस पहले भाग मे मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए हर प्रकार ज्ञान दिया गया है ।

मनुष्य को जन्म से लेकर आयु-भर जिन-जिन बातो का ज्ञान आवश्यक होता है स्वामी दयानन्द जी महाराज ने वेदो, शास्त्रो, स्मृतियो आदि ग्रन्थो के प्रमाण देकर पूर्ण रूपेण इसमे लिख दिया है । यह ऐसे सिद्धान्त है न केवल आर्य पुरुषो या आर्य समाज के लिए किन्तु चाहे किसी भी मत के मानने वाला हो किसी भी सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता रखता हो इनसे मुख नही मोड सकता यदि किसी का कोई विचार भेद भी हो तो मैं तो यह समझता हूं कि यह उसका अपना अल्प ज्ञान है जिसके कारण वह इन बातों की ममझ नही पाता । क्योकि महर्षि स्वामी दयानद जी का सिद्धात वेद का सिद्धात है और वेद ज्ञान अनादि काल से है जिस को सब दुनिया के लोग मानते हैं यदि कोई स्वीकार नही करता तो यह तो अवश्य मानता है कि ससार भर मे सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद है । हमारे लिए इससे बड़ा और कोई प्रमाण नही चाहिए, सबसे पुरानी का अर्थ यह कि इससे पहले कोई पुस्तक न थी, जब इससे पूर्व कोई पुस्तक न थी तो सिद्ध यही होता है कि ईश्वर ने मनुष्यों के ज्ञान के लिए सबसे पहले अथवा अनादि कालमें जो ज्ञान सबंधी पुस्तक दी वह यही वेद ज्ञान है ।

आओ ऋषि वाणी पढ़ें

लेखक—मथुरा दास नवांकोट (अमृतसर)

स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इस वेद के आधार पर ही मनुष्य जीवन के निर्माण के लिए सत्यार्थ प्रकाश मे पहले भाग के दस समुल्लास लिखे इसके बाद ग्यारहवें सम्मुलासमं अनेक मत-मतातरोंके खडन मडन के विषयमे और बारहवें सम्मुलास नास्तक मत, बुद्ध, जैन मत के खडन मे लिखा । तेरहवा सामुल्लास ईसाईमत पर और चौदवा समुल्लास इस्लाम मत पर आलोचना की । इस प्रकार जब सत्यार्थ प्रकाश पूर्ण हुआ तो फिर उन्होने अन्त मे इस बात को मुख्य रख कर कि कहीं कोई पुरुष यह न कर सके कि आप क्या मानते हैं चाहे सारा ग्रन्थ ही उनके विचार है फिर भी जनता की सुविधा के लिए आपने अन्त मे मन्त-व्यामन्तव्य, प्रकाश जिस में उन्होने ५१ सिद्धान्त दिए हैं जिसकी सक्षिप्त व्याख्या इसी पत्र द्वारा धीरे-धीरे आती रहा करेगी ।

मन्तव्यामन्तव्य क्या हैं ?

'सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जिसको सदा से सब मानते आए मानते हैं और मानेगे भी, इसलिए उसको सनातन नित्य धर्म कहते हैं कि जिस का विरोधी कोई भी न हो सके । यदि अविद्यायुक्त जन अथवा किसी मतवाले के भरमाए हुए जन जिसको अन्यथा जाने व माने उसका स्वीकार कोई भी बुद्धिमान नही करते, किन्तु—

जिसको आप्त अर्थात सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारक पक्षपातरहित विद्वान मानते हैं वही सब को मन्तव्य है और जिसको नही मानते वह अमन्तव्य होने से प्रमाण के योग्य नही होता ।'

(स्वामी दयानन्द)

ऊपर के शब्दों में स्वामी जी ने कितना स्पष्ट लिख दिया है कि सर्वतन्त्र सिद्धान्त क्या हैं जिन को सारी दुनिया के सच्चाई पसन्द लोग कहे, माने और करे। परतु संसार मे अविद्या (जहालत्ती) तो इतनी फैल चुकी है कि अनेक मत मतान्त्र बन चुके हैं और बन रहे हैं उनके बहकाए हुए लोग यदि कोई बात करें तो माननीय नहीं होगी । स्वामी जी ने तो सारे सिद्धांतो का सार आर्यसमाज के दस नियम बना दिये, यह व्यक्ति-गत भी और सामाजिक भी लाभ-कारी हैं और यही नियम सार्वभौम हैं । आगे स्वामी जी लिखते है ।

मैं क्या मानता हूं

'अब जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तो के माने हुए जो ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हू, सब सज्जन महाशयो के सामने प्रकाशित करता हू । मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हू कि जो तीन काल मे सबको एक-सा मानने योग्य है ।'

(स्वामी दयानन्द)

हमे क्या मानना है, जो वेदादि सत्य शास्त्र कहे । आजकल इन १८ पुराणो और १८ उप-पुराणो के अतिरिक्त अनेक कपोल कल्पित ग्रन्थ बन चुके है और बन रहे हैं परन्तु जो वेद का ज्ञान या वह ग्रन्थ जो वेदानुकूल हो उसे ही मानना चाहिए । परन्तु आजकल तो वेदादि सत्य शास्त्रो का स्वाध्याय ही नही हो रहा, हा अनेक स्वार्थी लोगो के रचे ग्रन्थ हैं जिन्हें लोग पढते हैं या नावल, किस्से कहाकियो की पुस्तके लोगो के हाथो मे देखी जाती हैं जिनमे अनावश्यक, मन-घडन्त तथा सभ्यता के विरुद्ध बातें ही मिलती है न अच्छे सभ्य और उत्तम ज्ञान देने वाले ग्रथ पढते हैं न जीवन ही ऊचा उठता है हां जनता का जीवन पतन की ओर जा रहा है जिससे देश भी गिर रहा है, साथ ही स्वामी जी ने प्रमाण दे दिया कि मैं उसी धर्म को मानता हू जिस को ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि तक जितने भी ऋषि मुनि हुए हैं उन्हो ने जिन ईश्वर आदि पदार्थो को माना, मैं भी उन्ही को मानता हू और वह ऐसे हैं जो सब कालो मे भूत, वर्तमान और भविष्य मे सब को मानने योग्य हैं, क्योकि प्रभु का ज्ञान एक रस है इस मे कोई परिवर्तन नही हो सकता । इसी ज्ञान को स्वामी जी मानते हैं और उसी ही वेद ज्ञान के मानने का हमे आदेश देते है । आगे कहते हैं—

मैं कोई नवीन मत चलाने नहीं आया !

'मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उस को छोडना छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है, यदि मै (भी) पक्षपात करता तो आर्यवर्त्त मे प्रचारित मतो मे से किसी एक मत का आग्रही होता, किन्तु **जो-जो आर्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्म युक्त चाल चलते हैं उनका स्वीकार और जो धर्म युक्त बाते हैं उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं,** क्योकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहि है ।

(स्वामी दयानन्द)

इस कथन में स्वामी जी ने उन सारे लोगो को, जो यह कहते नही थकते कि स्वामी दयानन्द ने एक नया मत आर्य समाज या वैदिक धर्म चलाया है, ऐसा उत्तर दिया है कि वह कोई नवीन मत चलाने नहीं आये किन्तु सत्य का प्रकाश और असत्य का नाश करने आए हैं इसी लिए उन्होने सत्य-अर्थ-प्रकाश (सत्यार्थ प्रकाश) की रचना की, इसी लिए अपने दस नियमो मे चौथे नियम मे भी लिख दिया कि 'सत्य को ग्रहण तथा असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए' इस के लिए उन्हो ने केवल हमे ही उपदेश नही दिया किन्तु आप भी सारी आयुभर इस सत्य पर डटे रहे, वह इसी सत्यता के सम्बन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे लिखते हैं कि —'इस ग्रथ (सत्यार्थ प्रकाश) के लिखने का मुख आयोजन सत्य के अर्थ का प्रकाश करना है और जो सत्य है उसको सत्य और जो झूठ है उसको झूट कहना ही मैंने सत्य अर्थ समझा है. .क्योकि जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है, जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने झूठ को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी झूठ सिद्ध करने का यत्न करता है इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नही हो सकता । (दयानन्द) इस प्रकार उन्होंने मानव धर्म को स्थिर रखने के लिए अधर्म के कामो को कदाचित स्वीकार नही किया और धर्म के कामो को चाहे कितनी बाधाए आईं त्याग नही किया । मनुष्य किसे कहते हैं इसे सम्बन्ध मे लिखते हैं :—

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अस्पृश्यता तथा श्री शंकराचार्य

(पृष्ठ ४ का शेष)

देखना तो यह है कि काल तथा समाज किस ओर जा रहे हैं। सरकार तथा समाज दोनो उनको उन्नति की ओर ले जाने मे प्रयत्नशील हैं। फिर घबराहट कैसी। कुछ लोग हैं जो पक्षपात से प्रेरित होकर सच्चाई को सदा उपेक्षित करते है। अभी लडन की फ्लेट अर्थ सोसाइटी का वक्तव्य दुनिया के सामने आया। राकटों मे बैठे विमान चालको ने पृथिवी के इर्द-गिर्द चक्कर काटे हैं। उन्होने पृथिवी को अन्तरिक्ष से देखा है, उसके फोटो लिये हैं। वे कहते हैं कि यह पृथ्वी गेद की नाईं गोल है। भला क्या अब भी इस मे शंका के लिये कोई स्थान है? परन्तु लडन फ्लेट अर्थ सोसाइटी के मन्त्री महोदय अब भी कहते हैं कि यह पृथ्वी चपटी है। भला इस हठ या दुराग्रह का कोई इलाज है सिवाय इसके कि उनके कथन को उपेक्षित किया जावे। यही उपेक्षापूर्ण बर्ताव अस्पृश्यता के समर्थको के साथ होना चाहिये चाहे वे साधारण जन हो या श्रीशकराचार्य हो।

आओ ऋषिवाणी पढ़ें...

(पृष्ठ ५ का शेष)

'मनुष्य उसको कहना चाहिए जो मननशील होकर अपनी आत्मा की तरह दूसरो के सुख-दुःख हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नही किन्तु अपने सारे बल से धर्मात्माओ से, चाहे वह अनाथ, निर्बल तथा गुण रहित ही क्यो न हो उनकी रक्षा, उन्नति और प्रेम का व्यवहार करे और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, महाबलवान और गुणवान भी हो उसके नाश का यत्न करे और उस से प्रेम न करे अर्थात जहा तक हो सके अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की सदा उन्नति करे, इस काम मे चाहे कितना ही कष्ट हो और चाहे प्राण भी चले जाए परन्तु इस मनुष्यरूपी धर्म से कभी भी पृथक न हो।'

(दयानन्द)

इन शब्दो के पढ़ने से पता चलता है कि मानवधर्म किसे कहते हैं, अनेक मतमन्तातर बने हैं जो सब अपने आपको मानव धर्म का प्रचारक कहते हैं परन्तु स्वामी दयानन्द जी जैसे विचार कोई भी नही दे सका और न दे ही सकेगा। सब पक्षपात से जनता की रुचि अपनी ओर खेचते हैं और सच्चे मनुष्य धर्म से हटा कर अपने जाल मे फसाने का यत्न करते हैं क्यो, इसलिए कि जब सत्य की परख का समय आता है तो स्वार्थवश सत्य का त्याग करके अपने कपोलकल्पित मत का प्रचार करने लग जाते परन्तु स्वामी दयानन्द जी तो स्पष्ट कह ही नही रहे अपने जीवन मे करके दिखा दिया कि सत्य को अगर करने मे कितने कष्ट झेले, कितना त्याग करना पड़ा और सत्य को प्रगट करते-करते ही अपने प्राणो की भी बलि दे दी।

आओ हम उस महर्षि के इन शब्दो को बार-बार पढें और कुछ तप और त्याग से स्वार्थ छोडकर उनको अपने जीवन मे लाने का यत्न करें ताकि हम एक शुद्ध और पवित्र आर्यसमाज स्थापित कर सके।

इसके आगे एक-एक सिद्धात पर प्रकाश डालने का यत्न किया जाएगा।

प्रस्ताव

केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर की यह बैठक पंजाब गवर्नमैंट के इन निर्णय के प्रति अत्यन्त घृणा एवं रोष प्रकट करती है जिसके द्वारा सच्चर फार्मूला को समाप्त कर दिया गया है। ऐसा करते हुए पजाब गवर्नमैंट ने अपनी हिन्दी विरोधी नीति का नग्न प्रदर्शन किया है जिसे आर्यसमाज कभी भी सहन नहीं करेगा। अपने बच्चो के उज्ज्वल भविष्य के लिये निर्णय करना कि उन्हे किस प्रकार की शिक्षा मिले और किस भाषा के माध्यम से मिले, यह अधिकार केवल माता-पिता का है और इस अधिकार मे गवर्नमैंट द्वारा हस्तक्षेप करना भारतीय सविधान की स्पष्ट अवहेलना है। यह सभा पजाब गवर्नमैंट को चेतावनी देती है कि यदि उसने अपनी संकीर्ण साम्प्रदायिक नीति को तुरन्त न बदला तो इसकी समस्त प्रदेश मे घोर प्रतिक्रिया होगी जिसके दुष्परिणामो का समस्त उत्तरदायित्व पजाब गवर्नमैंट पर होगा।

साथ ही यह सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा डी ए वी कालिज मैनेजिंग कमेटी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा अन्य शैक्षणिक एव धार्मिक सस्थाओ से प्रार्थना करती है कि वह पजाब गवर्नमैंट की हिन्दी-घातक नीति का प्रतिकार करने के लिये तुरन्त कोई न कोई पग उठा कर पजाब की ४५ प्रतिशत हिन्दी प्रेमी जनता का पथ प्रदर्शन करे।

—मथुरादास पमन्त्री

प्रस्ताव

आर्य समाज धारीवाल पजाब सरकार के हिन्दी सम्बन्धी इस निर्णय के प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त करता है—'कि भविष्य मे हिन्दी शिक्षा का माध्यम नही बन सकेगी और शिक्षार्थियों के अभिभावको को अपने बच्चों के शिक्षा माध्यम के चयन का अधिकार नही होगा।'

आर्य समाज धारीवाल के उपरोक्त निर्णय को व्यक्ति के भाषा और धर्म सम्बन्धी उन मूल अधिकारो पर, कुठाराघात मानता है जो भारतीय विधान के अन्तर्गत व्यक्ति को मिले है।

उपरोक्त आर्य समाज यह भी अनुभव करता है कि पजाब मे हिन्दी वैदिक सस्कृति तथा हिन्दी प्रेमियो के भविष्य को अन्धकारमय बनाने वाले पंजाब सरकार के उपरोक्त निर्णय को सहन करना भी पाप मानता है। इसके प्रतिरोध के लिए सभी वैधानिक उपाय प्रयोग करके इसे तुरन्त बदलवाना ही हितक्रर मानता है।

भाषा सम्बन्धी पजाब सरकार के इस निर्णय मे केन्द्रीय सरकार के पजाब स्थित कर्मचारियो के बच्चे भी अत्यन्त प्रभावित होगे और उनके अन्तर प्रान्तीय परिवर्तन की स्थिति में उनके बच्चो के सामने भाषा सम्बन्धी अनेक कठिनाईया उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल होगी।

—वेद प्रकाश
मन्त्री आर्य समाज
धारीवाल।

'शोक-प्रस्ताव'

अत्यन्त दुःख का विषय है कि समादरणीय आचार्य ज्ञानचन्द्र जी (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार) की सुपुत्री का आकस्मिक निधन हो गया है।

गुरुकुल आर्य नगर हिसार के अधिकारी तथा छात्र इस आकस्मिक वियोग पर हार्दिक शोक-सवेदना प्रकट करते हुए परम देव परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को शान्ति तथा शोक-सतप्त परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति एव धैर्य प्रदान करें।

रामस्वरूप शास्त्री
आचार्य गुरुकुल आर्य नगर
(कुरड़ी) हिसार

आर्यसमाज करोल बाग नई दिल्ली में अभिनन्दन समारोह

रविवार २९ जून १९६९ को समाज मन्दिर मे पण्डित सत्पाल शास्त्री एम०ए० वेद वाचस्पति को बडे समारोह पूर्वक संस्कृत में अभिनन्दन प्रस्तुत किया गया तथा भाव भरी विदाई दी गई।

श्री शास्त्री जी ने सात वर्ष तक बडी कुशलता से पुरोहित पदेन समाज की सेवा की। समाज के सभी अधिकारी तथा सदस्यो ने शास्त्री जी के पण्डित्य एव कार्य-कुशलता की सराहना की! स्त्री समाज की प्रधाना ने कहा कि समाज के इतिहास मे यह पहला ही अवसर है जबकि सम्मान और आदर से श्री शास्त्री जी का अभिनन्दन किया गया है। श्री सत्यपाल जी शास्त्री अब १ जुलाई १९६९ से इन्टर कालेज मेरठ कैंट मे लैक्चरार चुने गए हैं।

—मन्त्री दयालचन्द

हिमाचल में वेद प्रचार

आर्यसमाज रणवीरसिंह पुरा

६, ७, ८, ९ जुलाई को अ. स. रणवीरसिंह पुरा मे वैदिक धर्म का प्रचार बडी धूमधाम से हुआ। प्रचार कार्य प्रतिदिन रात्रि को ९ से ११ बजे तक होता रहा। श्री प० मेला राम जी रेडियो सिंगर भजनोपदेश सभा के मनोहर तथा सुन्दर भजनो को जनता ने बहुत पसन्द किया। श्री भास्करा नन्द जी उपदेशक सभा के भी प्रवचन होते रहे। श्री लाला रामलाल जी प्रधान तथा मन्त्री श्री बाबूराम जी बडी लग्न से कार्य करते है। समाज के साथ इनका बहुत प्रेम है।

सभा को निम्नलिखित सज्जनो ने दान दिया—

श्री ला० रामलाल जी प्रधान ११), ला० हरनाम दास जी भट्ठे वाले १०), श्रीमती सीता देवी जी ५), श्री महिन्दर नाथ जी ५) डा० इन्द्र चन्द जी ५), ला० सतपाल जी ५) श्रीमती सत्यादेवी जी २), श्री हरवश लाल जी ५), श्री रामचन्दजी २), डा० यशपाल जी २) श्री बाबूराम जी २), श्री रूपचन्द जी सेठी १), श्री श्री रूपचन्द महता २), श्री देशराज जी २) श्री गिरधारी लाल जी २) श्री धर्मचन्द जी २) कुल राशि ७०) प्राप्त हुई। सभा की तरफ से बहुत-बहुत धन्यवाद। (क्रमशः)

पंजाबी हिन्दुओ ! सावधान!!

१९७१ में पुनः जनगणना आ रही है

पंजाब के हिन्दू का दुर्भाग्य है कि उसका कोई सर्वसम्मत नेता नहीं। यह भी नितांत सत्य है कि आज यहां पजाब केसरी ला. लाजपतराय जैसा ओजस्वी वक्ता है, न महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जैसा दृढ़ प्रतिज्ञ नेता, न महात्मा हसराज जैसा सर्वस्व बलिदानी शिक्षाशास्त्री है, न भाई परमानन्द जैसा निर्भय महारथी, न महाशय कृष्ण जैसा लेखनी का धनी है और न गोस्वामी गणेशदत्त जैसा निस्स्वार्थ नेता !

अकालियो का उत्साह, श्रद्धा एव पथप्रेम अनुकरणीय है कि उन्होने एक ऐसे व्यक्ति को अपना केन्द्रीय नेता मान रक्खा है जो विद्या मे, बलिदान मे, पथक सेवा मे, गाव मे और प्रभाव मे स्वर्गवासी मास्टर तारासिहके मुकाबिले में शून्य है। किसी सर्वसम्मत नेता के अभाव के कारण ही कदाचित् हिन्दु जाति बगैर सेनापति की सेना के दयनीय दशा मे ठोकरे खाती फिरती है। ऐसी स्थिति मे पजाब के बाहर से जो भी नेता यहां पधारे, चाहे वे किसी भी धार्मिक, सामाजिक, सास्कृतिक अथवा राजनैतिक सगठन से सम्बद्ध हो, पंजाब की विशेष परिस्थितियो से बिल्कुल कोरे होते है — न वे यहा की समस्याओ को समझते हैं और न ही उन्हे समझने का यत्न ही करते है। परिणामत. वे बगैर सोचे-समझे जो उनके मुह मे आ जाए उगल कर चलते बनते हैं जिससे पंजाबी हिन्दुओ की जटल समस्याए अधिक उलझ जाती है। उदाहरणत.—

१९४१ की जनगणना के बहिष्कार करने की आज्ञा कांग्रेसी नेताओ ने प्रसारित कर दी। हिन्दुओ ने तो इसका पालन किया और मर्दुम शुमारी का बायकाट कर दिया, मगर मुसलमानो ते अपने पालतू बकरों का नाम शेख बकरुद्दीन और भेडो का मुसम्मात लैला लिखा कर अपनी संख्या में वृद्धि कर ली, जिस का नतीजा यह हुआ कि उन्ही जनगणना के आंकडों के आधार पर बहु-संख्यक हिन्दू अल्पसंख्यक बन गए और उसके ६ वर्ष बाद देश का विभाजन हो गया।

इसी प्रकार १९५१ की जनगणना से कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के पूज्य गुरु जी जालन्धर के भाषण में आदेश दे गए कि पंजाबी हिन्दुओं को अपनी मातृभाषा पंजाबी लिखवानी चाहिए उनके श्रद्धालुयों ने उक्त आज्ञा को शिरोधार्य किया और हिन्दी भाषी हिन्दुयो की सख्या मे पर्याप्त कमी हो गई।

तत्पश्चात पृथकतावादी कुछ एक हरियाणा के हिन्दू सत फतहसिह के हत्ये चढ गये, जिस से कटे-फटे पजाब के कई टुकडे कर दिए गए। हिन्दी भाषी हिन्दुओ की सख्या केवल ४० प्रतिशत रह गई।

अत्यन्त खेद का विषय है कि १९५७ के हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे जेलो को भरने वाले जनसघी सज्जन केवल दो कुर्सियोके लालच मे पजाबका पुन: विभाजन कराने वाले फतहसिह के माया जाल मे कुछ ग्रस्त हुए है कि प्रतिदिन किए जाने वाले अपने घोष को कि —

'यह धरती है पार्वती और यही सदा शिव शंकर है'

को भूल कर अब उन्हे सन्त फतहसिह के व्यक्तित्व मे 'कैलाश वासी शिवशकर' के साक्षात दर्शन होने लगे हैं। उक्त सन्त जी के यह नवीन भक्त यहा तक कहने का साहस करने लगे हैं कि जो व्यक्ति गुरुमुखी लिपि मे पजाबी को मातृ-भाषा स्वीकार करने को तैयार नही, वे यहा से अपना बिस्तर गोल कर ले। इनके मन्त्री आयु भर हिन्दी की रट लगाते-लगाते अपने पद की शपथ भी पजाबी मे लेना श्रेयस्कर समझने लगे हैं, अकाली जनसघ सरकार के शासनकाल में राज्यपाल का भाषण हिन्दी मे नही छप सकता, विधानसभा और विधान परिषद् मे प्रश्नो के उत्तर माग करने पर भी हिन्दी मे नही दिये जा सकते, इनका गवर्नर हिन्दी को सम्पर्क भाषा अथवा जनसघियो के शब्दो मे प्रयोग की भाषा भी स्वीकार करने को उद्यत नही, इनके मुख्यमन्त्री की दृष्टि मे पजाब मे पजाबी के अतिरिक्त दूसरी कोई भाषा है ही नहीं, इनकी मान्यता है सरकारी नौकरी के लिये हिन्दी की कोई आवश्यकता ही नही, इस सरकार का कोई मन्त्री कहता है कि जिस भाषा मे प्रार्थना-पत्र दिये जायेगे उनके उत्तर उसी भाषा मे दिए जायेगे दूसरे ही दिन उस की तरदीद कर दी जाती है, एक दिन सुनते हैं सच्चर फार्मूला चलता रहेगा, दूसरे दिन नई भाषा पालिसी के निर्माण करने की घोषणा कर दी जाती है।

ऐसी दुरावस्था मे पजाबी हिन्दुओ को विचारना है कि हम कहा खडे हैं और भविष्य के गर्भ मे से हमारे लिये किस प्रकार की आपत्तिया-विपत्तिया प्रादुर्भूत हो सकती है ?

अब १९७१ मे पुनः जनगणना होने वाली है। हम पजाब के हिन्दुओ को सावधान करना चाहते हैं कि अपनी हिन्दी भाषा, हिन्दु सस्कृति, हिन्दू सभ्यता और और चालीस प्रतिशत जनसख्या सरक्षण के अभी से परस्पर विचार विमर्श करके शीघ्र अपने लिए कोई कार्यक्रम निर्धारित करें, ताकि कही ऐसा न हो कि ये कुछ एक पद-लोलुप सज्जन जनगणना के अवसर पर चुपचाप कोई ऐसी पैंतराबाजी कर जाए जिस से चालीस प्रतिशत हिन्दूओ की सख्या इतनी कम हो जाए जिस से हम अल्पसख्यको के वैधानिक अधिकारो (३० प्रतिशत) से भी वंचित हो जाए। सावधान ! खबरदार !! सावधान !!!

पिण्डीदास ज्ञानी
प्रधान पजाब हिन्दू महासभा
अमृतसर

हिमाचलप्रदेश में आर्यप्रादेशिक सभा के अन्तर्गत आर्यसमाजों को सूचना

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा की ओर से वेद प्रचारार्थ निम्नलिखित स्थानो पर प० चन्द्रसैन जी तथा प. राजपाल मदन मोहन चिमटा भजन मण्डली पधार रही है। अधिकारी वर्ग से प्रार्थना है कि प्रचार का आयोजन करने का कष्ट करे और सभा को वेद प्रचार फड से सहयोग देकर कृतार्थ करे।

कार्यक्रम .—७ जुलाई से १३ तक शिमला, १३ से १५ तक सुन्दर नगर, १५ से १८ तक मण्डी नगर, २० से २० तक जोगिन्दर नगर, २४ से २७ तक नगरोटा वगुआ, १ से ४ अगस्त तक कागडा ५ से १० अगस्त तक नूरपूर।

विनीत :— !
मन्त्री आर्यप्रादेशिक सभा

बस्तीबाबा खेल जालंधर

गत मास श्री शिवलाल जी भाटिया मालिक गणेश स्पोर्टस ने अपने घर पर कथा का प्रबन्ध किया। सभा की तरफ से श्री प० खुशीरामजी महोपदेशक तथा श्री प० मेलारामजी रेडियो सिंगर, भजनोपदेश सभा द्वारा ७ दिन प्रोग्राम होता रहा। श्री प० खुशीराम जी ने उपनिषदो की कथा द्वारा जनता को अमृतपान कराया। श्री मेलाराम जी रेडियो सिगर जी के भजनोपदेश होते रहे।

कथा समाप्ति पर श्री शिवलाल जी भाटिया ने सभा को वेदप्रचारार्थ २००) दिए।

सभा की तरफ से श्री भाटिया जी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

जिला करनाल मे वेद प्रचार की धूम तथा उत्सव

(गताक से आगे)

७. आर्य समाज बरास जिला करनाल का पहला उत्सव २० से २२ जून तक बडी प्रसन्नता पूर्वक सपन्न हो रहा था नगर के कुछ सज्जनो ने रचे हुए यज्ञ मे विघ्न डाला उपदेशकगण जो कि उत्सव पर पधारे थे ये घटना देख कर अति दुखी रहे नगर के कुछ सज्जनो ने समाज के अधिकारी तीन परिवारो की चोरी १५ हजार की कराई जेबर वस्त्र तथा नकद रुपये। उत्सव मे बडी अशान्ति रही भली प्रकार प्रचार भी नही हो सका फिर भी सभा के लिए १००) रु० वेदप्रचार को दिए। उपदेशको को दक्षिणा भी दी गई।

८ आर्यसमाज जि० करनाल का उत्सव २३ से २५ जून तक बडी धूमधाम मे मनाया गया। सभा की ओर से श्री प० चन्द्रसेन जी, श्री प० सत्यव्रत जी, श्रीज्ञानचन्दजी श्रीमहाशय नत्थूराम जी, चौ० नत्थासिह मधुर गायक, श्री ठा० दुर्गासिह जी आर्य तूफान वेदप्रचार मडल करनाल सब उत्सवो का प्रबन्ध करनाल मडल तथा सभा की ओर से था उत्सव मे आर्यसमाज के अधिकारी चौ० देशराज जी प्रधान श्री मामचन्द जी श्री अमरसिह जी मन्त्री ने उपदेशको की अनथक सेवा की सभा के लिये मार्गव्यय के अतिरिक्त १०३) रु० वेदप्रचारार्थ चन्दा आर्यजगत ८) भूतपूर्वक प्रधान श्री नन्दराम जी के सुपुत्र श्री धर्मवीर जी ने अपने स्वर्गवासी पिता के नाम से ५१) रु० सभा को दान दिया समाज की तरफ से विद्वानो को दक्षिणा भी दी।

दुर्गासिह आर्य तूफान वेदप्रचार
मडल, करनाल

आर्य समाजों से निवे[illegible]

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धि[illegible] प्रार्थना है कि वेद सप्ताह प्रचार १-८-६९ से ३०-९-६९ तक [illegible] उसके प्रचारार्थ भजनीक व उपदेशक लेने के लिए सभा कार्यालय से समय रहते माग करें। ताकि सभा आपकी माग को पूर्ण कर सके। सभा के पास इतना स्टाफ नही कि वह एक ही समय पर आपको मांग पूर्ण कर सके। अत: भिन्न-भिन्न तारीखों पर सभा आपकी इस मांग को [illegible] करती [illegible]

आर्य समाजों से [illegible] प्रचा[illegible]

१-४-६९ से ३०-[illegible] तक

आर्यसमाज	रेलवे रोड अम्बाला नगर	[illegible]०१—[illegible]
,,	सरहिन्द	५०—००
,,	माडल टाऊन जालन्धर	३०—००
,,	खन्ना (लुधियाना)	३०१—००
,,	लाजपत नगर सोनीपत	२५१—००
,,	माडल टाऊन गुडगांवां	३००—००
,,	मुरादाबाद	१२—००
,,	रन्धौली	११—००
,,	बियाना	७—००
,,	तलवाडा टाऊनशिप	२००—००
वैदिक साधु आश्रम रोपड़		३१—००
आर्यसमाज	मदीनादागी (रोहतक)	२५—००
,,	गडवाल	२०—००
,,	भभेवा (जींद)	२५—००
,,	चुडाली नन्दगढ	३४—००
,,	माडल टाऊन लुधियाना	[illegible]—००
,,	जोगेन्दर नगर	[illegible]—००
,,	सुन्दर नगर	[illegible]—००
आर्य समाज	झिझाड़ी करनाल	१[illegible]
,, ,,	सियामगढ	[illegible]—००
,, ,,	तरावडी	१५—००
,, ,,	फतेहगढ (अम्बाला)	८०-००
,, ,,	कालेज विभाग अम्बाला छावनी	६००-००
,, ,,	तरनतारन (अमृतसर)	१०१-००
,, ,,	खेराला (हिसार)	१३-००
,, ,,	मुनक (करनाल)	२३-००
,, ,,	माडल हाउस जालन्धर	५१-००
,, ,,	शकूरबस्ती	१२५-००
,, ,,	सरहिंद	१००-००
,, ,,	मालवीय नगर नई दिल्ली	७०-००
,, ,,	डी०ए०वी० कालेज, अमृतसर	१०००-००
,, ,,	आर्यसमाज कालकाजी नई दिल्ली	५०-००
,, ,,	लक्की (अम्बाला)	१००-००
,, ,,	मण्डी गोविंदगढ	१०१-००
,, ,,	गोविन्दनगर, कानपुर	१००-००
,, ,,	माडल टाऊन यमुना नगर	५००-००
,, ,,	अमीन (करनाल)	४०-००
,, ,,	डेरा महरौली नई दिल्ली	१००-००
आर्य समाज	गन्नौर रोहतक	७०—००
,, ,,	गुगालां	३०—००
,, ,,	गोपाल दीढानी	२२—००
,, ,,	मिर्चपुर	१५०—००
,, ,,	पाली	१०२—००
,, ,,	हमीरपुर (कांगडा)	१५१—००
,, ,,	माडल टाऊन लुधियाना	१००—००
,, ,,	मोहदीनपुर (करनाल)	१०३—००
,, ,,	मैणी खुर्द	२००—००
,, ,,	तरावडी	१०१—००
,, ,,	चडाली नन्दगढ़	२८४—००
,, ,,	मोखरा	५१—००
	बस्तली करनाल	१५४—००
	बराड़	१००—००
	सांढे	१०४—००
,, ,,	मिर्जापुर	३२५—००
,, ,,	सौन्धल (अम्बाला)	१५०—००
,, ,,	खानपुर	५०—१०
,, ,,	सैदपुर	५०—००
,, ,,	शहजादपुर	५०—००
,, ,,	ठाकुरपुरा	५०—००

आर्य सज्जनों से दान

ला०	गंगाराम जी गोहाना मण्डी	२८१-००
चौ०	नन्दराम जी, साक्ष	५१-००
डा०	बलवीर सिंह जी सांघी	१००-००
श्री	सरतराम जी बिछायल	७३-००
चौ०	मायाचन्द मैयड़	३५-००
श्री	भगवान सिंह उमेदसिंह बिरोड़	२५-००
चौ०	ओमप्रकाश खेरी आंवरा	२५-००
चौ०	[illegible] जी [illegible]	३६-५६
पं०	[illegible] जी [illegible]	२१-००
श्री	रामकिशन, देवकी नन्दन हिसार	५१-००
श्री	ओम प्रकाश आढ़ती अनाज मण्डी करनाल	१०२-००
ला०	रामप्रकाश चौधी जालन्धर	१०१-००

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर [illegible] भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे   वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ३०)   १२ श्रावण २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२७ जुलाई १९६९   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

न स मुच्यातै वरुणस्य

अर्थ :—उस प्रभु के नियम अनुशासनसे न-कभी नहीं स: वह कोई भी मनुष्य मुच्यातै छूट सकता बच सकता है वरुणस्य—वरुण राजा से कोई नहीं बच सकता।

भाव:—भगवान वरुण है। उसके नियत नियम पाश के रूप में है। जिनके द्वारा वह पापी अपराधी को बांध लेता है। उस वरुण राजा के पाशों से कभी किसी अवस्था में भी कोई छोटा हो या बड़ा बच ही नहीं सकता उससे छूट ही नहीं सकता। मनुष्य राजा के कर्मचारियों से इधर-उधर जाकर बच जाता है। किंतु याद रखो कि उस वरुण के पाशों से कभी नहीं बच सकता। प्रत्येक स्थान पर वरुण के नियम मौजूद हैं। पापीको बांधकर ऐसा पाठ पढ़ातेहै कि वह याद रखता है।

अथर्ववेद ४-१६-४

वे दा मृ त

प्रभो ! हमें बलवान बना दो

ओ३म बलं धेहि तनूष नो
बलमिन्द्रादलुत्सु न:
बलं तोकाय तनयाय जीवसे
त्वं हि बलदा असि ॥

ऋग्वेद मण्डल ३-५३-१०

अर्थ :—प्रभुदेव ! (बलं) बलशक्ति (धेहि) दीजिए (तनूष) शरीरों में (न:) हमारे (बलम्) शक्ति (इन्द्र) हे इन्द्र ! हमारे (अनलुत्सु) बैल आदि पशुओं में (न:) हमारे बल भर दो। और (बलं) शक्ति प्रदान करो हमारे (तोकाय) पौत्र व (तनयाय) पुत्र के लिये (जीव से) जीवन में बल भर दो। क्योंकि प्रभुदेव (त्वं हि) आप ही तो (बलदा असि) सभी बल देने वाले हो ! आप बल शक्ति के भंडार हो, इसीलिए बल मांगते हैं।

इस का भाव यह है

वही भगवान तमाम बल का भण्डार है। शरीर का हो या मन-आत्मा का बल हो। वही बल का दाता भीहै। अपनी सब प्रकार की कमजोरी को दूर करने के लिए उसी प्रभु से बलशक्ति की प्रार्थना करनी चाहिए। हे प्रभुदेव ! हमारे शरीर में बल भर दीजिए ताकि जीवन यात्रा में मार्ग की कठिनता देखकर बैठ न जाएं, या भयभीत न हो जाएं। हमारी सन्तान भी शक्तिशाली है। हमारा जीवन निर्बलता, कायरता का जीवन न हो—ऐसी कृपा करते रहो जिससे हम सब प्रकार से बलवान बनकर पथ पर बढ़ते जाएं। —सं.

ऋषि दर्शन

यल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धोभवति

अर्थ :—यत—जिस पर ब्रह्म को लब्ध्वा प्राप्त कर के पुमान-भक्त मनुष्य अपने जीवनमें सिद्ध:-सिद्ध भवति हो जाता है। उसके सारे मनोरथ पूरे हो जाते हैं।

भाव :—ऊपर का सूत्र आधा दिया है, शेष आधा अगली बार दिया जाएगा। मुनिवर नारद जी कहते हैं कि भक्ति के द्वारा जिस समय प्रभु का प्रेमी भगवान को, अपने परमप्रीतम को प्राप्त कर लेता है तो वह सिद्ध हो जाता है। जिसे भगवान मिल गया-उसे किस वस्तु की कमी रह जाती है। प्रभु प्रेमियों के पीछे तो सारी लक्ष्मी स्वयं ऐसे भागती आती है जैसे पुरुष के पीछे छाया। उसकी सारी कामना पूर्ण हो जाती हैं। आप्त काम होता है।

नारद: भक्ति सूत्र ४

अधिष्ठाता—डा० देवीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०(सभा मन्त्री)   सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

युवक स्तम्भ :—

क्या यह सत्य है ?

(सुरेन्द्रपाल शर्मा व्यवस्थापक आर्यजगत)

शायद ही भारतवर्ष में कोई ऐसा गांव हो जिसमे भूत-प्रेतो आदि के बारे बात-चीत न होती हो। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक भूत के नाम कांपते हैं। देखने में आया है कि पढा-लिखा समाज भी भूतों-प्रेतों में विश्वास रखता है। भूतों का अस्तित्व क्या है ? यह किसी को मालूम नहीं है। नित्य प्रति अजीब-अजीब-सी घटनाएं देखने-सुनने में आती हैं। इसमें कहां तक सच्चाई है, इसकी पूर्ण रूप से जानकारी नही हो सकी। परन्तु जो भी हो आजकल ८०% लोगों के दिलों में भूत-प्रेतों का एक अनुभवहीन भय समाया हुआ है। 'क्या यह सच है ?' कि इस विशाल भू-मण्डल पर कोई भूत नाम की वस्तु है ?

जब हम अपने प्राचीन ग्रन्थो के कभी पृष्ठ उलटते हैं तो उसमे से हमको पुराने बलि पुरुषो के बारे पता चलताहै। जो बलि पुरुष सत्कर्म करते थे उनको तो धर्मी की उपाधि दी जाती थी और जो मांस, मदिरा का सेवन करते तथा लोगो को तग करते थे उनको राक्षस कहते थे। परन्तु भूत-चुड़ैल, डायन, शाकिनि, पशाचनि आदि नाम उनमें नही मिलते। वह दूसरी बात है कि पुराने ग्रन्थो को दुबारा जब लिखा गया हो तो उनमें भूत-प्रेतों आदि नामों का उल्लेख किया गया हो।

इन भूतों की भी अजीब-अजीब कहानिया हैं जिनके बारे मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हू। आज से आठ या नौ साल पहले की बात है कि मेरे गाव मे भूतो-प्रेतों आदि का बहुत जोर हो गया।

(अब भी लोगो में वही पुरानी धारणा है) मेरी आयु उस समय १३ या चौदह वर्ष की थी। उस समय मेरा भूत-प्रेतों पर विश्वास था, या यू समझिए कि मुझे भी भूत के नाम से भय लगता था। मेरे उस समय कई साथी थे जो सब भूतों पर विश्वास करने वाले थे कई तो इतने डरपोक थे कि शाम के समय बाजार से अकेले घर नही जाते थे (हमारी गली मे रात को बहुत अन्धेरा रहता था) उनको अगर कोई टार्च वाला मिल जाता तब ही घर जाते भले ही रात के १२ बज जाएं। हमने सुन रखा था कि अगर दोपहर को घर से बाहिर निकले तो भूत पकड़ लेते हैं (चिमट जाते हैं) रविवार की छुट्टी थी। आमों का मौसम था। मित्र मण्डली ने सलाह की कि आज चलो तालाब में नहाया जाए। बस फिर क्या था। घर में सब झूठ बोलकर तालाब पर पहुंच गए। उस समय आमों पर कच्चे आम लगते थे। वहां नहाकर पास ही के आमो के बाग में सब घुस गए। कच्चे आमों को तोड़-तोड़कर खाते रहे। शाम होने को जा रही थी। चिंता हुई घर से पीटे जाने की। सबने अपने-अपने घर की राह ली। दूसरे दिन खबर मिली कि एक लड़का (जिसका नाम कृष्ण था) बिमार हो गया है। उसके माता-पिता को चिन्ता लग गई। लाड प्यार से पूछने पर तो उसने कुछ बताया नही। जब उसके पिता जी ने डण्डा पकडा तो कल का सब हाल बता दिया। माता-पिता ने सोचा कि हो न हो इसको भूत ने पकड़ लिया है। बात कुछ ऐसी हो गई कि उसके माता-पिता ने उसके सामने ही यह बात कह दी, कि तुम्हे तो अमुक जगह जाने को मना किया था तुम माना नही। तुम को जरूर भूत ने पकड़ा है। लड़का तो पहले ही कमजोर दिल था, जब यह बात अपने पिता के मुख से सुनी तो और डर गया। शाम होते-होते पूरे ज़ोर से बुखार हो गया। माता-पिता को कुछ सूझे ही नही कि क्या किया जाए ? किसी के कहने पर ले आए एक ओझा को बुला कर। उसने भी कहा कि इसको तो बड़े भारी भूत ने घर दबोचा है। माता-पिता के के कहने से उसने कृष्ण का भूत निकालना शुरू किया। मैंने अपनी आंखो से देखा कि मेरे सामने उसको लोहे के चिमटे से इतना पीटा कि उसकी पीठ पर एक दो जगह से खून निकल आया। मैं तो और वहां ठहर न सका। कृष्ण तो पूरे ज़ोर से चिल्लाता था परन्तु जितना वह चिल्लाता उतना ही ओझे का चिमटा उसकी पीठ पर ज़ोर से पड़ता। मुझे उसके अगले दिन मालूम हुआ कि हस्पताल मे कृष्ण को लेजाया गया(उसी रात)डाक्टर ने सब सब कुछ देख भाल का उसको ठीक किया तभी भी कृष्ण को चार रोज हस्पताल मे रहना पड़ा। डाक्टर की डांट फटकार से कृष्ण के पिता की आखें खुल गई उनको मालूम हो गया कि कृष्ण के अन्दर कोई भूत नही था बल्कि तालाब के गर्म पानी में नहाने, धूप में घूमने और ऊपर से कच्चे आम खाने के करण बुखार आ गया था। इस घटना को देखकर मेरा थोडा सा विश्वास भूतो से उठ गया था। परन्तु उस घटना के बाद १५ बीस दिन तो बाग को नहीं गया। मेरे यह घटना लिखने का तत्पर्य आप समझ गए होंगे कि बाप के अन्ध विश्वास के कारण बेटे को कितना कष्ट भोगना पड़ा।

आजकल तो और कई प्रकार के ढोंग चल पड़े हैं। पुरानी कबरों पर किसी पाखण्डी का आकर सिर घुमाना (पंजाबी में उसको खेडना या चौकी देना कहते हैं) लोगों का उसके पास जाकर प्रश्न पूछना (पंजाबी में उसको कण डाला कहते हैं) न जाने कितने लोग वहां इकट्ठे हो जाते हैं। चढ़ावा चढ़ाते हैं दीपक जलाते हैं। आटा-गुड़ तेल आदि वहां ले जाते हैं। इन अन्ध विश्वासीयों को यह पूछो कि जिस कबर पर यह सब कुछ तुम कर रहे हो वह तो मुसलमान की है, क्या कोई मुसलमान भी गुड़, तेल, आटा लेकर कभी आया है ? परन्तु वह सो जानबूझ कर यह सब करते हैं। पूछने पर उत्तर देते हैं कि जो यह सब करते हैं क्या यह झूठे हैं ?

मुझे अच्छी प्रकार याद है कि मैं उड़ीसा में गया वहा पर मैंने देखा कि एक सज्जन (पजाब के रहने वाले) वहां पर सिर घुमाते (चौकी) थे। दुनियाभर के लोग उनके पास जमा हो जाते थे। भूत प्रेतो को भगाने का उनका पेशा था। एक बार ऐसे ही वह सिर घुमा रहे थे कि एक औरत ने उनसे पूछा (कण डाला) कि महाराज मेरे घर विच हर वेले दुख क्लेश पिया रहदा है की गल वे महाराज ने बीस मिण्ट बाद उत्तर दिया। बीबी तेरे घर दे बाहर दे बूहे दी दहलीज थले ५ लोहे दे किल गडे ने। तेरे घर दे सुख नू किला नाल कील दिता है। तूं ओहनां किलां नूं पुट के किसे तला विच सुट दे तेरे घर दे दुःक क्लेश सब दूर हो जानगे। उस औरत ने कहा कि— सतवचन महाराज : तुसी तां जानी-जान हो।

जब सब लोग चले गए वह औरत भी घर आई। अपने पति को कह दिया कि जल्दी से एक कस्सी (कही) का प्रबन्ध करो। पत्नी ने कस्सी ला कर दे दी। फिर क्या था ? दरवाजा उखाड़ कर बाहर रख दिया। पति भी मदद के लिए आगे बढ़ा। लगे कस्सी चलाने। पति थक जाता तो पत्नी लग जाती अगर पत्नी थक जाती तो पति महोदय कस्सी सम्भाल लेते। चार फुट गहरा गढ़ा निकाल दिया परन्तु कीलें दिखाई देने का नाम न लें। दोनों पसीने से भीग गए। परन्तु यही आशा बनी हुई थी कि चोखा और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रभु से प्रार्थना

सत्यपाल 'पथिक' पुरोहित आ० स० अमृतसर

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो,
भवर मे है नैय्या इसे पार कर दो।
मेरी इन्द्रियां हों सदा मेरे वश में,
मेरे मन पे मेरा ही अधिकार कर दो।

न शुभ कर्म करने में पीछे रहूं मैं,
कुकर्मों से मुझ को खबरदार कर दो।
मैं गाऊं सदा वेद की ही ऋचाए,
कि तन मन में वेदों का संचार कर दो।

मेरा सर झुके तो झुके तेरे दर पर,
मुझे ऐसा दुनियां में सरदार कर दो।
मैं समझूं न जग में किसी को बेगाना,
मेरा विश्व भर के लिये प्यार कर दो।

'पथिक' राह में हो कोई दीन दुखिया,
मदद के लिये मुझ को तैयार कर दो।

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, २७ जुलाई १९६९ [अंक ३०

सभा-प्रधानजी का वक्तव्य

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर के माननीय प्रधान प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल जहा पर इतनी बडी सभा के नेता हैं, वहा बहुत बडे शिक्षा-शास्त्री भी हैं। शिक्षा के विभास्क्षेत्र में आपका बहुत बडा मानसम्मान है। अमेरिका मे भी हो आये हैं। इस समय डी ए. वी कालेज जालन्धर जैसे विख्यात और विशाल शिक्षण सस्थान के प्रिंसिपल पद के ऊंचे आसन पर बैठ कर इस का सचालन करते है। शिक्षा के कार्य मे आपको बहुत बडा अनुभव प्राप्त है। सारे समाज को ही आप जैसे शिक्षा-शास्त्रियो के व्यक्तित्व पर मान है। हमारे डी. ए. वी परिवार मे प्रिंसिपल बहल जी जैसे सस्थानो के संचालको एवं इस महान क्षेत्र मे विख्यात अनुभव भरे आचार्यों से शिक्षाजगत की शोभा है। जिन का जीवन क्षेत्र ही शिक्षा है, ऐसे-ऐसे अनुभवियो के शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध मे ठोस परामर्श बडा कार्य करते हैं। खेद तो इस बात का है कि शिक्षा के मामले में भी केवल राजनीति आ गई है। इसी दृष्टिकोण से ही राजनीतिक लोग व अधिकारी निर्णय कर देते हैं। इसी का ही यह परिणाम है कि आज भाषा समस्या ब ी बुरी तरह उलझ कर रह गई है। चाहे केन्द्र हो या प्रान्त हो- इसने राजनीतिक रूप धारण कर लिया है। इससे सारे देश की हानि हो रही है।

अपना प्रान्त पञ्जाब में सच्चर फार्मूला के आधार पर स्कूलो मे पढने वालों को यह स्वतन्त्रता मिली थी कि उनके माता-पिता अपने बच्चो को प्रारम्भ की कक्षाओ मे जिस भी भाषा हिन्दी या पञ्जाबी म शिक्षा दिलाना चाहे दिला सकते हैं। सभी के लिए समानता थी। किन्तु खेद है कि पंजाब सरकार ने इस फार्मूले को एकदम समाप्त करके सरकारी स्कूलों में प्रारम्भ कक्षा से पञ्जाबी लागू करके इसे शिक्षा का माध्यम घोषित करदिया है। यही बात प्राइवेट स्कूलो के लिए आज नही तो कल होने की सम्भावना है। इस मे शिक्षाशास्त्रियो से परामर्श तक भी नही लिया गया इससे कितना अन्याय हुआ है, कितनी भविष्य मे बच्चों को हानि होगी तथा यह सरकार का कदम कितना अप्रजातान्त्रिक है यह सारी बाते शिक्षाशस्त्री ही जानते हैं। इसी सम्बन्ध मे सभा के माननीय प्रधान प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल ने एक अपना वक्तव्य दिया है। यह वक्तव्य कितना न्यायसगत और युक्तियुक्त है, शिक्षण क्षेत्र के अनुभवो से भरा हुआ है, प्रजातन्त्र के आधार पर है—जिसे पढ कर सर्वसाधारण व्यक्ति भी भली भाति समझ लेता है। सभाके साप्ताहिक मुखपत्र आर्यजगत मे गताक मे पूर्ण रूप से प्रकाशित हो चुका है। इस मे कहा गया है कि......

"सच्चर फार्मूला समय की कसौटी पर खरा उतरा है और राज्य के स्कूलो मे शिक्षा माध्यम का प्रश्न फिर से खोलने का कोई कारण ही नही था। वास्तव मे सरकार के नए फैसले से जो माता-पिता से अपने बच्चो का शिक्षा माध्यम चुनने का वैध अधिकार छीनता है, प्रगति प्रजातन्त्र और स्वतन्त्रता प्रमियो मे आम तौर पर और हिंदी प्रेमियो मे खास तौर पर भारी रोष पैदा कर दिया है। शिक्षा शास्त्री के रूप मे हमारा कर्तव्य है कि राजभाषा पजाबी के विकास के लिए समुचित प्रयत्न करे लेकिन हमे स्पष्ट रूप से यह समझ लेना चाहिए कि राष्ट्रभाषा के हितो की उपेक्षा करना हमारे लिए हानिकर होगा। उच्च शिक्षा के हित मे यह जरूरी है कि पहली श्रेणी से ही पजाबी के साथ-साथ हिंदी की पढाई जारी रखी जाए। अपने भाषा सम्बन्धी ववतव्य मे आप आगे लिखते हैं—'यह आश्चर्य की बात है कि एक विशुद्ध शैक्षणिक मामले पर, जिसे शिक्षाविदो द्वारा हल किया जाना चाहिये था, पर पर्याप्त ध्यान नही दिया गया। प्रजातन्त्र के इस युग में लोग अपने हितो तथा अपने बच्चों के हितों को बहुत अच्छी तरह समझते हैं। शिक्षा के माध्यम मे किसी भी प्रकार की जबरदस्ती व्यापक मात्रा मे असन्तोष पैदा कर देगी। सरकार का यह निर्णय अप्रजातान्त्रिक होने के अतिरिक्त पजाबियो के लिए अखिल भारतीय प्रशासकीय और अन्य सेवाओ के मामले मे भी हानिकर होगा। .....हिन्दी शिक्षा माध्यम को सीमित करके उसे अग्रेजी के स्थान पर सम्पर्क भाषा का स्थान देना अनुचित है और हमारे हितो के लिए घातक है। ..सही पग यही होगा कि सरकारी स्कूलो मे भी वर्तमान व्यवस्था को बनाए रखा जाए जब तक कि शैक्षणिक रूप से ठोस तथा स्वीकार्य फार्मूला तैयार न हो जाए।. सरकार शीघ्र ही सही प्रतिनिधित्व करने वाले शिक्षाविदो प्रशासको और सास्कृतिक क्षेत्र के जनमत के प्रतिधियो का सम्मेलन बुलाए .....'

माननीय प्रिंसिपल जी का यह वक्तव्य कितना स्पष्ट है तथा शिक्षण क्षेत्र के अनुभवो से भरा हुआ है। आज के इस प्रजातन्त्र के युग मे प्रजा के साथ न्याय किया जाना चाहिए। सब से बडी और आवश्यक बात यह है यह काम शिक्षा शास्त्रियो की सलाह से सम्बन्ध रखता है। उनके परामर्श से लाभ उठाए बिना बच्चो के भविष्य को अन्धकारमय बना सकता है। जब तक किसी सर्वसम्मत फार्मूला पर नही पहुचा जाता तब तक शिक्षण का वर्तमान रूप ही पजाब के स्कूलो मे कायम रखा जाए। अपने वक्तव्य मे मान्य सभा प्रधान जी ने पजाब के मुख्यमत्री जी के सामने कितनी उत्तम योजना रखी है कि इस पर विचार करने के लिए शिक्षाविदो का सम्मेलन बुलाया जाए। न्याय यही है कि सरकार ऐसा करे ताकि यह असन्तोष दूर हो सके।

—त्रिलोकचन्द्र

आर्य समाज श्रीनगर

आर्य समाज वजीर बाग श्रीनगर आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर से सम्बन्धित समाजो मे बडा ही प्रसिद्ध एव प्रभावशाली समाज है। जम्मू काश्मीर मे तो इस का स्थान बहुत ऊचा है। यह एक ऐसा आदर्श समाज है कि जहा आज तक किसी प्रकार का भी स्वप्न मे भी झगडा या मन मुटाव पैदा तक नहीं हुआ। सारा समाज आरम्भ काल से ही एक परिवार के रूप मे कार्य करता है। माननीय प्रधान श्री एन. डी राधा कृष्ण जी है जो अतीव सम्पन्न होकर भी धर्म के रग मे रगे हैं। समाज के मन्त्री माननीय प्रिंसिपल राधा कृष्ण जी गजू है। आप यहा के बहुत ही प्रसिद्ध तथा जम्मू काश्मीर प्रान्त मे सब से बडे, प्रभावशाली डी ए वी हायर सैकण्डी स्कूल के प्रिंसिपल है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री तथा बडे प्रसिद्ध नागरिक हैं। प्रत्येक क्षेत्र मे आपके जीवन का, योग्यता तथा सेवा का विशेष प्रभाव है। सारा स्कूल अपने माननीय शिक्षक वर्ग तथा छात्र समुदाय समाज सेवा मे आगे ही आगे है। वास्तविक सत्य तो यह है कि हमारा यह स्कूल समाज के महोत्सव का स्वय ही प्रतीक है। धन की सेवा हो या समाज का काम-सब मे जुटा रहता है। यह सब मान्य प्रिंसिपल जी के नाते है। वह स्वय जब समाज कार्य मे आगे रहते है तब सारा स्कूल पीछे क्यो रहे। श्रीनगर जैसे वातावरण मे स्कूल का यह उत्साह व समाज प्रेम देखकर प्रेरणा ली जा सकती है। सारे मान्य अध्यापक कार्य मे जुटे रहते हैं। सारे समाज को इस स्कूल पर और समाज पर बडा मान है। स्त्री समाज मे माताओं बहिनो की श्रद्धा का तो कहना ही क्या? यज्ञ हो या कथा, जलसा हो या ऋषि लगर का भोजन बनाना-भगवान् ने इन मे श्रद्धा का भरपूर सचार किया है। श्रीनगर मे आखो ने इस दृश्य को देखकर मन बडा ही प्रसन्न हो गया।

जलसे से पूर्व पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की दस दिन उपनिषद् [illegible] थी। कथा मे श्रीनगर की उमडती हुई जनता को देख कर [illegible] बात का परिचय होता है कि लोगों को आर्य समाज के साथ कितना प्यार है। बात यह है कि जिस सस्था के अधिकारियो का जन-जीवन के साथ सम्पर्क होता है तथा इस प्रकार के धार्मिक व समाज सेवा के कार्यों मे स्वय आगे आगे रहते है, वहा की जनता उनके जीवन से सीख लेती है। वहा पर समाज को हर प्रकार का सहयोग मिलता है श्रीनगर काश्मीर जैसे वातावरण मे बैठ कर समाज

(शेष पृष्ठ ५ पर)

'परमेश्वर की प्राप्ति के साधन'

(श्री अनूप सिंह, दयानन्द भवन, मेरठ मार्ग मुजफ्फर नगर)

'यस्यच्छाऽमृतं यस्य मृत्युः'—अर्थात परमात्मा का आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है और उसका आश्रय न मानना ही मृत्यु आदि दुख का हेतु है। परमात्मा को प्राप्त करके ही प्राणी मृत्यु का उल्लङ्घन कर सकता है अन्यथा नही।

'तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'

परमात्मा की प्राप्ति के लिए जिन साधनों का होना आवश्यक है वे अधोलिखित उपनिषत् मन्त्र मे वर्णित हैं—

'सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्। अन्त शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो य पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः॥'—

(मुण्डकोपनिषद्)

उपर्युक्त मन्त्र का अर्थ महात्मा नारायण स्वामी जी ने किया इस प्रकार है—

(अन्तः शरीरे) शरीर के अन्दर (ज्योतिर्मयः) प्रकाशवान् (शुभ्रः) पवित्र (हि) निश्चय (एष) इस (आत्मा) परमात्मा को (जो) (सत्येन) सत्य (तपसा) तप (सम्यग्) यथार्थ (ज्ञानेन) ज्ञान (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य से प्राप्त होने योग्य है, (उसे) (क्षीणदोषाः) दोष क्षीण हुए (यतयः) यतिगण (पश्यन्ति) देखते हैं।

प्रियतम परमात्मा को पाने के लिए ऊपर के मन्त्र मे चार बातें बताई गई हैं (१) सत्य (२) तप (३) यथार्थज्ञान और (४) ब्रह्मचर्य।

सत्य :—सत्य केवल सत्य बोलने को ही नही कहते अपितु सत्य वह है जैसा मन मे विचार आवे, वैसा ही वाणी से कहना और जैसा वाणी से कहे वैसा ही कर्म करना। यदि मन वचन और कर्म में एकता नही अर्थात मन मे कुछ और सोचता है, वाणी से कुछ और कहता है और कर्म से कुछ करता है तो सत्य नही। 'नहि सत्यात्परो धर्मो'—सत्य से बढ़कर कोई धर्म नही। 'सत्यमेव जयते नानृतम'—सत्य की ही विजय होती है असत्य की नही। आजकल उपयोगितावाद का जमाना है हर कार्य को करते समय हम पहले लाभ को देखते हैं तब उस कार्य को हम करते हैं। मन मे विचार उत्पन्न हो सकता है कि सत्यचरण का सबसे बडा लाभ है मन की शुचिता। 'मनुस्मृति' मे कहा गया है—'मनः सत्येन शुद्धयति' अर्थात सत्याचरण से मन शुद्ध (पवित्र) होता है। जो भी हम कार्य करते हैं उसका सबसे पहले विचार मन मे आता है। बुरा कार्य मनुष्य तब करता है जब उसके मन में बुरा विचार उत्पन्न होता है। यदि मन पवित्र विचार वाला बन जाये तो फिर उसमे बुरा विचार उत्पन्न नही होगा तो मनुष्य बुरा कार्य कदापि नही करेगा। इसीलिए हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं—'तन्मे मनः शिवसकल्पकस्तु'

तप :—गर्मी-सर्दी-भूख और प्यास आदि द्वन्द्वों को सहन करना तप कहलाता है। मनुष्य को तपस्वी जीवन व्यतीत करना चाहिए। तपस्वी मनुष्य ही ससार मे सुख से जीया करते हैं अन्य नही। हमारे आर्य ग्रन्थो मे जिस तप की बात कही गई है वह शारीरिक, मानसिक और वाचिक तीन प्रकार का है।

शारीरिक तप :—योगिराज श्रीकृष्ण जी महाराज ने 'भगवदगीता' में शारीरिक तप के विषय मे कहा है—

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजन शौचमार्जवम्।

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शरीर तप उच्यते॥ (गीता १७-१४)

अर्थात सत्यनिष्ठ विद्वानों, सच्चे ब्रह्मज्ञानी द्विजों-ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यो, गुरुओ और बुद्धिमानों की पूजा करना, पवित्रता-सरलता-ब्रह्मचर्य का पालन और अहिंसा यह शारीरिक तप है।

मानसिक तप :—मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।

भाव संशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते॥

(गी० १७।१६।)

अर्थात् मन की प्रसन्नता और शांतभाव एव भगवत्-चिन्तन करने का स्वभाव, मन का निग्रह और अन्तःकरण की पवित्रता मानसिक तप कहलाता है।

वाचिक तप :—अनुद्वेगकर वाक्यं सत्यं प्रियहित च यत्।

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मय उच्यते॥

(गी० १७।१५।)

अर्थात् जो उद्वेग न करने वाला, प्रिय और हितकारक एव यथार्थ भाषण है, जो वेद शास्त्रो से पढ़ने का एवं परमेश्वर के नाम जपने का अभ्यास है वह वाणी सम्बन्धी तप कहलाता है।

तप की महिमा का वर्णन करते हुए महर्षि व्यास ने लिखा है—'ना तपस्विनो योगः सिद्धयति' अर्थात् तप रहित मनुष्य को योग सिद्ध नही होता। वेद भगवान् कहता है—'न ऋते श्रान्तस्य सख्या देवाः' अर्थात् जब तक मनुष्य अपने को तप की भट्टि मे तपा नही लेता तब तक वह ईश्वर की दया का पात्र नहीं बनता।

यथार्थज्ञान :—साधक जिस प्रियतम प्रभु की प्राप्ति करना चाहता है उसको उसके विषय मे यथार्थज्ञान अर्थात् ठीक-ठीक ज्ञान होना चाहिए। परमात्मा के गुण कर्म और स्वभाव क्या हैं इनका ठीक ज्ञान साधक को होना चाहिए। बिना यथार्थ ज्ञान के परमात्मा की प्राप्ति असम्भव है। उपनिषद् मे एक स्थान पर आया है—

'ज्ञानप्रसादेन विशुद्ध सत्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः' अर्थात् साधन ज्ञान की महिमा से शुद्ध अन्तःकरण वाला होकर सदा मुक्त ब्रह्म को देखता है।

ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य दो शब्दों से मिल कर बना है। ब्रह्म—ईश्वर-वेद-ज्ञान-वीर्य आदि। चर्य—चिन्तन-अध्ययन-उपार्जन-रक्षण आदि।

ब्रह्मचर्य का अर्थ है (१) ईश्वर चिन्तन (२) वेदाध्ययन (३) ज्ञान उपार्जन (४) वीर्य रक्षण।

'योगदर्शन' में कहा गया है—

'ब्रह्मचर्य-प्रतिष्ठायां वीर्यं लाभः'—ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित होने से वीर्य लाभ होता है।

'वेद' में कहा गया है—

'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत' (अथर्ववेद)

महर्षि दयानन्द सरस्वती और भीष्म जी ने ब्रह्मचर्य के बलबूते पर ही इच्छानुसार अपने प्राणों को छोड़ा। ब्रह्मचर्य के प्रेमी को मैथुनों से सदा बचना चाहिए। मैथुन आठ हैं—स्त्री का ध्यान-कथा-क्रीड़ा-स्पर्श-दर्शन आलिंगन-एकान्तवास और समागम।

इस प्रकार प्रभु को प्राप्त करने के लिए मनुष्य मे सत्य तप-सम्यग् ज्ञान और ब्रह्मचर्य की आवश्यकता होती है। तभी मनुष्य इस योग्य भी होते हैं कि शरीर के अन्दर रहने वाले ज्योतिर्मय पवित्र परमात्मा के दर्शन कर सकें। यहां पर यह लिखना भी अप्रासगिक न होगा कि परमपिता परमेश्वर के दर्शन इसी शरीर में होते हैं बाहर किसी स्थान पर नही। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज लिखते हैं—'कण्ठ के नीचे दोनों स्तनों के बीच में और ऊपर जो हृदय देश है, जिसको ब्रह्मपुर अर्थात परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है, उसके बीच मे जो सर्वशक्तिमान परमात्मा बाहर और भीतर एक रस होकर भर रहा है, वह आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं।'

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका)

आर्यसमाज श्रीनगर

(पृष्ठ ३ का शेष)

के कार्यों में अपनी संस्था के मान्य प्रिंसिपल श्री प० गंजू जी जब स्वय समाज सेवा मे आगे आगे रहते हो तो स्कूल का सारा परिवार तथा समाज के अन्य भाई और बहिनों में श्रद्धा क्यों न होगी ? जनता समाज की वेदी से वेद के धर्मोपदेश सुनना चाहती है हा यदि उसे सुनाये जाये। आज हमारी वेदी भी राजनीतिक पुट से भरती जाती है इसीलिए लोग ऐसे स्थानो को को खोजते हैं जहां जीवन को शान्ति देने वाले महात्माओ के उपदेश मिलें।

जलसे पर महात्मा जी की कथा मे क्या सुन्दर शान्त वातावरण था— यह देखने का था। श्रीनगर के बीच तो जेहलम सरिता चलती है किंतु आर्य समाज बजीर बाग मे अध्यात्मवाद की सरिता चलती थी। दस दिन मेला सा लगा रहा। सारा दिन समाज मन्दिर मे नर-नारियो का महात्मा जी के दर्शन करने तथा जीवन प्यास मिटाने के लिए ताता लगा रहा ऐसा अवसर कभी कभी मिलता है।

जलसे मे सभा के कार्यक्रम पर मुझे तो आने का अवसर मिला ही। प० हजारीलाल जी भजनोपदेशक, पं० जगतराम जी, बखतीराम जी भी थे। भजन गीत मीठे होते थे। ब्रह्मचारी महेशजी का दैनिक रूपमे मस्ती भरा गीत होता था। प्रवचन भी हुए। यज्ञ की श्रद्धा भी बढ़ी थी। रविवार पूर्णाहुति पर तो बहुत बड़ा समारोह था। ऋषि लगर का क्या कहना ? सारा हाल भरपूर था। बड़े-बड़े व्यक्ति भी उसमें शामिल देख कर प्रीति भोज का दृश्य था। ऊचे परिवार की माताए बहिने अपने हाथों से बंटो बैठ कर भोजन पकाती रहीं। माता सुशीला जी, बहिन सुशीला जी आदि सभी ने श्रद्धा का परिचय दिया। इस जलसे से बड़ी प्रेरणा मिलती थी। प्रभु सारे समाज के परिवार को सुखी रखें। बडा समारोह था। —स०

महात्मा आनन्द स्वामी जी जम्मू काश्मीर में

आर्य जगत् के तपस्वी महात्मा अनन्द स्वामी जी महाराज गत मास से जम्मू श्रीनगर काश्मीर की जनता को अपने मधुर प्रवचनो के द्वारा अमृतपान करा रहे हैं। कुक्कुडनाग मे कथा की। आर्य समाज वजीर बाग श्रीनगर मे दस दिन जल्से पर उपदेश सुधा पिलाई। हजूरी बाग समाज मे प्रवचन दिया फिर विमान द्वारा जम्मू पधार कर कोटली समाज मे रस प्रवाह बहाया। इसके बाद आर्य समाज राजौरी पधारे। फिर देहली पटेमनगर समाज मे कथा पर पधारेगे। जम्मू काश्मीर की जनता ने जीवन मे बडा रसपान किया। परिवार के परिवार कथा मे दूर दू र से आते रहे।

आर्य समाज कठुआ

आ० स० कठुआ मे वेद प्रचार कार्य २९ जून व १, २ जुलाई को था। श्री प० भास्करानन्दजी उपदेशक सभा तथा श्री प० मेला राम जी भजनीक रेडियो सिंगर भजनोपदेशक सभा के अति उत्तम भजन होते रहे। अत्यन्त गर्मी में भी लोगों ने भारी सख्या मे उपस्थित होकर वेद ज्ञान प्राप्त किया।

श्री रूपलाल जी प्रधान आर्य समाज श्री तेजराम जी वकील व श्री वेद प्रकाश जी बी. ए. मन्त्री आ०स० बडे लग्नशील कार्यकर्त्ता हैं।

आ० स० कठुआ ने ५०) सभा के वेद प्रचारार्थ दिए। श्री ला० तेज राम जी प्रधान ने व्यक्तिगत रूप से ५०) सभा को वेद प्रचारार्थ दिए। श्री रविकांत जी गुप्ता ने ५) रु०दिए। १०) रु० मार्ग व्यय प्राप्त हुआ। कुल राशि ११५) प्राप्त हुइ। सभा की तरफ से आ० स० कठुआके प्रधान जी व मन्त्री जी और उन सज्जनों का बहुत २ धन्यवाद जिन्होने सभा की धनादि से सहायता की।

आर्यसमाज सांबा

आर्यसमाज सांबा मे ३, ४, ५, ६ जुलाई रात्रि ९ बजे से ११ बजे तक प्रचार होता रहा। वहा की जनता पर वैदिक प्रचार का बहुत प्रभाव पडा ! वहां श्री ला० रुपचन्द जी के प्रेमी सज्जन तथा लग्नशील व्यक्ति हैं।

वेद के प्रचार के लिए ३०) तथा मार्ग व्यय ५) प्राप्त हुवा कुल ३५) प्राप्त किए। सभा की तरफ से बहुतर धन्यवाद।

—सभा मन्त्री

वेदप्रचार मण्डल गोबिंद नगर, कानपुर—६

वेद प्रचार मण्डल गोबिन्दपुर का सामाजिक सत्सग रविवार ६-७-६९ को श्री दीवानचन्द जी खन्ना के निवास-स्थान ६ब्लाकमे उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उनके पौत्र का जन्म दिवस भी मनाया गया। हवन-यज्ञ के पश्चात प घनश्याम तिवारी, रेडियो सिंगर तथा वेद प्रचार सगीत मण्डली के मनोहर भजनो के पश्चात मण्डल-मन्त्री श्री जाति भूषण जी का प्रवचन संस्कारो पर बहुत रोचक रहा जिसका उपस्थित नर नारियो पर अच्छा प्रभाव पडा। इस शुभ अवसर पर श्री खन्ना जी ने मण्डल को १२ रु० दान दिए जिसका मण्डलने श्री खन्ना जी तथा उनके परिवार का धन्यवाद दिया।

बालक को आशीर्वाद दिया गया और उसकी दीर्घायु के लिए प्रार्थना की गई। अन्त मे शान्ति पाठ के पश्चात कार्यक्रम समाप्त किया गया।

वेद प्रकाश
प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर

'आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की यह सभा पजाब गवर्नमैंट की सकीर्ण साप्रदायिकता की घोर निन्दा करती है जिस के अनुसार उन्होंने सच्चर फार्मूला को समाप्त करके हिन्दी के साथ बडा भारी अन्याय किया है। अपने बच्चो की शिक्षा का माध्यम निश्चित करने का अधिकार U.N.O. चारटर के अनुसार सभी देशो मे माता-पिता को प्राप्त है। माता-पिता के इस अधिकार को छीन कर पजाब गवर्नमैंट ने बहुत हठधर्मी और और अन्याय का परिचय दिया है। भारत के विधान के अनुसार पजाब आज भी द्विभाषी है। हिन्दी की स्थिति को कमजोर करने के लिए ही पजाब गवर्नमैंट ने सच्चर फार्मूला को समाप्त करने का पग उठाया है आर्यसमाज की यह सभा पजाब गवर्नमैंट के इस अन्याय को कभी सहन नही करेगी।

मदनमोहन सेठ, मन्त्री

साईंदास ए. एस. हायर सैकण्डरी स्कल जालन्धर का हायरसैकण्डरी पार्ट Ist का शानदार परिणाम

इस वर्ष भी साईंदास ए. एस हायर सैकण्डरी स्कूल **Part 1st** का परिणाम अति शानदार रहा। स्कूल के १८ विद्यार्थी मैरिट लिस्ट पर आये है। यह सख्या पजाब के किसी भी स्कूल की मैरिट लिस्ट की सख्या में सब मे अधिक है। स्कूल के ३९५ विद्यार्थी परीक्षा मे बैठे और स्कूल का परिणाम ८३% रहा जबकि विश्व-विद्यालय का परिणाम ७४% रहा। इस शानदार परिणाम श्रेय स्कूल प्रिंसिपल श्री प्यारे लाल जी बेरी और उनके परिश्रमी स्टाफ पर है।

महापुरुषोवाच

श्रेष्ठ उपदेश

सग्रहकर्ता—(विश्व मित्र चड्डा, किला जालन्धर)

★ जिस मनुष्य से अपने देश को लाभ नही उस मनुष्य से मिट्टी का खिलौना अच्छा है जो बच्चों का दिल बहलाता है।

★ यदि मनुष्य अपने मन को मस्तिष्क मे भर ले तो उसे कोई छीन नही सकता।

★ भूल के साथ सग्राम करना ही जीवन है।

★ मानव बहुत होते है लेकिन मानवता विरलो मे ही होती है।

★ महापुरुषो की महानता ही मनुष्य को चिरकाल तक प्रसिद्ध बना सकती है।

★ अभिमान का त्याग ही सच्चा त्याग है—

★ ससार कच्चा कूआ है गिर पडोगे तो निकलना मुश्किल हो जाएगा।

★ यदि तुम सर्वोच्च शिखिर पर पहुचने के आकाक्षी हो तो सबसे पहले नीचे से चढना प्रारम्भ करो।

★ बाल्यवस्था से लेकर मृत्यु तक ज्ञानोपार्जन करते रहो।

★ अगर आप चाहते हैं कि सब आपकी इज्जत करे तो पहले उनकी इज्जत करना सीखो।

★ समय को आगे से पकडो समय आगे बढ जाए तो फिर हाथ मे नहीं आता।

★ मन रूपी मन्दिर को प्रतिदिन शुद्ध विचारो के झाडू से साफ रखो न जाने किस दिन भगवान महमान के रूप मे आ विराजे।

बाईबिल के सम्बन्ध में...

(पं० वेदप्रकाश विद्यावाचस्पति, सिद्धांतालंकार-आ०स० हिसार)

बाईबिल ईसाईयो का धर्म ग्रंथ है और उस के प्रचार के लिए वे दिन रात संलग्न हैं। देश विदेश की विभिन्न भाषाओं मे इस का अनुवाद हो चुका है। अन्य जितने भी लोगो के धर्म ग्रंथ हैं उन का अनुवाद इतना अधिक नही हो पाया है जितना कि बाईबिल का। लेकिन केवल अनुवाद मात्र से ही तो वह सर्वश्रेष्ठ नही कही जा सकती। क्योंकि श्रेष्ठ तो वही धर्मग्रंथ हो सकता है जिस मे मनुष्यमात्र के लिए समान उपदेश हो, उन्नति का मार्ग दिखाया गया हो, विभिन्न प्रकार की उत्तमोत्तम शिक्षाएं वर्तमान हो, समान रूप से सब का हित चाहता हो। ऐसा ग्रंथ तो केवल वेद ही हो सकता है जिस मे सदाचार, जितेन्द्रियता, समानता, मानव कल्याण आदि बातो का उल्लेख है। वेद कहता है—मनुर्भव ।। मनुष्य बन ।। मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे।। यजु० मैं सब को मित्र की दृष्टि से देखूं। इसी लिए महर्षि दयानन्द ने कहा था—"वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है।"

पर बाईबिल इस प्रकार का धर्मग्रंथ नही। उस मे तो बर्बरता और अश्लीलता अपनी चरम सीमा पर पहुच गई है। दुराचार, अत्याचार से यह ग्रंथ भरा हुआ है। दो तीन उदाहरण ही उस के लिए पर्याप्त होगे—

"तब बडी बेटी ने छोटी से कहा हमारा पिता बूढा है और पृथ्वी भर मे कोई ऐसा पुरुष नही जो ससार की रीति के अनुसार हमारे पास आए। आओ हम अपने पिता को दाख का रस पिलाए और उसके साथ शयन करे। .अपने पिता को शराब पिलाई तब बडी बेटी जाकर लेट गई।...दूसरे दिन...छोटी बेटी जा कर लेट गई। इस प्रकार से लूत की दोनो बेटिया अपने पिता से गर्भवती हुई ।।" उत्पत्ती अ० १९ आ० २१—३६।

"यदि कोई यह समझे कि मैं अपनी कुवारी का हक मार रहा हू जिस की जवानी ढल चुकी है और उस का प्रयोजन भी हो तो वह जैसा चाहे करे। इस मे पाप नही।।"

१ कुरिन्थियो ७।३६

ईसा ने कहा था—

'मत समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप करवाने को आया हू मैं मिलाप करवाने को नही परन्तु खड्ग चलवाने को आया हूं। मैं मनुष्य को उसके पिता से और बेटी को उसकी मा से और पतोह को उसकी सास से अलग कराने आया हू।' मती १०।३४-३६

इस प्रकार बाईबिल अनाचार, दुराचार, अत्याचार, परस्पर विरुद्ध असम्भव, सृष्टि क्रम के विरुद्ध, तर्क से भी विरुद्ध बातो से भरी हुई है अभी फिर भी उसे धर्म पुस्तक की सज्ञा दी जाती है इन्ही अनैतिक बातों को देखते हुए जानस्टु-वैंटएस साहब ने अंग्रेजी की 'खुदा और उसकी किताब' **God and His Book**) मे लिखा है—

'राइट आनरे बिल रिचर्ड लेलर-शील साहिब मेम्बर पालियामैंटलिखते हैं—बाइबिल मे बहुत से हिस्से ऐसे जोर दार तौर पर बल्कि ऐसे बेपर्दे तरीके पर लिखे हुए हैं कि वे बेतहाशा पढे जाने के हरगिज लायक नही है। एहद-अतीक (पुराने) के बाज हिस्सो मे...ऐसी खुली तस्वीर खींची गई है कि किसी नौजवान औरत को उन हिस्सों पर गौर करने की इजाजत नहीं होनी चाहिए। मैं यह जुर-अत से कहूंगा कि इनके दीन की गजलात मे खयालात फासिदको इस जोर से जाहिर नही किया गया, नही शहवत भरे मामलात को ऐसे खुले तरीके पर रखा गया है जैसा कि यहद-अतीक के बाज हिस्सो मे देखा जाता है। बाइबिल मे इस किस्म के वहशीपन की कहानिया पाई जाती हैं कि जिनको पढकर इन्सानी फिदरत कांप जाती है। इस मुकद्दम किताब के बाज हिस्सो मे इस किस्म के तबा-रीखी वाक-आत या हिकायत पाई जाती है कि जिनको एक बा-अस्मत औरत के सामने बगैर खौफ पैदा करने के नही पढा जा सकता। क्या एक औरत को अपने कमरे मे ऐसी किताब पढ़ने की इजाजत देनी चाहिए कि जिसको वह अपने घर मे सुनने तक से ही कांप उठती हो, क्या वह ऐसी बातो को पढ़ सकती हैं जिनको कि वह मुह से निकालने की निस्बत मर जाना बेहतर समझती है।'

सुप्रीमकोर्ट आफ विक्टोरिया के जज जस्टिस हराडली विलियम साहब लिखते हैं कि मैं बिला खौफ तरदीद कर सकता हूं कि आज तक किसी भी अंग्रेजी मुसन्निफ ने उस फोहश का दसवां हिस्सा भी अपनी किसी फौहश किताब मे नही लिखा, जो कि एहद-अतीक मे देखा जाता है। स्कूलों मे जहां बाइबिल पढ़ाई जाती है यह एक मशहूर बात है कि निकम्मे और आवारागर्द लडके अपने वक्त का बहुत सा हिस्सा इन फोहश और गन्दी कहानियों के पढने या वर्कगर्दानी में गुजारते हैं, जिस से कि एहद-अतीक भरा पडा है। फिकरे के फिकरे और फसले की फसले ऐसी है कि जिनको कोई मा या बाप अपने लडके या लडकी को पढने की इजाजत नही दे सकता। अगर जब से ईसाईयत ने बाइबिल को लिया है, उस वक्त से एहद अतीक इसका एक बडा हिस्सा चला आया है और लडकी को तालीम दी जाती है कि इसको 'खुदा का कलाम' समझे। हालाकि इनको इसके पढने की इजाजत नही है और जिसको वह इसलिए चोरी से पढते हैं ताकि दूसरे लडके कही इनको ऐसी किताब को पढता हुआ न देख लें। इसके अलावा एहद-अतीक का एक बडा भारी हिस्सा खू खारी, बेरहमी और वहशियाना खयालात से भरा पडा है। बेशरमी, बदअखलाकी, फोहश, इन्तकाम (बदला), खू खारी और जुल्म के वाक-आत ऐसे गड़मड पड़े है कि अगर तुम ऐसी तमाम फैसलो को जिनमे कि वे पाए जाते हैं रद्द करने लगो तो किताब मे से थोडे से हिस्से से बहुत कम बाकी रह जावेगी।

अमेरिका के पादरी रेवेरेण्ड हेनरी वार्ड बीचर साहिब की राय है कि 'बाइबिल को हरगिज नौजवान औरतों को नही देना चाहिए, इसी पादरी बीचर साहिब के बारे में मि० पार्क गौडविन साहिब लिखते हैं कि रेवरेण्ड हेनरी वार्ड बीचर साहिब का बाइबिल को मजहबी और आखलाकी तालीम के लिहाज से रद्दकर देना बाईबल के रद्दी होने के बारे में ऐसी ही सनद है जैसा कि हर्बर्ट स्पेन्सर, फ्रेडरीक, हरीसन, टिरडैल, हक्सले, हैकल, कैपिल वगैरह की जोकि सबके सब बाइबल की तालीम के मुखालिफ थे।'

सन १२२८ ई० मे कौंसिल आफ टलूस ने यह कानून बना दिया था कि बाईबिल की कोई भी किताब किसी शख्स के हाथ में न रहे अगर कोई इस किताब को पढ़ता हुआ देखा गया तो वह जिन्दा आग में जला दिया जायेगा। इस बात का जिक्र रडल साहब की 'तवारीखपोप' की जिल्द दोयम मे मौजूद है।

रैनिक साहब अपनी किताब 'पोप आफ रोम' की जिल्द अव्वल के सफे ५०४ पर लिखते हैं कि बाईबिल की बहुत-सी किताबों की एक फहरिश्त तैयार की गई और फिर उनको एक बडे ढेर मे जमा करके आग लगा दी गई, ये किताबे कई दिनो तक जलती रही। यह साहिब अपनी इसीकिताब के सफे १६० मे लिखते है कि न सिर्फ छापने और बेचने वालो को ही बाइबिल की ममनूअ किताबो के छापने और बेचने से कानूनन मने कर दिया गया बल्कि सब को हुक्म था कि इस किस्म की किताबो के जलाने मे मदद दे, चुनाचे किताब के ढेर के ढेर रोम मे जला कर तबाह कर दिए गए।

कोस्टर साहब लिखते हैं कि खुदा का कलाम अगर किताब मे न आता तो बहुत अच्छा होता मगर बकौल मुर्दा बोले, कफन, फाड़े इस के लिखे जाने से सब भेद खुल गया।

'लन्दीनस साहब लिखते हैं—बाइबिल मोम की नाक है जिधर चाहो फेर लो। यह एक मुर्दा है महज भूसा है मग्जन दारद हैं, एक मुर्दा कानून है बाइबिल मुनहिन्दो का स्कूल है, एक जगल है जिसमे... पनाह गुजी है।'

पोप एनूसेंट ग्यारहवे ने सन १६८७ ई. मे हुक्म दे दिया था कि जिस शख्स के पास बाइबिल मौजूद हो वह उसको अपने नजदीक के पादरी को दे दे ताकि वह उसको आग मे जला दे।

पोप क्लीमेंट तेरहवें ने हुक्म दे दिया था कि जो कोई शख्स बाइबिल का इताली तर्जुमा पढ़ेगा उसको काट-कर मार दिया जावेगा।

पोप पाइस आठवें ने सन् १८१६ ई० में कहा था कि मैं इस बात को देखकर कांप रहा हू कि बाइबिल चारों ओर फैल रही है। (क्रमशः)

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

शुभ संकल्प पूर्ण

नायमात्मा प्रवचनेन लभयो न मेध्या न बहुना श्रुतेन । यमेव्वैष वृणुते तेन लभयस्त-स्यैष आत्मा वृणुते तनु स्वाम् ।।

अर्थ—परमात्मा बहुत पढ़ने-पढाने, सुनने सुनाने से नहीं मिलता और न ही तर्क दलीलो से प्राप्त होता है जिस को पात्र समझता और सदाचारी पवित्र जानता है । उसके शुद्ध हृदय मे प्रकाश कर देता है और उसे ही ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है । उपनिशद के इस प्रमाण को सामने रखते हुए ८-७-६६ से यजुर्वेद, सामवेद के चौदा मन्त्रों से यथा शक्ति समय के अनुसार प्रेम लगन से मैंने विश्व शाति के यज्ञ और वेद सप्ताह करने आरम्भ किए मुझे बहुत खुशी हुई है कि यह यज्ञ आदि गत मास तक १०१ पूरे हो गए मेरा यह शुभ सकल्प पूर्ण हुआ । इस मे आर्य स्त्री समाज बाजार सीताराम खामपुर, प्रताप नगर दिल्ली सेठ बाबूराम जी जन पथ श्री न्यादरमल जी श्री सरदारी लाल जी श्री ढालुराम जी श्री चिमन लाल जी श्रीहरभगवान जी श्रीआयोध्या प्रसाद जी, डा० धर्म प्रकाश जी श्री निरजन लाल जी और इन के परिवार ने पूरा पूरा भाग लिया। बहन सावित्री देवी जी बस्ती हर फूल सिंह बहन कला वती जी अध्यपिका और प्रधाना स्त्री आर्य समाज मोहरी गेट ने अपने अपने घरो मे यह पवित्र यज्ञ करा कर शोभा बढ़ा दी श्रीमति बहन बिमला कपल जी प्रिंसिपल भागीरती आर्य गर्लस हायर सैकन्डरी स्कूल दिल्ली और उनकी अध्यापकाओ ने श्रद्धा से वेद सप्ताह करा कर चार चान्द लगा दिए ।

आर्य समाज मालवीया नगर शाहदरा महरौली ने विश्वशान्ति के यज्ञ करा कर वेद की महमा को बढा दिया । आर्यसमाज न्यू कालोनी अर्जुन नगर चार मरला क्वाटर राम नगर गुड़गांवा के धर्म प्रेमी भाईयों बहनों ने विश्व शान्ति के यज्ञ करा कर धर्म लाभ उठाया ।

इस शुभ कार्य में ईश्वर ने हर प्रकार से रक्षा की सफलता दी । जनता ने पूरा सहयोग दिया । अधिकारी वर्ग ने उत्साह बढ़ाया जिस से यह कार्य शान्ति पूर्वक समाप्त हुआ सब का अतिधन्यवाद । अब दूसरा दौर भलि प्रकार से चल रहा है जो भाई-बहिनें, आर्यसमाजें, धर्म सम्थाए मेरे अनुभव से धर्मलाभ उठा कर वेद प्रचार के शुभ कार्य को बढ़ाना चाहे वह नीचे लिखे पते पर पत्र भेज कर कृतार्थ करें और पुन्य के भागी बने ।

—तेजराम उपदेशक सभा

आ०स० अबोहर का प्रस्ताव

आर्यसमाज अबोहर की तत्वावधान मे ति० १५-६-६९ को पजाब सरकार की हिंदी घातक नीति के विरुद्ध स्थानीय अबोहर की समस्त धार्मिक सस्थाए तथा शिक्षण सस्थाओ की ओर से मनाए गए 'रोष दिवस' मे निम्न प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकार हुआ ।

अबोहर नगर की प्रत्येक धार्मिक सस्था व शिक्षणालयो की यह सार्वजनिक बैठक मे पास किया कि—पिछले कुछ समय से अकाली दल के कुछ वरिष्ठ सदस्यो व पजाब के कुछ मन्त्रियों की ओर से इस प्रकार के वक्तव्य प्रकाशित हो रहे हैं कि जिन से प्रतीत होता है कि उन्हे पजाब के हिंदुओ की भावनाओ की कोई चिन्ता नही और न ही वह उनका सन्मान करना चाहते है ।

सच्चर फारमूला को समाप्त करने का इसके अतिरिक्त और कोई अभिप्राय नही कि पंजाब मे हिंदी के महत्व को समाप्त करके हिंदुओ की सगठित शक्ति को छिन्न-भिन्न किया जाए ।

इस फार्मूला के अनुसार माता-पिता को अधिकार मिला हुआ था कि वह अपने बच्चो को जिस भा भाषा के माध्यम से शिक्षा देना चाहे दे सकते है । इस अधिकार से पजाबी के महत्व मे किसी प्रकार की कमी नही हो सकती । पजाबी फिर भी सब ने पढ़नी ही है । परन्तु जो बच्चे हिन्दी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना चाहते है उन्हे इस अधिकार से वचित कर दिया जायेगा। इस सभा की सम्मति मे यह सीधी धक्केशाही है और पजाब के हिन्दुओ के सन्मान और प्रतिष्ठा को एक चुनौती है । यदि पजाबी सूबा मे प्रेमियो को यह अधिकार भी नही मिल सकता कि यह अपने बच्चो के भविष्य का निर्माण स्वय कर सके तो पजाब की वर्तमान सरकार के किसी प्रकार की सद्भावना कैसे दी जा सकती है । वर्तमान मन्त्रीमण्डल की नीतियो और सत्यवादी अकालियो की धमकियो ने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि जिस से पजाब की साम्प्रदायिक शान्ति पूर्णतथा नष्ट हो सकती है । आर्यसमाज तथा अन्य सभी सस्थाए इस स्थिति को अब अधिक समय तक मौन रह कर सहन नही कर सकता । इसलिए पजाब की हिन्दू जनता से सानुरोध आग्रह करता है कि वह अपने अधिकारो की रक्षा के लिए बडे से बडा बलिदान देने को तैयार हो जाए ।

विश्वेश्वरानन्द संस्थान साधु आश्रम

होशियारपुर की छात्रा कुमारी मनोरमा शर्मा ने एम ए. (सस्कृत) द्वितीय वर्ष मे ५२४ अक प्राप्त करके पजाब विश्वविद्यालय मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया है ।

सस्थान के ही छात्र श्री हरिमित्र ने एम. ए (सस्कृत) प्रथम वर्ष मे २५६ अक प्राप्त करके पजाब विश्वविद्यालय मे तृतीय स्थान प्राप्त किया है ।

उप-सपादक
विश्वसस्कृतम

क्या यह सत्य है

(पृष्ठ २ का शेष)

खोदें तो शायद कील निकल आवें। परन्तु न कीलें निकलनीथीं न निकलीं। दोनो सख्त मेहनत करने से थक कर चूर चूर हो गए। अगर और किसी काम के लिए गड्ढा खोदना होता तो शायद कोई भी खोद न पाता परन्तु पाच कीलो के लिए पूरे मकान के लिए जमीन खोद दी। एक भी कील निकल जाती तो तब भी उनको कुछ हौंसला होता परन्तु वहा तो कुछ भी नही निकला। अलग से पति को रात भर दरवाजे के पास सोना पड़ा। कि कहीं कोई चोर घर मे न घुस जाए।

आगे चौकी वाले दिन बाबे के पास (पंजाबी) जाने से फिर वही बात दुहराई कि ★(बाबा जी असा ता सारा था पुट सुटिया पर किला नही मिलिया) बाबे ने कहा कि कीलें जरूर होनी चाहिए थी परन्तु कोई बात नही मैं अपने ध्यान से सब ठीक कर दूगा। पाठकगण उस पजाबी ढोंगी की कहानी से समझ गए होंगे कि उसने कैसी बात बता दी कि बीबी कुछ बोल ही न सकी। ऐसी कई बातें देखने मे आती हैं जिनके बारे अगले लेख मैं लिखू गा। (क्रमश)

★ मेरे घर मे हर समय दु ख क्लेश रहता है क्या बात है ? बीबी तुम्हारे घर के बाहर की दहलीज के नीचे पाच लोहे की कील गाडी हुई हैं तेरे घर के सुख को उसने दबा दिया है। तू उन कीलो को निकलवा कर किसी तालाब मे फक दें।

—आपको सब जानते हैं।

★ बाबा जी हमने तो सारी जगह खोद दी पर कीलें तो मिली नही।

* समाचार दर्शन *

भाषा माध्यम चुनने के अधिकार पर छापा संस्कार और अन्याय

... की आय ... साव जनिक ... सरकार की उस भाषा नीति का घोर विरोध करती है जिसके आधार पर माता पिता से बच्चो की शिक्षा का भाषा माध्यम चुनने का अधिकार छीन लिया गया है जोकि जहा साव भौम और सर्व तन्त्र होने से विश्व माम्य है वहा भारतीय सविधान के अनुकूल है। अपने बच्चा को कौनसी भाषा मे शिक्षा दिलाए ? यह माता-पिता का जन्म सिद्ध अधिकार है जिस पर छापा मारना प्रजातन्त्र और मानवता के अत्यन्त विरुद्ध है और फिर जबकि हिन्दी भाषा पजाब के ... प्रतिशत हिन्दुओं की जहां मातृभाषा है वहा राष्ट्र भाषा भी है। इसलिए इतनी बडी जन-सख्या प्रजा के साथ राज्य सरकार का यह व्यवहार घोर अन्याय के समान है। अत सभा माग करती है कि बच्चो की शिक्षा के भाषा माध्यम को चुनने का न्यायपूर्ण अधिकार माता पिता को ही दिया जाना चाहिए जैसा कि आज पर्यन्त चला आया है क्योंकि यह प्रान्त द्विभाषी है एक भाषी नही।

सभा माग करती है कि प्राईवेट शिक्षा सस्थाओ को भी भाषा माध्यम चुनने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

आसु राम आर्य
पुरोहित

शानदार परीक्षा फल

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी डी ए वी हायर सैकण्ड्री स्कूल यमुना नगर का हायर सैकण्ड्री पार्ट फर्स्ट का परीक्षा फल ९०% रहा है। जबकि साईंस ग्रुप का परीक्षा फल ९८% रहा है। स्थानीय सभी सस्थाओं के परीक्षा फल से इस विद्यालय का परीक्षा फल उन्नत रहा है। तथा मिडिल का परीक्षा फल ८५% रहा है। तीन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति भी मिली है। हायर सैकण्ड्री पार्ट सैकण्ड का परीक्षा फल भी शानदार रहा है। इस शानदार परीक्षा फल का श्रेय प्रधानाचार्य श्री **H C Bhagat** तथा परिश्रमी अध्यापक वर्ग को है।

मन्त्री विमल प्रसाद गोयल
स्टाफ ऐसोसियेशन
डी ए वी हायर सैकण्ड्री स्कूल
यमुना नगर

आर्यसमाज माडलटाऊन जालन्धर में वेदप्रचार

आर्यसमाज माडलटाऊन जालन्धर में ६ से १३ जुलाई तक प० तेजराम जी महोपदेशक सभा ने रात्रि को ९ से १० बजे तक दूसरी बार आकर बडी स्पष्टता से वैदिक धर्म के सिद्धान्तो पर पर प्रभावशाली भाषण दिए। इनके शुभ विचारों से प्रसन्न-चित्त होकर लोग आखिर तक बैठे रहते थे। प्रात दैनिक यज्ञ मे भी आध्यात्मिकवाद का प्रचार करते रहे।

वेद प्रचार के लिए मार्ग व्यय के अतिरिक्त ३० रुपये मिले।

—शिवराम

भारतीय नागरिक सभा अमृतसर

भारतीय नागरिक सभा की अन्तरंग सभा की एक बैठक २९-६-६९ को हुई जिसमें निम्न-लिखित प्रस्ताव पारित हुए।

१ शराब के प्रचारार्थ सार्वजनिक रूप से जो प्रचार रिक्शा टांगा इत्यादि मे लाऊडस्पीकर द्वारा किया जाने लगा है उससे जन-साधारण का चरित्र नाश हो रहा है। यह सभा शासनाधिकारियो से बलपूर्वक इस प्रकार के प्रचार को रुकवाना चाहती है।

२ विद्यालयों ... के बाहर खोंचे वालों द्वारा लाटरी का जो भारी प्रचलन हो गया है भारतीय नागरिक सभा इस प्रकार की विद्यार्थियो के अन्दर जुआ खेलने की प्रवृति को बढावा देने वाली कुप्रथा को जल्दी समाप्त हुआ देखना चाहती है तथा इसी प्रसग में विभिन्न राज्यों द्वारा प्रचलित लाटरी प्रथा की भयंकर बीमारी को रोकने के लिए सरकार से बलपूर्वक आग्रह करती है।

३ विवाह शादियो के अवसर पर भंगडे की कुप्रथा को रुकवाने के लिए एक सर्वदलीय सम्मेलन बुलाने का निश्चय हुआ है। और सम्मेलन के कार्यक्रम स्थान और तिथि के निर्णय के लिए एक उप समिति का गठन किया गया है। जो अपना निर्णय जल्दी ही दे देगी।

निवेदक —मन्त्री सभा

हिमाचलप्रदेश में आर्यप्रादेशिक सभा के अन्तर्गत आर्यसमाजो को सूचना

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब, हिमाचल प्रदेश हरियाणा की ओर से वेद प्रचारार्थ निम्नलिखित स्थानों पर प० चन्द्रसैन जी तथा प राजपाल मदन मोहन चिमटा भजन मण्डली पधार रही है। अधिकारी वर्ग से प्रार्थना है कि प्रचार का आयोजन करने का कष्ट करें और सभा को वेद प्रचार फड से सहयोग देकर कृतार्थ करें।

कार्यक्रम —७ जुलाई से १२ तक शिमला, १२ से १५ तक सुन्दर नगर १५ से १८ तक मण्डी नगर २० से २० तक जोगिन्दर नगर, २४ से २७ तक नगरोटा बगुआ, १ से ४ अगस्त तक कांगड़ा ५ से १० अगस्त तक नूरपुर।

विनीत —
मन्त्री आर्यप्रादेशिक सभा

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



र० नं० १०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २१, अंक ३१) १९ श्रावण २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—३ अगस्त १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

[illegible] वरुणः

अर्थ [illegible] भगवान् राजा-सब जगह विराजमान है। तव वेद-वह तेरे प्रत्येक शुभ-अशुभ कर्म को जानता और देखता है वरुण:—वह वरुण है। सब कुछ जानता है।

भाव :-वह महान प्रभु सर्वव्यापक है। चराचर जगत में सर्वत्र ओत-प्रोत है। प्रत्येक स्थान में शोभा दे रहा है। वह वरुण है। हे मनुष्यों आपके प्रत्येक कर्म को देख रहा है हम अपने कर्म अपनों से या परायों से तो छिपा सकते हैं। राज्य के कर्मचारियों को भी धोखा दे सकते हैं। किंतु याद रखना कि उस वरुण भगवान से कोई भी कहीं भी अपने कर्म को छिपा नहीं सकता। वह सब देखता व जानता है।

—सं.

अथर्व ४-१-२

वेदामृत

परमेश्वर महादानी है

पौरो अश्वस्य पुरुकृद्
गवामस्युत्सोदेव हिरण्ययः।
नकिर्हि दानवरिमर्धिषत्
त्वे यद्यद्यामि तदाभर ॥
अथर्ववेद कांड२०-११८-२

अर्थ :—वह भगवान (पौर:) भरपूर करने वाला है। (अश्वस्य) घोड़ों का (पुरुकृत) बहुत करने वाला है। (गवां) गौओं का (असि) है (उत्स:) स्रोत, भण्डार (देव) हे महान् देव! (हिरण्यय:) तेज: पुंज है। (नकि: हि) कोई भी नहीं है (दान) दान को (परिमर्धिषत्) नाश कर सकता है। (त्वे) तेरे (यत्-यत्) जो २ (यामि) मांगता हूं (तत्)वह२(आभर) भरपूर कर दे।

भाव यह है

दानी मानवों को कितना अभिमान अपने दान का हो जाता है कि हम कितना दान करते हैं। हमारा कितना नाम है। किंतु उस महान दानी प्रभु के महादानों पर विचार तो करो कि कितना दान प्रवाह चलता है। ये अश्व, ये गौएं ये नाना प्रकार के चारों ओर से मिलने वाले दानों का भण्डार लगातार मिलता है। इस दानी का दान कौन नष्ट कर सकता है? औरों से क्यों मांगते हो। मांगना है तो महान भगवान के भंडार से मांगो जो सदा भरपूर रहता है।

—सं.

ऋषि दर्शन

सर्वेश: सर्वशक्तिमान्

अर्थ :—वह महान भगवान सर्वेश सब जगत ईश है, स्वामी है। वही सर्व शक्तिमान है। सारी शक्तियों का भंडार है, मालिक है।

भाव :—यह जितना भी चर-अचर विशाल विश्व दिखाई देता है तमाम ब्रह्मांड का वही प्रभु स्वामी है। सारा जगत उसी के नियत नियम में कार्य में लगा है। वही सारी शक्तियों का घर है। उसकी शक्तिके सामने सबको सिर झुकाना पड़ता है। बड़े-बड़े अभिमानी राजा आये, नास्तिक आए,बड़ा अभिमान किया। किंतु अन्त में उन सब का अभिमान टूट गया। रोते पश्चाताप कर के चले गये। प्रभु सबसे महान व बलवान है। उससे सदा डरते रहना चाहिये।

—सं.

मुनिवर दयानन्द

युवकों के लिए

रविन्द्र कुमार डी. ए. वी कालेज, जालन्धर

यदि है प्यार काया का,
तो आर्य वीर न बनना।
समझ कर सोच कर आना,
कि जीवन भेंट है करना॥

'आर्य' शब्द जिसका अर्थ ही श्रेष्ठ से लिया जाता है युवकों को प्रेरणा देने वाला कितना सुन्दर शब्द है। प्राचीन इतिहास पढ़ने से पता चलता है कि आर्य बनने के लिए प्रारम्भ से ही युवकों में सद्विचारों का समावेश कराया जाता था। उनको प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों, वेदादि का सुन्दर ज्ञान दिया जाता था ताकि वह वास्तव में आर्य बन सकें। गुरुजनों का आदर माता-पिता की आज्ञा पालन करना सब के साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना इस प्रकार के सुन्दर शिक्षाप्रद ज्ञान से ही वह युवक सच्चे अर्थों मे आर्यवीर कहलाते थे। बचपन से उनको गुरुकुलो मे शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाना पडता था, जहा पर वह शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक तीनो प्रकार की शिक्षा प्राप्त करते थे।

क्या वर्तमान युग मे यह सब हो रहा है? क्या आज के युवकवर्ग को अपने प्राचीन धार्मिक ग्रन्थो का पूरा-पूरा ज्ञान है? आज के युवक ने एक नई मजिल को लक्ष्य बनाया हुआ है। जिसकी ओर वह बहुत शीघ्रता से पहुचने के लिए भरसक प्रयत्न कर रहा है परन्तु वह इस बात से अनभिज्ञ हैं कि उसकी जिन्दगी में एक क्षण ऐसा आएगा जब उसे मुह की खानी पडेगी। उसकी निर्धारित मजिल को जाने वाला पथ खतरे से खाली नही है। उसको पथ भ्रष्ट करने के लिए कई प्रकार के विषय रूपी जानवर घात लगाए बैठे हैं। केवल उस समय के इन्तजार मे हैं, जब युवक थोडा सा डांवा डोल हो और वह इसे धर दबोचे।

आज युवक का मानसिक विकास प्राय खत्म हो चुका है। उसकी स्मरण शक्ति लुप्त हो चुकी है। युवको के मानसिक विकास के लिए क्या किया जाए? इस विषय पर कभी किसी ने विचार नही दिए। युवको के पास तो इस विषय पर सोचने के लिए समय ही नही। मेरे देखने मे कई बार यह बात आई है कि जब भी किसी मित्र से यह प्रश्न पूछा जाए कि भाई साहिब आप दो तीन दिन कहा रहे? दिखाई नहीं दिए। भाई साहिब का एक ही उत्तर होगा। वह यह है कि मैं **Bussy** (बिज़ी) था। अगर पूछो कि जनाब क्या काम पड गया जो इतने व्यस्त रहे। कहेंगे बस ऐसे ही। मेरी समझ मे यह बात आज तक नहीं आई कि कोई मनुष्य बगैर किसी काम मे लगे हुए **Bussy** रहे। **ऐसे हो और बिजी दोनों** शब्द बहुत मशहूर हो गए हैं।

वैसे तो युवकों मे और भी कई प्रकार के शब्द घर कर गए हैं जैसे जरा-जरा सी बात पर कहना **मूड़ आफ** हो गया है। किसी के कोई बात दो तीन बार कहने पर (**BORE**) शब्द मशहूर हो गया है। **Hello, O K TATA,** आदि बहुत शब्द हैं जो नित्य प्रति के जीवन में युवक इस्तेमाल करते हैं।

आज के युवक में जो चरित्र-हीनता आ गई है वह वर्तमान सभ्य समाज के लिए चिन्ता का विषय बनती जा रही है। घर से बहू-बेटियों का अकेले निकलना मुश्किल हो गया है। गुण्डागर्दी का सर्वत्र जोर हो गया है। वर्तमान युग में १० वर्ष का बच्चा भी पेंट की जेब में चाकू रखने का शौक रखता है। चाकूबाजी-छुरेबाजी आदि तो मामूली बात है। जुआ, व्यभिचार आदि का तो सब जगह बोलबाला है। युवको मे खास कर कालेजो के विद्यार्थियों में तो सभ्यता नाम मात्र की भी नहीं है। देश की सम्पत्ति, राष्ट्रीय सम्पत्ति को हानि पहुंचाते हुए जरा भी नहीं घबराते। नित्य प्रति नई-नई बातें सुनने में आ रही हैं। अगर बस चालक ने बस नहीं रोकी तो बस के शीशे तोड़ दिए जाते हैं। रेलगाड़ी में अगर टिकट निरीक्षक टिकट मांगता है तो उसका सिर फोड़ देते हैं। सिनेमाघरों में बिजली बन्द हो जाने पर कुर्सियां तोड़ देना तो उनके बाएं हाथ का खेल है।

क्या आज के युवक ने कभी एकांत में बैठ कर अपने भविष्य के लिए सोचा है कभी नहीं। युवक के पास तो सुनने के अतिरिक्त समय ही कहां है। अगर समय कभी निकाल ही लें तो वह उसे सोचने के लिए इस्तेमाल नहीं करता।

विषय को लम्बा न करते हुए मुझे अपने युवक भाईयों से प्रार्थना करनी है प्रिय युवको यह आप के विद्याध्ययन करने का समय है। आप को राजनीति मे पड कर अपना जीवन नष्ट नही करना। बाकी जिन्दगी इसी काम के लिए पड़ी है। जहा आप को विद्याध्ययन जारी रखना है वहा अपने प्राचीन धर्म ग्रथो को उतना ही सम्मान देना है जितना कि उन का सम्मान होना चाहिए। मानसिक उन्नति के साथ साथ शारीरिक उन्नति का भी ध्यान रखना है। मुझे आशा है कि मेरे युवक भाई हमारे साथ सहानुभूति रखते हुए युवको के अन्दर जो गुडा तत्व भर गए हैं उन को निकाल कर युवकों को वास्तव मे आर्य युवक बनाने मे सहायता करेंगे।

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, ३ अगस्त १९६९ [अंक ३१

आवश्यक भाषा सम्मेलन

पंजाब में राष्ट्रभाषा हिंदी के साथ सरकार की भाषा नीति के कारण जो अपमान किया जा रहा है उस से सारे हिंदी प्रेमी चिंतित हैं। सरकारी स्कूलों मे सच्चर फार्मूला को समाप्त करने की घोषणा से हिंदी माध्यम से अपने बच्चो को शिक्षा दिलाने वालो को कितना धक्का लगा है। माता पिता के अपने बच्चो को किसी भी भाषा माध्यम मे शिक्षा दिलाने के वैधानिक अधिकार को समाप्त करके केवल पजाबी माध्यम बना कर न्यायक गला दबा दिया गया है। इस के लिए हिंदी प्रेमियो में तो बड़े असन्तोष का फैल जाना स्वाभाविक था ही, इस के साथ साथ अन्य कई दलों के सज्जनो ने भी बिना किसी पक्षपात के इस का घोर विरोध करते हुए अपनी आवाज उठाई है। सरकार की एकागी भाषा नीति को सहन भी कैसे किया जाए? हिंदी केवल पजाब के चालीस प्रतिशत से भी अधिक लोगो की ही भाषा नही है, वरन् यह इस के साथ साथ राष्ट्र की भाषा भी है। इस का अपमान राष्ट्र का अपमान है। पजाब की स्थिति दूसरे प्रान्तो जैसी नही है। यहां तो एक बहुत बडा ऐसा अल्पमत है जिसकी भाषा हिन्दी है। वह अपने बच्चो को प्रारम्भ की कक्षा से हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दिलानी है ताकि वह भारत जैसे विशाल देश की केन्द्रीय सरकार की विविध विभागो की सर्विस मे स्थान प्राप्त कर सकें। पजाब मे रहते हुए पजाबी भी वे पढ़ लेंगे किन्तु माध्यम हिन्दी को बना कर आगे बढ़ना चाहते हैं। अपने प्रान्त की छोटी-सी सीमा मे तो उन्होंने बन्द नही रहना। व्यापक क्षेत्र मे उतरना है। हिन्दी के बिना वे दूसरों के साथ मुकाबिले में पिछड़ न जायें तथा केन्द्रीय सरकार सर्विस के लिए भी तो तैयार होना है। पंजाब सरकार के जो सत्ताधारी भाई हमें अपनी हिन्दी माध्यम की भी यदि आजादी नही दे सकते तो उन से और किस बात की आशा की जा सकती है? भाषा का प्रश्न एव यह समस्या तो शिक्षण-शास्त्रियो के अधिकार का विषय था—इसे राजनीतिक रूप देकर उलझा दिया गया है। इसी कारण सारा हिन्दी-प्रेमी समाज क्षुब्ध है। पंजाब मे भारी अशान्ति है। जब तक यह समस्या नही हल होगी— वातावरण मे शान्ति नही आयेगी।

सरकारी स्कूलो मे हिन्दी माध्यम का गला घोटकर अब सरकार प्रान्त के प्राईवेट स्कूलो मे भी जबरन पजाबी को प्रारम्भ मे शिक्षा का माध्यम बनाना चाहती है। यहां पर भी हिन्दी की सत्ता मिटा देना चाहती है। शास्त्रो में कहा गया है कि अन्याय को सहन करना तो पाप है ही—किन्तु अन्याय को चुपचाप सह लेना महापाप है। अंग्रेजी दासता के के युग मे भी हमारे नेताओ ने तप परिश्रम से अपनी सस्थाओ मे हिन्दी का मान ऊचा रखा सहायता लेते हुए भी हिन्दी को माध्यम से शिक्षा दी। तो अब हिन्दी का गला घोट दिया जाए—यह कैसे सहन किया जा सकता है? यदि हमारे अपने भाईयो ने एक-दो कुर्सियो के लोभ में आकर अपना सिर नीचा न किया होता तो क्या हिन्दी की ऐसी दुदर्शा की जा सकती थी? सत्ता सदा बनी नही रहती, किन्तु लिखा जाने वाला इतिहास तो कुर्सी के लोभियो को सदा कोसता ही रहेगा कि सच्चर फार्मूला मे दिए गए माता-पिता के भाषा माध्यम चुनने के अधिकार को समाप्त कराने में इन अपनो का भी हाथ था। यह निन्दा बनी रहेगी। यह राजनीतिक प्रश्न नही है, विशुद्ध शिक्षा का तथा अपनी भाषा का प्रश्न है। इसी लिये धार्मिक सस्थाए व सभाएं भी इस का घोर विरोध कर रही हैं।

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब इस प्रांत की आर्य समाजो की बहुत बड़ी, पुरानी, प्रभावशाली सभा है। इसकी समाजें पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू काश्मीर तथा देहली मे दूर दूर तक फैली हुई है। इस के माननीय प्रधान जी प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल ने अपने दो वक्तव्यों मे भाषा की सारी नीति स्पष्ट कर दी है। अब इस की सभा की एक विशेष बैठक गत १३ जुलाई को सभा प्रधान जी ने जालन्धर में बुलाई थी। उस मे निर्णीत प्रस्ताव 'आर्य जगत' के गताक मे प्रकाशित किये गये हैं। अब ता० तीन अगस्त रविवार को जालन्धर में पजाब की तमाम हिंदी भाषा प्रेमी शिक्षण सस्थाओ का विशेष सम्मेलन जालन्धर मे बुलाया जा रहा है जिस मे सरकार की भाषा नीति पर पूरा पूरा विचार होगा। श्री प्यारेलाल जी बेरी प्रिंसिपल साईंदास एग्लो वैदिक हायर सैकडरी स्कूल इस के सयोजक हैं। —त्रिलोकचन्द्र

हमारी शिक्षण संस्थाएं

डी०ए०वी०स्कूल श्रीनगर

तप और त्याग की मूर्ति स्वर्गीय महात्मा हसराज जी के जीवन-बलिदान का यह परिणाम है कि डी.ए वी. का विशाल परिवार देश-विदेश मे अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि करने मे निरन्तर लगा हुआ है। एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक यह महान् सरस्वती के केन्द्र फैलकर शिक्षण क्षेत्र मे बहुत प्रशसनीय कार्य करते है। सारे समाज को इन पर मान है। हिमालय के ऊचे-ऊचे स्थानो पर भी श्रीनगर हो या शिमला ये विशाल शिक्षण सस्थान बिना किसी भेदभाव के सभी की सेवा मे लगे हुए हैं। आर्यजगत के इस अक मे श्रीनगर काश्मीर के प्रसिद्ध शिक्षण केन्द्र डी ए वी हायर सैकडरी स्कूल के सम्बन्ध मे चर्चा की जा रही है। प्रेमी पाठक अनुमान लगा लें कि ये हमारे सस्थान जनजीवन तथा राष्ट्र-निर्माण में कितना कार्य कर रहे है स

इस बार सभा के कार्यक्रम पर आर्यसमाज वजीरबाग श्रीनगर के जल्से पर आना हुआ तो यहा के अपने डी.ए वी स्कूल के विशाल कार्य को देखने का तथा स्कूल के छात्रों मे प्रवचन देने का भी अवसर मिला। आर्यसमाज की इस विशाल छावनी को सारे क्षेत्रो मे तथा सब प्रकार की जनता मे सम्मानित माननीय प० राधाकृष्ण जी गजू-प्रिंसिपल अपने पुराने अनुभवों से भरे नेतृत्व मे चला रहे हैं। इस स्कूल की प्रसिद्धि प्रबन्ध, कार्य और परीक्षा परिणाम को देख कर अपनी सस्थाओ के गौरव का पता लगता है। स्कूल के छात्रों पर प्रिंसिपल जी के अपने जीवन की कितनी गहरी छाप है। जहा पर हमारी सस्थाओ का प्रिंसिपल हो या सचालक प्रबन्धक हो या मुख्याध्यापक - जीवन मे ऊचा होगा स्वय धर्म के रग मे रगा होगा तथा सस्था द्वारा जीवन निर्माण की विशेष भावना होगी, समाज का प्यार होगा—वह सस्था सचमुच प्रभावशाली होगी वहा के विद्यार्थियो के जीवन मे विचारो की विशेषता होगी। माननीय प्रिंसिपल गजू के जीवन में भी यही बात है। यहा की बहुत बडी ट्रासपोर्टके मालिक श्री एन डी. राधाकृष्ण जी जैसे वयोवृद्ध सम्पन्न एवम् आर्यसमाज के दीवाने सज्जन स्कूल के बहुत बडे स्तम्भ है। यद्यपि सारे जम्मू-काश्मीर मे सरकारी बडे २ स्कूल हैं। और भी कई शिक्षण सस्थाए हैं, किंतु सारे प्रदेश मे श्रीनगर का यह डी ए वी. स्कूल सबसे प्रसिद्ध, आगे और ऊचा है। यही कारण है कि इसमे नगर के बडे २ अफसरो के बच्चे बिना किसी भेदभाव के पढते हैं। आर्यसमाज प्रारम्भ से ही मानवता का प्रचार करता आ रहा है। इस बार इस स्कूल का जो छात्र सारे काश्मीर विश्वविद्यालय मे प्रथम आया है—वह प्रिय गुलनिवाज शेख है। ऊचे २ अधिकारियो व परिवारो के बच्चे इसी स्कूलो मे ही प्रविष्ट होते हे। यहां श्रीनगर मे सरकारी स्कूल भी है तथा अन्य भी, जिनको सरकार की ओर से दिल खोल कर सुविधाएं प्राप्त हैं—परन्तु जो प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा अपने प्रिंसिपल गजू जी के आचार्यत्व मे चलने वाले डी ए. वी. स्कूल को प्राप्त है वह अन्य किसी के भी भाग्य मे नही आई यह सारे समाज के लिए बडे गौरव की बात है। सत्य यह है कि कुशल, योग्य, विद्वान समाज सेवी, आचारवान जन-जीवन के सुख दु ख मे शामिल होने वाला आचार्य शिक्षण सस्थान का आकाश तक पहुंचा देता है। हमारी सस्थाओ को यह सौभाग्य प्रारम्भ काल से ही प्राप्त है।

इस स्कूल का सारा अध्यापको का मान्य वर्ग बडा परिश्रमी है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यवीर दल तथा आर्य कुमार सभा के प्रेरणा स्रोत :—

पण्डित रामप्रसाद जी बिस्मिल

(लेखक—ब्र० जगदीशचन्द्र "वसु" सिद्धान्तालंकार-विद्यावाचस्पति बरवाला)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अमर सेनानी एवं काकोरी केस के अग्रणी क्रांतिकारी नेता पं० रामप्रसाद जी बिस्मिल उन आर्य वीर क्रांतिकारियों में से हैं, जिन्होंने इस आर्यावर्त (भारतवर्ष) देश को ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्रता दिलाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। आप आर्यजगत के प्रसिद्ध क्रांतिकारी उदभट्ट आर्य संन्यासी स्वामी सोमदेव जी महाराज के शिष्यों में से प्रमुख शिष्य थे। आप ने उन्हीं से (स्वामी जी से) सब कुछ सीखा। स्वामी जी महाराज बिस्मिल को धार्मिक, सामाजिक तथा विशेष रूप से क्रांतिकारी राजनीतिक उपदेश दिया करते थे। और इस प्रकार की पुस्तकें पढने का आदेश भी देते थे।

पं० रामप्रसाद जी बिस्मिल क्रांतिकारी कैसे बने। यह हम उन्हीं के शब्दों में उपस्थित करते हैं! वह अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि 'सन् १९१६ ई० में लाहौर षड्यन्त्र का मामला चला मैं समाचारपत्रों में उसका वृत्तान्त बडे चाव से पढा करता था! श्रीयुत भाई परमानन्दजी में मेरी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उनकी लिखी हुई 'तवारिख हिंद' पढकर मेरे हृदय पर बडा प्रभाव पडा था! लाहौर षड्यन्त्र का फैसला अखबारों में छपा। भाई परमानन्द जी को फांसी की सजा पढकर मेरे हृदय में आग लग गई। मैंने विचारा कि अंग्रेज बडे अत्याचारी हैं। इनके राज्य में न्याय नहीं जो कि इतने बड़े महानुभाव को फांसी की सजा का हुक्म दे दिया। मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं इसका बदला अवश्य ही लूंगा! जीवन भर अंग्रेजी राज्य को विध्वंस करने का प्रयत्न करता रहूंगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर चुकने के पश्चात् मैं अपने गुरुदेव स्वामी सोमदेव जी के पास आया। सब समाचार दिये और अखबार दिया। अखबार पढकर स्वामी जी महाराज बडे दुःखित हुए। तब मैंने अपनी प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में कहा। स्वामी जी कहने लगे कि रामप्रसाद! प्रतिज्ञा करना सरल है, किंतु उस पर दृढ रहना कठिन है। मैंने स्वामी जी महाराज को प्रणाम कर उत्तर दिया कि यदि श्रीचरणों की कृपा बनी रहेगी तो प्रतिज्ञा-पूर्ति में किसी प्रकार की त्रुटि न करूंगा। उसी दिन से स्वामी जी कुछ-कुछ खुले। आप अद्भुत-सी राजनीतिक व क्रान्तिकारी बातें बताया करते थे। उसी दिन से मेरे क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात हुआ।' आत्मकथा।

उपरोक्त विचारधारा से हम सहज ही में जान सकते हैं कि पं० रामप्रसाद जी बिस्मिल क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात एक संन्यासी के सहवास से आरम्भ होता है। यह नहीं झुठलाया जा सकता कि आप आर्य विचारधारा से ओत-प्रोत थे। इससे पूर्व आपने मुन्शी इन्द्रजीत जी (जो आर्यसमाज शाहजहांपुर के अधिकारी थे) से सन्ध्या व हवन करना सीखा। जोकि आपके अन्तिम समय तक जीवन का अंग रहा। आपने अपनी आत्मकथा में (जो जेल में फांसी के दो दिन पूर्व लिखी थी) लिखते हैं कि 'श्रीयुत मुन्शी इन्द्रजीत जी ने सन्ध्या हवन करने का आदेश दिया। मैंने जानना चाहा कि सन्ध्या क्या वस्तु है! मुन्शी जी ने आर्यसमाज संबंधित कुछ उपदेश दिया। इसके बाद मैंने सत्यार्थप्रकाश (महर्षि दयानन्द कृत) पढा। इसे पढ कर तो जीवन का तख्ता ही पलट गया। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने तो मेरे जीवन के इतिहास में एक पृष्ठ ही खोल दिया। मैंने उसमें उल्लिखित ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन करना आरम्भ कर दिया!' इत्यादि। विचारों को पढ कर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि क्रान्तिकारी रामप्रसाद जी बिस्मिल, स्वामी सोमदेव जी, व श्रीयुत मुन्शी इन्द्रजीत जी के संसर्ग से ही आप आर्य समाज में प्रविष्ट हुये। और उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से अपने जीवन का निर्माण कर इस देश को अनेकों वर्षों की गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अपने जीवन की आहुति प्रदान की। आगे चल कर वह अपने कट्टर व विशुद्ध आर्यसमाजी होने के विषय में लिखते हैं कि:—

'मैं थोड़े ही दिनों में बड़ा कट्टर आर्य समाजी हो गया आर्य समाज के अधिवेशनों में आता जाता आर्य संन्यासी महात्माओं व विद्वानों के उपदेशों को बड़ी श्रद्धा से सुनता जब कोई आर्य संन्यासी या आर्य विद्वान आर्यसमाज में आता तो उसकी हर प्रकार से सेवा-शुश्रुषा करता। क्योंकि मेरी प्राणायाम सीखने की (महर्षि दयानन्द प्रदर्शित प्राणायाम विधि) बड़ी उत्कट-इच्छा थी।'

पाठकगण जान सकते हैं कि पं० रामप्रसाद जी बिस्मिल के हृदय में आर्यसमाज के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा थी। तड़पती लगन थी। आर्य समाज के वार्षिकोत्सव चाहे पास हो या दूर हो वहीं जाकर आर्यसमाज वैदिकधर्म तथा भगवान महर्षि दयानन्द की विचार-धारा को श्रवण करने पहुंचते थे।

मुझे एक आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान देने के लिये आमंत्रित किया गया। मेरे व्याख्यान का विषय यही (पं०रामप्रसादजी बिस्मिल) लेख का विषय था। मैंने अपने व्याख्यान में बिस्मिल जी की आत्मकथा के आधार पर यह सिद्ध किया कि पं० रामप्रसाद जी बिस्मिल उन आर्य समाजी वीर क्रांतिकारियों में से थे जिन्होंने इस भारतवर्ष देश को (जिसका प्राचीनतम नाम आर्यावर्त) ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने में अपना सर्वस्व जीवन न्योछावर कर दिया। (शेष पृष्ठ ५ पर)

वैदिक धर्म हमारा

नित्य ज्ञान की निर्मल धारा।
पावन वैदिक धर्म हमारा॥
शुभ सुख दायिनी जन कल्याणी।
परमदेव की प्यारी वाणी॥
मिटे सकल मन का अंध्यारा...
परम देव की देन मनोहर।
ऋषि मुनियों की अमर धरोहर॥
करता जन मन में उजियारा...
मानवता का यह उपवन है।
राम कृष्ण का गौरव धन है॥
यह आधार हमारा...
जिस हित निकले ऋषि अकेले।
कष्ट कठोर मुनि ने झेले॥
श्यामलाल ने जीवन वारा...
निश्चित निश्चय करके निकलो।
युग की धारा मिल कर बदलो॥
गूंजे यह जयनाद हमारा...
आओ वैदिक ध्वज लहराओ।
लेखराम का पथ अपनाओ॥
देकर अपना रक्त की धारा।
पावन वैदिक धर्म हमारा॥

—प्रकोष्ठ 'जिज्ञासु' अबोहर

शिक्षा माध्यम में स्वतंत्रता का अधिकार

बटाला दिनांक २७-७-६९ जिला प्रान्तीय आर्य सभा गुरदासपुर की आन्तरिक सभा पंजाब सरकार के केवल मात्र पंजाबी (गुरमुखी लिपि) को ही शिक्षा माध्यम बनाने के निर्णय की घोर निंदा करती है। वैधानिक रूप से अपने बच्चों के लिए शिक्षा माध्यम चुनने का अधिकार केवल मात्र माता पिता को ही है, इसलिए यह सभा पंजाब सरकार से जोरदार मांग करती है कि इस वैधानिक अधिकार का आदर करते हुए सभी राजकीय तथा प्राइवेट स्कूलो मे माध्यम चुनने की स्वतन्त्रता देकर लोगों की बढ़ती हुई बेचैनी को दूर करे।

यह सभा पंजाब भर की सभी हिन्दी शिक्षण सस्थाओ के प्रबन्धको से प्रार्थना करती है —

१ कि वह सस्तु एव राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास के लिए जहा-जहा भी सम्भव हो अधिक से अधिक प्राईमरी स्कूल खोले तथा वर्तमान प्राईमरी स्कूलो का अधिक से अधिक विकसित करें।

२ देश की सास्कृतिक एव राष्ट्रीय हित मे एकता को बनाए रखने के लिए वह अपनी शिक्षण संस्थायों मे हिन्दी माध्यम की वर्तमान व्यवस्था को जारी रखें, चाहे इसके लिए उन्हे कितना भी बडे से बडा बलिदान क्यो न देना पडे।

यह सभा डी ए वी कालिज प्रबन्ध कर्तृ सभा नई दिल्ली तथा होशियारपुर, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को दिया सभा, सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा पजाब तथा जैन विद्या सभा पजाब आदि हिन्दी से प्रेम रखने वाले शिक्षण सस्थाओ के प्रबन्धको तथा मुखियो से विशेष रूप प्रार्थना करती है कि वह ३ अगस्त को जालन्धर मे आर्यसमाज विक्रमपुरा में होने वाले हिन्दी सम्मेलन मे सम्मिलित होने की कृपा करें।

दर्शनकुमार ह्राडा मन्त्री

★ प्रत्येक मृत्यु यह याद दिलाती है, हर घटी कहती है कि अन्त निकट है। हर दिन आपके बहुमूल्य जीवन के एक अश को समाप्त करता है, अत सतत साधना मे सलग्न हो जाना चाहिए।

★ किसी व्रत को लेने पर जीवन की बाजी लगा कर भी उसका पालन कीजिये।

दयानन्द कालेज शोलापुर का धार्मिक कार्यक्रम

(प्रो० ओम कुमार आर्य एम० ए० अध्यक्ष आर्य युवक समाज दयानन्द कालेज, शोलापुर)

दयानन्द कालेज शोलापुर महाराष्ट्र की चोटी की सस्थाओ मे से है। यह महान् सस्था महर्षि दयानद सरस्वती के ज्ञान-प्रसारण के पुनीत उद्देश्य की पूर्ति मे प्रतिपल प्रयत्नरत है। यह भव्य सस्था आर्यसमाज की उस विजय का प्रतीक है जो उसे निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सत्याग्रह मे प्राप्त हुई थी। अत इसके वातावरण मे धार्मिक भावनाए तथा उच्च सास्कृतिक आदर्श प्रारम्भ से ही ओत-प्रोत रहे हैं। आज भी यह कालेज अपने छात्रो के जीवन मे धार्मिक भावनाए भरता हुआ प्रगति पथ पर अग्रसर है। इस मे होने वाले धार्मिक आयोजनो का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

कालेज के छात्रावास मे दैनिक तथा साप्ताहिक सत्सग होते हैं। दैनिक सत्सग प्रात काल ६॥ बजे से ७ बजे तक होता है। इसमे सन्ध्या हवन तथा भक्ति गीत शामिल रहते हैं। इसके अतिरिक्त थोडी-सी देर के लिए वैदिक सिद्धान्तोपर व्याख्यात्मक प्रवचन भी होता है। अथवा किसी मन्त्र के अर्थ पर प्रकाश डाला जाता है। कालेज मे आर्ययुवक समाज की ओर से यह सत्संग किए जाते हैं। दैनिक सत्सग मे विद्यार्थी पर्याप्त रुचि से भाग लेते हैं।

प्रति बृहस्पतिवार को रात्रि ७॥ बजे से ९॥ बजे तक साप्ताहिक सत्सग होता है। इसमे कालेज के आचार्य एवम प्राध्यापकगण विद्यार्थियो के सम्मुख जीवनोपयोगी विचार रखते हैं। इस प्रकार गुरु तथा शिष्य का एक-दूसरे के निकट सम्पर्क मे लाकर यह कालेज गुरुकुलो का दृश्य उपस्थित करता है। बढती हुई अनुशासन हीनता के इस युग मे आर्य समाज के ही ये कालेज हैं जहा शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे के समीप रहकर अपना सम्बन्ध मधुर बनाए हुए हैं। इन धार्मिक आयोजन के माध्यम से सामान्यत कालेज के समस्त वातावरण मे तथा विशेषत छात्रावास के सैकडो विद्यार्थियो के जीवन मे पावन सस्कारों का समावेश हो जाता है। कालेज को यह गर्व है कि इसकी छाया मे पलने वाले विद्यार्थियो का बौद्धिक, सास्कृतिक तथा चारित्रिक स्तर बहुत ऊचा रहता है। इसका श्रेय व्यवस्था की दूसरी बातो के साथ साथ धार्मिक आयोजनो को भी है।

इतना ही नही! महाविद्यालय के छात्र स्वेच्छा से धार्मिक परीक्षाओ मे भी शामिल होते रहते हैं। स्थानीय आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगों तथा अन्य धार्मिक आयोजनो मे भी छात्र रुचि पूर्वक भाग लेते हैं। प्रस्तुत पक्तियो के लेखक ने इतने सुव्यवस्थित तथा सुनियमित धार्मिक आयोजन अन्यत्र कही नही देखे। इन इन सब के लिए कालेज के वतमान प्रचार्य श्री जगन्नाथ जी हुडेग का अनुभवी माग दर्शन समय-समय पर मिलता रहता है। आशा है दूसरी सस्थाए भी आर्य समाज से प्रेरणा लेकर इस प्रकार के धार्मिक कार्यक्रमो द्वारा अपने युवको का जीवन निर्माण करेंगी तथा बढ़ती हुई अनास्था एव अनैतिकता को रोका जा सके।

प० रामप्रसाद जी बिस्मिल

(पृष्ठ ४ का शेष)

बल्कि रामप्रसाद बिस्मिल ही नही अपितु ९५ प्रतिशत क्रातिकारी आर्यसमाजी व भारतीय स्वाधीनता सग्राम के प्रथम सेनानी, वेदोद्धारक, राष्ट्रोद्धारक पतितपावन, आदित्य ब्रह्मचारी, महामानवता के अमर पुजारी जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के कट्टर विशुद्ध अनुयायी थे। इत्यादि कहा तो एक सज्जन बीच सभा मे खडे हो गये और जोर से कहने लगे कि आप गलत बोल रहे हैं। मैंन फौरन एकदम रुककर कहा कि मैं कैसे गलत बोल रहा हू? तो वह सज्जन कहने लगे कि रामप्रसाद बिस्मिल तथा अन्य क्रातिकारी स्वामी दयानन्द के अनुयायी तथा आर्यसमाजी क्रातिकारी नही थे! मैंने पुन कहा कि आपने प रामप्रसाद बिस्मिल की कि लिखी हुई आत्मकथा (जो जेल मे उन्होने फासी के दो दिन पूव लिखी थी) पढी है? उन्होने उत्तर दिया कि नही। मैंने कहा कि पहले आप उनकी (रामप्रसाद बिस्मिल) अपनी लिखी आत्मकथा जिसके सम्पादक श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी हैं उसे आद्योपान्त पढ मनन करे विचार करे। तब मेरे से आप वार्तालाप करें। यह सज्जन स्थानीय राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के वरिष्ठतम अधिकारियो मे से थे। वह सज्जन फिर शान्त हो कर बैठ गए, मैं अपना व्याख्यान पूर्ण कर स्वस्थान बैठ गए सभा के अन्त मे इस सज्जन से वार्तालाप करके मुझे बडा आश्चय हुआ कि एक सघ के अधिकारी को प० रामप्रसाद बिस्मिल तथा भगतसिंह आदि आर्यवीर क्रातिकारियो के विषय मे इतना भ्रम। सभी कृतघ्नता के दोषी होते हैं (कृतघ्न कहते हैं किये हुए का उपकार न मानना इत्यादि)।

वास्तव मे यह निश्चित बात है कि इस देश को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने मे जितना भाग (सहयोग) महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के तथा उनके शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा (महर्षि के आदेश से आप विदेश गये तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन का द्वितीय श्रीगणेश किया। प्रथम महर्षि दयानन्द ने क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात किया। तत्पश्चात श्याम जी कृष्ण वर्मा ने क्रान्तिकारी आन्दोलन का बिगुल बजाया) स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज, लाला लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, मदन लाल धीगरा, भाई परमानन्द अर्जुनसिंह वीर सावरकर इत्यादि न किया है। उतना अन्य किसी न नही।

रामप्रसाद कट्टर विशुद्ध आर्य समाजी थे। वैदिक धर्म आयसमाज तथा महर्षि दयानन्द की विचारधारा के कट्टर समर्थक थे। उन की कट्टरता को देखिए कि उन्होने घर को तो छोड दिया परन्तु आर्य समाज तथा वैदिक सिद्धातो को नही त्यागा। आप के पूज्य पिता श्री मुरलीधर जी कट्टर पौराणिक थे। बिस्मिल अपने जीवन की एक घटना का वणन करते हुए लिखते हैं कि 'जब मैं अग्रजी के सातव दज म था तब सनातनधर्मी प० जगतप्रसाद जी शाहजहापुर आये। उन्होने आय समाज का खण्डन करना आरम्भ कर दिया। हम आर्यो ने भी उनका विरोध किया। और प० अखिलानन्द जी को बुला कर शास्त्राथ कराया।

(क्रमश)

★ यह जीवन प्रभु की देन है। अरे साधक! प्रति क्षण का सुन्दर उपयोग कर।

★ जिन मे साहस तथा धैय है उन्हे ही सफलता मिलती है।

डी.ए.वी.स्कूल श्रीनगर

(पृष्ठ ३ का शेष)

यहां के छात्र अपने सारे गुरुओं में मान करते हैं। छात्रों में भाषण देते समय मैंने सारे वातावरण को देखा। बच्चों से बातचीत भी की। छात्रो के जीवन पर अपने अध्यापक मण्डल की उत्तम छाप है। यहां १५०० के लगभग विद्यार्थी पढते हैं। स्थान भर जाने से अधिक प्रविष्ट नही किए जाते। वैसे तो इसमे प्रवेश के लिए छात्रों का प्रवाह उमड आता है। इस बार परीक्षा परिणाम पूर्व वर्षो की भान्ति बहुत शानदार रहा। प्रतिशत का तो सदा कमाल होता है—जम्मू-काश्मीर प्रान्त मे प्रथम, चौथा, सातवां तथा तेरहवा स्थान छात्रो मे इसी स्कूल को प्राप्त हुआ है। फर्स्ट और सैकण्ड डिविजन मे बडी सख्या आई है। यह सब मान्य शिक्षकवर्ग की तपस्या है। बडे गौरव की बात है। श्रीनगर मे अपनी इस संस्था की उच्चता को देख कर दिल बडा ही प्रसन्न होता है।

यह तो हुई शिक्षा की बात। अब समाज सेवा व धर्म प्रचार की सुनिए। आर्यसमाज के कार्य के लिए एक वाक्य मे यह कहा जा सकता है कि मान्य प्रिंसिपल गजू जी स्वय चलते-फिरते आर्यसमाज हैं। समाज वजीर बाग के मन्त्री हैं। स्टाफ व छात्रों का समाज के साथ प्रेम है। श्री ए० आर० जी इस वृद्धावस्था मे भी समाज के दीवाने हैं। महात्मा आनन्दस्वामी जी प्राय: प्रतिवर्ष यहा कथा उत्सव पर पधारते हैं। समाज के लिए धन मागना हो या जल्से का प्रबन्ध करना हो — प्रिंसिपल जी सब से आगे-आगे रहते हैं। यही कारण है कि सारा अध्यापक मण्डल, छात्र वर्ग एव यहा के गण्य-मान्य परिवार समाज मे सहयोगी बनते हैं। समाज को स्कूल द्वारा सभी प्रकार का सहयोग मिलता है। जिस शिक्षण-सस्था का नेता स्वय समाज की सेवा मे आगे-आगे रहेगा—वहा जीवन होगा। सरकार धर्मकार्य के लिए मना नही करती। मन मे जब भावना न हो तब कैसे काम चलेगा। यहा पर प्रिंसिपल गजू समाज सेवा मे कितनी रुचि लेते हैं, कार्य करते हैं यह देखने से ही सम्बन्ध रखती है। प० निरजननाथ जी समाज सेवा में बडी श्रद्धा रखते हैं। जहा पर अपनी सस्था होने पर समाज का कार्य शिथिल हैं—वहा के सज्जनो को यहां से प्रेरणा लेनी चाहिए। अब ६ लाख के व्यय से स्कूल का शानदार भवन बन रहा है। प्रभु इसे फूलता फलता रखें—सं०

अनादि द्वारा आ. स. के यज्ञ अस्वीकृत ?

(लेखक:—वेद स्वामी मेधारथी सरस्वती एम० ए० एल० टी० सामवाचस्पति—पडघरी)

आर्य समाज की अवनति का कारण विधिहीन तामसी यज्ञ हैं। कलह, कटुता और कुत्सिताचारों का इसी से चारो ओर चमत्कार सा चल रहा है। ज्ञानलवदुर विदग्ध ब्रह्मापि न रंजयति—इस उक्ति के अनुसार हम जैसे सेवकों की सुनना भी नापसन्द करते हैं। फिर भी 'स्वधर्मे निधन श्रेय' इस लिए सन्यासी होने से सहस्रश: सुना सुना कर सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करना ही हमारा कर्तव्य है। 'नास्ति यज्ञ समोरिपु:' यदि यज्ञ विधिहीन हो जाए। ध्यान देने की बात है।

(१) न अब्रह्मा यज्ञ: ऋधक् ज्योतिष त्वे। ऋग्वेद १०।१०५।८ मे स्पष्ट लिखा है कि हे प्रभो! तुम को ब्रह्मा हीन यज्ञ बिलकुल पसन्द नही है। आज आर्य समाजो मे : ब्रह्मा ? का अभाव सा ही है। ब्रह्मा उसे कहते हैं जो चारो वेदों का ज्ञाता हो। सन्यासी हो। योगाभ्यासी हो।

खेद है आर्य समाजो मे सामवेद के गान का ज्ञाता ढूढे नही मिलता है। ऋषि दयानन्द सामवेदी थे। ऋषि ने सस्कार विधि मे आदेश दिया है कि 'वामदेवगायन' साम से अवश्य करे। एव जिस वेद का मन्त्र हो उसको उसी वेद की विधि से बोले। इसका सर्वथा अभाव है।

(२) आशासन, विशासन,

अथो अधि विकर्त्रं नम्।
तानि ब्रह्मा तु शुन्धति।
॥ऋग्वेद मण्डल १०॥

वेदो के उच्चारण मे मुख्यतया ३ दोष ऋग्वेद मे अकित हैं।

१—सारा मन्त्र बेढगा बोलना
२—विरामो पर न ठहर कर बोलना
३—काट काट कर बोलना। ये तीनो दोष आर्यसमाजो मे सर्वत्र सुलभ हैं। इन तीनो दोषो को दूर कराने वाला ब्रह्मा ही होता है। जब चार वेद का जानने वाला सन्यासी न होगा तो दोषो को दूर कौन करा सकेगा।

ध्यान रहे आर्यसमाज की स्थापना एक चतुर्वेदवित् चमत्कारी सन्यासी ने की है।

(३) आर्यसमाजी अपने घरो में हवन (यज्ञ) नहीं करते हैं। हां आर्यसमाज भवनों में जाकर कहीं-कहीं कोई-कोई आश्रम संकरी करते हैं। ५० वर्ष बाद वानप्रस्थ का समय है। इनको एकान्त मे जाकर व्यक्तिगत हवन करना चाहिए। सामूहिक हवन से इनका मकसद पूरा नहीं हो सकता है। जो गृहस्थ हैं उनको निज घर मे हवन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार हैं :—

आजुहोता हविषा मर्जयध्वम्
: सपर्यता यजतं पस्त्यानाम।
ऋग्वेद १० मण्डल।

(४) आर्यसमाजों में गला फाड-फाड कर गाया जाता है। हाथ जोड झुक,ए मस्तक परन्तु ऋग्वेद १०।११५।९ में लिखा है :—

वषट् वषट् इति ऊर्ध्वासो अनक्षन्।
नमो नम इति ऊर्ध्वासो अनज्ञन्॥

यज्ञ करके ऊपर मुह हाथ उठावे और नमोनम: कहकर ऊपर मुह हाथ उठावे। अतएव हाथ जोड उठाए मस्तक वन्दना हम कर रहे। ऐसा ही गान करना वेदानुकूल है॥ आर्यसमाजी तो हाथ जोडने मे भी घबराते हैं। वेद मे आज्ञा है—उत्ताभ्या अकरं नम'। एवम् उत्तान हस्तौ नमसा विवासेत्॥

(५) यजुर्वेद ३८।१० के अनुसार। दक्षिण दिशा मे उत्तराभिमुख बैठने ब्रह्मा ही सब विद्वानो को यज्ञ करावे। ब्रह्मा (चतुर्वेद वित संन्यासी,देखोऋक १।१५८।६) ही यज्ञ मे उपदेश देवे, क्योकि 'वदन ब्रह्मा अवदतो वनीयान बोलने वाला ब्रह्मा [ही श्रेष्ठ होता है। एव ऋग्वेद मण्डल ९। सूक्त ११९। मन्त्र ६ (देखो सस्कार विधि का सन्यास प्रकरण) मे स्पष्ट उल्लेख है:—

यत्र ब्रह्म छन्दस्याम् वाच वदन॥

जिस यज्ञशाला में चतुर्वेदविन् सन्यासी ब्रह्मा वेदों की छन्दोमय वाणी को बोलता है। वहा ही—इन्द्राय इन्दो। परिस्रव। चरितार्थ होता है। ( ) आहुति देने के लिए गायत्री छन्द (२४ अक्षर) को ही सर्वश्रेष्ठ वेद मे बताया गया है। वही प्रभु को पसन्द है। रूचता है। रोचते का अर्थ है। प्रकाशित होना। रुच दीप्तो। यदि २४ अक्षर (गायत्री छन्द) को छोड कर तीन व्याहृति सहित गायत्री मंत्र बोला जाएगा तो वह गायत्री मन्त्र नहीं रहेगा। उसकी संज्ञा हो जायेगी। गुरुमन्त्र। देखो स्वामी दयानन्द जी की पंचमहायज्ञ विधि।

खेद है कि ऋग्वेद मण्डल १। सूक्त १८८। मंत्र ११ के विरुद्ध आर्यसमाजों में गुरुमन्त्र से (बिना हाथ पैर धुलवाये) आहुतियां यज्ञ में धूमधाम से दिलवायी जाती हैं। परिणाम पत्यक्ष है। परमात्मा प्रसन्न नहीं है इस मन्त्र को देवता 'अप्रिय:' है।

(७) यज्ञों में समय विरुद्ध, विधिविरुद्ध और ऋषि दयानन्द की आज्ञा विरुद्ध ५ बार 'अयन्त इध्म आत्मा' बोल कर (यह वेद वाणी भी नहीं है) घृत की आहुतियां दी जाती हैं। सामान्य प्रकरण में जो लिखा है उसका प्रयोजन यह है कि नामकरण, मुण्डन, कर्णवेध, अन्नप्राशन आदि मे जहा पृष्ठ पक्ति का निर्देश किया है वहा ५ बार घृत की आहुति डालना।

८. अन्तिम अति आवश्यक बात यह है कि अश्वमेध पर्व के ९२वें अध्याय मे लिखा है कि यजमान ही भस्म हो जायेगा अर्थात मानसिक अशाति और आत्मिक अव्यवस्था का शिकार हो जाएगा। यदि यज्ञो मे विधि हीनता हो गई। श्लोक इस प्रकार हैं—

(१)

यस्मात् वैत्रायते दु:खात्, यजमान हुतानल।
तस्मात् तु विधिवत् कार्य, अग्नि-होत्र इति श्रुति:।

(२)

यस्मात् च दुरहुत: सौ यम् अल भक्षयितु क्षणात्।
यजमान नरश्रेष्ठं, क्रव्यादोग्नि: तत: स्मृत:।

(३)

यदि भार सहस्रं तु, गुग्गुलुआदि प्रधूपयेत्।
तुष्यन्ति न चेद् यंतय:, नाह तुष्यामि भारत॥

★ आध्यात्मिक मार्ग मे निराशा के लिये कोई स्थान नहीं है। उन्नति धीमी हो सकती है, परन्तु सफलता निश्चित है।

★ जांच की घड़ियों में अपने मन को सदा शान्त बनाये रखिये।

★ दुनियां तभी पवित्र और सुन्दर हो सकती है जब हम स्वयं और सुन्दर हों।

स्वर्गीय इंस्पैक्टर सत्यपाल पंजाब रोडवेज की बरसी

१३, १४ जुलाई को स्वर्गीय इंस्पैक्टर श्री सत्यपाल जी की बरसी मनाई गई जिसमें श्री पं. खुशी राम जी महोपदेशक सभा, श्री मान सभा मन्त्री डा० वेदी राम जी तथा श्री खरैती राम जी शास्त्री सनातन धर्म सभा जालन्धर और श्री पं. रोशन लाल जी पुरोहित, पं. तेजराम जी उपदेशक सभा आदि सब महानुभाव इसमें शामिल हुए। पं. रोशन लाल जी ने १३, १४ को यज्ञ करवाया। श्री मन्त्री महोदय जी ने अपने प्रवचन द्वारा सब घर- वालों को हौसला दिया। पं. खुशी राम जी ने तथा खरैती राम जी ने अपने विचारों द्वारा स्व० सत्यपाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दुःखी प्रकार को धैर्य दिया। सभा मन्त्री का धन्यवाद।

म. श्री मेला राम जी
भजनोपदेशक सभा

वार्षिक चुनाव

आ० स० मालवीय नगर
नई दिल्ली

प्रधान—श्री अम्बिका दत्त जी पालीवाल
मन्त्री—श्री देसराज जुनेजा
उपमन्त्री—हंसराज वर्मा
उपमन्त्री—श्री वेद मित्र आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सरदारी लाल जी।

विनीत
हंसराज वर्मा मन्त्री

आर्यसमाज लारेंसरोड में

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर में सारा वर्ष ही प्रातः काल दैनिक रूप से यज्ञ एवं वेद उपनिषत् दर्शन आदि की कथा जारी रहती है। आर्यप्रादेशिक सभा पंजाब के उपदेशक कथा करते रहते हैं। साथ-साथ यहां के स्वाध्यायशील सौम्य स्वभाव डा० मोहनलाल जी पाठक भी उपनिषदों की मधुर कथा करते रहते हैं। नरनारी दैनिक रूप से आते हैं। आज कल समाज मे सभा के पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री भक्ति सूत्रों की कथा करते हैं। सत्सङ्ग का वातावरण बहुत ही उत्तम है।

वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर का वार्षिक चुनाव रविवार ता० २०-७-६९ को निम्न-लिखित अनुसार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री अमृतलाल
मन्त्री—श्री मदन मोहन सेठ।
उप-प्रधान—श्री विश्वनाथ जी ग्रोवर
,, श्री पं० द्वारकानाथ जी विद्यालकार
,, श्री विश्वेश्वरनाथजी सेठ
उप-मन्त्री—श्री विजयपाल जी
,, श्री रामस्वरूप जी रणदेव
कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र कुमार जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री अशोक कुमार जी
आय-व्यय निरीक्षक—प० बाबूराम जी वैद्य
स्टोर कीपर—श्री जीवनप्रकाश जी

मदनमोहन सेठ—मन्त्री

★ श्री एन० संजीव रेड्डी ने १९ जुलाई को ५ बजे लोकसभा के अध्यक्ष-पद से त्यागपत्र दे दिया।

★ काहिरा में भारतीय राजदूत श्री अप्पा साहेब पंत श्री शान्तिस्वरूप धवन के स्थान पर ब्रिटेन मे भारत के उच्चायुक्त नियुक्त किए गए हैं।

★ एयर चीफ मार्शल अर्जनसिंह १५ जुलाई को वायु सेनाध्यक्ष के पद से सेवा निवृत्त हो गए और एयर मार्शल पी०सी० लाल ने १६ जुलाई को एयर चीफ मार्शल के पद पर वायु सेनाध्यक्ष का कार्यभार सभाल लिया।

★ श्री शुचि भूषण मलिक दो वर्ष के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किये गए हैं।

★ राष्ट्रपति ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के 'विजिटर' की हैसियत से विश्वविद्यालयकी शैक्षणिक समिति और कार्यकारी परिषद नियुक्त कर दी है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री जी० पी० पार्थसारथी शैक्षणिक समिति और कार्यकारी परिषद के अध्यक्ष हैं।

आर्यसमाज वजीर बाग श्रीनगर
की ओर से
सभा वेदप्रचार में २०००) रुपए भेंट

आर्यसमाज वजीर बाग श्रीनगर के वार्षिकोत्सव पर पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतमयी कथा व प्रवचन होते रहे। आपकी प्रेरणा पर समाज की ओर से प्रिंसिपल प राधाकृष्णजी गजू मन्त्री समाज ने आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर के वेदप्रचार के लिए २०००) रुपयों का चैक महात्मा जी को भेंट किया। सारे समाज को धन्यवाद।

आर्य समाज लारेंसरोड अमृतसर
की ओर से
सभा वेद प्रचार में १०००)

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर की ओर से सभा के प्रधान जी श्री प्रिंसिपल भीमसेन बहल की सेवा मे १०००) रुपयो का चैक समाज के अधिकारियों की ओर से भेंट किया गया सारे समाज का धन्यवाद।

आर्यसमाज दयानन्द मार्ग (रे.रो.) शकूरबस्ती दिल्ली का चुनाव

आर्यसमाज दयानन्द मार्ग (रे.रो) शकूर बस्ती दिल्ली ३४ का नव-निर्वाचन दिनाक २९-६-६९ ई० रविवार को मध्याह्नोत्तर ३ बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रबन्ध मे तथा अधिकृत प्रतिनिधि श्रीमान् प० देवव्रत 'धर्मेन्दु' जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

निम्नलिखित व्यक्ति पदाधिकारी अन्तरंग सदस्य तथा सम्मानित सदस्य चुने गये हैं।

* समाचार

१. प्रधान—श्री ज्वालाप्रसाद जी २. उपप्रधान (प्रथम) श्री महावीर प्रसाद जी, उपप्रधान (द्वितीय) श्री जयलाल सिंह आर्य बन्धु जी, ४. मन्त्री—श्री रामसिंह शर्मा, उपमंत्री—श्री लालचन्द वर्मा प्रथम, ६. उपमंत्री श्री चौधरी शिवचरण जी (द्वितीय), ७. कोषाध्यक्ष—श्री डा० भारतभूषण जी, ८. पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री [illegible] मल [illegible]।, लेखानिरीक्षक— श्री [illegible] जी बी० ए० एल० एल० बी० चुने गये हैं।

[illegible] बनवारीलाल, २. श्री लक्ष्मणदास जी, ३. श्री जय भगवान जी, ४. श्री ओमप्रकाश जी, ५. मा० नन्दलाल जी, ६. चौ० सुरतसिंह जी, ७. श्री प्रेम नारायण सक्सेना।

सम्मानित सदस्य

१. श्री कृष्णचन्द जी, २. श्री त्रिलोकचन्द महता, ३. श्री जयदेव जी ५ श्री बलदेव राज जी।

—रामसिंह शर्मा मन्त्री

★ भारत सरकार ने श्रीमती नीरा डोगरा की अध्यक्षता में केन्द्रीय समाज कल्याण मडल की कार्यकारी समिति नियुक्त की है। समिति में तीन समाज सेवक, एक समाज शास्त्री, एक समाज कल्याण प्रशासक और चार वरिष्ठ सरकारी अधिकारी हैं।

श्री० [illegible] महाराणा प्रताप

आर्य जाति के गौरव गगन के सूर्य, सूर्यवंशी महाराणा प्रताप के संकल्प शक्ति के ऐश्वर्य को जब हम देखते हैं तो हृदय फूला नहीं समाता है।

मुगलों की फौजों के छक्के छूटते देखा जाता है। धन्य है महाराणा प्रताप का जीवन। जब तक नभ में सूर्य चन्द्र और तारे रहेंगे। जब तक भूतल पर एक भी आर्य जाति का बच्चा रहेगा संकल्प के धनी महारथियों का नाम गाया रहेगा।

★ आचरण में न आने वाला ज्ञान बोझा मात्र है।

★ लोग अच्छा कहे या बुरा किन्तु तुम अपने आदर्श को सदैव आंखों के सामने रख कर शेर के समान आगे बढ़ते रहो।

★ जिनके जीवन का लक्ष्य भगवान होते हैं जगत की उलझनें उनके मार्ग मे रोड़े नहीं अटका सकतीं।

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी मे] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. महर्षि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाबके निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी में) १.५०
१२. सध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १.००
१३. Dayanand His Life & Work(ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. ३.००
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र(ले० आनन्द स्वामीजी महाराज)१.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M.A.) ०.५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाष्य प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. .५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, .५०
२१. मुंडक उपनिषद(ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३[illegible]
२२. [illegible]स्वामी मत आलोचना(ले० स्वामी [illegible]नन्द जी)उर्दू मे ०.३[illegible]
२३. [illegible] समन्वय (ले० बुद्धदेव [illegible]) १.२५
२४. सीता[illegible] [illegible]स्वामीजी)०.३७
२५. [illegible] (,, ,,)०.३१
२६. पार्वती (,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUp nis had ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A.) अंग्रेजी में १.२५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अत: साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

हिमाचलप्रदेश में आर्यप्रादेशिक सभा के अन्तर्गत आर्यसमाजों को सूचना

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा की ओर से वेद प्रचारार्थ निम्नलिखित स्थानो पर प० चन्द्रसैन जी तथा पं. [illegible] मदन मोहन चिमटा भजन मण्डली पधार रही है। अधिकारी वर्ग से प्रार्थना है कि प्रचार का आयोजन करने का कष्ट करें और सभा को वेद प्रचार फड से सहयोग देकर कृतार्थ करें।

कार्यक्रम :—७ जुलाई से १३ तक शिमला, १३ से १५ तक सुन्दर नगर, १५ से १८ तक मण्डी नगर, २० से २७ तक जोगिन्दर नगर, २४ से २७ तक नगरोटा बगुआ, १ से ४ अगस्त तक कागड़ा ५ से १० अगस्त तक नूरपूर।

विनीत

मन्त्री आर्यप्रादेशिक सभा

आर्यजगत में विज्ञापन छपवाई रेट

पूरा पेज	एक बार	40 रु०
पूरा पेज	वर्ष भर	300 रु०
आधा पेज	एक बार	25 रु०
,,	वर्ष भर	200 रु०
चौथाई पेज	एक बार	15 रु०
,,	वर्ष भर	150 रु०

नोट—विशेष कारण से इन में अदला-बदली की जा सकती है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे · वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ३२) २६ श्रावण २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१० अगस्त १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा

अर्थ :—वह इन्द्र:—ऐश्वर्य का मालिक इन्द्र इस सारे यात :—चलने वाले जगम चर का तथा अव-सितस्य-न चलने वाले जड़ जगत का, चर और अचर दोनों का ही राजा-राजाहै शासक है, अधिपति है।

भाव :—वह प्रभु इन्द्र बनकर इस सारे ब्रह्मांड पर शासन करता है सारे विश्व में चर और अचर या जड़ और चेतन रूप से दो प्रकार के ही पदार्थ है। मनुष्य, पशु, कीट पतंग आदि जीव चेतन हैं। पत्थर आदि तत्व जड़ हैं। इन दोनों प्रकार के जगत का वही प्रभु इन्द्र स्वामी है। सभीको अपने अटल नियमों में रखता है। सारा विशाल विश्व उसकी मर्यादा में कार्य करता है। उसी इन्द्र की स्तुति करें —सं.

ऋग्वेद १-३२-१५

वेदामृत

एक सहारा तेरो नाम

ओ३म् योगे-योगे तवस्तरं वाजे-
वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥

ऋग्वेद मण्डल १-३०-७

अर्थ :—प्रभुदेव! हम सारे आपके उपासक प्रेमी(योगे-यागे) हरेक कार्य के शुरू में (तवस्तरं) बहुत बलवान आप को (वाजेवाजे) प्रत्येक संग्राम में, भीड़ पड़ने पर (हवामहे) हम बुलाते हैं, याद करते है। (सखाय:) हम सारे मित्र बने हुए उपासक (इन्द्रम) ऐश्वर्य के स्वामी इन्द्र को(ऊतये) रक्षा के लिए परमेश्वर को पुकारते है।

इसका भाव यह है

मनुष्यो! आप सारे सखा हो, मित्र हो, एक समान हो। जब कोई शुभ कार्य करने लगो-तभी सबसे प्रथम उस उस श्रेष्ठतम कर्म रूपी यज्ञ को प्रारम्भ करते हुये उसी इन्द्रदेव को पुकारो। उसी की आराधना के साथ प्रत्येक जीवन का यज्ञ शुरू किया करो। तथा जिस समय जीवनमें कोई भीड़ आ पड़े, कष्ट हो, क्लेश की काली घटाएं आ जाएं, संग्राम हो, चारो ओर वैरी विरोधियों ने घेर लिया हो, आसुरी भावों का आक्रमण होता हो-तो उस समय भी उसी वज्रभृत इन्द्र को पुकारो। सभी विपत्तियों में वही एक-मात्र रक्षा करने वाला है। एक सहारा प्रभु का नाम ही है। उसे सदा याद रखो। उसी की आराधना, उपासना करो। अपनी रक्षा के लिए बार २ उसे ही पुकारो —सं.

ऋषि दर्शन

तस्या: साधनानि गायन्त्याचार्या:

अर्थ :—तस्या :—भगवान की भक्ति के साध-नानि—साधन,उपाय,तरीके गायन्ति-बतलातेहैं आचार्या:-भक्ति में निपुण आचार्य महात्मा प्रभुके प्यारे लोग।

भाव :—प्रभु के भक्त देवर्षि नारद जो कहते है कि जैसे प्रत्येक वस्तु को पाने के कई साधन होतेहैं। साधन से ही उस साध्य पदार्थ की प्राप्ति होती है। बिना साधन अपनाये तो छोटी-सी बात भी पूरी नहीं हो सकती। उसी प्रकार परमेश्वर को जानने तथा उसकी अनुभूति प्राप्ति करने के लिए भक्ति के सूक्ष्म मार्ग पर चल कर जीवनमें पूर्ण अनुभव प्राप्त करने वाले प्रभु के प्रेमी भक्तों ने कुछ भक्ति मार्गके साधन बतलाये है। इनको जीवनमें भली-भांति अपना कर ही प्रभुभक्ति के मीठे प्रसाद को पाया जा सकता है। वे साधन क्या है ये अगले अंक में पढ़िये —सं.

नारद का भक्तिसूत्र ३४

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०(सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल

(ब्र.जगदीशचन्द्र 'वसु' सिद्धान्तालंकार विद्यावाचस्पति नरवाना)

(पिताक से आगे)

शास्त्रार्थ सस्कृत मे हुआ। जनता पर अच्छा प्रभाव पडा। मेरे कामो को देख कर मोहल्ले वालो ने, पिता जी से मेरी शिकायत करदी। पिता जी ने मुझे कहा कि आर्यसमाजी हार गये अब तुम आर्यसमाज से अपना नाम कटा दो।

मैंने पिता जी से कहा कि— पिता जी! आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्त तो सार्वभौम है उन्हे कौन हरा सकता है। अनेक वाद विवाद के पश्चात पिता जी जिद् पकड गये कि आर्यसमाज से त्यागपत्र न दिया तो मैं तुझे रात को सोते समय मार दू गा। या तो आर्यसमाज से त्यागपत्र दे दे या घर छोड दे? मैंने भी विचारा कि पिता जी का क्रोध यदि अधिक बढ गया और उन्होने मुझ पर कोई वस्तु ऐसी दे पटकी जिसका बुरा परिणाम हो तो अच्छा न होगा। अतएव घर त्याग देना ही उचित समझा। मैं केवल एक कमीज पहने खडा था और पाजामा उतार कर धोती पहन रहा था। पाजामे के नीचे लगोट बधा था। पिता जी ने हाथ से धोती छीन ली। और कहा कि घर से निकल। मुझे भी क्रोध आ गया। मैं पिता जी के पैर छू कर गृह त्याग कर चला आया।'

देखा! बिस्मिल के विचारो मे कितनी कट्टरता थी! आर्य समाज की विचार-धारा के सामने न पिता की मानी न माता की न बन्धु-बन्धुवो की और न ही मोहल्ले वालो की। बिस्मिल के हृदय मे आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के सिद्धातो के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा व लगन, तडफ थी।

पाठको को यह जान कर बडा आश्चर्य होगा कि राम प्रसाद बिस्मिल ने आर्य समाज व वैदिकधर्म के सिद्धान्तो के प्रसार के लिए तथा क्रान्तीकारी आन्दोलन को सुचारु रूप से चलाने के लिए आर्य समाज शाहजहापुर (बरेली उ० प्र०) मे कुछ क्रान्तीकारी आर्य कुमारो ने मिलकर आर्य कुमार सभा की स्थापना भी की थी। जिसके आप (बिस्मिल) अनेक वर्षों तक आर्य कुमार सभा के महामन्त्री भी रहे! वे अपने शब्दो मे अपनी आत्मकथा लिखते हैं कि —

'हम कुछ नवयुवको ने मिल कर आर्यसमाज मन्दिर मे आर्यकुमार सभा खोली थी! जिसके साप्ताहिकअधिवेशन प्रत्येक शुक्रवार को हुआ करते थे। वही पर धार्मिक सामाजिक तथा राजनीतिक आदि वस्तुओ का पठन विषय विशेषकर निबन्ध-लेखन और पठन तथा वाद-विवाद होता था। आर्य कुमार सभा से ही मैंने जनता के सम्मुख बोलने का अभ्यास किया। बहुधा हम आर्य कुमार सभा के नवयुवक मिल कर शहर के मेलो तथा बाजारो मे प्रचारार्थ जाया करते थे। बाजारो मे व्याख्यान देकर आर्यसमाज के सिद्धान्तो का प्रचार करते थे। ऐसा करते-करते मुसलमानो से भी मुबाहसा होने लगता था। प्रचार व प्रसार के द्वारा आर्य कुमार सभा ने अपने शहर मे तो नाम पाया ही था, जब लखनऊ मे कांग्रेस हुई तो भारवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन का भी वार्षिक अधिवेशन वहा पर हुआ। उस अवसर पर सब से अधिक पारितोषिक लाहौर और शाहजहांपुर आर्य कुमार सभाओ ने पाये थे। जिनकी प्रशसा समाचारपत्रो मे प्रकाशित हुई थी।

बन्धुओ! वास्तव नवयुवक ही किसी समाज या सगठन की (जान) रीढ की हड्डी होते हैं। इसी आशय को रामप्रसाद बिस्मिल ने सम्मुख रख कर आर्य समाज मन्दिर मे आर्य क्रान्तीकारी नवयुवक सगठन आर्य कु सभा का निर्माण किया था। इसी के माध्यम से ही उन्होंने वैदिक धर्म, आर्य समाज तथा बिस्मिल के प्रेरणा स्रोत वेदोद्धारक, राष्ट्रोद्धारक,आदित्य ब्रह्मचारी युगप्रवर्तक जगदगुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती के सर्वभौम वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार व प्रसार किया! राम प्रसाद बिस्मिल सर्व प्रकारेण यह समझते थे कि विश्व का तथा मानव का यदि कोई कल्याण तथा उद्धार कर सकता है तो ,वह केवल महर्षि दयानन्द की मौलिक तथा वैदिक विचार-धारा व उनके द्वारा स्थापित किया हुआ जीवित जागृत यह आर्य ही कर सकता है। और यह भी जानते थे कि इस आर्यवर्त देश को ब्रिटिश शासन से यदि कोई मुक्ति दिला सकता है तो वह भी केवल आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द की विचार-धारा के माध्यम से ही दिला सकता है। अन्यथा नही। क्योकि आर्य समाज अपने जन्म काल से ही अनेक आर्य वीर क्रान्तीकारी इस देश को स्वतन्त्र कराने के लिए प्रदान किये। जब स्वतन्त्रता आदोलन चल रहा था और ब्रिटिश आततायी हमारे आर्य वीर क्रान्तीकारी देश-भक्तो को जेलो मे ठूस २ कर अनेक यातनाए दे रहे थे तो भारत के सच्चे सपूत देशभक्त प. जवाहर लाल नेहरू ने जेल मे कहा था कि आज ९५ प्रतिशत आर्य समाजी आर्यवीर स्वतन्त्रता आन्दोलन हेतु मेरे सम्मुख हैं। प नेहरू वैदिक-सस्कृति व सभ्यता के कितने शत्रु थे। परन्तु वे उपरोक्त सत्यता को नहीं छिपा सके।

आर्यसमाज, आर्यवीर दल व आर्यकुमार सभा तथा अन्य आर्य नवयुवक संगठनों के प्रेरणस्त्रोत महान क्रान्तीकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने सत्यार्थ प्रकाश मे महर्षि दयानन्द द्वारा वर्णित ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन करना आरम्भ कर दिया था। वे एक कम्बल को तख्त पर बिछा कर सोते थे। और प्रात चार बजे शैय्या त्याग कर देते थे। फिर (शौचादि से निवृत होकर स्नान सध्या हवनादि से निवृत होकर व्यायाम करते थे। रात्री को भोजन न करके केवल गो दुग्धही ग्रहण करते थे और नमक व मीठा तो वे छूते ही न थे। इस कारण से आर्य वीर रामप्रसाद का स्वस्थ्य दर्शनीय हो गया और सब लोग उनके स्वास्थ्य को आश्चर्य की दृष्टि से देखा करते थे।

पाठको को यह जान कर भी बड़ा आश्चर्य होगा कि जिस शुद्धि आन्दोलन का बिगुल अछुतोद्धारक, पतितपावन महर्षि स्वामी दयानन्द, धर्मवीर प० लेखराम, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द आदि आर्यवीर क्रान्तीकारियो ने बजाया था। उसी बिगुल को अमर क्रातीकारी आर्यवीर रामप्रसाद बिस्मिल ने शुद्धि आदोलन को जारी रखा और आपने अपने साथी अमरशहीद अशफाकउल्ला खा को (जो कि मुसलमान था) शुद्ध किया और नाम सस्कार न करते हुए अशफाकउल्ला खा ही रखा। यह बिस्मिल की क्रातीकारी राजनीति थी।

शुद्धि आदोलन के कार्य का वर्णन करते हुए अपनी आत्मकथा मे लिखते हैं कि सब को आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी व एक मुसलमान का मेल कैसा? मैं मुस्लमानो की शुद्धि करता था। और आर्यसमाज मन्दिर मे मेरा निवास स्थान होता था।' पाठको को यह भी मालूम होना चाहिए कि बिस्मिल जी क्रांतिकारी आदोलन हेतु जहा कहीं भी जाते थे तो उनका निवास स्थान केवल आर्यसमाज में ही होता था। अन्य कहीं नही ठहरते थे। (बिस्मिल आर्यसमाज को

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ऋषि पर श्रद्धा सुमन

विरह आच की ज्वाला मे झुलसा करता है मेरा मन,
सिसक-सिसक कर जब उठती है मन-मन्दिर मे एक तरग।
मौन निमन्त्रण देकर के हे! ऐसी तुझको कहता हू,
तेरे अतित के उस अन्तल मे मन से मैं तो पैठा हू।

हर लहर तडप-तडप कर कहदे कैसा था वह ब्रह्मबली,
घूमा रात दिन वल्कल पहिरे सुख-सम्पत्तिकी धारण न ली।
हिमवान् के हिम कुण्डल पर विंध्याचल के आंचल पर,
'नदी' 'नर्बदा' 'निर्झर' 'झर' 'पर' मरुभूमि के 'बालू उर' पर।

पीडा की घन-घोर-घटा थी मानो भक्त को ले गई होली,
ऐसे मे नरसिंह बना वह मलि मुदित की मुख रोली।
कहू कथा उसकी कैसे हर लहर कहती कर क्रन्दन,
समझे नही वह लाया था इस भूतल पर वन नन्दन।

हरिश्चन्द्र
अध्यक्ष
आर्य युवक सभा टंकारा (राजकोट)

सम्पादकीय :—

आर्यजगत

वर्ष २९] रविवार २०२६, १० अगस्त १९६९ [अंक ३२

वेद सप्ताह का महान् पर्व

आर्य समाज के लिए वेद प्रचार का पुण्य मिशन सब से उत्तम कार्य है। इसकी स्थापना भी इस महान कार्य के लिए हुई है। अपने प्रारम्भिक समय से ही यह समाज अपने प्रेस प्लेट फार्म आदि के नाना साधनो के द्वारा इस काम मे लगा हुआ है। सारे भारत व बाहर भी इस विशाल आन्दोलन का कितना परिवार है— यह बात तो इसका पूरा परिचय प्राप्त करने पर ही पता लगती है। इसमे कितने प्रतिष्ठित नेता, विद्वान, राजनीतिज्ञ, महात्मासन्यासी शिक्षा शास्त्री एवम अन्य विख्यात दार्शनिक व्याख्याता लेखक है—यह जान कर गौरव बढ जाता है। यह ठीक है कि वातावरण के परिवर्तन तथा राजनीति के वर्तमान आकर्षण के साथ समाज के कार्य की प्रगति मे कुछ मन्दता आ गई है—किन्तु इस बात का फिर भी सारे समाज को गर्व है कि अब भी आर्य समाज देश विदेश मे एक प्रभावशाली और जीती जागती सस्था के रूप मे सब के सामने है। इसके व्यक्तियो के उल्लास मे कमी हो सकती है किन्तु महान मिशन के वही प्रभाव मौजूद है। यह सब इसके सस्थापक देव दयानन्द के महान तप, बलिदान का ही प्रभाव है। पुराने समय समय के इसके महारथियो का त्याग है तथा वर्तमान काल की इन बदली हुई परिस्थितियो मे भी नानाविध प्रलोभनो व आकर्षणो के होने पर भी समाज के नेताओं, महात्माओ, अधिकारियों, प्रचारको तथा सस्थाओ समाजो के समाज प्रेमियो की आस्था है, जो कि समाज के मिशन को चलाती आ रही है। प्रभु इनको शक्ति प्रदान करे, ताकि इनके द्वारा समाज अपने वेद प्रचार के विशाल कार्य में निरन्तर जुटा रहे। नितान्त विपरीत परिस्थितियो मे भी समाज की नौका को ये सज्जन तप और निष्ठा से आगे ही आगे ले जाने मे समर्थ बने रहे।

समाज कई पर्वों को मनाता रहता है। इनसे जीवन की प्रेरणा मिलती रहती है। उनमे श्रावणी उपाकर्म का पवित्र पर्व भी है। यह रक्षाबन्धन भी बन गया है। वेद सप्ताह भी तथा जन्माष्टमी की पुण्य पर्वधारा भी इस मे आकर मिल जाती है। इस प्रकार से इसे यदि त्रिवेणी का सगम कहा जाए तो उचित ही होगा। तीनो पर्वों की धाराओ का मिलाप हो जाता है। रक्षाबन्धन, वेद पर्व, जन्माष्टमी प्रतिवर्ष आता है। यह सप्ताह।

आर्य समाजे अपने-अपने स्थानो, नगरो कस्बो तथा ग्रामो मे समारोह से इसे मनाते है यज्ञ होते है, वेद कथा चलती हैं, वेद का पारायण व स्वाध्याय भी होता है। इस सप्ताह विशेष रूप से वेद पर प्रवचन होते है। मन्त्रो को याद किया जाता है। वेद को पढ़ने पढ़ाने का व्रत धारण किया जाता है। वेद प्रचार के लिए व्यक्तियो, परिवार, समाजे, और सस्थाओ अपनी-अपनी आस्था प्रकट करती हुई धन से भी सभा वेदप्रचार मे सहयोग देती है जिससे वेद प्रचार का कार्य चलता है। सभा के पास प्रचारक उपदेशक सीमित सख्या मे होते हैं। कुछ तो धन के अभाव के कारण सभाए विवश होती है। कुछ इस समय के वातावरण के कारण। आजकल शिक्षको का वेतन स्तर कुछ ऊचा हो गया है। आराम से एक स्थान पर बैठने की सुविधा भी होती है तथा परिवार भी सामने रहता है जीवनयात्रा के धन कमाने के अन्य साधन भी बैठा हुआ पढा लिखा व्यक्ति जुटा ही लेता है। आज का युग पैसे का युग बन गया है। पैसा प्रधान है। मान सम्मान भी इसी से है। सुख सुविधा की सामग्री भी तो धन से मिलती है। परिवारी अपनी सन्तान को भी जीवन मे ऊचा बनाना चाहता है। इस कारण प्रचारक बन कर रात-दिन घूमना कौन पसन्द करता है? वह भी तो अपना व सन्तान के भविष्य को सोचता है। दूसरे कार्य में चला जाता है। यही कारण है कि किसी भी बडे-बडे मे प्रचारक ने अपने बच्चो को प्रचार क्षेत्र मे नही आने दिया। दूसरे क्षेत्रों मे भेज दिए हैं। सारे समाज को इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। आर्यसमाज दूसरो को आत्मसात करने मे लगा है। उसके लिए हजारो नही लाखो रुपये व्यय करता है। किन्तु उसने अपने प्रचारको की सन्तान के जीवन निर्माण की ओर भी पूरा ध्यान दिया या नही। यह भी विचारने योग्य है। त्याग, तप का यह अर्थ नही कि समाज के प्रचारक के परिवार, सतान को जीवन की साधारण सुविधा सामग्री भी न मिल सके।

वेद सप्ताह आर्यसमाज का एक महान् पर्व है। समाजे समारोह से मनावे। वेद कथाए रखे। दूसरो तक वेद पहुचावे। सभा की झोली भर दे ताकि खूब प्रचार का क्षेत्र विशाल हो सके। जीवन, परिवार मे वेद पहुचावे। सभा के पत्र आर्यजगत के वेदाक की बहुत प्रतिया मगवा कर बाटे। —त्रिलोकचन्द्र

मानव जीवन की प्यास

मनुष्य अपनी प्यास मिटाने के लिए अनेक प्रकार के पीने वाले पदार्थों का प्रयोग करता है। जल हो या दूध, फलो का रस हो या शहद आदि मीठे पेय-अनेकविध पीने के रस लेता है। इस युग मे तो शराब का कितना खुला प्रयोग करता है जिसे सर्वथा नही पीना चाहिए था उसको केवल पीता ही नही वरन् उसमे स्नान करता है। किन्तु इन पीने योग्य और न पीने के योग्य रसो को पान करते हुए मानव की प्यास क्या मिट गई है? क्या उसका मन तृप्त हो गया है? क्या उसे शाति मिल गई है? इस का तो एक ही उत्तर आता है—नही—सर्वथा नही। जो वस्तुयें पेय है, पीने के योग्य है उन जल, दूध आदि रसो से प्यास तो मिटती है किन्तु देर तक नही। ये भौतिक पदार्थ जीवन की भौतिक प्यास ही तो मिटा सकते हैं। यह प्यास तो जीवन पर्यन्त बनी रहती है। सारी आयु, मनुष्य को ये पेय पीने पड़ते हैं। किन्तु मन और आत्मा की प्यास जिस अमृतरस के पान से मिट सकती है, उसके लिए तो मानव जीवन सदा भटकता रहता है। जब तक वह अमृत मिल नही जाता तब तक किसी के भी मन मे शान्ति नही मिलती। धन वैभव के भण्डार जिनके पास भरे है या सत्ता के आसन पर जो बैठे है अथवा जिनको तमाम भौतिक भोग प्राप्त है—उन से पूछ देखे कि उनके मन की दशा क्या है? आत्मिक शाति के लिए मारे-मारे फिरते है। प्रकृति के भोगो से तृप्ति हो ही नही सकती। ये तो प्यास को और भी बढ़ाते रहते है। हमारी सस्कृति के देवताओ ने, उपनिषद के ऋषियो ने एक सरल वाक्य मे इस रहस्य को खोल कर लिख दिया था—योऽसौ भूमा तत्सुखम् नाल्पे सुखमस्तीति। वह जो महान प्रभु है। इसके साथ-जो आत्मा का ज्ञान है उसे जानने, प्राप्त करने मे ही सुख है। शाति है। इस प्रकृति के क्षणिक अल्पकाल तक रहने वाले पदार्थो मे सुख शाति नही है।

हमारा देश भारत आरम्भ काल से ही अध्यात्मवादी देश है। सारे विश्व को इस की सब से बडी देन यही आत्मज्ञान व ब्रह्मज्ञान ही तो है। आज भी सारा पश्चिम अपने विपुल भोग्य पदार्थों से ऊबकर आत्मिक शाति के लिए भारत के अध्यात्मवाद की ओर भागता आता है। उसे भोगवाद का नीरस स्वाद पता चल गया है। जीवन का वास्तविक तत्व भी तो यही है। हम अपनी आखो से प्रतिदिन इस तथ्य का साक्षात्कार करते रहते हैं। भारत के सन्यासी महात्माओ के के उपदेशामृत का पान करने के लिए जनता इसी लिए उमडती चली आती है। धन-धान्य से मालामाल व्यक्ति, परिवार सभी कुछ होते हुए भी महात्माओ के अध्यात्मवाद के प्रवचनो को सुनने के लिए सदा लालायित रहते है। पिछले दिनो सभा के कार्यक्रम पर आर्यसमाज वजीर बाग श्रीनगर काश्मीर के वार्षिकोत्सव पर आने का अवसर मिला। आर्यजगत के तपस्वी सन्यासी प्रसिद्ध महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की यहा कई दिनो से उपनिषदो की कथा जारी थी। यह तो सभी को पता है कि पूज्य महात्मा जी अध्यात्मरस के भण्डार है। प्रभुभक्ति, आत्मिक-ज्ञान, मनोवशीकार आदि आत्म बाद के गम्भीर विषयो पर ही बोलते हुए एक रसीली सरिता बहा देते है। पहिले भी देखते है, यहा भी देखा कि श्रीनगर के लाखो मे खेलने वाले ऊचे-ऊचे व्यक्ति और परिवार समय

(शेष पृष्ठ ५ पर)

पंजाब में नई भाषा नीति : छात्रों से घोर अन्याय : सरकार अपने फैसलों पर पुनर्विचार करे : शिक्षा-शास्त्रियों का मशविरा : शिक्षा माध्यम चुनने की आजादी होनी चाहिए

प्रस्ताव-क भाग

जालन्धर ३ अगस्त की बैठक मे पारित प्रस्ताव :—पजाब प्रदेश के प्राइवेट स्कूलो के प्रबन्धको, प्रिसीपलो, व हैडमास्टरो की यह महती सभा, पजाब सरकार के केवल मात्र पजाबी (गुरुमुखी लिपि) को ही शिक्षामाध्यम बनाने के निर्णय को जनता के हितो का घातक एव पजाब-प्रदेश की हर प्रकार की उन्नति मे बाधक समझती है। सच्चर फार्मूला शिक्षा-जगत मे सफलता पूर्वक चलता रहा है इससे कही भी किसी कठिनाई या आपत्ति का भाव प्रकट नही हुआ। वैज्ञानिक रूप मे भी अपने बच्चो के लिए शिक्षा माध्यम चुनने का अधिकार केवल मात्र माता-पिता या उनके अभिभावको को ही है। अत: इस नीति को एकदम इस प्रकार परिवर्तन कर देना जनमत का घोर अपमान और सविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारो पर कुठाराघात ही कहा जाएगा।

१—इस सभा की यह निश्चित धारणा है कि सरकार के इस निर्णय से पजाब का प्रगतिशील नवयुवक विश्वभर मे और विशेष रूप से अखिल भारतीय स्तर पर कूपमण्डूक रह कर प्रत्येक प्रकार की उन्नति से दूर जा पडेगा।

२—पजाब सरकार की हायर सैकेण्डरी बोर्ड की परीक्षाओ के लिए पजाबी गुरुमुखी माध्यम की घोषणा से पजाब का विद्यार्थी तथा उनके माता-पिता चिन्तित हो उठे हैं। यह घोषणा जहां शिक्षा के स्तर से गिरा देगी वहा तकनीकी शिक्षा के लिए भी कई प्रकार की कठिनाइया उत्पन्न हो जाएगी। अत. सरकार को उचित है कि वह तुरन्त इस आदेश को वापिस ले अन्यथा इसके परिणाम-स्वरूप उत्पन्न क्षोभ और परिस्थितियो का सभी उत्तरदायित्व सरकार पर ही होगा।

३—यह सभा पजाब सरकार की प्राइवेट स्कूलो को शिक्षा-माध्यम मे कुछ समय के लिए दी गई छूट को भी एक अन्तरिम नीति ही समझती है।

सरकार यदि प्राइवेट स्कूलो मे इस छूट को उपयुक्त समझती है तो फिर सरकारी स्कूलो को इस से वचित करना बड़ा ही हास्यास्पद, बेमेल व निराधार सा प्रतीत होता है।

इसी आधार पर पजाब की प्राइवेट शिक्षण सस्थाओं का यह सम्मेलन सरकार को स्पष्ट कर देना उचित समझता है कि प्राइवेट स्कूलों की भान्ति सरकारी स्कूल भी जनता द्वारा दिए गए करों से ही सचालित हैं। अत. उन से ही सचालित हैं। अत. उन स्कूलो मे भी प्राइवेट स्कूलो की तरह ही माता-पिता को अपने बच्चो को शिक्षा माध्यम चुनने का अधिकार सवैधानिक और न्यायसगत है। सरकार को अपने इस निर्णय को जबरदस्ती जनता पर थापने का यत्न करना उचित प्रतीत नही होता। इस से उसे (सरकार को) जनमत के कोप व रोष का भाजन बनना पड़ सकता है।

इस सभा को यह जान कर अत्यन्त क्षोभ हुआ है कि पजाब सरकार ने अपने १० जुलाई १९६८ ई० के आदेशानुसार सभी सरकारी मिडिल और हायर सैकण्ड्री स्कूलो की पाचवी कक्षा से शिक्षा माध्यम गुरुमुखी मे कर दिया है। सरकार का यह पग बड़ा ही अदूरदर्शितापूर्ण और प्रथम कक्षा से पजाबी के अलावा अन्य माध्यम मे पढते आ रहे छात्रों के प्रति घोर अन्यायपूर्ण है। इससे जहा पाठ्य-क्रम अस्तव्यस्त हो जाएगा वहा बच्चो के मानसिक विकास मे भी हीनता प्राप्त हो जायेगी।

सरकार को उचित है कि वह इस गलत निश्चय पर पुर्नविचार कर इसे तुरन्त वापिस ले ले। अन्यथा जनता को अपने बच्चो की शिक्षा के लिए कुछ अन्य मार्ग अपनाना पडेगा जिसका सभी उत्तरदायित्व सरकारपर होगा।

अत: यह सभा सरकार से साग्रह अनुरोध करती है कि :—

१. वह प्राईवेट और सरकारी सभी स्कूलो मे शिक्षा माध्यम चुनने की छूट बच्चो के माता-पिता और अभिभावको को प्रदान कर सविधान की रक्षा कर न्याय का परिचय दे।

२. इस प्रश्न का राजनीतिक रूप मे समाधान ढूंढने के स्थान पर शिक्षा शास्त्रियों द्वारा ही इसे हल करना उचित है। इस हेतु सरकार को शीघ्राति-शीघ्र शिक्षाविदो का एक सम्मेलन आयोजित करना अत्यावश्यक है।

३. सरकार को उचित है कि वह अनुदान देते समय सरकारी और प्राईवेट स्कूलो को एक ही स्तर पर रखे। भेद-भाव की इस प्रकार की नीति से शिक्षा स्तर के गिरने की हर समय आशका बनी रहती है।

ख भाग

यह सभा पंजाब की सभी शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धको से प्रार्थना करती है कि :—

१. वह मातृ एवं 'राष्ट्र भाषा' विकास के लिए जहा तक भी सम्भव हो, अधिक से अधिक प्राईमरी स्कूल खोले तथा वर्तमान प्राईमरी स्कूलो को अधिक से अधिक विकासित करें।

२. देश के सास्कृतिक एव राष्ट्रीय हित मे एकता को बनाए रखने के लिए वह अपनी शिक्षण सस्थाओ मे हिन्दी माध्यम की वर्तमान व्यवस्था को जारी रखे, चाहे इसके लिए उन्हे कितना भी बडे से बडा बलिदान क्यों न देना पड़े।

३ इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां पजाब सरकार, केन्द्रीय सरकार व सभी शिक्षण सस्थाओ के प्रबन्धको एव समाचार पत्रो को भेजी जाएं।

प्रस्तावक—प्रि० रामचन्द्र जी जावेद

अनुमोदक—प्रि. रलाराम जी एम. ए.

मुस्लिम युवती की शुद्धि

वेद पथिक श्री पं धर्म वीर जी आर्य झंडाधारी पिछले दिनों कलकत्ता से आर्य समाज आजमगढ मे पधारे। आपकी अध्यक्षता मे आर्य समाजमे एक १२ वर्षीय मुसलमान युवतीको शुद्ध किया गया। शुद्धि संस्कार श्री पं. धर्मवीर जी ने व श्री प. सीता राम जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। नगर के सैकड़ो नागरिको नेइस समारोह मे भाग लेकर प्रसाद ग्रहण किया।

वेद पथिक जी ने अपने ओजस्वी भाषण में बतलाया कि शुद्धि से ही हिन्दू जाति को बचाया जा सकता है।

आपने अपने भाषण में कहा कि हमे स्वामी श्रद्धानन्द की श्रद्धा को धारण करके शुद्धि का बिगुल बजा कर विश्व के मानव समाज को आर्य बनाने का बीड़ा उठाना होगा।

युद्ध वीर आर्य उप मन्त्री

अ. कन्या विद्यालय

परिवर्तन

बन्द करो यह मधुर गीत,
बन्द करो यह मधुर तान।
है समय का यह आह्वान,
मानवता का इसमे कल्याण।
ऐसा गीत मुझे सुनाओ,
आग लगा दे जल–थल मे।
उथल-पुथल मच जावे जगमे,
ऐसा गीत बनाना होगा।
आज परिवर्तन लाना होगा,
हर परिवर्तन नये चित्र का।
प्रारम्भ होता है,
हर क्रांति से शान्ति का।
आरम्भ होता है,
निराशा दूर करने को।
आशा का दीप जलाना होगा,
आज परिवर्तन लाना होगा।
प्रति स्पर्धा नही मानव की,
मानव के प्रति।
संग्रामहै केवल विचारो का,
देश प्रेमी, सस्कृति रक्षक।
राज्य के ठेकेदारो,
आडम्बरो के अम्बारो का।
असत्य को हटा,
सत्य के सामने लाना होगा।
आज परिवर्तन लाना होगा,
ऐसा जिसमे।
सभी एक-सी भाषा बोले,
एक विचार हो,एक सभ्यता।
एक संस्कृति का प्रचार हो,
दानवता खत्म हो।
नास्तिकता नष्ट हो,
वाद-विवाद कम-कार्य अधिक।
ऐसा युग को बनाना होगा,
आज परिवर्तन लाना होगा।

जगत नारायण

हिन्दी साहित्य परिषद की स्थापना

डी. ए. वी. मलपटीपरपस हायर सकैण्डी स्कूल अमृतसर ने इस वर्ष अपने अनथक प्रयत्नो तथा कड़े परिश्रम के साथ अपने स्कूल मे हिन्दी साहित्य परिषद की स्थापना कर दी है। इस परिषद के द्वारा विद्यार्थियो मे हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम तथा रचनात्मक चेतना का विकास किया जाएगा, परिषद के कार्यकर्त्ता हैं श्री विजय जी खन्ना मन्त्री 'हिन्दी साहित्य परिषद' परिषद के सयोजक श्री कृष्ण जी हैं। अध्यक्ष श्री विश्म्बर नाथ जी और सरक्षक हैं श्री भगत राम जी प्राचार्य डी. ए. वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अमृतसर।

—व्यवस्थापक

पंजाब सरकार का हिंदी पर कुठाराघात

(श्री सुरेशचन्द्र भटनागर एम. ए, डी. ए. वी. कालेज जालंधर)

शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानोपार्जन द्वारा मानसिक एव आध्यात्मिक तथा शारीरिक उन्नत करना है। सही शब्दों मे ज्ञान प्राप्ति केवल पुस्तको की मूल सामग्री कठस्थ करने से नही होती प्रत्युत्त उस सामग्री के साराश एवं उसमे निहित उद्देश्य को हृदयङ्गम करने से होती है। यह तभी हो सकता है यदि बालक को शिक्षा स्वाभाविक रूप से ही जाए। इसलिये हमे विज्ञानक सिद्धातो का आश्रय लेना पडेगा। मनोवैज्ञानिकोके अनुसार बालक को शिक्षा उनकी मातृभाषा मे सहज रूपसे देनी चाहिये। मातृभाषा वही है जो माता की गोद मे सीखी जाये। कितना खेद का विषय है कि आज हम भारत मे निजि स्वार्थों एव साम्प्रदायिक तत्वो का आश्रय लेकर शिक्षाके इस मूलभूत नियम की निताात उपेक्षा कर रहे हैं।

१९६६ के विभाजनके पूर्व पजाब मे सच्चर फार्मूला स्कूलो मे लागू था जिससे बालक को शिक्षा माध्यम चुनने का अधिकार था। बालक अपनी शिक्षा का माध्यम उसी भाषा को बनाता था जो उसने अपने जन्म से लेकर माता-पिता से ग्रहण की हो। इससे बालक अत्यन्त सरल ढग से शिक्षा ग्रहण करता था और उसे किसी प्रकार का अपने मस्तिप्क पर पर व्यर्थ का भार डालना नही पडता था। उदाहरणतया अर्थ शास्त्र के सिद्धात तो वही हैं परन्तु इस को अपनी मातृभाषा मे सीखना तो सरल है परन्तु अग्रेजी में ग्रहण करना उसके लिए टेढी खीर बन जाती है। फ्रेंच भाषायो का तो कहना ही क्या बालक बहुत कोमल बुद्धि का होता है उस पर अनावश्यक भाषावाद का बोझ डालने से उसकी कल्पना शक्ति एव चितन शक्ति कुठित होने का भय रहता है। परन्तु हाय गुरनाम सिह सरकार पजाब के ४० प्रतिशत हिंदी भाषा भाषियो की भाषा को गुम करने का कुचक्र चला रही है। अब सच्चर फार्मूला समाप्त कर दिया गया है। अब प्रत्येक बालक को प्रथम श्रेणी से ही अनिवार्य रूप से पजाबी को ही शिक्षा का माध्यम स्वीकार करना पड़ेगा। चाहे उसकी मातृ भाषा कोई भी हो।

द्वितीय पजाब सरकार का निर्णय अवैधानिक है। भारतीय विधान के अनुसार हम छात्रो पर शिक्षामाध्यम के लिए किसी भाषा को बलात् थोप नही सकते। बगाल, मद्रास आदि अहिदी प्रदेशो मे अनेक प्राईवेट स्कूलो की शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। देहली जैसे हिन्दी भाषी केन्द्रीय राज्य मे अनेक स्कूल बगालियो एव मद्रासियो के हैं जहा बगाली तामिल आदि भाषाओ मे शिक्षा दी जाती है फिर पजाब सरकार के अल्पसख्यको की भाषा का गला घोटने का क्या अधिकार है। भारतीय विधान के अनुसार अल्पसख्यको को जो अधिकार प्राप्त है उनको इस प्रकार बर्बरता से छीनना घोर अन्यायपूर्ण है।

तृतीय पजाब सरकार के इस निणय से छात्रो को उन्नति के अवसर कम प्राप्त होगे। पजाबी भाषा मे प्रशिक्षित होने से वह पजाब राज्य से बाहर अन्य राज्य की नौकरियो के लिए वहा के स्थानीय छात्रो की तुलना मे अयोग्य सिद्ध होगे। इस प्रकार उनका भविष्य अन्धकार बन जायेगा।

चतुर्थ यह राष्ट्रभाषा पर वज्र प्रहार है। क्या यह भाषा सही अर्थों मे राष्ट्रभाषा कहलाने योग्य है जिसके प्रयोग की स्वतन्त्रता पर अकुश हो और उसकी उपेक्षा करके अन्य प्रादेशिक भाषा को प्राथमिकता दी जाए। यह राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान है। राष्ट्रभाषा वही है जिसका स्थान प्रादेशिक भाषाओ से उपर हो जिसके पडने की पूर्ण स्वतन्त्रता हो।

पचम पजाब सरकार के इस निर्णय से प्रदेश मे साम्प्रदायिक तत्वो को सहारा मिलेगा। इससे प्रदेश की अखण्डता, शाति एवं सुरक्षा खतरे मे पड सकती है जिससे इस राज्य की उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो सकता ही अत पजाब सरकार को चाहिए कि इस अदूरदर्शिता पूर्ण पग को वापिस लेकर अपनी बुद्धिमता का प्रमाण दे ताकि राष्ट्रभाषा का खूब प्रचार हो, साम्प्रदायिक तत्वो का ह्रास हो और छात्रो की चिन्तनशक्ति का विकास हो।

यह हर्ष का विषय है कि हिंदी भाषा के प्रश्न पर सारे हिंदी प्रेमी चाहे वह सनातनी हो अथवा जैनी सभी एक मचपर एकत्रित हो गए हैं। आर्यसमाज इस क्षेत्रमे सक्रिय रूप से क्रियाशील है यह अत्यन्त उत्साहवर्धक पग होगा यदि हम आर्य सस्थाओ मे हिन्दी की पढाई पजाब सरकार के आदेश के विरुद्ध चालू रखे चाहे सरकार उनका अनुदान बन्द कर दे। पजाब के आर्य नेता इस विषय पर गम्भीरता से विचार कर रहे है। अब यह प्रश्न केवल आर्यों का नही प्रत्युत सभी हिन्दी प्रेमियो का है। विश्व मे वही व्यक्ति अमृतपान करता है जिसका जीवन तप-त्याग से भरा हो। आओ हम सब एक ध्वज तले एकत्रित होकर हिन्दी की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान करने के लिए तत्पर हो जाये। जो जाति बलिदान करना जानती है वही अपने हितो की रक्षा करने मे समर्थ हो सकती है। हमे अपने अधिकारो के लिए आदोलन करने की तैयारी करनी चाहिए।

मानव जीवन की प्यास

(पृष्ठ ३ का शेष)

से पूर्व ही आकर कथा मे शामिल होते रहे। ऐसी तृप्ति और मन की शाति अनुभव करते कि क्या कहा जाये? प्रत्येक मत के सज्जन जिन का आर्यसमाज से सम्पर्क भी बहुत कम होता होगा महात्मा जी की कथा मे निरन्तर आते रहे। उनको इस से आत्मा की शाति मिलती है। इतनी सम्पत्ति से भी उनकी प्यास नही मिट सकी—किन्तु अध्यात्मवाद का सन्देश उनके जीवन के लिए अमृतरस बन गया। केवल सुनने तक ही सीमित नही—ऐसे लोग परिवार घण्टो महात्मा जी के पास बैठ कर अपनी मानसिक शाति के लिए साधन पूछते रहते। पता लगता है कि सब कुछ होते हुए भी वे प्यासे है। वैभव उन को शाति नही दे सका। इस युग मे आर्य समाज मनुष्य जीवन की इस प्यास को शात करने का प्रबन्ध करे।

—सम्पादक

संक्षिप्त समाचार

★ सघ लोक सेवा आयोग की एक विज्ञप्ति मे बताया गया है कि आस्टिेट ग्रेड की परीक्षा ३० दिसबर, १९६९ मे आरम्भ होगी। यह परीक्षा फरवरी, १९६९ मे होनी थी, कितु इसे स्थापित कर दिया गया था।

★ महाराष्ट्र की पुलिया नगर-पालिका को १९६६-६७ की अखिल भारतीया शहरी कम्पोस्ट कार्य प्रति-योगिता का प्रथम पुरस्कार दिया है। यह नगरपालिका अपने कूडे और मल को बर्बाद नही होने देती।

पंजाब सरकार की भाषा नीति पर

जालन्धर में शिक्षाविदों की विशाल सभा

प्रि० भीमसेन जी बहल ने उद्घाटन किया

पंजाब के प्राइवेट स्कूलो के प्रबन्धको, प्रिंसिपलो, हैडमास्टरो की यह महती सभा रविवार दिनाक ३ अगस्त को प्रातः १० बजे श्रीमान भीमसेन जी मेहरा एडवोकेट की अध्यक्षता मे हुई जिस से पंजाब की भाषा नीति पर लगातार २॥ घंटे तक गम्भीर विचार होता रहा।

इस सभा का उद्घाटन मान्यवर प्रि० भीमसेन जी बहल ने किया। उन्होंने संक्षिप्त रूप मे इस बैठक के सम्बन्ध में बताया कि इसका सम्बन्ध किसी भी राजनीतिक संस्था के साथ नही है। यह केवल शिक्षाशास्त्रियों की बैठक है। क्योंकि पंजाब मे भाषा समस्या को बड़ा ही घिनौना राजनीतिक रूप दे दिया है। इसी लिए शिक्षाविदो को बैठ कर सोचना आवश्यक हो गया है। पंजाब सरकार भाषा सम्बन्धी जिस प्रकार की नीति पर आज चल रही है उससे पंजाब का विद्यार्थी और उसके अभिभावक ही सम्बद्ध नही हैं अपितु अध्यापक वर्ग भी सम्बद्ध है। इस नीति से जहा विद्यार्थी कष्ट का अनुभव कर रहा है वहां शिक्षक वर्ग मे भी बडा असन्तोष है। मिडिल और हायर सेकैण्डरी की परीक्षाओं का माध्यम एकदम पजाबी कर देने से पिछले १० या कम वर्षों से पढता आ रहे विद्यार्थी को यदि आज माध्यम बदलने के लिए कहा जाता है तो इसे कोई भी बुद्धिमानी नहीं कहेगा। इससे विद्यार्थी उसके माता-पिता, और शिक्षक तीनो की ही आशाओ पर तुषारपात हो जाएगा।

प्रि० बहल के पश्चात् प्रि० रामचन्द्र जी जावेद ने प्रस्ताव प्रस्तुत किए जिनका अनुमोदन प्रि० रलाराम जी एम० ए० ने किया। इस प्रस्तावों पर अन्य सनातन धर्मी, जैनी, रविदासी आदि शिक्षण सस्थाओ के प्रबन्धको ने विचार प्रकट किए।

अन्त में प्रि० प्यारे लाल जी बेरी ने सभा प्रतिनिधि महानुभावों का धन्यवाद किया।

शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

वेदी राम शर्मा
संयोजक

घरेलू इलाज

नीबू

निम्बू जिसका कि नाम प्रत्येक ने सुना होगा तथा इस्तेमाल किया होगा दिव्य फल है आयुर्वेद के मतानुसार यह खट्टा, दीपक पाचक, कृमि नाशक उदरस्थ रोग नाशक है कोष्ट बद्वता (कब्ज) मन्दाग्नि, मुख से पानी गिरना हैजा मे लाभ करता है। गृहनियां मेरे इस लेख को पढ कर अवश्य लाभ उठायेंगी। यह निम्न रोगों में भली प्रकार इस्तेमाल किया जाता है।

१. पेट दर्द मे नीबू गर्म पानी मे निचोड़ कर रोगी को पिलाने से आराम होता है।

२. पेट मे भारीपन तथा उल्टी होने पर चूने के ऽ—पानी में ऽ—नीबू का रस तथा ऽ—शहद मिला कर शीशी मे रख लें और १-१चम्मच दवा घण्टे-घण्टे भर के अतर से ले।

चूने के पानी की निर्माण विधि

एक तोला चूना की डेली लेकर उसे ऽ१ पानी में रात्रि को भिगो दीजिये। प्रातः चूना नीचे बैठ जाएगा, ऊपर का पानी सावधानी से उतार लीजिये ताकि पानी में चूना न आने पावे बस यही चूना का पानी कहा जाता है। जो बहुत रोग नाशक होता है।

३. खाज खुजली दाद में रस नीबू मे थोडा सा कपूर मिला कर लगावें तथा प्रातः १ गिलास पानी मे निचोड कर पीवे।

★ भारत और अफरीका में बुल्डी के बीच आज से अन्तर्राष्ट्रीय टेलेक्स सेवा शुरू हो जाएगी।

★ सयुक्त राष्ट्र के अवर महा-सचिव डा० सल्फ बुंच कल २९जुलाई को दिल्ली पहुच रहे हैं।

★ काठमाडू स्थित भारतीय दूतावास मे अमात्य श्री वगलोडी देव राव को श्री आनन्द स्वरूप भवन के स्थान पर फिलीपाईन में भारत का राजदूत नियुक्त किया गया है।

ईसामसीह : एक समालोचनात्मक अध्ययन

(श्री अनूपसिंह दयानन्द भवन, मुजफ्फर नगर)

ईसा का जन्म यरूसलीम देश में 'बेथलीहेम' ग्राम में इसराइल वंश में हुआ था उनकी माता जी का नाम कुमारी मरियम और पिता जी का नाम यूसफ था। 'ईसा' के पिता जी बढ़ई का काम करते थे और यहूदी मत के मानने वाले थे।

ईसाईमतावलम्बी 'ईसा' को मानते है परन्तु यदि ठीक-ठीक पक्ष-पात रहित होकर 'बाइबल' का अध्ययन किया जाए तो 'ईसा' का खुदा होना तो दरकिनार रहा उस मे महापुरुष के लक्षण भी घटित नहीं होते। अधोलिखित 'बाइबल' के प्रकरण इस बात की पुष्टि करते हैं।

संसार में आने का उद्देश्य— कलीरुजित इञ्जील में संसार मे ईसा के आने का उद्देश्य लिखा है—'यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति देने आया हूं। मैं शान्ति नहीं तलवार देने आया हू। मैं मनुष्य को अपने पिता के विरुद्ध, पुत्री को अपनी माता के विरुद्ध, बहू को अपनी सास के विरुद्ध खडा करने आया हू।' (मत्ती अ० १० अ० ३४, ३५) वाह! क्या कहने ? 'ईसा' के ससार मे आने का उद्देश्य अशान्ति फैलाना और पारिवारिक विघटन करना है। महा-पुरुष के आने का उद्देश्य तो दूसरो के दुःखों को मिटाना होता है। किसी का वचन है—

न त्वहं कामये राज्यं
न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानां,
प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

अर्थात् मैं (महापुरुष) राज्य की कामना नही करता, स्वर्ग व मोक्ष की कामना भी मैं नही करता। मैं तो यही चाहता हूं कि दूसरों के दुःखों का नाश कर सकूं।

गुरुडम्— 'ईसा' के अन्दर अपने को 'गुरु' मानकर पूजा कर-वाने की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। भोले भाले मनुष्यों को बहकाकर कहता है—'मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि यदि तुम्हें राई के दाने के बराबर ईमान होता तो अगर तुम उस पहाड़ से कहते कि यहां से चला जा तो चला जाता और तुम्हारी कोई बात असम्भव न होती।

(मत्ती अ. १७ आ. २०)

'क्या तू विश्वास नही करता कि मैं बाप मे और बाप मुझ मे।' (युहन्ना अ १४ अ. ११) देखिए ! ईसा अपना सम्मान कराने के लिए कितना लालायित है—'ईसा ने कहा कि जिस प्रकार बाप मुर्दों को उठाता है और जीवित करता है उसी प्रकार बेटा (ईसा) जिन्हे चाहता है जीवित करता है। क्योंकि बाप किसी का न्याय भी नही करता, वरन् उसने न्याय का सारा काम बेटे को सौंप दिया है कि ताकि सब लोग बेटे का आदर करे। जिस प्रकार बाप का सम्मान करते हैं उसी प्रकार जो बेटे का सम्मान नही करता वह बाप का, जिसने उसे भेजा है, सम्मान नहीं करता।'

(युहन्ना अ. ५ आ. २१-२२-२३)

अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना— 'ईसा' अपने मुंह मिट्ठू बनने से भी नहीं चूकते। 'ईसा ने कहा कि संसार का प्रकाश मैं हूं। जो मेरे पीछे चलेगा वह अन्धेरे मे नहीं चलेगा वरन् जीवन का प्रकाश पायेगा।' (युहन्ना अ. ८ आ. १२)

'पृथ्वी और आकाश टल सकते हैं परन्तु मेरे कहे हुए वचन नहीं टल सकते। (मरकुस अ १३ आ. ३१)

'मुझको पाप क्षमा करने का अधिकार है।' (मत्ती अ. ९ आ ६)

भीरुता का उपदेश— 'ईसा' अपने शिष्यों को विरोधियों से डर कर भाग जाने का उपदेश देता है।' 'जब वे तुम्हें एक नगर मे सताएं तो दूसरे नगर में भाग जाना।'

(मत्ती अ० १० आ. २३)

(क्रमशः)

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल

(पृष्ट २ का शेष)

विश्व का पथ प्रदर्शक तथा अपनी व विश्व की माता समझते थे) आप ने अनेकों मुस्लमानों को शुद्ध किया और उन्हे आर्यसमाज व वैदिक धर्म में दिक्षित किया। और उन्हे क्रांतिकारी शिक्षा प्रदान करते थे। आप की ही प्रेरणा से श्री रोशनसिंह, श्री राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी आदि क्रांतिकारी आर्यवीरों ने क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिया। अब हम इस लेख को अधिक विस्तार से न लिखते हुए अन्त में यही कहना चाहते हैं कि पं० रामप्रसाद जी बिस्मिल उन कट्टर विशुद्ध आर्यवीर क्रांतिकारियो मे से हैं। जिन्होंने इस देश को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने मे अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

इस लिए हम सब आर्य वीरो का तथा आर्यसमाज आर्यवीर दल व आर्यकुमार सभा, आर्य युवक परिषद, तथा अन्य आर्य नवयुवक संगठनो के सदस्यो व सैनिको को अमर क्रान्तिकारी, महर्षि दयानन्द के सुयोग्य शिष्य आर्यवीर प० रामप्रसाद जी के जीवन-चरित्र व उनके किये हुए कार्य से प्रेरणा प्राप्त कर हम सब अपने जीवन को कान्तिमय बनायेगे। अभी हम देश, जाति तथा संस्कृति की रक्षा कर सकेंगे। आज देश को क्रान्तिमय आर्यवीर क्रान्तिकारियो की महती आवश्यकता है। आर्य समाज विघटित होता जा रहा है। इस समय इसकी रक्षा करना ही सब आर्य युवकों का पुनीत कर्त्तव्य है। आर्य समाज को इस नकली-फसली आर्य नेताओं से जो कांग्रेस, जनसंघ, हिन्दु महासभा, भारतीय क्रान्तिदल आदि अराष्ट्रीय राजनीतिक दलों मे अपने स्वार्थसिद्धि मे समय नष्ट कर आर्यसमाज को विघटित करने मे लगे हुए हैं। ऐसे नेताओ से आज क्रान्तिकारी आर्यवीर नवयुवको को निपटना होगा। उपरोक्त नेताओ से आर्य समाज को बचाना देश को बचाना होगा। अलमिति विस्तरेण।

नव आर्य समाज की स्थापना

आज ३० जौलाई सन् १९६९को श्री अतरचन्द जी बोहरा के मकान पर नगर के गण्य-मान्य व्यक्तियो की एक विशेष बैठक हुई। जिस मे नगर की विशेष आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए विशाल जनसमूह की माग के अनुसार 'डी ए वी आर्यसमाज यमुनानगर (जि० अम्बाला) नाम से न्यूतन आर्यसमाज की स्थापना हुई। इस आर्यसमाज की यह विशेषता रहेगी कि सभी इच्छुक वेदानुयायी नर-नारी सम्मिलित रूप से समाज के सदस्य होगे। समाज के संस्थापक श्री जगन्नाथ कपूर प्रधान L A C डी ए वी यमुनानगर सयोजक बने हैं। सर्वसम्मति से प्रथम पदाधिकारी इस प्रकार नियुक्त हुए हैं।

श्री मदन लाल जी वासुदेवा प्रधान श्री अतर चन्द जी बोहरा, तथा श्री रमेशपाल जी 'वर्तमान के अध्यक्ष' उप-प्रधान, श्री ऐच०सी० भगत प्रिसिपल मन्त्री, श्री डा० दुर्गा प्रसाद जी उप-मन्त्री, श्री भूदेव शास्त्री प्रचार-मन्त्री, श्री प० सुखदेव जी शर्मा पुस्तकाध्यक्ष, श्री मदनलाल जी तनेजा कोषाध्यक्ष। शेष अन्तरग-सदस्य प्रधान जी स्वय नियुक्त करेगे। इस समाज की स्थापना से सारे यमुनानगर मे हर्ष की लहर दौड गई। तीन हजार रुपए का प्रथम संकल्प भी बात की बात मे पूरा हो गया।

सब लोगो ने खुल कर दान दिया। इस समाज के साप्ताहिक अधिवेशन डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल यमुनानगर के विशाल हाल मे हुआ करेगे। अधिवेशन की कार्यवाही श्री अतर चन्द बोहरा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई उन्होंने सब का स्वागत बडी उदारता से किया। स्थापना के बाद ३१ जौलाई के प्रात प्रधान श्री मदनलाल जी वासुदेवा के घर वृहद् यज्ञ हुआ।

ऐच सी भगत
मन्त्री
डी ए वी आर्यसमाज
यमुनानगर

आर्य जगत् का वेदांक नम्बर

आर्य जनता को तथा आर्यजगत के महानुभावो को पढकर अति प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत साप्ताहिक का १७ व २४ का सम्मिलित अक वेदाक नम्बर के रूप मे निकल रहा है। इस विशेषाक के लिए अपने लेख, कविता आदि शीघ्र कार्यालय मे भेजकर अक की शोभा बढाने मे सहायता दे।

आर्य समाजों से

सब आर्य समाजो की सेवा मे प्रार्थना है कि इस अक के लिए अपने आर्डर २० अगस्त तक भेजने की कृपा करे ताकि उचित व्यवस्था की जा सके।

इससे पूर्व १७-८-६९ का अक बन्द रहेगा। ग्राहक महानुभाव नोट कर लेवे।

विशेषाक का मूल्य ४० पैसे होगा।

—व्यवस्थापक

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएं

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी सत्यार्थ रत्न, भूषण, विशारद तथा शास्त्री की परीक्षाएं सारे देश में ७ सितम्बर १९६९ को सम्पन्न होंगी।

परीक्षा शुल्क नाम मात्र प्रमाण पत्र बड़े आकर्षक तथा प्रत्येक परीक्षा केन्द्रों में अनेक भारी भारी पारितोषिक।

परीक्षा सम्बन्धी सभी प्रकार की जानकारी के लिए श्री चमनलाल एम. ए. परीक्षा मन्त्री, आर्य समाज दरिया गंज २ अन्सारी रोड, दिल्ली—६ के पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

देवव्रत धर्मेन्दु	ओ३म् प्रकाश
आर्योपदेशक	एम. एस. सी.
प्रधान	मन्त्री

आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०)

'नए आर्यसमाज की स्थाप[illegible]

गोविन्द नगर की बढी हुई जनसख्या एव इस क्षेत्र मे [illegible] प्रचार की न्यूनता को अनुभव करते हुए, विगत २० माह से महर्षि के उद्देश्यो पर चल रहे 'वेद प्रचार मडल' गोविन्द नगर कानपुर-६ को 'आर्यसमाज' का नाम देकर एक नए आर्यसमाज की स्थापना [illegible] ब्लाक गोविन्दनगर मे २२-७-६९ को कर दी गई है, जिसका नव निर्वाचन इसी दिनाक मे निम्न [illegible] सर्वसम्मति से बडे ही शाति एव हर्षोल्लास पूर्ण-वा[illegible]ण मे सम्पादित हुआ । इस नए आर्यसमाज को अतिशीघ्र ही आर्य [illegible]त केन्द्रीय सभा से सबंधित किया जाएगा ।

[illegible]	[illegible]ल जी आनन्द	प्रधान
२	[illegible] चन्द्र जी कुमार	उपप्रधान
३.	,, ओम प्रकाश जी आर्य	मंत्री
४	,, प्रेम जी कपूर	सहायक मत्री
५.	,, [illegible] दास	कोषाध्यक्ष
६.	,, जगदीश जी खन्ना	लेखानिरीक्षक
७	,, जाति भूषण जी	अतरग सदस्य
८.	,, चुन्नीलाल जी	सरक्षक
९	,, दीनदयाल जी मिश्रा	अतरग सदस्य
१०.	,, वेद प्रकाश जी शर्मा	,, ,,
११	,, छैल बिहारी जी निगम	,, ,,

ओम प्रकाश आर्य, मत्री

[illegible] गोरेगांव

[illegible]गाव, बम्बई का [illegible]षिक अधिवेशन दिनाक २७-७-६९ को सम्पन्न हुआ । इसमे कई मामलों भवन निर्माण आदि पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए । विभिन्न पदो के लिए पदाधिकारियों का निर्वाचन निम्नानुसार हुआ :—

प्रधान—श्री दीवानचन्द साहनी

उप-प्रधान—,, रघुनाथ वर्मा

मन्त्री —,, ओमप्रकाश वर्मा

उप-मन्त्री—,, सतवीर गुलाटी

[illegible]—,, [illegible] साहनी

लेखापरीक्षक—,, नरसिंहदेव मखीजा

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती सुशीलादेवी साहनी ।

—ओ३म् वर्मा, मन्त्री

अजमेर में ऋषि मेला

स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस पर आगामी १०नवम्बर से १६ नवम्बर तक ऋषि उद्यान अजमेर मे ऋषि मेला आयोजित किया गया है, जिसमे आर्य जगत के नेता उपदेशक व भजनीक भाग लेंगे । दिल्ली से आर्य नर नारियों की एक स्पेशल ट्रेन भी आवेगी ।

परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्री करण जी शारदा ने सूचित किया है कि इस मेले मे आने वाले व्यक्तियों के भोजन व निवास की व्यवस्था निशुल्क की जावेगी ।

सभा मन्त्री

★ युगोस्लाविया केलिए मनोनीत भारत के राजदूत श्री रिखी जयपाल को यूनान मे भी भारत का राजदूत नियुक्त किया गया है। उनका निवास स्थान बेलग्रेड मे रहेगा ।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे   वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ३५)   १६ भाद्रपद २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—३१ अगस्त १९६९   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

इन्द्रश्च मृडयाति नः

अर्थ :—वह इन्द्र :—इन्द्रदेव भगवान मृडयाति-कृपा करे, सुखी करे न :-हम सभी को। उसी की कृपा से हमें सुख मिलता है। वही सदा हम पर कृपा करते रहें।

भाव :—प्रभु की कृपा का प्रसाद सबसे मीठा है। सबसे कीमती है। इसलिए प्रभु के प्यारे सदा कहा करते है कि ब्रह्म कृपैव केवलम्-सदा ब्रह्म की कृपा हमें मिलती रहे। वह परमेश्वर सदा सुखमय है, आनन्द का धाम है-आनंदमयो हि स:-ऐसा ऋषियोंने कहा है। उसी की कृपा से हमें भी जीवन में सुख, आनन्द मिल सकेगा। उसी से सुख की सदा प्रार्थना करनी चाहिए। प्रभुदेव! हमें भी सुखी करो। आनंद का प्रसाद प्रदान करते रहो। —सं

ऋग्वेद २-४१-११

वेदामृत

राक्षसों को मार भगाओ

ओ३म् सुवीरं रयिमाभर जातवेदो,
विचर्षणे। जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥

ऋग्वेद मण्डल ६-१६-२६

(सुवीरं) उत्तम वीरों से भरे हुए (रयिम) धन रयि को (आभर) सभी ओर से हमें भरपूर कर दो (जातवेद:) हे जातवेदस् प्रभुदेव! सर्वज्ञ सर्वव्यापक! (विचर्षणे) सब कुछ देखने और जानने वाले प्रभो! (जहि) मार दो (रक्षांसि) राक्षसों को (सुक्रतो) शुभ कर्मो के प्रेरक परमेश्वर सारे राक्षसों को आसुरी भावों को मार दो।

इस का भाव यह है

प्रभुदेव! हम तो आपके ही है। जो कुछ लेते है आप से ही लेते हैं। पिता जी! ऐसी कृपा करें कि हमें आपकी कृपा से किसी प्रकार की भी कमी न होने पाये। सब ओर से हमारी जीवन झोली भर दो जीवन यात्रा में जिस २ वस्तु की आवश्यकता पड़े भर दीजिए। वह धन रयि हो शुद्ध पवित्र हो। हमारी कमाई पवित्र हो। जितने भी हानिकारक विश्व के राक्षस हैं, आसुरी विचार हैं, मानवता के शत्रु बनते हैं। उन सभी को समाप्त कर दो ताकि विश्व सुखी हो। —सं.

ऋषि दर्शन

तत्तु विषयत्यागात् संग त्यागाच्च

अर्थ :—तत्-वह प्रभु भक्ति का साधन तु-तो विषय त्यागात्-संसार के विषय भोगों का त्याग कर देने से तथा संग त्यागात् च-उन सभी विषय वासनाओं का संग आसक्ति भी त्याग कर देने से प्रभु की सिद्धि होती है।

भाव :—भक्ति के दो विशेष और प्रमुख साधन माने गये है। मुनिवर नारद जी कहतेहैं कि जो भगवान का भक्त बनना चाहता है उसे चाहिए कि वह विषय भोगों को छोड़ देवें। विषयों में कभी न फंसे। उनमें भूलकर भी आसक्ति न रखे। विषय भोगों में फंसा हुआ भोगी कभी योगी नहीं बन सकता। दोनों एक साथ नहीं चल सकते। विषय वासनाएं संसार चक्र में फंसाये रखती है। इनसे बचने वाला ही भक्तिमार्गी हो सकता है। विषयमार्गी भक्तिमार्गी नहीं होता—सं.

नारद का भक्तिसूत्र ३५

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी०(सभा मन्त्री)   सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

यज्ञ का अधिकारी कौन ?

(श्री आशु राम पुरोहित चण्डीगढ़, मूल लेखक—श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी वेद सदन, महारानी पथ इन्दौर—२)

(गतांक से आगे)

यज्ञ कराने का अधिकार गृहस्थ को ही है

यज्ञ जिससे करवाया जाता है या जो यज्ञ करता है वह यजमान संज्ञक है और जो यज्ञ कराते हैं वे ऋत्विज संज्ञक हैं। इन्हीं को पुरोहित, होत्र, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा, आचार्य आदि संज्ञायें कार्य विशेष से होती हैं। ये भी सपत्नीक, गृहस्थ होने चाहिए, जैसा कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के निम्न वाक्यो से स्पष्ट है :— (१) उत्तम गृहस्थ, धार्मिक विद्वानो का वरण कर-संस्कार विधि, (२) वेदप्रिय, पूज्यनीय, सर्वोपरि गृहस्थ की पुरोहित संज्ञा है—(त्) (३) वेदवित, धार्मिक होता आदि सपत्नीक ब्राह्मण——(त्)

अत: यज्ञ कराने वाले ऋत्विजो की पात्रता सपत्नीक गृहस्थ विद्वानो को है अपत्नीक को नही तथा गृहस्थ के अतिरिक्त ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ एव सन्यासियो को भी नही है। वेद मे इसकी पुष्टि का निम्न प्रमाण उपलब्ध होता है :—

'ये देवाना ऋत्विजो ये च यज्ञिया
येभ्यो हव्य क्रियते भागधेयम्।
इम यज्ञ सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो
देवास्तविषा मादयन्ताम्।
(अथर्व० काड १९। सूक्त ५८ म. ६)

इस मन्त्र मे विद्वानो के ऋत्विजो को जोकि यज्ञो को अच्छे प्रकार से कराने मे कुशल है उनको यज्ञ मे पत्नी सहित जाने के लिए विधान किया है। अर्थात् यज्ञ कराने वाले ऋत्विज भी पत्नी वाले गृहस्थ ही होने चाहिए। अपत्नीक ऋत्विज कर्म कराने के लिये ग्राह्य नहीं है इसकी पुष्टि इस पूर्वोक्त मन्त्र से होती है।

ऋत्विजों की अन्य योग्यता

सपत्नीक एव गृहस्थ होने के अतिरिक्त ऋत्विजो की अन्य क्या योग्यता होनी चाहिए इस बारे मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा है—

(१) अच्छे विद्वान, धार्मिक, जितेन्द्रिय, कर्म करने मे कुशल निर्लोभ, परोपकारी, दुर्व्यसनो से रहित, कुलीन सुशील वैदिक मत वाले..।
(२) धर्मात्मा, शास्त्रवित विधि को पूर्ण रीति से जानने द्वारा विद्वान सधर्मी, कुलीन, निर्व्यसनी, सुशील, वेदप्रिय, पूजनीय, सर्वोपकारी गृहस्थ की पुरोहित संज्ञा है।

(३) ऋत्विज, होता, अध्वर्यु और ब्रह्मा का वरण करे जो कि धर्मात्मा विद्वान हो।

(४) सुपात्र, वेदवित, धार्मिक, होता आदि सपत्नीक ब्राह्मण...।

(५) उत्तम, गृहस्थ, धार्मिक विद्वानों का वरण...।

(६) पुरोहितादि सधर्मी...।

ऋत्विजो के सम्बन्ध में उपरोक्त वाक्य संस्कार विधि मे महर्षि ने लिखे हैं। अत: उपरोक्त लक्षणो से युक्त गृहस्थ को यज्ञ कराने का अधिकार नही है। क्योकि ऐसे अनाधिकारी से यज्ञ कराने से वेद विद्या का नाश तो होगा ही साथ ही यज्ञ का भी नाश होगा।

अविद्वान ऋत्विजों से यज्ञ का नाश

अविद्वान ऋत्विजो से यज्ञ कराने से वेद विद्या का नाश तो होगा ही साथ ही यह का नाश होगा इसकी पुष्टि निम्न वाक्य से होती है

'यद यज्ञे अकुशला ऋत्विजो भवन्ति यज्ञस्य विरिष्टिमित्या यज्ञते।'
(गोपथ ब्राह्मण)

अर्थात जब यज्ञ कर्म के न जानने वाले, अयोग्य कुशल व्यक्ति ऋत्विज बनकर कर्म कराते हैं तो उसे यज्ञ का नाश ही कहा जाता है। इस लिए विद्वान वेदज्ञ धार्मिक व्यक्तियो से ही कराना चाहिए।

क्योकि... .विप्रो यज्ञस्य साधन: (सामवेद) यज्ञ को सम्पन्न कराने के लिए विप्र ही प्रमुख रूप से साधन है। बिना इस विप्र रूप से यज्ञ हो ही नही सकता। विद्वान वेदवित, धार्मिक, कुलीन, ब्रह्मवेत्ता सधर्मी ब्राह्मण को ही विप्र कहा जाता है। परन्तु सन्यासी यज्ञ कराने का अधिकारी नही है।

उपरोक्त विप्र लक्षणो से युक्त यदि सन्यासी है तो उस को यज्ञ मे ऋत्विज बनने का अधिकार नही है। जब उसे ऋत्विज बनने का ही अधिकार नही तो उस का वरण भी होता, अध्वर्यु, उदगाता, ब्रम्हा आदि के रूप मे भी नही हो सकता है। इस का कारण यही है कि यज्ञ करने एवं कराने के अधिकारी के लिए यज्ञोपवीत धारण करना आवश्यक बताया गया है। जैसा कि :—

ते सर्वे एव यज्ञोपवीतिनो
भूत्वा इत्याद्य यज्ञमानश्च
ब्रह्मा च पश्चात् परीत:
पुरस्तादयन्ति।
(शतपथ ब्राह्मण २।५।२।१८)

अर्थात ये ब्रह्मा, होता, अध्वर्यु, उदगाता, यज्ञमान आदि यज्ञोपवीति हो कर यजमान और ब्रह्म इस प्रकार पश्चिम दिशा को चलते हैं और आग्नधि पूर्व दिशा की ओर चलता है। यहा सब को यज्ञोपवीति हो कर अर्थात बाए कधे पर यज्ञोपवीत धारण कर के क्रिया सम्पन्न करने का उल्लेख है। यदि सन्यासी यज्ञ मे होता, ब्रह्मा आदि कुछ भी बनेगा तो उसे यज्ञोपवीत धारण करना ही होगा —अन्यथा यज्ञ विधि हीन तथा निष्फल हो जायगा। यदि सन्यासी यज्ञोपवीत धारण करेगा तो उस के यज्ञोपवति त्याग की आश्रम मर्यादा का भग और प्रतिज्ञा की हानि होगी तथा यह सस का असत्य व्यवहार ही माना जाएगा। अत. सन्यासियो को यज्ञ वेदी पर बैठाना अयुक्त ही है। इसी प्रकार लाट्यायन र्त्रौत सूत्र मे लिखा है :—

'सर्वेषा मज्ञोपवीतोदकाचमने नित्ये कर्मोपयताम्। (१।२।१४)

'सर्वेषां उदगातृ प्रमृतीनां चतुर्णामपि आर्त्विज्ञि उपक्रम वेलाया यज्ञोपवीत मुदकाचमन च नित्य कर्मोपयता कर्म कुर्वताम्।

अर्थात यज्ञो मे जो होता है, अध्वर्यु, उदगाता, ब्रह्मादि रूप से वरण किए गए ऋत्विज हैं उन को कार्य के प्रारंभ मे यज्ञोपवीत धारण जल का आलमत आदि कार्य करने चाहिए। इसी प्रकार...

यज्ञोपवीति एवं...याजयेत(एतरेय ब्राह्मण) यह वचन भी यज्ञोपवीतधारी को ही यज्ञ कराने का अधिकार प्रदान करता है।

सन्यन्स ग्रहण करने पर तो यज्ञोपवीत का त्याग किया जाता है क्योंकि यज्ञपवीत का सम्बन्ध बाह्य कर्मकांड की अग्नियों से है। इन्हीं बाह्य यज्ञाग्नियो को सन्यासी त्यागता है और बाह्य कर्मकांड को भी त्यागता है। अत: इन बाह्य यज्ञों का अधिकार प्रदान करने वाले यज्ञोपवीत का भी उसे त्याग करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में यदि वह उन्हीं व्यक्त यज्ञों को करता है तो उसका त्याग ही क्या हुआ और फिर उसका सन्यास भी क्या हुआ? उसकी आश्रम मर्यादा भंग हो जाती है तथा उसका सन्यास-वेश स्वांग मात्र रह जाता है। यदि उसे यज्ञ कराना ही अभिष्ट है तो वह सन्यास को छोड़कर यज्ञोपवीत एवं शिखा को धारण करके सपत्नीक गृहस्थ बनकर अधिकारी बन जावे और यज्ञ मे ब्रह्मादि बनने की अपनी लालसा की तृप्ति कर लेवें। सन्यासी को तो लोकेषणा एवं वित्तेषणादि के वशीभूत होकर यज्ञादि कर्मों को कराना एवं ब्रह्मादि बनना नितांत आयुक्त है क्योकि वह तो इन एषणाओं का भी त्याग करके सन्यासी बनता है।

ब्रह्मा को यज्ञ मे आहुतियां भी प्रदान करनी होती हैं। यह कार्य भी सन्यासी की मर्यादा के विपरीत है। यदि आहुति नहीं प्रदान करेगा तो यज्ञ की विधिहीनता और अपूर्णता रहेगी। इस प्रकार दोनो ही स्थितियाँ उसके लिए प्रतिकूल हैं। गोपथ ब्राह्मण मे ब्रह्मा को घृत की आहुति देने के सम्बन्ध मे विधान आता है तथा अन्यत्र भी पूर्णाहुति से पूर्व ब्रह्मा को प्रायश्चित आहुति देने का भी विधान आता है। ऐसी स्थिति में लोकेषणा एव वित्तेषणाओ के वशीभूत होकर सन्यासियो का यज्ञ मे ब्रह्मादि के रूप मे वश सर्वथा अयुक्त ही है।

इसके अतिरिक्त संन्यास लेते समय शिखा रहित व्यक्ति द्वारा किया गया यज्ञ कर्म निष्फल होता है। जैसा कि—विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्। यह कात्यायन स्मृति का वचन निष्फलता की घोषणा कर रहा है।

काठक गृह्य सूत्र में लिखा है—पठन्ति नि:शिखत्व तु अमगल धर्मो अरिष्ट हेतु:। तथा च पठन्ति अभेष्यमेतत् शिरो अशिखम्' यत्रबाणा: सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव, इति निन्दावाद:।

अर्थात बिना शिखा का यज्ञ में होना अमंगल का तथा अनिष्ट का हेतु है। शास्त्रों में बिना शिखा के सिर अपवित्र, अयज्ञिय कहा है। क्योंकि यजुर्वेद में यत्रबाणा: सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव—यह लिखा

(शेष पृष्ट ८ पर)

सम्पादकीय —

आर्यजगत्

वर्ष ३१] रविवार २०२६, ३१ अगस्त १९६९ [अंक ३५

वेद मन्त्र बन्द कर दिये

आकाशवाणी जालन्धर केन्द्र से प्रातःकाल दैनिक रूप से 'आराधना' के नाम से भक्तिवाद के गीतों का कार्यक्रम प्रसारित होता रहता है जिस में सब से पहिले वेद मन्त्र कभी होते थे और कभी संस्कृत के भक्तिपरक श्लोकों का उच्चारण किया जाता था उसके मीरा, सन्त कबीर, सूरदास तुलसीदास आदि भक्त कवियों के भक्तिरस से भरे संगीत चलते हैं साथ साथ गुरुवाणी के शब्द भी गाये जाते हैं। प्रत्येक विचार वाले इन से लाभ उठाते ही रहते हैं। किन्तु यह भारी दुःख का विषय है कि कुछ दिनों से इस प्रोग्राम मे आरम्भ में बोले जाने वाले वेद मन्त्रों एवं भक्तिरस भरे संस्कृत के श्लोकों को सर्वथा निकाल कर बाहर कर दिया गया है। इन में गीता के श्लोक भी कभी-कभी हो जाते थे। आकाशवाणी जालन्धर केन्द्र से वेद के पवित्र मन्त्रों का तथा गीता आदि पुस्तकों के समय-समय पर उच्चारण किये जाने वाले श्लोकों का सर्वथा बन्द कर देना कितना अन्याय है। अब तो यहां तक एक वर्ग की ओर से दबाव डाल कर मांग की जा रही है कि आराधना के इस कार्यक्रम से सन्त, कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीरा के भक्ति रस के गीतों को भी बन्द कर दिया जावे। कौन कह सकता है कि जैसे वेद मन्त्रों को बन्द कर दिया है, स्तुति के जीवन बनाने वाले श्लोकों का बोलना समाप्त कर दिया गया है। इस पर किसी ने चूं तक भी नहीं की। किसी ने यह भी नहीं कहा कि ऐसा क्यों किया गया है। वेद-मन्त्र जैसे पवित्र मन्त्रों का उच्चारण समाप्त कर दिया जावे और किसी ओर भी कोई जोरदार आवाज इसके बारे में न उठे। श्लोक निकाल दिये जायें। किसी के कान पर जूं तक भी न रींगे। अब इन भक्तिवाद के सन्तों की वाणी को कार्यक्रम से निकाल देने का जोरदार दबाव डाला जा रहा है। कौन कह सकता है कि किस दिन यह सब कुछ भी समाप्त कर दिया जाये। हमारी निर्बलता, कायरता और इसे भारी उदासीनता पर जितना मातम किया जाए थोड़ा है। हम इतने निर्जीव हो चुके हैं कि वेद के मन्त्रों को तथा धार्मिक पुस्तकों के भक्तिभाव भरे युग पुरुषों के जीवन सन्देश देने वाले श्लोकों को निकाल दिया गया है—हम मे स्वत्व का अभिमान तक नही पैदा हुआ। हमारे दिल पर चोट तक भी नही लगी कि यह हो क्या गया है?

आकाशवाणी जालन्धर का केन्द्र किसी विदेश का केन्द्र नहीं है वरन् अपने भारत के ही एक प्रान्त पजाब का केन्द्र है। इस के निवासी भी तथा श्रोता भी अभारतीय नही हैं। न इसके प्रबन्धक विदेशी हैं। सभी कुछ अपना ही है। ऐसी बात भी नहीं कि इस प्रान्त में वेद प्रेमियों गीतानिष्ठा वाले परिवारों की कमी है या उनके परिवारों में रेडियो नही है। अथवा उनको इस बात का पता नहीं है कि इस आराधना को कार्यक्रम से वेदमन्त्रों व उपनिषद गीता आदि के श्लोकों के प्रोग्राम को निकाल बाहर कर दिया गया है। या उनको वेद के प्रति श्रद्धा नहीं है, गीता से प्रेम नहीं है। सभी कुछ है फिर ऐसी उदासीनता का कारण क्या है? एक ही बात कही जा सकती है वह है अपने स्वत्व से सर्वथा उपेक्षा वृत्ति। हमारे जीवन में विचारों की इतनी कमी आ गई है कि हम सभी कुछ आंखों के सामने होता देखते हैं, कानों से हर बात सुनते हैं, फिर भी कायरता ने हम को इतना दबा रखा है कि ऐसे अन्याय का भी प्रतिकार नहीं कर सकते। फिर बनेगा क्या? यह सब सामने नजर आता है।

क्या किसी संस्था ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई है? प्रोटेस्ट किया है। आकाशवाणी के अधिकारियों को जोरदार शब्दों में लिखने का कष्ट किया है? कोई शिष्टमण्डल बना कर उनके पास गए हैं। वेद भक्तों व गीता प्रेमियोंने अपने-अपने धर्म मन्दिरों में सभाएं करके प्रतिकार के प्रस्ताव पारित किये हैं? समाचार पत्रों में प्रभावशाली लेख लिखे हैं? आर्य समाजों की भी बडी शक्ति है तथा दूसरे वर्ग भी हैं इतना बड़ा प्रेस तथा प्लेटफार्म भी है—किन्तु इस ओर ध्यान ही किसी का है? अपने २ पथ पर जनता भागती है किन्तु अपने ही प्रान्त मे अपने ही आकाशवाणी के केन्द्र से वेद मन्त्रो को आराधना से सर्वथा निकाल दिया गया। उपनिषत्, गीता को बाहर कर दिया। अब कबीर. सूर, मीरा, तुलसी के रसीले गीतो का भी विरोध, होने लगा है। इस पर भी इन प्रेमी मौन रहें जैसे कुछ हुआ ही नही—तो ऐसे जनसमाज को क्या जीवन वाला कहा जा सकेगा। यह तो वही बात है—यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः। है तो हाथी पर लकडी का, और तो हैं पर मिट्टीपत्थर का यही बात हमारी है।

आकाशवाणी सब के लिए है। इस में यदि वेदमत्रो को, गीता के श्लोकों को, उपनिषद् के सन्देशो को निकाला जा सकता है तो आगे क्या होगा? हम प्रान्त के सारे भक्ति प्रेमियों से प्रार्थना करेंगे कि अपनी संगठित आवाज उठा कर आराधना के कार्यक्रम में जब तक फिर वेदमन्त्रो को उचित स्थान नही दिलवा लेते तब तक चुप न बैठेंगे—त्रिलोक चन्द्र

बहुत ही लज्जाजनक

फिल्मो के सैंसर के बारे मे विचार करने के जो खोसला समिति बनाई गई थी। उसने अपनी रिपोर्ट में फिल्मों में खुलम-खुल्ला चुम्बन तथा नग्नता प्रदर्शन की स्वीकृति दे दी है। कहा है कि जहां इनकी आवश्यकता प्रतीत होती हो तो एक दूसरे का खुला चुम्बन करने मे तथा नंगेपन का प्रदर्शन करने मे कोई रुकावट नहीं। सिनेमा के पर्दे पर जनता को ये दोनों ही दिखाये जा सकते हैं। बडा भारी खेद है कि खोसला समिति ने जीवन को अनाचार के मार्ग पर और आगे बढा दिया है। थोड़ी बहुत बची-खुची सीमा मर्यादा और विचारों के शर्म के पर्दे के तारो को भी तार-तार कर के रख दिया है। वासना और भोग प्रधान आज के वातावरण मे जीवन को और भी आवारा बनाने की ओर एक भयकर पग उठा कर खुली छूट दे दी है। सत्य तो यह है कि हमारे ऐसे-ऐसे लोग पश्चिम की जीवन धारा मे बह गए हैं। उनकी आखो पर पश्चिम का चश्मा लगा है, मन पर पश्चिम का रग है, वाणी पर पश्चिम की भाषा है। सभी कुछ पश्चिमीकरण उनका हो गया है। उसीमें सास लेते हैं। मकानो मे पश्चिम की सभ्यता है। उनका वश नही चलता नहीं तो वे उडकर पश्चिम मे जाकर बसते भारत की प्राचीन संस्कृति से तो इनको तनिक भी लगाव नही है। बाईस वर्षो की आजादी के बाद भी आज नई देहली के बाजारो की दुकानो पर लगे हुए नामपट्टो को अगरेजी में लिखा हुआ देखकर मन की दासता पर आसू बहाने का दिल करता है। प्रतिवर्ष २६ जनवरी व १५ अगस्त को लाल किले के सामने आजादी के गणदिवस मनाया जाता है। बडा-बडा समारोह होता है। लम्बे-चौडे प्रवचन होते हैं—किंतु क्रियात्मिक रूप मे क्या हम भाषा मे, भावना में भूषा मे भी आजाद हो पाए हैं? दिल को टटोले कौन?

बडे-बडे लोग समझते हैं कि भारत के पास अपना तो कुछ अच्छा है नही—सब कुछ पश्चिम मे ही है। इस हीन भावना ने भारत के जीवन को भोग प्रधान बनाकर राष्ट्र की बडी हानि की है। न शिक्षा मे परिवर्तन, न विचारो मे तबदीला। महात्मा गाधी जी तो अब वर्ष के बाद केवल नाम लेने के लिए रह गए हैं। या कभी-कभी उनकी प्रस्तर से बनी मूर्तियो पर पुष्प चढाने का कार्य रह गया है। गाधी जी राजघाट वाली समाधि की उनके जन्मदिवस पर परिक्रमा करके बापू जी की जयकार करने का कार्य बाकी बचा है।

उनकी सादगी को, ईश्वर प्रेम को, जीवन की सरलता एव भारतीय भावना को कौन मानता है। आज तो शराब व मास के दौर चलते है। अधिकार व सत्ता लिप्सा का सग्राम जारी है। राष्ट्रपति के चुनाव की टक्कर ने तो गाधी, पटेल, नेहरू, सुभाष, राजन की सस्था को जडो से हिला कर रख दिया है। सब दिखावा ही रह गया है। यह सब पाश्चमी विचारधारा का प्रभाव है। भोगो की भक्ति है। सिनेमा मे चुम्बन और नंगेपन की खुली छूट दे देना भारतीय

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वेद: पाश्चात्य और तदनुयायी भारतीय विद्वान

(श्री वेद प्रकाशजी विद्यावाचस्पति, सिद्धांतालंकार अ.ब. हिसार)

(गताक से आगे)

जिसका नमूना मात्र ही देना पर्याप्त होगा 'गणना' त्वा गणपति हवामहे का भाष्य करते हुए महीघर लिखते हैं—

'अस्मिन् मन्त्रे गणपति शब्दाश्वो वाजी ग्रहीतव्य इति। तद् यथा महिषी यजमानस्य पत्नी, यज्ञशालायां पश्यता सर्वेषामृत्विजामश्व समीपे शेते शयाना सत्याह हे अश्व गर्भधं गर्भं दधाति गर्भध गर्भं धारक रेत:, अहं आ अजानि आकृष्य क्षिपामि त्व च गर्भध रेत: आ अजासि आकृष्य क्षिपसि।'

अर्थात यजमान पत्नी सबके सामने घोडे के पास सोवे और घोडे से गर्भ धारण करने के लिए कहे। महीधर और उव्वट इन दोनो भाष्य-कारो ने इस स्थल के कई मन्त्रो के अर्थ अत्यन्त ही अश्लील किया है। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' तथा यजुर्वेद भाष्य के अन्तर्गत कितने सुन्दर एव वैज्ञानिक ढग से किया है, यह देखते ही बनता है।

सायण ने ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १४-३० तक के भाष्य में शुन शेप की कथा का वर्णन करके मनुष्य बलि का बहुत ही भयकर चित्र प्रस्तुत किया है। इसी को देखते हुए मि. मूर कहते हैं—

So revolting indeed, is the descriptios given of Agigartas behaviour in the Barahman that we should rather recognize in him specimen of the un-Aryen population of India (ibid)

अर्थात—ब्राह्मण ग्रन्थो के अदर अजीगर्त का वर्णन इतना भयकर है, जो भारत के अनार्यों का एक नमूना कहने योग्य है।

स्वार्थ सिद्ध करने वाले लोग सही अर्थ न करके अपने मतलब को ही सिद्ध करने वाले होते हैं और उन्हे सिद्धान्त आदि का कुछ भी ध्यान नही रहता। ऐसे लोगो के ही वेद भाष्य को देख कर लोग नास्तिक हो गए, वेदो पर से श्रद्धा उठ गयी। काशी की पण्डित सभा के प्रधान नही प. गोपाल दत्त शास्त्री वेदवाणी' बनारस के द्वितीय वेदाक नवम्बर १९४३ के अक मे 'वेद का अर्थ यज्ञ परक ही नही है' शीर्षक मे लिखते हैं—

'आज इन केवल' यज्ञ मात्र परक अर्थ करने वाले (सायणाचार्यादि) भाष्यकारों के भाष्य पढनेवालो के वेद के प्रति कितनी अनास्था हो जाती है इस के दो उदाहरण मुझे ज्ञात हैं। स्वर्गीय बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त (काशी) वेद पर बडी आस्था रखते रखते थे। उन्होने बड़ी श्रद्धा के साथ सायण भाष्य का किसी विद्वान् से अत तक पाठ कराया और स्वयं भी नियमत: बैठ कर सुनते रहे। उसी अवसर पर एक रोज मैं वहां गया तो उन्होंने हाथ जोड कर हसते मुझे कहा कि शास्त्री जी महाराज पहले ही अच्छा था कि मैंने वेद का अर्थ नहीं सुना था। जब से मैंने सायणाचार्य का वेदार्थ सुना है तब से वेद पर अनास्था हो गयी है।

दूसरा उदाहरण हमारे स्वर्गीय गुरू महामहोपाध्याय पूज्यपाद पं. अन्नदाचरण तर्क चूड़ामणि जी महाराज हैं। उन्होंने दर्शन पढाते समय प्रसंगत: कह दिया था कि वेद के संहिता भाग: में क्या रखा है? इन्द्र की स्तुति और वरुण की स्तुति ही तो भरी पडी है। हां, सार तो उपनिषद् की श्रुतियो मे है जिस पर वेद व्यास जी ने विचार किया है। देखा आपने सायणाचार्य और महीधराचार्य के भाष्य के अध्ययन का यही तो फल निकलता है। इसी कारण मैंने कहा है कि सायणचार्य ने जहां वेदार्थ करके जगत का उपकार किया है वहां ही उन्होंने केवल यज्ञ परक मात्र अर्थ करके बड़ा भारी अपकार भी किया है।'

इस प्रकार के दूषित वेदभाष्य को आधार मान कर पाश्चात्य विद्वानों ने वेद भाष्य किये हैं। जैसा कि ग्रिफिथ ने अपने यजुर्वेद के अनुवाद की भूमिका में स्पष्ट लिखा—

All that I have attented to do is to give a faithful translation to the best of my ability of the text and sacreficial formulas of the Vedas, with just sufficient commentary chiefly from Mahidhar, to make them intelligible.

अर्थात्—मैंने जो कुछ भी प्रयत्न किया है वह इतना ही है कि अपनी योग्यता के अनुसार उन मन्त्रो और याज्ञिक प्रक्रियाओ का ठीक-ठीक अनुवाद मुख्यतया महीधर के भाष्य के आधार पर दिया है ताकि पाठक उन्हें समझ सकें।

अत: कहा जा सकता है कि इनका वेदभाष्य करने का उद्देश्य शुद्ध न था बल्कि वैदिक धर्म को ही हीन दिखाकर ईसाईयत की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करना था। मोनियर विलियम्स, मैकडानेल् और कीथ के नाम इसके सम्बन्ध मे उल्लेखनीय हैं। इन्होने आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में संस्कृत के प्रोफेसर के रूप में जिस बौड्न ट्रस्ट की ओर से अनेक वर्षों तक कार्य किया, उसके उद्देश्य के विषय में मोनियर विलियम्स ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक Sanskrit English Dictionary की भूमिका में जो शब्द लिखे थे विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं—

(शेष पृष्ट ६ पर)

लेखक महानुभावों की सेवा में

आर्य जगत् पत्रिका के साथ काफी सख्या में हमारे लेखक भाईयों का प्रेम है समय-समय पर सुन्दर-२ लेखो द्वारा वह इसको लोकप्रिय बनाने मे किसी प्रकार की कसर नहीं उठा रखते! परन्तु एक बात का लेखक महानुभावो ध्यान रखें कि जहां तक हो सके वह अपने लेखो मे विदेशी भाषा अंग्रेजी को कम महत्व देवें। क्योंकि हिन्दी पत्रिका में छपने वाले लेखों में अंग्रेजी का ठोंसना शोभा नहीं देता।

—संपादक

वेद का सम्यक रूप से अध्ययन

(श्री भास्करानन्द शास्त्री सिद्धांत वाचस्पति, प्रभाकर)
वैदिक रिसर्चस्कालर

वेदों, शास्त्रों और आर्ष ग्रन्थों के सम्यक प्रकार से अध्ययन, पठन-पाठन करने से मनुष्य विश्व विजयी बनता है। क्योंकि वेदों और आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से बुद्धि निर्मल होती है, और आत्मिक, शारीरिक, मानसिक आदि सम्पूर्ण शक्तियों का विकास होता है इसी ही कारण से महर्षि दयानन्द जी ने अपने बनाए आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम-धर्म है।" वेदो के अध्ययन, पठन-पाठन और स्वाध्याय को वैदिक ऋषियों ने समझा था और इसीके द्वारा विश्व के सम्पूर्ण गुप्त से गुप्त रहस्य-पूर्ण समस्याओ को हल करने में समर्थ हुए थे। वेदों के अन्दर ज्ञान, विज्ञान, गणित खगोल, भूगोल, कला कौशल, वैद्यक, राजनीति आदि संपूर्ण विद्याओं का समावेश है। अब प्रथम वेद, और उसके अंग उपाङ्गादि तथा उनमे आए हुए विद्याओं पर विचार करते हैं—

वेद चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद, ये स्वतः प्रमाण हैं। और बाकी जो वेदानुकूल हैं वे परतः प्रमाण हैं। जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिन चार साधनो की आवश्यकता है वे इन चारो वेदों मे बतलाए गए हैं। अर्थात् ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान।

संसार मे तीन पदार्थ अनादि एव नित्य हैं। वे है परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति। परमात्मा सत्, चित, आनन्द-स्वरूप है। जीवात्मा सत् और चित् है। प्रकृति केवल सत् है। परमात्मा ही सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड का बनाने वाला, स्थिर रखने वाला तथा प्रलय करने वाला है। उसके अन्दर अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त सामर्थ्य है। वह अपने कार्य में किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं रखता है। 'स्वाभाविकी ज्ञान, बल क्रिया च' यह वाक्य केवल उसी के लिये ही उपयुक्त है अन्य के लिये नहीं। उस परमात्मा के ज्ञान को ही हम 'वेद' इस नाम से पुकारते हैं। इस वेद के महान ज्ञान को परमात्मा ने आदि सृष्टि में अर्थात आज से एक अरब, सत्तानबे—करोड़, उनतीस लाख और उनचास हजार वर्ष पूर्व चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के अन्तः करण (हृदय) में प्रकट किया, और उन ऋषियों ने बाद में सबके उपकारार्थ उस ज्ञान का लोगों में विस्तार किया। वेद ज्ञान के प्रकाशित करने के सम्बन्ध में यजुर्वेद में इसका प्रमाण निम्न प्रकार से है। यथा—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत: ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्त-स्मादजायत ॥
(यजुर्वेद ३१/७)

उस यज्ञ पुरुष परमात्मा से, जो सर्वग्रहणीय है, ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, और यजुर्वेद प्रकट हुए। वेद मन्त्रों की संख्या निम्न प्रकार है—

ऋग्वेद — १० मण्डल, आठ अष्टक, १०२८ सूक्त और १०४०२ मन्त्र हैं।

यजुर्वेद—४० अध्याय १९७५ मन्त्र हैं।

सामवेद—पूर्वाचिक तथा उत्तरा-चिक दो भाग हैं १८७५ मन्त्र हैं।

अथर्ववेद—२० काण्ड, ७६० सूक्त, ६००० मन्त्र हैं।

कुल वेद मन्त्रो की संख्या २०२५२ (बीस हजार दो सौ बावन) है।

वेद के षड्अंक हैं, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द और ज्योतिष इन अंको द्वारा वेदार्थ समझने में बड़ी सहायता मिलती है।

वेदों की शाखायें भी बहुत हैं उन शाखाओ की गणना महाभाष्य आदि ग्रन्थो के आधार पर निम्न प्रकार है—

ऋग्वेद की २०, यजुर्वेद की १००, सामवेद की ९९९ और अथर्व-वेद की ८ इन सब का योग ११२७ है।

उपवेद—चारों वेदो के चार उपवेद अर्थात् अर्थवेद ऋग्वेद का, धनुर्वेद यजुर्वेद का, आयुर्वेद अथर्ववेद का और गन्धर्ववेद सामवेद का उपवेद है।

वेदो के उपाग—वेदो के छः उपाङ्ग हैं जिनको छ दर्शन अथवा छः शास्त्र भी कहते हैं। कपिल का साख्य, गौतम का न्याय, पातजलि का योग, कणाद का वैशेषिक, व्यास का वेदान्त और जैमिनी का मीमांसा दर्शन है।

ब्राह्मण ग्रन्थ—ऋग्वेद का ऐतरेय ब्राह्मण, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का साम ब्राह्मण (ताण्डयया छान्दोग्य ब्राह्मण) और अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है।

उपनिषदें—जिनसे हमे ब्रह्मविद्या प्राप्त होती है, उन्हे 'उपनिषद' कहते हैं। ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक ये मुख्य हैं।

इस युग के महान् सुधारक बाल-ब्रह्मचारी, वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदो के अध्ययन, पठन-पाठन प्रणाली को पुनर्जीवन प्रदान किया। वेदो को सम्यक रूप से अध्ययन करके ही हम ब्रह्मविद्या, भूतविद्या, क्षात्रविद्या, नक्षत्रविद्या, राजविद्या, अर्थ विद्या, गणितविद्या, ज्योतिष विद्या, भूविद्या, विद्युत विद्या, खगोल विद्या, मान-विद्या, युद्ध विद्या, सर्प विद्या, आदि अनेक विद्याओ का ज्ञान प्राप्त के ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्त सुख प्राप्त कर सकते है अत इस श्रावणी पर्व पर हम सब आर्यजन वेद के सम्यक् रूप से अध्ययन करने का व्रत धारण करे और अपने प्रत्येक समाजों मे वेद की कथाओ-प्रवचनो का आयोजन कराके पुण्य के भागी बनें और इस पवित्र मानव-जीवन के मुख्य उद्देश्य को प्राप्त करके विश्व-विजयी बनें।

—

हे विश्वनाथ

हे विश्वनाथ मन का चंचलपना मिटादे,
कुटिया में शांति के आनन्द से बिठादे।

अज्ञान मेरा मुझ से हे नाथ दूर करदे,
अज्ञानता से बिगड़े कारज सभी बनादे।

ऐसा अनुग्रह करदे, खुल जायें ज्ञान चक्षु,
इन चक्षुओं को अपने प्रकाश को दिखादे।

दुनियां के जो विषय हैं, उनसे है जंग मेरी,
अपनी दयालुता से मुझ को विजय दिखादे।

भटका हुआ मुसाफिर बहका हुआ है फिरता,
मंजिल पे जल्द पहुंचे वह रास्ता बतादे।

केवल तेरी लगन में बेसुध रहूं हमेशा,
अमृत का एक प्याला ऐसा मुझे पिलादे।

आर्य कन्या विद्यालय गोविन्द नगर का निर्वाचन

आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोविन्द नगर कानपुर का निर्वाचन श्री बंसीलाल खन्ना की अध्यक्षता मे निम्नलिखित हुआ है।

अध्यक्ष—श्री देवीदास आर्य
उपाध्यक्ष—श्री डा० नन्दलाल गांधी
प्रबन्धक—श्री शिवदयाल टुटेजा
स०प्रबन्धक—श्री द्वारिकनाथ उप्पल
कोषाध्यक्ष—श्री शुभकुमार बोहरा

कार्यकारिणी सदस्य— सर्वश्री डा० दुर्गादास, लाजपतराय, सन्तोषपाल यह निर्वाचन ३ साल के लिए पहिले की भांति किया गया। महत्वपूर्ण बात यह है कि देवीदास आर्य लगातार चौथी बार अध्यक्ष चुने गये हैं।

शिवदयाल प्रधान

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

भारतीय विद्वान

(पृष्ठ ४ से आगे)

That the special object of his (Boden's) munificent beguest was to promote the translation of the Scriptures into Sanskrit, so as to enable his countrymen to proceed in the 'conversion' of the natives of India to the Chrition religion.'

बोडन महोदय के उदार दान का मुख्य उद्देश्य ईसाईयो के धर्म ग्रन्थो का सस्कृत मे अनुवाद कराना था। उसके देशवासी भारतीयों को ईसाई मत की दीक्षा देने के कार्य मे अग्रसर हो सकें।

प्रो० मैक्समूलर ने वेद के सम्पादन के सम्बन्ध मे १८६८ में अपनी पत्नी के नाम पत्र लिखते हुए यह भी लिखा था—

I hope I shall finish that work and I feel convinced though I shall not live to see it, yet this *edition* of mine (of the Rigveda) and the translations of the Vedas will have after tell to a great extent on the late of India and on the growth of millions of soul in that country. It is the root of their religion and to show them what the root is, I feel sure, the only way uprooting' all that has been sprung from it during the last three thousand years

मुझे आशा है कि मैं उस काम को (वेदों का सम्पादनादि) पूरा कर दूंगा और मुझे निश्चय है कि यद्यपि मैं उसे देखने के लिए जीवित न रहूंगा तो भी मेरा ऋग्वेद का यह सस्करण और वेदो का अनुवाद भारत के भाग्य और लाखो भारतीयो के आत्माओ के विकास पर प्रभाव डालने वाला होगा। यह (वेद) उनके धर्म का मूल है और मूल को दिखा देना, उस से पिछले तीन हजार वर्षों में जो कुछ निकला है उसको मूल सहित उखाड़ देने का सब से उत्तम प्रकार है।

प्रो० मैक्समूलर १६ दिसम्बर १८६८ को उस समय के भारत में अग्रेज मन्त्री ड्यूक आफ आर्गायल को पत्र लिखते हैं—

Tne ancient religion of India is doomed and if christianity does not step in, whose fault will it be ?

भारत के प्राचीन धर्म का नाश तो अब निश्चित है और यदि ईसाइयत आ कर उसका स्थान न ग्रहण करे तो यह किसका दोष होगा ?

भारतीयों को प्रोफेसर महोदय ईसाई बनाने के लिए कितने उत्सुक थे यह उनके पत्र से ही विदित हो जाता हैं। श्री एन. के. मजूमदार, जो कि ब्राह्म समाजी थे, को सन १८९९ में पत्र लिखते हुए कहते हैं—

Tell me some of your chief difficulties that prevent you and your country men from openly following christ and when I write to you, I shall do my best to explain how I and many who agree with me have meet them and solved them... From my point of view India, at best part it is already converted to Christianity. You want no persuation to become a fellwer of chirst. Stop boldly forword, it will not break under you and you will find many friends there to wellcome you on the other shore and fellow labourer, F. Maxmuller.

(life and letters of F. M. Muller Published by Mrs. georgina maxmuller London 1902)

आपको और आपके देशवासियों को खुले तौर पर ईसामसीह की शरण मे आने में जो कठिनाईयां है उन्हें मुझे बताईये और मैं अपना उत्तर उनके विषय में लिख दूंगा। मेरे दृष्टिकोण से भारत, कम से कम इसका सर्वोत्तम भाग ईसाईमत मे परिवर्तित हो चुका है। आपको ईसाई बनने की प्रेरणा की भी अवश्यकता नहीं। बस अब साहस पूर्वक निर्भयताके साथ आगे बढ़िए यह आपके नीचे टूट न जाएगा और अन्य देखेंगे।

(क्रमशः)

बहुत ही लज्जाजनक

(पृष्ठ ३ का शेष)

जीवन का बेड़ा गर्क कर देना ही है।

इस बात की प्रसन्नता है कि सिनेमा की तारिकाओं ने इसका बहुत ही प्रभावशाली शब्दों मे खुल कर विरोध किया है। इसे निन्दनीय तथा देश की पुरानी पवित्र परम्पराओं के सर्वथा प्रतिकूल कहा है। देश में इस समय दो विचारों की, दो लहरों की भयकर टक्कर हो रही है। एक ओर भारतीय जीवन की पवित्र आदर्श परम्परा है—जिसने श्रीराम, गोपाल, सीता आदि देवता दिये—दूसरी ओर पश्चिम की खुली नग्न भोगवादी विचारधारा है जोकि भोगों को खुला रूप देना चाहती है। चुम्बन व नग्नता प्रदर्शन भी उसी का अध्याय है। इस टक्कर के लिए तैयार होना ही पड़ेगा।

—स०

वेदप्रचार का कार्य लेखरामनगर कादियांमें

सभा प्रोग्राम पर आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर में कथा के बाद आर्यसमाज लेखरामनगर कादियां मे कथा कार्यक्रम किया। प. ज्ञान चन्द जी भजनीक साथ थे। प्रिंसिपल देस राज जी भाटिया एम ए. जब से नाभा से तबदील होकर आए हैं सभा का बड़ा ही ध्यान रखते हैं। सारा परिवार ही चलता फिरता आर्यसमाज है। वर्षा बड़ी थी बिजली भी रात का बन्द रहती—फिर भी समाज में और अपने डी. ए वी. स्कूल में प्रचार कार्यक्रम कराया। प्रि. देस राज जी एम. ए., डा. केदारनाथजी, मा. रोशनलाल जी, बिहारीलाल जी, मन्त्री देसराज जी, सैक्रेटरी बोधराज जी, श्री भण्डारी जी, श्री प्रकाश जी, महाशय बस्तीराम जी, स्त्री समाज, प्रि. महोदय वेदकौर स्कूल व कालेज के सहयोग से खूब कार्यक्रम निभाया गया। १०० रु. वेद प्रचार सभा को मिले। मार्ग व्यय अतिरिक्त था। प्रेम व श्रद्धा के लिए धन्यवाद।

तलवाड़ा टाऊनशिप मे

बहुत ही जीती जागती समाजहै। सारे अधिकारी धर्मप्रेमी हैं। श्री. भण्डारी जी प्रधान, श्री गुप्ता जी मन्त्री, पं. मुन्शीराम जी, श्री पालजी कौडा, श्री सतीश जी सारे ही भाई-बहिन श्रद्धा की मूर्ति हैं। पं. जगत राम बस्तीराम जी की, मण्डली साथ थी। वर्षा ने कमाल कर दिया। कई

कार की मोमबत्तियां जलाकर प्रचार हुआ। ७५ रु. वेदप्रचार मिला। मार्ग व्यय अलग मिला। परिवार धार्मिक है धन्यवाद। —सम्पादक

आर्य समाज माडल टाउन अम्बाला नगर

आर्य समाज माडल टाउन अम्बाला नगर में वेद सप्ताह ३. ८. ६९ से १०. ८, ६९ तक बड़ी श्रद्धा तथा उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर प्रादेशिक सभा जालन्धर की ओर से पण्डित खुशी राम जी शास्त्री महोपदेशक तथा श्री मेला राम जी रेडियो सिंगर पधारे। वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द मिशन का सब प्रचार हुआ। हाजरी बड़ी भरपूर रही। जन्ता पर मधुर सगीतों तथा सार गर्भित अमृत वर्षा का बड़ा अच्छा प्रभाव रहा। सप्ताह हर दृष्टि से बड़ा सफल रहा।

समाज की ओर से प्रचार के लिए २५०) रुपय तथा मात्रा व्यय ३०) रुपय भेंट किए गए। प. मेला राम जी को ७५) रुपय सहायता रूप मे दिए गए।

मालिक राम मन्त्री

आर्य समाज दयालपुरा करनाल का वार्षिक निर्वाचन

दिनाक १०-९-६९ को सम्पन्न हुआ जिसमे सर्व सम्मति से अगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए:—

१—प्रधान ला. माम चन्द जी।
२—उप प्रधान ला राम धन जी।
३—,, ,, चौ० चन्द्र मणि वकील।
४—मन्त्री ला. भागीर्थ कुमार जी।
५—उपमन्त्री मा० जगदीश चन्द्रजी।
६—कोषाध्यक्ष की राधे श्याम जी।
७—लेखा निरीक्षक ला.अमरनाथ जी।
८—पुस्तकाध्यक्ष-श्रीबा.शांति प्रकाशजी

मामचन्द्र आर्य प्रधान

'अजनाला में प्रचार'

केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की ओर से ३-८-६९ व ४-८-६९ को आर्यसमाज अजनाला में श्री सतपाल जी पथिक और हरिदेव जी द्वारा ने प्रचार किया। श्री सतपाल जी के भजनों से जनता अतीव प्रभावित हुई। उन्होंने तो कुछ दिन ठहरने पर बल दिया। अजनाला आर्यसमाज अब उन्नति के पथ पर जा रहा है। और केन्द्रीय आर्य सभा से हर सप्ताह कोई प्रचारक जाकर प्रचार करता है।

चन्द्रमा के विषय में वैदिक व अवैदिक मतों की प्रतियोगिता

(श्री दौलत राम जी शास्त्री अमृतसर)

जब सम्प्रदायो मे परस्पर होड लगी तो पुराणो का अपने-अपने सम्प्रदाय के प्रचारार्थ आविर्भाव हुआ। अनेक प्रकार की कथाओ का वाचन उन सम्प्रदायो के एजण्ट करने लगे और अपने प्रवचनो को आकर्षक बनने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के क्षेपक भी डालने आरम्भ किये। रोटी दाल का प्रश्न बडा कुछ करवा देता है। यदि किसी ने कोई अद्भुत तथा असभव बात पर प्रश्न किया तो अधविश्वासियो को सन्तुष्ट करने के लिए अपनी मनघड़न्त कथाये प्रचलित कर दी जो परस्पर विरोधिनी भी हैं और अमान्य भी। इन लोगो को यह तो पता नही था कि कोई विज्ञान युग भी आयेगा। और तर्क की कसौटी पर भी हमारा पोल खुल जायेगा—लिखते रहे। चन्द्रमा के विषय मे भी बहुत कुछ लिखा गया। हम क्रमश. विवरण देगे ाठक ध्यान देगे ही।

समुद्र मन्थनम्

भागवतादि कुछ पुराणो मे चन्द्रमा के विषय मे लिखा है कि जब देवता व दैत्यो मे सघर्ष चला तो इनको समुद्र मन्थन करना पडा। समुन्द्र मन्थन करने से परिणाम स्वरूप-धन्तपतरि वैद्य-ऐरावत हस्ती उच्चै श्रवा घोडा-लक्ष्मी तथा चन्द्रमा आदि १४ रत्न उस मे से निकले और अमृत का घडा भी। विष भी वही से निकला जिसे महादेव जी को पीना पडा। अमृत के लिये विवाद खडा हो गया। परन्तु लक्ष्मी की जीत से देवताओ को मिला। जब देवता पी रहे थे तो एक असुर चुपके से देवताओ मे बैठ कर पी रहा था तो चन्द्रमा के इशारे से विष्णु भगवान् ने उस का सिर काट दिया। अमृत के प्रभाव से सिर और धड दोनो जीवित रहे। सिर का राहू और धड का नाम केतू पड गया। तब से ले कर यह दोनो सूर्य व चन्द्रमा से वैरभाव रखते है। इसी को लोग ग्रहण मानते है।

यह केवल गल्प ही नही गल्प का बाप है। समुद्रमन्थन से पहले वेद मे अनेकत्र चन्द्रमा का नाम आता है।

"सूर्या चन्द्रम सौ धाता यथा पूर्व मकल्पयत्"

और भी—पुरुससूक्त मे (यजु-मे)

चन्द्रवा मन सो जात कवक्षो.सूर्योऽजायत।

इत्यादि ज्योतिष के प्रामाणिक ग्रन्थ मे (काल माधव के कर्ता-माधवाचार्य ने माना है "राहुर्वै पृथिवीच्छाया"।

राहू पृथ्वीकी छाया का नाम है और पृथ्वीको केतु कहा है जब पृथ्वी की छाया सूर्य के आगे आ जाये तो सूर्यग्रहण और पृथ्वी का कुछ भाग चन्द्रमा के सामने आ जाये तो हम चन्द्र ग्रहण कह देते है।

परस्पर विरोधी

स्व० ज्वाला प्रसाद कृत राम चरित मानस के अनुवाद के टिप्पण मे लिखा है कि मन्देहा नाम दैत्यो ने चन्द्रमा की माता से ऋण लेना है। माता दे न सकी। वे आकर चन्द्रमा को पकड लेते है। लोग ब्राह्मणो को दान देते हैं जो उनको किश्त मिल जाती है तो छोड देते हैं। यह विद्या वारिधि की हास्यास्पद कल्पना व सूझ थी। अब इन्हे कौन सुनता है।

कोश में चन्द्रमा के 'शशाङ्क' व मृगाङ्क' नाम

कोई-कोई शब्दकोश लेखक चन्द्रमा के पर्याय शब्द शशाक का अर्थ करते हैं—शशा अङ्कं यस्य, जिसकी गोद मे खरगोश खेलते हो—मृग खेलते हों मृगाङ्क। *यह अर्थ भी अब के वैज्ञानिको ने निर्मूल कर दिया है। यथार्थ* चाद के धब्बो को शश कहते हैं।

एक और पौराणिक मत कहता है—

'अत्रेर्नेनयनसमुत्थं ज्योतिः' चन्द्रमाः।

चन्द्रमा अत्रि के नेत्रो से निकली हुई ज्योति पिण्ड रूप मे जमी हुई है। इसे दृष्टिगत करके जब-कभी कोई व्रत आदि करते है तो चन्द्रोदय के समय अर्घ देते यह पौराणिक श्लोक मन्त्र के रूप मे प्रयुक्त करते है।

एहि चन्द्र सहस्राशो 'अत्रि गोत्र समुद्भव'।'
गृहाणार्घ मयादत्त देव देव नमोऽस्तुते॥

इस सम्प्रदाय ने यह नही समझा कि उपर के वाक्याश के अनुसार चन्द्रमा की उत्पत्ति अत्रि ऋषि के जन्म मे बहुत वर्षो के पश्चात हुई। इस मे पहले तिथि गणना तो होती न होगी।

कथ क्कड़मत

एक ऋषि स्नान करके अपने आश्रम को जा रहे थे। गीला स्नान वस्त्र अपने कन्धे पर धरा हुआ था। ऋषि अकस्मात् चलने-चलने फिसल कर गिर गये। चन्द्रमा यह घटना देख कर खिडखिडा कर हस पडा। ऋषि को यह देख क्रोध हुआ। उसने अपना गीला कपडा चाद के मुह पर मारा—यह जो चाद मे काले-काले धब्बे दीख पडते हे यह उस चोट के चिन्ह हैं। यह कल्पना तो बडी हृदयाकर्षक है, पर करने वाल का माग [illegible] दिवाला निकल गया मालूम होता है। कथक्कडो के पास सिवाय असन्तुन कल्पना के शेष होता भी क्या है।

मनोविनोद

बच्चो के मनोविनोद के लिये स्त्रिया कहा करती है— यह जो चन्द्र मे काले-काले चिन्ह है बेटा ! यह तो चाद की माता चरखा कात रही है। बच्चे भी बालस्वभाव से उसे चन्दा मामा कह देते, परन्तु खेद तो उस वर्ग की अन्ध विश्वासी उस बुद्धि पर है जो अब तक भी यह भाव लिये बैठी है कि रसूल ने उगली से चाद के दो टुकडे कर दिए थे। कितने लाख दूर पर यह अमरीका के अपोलो न ११ से भी तेजी से गयी ?

वेद मत सिद्धान्त

वैदिक मत यह है कि सृष्टि के आदि मे ही परमेश्वर ने यह सब ग्रह उपग्रह नक्षत्र आदि का निर्माण किया। पूर्वोक्त पौराणिको कथक्कडो तथा अन्यान्य अल्प बुद्धियो के मतो मे कोई सार नही हे। सूर्य चन्द्रादि जड देवता प्रभु की रचनाए है। जैसे वेद मे—

'सूर्याचन्द्रमसौ धात यथापूर्वमकल्पयत'

सूर्य चन्द्रमा को उस विधाता ने पहले कल्पान्तरो की भाति रचा। इन सारी मन्त्रत्रयी मे पृथ्वी समुद्र तथा धुलोकादि सबका निर्माण करना बताया गया है। निर्माण करने से पश्चात इन सब मे अपने-अपने परिधि तथा स्वभाव के अनुसार गतिक्रम व नियम उसी शक्ति से नियमित किए गये है। जैसे—

'स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम'

उसीने पृथ्वी तथा यह द्युलोक को धारण किया है, उसी दिव्य गुण वाले भगवान को हम भक्तिपूर्वक स्तवन करे।

एक और भी श्रुति मे—

'द्यावा भूमिं जनयन् देव एक आस्ते विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता।'

द्युलोक तथा भूमि को बनाता रहता एक ही देव है—जो सारे विश्व का कर्ता है और लोक-लोकान्तरो का रक्षक है। (क्रमश)

यज्ञ का अधिकारी कौन ?

(पृष्ठ २ का शेष)

परक वाक्य शिखा रहित शिरो के लिये कहा है। इसी प्रकार शिखा के लिये वेद मे प्रशसापूर्ण शब्द निम्न रूप मे कहे गये हैं—

श्रियै शिखा। (यजुः १९।९२)

अर्थात शिखा, ऐश्वर्य, श्री, शोभा लक्ष्मी आदि के लिये होती है। अतः यज्ञ को मगलमय एव श्रीयुक्त बनाने के लिये शिखा को जिसने त्यागा नही है ऐसे ही ऋत्विजो से यज्ञ कराना चाहिये तथा जिनके शिखा का त्याग कर दिया है ऐसे सन्यासी आदियो से यज्ञ नहीं करना चाहिये। इत्यादि अनेक हेतुओ एव प्रमाणो से सन्यासियो का ब्रह्मत्व या यज्ञाध्यक्षत्व सर्वथा असिद्ध है और अमगलजनक होने से त्याज्य ही है।

परन्तु अज्ञान से अब तो सन्यासियो से विवाह सस्कार भी कराते है। यह सब परिपाटी शास्त्र मर्यादा के विपरीत ही है।

कुछ लोग कहते हैं कि वेद मे यतीना ब्रह्मा भवति सारथिः—आता है। इसका अर्थ वे करते हैं कि ब्रह्मा तो केवल सन्यासी ही होता है अन्य नही होता है। यदि यही अर्थ मान लें तो महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने तथा सब शास्त्रकारो ने बहुत भारी गलती कर दी है कि उसने गृहस्थ को यह कर्म कराने का अधिकार प्रदान किया है और शिखा सूत्र त्यागने वालों को यज्ञ के अधिकार से वचित किया है। परन्तु साधारण से साधारण व्यक्ति भी जान सकता है कि उक्त मन्त्र का यह अर्थ नहीं है कि सन्यासी ही ब्रह्मा होता है ब्रह्म को योग मार्ग से जानने वाला ही दूसरो को योग मार्ग का उपदेश करने वाला एव मार्ग को बताने वाला आध्यात्मिक साधना कराने की योग्यता वाला भी ब्रह्मा पद वाच्य है। वही उन सन्यासियो का ब्रह्मा है। अर्थात् उपासना काड के साधक यतियत्नशीलो का एव सन्यासियो का ज्ञानोपदेष्टा एव आध्यात्मिक क्रियात्मक अभ्यास का जो श्रेष्ठ दर्शक है वही उन यतियो का ब्रह्मा है क्योकि सारथि तुल्य वह उनको ले जाने वाला, पथ प्रदर्शक, नेता तुल्य है। यतीना ब्रह्मा—का अर्थ यतियो का ब्रह्मायह होता है न कि यति ही ब्रह्मा होता है यह अर्थ होता है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने भी यज्ञ करवाए थे। परन्तु उनका जीवन चरित्र पढने से ज्ञात होता है कि उसमे १-२ ही ऐसे प्रसग आए हैं जिनमे श्री स्वामी जी का यज्ञ के साथ सम्बन्ध का उल्लेख है। उनमे एक प्रसग यज्ञोपवीत सस्कार का है। वहा पर भी यह नही है कि उनमे सस्कार का यज्ञ या विधि स्वयं ऋत्विज बनकर कराई। यजमान ने उनसे यज्ञोपवीत लेने के इच्छा प्रकट की। उन्होने यज्ञोपवीत देना स्वीकार किया और यज्ञोपवीत विधिपूर्वक यज्ञ द्वारा दिया गया। इसमे सस्कार की विधि तो अन्य विद्वानों से ही [illegible] कराई। यज्ञोपवीत श्री स्वामी जी द्वारा दिये जाने से यजमान तो गौरव से यही कह सकता है कि स्वामी जी ने मेरा यज्ञोपवीत किया है। क्योकि स्वामी जी की प्रेरणा से यज्ञोपवीत हुआ और वे स्वयं उपस्थित भी थे और उनसे उस यजमान को यज्ञोपवीत धारण भी कराया। ऐसी स्थिति में यज्ञ कार्य के लिये उनका ब्रह्मा होना प्रमाणित नही है और शास्त्र मर्यादा के विरुद्ध होने से वे उसके ब्रह्मा हो भी नहीं सकते थे।

इसी प्रकार श्री स्वामी जी ने गायत्री अनुष्ठान कर कराया था। उसमें भी उन्होंने बाहर से पडितो को बुलवा कर कराया था। वहा पर भी ऐसा नही है कि वे यजमान बन कर या ऋत्विज ब्रह्मा आदि बन कर बैठे थे। इसी स्वामी जी ने उस यज्ञ का व्यय वहन किया था अतः श्री स्वामी जी ने कराया यही लोक में प्रख्यात हुआ।

सन्यासी अपने व्यय से या द्रव्य सग्रह करके या अन्यो को प्रेरणा देकर यज्ञ करवा सकते हैं लोकोपचार के लिये, परन्तु शास्त्र मर्यादा का उलघन करके वे स्वयं यजमान, होता, अध्वर्यु, उद्‌गता, ब्रह्मा आदि नही बन सकते हैं। यदि सन्यासी ब्रह्मा बन सकता है तो कम से कम सन्यास सस्कार के प्रकरण मे तो वरण मे अवश्य महर्षि स्वामी दयानन्द जी लिख देते कि सन्यासियो का वरण करके सस्कार कराये। परन्तु वहां पर भी स्पष्ट शब्दों मे यज्ञ कार्य के लिये गृहस्थ का ही वरण करने को लिखा है। अतः स्पष्ट सिद्ध है कि महर्षि कही भी यज्ञ में ब्रह्मा आदि नहीं बने थे और न यह वेद शास्त्र अनुकूल ही है।

इसी प्रकार उदयपुर महाराणा को पत्र लिखते हुए श्री स्वामी जी ने लिखा आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिए एक वर्ष में दस हजार रुपये से घृतादि से जिस रीति से होम हुआ था उसी रीति से प्रतिवर्ष होम कराईये परन्तु उनमें से ५ हजार रुपयो के सुगन्धित घृत मोहन भोग का होम वर्षा ही मे कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेके विजयदशमी तक चारो वेदो के ब्राह्मणो का वरण बराबर एक सुपरीक्षित धार्मिक पुरुष उन पर रखकर होम कराइयेगा। यदि सन्यासी से ही यज्ञ कराना अभिष्ट होता या सन्यासी को यज्ञ कराने का अधिकार होता तो चारो वेदो के ब्राह्मणो का वरण करने के स्थान पर उत्तम त्यागी सन्यासियों का वरण करके या उनके अधिष्ठातृत्व में यज्ञ कराने के लिए लिखते अथवा वह ये भी लिख देते कि मैं आकर के यह यज्ञ सम्पन्न करा दूंगा या मेरे निरीक्षण मे यह होगा परन्तु कोई भी ऐसा लेख स्वय महर्षि का नही है जो सन्यासियो को ब्रह्मादि बनाने का पोषक हो। अतः जीवन चरित्र मे जो कुछ भी यज्ञोपवीत या गायत्री अनुष्ठान की बात आती है वह भी पूर्वोक्त रीति से स्पष्ट हो जाती है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए, पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे | वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ३६) २२ भाद्रपद २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—७ सितम्बर १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तवोतिभि : सचमाना आरिष्टा :

अर्थ :—प्रभुदेव! तव-आपकी ऊतिभि :—रक्षाओं से कृपा से जो सचमाना:-युक्त हैं, जुड़े हुए हैं वे सदा आरिष्टा :—दुखों से रहित हैं। सदा सुखी हैं। जो आपके बन जाते हैं वे सदा सुख आनन्द को पाते हैं।

भाव :—जिनके जीवन का सम्बन्ध भगवान से जुड़ जाता है। जिनकी मन की तार उस पिता से जुड़ी रहती है जो उसी का बन जाता है वे सदा अरिष्ट हो जाते है। दुख : उनसे दूर रहता है। सदैव प्रभु-प्रेम में मस्त रहा करते हैं। प्रभु की कृपा उनसे साथ बनी रहती है उस पिता की रक्षाएं उस प्रभुके प्रेमी को प्रत्येक प्रकार के कष्ट क्लेश से बचाए रखती हैं। सदा सुखी रहना चाहतेहो तो उसी से जीवन को जोड़े रखो। उसकी कृपा अमृत है। —सं.

ऋग्वेद ५-४२-८

वे दा मृ त

प्रभो ! हमारी झोली भर दो

ओ३म् भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं,
भूर्याभर। भूरिधेदिन्द्र दित्ससि ॥

ऋग्वेद ४-३२-२०

अर्थ हे पिता जी! आप (भूरिदा) बहुत देने वाले है। हमें (भरि) बहुत (देहि) दीजिये (न:) हमको (मा) मत (दभ्रं) थोड़ा न दो वरन (भूरि) बहुत २ (आभर) भर दें। आपही तो (भूरिधा) बहुत धारण करने वाले हो, अनन्त भण्डार के भण्डारी हो (इत्) निश्चय करके (इन्द्र) हे इन्द्र ! (दित्ससि) आप बहुत देने की इच्छा करते हो।

इस का भाव यह है

भगवान बहुदानी हैं। सदा सभी को देते रहते हैं। उसके अनन्त भण्डार के अद्भुत द्वार से कोई भी तो खाली नहीं लौटता। सबकी झोलियां भर जाती है मांगना है तो उसी से मांगो। धनी का दान प्राय: दिखावे के लिये होता है। जहां उसका नाम होता है, पत्रों में चित्र छपता है, प्रसिद्धि होती है वही देता है। एक दो बार देता है फिर द्वार बन्द कर लेता है। प्रभुदेव ! आप बहुत दानी हो। आपका भण्डार सदा सभी के लिए खुला है। हम तो आपके हैं। हमारी झोली भर दो। थोड़ा मत देवें। आपके पास कभी न समाप्त होने वाला भण्डार है। देना चाहते हो—किंतु हम आपसे मांगते नहीं है। औरों के द्वारों पर भटकते रहते हैं। —सं.

ऋषि दर्शन

अव्यावृत भजनात्

अर्थ :—भक्ति का साधन अव्यावृत-निरन्तर अखण्ड भजनात्-प्रभु का भजन करते रहने से भी सिद्ध है। निरन्तर भगवान की भक्ति में नर लगा रहे। उसमें रुकावट न पड़ने दे।

भाव :—भगवान को प्राप्त करने के लिए एक भक्ति का साधन यह भी है कि प्रभु की भक्ति की साधना अखण्ड रूप से करता रहे। ऐसा न हो कि एक दिन तो उपासना कर ली जाए, प्रभु का ध्यान किया जाए और फिर एक सप्ताह प्रभु का नाम लिया ही न जाए। ऐसे ढंग से भक्ति का प्रसाद किसी प्रकार भी नहीं मिल सकता। हर कार्य के लिए निरन्तर उसमें जुटे रहना पड़ता है तो भक्ति के पथ पर यात्री लगातार आगे बढ़ता जाए तभी प्राप्ति-स्थान को पाया जा सकेगा —सं-

नारद का भक्तिसूत्र ३६

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी०(सभा मन्त्री) सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

वेद में श्रद्धा

[श्री मथुरादास जी गली नं० ५ नवांकोट अमृतसर]

वेद आर्यों के लिए ही नही किन्तु मनुष्य मात्र के लिये एक आवश्यक ज्ञान है जो कुछ भी आज कल हम व्यवहारिक वैज्ञानिक तथा अन्य उन्नति देख रहे है यह सब कुछ वेद मे से ही लिया जा रहा है। इन वैज्ञानिको के परिश्रम और दिन रात मस्तिष्क से यही कुछ सोचना और फिर इसके साथ उनकी सरकार भी अरबो रुपया इस कार्य के लिये उनको दे देती है इसी मे ही उनकी सफलता का रहस्य है क्योकि विचार शील वैज्ञानिक को यदि काम करते-करते धन का अभाव हो जावे तो वह आगे नही बढ सकता। भारतवर्ष का भी तो आज यही हाल है एक तो देश शताब्दियो तक परतन्त्र रहा जिसके कारण हमारे अन्दर से अपनी सस्कृति तथा सभ्यता ही समाप्त नही हुई बल्कि वेद का ज्ञान भी लोप हो गया और यह कहा जाने लगा है कि हिन्दी सस्कृत मे तो ज्ञान विज्ञान की पुस्तके मिलती ही नही। हा उनके लिये तो यह बात ठीक मानी जा सकती है जिन्होंने वेदो को पढा ही नहीं परन्तु जिन्होंने पढा है वह इसका लाभ उठा रहे है और ससार भर को चकित कर रहे है, जर्मनी आदि कई देश है जहा सस्कृत आवश्यक पढाई जाती है और अनेक देश ऐसे भी है जो वेदो का भाष्य अपनी भाषा मे करवा रहे है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज, जिन की वेद के प्रति अटूट श्रद्धा थी और अपनी सारी आयु इसी आयु इसी वेद के प्रचार मे ही लगा दी, आर्य समाज के तीसरे नियम मे लिख दिया कि सब सत्य विद्याओ की पुस्तक वेद है वेद का पढना, पढाना और सुनना सुनाना सब कार्यो का परम धर्म है। आपने पहले दो नियम ईश्वर सम्बन्धी रखे फिर आपने वेद का पढना पढाना तथा सुनना सुनाना हमारे सबके लिए धर्म ही नही परम धर्म लिखा है क्योकि महर्षि तो वेद की शिक्षा के बिना किसी शिक्षा को उत्तम मानने ही न थे और वेद को ईश्वर कृत मानते थे आपने इस सम्बन्ध मे सत्य के प्रकाश मे लिखा है—प्रश्न कर्ता पूछता है कि— वेद ईश्वर कृत है अन्यकृत नही इस मे क्या प्रमाण ?' स्वामी जी उत्तर देते है—जैसा ईश्वर पवित्र, सर्व विद्यावित शुद्धगुण कर्म स्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुण वाला है वैसे जिस पुस्तक मे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वर कृत अन्य नही और जिसमे सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण आप्तों के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त। जैसा ईश्वर का निभ्रम ज्ञान वैसा जिस पुस्तक मे भ्रातिरहित ज्ञान का प्रतिपादन हो वह ईश्वरोक्त, जैसा सृष्टिक्रम रखा है वैसा ही ईश्वर सृष्टिकार्य कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमे होवे वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है और प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयो से अविरुद्ध शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो। इस प्रकार के वेद है, अन्य बाईबल कुरान आदि पुस्तके नही।

अब विचार कीजिये कि हम यह सारे कर्म कितनी श्रद्धा से करते है हम अपने सत्सगो मे सस्कारो मे, हवन यज्ञ, दान आदि जो भी कर्म करते हैं कितनी श्रद्धा से करते हैं जबकि यज्ञ को श्रेष्टतम कर्म कहा गया है। परन्तु हमारी श्रद्धा हवन मे इतनी है कि हवन मन्त्र पढे जा रहे है, कुछ लोग बीच मे ही बैठे बाते कर रहे है, कुछ समाचारपत्र पढ रहे हैं, किसी का ध्यान किसी ओर और किसी का किसी ओर, बच्चे शोर मचा रहे हैं बहुत ही कम समाजें या सस्कार ऐसे होगे जहा श्रद्धा हवन यज्ञ के समय प्रतीत होती हो बहुधा श्रद्धाहीन ही है। चाहिये तो यह कि हम श्रद्धा से बैठ कर मन्त्रो का पाठ करे और यदि मन्त्र पढ नहीं सकते तो शात हो बैठ कर चुपचाप वेद मन्त्रों का पाठ सुने। जब तक पाठ होता रहे न स्वय बोले, यदि कोई दूसरा बोले तो उसे सकेत से चुप करा दे, यदि बच्चे शोर मचाते हो तो उन्हे भी बिना स्वय ऊचा बोले चुप करा दे। इस प्रकार जब तक हवन, यज्ञ होता रहे, सत्सग भी अथवा किसी सस्कार की कारवाई हो रही हो पूरी श्रद्धा से शात होकर इस मे भाग ले।

आर्य समाज के सत्सगो मे जो वेद मन्त्र पढे जाते हैं उन का हर सप्ताह क्रमशः एक दो मन्त्रो को व्याख्या की जानी चाहिये इस प्रकार धीर धीरे सारे मन्त्रो की व्याख्या हम सुन सका करेगे यदि एक बार समाप्त हो जावे तो फिर शुरू से आरम्भ कर दी जावे या समाज मे पुरोहित हो अथवा कोई और विद्वान हो तो वेद के मन्त्रों की व्याख्या जारी रखे। यह है असली वेद सप्ताह मनाने का कार्यक्रम केवल एक दो सप्ताह से क्या बनेगा निरन्तर ऐसे चलते रहना चाहिये। परन्तु धीरे धीरे होता क्या जा रहा है बहुधा समाजों में हवन आरम्भ करते समय पहले आठ मन्त्र प्रार्थना के पढ़ कर किसी जगह स्वस्ति वाचन और किसी जगह शान्ति प्रकरण पढ कर बाद में हवन कर दिया जाता है और कहीं कहीं तो दोनों ही जोड दिये जाते हैं और एक स्थान पर तो देखा गया कि आठ मन्त्र प्रार्थना के पढ लेने बाद केवल दैनिक हवन मन्त्रों की आहुतियां दे कर कार्य समाप्त कर दिया। यदि इसी प्रकार ही हमारी वेद के प्रति श्रद्धा बनती गई और हम ने ही इसे पढा तो हमे ज्ञान की प्राप्ति कैसे होगी और हम ससार को वेद ज्ञान कैसे दे सकेंगे। क्योकि गीता के चौथे अध्याय के ३९वे अध्याय मे कहा है—

श्रद्धावाल्लते ज्ञान तत्पर:
सयतेन्द्रिय: ।
ज्ञान लब्ध्वा परा शान्ति-
मचिरेणधिगच्छति ॥

अर्थ—इन्द्रियो को जीतने मे लगा हुआ श्रद्धावान पुरुष ज्ञान को प्राप्त होता है, ज्ञान को प्राप्त होकर तत्क्षण परम शान्ति को प्राप्त होता है।

अन्धी श्रद्धा तो नही होनी चाहिये परन्तु जिस ज्ञान को हम पूर्ण कल्याणकारी और ईश्वर का मानते है उसके प्रति तो हमे अत्यन्त श्रद्धा होनी चाहिये। मुसलमानो को श्रद्धा, यदि कोई कुरान (उनकी धार्मिक पुस्तक) पढ रहा है, दूसरे बडे आराम से बिना आवाज किये वहा से चला जायेगा और यदि चलते-चलते कही अजान (बाग) की ध्वनि उससे कान मे पड गई तो वह वहीं खडा हो जाएगा और जब अजान समाप्त होगी तब वहा से आगे बढेगा। इसी प्रकार सिख भाईयो को देख लीजिये गुरु ग्रन्थ का पाठ हो रहा है बच्चे भी बैठे हैं स्त्रीयां पुरुष भी है क्या मजाल कि कोई उस समय बात भी कर सके। परन्तु हम सबसे ऊचे ज्ञान वाले सब कुछ करते रहते हैं और वेद पाठ भी होता रहता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ऋषि उपकार

ज्योति ज्योत में रच गई, ऋषि वे थे महान्,
तू भी मन में याद कर, करता सब जहान् ।
पाप को जड़ से उड़ा दिया, वैदिक नाद बजा दिया ।
सत्यकी बात सत्य ही कर, हमको सत्य सिखा दिया ।
उसकी राह पे आज चल, चलता सब जहान् ।

तू भी मन में याद कर... ... ...
ब्रह्मचर्य के अन्दर रह, करते वेद प्रचार थे,
पाखण्डी आगे टिक न सके, कितने प्रबल विचार थे।
तू भी उनकी राह पे चल, चलता सब जहान् ।
तू भी मन में याद कर... ... ...

उनके बल का पार नहीं, प्रचारमें भी कोई चाल नहीं
करना है विश्व कल्याण हमें, इसके बिना काम नहीं।
तू भी उनकी राह पे चल, बनता क्यों नादान ।
तू भी मन में याद कर... ... ...

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार २०२६, ७सितम्बर १६६६ [अंक ३६

भारत सरकार और संस्कृत

अभी २ देश में सस्कृत दिवस मनाया गया। कई स्थानो मे नेताओ ने इसके महत्व पर प्रभावशाली प्रवचन भी दिये। सस्कृत को भाषाओ की माता कहा गया। इसके विशाल परिवार की लम्बी चौड़ी चर्चा भी की गई है। जनता का ध्यान इसकी ओर आकर्षित किया गया। इस योजना मे इसके प्रसार के लिए ढाई करोड की राशि भी सरकार की ओर से रखे जाने की जोर से बात भी कही गई। और भी इसकी प्रशसा मे धरती से आकाश तक की बाते मिलाकर कही गई। राजधानी देहली के सस्कृत समारोह मे तो वहा के उपराज्यपाल श्रीयुत आदित्यनाथ झा ने इस पर बड़ा ही प्रभावशाली भाषण देते हुए इसे भारत की आत्मा भी कहा। सारा राष्ट्र एक विशाल शरीर है और सस्कृत इसकी आत्मा है। इसके विकास पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया। जीवन मे इसके प्रचार करने का सन्देश दिया गया। ये सारी बाते उत्तम हैं। हमें अपने नेताओ एव सरकारी अधिकारियोके मुख से भाषाओं की जननी सस्कृत का गौरवगान सुनकर प्रसन्नता हुई है। न करने से कुछ तो करना अच्छा है। वाणी से ही सस्कृत की प्रशसा करना भी कुछ न कहने से तो काफी अच्छी बात है।

किंतु—इस पर हमे कुछ कहना है। सस्कृत दिवस आया—उस समारोह मे सस्कृत प्रेमियो के मन. सतोष के लिए लच्छेदार भाषा म प्रवचन देने से बात बनने की नही। केवल ढाई करोड का राशि इस के लिए निर्धारित कर देना तो हमारे आसू पोछने के समान है आज योजना मे मछलीपालन, मुर्गीपालन तथा सूअर पालन पर कितनी राशि रखी गई है। सरकार उस के आंकडे तो स्वय देखे। बाईस वर्ष विदेशी सत्ता को यहा से गये हो गये अब भी विदेशी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए कितनी विपुलराशि रखी जाती है। उस के साहित्य निर्माण पर व्यय की जा रही है। उस की महत्ता पर चारो ओर विविध साधनो को जुटा कर बल दिया जाता है। इस के मुकाबिले पर भारतीय जीवन की आत्मा कही जाने वाली भाषा सस्कृत पर कितना खर्च होता है इस के विकास की दशा क्या है। इस का शिक्षा मे कैसा दयनीय स्थान है। सस्कृत के प्रेमियो व विद्वानो की कितनी दुर्दशा होती है। यह सब कुछ देख कर इन नेताओ के थोथे व खोखले दावो पर आसू बहाने को दिल करता है। हाथी के दात खाने के और हैं और दिखाने के और है। वचन मे कुछ और है और मन मे और।

आज सस्कृत भाषा के साथ कितनी बडी खिलवाड की जाती है। सस्कृत को कहने को तो जननी का रूप दिया जाता है—किन्तु जो लोग इस माता से प्यार करते हैं—उनका कितना निरादर है, जीवन निर्वाह के साधन जुटाने भी कठिन हो रहे हैं—यह कौन नही जानता? कहने मे तो बेशक माता होगी किन्तु दर्जा इसका बान्दी से भी छोटा बना दिया गया है। हम अपने प्रात पजाब की बात कहते है सरकारी स्कूलो व कार्यालयो मे तो राष्ट्र भाषा हिन्दी को भी बाहर निकाल दिया गया है। उस मे लिखी अर्जी, लिखा पत्र, लिखा बिल तक भी स्वीकार नही किया जाता। सस्कृत की बात तो कही ही कैसे जाये? प्राय सरकारी स्कूलो मे सस्कृत समाप्त कर दी गई है। इस के पढाने का कोई भी प्रबन्ध नही है। न ही इसके प्रति भावना व श्रद्धा है। त्रिभाषी फार्मूला से तो और भाषाए फूल-फल रही है—किन्तु इस से सस्कृत पर तेज कुल्हाडा चला दिया गया है। सब से अधिक हानि सस्कृत की हुई है। दूसरे स्कूलो मे भी सस्कृत के साथ यही सलूक किया जाता है। कितना अन्याय और अन्धेर है कि अगरेजो के विदेशी राज्य मे तो दसवी कक्षा मे पढने वाला छात्र साईस के विषय के साथ साथ सस्कृत भी ले सकता था। किन्तु अब अपने राज्य मे साईस के साथ सस्कृत नही ले सकता है।

भारी पाबन्दी है। पढने वालो मे कितनी उदासीनता है कि आजकल शास्त्री परीक्षा मे बहुत ही थोडी सख्या मे छात्र बैठते हैं। कारण यह है कि सस्कृत पढने वालो का जब मान ही न हो तो उसे पढेगा कौन? सस्कृत पढे हुए लोगो ने अपनी सतान को इसे नही पढाया। बाते तो साफ है कि जब सस्कृत की माग न हो, जीवन के निर्वाह का काम न हो—तो पढेगा कौन? ऐसा विचार फैल गया है कि सस्कृत पढना तो जीवन मे भूखो मरना है। इसीलिए युवको ने यह पथ बदल दिया है। सर्वथा इसके प्रति उदासीनता व उपेक्षा की जा रही है। जिसका भविष्य अच्छा न हो, जो निर्वाह का साधन न जुटा सके। उसे कौन अपनाएगा? इसमे भारत सरकार की उदासीनता कैसे क्षमा की जा सकती है। वहा जो नेता महारथी बैठे है—उनको भी सस्कृत से प्यार नही है। विदेशी भाषा के रग मे रगे हैं। नही तो भारत की भाषाओ की इस जननी के साथ यह सलूक होता? जो कुछ सस्कृत के लिए सरकार ने किया वह तो हुआ—किन्तु इसके लिए कियात्मिक रूप देना होगा। सस्कृत व उसके प्रेमियो का सन्मान करना होगा, तभी यह भाषा विकसित होगी। आत्मा को आत्मा बनाओ—तब यह फूलेगी फलेगी।

—त्रिलोक चन्द्र

इसे कौन रोकेगा

अपने देश मे इस मे बडे-बडे परिवर्तनो का शोर मच रहा है। समाजवाद को लाने का प्रयत्न किया जाता है। बडे-बडे नेताओ मे भी मतभेद है। इस बार के राष्ट्रपति के निर्वाचन मे तो मतभेदो मे कमाल हो गया है। यह तो राष्ट्रीय स्तर की बात है। किन्तु सारे समाज के जीवन मे जो यह सब से भयकर तथा खोखला करने वाली कुरीति पैदा हो रही है—जिस ने समाज के परिवार के परिवार नष्ट कर दिये। जिस ने बेटियो, कुमारो युवति कन्याओ के जीवन अग्नि की ज्वाला मे भस्म करके रख दिये। जिन के कारण हिन्दु समाज अशाति का घर बन चुका है। वह है दहेज की प्रथा। आज परिवारो मे बैठी बडी आयु की लडकिया समाज की इस कुरीति पर धिक्कार फटकार कर रही है। कई तो बेचारी दहेज के अभाव मे मौत के घर जा चुकी है। कई वेदना के वातावरण मे घुल-र रही हैं तथा कई समाज दण्ड देने के लिए प्रतिका भर कर अपने धर्म व विधर्मियो के साथ चली लडके नीलामी पर र की बोली होती है। बोली देता है उसी ली जाती है। र माग प्रतिदिन तेन्दुए समान बढती ही जाती ओर युवतियो का करुण को फोड रहा है। इस क का भी ध्यान नही जाता दैनिक समाचार पत्रो मे परिवार मे देहेज लेने के लोभी लालची लडके के घ गिरी हुई प्रवृत्ति का समा है। लुधियाना के सद्गृह वार की एक पढी लिखी का विवाह बरानाला के एव के युवक के साथ हुआ। माता पिता ने बहुत कुछ तोले सोना फ्रिज तथा ब दिया। किन्तु धन के सन्तुष्ट न हुए। लडकी को बोले कि माता पिता से रुपये ले आओ। माता पिता मानी थे। कन्या के दुख हो गये। गोलिस को ले कर मकान पर छापा मारा का का सारा सामान व पम निव सभी कुछ पत्रो मे छपा है।

इस दहेज के कलक व रोकेगा? बैंको का राष्ट्रिय कर हुआ। किन्तु इस बीमारी तथ के लालचियो की मनोवृत्ति को बिना तथा कठोर दण्ड दिये समाजवाद का नारा कोरा ही है। कठोर पग उठाया जाये

सिख गुरु और वेद

ी अमृतानन्द जी सरस्वती वैदिक साधना आश्रम)

रे बन्धुयो ! जैसे प्राणी की आख बिना सूर्य की सहायता के कुछ देख सकती यदि ससार मे सूर्य न होता तो आखो का होना बेकार यदि प्रणियो को आखे न मिलती तो सूर्य बेकार था। ठीक इसी तरिक इन्द्रिय बुद्धि रूपी आख ज्ञान के सूर्य वेद के बिना बेकार । राम यात्री के लिए जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश आवश्यक है, गर सत्य के मार्ग पर चलने के लिए सत्य ज्ञान वेद का होना भी क है। जिस पर सूर्य सृष्टि के आदि से लेकर आज तक एक ही है कार ज्ञान का सूर्य वेद भी नही बदलता। सदा एक रस रहता है। कृति हमे उपदेश दे रही है कि जिस प्रकार ईश्वर की बनाई प्रत्येक के सहायक देवता अटल है इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान वेद भी अटल नही बदलता। परिवर्तन सदा न्यूनता को पूर्ण करने अथवा बुरे तत्वो य को निकालकर अच्छे विषय को प्रवेश करनेके लिए होता है। परतु के सर्वज्ञ होने से न तो उसके ज्ञान मे कमी आ सकती है और न ही स मे बुराई या भूल स्वीकार की जा सकती है। अन्यथा उसके सर्वज्ञ मे दोष आता है इस से सिद्ध हो जाता है जहा या जिन पुस्तको मे न्त परिवर्तन हो गया हो तो वह ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक हो सकती। जिस प्रकार बुद्धि की सहायता के बिना या आखे बन्द चलने से यात्री को पग-पग पर ठोकर लगने का भय है इसी प्रकार ज्ञान के प्रकाश बिना धर्म मार्ग पर चलना या ससार यात्रा करना ी और भय का कारण है। यह भी याद रहे कि ईश्वरीय सत्य ज्ञान । बुद्धि का सहायक है, यदि वह बुद्धि के विरुद्ध है तो सत्य ज्ञान हो नही सकता। अत स्पष्ट है कि एक मात्र वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। ी सत्य सिद्धान्त को दसो सिख गुरुओ ने भी अपनी वाणी मे स्वीकार या है जैसा कि—

१ चौथी उपए चारे वेदा, खाणी चारे वाणी भेदा।
(बिलावल म० १)

अर्थात - परमात्मा ने चारो वेदो का प्रकाश किया, चार प्रकार के णी या योनिया और वाणी के भेद बनाए।

२ सचे चार वेद जिन साजे, चार खाणी चार जुगा।
(आसा म० २)

अर्थात '—जिस परमात्मा ने चारो वेदो का ज्ञान दिया उसी ने गर प्रकार के प्राणी उत्पन्न किए और समय को चार युगो मे बाटा।

३ हरि आज्ञा होए वेद, पाप पुण्य विचारिया (मारू म० ५)

अर्थात —परमात्मा की आज्ञा से वेद प्रकाशित हुए जिसमे पाप और पुण्य या धर्म और अधर्म का विचार या उपदेश है।

४ दीवा बले अन्धेरा जाए, वेद पाठ मति पापा खाए।
उगने सूरज न जापे चन्द, जहा ज्ञान प्रकाश अज्ञान मिटन्त।
वेद पाठ ससार की कार, पढ पढ पडित करें विचार
बिन बूझे सब होए खुवार, नानक गुरुमुख उतरसि पार।
(सूही म० १)

अर्थात '—दीपक जलने पर जैसे अन्धकार दूर हो जाता है सूर्य उदय होने पर जिस तरह चन्द्रमा दिखाई नही देता उसी प्रकार वेद ज्ञान का प्रकाश होने पर अज्ञान अधकार दूर हो जाता है। वेद का पढना तो ससार भरकी कार या मनुष्य का कर्तव्य है कि वह वेदार्थ का विचार करे, बिना वेदार्थ विचार के सब दुखी खुवार होतेहैं। नानक जी कहते है कि गुरमुखज्ञानी या वेद ज्ञान पर आचरण करने वाली ही ससार सागर से पार होने है।

दशम गुरु गोविन्द सिह जी को वाणी दशम् ग्रन्थ मे है जिस मे उन्होने कहा है कि :—

२. अहो गुण गावत वेद सुनो तुम, रूप न रग लखयो कछु जाई।

अर्थात् —हे मनुष्यो सुनो। वेद प्रभु का गुनगान करते हैं उस का रग और रूप लखा नही जाता आगे कहा है :—

२. वेद जावे जहे जाप सदा करिए।

जिस परमात्मा का जाप जैसे वेद करता है वैसे ही उस का जाप करना चाहिए। आगे लिखते है।

३ नही वेद वाक्य प्रमाण हैं, मत भिन्न बखान हैं।

आज्ञानी लोग वेद को प्रमाण नही मानते और भिन्न २ मतों का प्रचार करते हैं अर्थात् अनेको मत फैलाकर अनैतिका फैला रहे हैं।

प्यारे पाठक गण ! ईश्वरी ज्ञान वेद के पक्ष मे गुरुवाणी में अनेकों प्रमाण हैं। जो "खालसा ज्ञान प्रकाश" नामी पुस्तक मे अर्थ सहित लिखे हैं। सत्यार्थी सज्जन उस को पढ़कर लाभ उठा सकते हैं।

वर्षा

वर्षा अमृतदायनी है, जीवनदायनी है भौतिक तथा अध्यात्मिक दृष्टि

सन्तप्त धरती के लिए वर्षा ठडक भी पहुचाती है और जीवन तथा उपजाऊ शक्ति भी देती है। वर्षा बादलो से आती [illegible] बादल धरती पर विद्यामान जल-कोषों, दरियाओ, नदी नालों [illegible] से उठने वाले जल-परमाणुओ अर्थात भाप से बनते हैं। यह क्रम अज्ञात रूपेण निरन्तर चलता रहता है। इसी क्रम के आधार पर पृथ्वी पर बसने वाले जीवों का **भौतिक** जीवन स्थिर है और चलता रहता है। यह तो हुई बात भौतिक जीवन की।

आत्मिक जीवन की तृप्ति कैसे हो ? आत्मा को कैसे **ठंडक, शांति शक्ति** तथा **जीवन** मिले ? इन सब का स्रोत क्या हो सकता है, कहना न होगा कि यह सब तो सदाचार, **सद्विचार** और **सद्व्यवहार** के अतिरिक्त और कहीं से प्राप्त होने के नही कोई चाहे और लाख यत्न कर ले। यह पदार्थ वर्षा-जल की सिचाई ईश्वर प्रदत्त स्रोत से ही प्राप्त हो सकते हैं। जैसे वर्षा का प्रबन्ध ईश्वरी नियमों पर अवलम्बित है ऐसे ही उपरोक्त सद्पदार्थ भी ईश्वर के अतिरिक्त और कोई शक्ति देने वाली नहीं है।

सूक्ष्म तथा गहरे विचार से यह बात आसानी से समझ में आ जायेगी, किसी के समझाने से नही।

ऐसे आस्तिक्य भावों से अपनी आत्मा को भर लेने से आत्मा को ठडक पहुचती है। शान्ति, स्थिरता तथा शक्ति मिलती है। जैसे बादलों के बिना वर्षा नही होती, ऐसे ही ईश्वरीय विश्वास और प्रणिधान के बिना आत्मा पर शान्ति आदि सद्गुणों की वर्षा नही होती। जैसे भौतिक बादल बनाने के लिये समुद्र रचे। ऐसे ही ज्ञान को वर्षा करने के लिए अपना ज्ञान-भण्डार 'वेद' के रूप मे दिया है। जैसे महाराज भागीरथ गगा को हिमालय से लाए उसी प्रकार महर्षि दयानन्द वेद-गगा को ससार में उनके विशुद्ध रूप मे फिर से लाए है। भाग्यवान हैं वह लोग जिनको इस अमृत को पान करने का अवसर प्राप्त हो सके क्योकि वेदो का आश्रय लेने से सभी विद्याये और पदार्थ मिल जायेंगे।

—बूटाराम जिज्ञासु, मन्त्री जिला वेदप्रचारिणी सभा होशियारपुर

आर्य समाज टिंटोली का वेद सप्ताह

जि० रोहतक के गाव टिटोली मे आ० स० की ओर से १४ से २० अगस्त तक बडी धूमधाम से वेदसप्ताह मनाया गया। जिस मे आर्य-प्रादेशिक सभा जालन्धर के उपदेशक श्री भूराराम जी बानप्रस्थी पं० प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर श्री सुमेरसिंह व रणजीतसिंह जी ने वैदिक प्रचार किया।

आर्यसमाज मन्दिर मे नित्य प्रति यज्ञ किया गया। यज्ञ पर उपदेश व भजन भी होते रहे। यज्ञ की कार्यवाही प० प्रभदयाल जी ने करवाई। यज्ञोपवीत भी काफी सख्या मे दिए गए। यज्ञ और प्रचार का प्रभाव गाव के लोगो पर बहुत ही अच्छा रहा। उपस्तिथि दिन-दिन बढती गई। स्त्री-पुरुष बच्चो मे उमग भर गया।

आर्यसमाज टिटोली की ओर से आर्य प्रादेशिक सभा को १९०) एक सौ नब्बे दान दिया गया। सभा टिटोली समाज का धन्यवाद करती है।

★ सरस्वती वेद वाणी हमें प्राप्त हो ★

—आशु राम आर्य पुरोहित चण्डीगढ़—

पावका नः सरस्वती वाजोभिर्वा जिनी वतो। यज्ञ वष्टु धिमा वसु. ऋग्वेद १-३-१० हे वाक् पते, सर्व विद्यामय ! हमको आपकी कृपा से (सरस्वती) सर्वशास्त्र विज्ञान मुक्त वाणी प्राप्त हो। तथा (वाजोभि:) उत्कृष्ट अनादि के साथ वर्तमान (वाजिनोवती) सर्वोतम क्रिया विज्ञान मुक्त (पावका) पवित्र स्वरूप और पवित्र करने वाली सदैव सत्य भाषण मम, मगल कारक वाणी आपकी प्रेरणा से प्राप्त होके आपके अनुग्रह से (धिमा) परमोत्तम बुद्धि के साथ वर्तमान (वसु) निधि स्वरूप वेद वाणी यज्ञ सवशास्त्र बोध और पूजनीमतम आपके विज्ञान की (वष्टु) कामना युक्त सदैव हो ! जिससे (न.) हमारी सब मूर्खता नष्ट हो और हम पाडित्य युक्त हो ॥

वेदवाणी का महत्व

वेद की इस ऋजा का अर्थ प्रभु के प्यारे पुत्र ऋषि दयानन्द ने अत्यत प्रेम से गद गद हो प्रार्थना रूप मे किए है कि हमारी सब मूर्खता नष्ट हो और हम महा पाडित्य युक्त हो। कैसे? सरस्वती वेद वाणी की उपासना से। जिसका अर्थ है सर्वशास्त्र विज्ञान विविध ज्ञान युक्त वाणी, जिस मे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का धन है, कोष है, सम्पदा है परम प्रभु के ससार की तथा इस की प्राप्ति का भी सर्वोत्तम विज्ञान है। "अह मनुष्यणाम् वेदस्य निधियो भूमासम।" (देखो पारस्कर गुह्य सूत्र और सस्कार विधि) वेदारम्भ सस्कार से प्रविष्ट ब्रह्मचारी और शिक्षा समाप्त कर गृहाश्रम मे प्रवेश करने वाला स्नातक यह महान सकल्प करता है कि हे भगवान मुझे शक्ति दो कि मैं मनुष्यो के बीच में वेद विद्या के कोष का स्वामी, रक्षक और फैलाने वाला होऊ। वस्तुत. यज्ञ रूप पूज्यतम भगवान और श्रेष्ठ-तम कर्म यज्ञ की प्रेरणा और प्रकाश भी वेद वाणी से मिलता है। जिसके पठन-पाठन से ही सभी शास्त्रो के बोध और ज्ञान का मार्ग खुल जाता है, जिस से अन्नादि ऐश्वर्य और विज्ञान युक्त बुद्धि पूर्वक कर्मों की उपलब्धी होने से मानव धर्मार्थ, काम मोक्ष को सिद्ध करने मे समर्थ हो जाता है। इसलिये महाराज ने वेदो के चार मुख्य विषयो का वर्णन करते हुए ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे ज्ञान, कर्म, उपासना की अपेक्षा विज्ञान धन विषको वग माना है क्योंकि विज्ञान मे ही वेदो का मुख्य तात्पर्य है। लिखते हैं कि सो भी दो प्रकार का, एक तो परमेश्वर का यथावत ज्ञान उसकी आज्ञा का पालन करना। दूसरा उसके रचे हुए सब पदार्थोंके गुणो को ठीकर विचार कर उसे कार्यमे लाना अपने भाषा भाष्य मे प. जयदेव जी ने लिखा कि शुद्ध जलो से युक्त नदी के समान उत्तम ज्ञानमयी और गुरु परम्परा से बहती आई वेद वाणी सरस्वती और उसको धारण करने वाले विद्वान जन परस्पर सग, उत्तम कर्म और ज्ञान के ऐश्वर्य को धारण करने वाले होकर यज्ञ, शिल्प व्यवहार विद्याभ्यास, आत्मा और राष्ट्र को प्रकाकाशित करे। इस वेद वाणी के लिए तो ऋषि ने ईश्वर से प्रार्थना की है क्योंकि जब तक ब्रह्म का विज्ञान विवेक इसकी वाणी सरस्वती वेद के द्वारा प्राप्त नही होता तब तक केवल पण्डित्य मूर्खता को दूर नही कर सकता। यदि ऐसा होता तो वेद भाष्य कार रावण मूर्खता वश हो अपने महापाण्डित्य को कलकित न कर लेता। इसलिए ऋगवेद भाष्य मे इस मन्त्र भावार्थ को देते हुए महाराज ने लिखा कि सब मनुष्यो को चाहिए कि वह ईश्वर की प्रार्थना और अपने पुरुषार्थ से सत्य विद्या और सत्य वचन मुक्त कामो मे कुचल और सबके उपकार करने वाली वाणी को प्राप्त करे।

केशवचंद को दयानंद का उत्तर

इस वेद वाणी के प्रचार और प्रसार पर गुरु विरजानन्द की आज्ञा से व्रत बद्ध हो अपना सारा जीवन दयानन्दने न्योछावरकर दिया और जब तत्कालीन भारत सुधारक बाबू केशव चन्द्रसेन ने आप को अपार विद्या सरस्वती के दर्शन करके कहा कि क्या ही अच्छा होता यदि आप अग्रेजी पढ कर विदेशो में गमन कर अपने वेद ज्ञान के दिग दर्शन कराने से इनका सुधार कर सकते, तो महाराज ने झट उत्तर दिया कि आप जैसे देश सुधारक यदि विदेशी भाषा का मोह छोड कर अपने देश की भाषा, सस्कृति और वेद विद्या को जानते होते तो स्वदेश का कितना सुधार हो जाता।'

वेदवाणी से रहित शूद्रता

आक्सफोर्ड मे सस्कृत पढाने के लिये भारत से गये श्री श्याम कृष्ण वर्मा को महर्षि ने लिखा कि वहा आप वेद की ही शिक्षा दिया करे और कुछ नही। इस बात का सदा ध्यान रखे। सरस्वती वेद विद्या के महत्व को वर्णन करने हुए सत्यार्थ प्रकाश मे मनुधर्म शासत्र के प्रमाण से आप ने लिखा कि—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्त्रम्
कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु
गच्छति सान्वय ॥
मनु २-१६८

अर्थात जो वेद को न पढके अन्यत्र किया करता है वह अपने पुत्र पौत्र सहित शूद्र भाव को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है।

पं. गुरुदत पर प्रभाव

ऋषि के अन्तिम दर्शन कर जब महाविद्वान दार्शनिक प गुरुदत्त अजमेर से लौटे तो कितना परिवर्तन हुआ जीवन मे ? लाहौर गवर्नमैंट कालेज मे विज्ञान के प्राध्यापक थे सर्वप्रथम भरती प्रोफैसर। पहले इन से विज्ञान के प्रोफैसर विदेश से आते थे। किन्तु इतने महान मद और आय को ठोकर मार कर त्यागपत्र दे दिया। क्यो ? इसलिए कि इससे आर्य समाज के काम और योग के अभ्यास मे विघन डता था। कालेज की यह सेवा कितनी थी ? केवल दो घण्टे प्रतिदिन परन्तु इनकी तडप तो वेद ज्ञान के प्रसार की थी अहोरात्र जिसके लिए उन्होने लिखा है कि आधुनिक विज्ञान मे चाहे कितने गुण क्यो न हो वह जीवन की समस्या का समाधान नहीं कर सकता। अष्टाध्याई और निरुक्त को हृदय से लगाए हुए ऐसे महा वेद विज्ञानी अल्पायु युवा काल मे काल का ग्रास बन हमे छोड गए। इस वेद दीपक पर जल मरने वाले उस पतगे ने कहा था कि काश मैं सारी अग्रेजी पश्चिमी शिक्षा को भूल सकता और केवल सस्कृत जानता होता तो अच्छा था।

उपनिषदों में वाणी का महत्त्व

उपनिषद ने कहा है कि 'वेदा हि रसा, वेदा हि अमृता तानि वा एतानि अमृतानमृतानि।' वेद ही रसो का रस है। अमृतो का अमृत है। वेद मत्रो की आराधना मे सविता के स्वरूप का दर्शन होता है। फिर आगे लिखा स म एतदेवममृत वेद,... तावदाधिपरम स्वराज्म पर्येता। जो इस अमृत वेद को जानता है वह फिर काल तक स्वराज्य मे रहता है इत्यादि फिर लिखा कि 'वागेव ब्रह्मणश्चतुर्थ पाद' वाणी ब्रह्म का चौथा पाद अर्थात ईश्वर स्वरूप का चतुर्थ अश है। पुरुषो वाव यज्ञ तस्य मनश्च वाक च वर्तनी' मनुष्य शरीर मे आत्मा ही यज्ञ है मन तथा वाणी दो इस के मार्ग या साधन हैं। फिर कहा 'वाग्वाव वसिष्ठ.।' वाणी है वसिष्ठ है जिस मे सरक्षा और सम्पति निवास करती है। जेबलि राजा ने गौतम को कहा कि पुरुषो वावगे नमाग्निस्तस्य वागेव समित' पुरुष ही अग्नि है और वाणी उसकी समिधा है मनुष्य जीवन को प्रचण्ड करने का ईधन है। फिर कहा कि यह वेद वाणी ब्रह्म है इसकी उपासना करो।

—

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

कानपुर में पाकिस्तान के दृश्य

सात हिन्दू कन्याएं मुसलमानों के यहां बरामद : तीन अभियुक्त गिरफ्तार।

कानपुर। पिछले चन्द दिनो मे आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य (सभासद-नगर महापालिका कानपुर) के सद प्रयत्नों तथा साहस से सात सुन्दर स्वस्थ, हिन्दू युवतियां मुसलमानो के मकानो से बरामद की गई हैं। पुलिस ने इस सम्बन्ध में तीन मुसलमानो को गिरफ्तार किया है।

एक १७ वर्षीय ठाकुर परिवार की रीवा मध्य प्रदेश की युवती शकुन्ता देवी को श्री देवीदास आर्य ने अत्यन्त नाटकी ढग से साहस के साथ बाबू पुरवा मे कल्लू खा व फतेह मोहम्मद के मकान से बरामद किया। और पुलिस की सहायता बगैर श्री आर्य ने कल्लू को पकड कर थाना बाबू पुरवा पहुचाया। जहा उसको गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। कहते हैं कि शकुन्ता को कल्लू के मकान मे रोते देख करके उसका एक हिन्दू पडोसी थाना मे शिकायत कर आया परन्तु पुलिस ने कोई ध्यान नही दिया। उलटा कल्लू व उसका भाई उक्त शिकायत कर्त्ता के पीछे चाकू लेकर घूमते रहे। तब उसने आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य जो ऐसे कार्यों मे रुचि रखते हैं, के यहा सूचना दी। श्री आर्य ने पुलिस के और क्षेत्रीय जनता की सहायता से शकुन्ता को मुक्त कराया। फतेह मुहम्मद व उसका एक अन्य साथी फरार हो गये। शकुन्तला ने न्यायालय के सामने बताया कि उसका विवाह गत वर्ष घाटमपुर प्रताप गढ उत्तर प्रदेश में ठा० जगतनारायणसिंह के साथ हुआ था। सुसराल मे उसके साथ इसलिए दुर्व्यवहार होता था। चू कि वह निर्धन परिवार की थी सुसराल वाले उसे रखना नही चाहते थे। एक दिन उसका पति रीवा पहुचाने के बहाने रेल गाडी मे चढा कर भाग गया। रास्ते में उसको एक अपरिचित व्यक्ति मिला जिस ने अपना नाम भागवत प्रसाद बताया। उसने असाधारण सहानुभूति दिखाई और रीवा पहुचाने का उसे विश्वास दिलाया। तब वह उसे पहले इलाहाबाद ले गया बाद मे कानपुर ला कर कल्लू व फतेह मोहम्मद के मकान मे बन्द कर दिया। एक रोज़ एक सिपाही किसी की शिकायत पर कल्लू के वहा आया और कुछ बोल करके चला गया। तब दूसरे दिन एक नेता श्री देवीदास आर्य और उसे थाने पहुचाया। लडकी अनाथालय भेजी गई और अभियुक्त को प्रताप गढ भेजा गया। वहा मुकद्दमा चलेगा।

इस प्रकार जूही स्थित महापालिका के नव-निर्मित बगलो मे एक बगले से तीन हिन्दू युवतिया बरामद करके मोहम्मद उम्र को गिरफ्तार किया गया। उसने तीनो सुन्दर युवतियो को व्यभिचार कराने के लिए बन्द रखा था।

इस प्रकार कुछ दिन पहले थाना अनवर गज क्षेत्र मे फूल वाली गली मे स्थित सलीम के चकले से एक १५ वर्षीय पजाबी युवती सन्तोष को श्री आर्य ने अकथनीय साहस से बरामद किया था। वह लडकी तीन महीने से वहा बन्द थी और बलपूर्वक उस से पेशा कराया जाता रहा। एक बार उसने चकले से भागने की कोशिश की तो सलेम ने एक सरीए से उसका पैर तोड दिया ताकि वह पुनः भाग न सके। पडोसी लोगो को यह सब कुछ पता था परन्तु सलीम से सब भयभीत थे। उसने कुछ दिन पूर्व एक महिला को बिल्कुल नग्न करके उसको मुहल्ले मे घुमाया था। तब किसी ने चू तक नही की थी। सन्तोष के बरामद होने पर उसके पिता ओम प्रकाश सेठी ने बताया कि उसकी पुत्री का स्वस्थ आधे से भी कम रह गया है। बाद मे पुलिस सलीम के यहा से दूसरी दो हिन्दू युवतियों को बरामद किया! सलीम मौका पर से तो भाग गया था परन्तु कुर्की होने पर अदालत मे हाजिर हो गया था।

शिव दयाल मन्त्री
आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर

आर्य समाज और वेद

[प्रा. श्री भद्रसेन, जी अनुसन्धान केन्द्र घरौण्डा करनाल]

महर्षि की दृष्टि मे "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, जब सर्व सत्य वेदो से प्राप्त होता है जिस मे असत्य कुछ भी नही तो उन को ग्रहण करने मे शका करनी अपनी और पराई हानिमात्र कर लेनी है। वेदोक्त सब बाते विद्या अविरुद्ध हैं, वेद विद्या हीन लोगो की कल्पना सर्वथा सत्य क्यो कर हो सकती है, नि सन्देह सर्वशका निवारक वेद मत, वेदोक्त सत्य मत, वेदादि सत्यशास्त्र, वेद तो सब विद्याओ का भण्डार है, भला वेदादि सत्यशास्त्रो को माने बिना तुम अपने वचनो की सत्यता और असत्यता की परीक्षा और **आर्य्यावर्त्त की उन्नति भी कभी कर** सकते हो ? मनुष्यो मे सत्यासत्य का यथावत् निर्णय करने वाली वेद विद्या, बिना करण विद्या वेदो के अन्य कार्य विद्याओ की प्रवृत्ति मानना सर्वथा असम्भव है। जैसा वेदो मे कहा है उस को मानो तभी तुम्हारा कल्याण होगा अन्यथा नही, सत्य तो वेदो के स्वीकार मे गृहीत होता ही है। इन विशेषणो से स्पष्ट है कि महर्षि की वेद के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा, निष्ठा और असीम प्यार था और उनको वेद विद्या एव विज्ञान अविरुद्ध तथा सत्य युक्त होने से प्राणसम प्रिय थे। तभी तो मोक्षमूलर ने श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा था "स्वामी दयानन्द के धर्म और नियमो की नीव ईश्वरकृत वेदो पर आधारित थी। महर्षि का यह अटल विश्वास था कि वेदो की विचारधारा से ही ससार का कल्याण, विकास एव जगत मे सुख, शाति और समृद्धि हो सकती है। इसका सकेत सत्यार्थ प्रकाश और पत्र व्यवहार मे स्थान स्थान पर किया है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी, अतएव उसके तृतीय नियम मे लिखा है 'वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

प्रारम्भ मे आर्यसमाज ने इस क्षेत्र मे बहुत ही प्रशसनीय कार्य किया। समय के साथ इस क्षेत्र में आज इतनी शिथिलता आ गई कि वेद प्रचार एक गौणकार्य ही बन कर रह गया है और विशेषत वैदिक साहित्य का सृजन। आज स्थिति यहा जा पहुची है कि जिस वेद प्रचार के महान् कार्य की सिद्धि के लिये आर्य समाज और समाजो की सुव्यवस्था, सुदृढता एव एकता के लिए जिन आर्यप्रतिनिधि और सार्वदेशिक सभाओ की स्थापना की थी वे आज स्वार्थ पूर्ति के लिए दल बन्दी की शिकार हो कर वेद प्रचारार्थ एकत्रित जनता की खून पसीने की कमाई को स्वार्थ-साधन और अभियोगो में समाप्त कर रही है। ऐसी स्थिति मे उन से वेद प्रचार-प्रसार द्वारा महर्षि दयानन्द की अभिलाषो की पूर्ति की आशा दुराशामात्र ही है। इस स्थिति को देख कर यही कहना पडता है, 'अभय मित्रात्।'

वेद सप्ताह और श्रावणी के पवित्र पर्व पर आर्यजनता और समाज के अधिकारियो से प्रार्थना है कि महर्षि की भावनाओ की पूर्ति के लिए नेताओ की बिना प्रतीक्षा किए इस कार्य को अपने हाथ मे ले। इस कार्य की सफलता और सिद्धि की सरलतम विधि यह है कि इस शिथिलता एव विगलता की स्थिति मे आर्यसामाज को नई दिशा देने के लिए प्रथम सुव्यवस्थित योजनाओ के चिन्तन और निर्माण के लिए आर्यसमाजे अपने क्षेत्र के या अपेक्षित आर्यनवयुवको को एकत्रित करे और पारस्परिक वार्तालाप एव गोष्ठियो द्वारा कार्य की स्थायी योजना बनाई जाए। जैसे कि विज्ञानभवन दिल्ली मे होता है ये गोष्ठिया एक सप्ताह तक चले, इनको प्रदर्शन से दूर रखा जाए चाहे इसमे पाच दस ही व्यक्ति आमन्त्रित किए जाए इनमे आर्यसमाज की कार्यपद्धति पर निबन्ध पढे जाए तथा विचार विनियम हो। इसका सारा आर्थिक भार समाजे वहन करे। निर्णीत योजनाओ की पूर्ति लिये तत् तत् कार्यक्षम व्यक्तियो को सर्वविध सहयोग दिया जाए। व्यक्तियो की कमी नही केवल आवश्यकता है उदारमना दूरदर्शि अधिकारी सज्जनों की जो उपयुक्त व्यक्तिओ से उपयुक्त कार्य ले सके।

दूसरा सरल उपाय यह है कि समृद्ध आर्य समाजे और सज्जन विभिन्न विभिन्न क्षेत्रो मे कार्य करने वाले एक-एक दो-दो आर्य युवको को सम्भाले हर प्रकार का सहयोग देकर उनसे अतिरिक्त समय मे कार्य करवाये क्यो कि आज धार्मिक सस्थाओं की अस्थिर स्थितियो और नीतियो के कारण युवक अपने भावी जीवन को सम्मुख रख कर उस क्षेत्र मे सीधा कार्य करने से सकोच करता है। अतिरिक्त समय मे विशेषत उन मे आर्य साहित्य का कार्य करवाया जाए। एक तो आज सुनने की ओर जनता की विशेष रुचि नही है तथा वाणी की अपेक्षा लेखनी का क्षेत्र और प्रभाव अधिक व्यापक, चिरस्थायी एव अधिक विश्वसनीय है तथा अधिक रुचिकर भी है। जैसे इतिहास का प्रोफेसर या विद्वान् आर्य साहित्य के ऐतिहासिक पक्ष को प्रकाश मे ला सकता है और आर्य साहित्य का ऐतिहासिक मूल्याकन प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रकार विविध विषयो के विद्वान् स्वविषय की दृष्टि से विशेष सहयोग दे सकते है। इस दृष्टि से अनेक युवक प्रत्येक स्थान पर प्राप्त हो सकते है और इस प्रकार अल्प व्यय मे ही प्रत्येक समाज स्वावलम्बी ढग से वेद प्रचार और महर्षि के मिशन की पूर्ति के लिए शनै शनै महान कार्य कर सकता है।

महर्षि दयानन्द के अरमानो की पूर्ति चाहने वाले आर्य सज्जनो और आर्य समाज के अधिकारियो! आज महर्षि का कार्य आपकी बाट जोह रहा है। जिस कार्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी क्या वह अधूरा ही रह जाएगा? आर्य समाज के सदस्य और अधिकारी का अभिप्राय है वेद प्रचार की पूर्ति की प्रतिज्ञा। अत वेद सप्ताह के पर्व पर हम सब मिल कर कटिबद्ध हो और धनवान धन की तथा विद्वान विद्या की आहुति डाल कर इस यज्ञ को पूर्ण करे।

ग्राहक महानुभाव पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर भेजते समय अपनी ग्राहकसख्या अवश्य लिखने की कृपा करे

—व्यवस्थापक

प्रादेशिक सभा का वद प्रचार कार्य

आर्यसमाज पोली का वेद सप्ताह

जि० जीद के पौली गाव मे आर्यसमाज पौली की ओर से ता० ४ से १२ अगस्त तक वेद सप्ताह मनाया गया। आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के उपदेशक श्री भूराराम जी वानप्रस्थी, प० प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर श्री समेरसिह व रणजीत सिह जी ने बडे समारोह के साथ प्रचार किया। प्रातःकाल यज्ञ भी होता रहा।

प्रचार गाव के हर एक मुहल्ले किया गया। दो दिन ब्राह्मणो ने भी अपने मोहल्ले मे बडे इतजाम के साथ प्रचार करवाया। दिनरात वारिस वार बार आती रही परन्तु फिर भी लोग बडे उत्साह से प्रचार मे आते रहे। इस शुभ कार्य मे श्री मन्त्री प्रीतसिह जी मन्त्री चतुरसिह व प० हेमराज जी ने विशेष भाग लिया। आ० स० पौली की ओर से सभा को ९२) रु० दान दिया गया। सभा पौली समाज का धन्यवाद करती है।

—सभा मन्त्री

वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है

वेद में श्रद्धा

(पृष्ठ २ का शेष)

पुरानी बात याद आई है पुराने पुरुषो मे जिन्होने वेद की शकल भी न देखी थी और जानते भी न थे कि वेद क्या है परन्तु उसे ईश्वरी वाणी मानते हुए वेद के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा थी। हमारे नगर बछोमल्ली (पाकिस्तान) मे आर्य समाज का बडा प्रभाव था हर वर्ष वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से होते थे और हर उत्सव पर शास्त्रार्थ लगभग सब मतो से अवश्य होते थे। वहा एक बहुत अच्छा परिवार था जोकि चार भाई थे और उनके पिता जी बहुत वृद्ध थे। उनमे तीन भाई आर्य समाजी और एक भाई सनातन धर्मी था और उनके पिता जी सनातन धर्मी थे। सबसे बडे भाई आर्य समाज के मन्त्री थे और सनातन धर्मी भाई सनातन धर्म सभा के मन्त्री थे। एक बार सनातन धर्म सभा से शास्त्रार्थ हो रहा था दोनों ओर के पंडित उदाहरण रूप मे वेद मन्त्रो का उच्चारण करते थे, उन सब के वृद्ध पिता जी जो कि बहुत ही सज्जन पुरुष थे शास्त्रार्थ देखने के लिये आये, लाठी का सहारा लिये पंडाल मे चले गए परन्तु जाते ही चन्द मिन्टो के पश्चात वापस आ गए मैं गेट पर उन से मिला और पूछा कि क्या कारण आप जल्दी वापस जा रहे हैं, तो उन्होंने जो शब्द कहे वह सुनिये, उन्होने कहा—'राम ! राम !! राम !!! देखो जी अनर्थ हो रहा है न स्नान किया न मुह हाथ धोया, न कुल्ली की और फिर पाऊं मैं जूते भी पहने यह लोग पुर्ल-पुले वद मन्त्र पढे जा रहे है। इन शब्दो से साफ प्रतीत होता है कि उन की श्रद्धा वेद के प्रति ऐसी थी कि यदि वेद के मन्त्रो का उच्चारण करना हो तो शुद्ध पवित्र होकर उत्तम शुद्ध स्थान पर बैठ कर करना चाहिए और उत्तम आसन धूप आदि जला कर पाठ करना चाहिये यह थी असली श्रद्धा यदि इस श्रद्धा के साथ वेद का पढना-पढाना भी होता तो कितना अच्छा होता परन्तु अब वेद मत्रो के उच्चारण करने वाले तो हम सब है परन्तु यह शुद्ध पवित्र होकर न जाने कितने पाठ करते है और फिर बुरा न मनाए कोई भाई हमारे कई भाई शुद्ध मन्त्रो का उच्चारण भी नही कर पाते। हर एक को अवश्य वेद मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण करना चाहिए। किसी अच्छे विद्वान से शुद्ध करा लेने चाहिए।

इसलिए वेद के प्रति श्रद्धा बनाने के लिए यदि अपने स्वाध्याय से कुछ प्राप्त करना है तो उसके लिए अति आवश्यक है कि जितना भी समय आप स्वाध्याय मे दे सके वेद पढे, शास्त्र, उपनिशद तथा स्वामी दयानद जी कृत ग्रन्थ पढे इसके लिए शुद्ध पवित्र होकर, शुद्ध पवित्र एकान्त, शान्त स्थान मे बैठ कर उत्तम पवित्र आसन पर बैठ कर चन्द घडिया ससारिक धधो को भुला कर स्वाध्याय करे। आप को इससे वह कुछ प्राप्त होगा जिसको मै लेखनी द्वारा वर्णन नही कर सकता। परन्तु इसके साथ श्रद्धा का अभाव न हो। हर घर मे वेद की पुस्तक का होना आवश्यक है। भाष्य हो तो बढिया बात है। यदि ऐसा न हो सके तो ऋषि-दयानन्द जी की लिखी आर्याभिविनय पढिए। जिसमे स्वामी जी ने वेदो के १०८ मन्त्र बडे उत्तम व्याख्या सहित दिए हैं। उनका पाठ नित्य प्रति करें।

भगवान से प्रार्थना है कि वह शक्ति देवे तथा हम ऋषि ऋण से उऋण होवे।

मत्र्ति पूजकों को ... की खुली घोषणा

सौ वर्ष हुये तब महर्षि दयानन्द जी महाराज ने मूर्ति पूजा पर काशी मे शास्त्रार्थ किया था, महर्षि के युक्ति प्रमाण अकाट्य थे, मूर्ति पूजा के पक्ष-पाति उनके सामने ठहर न सके और गडबड गुटाला करके चले गये, मैंने लगभग ४० वर्ष पहले से भिन्न २ विषयो पर शास्त्रार्थ की घोषणा कर रखी है। इस समय मे काशी शास्त्रार्थ की शताब्दि मनाता हुआ विश्व भर के मूर्ति पूजको को मूर्ति पूजा विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिए निमन्त्रण देता हू।

वह मेरे साथ शास्त्रार्थ करे।

विषय यह होगा :—क्या ईश्वर की मूर्ति बनाना और उसकी पूजा करना वेदादि सत्य शास्त्रो और बुद्धि के अनुकूल है—?

अमर स्वामी परिव्राजक
सन्यास, आश्रम, गाजियाबाद
दिल्ली।

...ोती ★

...ना, लोहे की खान से लोहा आदि ...भक्ति रूपिणी आनन्द की खान से सुखों की प्राप्ति होती है। मुक्ति का इस खान का पता सत्सग द्वारा मिलना सम्भव है। सत्सग विमुख प्राणी उसे कभी प्राप्त नही कर सकता।

जिला होश्यार पुर में वेद प्रचार की धम

जिला होश्यार पुर मे श्री पं० तेज राम जी महोपदेशक सभा मन्त्री जी की आज्ञानुसार वेद प्रचार कर रहे हैं। ३ अगस्त को प० जी का "पुर्नजन्म" पर आर्य समाज होश्यार पुर मे भाषण हुआ। जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पडा। ४ से ७ अगस्त तक पडित जी आर्य समाज जैजो मे भाषण देते रहे। जैजो से सभा को वेद प्रचार धन ४५ रुपए प्राप्त हुए। ९ अगस्त को पडित जी ने डी. ए. वी हाई स्कूल उडमुड टाडा मे अपना भाषण दिया। श्री भगवान दास जी मुख्याध्यापक हैं जिन्होने सभा को ५१ रु० दिए। ९ से १० अगस्त तक आर्य समाज दसूहा मे पंडित जी ने अपने भाषण दिए। डी ए. वी हायर सकें० स्कूल दसूहा के मान्य प्रिंसीपल जी ने सभा के लिए २१ रु० दिए। ११ से १८ अगस्त तक पडित जो का प्रोग्राम मुकेरिया आर्य समाज मे था श्री प० हजारी लाल जी महो भजनोपदेशक सभा जी के भी मनोहर भजन हुए। मुकेरिया से सभा को ६२ रु० वेद प्रचार के लिए प्राप्त हुए।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम.ए ,पी.एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ३७) — ३० भाद्रपद २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१४ सितम्बर १९६९ — (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

देवं वहन्ति केतव:

देवम्—उस महान देव को, वहन्ति [illegible] करते हैं, केतव:—यह झंडियों का समूह। ये सारे विश्व के छोटे बड़े झंडियां बन कर उस महान भगवान को सर्वत्र बताती है।

भाव:—कौन कहता है कि भगवान को बताने और दिखलाने वाली निशानियां नहीं है। इस जगत में सूर्य हो या चन्द्र, पर्वत हो या नदियां, वृक्ष हों या पौधे ये सारी भगवान को बताने वाली झंडियां ही है। इनमें से एक २ पदार्थ उस प्रभु का पता देता है उसी की महिमा की ओर संकेत करता है। इन सारे पदार्थों से प्रभु का ज्ञान होता है। प्रभु के नियम, अनुशासन का पूरा परिचय यजुर्वेदसे मिलता है। —सं.

वेदामृत

प्रभो ! मेरी टेर भी सुनो

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवम

द्याच मृडय। त्वामवस्युराच के ॥

सामवेद उत्तरा० ७-२-६

अर्थ:—हे वरुण ! सबसे श्रेष्ठ देव ! (इमं) इस (मे) मेरी (श्रुधी) सुने (हवम) टेर पुकार को सुने और कृपा करते हुये (अद्याच) आज और अभी मुझे (मृडय) सुखी करें। प्रभो ! मै (त्वाम आपकी हो (अवस्यु.) रक्षा चाहता हु। मैं (आ चके) आपकी सदैव स्तुति करता हूं।

इस मन्त्र का भाव यह है

प्रभो ! आप वरुण हैं, सबसे श्रेष्ठ है। आप सभी की पुकार सुनते हैं, टेर सुनते है ! सबको सुखी बना देते है प्रभुदेव ! मैं भी तो आपका प्यारा हूं। कब से पुकार रहा हूं टेर लगा रहा हूं। सबकी सुनते हो तो मेरी भी तो सुनो। आपके सिवाय और कौन सुनेगा। कृपा करके अपने भक्तजन की टेर भी सुनो। सारे संकट को काटो। आज ही मुझे सुखी बना दो। मैं तो आपका ही स्तोता हूं। जीवन रक्षा के लिये आपको ही सदा पुकारता रहता हूं। मेरी टेर भी सुनो। —सं.

ऋषि दर्शन

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य:

न—नहीं वित्तेन—धन से या भोगों से तर्पनीय.—तृप्त होता, सन्तुष्ट होता है मनुष्य—कोई भी मनुष्य भोगों से कोई भी तृप्त नहीं होता।

भाव.—यदि कोई चाहे कि मै धन से मन और आत्मा की शांति को प्राप्त कर लूं। ऐसी बात नहीं धन से भोग्यपदार्थ तो मिल सकते है, किंतु मन को शांति कभी नही मिलती कितना भी धन कमा लिया जाए, कितने भोगों को मनुष्य भोगता जाए किंतु सन्तोष नहीं मिलता। लालसा और वासना बढ़ती ही जाती है। न धन में न भोगों में सुख है। न ये तृप्ति व शांति दे सकतेहै। ये तो प्यास बढ़ाते है।

कठोपनिषद से—सं

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी०(सभा मन्त्री)

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

वेद पाश्चात्य, तदनुयायी भारतीय विद्वान्

श्री वेदप्रकाश जी विद्यावाचस्पति, सिद्धांतालंकार
आर्यसमाज हिसार

(गताक से आगे)

आपका स्वागत करने के लिए अन्यो के साथ आपका पुराना साथी और मित्र मैक्समूलर भी उपस्थित होगा।

ईसाइयत के प्रचार के लिए अग्रेजो ने शिक्षा पद्धति भी उसी प्रकार की बनाई जिस से उनके प्रचार का लक्ष्य पूरा हो सके। ऐसी शिक्षा के जन्मदाता लार्ड मेकाले ने स्वय कहा था—

English education would Train up a class of persons India in blood and calour but English in tastes. in opinions. in morals and in tellct.

अग्रेजी शिक्षा एक ऐसे वर्ग को जन्म देगी जिसका रुधिर और रग तो भारतीयो का होगा लेकिन अपनी रुचि, सम्मति, आचार-व्यवहार और बुद्धि मे अग्रेज होगे।

ऐसी विचारधारा रखने वाले अग्रेजो का ही अनुसरण बहुत से भारतीय विद्वानो ने भी किया और उन्ही की हा मे हा मिलायी। राजेन्द्रलाल मिश्र ने Indo Aryans मे, श्री रमेशचन्द्र दत्त ने अपने ऋग्वेद के बगला अनुवाद मे तथा Rig Vedic India के लेखक आर सी दास पर पाश्चात्यो का प्रभाव है। इसके लिए कुछ उदाहरण ही पर्याप्त होगे।

There is alse evidence of beep harming been eaten by the ancient Aryans।

There is evidence of the ox having been hilled in sacrifices and cooked plesh offered to The gods especially to to India who seemed have developed a keen taste and inordinate desire for it. (Rig vedic India p 75-77)

अर्थात् इस बात का निर्देश मिलता है कि प्राचीन आर्य गो मास भक्षण करते थे।

इस बात का भी निर्देश मिलता है कि यज्ञो मे बैल को मारा जाता था और इसके पकाए हुए मांस को देवताओ को दिया जाता था विशेषत: इन्द्र को जिसे इस मास के लिए विशेष इच्छा और रुचि थी।

Vedic Age ने भी इसी बात का समर्थन किया है—

The guests are entertained with the plesh of cows killed on the occasion of marriage

Vedic Age P. 389

विवाह सस्कार के अवसर पर गौओं को मार कर उन के मास से अतिथियो को तृप्त किया जाता था।

सुरा के सबध मे भी विचार देखिए—

In the Rigvedic period, Sura was the popular drink extremly intoxicating as comparsd to the soma which though mildly inebrating was an invigorating beverag-

Vedic Age P 393

वैदिक काल मे सुरा या शराब लोकप्रिय पदार्थ था जो सोम की अपेक्षा अत्यधिक नशीला था।

वास्तव मे पाश्चात्य विद्वानो मे सस्कृत की योग्यता अत्यल्प रही और विशेष कर वैदिक सस्कृत या वैदिक व्याकरण से तो अछूते से ही रहे है। तभी तो उन्होने अर्थ का अनर्थ किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे विदेशियो की सस्कृत की योग्यता के मे लिखा है—

यस्मिन् देशे द्रुमोनास्ति
तत्रैरण्डोऽपि वै द्रुयायते।

अर्थात् जहा पर वृक्ष नही होता वहा एरण्ड ही वृक्ष कहलाने लगता है। इसी प्रकार वहा सस्कृत का विद्वान् न होने के कारण वे छोटे-छोटे लोग ही विद्वान् कहलाने लगते है।

महात्मा नारायण स्वामी ने भी 'वेद रहस्य' मे लिखा है—'कई वर्ष हुए एक देशी सस्कृत और अगरेजी के विद्वान् गवर्नमैंट से छात्रवृत्ति पाकर सस्कृत के विशेष अध्ययन के लिए इग्लैंड गए। सस्कृत के अध्यापक उस समय प्रो० मैक्डानल महोदय थे। उनकी जब प्रो० मैक्डानल से भेट हुई तो उन्होंने सस्कृत मे बात-चीत शुरू की किन्तु मैक्डानल उनसे सस्कृत मे बात-चीत नही कर सके। उस समय प्रो० मैक्डानल ने उन अपने आने वाले शिष्य से कहा कि यह मैं स्वीकार करता हूं कि जितनी योग्यता आपकी है उतनी मेरी नही किंतु आप यहां सस्कृत साहित्य के अध्ययन के लिए नही भेजे गए हैं यहा तो आप केवल इस लिये आए हैं कि पश्चिमी विद्वानो की अन्वेषण प्रणाली को आप सीख ले।'

इसी के सम्बन्ध मे श्री पं० धर्म देव विद्यामार्तण्ड ने अपने जीवन की एक घटना 'वेदो का यथार्थ स्वरूप' मे लिखी है—

'ट्रिवेन्डम मे .. All India Oriental Conference (प्राच्य विद्या सम्मेलन) के अध्यक्ष प्रो० F. W थौमस के पास जा कर मैंने पूछा—

सस्कृत भाषाया भाषणस्याभ्यासो वर्तते कि श्रीमताम् ? अर्थात् क्या आपको सस्कृत मे बोलने का अभ्यास है ? तो उन्होने अग्रेजी मे उत्तर देते हुए कहा—

How I wish I could speak in Sanskrit fluently like you, but unfortunately I have no practice

मेरी कितनी इच्छा होती है कि मै आपकी तरह सस्कृत मे धारा-प्रवाह रूप से बोल सकता किन्तु दुर्भाग्यवश मुझे इसका अभ्यास नही।'

उस प्रकार की सस्कृत मे योग्यता रखने वाले लोगो के वेद-भाष्य पढ कर भारतीयो ने भी उन्ही जैसी धारा किया। तिलक जो कि वेदो के बहुत प्रशसक रहे वे भी वेदो के सबध मे पाश्चत्य विद्वानो का ही अनुसरण करने वाले थे क्योकि मूल वेद उन्होने भी नही पढा था जैसा कि उपेश चन्द्र विद्यारत्न द्वारा पूछे जाने पर स्वयं कहते हैं—

'हमने मूल वेद नहीं पढे। हमने तो केवल साहब लोगो के बाद पढे हैं।'

(उमेशचन्द्र विघारत्न द्वारा लिखित 'मानवेर आदि जन्म भूमि' पृष्ठ १२४ का हिंदी अनुवाद)

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वेदो के सही अर्थ जानने का प्रयत्न करे। इसके लिए वैदिक व्याकरण निरुक्त और निघण्टु को जानना अत्यावश्यक है इसके ज्ञान के बिना वास्तविकता तक पहुचना अत्यन्त कठिन होगा। क्योकि लौकिक और वैदिक सस्कृत मे पर्याप्त अतरहै इसी लिए लौकिक सस्कृत जानने वालों ने अर्थ के अनर्थ किये हैं जैसे वेद मे गिरि, पर्वत और आदि का अर्थ मेघ है पर सस्कृत में उन सब का अर्थ पहाड है। संस्कृत में गौतम, अहल्या और इन्द्र क्रमश: ऋषि पत्नी और सूर्य के नाम हैं लेकिन वेद में चन्द्रमा, रात्रि और सूर्य है। अहि का अर्थ वेद मे मेघ और सस्कृत मे सर्पहै। इस प्रकार लौकिक और वैदिक सस्कृत में स्पष्ट ही भेद प्रतीत होता है। इसके लिए जब तक हम वैदिक व्याकरण नहीं पढते तब तक शुद्ध अर्थ का पता न चल सकेगा। परन्तु पाश्चात्य और तदनुयायी भारतीय विद्वानो ने इस ओर कोई भी ध्यान न देकर वेदार्थ भी ठीक न कर सके और भिन्न २ प्रकार की कल्पनाएं उन्हे करनी पडीं। अत. हम सबको वेद के सही स्वरूप को जानने का प्रयत्न करना चाहिये। यह महर्षि दयानन्द सरस्वती की महती कृपा है कि उन्होने वेद के वास्तविक स्वरूप को हमारे सम्मुख उपस्थित किया।

शोक प्रस्ताव

तिथि २६-८-६९ ए. एस. हा. सै. स्कूल मे विद्यार्थीगण तथा अध्यापक वर्ग की ओर से श्री वन्ना राम मेम्बर स्कूल कमेटी की मृत्यु पर शोक सभा हुई।

श्री वन्नाराम जी आर्य समाज के अथक सेवक विद्यालय के शुभ चिन्तक, तथा नकोदर नगरी के प्रतिष्ठित नागरिक थे। उनका जीवन एक कठिन प्रतिमा सम्पन्न तथा जागरूक भारतीय सस्कृति से ओत प्रोतथे।

उनके अकस्मात निधन से विद्यालय को तथा नगर निवासियो की न पूरी होनीवाली क्षति हुई है। हमारी परम पिता परमेश्वर से विनय है कि इस दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करे तथा परिवार के सदस्यो को धैर्य प्रदान करें ताकि वे इस अपार क्षति को सहन कर सकें।

इनका अन्तिम सस्करण वैदिक रीति से किया गया।

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

चन्द्रमा के विषय में वैदिक व अवैदिक मतों की प्रतियोगिता

(श्री दौलत राम जी शास्त्री अमृतसर)

(गताक से आगे)

एक और भी श्रुति मे—

'द्यावा भूमि जनयन् देव एक आस्ते विश्वस्य कर्ताभुवनस्य गोप्ता ।'

द्युलोक तथा भूमि को बनाता रहता एक ही देव है—जो सारे विश्व का कर्ता है और लोक-लोकान्तरो का रक्षक है ।

सिद्ध हुआ कि चन्द्रमा समुद्र से नही निकला इस का कर्ता वही भगवान् है जिसने सूर्यादि बनाये—और उनकी भाति यह भी जड है। अमृतपान आदि की कथा कल्पना निजी सम्प्रदाय का महत्व प्रकट करने की दुकानदारी है ।

श्री माधवाचार्य ने सूर्य सिद्धान्त के प्रमाण द्वारा सूर्य और चन्द्रमादि ग्रहो का सृष्टि के आदि से होना सिद्ध किया है । वे कहते है—

'सूर्याचन्द्रमसो परोविप्रकर्ष पौर्णमासी ।'

जब सूर्य और चन्द्रमा मे पराकाष्ठा की दूरी हो, अर्थात् एक-दूसरे के आमने-सामने हो तब पूर्णमासी होती है और—

'परः सन्निकर्ष सूर्या चन्द्रमसो रमावस्या ।'

जब इन दोनो का बहुत सामीप्य अर्थात् एक ही रेखा मे स्थिति हो अर्थात हमारे देश के सामने चन्द्रमा और सूर्य भी उसकी आड मे हो । तो चन्द्रमा की पीठ पर सूर्य का प्रकाश पडनेसे हमारे देश को प्रकाशन ही पहुंचेगा । चन्द्रमा का इधर का भाग चमकीला न होगा—उसका नाम अमावस्या है ।

व्याकरण व शब्द कोष मे अमा का अर्थ है एक साथ वस्या का अर्थ है एक साथ रहना । जिस रात्रि को सूर्यचन्द्रमा एक ही स्थान पर साथ रहे वह काल अमावस्या है ।

वेदमन्त्रो मे पौर्णमासी और अमावस्या अनेक स्थानो मे आये हैं-विशेषत दर्शपौर्ण मासीय यज्ञो मे । तो वेद के साथ तुलना करने से पौराणिक-कथक्कड-याज्ञिक—साप्रदायिक तथा अन्य ऐरा गैरा नत्थूखैरा की कोई सत्ता नही रह सकती ।

ऊहा की एक और बन्नगी

सच्चे ज्योतिषी बुध और चन्द्रमा को पुत्र और पिता के अलकार से लिखते है । बुधग्रह चन्द्रमा से अनेक लाखो योजनो की दूरीपर है । इस लिए वह बहुत छोटा दीख पडता है । चन्द्रमा हमारे बहुत समीप है—अत: बडा दीखता है । इसलिये चन्द्र और बुध को पिता पुत्र ज्योतिष के सिद्धात मे माना है । पुराण कर्ताओ ने यजमानो का मनोरजन करने अथवा पूजा आदि की लालसा से अथवा यथार्थ से अनभिज्ञ होकर जो अशिष्ट कथा घडी है वह नितान्त निन्दनीय है । वे लिखते है कि चन्द्रमा का गुरु बृहस्पति की स्त्री से अनुचित समबन्ध हो जाने से जो पुत्र हुआ वह बुध हुआ । इन लोगो के विचार मे चन्द्रमा देवता होकर यदि गुरु पत्नी से सम्बन्ध जोडता है तो देवता कैसे रह सकता है—तुमने यह गन्दी कथा कल्पना से ससार में कौन से सुन्दर आदर्श का परिचय दिया । शाबाश !!!

कुछ भी हो चन्द्रमा जड भूमि है ऐसा ही वेदो मे आता है । 'दिवि सोमोऽधिष्ठित.' चन्द्रमा द्युलोक मे अधिष्ठित है । अब के वैज्ञानिको ने तो वहा उतर करके चद्रमा के हृदय पर ध्वज गाडे-और विमान छोडे । भूमि खोदी । फोटो लिए । चन्द्रमा ने न तो उनका स्वागत किया और न ही उनका सामना किया । विद्वानो ने विजय पाई हम दूध-लस्सी तथा अर्घ चढाते रहे । अन्त मे हम—'वेद प्रणिहितो धर्मअधर्मस्तर द्विपर्यय' यह लिख कर इस निबन्ध को समाप्त करते हैं ।

वेदा: रचत: प्रमाणम् ।

अथर्व वेद के सूक्त में वर्णित गृहस्थ जीवन

कुमारी शशी प्रभा भटनागर, मोहल्ला रामपुरा, हिसार

अथर्ववेद के द्वितीय काड का ३६ वा सूक्त बहुत महत्वपूर्ण है इसमे वैवाहिक मगल कार्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्देश निहित है । इसके प्रथम मन्त्र मे विवाह योग्य वर एव वधू की योग्यताए बताई गई हैं ।१ वर का प्रथम गुण यह हो कि वह सभल (स+भल) अर्थात् उत्तम प्रकार से व्याख्यान करने वाला हो जो वाणी अथवा लेखनी द्वारा सम्यक् प्रकार से करने मे समर्थ हो । दूसरे शब्दो मे, उसे विशेष विद्वान् होना चाहिए । द्वितीय 'भगेन सह कुमारी आगमेत' अर्थात् धन के साथ आकर कन्या को प्राप्त करे । उसके पास धन का होना परमावश्यक है । अगर धन न होगा तो अपनी पत्नी को क्या खिलाए और फिर गृहस्थी की गाडी किस प्रकार चलेगी तृतीय 'पति नयतु'

अर्थात्—धर्मपत्नी को सही मार्ग से चलाने का यत्न करे । आजकल बहुत से पति विवाह पश्चात पत्नियो को बडे-बडे होटलो, क्लबो आदि मे ले जाते है और वहा खूब शराब पीकर डास आदि करते हैं इस प्रकार की पत्निया पति के अधिकार मे न रह कर कुमार्गगामिनी बन जाती हैं ।

इसी मत्र मे विवाह के लिये वधू की तीन योग्यताए बताई गई है। प्रथम उसे 'कुमारी' होना चाहिए। कुमारी शब्द का प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है । कुमारी का भाव अविवाहित से नही प्रत्युत सच्चे अर्थों मे जो अपनी इन्द्रियो आदि को वश मे करके पवित्रता से ब्रह्मचर्य का पालन कर रही है । यूरोपीय देशो मे अविवाहित कन्याए अपने नाम के साथ मिस अर्थात कुमारी शब्द का प्रयोग करती है यद्यपि व्यावहारिक रूप मे वे विषयी, कामातुर होती है द्वितीय उसमे 'सुमति होनी चाहिए अर्थात् उत्तम बुद्धि वाली होनी चाहिए । मूर्ख नारी गृहनाश का कारण बनती है वह न पति को सुख देती है और न ही बच्चो का पालनपोषण भली प्रकार से करने मे समर्थ होती है । बुद्धिमान नारी सदैव सकटो मे पति की सक्रिय रूप से सहायता करती है और घर की रक्षा करती है । तृतीय एव चतुर्थ 'सुमनेषु वरेषु जुष्टा वल्गु' अर्थात् उत्तम मनवाले श्रेष्ठ पुरुषो मे सेवा करने योग्य और सुन्दर कन्या हो । जिन लोगो का मन पवित्र एवं उज्ज्वल है उनकी सेवा सुश्रूषा के द्वारा जो विद्याग्रहण करती है ऐसी कन्या सदैव धार्मिक विचारो एव श्रेष्ठ चरित्र की होगी । कन्या का सुन्दर होना भी आवश्यक है सुन्दर कन्या पति को शीघ्र प्रसन्न कर लेती है ।

पत्नी के कर्तव्य—विवाह के बाद स्त्री अधिक ऐश्वर्य मे आ जाती है । उसे पति का विरोध नहीं करना चाहिए । ऐसी पत्नी पति को अत्यन्त प्रिय लगती है१ । प्रत्येक कार्य करने से पूर्व पति की प्रदक्षिणा करनी चाहिए । प्रदक्षिणा से भाव है उसका सम्मान, सत्कार आदि क्योकि वर अर्थात् पति वधू के लिये कामना रूप है२ । उस से चोरी छिपे कार्य करना अनुचित है जो स्त्रिया पति से छिप कर कोई कार्य करती हैं उस से गृह-कलह उत्पन्न हो जाती है और घर की सारी शाति भग हो जाती है । मन मे जो इच्छा होती है तो उसका जो बाह्य स्वरूप होता है उसको प्रति-काम कहते है । दूसरे स्त्री की शोभा उसका पति ही होना चाहिए । पति से ही इसको शोभा प्राप्त हो३ । जो पत्नी यह सोचकर चलती है कि जो कुछ भी सौभाग्य अथवा ऐश्वर्य है वह सबपति के ही कारण है तो निश्चित ही पति के प्रति आदर भाव रखेगी । परिणाम स्वरूप पति-पत्नी मे मनमुटाव कम होगा और प्रेम उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा ।

जो स्त्री उपर्युक्त बातो को ध्यान मे रखती है वह पति को वश मे कर लेती है और ऐश्वर्य मे जीवन यापन करती है । उत्तम पुत्रो को उत्पन्न करती हुई घर की रानी बनती है ।४ जब पति-पत्नी अपने कर्तव्यो को पहचानते हुए निश्छल भाव से प्रेम-पूर्वक रहते हैं तो गृहस्थाश्रम ऐश्वर्य की नौकर बन जाती है जो सब प्रकार स परिपूर्ण एव कभी न टूटने वाली है । वह सती नारी पति को इसी नौका के आश्रय भवसागर से पार लगाती है ५ । और अपना भी कल्याण करती है ।

विवाहित जीवन में पति के कर्तव्य:—

कामना के अनुकूल पति है वह चलावे' ६ अर्थात पति गृहस्थाश्रम के रथ को त्रुटियो से रहित चलावे । गृहव्यवस्था दोष रहित होनी चाहिए । पति सूर्य के समान स्त्री को ले आवे । ७

(शेष पृष्ठ ६ पर)

---

१ आ नो अग्ने सुमति सभलो गयेदिमा कुमारी सह नो भगेन । जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुरोष पत्या सौ भगमस्त्वस्यै ।

अथ० २-३६

१ भगस्य जुष्टा इय नारी, पत्या अविराधयन्ती सप्रिया अस्तु । वही मन्त्र ४ ।

२ सर्व प्रदक्षिण कृणु यो वर: प्रतिकाम्य । वही मन्त्र ६ ।

३ पत्या अस्मै सौभाग्य अस्तु-वही मन्त्र—३

४ पति गत्वा सुभगा विराजतु । पुत्रान् सुवाना महिषी भवति ।। वही मन्त्र—३

५ पूर्णा अनुप-दस्वती भगस्य नाव आरोह न प्रतिकाम्य: वर', तया उप प्रतारय वही मन्त्र ५

६ य: प्रतिकाम्य. पति: नयतु वही मन्त्र ४

७ सविता ते आ नयतु—वही

आर्यसमाज धारीवाल (गुरदासपुर)

आर्यसमाज धारीवाल मे श्रावणी पर्व बडी धूमधाम से २५ अगस्त से ३ सितम्बर तक मनाया गया। प्रतिदिन श्री प तेजराम जी उपदेशक सभा की देख-रेख मे हवन होता रहा। रात्रि को प० ज्ञान जी के मधुर भजन तथा श्री प० तेजराम जी के ओजस्वी भाषण होते थे। सत्सग मे उपस्थिति सामान्य, सन्तोषप्रद रही।

श्रावणी के दिन यज्ञोपवीत बदले गए तथा १५-२० स्त्री पुरुषो को नए यज्ञोपवीत धारणा करवाए गए। प्रात: यज्ञ के लिए १० यजमानो ने बारी-बारी से भाग लिया। ४सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति के समय सभी यजमानो का फूल मालाओ द्वारा सम्मान किया गया।

सभी कार्य भलि-भाति प्रभु कृपा से सम्पन्न हुआ। सभा को ५१ रु० वेद प्रचार दिया गया।

मन्त्री
आर्यसमाज धारीवाल

आर्यसमाज हिसार प्रचार

आर्य समाज नागौरी गेट के प्रबन्ध मे इस बार वेद सप्ताह का आयोजन नगर के भिन्न-भिन्न भागो मे आर्य बाजार, पटेल-नगर कैंप, दयानन्द भवन मोहल्ला कुम्हारान, मोहल्ला सैनियान तथा समाज मदिर हिसार मे समारोह पूर्वक किया गया। सभी जगह बडा ही उत्साह था। यह तो निश्चित बात है कि जनता का समाज के कार्यो मे बडा विश्वास है। बडी रुचि लेते हैं। उपस्थिति बडी थी। प्रचार भी खूब हुआ। सभा की ओर से वेद कथा के कार्यक्रम पर प त्रिलोक चन्द्र शास्त्री तथा प्रसिद्ध चिमटा मण्डली प राज्यपाल जी मदन मोहन जी की थी। स्त्री समाज दयानन्द भवन ब्राह्म महाविद्यालय के छात्र तथा समाजो के नर-नारी पूरी श्रद्धा से सहयोगी बने रहे अन्तिम जन्माष्टमी पर्व हिसार समाज मे था। इसमे प्रो राम विचार जी M. A चिमटा मण्डली, प्रो शर्मा जी, प त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, बहिन कृष्णा जी ने विचार रखे। समाज के मन्त्री श्री नन्द लाल जी तथा सभी नर-नारी उत्साह से कार्य मे लगे थे। सभा को वेद प्रचार मे १५० रु० का चैक दिया गया। मार्ग व्यय अलग था। वेद सप्ताह धूमधाम से सम्पन्न हो गया—

अथर्ववेद के सूक्त में....

(पृष्ठ ५ का शेष)

अर्थात जिस प्रकार सूर्य अपने ज्योतिषपुज का सचालन करता है उसी प्रकार पति सपूर्ण गृहस्थाश्रम का सचालक है। उसको प्रत्येक कार्य पत्नी को साथ लेकर करना चाहिए। यह तभी सभव हो सकता है यदि पत्नी मे विश्वास हो और उससे प्रचुर प्यार हो। अत: दोनो मिलजुल कर सोचविचार कर गृहस्थजीवन व्यतीत करना चाहिए। यह नही कि पत्नी घर की रोटियां बनाने एव बर्तन माजने में लगी रहे और पति देव जए शराब सिगरेट का सेवन करते होटलो और क्लबो मे जाते रहे। जब इस प्रकार पत्नी को पुरुष विश्वास मे नही लेता, उसके साथ मिलकर घर के उत्तरदायित्व को नही समझता तब गृहस्थ जीवन की नौका निश्चिय ही भवर मे फस कर डूब जायेगी।

अत वेद भगवान का उपदेश है कि दोनो मे परस्पर विश्वास एव प्रेम के भावो से कार्य करने की मगलमय कामना होनी चाहिए। इस प्रकार के गृहस्थ निस्सदेह निश्रेयस्सिहि को प्राप्त होते हैं।

आर्यसमाज विवादों के निराकरण हेतु समिति महात्मा आनन्द भिक्षु द्वारा सदस्य होने से इन्कार

नई दिल्ली। २९ अगस्त। महात्मा आनन्द भिक्षु ने एक वक्तव्य मे कहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से समाचार-पत्रो मे एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है कि उसने प्रान्तीय सभाओ के विवाद समाप्त कराने के लिये तीन व्यक्तियो की एक समिति नियुक्त की है। इस समिति मे दो अन्य सन्यासियो के अतिरिक्त मेरा नाम भी दिया हुआ है। मैं स्पष्ट करना चाहता हू कि मैं ऐसी किसी समिति मे नही हू और न ही किसी सार्वदेशिक सभा को मैंने इस प्रकार की कोई स्वीकृति दी है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपनी ओर से निर्णायक नियुक्त करने का कोई अधिकार नही क्योकि वह भी स्वय एक विवादग्रस्त पक्ष है। अत: जब तक सभी विवादग्रस्त पक्ष निर्णायकों को स्वीकार न करे तब तक किसी समिति का कोई मूल्य नहीं।

श्याम राव
कृते (आनन्द भिक्षु)

हिन्दु समाज आंखें खोले

(पृष्ठ ३ का शेष)

कहानिया सुनते हैं तो रोंगटे खडे हो जाते हैं। श्री देवीदास जी आर्य कई बार ऐसे वीर कार्य मे सचमुच मौत के मुख मे भी चले गये—उनका प्रभु प्रेम व उसी की अनुकम्पा रूप आत्मविश्वास इनकी रक्षा करता है।

धनियो का धन किस काम का है जो ऐसे-ऐसे कार्यो मे आर्यसमाज को नही दिया जाये। आज हिन्दू समाज की इस उदासीनता ने तथा निर्बलता ने उसके विधर्मियो के दिल मे यह भावना भर दी है कि इनकी लडकिया ले जायो। हमे पूछने वाला कोई नही। काश! श्री आर्य जी जैसा नेता श्रीनगर काश्मीर मे होता ताकि परमेश्वरी के अपहरण पर सारे समाज का सिर नीचा न होता।

—सम्पादक

डी० ए० वी० हायर सकैं० स्कूल यमुनानगर (अम्बाला)

डी० ए० वी० हायर सकैण्डरी स्कूल यमुनानगरर मे ७-९-६९ को बडी धूमधाम के साथ स्व० श्री लाला लक्ष्मीदास जी की दूसरी पुण्य स्मृति मे स्कूल के मुख्य द्वार का नाम श्री लक्ष्मीद्वार रखा गया। आप L A C के प्रमुख दानवीर सदस्य थे।

जमुना आटो इन्डस्ट्रीज के अध्यक्ष श्री सरदार भूपेन्द्रसिह जी ने निर्धन छात्रो के लिए २५ रु० मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की तथा डी०ए०वी० कालेज फार गर्ल्ज के हाल कमरे के लिए १५ हजार भी दान दिए हाल का काम उनके पिता श्री शमशेरसिंह जी के नाम पर रक्खा जाएगा।

शेष ८५ हजार रुपए आप धन सग्रह करके शीघ्र प्रदान करेगे। कालेज की बिल्डिंग बननी आरम्भ हो गई है।

श्री लाला मदन लाल जी वासु देवा मैनेजर डी० ए० वी० गर्ल्ज हाई स्कूल ने इस अवसर पर विज्ञान प्रयोगशाला भवन के लिए ११०० रुपए प्रदान किए। सब कुछ प्रेरणा का श्रेय श्री प्रिं० एच० सी० भक्त को है।

मन्त्री
वी० पी० गोयल
स्कूल अध्यापक संघ

आर्य समाज दयालपुरा करनाल

दयालपुरा आर्य समाज करनाल मे एक विशेष बैठक हुई जिसमे आर्य नेता श्री उदय सिंह मान के आमरण व्रत मे सफलता के लिए मांग की गई तथा प्रतिज्ञा की कि हम इस आन्दोलन मे तन-मन-धन से सहायता करेंगे इसी प्रस्ताव मे मुख्य मन्त्री श्री बन्सी लाल जी को इसके प्रति कार्य की सराहना की गई।

आर्य नेता श्री उदय सिंह मान के गिरते हुए स्वास्थ के बारे मे चिन्ता प्रकट की गई।

मन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा,
करनाल

आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला नगर

आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला शहर की ओर से स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती, साधु आश्रम रोपड, द्वारा २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक अनाज मण्डी के खुले मैदान मे अत्यन्त प्रभावशाली वेद कथा हुई और ४ सितम्बर को आर्य समाज मन्दिर मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी, श्रीमती लेख वती जैन डिपटी स्पीकर हरयाणा की अध्यक्षता मे बहुत धूमधाम से मनाई गई। इस उत्सव पर श्री कृष्ण जी के जीवन चरित्र पर मनोहर व्याख्यान तथा अत्यन्त लुभावने भजन गाए गए।

भवदीय
सुरेन्द्रकुमार उपमन्त्री

डी.ए.वी. कालेज (लाहौर) अम्बाला

श्री प्रिं० भगवानदास जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि आर्यसमाजो मे जो पारस्परिक वैर विरोध चल रहे हैं उनको निपटाने के लिए सब सज्जनो को एक होकर कार्य करना पडेगा। उन्होने कहा कि इन्ही नेताओ ने महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य को पूर्ण करने के लिए बहुत प्रयत्न किए थे परन्तु अब यही लोग आपसी विवादो मे ग्रस्त होकर अपनी मान प्रतिष्ठा सब खो बैठे हैं। उन्होंने कहा है कि मेरी आर्य जगत के महान तपस्वी नेता महात्मा आनन्द भिक्षु जी से अपील है कि वह अनशन न करें।

सम्पादकीय :—

आर्यजगत

वर्ष २९] रविवार २०२६, १४ सितम्बर १९६९ [अंक ३७

प्रकाशमय जीवन से

युग पुरुषो के जन्म पर्व समय पर आते और चले जाते हैं। किन्तु अपना एक दिव्य जीवन सन्देश दे जाते हैं। युग पुरुष की सब से बडी यही विशेषता होती है कि उनका जीवन-दायक प्रकाश केवल एक युग तक ही सीमित नही रहता या केवल उस समय मे मौजूद जनता का पथ-प्रदर्शन ही नही करता, वरन् उसके बाद भी निरन्तर आने वाले युगो पर भी अपनी अमिट छाप लगाता रहता है। जन्माष्टमी का पुनीत पर्व आ कर चला भी गया। सारे देश मे तथा विदेशो मे भी नाना नगरो मे नर-नारियो ने अपनी-अपनी भावना के अनुरूप इस महापुरुष का जन्म-दिवस समारोह से मनाया। किसी ने योद्धा का उसे रूप दिया तो किसी ने राज-नीति का महारथी माना। किसी ने राजा की आकृति से आका तो किसी गोपाल की शक्ल मे प्रतिष्ठा की। किसी ने राष्ट्रीय सूत्रधार कहा तो किसी ने धर्म की स्थापना करने वाला माना। किसी ने न्याय का पक्षपाती तथा अन्याय, अत्याचार से कमर कस कर टक्कर लेने वाला माना। किसी ने गीता का उपदेशक कहा तो किसी ने योगेश्वर मान कर उसे सम्मानित किया। कोई चक्रधारी मानता है तो कोई लोकोपकारी कहता है। कोई उसे व्रतधारी कहता है तो दूसरा वेद के सिद्धान्तो का पुजारी मानता है। एक तो उस महापुरुष को आदर्शपरिवारी मान कर चलता है तो दूसरा दीन दुखियो का हितकारी। तात्पर्य यह है कि भिन्न२ लोगों ने उसे भिन्न २ कार्यों के कारण उसे अपनी २ भावना का प्रतीक माना। कई ऐसे भी कवि तथा लोग आए जिन्होंने उस योग के देवता को जीवन के ऊचे शिखर से गिराकर ऐसे वैसे स्तर के पाताल में खड़ा कर दिया, कि जिस अवस्था को देखकर लाज भी लजाने लगती है। एक बात तो माननी चाहिए कि युग पुरुष बने उस महान कृष्ण जी के प्रति श्रद्धा की लहरे सभी के जीवन मे ठाठे मारती है। पाच हजार वर्षों के बाद भी यह भावना कम नही हुई। जन्माष्टमी से परिचय मिलता है।

जन्म दिवस का कृष्णपर्व बीता! समारोह हो चुके। उछलकूद कर ली। रागरग तथा शृगार भरी झाकियो को भी देख चुके। मन्दिरो की सजावट भी हो गई। गीता पारायण भी कर दिए गए। किंतु विचारने की अब बात यह है कि जनता ने इस पर्व पर उस युगनर के दिव्य जीवन से कुछ सीखा भी या नही? उनके प्रकाशमय विचारो से कुछ हमने अपने मे व्रत भी लिया या कोरा खेल तमाशा कर लिया। अथवा सिनेमागृहो मे राम-कृष्ण, सीता-रुक्मिणी बन कर आने वाले अभिनेता व अभिनेत्रियोके Show के समान केवल मात्र सारा वेशभूषा का ही प्रदर्शन कर लिया। जीवन मे कोई बात भी धारण नही की।

आर्य समाज के देवता दयानन्द ने श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध मे जो शब्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखे हैं। वे कितने ऊचे है यह तो सभी जानते ही हैं। आर्यसमाज स्वय भी यह श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पुण्य पर्व किस उत्तम रीति से सर्वत्र मनाता है—यह भी सब को पता है। इस पर विशेष सन्देश देता है। किन्तु यह सत्य है कि यदि जन्माष्टमी आने तथा चली जाने पर हमने अपने मे कोई भी उससे एक सन्देश न लिया तो यह दिवस भी कोरा थोथा दिवस ही सिद्ध होगा।

जैसे प्रकाश के स्तम्भ से चारो दिशाओ मे नानाविध किरणे निकल कर दूर-दूर तक ज्योति का प्रसार कर देती है। अधकार दूर किया करती है। उसी प्रकार इस पुण्य पर्व पर उस युग पुरुष का जीवन दिन मनाते हुए नाना प्रकार की रश्मिया निकलकर जीवन-उपदेश देती हैं। चन्द्रमा की कलाओ के समान श्री कृष्ण के जीवन की भी अनेक कलाएं हैं जिन से यह दिव्य चन्द्रमा शोभा देने वाला है। एक-एक कला अपने स्थानपर अद्भुतहै। इन प्रभुनिष्ठा, ब्रह्मविद्या, आत्मज्ञान, वेदप्रतिष्ठा, कर्मयोग, ज्ञानसाधना, राजनीति, इन्द्रिय समय लोकसेवा, धर्मरति, धर्मभावना,न्यायरक्षा जीवन-मर्यादा, सस्कृति प्रेम, त्यागसम्पत्ति, राष्ट्र भक्ति आदि कई गिनवाई जा सकती हैं। जिन मे एक २ जीवन कला पर बहुत कुछ लिखा या बोला जा सकता है। जन्माष्टमी पर हमे इन मे से कुछ तो जीवन मे सीखना ही चाहिए। इस बार बीते पर्व पर श्री कृष्ण जी के जीवन प्रकाश से समाज सेवा की भावना का पाठ ही यदि पढ लेवे तो हमारा कल्याण हो सकता है। हम विचारे कि हम समाज के लिए क्या देते हैं समाज सेवा के पथ पर चलते हुए हम ने कुछ त्याग भी किया है या नही। सभी काम दूसरे ही करे। वेद प्रचार भी दूसरे करे। परिवार को छोड भ्रमण भी दूसरे करे। सन्ध्याहवन भी दूसरे करे। उपदेशक भी दूसरे बने। समाज के आन्दोलनो मे बाहर अन्दर भी दूसरे जाये। भूने चने भी दूसरे चबाये व लेखराम श्रद्धानन्द सरीखे पथ पर भी दूसरे चले। और हम कुछ न करे। तो जन्माष्मी का सन्देश कौन लेगा। इस बार पर्व के बाद सारा समाज यह सन्देश लेवे कि समाज सेवा मे प्रति-सप्ताह समाज के सत्सग मे जरूर जाना है। इस व्रत से भी बडा भारी लाभ हो सकेगा —त्रिलोक चन्द

हिन्दु समाज आंखें खोले

पता नही हिन्दु समाज की नीद कब टूटेगी। उसकी आखे कब खुलेगी। उसे कब अपनी जाति की दयनीय दशा का ध्यान आयेगा? दूसरे सम्प्रदाय वालो की ओर हिन्दु परिवारो की नाना प्रकार के हथ-कण्डो, प्रलोभनो एव बल द्वारा घरो से अपहरण की जाने वाली अपनी ही युवति बेटियो की सुरक्षा का विचार कब आयेगा? आये दिन समाचार-पत्रो मे दिल हिला देने वाली कन्याओ के अपहरण की घटनाओ को पढ कर भी पता नही इस समाज का स्वा-भिमान कब जागेगा? आर्य समाज के ऐसे वीर पुरुषो का तो कब खुले रूप से समारोहो मे सम्मान करने सीखेंगे जो अपने जीवन को विपत्तियो मे, साक्षात् मौत के मुख मे डाल कर, अपने परिवार की भी चिन्ता न करते हुए, विधर्मियो के घिरे हुए परिवारो मे जा कर उन युवति अपहरण की गई लडकियो को पकड कर वापस ले आते हैं। उनकी वीरता, बलिदान की भावना तथा निर्भयता के सामने सारा समाज सिर झुकाता है। हम तो अनुरोध पूर्वक प्रान्ती सभाओं से, हिन्दु सस्थाओ से तथा समाज के केन्द्रो से यह कहना चाहते है कि ऐसे वीर पुरुषो का विशेष कर खुले रूप मे सम्मान किया जाये। इस वीरता के कार्यो पर उनको विशेष पदक दिए जाए। यह सम्मान उनका नही—सारे समाज के लिए गौरव का विषय है।

अभी-अभी दैनिक समाचार पत्रो के मुख-पृष्ठो पर कानपुर नगर मे सात हिन्दु परिवारो की युवति देवियो के अपहरण की रोमाचकारी घटनाओ के समाचार प्रकाशित हुए है जिन्हे पढकर हिंदु समाज की वर्तमान अवस्था पर आसू बहाने को दिल करता है। उनमे से कई लडकियो को चकले मे पेशा कराने पर विवश किया गया। एक दो के इसके लिए पैर तोड डाले गए ताकि वह भाग न सके। किसी को अपने घरो मे बन्द कर विषय की पुतली बनाया गया। काम के कुत्तो ने उन लडकियो के साथ क्या-क्या नही किया। कानपुर मे।

शाबाश है, साधुवाद है उस वीर नायक, निर्भयता के सच्चे प्रतीक, आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर के प्रधान श्री देवीदासजी आर्य कारपोरेटर को जिन्होने पता नही ऐसी कितनी अपहृता कन्याओ को अपना जीवन मौत के मुह मे डालकर उन गुण्डो के घरो मे जाकर लडकियो को निकाला। श्री आर्य जी सचमुच जीवन रत्न है। कितनी लडकिया किस प्रकार से इस वीरनर ने बचाई-यदि जनता के सामने समाचार आए तो पुस्तक बन सकती है। सारे कानपुर मे, इलाके मे इस वीरात्मा की जीवन धाक है। आर्य समाज के इस वीर नेता को रात हो या दिन जब कभी किसी लडकी के अपहरण की सूचना मिलती है। उस समय उसे वापस लेने म चल पडता है। आर्यसमाज को अपने इस वीर स्तम्भ पर बडा मान है। हम प्रति वर्ष कानपुर जब जलसो पर जाते हैं तो जनता से वर्ष मे कितनी ऐसी अपहरण की गई और फिर श्री आर्य जी की वीर भुजाओ द्वारा वापस लाई हुई लडकियो की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

६ मई १९४८ के दिन

✶वैदिक धर्म की बलिवेदी पर दो अभूतपूर्व बलिदान✶

(प्रो. ओमकुमार आर्य एम. ए. दयानन्द कालेज शोलापुर)

प्रारम्भ से ही आर्य समाज क्रांतिकारी सस्था रही है। कौन नही जानता कि इस सस्था को अपने स्वस्थ प्रगतिवादी कार्यक्रम के क्रियान्वयन मे भीषण सकटो मे से गुजरना पडा है। लेकिन आर्यसमाज की गोद मे पले हुए युवक युवतिया सदैव बाधाए पार करते हुए आगे बढते रहे। हजारों वैदिक धर्मी अपनी जान पर खेले, काल कोठरियो मे रहे, पर सत्य पथ से टस से मस नही हुए। ऐसे ही शहीदो की गिनती मे स्वर्गीय श्री किशनराव जी टेके और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती गोदावरी बाई भी सम्मिलित हैं। उनके बलिदान की प्रेरणा प्रदायिनी तथा रोमाचकारी कहानी निम्न प्रकार से है :—

वीरभूमि महाराष्ट्र का वह भाग जो पहले हैदराबाद रियासत के नीचे था मराठवाडा कहलाता है। जिला उस्मानाबाद (धाराशिव) उसी इलाके के पाच जिलो मे से एक है। धाराशिव के 'ईट' नामक गाव मे ६ मई १९४८ के दिन उक्त दम्पति ने वैदिक धर्म के लिए अपने प्राणो की आहुति दी थी।

शहीद किशन राव जी के पिता शोलापुर जिला नर्गत अकलूज के निवासी थे। वहा से हमारे चरित नामक पाटोदा (बीड) और फिर ईट (धाराशिव) चले आये थे। वे शैशवकाल से ही वीर प्रकृति के थे। उनकी धर्म पत्नी माता गोदावरी बाई भी एक निडर आर्य महिला थी। पाटोदा मे एक ऐसी घटना हुई थी जो इनकी वीरता का पूरा परिचय देती है। भैरम खा नामक एक कुख्यात पठान था। इसका धन्धा था लूटमार। चू कि किशन राव आर्यसमाजी थे अत: भैरम खा इन से जलता था। यह घटना सन् १९३५ ईस्वी की है। उस वक्त निजाम हैदराबाद के अत्याचार अपनी चरम सीमा पर थे। भैरम खा न एक बार श्री किशन राव जी को छेड ही तो दिया! बस क्या था, लेने के देने पड गये।

श्री किशनराव जी और उनकी धर्मपत्नी ने उस दस्यु को वह पाठ पढाया कि उसे जीवन भर नही भूला। कहते है लोग उसकी खिल्ली उडाया करते थे, 'पठान साहब आप को एक औरत ने मारा है' और वह मारे शर्म के घर से बाहर भी नही निकलता था। इस घटना का परिणाम यह हुआ कि इस दम्पत्ति की ख्याति बढने लगी और विधर्मी उनसे कुढने लगे।

दिन बीतते गये। श्री किशनराव जी पर विरोधियो की ओर से समय असमय घातक हमले होने लगे। एक बार जमीन को लेकर कहा सुनी हो गई, इसका पर्यवसान एक घातक हमले के रूप मे हुआ। किशन राव जी घायल हुये। मुकदमा चला धमकिया दी गई, सभी प्रकार के ओछे हथकडे विरोधियो ने अपनाये पर जीत श्री किशनराव जी की हुई। शत्रु और भी पक्के शत्रु बनते चले गए। येन केन प्रकारेण बदला लेना ही दुराग्रही विधर्मियो ने अपना लक्ष्य बना लिया। उस काल के मुसलमान अधिकारी भी श्री किशनराव जी पर घात लगाए बैठे रहते थे। कदम-कदम पर खतरा था पर यह आर्यवीर निर्णय विचरता था जैसे बन मे शेर। हैदराबाद सत्याग्रह मे इनके सुपुत्र श्री रघुनाथ राव (जो अब भी हैं) ने भाग लिया था। निजाम के अधे अधिकारियो ने श्री किशनराव जी को तीन मास के लिए कारावास मे इस लिए डाल दिया कि इनके लडके ने सत्याग्रह मे भाग लिया था। वाह रे न्याय।

निजाम के अत्याचार बढने गए। रजाकारो की दरिन्दगी के नगे नाच को इतिहास शायद कभी भूल सके रजाकारी दौर मे धाराशिव का कलैक्टर हैदरी रजाकारो के साथ मिल कर धर्म परायण हिन्दुओ को मौत के घाट उतार रहा था। श्री किशन राव जी पर उन की नजर टिकी थी। वे पुराना वैर चुकाना चाहते थे। रजाकारो को बहाना चाहिए था और मिल भी गया। श्री किशन राव जी के घर पर ओइम् ध्वज लहरा रहा था। गौरवशाली ओ३म्-ध्वज को देख कर विरोधियो के कलेजे पर साप लोटता था।

और यो होते होते आ गया ६ मई १९४८ का दिन। श्री किशन राव जी आयु के ६५ बरस पार कर चुके थे। उस दिन वे दोपहर का खाना खा कर आराम करने लेटे ही थे कि बाहर कोलाहल सुनाई दिया। कलैक्टर हैदरी कई रजाकारो को ले कर आ गया था। किशन राव जी को आवाज लगाई गई वे बाहर आए, बिल्कुल निहत्थे और केवल एक धोती बदन पर लपेटे। नगी छाती पर यज्ञोपवीत शोभायमान् था। उन के आते ही रजाकारों ने धमकी भरी आवाज मे कहा—"ओइम का झडा मकान पर से उतारो।"

"झडा नही उतारा जाएगा" किशनराव जी गरजे। और दूसरे ही क्षण बीसयो बन्दूकें एक साथ चला दी गईं। बूढे किशनराव धाराशायी हुये और स्वर्ग-गमन कर गए। यदि आज बन्दूक उन के हाथ मे होती तो वे सारे अरमान पूरे कर लेते। रक्त से लथपथ उन की लाश जमीन पर लुढक गई। गोलियो की आवाज आकाश मे गूज गई। घर मे बैठी गोदावरी बाई—श्री किशनराव जी की धर्म पत्नी—माजरा समझ गई। पलक झपकते उस ने कर्तव्य निश्चित कर लिया। महामाया जसवन्त सिंह का अधूरा काम पूर्ण करने चल पडी। बन्दूक उठाई और बाहर निकली। साधने की जरूरत नही थी हजारो की भीड जो थी धाय धाय की आवाज आई और तीन चार पठान लुढक गये। इतने मे भीड की ओर से कई गोलिया माता गोदावारी बाई को आ कर लगी और वे परलोक सिधार पति पत्नी दोनो ही आगे पीछे वैदिक धर्म की बलिवेदी पर अपने को मिटा गये। उन के जीते जी उन की प्यारी ओइम् पताका को कोई छू तक नही सका। हवा में लहराती हुई पताका उन का यशोगान कर रही थी।

कितना रोमाचकारी था यह बलिदान। वास्तव मे इन्ही बलिदानों के सुदृढ आधार पर आर्य धर्म की भित्ति खडी हुई है। निजाम गया उसके रजाकार भी चलते बने पर ओ३म् की पावन पताका आज भी मराठवाडे के नगर-नगर मे शान से लहरा रही है। शहीद श्री किशनराव जी टेके और उनकी अर्धांगिनी श्रीमती गोदावरी बाई का यश अक्षुण्ण है और रहेगा।

(नोट—उपर्युक्त वर्णन श्री किशनराव जी टेके द्वारा प्रेषित एक पत्र पर आधारित है। मूल पत्र मराठी मे है और मेरे पास सुरक्षित रखा है और भी कई आर्यसमाजियो से मैने इस सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त की।

वेदप्रचार सप्ताह में आर्यसमाज (बी-ब्लाक), गोविन्दनगर, कानपुर के आयोजन

१. श्रावणी पर्व के दिन प्रातः ७ से ८.३० बजे तक मन्त्री ओ३म प्रकाश आर्य बी. ए. साहित्यरत्न के निवास स्थान पर श्रावणी का यज्ञ एवं साहित्यरत्न वेदपाठ हुआ।

२. सायकाल ५.३० से ९.३० बजे तक जनता की अच्छी उपस्थिति में विद्यार्थी मार्केट मे सामूहिक यज्ञ हुआ। श्री वेदस्वामी जी सरस्वती द्वारा जनता की अच्छी उपस्थिति मे सामगान निवेदित हुआ। श्री लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री, श्री प. देवीप्रसाद जी आर्य भजनोपदेशक तथा अन्य कई विद्वानोके श्रावणी पर्व के महात्म्य पर प्रवचन हुए। श्रोताओ ने मन्त्र-मुग्ध होकर स्वामी द्वारा किये गये सामगान का आनन्द लिया।

आर्यसमाज, मालवीय पथ, अमृतसर।

आर्यसमाज मालवीय पथ (लारेस रोड) अमृतसर मे वेद प्रचार सप्ताह रक्षा बन्धन से कृष्ण जन्माष्टमी तक बड़े समारोह से मनाया गया। दोनो पर्वों पर गायत्री यज्ञ तथा यज्ञ शेष वितरित किया गया। आर्य शिक्षा निकेतन के बच्चो ने दोनो पर्वों पर बड़े उत्साह से भाग लिया।

कथा का कार्यक्रम २७ अगस्त १९६९ से ४ सितम्बर १९६९ तक पूज्य पडित खुशी राम जी शर्मा द्वारा सम्पन्न किया गया।

सभा के लिए पाच सौ रुपये वेद प्रचार के रूप मे प्रधान जी ने आर्य समाज की ओर से सभा मन्त्री जी का धन्यवाद करती है। (सहमन्त्री)

शोक समाचार

पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज (पूर्व नाम शास्त्रार्थ केसरी श्री प अमरसिंह जी आर्य पथिक) के ज्येष्ठ भ्राता श्री ठाकुरसिंह जी उपदेशक का ८२ वर्ष की आयु मे रक्षा बन्धन श्रावणी पूर्णमासी की रात्रि को देहावसान हो गया। श्री उपदेशक जी (प्रायः उपदेशक ही के नाम से प्रसिद्ध थे इतिहास के मर्मज्ञ थे। प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास उनकी वाणी पर नृत्य करता था। वह बड़े कर्मठ व्यक्ति थे।

ओ३म् प्रकाश पुरोहित
आर्यसमाज, दयानन्द वाटिका
सब्जी मण्डी दिल्ली

* समाचार दर्शन *

महात्मा आनन्दभिक्षु जी सर्वाधिकारी घोषित

३१ अगस्त नई दिल्ली—आर्य समाज संगठन समिति द्वारा आयोजित एक विशाल बैठक महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता में आर्य समाज मन्दिर मार्ग में मध्याह्नोत्तर २ बजे से हुई जिस में दिल्ली, गुडगाव, मेरठ, करनाल आदि स्थानो के २०० आर्यसमाजों के प्रधान, मन्त्री तथा कार्यकर्ताओ के अतिरिक्त प० शिवकुमार जी शास्त्री, ला० रामगोपाल जी शाल वाले, प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री, सोमनाथ जी सोमनाथ जी मरवाह उमेशचन्द्र जी स्नातक, रामनाथ जी भल्ला, स्वामी अखिलानन्द जी स्वामी विज्ञानानन्द जी, अमर स्वामी जी, नारायण दास जी कपूर, लाला नवनीत लाल जी एडवोकेट, माता विद्योत्तमावती आदि आर्य समाज के प्रमुख नेताओ ने भी बैठक में भाग लिया। सभी उपस्थित कार्यकर्ताओ ने आर्यसमाज मे चल रहे परस्परिक विवादो के प्रति दुख दुःख प्रकट करते हुए अति शीघ्र सर्वसम्मत समाधान ढूढने के लिए आर्य नेताओ से प्रार्थना की। चार घन्टे के विचार विमर्श तथा सुझावो के बाद सभी नेताओ तथा कार्यकर्ताओ ने विवादो को सुलझाने के लिए महात्मा आनन्द भिक्षुजी महाराज से सर्वाधिकारी बनने तथा अनशन के निश्चय को स्थगित करने की प्रार्थना की जिसे महात्मा जी ने स्वीकार कर लिया।

महात्मा जी ने चारो पक्षो (नई-पुरानी सार्वदेशिक सभा तथा नई-पुरानी प्रतिनिधि सभा पजाब) से प्रार्थना की है कि वे अपनी ओर से अधिकार प्राप्त दो-दो व्यक्ति अपने पक्ष मे स्पष्टीकरण के लिए १० सितम्बर तक दे दे जिनके सहयोग से वास्तविक स्थिति को जानकर अन्तिम निर्णय किया जा सके सब पक्षो की ओर से महात्मा जी को सर्वाधिकारी स्वीकार करने के बाद आर्यजगत मे पुन प्रसन्नता की लहर दौड गई है। हमारी सभी पक्षो से प्रार्थना है कि वे आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का ध्यान रखते हुए महात्मा जी का निर्णय करने मे पूर्ण सहयोग करें तथा उसे सर्वात्मना स्वीकार कर आयोचित आदर्श उपस्थित करे।

—मन्त्री
आर्यसमाज सगठन समिति

गंगानगर में अमृतवर्षा

दिनाक १५-८-६९ तक आर्य-समाज श्रीगगानगर द्वारा नगर के विभिन्न मुहल्लो मे वेद प्रचार और भजन कीर्तन चलता रहा तत् पश्चात् १९-८-६९ से २५-८-६९ तक आर्य समाज मन्दिर मे वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमे शास्त्रार्थ महारथी श्री प० ओम प्रकाश जी शास्त्री (खतौली वाले) एव गायनाचार्य श्री प० शोभाराम जी प्रेमी (मेरठ) ने तन-मन से वेद प्रचार किया। यहा की जनता ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया, सात दिन तक प्रात ७ बजे यज्ञ, ८ से ८॥ तक भजन, ८॥ से ९ तक उपदेश, रात्रि को ८॥ से ९॥ तक भजन, ९॥ से १०॥ तक वेदोपदेश का कार्यक्रम रहा।

मत्री
आर्य समाज श्रीगगानगर

आर्यजगत् में

विज्ञापन छपवाई रेट

पूरा पेज	एक बार	40 रु०
पूरा पेज	वर्ष भर	300 रु०
आधा पेज	एक बार	25 रु०
”	वर्ष भर	200 रु०
चौथाई पेज	एक बार	15 रु०
”	वर्ष भर	150 रु०

नोट—विशेष कारण से इन में अदला-बदली की जा सकती है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अन्तरंग सभा के विशेष निश्चय

दिल्ली—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने अपने अन्तरग सभा की बैठक मे आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने तथा आगामी १४ सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाये जाने आदि कार्यों के सम्बन्ध मे निम्न विशेष निश्चय किये—

१—आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब तथा आर्य प्रादेशिक सभा पजाब को सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध किया गया—

२—सभा की न्याय सभा विद्यार्य सभा एव धर्मार्य सभा के निर्माण पर विचार किया गया।

३—जिन प्रदेशो मे आर्य प्रतिनिधि सभाये नही हैं, उन मे सभाए स्थापित किये जाने का निश्चय किया गया।

४—निश्चय हुआ कि आर्य-समाजो को महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दि तथा गुरु विरजानन्द निर्वाण-शताब्दि म पूर्ण सहयोग देने को लिखा जावे।

५—आर्य जगत् मे १४ सितम्बर १९६९ को 'हिन्दी दिवस' मनाया जावे।

६—निश्चय हुआ कि यह सभा, आर्यसमाज सगठन समिति के अध्यक्ष महात्मा आनन्द भिक्षु जी को आर्य-जगत् के विवादो को निपटाने मे पूर्ण सहयोग देगी और उनके निर्णय को स्वीकार करेगी।

महेन्द्रप्रताप शास्त्री—मन्त्री

प्रादेशिक का वेद प्रचार कार्य

आर्य समाज माडल टाउन पानीपत

२५ अगस्त से लेकर ४ सितम्बर तक ११ दिन श्री प० भास्करानन्द जी शास्त्री, सिद्धात वाचस्पति, प्रभाकर, वैदिक रिसर्चस्कालर, महोपदेश आर्यप्रादेशिक सभा का ओजस्वी वेदो की क... ...था श्री ठाकुर दुर्गासिह 'तूफान' आर्य भजनोपदेशक तथा इनकी भ... ... प० नत्थूराम जी के मनोहर प्रभावशाली भजनोपदेश अ... ... रहे, जनता पर इस वैदिक धर्म प्रचार कार्य का बडा ही प्रभा... ...डा १००) वेद प्रचार के लिये दान ३०) मार्ग-व्यय दिया गया ।

मन्त्री आर्यसमाज माडल टाऊन—पानीपत

गोहाना मण्डी में वेद प्रचार का प्रभाव

तिथि २१ जून से २८ जून तक मण्डी गोहाना (रोहतक) मे आ० प्रादेशिक सभा जालन्धर के उपदेशक प० प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर श्री भूरा राम जी वानप्रस्थी मुमेरसिह व रणजीत सिंह ने बडे उत्साह के साथ प्रचार किया । प्रचार का प्रभाव मण्डी व शहर के लोगो पर बहुत ही अच्छा रहा । प्रचार सुनकर मण्डी के अग्रवाल लोगो ने विवाह शादि की कुरीतियो पर और शराब पर पचायती रूप से बन्धन लगाया मण्डी के सब लोगो के हस्ताक्षर भी लिये गए । मण्डी की ओर से आर्य प्रादेशिक सभा को वेद-प्रचार व मार्ग व्यय कुल ३३२)तीन सौ बत्तीस रु०का दान दिया गया । इस शुभ कार्य मे विशेष भाग लेने वाले, श्री ला० गगा विशन जी आदि और उनके साथी ला० सतनराण जी, गुगनसिंह, प० बदलुराम जी रोनकी राम, ला० रामधन, जयभगवान, जयनरायण, चौ० रणधीर सिंह आदि हैं । आर्य प्रादेशिक सभा आप सब का धन्यवाद करती है ।

प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर

आर्यसमाज टोहाना

श्री प० भास्करानन्द शास्त्री, सिद्धान्त वाचस्पति, प्रभाकर, वैदिक रिसर्चस्कालर, महोपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा का प्रभावशाली ढग पर वेदो की कथा तथा श्री ठाकुर दुर्गासिह जी आर्य 'तूफान' भजनोपदेशक इनकी भजन मण्डली श्री नत्थूराम जी के आर्य सिद्धातो पर ओजस्वी भजनोपदेशक १० दिनो तक होता रहा । स्त्री, पुरुष और बालक सब बहुत बडी सख्या मे आकर धर्मोपदेश का लाभ उठाते रहे, लाउडस्पीकर का भी विशेष प्रबन्ध था, सब लोगो पर वैदिक धर्म प्रचार का बडा ही प्रभाव पडा । २५६) रुपए वेद प्रचार के लिए दान तथा ३०) रुपए मार्ग व्यय सभा के उपदेशक महानुभावो को दिया गया इस कार्य की सफलता के लिए सभा अधिकारियो को विशेष धन्यवाद देती है । —सभा मन्त्री

आर्यसमाज होशियारपुर

आर्यसमाज होशियारपुर मे वेद सप्ताह २७-८-६९ से ४-९-६९ तक बडी धूमधाम से मनाया गया । प्रतिदिन प्रात यज्ञ होता रहा । रात्रि को ८ बजे से १० बजे तक भजन व भाषण होते थे । प्रादेशिक सभा की ओर से श्री प० मेलाराम जी रेडियो सिगर के भजन व श्री प० सत्यव्रत जी के भाषण हुए । —मन्त्री आ समाज होशियारपुर

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर

आ समाज विक्रमपुरा जालन्धर मे २२-८-६९ से २७-८-६९ तक वेद सप्ताह बडी धूमधाम से मनाया गया । प्रादेशिक सभा की ओर से ८॥ बजे से ९ बजे तक श्री मेलाराम जी रेडियोसिगर के भजन होते रहे । जिसको जनता ने बहुत पसन्द किया । श्री ब्रह्मचारी सत्यप्रिय जी का ९ से १० बजे तक उपदेश होता रहा ।

मास जुलाई तथा अगस्त में आर्य समाजों से दान

आर्य समाज कारेस रोड अमृतसर	१०००—००
,, ,, कठुआ (जम्मू)	५०—००
,, ,, साम्बा ,,	३०—००
,, ,, रणबीर सिंहपुरा (जम्मू)	५०—००
,, ,, रामसरन माजर (करनाल)	८५—००
,, ,, दिल्ली माजरा ,,	५५—००
,, ,, तरावडी ,,	५—००
,, ,, दसूहा (होशियारपुर)	५१—००
,, ,, नगल टाऊनशिप ,,	४१—००
,, ,, माडल टाऊन जालन्धर	३०—००
,, ,, बरानी (करनाल)	३०—००
,, ,, नीलो खेडी (करनाल)	११—००
,, ,, बहु कला (रोहतक)	५१—००
,, ,, वजीर बाग (श्रीनगर)	५००—००
डी ए वी हा स स्कूल ,,	१०००—००
आर्य समाज मण्डी (हिमाचल)	१०१—००
,, ,, पालमपुर ,,	१०१—००
,, ,, जोगेन्द्र नगर (हिमाचल)	५१—००
,, ,, धर्मशाला ,,	५०—००
,, ,, खन्ना	११—००
,, स्त्री समाज समराला	२१—००
,, ,, राम नगर (करनाल)	५—००
,, ,, [illegible]डा	३६—००
,, ,, नूरपुर (कागडा)	७५—००
,, ,, जेजो	३४—००
,, ,, माडल टाऊन लुधियाना	१००—००
,, ,, ,, ,, अम्बाला नगर	२५०—००
,, ,, टोहाना (हिसार)	२५६—००
,, ,, मुकेरिया (होशियारपुर)	६१—००
,, ,, तलवाडा टाऊनशिप	७५—००
,, ,, माडल टाऊन यमुना नगर	१०१—००
,, ,, अबोहर	३१—००
,, ,, भरवाई (हिमाचल)	४१—००
डी० ए० वी० स्कूल उडमुड	५१—००
,, ,, ,, स्कूल दसूहा	२१—००
आर्य समाज पाठशाला पौली (जीद)	७५—००
,, ,, टिठौली	१६५—००
,, ,, खरकडा	२० ००

दानी सज्जनों से दान

श्री आत्माराम आर्य तालू	७०-००
,, देशराज ठेकेदार कादियां	१०-००
,, शिवलाल भाटिया बस्ती नौ जालन्धर	२००-००
,, चौ० धर्मवीर सुपुत्र नन्दराम साछ	५१-००
,, गोस्वामी बनवारीलाल पटवारी भगवतीपुर	१२-००
,, रविकान्त गुप्ता कठूआ	५-००
,, वेजराम प्रधान समाज कठूआ	५०-००
,, हरनाम दास रणबीरसिंहपुरा	१०-००
,, सोमदेव एण्ड सज कुमारहट्टी	११-००
,, गीताराम आर्य साम्बा	१०-००
,, ताराचन्द आर्य मण्डी	२१-००
श्रीमती दरोपती देवी जेजो	११-००
श्री चौ० भीमसिह मैयड	११-००
,, धूपसिह दनाजकला	१०-००
,, रणबीरसिह गोहाना	१९-००
,, रत्नसिह, जागीरसिह गनकली	६०-००

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीराम जी एम ए ,पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ३८) ६ आश्विन २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२१ सितम्बर १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अग्निं मन्ये पितरम्

अर्थ :—अग्नि—ज्ञान स्वरूप अग्निदेव परमेश्वर को मैं मन्ये—मानता हूं अपना व सभी का पितरम-पिता, पालना तथा रक्षा करने वाला समझता हूं। वही प्रभु सब का पिता है। वही सभी का रक्षक है।

भाव :—परमात्मा ही हमारा सच्चा पिता है। पालनकर्ता है। वही प्रत्येक दुःख कष्ट में हमारा रक्षक है। हम सभी उसके बच्चे हैं। कौन-सा ऐसा पदार्थ है जो उसकी कृपा से इस जीवन में हमें प्राप्त नहीं हुआ। कौन सा ऐसा दुःख है जिसमें वह हमारी रक्षा नहीं करता है। उसी को अपना सच्चा पिता मानो। अपने को पुत्र मानकर उसी को आत्म समर्पण कर दो। सब कुछ मिलेगा। सं.

ऋग्वेद १०-७-३

वेदामृत

प्रभु को सदा नमस्कार

ओ३म् त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि
त्वं विष्णुरु रुगायो नमस्यः। त्वं
ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पतेत्वं
विधर्त्तः सचसे पुरन्ध्या॥ ऋग्वेद २- -३

अथ .—(त्वम्) आप (अग्ने) हे अग्निदेव परमात्मन्! (इन्द्र:) ऐश्वर्य के स्वामी हो (वृषभ.) सुखों के वर्षक हो (सताम्) सत्पुरुषों के (असि) हो। (त्वं विष्णु:) आप सर्व-व्यापक विष्णु (उरुगाय:) गायन व स्तुति के योग्य हो (नमस्य:) नमस्कार के योग्य हो। (त्वं ब्रह्मा) आप महान (रयिविद) धन भंडारों के भरपूर (ब्रह्मणस्पते) विश्व के रक्षक (त्वं विधर्त्त:) आप हो जगत के धर्त्ता हो (सचसे) प्यार करते हो (पुरन्ध्या) अपने ज्ञान बुद्धि से सभी के प्यारे बनते हो।

इसका भाव यह है

वह प्रभु क्या कुछ नहीं है। सब कुछ है। वही इन्द्र है सारे चर-अचर जगत के विविध ऐश्वर्य का स्वामी है। सत्पुरुषों पर सुखों की वर्षा करने वाला वही है। सभी सुख उसी से मिलते हैं। वही सर्वव्यापक विष्णु है उसी का गायन करो, उसी की ही वन्दना किया करो। वही ब्रह्मा है, महान है, सभी धन उसी का ही है। वह विश्व का धारक है। हे मनुष्यो! उसी को मानो, जानो और पहचानो। उसके स्थान पर किसी अन्य की पूजा मत किया करो—सं.

ऋषि दर्शन

महत्कृपयैव भगवत्कृपालेशाद्वा

अर्थ :—भक्ति का साधन महत्कृपया-महापुरुषों की, प्रभुभक्तों की कृपा से एव-ही प्राप्त होता है और भगवत-भगवान् को कृपालेशात-कृपा से ही मिलता है।

भाव —देवर्षि नारद कहते है कि प्रभु को प्राप्त करने का साधन दो बातों से मिलता है। एक तो महापुरुषों की कृपा व उन का शुभ आशीर्वाद मिल जाए। दूसरा प्रभुदेव स्वयं कृपा करें। जिसको प्रभु-प्रेमियों का आशी· और प्रभु कृपा प्राप्त हो जाते है-उनको प्रभु दर्शन क्या कठिन है? इसलिए परमात्मा के भक्त का कर्तव्य है कि वह सत्पुरुषों का कृपा प्रसाद एव प्रभु का आशीर्वाद सदैव चाहते रहे। उनके लिए लगे रहें। तभी भगवत् प्राप्ति सरल हो सकेगी। —सं.

नारदभक्ति सूत्र ३७

ष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी०(सभा मन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना समर्पण

[श्री रामसुभगसिंह जी, सहमंत्री अ. युवक सभा टंकारा]

आध्यात्मिक जगत मे ईश्वर भक्ति का बहुत महत्व है। या ज्यों कहिए कि आध्यात्मिक जगत मे ईश्वर और आत्मा को छोड़ कर कोई दूसरी वस्तु का समावेश ही नही है। ईश्वर और आत्मा का पूर्ण विवेचन वेदो मे पाया जाता है जो सृष्टि के आदि में रचे गये। इसलिए वेदो मे ईश्वर भक्ति की एक बहुत अच्छी प्रक्रिया का दर्शन होता है। कोई भी भक्त जब ईश्वर प्राप्ति को ही अपने जीवन का एक अभिन्न अंग समझता है तो वह ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना और समर्पण इन चार विषयो को अपनी भक्ति की सीमा मे रखता है। वस्तुतः ईश प्राप्ति के ये चार सोपान हैं जिसके द्वारा ही परमात्मा तक पहुचा जा सकता है। यद्यपि ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासनादि करने से इश्वर अपना नियम छोड़ कर भक्त का पाप स्वय नही छुडा देता, तो भी इस प्रकार की प्रक्रिया से प्रीति उत्पन्न होती है और भक्त ईश्वर के आदर्श गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुधारता है।

ईश्वर के आदर्श गुण-कर्म-स्वभाव की प्रशसा करना स्तुति कहलाती है। स्तुति दो प्रकार की होती है। एक सगुण स्तुति और दूसरी निर्गुण स्तुति। शुद्ध, सर्वज्ञ, सनातन आदि शब्दो का प्रयोग करके ईश्वर की स्तुति की जाती है तो उसे सगुण स्तुति और आप शरीर रहित है, मृत्यु रहित हैं पाप से विद्ध नही हैं, उपकार रहित है, इस प्रकार की स्तुति निर्गुण स्तुति कहलाती है। भक्त को चाहिए कि वह अपने गुण-कर्म-स्वभाव को ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश बनाने का प्रयत्न करे।

प्रार्थना भी दो प्रकार की होती है, एक सगुण और दूसरी निर्गुण प्रार्थना। भक्त ईश्वर को सर्व शक्तिमान और सर्वदाता मान कर अपनी कमी की पूर्ति के लिए याचना करता है तो उसको प्रार्थना कहते हैं। परमात्मा को सदगुण से युक्त मान कर उस सदगुण से अपने आप को युक्त करने की प्रार्थना को सगुण प्रार्थना कहते हैं। भक्त ईश्वर को जिस दोष अथवा दुर्गुण से पृथक मान कर उस दोष अथवा दुर्गुण से अपने-आपको भी पृथक रखने की प्रार्थना करता है तो उसे निर्गुण प्रार्थना कहते है।

प्रार्थना सूखे मन से नही होनी चाहिए। इसके द्वारा हृदय का वास्तविक भाव व्यक्त होना चाहिए क्योकि प्यारी मा भी तो भूख से रोते बच्चे को ही दूध पिलाती है। इसलिए प्रार्थना मे भक्त वेदना युक्त हृदय से अपनी कमियो को परमात्मा के पास रखता है और याचना करता है कि 'प्रभो, हम आपके आश्रय है। आप हमारी अमुक-अमुक आवश्यकताओ की पूर्ति कीजिए।' वेदना युक्त प्रार्थना ही ईश्वर से मान्य होती है। वह हृदय की पुकार होनी चाहिए। एक अग्रेज लेखक ने कितनी सुन्दर बात कही है—God hears no more than the heart speaks, and if the heart be dumb, God will certainly be deaf. परमात्मा सिर्फ हृदय की भाषा सुनता है यदि हृदय गूगा है तो भगवान भी निश्चय ही बहरा होगा।' प्रार्थना के साथ-साथ भक्त का वैसा ही व्यवहार भी होना चाहिए। अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ के उपरान्त ईश्वर से सर्वोत्तम बुद्धि की प्रार्थना करनी उचित है। जैसे पुरुषार्थहीन व्यक्ति की सहायता दूसरा नही करता है वैसे ही परमात्मा भी धर्म से पुरुषार्थहीन मनुष्य की सहायता नही करता है। ऐसी प्रार्थना जिस मे दूसरे की अकल्याण की भावना है, परमात्मा कभी भी स्वीकार नहीं करता है।

यह भक्ति का एक महत्वपूर्ण अग है। इसके अभाव में भक्ति अपूर्ण समझी जाती है क्योकि कोई भी व्यक्ति सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान नहीं हो सकता है। हमेशा उसके अन्दर कोई न कोई कमी मौजूद रहेगी और कमी पूर्ति याचना से ही सम्भव है। यह उन्नति में सहायक है। एमर्सन का कथन है कि प्रार्थना वह पख है जिससे आत्मा स्वर्ग की ओर उड़ता है और ध्यान वह आख है जिससे हम प्रभु का प्रत्यक्ष करते हैं। Prayer is the wing where with the soul flies to heaven and meditation the eye where with we see God. 'हां, भक्त को यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि ईश्वर का विलम्ब उसकी अस्वीकृति है। सच्ची प्रार्थना जो कुछ मांगती है वह अथवा उससे भी अधिक अच्छी वस्तु पाती है।

ईश भक्ति का तीसरा सोपान उपासना है। 'उप' पास 'आसन' बैठना अर्थात ईश्वर से अपनी अधिक समीपता, संयमना उपासना कहलाती है। इस अवस्था में भक्त अपने इर्द-गिर्द संसार की प्रत्येक वस्तु में परमात्मा की उपस्थिति का अनुभव करता है। उसे इस बात का ज्ञान होता है कि परमात्मा प्रत्येक क्षण उसके आस-पास मौजूद हैं। कोई क्षण नही जब वह ईश्वर से अलग है। उपासना दो प्रकार की होती है। सगुण उपासना और निर्गुण-उपासना। सर्वज्ञत्वादि गुणों से युक्त ईश्वर की उपासना सगुण-उपासना है। द्वेष-रूप-रस-गन्ध-तथा स्पर्शादि गुणो से पृथक ईश्वर को मान कर उसमे दृढ होना, स्थित होना निर्गुण-उपासना है। भक्त जब उपासना करना चाहे तब वह शुद्ध एकान्त स्थान मे जा कर आसन लगा, प्राणायाम कर, बाह्य विषयो से इन्द्रियो को रोक कर मन को नाभि प्रदेश में या हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा मे अथवा पीठ की हड्डी के मध्य मे स्थित कर उपासना किया करे।

उपासना का सब से बड़ा लाभ यह है कि जैसे शीत से आतुर मनुष्य का शीत अग्नि के पास जाने से निवृत्त हो जाता है वैसे ईश्वर के समीप स्थित होने पर जीव के सब दोष, दुःख छूट जाते हैं। जीव ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश पवित्र गुण-कर्म-स्वभाव वाला हो जाता है। आत्म शक्ति विशाल हो जाती है।

भक्ति का चौथा सोपान समर्पण है। हालाकि भक्त के पास जो कुछ मौजूद है वह सब ईश्वर प्रदत्त हैं फिर भी वह ईश्वर के प्रति अपना सर्वस्व समर्पण करता है। इसके अन्तर्गत अपनी आयु, प्राण, कर्मफल आदि को ईश्वर की सेवा और आज्ञा पालन मे समर्पित करना होता है। जो परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना, उपासना नहीं करता है उसे कृतघ्न और महामूर्ख समझना चाहिए। जिस परमात्मा ने ससार के सब पदार्थ प्राणियो के सुखार्थ देते हैं उनका गुण और उपकार भूल जाना कृतघ्नता है। अतः मानव मात्र को चाहिए थोड़ा-सा समय भी निकाल कर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना किया करे।

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष ४९] रविवार २०२६, २१ सितम्बर १९६९ [अंक ३८

बड़ा गर्क मत करो

भारत ने सारे विश्व को पुरातन समय से ही आचार चरित्र की देन दी है। इस देश की सब से अधिक मूल्य वाली यह सम्पत्ति है। इतिहास मे चरित्रवान् इस के महापुरुषो की जीवन ज्योति आज भी सभी को आलोकित करती है। भारतीय सस्कृति का आचार्य अपने प्यारे शिष्यो को कहता ही यही था कि मैं चरित्रांस्ते शुन्धामि-तेरे चरित्र को बनाता हू। इसे पवित्र करता हू। हमारा देश आचार के अनुपम पुतलो का देश था। विश्व के तमाम राष्ट्र इसे महान् गुरुमान कर आचार की शिक्षा दीक्षा लेने के लिए यहा पर आते थे। चरित्र के चन्दनवृक्ष से अन्य सारे जीवन पौदे सुगन्धि प्राप्त करते थे। यह हमारी सस्कृति की सब से बड़ी थाती है, जिस पर इस समय भी जितना गर्व किया जाये उतना ही थोडा है। यह राष्ट्र चरित्र प्रधान देश रहा है। खेद है कि दासता के युग मे इस के पश्चिम से ही सभी कुछ सीखने वाले लोगो की दृष्टि हर काम के लिए पश्चिम की ओर ही गई। अपने घर मे कितना कीमती भण्डार भरा हुआ है—इसे वे सर्वथा भूल गये। भाषा भी पश्चिमी और विचारधारा भी उसी वातावरण की। खानपान, वेशभूषा एव शिक्षा दीक्षा भी पश्चिमी ले ली। नाम तो गाधी जी का लेते हैं, कभी- कभी गीत तो पटेल व राजन बाबू जी के गा लेते हैं, नाम तो डा० राधा-कृष्णन् का लेते है, जय तो नेता जी की बुलाते हैं प्रशसा तो लोकमान्य तिलक. प० मालवीय जी, श्री लाल बहादुर शास्त्री भी की कर देते हैं—किन्तु मन पर दासता के विचार पश्चिम के है। आखो पर चश्मा पश्चिमी सभ्यता का लगा रखा है। विचारो के पथ-प्रदर्शन के लिए पश्चिम को ही हरेक बात मे अपना गुरु बना रखा है। जय बुलाने के लिए ही इन नेताओं को आगे रखा हुआ है। किन्तु इन की कही बात कोई नही मानते।

फिल्मो को कला कहा जाता है। यह चित्रपट का ससार बुरा नही है। यदि इस को उचित मार्ग पर चलाया जाए एव निर्माण का स्तर कर दिया जाये तो यह सिनेमा-ससार राष्ट्र का कल्याण कर सकता है। जनता के मनोभावो को अपने अनुकूल चलाया जाये न कि उन मे सोई हुई काम-वासनाओ को, गदे दृश्य और वासना को भडकाने वाले सम्वादो व नाच गानो से और भी भडका दिया जाये। यही चित्रपट का जगत् देश-विकास के लिए, जन-जीवन के लिए अमृत का रूप भी बन सकता है। यह गलत दिशा मे चलाया जा कर तथा केवल धन कमाने की लालसा से विलासी नगी कथाओ को दिखा कर विष भी बन सकता है। इस से देश गिर जाता है। इस समय सिनेमा जगत् से हमारे देश के युवक वर्ग पर कैसा प्रभाव पड रहा है? किस स्तर की कथाए चित्र पट पर दिखलाई जा रही है? जीवन की कामवासना का किस प्रकार का नगारूप पेश किया जा रहा है—तथा इस कला का क्या-क्या परिणाम निकल रहा है? यह तमाम बाते सब के सामने है कुछ भी कहने की इस पर आवश्यकता नही। ऐसे चित्र बहुत थोडे बनते हैं जिन से राष्ट्र के जनजीवन का सुधार हो, देश की प्रगति हो, विचारो मे प्रौढता आये। इस के विपरीत अब तो ऐसा हो रहा है जिस से काम-वासना का नगारूप और अधिक नगा हो जाये, विलास के विचार उत्तेजित हो, अनाचार को प्रश्रय मिले, आचार हीनता खुल कर खेले। कला को केवलमात्र पैसे कमाने का साधन बना दिया है।

अब तो खोसला समिति ने चित्र पट पर खुले परस्पर के चुम्बन तथा नग्नरूपता की भी स्वीकृति दे डाली है। कुछ बेडा तो पहिले से ही गर्क हो रहा था, अब इस नगेपन को दिखाने की मजूरी दे कर रही सही कसर भी निकाल दी गई है। भारतीय चरित्र का बेडा पूरी तरह से गर्क कर के रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है। पर्दे पर परस्पर के चुम्बन कार्यो को तथा विविध प्रकार से अश्लीलता भरे नगेपन को देख कर दर्शको पर क्या प्रभाव होगा? कौन नही जानता पर बात यह है कि इसके लिए जिनके पास गिला करना है, वही तो स्वय ऐसा करा रहे हैं। उनको इसमे किसी प्रकार की बुराई नही दिखाई देती। सभ्यता के नाम पर इस समय उनके विचार मे इसमे कोई आपत्ति ही नही प्रतीत होती। फ्रास जैसे देश महान देश का बडा गर्क इसी विलासी जीवन का पथ स्वीकार करने के कारण हुआ था—नैपोलियन को पैदा करने वाला वीर राष्ट्र जर्मन सेनाओ के सामने एक सप्ताह भी टिक नही सका था। मार्शल पेटा के वेदना भरे शब्द आज भी सभी के कानो मे गू जते है। युवक वर्ग एव जनता शृगार के गढे मे जा गिरते है तो उनका कठिन हो जाता है।

आज भारतीय जीवन की युगो से सुरक्षित की हुई पवित्र चरित्र की थाती को चोट पहुचाई जा रही है। आचार की नौका को अनाचार के गहरे सागर मे गर्क करने की कोशिश जा रही है। सारे देश के जीवन का पश्चिमी-करण करने का जोर लगाया जा रहा है। दो प्रकार के विचारो का इस समय सघर्ष हो रहा है। यदि भारतीय परम्परा के प्रेमी जनता ने इस समय करवट न ली। ऐसे-ऐसे प्रवाह का प्रचार प्रतिरोध न किया तो सारे भारतीय जीवन का बडा गर्क होने मे देर न लगेगी।

—त्रिलोक चन्द्र

रोग का मूलकारण

रोग शरीर को खा जाता है। उसका उपचार करना नितान्त आवश्यक होता है। थोडी-सी बीमारी भी बढते-बढते मौत के द्वार पर लाकर खडी कर देती है बीमारी का मूल कारण पता लगने पर ही उसका उपचार हो सकता है। रोग क्या और कहा है? इसे तो न जाना जाये और इधर-उधर का इलाज किया जाये तो वह रोग कभी ठीक नही होता। न ही ऐसे चिकित्सक को योग्य ही ही कहा जायेगा। सब से पूर्व निदान और फिर इलाज। बीमारी चाहे शरीर मे हो या समाज, राष्ट्र के विशाल शरीर मे। यह नियम सर्वत्र एक जैसा लागू होता है।

आजकल देश के युवकवर्ग मे बडी बेचैनी है। यह अपनी सीमा, मर्यादा को भी तोड देता है। कभी तो अपनी मान्यताओ को हानि पहुचाने मे भी तनिक लज्जा का अनुभव नही करता। उनकी बडी क्षति कर देता है। अपने गुरुजनो के प्रति भी अशिष्टता, अभद्रता का व्यवहार दिखाने मे शर्म नही करता। राष्ट्र की कीमती सम्पत्ति भी तोड-फोड देता है और भी कई ऐसी वैसी करता रहता है। आये दिन राष्ट्र के भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे ऐसे-ऐसे खेद-जनक समचार पढने मे मिलते हैं। कभी स्टेशन जलाये जा रहे है तो कभी बसे तोडी जाती है। कभी अपने ही शिक्षण सस्थानो की क्षति की जा रही है तथा अपने मान्य शिक्षकोका घोर अपमान किया जाता है। साधारण-सी बातो पर भयकर काण्डो की धमकिया दी जाती है। हम सोचते है कि यह युवक वर्ग आगे चल कर देश के कार्य भार को किस प्रकार से सम्भालेगा? यह तो ठीक है कि इस युवा वर्ग मे कुछ ऐसा छात्रो का वर्ग होता है जो चाहता ही यही है कि राष्ट्र के वातावरण मे शान्ति न हो। शिक्षण सस्थानो मे आराम का युग न स्थिर रहने पाये। कुछ न कुछ होता रहना चाहिए। मामूली-सी अशान्ति की चिगारी पैदा हुई नही कि ऐसा वर्ग सामने आ कर उसे हवा देता है। ज्वाला भडका कर तमाशा देखता है। जिन के दिल मे अपने मान्य गुरुजनो के प्रति पूजा की भावना नही है, उन के लिए प्रतिष्ठा, निष्ठा नही है। उसने आगे क्या बनना और करना है।

किन्तु एक बात और भी है कि इस रोग का मूल कारण क्या है? हमारी समझ मे तो यह बात आती है कि जब तक वर्तमान शिक्षा पद्धति चलती रहेगी, इस मे परिवर्तन नही होता तब तक रह रह कर अशान्ति का वातावरण पैदा होता रहेगा। हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने स्वय एक बार कहा है कि शिक्षा पद्धति हम ने विदेशी सत्ता से ली है। इस मे परिवर्तन करना ही होगा। शिक्षा परिवर्तन ही इस बीमारी का सच्चा इलाज है।

—स०

आदर्श मानव—श्री कृष्ण

—श्री ज्ञानसिंह जी नई, दिल्ली—

श्री कृष्ण भारत के ही नही बल्कि ससार की एक महान् विभूति है। इनका उपदेश जो गीता के रूप मे वर्णन है ससार भर के विद्वानो, विचारशील व्यक्तियो दार्शनिको ने उसके लिए श्रद्धा के भाव प्रकट किए है, सब उसका मान करते है। रूस के प्रसिद्ध लेखक कौट टालस्टाय ने कहा था 'गीता मेरी आत्मा की ज्योति है, मैं आखे रखता हुआ भी अन्धा था गीता के वचन मेरी आत्मा की ज्योति है। वह मेरी आत्मा की आख है।' गीता का ज्ञान केवल हिंदुओ अथवा हिदुस्तानियो के लिए ही नही बल्कि मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी है। यही कारण है कि गीता का अनुवाद ससार भर की प्रत्येक मुख्य भाषा मे हो चुका है।

श्री कृष्ण का निजी व सार्वजनिक जीवन भी अति उज्जवल तथा महान था। वह एक आदर्श महात्मा पुरुष थे। वह बाल काल से ही वीर थे। उनकी वीरता की बहुत सी घटनाए प्रसिद्ध है। एक बार एक बडा बैल पागल हो गया। ग्वालो की जान पर आ पडी। श्री कृष्ण ने अपनी बलवान भुजाओ से उसे पकडकर पृथ्वी पर पटक दिया। इस बैल का नाम अशत था।

इसी तरह उन्होंने एक केशी नाम के लम्बे-लम्बे बालो वाले घोडे को जमुना के पास के जगल मे जो किसी को अपने निकट नही आने देता था और सबको भयभीत किए हुआ था निहत्थे ही पृथ्वी पर गिरा दिया। कालिया के नाग को जिसने जमुना का पानी विषैला कर दिया था उन्होंने मार डाला।

श्री कृष्ण मे सगठन शक्ति कमाल की थी। एक बार गोकुल के जङ्गल मे भेडिये आ गये जिन से गोपो को बहुत कष्ट होता था। कृष्ण ने समझा बुझा कर उनसे गोकुल छुडा दिया और उन्हे वृन्दाबन मे जा बसाया। श्री कृष्ण मे अगुवा बनने की योग्यता बालपन मे ही थी। गोप लोग एक उत्सव मनाया करते थे। इस उत्सव पर वह पुराने रिवाज के अनुसार कृषि यज्ञ किया करते थे। सम्भव है कि उनके पूर्वज कृषक हो परन्तु उनका काम अब गऊ पालना था। श्री कृष्ण ने उन्हे समझाया कि अब उन्हे हल और जुए की पूजा से क्या मतलब! हमारे देवता अब गाये है या गोवर्धन पर्वत जिस पर घास पैदा होती है जिसे यह गाये खाती है और दूध देती है। जिस से हमारा निर्वाह होता है। इस तरह वह उत्सव के दिन सब गोपो को गोवर्धन पर्वत पर ले गये। गौओ को फूलो से सजाया गया उन्हे खूब खिलाया गया और घुमाया गया। इस तरह गौओ की पूजा की गई। इसी घटना की याद मे गोपाष्टमि का उत्सव अब भी मनाया जाता है।

एक बार बृन्दाबन मे बडी वर्षा हुई। नदी नाले सब ओर से भर-भर कर आने लगे। जमना मे बाड आ गई और गोपो को बस्ती मे रहना असम्भ हो गया। श्री कृष्ण जो गोपो के प्रत्येक सकट मे उनके सहायक होते थे उस समय भी उनकी सहायता के लिए तैयार हो गये। वह सारी बस्ती की बस्ती को गावो से निकाल कर गोवर्धन पर्वत पर ले गए। पर्वत को वृक्षो से साफ किया गया, वन के साप, बिच्छू, चीटे आदि हिसक जन्तुओ से खाली कर सब गोपो को एकत्र करके उनको गौओ समेत वहा बसाया गया। सात दिन लगातार वह वर्षा होती रही। कृष्ण ने अपना डेरा वही लगाये रखा और गोपों की सेवा करते रहे। यही उनका गोवर्धन पर्वत को उगली पर उठाना [illegible] वर्षा समाप्त हुई तो गोयो और गोपियो ने उनका मूक धन्यवाद [illegible] वह सब की आखो का तारा बन गए। इस कडे समय मे श्री [illegible] सहायता, साहस, परिश्रम के कारण गोप व गोपिया उनको अपने [illegible] अपनी गौओ का प्राणदाता समझने लगे।

श्री कृष्ण बडे श्रद्धालु ईश्वर भगत थे, सन्ध्या अग्निहोत्र व उपासना मे वह कभी नागा नही करते थे। जब वह पाडुओ का दूत बन कर हस्तिनापुर कौरो के पास जा रहे थे, रास्ते मे सायकाल हो गई। वही उन्होने रथ को खडा कर सन्ध्या उपासना आदि की। इसी तरह हस्तिनापुर मे पहुच कर धृतराष्ट्र के दरबार मे बातचीत करने से पूर्व उन्होने सन्ध्या अग्निहोत्र आदि का नितनेम पूरा किया। यहा तक कि अभिमन्यु की मृत्यु के दिन भी उन्होंने अपने कैम्प मे जाने से पूर्व अर्जुन के साथ अग्निहोत्र किया।

वेद वेदाग का तत्वज्ञ शस्त्र शास्त्र दोनो का महारथि नीति का पुतला वीर योधा, क्षमा शील कृष्ण शालीनता को भी सजीव प्रतिमा था। वह जब कभी धृतराष्ट्र कुन्ती युधिष्ठर आदि बडो से मिलते थे। उन के चरण छूते थे। जब युधिष्टर का राजसीय यज्ञ रचाया गया तो श्री कृष्ण ने जिन की विद्या तेज शक्ति, चरित्र की भरपूर प्रशसा करते हुए भीष्म ने अन्य उपस्थित ऋषिमुनियो ने एक स्वर से यज्ञ की सभा के प्रधान पद के लिए उन के नाम का समर्थन किया। यज्ञ मे आये हुए विद्वानो ऋषिमुनियो व ब्राह्मणो के पाव धुलाने का काम किया। वह थी उन की विनम्रता। यही नही बल्कि जब महा भारत के युद्ध के बाद युधिष्ठर ने अश्वमेध यज्ञ रचाया तो उन्होंने अरघ स्वीकार न किया। पाडवो की विजय मे उन का बडा हाथ था बल्कि यह कहने मे अतिश्योक्ति न होगी कि यदि श्री कृष्ण उन की ओर न होते तो सम्भवता उन की विजय न होती, फिर भी उन्होंने इस मान को जिस के वह हर तरह से अधिकारी थे अस्वीकार कर के अपने त्याग विनम्रता का सबूत दिया।

श्री कृष्ण की एक ही पत्नी थी जिन का काम रुक्मणि था। श्री कृष्ण और रुक्मणि कितने सदाचारी थे। इस का उल्लेख महा भारत कार ने इस प्रकार किया है। "विवाह के पश्चात उत्तम सन्तान की उत्पति के लिए दोनो ने बारह वर्ष ब्रह्मचारी रहने और तप करने का सकल्प किया। हिमालय के दामन मे निरन्तर बारह वर्ष ब्रह्मचार्य पूर्वक तपस्या एक सद गृहस्थी का आदर्श समय है। श्री कृष्ण और रुक्मणि दोनो कितने तपस्वी कितने सदाचारी कितने सयमी थे इसी एक घटना से स्पष्ट है।

कितनी थी सहनशीलता श्री कृष्ण की। युधिष्ठरके राजसीय यज्ञ पर श्री कृष्ण को प्रधान बनाए जाने के प्रस्ताव का विरोध करते हुए, शिशुपाल श्री कृष्ण के बारे मे कुछ अपशब्द कहने लगे। श्री कृष्ण शान्ति से सुनते रहे। अन्त मे जब भीष्म के रोकने पर भी शिशु पाल अपशब्द कहता रहा तो श्री कृष्ण ने कहा कि मैंने शिशुपाल की माता को उसके सौ अपराध क्षमा करने का वचन दिया हुआ ह। यदि उसने इस हद को पार कर दिया तो मै उसका सिर धड से अलग कर दू गा। जब फिर भी शिशुपाल ने अपनी बदकलामी जारी रखी और उस हद को पार कर दिया तो श्री कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र को घुमाया और शिशुपाल का सिर काट डाला। श्री कृष्ण सब झगडो को शान्ति और सदभावना से मिटाना चाहते थे। जब वह गुरुकुल से अपनी शिक्षा समाप्त करके घर आए तो देखा कि उनका यादवकुल आपसी फूट का शिकार हो चुका है। इस वश के दो उपवश थे। एक वृष्णि, दूसरा अन्धक, वृष्णियो का नेता अवसर था और अन्धको का आहुक। दोनो की आपस मे बनती नही थी। पर्णाम यह हुआ कि कस जिसने एक शक्तिशाली राजा जरासन्ध की दो पुत्रियो से विवाह किया था। अपने पिता उग्र सैन को जो श्री कृष्ण के नाना देवक का भ्राता था बन्दी बना कर स्वय मथुरा का राजा बन बैठा था और यादवो पर अत्याचार कर रहा था। श्री कृष्ण ने आहुक की कन्या का विवाह अकरूर से करा दिया और इस तरह दोनो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मूर्ति पूजा का एक विशेष रूप

'मूर्ति पूजा' तथा 'सुखणा' (वरदान) भयंकर रोग है, जाति को इन से बचाओ

(लेखक : बूटा राम जी जिज्ञासु, मन्त्री जिला वेद प्रचारिणी सभा, होशियारपुर)

मूर्ति-पूजा को जिस भी दृष्टि से देखा जाए यह ईश्वर-पूजा की विधि किसी भी सूरत मे सिद्ध नही हो सकती, इसके विपरीत यह उपासक को एक भ्रम मूलक और नितान्त गलत रास्ते पर डाल देती है। जिस का परिणाम कभी भी इच्छित फल का देने वाला नही हो सकता। क्योकि ईश्वर प्राप्ति इसके द्वारा सर्वथा असम्भव है। विस्तार मे न जाते हुए केवल दो ही हेतु देने पर्याप्त होगे —

(१) मूर्ति-पूजक का जब ध्यान अवस्थित होता है तब मूर्ति से ध्यान को हटा कर, आखे मून्द कर नितान्त मौन साध कर अपनी अन्तरात्मा मे ही कुछ विचार करता है, सोचता है, कोई धारणा बनाता है, पर यह नही समझता कि वह जो कुछ भी मन मे नकशे बना रहा है उन मे से कोई भी 'ईश्वर' नही और न ही ईश्वर के द्योतक है। वह तो कोई न कोई इधर-उधर के 'समारक' विचार ही होते है। 'ध्यान' की तो अवस्था ही और है—जब तक किसी भौतिक पदार्थ का या ससारिक धन्धो का वस्तुओ का, सम्बन्धो आदि का ध्यान है उस वक्त तक 'ईश्वर उपासना' नही बल्कि कुछ और ही खेल हो रहा है। मूर्ति इस प्रकार की मानसिक अवस्था को बनाये रखने मे सब से ज्यादा हेतु बनती है। वह 'ध्यान' की अवस्था कदाचित ला ही नही सकती क्योकि ईश्वर-उपासना अर्थात् योग के सब से बडे विशेषज्ञ, उस्ताद और सिद्धि कर्ता महामुनि पातञ्जली के शब्दो मे ध्यान उस अवस्था का का नाम है जिस मे मन निर्विषय अर्थात ससारिक पदार्थो के चिन्तन से रहित हो। स्पष्ट है कि मूर्ति मन की ऐसी अवस्था बनाने मे सहायक नही उल्टा बाधिक ही बनती है। ससार मे कुछ बाते असम्भव कोटी मे गिनी जाती है उन मे से एक यह भी है कि मूर्ति के द्वारा परमेश्वर की उपासना की जा सकती है। अत एव किसी मूर्ति पूजक को यह कदापि आशा नही रखनी चाहिये और इस भ्रम मे हरगिज नही रहना चाहिये कि वह मूर्ति के द्वारा ईश्वर उपासना करता है अथवा कर भी पायेगा। मूर्ति पूजा और ईश्वर उपासना दो भिन्न-भिन्न और एक दूसरे के विपरीत बाते है, इस बात को अच्छी तरह से हृदय अगिम (जेहन नशीन) कर लेने की आवश्यकता है।

(२) दूसरा हेतु (सबूत) यह है कि मूर्ति पूजा मे ईश्वर-मिलाप (जो भक्ति का उद्देश्य है) कदापि नही हो सकता-कारण कि मूर्ति पूजक की आत्मा जहा है वहा ही 'मिलाप' होना सम्भव है, जहा है नही वहा कैसे होगा? स्पष्ट है कि उपासक की आत्मा उस के अपने शरीर मे है न कि मूर्ति मे फिर मूर्ति द्वारा ईश्वर का मिलाप कैसे हो सकता है?

इन दोनो हेतुओ से मूर्ति पूजा नितान्त निरार्थिक तथा अनावश्यक सिद्ध हो जाती है। तिस पर यदि कोई हठीदुराग्रही व्यक्ति अपना समय तथा जीवन मूर्ति पूजा मे नष्ट करने से न टले तो उन को क्या कहा जाये। हा वह ससार भर मे आर्य (हिन्दू) जाति को बदनाम कर के बडा भारी कलक लगाने के भागी जरूर बनते है जो कि राष्ट्रीय दृष्टि मे बडा भारी पाप है।

सुखणा यह प्रश्न फिर भी शेष रह जाता है कि कोई व्यक्ति आखिर मूर्ति पूजा करने को क्यो उद्यत हो जाता है। इस मे बहुत से कारण हो सकते है। पर मैं यहा केवल एक ही कारण का उल्लेख करूगा और वह है जिसे पजाबी बोल-चाल मे 'सुखणा' कहते है। हिन्दी मे वरदान और उर्दू मे मुरादे या मिन्नते मागना कह सकते है। यह सुखणा क्या है? केवल किसी व्यक्ति की आत्मिक दुर्बलता का चिन्ह है। जब किसी की कोई इच्छा (सामयिक) पूरी नही होती या उसे यह विश्वास नहीं रहता कि उसके अपने किये हुए कर्म का यथेष्ट फल निकल आयेगा तब वह किसी अज्ञात शक्ति का सहारा ढूढता है। सहज से ही उसका ध्यान किसी ऐसे व्यक्ति की ओर जाता है जो उसे विश्वास दिला दे कि अमुक उपाय करने से उस का प्रयोजन सिद्ध हो जायगा। चूकि उसकी आत्मा मे पहले ही ऐसा आश्वासन पाने की तीव्र भावना बनी हुई होती है इस लिए वह तुरन्त ही ऐसे व्यक्ति की सलाह मान लेता है और वह जैसे कहे करने लग जाता है। 'स्वार्थ' वश उसमे **अपनी बुद्धि से सोचने** का मादा कम हो जाता है या प्राय नष्ट-सा ही हो जाता है। जब बुद्धि नष्ट हो जाए तो इन्सान, इन्सान नही रह जाता, पशुवत् हो जाता है पशू को कोई कही हाक कर ले जाए। ऐसे ही उस इन्सान की दशा होती है जो स्वार्थ सिद्धि या इच्छा-पूर्ति के प्रलोभन मे दूसरे के हाथ बिक जाता है। ससार मे ऐसे लोगो की कमी नही जो ऐसे लोगो की इस निर्बलता से लाभ उठाना जानते है। यह कृत एक व्यक्ति तक सीमित न रह कर बडे दायरे मे फैल कर एक बडी सामाजिक बुराई और कुरीति का रूप धारण कर लेती है। एक व्यापार सा चल पडता है और होते-होते ऐसा रिवाज बन जाता है जिसकी जडे बहुत दूर तक फैल जाती है और फिर उनका उन्मूलन किसी एक व्यक्ति के क्या सारी जाति के वश से बाहर की बात हो जाती है और ऐसी निर्बुद्धिता से फाईदा उठाना एक पेशा बन जाता है और उनके अड्डे कायम हो जाते है।

देखना यह है कि आया 'सुखणा' वास्तव मे कभी यथेष्ट फल ला भी सकती? सुखणा का जो वर्तमान रूप है वह प्राय मरे हुए प्राणियो की रूहो से 'अपील' फरियाद, अरदास या बिनती होती है और साथ मे कुछ द्रव्य भेट करना यानी चढावा चढाना। सोचने की बात है कि आया ऐसी आत्माए वहा 'मौजूद' होती है, सुनती है और 'अर्ज' स्वीकार अथवा खारिज करती है? यदि मौजूद है तो सर्व-व्यापक माननी पडेगी जब कि एक आत्मा कदाचित हो नही सकती यदि मौजूद नही और बुलाने पर या अर्ज सुन कर आ जाती है तो वह स्वतन्त्र न रही बल्कि स्वार्थ या मोह मे फसी हुई है या पक्षपात करने वाली है। सुनने के लिए सोचने के लिए शारीरिक सभी उपकरणो की जरूरत पडेगी जो कि मर जाने के साथ ही उनके पास रहे ही नही। बिना नया शरीर धारण किए यह काम होने असम्भव है नया शरीर धारण करना या न करना उनके अपने वश या मर्जी की बात ही नही है। फिर वह किस प्रकार से किसी का कुछ बना या बिगाड सकेगे। परन्तु स्वार्थ मे अन्धा हुआ और किसी दूसरे चालाक या मूर्ख व्यक्ति के बहकावे मे आया हुआ इन प्रश्नो पर विचार तो क्या किसी की नसीहत भी सुनने को तैयार नही होता। यह एक मानसिक रोग जिससे हिंदु जाति विशेषत पीडित है। जाति के हितैषियो को इसे कम न समझना चाहिए बल्कि इसे तपेदिक समझते हुए इसके उन्मूलन मे बडा भीषण प्रयत्न करना चाहिए। यह प्राय सभी कुरीतियो की जड है। मूर्ति पूजा की तो यह जननी (मा) है।

परमेश्वर हमारी जाति को मूर्ति-पूजा और 'सुखणा' की बीमारी से बचाए।

चौ० बलवीर सिंह जी का अनशन

माननीय चौधरी बलवीर सिह जी एम. एल. ए होश्यारपुर के जाने माने हुए नेता हैं। वीर पुरुष है। बडे ही स्पष्टवादी है तथा बहुत पराने आर्य समाज सेवी है। पजाब विधान सभा के सदस्य है। आर्य समाज के स्तम्भ है। डी ए वी कालेज प्रबन्ध कमेटी होश्यारपुर के प्रधान है। आर्य प्रादेशिक सभा पजाब के बडे ही सूत्र-धार नेता है। पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ ने होश्यारपुर मे डी ए वी कालेज आव एजुकेशन सस्थान मे बी एड की सीटो को कम कर दिया है। उन्हे बहाल कराने के लिए तथा सीटे पूरी कर देने के लिए विश्वविद्यालय की भेदभाव की नीति के विरुद्ध अनशन पर है। लोक कल्याण की कितनी भव्य भावना है कि सारे जिले के शिक्षा सुख के लिए अपने प्राणो की आहुति लगा रखी है। दूसरी बातो के अनशन मे तो मतभेद हो सकता है किन्तु समाज सेवी, लोकोपकारी श्री चौधरी जी के इस अनशन को जितनी जल्दी यूनिवर्सिटी स्वीकार कर ले उतना ही अच्छा है। उनकी माग सर्वथा न्याय पूर्ण और उचित है। दूसरो के उपकार के लिए तथा हित भावना के लिए इनके समान कोई ही वीर नेता होता है। प्रभु मान्य चौधरी जी को इस जीवन यज्ञ मे पूर्ण सफलता देगे निश्चय है।

— सम्पादक

संस्कृत जीवित भाषा है

संस्कृत तमाम भाषाओ की जननी है। इस का साहित्य विशाल तथा शब्द कोश भण्डार भरपूर है। भारत की पुरान सभी प्रकार की थाती इसी मे भरी हुई है। ऐसा भी युग था जब कि संस्कृत ही जन भाषा थी। सभी काम काज इसी में चलता था। जन जीवन की उदासी नता एवं विदेशी सत्ता के आ जाने पर संस्कृत को सब प्रकार से समाप्त करने के चारों ओर से प्रयत्न किये गये। संस्कृत विद्या केन्द्र बन्द कर दिये गये। सर्विस में लेना समाप्त कर दिया गया। उपहास किया गया। खुल कर विरोध किया गया। हर तरह किया गया। खुल कर विरोध किया गया। हर तरह इसे दबाया जाने लगा। अंगरेजी को सम्मान दिया गया। इस के पढने वालों को ऊंची २ सर्विस पर बिठाया जाने लगा। संस्कृत को मृतभाषा कहा जाने लगा।

किन्तु नमस्कार है संस्कृत के प्रेमियो को। नाना विध कष्ट सहन कर, भूखो रह कर भी उन लोगों ने संस्कृत के प्रति अपनी निष्ठा नहीं बदली। इस समय समाचार पत्रों में भारत के प्रेस रजिस्टरार की एक रिपोर्ट के अनुसार १९६८ में देश में संस्कृत की २९ पत्रिकाएं निकल रही थीं, जिन की ग्राहक संख्या ग्यारह हजार थी। १९६३ में यह संख्या १८ थी। महाराष्ट्र, उत्तर-प्रदेश और पश्चिम बंगाल प्रत्येक से संस्कृत की पांच २ पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। गुजरात से तीन पत्रिकाएं और बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश से दो-दो पत्रिकाएं निकलती हैं। आन्ध्र, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और तमिलनाडु से एक-एक पत्रिका प्रकाशित होती है। इन मे से सब से पुरानी पत्रिका संस्कृत साहित्य परिषद् है जो १९१८ से कलकत्ता से प्रकाशित हो रही है।

जो विदेशी सत्ता के मानसपुत्र हैं, वो संस्कृत को एक मृतभाषा का दर्जा देते हैं। वे जरा आखें खोल कर देखें कि यह भाषाओं की जननी मृत है या जीवन वाली है। अच्छी बात यह है कि इसे मुर्दा कहने वाले स्वयं ही स्वाभिमान व आत्मगौरव में सर्वथा मुर्दा हो चुके हैं। उनको विदेशी भाषाएं तो जीवित दिखाई देती हैं और अपनी जननी संस्कृत मुर्दा। प्रभु उनके विचारों को बदले। यह ठीक है कि हमने अपनी मातृभाषा संस्कृत भाषा की ओर ध्यान कम दिया है। उसका सम्मान नहीं किया। इसके विकास के लिए कुछ भी नहीं किया। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि संस्कृत जीवित है और अमर रहेगी। इसे मारने वाले मर गये और समाप्त हो जायेंगे किन्तु संस्कृत अमर बनी रहेगी। हा अब हरयाणा प्रांत बन गया। उस में भी एक दो पत्रिकाएं संस्कृत मे प्रकाशित होनी चाहिए वह पीछे न लगे। मान्य नेता इधर ध्यान देवे—सं०

आदर्श मानव श्री कृष्ण

(पृष्ठ ४ का शेष)

उपवशो को प्रेमसूत्र मे बांध दिया। फिर कंस के अत्याचारों का अत करने के लिए उसका वध कर दिया और उग्रसेन की राजगद्दी पर बैठा दिया। यादवो की आपसी फूट का दूर करना श्री कृष्ण की बुद्धि का एक भारी प्रमाण है। इसी तरह पांडवो और कौरो के बीच युद्ध को रोकने के लिए आपने अनथक यत्न किया परन्तु जब सफलता न हुई और न्याय के हेतु युद्ध अनिवार्ण प्रतीत हुआ तो उस से मुंह न फेरा। वह अत्याचार अन्याय को शान्ति से दूर करना चाहते थे परन्तु जब देखा कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते तो अपने क्षत्रिय धर्म का दृढ़ता से पालन किया। श्री कृष्ण ने अपनी बुद्धि व नीति-निपुणता का प्रमाण एक और बार दिया। महाभारत का युद्ध होने को था पांडवों के करणाधार श्री कृष्ण थे परन्तु यादवों की सहानुभूति दोनों पक्षो में बट गई। बलराम चाहता था कि कौरवों की सहायता की जाए। कुछ लोग खुलमखुला उनकी ओर हो गए। श्री कृष्ण ने अपनी सूझबूझ व नीति-निपुणता का दिग्दर्शन कराया। वह स्वय अर्जुन के सारथी बन गए। इस से वह पाडवों के नेता बन गए, फिर उन्होने शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा कर ली। ऐसा करने से उन्हे अपनो पर हाथ उठाने का अवसर ही न मिला। उनकी सेना कुछ दुर्योधन की हो गई और कुछ पाडवों की ओर। दुर्योधन व अर्जुन के श्री कृष्ण के सिरहाने व पाव की ओर बैठने की बात कुछ युक्ति युक्त प्रतीत नही होती क्योकि ऐसे महत्वपूर्ण राजनैतिक प्रश्नो का निर्णय इस तरह की बातो से करना ठीक मालूम नही होता। उस समय देश छोटे-छोटे राज्यो मे बटा हुआ था। घर-घर मे राजा थे और वह अपना ही हित चाहते थे। उनमें से कोई सम्राट न था। जरासध एक शक्तिशाली राजा था, उसने कई गण राज्यो को तहस-नहस कर दिया था। ८६ राजाओं को बन्दी बना रखा था और घोषणा की थी कि जब ऐसे राजाओं की गिनती १०० तक पहुच जाएगी तो उन्हें महादेव की बलि चढा दिया जाएगा। श्री कृष्ण ने यह विचार कर कि जब तक जरासध जैसा अत्याचारी राजा भारत में है यहां आर्य समराज्य स्थापित करना संभव नही इसलिए उन्होंने भीम द्वारा जरासंध का वध कराया, कैदी राजाओ को मुक्त किया और राजसूर्य जज्ञ करके सब राजाओ को सम्राट युधिष्ठर की छत्रछाया में एक सूत्र मे बांधा और भारत को महाभारत बनाया। यह श्री कृष्ण का एक महा कार्य था। साराश श्री कृष्ण एक वीर नीति के पुतले शील की प्रतिमा, सदाचार की मूर्ति, वेद विद्या के सागर, आदर्श मानव थे, महर्षि दयानन्द जी ने श्री कृष्ण जी के बारे मे लिखा है देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा है।'

महर्षि दयानन्द की वेदार्थ विषयक क्रान्ति का निष्पक्ष विद्वानों पर प्रभाव

(आचार्य श्री धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, आनन्दकुटीर, ज्वालापुर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती से पूर्व मध्यकाल में जो वेद भाष्यकार हुए हैं प्राय उन सबने (श्री स्कन्द स्वामी, स्वा० आनन्द तीर्थ स्वा० आत्मानन्द आदि कुछेक को छोड़कर) वेदों को केवल कर्मकाण्ड परक माना तथा उनमें प्रयुक्त अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुणादि शब्दों को विविध देवता प्रतिपादक माना था। उदाहरणार्थ यजुर्वेद भाष्यकार श्री सायणाचार्य ने काण्वसंहिता भाष्य की भूमिका में स्पष्ट लिखा कि—

एतस्मिंश्च वेदे द्वौ काण्डौ कर्मकाण्डो ब्रह्मकाण्डश्च। बृहदारण्य काख्यो ग्रन्थो ब्रह्मकाण्डस्तद्व्यतिरिक्त शतपथ ब्राह्मण संहिता चेत्यनयो. कर्मकाण्डत्वम्। तत्रोभयत्राधानाग्नि होत्र दर्श पौर्ण मासादि कर्माण्येव प्रतिपादितत्वात् ॥

(श्री सायणाचार्य काण्वसंहिता भाष्ये)

अर्थात्-वेद में दो काण्ड हैं। कर्म काण्ड और ब्रह्मकाण्ड। बृहदारण्यक नामक ग्रन्थ ब्रह्म काण्ड है, उसके अतिरिक्त शतपथ ब्राह्मण का शेष भाग और संहिता दोनों कर्मकाण्ड पर हैं क्योंकि उन दोनों मे अग्न्याधान अग्निहोत्र, दर्श, पौर्णमासादि कर्मों का ही प्रतिपादन है। आचार्य स्कन्द स्वामी ने निरुक्त और ऋग्वेद भाष्य मे वेद मन्त्रों के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधियाज्ञिक, दृष्टि से तीन अर्थ माने हैं किन्तु जो वेद भाष्य उपलब्ध हैं, उस मे आध्यात्मिक व्याख्या प्राय नहीं पाई जाती। श्री सायणाचार्य उव्वट महीधरादि वेद भाष्यकार विद्वान थे पर तपस्वी योगी व ऋषि न होने के कारण वे वेदों के यथार्थ अभिप्राय को न समझ सके और बहुत स्थानो पर उन्होंने अर्थ का अनर्थ कर दिया जो अब तक भी लोगों को भ्रम में डाल रहा है। पाश्चात्य विद्वानों के वेदानुवाद प्राय इन भाष्यकारो के व्याख्यानो पर आधारित हैं निरुक्तकार महर्षि यास्काचार्य ने ठीक ही लिखा है कि "न ह्येषु (मन्त्रेषु) प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसोवा' (निरुक्ते) अर्थात जो ऋषि और तपस्वी नहीं वह मन्त्रार्थ का साक्षात का वास्तविक दर्शन नहीं कर सकता"। स्वामी दयानन्द जी परम योगी, तपस्वी और महर्षि होने के कारण वेदो के रहस्यों को समझने मे समर्थ हो सके। वेदार्थ शैली का उन्होंने यथार्थ निरूपण किया ऐसा हमारा ही नहीं, जगविख्यात योगी श्री अरविन्द जैसे निष्पक्षपात विद्वानों का भी विश्वास है।

श्री अरविन्द जी ने ऋषि दयानन्द और वेद पर अंग्रेजी मे वैदिक मेगजीन" के लिये लेख लिखते हुए उपसंहार इस प्रकार किया था।

In the matter of Vedic interpretation, I am convinced that whatever may be the final complete interpretation, Dayananda will be honoured as the first discoverer of the right clues. Amidest the chaos and obscurity of old ignorance and age-long misunderstanding, his was the eye of the direct vision that pierced to the truth and fastened on to that which was essental He has found the keys of the doors that time had closed and rent as under the seals of the imprisoned fountains."

(Dayananda and vede by Shri Aurabindo)

इसका भाव यह है कि वैदिक व्याख्या के विषय में मेरा यह विश्वास है कि वेदों की सम्पूर्ण अन्तिम व्याख्या कोई भी हो, दयानन्द का यथार्थ निर्देशों के प्रथम आविष्कारक के रूप में सम्मान किया जायेगा। पुराने अज्ञान और चिरकालिक मिथ्या ज्ञान की अव्यवस्था और अस्पष्टता के बीच में यह उसकी ऋषि दृष्टि थी जिसने सच्चाई को निकाल लिया और उसे वास्तविकता के साथ रखा। उसके द्वारो की चाबियो को उसी ने पा लिया और बन्द पड़ हुए स्रोत की मुहरो को उसी ने तोड़ कर परे फेंक दिया। मैं इस छोटे से निबन्ध मे संक्षेप से यह दिखाना चाहता हूं कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु। (ऋ० १।१६४।४६) यो देवानां नामधा एक एव यजु० १७।२७) तदेवाग्नि स्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमा। तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापति ॥ (यजु० ३२।१) न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। न पचमो न षष्ठ सप्तमो नाप्युच्यते। नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते। स एष एक एक वृदेक एव ॥ (अथर्व०) इत्यादि मन्त्रो तथा ब्रह्म ह्यग्नि (शत० १।४।११) आत्मा वा अग्नि। (शत३ १।२।३।२)।

इत्यादि ब्राह्मण वचनो के आधार पर अग्नि, इन्द्र वरुण सोम, मित्र इत्यादि का प्रधानतया ईश्वर परत्व प्रतिपादन किया था इस का देश विदेश के निष्पक्ष विद्वानो पर कितना प्रभाव पडा है। विस्तार भय से मैं कुछ प्रसिद्ध विद्वानो के वेद विषयक ग्रन्थो से ही उद्धरण दूंगा जो महर्षि के एतद्विषयक विचारो से स्पष्टतया प्रभावित हुए हैं।

(१) सब से पहले मैं रामानन्द सम्प्रदाय के आचार्य पण्डित राज स्वा० भगवदाचार्य जी को लेता हूं जिन्होने सामवेद संहिता का विद्वत्तापूर्ण सामसंस्कार भाष्य दो भागो मे कर के उसे प्रकाशित करवाया है। संस्कृत भाष्य के साथ भाषा छायानुवाद भी दिया गया है। यह भाष्य इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इस मे अग्नि, इन्द्र सोम मित्र, वरुणादि पदो को परमेश्वर परक मान कर मन्त्रों की उत्तम आध्यात्मिक, भक्ति परक व्याख्या की गई है। अग्न आयाहि वीतये इस सामवेद के प्रथम मन्त्र की व्याख्या मे महा विद्वान स्वामी भगवदाचार्य जी ने लिखा है।

अग्रम उत्कृष्टपद भक्त ज्ञानिन वा नयतीति अग्नि। अगति सर्वत्र गच्छति सर्वत्र व्याप्नोतीति वा हे (अग्ने) त्वयि निरतान त्वद भक्तान ज्ञानिनोवा अत्युत्कृष्ट एव पद प्रापयित परमेश्वर! (आयाहि) आगच्छ। सर्व व्यापकोऽपि त्वम अस्माकमज्ञानाद दूरे स्थित इव प्रतीयमान अस्मद हृदय प्रदेशम् आप्नुहीति तात्पर्यम।

अर्थात्—भक्त वा ज्ञानी को उत्कृष्ट पद प्राप्त कराने वा सर्वज्ञ सर्व व्यापक होने के कारण अग्नि का अर्थ यहां परमेश्वर है। उस से प्रार्थना है कि तुम हमारे हृदय प्रदेश मे आवो जो सर्वत्र व्यापक होने हुए भी हमारे अज्ञान के कारण दूर प्रतीत हो रहे हो।

'यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मद। तेन नूनं मदे मदे। (साम० ११६) इत्यादि मन्त्रो के भाष्य मे पण्डित राज स्वामी भगवदाचार्य जी ने इन्द्र का अर्थ है परमैश्वर्य युक्त इदि परमैश्वर्य अथवा इन्दुना—यजन उत्कृष्टकर्मणा द्रवणशील परमेश्वर्य युक्त अथवा यज्ञादि उत्तम कर्मों से प्रसन्न होने वाले परमेश्वर (प्रथम खण्ड पृ० ९४) ऐसा किया है।

'त्वमिन्द्र वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। (साम० ११९) के भाष्य में स्वामी भगवदाचार्य जी ने इन्द्रम् का अर्थ परम प्रसिद्धम ईश्वरम परमात्मानम' यही किया है। (प्रथम खण्ड पृ० ६५)।

(क्रमश)

पुस्तक समीक्षा

डा भवानीलाल द्वारा लिखित 'ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की सस्कृत साहित्य को देन' शीर्षक पी एच डी का शोध प्रबन्ध उनके सतत अध्यवसाय का परिणाम है। प्रस्तुत ग्रन्थ मे विषय से सम्बन्धित प्रत्येक सम्भव सामग्री जुटाने, उसे व्यवस्थित रूप देने तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण के द्वारा विषय का मूल्याकन करने मे लेखक ने सावधानी एव परिश्रम से काम लिया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय अत्यन्त विस्तृत है। स्वामी दयानन्द से लेकर अब तक के आर्य समाजियो की सस्कृत सेवा इसके अन्तर्गत आ गई है। इस सेवा के अनेक प्रकार है। निस्सन्देह इन समस्त सेवाप्रकारो को प्रकट करने के लिए विस्तृत साहित्य सामग्री के अध्ययन की आवश्यकताहै। यह प्रसन्नता का विषय है कि लेखक ने इस समस्त साहित्य-सामग्री का अवलोकन बडी तत्परता लगन से किया है। उस प्रसग मे लेखक ने सम्बन्धित दुर्लभ सामग्री भी पर्याप्त मात्रा मे है। इसका आभास हमे परिशिष्ट २ मे विद्यमान विस्तृत ग्रन्थसूची से होता है। इन ग्रन्थो मे से अनेक पर तो लेखक ने स्वय अपनी समीक्षा प्रस्तुत की है, शेष ग्रन्थो का अध्ययन स्वतन्त्र शोध का विषय हो सकता है। इस प्रकार यह ग्रथ जहा एक ओर आर्यसमाज की सस्कृत सेवा को स्पष्टत हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है वहा दूसरी ओर इस विषय मे रुचि रखने वाले पाठको को इस दिशा मे और कार्य करने की भी प्रेरणा देता है।

ग्रन्थ को व्यवस्थित रूप देने तथा उसमे अन्विति लाने के लिए लेखक ने स्तुत्य प्रयास किया है। आदि से अन्त तक विषय का प्रतिपादन सस्कृत साहित्य को देन की दृष्टि से हुआ है। आरम्भ मे पुनर्जागरण के आन्दोलनो तथा उनमे आर्यसमाज के आपेक्षिक महत्व का निरूपण इसी दृष्टि से हुआ है। स्वामी जी के जीवन सिद्धान्तो और साहित्य सेवा का विवेचन करते समय भी यह तथ्य लेखक के ध्यान से ओझल नही हुआ है। इसके बाद इस देन का विस्तृत विवेचन करने के लिए उसके विभिन्न प्रकार करके उन को पृथक अध्यायो का रूप दे दिया है।

लेखक ने ग्रन्थ के लिए दुर्लभ सामग्री जुटाने के साथ साथ प्रस्तुत सामग्री को यथा सम्भव समीक्षात्मक रूप देने का भी प्रयत्न किया है। यह स्वाभाविक है इतनी विस्तृत साहित्य सामग्री की समीक्षा मे वह व्यापकता नही आ सकती जो दो चार पुस्तकोकी समीक्षा में सम्भव है। तथापि यह निस्सकोच कहा जा सकता है कि लेखक की दृष्टि आदि से अन्त तक समीक्षात्मक रही है।

प्रति पाद्य विषय का विवेचन करते समय लेखक ने आर्य समाज के सिद्धातो और विचारो के प्रति पूर्ण निष्ठा का परिचय दिया है और यह उचित भी है, अन्यथा आर्य समाज सम्बन्धी साहित्य की निष्पक्ष आलोचना कदाचित सम्भव न होती। मुझे पूर्ण विश्वास है कि साहित्यिक क्षेत्र मे इस ग्रन्थ का समुचित स्वागत होगा। यह पुस्तक श्री राम लाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत द्वारा प्रकाशित हुई है।

—ब्रह्मानन्द शर्मा
एम० ए० पी० एच० डी०
अध्यक्ष, सस्कृत विभाग
गवर्नमैंट कालेज अजमेर

डा० भवानीलाल जी भारतीय का अजमेर स्थानान्तर

आर्यजगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान और आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मन्त्री डा० भवानीलाल जी भारतीय का स्थानातर गवर्नमेंट कालेज, अजमेर के हिंदी विभाग मे हो गया है। यहा रहकर डा० साहब आर्यसमाज की प्रवृत्तियों में अधिकाधिक भाग ले सकेंगे। उनका परिवर्तित पता—हिंदी विभाग, गवर्नमैंट कालेज, अजमेर है।

—निवेदक मन्त्री
आर्यसमाज, पाली (राज०)

गऊ मांस खाना छोड़ो

मास्टर हरिचन्द गुप्त मन्त्री आर्यसमाज जगाधरी

गऊ हमारी सब की माता है। माता तो केवल बच्चे को डेढ़ वर्ष ही दूध पिलाती है, परन्तु गऊ माता अंतिम सांस तक हमारी रक्षा करती है। इसका दूध अमृत और मांस विष है इस मांस भक्षण से पेट में कीड़े पैदा हो जाते हैं और अनेक प्रकार का शारीरिक रोग पैदा हो जाता है जो कि अन्तिम दम तक नहीं छूटता, इसके बछड़ों पर संसार की सारी कृषि निर्भर है। यदि यह न हो तो सोचो संसार की क्या दुर्दशा हो। जो भी गाए को काटता या मारता है वह महापापी है। हमें इसका आदर करना चाहिए इसी में देश का हित और लाभ है। ऐ गऊ भक्षको ! सोचो, समझो, विचारो नीचे गऊ माता का भजन लिख रहा हूं पढ़ो और उस पर मनन करो।

कुछ मन में करो विचार, ओ गऊभक्त कहाने वालो (टेक)

मेरी खाकर दूध मलाई, कुछ शर्म तुम्हें न आई,
बूचड़ को जा पकड़ाई, जुल्म कमाने वालो,
गऊ भक्त... ... ...

गऊ माता का लेके सहारा,क्यों ढोंग रचा यह सारा,
बिन आई मौत मुझे मारा,कल्याण के चाहने वालो,
गऊ भक्त... ... ...

दूध मेरा अमृत कहलावे, मूत्र तक भी काम में आवे
जो रोगों से तुम्हें छुड़ावे, ऐ इन्सान कहाने वालो,
गऊ भक्त. ... ...

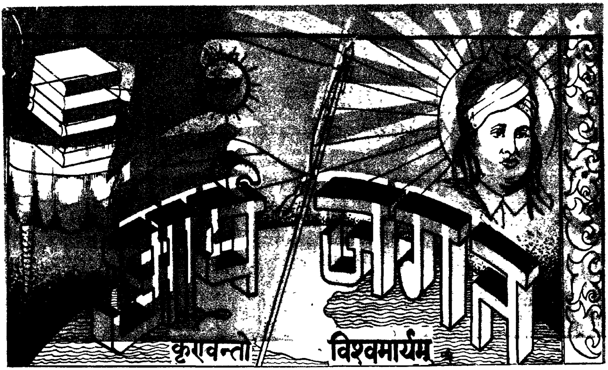
मेरी कितनी बहिन रोजाना, कटती जा बूचड़खाना,
पर तुम्हें तरस नहीं आता,चाहे कितना यत्न बनालो
गऊ भक्त... ... ...

तू है पैसे का मित्र, नहीं दया धर्म है भीतर,
मैंने देखा तेरा चरित्र, बहु रूप बनाने वालो,
गऊ भक्त... ... ...

मेरी आह भस्म कर देगी, तुम्हें नरक द्वार फंकेगी,
फिर कुछ न पार बसेगी, गऊ अपमान कराने वालो,
गऊ भक्त... ... ...

गर देश की उन्नति चाहो,जिब्हे खाने बन्द करवाओ,
'हरिचन्द' सन्देश सुनाओ, ऐ विधान बनाने वालो,
गऊ भक्त .. ..

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा०वेदीरामजी एम ए, पी.एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर
[illegible] गुड़ाहुरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे   वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ३९)   १३ आश्विन २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२८ सितम्बर १९६९   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

न त्वदन्यः कवितरः

अर्थ .—हे प्रभुदेव ! न-नहीं है त्वत्-तेरे से अन्य .—दूसरा कोई भी कवितर —सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाला । आपसे अधिक सर्वज्ञाता कोई भी नहीं ।

भाव.—परमेश्वर केवल कवि ही नहीं वरन वह कवितर है। सभी कुछ जानता है। मनुष्य अभिमान में आकर कई बार ज्ञानी बनने की बड़ मारता है किंतु उसे तो कल का भी पता नहीं। अपने जीवन नाटक का भी ज्ञान नहीं कि कब समाप्त हो जाएगा। याद रखें कि वही परमेश्वर ही एकमात्र सर्वज्ञाता,सर्वज्ञ है सभी कुछ जानने वाला है। उससे कोई भी वस्तु तथा विचार गुप्त नहीं है। सबका सभी कुछ देखता व जानता है।

अथर्व वेद ५-११-४

महात्मा जी विदेशों में



पूज्यवर महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज आर्यजगत की विभूति है। परिवार मे सब कुछ था। कोठियां, कारें, सम्पन्नता, सन्तान, सुला कार्य—सभी जीवन को सुखी करने के साधन थे। उस समय भी सभा, समाज सेवा के व्यापक सेवा कार्य मे लगे रहते थे। महात्मा हंसराज जी के बाद आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब को कितने ऊंचे शिखर पर पहुंचा दिया था। जब सन्यास आश्रम का समय आया सभी त्यागकर सन्त बनकर सारे विश्व के होकर प्रभुनाम प्रचार मे निकल पड़े। प्रभु ने वाणी पर सरस्वती दी है मुखाकृति मे सदा मुस्कान भरी है। योग साधना दी है। सेवा भावना दी है। देश विदेश मे भ्रमण करते है। आजकल आप विदेशोमे अमृतपान करा रहेहै। आयरलैंड के प्रमुख नगरों की जनतामे मधुर प्रवचन करके अब अमरीका कैनेडामे अपने अमृतमय प्रवचनो की सरिता बहा रहे है।—स

ऋषि दर्शन

अमृतोभवति तृप्तो भवति

अर्थ :—प्रभु का भक्त प्रेमी सदैव अमृत :-अमृत जीवन वाला, अमर भवित हो जाता है तथा अपने जीवन मे तृप्त —तृप्त भवति हो जाता है। उसकी तमाम इच्छाए परिपूर्ण हो जाती है। उसकी प्यास मिट जाती है।

भाव —यह सूत्र पीछे आधे सूत्र का ही भाग है। ये दोनो भाग मिलकर पूरा सूत्र है। इसमें कहा गया है कि भक्ति से भरा प्रभु का प्रेमी अमृत बन जाता है। उसके पास मृत्यु नही आती। अर्थात उसे ज्ञान हो जाता है कि मै तो अमर आत्मा हूं, बदलने वाला शरीर नही हूं। फिर उसे किसी का क्या भय ? शरीर की मौत को वह चोला बदलना समझता है। वह सदा तृप्त रहता है उसकी सारी प्यास मिट जाती है।

नारद भक्ति सूत्र ४

अधिष्ठाता--डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी०(सभा मन्त्री)   सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

महर्षि दयानन्द की वेदार्थ विषयक क्रान्ति का निष्पक्ष विद्वानों पर प्रभाव

ले०—(आचार्य श्री धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड, आनंद कुटीर, ज्वालापुर)

गतांक से आगे

इसी प्रकार उन्होंने सोम का अर्थ परमेश्वर या कई स्थानों पर भक्तिरस किया है। मित्र वरुणादि का अर्थ प्राय: सर्वत्र परमात्मा किया है। इस भाष्यमे कहीं कहीं संशोधनोंकी आवश्यकता है जैसे कि मैं परिव्राजकाचार्य स्वा० भगवदाचार्य को पत्र द्वारा और ऋषीकेश मे मिलकर भी सूचित कर चुका हूं तथापि सम्पूर्णतया देखा जाय तो यह भाष्य आध्यात्मिक व्याख्या की दृष्टि से अत्यन्त प्रशंसनीय है। भूमिका मे पंडितराज भाष्यकार ने स्वामी दयानन्द जी सरस्वती को कलियुग के आस्तिक शिरोमणि के नाम से स्मरण किया है।

(२) कनखल निवासी परम हंस स्वामी महेश्वरानन्द जी मंडलेश्वर कृतव्याख्या सहित 'ऋग्वेदसंहितोपनिषच्छतकम्' नामक एक पुस्तक विक्रमी सवत् २००० मे प्रकाशित हुई है। इसमे भी ऋग्वेद के १०० मन्त्रो की आध्यात्मिक व्याख्या की गई है। तथा अग्नि, इन्द्र, विष्णु, सोम, मित्र, वरुण आदि पदो का ईश्वर अर्थ करते हुए उसके लिए एक सद्विप्राबहुधा वदन्त्यग्निं यम मातरिश्वानमाहु। इत्यादि प्रमाणो को उद्धृत किया गया है।

उदाहरणार्थ पृ० ४ मे 'अग्निमीडे पुरोहितम्। इस मन्त्र की व्याख्या मे लिखा है।

अहम् (अग्निम्) अग्नि नामक परमात्मदेवम् (ईडे) स्तौमि। कथं परमात्मनो ऽग्नि नाम प्रतिपाद्यता। श्रुति प्रामाण्यात्—

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषि र्देवो देवानामभव. शव: सखा (ऋग्वेदे) प्राणोऽग्नि परमात्मा (मैत्रायणी ६ ९) अग्नि: सर्वा देवता. (ऐतरेय ६. ९) इत्यादि।

सृष्ट्यादित्व, सर्वांगसारत्वं देवदेवत्वम्, शिवसखित्वं, सर्व देव प्राथम्यम्, अप्रमत्तयोगि हृदयध्येयत्वं चाग्ने' परमात्मत्व मन्तरेण न संगच्छते, अतोऽग्निपदाभिधेयस्य परमात्मत्वम् अभ्युपेयं व्युत्पत्तियोगाच्च, अभितोऽगति जानाति सर्वशास्त्र प्रतिपाद्याव गच्छतीति, अभित: सर्वतो गतत्वात्, सर्वज्ञातृत्व निखिलागमसंचारित्वाच्च परमात्मनोऽग्नि नाम प्रतिपाद्यत्वं न विरुद्ध्यते।'

इस प्रकार अनेक प्रमाण देकर सिद्ध किया गया है कि अग्नि का मुख्यार्थ परमात्मा है।

पृ० ११६ पर 'इन्द्रो अंग महद्भयम् (ऋ० २ ४१ १०) की व्याख्या मे 'इन्द्र —परमेश्वर' ऐसा ही अर्थ किया गया है। इसी प्रकार पृ० १८९ पर 'त्वमिमा ओषधी: सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वंगा.।' (ऋ० १।९१।२२) इत्यादि मन्त्रो को उद्धृत करते हुए लिखा है कि 'इत्यादिभि श्रुतिभि सोम परमात्मन. शुद्धं सौम्यं रूपं निश्चीयते।' अर्थात् परमात्मा के शुद्ध सौम्य रूप का ही नाम सोम है यह निश्चय होता है।

ऐसे ही अग्नि, इन्द्र, सोम, वरुण आदि के ईश्वर पाक अर्थ प्रमाण सहित स्वा० महेश्वरानन्द जी ने 'यजुर्वेदोपनिषच्छतकम्' अथर्व वेदोपनिषच्छतकम् और 'सामवेदोपनिषच्छतकम्' नामक अपनी पुस्तको मे भी किये है। पहले पौराणिक विद्वान् इन शब्दो के देवता परक अर्थ ही करते थे।

(३) गीता प्रेस गोरखपुर से महामहोपाध्याय प० विद्याधर शर्मा गौड वेदाचार्य इत्यादि विद्वानो द्वारा सम्पादित 'सन्ध्योपासनाविधि' मन्त्रानुवाद सहित प्रकाशित हुई है जिसमे सुप्रसिद्ध गायत्री मन्त्र के 'सवितु' पद का अर्थ स्थावर जंगम रूप सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वाले उस निरतिशय प्रकाशमय परमेश्वर का 'यह अर्थ किया गया है। पहले हमारे सनातनधर्माभिमानी पौराणिक विद्वान् 'सविता' का सूर्य परक अर्थ ही किया करते थे। यह सब जानते है।

(४) श्री अरविन्दाश्रम पाण्डीचेरी से सुप्रसिद्ध योगी श्री अरविंद जी के निर्देशानुसार विख्यात दाक्षिणात्य विद्वान श्री कपाली जी शास्त्री ने ऋग्वेद संहिता के प्रथम अष्टक का सिद्धाञ्जन भाष्य किया था जो-जो खण्डों मे विस्तृत भूमिका सहित प्रकाशित हुआ है। इस मे मन्त्रो की आध्यात्मिक व्याख्या उत्तम रूप से की गई है और श्री सायणाचार्य के भाष्य की समालोचना स्थान-स्थान पर करते हुए उस से अपना मतभेद दिखाया गया है। इस भाष्य पर महर्षि दयानन्द जी के विचारो की छाप सर्वथा स्पष्ट है क्योकि श्री अरविन्द जी उनकी भाष्य शैली के अत्यधिक प्रशंसक थे जैसे कि इस निबन्ध मे एक उद्धरण देकर बताया जा चुका है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ५०वे सूक्त की व्याख्या मे 'ज्योतिष्कृदसि सूर्य' का अर्थ करते हुए श्री कपाली शास्त्री जी ने लिखा है **'सूर्य सर्वस्य प्रेरक परमात्मन्** 'येना पावकचक्षसा त्व वरुण पश्यसि। म० ६ की व्याख्या मे लिखा है, वृञ्-वरणे इति निष्पन्नत्वात् सर्वमपि आवृत्येस्थितो वरुण. विपुल: **सर्वव्यापीति साधीयानर्थ:।** अर्थात सर्वव्यापक परमेश्वर यह वरुण का ठीक अर्थ है। ऐसे ही अन्य सैकडो उदाहरण कपाली शास्त्री जी के भाष्य से उद्धृत किये जा सकते हैं।

(५) इस प्रकरण मे एक अन्य अत्यन्त उल्लेखनीय ग्रन्थ का उल्लेख किये बिना भी मै नही रह सकता जिसकी ओर मेरा ध्यान कुछ वर्षों पूर्व बम्बई मे वेदो के सुप्रसिद्ध मनीषी विद्वान श्री प० पाददामोदर सातवलेकर जी ने आकर्षित किया था। यह गिद्धौर राजकीय श्री रावणेश्व सस्कृत विद्यालय के अध्यापक वेदे-कर्म काण्डाचार्य श्री दामोदर शर्मा द्वारा विरचित और श्री बाल कृष्ण शास्त्री द्वारा सन १९४१ मे ज्योतिष प्रकाश प्रेस विश्वेश्वर गंज, बाराणसी मे प्रकाशित मन्त्रार्थ चन्द्रोदय नामक पुस्तक है। मान्य प सातवलेकर जी मे इस ग्रन्थ की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा था कि स्वामी दयानन्द जी का प्रभाव इस ग्रन्थ के लेखक पर स्पष्ट है। मैंने उस ग्रन्थ मे जब यजुर्वेद अ० २३ के उन मन्त्रो का भाष्य पढा जिनके महीधर भाष्य की महर्षि दयानन्द जी ने ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका मे उग्र समालोचना की है तो मेरे आश्चर्य और हर्ष की सीमा न रही। जादू वह जो सर पर चढ कर बोले।' यह लोकोक्ति मुझे उसे पढते हुए बार-बार याद आई।

'गणना त्वा गणपति हवामहे! इस मन्त्र की परमेश्वर परक व्याख्या करते हुए प. दामोदर झा जी ने अश्व, निधिपति, वसु इत्यादि शब्दो का निम्न अर्थ किया है।

(अश्व) अश्नुते चराचर सर्व जगत इत्यश्व: सर्व व्यापक परमेश्वर इत्याभि प्राय।' सर्व व्यापक परमेश्वर (निधिपतिम्) निधय: महापद्मदय: ब्रह्मविद्या रूपा वा तत्पालकं परमेश्वरम् (वसो) वसन्ति सर्व भूतान्यस्मिन् इति वसुर्वासुदेवाख्य. परमेश्वर: तत्सम्बुद्धौ हे (वसो) हे सर्व जगन्निवास परमेश्वर।

अर्थात् सर्व प्राणियो के आधार भूत और उनमे व्यापक परमेश्वर।

शिश्न पद का अर्थ भी श्री पं० दामोदर झा ने शेश्ति तमोऽहन्तीति शिश्न: प्रकाश —गायत्री मन्त्र प्रतिपाद्य वरेण्यं भर्ग —सर्व प्रार्थनीयं सर्व पापानां भर्जन समर्थ तेज इत्यर्थ. अर्थात् अज्ञानान्धविनाशक परमेश्वर का तेज जिसका गायत्री मन्त्र मे वर्णन है इस प्रकार किया है। (क्रमश:)

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, २८ सितम्बर १९६९ [अंक ३९

गुरू विरजानन्द शताब्दि

आर्यसमाज एक विशाल आंदोलन है। कोई भी जीवन का ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां इसके विचारो का भारी प्रभाव न पडा हो। यह एक प्रगतिशील प्रवाह है। राजनीति का व्यापक मैदान हो या समाज का विविध सुधार हो, मतमतान्तरो के सिद्धान्तो मे परिवर्तन का चित्र हो या शिक्षा का महान् काम हो, जीवन निर्माण हो या शिक्षा का महान् काम हो, जीवन निर्माण हो या साहित्य का प्रसार हो, धर्मप्रचार की बात हो या भारत की सनातन पुरातन सस्कृति का सन्देश विस्तार हो भाव यह है कि किसी प्रकार का भी विचार क्षेत्र हो—उसी में आर्यसमाज का नेतृत्व दिखाई देगा। स्वराज्य आन्दोलन की प्रेरणा मे इसी का महत्वपूर्ण योग है। आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती सब अंशो मे पूर्ण रूप से जागरूक थे। समय आएगा जबकि विश्व की जनता उस महान देवता के बहुमुखी विचारो को समझेगी। यह तो हमारी न्यूनता है कि हम उस देवता के दिव्य सन्देश को विश्व के कोने-कोने नहीं पहुचा सके। सभी ने इसी प्रकाश स्तम्भ से विचार ज्योति ली। वे प्रसिद्ध हो गए, किन्तु प्रकाश स्तम्भ को भुला दिया। स्वामी दयानन्द जी के आदर्श गुरु विरजानन्द सरस्वती थे। मथुरा मे रहकर सभी कुछ उनसे ही प्राप्त किया। सत्य तो यह है कि हमने उस महान् गुरु को भी भुलाए रखा। उनका दिव्यजीवन भी जनता पूरी तरह से न जान सकी। प्रथम बार इसके लिए आर्यजगत के चमकते रत्न डा० रामप्रकाशजी M sc ph D जैसे योग्य युवक रत्न ने उनके जीवन की खोज करके गुरु जी का विस्तृत जीवन चरित्र जनता के सामने पेश कर दिया। इसके लिए आभारी हैं।

गुरु विरजानन्द जी सरस्वती अपने युग के बडे भारी विद्वान योगी थे। व्याकरण के तो सूर्य थे। उनको व्याकरण भानु कहा जाता है। बडे-बडे काशी एवम् अन्य स्थानो के विद्वान् पण्डित उनके चरणो मे पहुंच कर अपनी तमाम शकाए मिटाया करते थे। गुरु जी की विश्व को कई प्रकार की विद्या की देने है उनमे सबसे बडी देन यह है कि सारे समाज को स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसा महान शिष्य दिया है, जिसने विचारो की चारो ओर क्राति मचा दी। सारा श्रेय तो उसी देवगुरु को मिलता है। यह हमारा प्रमाद ही है कि हमने गुरु विरजानन्द जी के प्रति वह सम्मान नही दर्शाया जो चाहिए था। स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी राम सरीखो ने जो प्रसिद्धि अपने गुरु राम कृष्ण जी परमहस की विश्व मे की। जो प्रतिष्ठा दूसरे लोगो ने अपने-अपने गुरुओ के लिए दिखाई, क्या हमने भी वैसा किया ? दिल को टटोल कर देखे कि हम कहा खडे है। आज देश विदेश मे विवेकानन्द शिला स्मारक की कितनी चर्चा है गुरु नानक जयन्ती हो या गाधी जयन्ती—इस काम के लिए कितना उत्साह है। भारत सरकार भी आगे-आगे है। मिर्जा गालिब कवि के समारोह का कितना उत्साह था। किन्तु सोचिए कि हम कहा खडे है। गुरु विरजानन्द जैसे देवता की शताब्दि हो और भारतीय जनता को पता भी न हो। सरकार का सहयोग तक न हो। हमारी स्थिति क्या बन गई है ? विचारिए।

गुरु विरजानन्द शताब्दि मनाने की योजना बनी है। बहुत प्रसन्नता है। करतारपुर मे तो ऐसा समारोह हो कि जनता देख कर आर्य समाज के काम पर उछल पडे। अभी-अभी इस समारोह का प्रारम्भ हो रहा है। हम चाहते है कि प्रारम्भ तो अब हो जाये किन्तु शताब्दि की समाप्ति अगले वर्ष हो। सारा वर्ष देश मे भिन्न-भिन्न स्थानो पर यह समारोह चलता रहे। प्रान्तीय सरकारो के साथ-साथ भारत सरकार को भी विवश किया जाये कि जिस देवता ने देवदयानन्द जैसा दिव्य देवता दिया—उस महान गुरु की शताब्दि का भी सरकारी प्रबन्ध वा व्यय किया जाये। आर्यसमाज तो स्वयं एक विशाल आन्दोलन के रूप मे शक्ति है। इसका व्यापक सगठन प्रैस प्लेटफाम बहुत प्रभावशाली है। प्रभु करे कि इसके परस्पर के सगठन मे जो दरार आने लगी है, वह समाप्त हो जाये। सारा समाज मिल कर इस महान पर्व को मनाने मे विशाल परिवार के रूप मे एक होकर लग जाये। यह शताब्दि समारोह केवल एक स्थान पर जल्से के रूप मे ही न मनाया जाए वरन सारे देश मे तथा विदेशो मे भी समारोह से सम्पन्न हो। अखिल भारतीयस्तर पर शताब्दि समिति गठित हो। सरकार को भी इस के लिए विवश करना होगा।

—त्रिलोकचन्द्र

महात्मा गांधी जयन्ती

महात्मा जी ने अपने जीवन मे बहुत बडा कार्य किया। सारा जीवन देश सेवा मे अर्पित कर दिया। बडे पुरुषो के विचारो तथा कार्यशैली से मतभेद हो सकता है किन्तु महात्मा जी के जीवन मे चार विशेषताएं तो ऐसी थी जिनकी जितनी प्रशसा की जाए कम है। आज देश के बडे-बडे नेता उनका नाम तो लेते है, जय तो बुलाते हैं, उनकी समाधी की परिक्रमा भी करने है। उनको बापू जी मानते है। गाधीबाद की सर्वत्र दुहाई भी देते है। उनकी प्रस्तर मूर्तिया भी लगाते है। लोक सभा, विधान सभाओ एव दूसर कार्यालओ मे भी उनके चित्र लगाये है। उनका जीवन साहित्य भी बडा प्रकाशित किया जाता है और अब व्यायकल उन शताब्दि समारोह भी देशविदेश मे मनाया जा रहा है। लाखो नही वरन करोडो का व्यय होगा। यह अच्छा है। उस राष्ट्रपिता की जयन्ती घूमधाम से मनानी ही चाहिए। वह राष्ट्र के पिता थे, कर्णधार थे बहुत बडे बलिदानी सेनानी थे। कहते कम और करते अधिक थे। स्वराज्य आन्दोलन के महान नेता थे। सारा देश मिलकर महान् आत्मा उस बापू जी की याद करे तथा उन से जीवन सन्देश प्राप्त करे। वह सारे राष्ट्र के थे। सभी के जन-जीवन के पथ प्रदर्शक थे। आत्मिक बल मे अग्रणी थे।

किन्तु एक बात तो यह भी कहनी है कि उस बापू जी की जयन्ती मनाते हुए उसके नाम की जय-जयकार ही केवल मात्र होगी या उस के बताये काम को भी मानेंगे ? इस समय का भारत क्या गाधी जी के स्वप्नो का भारत है ? उनके आदेशो का राज्य है क्या ? चार विशेषताए थी विशिष्ट उनके जीवन मे सादगी, आस्तिकता, भारतीयता, आचार, तनिक आखे खोल कर देखे कि उन की बनाई जीवन की सादगी है ? वे तो एक कौपीन या चादर मे तथा मामूली कुटिया मे रह कर समय बिताते थे—पर अब उनके अनुयायियो की कोठियो, कारो, सजावट, कपडो व खान-पान के ठाठ बाठ देखे। ईश्वर प्रेम तो सर्वथा समाप्त है। भारतीयता का स्थान तो पश्चिमीपन ने ले रखा है। आचार का जितना पतन इस समय हुआ है—प्रभु ही देश को बचाये। खुल्लमखुल्ला ही चुम्बन व नगेपन को स्वीकृत किया जाता है। इस जयन्ती पर बापू जी के आदेश पर चले तब तो ठीक है वर्ना जितने चाहे ढोल पीट ले, कौन रोकता है।

बहुत उत्तम सुझाव

आर्यसमाज के माननीय नेता प्रिंसिपल भगवान दास जी डी ए वी कालेज अम्बाला का समाचारपत्रो मे आर्यसमाज के परस्पर के झगडो को प्रेमपूर्वक निपटाने के लिए एक सुदर वक्तव्य प्रकाशित हुआ है। उसमे आपने बडी ही मार्मिक बात कहा है कि जिन महानुभावो ने आर्यसमाज की उन्नति के लिए इतना शानदार कार्य किया है आज हर प्रकार की अवस्था मे समाज [illegible] प्रयत्नशील रहे है। और फिर यह [illegible] वही आपस मे मुकद्दमेबाजी [illegible]। आर्यो के लिए यह अच्छी बात नहीं है। न आपस के मुकद्दम पुलिस तक न अनशन ही ठीक है। यह काम तो आपसी प्रेम से ही किया जा सकता है इस समय तो समाज को जोर-शोर से कार्य करने की जरूरत है। मान्य महानुभाव एक स्थान पर इकट्ठे होकर तब तक बाहर न निकले जब तक आपसी विरोध समाप्त न हो जाए। हम चाहते है कि सारे सज्जन मान्यवर प्रिंसिपल जी की दिल की इच्छा पूर्ण करने मे लग जाए।

वाक् एवम् बौद्धिक शक्ति के विकास में यज्ञ चिकित्सा पद्धति की एक आश्चर्यजनक सफलता

(श्री आत्माराम जी आर्य पुरोहित १५६४। ७ चण्डीगढ़ १९)

वैदिक दृष्टि विज्ञान के सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्त्ता श्री पं. वीरसेन वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी रोड, इन्दौर ने अपने यज्ञो के आयोजनो के अवसर पर अनेक रोगियों को आश्चर्यजनक रूप से लाभ होते देख कर अपना अनुसन्धान क्षेत्र शारीरिक चिकित्सा की ओर भी करना निश्चय किया है।

अभी गत अप्रैल माह मे १५ से २८ तक सूरत नगर मे लक्षाहुति गायत्री महायज्ञ सम्पन्न आपने कराया। वहा पर ११ वर्ष की जन्म से गूंगी एव ना समझ ज्योति नाम की कन्या का यज्ञ द्वारा आपने उपचार किया और वह अच्छी होकर बोलने एवम् समझने लगी। इस कन्या की चिकित्सा उसके पिताश्री ने अनेक वैद्य एवं डाक्टरो से कराई थी और कुछ भी सफलता प्राप्त नही हुई थी।

यज्ञ द्वारा ११ दिन तक उपचार हुआ। प्रतिदिन ३ घण्टा यज्ञका उपचार किया जाता था। उसमे ५।६ दिन के यज्ञ के उपचार से वाक् शक्ति एव बौद्धिक शक्ति का क्रमश उत्तरोत्तर विकास दृष्टिगोचर होने लगा और वह प्रश्नो का उत्तर देने एव कार्य करने मे समर्थ होती गई। ज्योति के पिता भूपेन्द्र अम्बाराम मोदी सूरत से २ मील दूर उत्राण स्टेशन स्टोर मे कार्य करते हैं।

श्री प० वीरसेन वेदश्रमी ने सन १९६६ से जयपुर एवं खण्डवा के अपने वृद्धि यज्ञो के अवसर पर बने अजमानो का रोगो से मुक्त होने मे आश्चर्यजनक लाभ अनुभव किया था। इसी प्रकार से सन १९६१ मे वाक् शक्ति के विकास मे यज्ञ का लाभ देखा था। अपने ऋग्वेद का 'यज्ञेनवाच पदवीयमायन्' तथा यजुर्वेद के 'वाक् च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्' सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् आदि मन्त्र यज्ञ से वाक् एवं बुद्धिशक्ति के विकास होने के लिए उपस्थित किये।

श्री प० वीरसेन वेदश्रमी एक विशेष यज्ञ का आयोजन करके कतिपय मूक एव अविकसित मस्तिष्क के व्यक्तियो पर इस यज्ञ पद्धति का परीक्षण करना चाहते है। यदि इस कार्य मे सफलता प्राप्त हो गई तो विश्व के सामने एक नई चिकित्सा का प्रादुर्भाव हो सकेगा।

यह समाचार इन्दौर के दैनिक 'स्वदेश' प्रयाग के 'दैनिक भारत' (लीडर इगलिश डेली का यह हिन्दी पत्र है) 'आर्य मित्र' लखनऊ और 'आर्य मर्यादा के १५ ६ ६९ अक मे प्रकाशित हो चुका है। अन्य भी राजस्थान तथा गुजरात के अनेक पत्रो मे इसका प्रकाशन हुआ है। यह बात उल्लेखनीय है कि 'आर्य मर्यादा' के सम्पादक ने आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा के सचालक प्रसिद्ध आर्यनेता श्री प० आनंद प्रेम जी बी ए. एल. एल. बी को लिखा था कि आप इसे प्रमाणित कीजिए। उनका निम्न उत्तर भी पाठक पढ लेवे, जिससे कि पूर्णतया पुष्टि एव तुष्टि हो जाएगी।

पत्र संख्या ४६२२ दिनाक २८-५-६९

सूरत मे जो गायत्री महायज्ञ हुआ था उसका आयोजन हमारी ओर से ही हुआ था। प. वीरसेन जी और माता आनन्दा मती जी को ब्रह्मा के रूप मे हमने ही बुलाया था। यह बात सर्वथा सत्य है कि चि ज्योति बाला जो जन्म से ही गूंगी थी निरंतर प्रात. काल आरम्भ से ही यज्ञ मे आती थी, उसको वाचा प्राप्त हो गई। सबसे पहले उसने गायत्री मन्त्रो का उच्चारण किया था ज्योति बाला के पिता जी ने कई डोरे धागे उपचार के लिए किए थ, पर गायत्रीमंत्र की कृपा से उसे वाचा प्राप्त हो गई। यह सबने प्रत्यक्ष देखा और यज्ञ के प्रभाव से प्रभावित होकर एक सेठ के अनुदान से अब यह कन्या आर्य महाविद्यालय मे प्रविष्ट हो गई है।

हस्ताक्षर—आनन्द प्रिय

आर्य कन्या महा विद्यालय आत्माराम पथ बडौदा

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट—टंकारा

मासिक विवरण

उपदेशक महाविद्यालय

अगस्त १९६९ के प्रारम्भ मे सिद्धान्त प्रवेश, सिद्धान्त परिचय तथा सिद्धान्त विशारद् इन तीनो श्रेणियो की परीक्षा के बाद नए सत्र की पढाई प्रारम्भ हो गई है। इस समय सिद्धान्त शास्त्री श्रेणी में ४ विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। ब्रह्मचारियो का स्वास्थ्य ठीक है। पानी की यथा पूर्व तगी है। वर्षा की कमी के कारण अभी तक डेमी नदी सूखी पडी है।

ऋतु उत्तम हैं, न गरमी न सरदी। चारो ओर हरियावल का वातावरण है।

विद्यालय की वाग्वर्धिनी तथा सस्कृत परिषद् दोनो का काम नये सत्र मे सोत्साह चल रहा है।

संगीत मण्डली

इस वर्ष ६ ७ ब्रह्मचारियो की एक संगीत मण्डली का आयोजन किया गया है। इन दिनो सर्वश्री ओमप्रकाश, रतिराम, कमल कुमार, सोम देव तथा वेद प्रकाश, अध्यापक प० सत्यव्रत जी के साथ अम्बाला तथा दिल्ली मे प्रचारार्थ गए है। माननीय प्राचार्य श्री भगवानदास जी एम० ए० ने अम्बाला के लिये आमन्त्रण दिया था। कुछ विद्यार्थी जालन्धर भी जायेंगे।

आर्य सभा व महालय

इसके तत्वावधान मे पिछले दिनो दो शोक सभाएं मान्य श्री बद्रीप्रसाद जी भारुका तथा राज्यरत्न श्री सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता जी के दुःखद स्वर्गवास पर की गई।

जन्माष्टमी, तुलसी जयन्ती, श्रावणी सम्बन्धी यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन भी इसी की ओर से हुआ।

आजकल पूज्य म आनन्द भिक्षु जी के सत्प्रयत्नो की सफलता के लिए गायत्री पाठ और सामूहिक प्रार्थना का कार्यक्रम भी चल रहा है।

गौशाला

इस समय गौशाला मे १० गाये तथा उनके बछडे-बछडी कुल २० जानवर है। दूध उत्पादन २५-३० किलो प्रतिदिन है। मासिक खर्च आपसे लगभग २५०।-३००।- प्रतिमास अधिक होता है।

अभ्यागत अतिथि

पिछले दिनो वशिष्ट अभ्यागत बडौदा के श्री जयन्त घनेश्वर बाकानेर के सरकारी हस्पताल के मैडीकल आफिसर, अहमदाबाद से असिस्टेंट चीफ एक्जेक्यूटिव आफिसर तथा हैदराबाद के प्रो. रामनिवास एम. ए. पी. एच डी पधारे। प्रो. साहब ने महालय के कार्य मे विशेष रुचि ली तथा मूल्यवान सुझाव दिए।

—सूचना—

खेद से सूचित किया जाता है कि उपदेशक विद्यालय के दो विद्यार्थी छोटी सादडी, चित्तौडगढ के श्री हरिश्चन्द्र (भवर लाल) तथा अहमदाबाद के साधु आश्रम के श्री शकरानन्द रात्रि के समय बिना पूछे, बिना सामान सम्भाले, भाग गए हैं। उपदेशक विद्यालय तथा महालय या ट्रस्ट के साथ अब उनका कोई सम्बन्ध नही सूचनार्थ निवेदन है।

★ ईश्वर को सदा अपने साथ रखिये, यही पक्का सम्बन्ध है इसके लिये केवल ईश्वर में प्रेम रखना होगा, आपको उसे हृदय प्रदान करना होगा।

★ सत्य की चट्टान पर अविचल रहिए, अपने स्वरूप अमर आत्मा को पकड़े रहिए। साधना करके उसका साक्षात्कार कीजिये।

बाइबिल के सम्बन्ध में...

(पं: श्री वेदप्रकाशजी विद्यावाचस्पति, सिद्धांतालंकार, हिसार

[इससे पहले २७ जुलाई के अक मे देखे]

बाइबिल का इस तरह फैसला बडा भारी जुर्म है इसने मजहब की असली बुनियाद कतई खोखली हो जाएगी, यह एक प्लेग है जिसकी दवा और बेखनकी करनी चाहिए। यह किसी भी रूह के ईमान को गारत करन के लिए एक निहायत ही खतरनाक जहर है। तजुर्बे से यह बात साबित हो चुकी है कि बाइबिल का मादरी जुबानो मे तर्जुमा करने से फायदे की निस्बत नुकसान ज्यादा पहुचाता है।

इसी पोप ने सन् १८१९ मे एक फतवा जारी किया था जिसमे आयरिश स्कूलो मे बाईबिल के तकसीम करने के बारे मे लिखा था कि यह एक किस्म के कांटे बोये जा रहे है। बच्चो को खतरनाक तालीम दी जा रही है और यह उनके बचपन पर जहरीला असर डालेगी।

गिरगौरी सोलहवे ने सन् १८४४ मे एक ऐलान जारी किया था जिस मे इस बात की ताकीद की गई थी कि बाईबिल सोसाइटी जहा-जहा हो जबरन बन्द कर दी जावे, इसके साथ ही उस मे यह भी हुक्म जारी कर दिया गया था कि जिसके हाथ मे बाइबिल नजर आये उस से छीन लो।

शाम के रोमन कैथोलिक विशप डाक्टर हेल ने लार्ड जार्नसल को यकीन दिलाया था कि जहा तक हो सकेगा मै उन स्कूलो, जिन पर मेरा एतकाद है बाइबिल के जहरीले सबको को नही होने दू गा।

उपर्युक्त बातो से स्पष्ट है—कि ईसाईयो की बाइबिल का क्या हाल है? कितनी जहरीली, आचार से गिराने वाली, आपस मे लडाई झगड़ा कराने वाली, तर्क पर सही न उतरने वाली पुस्तक है साथ ही परस्पर विरुद्ध और असम्भव बातो से युक्त है।

जब कभी किसी ने इस ग्रन्थ के विरुद्ध आवाज उठाई तो उसे समाप्त कर दिया। 'कृष्ण के क्राइस्ट' के लेखक ने अपनी पुस्तक के पृष्ट २ पर लिखा है—

'पुराने जमाने मे तो जब कभी जिस-जिस ने भी उसकी पोल खोलनी चाही वही मारा पड़ा। इस तरह से बेशुमार बन्दे इसी वजह से मारे गए। सन १३३७, १४४५, १४९८ और १६०० मे लाखो आदमी जीने जला दिये गए। हाईपोशिया औरत का हाल तो बहुत मशहूर है जिसे लेक्चर देती को पादरी शरल के चेले सिकन्दरिया के गिरजाघर मे घसीटते हुए ले गए, जिसको नगी किया और जिस जीती हुई के गोश्त को सीपो के टुकडो से बोटी-बोटी काटा और फिर जला दिया।'

(फूट आफ क्रिश्चियनिटी, सफा फिकरा ३)

क्या ईसाई मत के फैलाने का यही तरीका है, क्या बाईबिल का सन्देश इसी प्रकार सुनाया जाता है। वास्तविकता तो यह है कि कोई बाइबिल को माने या न माने बस यह कह देवे कि मैं ईसा पर मान लाता हू, फिर चाहे जो कुछ करता रहे कोई पाप नही। आज भारत मे जो ईसाई मूल का प्रचार हो रहा है क्या बाइबिल की शिक्षाओ को लेकर या जो ईसाईयत को स्वीकार करता है क्या वह इनके मत को पसन्द करके स्वीकार करता है? नही। बल्कि वह तो धोखे से बनाया जाता है। इसीलिए यह लोग उसी क्षेत्र मे अधिक पनप सके है जहां निर्धनता और अशिक्षा का बोल बाला है। लोग सरलता से धोखे मे आ जाते हैं। वरना इस मत को कोई भी बुद्धिमान स्वीकार करने को कभी भी तैयार न होगा।

★ आज कल पढने वाले लाखो मनुष्य बेकार है। इसके अतिरिक्त जो पढ़ता है वह भी मरता है और जो नही पढता वह भी मरता है फिर पढने पढाने मे दात कटाकट क्यो करे?

★ जिस प्रकार शरीर रक्षा के लिये खाने पीने और वस्त्रो की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा के लिये धर्म की आवश्यकता है। धर्म के पालन करने से आत्मा को शक्ति मिलती है।

ईसामसीह: एक समालोचनात्मक अध्ययन

ले० (श्री अनूपसिह जी दयानन्द भवन मुजफ्फर नगर)

(इससे पहले १० अगस्त के अक मे देखे)

चमत्कार :—'ईसा' ने जो चमत्कार दिखाए वे कोरा ढोग है। तर्क और विज्ञान की कसौटी पर पूरे नही उतरते। 'जब 'ईसा' मे यह सामर्थ्य था कि उन्होने एक बार सात रोटियां और छोटी मछलियो से, स्त्री बच्चो को छोडकर चार हजार भूखे पुरुषो को तृप्त कर दिया था, तो फिर सात टोकरे बचे टुकडो से भर गए, तो स्वय भूख से पीडित हो अजीर के पास क्यो खाते फिरे?' (मत्ती अ १५ आ. ३४ मे ३९ तक) फासी के तख्ते पर लोगो ने 'ईसा' के साथ मजाक करते हुए कहा था, 'देखो यह लोगो को पापो से बचाने और मोक्ष दिलाने के लिए आया था, किंतु अपने को यह सूली से भी न बचा सका।'

प्रतिशोध :—'ईसा' प्रतिशोध जैसी निकृष्टतम भावना से भी न बच सका। 'जो कोई मनुष्यो के सामने मेरी अस्वीकृति करेगा, मैं भी अपने बाप के सामने जो आकाश पर है, उसकी अस्वीकृति करू गा।'

(मत्ती अ १० आ ३३)

एक बार जब ईसा को भूख लगी तो वह अंजीर के वृक्ष के पास गए। उस पर फल न पाकर उसको शाप देते हुए कहा—'तुझ मे फिर कभी फल न लगेंगे।" (मत्ती अ २१ आ १८, १९)

चोरी .—'ईसा' ने अपने शिष्यो से चोरी करवाई। 'ईसा' ने अपने शिष्यो से एक गधी मय बच्चे के खुलवाकर भी धोखा देकर और शिष्यो को सिखलाया कि कोई पूछे तो कहना मालिक ने मगवाई है।"

(मत्ती अ २१ आ १ से ७ तक)

क्या चोरी करना और झूठ बोलना महापुरुषो को शोभा देता है, कदापि नही।

मृत्यु वेदना :— जब ईसा' को सूली से बाध कर उसके हाथ पाव मे कीले ठोक दी गई तब उसने एक जोर से चीख मारी और कहा—'हे मेरे परमात्मा! तूने मुझे क्यो छोड दिया? यह मौत का महादुःख मुझसे टाल दे।' यदि 'ईसा' मे आत्मिक बल होता तो वह भी सुकरात, बन्दा वैरागी और ऋषि दयानन्द की भांति हसते-हसते भृत्यु वेदना को सहन कर लेता।

पादरी का सर्टिफिकेट —एग्लीकन चर्च के एक पादरी डा० स्टुअर्ट ने अपने पद से त्यागपत्र देते हुए कहा था - कोई भी विचारक इस बात मे विश्वास नही कर सकता कि किसी कुमारी से किसी का जन्म हो या कब्र मे गाढने के बाद कोई पुन जीवित हो, उन्होने कहा 'ईसा' खुदा नही था।

समाप्त

चौधरी जी को बधाई

श्री चौधरी बलबीरसिह जी एम एल ए प्रधान डी ए वी कालेज प्रबन्ध कमेटी होशियारपुर ने १५ दिन के अनशन को पंजाब यूनिवर्सिटी द्वारा मांगे पूरी होने पर समाप्त हो गया। उनका अनशन होशियारपुर मे बी एड कक्षा के छात्रो की सख्या की कटौती के प्रोटेस्ट मे था। विश्वविद्यालय ने संख्या पूरी कर दी है। उनकी माग को मान लिया। इसपर प्रिंसिपल भीमसेन जी डी०ए०वी० कालेज जालन्धर, प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पजाब ने अपने हाथो से रस का गिलास पिलाकर अनशन समाप्त कराया। इस अवसर पर जनता की बडी भीड आर्यसमाज मन्दिर होशियारपुर मे मौजूद थी। गण्यमान्य सज्जन थे। मान्य वीरेन्द्र जी दैनिक प्रताप जालन्धर भी पधारे थे। श्री चौधरी जी को सभी ओर मे बधाई मिली है। १७ ता० को आपके सम्मान मे बडा भारी जलूस भी निकाला गया। आर्यजगत इस सफलता पर श्री प्रधान जी को हार्दिक बधाई देता है। — ग

——

पूज्य म० गांधी-राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड [प्रधान केन्द्रीय हिन्दी रक्षा समिति]

पूज्य महात्मा गान्धी जी के राष्ट्र भाषा और राष्ट्र लिपि विषयक क्या विचार थे—इसको अपने शब्दों मे न कह कर उन्ही के शब्दो मे प्रकट करना अधिक अच्छा होगा। पहले मैं राष्ट्र भाषा विषयक उनके विचार उनके अपने शब्दो मे प्रस्तुत करना चाहता हू।

'राष्ट्र भाषा' नामक पुस्तक के पृ० ३५ मे पूज्य महात्मा गान्धी जी ने राष्ट्र भाषा विषयक अपने विचार इन शब्दो मे प्रकट किये थे। उद्धरण उनके मद्रास की हिन्दी परिषद् मे दिये भाषण से उक्त पुस्तक मे उद्धृत किये गये हैं।

'अगर स्वराज्य करोडो भूखो मरने वालो, करोडो निरक्षरो बहिनो और दलितो व अन्त्यजों का हो और इन सब के लिए होने वाला हो तो हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्र भाषा हो सकती है।'

('राष्ट्र भाषा नवजीवन प्रकाशन, पृ० ३५)

२० अप्रैल सन् १९३५ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर के सभापति पद से भाषण देते हुए पूज्य महात्मा गाधी जी ने कहा था 'हिन्दी को हम राष्ट्र भाषा मानते है। यह राष्ट्र-भाषा होने के लायक है। वही भाषा राष्ट्रीय भाषा बन सकती है जिसे अधिक संख्यक लोग जानते हो तथा बोलते हो और जो सीखने मे सुगम हो। ऐसी भाषा हिन्दी ही है।'

(राष्ट्र भाषा, पृ ४३)

इसी पुस्तक के पृ ४४ मे महात्मा जी ने लिखा—

'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्र-भाषा तो हिन्दी ही बन सकती है। क्योकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है वह किसी दूसरी भाषा को कभी नही मिल सकता। इसलिए उचित और सम्भव तो यही है कि प्रत्येक प्रान्त मे उस प्रान्त की भाषा, सारे देश के पारस्परिक व्यवहार के लिए हिन्दी, और अन्तर्राष्ट्रीय उपयोग के लिए अंग्रेजी का व्यवहार हो।'

(राष्ट्र भाषा, पृ०४४)

५-७-४६ के 'हरिजन बन्धु' मे पूज्य महात्मा जी ने लिखा था कि 'अगर आप की दृष्टि मर्यादा उत्तर मे श्रीनगर से दक्षिण मे कन्याकुमारी तक और पश्चिम मे कराची से पूर्व मे डिब्रूगढ तक पहुचती हो और इतनी वह पहुचनी भी चाहिए तो उसके लिए आपके पास हिन्दी को छोड कर और कोई साधन नही। अग्रेजी हमारी राष्ट्र भाषा नही बन सकती।

(हरिजन बन्धु ५-७ ४६)

१०-४-३७ के 'हरिजन सेवक' मे महात्मा जी ने स्पष्ट लिखा था कि जहा तक दक्षिण भारत की भाषाओ का सम्बन्ध है, बहुत अधिक संस्कृत शब्दो से युक्त हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो दक्षिण के लोगो को अपील कर सकती है। (हरिजन सेवक १०-४-३७)

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पूज्य महात्मा गाधी जी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा मानने के प्रबल पक्षपाती थे और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा आदि संस्थायो के द्वारा उन्होने हिन्दी के भारत के सब प्रदेशो मे प्रचार के लिए विशेष प्रशंसनीय कार्य किया था। जीवन के अन्तिम दिनो मे उन्होने जो हिन्दुस्तानी के नाम से राष्ट्रभाषा का प्रचार किया था उसके विषय मे मैं इस लेख के अन्त मे संक्षेप से प्रकाश डालू गा।

राष्ट्र-लिपि विषयक महात्मा जी के विचार :—

'नवजीवन' के २१-६-२७ मे महात्मा गाधी जी ने लिखा था कि :

'सचमुच मेरा यह दृढ विश्वास है कि भारत की सब भाषाओ के लिए एक ही लिपि का होना फायदेमन्द है और वह लिपि देवनागरी हो सकती है, यदि तमाम व्यवहार्य और राष्ट्रीय कामो के लिए इन सब लिपियो के स्थान पर देवनागरी का उपयोग होने लग जाये तो वह एक भारी प्रगति होगी। उससे हिन्दू भारत सुदृढ़ हो जाएगा और भिन्न-भिन्न प्रान्त एक दूसरे के अधिक निकट आ जाएगे। हमें एक ऐसी सर्वमान्य लिपि की जरूरत है जो जल्दी से जल्दी सीखी जा सके और देवनागरी के समान सरल, जल्दी से सीखने योग्य और तैयार लिपि दूसरी कोई है ही नही।

(नवजीवन २१-६-२७)

१८-२-३९ के 'हरिजन सेवक' मे पूज्य महात्मा जी ने लिखा—

'मैं अपनी यह राय तो जाहिर कर चुका हूं कि अगर हिन्दुस्तान में सर्वमान्य हो सकने वाली कोई लिपि है तो वह देवनागरी है।'

(हरिजन सेवक १८-२-३९)

३-३-३७ के 'हरिजन सेवक मे महात्मा जी ने लिखा—'देवनागरी को सारे हिन्दुस्तान की सर्वमान्य लिपि होना चाहिए क्योकि विविध प्रातो मे प्रचलित ज्यादहतर लिपियां मूलत: देवनागरी मे ही निकली हैं और इसलिए उनके लिए उसे सीखना सब से ही ज्यादह आसान है।'

२६-४-४२ के 'हरिजन सेवक' मे पूज्य महात्मा जी ने कुछ प्रश्नोत्तर दिए थे जिन मे से लिपि विषयक निम्नलिखित प्रश्न और उसका उत्तर इस सम्बन्ध मे उल्लेखनीय है। प्रश्न—भारतीय भाषाओ को व्यक्त करने की सबसे अधिक योग्यता नागरी लिपि मे है और आजकल की फारसी लिपि इस काम के लिए बहुत ही दोष पूर्ण है। क्या यह सच नहीं है?

इसका उत्तर देते हुए महात्मा जी ने लिखा था कि 'आप ठीक कहते है।'

इन उद्धरणो से जो पूज्य महात्मा गान्धी जी के अनेक लेखो से भी स्पष्ट है कि वे देव नागरी लिपि को ही राष्ट्रीय लिपि के रूप मे मानते और चाहते थे कि भारत की सब भाषाओ के लिए उसका प्रयोग किया जाए।

२६-६-४२ 'हरिजन सेवक' मे महात्मा जी ने इसके सम्बन्ध मे लिखा था कि 'बहुतेरी प्रान्तीय भाषाए संस्कृत से सम्बन्ध रखती हैं और यह भी सच है कि भिन्न-भिन्न प्रान्तो के मुसलमान अपने-अपने प्रातो की भाषाएं बोलते हैं। इसलिए यह ठीक ही है कि उनके लिए देवनागरी लिपि हिन्दी आसान रहेगी।'

(हरिजन सेवक, २६-६-४२)

लेख के अन्त मे इतना लिख देना पर्याप्त है कि यदि जीवन के अन्तिम भाग मे महात्मा जी ने हिन्दुस्तानी शब्द का राष्ट्र भाषा के लिए प्रयोग किया तो उसका उद्देश्य केवल राजनैतिक था अन्य कुछ नही। वर्धा के हिन्दुस्तानी सम्मेलन मे २७-२-४५ को भाषण करते हुए महात्मा जी ने कहा था 'मैं हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए जीता हू। मैं जानता हू कि हिन्दुस्तानी के प्रचार से हिन्दू-मुस्लिम एकता होगी।'

१०-८-४७ के 'हरिजन सेवक' मे महात्मा जी ने लिखा 'मैं यह कबूल करता हूं कि हिन्दुस्तानी पर मेरा जोर मुसलमान भाइयो की खातिर है।'

महात्मा गाधी जी का राजनैतिक उद्देश्य से किया यह प्रयत्न सफल नही हुआ, यह स्पष्ट है इसीलिए भारतीय संविधान सभा ने भारतीय संविधान मे देवनागरी लिपि मे लिखित संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को ही राजभाषा के रूप मे बहुमत से स्वीकार किया यहप्रसन्नता की बात है। स्वयं महात्मा गाधी का प्रबल समर्थन हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्र लिपि मानने के सिद्धांत को मिलता रहा—यह ऊपर दिये उद्धरणो से स्पष्ट है। अब देशभक्त राष्ट्रीय एकता प्रेमियों का कर्त्तव्य है कि हिन्दी सच्चे अर्थों मे राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित हो—इसके लिए संगठित प्रयत्न करे और देवनागरी लिपि को भारत की सर्वसामान्य लिपि के रूप में स्वीकार करें।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का ८६वां निर्वाणोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे दिल्ली राज्य की समस्त आर्य समाजो तथा आर्य संस्थाओ की ओर से श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज का ८६वा निर्वाणोत्सव पूर्व वर्षों की भाति इस वर्ष भी रविवार ९ नवम्बर को प्रातः ८ से १२ बजे तक रामलीला मैदान में मनाया जायेगा। इस उत्सव को सफल बनाने के लिये आर्य-केन्द्रीय सभा ने पूरे जोर-शोर इसकी तैयारी आरम्भ कर दी है।

ओमप्रकाश—सभा मन्त्री

आर्यसमाज पंजाबी मुहल्ला अंबाला छावनी

आर्यसमाज के ९० वर्ष के वयोवृद्ध नेता, महात्मा हसराज जी के अनन्य भक्त, सभा के बडे हितैषी डा० मिलखीराम जी की देख-रेख मे बडा सुन्दर कार्य कर रही है। श्री रमेशचन्द जी कपिल इसके मन्त्री है। बडे ही सौम्य स्वभाव के है। लिप्सा से दूर रहकर चुपचाप समाज के कार्य मे लगे रहते हैं। यह समाज सभा का बडा ही ध्यान रखती है। सभा को इसपर मान है। इस समाज का वेद सप्ताह समारोह मे सम्पन्न हो गया। प्रात काल यजुर्वेद यज्ञ होता। भजन व प्रवचन चलते रहे। रात को वेद कथा व संगीत होते थे। वेद सप्ताह मे आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर से प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री तथा प० मेलारामजी रेडियोसिंगर आए हुए थे। पं ज्ञानेन्द्र जी शास्त्री यज्ञ के पुरोहित थे। अपने डी ए वी स्कूल के मान्य अध्यापको एव छात्रो का भी सहयोग मिला। स्त्री समाज के उत्साह का तो कहना ही क्या ? वर्षा होने पर भी खूब समारोह था। पूर्णाहुति का दृश्य तो दर्शनीय था। पूज्य आचार्य ऋषिराम जी का अमृतमय प्रवचन भी हुआ। बहुत ही सफलता मिली। सभा को वेद प्रचार मे २०१) रुपए मिले। मार्ग व्यय अतिरिक्त था। सफलता पर समाज को बधाई।

धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश सि० विशारद सि० भूषण, सिद्धान्ताचार्य परीक्षाये आगामी दिसम्बर, जनवरी मे भारत तथा विदेशों मे होगी। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधिपत्र दिया जाता है। सर्व प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले को छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की नि शुल्क सत्यार्थ सुधाकर, सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधियां डाक द्वारा प्राप्त करें। १५ पैसे की टिकट भेज कर नियमावली मगाइये।

आदित्य ब्रह्मचारी	आचार्य मित्रसेन
यशपाल शास्त्री	एम० ए०, सिद्धान्तालंकार
प्रधान	शिक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्
सेवा-सदन, कटरा अलीगढ, (उ प्र)

वेद सप्ताह की धूम और अपील

आर्य समाज सैक्टर ८ चंडीगढ ११ वर्ष पर्यन्त डी ए वी स्कूल मे लगते रहने के पश्चात अपने नव मंदिर भवन सैक्टर ७ बी मे दिनाक २७-८-६९ को वेद सप्ताह के आरम्भ मे शुभ पावन श्रावणी उपाकर्म दिवस पर शुभ प्रवेश हुआ। प्रवेश संस्कारादि यज्ञ तथा नये यज्ञोपवीत धारण के पश्चात आर्यसमाज के प्रधान श्री सीताराम जी वोहरा वयोवृद्ध आर्य द्वारा ओ३म् ध्वज लहराया गया। प्रात यज्ञ तथा प० सत्यप्रिय शास्त्री उपाचार्य दयानद ब्रा महाविद्यालय हिसार तथा प० रविदेव जी शास्त्री के वेदोपदेश और आशु कवि श्री जयदेव जतोई वाले की मण्डली के भजनो के साथ उपरोक्त विद्वानो के वैदिक सिद्धान्तो पर सम्पूर्ण वेद सप्ताह धार्मिक वेद व्याख्यान होते रहे। आर्य नर नारियो को अपना मन्दिर बन जाने और वहा सत्सग लगने पर पर्याप्त हर्ष प्रदर्शित किया मन्दिर रात दिन भरा रहता था। ६ कनाल के इस विशाल मन्दिर का अभी तो केवल एक भाग प० नानक चंद पुस्तकालय, भवन ३१ X ३० का बना है और २ ३ कमरे आतिथियो के लिए। अभी मन्दिर का सत्सग हाल ६० X ४० कर लग-भग १००० व्यक्तियो के बैठने योग्य बनना है और तीसरा भाग मन्दिर की विशाल यज्ञशाला है जिसमे दो सौ व्यक्तियो के बैठने की व्यवस्था होगी यह दोनो भाग बनने शेष है। अतः दानी महानुभाव राजधानी के इस विशाल मन्दिर के निर्माण मे पूरा सहयोग और सहायता प्रदान कर पुण्य तथा यश के भागी बने।

—आशुराम आर्य पुरोहित

वेद सप्ताह

जि० रोहतक के गाव निडाना, मदीनादागी व मोखरा मे बडी धूमधाम से वेद सप्ताह मनाए गए इन तीनो ग्रामो मे आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के उपदेशक पं प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर श्री व [illegible] भूरा राम जी सुमेर सिह रणजीतसिहजी ने वैदिक प्रचार किया। तीनों [illegible] मे-यज्ञ किए गए यज्ञोपवीत दिए गए। प्रचार का प्रभाव बहुत ही अच्छा रहा। लोगो मे—आ० समाज के प्रचार की बडी भारी प्यास है यह अनुमान प्रचार मे—आने वाली उपस्थति से लगाया जाता है कि किस प्रकार उत्साह के साथ स्त्री, पुरुष, व बच्चे बडी हाजरी मे, भाग-भाग कर आते रहे है। ऊपर लिखित समाजो की ओर से आर्य प्रादेशिक सभा को इस प्रकार दान दिया गया।

१ आर्य समाज निडाना—९७ रु०
२ आ० स० मदीना दागी—८० रु०
३ आ० स० मोखरा—१०५ रु०

आर्य प्रादेशिक सभा आपका धन्यवाद करती है।

प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर

श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज रायपुर की ओर से श्रावणी पर्व वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के महोपदेशक श्री प० नैमिषिकुमार आर्य विद्यावाचस्पति की वेद कथा व भजन एवं श्री धर्मदेव जी आचार्य गुरुकुल व श्री कान्ता प्रसाद जी के वेदादि विषयो पर प्रवचन होते रहे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आर्य समाज के मन्त्री श्री रूपलाल जी ने एव श्री कान्ता प्रसाद जी ने श्रीकृष्ण चरित्र के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन कराया।

इसी सुअवसर पर वाद-विवाद एव भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। जिसमे नगर की शिक्षण सस्थाओ के छात्रो ने भाग लिया। वाद-विवाद प्रतियोगिता मे श्री केदार शिवहरेजी प्रथम, श्री लाजेशकुमार जी वर्मा प्रथम एव श्री श्यामलाल जयेल जी ने द्वितिय स्थान प्राप्त किया। इन सबको पुरस्कृत किया गया।

—मन्त्री आर्यसमाज रायपुर

फरीदाबाद में वैदिक [illegible]

आर्य प्रादेशिक सभा के सुयोग्य प्रसिद्ध वक्ता पंडित चन्द्रसैन जी आर्य हितैषी सोनीपत निवासी १५-९-६९ को यहां पधारे ४-५ रोज लगातार ३-३ व्याख्यान आर्यसमाज माडल टाऊन नं० ३ मे होते रहे हाजरो मे हाल भर जाता रहा अन्तिम दिन तो हाल से बाहर प्रचार कराना पड़ा प्रचार का अति उत्तम प्रभाव पड़ा ये समाज इन्हीं की स्थापना की हुई थी १२-१३ वर्ष बाद यहां पंडित जी पधारे इन के बोलने की शैली बहुत ही प्रभाव शाली है पंडित जी के सद्प्रयत्नों श्री दुर्गाप्रसाद जी अहूजा तथा आर्यसमाज टाऊन नं० ३ के नाम आर्य जगत जो सभा की साप्ताहिक पत्रिका है चालू करा दी गई ४९/- दे प्रचार और आर्यजगत का चन्दा वसूल हुआ मार्ग व्यय इसके अलावा है सभा का बहुत-बहुत धन्यवाद है आशा है सभा आवश्य समाज को ध्यान रखेगे। पंडित जी के आने से हम सभी का बड़ा ही उत्साह बढ़ा है पुनः हम सभा का धन्यवाद करते है।

मन्त्री - विश्वामित्र सत्यार्थी

आर्यसमाज सैक्टर २२ चंडीगढ़

आर्यसमाज सैक्टर २२ चण्डीगढ का सोलहवा वार्षिकोत्सव १०,११, १२ तथा १३ अक्तूबर १९६९ को होना निश्चित हुआ है। उसमे उच्चकोटि के आर्य सन्यासी तथा धुरन्धर विद्वान पधार रहे हैं।

श्री स्वामी आनन्द गिरी जी, श्री स्वामी सर्वानन्द जी, श्री उत्तमचन्द जी शरर, श्री ओ३म् प्रकाश जी तथा श्री चुनीलाल जी आर्य भजनोपदेशक अपनी पूरी मंडली सहित।

इनके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान मान्यवर शूर जी प्रताप जी भाई, ससद् सदस्य श्री रामगोपाल शाल वाले, त्यागी जी शिव प्रकाश जी शास्त्री तथा श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री के पधारने की भी पूर्ण सम्भावना है।

कर्मवीर
उपमन्त्री

प्रतीक्षा कीजिए

आर्यजगत के 'दीपावली अंक' की जो आपकी सेवा से ९ नवम्बर को आ रहा है। आर्य संस्थाएं तथा आर्य समाजें, आर्य बन्धु प्रचारार्थ तथा 'आर्यजगत' की सहायतार्थ अधिक से अधिक आर्डर भी भेजें। इस विशेषांक का मूल्य ५० पैसे होगा।

शोक प्रस्ताव

१ प्रातः १५-९-६९ को स्कूल स्टाफ तथा विद्यार्थियो की शोक सभा हुई जिस में ला० सन्तराम जी सदस्य प्रबन्धकर्तृ सभा की धर्मपत्नी श्रीमति रामरक्खी जी के निधन पर शोक प्रकट किया गया। उनकी अकस्मात मृत्यु १३-८-६९ को हुई थी। सभा मे भगवान जी से प्रार्थना की गई कि वे मृतक की आत्मा को शान्ति तथा सद्गति प्रदान करे और उनके पीड़ित परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति तथा धैर्य प्रदान करे।

२ प्रातः १५-९-६९ को स्कूल स्टाफ तथा विद्यार्थियो की शोक सभा हुई जिस मे लाला रामरक्खामल जी सदस्य प्रबन्धकर्तृ सभा के निधन पर शोक प्रकट किया गया। उनकी अकस्मात मृत्यु १८-८-६९ को हुई थी। सभा मे भगवान जी से प्रार्थना की गई कि वे मृतक की आत्मा को शान्ति तथा सद्गति प्रदान करे तथा उनके पीड़ित परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति तथा धैर्य प्रदान करे।

प्रिंसिपल शान्ति स्वरूप
डी० ए० वी० हा० सै० स्कूल ऊना
कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

आ.स. प्रेमनगर करनाल का वार्षिक उत्सव

१२ सितम्बर से लेकर १४ सितम्बर सन् १९६९ तक तीन दिन आर्यसमाज प्रेम नगर करनाल का वार्षिक उत्सव बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण मे धूम-धाम से मनाया गया। आर्य प्रादेशिक सभा के महोपदेशक श्री प० भास्करानन्द शास्त्री सिद्धान्त वाचस्पति, वैदिक रिसर्चस्कालर के आर्य सिद्धांतो पर प्रभावशाली व्याख्यानों तथा श्री प० जगतराम जी आर्य भजनोपदेशिक व इनकी भजन मण्डली और पं० दमनीराम जी के ओजस्वी [illegible]का जनता पर बड़ा [illegible] शास्त्रार्थ महारथी श्री प० शांति[illegible]जी के तथा श्री महात्मा विहारी जी के सामाजिक व आध्यात्मिक [illegible] पर कई अच्छे भाषण हुए। इस उत्सव के अवसर पर तीसरे दिन वैदिक अर्थव्यवस्था पर एक सम्मेलन हुआ जिसमें श्री उत्तमचंदजी शरर एम ए श्री प्रोफेसर जयदेव जी M A श्री प्रोफेसर डाक्टर राम कुमार P.H D तथा प्रोफेसर श्याम राव जी के आर्य के अर्थ व्यवस्था और राजनीति पर विशेष भाषण हुए। प्रेम नगर करनाल का यह वार्षिक उत्सव हर दृष्टिकोण से पूर्ण सफल रहा। ऋषि लंगर मे सबके लिए भोजन की उत्तम प्रबन्ध था जिसमे सब प्रेम पूर्वक भोजन करते रहे। आये माताओं बहनों, आये बालको, युवकों और बड़े सब लोगों मे पूर्ण उत्साह थो। प्रादेशिक सभा को वैदिक-धर्म प्रचरार्थ ६१ रु० इकसठ रुपया दान तथा २८ रु० उपदेशक महानुभावो के लिए मार्ग व्यय दिया गया। सभा को विशेष धन्यवाद।

ईश्वर चन्द मन्त्री
आर्य समाज प्रेम नगर
करनाल (हरियाणा)

आर्यसमाज रमदास

तिथि १४-९-६९ को आर्यसमाज रमदास का वार्षिक चुनाव आर्य समाज मन्दिर मे ला० कर्मचन्द जी प्रधानता मे हुआ जिस मे निम्नलिखित अधिकारी चुने गए।

प्रधान—प० शिवदत्त जी शर्मा, उपप्रधान—ला० साधुराम जी दुग्गल, मन्त्री—श्री अमरजीत जी सोनी, उपमन्त्री—ला० गुरबख्श जी बासल, प्रचार मन्त्री—श्री बाबूराम जी नगर पिता रमदास, कोषाध्यक्ष—ला० चमनलाल जी जाली, स्टोर कीपर ला० रामलुभाया जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री केसरदास जी।

—मन्त्री अमरजीत सोनी

कृपया लेखक कापी एक ओर लिखें

वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीरामजी एम ए, पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत् कार्यलय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P.

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे   वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ४०)   २० आश्विन २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—५ अक्तूबर १९६९   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तः

अर्थ —वह प्रभुदेव अमृत :—अमृत है अमरहै, स्वयम्भु —अजन्मा है अनादिहै और रसेन-आनंद रस से तृप्त —भरपूर है। आनन्द का भंडार है। आनन्दमय है।

भाव —वह भगवान अमर है—जन्म-मरण से रहित है। उसका जन्म नही है। किसी से कभी उत्पन्न नही होता। अजन्मा है। कभी शरीर में नहीं आता। रस से भरपूर है। आनन्द का स्रोत है। उसी से आनन्द मिलता है हे मानव ? आनन्द पाने के लिए प्रकृति के पदार्थों में क्यों भटकता फिरता है। इनमें आनन्द है नहीं तो आनन्द देंगे कहां से ? प्रभु आनन्दमय है। उसी से सुख मिलेगा उसी की शरण में जा। दुःख दूर होते जाएगे।

अथर्व वेद ८-.४

वे दा मृ त

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है

ओ३म् सविता पश्चात्तात् सविता-
पुरुस्त त् सवितोत्तरात्तात् सविता धरात्तात्।
सवितानः सुवत सर्वतातिं सविता
नो रासतां दीर्घमायुः ॥

ऋग्वेद १०-३६-१४

अर्थ :—वह (सविता) सारे विश्व को उत्पन्न करने वाला सविता देव हमारे (पश्चात्तात) पीछे भी है। वही सविता हमारे (पुरुस्तात)सामने व्यापक है। वह सविता (उत्तरात्तात) हमारे उतर की ओर सविता (अधरत्तात) नीचे भी रचा हुआ है। वह सविता (न) हमें (सुवतु) देता रहे (सर्वतातिं) सभी इष्ट पदार्थ वह सविता देव (न.) हमें (रासतां) मुता रहे (दीर्घम् आयुः)लम्बी आयु।

इस का भाव यह है

प्रभु के अनन्त नामों में सविता भी नाम है। वह इस बिविध विश्व का उत्पादकहै इसीलिए उसे सविता कहते है। वह सवितादेव सर्वत्र व्यापक है। सारी दिशाओ में रम रहा है। हमारे सामने, दाए, बाए, पीछे ऊपर नीचे सभी स्थानों पर वह व्यापक है। वही हमे सब प्रकार के इष्ट पदार्थ प्रदान करता है। वह सविता प्रभु हमे लंबा स्वस्थ जीवन प्रदान करे। —सं.

ऋषि दर्शन

यज्ज्ञात्वा मत्तो भवति

अर्थ —यत्-जिस भक्ति के रूप को अथवा जिस ब्रह्म को ज्ञात्वा-जानकरके वह प्रभु प्रेमी मत्त —मस्त भवति हो जाता है प्रभु प्रेमी के जीवन मे एक अनोखी मस्ती भर जातीहै।

भाव —यह आधा सूत्र दिया है। प्रभु का प्यारा जिस समय अपने प्रभु प्रीतम को जान लेना है, उसके ज्ञान को पा लेता है, उसकी जीवन में अनुभूति कर लेता है तो वह मस्त हो जाता है। प्रभु प्रेम से जीवन मे जो मस्ती आती है बडी अनोखी होती है, जो भी नशा चढता है निराला ही होता है। यही वही भगवानके भक्त जानते है जिनमें यह मस्ती आती है। उनकी अपनी अनोखी दुनिया होती है। अपनी मस्ती मे ही विचरते है।

नारद भक्ति सूत्र ६

ऋषि दयानन्द के देहान्त के ५ वर्ष पश्चात् प्रकाशित

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित

(श्री डा. भवानीलाल जी भारतीय, एम.ए., पीएच.डी., हिंदी विभाग गवर्न कालेज अजमेर)

इन दिनो मैं महर्षि के जीवन तथा सम कालीन पत्र पत्रिकाओ तथा ग्रन्थो मे पाये जाने वाले उन के सम्बन्ध के उल्लेखो और सदर्भो का शोध, अनुसधान और अध्ययन कर रहा हू । इसी प्रसग में मुझे एक लघु पुस्तिका महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का जीवन चरित्र, शीर्षक प्राप्त हुई है । इस के लेखक 'श्री जगन्नाथ भारतीय' नामक कोई सज्जन थे तथा यह 'बाबू राम चन्द्र के प्रबंध से रसिक काशी यन्त्रालय, देहली मे मुद्रित हुई थी। इस के प्रकाशन का संवत् १९४५ वि तथा श्री मध्यानन्दब्द ५ है । अर्थात् श्री महाराज के अवसार के ५ वर्ष पश्चात् ही यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी। पाठको के मनोरञ्जनार्थ मैं उस लघु पुस्तक का पाठ भूमिका सहित उद्धत करता हू —

भूमिका '—यद्यपि श्री स्वामी जी महाराज 'कुछ दिन चर्या ।१ वा दयानन्द दिग्विजमाक२ के लेख विद्यमान है तब मैने कोई बात उन से बढ कर इस मे नही लिखी कि जो मेरे लेख को भी कोई पढे परन्तु जैसे आज कल नागरी उर्दू, अग्रेजी, बगला, गुजराती आदि के समाचार पत्र वा धर्म पुस्तके छापती है उस मे इन का नाम तथा धर्म विषय लेख छापता है । ऐसा ही यह भी पुस्तक लिखने का विचार जानो । क्योकि जब ईसाई, मुहम्मदी, जैनी, पुराणी आदि अपनी पुस्तको मे इन का नाम प्रकट करते हैं तो मैं तो वैदिक मत का हू फिर क्यो न लिखू और यह अपनी २ भावना रही (जो जैसा होता है वैसा ही ढूडता है) के कोई उन के छिद्र ढूढ २ प्रकाश करता है और कोई उन के गुण । हम उन के छिद्र प्रकाश करने वालो को भी सराहते हैं क्योकि सिवाय गुणो के लिखने वालो के दूसरे ने भी उन पर दृष्टि दी । यदि कुछ था ही नही तो वह किस को क्या यह कम पुरुषार्थ है । और विचारना चाहिए कि मुन्शी जगन्नाथ दास ने मुहम्मद जीवन चरित्र अब दो वर्ष हुये लिखा है तथा श्री रामानुज स्वामी का जीवन चरित्र वा श्री शकराचार्य का जीवन चरित्र और महाकवि की जयदेव जी वा श्री वल्लभाचार्य इत्यादि कई महात्माओ का जीवन चरित्र कई सौ वर्ष मरे पीछे अर्थात् जिनका जीवन चरित्र है उन के कई २ सौ वर्ष मरे पीछे भारतभूषण श्री हरिचन्द्र जी ने लिखा हे । तथापि मैने अपनी आख से भी स्वामी जी महाराज को देखा था कि जिन के स्वर्गवास होने के ५ वर्ष पीछे यह पुस्तक लिखा । काल की विचित्र गति है इसी भूमि पर पानिणि कात्यायन, पातञ्जलि, यास्क गोतम आदि तत्ववेत्ता, कालिदास, भवभूति बाणदि कवि शिरोमणि, धन्वन्तर्यादि आयुर्वेद चिकित्सक, अर्जुन, भीम, धनुर्विद्या मे प्रवीण वा गान विद्या मे गंधर्वसेन, नारदादिक गणित शास्त्र के वेत्ता यास्कराचार्य योगीश्वरो मे की कृपा सरीखे, उपदेशको मे व्यास जी सरीखे, सत्य बोलने मे युधिष्ठर महाराज धर्मात्मा क्षत्री जितेन्द्रियो मे भीष्म पितामह सरीखे सुविज्ञ, गुरु द्रोणाचार्य जी सरीखे, निर्लोभी, दानियो मे कर्ण सरीखे, विचारशीलो मे विदुर जी सरीखे पिता के आज्ञाकारी श्रवण सरीखे, धर्म पालन मे राजा हरिश्चन्द्र सरीखे, दावा पूरा करने मे राजा बलि सरीखे, स्त्रियो में सती शैव्या, सीता इत्यादि और २ धुरन्धर पूर्ण गुणवान् विद्वान् इस भूमि पर अनेक महात्मा अनेक मार्ग के दिखाने वाले सच्चे और निपुण भक्त इसी पृथ्वी मे हो गये है । जब वही काल की गति से रहे तब हम अपने देखे स्वामी जी महाराज को क्या कहे और हमें अन्य देश के विद्वान् अर्थात् सुकरात सरीखो को भी याद से भूलना नहीं चाहिये यद्यपि हम पूर्व के गुणवानो का गुण चरित्र सुन-सुन ही सन्तुष्ट होते है और अब के अमूल्य रत्न को तो (जो पूर्वजो की कोटि मे गणना करने से कुछ कम न थे) देख और उसके खो जाने के सिवाय हमारी दुर्भाग्यता के और क्या कहना चाहिये । शोक ! शोक !! महा शोक !! !

जैसे यह भारतवर्ष विद्यावान गुणवानो की खान है ऐसा ही परमेश्वर की कृपा से इस छोटे से ही भारतवर्ष में अनेक वस्तुएं आश्चर्यजनक है (उस विषय मे मेरा बनाया गुलदस्तये हिन्द देखो) यह उसकी महिमा है कि एक ही भारतवर्ष मे भिन्न-भिन्न बाते वह क्या जैसे भारतवर्ष के एक तरफ को बर्फ के हिमालय पर्वत तो दूसरी तरफ को गर्म देश की फलदायक भूमि अपने हरे-हरे वृक्षो से मन को हरा करते के लिए मौजूद हैं । एक तरफ की सैकडो कोस मे रेत के टीले जल का सकोच तो दूसरी तरफ को हजारो कोस मे कदम-कदम पर जल की बरसाई और खेती बाडी का धन्धा दिखाई देता है । एक तरफ को टूटी-फूटी झोपडी फूस के घर तो दूसरी तरफ को आगरे का ताजगज, मथुरा, वृन्दावन के मन्दिर देवगढ (वा दौलताबाद) का किला इलरु (वा इलौरा) के मकान मन हरने को तैयार है । एक तरफ को जंगली रस्मे, दक्षिण मथुर (वा मदिरा वा मीनाक्षी) की तोतियारी जाति के सब कुनबे का एक स्त्री से व्याहना, मलीबाद, कल्लिकोट, तेल्लिचरी मे व्याही स्त्री को स्वतन्त्र करके बाप के घर छोड देने की रीति है तो दूसरी तरफ को यहा के बुद्धिमान् धर्मात्मा पराक्रमी तक पत्नीव्रत स्त्रियो का जस सारे भूमण्डल मे विख्यात है । एक तरफ के यहा के लोक निरुधर्मी कगाल और दुर्बल होते जाते हैं तो दूसरी तरफ के काश्मीर के दुशाले और बनारस के कमखाब वगैरह अब तक सब देशो मे प्रसिद्ध है । आर्यावर्त मे सब तरह की हवा सब तरह के मौसम सब तरह की बस्ती सब तरह के जानवर और सब तरह की जडी बूटी मौजूद है । बहुत क्या कहे एक ही पर्वत के देखने मात्र से तीनो ऋतु आख के सामने आ जाती हैं । एक पहाड के जड मे देखो तो गर्म देश के आम, इमली आदि पेड मौजूद हैं बीच मे देखो तो सर्द देश के बान, वरस, चील, देवदारू आदि दिखाई देते हैं और ऊपर बर्फ की हद के पास जाकर देखो तो भोजपत्र के सिवाय कुछ भी नही दिखाई देता । सिद्धात यह है कि भारतवर्ष आश्चर्य (एक से एक अपूर्व) बातो का भंडार है । इसी तरह स्वामी जी भी हाल के कितनो ही मे से एक अपूर्व विद्वान् पूवले महात्माओ के गुण के अनुसार हुए तो क्या आश्चर्य है । हा शोक है ऐसे विद्वान् का हम को हमारी आखो से न दिखने का हन्त ! हा हन्त !!

अब कुछ थोडा सा वृत्तान्त स्वामी जी का लिखता हू ।

स्वामीजी का जन्म सवत् १८८१ मे हुआ । स्वामीजी राजा मौरवी की राजधानी मुल्क काठियावाड के रहने वाले थे जाति के ओदीच्य गुजराती ब्राह्मण आपकी ५ वर्ष की अवस्था होने से पहिले ही देवनागरी अक्षर पढने मे रुचि हो गई थी. तभी से उनके पिता आदि गृह के लोग उनको स्तोत्र मंत्र आदि जिह्वाग्र कराने लगे । आठ वर्ष की अवस्था जनेऊ हुआ फिर तो सध्या, गायत्री पढाने का आरम्भ हुआ और यजुर्वेद की सहिता पढने लगे । बाप के घर के लोग शैवी थे, और वह आपको उसमे प्रवीण करना चाहते थे जैसे शिव का ध्यान पार्थिव पूजा और प्रदोषादिक के व्रत करने का नियम अवश्य पालन करने को कहने लगे । खैर, आपने १४ वर्ष की अवस्था तक समस्त यजुर्वेद की सहिता कण्ठ कर ली थी, और इसी के साथ वेद के साथी ग्रन्थ वा व्याकरणादिक भी अच्छी तरह याद हो गए थे कि जिससे कोई कार्य रुक न सके । आपके पिता ने शिवरात्रि के व्रत करने और उस रात्रि जागरण करने की बडी ताकीद की । खैर, आप शिव मदिर मे गये ।

(क्रमश)

१ स्वामी जी की इस दिनचर्या का प्रकाशन भारत सुदशा प्रवर्तक मे हुआ था ।

२ यह ग्रन्थ तीन भागो मे फराखबाद निवासी प. गोपाल देव हरि ने लिखा था ।

३ यह व्यक्ति मुरादाबाद के मुन्शी इन्द्रमणि का शिष्य था ।

४ हिन्दी प्रसिद्ध लेखक और कवि भारतेन्द्र से अभिप्राय है ।

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २१] रविवार २०२६, ५ अक्तूबर १९६९ [अंक ४०

गुरु-मेला करतारपुर

जिस महान् गुरु विरजानन्द सरस्वती ने विश्व को स्वामी दयानन्द सरीखा महान् शिष्य देवता दिया, उन दण्डी देवगुरु विरजानन्द जी महाराज की शताब्दि आ गई है। इस तथ्य को स्वीकारने में किसी को भी इन्कार नहीं है कि हम ने उस दिव्य गुरु को प्रायः भुलाये रखा। समय पर बुलाये जाने वाले जयघोषों में उनका जयनाद भी कम सुनने में आया। साधारण सा जीवन चरित्र उनका प्रकाशित किया गया। जनता मे उनकी प्रसिद्धि कम ही रही। न ही उनके जीवन का किसी प्रकार का समारोह ही मनाया गया। उनके जीवन की झांकियों में मथुरा मे स्वामी दयानन्द जी के द्वारा शिक्षा प्राप्त करना तथा जीवन दक्षिणा की विशेष जीवन गाथाएं ही प्रचलित हैं। दूसरी बातें कम ही पेश की गईं। इसका प्रभाव यह हुआ कि देश विदेश मे महर्षि दयानन्द के महान् आचार्य गुरुवर विरजानन्द सरस्वती के बारे में लोग बहुत कम ही जानते हैं। इस ओर ध्यान भी कम ही दिया गया। जनता केवल इतना ही जानती है कि दण्डी विरजानन्द जी स्वामी दयानन्द के आचार्य थे तथा दक्षिणा के रूप मे गुरु जी ने ऋषिवर से सारा जीवन वेद प्रचार के लिए मांग लिया। दूसरे लोग अपने महापुरुषों के लिए क्या २ नहीं करते, किन्तु सत्य यह है कि हम इन बातों में पीछे हैं। अब की बार इस ओर विशेष ध्यान गया है।

करतार पुर में जी. टी. रोड राजपथ के ऊपर ही गुरु विरजानन्द सरस्वती का भव्य स्मारक भवन के रूप में अफ्रीका के एक मान्य महानुभाव ने अपनी ओर से बनवाया था। पूज्य महात्मा स्वर्गीय प्रभु आश्रित जी ने यहां रोहतक से पधार कर चारों वेदों का महान् यज्ञ किया था। यह शोभा बनी और बन रही है। गुरु स्मारक के कारण करतार पुर का यह सुन्दर स्थान आर्य जगत के लिए एक प्रकार का तीर्थ स्थान ही है। कुछ समय से गुरु विरजानन्द स्मारक समिति बनी हुई है जो प्रतिवर्ष यहां पर भव्य समारोह का प्रबन्ध करती है। इस बार उस महान् गुरु के निर्वाण को शताब्दि हो गई है। शताब्दि का नाम ही जनजीवन के लिए उत्साह व उल्लास का विषय बन गया है। इस बार करतारपुर समिति की ओर से महान् गुरु की निर्वाण शताब्दि मनाने का समारोह प्रारम्भ किया गया है। उसकी तरफ से इस मास अक्तूबर की पांच तारीख से बारह तारीख तक करतारपुर स्मारक मे विशाल समारोह मनाया जा रहा है। इस मे करनाल, पानीपत, सोनीपत, अम्बाला, रोहतक, हिसार, गुडगांवा व देहली से अनेको दसे भर कर यहां पर समारोह मे भाग लेने आयेंगी। पंजाब के नरनारी तो शामिल होंगे ही। कई प्रकार के महिला सम्मेलन, युवक, वेद एवं दूसरे भी सम्मेलनों का प्रबन्ध होगा। यह गुरु शताब्दि का प्रारम्भ है। प्रातःकाल वेदपारायण का यज्ञ होगा। तारीख बारह अक्तूबर को समारोह की पूर्णाहुति होगी। सारा वर्ष चलेगा ही। अगले वर्ष इस शताब्दि समारोह की पूर्णता होगी। आर्य जगत की यह परीक्षा है। उसकी गुरुभक्ति व श्रद्धा का अब पता लगेगा। सारी सभाओं का पूरा-पूरा सहयोग लेना चाहिए। यह कार्य किसी एक व्यक्ति या संस्था समिति का नहीं है वरन सारे आर्य जगत का है यह समारोह इतनी शान का हो ताकि सब को पता चल सके कि आर्यसमाज अपने महान गुरु की शताब्दि कितने उत्साह से मनाता है। दूसरे महापुरुषों का शताब्दियों पर सरकारें लाखो का व्यय कर रही है तथा भारत सरकार के नेता भी इस ओर लगे हैं। अच्छा है। महापुरुषों का जीवन सन्देश देता रहता है। प्रश्न यह है कि आर्यसमाज अपने महान गुरु की शती मनाने मे कितना सचेत है—यह देखना है। सारे महारथी सिर जोडकर बैठे। इसके लिए प्रान्तीय सरकारों के साथ साथ भारत सरकार को भी अभी से प्रेरणा देवें। गुरु विरजानन्द सरस्वती केवल समाज के नहीं थे वरन सारी जनता के थे; उनकी दिव्यदेन स्वामी दयानन्द की विचारधारा व बलिदान सभी के जीवन का पथ प्रदर्शन करता करता है इस कार्य के लिए श्री. पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी रोहतक वाले, प. नन्दलाल जी वानप्रस्थी व अन्य सन्त के साथ स्थान २ पर भ्रमण करते सन्देश देते फिर रहे हैं इस महान जयन्ती समारोह का प्रारम्भ करतार मे शानदार हो—जनता खूब वहां पहुचने का संकल्प करे।

—त्रिलोक चन्द्र

अनशन का मार्ग

किसी बात को मनवाने के लिए अनशन कर देना उचित नहीं होता। हां यदि कोई ऐसी बात हो जो कि न्याय संगत हो तो उसके लिए ऐसे मार्ग को अपनाने की बात सोची जा सकती है। किन्तु अमुक नगर हमे मिल जाए यह नदी हमारी तरफ आ जाए—ऐसे-ऐसे कार्यो के लिए समय-समय पर भूख हडताल कर देना ठीक नहीं। यदि करना भी हो तो श्री मुरार जी देसाई के समान परस्पर के वैरविरोध, उपद्रव, उत्पात, मारकाट साड फूक के भयंकर काण्डो को रोकने के लिए तो प्राणो की बाजी लगा देने की बात कुछ-कुछ समझ मे आ सकती है। किन्तु नगरो को प्राप्त करने के लिए भूख हडताल करना उचित नहीं कहा जा सकता। पंजाब व हरयाणा प्रान्तो मे इस अनशनो के कारण जो वातावरण मे तनाव पैदा होने लगा है। उसे देख कर किस देश भक्त के दिल को दुःख नहीं होता। भारत सरकार भी अपनी तथा यह नगर भी अपने एव प्रान्तों की सरकारे व जनता भी अपनी है। अनशन समाप्त करके प्रेम-पूर्वक आपस मे समझौते किए जाए

सत्संगपद्धति में एकता

आर्य समाज का अपना एक विशाल संगठन है। सन्ध्या और यज्ञ इस के सत्संग की दो प्रमुखताए हैं। इस समय एक आवश्यक बात की ओर आर्य समाजों के मान्य सज्जनो का ध्यान दिलाना चाहते हैं। बात यह है कि भिन्न २ स्थानो पर सन्ध्या और हवन की कुछ अलग-अलग पद्धतियां चल पडी हैं जिनके कारण कर्मकाण्ड की एकता में अनेकता पैदा होने लगी है। यह बात तो स्पष्ट है कि अभी थोडा समय ही हुआ है—यह सन्ध्या में समर्पण मन्त्र मे पूर्व एवं गायत्री मन्त्र के बाद हे ईश्वर दयानिधे [illegible] भक्ति मन्त्र का रूप बन कर सन्ध्या मे शामिल हो गई है। इसी प्रकार यज्ञ की पद्धति मे भी कई अन्य मन्त्रो को मिला कर आहुति दी जाती है। अनेक नगरो मे अनेक पद्धतियां चलने लगी है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस बात पर ध्यान न दिया गया तो इस पद्धति मे अलग-अलग परिवर्तन होते होते और ही कुछ बन जायेगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमारी सन्ध्या तथा हवन की एक ही पद्धति जो कि ऋषिवर ने निश्चित की है—वही हो। इस मे एकता का सूत्र दृढ होगा।

वैदिक-यज्ञ-विधान

माननीय आर्यसमाज के महारथी पुराने स्तम्भ अमृतसर के ज्ञानी पिण्डी दास जी आर्य समाज लोहगढ अमृतसर के प्रधान हैं। आप आर्य समाज के और अपनी आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के पुराने महारथी स्तम्भ हैं समाज का अपने जीवन मे बडा कार्य किया व अब भी किये जा रहे हैं। लिखने तथा बोलने मे बडी विशेषता है। निर्भयता तथा सिद्धांत प्रेम आप की विशेषताए हैं। बहुत ही स्वाध्याय शील हैं। अमृतसर मे जब कभी दर्शन करने जाना होता है तो घर पर सदा पढते लिखते ही मिलते हैं। कई पुस्तकों मे 'विश्व का मार्ग।' आप की विशेष लिखी सर्वांगीण किताब है।

आपने स्वाध्याय से भरी 'वैदिक-यज्ञ-विधान नामक बडी ही उत्तम पुस्तक लिखी है। दो सौ पृष्ठो के लगभग लिखी इस पुस्तक मे नाना-विध ग्रन्थो के बडे ही खोजपूर्ण प्रमाण दिये है। आप की यह पुस्तक भी बडी ही खोज व गम्भीर स्वाध्याय का मधुकलश है। पुस्तक बडी उपयोगी व उपादेय है। प्रभु करे कि मान्य ज्ञानी जी स्वस्थ रहे ताकि ऐसा सत्साहित्य देते रहे।

पुरानी सुनहली स्मृतियां
आर्यसमाज के स्वयं प्रचारक

(श्री पं. दौलतरामजी शास्त्री, अमृतसर)

'माननीय वयोवृद्ध संस्कृत विद्वान् श्री पण्डित दौलतराम जी शास्त्री लारेंस रोड अमृतसर, आर्य समाज के बड़े पुराने महारथी हैं। सारी आयु शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र मे दी है। इस अवस्था मे भी बडा कार्य करते हैं। प्रभु मे उनको संगीत, काव्य, भाषण तथा लेखन कलाएं दी हैं। सभा के बडे हितैषी हैं। संस्कृत के प्रकाण्ड, विद्वान् हैं। लारेंस रोड, श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर समाजों को बडा सहयोग देते हैं हमारी विशेष प्रार्थना पर आर्यजगत के लिए खूब लिखा है। समय-समय पर प्रकाशित किया जाता रहेगा।'

—सम्पादक

आर्यसमाज को वही अवस्था है जो सूजन के रोगी की। वह समझता है मैं स्थूल हो गया हू यथार्थ मे उसके शरीर मे शोथ है रोग अन्दर है वह व्यर्थ की प्रसन्नता कर रहा है! बड़े-बड़े नगरो मे ये उद्यमी इतने आलसी हो गए हैं कि एक मुहल्ले का आर्यसमाजी दूसरे मुहल्ले में पहुंचना पर्वतारोहण समझता है—अथवा एक फर्लांग मंदिर तक चले तो समझता है हा मेरा भार घट गया होगा। स्वर्गीय बख्शी **टेकचन्द जी** जब समाज मे जाते तो पैदल, लौटते तो गाड़ी पर। ग्राम प्रचार मे इतनी रुचि लेते कि असमर्थ ग्रामी आर्य समाजियों को पूर्ण उत्साहित करते कि वैदिक धर्म प्रचारार्थ उत्सव करो, खर्च का बिल मुझे दो। हमारे अन्दर लोकैषणा ने घर कर लिया है, यदि हमारा नाम विज्ञापन व समाचारपत्र मे न छपे तो बेचैन हो जाते हैं। पुराने अधिकारी अपने आप को जनता का सेवक समझते थे आज कल के तो प्रायः यहां तक क्षुद्र हृदय हो गए हैं कि यदि कोई सभा का उपदेशक आ कर उन को प्रथम नमस्ते न करे तो उससे प्रचार ही नहीं करवाते। व्याख्यान मे उनका स्तोत्र न पढे तो यथा कथंचित उनकी समालोचना करते रहते हैं।

श्री ला. **खुशाल चन्द जी** स्वयं ग्रामो मे जाते और अपनी सेना के सदस्यो का उत्साह बढ़ाया करते थे। मैं स्वयं एक उत्सव पर उनके साथ रहा—उत्सव के सम्पन्न होते

आत्म-निरीक्षण

(श्री पं. दौलत राम जी शास्त्री, अमृतसर)

सूर्यास्त हो गया—सब उपदेशक मण्डली को तथा साथियों को अपने प्रोग्राम पर उपस्थिति आवश्यक थी—अतः पूरी लारी का किराया अपने ऊपर लेकर सब को अपनी ड्यूटी पर से अनुपस्थित नहीं होने दिया। उपदेशक भी उन पर निछावर थे।

जब **महाशय कृष्ण जी** प्रतिनिधि सभा के मन्त्री थे तो उन्होंने मेरे साक्ष्य में—एक बेसहारा-गठडी उठाए अंधकार हो जाने पर बच्चे को अंगुली पकड़ा कर धीरे-धीरे सिसकती जाती यवन-स्त्री को अपने तांगा में बिठा कर ऐमनाबाद पहुंचा दिया और स्वयं हमें साथ लिए चारमीलतक पैदल पहुंचे। उन के एक वाक्य को जब मैं याद करता हूं कि—"पंडित आप थक गये होंगे, पाव दाब दूं—ले आओ भई अर्जन! पं. जीको गर्म दूध का गड़वा पिला दे" तो अविरल अश्रुधारा बहने लगती। कहां गये वह दिन दैव!

जब दोनों ज्योतियां जागती थीं उस समय नगरों से ग्राम समाजों के उत्सवों की संख्या छः सात गुणा अधिक हुआ करती उपदेशक भी ग्रामो के रस वा साग को मिठाई व रबड़ी से विशिष्ठता देते थे। पं गुरु दत्त जी प्रज्ञाचक्षु एक समय रियासत मण्डी के उत्सव पर चले हम पांच उपदेशक थे। १०८ मील पैदल यात्रा की और पं. जी के लिये घोडा किराये पर ले लिया-जहां रात पड़ जाती पं. जी की सितार हमारी सारी थकान दूर कर देती थी कम २ से दो व्याख्यान देते। हम चार दिनों में चार उत्सव मार्ग मे ही कर लेते थे। उन दिनों के दुकानदारों में जिन की दुकानों में हम प्रचार करते थे] आज तक उसी प्रकार दृढ है संस्कार वैदिक कर ले और रजिस्टर्ड मैंबर किसी समाज के नहीं। मैंने एक अवसर के पास ग्राम के दुकानदार से पूछा—मुंशी राम जी! किसी समाज के सदस्य क्यों नहीं होते? उत्तर मिला पंडित जी: **यह रंग फीका पड़ जायेगा** या उतर जायेगा। मैंने पूछा क्यों? वे बोले मैं बिना सदस्यता के भी महाशय हूं और अमुक............ अधिकारी होने की तमाशा है।

होशियारपुर के जिला में के ग्रामीण आर्य अपने २ ग्राम में स्मारक मीनार के ज्योति स्तम्भ थे। बहुत से विरोधी प्रचारों को वे स्वयं संभाल लेते थे—उनके विरोधियों के हृदय पर उनके सत्य की छाप थी। सच्चे सज्जन का दृष्टान्त देना होता तो उनके प्रान्तीय आर्य की दी जाती थी। एक सनातनधर्मी भाई एक दिन अपने स्कूल की शिथिलता पर खेद प्रकट करते हुए कहने लगे कि आर्य समाज के बहुत से विद्यालयों ने चूनीलाल, वजीर चन्द, दीवान आदि मजनू और रामदित्ता मल्ल, मैय्याराम तथा बाबूराम जैसे कार्यकर्ता उत्पन्न किए। हमारे अन्दर ले देकर एक आदमी है उस पर भी हम आलोचना करते रहते हैं।

वे भी दिन थे। जनौड़ी होशियारपुर से चौदह- पन्द्रह मील है—जब कोई विशेष रूप से विद्वान् व्याख्याता आता तो वहां से **डा० वघेलसिंह** उनका प्रवचन सुनने आते। **डा० सुन्दरसिंह** ने भी अपना सुपुत्र ही **श्वेत केतु** गुरुकुल को समर्पण कर दिया। **पं. खड़कराम** के लड़के से सब डरते थे। यह ८० वर्ष से ऊपर होकर भी ग्रामो में विरोधियों पर अपना प्रभाव डाले हुए थे। इनकी तपस्या और सत्यता से सब वशीभूत थे। १९२५ तक इकले होशियारपुर के साथ ग्रामों में २६ समाज थे—संभव है उस समय से आज तक अनेकों और हो गए होंगे, परन्तु समय पर सबके उत्सव होते और ख्याति थी। अब उनकी अवस्था अलमारियों में रखी हुई पुस्तकों के समान बस्ते बन्द हैं।

अधिकार लिप्सा का लोभ जब मनुष्य को आ दबाता है तो बड़े-बड़े त्यागी तपस्वी महात्मा भी ऐसी ठोकरें खाते हैं, कि उनके त्याग को जनता भुला देती है—और ऐसा भी संभव हो जाता है कि उनका अन्त दुःखांत नाटक ही समझना चाहिए।

सब ही व्यक्तियों के हाथ पांव आदि समान होते जो जाति पर अपना प्रभाव डालते हैं उनमें कोई दैवी गुण होता है उस का प्रभाव बहुतेरा पड़ता है, या तो वह त्यागी चापलूसी पर अथवा नकलियों पर। अन्त काल की मनुष्य के आगे व पतन के वशीभूत होता है।

२० वीं शताब्दी के प्रारम्भ में महाराजा जम्मू व काश्मीर ने आदेश जारी किया कि मेरे राज्य में आर्य समाज का प्रचारक दण्डनीय होगा। सैर करने का तरीका परन्तु प्रचार का निषेध है। अवसर का लाभ उठाकर यूरोप से एक संस्कृतज्ञ दार्शनिक पादरी लार्ड का पत्र लेकर आया कि महाराज अपनी रियासत में इस महाविद्वान के व्याख्यान करावें और अपने पंडितों को भी आमन्त्रित करें।

महाराज ने अपनी अध्यक्षता में उस अतिथि का व्यान अपने सभा स्थान में करवाया। उस विदेशी विद्वान ने हिंदु शास्त्रों को परस्पर विरोधी तथा आर्ष ग्रन्थों को नीचे स्तर की पुस्तकें प्रदर्शित करके वहां के सारे पण्डित मण्डल को चैलेंज किया कि कोई उससे शास्त्रोंपर लगाए आपत्तियों का समाधान करे। महाराज ने बार-बार सभा में बैठे दर्शनी पहलवानों को पुकारा—कोई न उठा।

पादरी ने कहा महाराज! यदि कोई विद्वान उत्तर नहीं देता तो मैं प्रभु यीशू मसीह के धर्म की आपको दावत देता हूं।

महाराज ने क्रोध से फिर पुकारा **मरी गए सब !!!'** इतने में एक व्यक्ति जो केवल पत्रबाजी विदित होता था—मंच पर आ कर गर्ज कर बोला, पादरी साहिब के प्रत्येक आरोपों का मैं उत्तर दूंगा—हमारे शास्त्रों में परस्पर विरोध नहीं, सामञ्जस्य है। इसके पश्चात आपकी बाईबिल की भी खबर लूंगा एक घंटा भर।

महाराज ने आज्ञा दे दी—हां पण्डित जी।

साधारण वेषी विद्वान ने सब प्रश्नों के उत्तर देकर बाईबिल के भी खूब भण्डे खोले और शास्त्रार्थ का चैलेंज किया।

पादरी ने कहा, 'आप आर्य समाजी तो नहीं?'

पण्डित जी! हां मैं आर्य समाजी ही हूं—कहिए क्या बात है? उदास क्यों हुए?

पादरी! हमारे धर्म में, जब तक मुझे आज्ञा न हो तब तक मैं आर्य-समाजी से शास्त्रार्थ नहीं कर सकता अनुशासन ऐसा है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानंद की वेदार्थ विषयक क्रान्ति का निष्पक्ष विद्वानों पर प्रभाव

(ले०—आचार्य श्री धर्म देव जी विद्यामार्तण्ड, आनन्द कुटीर ज्वालापुर)

(गतांक से आगे)

की महीधरादिकृत अश्लील अर्थ से सर्वथा भिन्न और विलक्षण है। एक अन्य स्थान पर मन्त्रोंका महर्षि दयानन्दके समान राजधर्मादि परक अर्थ करते हुए आपने 'शिश्न:' का अर्थ शेवति प्रजा दु:खम् अपहन्तीति शिश्नो राजा अर्थात् प्रजा दु:ख नाशक राजा ऐसा किया है। (मन्त्रार्थ चन्द्रोदय पृ० ४०१) 'माता च ते पिता च ते अग्रेवृक्षस्य रोहत:। इस मन्त्र के भाष्य में वृक्ष: का अर्थ 'नश्वरं राष्ट्रम्'। अर्थात् अनित्य राष्ट्र ऐसा किया है। (पृ० ४०२) मुष्क शब्द का अर्थ [मुष्क:) संगवाञ्को मुष्क: 'मुष्को वृषणसचयो: इति कोषादौ दर्शनात् मुष्कौ शिक्षिताशिक्षितौ विज्ञाविज्ञौ वा प्रजासंघौ प्रजासंघ ऐसा किया है और मन्त्रों की राज प्रजा धर्म विषयक व्याख्या की है जो द्रष्टव्य है। 'योने:' का अर्थ 'प्रकृते: प्रकृत्यात्मिकाया: प्रजाया:' अर्थात् प्रजा का ऐसा किया है 'रेत' का अर्थ करते हुए लिखा है रेत: शुक्रं ऽ१ तेजसि इतिकोषादौ दर्शनात्त रेत: तच्चेह ग्राह्य वरेण्य श्रुति स्मृति प्रतिपाद्यम् अर्थात रेत: का अर्थ यहां श्रुतिस्मृति प्रतिपाद्य परमेश्वरीय तेज है। इस प्रकार सर्वत्र महीधर के अश्लील अर्थ से सर्वथा भिन्न आध्यात्मिक और राज धर्म परक अर्थ करते हुए भी जिस पर महर्षि दयानन्द जी की छाप स्पष्ट प्रतीत होती है) आश्चर्य होता है और साथ ही हसी भी आती है जब हम सुयोग्य विद्वान श्री पं. दामोदर झा जी को यह लिखते हुए पाते हैं कि 'एवं निर्दुष्टत्वार्थत्वेऽपि अविदितार्थ तत्वमर्मृताश्वेन सह राजमहिष्या ग्राम्य धर्म: (मैथुनम्) कथं संभावित: ? यस्मिन्नश्व मेधे राज्ञो धर्मात्मत्व-प्रतिपादनमेव प्रयोजनं तत्र कामित्वमूलम अश्वेन सहराज्ञा मथुन कल्पनं तु धर्म—विरोधिनामेव कृत्यं सम्भवितुमर्हति, किमधिक च वक्तव्यम महीधरस्याप्ययमेवाशय सच तत्कृत वेद भाष्ये द्रष्टव्य:। (मन्त्रार्थ चन्द्रोदय: पृ० ३९६-३९७)

अर्थात इस प्रकार उत्तम अर्थ होने पर भी अर्थ के तत्व को न जानने वाले लोगों ने राज महिषी वा पटरानी का मृत अश्व के साथ सभोग कैसे कल्पित कर लिया ? जिस अश्वमेध मे राजा धार्मिकता का प्रतिपादन ही मुख्य प्रयोजन है इस में कामवासना के आधार पर घोडे के साथ रानी के संयोग की कल्पना तो धर्म विरोधियों का ही काम हो सकता है। बस और अधिक क्या लिखा जाये ? महीधर का भी ऐसा ही अभिप्राय है, जो उसके वेद भाष्य में देखना चाहिये।

सुयोग्य लेखक महोदय ने यौगिक व्युत्पत्ति के आधार पर जो ईश्वर वा राजधर्म परक अर्थ किये हैं उनमे कहीं-कहीं खेचातानी प्रतीत होने पर भी हम उनका अभिनन्दन करते हैं, किन्तु उनका यह कथन सत्य नहीं है कि महीधर का भी यही तात्पर्य है जो उन्होंने बताया है। महीधर के अपने वेद भाष्य में किये अर्थ स्पष्टतया अश्लील ग्राम्य धर्म (संभोगादि) परक हैं। यह निष्पक्ष विद्वानो को लज्जा के साथ स्वीकार करना पड़ेगा। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती को उनकी इतनी उग्र समालोचना करनी पडी। (क्रमश:)

आर्यसमाज सचेत हो

थोड़ी सी भी असावधानता से बना बनाया खेल बिगड़ जाता है। प्रत्येक कार्य में हरेक के लिए सचेत एवं जागते रहना बड़ा जरूरी है। एक संस्कृत के कवि का कहना है कि सूर्य जब मन्द होने लगता है तो नाना प्रकार के हिंसक व हानि कारक जीवजन्तु निकल आते हैं। अन्धकार अपनी चादर फैला देता है। चमकते हुए सूर्य में ऐसी बात नहीं होती। सूर्य चमकता ही भला है।

आर्यसमाज के सामने इस समय वर्तमान का कैसा घिनौना दृश्य है। आचार का किस प्रकार का दिवाला निकल रहा है। विषय विलास की कितनी वृद्धि हो रही है। शृङ्गार ने अब तो खुले रूप से चुम्बन व नगेपन में कैसी करवट ली है। मांस मदिरा की महामारी ने अपने हाथ कितनी दूर तक पहुंचा दिये हैं। नैतिकता की तारें किस प्रकार टूट रही हैं। शिक्षा का क्या रूप बन गया है। यौवन ने मर्यादा तथा लाज के दोनों किनारो को किस प्रकार बुरी तरह छोड़ दिया है। क्यों ? इस लिए समाज कम सचेत है आर्यसमाज के दीवानों ! उठो ! सचेत हो जाओ। समय आप को पुकार रहा है ! पुकार सुनो—सं०

आत्म-निरीक्षण

(पृष्ठ ४ का शेष)

महाराज ने पुन: पुन. कहा परन्तु पादरी का न ही बहाना कि मुझे आज्ञा नही जारी रहा।

हंसी व तालिया गूज उठी। महाराज ने प्रथा के अनुसार एक दोशाला—सोने के कडो की जोडी तथा ५०० रु० पडित जी को विजयोपहार-प्रस्तुत किया। पडित जी ने शाल सिर पर रक्खी—शेष के लिये यह कह कर क्षमा मागी—कि मुझे भूषण वध की आवश्यकता नही और प्रार्थना की कि महाराज काश्मीरेश्वर! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो काश्मीर मे वैदिक धर्म प्रचार की आज्ञा हो जाए।

महाराज ने घोषणा की 'तथास्तु'

पंडित गणपति शर्म्मा ३५वें वर्ष में ही राज यक्ष्मा से ग्रसे गए और अपना नाम अमर कर गए। आर्य समाज उनका ऋणी है—उनकी माता की सहायता सिवाय ज्वालापुर के किसी समाज से न बन पडी। यह है हमारी फोकी शेखिया !!

गुणा: पूजा स्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वय:।

लुधियाना के महाशय चिरंजीतलाल एक साधारण हैड कास्टेबल थे। महर्षि के सिद्धान्तों का प्रभाव पडा। नौकरी छोड़ दी। किस्से, कविता बना कर और छपवाकर नगर चौको मे गाकर बेचते—रोटी तंदूर पर खाते, किसी से कोई सहायता न लेते। कुरीतियो का भडा फोडते। उनके साधारण बैंतों व भजनो का जादू की भांति प्रभाव होता था। स्वार्थी लोगों ने आर्यसमाज के विरोध में निहम सुथरों को खड़ा किया। ये लोग प्रत्येक दुकान पर जाकर आर्य समाज को उत्तेजित करने वाली अभद्र कविताओ से पैसे कमाते और भडी करते थे। महाशय चुरंजीलाल ने भी सुथरो का सा वेष बनाया हाथ मे डडे लिये, बगल मे झोली डाली। सुथरे जहां जाते वही पहुच जाते। लोगो को कहते पहले इनका सुनो, फिर मेरा। जिस का ठीक हो उसे पैसा देना। लगे गाने—

सारे ऐब शरई उचक्के,
सुथरे बन दिखलाते हैं।
जूआ भंग शराब चोरिया
करते साध कहाते है।
इत्यादि•

लोग उसी को पैसा देते उनको दफा करते। लगभग एक महीने में सुथरे बहुत तंग आ गए। तब उनका महन्त एक पगडी, पाच सेर मिश्री, पाच रुपए लेकर महाशय जी से बोले—गुरु जी ! हम आपसे हारे, आज से कोई भी सुथरा कही पर किसी के भी कहने से आर्य समाज के विरुद्ध एक शब्द भी न बोलेगा। हमारा पथ आपको विश्वास दिलाता है।

कहिए काम प्यारा है या चमडी !! महाशय जी को लगभग दिवगत हुए ६५ वर्ष से भी ऊपर हो गए। सुथरो पर मोहर लगा गए। सुथरेपन के पैसे भी समाज को देते थे—पर प्रदर्शक समाजियो को भी फटकारने मे सकोच न करते थे।

उनकी रचनाए चुरंजी दी मा दी किरिया। पोप पुरोहित। रब्ब दे दलाल। कुडी बेचां दा किस्सा। बाबे दा विआह। आदि कही भी नही मिलती। अप्राप्य है।

समाज और नारी

(मिस वीणा कोहली, नंगल टाउनशिप)

नारी संसार की महान शक्ति मानव जीवन को सुखी और उच्च बनाती है और इसी से ही देश का मौलिक स्तर ऊंचा होता है। यदि नारी आत्म विश्वासिनी और हंसते-हंसते हर मुसीबत को सह सकने की शक्ति रखेगी तो उस देश के पुरुष भी वीर दृढ़ संकल्प और चरित्रवान होंगे। एक आदर्श राष्ट्र के निर्माण मे नारी का काफी हाथ है, नारी वह ब्रह्म शक्ति है जो अजेय है और सारे संसार की विधात्री है। संसार के सब से पुराने ग्रन्थ ऋग्वेद को पढ कर पता चलता है कि आर्य सभ्यता में नारी का स्थान समाज मे कितना ऊंचा था। समाज मे नारी को पूर्ण स्वतन्त्रता थी और उसे पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त थे। समाज में उसका स्थान बहुत आदरणीय था पुरुषों की तरह उच्च शिक्षा भी प्राप्त करती थीं पर्दे की प्रथा प्रचलित नहीं थी।

ससुराल में भी नारी का बहुत आदर किया जाता था नवविवाहित स्त्री को ससुराल में देवी समान समझा जाता था सीता सावित्री जैसी देवियां घर-घर में विद्यमान थीं उसे पुरुषों की सह-धर्मिणी कहा जाता था और कोई भी धार्मिक कार्य उसके बिना अपूर्ण समझा जाता था, विधवा-स्त्री को पुनः विवाह का अधिकार था संस्कृत साहित्य मे नारी को बड़े ही आदर और सम्मान की दृष्टि से देखा गया है।

संसार परिवर्तनशील है। समय-समय पर संसार मे परिवर्तन आना अनिवार्य है। देश में अनेक राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्रांतियां आई और इन सब का प्रभाव भी नारी समाज पर पडा। भारतवर्ष में विदेशियो के आने पर नारी को अपमानित होना पडा। मुसलमानो ने भारत वर्ष में आकर भारतीय नारियो के सतीत्व को लूटने मे कोई कसर न छोड़ी। इन कारणों से समाज से दूर दुखिया से दूर उसे घर की चार-दीवारी मे बन्द कर दिया। उस पर प्रत्येक पाबन्दी लगा दी गई और यदि कोई नारी भूले-भटके से अपना सर उठाना चाहती तो पहले ही कुचल दी जाती। समाज और साहित्य में नारी केवल मनोरंजन की वस्तु रह गई। नारी के पतन की सीमा ना रही। मुसलमानों का शासन और दृढ हो गया था उनके दरबारो में सुरा और सुन्दरी का दौर चलता और नारी अब सभा की श्रृंगारिक सौन्दर्य की वस्तु बन गई थी।

समय किसी का इन्तजार नहीं करता वह अपनी गति से आगे बढता रहता है।नारी की दशा में भी धीरे २ परिवर्तन आने लगा। पाश्चात्य सभ्यता और शिक्षा को पा कर नारी अपनी इन बेड़ियो को तोड़ने को व्याकुल होगी। उस ने समाज से एक कठोर संघर्ष किया। और समाज के भी धीरे-२ उस की महानता और उस की महत्ता को जानते हुये उसे सब अधिकार दे दिये जो पुरुषो को प्राप्त थे। साहित्यक, राजनैतिक तथा। समाजक क्षेत्रो मे भी नारी पूर्ण रूप से भाग लेने लगी। नारी की उन्नति से ही समाज की तथा देश की उन्नति है। हर क्षेत्र मे आज नारी पदार्पण कर रही है।

★ ★ ★

आर्य स्पैशल ट्रेन दिल्ली जंकशन से—

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वाधान में एक विशेष रेलगाडी १२ नवम्बर रात्रि को दिल्ली जंकशन से अजमेर में ऋषि निर्वाणोत्सव एवं गोवा आर्य सम्मेलन में भाग लेने हेतु प्रस्थान कर रही है। अजमेर में ऋषि निर्वाणोत्सव दीपावली के एक सप्ताह पश्चात मनाया जाता है, अत हम अजमेर १४, १५ नवम्बर को ऋषि निर्वाणोत्सव में भाग लेकर दक्षिण भारत के लिए प्रस्थान करेंगे।

गोवा प्रतिनिधि सभा ने २३, २४, २५ नवम्बर को आर्य सम्मेलन का आयोजन किया है एव ऐतिहासिक तथा दर्शनीय स्थान दिखलाने का सुन्दर कार्यक्रम बनाया है। २८ नवम्बर को पूना होती हुई आर्य स्पैशल ट्रेन बम्बई पहुंचेगी। बम्बई से सूरत, बड़ौदा [illegible] होती हुई १ व २ दिसम्बर को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुंचेगी।

आप को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य स्पेशल ट्रेन के साथ पूजनीय स्वामी विद्यानन्द विदेह प्रस्थान कर रहे हैं, आर्य स्पेशल ट्रेन में जिन के मधुर वेदोपदेश से लाभान्वित हो सकेंगे।

जिन भाई बहनों ने आर्य स्पैशल ट्रेन में अभी अपने स्थान सुरक्षित नहीं करवाये हैं, वे ५ अक्तूबर से पूर्व सभा के नाम धन राशि एवं ड्राफ्ट भेजकर आर्य केन्द्रीय सभा के कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ और आर्य समाज करोलबाग नई दिल्ली ५ कार्यालय द्वारा अपना स्थान सुरक्षित करवा लेवें; पूर्ण जानकारी के लिए आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ (दूरभाष) फोन न० ४३२८० और लाला रामनाथ जी ५२/७८ राम जस रोड करोल बाग नई दिल्ली ५ (दूरभाष) फोन न० २५६२५१० से प्राप्त करें।

प्रबन्धक आर्य स्पैशल ट्रेन

प्रतीक्षा कीजिए

आर्य जगत के 'दीपावली अंक' की जो आपकी सेवा से ९ नवम्बर को आ रहा है। आर्य संस्थाएं तथा आर्य समाजें, आर्य बन्धु प्रचारार्थ तथा 'आर्य जगत' की सहायतार्थ अधिक से अधिक आर्डर भी भेजें। इस विशेषांक का मूल्य ५० पैसे होगा।

धार्मिक परीक्षाएं

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश सि० विशारद सि० भूषण, सिद्धान्ताचार्य परीक्षाएं आगामी दिसम्बर, जनवरी में भारत तथा विदेशों में होंगी। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधिपत्र दिया जाता है। सर्व प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले को छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की निःशुल्क सत्यार्थ सुधा कर, सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधियां डाक द्वारा प्राप्त करें। १५ पैसे की टिकट भेज कर नियमावली मंगवाइए।

आदित्य ब्रह्मचारी	आचार्य मित्रसेन
यशपाल शास्त्री	एम॰ ए०, सिद्धान्तालंकार
प्रधान	शिक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद
सेवा-सदन, कटरा अलीगढ़, (उ प्र.)

आर्य समाज क्या है ?

स्वर्गीय पं० मंसाराम जी वैदिक तोप लिखी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद

अगर कोई आदमी मेरे से पूछे और मै उसे थोड़े शब्दों में बताना चाहूं कि आर्यसमाज क्या चीज है तो मै कहूंगा कि—

१. आर्यसमाज पीड़ितों का सहायक है।

२. आयसमाज रोगीयों का डाक्टर है और आर्य समाज सोते हुओं का चौकीदार है। आर्यसमाज पीड़ितों का सहायक है। आर्यसमाज निर्धनों का मददगार है जिनके अधिकारों को दुष्ट और कुटिल लोगों ने अपने पांव के नीचे कुचल दिया था उनके अधिकारों को वापिस दिलाने वाली संस्था है, आर्यसमाज ने अपने जीवन मे किस-किस की सहायता को और किस-किस के दबे हुए अधिकारों को वापिस दिलाया। इस की एक लम्बी सूची है जिसको इस लघु लेख में लिखना कठिन है फिर भी आर्यसमाज ने जिन-जिन की सहायता की इन में से कुछ एक का नमूने के तौर पर वर्णन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

(क) अनाथों की रक्षा

स्वामी दयानन्द और आर्यसाज से पूर्व पौराणिक हिन्दू जाति में अनाथों के पालने का काई प्रबन्ध न था जिस से हिन्दू अनाथ बच्चे ईसाई और मुसलमानों के चंगुल में फंस कर हिन्दू जाति के शत्रु बनते थे थे आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इस बारे अनाथ बच्चों की वकालत की इनके पालन पोषण के लिये सर्वप्रथम अनाथालय अजमेर में स्थापित किया। आज अनाथों की पालना का विचार जो देश में उन्नत है यह आर्यसमाज की वकालत का फल है विस्तार से पढ़ना हो तो यह पुस्तक मास्टर हरिचन्द गुप्त मन्त्री आर्य समाज जाखल मण्डी से पंद्रह पैसे में में हिन्दी में में लिखा ट्रैक्ट मंगाये। आर्यसमाज के बारे में एक भजन सरदार यशवन्त सिंह टोहाने वाले का नीचे लिखा है पढ़े।

ह केवल आर्यसमाज भलाई सब की चाहने वाला
जहां पे होवे तुम्हारी हान, वहां पे होताहै
बलिदान, अर्पण करके अपने प्राण।
तुम्हारा धर्म बचाने वाला :—
जहां पे लाखों तुम्हारे भाई बनते,
मुसलमान ईसाई, आखिर होता ही।
सहाई उनके गले लगाने वाला .—
देश में लाखों विधवा नार, करते निश
दिन हाहाकार फैला हुआ था।
अत्याचार, आखिर बना यही रखवाला —
जब उजड़ा था बीकानेर, मचा था
चारा तरफ अन्धेरा वहां पे।
पहुंचा था यही शेर भूक मरतोंको बचाने वाला —
जब फटा धरती का सीना, तब इसने,
पुरुषार्थ कोना, जहां गिरे तुम्हारा।
पसीना, वहां पर खून बहाने वाला —
सच पूछो तो आर्य समाज रखता,
हिंदू धर्म की लाज जिस को,
बुरा कहो तुम आज यही था तुम्हें जगाने वाला —
अगर तुम चाहते हो कल्याण इसपे
अपने कर दो प्राण, वैदिक।
धर्म में आवे जान, बेनती करे टोहाने वाला .—

शोक समाचार

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के संस्थापक पूज्य श्री सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता के २५ अगस्त १९६९ को हुए स्वर्गवास के दुखद समाचार से महालय मे शोक का वातावरण छा गया। सब महालय के कार्यकर्त्ताओं, उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियो तथा टंकारा के लोगो की एक शोक सभा हुई। जिसमे श्री पूज्य सेठ जी के प्रति श्रद्धाजलिया अर्पित की गई। और उनकी दिवगत आत्मा की शान्ति और सुगति केलिए प्रार्थना की गई।

श्री पूज्य सेठ जी जहा अनेक सस्थाओ के सस्थापक और सचालक थे वहा म० द० स्मा० ट्रस्ट टंकारा के जन्मदाता भी वही थे। उन्होंने ही डेढ लाख रुपये मे महाराज मोरवी का टंकारा स्थित भव्य प्रासाद खरीद कर और पच्चीस हजार रुपये मे क्लाक टावर बनवा कर ट्रस्ट की स्थापना की थी।

उनकी दुखद मृत्यु इस सस्था के लिए एक बहुत बडा आघात है। परमात्मा करे कि श्री पूज्य सेठ जी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो और उनके परिवार के लोग इस महान् दुख को सहन कर सकें और सेठ जी की चलाई पवित्र परम्पराओ को चालू रख सकें।

★ दीपावली के उपलक्ष्य में ★

आर्य जगत् के सदस्यो से सानुरोध प्रार्थना है कि गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी दीपावली विशेषांक छप रहा है। प्रत्येक समाज व स्कूल, कालिजो से प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर आर्य जगत् की सहायतार्थ तथा वेद प्रचारार्थ अधिक से अधिक प्रतियां मगाकर वितरण करे।

प्रत्येक समाज तथा संस्था को कम से कम १०० प्रतियां अवश्य मगवानी चाहिए।

हमे पूर्ण आशा है कि आर्य सस्थाए तथा आर्य सज्जन इस पर ध्यान देते हुए अधिक से अधिक प्रतियो का आर्डर देंगे।

'आर्य जगत् साप्ताहिक'

का

दीपावली के शुभ अवसर

पर

'दीपावली विशेषांक'

निकल रहा है, के लिए सुन्दर-सुन्दर लेख, कविताए सभा कार्यालय में भेजे। लेख न ही बहुत बड़े और न ही बहुत छोटे हो। कागज के एक तरफ लिखे हों।

शादीपुर जुलाना में वेद सप्ताह

जिला जींद के ग्राम शादीपुर जुलाना मे आर्य समाज शादीपुर की ओर मे वेद सप्ताह तिथि १६ मे २२ सितम्बर तक बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस पवित्र अवसर पर आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के उपदेशक श्री भूरा राम जी वानप्रस्थी, पं० प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर, श्री सुमेर सिंह जी रणजीत सिंह जी ने बडी धूमधाम से प्रचार किया। गाव के स्त्री पुरुष भारी संख्या मे आते रहे। आर्य समाज शादीपुर की ओर से आर्य प्रादेशिक सभा को १२६) दान दिया गया। सभा शादीपुर समाज का धन्यवाद करती है।

सभा मन्त्री

ए० एस० हा० सकैं० स्कूल नकोदर

तिथि २२—९—६९ को ए० एस० हायर सकेंण्डरी स्कूल नकोदर के हाल मे नकोदर निवासियो की बैठक श्री डा० हुकम चन्द जी भल्ला, प्रधान स्कूल प्रबन्ध कृत कमेटी की अध्यक्षता मे हुई। जिस मे डी ए वी प्रबन्ध कृत कमेटी चित्रगुप्त रोड नई दिल्ली की ओर से श्री बी० एस० बहल प्रिंसीपल डी० ए० वी० कालेज जालन्धर भी पधारे। निर्णय हुआ कि डी० ए० वी० प्रबन्ध कृत कमेटी नकोदर मे स्वर्गीय खैरायती राम जी की स्मृति मे उनके नाम पर 'खैरायती राम डी ए वी कालेज खोले।

शिक्षानुरागी, समाज सेवक नकोदर की महानविभूति महारानी मित्र अमरनाथ जी ने ३५ कनाल भूमि कालेज के लिए डी० ए० वी० प्रबन्ध कृत कमेटी नई दिल्ली को दान दी थी। स्वर्गीय के परिवार की ओर से एक लाख रुपए डी० ए० वी० प्रबन्ध कृत कमेटी दिल्ली को दान दिया गया बैठक मे सहृदय तथा इच्छुक शिक्षानुरागी नकोदर निवासियो ने भी दान देने का वचन दिया। उसी समय ५०,००० रुपया इकट्ठा हुआ।

प्रिंसीपल
ए० एस० हा० सै० स्कूल, नकोदर

...लालजी वर्मा मुख्यध्यापक नियुक्त

नाभा और समीपस्थ स्थानो मे डी ए वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति की इस निर्णय के लिए बड़ी प्रशंसा की जा रही है कि उसने आर्य हाईस्कूल, नाभा के श्री प्यारेलाल जी वर्मा एम ए. बी टी को उनकी २६ साल की सेवा के दृष्टिगत स्कूल का मुख्याध्यापक नियुक्त किया है। मुझे आशा है और विश्वास भी कि नए मुख्याध्यापक अपनी योग्यता और अथक परिश्रम से स्कूल को उन्नति के शिखर पर ले जाएगे जिस से जगत् के सम्मान मे और भी वृद्धि होगी।

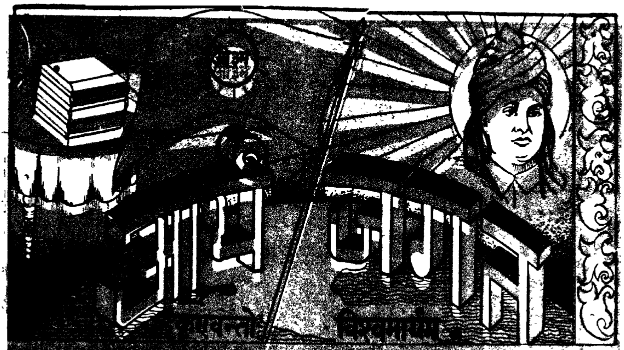
पवन कुमार शर्मा—मन्त्री

वार्षिकोत्सव आर्य समाज, हांसी

पाठकवर्ग को यह पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज हासी (हिसार) का बीसवा वार्षिकोत्सव ३, ४, ५, ६ अक्तूबर १९६९ को बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है इस शुभ अवसर पर आर्य कन्या महा विद्यालय का ५ अक्तूबर रविवार को साय ३ बजे पारितोषिक वितरण समारोह श्रीमान् सेठ देवसहायजी (मालिक जिन्दल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड हिसार) के कर कमलो से सम्पन्न होगा इस उपरोक्त कार्यक्रम मे सपरिवार इष्ट मित्रो सहित पधार कर कृतार्थ करे।

केशोराम चौधरी मंत्री
आर्य समाज हांसी

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा०वेदीरामजी एम ए, पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P.

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ४१) २७ आश्विन २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१२ अक्तूबर १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

मे मनः शिवसंकल्प

हे प्रभुदेव ! मे-मेरा, मनः-मन शुभ संकल्प वाला पवित्र विचारों वाला बन जाए। इसमें किसी प्रकार का बुरा विचार पैदा ही न हो ताकि वह जीवन को बिगाड़ने न पावे।

भाव:—यह मन बड़ा शक्तिशाली है। यह जीवन को ऊंचा उठा देता है तथा यह हमारा मन ही हमें अधः पाताल रसातल में गिरा भी देता है। जैसे विचारों की इसमें तरंगे चलती है, वैसा मानव का जीवन बनता जाता है। बुरे-बुरे क्षुद्र, गिरे विचारों की तामसी तरंगें जीवन को तामसी तथा राजसी लहरें राजसी व सतोगुण की लहरें सतोगुणी बना देती है। प्रभु हमारे मन को शिव संकल्प बना दें ताकि हमारा सारा जीवन पवित्र बन जावे।

यजुर्वेद से

वेदामृत

सबसे प्यारा सखा

ओम् त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो
असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईडय॥

सामवेद उत्तरा० ७-२-१

अर्थ :—हे परमेश्वर ! (त्वं) आप (जामि.) बन्धु हैं (जनानाम्) सब जनों के (अग्ने) हे अग्निमय ज्ञान स्वरूप देव आप सबके (मित्र:) मित्र (असि) हैं (प्रियः) बहुत ही प्यारे मित्र है। आप ही तो सभी के (सखा) सखा है। इस लिए (सखिभ्य) हमसे जो आपके सखा है, (ईड्य) स्तुति के पूजा के योग्य है।

इस का भाव यह है

वह परमात्मा सबका सच्चा बन्धु है। त्वमेव बन्धश्च आप ही प्रभुदेव ! सबके प्यारे बन्धु है। वही सभी का अद्भुत प्यारा मित्र है। संसार में मनुष्य के समय-समय पर अनेक मित्र बनते है। कोई धन मित्र, कोई सत्ता मित्र, कोई बाल मित्र, कोई काम मित्र, कोई स्वार्थ मित्र। इसी लिए ये सारे मित्र बदलते रहते है। धूप छाया इन सबकी मित्रता एक रस नहीं रहती। किंतु प्रभु की मित्रता नित्य है। वह सबका मित्र व परम सखा है। इसके लिए लोगो! सदा उस सखा की पूजा किया करो। वही परम मित्र है। —सं.

ऋषि दर्शन

कर्मण्येवाधिकारस्ते

हे मानव ! (कर्मणि) कर्ममें ही (अधिकार:)अधिकार है (ते) तेरा। तेरा अधिकार तो कर्म करने में ही है। कर्म करते चले जाना ही मनुष्य का कर्तव्य है।

भाव :— योगेश्वर महात्मा कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देने के नाते सब को यह उपदेश दिया है कि मनुष्य का अधिकार तो लगातार कर्म करने में ही है। कर्म के फल की इच्छा मत करो। जीवन मे निरंतर कर्मयोग के पुनीत पथ पर आगे ही आगे बढ़ता चलता जाए। फल तो कर्म का मिलेगा ही। किंतु सबसे उत्तम कर्म यह है कि कर्म तो किया जाए किंतु उसके फल का ध्यान न रखा यही निष्काम कर्म की परिभाषा है। —सं.

भगवद गीता से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

महर्षि दयानन्द की वेदार्थ विषयक क्रांति का निष्पक्ष विद्वानों पर प्रभाव

(आचार्य श्री धर्मदेव जी विद्यामर्तण्ड आनन्द कुटीर, ज्वालापुर)

(गताक से आगे)

वैदिक शब्दो के अर्थ यौगिक होते है। इस का महर्षि दयानन्द ने नाम धातुजमाह निरुक्ते, व्याकरणो शकरस्य च तोकम इत्यादि के आधार पर प्रतिपादन किया। इस का समर्थन श्री दामोदर झा ने भाष्य के अनेक उद्धरणो से किया है यथा १३ कण्डिकायाम् उभाविन्द्राग्नी। इत्यत्र इदि-परमैश्वर्ये इन्दतीति इन्द्र व्युत्पत्या इन्द्र शब्देन यज्ञ साधकत्वम् पम् ऐश्वर्यम् उत आहवनीयोऽग्नि अभिधीयते न च देवराडिन्द्रः तथा तस्मिन्नेवाध्याये १६ कण्डिकाया सहम्सामृजिम् इत्यत्र ऋषी-गतौ अर्षति-दोहदस्थान गच्छतीति ऋषिगौ व्युत्पत्तया ऋषिशब्देन गौरमिधीयते न च मन्त्र द्रष्टा ऋषिरिति। (पृ० ३९७)।

इस सारे विद्वत्तापूर्ण लेख का भाषानुवाद करने की आवश्यकता नही क्योकि साधारण संस्कृत जानने वाले भी उसे समझ सकते हैं। इतना ही भावार्थ देना पर्याप्त है कि यौगिक व्युत्पत्ति के आधार पर श्री सायणाचार्य आदि भाष्यकारो ने वायव का अर्थ बछडे, वसु का अर्थ यज्ञ, गौ का अर्थ अग्नि, इन्द्र का अर्थ यज्ञ साधकत्व रूप ऐश्वय वा आहवनीय अग्नि तथा ऋषि का अर्थ गौ किया है। ऐसा ही सर्वत्र वेदो के शब्द यौगिक होने के कारण उनके व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ करने चाहिये।

पारसी विद्वानों पर महर्षि का प्रभाव

अब तक मैंने अपने देश के सनातनधर्माभिमानी पौराणिक विद्वानो पर महर्षि दयानन्द जी की वेद भाष्य शैली वा वेदार्थ विषयक क्राति के प्रभाव के कुछ उदाहरण दिये है। पारसी तथा पाश्चात्य विद्वानो पर भी उनकी इस क्राति का प्रभाव पडा, इसके अनेक उदाहरण दिये जा सकते है। जिन मे से विस्तार भय से २, ३ उद्धरण देना ही पर्याप्त समझती हू।

बम्बई के सुप्रसिद्ध पारसी विद्वान दादाचान जी बी० ए०, एल०एल० बी० नेPhilosophy of Zoroastrianism and comparative Study of Religions नामक एक विद्वता और अनुसधान पूर्ण पुस्तक लिखी है जो Times of India Press, Bombay से सन १९४१ मे प्रकाशित हुई है। उसमे उन्होंने वेद के विषय मे लिखा है कि . .

'The Veda is a book of knowledge and wisdom comprising the Book of Nature, the Book of Religions the Book of Prayers, the Book of morals and so on The word Veda means wit, wisdom,knowledge and truly the Veda is condesned wit, wisdom and knowledge' (P. 100).

अर्थात—वेद ज्ञान की पुस्तक है जिसमे प्रकृति, धर्म, प्रार्थना, सदाचार इत्यादि विषयक पुस्तके सम्मिलित है। वेद का अर्थ ज्ञान है और वास्तव मे वेद सारे ज्ञान विज्ञान का तत्व है।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का अनुवाद देकर जिसमे महर्षि दयानन्द के समान भौतिक अग्नि तथा ईश्वर परक दोनो अर्थ दिए गये हैं वे पारसी विद्वान लिखते हैं कि .....

Thus we see that Agni in this Hymn means both fire as well as God' (P. 100).

अर्थात—इस प्रकार हम देखते है कि इस सूक्त मे अग्नि के भौतिक अग्नि और ईश्वर ये दोनो अर्थ हैं। आगे उन्होने 'Two fold significance of words'.

इस शीर्षक के नीचे लिखा है कि जिन पाठकों को वेद की इस अद्भुत विशेषता का ज्ञान नही है कि किस प्रकार एक ही शब्द से वे भौतिक और आध्यात्मिक तत्वों का वर्णन करते है, उनको यह भ्रम हो सकता है कि वेद अग्नि, वायु, उषा, सूर्यादि को ईश्वर वा देव समझते हैं जिनसे ऋषि शक्ति, स्वास्थ्य, धन दीर्घजीवन, वीर पुत्रादि की प्रार्थना करते हैं किन्तु वस्तुत: ऐसा नही है। वेद तो अत्यन्त विशुद्ध रूप में एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करते हैं। इस विषय में सुयोग्य लेखक ने पृ० १०२ पर स्पष्ट लिखा है :—

'The vedas teach nothing but mondtheism of the purest kind' (P. 102)

अर्थात वेद ऐसे एकेश्वरवारवाद की शिक्षा देते हैं जो सब से अधिक पवित्र है।

इन सब विचारो पर महर्षि दयानन्द के वेद विषयक क्रान्ति का प्रभाव पडा इसे मैंने अपनी 'वेदो के यथार्थ स्वरूप' नामक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित बडी पुस्तक मे तथा The Glory of the vedas, वेदो का महत्व(आर्यकुमार सभा, किग्सवे, देहली) नामक पुस्तिकाओ मे अनेक उदाहरण देकर दिखाया है, यह सुप्रसिद्ध बात है कि प्रो. मैक्समूलर जो अपने समय के वेदज्ञ पाश्चात्य विद्वानो में बडा उच्च स्थान रखते थे। और जिन्होने अपने पहले ग्रन्थो मे इसी सिद्धात का प्रतिपादन किया था कि वेदो मे बहु देवतावाद का विधान है, महर्षि दयानन्द जी की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और वेद भाष्य के पढने के पश्चात उनके विचारो से प्रभावित हुए और उन्होने अपने अतिम ग्रन्थ 'Six Systems of Philosophy मे स्वीकार किया कि अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण, प्रजापति इत्यादि नामो से वस्तुत एक ईश्वर का ही ऋषि लोग ग्रहण करते थे।

इस विषयमे Treasure House of the Living Religious by Robert Earnest Hume M. A, Ph D, नामक पुस्तक विशेष से उ लेखनीय है जिसमे डा० अर्नेस्ट ह्यूम ने वेद मन्त्रो का अनुवाद करते हुये अग्नि, सविता, सोम, मित्र, वरुण, इन्द्र इत्यादि वैदिक शब्दो का अर्थ God अथवा ईश्वर किया है। यह बात और भी महत्वपूर्ण है कि जहा ह्यूम ने ग्रिफिथ अथवा दूसरे पाश्चात्य विद्वानो का अनुवाद उद्धृत किया है, वहा भी उनके अनुवाद मे प्रयुक्त अग्नि, मित्र, सोम आदि के स्थान पर 'God' व ईश्वर अर्थ करते हुये यह टिप्पणी दी है। 'God' in place of the Sanskrit designation for the Deity, Agni, Indra, Soma, Varuna, Savita etc

सुप्रसिद्ध गायत्री मन्त्र का अर्थ उन्होंने......

Let us medi tate on the Adorable Glory of the Divine Vivifier and my He Himself direct our thoughts.'

इस रूप मे किया है जिसमे सविता का अर्थ दिव्य जीवन प्रदाता परमेश्वर करते हुए कहा है कि उसके पूजनीय तेज का हम ध्यान करने हैं। वह स्वय हमारी बुद्धियो वा विचारो को प्रेरित करे।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द की वेदार्थ विषयक क्राति का देशविदेश के निष्पक्ष विद्वानो पर प्रभाव स्पष्ट है। ऐसे वेदोद्धारक शिरोमणि महर्षि दयानन्द के 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेदो का पढना-पढाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'। हम आदेश के अनुसार वेदों के स्वाध्याय रूप अपने परम धर्म का सब आर्यों को सदा पालन करना चाहिए।

(समाप्त)

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, १२ अक्तूबर १९६९ [अंक ४१

आर्य समाज और जनता

आर्य समाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। अपने प्रारम्भ काल से ही उसने समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे भारी क्रान्ति की है। विचारो का कोई भी तो ऐसा स्थान नही मिलेगा जहा आर्य समाज का प्रभाव न पडा हो। व्यक्तिगत जीवन हो या परिवार का वातावरण हो, राजनीति का विशाल क्षेत्र हो या समाज सुधार की बात हो, शिक्षा का व्यापक कार्य हो या साहित्य का निर्माण हो, प्रचार की रीति नीति हो अथवा मत-मतान्तरो के निजी सिद्धान्तो मे परिवर्तन का प्रभाव हो—चाहे और भी किसी भी प्रकार का मैदान हो—आर्य समाज ने हर दिशा मे विचारो की सक्रान्ति ला दी है। जिन-जिन बातो पर नानामतो के साथ बडे-बडे शास्त्रार्थ चलते थे—आज आर्यसमाज के उन तमाम सिद्धान्तो, विचारो को लोगो ने अपना ही केवल नही लिया वरन उनका स्वयं प्रचार करना भी शुरू कर दिया है। यह समाज की चहुंमुखी विजय है। हमारे नेता महारथी, विद्वान आज जो बात कहते हैं, कल जनता उसे अपना सिद्धान्त मान लेती है। समाज के नेतृत्व जन-जीवन ने सदैव स्वीकार किया है।

यह तो मानी हुई बात है कि जनता प्रत्येक कार्य के लिए आर्यसमाज के मुख की ओर ही देखती है। जब भी किसी प्रकार का आन्दोलन हो या किसी के द्वारा अन्याय किया जाये, या विधर्मियो की ओर से धर्मपरिवर्तन के लिए हिन्दू समाज पर धन, अन्न, सत्ता का किसी भी तरह का दबाव डाला जाये—तो उस समय सारी जनता आर्यसमाज के बतलाये गये पथ पर चल पडती है। जैसा-जैसा लोगो के सामने कोई भी कार्य-क्रम पेश करता है—जनता तत्काल स्वीकार करके उसके पीछे चल पडती है। हर प्रकार का तन, मन, धन से पूरा-पूरा सहयोग देती है अपनी सारी शक्ति आर्यसमाज के लिए समर्पित कर देती है। इस मे हमारे लिए गौरव का विषय है। बात भी ठीक है कि जनता के दिल मे यह विश्वास पूरी तरह से घर कर चुका है कि आर्य समाज हमारे लिए महान नेता का रूप है। यह बडे से बडा बलिदान करके भी जनता के दुःखो को दूर करता है। स्वयं को सदा कष्ट मे डाल कर सभी को सुखी बनाने मे तत्पर रहता है। क्रियात्मिक रूप मे आर्यसमाज ने अपना कर्तव्य पूरा भी किया है।

आप समाज के द्वारा किसी भी व्यापक कार्य की ओर देखें अथवा इसके किसी भी आन्दोलन का इतिहास देखें—तो यह तथ्य सूर्य के प्रकाश के समान साफ प्रत्यक्ष है। इसमे किसी भी प्रकार के सन्देह को स्थान नही है। यह ठीक है कि आर्यसमाज का सारा इतिहास ही एक भारी संघर्ष सग्राम एवम् महान् आदोलन का इतिहास है। इसे जन्म-दिन से ही संग्राम के पथ पर चलना पडा है। कदम-कदम पर नाना मोर्चों पर यह जूझता आया है। और स्वराज्य के महान कार्य मे जो काम इसने किया है, जितने बलिदान इसने दिए तथा जितनी विपत्तियो को इसने सहन किया है, जितना ऊचा दाव इसने बजाया, जिस भी निर्भयता का इसने परिचय दिया है—विदेशी शासन की गहरी जडो को देशभक्ति से भरे विचारो मे काटने मे जो कुशलता इसने दिखलाई है—वह सभी कुछ इतिहास के पन्नो मे अमर रहेगा। हा यह खेद का विषय है कि इतना कुछ करने पर जब स्वाधीनता का तत्व प्राप्त होने लगा तो दूसरे लोगो ने चादर ऊपर फैलाकर ऊपर ही ऊपर उसे ले लिया। किन्तु जनता का प्यार हम से कभी कम नही हुआ। आज भी उस के नेतृत्व को जनजीवन का प्रत्येक क्षेत्र स्वीकार करता है। हम के शंख की ध्वनि पर इस समय भी पडता है। लोग आज भी आर्य समाज की हित से भरी आवाज को सुनना चाहते हैं किन्तु शोक है कि हम स्वयं निद्रा की अवस्था में चले जा रहे है।

इस समय समाज के नगर २ ग्राम २ मे जहां भी छोटे बडे जलसे होते हैं, समारोह सम्पन्न होते हैं, शिक्षण की संस्थाएं चलती हैं तो उस समय जनता इस की ओर पूरी श्रद्धा से उमड २ कर आती है। पूरा सह-योग मिलता हैं। आज जनता समाज के विचारो के प्रचार को आस्था से सुनती है। कुछ तो हमारे जीवनो मे दुःख देने वाली दरार आगई और कुछ सुनाने वालो की कमी है। अच्छे व्यक्तियो की बडी ही कमी है। जनता प्यासी है – आवश्यकता है कि सैकडो आर्य समाज के लोग समय निकाल कर बाहर निकले ताकि जनता की प्यास बुझाई जा सके। हमारी प्रत्येक सस्था व समाज मे एक २ दो २ युवक व सज्जन समय देवे तो जनता का कल्याण होगा। —त्रिलोक चन्द्र

कार्य कैसे चलेगा ?

जिस प्रकार शरीर का आख कान, मुख आदि प्रत्येक अग मिलकर शरीर कहलाता है इनके समूह का नाम ही शरीर है। उसी प्रकार ही समाजो ज नानाविध अग मिल कर सभा का शरीर बन जाते है। सभा क्या है—कई समाजो के समूह का ही तो नाम एक सभा है। सभा मे समाजे शामिल होती है। एक २ समाज उसका सुन्दर घटक व अग है। यदि ये तमाम घटक स्वस्थ, सबल तथा कर्मशील है तो सभारूपी विराट शरीर भी खूब स्वस्थ और कार्य मे तत्पर रहता है। यदि अग बीमार है, विकार से भरे है तब सारा शरीर ही रोगी एव निकम्मा हो जाता है। यह व्यक्ति और समष्टि है।

आर्यप्रादेशिक सभा पजाबजालधर बहुत पुराने समय से प्रचार कार्य मे लगी है। समाजे इसका अग है। कई समाजे तो अपने इस केन्द्र का पूरा २ ध्यान रखती है। हर प्रकार का सह-योग मिलता है उनसे। कथा हो या जल्सा—हर अवस्था मे सभा को प्रमुखता देती है। उनके सभा के प्रेम इस प्रेमप्यार तथा कर्तव्य निष्ठा को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। किंतु सभा के कई ऐसे अग भी है जिनका पूरा ध्यान सभा की ओर कम रहता है। सारा वर्ष बीत जाता है किन्तु उन कुछ समाजो का समारोह होता ही नही है न कथा, न उत्सव और न अन्य कोई भी समारोह। उनकी ओर से अपने सभा रूपी इस केन्द्र को क्या मिलता है—इसका प्रत्येक अनुमान लगा सकता है। ऐसी बात नही कि उनके अपने कोई समारोह नही होते है। और खूब चलते है। परिवारो मे यज्ञ भी होते है विवाह कार्य भी चलते है तथा अन्य भी प्रसन्नता के विविध काम समय-समय पर होते रहते है किन्तु उनमे अपनी सभा के लिए तनिक भी किसी प्रकार का भाग नही निकलता। हमारे परिवारो के समय-समय पर होने वाले विवाह समारोहो मे क्या कुछ नहीं बन पाता है। सभी कुछ होता है। बडा भारी दिखावा तक होता है। हर प्रकार का खुले रूप मे व्यय होता है। किन्तु दिल टटोल कर देखे कि इस चमक दमक से भरे समारोह मे सभा के लिए कितना कुछ भाग निकाला जाता है? फिर कार्य चलेगा कैसे? कुछ ऐसे भी समाज है जो बडे ठाठ से अपना महोत्सव करते है। पानी के समान रुपया बहाते है। बैण्ड बाजा की एक प्रकार की बाढ सी आ जाती है। सब काम चलता है किंतु उसमे सभा को कितना वेद प्रचार दिया जाता है यह दोनो जानते है। समारोह पर भी बडा व्यय हो गया पर सभा के लिए शीतमुख बन जाना है वह समाज फिर आप ही विचार करे कि सभा का व्यापक कार्य कैसे चलेगा? सभा के पास क्या कुछ नही है? प्रचारको का मण्डल है ही। इसके अतिरिक्त हमारी शिक्षण सस्थाओ मे योग्य स्कालरो की वक्ताओ की, महारथियो की बडी ही योग्य शिक्षा-विशारदो की मण्डली है। प्रत्येक हमारे दयानन्द कालेज मे एक दो तो सुलझे हुए वक्ता स्कालर कार्य करते है। समाजो के उत्सवो पर उनसे प्रार्थना करके बडा उपयोगी लाभ उठाया जा सकता है। हमारे मान्य प्रिंसिपल महोदय भी कुछ न कुछ समय दे ही सकते है। उत्सवो पर कुछ समाजो मे भी ऐसे प्रभावशाली वक्ता है जिनके प्रवचनो का विशेष प्रभाव पडता है। कई मान्य योग्य स्कालर जल्सो मे जा कर कृपा करते रहते है। दूसरो से भी प्रार्थना की जा सकती है। जब हमारी सभा का इतना योग्य परिवार है तो फिर सभा का ध्यान रखना ही चाहिए। समाजे अपने कर्तव्य को पूरे रूप से निभाएं वर्ना काम कैसे चलेगा?

ऋषि दयानन्द के देहान्त के ५ वर्ष पश्चात् प्रकाशित

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित

(श्री डा. भवानी लाल जी भारतीय, एम. ए., पी.एच.डी., हिन्दी विभाग, गवर्न. कालेज अजमेर)

(गताक से आगे)

कुछ समय बीते सब लोग सो गये यह जागते ही रहे कि इस सुनसान अवसर मे चूहे शिवमूर्ति पर दौड २ कर फिरते थे और कही मीगन (विष्ठा) भी करदी, बस आपको उसी वक्त से यह ख्याल पैदा हुआ कि यह कैसा महादेव जो अपने ऊपर से चूहे को उतार सका ही नही पूजा सेवा करने वालो का क्या मनोरथ पूर्ण करेगा। इस विषय मे आपने अपने पिता से पूछा पर सदेह निवृत न हुआ। उसी वक्त अपने घर आ कुछ मिठाई खा सो रहे। व्रत भग होने पर आपके पिता बहुत नाराज हुए। परन्तु आप की बुद्धि मे तभी से यह आया कि काष्ट पाषाणादि की मूर्ति के आगे पूजा सेवा करना समय का व्यर्थ करना है। आप की रुचि इस तरफ न देख आप की मा तथा चाचा ने भी आप के पिता को समझा केवल विद्या पठन मे ही छुडवा दिया। आप ने इस अवसर मे निघण्टु, निरुक्ति, पूर्व मीमासा का कर्म काण्डादिक के ग्रन्थ दो वर्ष मे पढ लिये। काल की विचित्र गति है। इसी बीच मे एक दिन आप की बहन बीमार हो कर मर गई। तभी से आप का मन इस ससार के लोगो से उठ मुक्ति का रस्ता ढूढने लगा। थोडे ही दिन पीछे आप के चाचा जी आप से अत्यन्त प्रीति रखते थे, काल वश हो स्वर्ग वास हुये। फिर तो आप को विशेष वैराग्य हुए। जब आप की वृत्ति की खबर आप के पिता को पड गई तब तो आप के पिता ने आप का विवाह जल्दी कर देना चाहा, परन्तु आप ने काशी जाने को आज्ञा मागी। आप की माता ने जाने को मना किया और ब्याह की तैयारिया हो रही थी के आप उस के बखेडो से बच २२ वर्ष की अवस्था मे गृह से अकेले बिना कहे निकल पडे (रस्ते मे ठगो ने लोभ दे गहना आदि ले लिया) पीछो आप के पिता ने सिद्धपुर मे आप को पा लिया और निगाह मे रखा। लेकिन आप भी कहा मे चुपचाप सुनसान देख फिर चल दिये। रास्ते मे बडे २ विद्वानो से मेल जोल हुआ। उन से विद्या की भी वडोतरी की और की और शरीर से कष्ट भी बहुत सहन किया। यहा तक आप ब्रह्मचर्याश्रम मे थे। पीछे आप ने बहुत परिश्रम कर के श्री पूर्णानन्द सरस्वती जी से सन्यासाश्रम ग्रहण किया और तभी से नाम दयानन्द सरस्वती हुआ।

पीछे आप देश-देशान्तर घूमते-घूमते कई सच्चे योगियो से मिले और योग विद्या की प्राप्ति का सिद्धात यह है कि जहा आप ने सुना कि वहा विद्वान् है तभी वहा पहुचे और उनसे मिले। यह सब वृत्तात सवत् १९११ तक का अर्थात् जब आप की उम्र ३० वर्ष थी, इसी साल मे आप ने प्रथम कुम्भ हरिद्वार का किया। बाद मे ऋषिकेश होते हुये टिहरी पहुचे, वहा वाममत के ग्रन्थ देख आप को उनकी तरफ से अश्रद्धा हुई। तत्-पश्चात उत्तराखण्ड को विचरते हुये विद्वानो से मिलते हुये जोशीमठ पहुचे। रास्ते मे आप ने बहुत कष्ट भी सहन किया। कारण यह कि आप निर्जन वन मे चले गये कि जहा मनुष्य न बसते। निदान इसी तरह आप ने उत्तर यात्री विद्वानो महात्माओ से मिलते-जुलते रहे। रास्ते मे कोई कोई इनको अपना धन दौलत दे अपनी गद्दी पर बिठाना चाहता था सो इन्होने तुच्छ समझा। तत्पश्चात् जाकर हिमालय तटी मे ही तपस्या करते रहे। सवत् १९१६ के लगभग मथुरा मे आये और स्वामी विरजानद जी से पहिला पढा हुआ विचारा तथा और भी पढा। पीछे आप जैपुर, आगरा इत्यादि देशो मे विचरते रहे और आप योगाभ्यास मे भी परिपूर्ण हुये यहा तक के प्रतिदिन १८ घण्टा समाधि लगाने लग गये पीछे हरिद्वार, काशी ओर विचरते रहे साथ ही पण्डितो से शास्त्रार्थ व धनको सत्य उपदेश भी करते रहे। पर आज कल के पण्डित लोक परास्त हुये वे भी परास्त होना स्वीकार नहीं करते थे बल्कि बदले इसके जो चाहे सो हल्ला उडाया। निदान पर आप ने यह विचारा कि बिना विद्या के अविद्या टरनी असम्भव है। इस लिये पाठशाला सेठ, साहूकारो की मदद से स्थापित की—अर्थात् फर्रुखाबाद, मिरजापुर, कासगज और छालेश्वर मे। पाठशालाओ मे पण्डित वा विद्यार्थियो को पुस्तक, भोजन आदि का भी सत्कार सेठ साहूकारो से अच्छे प्रकार कराया गया था। परन्तु स्वार्थी लोग बहुत थे और बहुत दिन से जो अधकार फैला हुआ था एकाएक मिटना मुश्किल था। स्वार्थी लोगो की इसमे जीविका का भी नाश था इसलिए वह लोग इस काम को न चाहते थे। जब इस काम मे भी आपने विरोध देखा तब कुछ पुस्तके बना फैलाई कि आधुनिक ग्रन्थ जो हैं जिनसे देश भर मे अधकार फैल रहा है निवृत्त हो और आपने सत्य उपदेश करना भी हर नगर मे प्रारम्भ कर दिया और नगर २ मे आर्यसमाज भी कायम करनी चाही परमात्मा की कृपा से ऐसा ही हुआ। यह विचार स. १९३२ का है। इस सत्य उपदेश मे आप पाषाणादि पूजा व वेद को छोड पुराणो का मानना और वेद विरुद्ध जितने मत है अर्थात जैनी, कुरानी, किरानी आदि मतो का भी खडन करते थे कि सनातन मत आर्यावर्त वालो का वेद ही है और वेद ही स्वत. प्रमाण है। इसके अनुकूल होने से ब्राह्मण ग्रन्थ परत प्रमाण है। यह व्याख्यान देश-देशातरो में आपका सदैव जिंदगी तक रहा पर बीच २ मे कई मत वालो से शास्त्रार्थ भी होता रहा तथा उन मत वालो ने पुस्तके भी आपके विरुद्ध छापी कि जिसका आप साथ के साथ उत्तर देते रहे। आपको १९२६ काशी मे शास्त्रार्थ और सन १९२९ मे म. ताराचरण भट्टपाडा वाले से शास्त्रार्थ हुआ। पीछे कुछेक लेख वेद ब्राह्मण विषय पर राजाशिवप्रसादने 'निवेदन' नाम पुस्तक लिखा कि जिसका उत्तर स्वामी जी ने भ्रमोच्छेदन पुस्तक मे लिखा पीछे राजा शिवप्रसाद ने दूसरा निवेदन लिखा कि जिसका उत्तर अनुभ्रमोच्छेदन नाम पुस्तक से पडित श्री भीमसेन जी ने दिया निदान सब जैनमत वाले चमके और बहुत कुछ अडबड बकने लगे और दयानन्द सरस्वती मुख चपेटिका धड एक सारावगी ने जिस का नाम ठाकुरदास है उसने लिख भेजी और कहने लगे कि सत्यार्थप्रकाश मे जो जैनियो के श्लोक है सो कहा के है। स्वामी जी ने उत्तर दे दिया पर नास्तिक लोग कब माने थे और अर्जी देने की धमकी दी, स्वामी जी को नहीं बल्कि सब आर्य समाजियो पर। इसका भी आपने उत्तर मेरठ समाज से बखूबी पाया। फिर मसूदा मे मुह बन्ध ढूढियो से मिले पर सत्य का ही जय हुआ। तत पश्चात स. १९३४ मे जालन्धर के मौलवी अहमद हुसैन से प्रश्न उत्तर हुए(जिसका नाम सवाल जवाब है देखो) पीछे मेरठ के मुसलमानो से पीछो रुडकी के मुसलमानो से बातचीत हुई पीछे अजमेर के पादरियो से कुछ चर्चा हुई। बीच-बीच मे मेला चादपुर मुसलमान वा पादरी साहब से भी चर्चा हुई जिसका हाल 'सत्यासत्यविवेक' मे है देख लो तथा दूसरे साल का मेला 'सत्य धर्म विचार मेला चादपुर' है, देखो। और स्वामी जी की विद्या बुद्धि की प्रशसा एक क्या अनेक विद्वान मनुष्य करते थे। यहा क्या बाहर से भी अनेक पत्र आते थे। आपने ग्रन्थ तो बहुत बनाए तथापि यह मुख्य-मुख्य है—सत्यार्थप्रकाश सस्कार विधि, आर्याभि विनय, पच महायज्ञ विधि, वेद भाष्य भूमिका ऋग्वेदभाष्य, यजुर्वेद भाष्य, आर्योद्देश्य रत्न माला, वेदान्तिध्वान्त निवारण, गोकरुणा-निधि, व्यवहार भानु, वेदाग प्रकाश, जिसकी १५ जिल्दे है, सस्कृत वाक्य प्रबोध, स्वामी नारायण मत खण्डन, वेद विरुद्ध मत खण्डन, इत्यादि संस्कृत वा जिसके अर्थ देव नागरी भाषा मे सबके सुबीते के लिए लिखे।

आपका कई राजो ने भी सत्कार किया और आपसे सत्य उपदेश ग्रहण किया, जैसे राजा उदयपुर वा जोधपुर इत्यादि। पीछे आप बम्बई हो उदयपुर पहुचे वहा आपने सब प्रबन्ध कर एक सभा बना जोधपुर को चले। काल की विचित्र गति है कि सं. १९४० कर्तिक बदी १५ मगलवार को अजमेर मे स्वर्गवास हुए। हा शोक ! हा शोक !! हा शोक !!! (क्रमश)

यज्ञ के लिए व्रतों का पालन

(मूल लेखक आर्य वीरसेन जी इन्दौर)

आशुराम जी आर्य पुरोहित, चण्डीगढ़ १९

व्रतों के परिपूर्ण आर्य जीवन

आर्य जीवन व्रतो का जीवन है। जीवन को उच्चादर्शों पर चलाने के लिए व्रतो का महत्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वेद म० १।१६५।११ मे कहा है—

आर्याव्रता विसृजन्तो अधिक्षमि।

अर्थात आर्यजन भूमि पर व्रतो को धारण करते हैं एव अन्यो को भी व्रत धारण कराके व्रती बनाते हैं। व्रती बनाने के लिए या बनने के लिए दूसरो के ऊपर एव अपने ऊपर भी शासन करना पडता है। व्रतो के स्वशासन एव स्व पर राज्य से ही व्यक्ति एवं समाज मे उच्चादर्श स्थापित होते हैं तथा उच्च संस्कृति का निर्माण होता है। जिस से प्राणीमात्र को सुख प्राप्त होता है।

व्रत का शासन

जो व्यक्ति अव्रती है वे समाज मे अव्यवस्था, असभ्यता एव अनाचार को प्रोत्साहित करते है अत ऋग्वेद मे कहा है—

शासदव्रतान् (१-५१-८)

जो अव्रती पुरुष हैं जिन मे संयम, नियम एव आदर्श आदि की उच्च भावनाए नही है और श्रेष्ठ कर्मों से रहित है उन पर शासन करना चाहिए। सब प्रकार के शासन अव्रतियो के लिए ही हैं। शासन का श्रेष्ठ मार्ग सेना, सुरक्षा, पुलिस आदि नही है, अपितु व्रत मार्ग ही श्रेष्ठ है। व्रत धारण करा कर ही धार्मिक शासन चलता है। व्रतो मे श्रद्धा का प्रहरी, व्रती की अनुशासनहीन, वासनाओ और चेष्टाओ से रक्षा करता है। और उसम व्रत की सुदृढ स्थापना करके व्रत का स्वशासन स्थिर करता है। अत वेद ने 'व्रतं कृणुत का आदेश दिया है।

व्रत के लिए प्राथमिक तैयारी

व्रतो को धारण करने के लिए सर्व-प्रथम आवश्यकता है —

'विहाय दौष्कृत्यम्—(ताण्डय ब्राह्मण १-१-३)

अर्थात्—दुष्ट कर्मों का परित्याग सर्वप्रथम आवश्यक है। जब तक दुष्ट कर्मों का परित्याग नही होता यज्ञ का अधिकारी नही हो पाता है। मन से जब तक बुरी भावनाओ का त्याग नही होता तब तक दुष्कर्मों का *त्याग भी नही हो सकता है। अत मन से दुष्कर्मों की भावनाओं का त्याग* सर्व-प्रथम व्रतो का मूल व्रत है। यही व्रतो की आधार भूमि है।

ऋत्विज् व्रती होने चाहिए

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। अत जो यज्ञ के यजमान एव ऋत्विजादि है उनको व्रती होना चाहिए। यज्ञ मे अव्रति पुरुष अग्राह्य है जैसा कि —

नाव्रतो ब्राह्मण स्यात् (गोभिल गृह्य सूत्र)

अर्थात्—यज्ञ का अनुष्ठान करने-कराने वालो को अव्रति—व्रत रहित नही होना चाहिए।

ब्रह्मचर्य व्रत से सफलता

दुष्ट कर्मो के त्याग के लिए और श्रेष्ठ कर्मो के धारण करने वाले के लिए सर्व-प्रथम व्रत ब्रह्मचर्य ही है क्योकि इसके ही धारण करने से अनेक व्रत इसके अगभूत बनकर आचरण मे आ जाते है और सब देव भी अनुकूल, हो जाते हैं जिससे यज्ञ की सफलता होती है। जैसा कि—

'तस्मिन देवा. संमनसो भवन्ति' (अथर्व ११/७/१)

अर्थात उस ब्रह्मचर्य व्रती पुरुषमे सब देव एक मन होकर सुप्रतिष्ठित होते है तथा अथर्ववेद (११-७-१) मे—

'ब्रह्मचारिणं पितरो देवजना पृथक देवा अनुसंयन्ति सर्वे'

अर्थात ब्रह्मचारी को पितर, देवजन आदि सब अनुसरण करते है इसी लिए कहा है .—'क्रियासु सकला सर्वत्र ब्रह्मचर्य विवर्धयेत् (स्कन्द) अर्थात समस्त क्रियानुष्ठानो मे ब्रह्मचर्य की ही वृद्धि करनी चाहिए।

ब्रह्मचर्य व्रत धारण न करने से असफलता

ब्रह्मचर्य ही सब व्रतो का सार है और सब व्रतो मे उत्तम है। इस पर यदि आचरण नही किया जाता है तो उससे यज्ञ के फल का नाश होता है जैसा कि गोपथ ब्राह्मण (पू प्र १-१३) मे कहा है —

'यदि यज्ञे अकुशला ऋत्विजो भवन्ति अचिरतिनो ब्रह्मचर्य नपराग्या वा तदेपजन्य [illegible] मित्याचक्षते।

अर्थात जब यज्ञ मे अकुशल ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न करने वाले रागी-विषयी ऋत्विज् होते है तो यज्ञ का नाश ही कहा जाता है। अत. यज्ञ की सफलता के लिए ब्रह्मचर्य व्रत अत्यन्त आवश्यक है।

ब्रह्मचर्य व्रत के अनुष्ठान के नियम

इस सर्वश्रेष्ठ यज्ञ का अनुष्ठान करने के लिए प्राचीन ऋषि मुनियो ने कुछ नियम बनाए है, उनके अनुसार यज्ञ के दिनो मे निम्न प्रकार का आचरण करना चाहिए।

दिवा मा स्वाप्सी

जो ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करते है और इसको ग्रहण करते है उनको दिन को शयन नही करना चाहिए। आयुर्वेद मे भी दिन मे सोने से रोगो की उत्पत्ति होती है, ऐसा निम्न श्लोक मे कहा है .—

दिवा स्वापादि दौर्बल्य प्रतिश्यायश्च जायते ॥

प्रतिश्यायादयो कास कामात्सजायते क्षय ॥

अर्थात दिन मे सोने आदि दोषो से प्रतिश्याय (सर्दी जुकाम) की उत्पति होती है और उन से कास—खासी, खासी, श्वासो से क्षय की उत्पति होती है। अत दिन मे नही सोना चाहिए और यज्ञ के व्रती जनो को इस का पालन करना चाहिए।

'क्रोधानृते वर्जन'

क्रोध और असत्य का भी त्याग व्रती को करना चाहिए क्योकि—

क्रोधात्मोह प्रजायते मोहात्स्मृति विभ्रम।

स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

अर्थात क्रोध से मोह उत्पन्न होता है। मोह से स्मृति मे भ्रम उत्पन्न होता है। स्मृति के भ्रमित होने से बुद्धि का नाश हो जाता है और सर्वस्व नष्ट हो जाता है। अत व्रती पुरुष को क्रोध नही करना चाहिए।

'असत्य भाषण का त्याग

इसी प्रकार असत्य भाषण को अत्यन्त निकृष्ट कर्म-पाप, माना गया है। और सत्य को परम धर्म माना गया है। जैसा कि मनु ने—

न हि सत्यात परोधर्मो नानृतात् पातक परम्—इस श्लोक मे कहा है (असत्य भाषण मे चोरी का भी दोष होता है) जैसा कि मनु—

वाच्यर्था नियता सर्वे वाड मूला विनिसृता।

ता तु य स्तेनयेत् वाच स सर्वस्तेयकृन्नर ॥

अर्थात वाणी से उच्चारित होने वाले शब्दो का अर्थ नियत है। उस वाणी की चोरी, असत्य भाषण, अन्यथा भाषणादि द्वारा जो करता है वह सब प्रकार की चोरियो का कर्ता है। इसलिए असत्य भाषण न करे।

सत्य से मन एवं मेधा की शुद्धि

सत्य भाषण तप है जैसा कि तैतिरीयोपनिषद् मे कहा है—ऋत तप। सत्य तप।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

यज्ञ के लिए व्रतों का पालन

(पृष्ठ ५ का शेष)

क्योंकि तप से ही जो सापेक्ष ज्ञान प्रकृति के पदार्थों से प्राप्त होता है और सत्य अर्थात त्रिकालावाधित ब्रह्म का सत्य ज्ञान प्राप्त होता है। जैसा कि—ओ३म तप ।' के पश्चात 'ओ३म सत्यम'—का क्रम है। तप से ही—'ऋत च सत्य यामी द्धान्तपसोध्यजायत—ऋतं और सत्य प्रकट होते है। उसी सत्य से—'सत्यं पुनातु पुन शिरसि—अपनी मेधा की शुद्धि होती है और उसी सत्य से 'मन सत्येन शुद्धति'—मन की भी शुद्धि होती है। तथा इस सत्य विद्या रूपी तप से विद्यातपोभ्या भूतात्मा'—आत्मा की भी शुद्धि होती है। अत वेद मे—

'इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि (यजु. १।५)

इस मन्त्र से—मैं अनृत—असत्य को त्याग कर सत्य को प्राप्त करता हू—यह प्रतिज्ञा व्रत करने का विधान किया गया है।

—सत्य से दैवत्व की प्राप्ति—

शतपथ मे कहा है—सत्य वै देवा अनृतं मनुष्या। एतद्वै देवा व्रत चरन्ति यत्सत्यम्। तस्मात् ते यशो यशोद भवति य एव विद्वान सत्यं वदति अर्थात देव सत्य बोलते है और मनुष्य असत्य बोलते हैं। इस सत्य भाषण के व्रत का पालन देव करते है, अत उनकी सर्वत्र यश—कीर्ति प्रतिष्ठा निश्चय से होती है। ऐसा सुनिश्चित जानकर जो इस व्रत पर आचरण करते हैं उनको भी यश प्राप्त होता है।

'—यज्ञ से दैवत्व की साधना'—

यज्ञ मे देव भाव को प्राप्त करने के लिए सत्य बोलना चाहिए। इसीलिए वेद मे कहा—वाच ते शुन्धामि (यजु ६।७) यज्ञ के द्वारा तेरी वाणी को शुद्ध करता हू। वाणी की शुद्धि असत्य के त्याग से ही होती है। इसी प्रकार 'सत्यं च मे श्रद्धा च मे—यज्ञेन कल्पन्ताम् (यजु १८।५) 'ऋता च मे यज्ञेन कल्पन्तामं—(यजु १८।६—वाक च मे मनश्च मे—यज्ञेन कल्पन्ताम (१८।८)—आदि मन्त्रों मे यज्ञ के द्वारा सत्य भाषण वाणी, मन, श्रद्धा आदि को समर्थ बनाने के लिए कहा गया है। यह सब यज्ञ के व्रत कर्मों की साधना मे ही उत्पन्न होता है।

आर्य शब्द से चिढ़ क्यों ?

भारत की सनातन पुरातन संस्कृति को आर्य संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है। आर्य सभ्यता विश्व की दैवी सभ्यता है। आर्य संस्कृति के महान् स्तम्भो मे श्री रामजी, श्री कृष्ण जी आदि देवपुरुष है। हमारी संस्कृति के जितने भी प्रसिद्ध ग्रन्थ है—उन सबमे आर्य पुरुषो की गौरव गाथा मिलती है। राम हो या कृष्ण हो, व्यास हो या जनक कोई भी हो, ये सारे आर्य ही हैं। हमारा पुरातन रूप मे आर्य ही है। महर्षि दयानन्द जी ने वेद प्रचार के महान् मिशन के लिए आर्यसमाज की स्थापना करके आर्य शब्द के गौरव को कायम रखा। आर्य समाज ने कई स्थानो पर अपनी संस्थाओ का नाम आर्य स्कूल, आर्य कालेज, आर्य कन्या स्कूल रूप मे आर्य शब्द को महत्व दिया। अब पता चला है कि हरयाणा सरकार ने अपने प्रात मे औरो के साथ आर्य समाजो को भी लिखा है कि जिनके नाम आर्य पाठशाला के नाम मे है—उनसे आर्य शब्द हटा दिया जाए। यह उचित नही है। आर्य समाजो को इसके विरुद्ध कडा प्रोटेस्ट करना चाहिए।

—स०

विशेष सूचना

आर्य जगत् साप्ताहिक के सभी ग्राहक महानुभावों तथा आर्य बन्धुओं की सेवा में निवेदन है कि ९ नवम्बर को दीपावली अंक निकल रहा है इस लिए इससे पहले दो अंक (२६ अक्तूबर व २ नवम्बर) के बन्द रहेंगे।

—व्यवस्थापक

अजमेर में ऋषि मेला

दि० १५ और १६ नवम्बर, सन् १९६९

परोपकारिणी सभा के तत्वावधान मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के ८६ वें निर्वाण दिवस पर इस वर्ष ऋषि मेला दिनाक १० नवम्बर से १६ नवम्बर तक ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर मे समारोह पूर्वक मनाया जावेगा।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ :-

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा सोमवार दिनाक १० नवम्बर से यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य कृष्ण के आचार्यत्व मे आरम्भ होगा व नित्य प्रात: और साय १६ नवम्बर तक चलेगा।

कवि सम्मेलन:—

कार्तिक शुक्ला ५ शुक्रवार दिनाक १४ नवम्बर को सायंकाल कवि सम्मेलन होगा। जिस मे ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज सम्बन्धित रचनाए प्रसिद्ध कवियो द्वारा सुनाई जावेंगी।

वाद विवाद-प्रतियोगिता :—

दिनाक १४ व १५ नवम्बर को मध्यान्ह मे वाद-विवाद प्रतियोगिता स्कूल व कालेज के छात्र-छात्राओ के लिए होगी।

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन :—

दिनाक १५ नवम्बर को मध्यान्ह मे अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन डा० रायबहादुर जी के सयोजकत्व मे होगा।

शोभा यात्रा :—

दिनाक १५ नवम्बर को प्रात.काल विशाल शोभा यात्रा (नगर कीर्तन) दयानन्द आश्रम आर्य समाज मार्ग से हो कर ऋषि उद्यान पहुचेगी। जिस मे दिल्ली से स्पेशल ट्रेन से पधारे सैकडो, आर्य नर-नारी, आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा व अबोहर गुरुकुल की छात्राए तथा राजस्थान की आर्य समाजों के सदस्य विशेष रूप से भाग लेंगे।

भाषण एवम् भजनोपदेश :—

दिनाक १५ व १६ नवम्बर की रात्रि को आर्य विद्वानो के भाषण होगे विशेष कर लाला रामगोपाल जी शाल वाले, प्रो० रतनसिह जी, आचार्य कृष्ण जी, पण्डित भूदेव जी शास्त्री, डा० भवानी लाल जी भारतीय पण्डित आनन्द प्रियजी तथा ओ३म् प्रकाश जी वर्मा भजनोपदेशक के मधुर गायन होगे।

आशा है आर्य नर-नारी हजारो की संख्या मे पधार कर इस आयोजन को सफल बनावेंगे।

श्रीकरण शारदा
मन्त्री
परोपकारिणी सभा

★ गुरु विरजानन्द शताब्दि पर ★

विरजानन्द दे द्वारे आए चेले दयानन्द दे,
ओम ओम ही पुकारे आये चेले दयानन्द दे।
इह धरत नसीबा वाली जित्थे साडा गुरु जम्मिया,
कौम डिगदी पई सी सारी आनके आप थम्मिया।
नेरे बोलदे जयकारे आए चेले दयानन्द दे,
विरजानन्द दे द्वारे . ...
दया ढूंढी न कदे जे तेरी, दयानन्द कित्थों मिलदा,
दयानन्द दे बिना न होइया मसा तेरे दिल दा,
इथे बन के ते सारे आये चेले दयानन्द दे,
विरजानन्द दे द्वारे ... .
इट्टा खादीया पत्थर खादे हसके जहर पी लिया,
पूर्ण इच्छा प्रभु हो तेरी जीणा मैं जिना जी लिया,
गुरुदत्त नू नजारे आए चेले दयानन्द दे,
विरजानन्द दे द्वारे .. ..
घर बार सुखा नू छड के दुखा च जान पा गये,
जहर पी के गोलिया खा के पेट च छुरे खा गए,
'मुजरिम' जहे वी नकारे आये चेले दयानन्द दे।
ओम ओम ही पुकारे .. . .
विरजानन्द दे द्वारे ... ...

'मुजरिम दसूहवी'

पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार से:

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध में गांधी जी के विचार

हमारे समाज का सुधार अपनी भाषा से ही हो सकता है। हमारे व्यवहार मे सरलता और उत्कृष्टता भी हमारी अपनी भाषा से ही आएगी। छात्रो और उनके माता-पिताओ सभी को अपनी भाषा का विस्तृत ज्ञान रखने को कोशिश करनी चाहिए।

(स गा वा खण्ड १३, पृष्ठ १९४)

नागरी प्रचारिणी सभा का कर्त्तव्य है कि जो पुस्तके डाक्टर जगदीश चन्द्र बसु ने अंग्रेजी मे लिखी हैं, उनका वह हिन्दी मे अनुवाद करे। जर्मनी मे जो विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें तैयार होती है, अंग्रेजी मे दूसरे ही सप्ताह उसका अनुवाद हो जाता है, इसी से वह भाषा प्रौढ है। हिन्दी मे भी ऐसा ही होना चाहिए। (सं० गा० वा० खड १३, पृष्ठ २११)

हिन्दी ही हिन्दुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है, यह बात निर्विवाद सिद्ध है। यह कैसे हो, केवल यही विचार करना है। जिस स्थान को आजकल अंग्रेजी भाषा लेने का प्रयत्न कर रही है और जिसे लेना उसके लिए अरधिव है, वही स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए, क्योकि हिन्दी का उस पर पूर्ण अधिकार है। यह स्थान अंग्रेजी को नही मिल सकता क्योकि वह विदेशी भाषा है और हमारे लिए बडी कठिन है। अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी सीखना बहुत सरल है। हिन्दी बोलने वालो की संख्या प्राय साढे छ करोड है। बगला, बिहारी, उडिया, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पजाबी और सिंधी हिन्दी की बहने हैं। उक्त भाषाओ के बोलने वाले थोडी बहुत हिन्दी समझ तथा बोल लेते है। इन सबको मिलाने से सख्या प्राय २२ करोड हो जाती है। जिस भाषा का इतना प्रचार है उसकी बराबरी करने के लिए अंग्रेजी, जिसे एक लाख भी हिन्दुस्तानी ठीक-ठीक नही बोल सकते, क्योकर समर्थ हो सकती है। आज तक हमारा देशी काम और व्यवहार हिन्दी मे प्रारम्भ नही हो पाया, इसका कारण हमारी भीरुता, अश्रद्धा और हिन्दी भाषा के गौरव का अज्ञान है। यदि हम भीरुता छोड दे, श्रद्धावान बने, हिन्दी का गौरव समझ ल तो हमारी राष्ट्रीय और प्रान्तिक परिषदो तथा सरकारी व्यवस्था सभाओ का काम भी हिन्दी मे चलने लगेगा।

(स० गा० वा० खड १३, पृष्ठ ४२४)

हिन्दी के उत्साही, साहसी, स्वाभिमानी, जोशीले पुरुषो को बिना मूल्य हिन्दी की शिक्षा देने के लिए मद्रास आदि प्रान्तो मे भेजा जाना चाहिए। वे हिन्दी के पराक्रमी प्रचारक बन जाएं तो अल्पकाल ही मे मद्रास आदि प्रान्तो के शिक्षित हिन्दी सीख लेंगे। यदि हम मे उचित जोश हो तो इस प्रश्न का उत्तर केवल त्रैराशिक पर ही रहता है। जितने अधिक शिक्षक भेजे जाए, उतना ही शीघ्र हिन्दी का प्रचार हो जाएगा। शिक्षको के भेजने के साथ ही साथ स्वयं शिक्षण-पुस्तके भी बनानी चाहिए। इन पुस्तको का प्रचार बिना मूल्य होना आवश्यक है। भाषा सीखने की आवश्यकता बतलाने के प्रतिष्ठित वक्ताओ का भेजना भी आवश्यक है।

जैसा प्रचार द्राविड देश मे करना आवश्यक है, वैसा ही प्रचार बम्बई आदि प्रदेश मे भी उचित है। मराठी, गुजराती भाषा-भाषियो के लिए हिन्दी पुस्तके तैयार करवानी चाहिए और उन प्रदेशो मे भी प्रचारक भेजे-जाने चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के रवैये की निन्दा

नई दिल्ली २८ सितम्बर को आर्यसमाज सगठन समिति की बैठक हुई। बैठक मे सर्वसम्मति से पुरानी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-मन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के दिनाक २८ सितम्बर, ६९ के सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित लेख की निन्दा की गई। समिति ने कहा कि यह लेख असत्यता एव अशिष्टता से परिपूर्ण है। समिति ने श्री ओइम् प्रकाश जी त्यागी की इस बात पर बडा आश्चर्य व्यक्त किया कि महात्मा आनन्द भिक्षु जी सब विवादो के स्वय ही सर्वाधिकारी बनना चाहते है। जबकि महात्मा जी प्रारम्भ से ही चारो पक्षो से विवाद समाप्त करने की प्रार्थना कर रहे हैं। महात्मा जी का सुझाव स्पष्ट रूप से प्रकाश मे आ चुका है कि प्रत्येक पक्ष अपनी ओर से दो-दो प्रतिनिधि दे और वे आठो किसी भी १ सर्वसम्मत व्यक्ति को अपना अध्यक्ष मान ले उसके बाद उस अध्यक्ष का निर्णय चारो पक्षो को सर्वथा मान्य होना चाहिये। इतने स्पष्ट वक्तव्य के बाद भी महात्मा जी के प्रति छोटे स्तर के शब्दो का प्रयोग करना यह सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री को शोभा नही देता।

श्री ओइम् प्रकाश जी त्यागी ने अपने उक्त लेख मे आर्यसमाज सगठन समिति को समाप्त करने की भी अनाधिकार घोषणा की है। समिति का निर्माण सभाओ के विवाद समाप्त करने के लिए किया गया है। जब तक उक्त सभाओ के विवाद समाप्त नही होगे तब तक यह समिति निश्चय से कार्यकरती रहेगी। और विवाद समाप्त होने पर आर्यसमाज सगठन समिति उसी क्षण समाप्त कर दी जायेगी। सार्वदेशिक सभा जो कि स्वय एक विवाद ग्रस्त पक्ष है उसे इस प्रकार का वक्तव्य देने का कोई अधिकार नही है। उनके इस प्रकार के उत्तरदायित्वहीन वक्तव्य से सार्वदेशिक सभा के गौरव को हानि पहुंची है।

३ सगठन समिति ने पिछले तीन मास के कार्यक्रमो के प्रति आर्य जनता द्वारा दिये गये सहयोगो की प्रशसा की। तथा दोनों आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और नई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा द्वारा दिये गए सद्भावना पूर्ण सहयोग के लिए उनके अधिकारियो का धन्यवाद किया। समिति ने चौथे पक्ष पुरानी सार्वदेशिकसभा से पुन प्रार्थना की है कि वह भी अपने दो प्रतिनिधि देकर आर्यसमाज के विवाद सुलझाने मे सहयोग दे। अन्त मे समिति के सर्वाधिकारी महात्मा आनन्द भिक्षु जी ने अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को पुन दोहराया कि यदि बातचीत से विवाद नही सुलझे तो मुझे आमरण अनशन करना पडेगा।

उपमन्त्री — कृष्णदत्त दीक्षित

मन्त्री — आर्यसमाज सगठन समिति

भारत मेरा शूर देश है

सास सास मे शौर्य भरा है
बात बात मे ओज भरा है
रण की ही जो गीत जानता
शरणागत की बात मानता
यह हमीर का वीर देश है
जौहरमय जीवन है इसका
शील-शौर्य यौवन है इसका
भारत मे लाखो कुरबानी
सीमा की सुन करुण कहानी
भारत मेरा शूर देश है
भारत से लडना मिटना है
भारत से अडना पिटना है
भारत की सिकता शूरो की
भारत है शासन क्रूरो की
भारत-रिपु की हर शेष है

—सुन्दर लाल बोहरा

आर्यसमाज बस्ती हरफूलसिंह देहली का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार रविवार २८--९--६९ को हुआ .—

प्रधान —श्री नानक चन्द हाडा । उप-प्रधान .—श्री मुकन्दलाल नन्दा । मन्त्री —श्री रामनाथ महगल । कोषाध्यक्ष .—श्री सेठ मुरारी लाल । प्रधान स्त्री समाज .—श्रीमती सुशीला वर्मा । मन्त्राणी— श्रीमती जानकी देवी ।

—निवेदक

मन्त्री

धार्मिक परीक्षाएं

भरतवर्षीय वैदिक सिद्धात परिषद (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश सि० विशारद सि० भूषण, सिद्धान्ताचार्य परीक्षाए आगामी दिसम्बर, जनवरी मे भारत तथा विदेशो मे होगी । उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधिपत्र दिया जाता है । सर्व-प्रथम द्वितीय तृतीय, आने वाले को छात्रवृत्ति की व्यवस्था है । तया अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की नि.शुल्क सत्यार्थ सुधा कर, सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधिया डाक द्वारा प्राप्त करे। १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मंगवाइए ।

आदित्य ब्रह्मचारी — आचार्य मित्रसेन

यशपाल शास्त्री — एम०ए०, सिद्धातालकार

प्रधान — शिक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद

सेवा-सदन, कटरा

आर्य समाज कसौली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कसौली जि० शिमला का वार्षिकोत्सव १, २, ३ अक्तूबर १९६९ को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हो गया । प्रादेशिक सभा की की तरफ से श्री पं० मेला राम जी रेडियो सिंगर व श्री प० चन्द्र ब्रेन् जी आर्य हितैषी पधारे । आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री बलराम जी, श्री जतेन्द्र जी व श्री राम नाथ जी पधारे । एक तारीक को नगर कीर्तन हुआ रात्रि को मण्डी (मारकीट) मे ८ से १०-३० बजे तक संगीत होते रहे । श्री मेला राम जी के संगीतो को जनता ने बहुत पसन्द किया । जतेन्द्र जी का भाषण हुआ । अगले दिन श्री पदम् देव जी मन्त्री वन विभाग हि० प्रे० का महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर बहुत ही प्रभाव शाली व्याख्यान हुआ ।

इस आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री वतर मुनि जी प्रधान, श्री बनारसी दास जी मन्त्री, श्री रामस्वरूप जी ठेकेदार, श्री धर्म पाल जी, श्री ओम् प्रकाश जी तन मन धन से आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं । म.ग के लिए वेद प्रचार तथा मार्ग व्यय कुल १७५/- दिए । सभा सब का धन्यवाद करती है ।

सभा मन्त्री

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (लें० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पजाबी मे] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४ अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६ दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८ ऋग्वेद शतक ० ५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी मे) १.५०
१२. सध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १ ००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानु जी M A. २.००
१४. महात्मा हसराज जी सचित्र (ले० आनन्द स्वामीजी महाराज) १.२५
१५ प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय सग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M A) ०.५०
१८ नवीन प्राचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. ५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, ५०
२१. मुडक उपनिषद (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३७
२२ राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सोमानद जी) उर्दू मे ०.३७
२३ षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १ २५
२४. सीता (ले. आनन्दस्वामीजी) ०.३७
२५ पद्मनी (,, ,, ,,) ० ३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ० २५
२७. Teaching of IshUpanishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A.) अंग्रेजी मे १ २५
२८ वैदिक धर्म मुझे क्यो प्यारा १.५०
२९. जीवन ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है । स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करे ।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आय प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली मे भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते है । उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजे ।

'आर्य जगत् साप्ताहिक'

का

दीपावली के शुभ अवसर

पर

'दीपावली विशेषांक'

निकल रहा है, के लिए सुन्दर-सुन्दर लेख, कविताएं सभा कार्यालय में भेजे । लेख न ही बहुत बड़े और न ही बहुत छोटे हों । कागज के एक तरफ लिखे हों ।

आर्यजगत् में

विज्ञापन छपवाई रेट

पूरा पेज	एक बार	40 रु०
पूरा पेज	वर्ष भर	300 रु०
आधा पेज	एक बार	25 रु०
,,	वर्ष भर	200 रु०
चौथाई पेज	एक बार	15 रु०
,,	वर्ष भर	150 रु०

नोट—विशेष कारण से इन मे अदला-बदली की जा सकती है ।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा०वेदीरामजी एम ए, पी एच.डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत् कार्यलय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ४२) ४ कार्तिक २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१६ अक्तूबर १६६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

शिवो भव प्रजाभ्य:

हे मानव! शिव:कल्याण करने वाला भव-हो प्रजाभ्य: सारी प्रजाओं के लिए। सबको सुखी बना। वेद माता का कितना प्यारा उपदेश है कि हे मनुष्य! इस जीवन में सारे जीवन-मात्र के लिए शिव बन। सुख देने वाला बन किसी को भी कष्ट मत पहुंचा। यदि मनुष्य किसी का दु:ख दूर नहीं कर सकता तो उसे दूसरों को दु:खी करने का भी क्या अधिकार है। दुख देना तो आसुरीपन है। सुख पहुंचाना दैवीपन है। यह मानवी शरीर कष्ट देने के लिए नहीं मिला। हम सदा देखते रहें कि हम शिव बन रहेहैं या अशिव? वेद का उपदेश तो यह है कि शिव बन। सब को सुख दे किसी को भी पीड़ा न दे। सं.

य जु र्वे द से

वे दा मृ त

ओ३म् यस्यवात: प्रानपानौ चक्षुरंगिरसो भवन्
दिशो श्चयक्र`प्राज्ञानिस्तस्मै ज्येष्ठायब्रह्मणोनम:

अर्थ—(यस्य)जिस भगवान का (वात:)आयु (प्राण आपनौ) श्वास और प्रश्वासके समान है और (अंगिरस:) प्रकाशमान किरणावली जिस भगवान का (चक्षु) नेत्र है तथा (दिश:)दिशाओं को (य:) जिस प्रभु ने (चक्रे)बनाया है (प्रज्ञानी) ज्ञान का साधक! उस (ज्येष्ठाय)महान (ब्रह्मणे) परमात्मा को नमस्कार है। परमात्मा के विराट शरीर का सुन्दर वर्णन है।

भाव : परमेश्वर के विराट् शरीर का वेद ने कितना सुन्दर वर्णन किया है। वेद ने सरलता के साथ उपमा दी है जिस प्रकार मनुष्य के शरीर मे नाना प्रकार के भिन्न-भिन्न अंग होते है। ये सारे अंग मिलकर शरीर कहलाता है। उसी प्रकार से उस विराट् पुरुष ब्रह्म के विराट् शरीर का वर्णन है। वायु उस महान प्रभु के श्वास प्रवास के समान कहा गया है। प्रकाश से भरी किरण-माला उस भगवान के नेत्र के समान है। दिशाएं उस विराट् पुरुष के लिए ज्ञान के साधक है। इस प्रकार से यह सारा विशाल ब्रह्मांड उस सर्व-व्यापक ब्रह्म का विराट् शरीर माना गया है: उसी को नमस्कार करो। सं.

ऋषि दर्शन

सर्वंवेदात् प्रसिद्धयति

अर्थ-सर्व-सब कुछ वेदांत से प्रसिद्धियति-प्रसिद्ध होता है, मिलताहै वेद से जीवन में सब कुछ प्राप्त होता है।

भाव-महात्मा मनु जी से पूछा कि हम वेदों को क्यों पढ़ें? वेदों के पठन-पाठन और सुनने सुनाने से क्या मिलेगा? मनु महा-राज ने उत्तर दिया था—किसी वस्तु से एक बात मिलती और किसी से दो। किंतु वेद तो ऐसा भण्डार है। यह तो ऐसा कल्पवृक्ष है जिससे मनुष्य को सब कुछ ही प्राप्त हो जाता है। आत्मा व परमात्मा का ज्ञान,जीवन सुख,सच्ची शांति' धन-ऐश्वर्य सब कुछ वेदो से मिलता है। वेद के उपदेश धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष रूपी चारो फलों के दाता हैं।

मनुस्मृति से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

अनार का उपयोग

श्री गोविन्द जी

'एक अनार सौ बीमार' बहुत पुरानी कहावत है। इस कहावत के पीछे कोई आकर्षक और मनोरंजक कहानी रही होगी। ऐसा मालूम होता है कि किसी जमाने मे लोगो को किसी ऐसी बीमारी का पता चला होगा, जिसकी एकमात्र रामबाण औषधि अनार ही होगा और उस समय बीमार तो सैकडों होंगे, लेकिन अनार एक ही मिल सका होगा। यह भी हो सकता है, इस मुहाविरे के पीछे कोई और ही कहानी हो, क्योंकि ऊपर की कहानी का निर्माण तो केवल कल्पना के सहारे हुआ है। इस मुहावरे का प्रयोग बोलने और लिखने में विभिन्न प्रकार से किया जाता है, लेकिन इस से यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि अनार बीमारियो की अचूक दवा है। इस से सचमुच ही कई बीमारियो का इलाज होता है। इस लेख मे अनार की उपयोगिता पर विचार करते हुए यह बताने की कोशिश की जा रही है कि अनार किन-किन बीमारियों के लिए औषधि का काम करता है।

आख की बहुत-सी बीमारियों और खराबियों के लिए अनार अकसीर दवा है। अनार के दानो के रस को तांबे की कटोरी मे डाल कर आग पर पकाये। जब रस गाढा हो जाये, तो एक डिबिया मे रख लें। बराबर एक सलाई से आखो मे लगाने से, आखों का जलना, पलको के बाल गिरना, आखो का लाल हो जाना आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं। आखों की लालिमा और दर्द के लिए भी अनार बहुत मुफीद है। खट्टे अनारो के सूखे दानो को पानी मे भिगो कर मलें। इस प्रकार पांच तोले के लगभग पानी तैयार कर के उन मे एक माशा अफीम और तीन माशा फिटकरी मिला कर आग पर पका दे। जब सब पानी भाप बनकर उड़ जाए और बर्तन मे गीली कोई चीज रह जाए तो लम्बी-लम्बी गोलिया पेन्सिल नुमा बना कर रख लें आख लाल होने पर गुलाब जल मे गोली घिसकर आंखों के इर्द-गिर्द चारो ओर लेप कर दे। पहिली बार लगाने से ही फायदा मालूम होगा। अगर गुलाब जल न मिले तो भी काम मे ला सकते हैं।

अगर दातो या मसूडों मे खून आता हो, तो उसे बन्द करने के लिए अनार को काम मे लावे। पहले अनार के फूल को छाया में सुखाकर बहुत बारीक पीस लें और मजन की तरह मुंह धोते समय उसका इस्तेमाल करे। इससे निश्चित रूप से दातो या मसूड़ों से खून गिरना बन्द हो जाएगा और हिलने वाले दात भी मजबूत हो जाते हैं।

पेट के दद मे भी अनार को काम मे लाया जाता है। उसकी प्रयोग-विधि इस प्रकार है—पहिले अनार के दानो को निकाल लीजिए। नमक और काली मिर्च छोड़ कर उस का रस चूस लीजिए। चूसने के बाद निश्चित रूप से पेट का दर्द हवा हो जाएगा। जिन लोगो को मन्दाग्नि का रोग हो, उन्हें भी इससे काफी फायदा होगा।

एक सेर अनार का रस किसी स्वच्छ बर्तन में घंटों के लिए रख दीजिए, ताकि वह निथर जाए। फिर निथरा हुआ रस दूसरे किसी बर्तन में डाल कर उसमे पाव भर मिसरी मिलावें। इसके बाद महीन सौंफ का एक तोला चूर्ण उसमे मिला दीजिए। अब रस को बोतलो में भर ले। यह ध्यान रहे कि बोतल एक तिहाई खाली रहे। बोतल मे काक लगा कर उसे धूप में रख दीजिए। कभी-कभी उसे हिलाते भी रहिए। एक सप्ताह के बाद अगर यकृत और पेट की भयकर बीमारियो से आक्रात व्यक्ति इसका सेवन करे, तो निश्चित रूप से उन्हें लाभ होगा। यह औषधि रोगी को दिन मे दो बार तीन तोला से छः तोला तक सेवन करना चाहिए। इसके सेवन से शरीर पुष्ट होता है, भूख लगती है और चेहरे का रंग लाल हो जाता है।

अनार के दानो का एक छटाक रस रात को लोटे के किसी स्वच्छ बर्तन मे रख दे। सुबह थोडी मिसरी मिलाकर अगर रक्त विकार के रोगी सेवन करें तो जल्द ही उनका रक्त शुद्ध हो जाए और नया खून पैदा हो।

अनार का शरबत भी बनाया जाता है। इसकी बनाने की विधि निम्न प्रकार है—अनार के दानों को निचोड़कर एक सेर रस निकाल लें। अब रस में पांच सेर खांड मिलाकर उसका सीरप बना लें। पांच तोला सीरप आधा पानी में मिला कर शरबत बनायें। इस शरबत को गर्मियों में पीने से शरीर शीतल रहता है और जल्दी-जल्दी प्यास नहीं लगती। रक्तचाप के रोगियों के लिए भी यह शरबत लाभप्रद है। इसके सेवन से बेचैनी और दिल की धड़कन दूर हो जाती है।

ज्वर में रोगियों को प्यास बहुत लगती है। अगर उस समय पांच तोला अनारदाना मिट्टी के बर्तन में एक सेर पानी डाल कर भिगोकर रखें और थोडा-थोड़ा निथारकर रोगी को पीने के लिए दें, तो उसकी प्यास नहीं बढती और ज्वर भी नर्म हो जाता है।

जिन लोगों को मन्दाग्नि का रोग है, उनको चाहिए कि मीठे अनार का रस दो छटांक, खट्टे अनार का रस दो छटाक, सेब का रस एक पाव, सन्तरे का रस एक पाव, हरे पुदीने का रस एक पाव और दो सेर मिसरी मिलाकर शरबत तैयार करले। अगर वे प्रातः,साय, तीन-तीन तोला शरबत पियें तो पुराने से पुराने मन्दाग्नि रोग का नाश हो जाता है और खुलकर भूख लगने लगती है। विशुचिका के रोग में भी यह शरबत लाभदायक है।

अनार ही एक ऐसा फल है, जिसके छिलके, फूल और बीज तक काम में आते हैं। अनार का छिलका बीस औंस कूटकर दो सेर पानी मे तांबे के बर्तन में गरम करें। जब आधा सेर पानी रह जाए तो उतार कर छान लें। फिर दो बार आग पर रखें। जब शहद की तरह गाढ़ा हो जाये तो ठडा करके शीशी मे भर ले और सवेरे शाम सलाई से आख मे लगावें इसको लगाने से आंखों की धुन्ध और जलन दूर जाती है। रतौंधी के लिए यह नुस्खा रामबाण है।

खासी की दवा मे भी अनार काम मे लाया जाता है। अगर किसी की खासी न छूटती हो तो उसे चाहिए कि वह अनार का छिलका आठ भाग और सेधा नमक एक हिस्सा लेकर दोनों को खूब बारीक पीसकर कपडे से छान करक पानी के साथ एक एक माशा की गोलिया बना ले और दिन मे तीन बार मुंह मे रखं चूसे ऐसा करने से खासी जरूर ही दूर हो जाएगी। बवासीर के रोगियों को चाहिए कि वे अनार का छिल्का बारीक पीसकर छः माशा प्रातः और छः माशा सन्ध्या को ताजा पानी के साथ सेवन करें। ऐसा करने से खूनी बवासीर का रोग सदा के लिए भाग जाता है।

कुछ लोगो के मुंह से बडी दुर्गन्धि निकला करती है, जिसके कारण कोई भी व्यक्ति उनके नजदीक फटकना नही चाहता। ऐसे लोगों को चाहिए कि वे अनार की शरण जायें। तीन माशा पिसा हुआ अनार का छिलका खाने और अनार के छिलके को उबाल कर उबले हुये पानी से गरारा करने पर मुंह की दुर्गन्धि दूर हो जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सैकड़ों बीमारियों को अकेला अनार ही दूर करने मे सक्षम है।

(आर्य प्रेमी से साभार)

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष ३१] रविवार २०२६, १९ अक्तूबर १९६९ [अंक ४२

धर्म और अर्थ

वैदिक संस्कृति में मानव जीवन के लिए चार वर्ग को प्राप्त करना उसका प्रयोजन माना गया है—ये हैं धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष। इन का आपस में क्रम भी निश्चित है। सब से प्रथम स्थान तो धर्म को दिया गया है। उसके अनुकूल अर्थ या धन को मिलना चाहिए। इसी धर्म से मिले हुए अर्थ से काम को प्राप्त किया जाता है—तीनों को प्राप्त करते हुए बन्धनो से छुटकारा पाने का विधान है। पुरातन युगो में धरती के मानव समाज मे किसी वस्तु की भी कमी नहीं थी। सत्ता थी, नगरों में भव्य भवन थे, भौतिक सम्पत्तियों के भण्डार थे। सोने-चांदी में परिवारी खेलते थे। ज्ञान-विज्ञान की भी पराकाष्ठा थी। जीवन के लिए जिन-जिन पदार्थों की आवश्यकता होती है—वे तमाम जुटे हुए थे। सम्पन्नता तथा समृद्धि का सुनहला युग था। यह सब कुछ था, इसके साथ-साथ देवताओं का राज्य चलता था। इस तमाम धरातल पर कोई चोर न था, डाकू और अनाचारी न था। पाप कर्म को करने वाला न था। चारों ओर देवत्व की ज्योति जगमगाती थी। मानवता का मान था। राजा भी सदाचार की मूर्ति थे तथा प्रजा भी आदर्श जीवन वाली थी। आखें पवित्र थीं, वाणी मीठी, कर्म प्रशसित तथा मन पुनीत विचारो का केन्द्र था। इसका कारण यह था कि सभी के जीवन मे धर्म का प्यार भरा हुआ था। धन से मालामाल तो थे किन्तु वह धन धर्म के अनुकूल था। उसमे धर्म को प्रमुखता दी गई थी। धर्म केन्द्र बना हुआ था। धर्म प्राण था, इसके द्वारा सभी को जीवन रस व कार्यशक्ति मिलती रहती थी। सर्वत्र शाति व प्रेम का राज्य था। किन्तु जिस समय इस क्रम में तनिक भी गड़बड़ हुई। लोगो के विचारो मे धर्म की प्रमुखता न रही। उसका स्थान धन ने ले लिया। धन प्रत्येक कार्य में प्रधान बनने लगा। धन पर धर्म का अकुश समाप्त होने लगा। धन का ही बोल बाला होता गया—परस्पर धन कमाने की होड लगी। धर्म की प्रतिष्ठा कम होकर धन की ही पूजा प्रारम्भ हो गई। जीवन मे सब कुछ धन ही बन गया। इसे जुटाने के लिए कमाने बनाने के निमित्त एक-दूसरे से बढ-चढकर दौड जारी हो गई। इसे प्राप्त करने के लिए पाप का सहारा लिया जाने लगा। लूट-खसूट, शोषण मारण प्रारम्भ हो गया। यहा तक कि लक्ष्मी को रिझाने के लिए लक्ष्मी पति भी विस्मरण कर दिया गया। धन-पति स्वय भगवान बनने की घोषणा करने लगा। हर क्षेत्र मे धन ही आगे आ गया। धर्म को दबा दिया गया और अन्त में जब उसे मार ही दिया गया—धर्म के अनुकूल धन के स्थान पर, धन के अनुकूल धर्म को कठ पुतली बना कर रख दिया गया। धर्म-प्रचारक धन वालों के खरीदे गुलाम बन गए। उनके ही नाम काम क प्रसारक व एजेंट बन गए। धन पतियो ने अपने पैसे के बल पर पुस्तको मे जो चाहा लिखवा लिया, जो चाहा मनवा व बनवा लिया—उस समय जितना धर्म का अपमान हुआ उसका वर्णन क्या किया जाए? किन्तु ऋषियो ने मन के रूप में एक चेतावनी प्रारम्भ मे ही दे दी थी कि धर्म एव हतो हन्ति - जब कोई व्यक्ति, परिवार, समाज, देश या सारा विश्व का जनजीवन धर्म को मार देता है तो याद रखें वह मरा हुआ धर्म सारे जीवन को मार कर रख देता है। धर्म कभी मरता नही अमर है। उसे मारने या धन के जोर से दबाने वाला समझता है कि मेरे सामने धर्म तथा धर्मी क्या बोल सकते हैं या कर सकते है—किन्तु समय पर यही धर्म उन बड़े-बडे हिरण्यकशिपु नहुषं, कस, रावण, जरासन्ध जैसे अभिमानियो को वह मार मारता है कि उनका नाम तक भी मिट जाता है। धर्म के बिना धन किस काम का है? वेद में धन की कहीं भी निन्दा नही की गई वरन सौ-सौ हाथो से धन कमाने का उपदेश मिलता है—किन्तु उस धन का जो धर्म से मिला हुआ हो। धर्म से हीन अर्थात अधर्म से कमाया हुआ धन जीवन को नीचे गिरा देता है। लक्ष्मी हो तो धर्म से प्राप्त की गई हो। आज का यह युग तो सर्वथा पैसे का युग है। यह ठीक है कि पैसे के बिना कार्य नही चलता। जिसके पास चार पैसे नही हैं उनका समाज मे कुछ मूल्य, सत्कार नही है। चाहे उसका जीवन कितना अच्छा भी क्यो न हो। जीवन आचार विचार की इस समय कुछ कीमत नही—चार पैसो की पूजा है। चाहे कोई शराबी हो, रोज नाना प्रकार का मास खाता हो, अनाचारी हो एव सारे पापो का केन्द्र बना हो यदि धनपति है तो उसका स्थान ऊंचा है। सन्यासी महात्मा उन से घटिया हैं। आज धर्म को धन ने फिर दबा दिया है सत्य, सत्य ही रहेगा धर्म का बोल-बाला होगा। खेद है कि हमारे समाज मे भी यही प्रवृत्ति पनपने लगी है तभी अशान्ति है। धर्म को प्रमुखता दो। धर्मात्माओ का सम्मान करो। धन पर धर्म का अकुश लगाये रखो। पूर्व की यही धर्मप्रधान सस्कृति है।

—त्रिलोकचन्द्र

बड़े गौरव की बात

आर्यसमाज के लिए यह बात बडे गौरव की है कि इसकी शिक्षण संस्थाओ मे बिना किसी भेद भावना के हजारो छात्र छात्राए प्रविष्ट होकर शिक्षा प्राप्त करते हैं सबसे गौरव की यह बात है कि हमारे इन सस्थानोमे केवल प्रातो के नही वरन बाहर के भी छात्र आकर शिक्षा ग्रहण करते रहते हैं। डी ए वी की विशाल-धारा का जब प्रवाह प्रारम्भ हुआ तो सब. पहला स्कूल कालेज डी ए वी कालेज लाहौर का था आजकल यह कालेज डी ए. वी कालेज अम्बाला शहर मे कार्य कर रहा है। हमारा प्रत्येक कालेज जालन्धर का हो या अमृतसर का, अबोहर का हो या चण्डीगढ देहली का, हिसार का हो या शोलापुर का—अपने रूप मे आप ही है। हा अबाला डी ए. वी कालेज मे इस समय सिगापुर, मलाया, बर्मा, नागालैंड, मणिपुर, उडीसा, करल आदि के छात्र भी विद्या पढते हैं। कितनी प्रसन्नता की बात है कि आज भी देश विदेश से कितने ही छात्र हमारी इन संस्थानो मे पढने के लिये आते हैं। यह हमारे शिक्षण केन्द्रो की बडी विशेषता है हमारे कालेजो का दूर तक भी इतना मान है कि सिगापुर, मणिपुर, केरल, मलाया आदि से भी चलकर छात्र आते हैं। हम माननीय प्रिंसिपल भगवान दास जी डी. ए. वी. कालेज अम्बाला को इसके लिए बधाई देते है। —स.

आर्य स्पैशल ट्रेन

प्रति वर्ष आर्यसमाज के केन्द्र बने हुए देहली से आर्य स्पेशल ट्रेन चलती है। इसका बडा लाभ है। प्रचार का तो यह बहुत बडा साधन है। मार्ग में जिन-जिन नगरो मे यह गाड़ी रुकती है, वहा के आर्य-समाजो के द्वारा यात्रियो का विशेष सम्मान तो होता रहता है। सारे नगर मे आर्यसमाज की धूम मच जाती है। आर्यसमाज, वैदिक धर्म और ऋषि दयानन्द की जय से गगन भर जाता है। इस बार यह स्पैशल गाड़ी देहली से चल कर ऋषि की निर्वाणस्थली अजमेर तो जायगी साथ-साथ जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बम्बई, पूना आदि नगरो का भ्रमण कराती हुई गोवा भी जा रही है। गोवा पर पुर्तगाल का राज्य रहा है चार सौ वर्षों बाद गोवा भारत का भाग बना। वहा पर आर्यसमाज नही बन सकती थी न ही प्रचार हो सकता था। किन्तु अब वहा समाजो का जाल बिछा दिया गया है। पहिली बार शतियो के बाद आर्य महासम्मेलन हो रहा है। यात्री गोवा मे समाज प्रचार का रूप भी देख सकेंगे। इस प्रकार आर्यों को स्पैशल ट्रेन से भारत मे बडा ही धर्म प्रचार होगा। इस बार इस ट्रेन मे स्वामी विद्यानन्द जी विदेह जैसे बडे-बडे नेता भी जा रहे हैं। प्रभु करे कि इस के द्वारा सारे राष्ट्र मे वैदिक धर्म का कोने-कोने मे प्रचार हो सके।

※ सदा इस बात का ध्यान रक्खो कि हमारी किसी क्रिया से किसी का अहित न हो, किसी को दुःख न हो। यदि हम किसी को दुःख पहुचाते है, किसी के अहित का कारण बनते है, तो निश्चय ही प्रभु की अवज्ञा करते है।

ऋषि दयानन्द के देहान्त के ५ वर्ष पश्चात् प्रकाशित—

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित

डा. भवानीलालजी भारतीय, एम.ए. पी एच-डी. हिंदीविभाग, गवर्न. कालेज, अजमेर

(गताक से आगे)

सबसे पहिले स १९३१ मे आर्य समाज बम्बई मे स्थापित हो गई थी, दूसरी सन १८८७ मे लाहौर में समाज कायम हो गई थी, अर्थात् आपके विद्यमान ही मे ८० समाजें कायम हो गई थी पर अब तो ६०० समाजें देश देशान्तरो मे हैं और इन्ही के सामने अब धर्म सभा भी बहुत हो गई हैं, पर अब टूटती जाती हैं।

यद्यपि आपके वेद भाष्य पर शंका कई महाशयो ने समाचार पत्र द्वारा तथा पुस्तकाकार छपाई परन्तु स्वामी जी ने 'भ्रान्ति निवारण' में पं. महेश चन्द न्याय रत्न के प्रश्नो का उत्तर तथा सबका समाचार पत्रो द्वारा उत्तर देते रहे और पं. राम लाल ने भी स. १९३२ मे मूर्ति प्रकाश बनाया कि जिसमे मन्त्र सहिता से मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सके और-और गते रहे। यों तो आपके विद्यमान ही मे आपके विरुद्ध कई लेख छप गए थे जैसे कि अबोध-निवारण इत्यादि और पीछे भी बहुत सी पुस्तकें आपके विरुद्ध छपी जैसे अप्रतिम प्रतिमा, सत्यार्थ भास्कर, और आर्य समाजी रहस्य इत्यादि कई छपीं परन्तु अप्रतिम प्रतिमा का खण्डन तो पं. कृपा राम समाज देहरादून ने किया और सत्यार्थ भास्कर का खण्डन प. आनन्दी लाल शर्मा समाज बांदीकुई ने किया, इसी तरह ब्रह्म समाज वालों ने भी 'स्वामी दयानन्द और उनका नया पथ। करके छापी थी कि जिसका उत्तर 'इसरार ब्रह्म पंथ, हाफजाबाद पजाब के लाला राधा कृष्ण वा लाला मनोहरलाल ने दिया। ऐसा ही कई जगह पुस्तक का पुस्तक द्वारा खण्डन समाचार पत्रो का समाचारपत्रों द्वारा खण्डन होता रहा जैसे हिन्दुस्थान पत्र मे बालमुकुन्द[1] शाह सम्पादक कोहनूर के उतर मे मैंने ही जवाब दिया था और यह बात देवनागरी मे ही नहीं बल्कि उर्दू, अंग्रेजी इत्यादि के लेखो का जवाब उन्हीं शब्दों के पत्र द्वारा होता रहा। निदान हम सब से अधिक अब पण्डितवर भीमसेन जी शर्मा व प० ज्वालादत्त जी को धन्यवाद देते है कि जो स्वामी जी के विरुद्ध लेख पुस्तक द्वारा छापे हैं वा छापते हैं तथा समाचार-पत्रो द्वारा छापते हैं तिनका मासिक पत्र द्वारा (अर्थात् आर्य सिद्धान्त द्वारा) सत्य शास्त्रानुकूल उत्तर दिये जाते हैं और शास्त्रार्थ भी किये जाते हैं। भला यह क्या कम विद्वानी का काम है बहुत ! बहुत !! बहुत !!! पण्डित जी सब की सर्व शकाओ को दूर करेंगे जैसे कि 'महामोहविद्रावण' का आर्यसमाजीय रहस्य और धर्म दिवाकर व धर्म मुशाविरा नाम समाचार पत्रो को है' और करते रहेंगे।

मित्र सच पूछो तो यह बात है कि सहिता में कही भी पाषाणादि मूर्ति-पूजा करने वा पाषाणादि मे ईश्वर भाव स्थापन करने का कोई भी मन्त्र नही हैं क्योकि होता तो आज ५ मास से आर्यावर्त मे ५००० का विज्ञापन है कि यह रु० उसको दिया जायेगा कि जो चारो वेदो में प्रतिमा पूजा सिद्ध कर दे। यद्यपि कई महाशय 'सारसुधानिधि' द्वारा इस पर आन्दोलन कर रहे है कि जिसकी पुस्तक एक जुदी आपको दिखावेंगे) जिस का सार आज तक कुछ नही और न कुछ आगामी निकलेगा क्योकि जो चीज वेद मे है नही तो कहा से आवे। हां वेद को छोड बुढेया पुराण अथवा गडबड स्मृतियो मे मूर्ति पूजा नही है जैसे श्री नवीनचन्द्र राय 'धर्म रक्षा सरीक मे लिखते है कि (बुतपरस्ती) यह वेदो के सिद्धान्त के खिलाफ है। अस्तु ! और वही आप स्वामी जी की भी राय प्रकट करते हैं। निदान अब और लो साहब — 'मूर्ति मुद्गर' में यही लिखते हैं कि एक दिग्विजयी महा पण्डित दयानन्द सरस्वती ने जिसका नाम भारतवर्ष के लोग बहुत दिनो तक स्मरण रखेंगे और जिसकी सस्कृत के ज्ञान की सराहना सब कोई करते हैं। जिसने वेद को भली-भांति पढा और उसका अनुवाद भी हिन्दी में कितनी दूर तक किया था' विद्वानों का तो यह लेख है और स्वार्थी व हठी जिद्दियों का कुछ कहना ही नही क्योंकि 'अर्थी दोषो न पश्यति' क्या न किया जाये और क्या न कर सके कि जब पूर्वोक्त लेख पादरी साहब का है तो इस देश के बनिये बकालो को क्या कहना है। जरा मे कुछ मन के मूजब न बनी तभी तुम कहां और हम कहा जैसे मुरादाबाद वालो की कहानी है कि जो सब पर विदित है। अब वह विद्वान हो गये 'सत्यार्थ प्रकाश का खण्डन करने लग गये, नमस्ते कहने का भी खण्डन करने लग गये।

क्यों जी आप तो धर्म सभा के हैं। क्या धर्मसभा में भी आपकी बनाई पुस्तकें अर्थात् आर्य प्रश्नोत्तरी, वर्णव्यवस्था और मूर्ति तत्वनिरूपण[1] वा मानवधर्म विचार माना जाता है। यह वही मिसाल है कि मुझ से ही आग लाई नाम धरा बसंदर (अब आप धर्म उपदेशक धर्मशिक्षक भूले हुओं को राह बताने वाले हो गये। खैर जो हो, निदान स्वामी जी की प्रशंसा के लेख अनेक मनुष्यों की तरफ से लिखे हुए यदि हम इकट्ठे करें तो एक पुस्तक जुदी हो जाये। इस से प० श्री गोपालराव हरि जी कृत 'दयानन्द दिग्विजयार्थ देखे तथा आर्य समाज का खुलासा अहवाल मुन्शी समर्थदान कृत आर्य समाज परिचय। मे लिखा है सो देखें और जो फायदे आर्यसमाज से हुए हैं अर्थात् एकता याने एक की विपत्ति में दूसरा सहाय करने वाला सो तो अब इस सभा से दूसरे का उद्योग ही नही देखते। अर्थात् अभी थोड़े दिन की बात है कि पं० मथुराप्रसाद का झगड़ा था सो दूर-दूर से सहायता मिली। परमेश्वर करे इस आर्यसमाज कि जिसके सभासद बुद्धिमान हैं हर तरह से मदद की जो इसके मन का साहस दिन दूना रात चौगन बढता रहे। बहु किम् !

और हम स्वार्थी सम्पादक का पत्र प्रेरक का पुस्तक रचने वालों की क्या रीस करेंगे कि जो सदैव ही स्वामी जी तथा आर्य समाजियों की निंदा मे काला कागज कर मग्न चित रहते है कि जिनको सिवाय निंदा के तथा गाली देने के दूसरा काम ही नहीं। सो ऐसे ही लोगों ने जगत मे अन्धकार मचा रखा है सो परमेश्वर शान्ति करेगा। ज्यादा क्या क्योंकि यह नही सोचते कि आर्यसमाजियो की कोशिश से आज १५० से ऊपर गोरक्षिणी सभा स्थापित हो गई और होती जाती है तथा कितने ही हिंदुओं को ईसाई, मुहम्मदी होने से बचाया।

और हम तो उनको धन्यवाद ही देते हैं कि यही लोग आर्यसमाजियों को सचेत भी करते हैं नही तो आलस्य मे पड़ जाएं। ★★

1. ये हिन्दी मे प्रसिद्ध गद्य लेखक बाबू बालमुकुन्द गुप्त थे।

★1 ये ग्रन्थ मुन्शी जगन्नाथ लिखित है।

संग्रहकर्ता—श्री रामपथिक छुटमलपुर

★ जो काम तुम स्वय नही चाहते वह दूसरों के लिए भी कदापि मत करो।

★ भाषण करने वाले के जीवन को मत देखो। बल्कि वह जो कहता है उसपर पूर्ण ध्यान दो।

★ बडा मानव वही है जिसकी विशेषताओं से ही लोग उसे बड़ा माने।

★ शरीर को बुरे प्रयोग से रोकने की अपेक्षा जिह्वा (वाणी) को बुरे प्रयोग से रोकना बहुत कठिन है।

★ लिखते हुए मनुष्य की आज्ञा बिना उसे मत पढ़ो।

★ अपने बडों का स्वागत हृदय मन्दिर से करो।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह

[श्री मनुदेव जी 'अभय' विद्यावाचस्पति, एम० ए०, इन्दौर]

यह सर्वमान्य सिद्धात है कि जिस जाति में आत्मोत्सर्ग, त्याग, कष्ट सहिष्णुता तथा प्रगति करने की भावना जिसकी जितनी अधिक मात्रा मे होगी, वह जाति ससार मे उतने ही अधिक समय तक जीवित एवं जाग्रत रहेगी। ससार में अनेक जातियो, संस्कृतियो तथा सभ्यताओं का जन्म हुआ, उनका विकास हुआ और वे काल-चक्रानुसार नष्ट होकर इतिहास के पृष्ठो में सिकुड़कर अंकित हो गई। परन्तु हमारी यह आर्य (हिंदू) जाति अपने जन्मगत स्वभाव के अनुसार अभी तक जीवित और जागृत है। इसे अनेक विदेशियोंने पैरो तले रौंदा, परन्तु त्याग और बलिदान की अदम्य भावनाके कारण अभी तक इसके अस्तित्वको नही मिटाया जा सका।

इसी परम्परा के अनुसार आज से ३०वर्ष पूर्व हैदराबाद (दक्षिण) के निजामने मुल्ला-मौलवियोके कहने से राज्य मे रहने वाली प्रजाके एक प्रमुख अर्थात हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों का अपहरण कर लिया। वहा का इस्लामी शासक निजाम हैदराबाद को दारूल-इस्लाम राज्य बनाना चाहता था। दारूल इस्लाम और दारूल हबब ये दो शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इस्लाम की शरियत के अनुसार प्रत्येक सच्चे मुसलमान को दारूश-इस्लाम में अर्थात् गैर-काफिर मुल्क मे रहना चाहिए। यदि वह देश इस्लाम की शरियत के अनुसार नही हैं, तो वहा के मुसलमानों का कर्तव्य है कि वे वहा दारूल अथवा इस्लामी राज्य बनाने का निरतर प्रयत्न करे। यदि दारूल-इस्लाम अथवा इस्लाम मे रहने वाले गैर-मुस्लिम हो तो उन्हे प्रलोभन, आतंक, मृत्यु-भय बताकर तथा धार्मिक अधिकारो का अपहरण कर उन्हे, इस्लाम ग्रहण करने को बाध्य किया जावे। इस्लाम की इसी शरीयत के अनुसार सन् १९३९ में हैदराबाद के निजाम ने अपने राज्य मे हिन्दुओं को नवीन मन्दिर बनाने, कथा आदि करने संसार आदि के अवसरों पर यज्ञ आदि करने तथा धार्मिक समारोह मनाने पर प्रतिबंध लगा दिया। नागरिको के धार्मिक अधिकारो का यह अपहरण उस समय हुआ था, जब सन १९३५ के बाद असतुष्ट होकर देश के अनेक राज्यो मे कांग्रेस के मन्त्रिमण्डलो ने अपने त्याग पत्र प्रस्तुत कर दिये। अग्रेज इस राजनैनिक गतिरोध का लाभ साम्प्रदायिक विद्वेश को उभारने तथा दंगो के माध्यम से लेना चाहते थे। अन्य प्रान्तो की अपेक्षा हैदराबाद (दक्षिण) मे हिन्दुओ की धार्मिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई।

इस विशाल हिन्दू जाति के विभिन्न आचार्यों ने अपने-अपने विचारो के अनुसार अलग-अलग मत या सम्प्रदाय स्थापित किये हैं। परन्तु सम्पूर्ण हिन्दू जाति न तो कोई सम्प्रदाय विशेष है और न मत विशेष। हिन्दू एक राष्ट्रीय नाम है और भारत मे रहने वाली इस जाति का मध्ययुगीन नाम है। जब आर्यसमाज के नेताओं के सम्मुख हिन्दुओ के धार्मिक अधिकारों के अपहरण की बात आई, तब आर्य नेताओ ने अपनी सस्कृति के अनुसार शालीनता की नीति अपनाई। पहिले अंगद के समान बुद्धिमान आर्य श्रेष्ठ जनों को निज़ाम के पास भेजा गया तथा उनसे धार्मिक प्रतिबंधों को हटाने की प्रार्थना की गई परन्तु वह भी निष्फल रहीं। आर्य समाज अभी 'हनुमान' को हैदराबाद नही भेजना चाहता था। महात्मा गांधी एवं पं० जवाहरलाल नेहरू को भी इस विवाद मे मध्यस्थ बनाया गया, परन्तु सब व्यर्थ रहा। इसके अतिरिक्त आर्य-सस्कृति के अनुसार जितने भी प्रयत्न किये जा सकते थे, वे सब किये गये। परन्तु निजाम अपने दुराग्रह से टस से मस नही हुआ। अन्त मे इस विशाल हिन्दू जाति की संस्कृति, धर्म, सभ्यता तथा धार्मिक स्थानों की रक्षा करने तथा हिन्दुओं के धार्मिक—अधिकारों की पुनः दिलवाने के लिए आर्यों की सार्वदेशिक सभा ने आन्दोलन के विरुद्ध आन्दोलन की रणभेरी बजा दी।

८ अगस्त १९३९ में सर्व प्रथम महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्वमे देशवीरोंका एक समूह सत्याग्रह करने, प्रतिबंध तोडने के लिए हैदराबाद मे प्रविष्ट हुआ। राज्य पुलिस ने उसे तत्काल गिरफ्तार कर लिया। फिर क्या था.. देश के विभिन्न प्रांतों से विभिन्न भाषा-भाषी आर्य जनता हजारों-लाखों की सख्या मे सत्याग्रह करने हेतु विशेष रेलगाड़ियो द्वारा हैदराबाद की ओर चल पडी। लाखो सत्याग्रहियो के बन्दी बनाकर जेलो मे ठूंस दिया गया। उन पर अभियोग लगाकर मुकद्दमे चलाए गए। जेलो मे बन्द सत्याग्रहियो पर लाठियों से प्रहार किया गया। सीमेंट, ककर, तथा पत्थर मिली हुई रोटिया दी गईं। सम्पूर्ण देश मे एक विशेष हल चल मच गई। आश्चर्य है कि पूज्य महात्मा गाधी इस सत्याग्रह की गतिविधियो की जानकारी मौलाना आजाद से लिया करते थे। बाबू घनश्यामसिंहजी गुप्त जो कि महात्मा गाधी के विश्वास पात्र भक्त थे, उनकी पूर्ण उपेक्षा की गई। प० नेहरू के समान समाजवादी व्यक्ति भी इस सत्याग्रह के पक्ष मे अपनी राय प्रकट करने लगे। आर्यसमाज को यह सत्याग्रह प्रायः आठ महीने चलाना पडा। इसमे प्रायः ४-५ लाख रुपया खर्च किया गया। निजाम की तानाशाही के कारण १७० व्यक्तियो को अपने प्राण त्यागने पड़े। परन्तु आर्यसमाज इसपर भी निराश नही हुआ।

अन्त मे आततायी निजाम को हमारे इस धर्म-युद्ध के सम्मुख झुकना पडा। आर्यसमाज की महान् विजय हुई और जेलो मे बन्द सत्याग्रहियों को निर्दोष बताकर छोडा गया। सम्पूर्ण हैदराबार राज्य के समस्त हिंदुओ को उनके सम्पूर्ण धार्मिक अधिकार पुनः प्रदान किए गए। इस प्रकार निजाम हैदराबाद से इस धर्म युद्ध मे विजयी आर्य समाज ने सन १९३९ मे ही इस रियासत को अपने निमन्त्रण मे ले लिया था। ठीक इसी प्रकार सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने ढाई दिन के सैनिक आक्रमण द्वारा इस राज्य पर राजनैतिक अधिकार कर भारतीय संघ मे विलय कर दिया। परन्तु हम यहा पुनः सगर्व घोषणा करना चाहते हैं कि सन १९३९ मे यदि आर्य समाज हैदराबाद पर अपनी धार्मिक विजय पताका नही फहराता तो यह निश्चित था कि सन् १९४९ मे निजाम के शाही महल पर तिरंगा ध्वज भी नही फहरा सकता था। इस प्रकार आर्य समाज के वीर सत्याग्रहियो ने हैदराबाद पर विजय प्राप्त देश को एक महान भावी संकट से बचा लिया।

आज इन महान बलिदानी आत्माओ के प्रति किन शब्दो द्वारा विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित की जावे, इन पक्तियो के लेखक के पास शब्द नहीं है। इनका महान त्याग भारतीय इतिहास मे सृष्टि के अन्त तक सूर्य-चन्द्र की भाति चमकता रहेगा। हमे इन बलिदानियो के जीवन से आत्मोत्सर्ग प्रेरणा लेना होगी तथा देश पर आने वाले भावी सकटो से अपने बलिदान द्वारा उसे बचाना होगा। जाति, धर्म और देश पर बलिदान होने वाले समस्त ज्ञात-अज्ञात वीरो को मेरा पुन. विनम्र प्रणाम।

करतारपुर का मेला

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति की ओर से करतारपुर मे गुरु-मेला समारोह बडी ही धूमधाम से मनाया जा रहा है। अपने महान् गुरु देव के प्रति ऐसी श्रद्धा का वातावरण होना ही चाहिए। समाज के जीवन का परिचय मिलता है। ता. ५ से १२ तक बडा समारोह सम्पन्न हो गया। खूब सम्मेलन हुए। नगर मे आर्यों की धूम मच गई। यज्ञ की पूर्णाहुति की शोभा दर्शनीय थी। बाहर से कई स्पेशल बसे आईं। आर्य समाज की चेतना व शक्ति का प्रभाव पडा। अब स्मारक समिति से एक प्रार्थना करनी है कि समारोह कार्य तो वर्ष पर्यन्त चलेगे ही यहा करतारपुर स्मारक भवन मे गुरु विरजानन्द का कार्य भी शुरू किया जाए। विशेष पाणिनीय पाठशाला पर जिस रूपमे समिति विचार वह पग उठाया जाये ताकि यह स्मारक एक दर्शनीय तीर्थ बन सके, यहा से चारो ओर आर्य ज्योति की किरणे फैलती जावे।

जालन्धर के ला. खरैतीराम महेन्द्र डी. ए. वी. का. नकोदर की नींव का कार्य संपन्न

स्वर्गीय लाला खैरायतीराम जी महेन्द्र की पुण्य स्मृति में कालिज बनाने के लिए जो भूमि नियत की गई थी, उसकी नींव १२ तारीख रविवार प्रातः ११ बजे उनकी धर्मपत्नियों श्रीमति वेदकार तथा श्रीमति सुशीला देवी ने अपने करकमलो द्वारा रखी तथा एक लाख रुपया दान में दिया। स्वर्गीय मिसर श्री अमरनाथ जी जिन्होंने लगभग १५ कनाल भूमि दान में दी थी, उनके सुपुत्र मिसर श्री पुरुषोतमदेव जी ने भी नींव रखने का कार्य सम्पन्न किया। स्वर्गीय मिसर श्री दानी तथा उदार हृदय व्यक्तियों में से थे तथा नकोदर में डी.ए.वी. कालेज खोलने की उनकी बहुत इच्छा थी, इस प्रकार उनकी भी इच्छा कार्यरूप में प्रकट होगी।



स्वर्गीय लाला खैरायतीराम महेन्द्र जी की पुण्य स्मृति में खैरायतीराम महेन्द्र डी.ए.वी. कालिज नकोदर में डी. ए. वी. कालिज मैनेजिंग कमेटी चित्रगुप्त रोड नई देहली की ओर से खोल दिया गया है।

इस अवसर पर जालन्धर तथा नकोदर के बहुत से मान्य सज्जन इकट्ठे हुए। डा० हुकमचन्द जी भल्ला प्रधान आर्य स्कूल नकोदर मैनेजिंग कमेटी, श्री भीमसैन जी मेहरा डी० ए० वी० कार्यकारिणी के वरिष्ट अधिकारी तथा प्रिंसीपल बी० एस० बहल डी० ए० वी० कालिज जालन्धर भी पधारे। डा० भल्ला ने कहा कि मिसर श्री अमरनाथ जी का पिछले नौ वर्ष से यहां पर कालिज खोलने का स्वप्न पूरा हो जायेगा। प्रिंसीपल बहल जी ने कहा स्वर्गीय खैरायतीराम जी महेन्द्र की धर्मपत्नियो की दानशीलता तथा उदारता की बहुत प्रशंसा की गई। आप ने कहा कि डी० ए० वी० कालिज के रूप मे जो नन्हा बच्चा जन्म ले रहा है वह दिवगत आत्मा के नाम को अमर कर देगा। श्री भवानीदत्त जी सहगल लीडर इन्जीनियर वर्क्स वाले जो कि आर्य स्कूल नकोदर के विद्यार्थी भी रहे हैं तथा स्कूल को अवैतनिक सेवाए भी प्रदान करते रहे हैं, ने फर्म की ओर २५ हजार रुपया देने की घोषणा की। इनको इस संस्था के प्रति इतनी श्रद्धा है कि उन्होंने इस रकम को केवल एक छोटी-सी राशी ही समझा है तथा विश्वास दिलाया है कि वे भविष्य में भी पहले की तरह दान देते रहेंगे। इसके अतिरिक्त इलाका के और भी दानी सज्जनो ने दिल खोल कर दान दिया है। इस प्रकार दानी सज्जनों की कृपा तथा सहानुभूति से लगभग दो लाख रुपए की राशि एकत्रित हो गई है और कालिज भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है।

उत्सव

आर्यसमाज अलावलपुर का वार्षिक उत्सव १-२ नवम्बर १९६९ को मनाना निश्चित हुआ है। २४-१०-६९ से श्रीमान पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री आर्य महोपदेशक कथा किया करेंगे साथ ही श्री ज्ञानचन्द जी मजनीक तथा श्री राजपाल की चिमटा मण्डली के भजन हुआ करेंगे। दोपहर को दो विदुषी देवियों के भजन उपदेश हुआ करेंगे। उत्सव को प्रभावशाली तथा आध्यात्मिक बनाने के लिए अन्य विद्वानों से भी प्रार्थना की जारही है। इस कार्यको सफल बनानेमें आप सब सहयोग देकर उत्सवकी शोभाको बढाव। साथ ही 'श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ औषधालय का एक दिन कार्यक्रम होगा। अलावलपुर में यही एक फरीडिस्पेंसरी है जो रोग ग्रस्त जनता की १९४० से सेवा कर रही है। इसे सदा के लिए सेवा योग्य बनाए रखने के लिए ५० हजार मुस्तकिल फंड में जमा करना है, जो दानी भाई-भाई १०० रु० दें वह औषधालय के परम सहायक होंगे। जो ५०० रु० या अधिक दान दें वे संरक्षक (Patron) होंगे। इनका नाम औषधालय में लगी दानियों की सुनहरी सूची पर अंकित होगा है और नाम सदा के लिए अमर रहेगा। कम से कम दान भी धन्यवाद सहित लिया जा रहा है—जितना भी कोई दे।

निवेदक:—　प्रधान　मन्त्री
अमरनाथ शर्मा　सुखप्रसाद
आर्य समाज अलावलपुर (जालन्धर)

वेदप्रचार धन पट्टी मंडी जि० अमृतसर व आर्यसमाज अमृतसर से प्राप्त

आर्य समाज पट्टी जि० अमृतसर	१५०—००
श्री यश पाल जी सूरी	३१—००
डा० सुदर्शन कुमार जी मेहन	३१—००
श्री मुलख राज चोपड़ा	३१—००
,, जेठूमल ज्ञान चन्द जी	३१—००
,, ज्ञानचन्द सुदर्शन कुमार जी	३१—००
,, बोध राज रणजीत कुमार जी	३१—००
,, भीमसेन सुदर्शनकुमार जी	२५—००
,, हंसराज खरैती लाल जी	११—००
,, ज्ञान चन्द गोविन्द राम जी	११—००
,, श्री सुरेन्द्र कुमार यश पाल जी	११—००
,, रूढ़ा मल बुड्ढा मल जी	१०—००
,, बलवन्त राय जी सूरी	१०—००
,, मूला राम ओ३म प्रकाश जी	१०—००
,, नवीन चन्द सतीश कुमार जी	५—००
,, कस्तूरी लाल जी जैन	५—००
,, श्री अमी चन्द जी अग्रवाल	५—००
,, श्री राम जी दास	५—००
,, श्याम लाल जी अग्रवाल	५—००
,, प्यारे लाल अशोक कुमार	५—००
,, बरकत राम अमृत लाल जी	५—००
,, अमर नाथ मदन गोपाल जी	५—००
,, हंसराज ज्ञान चन्द जी	२—००
,, बन्ता राम जी	२—००
,, सोहन सिंह दुर्गादास जी	५—००
,, चिरंजी लाल मेहरचन्द जी	५—००
,, मोहन लाल सोहनलाल जी	५—००
,, अमर जीत सिंह जी	२—००
ला० खुशी राम जी	२—००
श्री रत्न चन्द जी	२—००
,, स. करनैल सिंह जी	२—००
,, भूषण जी सूद	५—००
,, नत्थू राम हरबंस लाल जी	२—००
,, राम नाथ राधा कृष्ण जी	५—००

ऊपरलिखित राशि सभा उपदेशक श्री पं. खुशी राम जी महोपदेशक सभा द्वारा प्राप्त की गई। विशेषकर श्री ला० सुदर्शनकुमार जी चिबावन, ला० ज्ञान चन्द जी वेदी, ला० बोध राम सूरी व श्री ला० बलवन्त रायजी सूरी का हार्दिक धन्यवाद जिन्होंने धन संग्रह करने मे कष्ट उठाकर योग दिया। आशा है भविष्य में भी इसी प्रकार सभा की सहायता करते रहेंगे।

—सभा मन्त्री

आर्यसमाज का. बि. फिरोजपुर शहर की ओर से १०००) रुपये की थैली भेंट

आर्यसमाज फिरोजपुर चौक बाजार के वार्षिक महोत्सव पर आर्य समाज के वयोवृद्ध तपस्वी प्रधान श्रीयुत प्रि० मेहरचन्द जी अग्रवाल तथा सौम्य मूर्ति मन्त्री प० ब्रह्म दत्त जी शर्मा जी ने बड समारोह मे आयसमाज के मान्य तपोनिधि नेता प्रिंसिपल रलाराम जी एम० ए० एव डाक्टर वेदीराम जी शर्मा एम० ए० पी० एच० डी० मन्त्री सभा को सभा के वेद प्रचार के लिए १०००) रुपए की थैली भट की तथा सभा का अभिनन्दन भी किया। सभा मन्त्री श्री डा० जी ने इसके लिए बड ही सुन्दर शब्दो मे आयसमाज का धन्यवाद किया। —सम्पादक

आर्य कुमार सभा लक्ष्मणसर अमृतसर का चुनाव

आय वीर दल अमतसर के तत्वाधान मे चल रहे आय कुमार सभा का चुनाव रविवार ५ १० ६९ को सम्पन्न हुआ जिसम शाखानायक श्री सतीश कुमार जी उपशाखानायक श्री रमेश जी शिक्षक श्री विजय कुमार जी वगनायक श्री कुलभूषण जी श्री ललित कुमार जी और श्री अमर नाथ जी और उपवगनायक श्री अशोक कुमार जो श्री सुशील कुमार जी और श्री हर्ष ओम जी तथा कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र दत्त जी नियुक्त हुए। चनाव क पश्चात श्री सुखदेवजी शिक्षक प्रान्तीय आय वीर दल ने आर्शीवाद दिया।

शाखानायक आय वीर दल अमतसर

'आर्यजगत साप्ताहिक' निष्पक्ष पत्र

आयजगत के विद्वानो के पत्रो से ज्ञात हो गया है कि केवल आय जगत साप्ताहिक ही एक ऐसा पत्र है जो वतमान समय मे आयसमाजो तथा आय सभाओ के झगड से परे है श्री सुरेश चन्द्र जी वेदालकार गोरखपुर से पत्र लिखते हैं जो नीचे लिखा है।

श्री सम्पादक जी,   तिथि ४ १०-६९

सादर नमस्ते !

आयजगत के नेताओं की कृपा से आज आयजगत के सभी पत्र चाहे वह आयमित्र हो या आयमर्यादा हो या सावदेशिक हो सब एक दूसरे पर कीचड उछाल रहे हैं। इन नेताओ के झगडो से आयसमाजी चिन्तित हैं और दुखी है। बहुत-सी आयसमाज तो अब इन पत्रो से घणा करने लगी हैं। उनका कहना है कि हम इन पत्रो को आयसमाज के सिद्धान्तो वेदों के मन्त्रों की विशेषताओं को जानने के लिए लेते हैं पर वहा पर एक दूसरे पर कीचड अपने स्वार्थो के लिए उछालने वालो की बात पढ कर दुःख होता है। इस घृणित संघष में एकमेव आपका पत्र ही मागदशक एव अपने लक्ष्य की ओर बढने वाला है। आपका पत्र वास्तव मे उन्नत हो यही मेरी कामना है।

आपका विनीत बधु
सुरेशचन्द्र वेदालकार
१७५ जाफरा बाजार गोरखपुर

विशेष सूचना

आर्य जगत साप्ताहिक के सभी ग्राहक महानुभावो तथा आर्य बन्धुओं की सेवा मे निवेदन है कि ९ नवम्बर को दीपावली अक निकल रहा है इस लिए इससे पहले दो अक (२६ अक्तूबर व २ नवम्बर) के बन्द रहेंगे। —व्यवस्थापक

आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर

आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की यह सभा हिन्दू जगत के महान नेता श्री महन्त दिग्विजयनाथ जी क निधन पर गहरा शोक प्रगट करती है। स्वर्गीय महन्त जी हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्थान के अनन्य पुजारी थे। वह कई वष तक हिन्दू महा सभा के प्रधान भी रहे हैं। उनका जीवन हिन्दुत्व की भावनाओ से ओत प्रोत हुआ था। ऐस समय मे जब कि सब ओर से हिन्दू समाज पर धार्मिक एव राजनैतिक प्रहार हो रहे हैं। श्री महन्त जी जैसे दिग्वीर सेनानी का हम से बिछड जाना हमारे लिये महान दुर्भाग्य का कारण है। यह सभा परमात्मा से प्राथना करती है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर।

—निवेदक
मदन मोहन सेठ मन्त्री

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कचहरी, जालन्धर

(उपयोगी पुस्तको की सूची)

१ महात्मा हंसराज मॉडर्न पंजाब के निर्माता ले प्रि० श्रीराम जी शर्मा M A (अंग्रेजी मे)	१ ५०
२ सन्ध्या पर व्याख्यान—ले० महात्मा हसराज जी	१ ००
३ Dayanand His Life & Work (ले० प्रि० सूयभानु जी M A	२ ००
४ महात्मा हसराज जी सचित्र (ले० आनन्द स्वामी जी महाराज)	१ २५
५ प्रभ दशन (आनन्द स्वामी जी महाराज)	१ २५
६ महर्षि दशन (ले० प्रि० दीवानचन्द जी M A)	१ ००
७ स्वाध्याय सग्रह (ले० प्रि० साइदास जी M A)	० ५०
८ नवीन प्रचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी)	१ ०
९ सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले० वाचस्पति एम ए	० ७०
१० द्वितीय	०
११ मुडक उपनिषद (ले० प्रि० दीवानचन्द जी)	० ७
१२ राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सामानन्द)उदू म	
१३ षट दशन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी)	१
१४ सीता (ले० आनन्द स्वामी जी)	० ३८
१५ पदमनी( )	० ३१
१६ पार्वती ( )	० २५
१७ Teaching of Ish Upni had ले० प्रि० दीवानचन्द जी एम ए) अंग्रजी मे	१ २५
सामवेद भाष्य	२० ००
वैदिक गुरमत	१० ००

एक गीत

बतर्ज—[कल चमन था आज इक सहरा हुआ]

ऐ ऋषि तूने हम तो जगा दिया।
हमने बदले म तुझ था सुला दिया।
तूने सुख हम को दिया ससार का
और दिया दिल से हमें ना प्यार का
हमने भी कुछ था दिया पर क्या दिया।
ऐ ऋषि तूने हमे तो जगा दिया
कह गया हमको बुराइयो स टलो।
और कहा सब वेद माग पर चलो।
हमने इस उपदेश को ठुकरा दिया।
ऐ ऋषि तूने हमे तो जगा दिया
हमने सगठन को रवाना कर दिया।
और समाज का घणा च नर दिया।
यह तेरे उपकार का बदला दिया।
ऐ ऋषि तूने हमे तो जगा दिया।
फिर तरह फिर से पथिक भटका दिया।
ऐ ऋषि तूने हमे तो जगा दिया

—सत्यपाल 'पथिक' अमृतसर

आर्य समाज फिरोजपुर कालेज विभाग का वार्षिक महोत्सव

ता २६ से २८ अक्तूबर तक बडे ही धूमधाम से सम्पन्न हो गया। जल्से मे श्री पं खुशीराम जी शर्मा महोपदेशक सभा, प. जगतराम, बस्ती राम जी की मडलो की कई दिनो तक ओजस्वी कथा व भजन होते रहे। बहुत उपस्थिति होती रही। जल्से मे प्रिंसिपल रलाराम जी होशियारपुर डा. वेदीराम जी सभामन्त्री सत श्याम जी पराशर एम. ए., पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री, पं० खुशीराम जी शर्मा, पं० चन्द्रसेन जी आर्यहितैषी, पं० हजारी लाल जी आदि पधारे। जल्से मे देवियो ने स्कूल ने तथा सारे नगर के समाजों ने पूरा भाग लिया। समाज के प्रधान प्रि. मेहरचन्द जी एम ए. स्वयं एक तपस्वी, श्रद्धालु मूर्ति है। मन्त्री जी बडे धर्मनिष्ठ हैं समाज का यह समारोह हर प्रकार से सफल रहा। यज्ञ भी खूब होता था--

फार्म समाचार

कपास में नाइट्रोजन—परीक्षणों के परिणाम

तमिलनाडु मे भवानी सागर के कृषि अनुसंधान केन्द्र पर किये परीक्षणो में पता चला है कि एमसीयू-१ कपास मे नाईट्रोजन की अधिक मात्रा देकर सिंचाई करने पर अधिक पैदावार मिलती है।

तीन वर्षों तक किये परीक्षणो मे देखा गया कि प्रति हैक्टर ६७ २५ किलोग्राम नाइट्रोजन डालने पर कपास की पैदावार १,६०० किलोग्राम मिली। नाइट्रोजन न डालने पर इससे ६५० किलो कपास कम मिली। इस प्रकार नाइट्रोजन डालने से प्रति हैक्टर ९,३९ रुपये का नकद मुनाफा हुआ।

नाइट्रोजन के लिए अमोनियम सल्फेट ४५ दिन की फसल पर मिट्टी चढाते समय भुरका गया था।

बारानी कपास—अगाही बोआई लाभदायक

बारानी हालतो मे कपास की अच्छी पैदावार लेने के लिए उसकी अगाही बोआई करना लाभदायक रहता है।

आमतौर पर किसान मानसून शुरू होने पर कपास बोते हैं। कभी मानसून देर से शुरू होने पर बोआई भी देर से करनी पडती है। इसका नतीजा यह होता है कि पैदावार अच्छी नही मिल पाती।

मध्य प्रदेश के विभिन्न केन्द्रो पर किये गये परीक्षणों मे यह सिद्ध हुआ है कि बारानी हालतो मे कपास की बोआई मानसून से पहले करने पर अच्छी पैदावार मिलती है। इस प्रकार मानसून देर से शुरू होने पर या मानसून के मौके पर बोयी फसल के मुकाबले अधिक पैदावार मिलती है।

✱ उस जानकारी से क्या लाभ जो अमल मे न आए।

✱ इनका बल प्राप्त करो जिस से अपनी और दूसरो की रक्षा भली प्रकार कर सको।

...र स्थिति

म० ए० दयानन्द कालेज, शोलापुर]

हुआ खात्मा है
। चीज आत्मा है
खाली है जगल, खाली गुफा है
खूंख्वार जन्तु सभ्यता में छुपा है
ये धुआ उगलते मिलों की चिमनिया
हैं उसी के काले रक्त की धमनिया
रक्त भरे पथ पर युग चल रहा है
मशीनी दलदल में विश्व धंस रहा है
तड़फड़ाती धरती व्यथित आसमां है
सिसकते सितारे यह क्या सभ्यता है?
दौलत की राहों मे भटका है ईमा
विज्ञान की डाढो मे लटका है इन्सा
है महलों की आभा यह गंदी सी बस्ती
जहां पर हर चीज बिकती है सस्ती
मान मर्यादा की हर ओर दुर्गति है
दिल रो कर पूछता है, यही प्रगति है?
घायल संस्कृति यूं कब तक चलेगी
न जाने यह किश्ती किस किनारे लगेगी।

धार्मिक परीक्षाएं

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश सि० विशारद सि० भूषण, सिद्धान्ताचार्य परीक्षाए आगामी दिसम्बर, जनवरी में भारत तथा विदेशों मे होगी। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधिपत्र दिया जाता है। सर्व-प्रथम द्वितीय तृतीय, आने वाले को छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की निःशुल्क सत्यार्थ सुधा कर, सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधिया डाक द्वारा प्राप्त करें। १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मंगवाइए।

आदित्य ब्रह्मचारी
यशपाल शास्त्री
प्रधान

आचार्य मित्रसेन
एम०ए०, सिद्धातालंकार
शिक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद
सेवा-सदन, कटरा अलीगढ, (उ.प्र.)

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा०वेदीरामजी एम. ए, पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टैलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे   वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २९, अंक ४६)   २ मार्गशीर्ष २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—१६ नवम्बर १९६९   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

धाता दधातु नो रयिम्

अर्थ : धाता—वह विधाता भगवान दधातु—प्रदान करें न हमें रयिम-धन ऐश्वर्य आदि को।

भाव : प्रभुदेव आप धाता विधाता हैं। सारे विश्व के आप ही धारक-विधारक हैं। ऐसी कृपा करो कि हम धन वालेबनें। जीवन यात्रा में काम आने वाले तमाम पदार्थ हमें प्राप्त हों। स्वास्थ्य का धन, विचार का धन, चरित्र का धन, ज्ञान विज्ञान आदि का नानाविध धन हमें चाहिए। आप सारे ऐश्वर्य के स्वामी हैं। आप ही सबके भंडार हैं। महादानी हैं कृपा करो—कि आपकी दया से हमें सब प्रकारका धन सब प्रकार से जीवन में मिलता रहे। हम सम्पत्तियों से मालामाल बने रहें। धन में खेलते रहें। —सं.

वेदामृत

वर्ण—व्यवस्था

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशुद्रो अजायत॥

—३२।११॥

पदार्थ :—(अस्य) इस प्रभु की सृष्टि में (ब्राह्मण) वेद ईश्वर का ज्ञाता व उपासक (मुखम्) मुख के तुल्य उत्तम ब्राह्मण (आसीत) है। (बाहू) भुजाओं के तुल्य बल पराक्रमयुक्त (राजन्य) क्षत्रिय (कृत) बनाया (यत्) जो (ऊरू) जांघों के तुल्य वेगादि काम करने वाला (तद्) वह (अस्य) इसका (वैश्य) सर्वत्र करनेहारा वैश्य है। (पदभ्याम्) सेवा के योग्य और अभिमान रहित होने से (शूद्र) मूर्खतादि गुण युक्त शूद्र (अजायत) उत्पन्न हुआ।

भावार्थ—जो मनुष्य वेदविद्या और शमदमादि उत्तम गुणों में मुख के तुल्य उत्तम ब्रह्म के ज्ञाता हों वे ब्राह्मण जो अधिक पराक्रम वाले भुजा के तुल्य कार्यों को सिद्ध करने हारे हों वे क्षत्रिय, जो व्यवहार विद्या में प्रवीण हों वे वैश्य और सेवा में प्रवीण, विद्याहीन, पगों के समान मूर्खपन ·दि नीच गुणयुक्त है, वे शूद्र मानने चाहिए। ऐसी वर्णव्यवस्था गुण कर्म अनुसार ही वेद कथित है। जन्मसे न कोई ब्राह्मण है न ही कोई क्षत्रियादि। सब वेदानुयायी मनुष्यों को चाहिएं कि ऐसी व्यवस्था के अनुसार आप चलें और औरों को चलावे।

ऋषि दर्शन

महाभारत के युद्ध में जब अच्छे २ पूर्ण विद्वान वेद और शास्त्रादिक के जानने वाले चल बसे, विद्या का प्रचार तथा सत्य उपदेश की व्यवस्था छूटकर तमाम देशमें नाना प्रकारके विघ्न और उपद्रव उठनेलगे लोगों ने अपना २ छप्पर अपने२ हाथसे छाने की फिकरकी, और इस थोड़े से सुख के लोभ में उत्तम २ विद्याओं को ऐसा हाथ से खो बैठे कि जिससे उनका विचार हुआ लाभ भी नष्टहो गया और तमाम अपने देश को भी धर कर डुबा दिया। बड़े शोक की बात यह है कि आंखों से देख कर भी कूप मे ही गिरना अच्छा समझकर अपनी अज्ञानता पर दुखी और लज्जावान होने की जगह भी बराबर हठ भी करते चले जातेहैं। इसका परिणाम न जाने क्या होना है।

—महर्षिदयानन्द सरस्वती

(भ्रांति निवारण से)

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री)   सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

वैदिक समाज रचना

(लें० प्रिंसीपल श्री रलाराम जी होशियारपुर)

समाज मनुष्यों के समूह का नाम है। व्यक्ति उसकी इकाई है। यदि व्यक्ति बहु संख्या मे उन्नत, सभ्य, उदार उद्यमशील नही तो समाज अवनत असभ्य, संकीर्ण तथा प्रमादी और प्रभिगामी होगा। अत सदैव व्यक्ति के साथ ही आरम्भ करना होता है। सतिसुधार भी व्यक्ति के साथ आरम्भ होता है। हमारे पूर्वज, विशेष करके वैदिक काल के समाज-सचालक तथा समाजनिर्माता बच्चे के शरीर तथा चरित्र निर्माण के साथ उसकी जीवन यात्रा का सूत्रपात करते थे। बच्चे के जन्म से पहले भी इसको ससार मे लाने के लिए माता-पिता को एक सार्थक, सप्रयोजन आदर्शान्वित रीति से तैयारी करनी पडती थी। वे केवल मात्र विषयभोग लालसा तथा कामवासना से प्रेरित होकर ही रति-क्रिया मे प्रवृत नही होते थे। गृहस्थ तथा सन्तानोत्पादन को वे कोई जघन्य तथा निन्दनीय आचरण नही समझते थे। और नही आज के समाजशास्त्र को पढिये। उसमे मानव की काममासना तथा यौन प्रकृति की तृप्ति का तो उल्लेख स्पष्ट तथा नि:संकोच मिलेगा परन्तु उस आत्मा को स्वागतपूर्ण तथा साकंल्पिक ढग से लाने का कोई जिक्र ही नहीं। आज का सन्तानोत्पादन विज्ञान इस बारे मे मौन है। परन्तु गर्भाधान संस्कार मे जो अथर्ववेद के मंत्र ऋषि दयानन्दने उद्धृत किए है उनमे भावी पिता अग्नि, वरुण, इन्द्र, बृहस्पति, त्वष्टा एव विष्णु का अपने आपको प्रतिनिधी अथवा निमितमात्र समझता हुआ वीर्याभिषेक मे प्रवृत्त होता है। सन्तानोत्पत्ति को उपनिषदे एक यज्ञ का रूप देती है। आज हमारे जीवन मे यह एक विषयवासना की तृप्ति का साधन रह गया है। अत. हम प्राय. नवयुवक एवं नवयुवतियो मे उच्छृंखलता उद्दण्डता, अनम्रपन की अवाछित वृत्तिया देखते है। मूलत. अपनी सन्तान मे दुरित तथा दुर्व्यसनोंके लिए हम जिम्मेदार है। जब २ और जहा २ हम अपने नवयुवको मे उद्दण्डता एव अनुशासनहीनता को पाते हैं हमे तत्काल अपनी गलतियो का अनुभव करके प्रायश्चित द्वारा अपने आप, अपने समाज तथा अपनी सन्तान को पवित्र सच्चरित्रवान बनाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। यदि सच्चे हृदय से हम आत्मनिरीक्षण करेंगे तो अपने बच्चों के दोषो की नीव अपनी कमजोरियो मे अवश्य देखेंगे। खेद सब से तीव्र यह है कि हमारे शास्त्रो मे सब कुछ है, हमारे जीवन मे कुछ नही। हमारी कथनी और हमारी करनी मे आकाश-पाताल का अन्तर हो गया है।

स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास को आरम्भ ही शतपथ ब्राह्मण के इस वाक्य किया है, 'मातृमान पितृमानाचार्यवान पुरुषोवेद'। 'मातृमान' की व्याख्या स्वामी जी ने की है 'प्रशस्ता, धार्मिकी माता विद्यते यस्य समातृमान् इसी प्रकार पिता का लक्षण है। जो माता-पिता सचरित्र, दृढ धार्मिक भावना युक्त और शिशु मानस को समझने वाले हैं वे ही अपनी सन्तान के चरित्र तथा मानस का यथोचित निर्माण कर सकते है। आज की बडी समस्या यह है कि समाज आगे से कई गुणा अधिक जटिल, कुटिल तथा भ्रष्ट हो गया है परन्तु पिता-माता मनोविज्ञान को न समझते हुए या तो मोह वश अति लालन करते हैं या अज्ञानवश अनुचित कडाई या सख्ती करते हैं। बच्चे को विवेकपूर्ण ढग से दिया गया प्रेम तथा प्रज्ञापूर्वक किया गया निरीक्षण ही उसका उचित शिक्षण कर सकता है। माता-पिता आजकल बहुधा प्रमाद के दोषी हैं, अपनी सन्तान का निर्माण उनके कार्यक्रम मे ही नही। उचित समाज का निर्माण फिर कैसे हो? यह बात नोट करने योग्य है कि जब बच्चे का उपनयन होकर वह आचार्य कुल मे विद्या प्राप्ति के लिए प्रविष्ट होता था तो उपदेश पिता करता था, आचार्य नही। पिता कहता था 'सभ्य सुशील, शिष्ट, धर्मात्मा, संयमी, मिताहारी, तपस्वी, सत्यवादी, नम्र बन।' आचार्य उसके समक्ष उसके जीवन का लक्ष्य उपस्थित करता था। जब आचार्य पूछता था कि तूं किसका ब्रह्मचारी है, तो स्वयं वह बालक को बताता था 'तू प्रजापति का ब्रह्मचारी है, तू देव सविता का ब्रह्मचारी है, मैं तुझे भगवान की खोज के निमित प्रशिक्षित तथा समर्पित करता हू। मैं तुझे सब प्राणियो के कल्याणार्थ समर्पित करता हूं।' भगवान प्राप्ति समाज सेवा के द्वारा, यह लक्ष्य बल-पूर्वक विद्यार्थी के समक्ष रखा जाता था। आचार्य जानता था एव मानता था कि मैंने विद्यार्थी को केवल अक्षरबोध तथा गणित ही नही सिखाना मैंने उसे मानव भी बनाना है। आज यह बात न तो माता-पिता के समक्ष है और न ही कोई ऊचा उद्देश्य अध्यापको के सामने है। 'अन्धेन् नीयमान: यथान्ध' अन्धा व्यक्ति अन्धों का नेता बना हुआ है। अधिक दोषी माता-पिता हैं। बच्चे को नरसरी स्कूल मे भेज कर माता-पिता का उत्तरदायित्व सामप्त नही होता। मानव बनाना एक कला है। यदि परिस्थितिया बदल गयी हैं तो हम प्रणाली मे यथोचित सशोधन कर ले, परन्तु हम ने तो मानव बनाने की प्रक्रिया की समाप्ति कर दी है। मानव बनाना समाज अथवा व्यक्ति का सब से बडा उद्योग है। शेष सब उद्योग इस परम लक्ष्य के साधन मात्र हैं आज का विश्वव्यापी रोग जीवन की निरर्थकता, निष्प्रयोजनता तथा निस्सारता है। यह लक्ष्य शून्यता समाज विद्रोह, विध्वंस तथा नास्तिकवाद की ओर ले जा रही है। वैदिक संस्कार मनुष्य निर्माण के साधन थे। अब तो लक्ष्य भी गये और साधन भी गये। भोगवाद परम इष्टदेव बन कर सिंहासन पर विराजमान है। परन्तु यह तो दानव है, यह भयंकर राक्षस है, अब तो हृदय से यही प्रार्थना निकलती है। 'हे भगवन, राक्षसो तथा उनकी आसुरी वृत्तियो से, अब हमारी रक्षा करो। (ऋग्वेद १ ३६-१५)

ऋग्वेद में आता है. 'जीवनरूपी सूतकातो! उस पर ज्ञान-विज्ञान एव प्रकाश का गाढा रंग चढाओ। उस से जो जीवन बने उस मे छल, कपट तथा मूर्खता की गाठे न हो। इस प्रकार सुबुद्धिसे बताये हुए तेजस्वियो के मार्ग को रक्षण अथवा अनुसरण करो। मननशील एव सभ्य मानव बनो। दिव्य सुप्रजा को उत्पन्न करो। यह मनीषियो अथवा कवियो का काम है (ऋग्वेद १०-५३-६)।' सुप्रजा से श्रेष्ठ समाज बनता है। फिर समाज तथा व्यक्ति परस्पर सहायक बन जाते हैं। सुसमाज व्यक्तियों को सन्मार्ग से विचलित हो जाने से रोकता है जैसे दुष्ट समाज व्यक्तियो को बिगाडता तथा सदैव दुष्प्रेरणा देता है। समाज का यह प्रथम कर्त्तव्य है कि संसार क्षेत्र मे नवप्रविष्ठ आत्मा के किए समुचित वातावरण पैदा करे। स्कूल तथा कालिज क्या हैं। यह नियोजित तथा नियन्त्रित वातावरण वाले संस्थान हैं जहा बच्चो को समाज मे विद्यमान दुष्प्रभावो तथा दुर्जनो के ससर्ग से सुरक्षित किया जा सकता है। समाज मे अवाछित तथा निन्दनीय तत्व तो सदैव रहते ही हैं। समय-समय पर उनकी मात्रा मे भेद आ जाता है। आजकल समाजविद्रोही, कुमार्गगामी, उच्छृंखल तत्वो का प्राधान्य होता जा रहा है। अत: आज की समाज रचना को बदल कर वैदिक समाज व्यवस्था को लाना होगा।

वैदिक समाज रचना न्याय, समता, मानवता तथा भ्रातृभाव पर आश्रित थी। आस्तिकता इनकी आधारशिला है। आस्तिकता ही भ्रातृभाव को चिरस्थायी बनाती है जिस वस्तु ने हमारे राष्ट्र एव समाज को निर्बल बना दिया वह यह वैदिक समाज व्यवस्था नही थी। परन्तु दुर्भाग्यवश हमने कर्त्तव्य पालन की बजाए जन्म पर सामाजिक प्रतिष्ठा को आधारित कर दिया। स्वार्थ तथा परशोषण समाज में प्रावल्य पा गए और हमारा समाज दीन, हीन एव परतन्त्र हो गया। यह अवैदिक अश हमारी समाज व्यवस्था मे घुस गया। इसे बिना विलम्ब बाहर फेंकना होगा। अस्पृश्यता इसका सजीव घृणित रूप है। (क्रमश:)

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, १६ नवम्बर १९६९ [अंक ४६

हिन्दी भाषा और पंजाब सरकार

हिन्दी बनाई तो राष्ट्र की भाषा गई है—किन्तु इसके प्रति जितनी उपेक्षा केन्द्र के द्वारा की जा रही है वह सब की आखो के सामने है। इतने वर्षों के स्वराज्य के बाद भी इसके प्रचार का कितना प्रबन्ध है तथा जनता का इस को जीवन मे अपनाने मे कितना ध्यान दिलाया जा रहा है—इस अवस्था को देख कर किस देश भक्त को दु.ख नही होता है। अभी-अभी राजधानी मे अन्त: संसदीय सम्मेलन मे विदेशो से आये हुए प्रतिनिधियो ने तो अपने-अपने देश की भाषा मे अपने भाषण दिये—किन्तु हमारे राष्ट्र के प्रतिनिधियो ने अपनी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के गौरव की सर्वथा उपेक्षा करके विदेशी भाषा अंगरेजी भाषा मे भारत सरकार का दृष्टिकोण पेश किया। विदेशी प्रतिनिधि बडे ही चकित हो गये कि भारतीय अधिकारी अपनी भाषाभी नही बोल सकते या इन के दिल मे इस का मान नही है। विदेशी भाषा के मोह ने बडे २ व्यक्तियो को फसा रखा है। उनकी देखादेखी अन्य लोगो को भी वह मार्ग सूझता है।

पंजाब सरकार ने जो व्यवहार राष्ट्र भाषा हिन्दी के साथ किया है—जिस प्रकार से सरकारी काम-काज एव शिक्षा क्षेत्र से इसे बाहर निकाला है—उस पर जितना भी दु.ख मनाया जाये थोडा है। पंजाबी भाषा फूलती फलती रहे—सरकारी प्रयोग मे लाई जाये—इस मे किसी को भी मत भेद नही। किन्तु यदि इसका प्रसार राष्ट्र भाषा हिन्दी की बलि देकर किया जाये तब तो बडा ही दु ख है। कितना खेद का विषय है कि सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का खुनमखुला प्रयोग तो किया जा सकता है। उसमे आवेदन-पत्र भी दिया जा सकते है, उनका उत्तर भी दिया जाता है। किन्तु जिसे राष्ट्र की भाषा माना गया है उसका क्या स्थान है? उसके प्रति कैसी नीति है एव उसके प्रचार के लिए सरकार की ओर से कितनी धनराशि व्यय की जाती है उसे विचार कर दिल बैठ जाता है। जिस प्रान्त मे हमारे परिवारो के बेटे-बेटिया अपनी शिक्षा मे राष्ट्रीयभाषा मे सरकारी स्कूलो मे नही पढ सकते। उनको अपनी पढाई मे शिक्षा के माध्यम के चुनने की भी स्वतन्त्रता नही है, इससे बढ कर अपने राष्ट्र की भाषा का और क्या अपमान हो सकता है। यदि मेरी सन्तान अपनी हिन्दी भाषा भी नही अपना सकती। न इसमे अपनी पुस्तक पढ सकती है और न ही परीक्षा मे उत्तर पत्र हिन्दी मे लिख सकती है—इससे बढ कर हिन्दी का निकाला और अधिक क्या हो सकेगा? कभी-कभी तो मनमे ऐसा विचार आता है कि क्या हम अपने स्वराज्य मे रहते हैं या विवशता तथा परवशता के सूत्र मे बन्धे हुए हैं। यही कारण है कि पजाबमे इसके बारे मे भारी अशाति है सरकारी स्कूलो मे सच्चर फार्मूला को एक लेखिनी से ही एक दम समाप्त करके हिन्दीभाषा प्रेमियो के साथ कितना बडा अन्याय किया गया है। चालीस प्रतिशत से भी अधिक सख्या मे जनता जहा हिन्दी प्रेमी हो, तथा अपने बच्चो की शिक्षा मे हिन्दी का माध्यम चाहती हो वहा उसे इसका अधिकार न देकर केवल पजाबीसे ही बाध दिया जाये तो कितने खेद का विषय है। अपने कुछ भाई भी अब थोडे दिनो की सत्ता के लिए हिन्दी पर भीषण कुठाराघात करने मे सकोच नही करते। सरकारी स्कूलो मे केवलमात्र पजाबी ही पढाई का माध्यम बनाने मे उन लोगो ने भी अपने लाखो बच्चो के भविष्य को सर्वथा धूमिल बना कर रख दिया है। सत्य कहा है कि सत्ता की लिप्सा के स्वार्थ मे मनुष्य किसी की हित की बात नही सुनता। पजाब के सारे हिन्दी प्रेमी अपने न्यायसगत पथ पर निरन्तर आगे बढते जाते है। चाहे देर लग जाये किन्तु न्याय का पथ कभी नही छोडेगे। हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा है, इस का सम्मान करा कर ही दम लेगे।

कितना दु ख हुआ है समाचार पत्रो मे यह पढ कर कि पजाब सरकार ने हिन्दी के प्रचार के लिए ९९ हजार ३०० रुपये की राशि रखी है। इतनी साधारण-सी राशि एक लाख भी नही। एक लाख का भी इस कार्य के लिए क्या मूल्य है। राष्ट्र भाषा का पजाब सरकार की नजरो मे यह महत्व है कि इसके लिए एक लाख से भी कम व्यय होना है। हिन्दी प्रेमियो की आखे खुल जानी चाहिए। अनुमान लगाया जा सकता है कि हिन्दी की कितनी बुरी तरह से सत्ता मिटाई जा रही है। हिन्दी के प्रेमियो अब तो चेतो! आखे खोलो।

—त्रिलोकचन्द्र

दीपमाला के बाद

दीवाली का पर्व आया और चला गया। जनता ने अपने-अपने भावो के अनुरूप इसे मनाया। बडे-बडे समारोह सम्पन्न हो गए। पटाखे तथा आतिशबाजी भी नगरो मे चलाई गई। रागरंग भी हो गए। जुएबाजो ने जुए का बाजार गरम किया। जीतने वाले हसे और हारने वाले रोए। सर्वत्र दीपक जगमगाए। सब कुछ हो गया। किन्तु विचारना तो यह है कि इस पर्व से जीवन मे कुछ सीखा भी या नही। कोरे त्योहार मनाने मे तो किसी प्रकार का लाभ ही नही है। यह तो केवल दिखावा हो जाता है। आर्यसमाजो ने भी अपने-अपने स्थानो मे दीप माला मनाई। दीप जलाए। अपने महान् देवता दयानन्द के जीवन पर कुछ कविताए पढी, विचार रखे तथा उनके प्रति श्रद्धाजलिया भेट कर दी। ऊचे स्वर ऋषिवर के जय जय का घोष लगाया। सब कुछ बाहर का कार्य तो हो गया। किंतु सारा समाज आज तनिक गम्भीर होकर अपने आपको टटोले आत्म निरीक्षण करे, अपने दिल की पडताल करे कि हमने जो यह दीपमाला का पर्व मनाया है इसमे उस जीवन के महान् दीप से कुछ सन्देश भी लिया है या नही? किसी प्रकार का सकल्प स्वीकार किया है? प्रगति के पथ मे अपना पग आगे भी बढाने का साहस किया है—यदि ऐसा है तब तो है ठीक। हमारा यह पर्व मनाना सफल है दीपमाला के दिन देव दयानन्द ने वेद प्रचार के महान् मिशन के लिए अपना जीवन आहुति के रूप मे भेट कर दिया था। दीवाली पर तो दीपक जलता है किन्तु उस महान् ऋषि ने अपने शरीर को ही दीपक बना कर उसे प्रकाश देने के लिए जला दिया था। इसके द्वारा सारे विश्व को एक बडा सन्देश दिया था—वह था जीवन बलिदान का। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया था। त्याग एवम् उत्सर्ग का सन्देश दिया। दीपमाला तो चली गई — किन्तु हमारे लिए त्याग, बलिदान का सन्देश दे गई। सारे नर-नारी सकल्प ले कि हम समाज के कार्य के लिए दैनिक रूप से समय देगे, सम्पति देगे तथा मनोयोग देगे। यदि हम यह त्याग का पाठ नही पढ सकते। समाज की उन्नति के निमित्त यदि हमारा जीवन काम नही आता। धन मे से समाज के कार्य के लिए यदि कुछ नही किया जाता। प्रति रविवार के दिन यदि हम समाज मे जाने के लिए समय नही निकालते तथा वेद प्रसार के मिशन मे अपनी आय मे से नियत राशि नही देते तो दीपमाला मना ली तो क्या मना ली? हम अपने लिए जीते है परन्तु देखना यह है कि समाज के लिए भी जीते है या नही? क्रियात्मिक रूप मे इस का सकल्प लेवे।

सिगरेट पीने वालो!

आज सिगरेट का कितना प्रचार है। और तो और अब तो छोटे-छोटे बच्चे भी इस व्यसन मे फसते जाते है। देखा देखी मे यह बुराई चारो ओर फैलती जाती है। इस समय तो लडकिया भी इस बीमारी का शिकार हो रही है। इससे मानव समाज के जीवन की कितनी हानि एव नाश होता जाता है—समय-समय पर इस के बारे आकडे पत्रो मे प्रकाशित होते रहते है। सिगरेट के तम्बाकू मे एक प्रकार का भयकर विष होता है जो और अनेक रोगो को पैदा करने के साथ-साथ कैसर जैसे मारक रोग को उत्पन्न कर देता है। फिर भी लोग आखे बन्द किए पिये जा रहे है तथा मौत को स्वय ही अपने समीप लाते जा रहे है।

सिगरेट पीने वालो! तनिक इस समाचार पर ही आखे खोलो। क्या जीवन मे प्यार नही है? समाचार

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर की प्रधानाचार्या कु० विद्यावतीजी आनंद के निवास-स्थान पर बृहद्-यज्ञ!

आर्य जगत् के विख्यात यज्ञवेता आचार्य कृष्ण ने हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर मे अवस्थित प्रधानाचार्य के निवास स्थान पर १७ से २२ अक्तूबर तक बृहद-यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। आचार्य जी ने यज्ञ के साथ-साथ पवित्र वेद कथा का लाभदायक, रुचिकर तथा आधुनिकता के अनुकूल व्याख्याओं का सुन्दर क्रम बनाए रखा।

आचार्य कृष्ण ने सर्व-प्रथम आचमन मन्त्रो मे से (सत्य यशः श्रीमयि श्री:श्रयता स्वाहा' को लेकर चर्चा की! आचमन के द्वारा हम परम पिता परमात्मा से इन्द्रियों की शुचिता के लिए प्रार्थना करते हैं। सत्य तथा श्री सृष्टि के अनिवार्य गुण हैं। जो व्यक्ति सत्य का पालन करता है वह ब्राह्मण



आर्यजगत के प्रसिद्ध यज्ञवेता आचार्य कृष्ण ने गत दिनों हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर की प्रधानाचार्या कु० विद्या आनन्द के निवास स्थान पर बृहद-यज्ञ करवाया। चित्र में पूर्णाहुति के समय आचार्य कृष्ण वेदी मे यज्ञ कुण्ड के सामने बैठे हैं। सामने मध्य में यजमाना कु० विद्या आनन्द विराजमान हैं। दूसरी ओर छात्रावास की वे छात्राए बैठीहैं जिनका यज्ञोपवीत सस्कार प्रातःकाल आचार्य जी द्वारा विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ था।

है। ब्राह्मण का धर्म है विद्याध्ययन द्वारा ससार को सत्य का पूर्ण ज्ञान करवाना है! वह काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि माया जालो से परे अपना अस्तित्व सुरक्षित रख विद्या के सत्यप्रकाश को विस्तीर्ण करे। क्षत्रिय अपने शौर्य तथा शस्त्र के बल पर यशोपार्जन करता है। श्री! अर्थात् धनोपार्जन वैश्य का कर्म है।। हरिजन इत्यादि जातियो के जीव शूद्र नही कहे जा सकते, परन्तु जो व्यक्ति इन तीनो मे से किसी भी कर्म का पालन नही करता, वह शूद्र है।

आचार्य जी ने आगे कहा कि मनुष्य- मन सदैव अपनी प्रकृति मे बधा रहता है। सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण की जिस व्यक्ति मे प्रधानता होती है, वह उसी के द्वारा विजित किया जाता है। अग्नि जीवन मे उत्थान का प्रतीक है। हम यज्ञ के समय अग्नि प्रज्वलित करके ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि रजोगुण तथा तमोगुण पर नियन्त्रण कर हम सात्विक भावो को प्रकृति मे समन्वित कर शुभ कर्म कर सकें।

१९ तथा २० अक्तूबर को आचार्य कृष्ण ने यज्ञोपवीत (जनेऊ) के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यज्ञोपवीत के आकार का प्रतीकात्मक अर्थ बताते हुए कहा कि यह तीन सूत्रों से बना है। सूत्र शब्द के अर्थ हैं सूचन, ग्रथन तथा वेष्टन अर्थात सूचना देना, बाधना तथा लपेटना। मनुष्य का आत्मा सदैव ही काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि विकारों से बधा रहता है। हम इन विकारो से बचे रहें, यही इसका महत्व है। आगे उन्होंने कहा कि एक वृक्ष पूरा होते हुए भी उद्देश्यहीन रहता है, कहीं समाप्त नही होता, परन्तु यज्ञोपवीत के वृत्त में एक ग्रंथि होती है जो ब्रह्म का प्रतीक है। तीन सूत्र क्रमश: मस्तिष्क, हृदय तथा उदर के द्योतक हैं। मस्तिष्क मन के लिए, हृदय प्राण के लिए तथा उदर अन्न के लिए माना जाता है। कही मस्तिष्क, हृदय तथा उदर क्रमश: मन, प्राण तथा अन्न द्वारा मनुष्य को सावधान रखने का उपकरण है। आत्मा अति सूक्ष्म है और ब्रह्म के साथ सम्बन्धित है। मानव ब्रह्म को ध्यान मे रखता हुआ उसे अपने ही पास टटोलता हुआ इन अवगुणो से बचने की चेष्टा करता है।

आचार्य जी ने यज्ञोपवीत के शाब्दिक अर्थ को बताते हुए कहा कि यज्ञोपवीत यज्ञ+उप+वि+इत से बना है। इतमे इ का अर्थ गीत है, वि का अर्थ विशेष तथा उप का अर्थ समीप है, अर्थात् यज्ञ के पास विशेष गति से पहुंचना है। यज्ञ तो प्रतीक मात्र है। यज्ञ मे तो यजमान अग्नि के सम्मुख बैठकर सकल्प करता है। यज्ञोपवीत भी व्रत सूत्र है। आचार्य जी के अनुसार शिक्षा-संस्थाओं की यदि कोई चिन्ह हो सकता है वह है यज्ञोपवीत प्रत्येक शिक्षार्थी को चाहे वह युवक है अथवा युवती, उसका ग्रहण करना अत्यावश्यक है। इस व्रत सूत्र को धारण कर मनुष्य अपने जीवन को उत्कृष्ट कोटि का जीवन तथा अपने जीवन का परोपकार के लिए होम करने का संकल्प करता है शिक्षा भी मनुष्यको सरल,स्वस्थ तथा स्वाधीन बनाती है।

२१ अक्टूबर की प्रात: आचार्य जी ने यज्ञ की महत्ता का बोध करवाते हुए बताया कि यज्ञ के तीन केन्द्र हैं :— १ देव-पूजा २. सगतिकरण ३. दान। देव-पूजा मे दान अत्यावश्यक है क्योंकि व्यक्ति का देवत्व ही दान पर निर्भर करता है। देव देने के लिए दान लेता है,याजक लेने के लिए दान देता है। इन लेन देनके कार्य-व्यापारको ही संस्कृतमें हवि: कहा जाताहै। यह लेन-देन सगतिकरण पर ठहरा है। अग्नि ही एक ऐसा देवहै जो लेकर उसका हजार गुणा बढ़ाकर लौटा देता है! दान का प्रतीक घी तथा संगतिकरणके लिए समिधा का प्रयोग होता है। जो पदार्थ दान तथा पूजा के द्वारा याजक तथा यज्ञ की भावनाओं को मिला दे उसे संगतिकरण कहते हैं और इनको पिरो देने वाला सूत्र कहलाता है। आभास से संकल्प, लिया जाता है आवेश में व्रत लेकर आवेग से मनुष्य हवन करता है। संकल्प को प्राप्त कर शिष्य गुरु से दीक्षा लेता है। जब शिष्य गुरु को दक्षिणा के रूप में कुछ देता है तो व्रत धारण करता है। स्वामी दयानन्द ने भी जब महर्षि विरजानन्द को दक्षिणा दी तो दक्षिणा के रूप मे ससार मे वेद प्रचार के द्वारा अज्ञान के अन्धकार को दूर करने का व्रत लिया था। दक्षिणा के उपरांत शिष्य के मन मे अपने कर्म के प्रति श्रद्धा की भावना उत्पन्न होती है। वह श्रद्धा स्वयं को नि.स्वार्थ भाव से होम करने के लिए प्रेरित करती रहती है। गायत्री मन्त्र के भी यही,तीन केन्द्र हैं :— धी=मन, वरेण्यम= हृदय, भर्ग=उदर। भर्ग= भ्रस्ज=भ्रस=पाक=पकाना, वह शक्ति जो जो हमारी एक-एक तन्त्री को खिला दे वीर्य शक्ति कहलाती है। बुद्धि, भाव तथा शक्ति का समन्वय ही मानव को पूर्ण मानव बनाने मे सहायक होता है। आचार्यवर ने यह भी कहा कि जब भी कोई राष्ट्र पतित होता है वह तीन अकारों के कारण नष्ट होता है। वे तीन अकार हैं—अज्ञान, अन्याय तथा अभाव। अज्ञान अध्याय से ब्राह्मण द्वारा सत्य प्रतिपादित कर नष्ट किया जाता है। अन्याय को क्षत्रिय अपने शौर्य तथा बुद्धि के बल पर न्याय के द्वारा समाप्त करता है तथा अभाव वैश्य आय के द्वारा नष्ट करता है। मनुष्य को अपने जीवन में कर्तव्य-पालन अत्यन्त आवश्यक है। जिस प्रकार मुक्ति के लिए बन्धन अत्यावश्यक है उसी प्रकार अधिकार के लिए कर्तव्य-पालन अनिवार्य है। कर्तव्य तथा अधिकार का बोध ज्ञान के द्वारा उपलब्ध होता है। ज्ञान विद्याध्ययन प्राप्त होता है। 'शिक्षा सा विद्या या अविद्या मुक्तये।' तो सभी राष्ट्रों को अपने सजीव प्रतीक के रूप में व्रत सूत्र को ग्रहण करना अनिवार्य है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द का दिव्य संदेश

[श्री वेदप्रकाश जी विद्यावाचस्पति सिद्धांतालंकार (आर्य समाज हिसार)]

(गतांक से आगे)

कुछ अन्य लोग पुलिस के हस्तक्षेप के बिना ही रात्रि के समय मंदिर पर लाठियों के जोर से बलात् अधिकार के पक्ष मे थे। यदि किसी प्रकार का विरोध हुआ तो वह लडने को तैयार थे। चौथा दल जिस में भी सम्मिलित था, इस बात के पक्ष मे था कि महात्मा दल के साथ सहयोग असम्भव था, उन से पृथक् होना ही उचित है तब समाज के साप्ताहिक सत्संग के लिए एक मकान किराये पर लेना चाहिए।'

लाला लाजपतराय : जीवनी पृष्ठ ७१, ७२

इसके बाद तो और भी दुःख होता है, अजीब दृश्य सम्मुख उपस्थित हो जाता है जब इस घटना को पढता हू कि लोग खुलकर सामने आ ही गए—जरा लाला जी के ही शब्दों में पढ़िये।

'१८९३ के आरम्भ से १८९७ तक भीषण संघर्ष का काल रहा। एक दिन झगडा यहा तक बढ़ा कि लाठिया चलने तक की नौबत पहुच गयी। श्री स्वर्गीय साईं दास के ज्येष्ठ पुत्र सुन्दर दास की खोपडी फट गई और उसने अपने दल के लिये प्राण त्याग दिये। दूसरे दल की ओर से भी किसी को प्राण खोने पडे।'

वही पुस्तक पृष्ठ ७४

यह था हमारा उस समय का हाल। इसी के कारण उस समय एक ऐसे महान् व्यक्ति को हमने खोया जिसका नाम आज भी अमर है और बडी श्रद्धा के साथ लोग उसे नमन करते हैं। वह महान् व्यक्ति थे—स्वामी रामतीर्थ।

स्वामी रामतीर्थ अपना सम्पूर्ण जीवन डी ए वी कालेज लाहौर को देने वाले थे। पर जब उस समय के आर्यसमाज के युद्ध काड को देखा और देखा त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज पर कीचड़ उछालते हुए तो उन्होंने उससे विमुख होकर अपना मार्ग बदल लिया। हमने कितने महान् व्यक्ति को खो दिया। क्या यह कम अफसोसजनक बात है? कितना मूल्यवान् हीरा हमारे हाथ से निकल गया। इसमे किसका दोष था? क्या इसमे हमारा दोष नहीं। पता नहीं आज भी कितने लोग इसी आपसी ईर्ष्या, द्वेष को देखकर हमसे अलग हैं। आज हम संख्या मे बहुत हैं तो क्या हुआ। यदि यही स्थिति रही तो संख्या में चाहे कितने बढ जाएं उससे तो केवल खाना पूर्ति ही हो सकेगी। महर्षि के विचार का प्रचार नही। महर्षि दयानन्द का सन्देश तो अधूरा ही रहेगा। क्योंकि—

आज पुनः पिछले इतिहास को दुहराने का प्रयत्न किया जा रहा है। सभा भवन पर जबरदस्ती कब्जा करना क्या इस बात का ज्वलन्त उदाहरण नहीं है। क्या उसी पुरानी बात को हम फिर आचरण में लाना चाहते हैं? क्या इतिहास के पन्ने इन्ही पंक्तियों से काले करना चाहते हैं? क्या हम इस कडी को समाप्त करना नहीं चाहते? शायद दिखायी तो ऐसा ही पडता है। कहावत है—विनाश काले विपरीत बुद्धि।

पूर्व वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी हम महर्षि का निर्वाण दिवस मनाने को उद्यत हो रहे हैं। ऐसे अवसर पर हमारा कर्त्तव्य है कि हम सब आपसी वैरभाव को छोड़ कर एक स्वर मे स्वर मिला कर महर्षि के उद्देश्य को पूरा करने में लग जावें। महर्षि के दिव्य सन्देश को जन-जन तक पहुचाने का प्रयत्न करें। क्योंकि महर्षि का सन्देश था—

'यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नही है। यह निश्चय है कि विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध के जाल मे फंसा रखा है। यदि वे लोग अपने प्रयोजन में न फसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहे तो सभी ऐक्यमत हो जावें।'

स. प्र. अनुभूमिका एकादश समुल्लास

इसलिए आज हम सब मिल कर चलें। आपसी झगडों को शांतिपूर्वक निपटाने के लिए यत्नवान् होवें। पत्रिकाओं या अलग पत्रादि द्वारा या परिपत्र जारी कर परस्पर कीचड़ उछालने का प्रयत्न न करें इससे सामान्य आर्यों पर बुरा असर पड़ता है, समाज से वे विरत होने लगते हैं। इसी लिए महर्षि दयानन्द ने कहा था—

'जब विद्वान लोगो मे सत्या सत्य का निश्चय नही होता तभी अविद्वानो को महा अन्धकार मे पडकर बहुत दुःख उठाना पडता है। इस लिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद या लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है।'

स० प्र० अनुभूमिका द्वादश समुल्लास

महर्षि के वचन स्वर्णाक्षरो मे अंकित करने योग्य हैं। आर्यों को इसी से चेत जाना चाहिए और शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। आगे और भी महत्वपूर्ण शब्दों मे कहते हैं—

'अस्तु, जो हो, परन्तु मनुष्य ऐसे हैं जिन को अपने दोष तो नही दीखते किन्तु दूसरों के दोष देखने मे अत्युद्युक्त रहते हैं। यह न्याय की बात नही, क्योंकि प्रथम अपने दोष निकाल के पश्चात् दूसरो के दोषो मे दृष्टि दे के निकालें।'

—पूर्वोलिखित अनुभूमिका

परन्तु आज हम अपने दोषों को देखना और निकालना भूल ही गए हैं केवल परछिद्रान्वेषण करना ही हमारा कर्त्तव्य रह गया है।

आज जबकि ईसाई, मुसलमान तथा कम्युनिस्टो की गतिविधिया राष्ट्रविरोधी हो रही है, अनेक उपद्रवी तत्व सिर उठा रहे हैं, नास्तिकता का प्रचार बढ रहा है, मत-मतातरो मे वृद्धि हो रही है, ऐसे अवसर पर आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो अपने ज्ञान प्रकाश से सबको आलोकित कर सकती है, राष्ट्रीयता का पाठ पढा सकती है, एकता की भावना का संचार कर सकती है इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि सर्वप्रथम हम स्वय आपसी वैरभाव का त्याग करे, प्रीति के साथ चले और व्यवहार करे, गद्दियों के लिए न झगडे, स्वार्थ रहित हो, समाज की सम्पत्ति को हानि न पहुचाएं। समाज को अराष्ट्रीय तत्वो के हाथो मे जाने से बचाएं क्योकि आज हम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए समाज विरोधी विचारधारा रखने वाले लोगो से मिलकर भी समाज को हानि पहुचाने का प्रयत्न करते हैं। अतएव इससे बचने का प्रयत्न करे। तभी समाज और राष्ट्र की उन्नति हो सकती है।

इसलिए इस ऋषि निर्वाण दिवस पर हम सब मिलकर चलने का सहयोग करने का व्रत ले महर्षि के सन्देश को फैलाने का संकल्प करे। इसके लिए हम सब एक होकर जुट जावें। आज इसी चीज की आवश्यकता है। ईश्वर हमे ऐसी सद्बुद्धि दे जिस से हम सब एक हो, हमारे चित्त एक हो और संगठन सूक्त का पढना सार्थक हो। ईश्वर से यही प्रार्थना है।

कठुआ में वेद प्रचार

आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से पं० तेजराम जी उपदेशक ५ से ९ नवम्बर तक प्रचार करते रहे। श्री रूप लाल जी एडवोकेट प्रधान आर्यसमाज और अन्य अधिकारी वर्ग ने पूरा २ सहयोग दिया। (३१ रु० मार्ग व्यय तथा वेद प्रचार धन प्राप्त हुआ। —सभा मन्त्री

वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज (बी० ब्लाक) गोविन्दनगर कानपुर का वार्षिकोत्सव दिनाक १ से ४ नवम्बर तक विद्यार्थी मार्केट मे सफलता पूर्ण ढग से सम्पन्न हुआ। श्री शिव स्वामी जी, श्री रामदयालु जी शास्त्री तर्क शिरोमणि, प० शांति प्रकाश जी, पं० देशराज जी भजनोपदेशक के ओजस्वी प्रवचन हुए।

—मन्त्री ओमप्रकाश

हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर....

(पृष्ठ ४ का शेष)

२१ अक्तूबर की सन्ध्या को आचार्य जी ने अथर्व वेद के मन्त्र "ओ३म् अम्बक यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्" का अर्थ बताया उन्होंने कहा मनुष्य का शरीर एक वृक्ष है। उस पर दो पक्षी बैठे हैं। जिनकी वृत्ति बिल्कुल भिन्न प्रकार की है, एक पक्षी फल खाने वाला पक्षी है तथा दूसरा फल देखने वाला पक्षी है। परमात्मा की व्यवस्था मे फल अत्यावश्यक है। जो पक्षी फल का भोग कर रहे हैं वे हृदय रूपी पत्ते सुपर्ण पर बैठे हैं। वही उडान भरते हैं। आत्मा खाने वाला पक्षी है, परमात्मा देखने वाला है। आत्मा ही मनुष्य के शरीर को छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करता है। परमात्मा तो सर्वव्यापक है। इसी लिए उडान भरने वाला तो सदैव बन्धनमुक्त है। इस मन्त्र मे मनुष्य यही प्रार्थना करता है :—

१. मृत्यो बन्धनात् मुक्षीय।

२. अमृतात् बन्धनात् मा।

३. उर्वारुकम इव।

अर्थात् मृत्यु के बन्धन से छुड़ाओ, अमृत के बन्धन से मत छुडाओ। यहां मनुष्य एक बन्धन से मुक्ति तथा दूसरे बंधन से बंधने की कामना करता है। बन्धन भी दो प्रकार के है। एक तो जिसकी साकल अपने हाथ मे है तथा दूसरे जिसकी सांकल दूसरे के हाथ मे है। जिसकी साकल अपने हाथ मे है वह तो बन्धन नही, क्योकि उससे मुक्त होना मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर करता है, परन्तु जिसकी साकल दूसरे के हाथ मे हे वह बन्धन अवश्य है! मृत्यु की साकल तो भगवान के हाथ मे है। मनुष्य कामना करता है कि मैं मृत्यु के बन्धन से छूट जाऊं। जिस प्रकार उर्वारुक अर्थात् खरबूजा लता से छूटता है। खरबूजा पूर्णत. पकने पर ही लता से छूटता है। तो भक्ति के लिए पहले पकना अनिवार्य है। बिना ससार रूपी लता से बधे पकेगे नही और बिना पके छूटेंगे नही! हम तो सब मृत्यु रूपी लता से बधे हैं! और वासना रूपी शाखा हमें लिपटाए रखती है। संसार की विषय वासनाओं मे ही रह हम पकेंगे।

खरबूजा पकने की पहली पहचान यह है कि उसका एक भी तार लता के साथ नही लगा रहता। तात्पर्य यह कि वासना का एक भी तार हमारे साथ लिपटा न हो! सन्यासाश्रम केश उखाडने का अभिप्राय भी यही होता था कि केश रूपी वासना का एक भी तार बाकी न रहे। अपने मन को दृढ बनाने के लिए संसार के मोह-माया जाल के बन्धनो का परित्याग हमे करना ही पडेगा।

खरबूजे के पकने पर उसकी सुगन्धि दूर-दूर तक फैल जाती है। मनुष्य भी अपने मे उन उत्कृष्ट कोटि के गुणों को समाविष्ट करे जिस से उसका यश उसकी कीर्ति दूर दूर तक फैल जाए।

खरबूजा पक कर सदैव ही फट जाता है। उसका फटना मानो सब को रसास्वादन के लिए अमीपान के लिए निमन्त्रत करता है। खरबूजे की भाति ही व्यक्ति अपने गुणो को जन-जन मे बाटने का प्रयास करे। उसके मन मे ज्ञान गुहने की नही, अपितु विकीर्ण करने की प्रवृत्ति विद्यमान हो।

खरबूजे को चखते ही लोग-प्राय: वाह! वाह!! करते हुए मुदित हो जाते है। मनुष्य अपने चरित्र, अपनी आत्मा को क्रियात्मक रूप मे ही इतना उच्च बनाए कि लोग उस से प्रभावित ही नही अपितु मोहित हुए बिना न रह सके।

खरबूजा अपना रंग तुरन्त ही दूसरे खरबूजे पर छोड देता है। मानव मे सदैव ही इतनी सरलता और विशेषता हो कि वह अपने रग मे अन्य व्यक्तियो को रग सके। उसके उपदेश जन-साधारण के लिए ग्राह्य हो।

खरबूजे मे एक ओर विशेषता है कि जैसे ही बाहर से शाखा ने छोडा, साथ ही अन्दर से बीज भी उसे छोड़ देता है। मानव को वाह्य रूप से भी मुक्त होना आवश्यक है। वाह्य रूप से संसारिक विषय-वासनाओं का तथा आन्तरिक रूप से अपनी रूढियों तथा संस्कारों का परिहार मनुष्य अवश्य करे।

जिस प्रकार खरबूजे पर वाह्य रूप मे दस फाके दिखाई देती है, ऐसे ही मनुष्य पर भी उसकी पाच कर्मेन्द्रिया, पाच ज्ञानेन्द्रियो की छाप अवश्य पडती है, परन्तु खरबूजा भीतर से एक ही रंग का होता है मनुष्य को हृदय से द्वेष भाव का त्याग करना चाहिए। अद्वैत की भावना मनुष्य मे पकने पर ही आ सकती है। वह मनुष्य ऊंच-नीच, जाति-पाति सब प्रकार के भेदोंसे परे स्व: लोक मे पृथ्वी तल को सम दृष्टि से निहारता हुआ विचरण करे तभी वह मुक्त होता है। इस प्रकार मनुष्य स्वीकृत यह करे कि मेरे ऊपर प्रकृति की छाप अवश्य है पर भीतर से मैं एक ही हू। इसीलिये त्ति=तीन, अम्बकं=ध्वनि करने वाले मन्त्र की संगति से ही कुछ प्राप्त कर सकते हैं। वह तीन स्वरो वाला मन्त्र 'ओ३म्' है, जो मनुष्य मे सम-दृष्टि ला सकता है। यह ओ३म्, शाश्वत्, अनादि तथा अनन्त है। यह संसार तो हमारे पिता का घर है और वह सम-दृष्टि युक्त भगवान का घर पति का है। जिस प्रकार कन्या युवती होने पर पिता के घर जाती है तो उस की सारी वृत्तिया उसी घर मे केन्द्रित हो जाती हैं। फिर चाहे वह पिता के घर कितनी बार आए उसका ध्यान पति के घर की ओर ही रहता है। उसी प्रकार मनुष्य बार-बार संसार मे आए अवश्य, परन्तु उसका ब्रह्म कभी भी उसके हृदय से बिसरे नही, उसकी समस्त मनोवृत्तियां उसी पर केन्द्रित रहे। पुन:-पुन: बन्धन को प्राप्त कर मुक्ति का आनन्द लूटे। इसी बात को वेद मे कन्या के सम्बन्ध मे कहा गया है—

'अम्बक यजामहे सुगन्धिम् पति वेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीयमामुते :।।'

कबीर ने भी कहा है :—

ज्यू तिरिया पीहर बसे, सुरति रहे पिय माह।
ऐसे ही जन संसार रहे, हरि को भूले नाह।।

इसी को वेद ने कहा है। ओ३म् स्मर। क्योंकि यह पहले भी है मध्य मे भी है और अन्त मे भी है। मनुष्य को इस शाश्वत् सनातन ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए।

आचार्य जी के व्याख्यानों से प्रभावित होकर २२ अक्तूबर की प्रात: विद्यालय के छात्रावास की कुछ छात्राओं ने विधिपूर्वक यज्ञोपवीत संस्कार कराए और इस शिक्षा सूत्र का प्रचार करने का सकल्प लिया। सध्या समय जालन्धर नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति मे स्वर्गिक सा वातावरण उपस्थित करते हुए इस महायज्ञ की पूर्णाहुति का कार्यक्रम धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

सिगरेट पीने वालो!

(पृष्ठ ३ का शेष)

छपा है कि सिगरेट पीने से ब्रिटेन मे प्रति वर्ष पचास हजार जीवन मौत के मुख मे चले जाते हैं। लन्दन मे इस सम्बन्ध मे अभी-अभी सरकारी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है जिसमें कहा गया है कि फेफडे के कैंसर से जितनी मौतें होती है उनमे प्रति दस मे नौ मौतोंका कारण सिगरेट पीना है। श्रीजार्ज गोडबर चीफ मैडिकल आफिसर विभाग ब्रिटेन का कहना है कि वे जिन्हे खासी हो और सिगरेट पीते समय कफ छोडें—उन की मौते चार गुना अधिक होती हैं। यह अधिकारी स्वय सिगरेट नही पीते। वह लिखते हैं कि चार मे से तीन मौते सिगरेट पीने से होती हैं तथा एक हृदय गति के रुक जाने से होती है।

पता नही कि सिगरेट पीने वालों की आखे कब खुलेगी। क्यो स्वय विष का पान करते हैं। हमारे देश मे यह बुराई आगे से बढती जाती है। दूसरे देश तो अब समझने लगे हैं किन्तु हम इन बुराईयों में और अधिक फसते जाते हैं। जितना जल्दी यह विष छोड दिया जाये उतना ही अच्छा है। प्रभु करे कि हमारे देश की जनता की आखें खुल जाये। यह रोग जितनी जल्दी समाप्त हो उतना भला है।

दीपमाला फंड भेजें

दीपमाला के पर्व पर आर्य समाजे सभा के लिए वेदप्रचार केलिए फण्ड एकत्रित करती हैं। आर्य-प्रादेशिक सभा जालन्धर के मान्य मन्त्री डा० वेदीराम जी एम. ए. पी एच. डी. भी अपनी समाजो से इस बारे मे विशेष अनुरोध करते हैं। सभा आप का अपना केन्द्र है। अत: इस समय सारे समाज ही प्रति परिवार से वेद प्रचार फण्ड इकट्ठा करके अधिक से अधिक सभा को जल्दी भेजे।

❀ विश्व को महर्षि की देन ❀

[आर्योपदेशक ब्र० पं० जैमिनी कुमार जी आर्य, विद्या वाचस्पति, बी. काम]

(गतांक से आगे)

क्योंकि प्रत्येक पुराण अपने निर्दिष्ट देवता की उपासना करने का उल्लेख करता है तथा वे अपने-अपने देवता को एक दूसरे से श्रेष्ठ व अद्वितीय बताते हैं। पुराणों मे यहां तक देखने को मिलता है कि वे अन्य पुराण के देवता की निन्दा भी करते हैं। पुराणकारो ने ऐसे-ऐसे मत वा सम्प्रदाय प्रचलित कर दिये। तथा उनमे ऐसे-ऐसे सिद्धान्त भर दिये थे। जिनका यहां उल्लेख करते हुए लेखनी शरमाने लगती है। मद्य-मास का इतना प्रचार हो गया कि वे धर्म का अग समझे जाने लगे जैसे कि वाममार्गियों के काली तन्त्रादि में कहा है कि :—

मद्य-मास च मीन च मुद्रा मैथुरमेव च।
एते पंच मकाराः स्युर्मोक्षिदा हि युगे-युगे॥

अर्थात् शराब, मास, मछली, मुद्रा एव मैथुन ये पांच तत्व वा मकार उपभोक्ता को प्रत्येक युग मे मोक्ष प्रदान करने वाले होते हैं। इसी प्रकार कुलार्णव तन्त्र के अ. ८ श्लोक ९६ मे लिखा है :—

प्रवृत्ते भैरवी चक्रे सर्वे वर्णाः द्विजातयः।
निवृत्ते भैरवी चक्रे सर्वे वर्णाः पृथक पृथक॥

अर्थात् जब भैरवी चक्र प्रारम्भ होता है तब समस्त वर्ण वाले द्विज हो जाते हैं और जब भैरवी चक्र निवृत्त वा समाप्त होता है तब सभी वर्णस्थ पृथक-पृथक हो जाते हैं इसी तन्त्र के अ ६ श्लोक १००वे अध्याय मे कहा कि :—

पीत्वा-पीत्वा पुनः पीत्वा यावत् पतति भूतले।
पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

कहने का तात्पर्य है कि शराब पी-पी और पी जब तक भूतल पर गिर न जावे, गिरने के पश्चात् उठकर पुनः पी इस प्रकार तब तक पीता रहे जब तक की पुनर्जन्म न प्राप्त हो जावे। अगर रुद्रयामल तन्त्र को देखे तो इसका निराला ही सिद्धांत है :—

अह भैरवसत्वं भैरवी ह्यावयोरस्तु सङ्गमः॥१॥

इस प्रकार चाहे कोई भी, कैसी भी स्त्री व पुरुष क्यो न हो, माता बहनादि ही क्यो न हो उपर्युक्त प्रकार के ऊटपटाग वचनो को पढकर वाममार्गी समागम कर लेते थे। यही नही वाममार्गियो का कहना है वा रुद्रयामल ही तन्त्र का सिद्धांत है कि:—

रजस्वला पुष्कर तीर्थं चाण्डाली तु स्वयं काशी चर्मकारी
प्रयागः स्याद्रज की मथुरामता। आयोध्या पुक्कसी प्रोक्ता॥

अर्थात रजस्वला स्त्री से समागम करने से पुष्कर तीर्थ चाण्डाली अर्थात मेहतरनी से सम्भोग करने से काशी, चर्मकारी वा चमहारण के साथ सहवास करने से प्रयाग और धोबन से प्रेम करने से मथुरा आदि जैसे तीर्थों की प्राप्ति होती है। देखिये जबकि वेद आदि शास्त्रों में रजस्वला आदि स्त्रियों को छूना तक निषेध किया है वहा पर ये वाममार्गी अति पवित्र व तीर्थस्थान मान रहे हैं। जब भारत मे ऐसे-ऐसे मत व सम्प्रदाय प्रचलित हो गये तो दूसरे मत वालो ने वा विदेशो ने अन्धविश्वास वा मूर्खता का फायदा उठाया।

इसी प्रकार भारतवर्ष में एक दो सम्प्रदाय नही थे अपितु अनन्य सम्प्रदाय प्रचलित थे जो यज्ञो आदि के नाम पर पशुबली, नरबली आदि दिये जा रहे थे, इसी हिंसा ने महात्मा बुद्ध को जन्म दिया। इस प्रकार के अत्याचारों को देख बुद्ध ने कहा 'मैं ऐसे धर्म व वेदो को मानने को तैयार नहीं हूं जिस मे मूक व अमूक आदि प्राणियो की हिंसा करने का उल्लेख हो।' इसी प्रकार बुत पूजा, जड़ पूजा तथा प्रकृति पूजा से कुमारिल-भट्ट, शंकराचार्य व मोहम्मद साहब आदि को जन्म दिया। युग निर्माण के लिए महापुरुष व समाज सुधारक आए जिन्होंने मानवतावाद का पाठ न पढ़ाते हुए हिंदु समाज (वैदिक समाज) को अनेकों मतो के माध्यम से विभक्त कर दिया। यहां तक की हिंदु (आर्य) एवं मुसलमान एक दूसरे के जीवन के शत्रु बनकर दुःखमय जीवन व्यतीत करने लग गए थे। इसका परिणाम यह निकला कि मोपला काण्ड का अविर्भाव हुआ तथा मालाबार, पजाब बगाल और सीमा प्रांत मे हिंदुओ का अत्यधिक सख्या मे कत्ल हुआ, जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया तथा उनके घरो मे आग लगाई गई साथ ही मुसलमानो के द्वारा हिंदुओ की बहू बेटियो को खुले-मैदानो मे उनके मा-बाप के सामने नगी किया गया तथा उनसे अत्यधिक सम्भोग करने पर उन्हे मारकर उनके जिस्म तथा कलेजों के टुकडो को मा-बाप के मुहमे जबरदस्ती ठूंसा गया। इस प्रकार की भयकर परिस्थिति होने पर गाधी व उनके जैसे कांग्रेसियो के मुंह से यही कहते सुना गया कि 'मालावार मे हिंदुओ पर कोई अत्याचार नही हुए तथा हिंदु मुसलमान एकता के नारे लगाए।' इसकी साक्षी इतिहास दे रहा है। अन्त मे इसका परिणाम यह निकला कि हिंदू और मुसलमान एक दूसरे के पक्के विरोधी हो गए।

देश विभाजन की तो कथा ही निराली है इस समय भी पश्चिमी पाकिस्तान मे हिन्दू या तो कत्ल कर दिये गये या उनको इतना अधिक उजाड दिया कि उनका सब कुछ नष्ट हो गया तथा पूर्वी पाकिस्तान मे भी ११ करोड आदमी बे-घर हो गये।

उन्नीसवी शताब्दी के भारत की स्थिति तो देखिये उस समय भारत मे चारो तरफ अशान्ति, अराजकता ने अपने पैर घूरे सर्प के समान जमा लिए थे। अंग्रेजो ने भी अपने राज्य की जडे पूर्ण रूपेण गहरी जमा ली थी। चारो तरफ जनता अत्याचार, उत्पीडन के कारण कराह रही थी। उधर यूरोप आदि देशो से पादरियो का भारत मे टिड्डीदल की भाति आगमन हो गया था। पोप लीला के द्वारा हिन्दू जनता को ईसाई बनने पर बाध्य किया गया मिथ्या धर्म पुराणो का बोल-बाला था। ईसाई मिशनरी तत्कालीन पौराणिको को उनके धर्म को असत्य मिथ्या कह कर शास्त्रार्थों के लिए ललकारते थे, जब वे शास्त्रार्थ मे हार जाते थे तो उन्हे ईसाईयत मे प्रवेश होने के लिए बाध्य किया जाता था। अत पं० नीलकण्ठ शास्त्री व रमानाई जैसे प्रकाण्ड विद्वान भी अपने आदर्श धर्म को बचाने मे असमर्थ रहे और अज्ञानता के कारण पादरियो से शास्त्रार्थ मे हार कर ईसाई मत को स्वीकार कर लिया था। जब ऐसे धर्म के प्रकाण्ड विद्वान नेताओ की उससमय ऐसी दशा थी तो जन-साधारण की तो बिसात ही क्या हो सकती है।

कुछ भारतीयो की अज्ञानता व अन्ध विश्वास के कारण और कुछ विदेशी तानाशाही के कारण इस 'सोने की चिड़िया' कहा जाने वाले भारत की दशा अत्यन्त ही गम्भीर थी। भारत रूपी नैय्या परतन्त्रता रूपी काले सागर मे हिचकोले ले रही थी, कोई खेवैय्या नही जो उसे किनारे लगा सके।

महर्षि का परिचय :—

सूर्य की प्रथम किरणों से जिस तरह अन्धकारमय निशा का अन्त हो जाता है तथा पंकज प्रफुल्लित हो उठता है, शीतल चन्द्र किरणो से कुमुदनी विकसित हो जाती है, चचल समीर के स्पर्श से जैसे नीर मे लहर उमड उठती हैं। जिसने पृथ्वी के शुष्क नीरस वक्षस्थल पर अपनी देन रूपी फसलें उगाकर विश्व कल्याण के लिए जरा सी भी त्रुटि नहीं की ऐसी महान दीप्तीमान जग को रोशनी देने वाले महान आत्मा दयावादी स्वामी का नाम कान मे पडते ही भारतीय जनता तो क्या विश्व के हर जन का हृदय जो स्वामी जी से परिचित है उल्लास से भर जाता है, मस्तक गर्व से उन्नत हो उठता है।

गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

आर्यसमाज मन्दिर रेलवे रोड अम्बाला शहर मे १२-१०-६९ दिन रविवार को गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी बडे उत्साह और समारोह के साथ मनाई गई। इस समारोह की अध्यक्षता राजारामसिंह जी ने की और इस उत्सव पर प्रो० सुरेन्द्रकुमार प०, हरिदेव जी शास्त्री और श्री हरबस-लाल जी ने अपने विचार दिए। —उपमन्त्री, सुरेन्द्रकुमार

आर्य समाज हांसी

का वार्षिकोत्सव गत दिनों बडे ही समारोह से सम्पन्न हो गया। समाज के प्रधान श्री सेठ इन्द्रराज सिंह जी तथा मन्त्री चौधरी केशवदेव जी, प्रभुभक्त श्री पारसनाथ जी आदि सारा समाज एवं महिला समाज भी बडा ही उत्साही है। श्री पं० रविदत्त जी शास्त्री पुरोहित बडे ही योग्य परिश्रमी हैं। जल्से के पूर्व कथा थी। कथा जल्से में सभा से पं० त्रिलोकचंद्र शास्त्री, आचार्य ज्ञानचन्द जी एम ए, प्रो० रामविचार जी एम ए, श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री, प्रसिद्ध नेता कुंवर सुखलाल जी, प्रिंसिपल देवराज जी गुप्ता, पं० राजपाल जी, मदनमोहन जी चिमटा मण्डली, प० भास्करानन्द जी शास्त्री, पं० प्रभुदयाल जी भजन मण्डली पधारे। आर्यकन्या स्कूल का भी पूरा योग था। खूब सफल रहा। सभा को मार्ग व्यय के अतिरिक्त पौने तीन सौ रुपये वेद प्रचार मिला सारा समाज उत्साही है।

आर्यसमाज अलावलपुर

आर्यसमाज अलावलपुर का वार्षिकोत्सव इस बार बडी शान से हुआ। श्री युत अमरनाथ जी सग्गी प्रधान जी, श्री युत गुरु प्रसाद जी मन्त्री प्रिंसिपल पिण्डीदास जी, नवयुवक उपमन्त्री जी एवं सारा समाज परिवार ही कार्य मे लगा था। श्री चन्द्रगुप्त भी बडे मस्त है। औषधालय के वैद्य जी तथा डाक्टर मैनन जी एवं उनकी श्रीमती डाक्टरानी जी मन्त्राणी स्त्रीसमाज ने भी खूब योग दिया। डी ए वी स्कूल भी पूरा सहयोग बना। जल्से से पूर्व एक सप्ताह पं० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री की वेदकथा प० ज्ञानचन्द जी व प्रसिद्ध चिमटा मडली प० राजपाल जी मदन मोहन जी के मधुर भजन होते रहे। जल्से में पं० सत्यव्रत जी राजेश, बहन कमला जी यती, ब्र० सत्यप्रिय जी, स्वामी शिवानन्द जी, बहन सुवीरा देवी जी, पधारे। नगर कीर्तन भी खूब हुआ। हर प्रकार से कथा उत्सव सफल था। सभा को वेदप्रचार मे २५०) रु० मिला मार्ग व्यय अलग था। परिवारो मे सत्सग भी होता रहा।

विश्व शांति यज्ञ का आठवां वेद सप्ताह

अमीन जिला करनाल में ९ से १७ अक्तूबर तक यह यज्ञ हुआ आर्य परिवारो ने पूर्ण सहयोग दिया। सभा उपदेशक पं० तेजराम जी को सभा के लिए ५१) वेद प्रचार धन तथा १० रुपए मार्ग व्यय प्राप्त हुए।

आर्य समाज म० टाऊन पानीपत

आर्य समाज माडल टाऊन पानीपत मे २३ से २९ अक्तूबर तक वेद सप्ताह मनाया गया। श्री हुकमचन्द जी प्रधान आर्य समाज तथा अन्य अधिकारी वर्ग से पूरा सहयोग दिया। सभा को ५१ रु वेद प्रचार धन रु. मार्ग व्यय प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज जोगिंद्रनगर का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज जोगिन्द्र नगर का वार्षिक चुनाव दिनाक ७—९—६९ रविवार प्रातः दस बजे महात्मा हंसराज हाल में श्री जयलाल जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। तथा निम्नलिखित पदाधिकारियों को सर्वसम्मति से चुना गया :—

प्रधान—श्री गुरदयाल अम्ब। मन्त्री—श्री आदर्शकुमार मोगा। कोषाध्यक्ष—श्री केदारनाथ सूद।

इसके पश्चात सर्वसम्मति से फैसला किया गया। अन्य पदाधिकारी व अन्तरग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार नये प्रधान श्री गुरदयाल अम्ब को दिया गया तथा निम्न को गया।

उपप्रधान—श्री राजकुमार सलवान, श्री जयलाल सूद, उपमन्त्री—श्री तरसेमलाल गुलाटी, लेखा निरीक्षक—श्री मुरारीलाल जी।

अन्तरंग सदस्य—सर्वश्री गिरधारी लाल जी धवन, श्रीमति बृजरानी धवन, परमानन्द जी और ओमप्रकाश जी मरवाहा।

प्रतिष्ठित सदस्य :- सर्वश्री लक्ष्मी नारायण, कमलदत्त जोशी। भूतपूर्व पदाधिकारी ने नये पदाधिकारियों को बधाई दी तथा पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। शान्ति पाठ के बाद सभा की कार्यवाही समाप्त हो गई

भवदीय—आदर्शकुमार

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर की पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २०-००
२. वैदिक गुरमत [पजाबी मे] (ले० डा० धर्मान्तसिह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी में) १·५०
१२. सध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १·००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २.००
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र(ले० आनन्द स्वामीजी महाराज) १.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M.A.) ०·५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद(ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. ·५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, ·५०
२१. मुंडक उपनिषद(ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०·३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना(ले० स्वामी सोमानद जी) उर्दू में ०·३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १·२५
२४. सीता(ले. आनंदस्वामीजी) ०·३७
२५. पद्मनी (,, ,, ,,) ०·३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUp his had ले० प्रि० दीवानचन्दजी M.A.) अंग्रेजी मे १.२५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योति ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में ... गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी ... हित्य का

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेद... एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रति... ाप रोड जालन्धर
तथा आर्यजगत कार्यलय महात्मा ... कचहरी जालन्धरशहर से प्र... जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०२७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २१, अंक ४७) ६ मार्गशीर्ष २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२३ नवम्बर १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

शिवो भव प्रजाभ्य:

हे मानव ! तू अपने जीवन में शिव: दूसरों का भला करने वाला भव-बन जा । परोपकारी बन ।

भाव:—वेद भगवान उपदेश देता है कि मनुष्य को चाहिए कि वह सदा ही दूसरों का उपकार करता रहे । जन सेवा में लगा रहे । किसी की भी हानि न करे । असुर न बने । जितनी भी भगवान की सृष्टि है, प्रजा है-उसे सुख पहुंचने में जहां तक हो सके, लगा रहे । यह मानव जीवन शिव बननेके लिए मिला है अशिव बनने के लिए नहीं । कभी भी मन वाणी कर्मसे दूसरे को न सताये, दुखाये या तपाये । देवस्वभाव, देव-विचार वाला बन जाये । जीवन में परोपकार की भावनाको ही प्रथम स्थान हो, किसीके प्रति भी अपने मन में अशिव भाव पैदा होने न दे, वेद की इस आज्ञा का सदा पालन करता रहे 'शिवोभव प्रजाभ्य' इसी में मानव का कल्याण है । यजुर्वेद

वेदामृत

सत्य का मुख ढका है

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । योऽसा-वादित्ये पुरुष : सोऽसावहम् । ओ३म् खं ब्रह्म ।

पदार्थ—(सत्यस्य) सत्यस्वरूप परमात्मा का ज्ञान रूप मोक्ष का (मुखम्) द्वार (हिरण्यमेन) सुवर्णादि (पात्रण) दरिद्रता रूपी दु:ख से रक्षक धन सम्पत्ति से (अपिहितम्) ढका हुआ है (य: असौ) जो यह (आदित्ये) प्रलय में सब को संहार करने वाला जो ईश्वर, उनमे जो (पुरुष:) जीव है (स: असौ अहम्) सो यह मै हूं । (ओ३म् खम् ब्रह्म) सबसे उत्तम नाम परमेश्वर का ओ३म् है, वह (खम्) आकाश के सदृश व्यापक और (ब्रह्म) सबसे बड़ा है ।

भावार्थ—जो पुरुष, धन को प्राप्त होकर धन को शुभ कामों में लगाते हैं, पाप कर्मों में कभी नहीं लगाते वे पुरुष धन्यवाद के योग्य हैं । प्राय: सुवर्णादि धन से प्रमादि लोग पाप करके मोक्ष मार्ग को प्राप्त नहीं हो सकते । इसलिए मन्त्र में कहा है कि सुवर्णादि धन से मुक्ति का द्वार ढका हुआ है, इसीलिए उपनिषद् में कहा है—'तत्वं पूषन् अपावृणु' हे सबके पालन-पोषण कर्ता प्रभु ! उस विघ्न को दूर कर ताकि मै मुक्त का पात्र बन सकूं । 'ओ३म्' यह परमात्मा का सबसे उतम नाम को उत्तमता वेद, उपनिषद, दर्शन और गीता आदि स्मृतियों में वर्णन की है इसमें वेदोंको मानने वालोंको कभी सन्देह नहीं हो सकता। उसको (खम्) आकाश की न्याईं व्यापक और सबसे बड़ा होने से ब्रह्म वेद ने कहा है ।

ऋषि दर्शन

योग : चित्तवृत्ति निरोध :

योग:—योग चित्तवृत्ति निरोध: चित्त की वृत्तियों वासनाओं को रोकने का नाम है । चित्त की तमाम धाराओं को रोक देना ही योग कहलाता है ।

भाव—मुनि पतंजलि योग दर्शन के इस सूत्र में योग की परिभाषा या योग का लक्षण करते हुए कहते हैं कि योग क्या है ? जब चित्त की वृत्तियां रोक दी जाती है । चित्त रूपी सरोवर सर सर्वथा शांत हो जाता है । इसकी तमाम वासनाओं की लहरें शांत हो जाती हैं । उस अवस्था को योग कहा है । जिसका चित्त सर्वथा स्थिर व शांत है वही योगी है ।

चित्त की वृत्तियो का निरोध करना आवश्यक है वृत्तियों के निरोध का नाम ही योग है। महर्षि पतंजलि ने इस सूत्र द्वारा यह ही परिभाषा रखी ।

योग दर्शन

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

वैदिक समाज रचना

(प्रिंसिपल श्री रलाराम जी, होशियारपुर)

(गताक से आगे)

अथव वेद का आदेश है, हे मानव तू ऊपर उठने के लिये है। तू अध पतन की ओर मत जा। मौत के पाश को तोडता हुआ आगे बढ़। इस लोक मे तेरे पाव न उखड ताकि तू भगवान के तेज और प्रकाश से जुदा न हो जाये। (अथव वेद ८–१–४)। वेद का उपदश हमारे ध्यान को सदैव इस तथ्य पर केन्द्रित करता है कि अध्यात्म सिद्धि की मजबूत सोपान स्वस्थ तथा सबल शरीर ह शरीर रक्षा तथा बुद्धिबल के लिये सासारिक समृद्धि तथा वैभव परम आवश्यक है। इनको उपेक्षित नही किया जा सकता। परन्तु वेद अभ्युदय को निश्रयस सिद्धि का एक साधन मानता है। पश्चिम ने इसे जीवन का एकमात्र लक्ष्य मान लिया है। अत सवनाश का अजगर मानव के सामने मुह फाड उपस्थित है। हम ऋषियो का प्रतिपादित एव सतुलित दष्टिकाण फिर मे अपनाना होगा। समद्धि तथा वैभव स्वतन्त्रता के अनुचर हैं। स्वतन्त्रता भीरु तथा कायर पुरुषो के सग देर तक वास नही करती। धूत्त तथा दानव इसका शीघ्र अपहरण कर लेते है। समृद्धि मानव को शिथिल, मृदुल तथा कोमल बनाकर नपुसकता की ओर ले जाती है। वेद मे जहा भी रयि अथवा धन दौलत के लिये प्राथना है वहा साथ ही साथ यह भी याचना ह कि मेरा धन मुझ वीरता युक्त रखो सुवीर रयिमा भर जातवेदी विचषण हे सवज्ञ अग्ने, हमे वीरता पूण ऐश्वय दो (ऋग्वेद ६ १६ २९)। पुसवनम सस्कार की समाद्धि पर सब विद्वान तथा सम्बन्धी गभवती स्त्री को पहले आशीर्वाद यह देते हैं कि तू वीर को जन्म देने वाली हो। वीरता केवल योद्धा या सिपाहा का ही गुण नही यह प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक है चाहे वह जीवन के किसी भी विभाग मे काम कर रहा हो। यह चातुवण्य का धम है। अत यजुर्वेद मे वह प्रसिद्ध प्राथना आती है हे भगवन हमारे राष्ट म तजयुक्त ज्ञान सम्पन्न ब्राह्मण पैदा हो। बहादुर, शस्त्रास्त्र विद्या मे निपुण, दुष्टो का दलन करने वाले, युद्ध कला मे निपुण क्षत्रिय हो दूध देन वाली गौव भार ढोने वाले बैल शीघ्रगामी घोड वईयो की राष्ट का देन हो। गृह प्रबन्ध मे चतुर महिलाय इस देश म हो। इस यजमान की सन्तान सबल विजयी वृत्ति वाली समृद्धिशाली सुसस्कृत तथा वीर हो। समय-समय पर वृष्टि हो ताकि वैश्य और शूद्र मिल कर अन्न तथा फल उपजावे और इस राष्ट्र मे धनोपाजन तथा उस का सरक्षण ठीक हो (यजुर्वेद २२।२२)।' दयाल हुतात्मा दयानन्द ने आदेश दिया वेद के उपदेश मे ओजस्वी जीवन है। वेद को अपनाओ।'

महर्षि दयानंद निर्वाण दिवस एवं दीपावली

आयसमाज खडवा में दिनाक ९—११—६९ को सायकाल ५॥ बजे ऋषि निर्वाण दिवस एव दीपावली पर्व मनाया गया। पर्व पद्धति अनुसार बृहद यज्ञ प्रार्थना के पश्चात् श्री० भैयालाल जी शर्मा व श्री० डा० रघुनाथसिह जी वर्मा प्रधान आयसमाज ने महर्षि के जीवन पर एव दीपावली पर्व की विशेषता पर बोलते हुए ऋषि को श्रद्धाजलि अर्पित की सब का आभार प्रदशन किया। प्रसाद वितरण एव शान्ति पाठ के पश्चात कायक्रम समाप्त हुआ।

—वसन्तलाल

प्रचार मन्त्री अ स खडवा

ऋषि निर्वाणोत्सव

आय समाज मन्दिर रेलवे रोड अम्बाला शहर मे ९ ११ ६९ को ला० रामचन्द्र जी बजाज की प्रधानता मे ऋषि निर्वाणोत्सव का कायक्रम अत्यन्त उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर ला० मातुराम जी, प्रो० सुरेन्द्र कुमार जी एम एस-सी श्री पिशोरी लाल जी गुलाटी और कुमारी स्वणलता ने अपने विचार रखते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द ने ही सवप्रथम वेद के आधार पर भारत मे धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्राति का आहवान किया।

—सुरेन्द्र कुमार उपमन्त्री

आर्य समाज धारीवाल

आय समाज धारीवाल मे ऋषिनिर्वाण उत्सव गत सप्ताह ९-११ ६९ को श्री सत्य प्रकाश जी पुरी मैनेजर पजाब नैशनल बैंक धारीवाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। कायक्रम काफी रोचक रहा। प्रभात फेरी मे डी ए वी स्कूल के विद्यार्थियो ने भाग लिया दोपहर के कायक्रम मे, डी ए वी स्कूल, माडल स्कूल तथा हिन्दू पुत्री पाठशाला की छात्रायो ने भाग लिया।

प्रो० श्याम राव जी एम० ए सयोजक सावदेशिक युवक परिषद् ने भिन्न भिन्न स्थानो पर वेद प्रचार किया।

दीनानगर गुरदासपुर, डी ए वी हा० सकै० स्कूल कादिया तथा वेद कौर कन्या पाठशाला मे उनके व्याख्यान हुए।

—मन्त्री आय समाज धारीवाल

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, २३ नवम्बर १९६९ [अंक ४७

दो लहरों का संघर्ष

इस समय वैसे तो सारे विश्व में दो विचारों का सग्राम जारी है। जैसे जल की तरंगें आपस मे टकराती रहती हैं, उसी प्रकार से विचारों की लहरो मे भी टकराव जारी रहता है। कभी एक तरङ्ग प्रबल हो जाती है और कभी दूसरी। पुरातन काल मे भी राम-रावण के युग मे, महाभारत के समय मे पाडव-कौरवो मे परस्पर भारी सग्राम भी इन दोनो प्रकार की विचार धाराओ का ही तो संघर्ष था। ये दो तरगें है धर्म और अर्थ की लहरें। इसी को देवासुर संग्राम के नाम से पुकारा जाता है। जब जन जीवन मे धर्म का प्रवाह चलता है और लोक समाज धर्म प्रधान बन जाता है—तब देवमय जीवन तथा जगत् हो जाता है। आचार विचार मे पवित्रता आ जाती है। कार्य व्यवहार शुद्ध होकर नैतिकता की सुगन्धि से भरपूर हो जाता है। मानवता का मान होने लगता है। भोगो से ऊपर मर्यादा का अंकुश हो जाता है। अर्थ—धन की प्रचुरता होते हुए भी धर्म के अनुकूल होकर इष्ट भोगो की सिद्धि का साधन बन जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र पुनीत बन जाता है। प्राचीनयुग मे सारा जीवन एवं कार्य धर्म प्रधान था। धर्म का धन सबसे बडा धन माना गया था। धर्म का पथ सबके लिए प्यारा था धर्म का भय सबको अनिवार्य लगता था। धर्म पर जन-समाज की बडी भारी श्रद्धा थी। धर्म एक प्रकार का प्राण बन चुका था। यही कारण है कि उस युग मे सर्वत्र शांति तथा प्रेम भरा था। परिवारो में धन सम्पदा काफी मात्रा में थी, उसमे धन की पुट थी। इसीलिए अर्थ पवित्र था। जब तक ऐसी स्थिति बनी रही तब तक सारे समाज का जीवन प्रगतिमय था। आचार की उच्चता एवं विचारों की शुद्धता से सारा जन जीवन महान था। किंतु जब इसमे गड़बड़ पैदा हो गई। धर्म को गौण स्थान दे दिया गया, इसके स्थान पर अर्थ को मिल गया। जीवन एवं कार्य भी अर्थप्रधान बन गया। सारा मानदड ही अर्थमय होने लगा। पूजा प्रतिष्ठा भी धनी की होने लगी धर्म तथा धर्मात्मा लोगोको पीछे डालदिया गया। प्रत्येक कार्य अर्थ की कसौटी पर कसे जाने लगे तो इस समय सभी चक्र मे अस्तव्यस्तपना आ गया। अर्थमय जीवन बनने के कारण यह भोगमय बनता गया। परिणाम यह निकला कि सारा ही मानव समाज उच्च शिखर से नीचे की ओर गिरता गया। बेचैनी तथा अशांति का चारो ओर वातावरण फैलता गया। सर्वत्र भोग ही भगवान माना जाने लगा। जब मूल ही बिगड जाए तो सारा वृक्ष ही मुरझाने लगा।

समय-समय पर भारतीय युग मे ऐसे-ऐसे आचार्य महात्मा पैदा हुए जिन्होने धर्म की पताका को पूरी शक्ति से उठाने मे जीवन लगा दिया, किंतु धन की तारे चमकीली होती हैं, सबको अपनी चमकीली तारो मे बांध लेता है। इसलिए जनता धन की ओर शीघ्र आर्कषित हो जाती है। प्याज के छिलको के समान सम्पत्ति भोगवाद मे निस्सारता के सिवाय और कुछ नही होता। आज का युग फिर धनमय बनता जा रहा है। धर्म से मुख मोडा जा रहा है। धन की पूजा होती है, धनी का मान किया जाता है। धर्म की तो कोई गणना नही की जाती। जीवन धर्ममय, कार्यधनमय, परिवार भागमय, विचार मयामय तथा सारा वातावरण ही अर्थमय बन गया है। धर्म व धर्मात्मा का सम्मान ही नही करते। नतीजा सामने है कि सारी विचारधारा ही धन-भोग के चारो ओर घूमने लगी है। विश्व ही भोगमय बन चुका है। धर्म पर अर्थ सवार हो चुका है। सत्य यह है कि इस समय धर्म पुस्तकों की मन्दिरों की चार दीवारों की अथवा पूजा पाठ की ही केवलमात्र वस्तु बन चुका है। चारों तरफ तरफ धन ही धन प्रधान है।

इस अवस्था वेद के प्यारे आर्य समाज के दीवानो ने अपनी पूरी शक्ति लगा कर इस चक्र को बदलने का प्रयत्न करने के लिए कमर कसनी होगी। भागमय वातावरण मे धर्मकी पत का को निरन्तर फहराते जाना है। जीवन का कल्याण और समाज के विचारो का मूल मन्त्र तो धर्म मे ही है। यतो धर्मस्ततो जय'—जहां या जिस ओर धर्म होगा निश्चित रूप से उसी की ही विजय होगी।

—त्रिलोक चन्द्र

चण्डीगढ़ समाज समारोह

चण्डीगढ़ के विशाल, भव्य महान् नगर हमारा जहा शानदार डी ए बी कालेज है, डी ए वी हायर सैकण्डरी स्कूल है, जिसमे हमारे छात्र शिक्षा पाते हैं। जस्टिस मेहर चन्द जी महाजन की स्मृति रूप मे विशाल गर्ल्स कालेज है। वहा अपनी आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब से सम्बन्धित बडी सुन्दर आर्यसमाज भी सैक्टर ७–बी मे है। मन्दिर बन रहा है, कुछ निर्मित हो भी चुका है। इसका लम्बा-चौडा मैदान तथा सडको के ऊपर ही इसका मनोरम बनने वाला भव्यभवन देख कर एव इसमे प्रात. काल दोनो समय यज्ञ-सत्सग के तथा प्रात. तो ऋग्वेद मन्त्रो से और साय यजुर्वेद मन्त्रो से दैनिक रूप मे आहुतियो के पवित्र क्रम को देख कर दिल प्रसन्न हो जाता है। समाज के मान्य प्रधान श्री० वयोवृद्ध परन्तु श्रद्धामूर्ति वोहरा जी, श्री० मन्त्री जी, समाज के विद्वान् लगनशील पुरोहित पं० आशुराम जी, समाज की मान्य प्रधानाजी एवं अतीव अनथक दिन रात समाज सेवा मे जुटी रहने वाली धर्म और श्रद्धा की सजीव प्रतिमा मन्त्राणी बहिन सत्या जी तथा सारा अन्य समाज परिवार खूब कार्य मे लगा रहता है।

इस बार अपने इस समाज का वार्षिक महोत्सव बड़े ही समारोह से सम्पन्न हो गया। विशाल नगरी के समाज का समारोह भी विशाल था। प्रात. यज्ञ चलता था श्री पं. आशु राम जी आर्य पुरोहित को भगवान ने बडी सौम्यता, स्वाध्यायरुचि तथा समाजनिष्ठा दी है। कार्य मे लगातार जुटे ही रहते हैं। परिवारों मे बड़ा प्रभाव है। सायं भी उनके पौरहित्य में यज्ञ चलता था। प्रतिदिन श्रद्धा भरे परिवारो के यजमान यज्ञ मे शामिल होते रहे। चार दिन पूर्व श्री पं. राजपाल जी मदनमोहन जी प्रसिद्ध चिमटा मडली के साथ मेरी कथा होती रही। उत्सव म आचार्य-धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड सामवेद के अंग्रेजी भाष्यकार, ब्रह्मचारी सत्य-प्रिय जी, बहिन विद्योतमा जी मति, बहिन सुशीलादेवी जी, प इन्द्रसेन जी विश्वप्रेमी आदि शामिल हुए। बडा प्रभावशाली कार्यक्रम था। नगर कीर्तन मे कालेज, स्कूल की खूब शोभा थी। स्त्री समाज का उत्साह भी दर्शनीय था। रविवार ता० ९ नवम्बर को बाद दोपहर ऋषि निर्वाण दिवस का कार्यक्रम आचार्य धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड जी की प्रधानता मे बड़े ही उत्तम ढङ्ग से मनाया गया। आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के मान्य मन्त्री डा० वेदीराम जी शर्मा एम ए पी एच डी. विशेष रूप से पधारे। उनका प्रभावशाली भाषण बडा ही ओजस्वी था। समाज का यह महोत्सव बडा ही धूम-धाम वाला था। डी ए वी. कालेज के प्रिंसिपल त्रिलोकी नाथ जी, डी ए वी स्कूल के प्रिंसिपल पं० हसस्वरूप जी शर्मा, मेहरचन्द महाजन गर्ल्स कालेज की प्रिंसिपल बहिन राय जी का पूरा-पूरा सहयोग था। समाज का अपना महिला-मडल भी कार्य मे जुटा था। प्रभु करे कि यहा के समाज जैसे अधिकारी, श्री पं० आशुराम जी आर्य पुरोहित जैसे अनथक पुरोहित, बहिन सत्यावती जी जैसी मन्त्राणी सारे समाजो को मिले। उत्सव हर प्रकार से सफल रहा—

सभा का सामवेद भाष्य

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर जहां प्रचार वेदी के द्वारा अपने योग्य, अनथक लग्नशील प्रचारक मण्डल के द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार कार्य मे लगी है। वहा प्रैस अर्थात् अपने साहित्य प्रकाशन से भी वैदिक सिद्धातो के प्रसार मे कर्तव्य पथ पर चलती रहती है। यह साप्ताहिक 'आर्यजगत' पत्र भी अपनी इस सभा का अपना ही मुख पत्र है। इसके अतिरिक्त सभा का महात्मा हसराज साहित्य विभाग भी है—इसके द्वारा सभा सुन्दर, उपयोगी साहित्य प्रकाशित करती रहती है। गत दिनो पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के विशेष सत्प्रयत्न से सभा द्वारा 'सामवेद' का बडा ही सुन्दर हिंदी मे भाष्य प्रकाशित किया गया है। जहां-जहा यह गया है, समाजों तथा व्यक्तियो ने भूरि-भूरि प्रशसा की है। हम चाहते हैं कि सामवेद का यह भाष्य सारे समाजो, परिवारो मे पहुच जाए।

यज्ञ के लिए व्रतों का पालन

मूल लेखक—(श्री आचार्य वीरसेन जी, इन्दौर)

श्री आशुराम जी आर्य पुरोहित, चण्डीगढ़

मैथुन वर्जय

(इस से पहले १२ अक्तूबर का अंक पढ़ें)

मैथुन का त्याग तो ब्रह्मचर्य के लिए परमावश्यक है। शास्त्रकारों ने मैथुन आठ प्रकार का कहा है :—

दर्शन स्पर्शनं केलि:, कीर्तनं गुप्त भाषणम्
संकल्पोऽध्यव सायश्च क्रिया निवृतिरेव च ।।
एतन्मैथुनमष्टाग प्रवदन्ति मनीषिण: ।।

अर्थात् रागपूर्वक स्त्रियों का दर्शन, स्पर्शन, उनके साथ परिहास, उनके सौन्दर्य प्रेमादि का वर्णन, उनके साथ एकान्त मे गुप्त वार्ता करना, उनके प्रति यह सकल्प कि यह मेरी हो और इसके लिये प्रयत्न करना ओर विषय अनुभव करना आदि आठ प्रकार का मैथुन त्याग करना मनीषियों ने कहा है। इसी मैथुन त्याग के लिए अन्य प्रकार से कहा है :—

'कायेन मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
सर्वत्र मैथुन त्यागो ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते ।।

अर्थात् शरीर मन और वाणी से सब अवस्थाओं में सदा सब स्थानो मे मैथुन का त्याग ब्रह्मचर्य कहलाता है। अत: यज्ञ के व्रती को इसके पालन करने पर प्रमुख रूप से ध्यान देना चाहिए।

उपरिशयां च वर्जय

पलंग, खाट आदि पर न सोवे। यज्ञ के दिनो मे नीचे भूमि पर सोवे। शतपथ मे भी 'अध: शयीत' यह आदेश यजमान एवं यजमान पत्नी के लिए यज्ञ के दिनो मे आहवनीयाअग्नि की वेदी के पास नीचे भूमि पर शयन करने के लिए लिखा है। क्योंकि यज्ञ का अनुष्ठान करने पर देवगण यज्ञशाला मे आते हैं। उनसे ऊपर अपनी स्थिति नही होनी चाहिए अत: नीचे भूमि पर ही शयन और उपस्थिति होनी चाहिए।

कौशीलवगन्धनांजनानिवर्जयं

गाना बजाना, नृत्य, गन्ध आदि लगाना तथा आंखों में अंजनादि के प्रयोग को छोडना चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि व्यर्थ का गाना, बजाना, एवं नृत्य जिसका यज्ञ, उपासना आदि से कोई सम्बन्ध नही है, जो केवल राग की ही तृप्ति के लिए है और जो यज्ञ की क्रिया का अंग नहीं है उसको छोडना चाहिए। अर्थात् लोक नृत्य, गीत' वाद्य श्रवण एव दर्शन मे मनोरंजनार्थ भाग नही लेना चाहिए।

इसी प्रकार यज्ञ क्रिया के अंग-भूत चन्दन आदि सुगन्ध लेपन कार्यों को छोडकर अन्य प्रकार के गन्ध जो शौकिया लगाए जाते हैं, उनका यज्ञ मे त्याग करना चाहिए। इसी प्रकार भस्मलेपनादि के अतिरिक्त श्रृंगारिक पाऊडर, लिपस्टिक, रंजक आदि तथा अजनादि का प्रदर्शनार्थ प्रयोग त्याग कर सात्विक वृति युक्त रहना चाहिए।

अत्यन्तं स्नानं भोजनं निद्रां जागरणं निन्दां लोभ मोयमय शोकाम् वर्जय

अधिक स्नान, अधिक भोजन, अति निद्रा अति जागरण आदि यज्ञ के व्रतीको नही करना चाहिए। किसीको निंदा मन से भी न करनी चाहिए। लोभ-वश भी कार्य नही करना चाहिए तथा शोक आदि में भी लिप्त नही होना चाहिए।

'क्षुर कृत्य वर्जय'

यज्ञ के दिनो में क्षौर कर्म (हजामत बाल, दाढ़ी आदि बनवाना) नही करना-करवाना चाहिए अपितु इनको धारण करना चाहिए। यजुर्वेद अ० १९ न० ८१ मे—'लोमानि शष्पैबर्हुर्मादधु:'—शब्द है। इसका भाव यज्ञ के लिए दाढ़ी बढ़ाने से भी है, जैसा कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती इस मन्त्र के भाष्य में लिखते हैं :—

'जो बहुत काल पर्यन्त दाढ़ी मूंछ धारण पूर्वक ब्रह्मचारी अथवा पूर्ण विद्या वाले जितेन्द्रिय भद्रजन हैं, वे ही पंच धातु के अर्थ को जानने योग्य अर्थात् यज्ञ करने योग्य होते हैं। अन्य बाल बुद्धि, अविद्वान नहीं हो सकते।' अत: 'क्षुरकृत्यवर्गय-पूर्वाचार्यों उपदिष्ट आदेश वेदानुकूल है। इसलिए यज्ञ के लिए जिन यजमान एवं ऋत्विजों को दीक्षित किया जाता है उनको जब तक यज्ञानुष्ठान आदि कार्य पूर्ण न हो जाएं क्षौरादि नहीं कराना चाहिए।

यदि क्षौर कराते हैं तो व्रत भंग हो जाता है। व्रत भग नही करना चाहिए। ये क्षौरादि कर्म भी ब्रह्मचर्य के लोप करने में परोक्षक रूप से सहायक होते हैं। इसीलिए 'अचिरितिनों ब्रह्मचर्यं अपराध्या वा'—जो अब्रह्मचारी है राग श्रृंगारादि में लिप्त हैं ऐसे ऋत्विजो से—'यज्ञस्य विरिष्टिमित्याचक्षते' यज्ञ का नाश होता है, ऐसा गोपथ ब्राह्मण में लिखा है।

मांस रूक्षाहारं मद्यादि पानं च वर्जय

मांस, रूखा सूखा अस्निग्ध भोजन, मादक द्रव्य, तमाखू, बीड़ी, सिगरेट, गाजा, भांग, ताडि मद्यादि का सेवन या पान करना किसी भी प्रकार से नहीं करना चाहिए।। यज्ञ के दिनों में 'भोजनं मधुरं स्निग्धम्' मधुर, रसयुक्त और स्निग्धता से युक्त घृत माखनादि पदार्थों से युक्त होना चाहिए और सात्विक होना चाहिए।

अत्यन्त अम्लातितिक्त कषाय क्षार रेचन द्रव्याणि मा सेवस्व

अत्यधिक खट्टे पदार्थ इमली आदि चरपरे पदार्थ लाल मिर्च आदि अत्यन्त कसैले पदार्थ, क्षार लवण आदि और रेचक इन का भी यज्ञ के दिनों में सेवन नही करना चाहिए।

यज्ञ के दिनों में नमक रहित भोजन करें

संस्कार के लिये व्रती को नमक आदि से युक्त भोजन का निषेध महर्षि स्वामी दयान्द जी ने संस्कार विधि में निम्न प्रकार से किया है—

'तीन दिन तक क्षार, लवण रहित पदार्थ का भोजन ब्रह्मचारी किया करें (वेदारम्भ संस्कार)

२. वधू वर क्षार आहार रहित व्रतस्थ होकर—(विवाह संस्कार)।

३. जिस दिन बालक का यज्ञोपवीत करना हो उससे तीन दिन अथवा एक दिन पूर्व तीन व एक व्रत बालक को करना चाहिए। उन व्रतो में दुग्ध पान, यवागु और अमिक्षा—इन तीन ही पदार्थो का सेवन करे अन्य पदार्थ कुछ न खाये पीये। (उपनयन संस्कार) ये तीनों ही पदार्थ मीठे हों।

इन लेखो से ज्ञात होता है कि यज्ञ के लिए व्रती होना चाहिए और व्रती को नमक रहित भोजन करना चाहिए। शास्त्रकारों ने भी कहा है क्षारं क्षौरं च लवणं मधु मासं च वर्जयेत।'

—'अन्तर्ग्राम निवासोपनच्छत्र धारणं च वर्जय'—

अर्थात ग्राम के अन्दर निवास, जूता का पहनना एव छत्रादि का धारण नहीं करना चाहिए। यज्ञ के अनुष्ठान करने वालों को ग्राम के अंदर भी निवास नही करना चाहिए। यजमान एवं ऋत्विजों का सम्पर्क अनुष्ठान के दिनों में यज्ञादि में ही लगा रहना चाहिए। अत: अपने व्यवसाय से भी अवकाश लेने के लिए ग्राम का निवास त्याग कर यज्ञ-प्रदेश में ही निवास

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्यक् संकल्प

[श्री भास्करा नन्द जी शास्त्री, सिद्धांत वाचस्पति प्रभाकर वैदिक रिसर्चस्कालर]

संसार में जितने भी महापुरुष हुए उन्होंने सर्वप्रथम अपने जीवनका एक महान लक्ष्य (उद्देश्य) बनाया, एक महान संकल्प किया और उसी संकल्प को लेकर आगे बढ़े और अनेक कठिनाईयों, दारुण दु:खों को झेलते हुए, उसे सहन करते हुए अन्त में विश्व विजयी बने।

जरा पुराने इतिहास का ही अवलोकन कीजिए। सर्व प्रथम महाराजा मर्यादा पुरुषोत्तम राम को ही लीजिए। एक बार जब रामचन्द्र जी कई ऋषियों के साथ एक जंगल से दूसरे जंगल मे जा रहे थे, एक स्थान पर हड्डियों-पिंजरों का एक बड़ा ढेर पहाड़ सा लगा हुआ देखा। राम ने ऋषियों से पूछा—हे ऋषिवरो ! यह हड्डियों का पहाड कैसे बन गया है।' ऋषियों ने उत्तर दिया, 'राजपुत्र ! आजकल राक्षसो का महान अत्याचार, पाप अत्यधिक बढ गया है। वे राक्षस इस जंगल मे ब्राह्मणो, ऋषियों-मुनियों, मनुष्यो और गौवो को मार-मार करके उनके मांस का भक्षण करके शेष हड्डियो और पञ्जरो को, यहा डालते गए जिससे यह पहाड-सा ढेर जमा हो गया है। कोई श्रेष्ठ क्षत्री महाराजा इस विश्व मे नही रहा है जो इन दुष्ट राक्षसों को समाप्त करके गो, ब्राह्मणो और ऋषियो की प्राण रक्षा कर सके। हम सब ऋषियो की प्राण रक्षा कर सके। हम सब ऋषियों के योग यज्ञो को भी यह क्रूर राक्षस नष्ट-भ्रष्ट करते रहते है। हम सबो की अत्यन्त शोचनीय अवस्था है।'

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने उन ऋषियों के समक्ष हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की, जब तक मैं इन गो, ब्राह्मण भक्षक दुष्ट राक्षसों को पृथ्वी पर से समाप्त नही कर दूंगा तब तक मैं राम, राम नही। मैं राक्षसों और उनके द्वारा होने वाले इन घोर अत्याचारो को समाप्त करके ही दम लूंगा।' राम ने दुष्ट राक्षसों को भूतल से समाप्त करने का एक महान संकल्प किया और संसार के लोगों ने देखा मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने राक्षस राज रावण और उसकी सब सेना को समाप्त करके दुष्ट राक्षसो से पृथ्वी को शून्य किया और विश्व के विजयी श्रेष्ठ आर्य सम्राट् बने।

राम कितने महान थे इसका पता हम को उस समय लगता है जब राम चन्द्र अपने पिता महाराजा दशरथ के आज्ञानुसार राज्य को त्याग कर चौदह वर्षों के लिए जंगल में चले जाते हैं, अयोध्या से चल कर चित्रकूट पर्वत पर पहुंचते हैं। उसी बीच राम के शोक मे महाजा दशरथ का स्वर्गवास हो जाता है। राम के भाई भरत को उनके ननिहाल से बुलाया जाता है। वे शीघ्र अयोध्या पहुंचते हैं। अयोध्या की शोचनीय अवस्था को देख अत्यधिक दु:खी और व्याकुल हो उठते हैं। पिता का मृतक संस्कारादि करके अयोध्यावासियों के साथ राम को पुन: जंगल से लौटाने के लिए चल पड़ते हैं। चित्रकूट पर पहुंचते हैं, राम के पवित्र चरणो मे अपने मस्तक को रख देते हैं और कहते हैं 'भाई राम मेरी अनुपस्थिति मे कुल कलंकित करने वाली माता की गलती से बड़ा ही अनर्थ हुआ है। उसके इस अनर्थकारी काम में मेरा किसी भी प्रकार की कोई भी सम्मति नही है। मुझको इन बातों का लेशमात्र भी पता नही था, इसके ही कारण पूज्यपाद पिताजी स्वर्ग सिधारे। राज्य आपका है, मैं तो आपका आज्ञाकारी सेवक हूं। आप यहां से चल कर अयोध्या का राज्य करें, आपसे मेरी यही विनम्र प्रार्थना है।'

कई दिनों तक राम और भरत का शास्त्रार्थ चलता रहा। दोनों भाई राज्य को गेंद बना कर एक दूसरे की ओर ठोकर मारते रहे। कितना विचित्र दृश्य था। अन्त में राम की विजय होती है। भाई भरत को अयोध्या जाने के लिये विवश होना पड़ता है। राम की आज्ञा से अयोध्या में जाने के पूर्व भरत हाथ जोड़ कर राम से निवेदन करते हैं। भ्रातृवर ! मुझ को राज-काज का विशेष कुछ भी ज्ञान नही, आप मुझ को बतोएं आपके राज्य का सचालन आप की अनुपस्थिति मे किस प्रकार से करू ? उस समय राम अपने छोटे भाई भरत को राजनीति का उपदेश करते हैं जो सुवर्णमय अक्षरो से लिखने योग्य है। यथा—

> परस्त्री मातेव, कचिदपि न लोभ' परधने
> न मर्यादाभङ्गा, कचिदपि न नीचै स्वभिरुचि. ॥
> रिपौ शोर्य धैर्य विपदि, विनयं सम्पदि सदा।
> इय चाज्ञामेस्ति, भरत नितरा पालय प्रजाम् ॥

'हे भरत ! दूसरे की स्त्री को माता के तुल्य समझना। दूसरे के धन पर कभी भी लोभ न करना। आर्यों के श्रेष्ठ मर्यादा का कभी भी उलंघन न करना। नीचो के साथ कभी प्रेम न करना। अगर दुष्ट शत्रु राष्ट्र पर आक्रमण करदे तो वीरता के साथ उसका सामना करना। आपत्ति के समय धैर्य धारण करना और सम्पत्ति, ऐश्वर्य मे नम्रता विनय का आश्रय लेना। यह मेरी आज्ञा है, इस आज्ञा का पालन करते हुए राज्य का रक्षण करते रहना।' यह कितना महान उपदेश है राम का भरत के प्रति। (क्रमश:)

यज्ञ के लिए वृतों का पालन

(पृष्ठ चार का शेष)

करना उचित है। इस प्रकार साधनाकी सिद्धिमे ही मन लगाना उद्देश्य है।

यज्ञ के दिनो मे चर्मादि के जूते, चप्पल, बूट आदि का त्याग करना चाहिए और उन दिनों मे काष्ठ की पादुका, खड़ाऊ या कपडे के जूते आदि चर्म रहित पगरखाओ का ही धारण करना चाहिए। ब्रह्मचर्य के नियमो मे जूता पहिरना वर्जित है अत यज्ञ के दिनो मे चर्म के जूते एवं अन्य भी चर्ममय वस्तुओ का परित्याग ही करना चाहिए।

—'सुशीलो मितभाषी सभ्योभव'—

अर्थात उत्तम स्वभाव वाला, अनावश्यक न बोलने वाला और सभ्य होना चाहिए। अत, यज्ञ के दिनो मे हास-परिहास, क्रीडा, ताश, चौपड आदि खेलना, अनावश्यक एवं अधिक बोलना, अनावश्यक गाना तथा किसी भी प्रकार की कुचेष्ठा या असभ्यता, अनादर, अशान्ति आदि नही करनी चाहिए तथा सभ्यता का बर्ताव सबसे करना चाहिए।

—'प्रतिदिनं रात्रेः पश्चिमे यामे चोत्थाय आवश्यकं कृत्वा दन्तधावन स्नान सन्ध्योपासनेश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना योगाभ्यासान्नित्यमाचर।

अर्थात प्रतिदिन रात्रि के चतुर्थ प्रहर मे जाग कर आवश्यक कर्म शोच, दन्तधावन, स्नान, सन्ध्योपासन, ईश्वर-स्तुति प्रार्थना और उपासना तथा योगाभ्यास का आचरण नित्य किया करे अर्थात ब्रह्ममुहूर्त मे ही यजमान उठे। तभी स्नानादि से निवृत होकर केवल सन्ध्योपासनादि कार्य मे ही लग जावे। उन्हे प्रात:काल ब्रह्ममुहूर्त मे शयन नही करना चाहिए। और उठने के बाद अन्य बाह्य किसी भी चर्चामे सलग्न नही होना चाहिए। प्रात: उठते ही रेडियो सुनना या लौकिक प्रवृत्तियो मे लगना उचित नहीं है। मौन होकर जप, उपासना आदि मे लग जाना चाहिए।

पूर्वोक्त नियम ब्रह्मचारी के लिए ऋषियो ने पालन करने के लिए लिखे हैं। यज्ञानुष्ठाता यजमान एवं ऋत्विजो को भी ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है अत. ब्रह्मचर्य की साधना के अगभूत पूर्वोक्त नियमो का पालन भी उन्हें करना चाहिए। यज्ञ के लिए अन्य भी नियमों का पालन शास्त्रकारों ने बताया है। यथा—

(आगे के अक मे पढे)

खरैतीराम महेन्द्रू डी. ए. वी. कालेज नकोदर की अधार-शिला श्री मनमोहन कालिया पंजाब सरकार द्वारा संपन्न

माननीय श्री मनमोहन कालिया जी मन्त्री पंजाब सरकार मे अपने कर कमलो द्वारा खरैतीराम महेन्द्रू डी०ए०वी० कालेज नकोदर की अधार-शिला का शुभ कार्य ८ नवम्बर को सम्पन्न किया। इस कालेज के लिए ३५ कनाल भूमि नाकोदर के मिश्र अमरनाथ जी ने दान मे दी थी। श्रीमति वेदकौर व श्रीमति सुशीला रानी ने अपने स्व० पति लाला



श्री मनमोहन जी कालिया जिन्होंने श्री खरैती राम डी० ए० वी० महेद्रू कालेज नकोदर की नींव रखी। साथ में सरदार दरबारासिहजी स्पीकर पंजाब विधान सभा, श्री भीमसेन जी बहल प्रि० डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर, श्री भीम सेन जी मेहरा एडवोकेट व श्री जोगिन्द्र पाल जी गुप्ता खडे हैं।

खरैयतीराम महेन्द्र की पुण्य समृति के लिए डी०ए०वी० मैनेजिंग कमेटी को एक लाख रुपया दान दिया।

प्रारम्भ मे माननीय बी०एस० बहल जी प्रिंसिपल डी०ए०वी० कालेज जालन्धर ने मुख्य अतिथि श्री मनमोहन कालिया का परिचय देते कहा कि कालिया जी का आरम्भ से ही डी०ए०वी० सस्था के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध और प्रेम रहा है। उन्होंने कहा कि कालिया जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा एस०डी०, ए०एस० स्कूल पंजपीर ब्राच में प्राप्त की है। इसी कारण मन्त्री पद संभालने के बाद उन्होने अपने कर कमलों द्वारा इस कालेज की आधार शिला का यह शुभ कार्य सम्पन्न किया। उन्होंने आगे कहा है कि कालिया जी के पिता जी के पिता जी भी मेहरचन्द टैक्नीकल इंस्टीच्यूट में अध्यापक के रूप मे इस संस्था की काफी सेवा करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त इनके घनिष्ठ सम्बन्धी नकोदर के मिश्र परिवार के नकोदर आर्य स्कूल की संस्थापना तथा उसे सचारू रूप से चलाने में काफी काम किया है। अन्त में प्रि० बहल जी ने कालिया जी का धन्यवाद करते हुए आशा व्यक्त की भविष्य में भी कालिया जी इस संस्था के साथ इसी प्रकार प्रेम बनाए रखेंगे।

इस शुभ अवसर पर पंजाब विधान सभा के स्पीकर माननीय स० दरबारासिह जी भी उपस्थित थे। उन्होंने अपने भाषण में कालिया जी का स्वागत करते हुए कहा कि मैं माननीय कालिया जी का हार्दिक धन्यवाद करता हू जिन्होने अपने कर कमलों द्वारा इस शुभ कार्य को सम्पन्न किया है उन्होने आगे कहा कि मैंने अपना प्रारम्भिक जीवन डी० ए० वी० संस्थायों मे ही बताया जिसे वह कभी भूल नहीं सकते। मेरा इस पद तक पहुच जाना इन संस्थाओं में विद्या प्राप्ति द्वारा हुआ है।

मुख्य अतिथि श्री कालिया जी ने अपने भाषण में कहा है कि वास्तव में नाकोदर मे एक कालेज की जरूरत थी जिसको डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी के सहयोग से पूर्ण किया गया है।

श्री कालियाजी ने मैनेजिंग कमेटी को दस हजार रु० देने का वचन दिया। सरदार दरबारा सिह जी ने मैनेजिंग कमेटी को पांच हजार रु. देने का वचन दिया।

प्रिसीपल कमल जी 'सूद' दयानन्द माडल स्कूल जालन्धर ने उन सज्जनो के नाम पढ कर सुनाए और धन्यवाद दिया जिन्होंने इस कालेज के लिए दान दिया था। स० दरबारा सिह जी इस इलाके के ही रहने वाले हैं उनको बहुत देर से कालेज खोलने के लिए प्रेरित कर रहे थे। डा० हुक्म चन्द जी भल्ला प्रधान आर्य हा० सक० स्कूल नाकोदरने भी कालिया जी का धन्यवाद किया।

जालंन्धर का समारोह

जालन्धर नगर पजाब प्रान्त का एक प्रकार का केन्द्र नगर है। यहां पर व्यापार कार्य तो है ही—इसके साथ-साथ यह शिक्षा का महान नगर है। डी. ए वी. कालेज, हंसराज महिला कालेज, साइंदास स्कूल कन्या महाविद्यालय आदि बडी-बड़ी शिक्षण संस्थाएं कार्य करती है। पूरा दयानन्द नगर बसा हुआ है। आर्य प्रादेशिक सभा एवं प्रतिनिधि सभाओं के केन्द्रीय कार्यालय भी यही हैं। इस शहर में आर्य समाजो का भी जालसा बिछा हुआ है। आर्य समाज की शक्ति का संगठन स्थान है। दैनिक समाचारपत्रों का घर है। प्रत्येक विचार से यहा पर चहल-पहल रहती है। यही कारण है कि जालधर के आर्य समाज का वार्षिक समारोह भी एक विशेषता से भरा हुआ महा मेला होता है।

इस नगर मे अपनी आर्य प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित आर्य समाज विक्रमपुरा एक बड़ा ही प्रसिद्ध तथा समाज के क्षेत्र में बहुत प्रभावशाली समाज है। इसके सदस्य परिवार में स्कूलों, कालेजो के मान्य प्रिंसिपल, प्राध्यापक, गण्य मान्य व्यापारी आर्य प्रतिष्ठित नगर निवासी शामिल हैं। अपना इसका भव्य मन्दिर है। प्रतिवर्ष इसका वार्षिक महोत्सव बहुत बड़े समारोह से किया जाता है। क्योंकि यह केन्द्रीय समाज है इसलिए इस का यह उत्सव भी केन्द्रीय मेला के रूप में ही मनाया जाता है। आर्य समाज के बड़े-बड़े नेता, प्रसिद्ध विद्वान, गायक, वक्ता अपने सामायिक प्रभावशाली प्रवचनों से जनता को पूरे वर्ष के लिए एक कार्यक्रम देते हैं। इस का विशाल नगर कीर्तन तो देखने वाला होता है। इस में संस्थाओं के हजारों छात्र शामिल होकर सारे नगर को आर्यसमाज अमर रहे, ऋषि दयानन्द की जय के जयघोषो से निनादित कर देते हैं। यह वार्षिक महोत्सव साईंदास स्कूल के विशाल प्रांगण में भव्य पिण्डाल मे होता है।

इस बार इस समाज की प्रधाना माननीया प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द, प्रिंसिपल हसराज महिला कालेज हैं। उनकी ही देखरेख में महोत्सव का सारा प्रबन्ध किया जा रहा है। सारे अधिकारी इसे पूर्णतया सफल बनाने में लगे हुए हैं। यह जलसा सारे पंजाब का जलसा है। इस लिए इस मे शामिल होना भी प्रत्येक आर्य हिन्दू भाई-बहिन का कर्त्तव्य है। आज पंजाब मे आर्यसमाज के संगठन की कितनी विशेष आवश्यकता है। किस प्रकार का वातावरण बनता जा रहा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी को कितनी बुरी तरह बाहर किया जा रहा है और भी इस समय आर्यसमाज के सामने कितनी महत्वपूर्ण समस्याएं हैं जो आर्यजगत को बेचैन किये जाती हैं। सारा हिन्दू समाज नेतृत्व के लिए आर्यसमाज की ओर देखता है। अतः इसी नवम्बर की ता० २८ से ३० तक होने वाला आर्यसमाज बिक्रमपुरा जालन्धर नगर का यह वार्षिक उत्सव केवल एक उत्सव नहीं होगा वरन् एक विशाल महा मेला होगा। प्रान्त की आर्य जनता को प्रत्येक क्षेत्र में एक विशेष सन्देश देगा। हम पंजाब के आर्य भाई-बहिनों से अनुरोध पूर्वक निवेदन करना चाहते हैं कि हर अवस्था में इस महोत्सव में शामिल हो कर अपनी संगठन शक्ति का पूरा-पूरा परिचय देवें। आर्य नेताओं से जीवन कार्य सन्देश प्राप्त करें। —सम्पादक

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में—

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों ?

—श्रीमती निर्मला जी 'वसु', नरवाना—

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यो ? इसी लिये कि विश्व कल्याण के लिये उस परम पिता परमात्मा ने मानव मात्र के लिये वेदो का प्रकाश ऋषियो द्वारा किया। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदो का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ मे उस परमात्मा ने चार ऋषियो को प्रदान किया, अर्थात्—अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य ऋषि को सामवेद और अगिरा ऋषि को अथर्व वेद का ज्ञान दिया। इन चारो ऋषियो ने वेदो का उपदेश दूसरे ऋषियो मुनियो एव महापुरुषो को दिया। ससार भर की सब विद्याए वेदो से निकली हैं, इस सिद्धान्त को सब विचारवान ऋषि मुनियो एवं महापुरुषों ने स्वीकार किया है। उन्नीसवी (१९वी) शताब्दी के महान् वेदोद्धारक, आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने भी अपने आर्य समाज के प्रथम व तृतीय नियम मे निष्पक्ष भाव से स्पष्ट घोषणा की है कि :—

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदिमूल परमेश्वर ह। प्रथम नियम।

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम-धर्म है। तृतीय नियम

वेद स्वतः प्रमाण है परन्तु अन्य पुस्तके परतः प्रमाण है। अर्थात् जो बात अन्य पुस्तको मे वेद के अनुकूल है, वह तो ठीक है और जो वेद विरुद्ध है वह असत्य है, त्याज्य है।

वेद संसार के पुस्तकालय का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है। इस विचारधारा से सब सहमत हैं। जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान ईसाईयत के थोथे तथा ज्ञान-विज्ञान के विरुद्ध सिद्धातो पर विश्वास करने वाले प्रोफेसर मैक्समूलर Maxmular ने भी इस सत्यता को नही छिपाया कि वेद ही सबसे प्राचीन पुस्तक है। वह लिखता है The Rigveda is the oldest book in the library of the hole world' अर्थात समस्त संसार मे यदि हम दृष्टिपात करते है तो ससार की लायब्रेरी मे यदि कोई पुरानी पुस्तक है तो वह है ऋग्वेद। जार्ज बर्नार्डशा ने भी इसी तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है कि 'There is only one religion throw there are thousent varshian of it' अर्थात् यह ऐतिहासिक तथ्य है कि इन मत-मतान्तरो को फैले हुए थोडा ही समय व्यतीत हुआ है और वैदिक-धर्म तथा वेद ज्ञान सृष्टि के आरम्भ काल से ही चला आ रहा है। जब तब इस सिद्धाव को मानने वाले व्यक्ति है तब तक हमारे युक्ति क्रम का प्रासाद अक्षुण्ण है। संसार का कोई भी मत-मतान्तरो के धर्म ग्रन्थ प्राचीनता मे वेद की तुलना मे खडा नही हो सकता। आर्य जाति के प्रारम्भ के साथ वेद आरम्भ हुआ। यदि किसी को इस स्थापना को स्वीकार करने मे संकोच हो तो भी उसे इतना तो मानना ही पडेगा कि ससार के धर्म-रूपी भवन की पहली ईंट वेद ही है

आज ससार के ये जितने मत-मतान्तर है, और जितने उनके धर्मग्रंथ है, वे भले ही अपने आप मे ईश्वरीय ज्ञान होने का दावा करें। परन्तु उनकी धर्म पुस्तके ईश्वरीय ज्ञान नही हो सकती, केवल मानवकृत ह। इन मत-मतान्तरो को जन्म देने वाले विशिष्ट पैगम्बर है। उन पैगम्बरो की विशिष्ट जन्म तिथिया है। उन मत-मतान्तरो के धर्मग्रन्थो के तैयार होने का विशिष्ट समय है। इतिहास इसका साक्षी है। इतिहास के इन तथ्यो को झुठलाया नही जा सकता। वेद की प्राचीनता को स्वीकार करते हुए ईरान की सरकार ने भी तेहरान विश्वविद्यालय के द्वारा विश्व की सर्वाधिक पुरातन पुस्तक ऋग्वेद का फारसी अनुवाद कराने की योजना बनाई है। इस प्राचीन ऋग्वेद के फारसी अनुवाद कराने के लिए ईरान सरकार ने दस लाख रुपया व्यय कराने की योजना बनाई है। इस सरकारी निर्णय का स्वागत करते हुए सरकारी समाचार पत्र ने लिखा है कि—ऋग्वेद पर हर ईरानी गौरव कर सकता है। क्योकि इसके रचयिता आर्य लोग हमारे पूर्वज थे। (हम यहां यह स्पष्ट कर देना चाहते है कि वेदो के रचयिता आर्य लोग नही थे अपितु ऋषियो को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान था।) यह गौरव भारत सरकार को प्राप्त करना चाहिये था, परन्तु इस आर्यवर्त्त देश का दुर्भाग्य है कि भारत सरकार इस गौरव को प्राप्त नही कर सकी। खेद महाखेद।

प्रो० मैक्समूलर ने जब यह कहा था कि 'वस्तुत वेद हमारे लिए मनुष्य बुद्धि के सब से पुराने परिच्छेद के परिचायक है' तब से लेकर आज तक इस उक्ति का कोई भी ससार का व्यक्ति खण्डन नही कर सका। खण्डन करे भी तो कोई कैसे ? सत्यता हो तो करे। वस्तुत दिन प्रतिदिन इस बात की पुष्टि होती गई कि ससार के पुस्तकालय मे सब से प्राचीन पुस्तक वेद ही है।

महर्षि भगवान दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यो है ? इस विषय मे वह अपने क्रान्तिकारी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे अपनी क्रान्तिकारी वैदिक सत्य विचार-धारा उपस्थित की है। जिसका आज तक ससार का कोई भी व्यक्ति खण्डन नही कर सका। खण्डन करे भी कोई कैसे ? सत्यता हो तो करे। महर्षि भगवान दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश मे प्रश्नोत्तर के रूप मे लिखते ह कि—

प्रश्न—वेदो प्रकाश किसी देशी भाषा मे नही किया सस्कृत भाषा मे क्यो किया गया ?

उत्तर—यदि परमात्मा किसी देश की भाषा मे वेद का प्रकाश करते तो वह पक्षपाती समझा करता उस देश के वासियो को वेदो के समझने मे बडी सरलता रहती। इसी लिये उसने वेदो का ज्ञान 'वेद वाणी' मे दिया। सस्कृत भाषा तो वेदो की भाषा से निकलती है, और अन्य सब भाषाये संस्कृत से निकली हैं। (क्रमशः)

धार्मिक परीक्षाएं

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धात परिषद (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश सि० विशारद सि० भूषण, सिद्धान्ताचार्य परीक्षाए आगामी दिसम्बर, जनवरी मे भारत तथा विदेशो मे होगी। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधिपत्र दिया जाता है। सर्व-प्रथम द्वितीय तृतीय, आने वाले को छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की नि.शुल्क सत्यार्थ सुधा कर, सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधियां डाक द्वारा प्राप्त करें। १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मंगवाइए।

आदित्य ब्रह्मचारी
यशपाल शास्त्री
प्रधान

आचार्य मित्रसेन
एम०ए०, सिद्धातालकार
शिक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद
सेवा-सदन, कटरा अलीगढ़, (उ.प्र.)

वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है

आर्यसमाज दसूहा का वार्षिकोत्सव

२५ अक्तूबर १९६९ तक से प्रथम नम्बर १९६९ तक बडे उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिस मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पण्डित ओमप्रकाश जी आर्य के व्याख्यानो हुए। पण्डित शामसुन्दर जी स्नातक गुरुकुल कागडी के मनोहर व्याख्यानो का तो अधिक प्रभाव रहा।

प्रिसिपल रलाराम जी एम० ए०, लाला जगत नारायण जी सदस्य लोक सभा, श्री जितेन्द्र जी के ओजस्वी प्रवचन, श्री स्वामी विचारानद जी, श्रीमती सावित्री शास्त्री, श्री विद्याव्रत शास्त्री के विचार अति उत्तम और सारगर्भित थे। इस वर्ष उत्सव पर ठाकुर दुर्गासिंह, ठाकुर समशेरसिंह और श्री रामनाथ जी यात्री भजनोपदेशक के भजनों ने जादू का असर किया। बहिन शाति देवी जी रेडियो आर्टिस्ट शिमला जो कि कण्डा घाट से पधारी हुई थी। इनका कण्ठ तो कोकिल कण्ठ था। बहन जी के शास्त्रीय संगीत और धार्मिक भजनों को जनता ने बहुत पसन्द किया। उपस्थिति सतोषजनक होती रही। पडाल हर समय भरा रहता था। उत्सव हर प्रकार से सफल रहा।

उत्सव मे तहसील वेदप्रचारिणी सभा की भी स्थापना हुई। सभा के पदाधिकारियो का चुनाव इस प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री स्वामी विचारानन्द जी, उपप्रधान—श्री प० मेलाराम जी सेवा मुक्त हैडमास्टर मुकेरिया, श्री मुन्शीराम जी मन्त्री आर्यसमाज तलवाडा, मन्त्री श्री हरबंसलाल मुजरिम, उपमन्त्री—श्री बलदेवमित्र बिजली उडमुड, श्री सुरेन्द्र कुमार धीर दसूहा चुने गए। प्रचारमन्त्री—अमरनाथ जी निराला। निवेदक

—मन्त्री सुरेन्द्र मोहन

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कचहरी, जालन्धर

(उपयोगी पुस्तकों की सूची)

१. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A (अग्रेजी मे)	१-५०
२ सन्ध्या पर व्याख्यान—ले० महात्मा हसराज जी	१-००
३ Dayanand His Life & Work (ले० प्रि० सूर्यभानु जी M. A.	२-००
४. महात्मा हंसराज जी सचित्र (ले० आनन्द स्वामी जी महाराज)	१-२५
५ प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज)	१-२५
६ महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवानचन्द जी M.A)	१-००
७ स्वाध्याय सग्रह (ले० प्रि० साईदास जी M A.)	०-५०
८. नवीन प्रचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी)	१-०
९ सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले० वाचस्पति एम. ए.	०-५०
१० ,, ,, ,, द्वितीय ,, ,,	०-५०
११ मुडक उपनिषद (ले० प्रि० दीवानचन्द जी ,, ,,)	०-३७
१२. राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सोमानन्दजी) उर्दू मे	०-३७
१३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी)	१-२५
१४. सीता (ले० आनन्द स्वामी जी)	०-३८
१५ पद्मनी(,, ,, ,,)	०-३१
१६. पार्वती (, ,, ,,)	०-२५
१७ Teaching of Ish Upnishad ले० प्रि० दीवानचन्द जी एम. ए) अग्रेजी मे	१-२५
सामवेद भाष्य	२०-००
वैदिक गुरमत	१०-००

आर्य समाजों से निवेदन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर से सम्बन्धित सभी आर्य समाजो की सेवा मे सविनय निवेदन है कि उनको जो प्रतिनिधि फार्म (क, ख) भेजे गए है। कृपया वह फार्म भर कर शीघ्र सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करे। अपनी अपनी समाज का दशाश भी शीघ्र भेजे। अति धन्यवाद होगा। —सभा मन्त्री

श्रुति भिक्षु के दुष्ट प्राचार से सावधान

कुछ समय पूर्व एक भूखे मरते हुए युवक को जिसका नाम विनोद दुबे है, टंकारा उपदेशक महाविद्यालय मे कुछ आर्यों की सलाह से रखा गया। वहा दो मास के भीतर ही सस्था मे विरुद्धगामी होने के कारण तथा धूर्त मनोवृत्ति का परिचय प्राप्त करने पर उसे वहीं से निकाल दिया गया।

दु:खी और बीमार हालत मे वे बडौदा आया और उसकी स्थिति पर दया करके बडौदा आर्य समाज ने आश्रय दिया उसे कुमाराश्रम मे कुछ दिन रहने दिया पर उसका चरित्र यहा भी शंकाशील होने के कारण विशेषकर विधवाश्रम का कन्याओ के प्रति उसकी कुदृष्टि देखकर उसे यहा से भी निकाल दिया गया।

अब इस विनोद दुबे ने श्रुतिभिक्षु आर्य का नाम धारण किया और वे बडौदा की प्रमुख सस्था आर्य कन्या महाविद्यालय के विरुद्ध अनर्गल और आक्षेपरूप पत्र लिखकर वे आर्य नेताओ को और आर्य पत्रो को भडका रहा है। उसने गुजरात राज्य के विद्याधिकारी को भी इसी प्रकार का अनर्गल पत्र लिखा है जिन्होने प्राथमिक जाच करके उस पत्र को रद्दी की टोकरी में फेक दिया।

इस समय वो यही से भागकर मध्य भारत मे गया है और वहीं से भी दुष्टतापूर्ण पत्र लिखता है।

आर्य महानुभाव इस क्षीणा जन की दुष्ट प्रवृत्तियो पर ध्यान न दे तथा उसके दुष्ट प्रचार मे सावधान रहे।

श्रुति भीक्षु उसका फर्जी नाम है। न वे सन्यासी है और न ही ब्रह्मचारी है पर एक लपट युवक है।

—मन्त्री

आर्यसमाज, बडौदा

कृपया लेखक कापी एक ओर लिखें

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा० वेदीरामजी एम ए, पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत् कार्यलय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P.

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २१, अंक ४८) १६ मार्गशीर्ष २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—३० नवम्बर १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

आयुष्टे शरदः शतम्

अर्थ—मानव ! आयु जीवन ते-तेरा शरद. शतम् सौ वर्ष तक चलता रहे। सौ वर्ष जीवे।

भाव—मनुष्य का जीवन मामूली नहीं हम मौत के लिये नहीं पैदा हुआ पूरी आयु भोगने से पूर्व मर जाना पाप कहा है पूर्ण जीवन मानव जीवन के लिए आवश्यक है। इसके लिये वेद उपदेश देते हैं कि हे मनुष्य! तेरा जीवन कम से कम सौ वर्ष तक तो जरूर ही चलता रहे। शतायु होना है। इस से पूर्व मौत को अपने समीप मत आने देना। तेरी आयु सौ वर्ष की है। इसे बड़े नियम से भोग तथा विशेष कर्म करता रहे। सौ वर्ष की आयु को रखने के लिए जीवन की प्रत्येक मर्यादा का पूरा-पूरा ध्यान रखना होगा। शतवर्षी हो —सं.

वेदामृत

वेद का मार्ग

यमो नो गातुं प्रथमो विवेद,
नैषा गव्यूतिर पभरतवाउ।
यत्रा नःपूर्वे पितरः परेताएना,
जज्ञानाः पथ्या अनु स्वा : ॥

अथर्ववेद कांड १८-१-५०

अर्थ :—(यमः) न्यायकारी परमात्मा ने (नः) हमारे लिए (गातुम्) मार्ग (प्रथमः) पूर्व वर्तमान (विवेद)जाना (न एषा) यह नहीं है (गव्यूतिः) मार्ग (अपभर्तवै हटाने के योग्य (उ) कभी। (यत्र) जहां से (नः) हमारे (पूर्वे) पहले (पितरः) पालन करने वाले बड़े लोग (परेता) चलते हैं (एना) उसी से (यज्ञानाः) उत्पन्न हुए (पथ्याः अनु) उन्हीं मार्गों पर चले (स्वाः) अपने-अपने।

भाव यह है

वेद का पवित्र पथ प्रभु ने सर्वप्रथम के लिए बनाया है। बड़ा सुन्दर और सरल पथ है। यह कभी टालने योग्य नहीं है। न ही परित्याग के योग्य है। इसी पर ही तो ज्ञानी, पालक लोग सदा चलते हैं। जीवन में इसी पुनीत पथ वेद पथ पर निरन्तर चलते रहने से ही सुख प्राप्त होता है। इससे भटकना जीवन की विपत्तियों में डालना है। सबका कर्तव्य है कि वेद पथ पर सदैव चलते हुये दूसरों को भी चलावें। —सं.

ऋषि दर्शन

जन्माद्यस्य यतः

अर्थ-जन्म आदि-जन्म अर्थात् उत्पत्ति,स्थिति तथा प्रलय अस्य—इस सारे जगत की यत—जिससे होती है। वही ब्रह्म है।

भाव-मुनिवर व्यासजी अपने वेदांत दर्शन जिसे ब्रह्म सूत्र भी कहा जाता है कहते हैं कि ब्रह्म वह है जिससे इस सारे विशाल जगत् की उत्पत्ति होती है वही इसका उत्पादक है, धारक है तथा संहारक है। मनुष्य तो एक मामूली पत्ता तक भी नहो बना सकता। उसे तो अपने जीवन पर भी अधिकार नहीं है। देखते-देखते चल देता है। यह ब्रह्म ही है-जो इतना विविध विशाल ब्रह्मांड को नियम में रखे है। वह प्रजापति है,विष्णु रुद्र है।

महात्मा व्यास

अधिष्ठाता—डा० वेदराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

सम्यक् संकल्प

[श्री भास्करानंद जी शास्त्री, सिद्धान्त वाचस्पति प्रभाकर वैदिक रिसर्चस्कालर]

राम का जीवन इतना महान क्यो बना, वह दृढ प्रतिज्ञ थे जो एक बार संकल्प कर लेते थे, जो उद्देश्य बना लेते थे उसको पूर्ण करने मे दिल जान से लग जाते थे ।। इसी कारण राम विश्व विजयी सम्राट बने ।

दूसरा उदाहरण भगवान योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी का लीजिए । वे विश्व के महान विभूतियो मे क्यो गिने गये ? एक बार अपने उद्देश्य के सम्बन्ध मे महाराज युधिष्ठिर से कहते हैं—

नत्वह कामयेराजन् न स्वर्गं न पुनर्भवं ।
कामये दु खतप्ताना प्राणीना आर्तनाशनम् ।।

'हे राजन ! मुझको अपने निजी सुख के लिये राज्य की इच्छा नही है, स्वर्ग नही चाहता, न मुक्ति की कामना करता हू, केवल दु खी प्राणियो के दु ख को दूर करना ही मेरे जीवन का महान सकल्प है ।' इसी कारण श्री कृष्णचन्द्र जी अपनी महान शक्ति से विश्व की विभूतियो मे प्रथम स्थान प्राप्त कर सके ।

तीसरा उदाहरण महर्षि दयानन्द सरस्वती का ले सकते हैं । इन्होने भी तीन महान सकल्प किये—

(१) सच्चे शिव (परमात्मा) को प्राप्त करने का ।

(२) मृत्युञ्जय बन कर दिखाने का ।

(३) वैदिक धर्म के प्रचारार्थ अपने सम्पूर्ण जीवन को लगाने का । एक कवि ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध मे ठीक ही कहा है—

हानिबल, बोनापाट, सिकन्दर जितने विश्व विजेता ।
दयानन्द सा हुआ न कोई आत्मबली नर नेता ।।

चौथा उदाहरण महात्मा गान्धी जी का लीजिए जिस समय बैरिस्टर मोहन दास कर्म चन्द गाधी बैरिस्टरी करते हुए दक्षिणी अफ्रीका मे रह रहे थे । उस समय किसी ट्रेन से एक शहर से दूसरे शहर मे जाने वाले थे । ट्रेन आई स्टेशन के प्लेट फाम पर ठहर गई । प्रथम श्रेणी का रेलवे टिकट लेकर फस्ट क्लास के डब्बे म जा बैठे । अभी ट्रेन चलने मे कुछ मिनटो की देरी थी एक अग्रेज भी उनके डब्बे मे आ गया । वह गाधी जी को देख कर जल भुन गया, लाल पीला होकर बोला, 'इस डब्बे से नीचे उतर जाओ, दूसरे थर्ड क्लास के डब्बे मे जाकर बैठो । यह डब्बा तुम्हारे ऐसे गुलामो हिन्दुस्तानियो, काले लोगो के लिए नही है ।' गाधी जी ने कहा—'मेरे पास प्रथम श्रेणी का टिकट है, मैं इस सीट पर ही बैठा रहूगा, आपको क्या हक है कि मुझे यहा से उतारे ।' फिर क्या था, उस समय तो सारे अग्रेज (गोरे) चाहे वह एक मामूली मजदूर या चपरासी ही क्यो न हो वह अपने को सम्राट पचमजार्ज से कम नही समझता था, गान्धी जी दुबले-पतले तो थे ही उन पर उसका गुस्सा और तेज हो गया, गान्धीजी को हाथो से खीच कर बूट की ठोकर से ट्रेन के डब्बे से बाहर प्लेट फार्म पर फक दिया, गांधी जी के आगे के दो दात टूट गये वे बेहोश हो गये, मु ह खून से लहूलोहान हो गया । होश मे आने पर गाधी जी ने उस समय प्रतिज्ञा की और अपने जीवन का एक उद्देश्य बना कर महान सकल्प किया कि 'इस गुलामी (पराधीनता) के कलक को, काले-गोरे के भेद को मिटा करके छोडू गा और भारत को पूर्ण स्वतन्त्र करा करके रहूगा । इस महान सकल्प को धारण करने के कारण ही गाधी जी के जीवन मे धीरे-धीरे परिवर्तन होना प्रारम्भ हुआ, ब्रह्मचर्य, सत्य, अहिंसादि व्रतों को अपनाये, हैट, कोट, नकटाई, कालर आदि अग्रेजों के दिए हुए गुलामी के प्रतीकों को छोड कर एक धोती और लगोटी पर आ गये । बैरिस्टर मोहन दास कर्मचन्द गांधी से बदल कर महात्मा गांधी के नाम से विश्व में विख्यात हुए और भारत को स्वतन्त्र कराने में सफल हुए ।

पांचवां उदाहरण बाबू सुभाषचन्द्र बोस का भी हमारे सामने है । जब वह आई० सी० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण करके लन्दन से स्विटजरलैंड मे सैर सपाटे के लिए गये । स्विटजरलैंड यौरप का काश्मीर माना जाता है । गर्मी के दिन थे घूमते घामते, रुकते रुकाते स्विटजरलैंड की राजधानी बर्न नगर में पहुचे । इधर-उधर घूमते हुए नगर की शोभा देख रहे थे कि वहा की रहने वाली एक पढी लिखित शिक्षित स्त्री उनके सामने आ उपस्थित हुई और नम्रता पूर्वक अभिवादन करके सुभाष से बोली—'बताइये आप का क्या नाम है, किस देश के रहने वाले हैं, यहां किस कार्यवश आये हैं ।'

सुभाष—मेरा नाम सुभाषचन्द्र बोस है, मैं भारत वर्ष का रहने वाला हू, यहा परिभ्रमण, सैर सपाटे के लिए आया हू ।

स्त्री—आप कुछ पढे लिखे भी है ?

हा मैं आई सी एस की सर्वोच्च परीक्षा उत्तीर्ण हू ।

स्त्री आश्चर्यान्वित होकर विस्मयपूर्ण नेत्रों से नीचे से लेकर ऊपर तक उनको गौर से देखने लगी ।

सुभाष—देवी ! क्या बात है ? तुम इतने आश्चर्यपूर्ण नेत्रों से, हैरान सी हुई होकर मुझको क्यो नीचे से ऊपर तक देख रही हो । क्या मेरे पहनावेमे हैट कोट नकटाई, कालर आदि मे कोई त्रुटी तो नही रह गई है ।

स्त्री—सुभाष चन्द्र जी । आप का सब पहनावा ठीक है आपके पहनावे मे किसी भी प्रकार की कोई भी त्रुटी (कमी) नही है । आप बड़े ही तेजस्वी, योग्य, प्रतिभाशाली दीख रहे हैं । कद भी ऊ चा, शरीर भरा हुआ और गौरवर्ण युक्त है इतना सब श्रेष्ठ गुण आप में होते हुए ही मुझे हैरानी इस बात की हो रही है कि आप जैसे श्रेष्ठ प्रतिभा शाली उच्चशिक्षा प्राप्त व्यक्ति भारत वर्ष मे होते हुये भी भारत वर्ष गुलाम (पराधीन) क्यो है ? हजारो मील दूर से मुट्ठी भर सत्तर अथवा पचहत्तर हजार अग्रेज वहा पर रह कर पैंतीस करोड भारतीयो पर शासन (राज्य) करते हैं, इस बात का मुझे आश्चर्य हो रहा है । मैं आज तक यह समझती थी कि भारतवर्ष मे भेड, बकरियो की तरह अधिक सख्या मे लोग रहते हैं, और उनपर अग्रेज आसानी से राज्य करते हैं । लेकिन आज आपको देखकर मुझे अत्यधिक हैरानी हुई है । बताइए भारत अग्रेजो की गुलामी मे क्यो है ? और आप सब इतनी बडी संख्या मे होकर भी क्या करते हैं ? क्या पराधीनता (गुलामी) के जीवन मे ही आप सब आनन्द अनुभव करते हैं ? मेरे इन प्रश्नो का उत्तर दें ।

सुभाष—(मन ही मन) हमारी और हमारे देश की कैसे शोचनीय अवस्था है । हम भारतीयो को दूसरे स्वतन्त्र देश वाले मनुष्य ही नहीं समझते, हमको भेड और बकरियों से भी बदतर समझते हैं, हमको गुलाम (पराधीन) मानते हैं । क्या गुलामी का जीवन भी कोई जीवन है ? इस गुलामी के जीवन से मर जाना अच्छा है ।

(प्रकट रूप से) हे देवी ! तुम्हारा कहना सत्य है । हमारी पराधीनता की कहानी विचित्र है । मैं तुम्हारे सामने आज प्रतिज्ञा करता हू कि 'भारत के इस पराधीनता के कलंक को मिटाने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दूंगा । जब तक भारतवर्ष पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नहीं हो जाएगा दम नहीं लूंगा ।

बाबू सुभाष चन्द्र बोस ने भारत के पराधीनता के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी, यहां से जर्मनी गये, जर्मनी से जापान गये । आजाद हिन्द सेना के प्रधान सेनापति बने, अपने कर्तृत्व शक्ति से भारतीयों के हृदय सम्राट् बने, आज भारत का [illegible]

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

सम्पादकीय :—

आर्यजगत्

वर्ष २९] रविवार २०२६, ३० नवम्बर १९६९ [अंक ४८

आर्यसमाज का समारोह

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर का वार्षिक महोत्सव प्रारम्भ है। यह सारे पंजाब प्रांत का केन्द्रीय समारोह है। सारी जनता इसमे शामिल हो कर बहुत मीठा जीवन सन्देश लेतीहै। अपने संगठन का परिचय आखो से देखने को मिलता है। सारा सप्ताह ज्ञानसरिता का प्रवाह बहता रहताहै। इस भोगवादी जीवन के वातावरण मे नैतिकता तथा अध्यात्मवाद का सुन्दर प्रसाद मिलता है। आर्यसमाज जनता को सामयिक समस्याओ का ध्यान आकर्षित करके उसका भली-भांति नेतृत्व करता है। बीते वर्ष का जीवन कार्य विवरण का चित्र प्रस्तुत करके भविष्य की गम्भीर रूपरेखा सामने रख देता है। देश, धर्म, जीवन के नैतिकवाद को जहा२ से भय होता है —उससे बचने के लिए जनता को पूरी तरह से सावधान करता है। भाव यह है कि यह समाजका विशाल कार्य का चित्र प्रस्तुत करता है। इसके लिए विशेष प्रबन्ध होता है।

इस बार जहां यज्ञ के पवित्र कार्य के लिये पूज्य महात्मा आनंद-भिक्षु जी महाराज पधारे हैं जो कि इस कार्य मे विशेष जीवन की आस्था भर देते हैं। वहां इस बार राष्ट्रभाषा सम्मेलन प्रिंसिपल पं० रलाराम जी एम ए. होशियारपुर की प्रधाननता में मनाया जा रहा है जिसमे आर्यसमाज के कई मान्य महारथी नेता अपने विचार प्रकट करेंगे। साथ ही आचार्य ज्ञान् चन्द्र जी एम. ए. हिसार की प्रभावभरी कथा का कार्यक्रम भी जारी है। शुक्रवार को जो विशाल नगर कीर्तन निकलता है, वह तो समाज का परिचय देताहै। हजारों छात्र-छात्राओं स्कूलों के बैंडों, समाजों के सज्जनों, आर्यसमाज के नेताओ का यह मिल कर चलना समाज के प्रभाव को बढ़ा देता है। सारा नगर आर्यसमाज के जय-जयकारों से निनादित हो जाता है। आर्यसमाज की प्रधान कुमारी विद्यावती जी आनन्द इसमे ओ३म ध्वजा लहरा रही है। इस बार उत्सव मे बडे-बड़े योग्य नेता, विद्वान युवक महारथी पधारे हैं आर्यसमाज के तपस्वी युवक सन्यासी प्रो० श्यामराव जी एम ए. डा० राम-प्रकाश जी एम. एस. सी पी एच डी चण्डीगढ जैसे रत्न भी शामिल है। समाज के अधिकारियो ने इस बार बहुत ही उत्तम प्रबन्ध किया है। यह समारोह देखने और सुनने के योग्य होगा।

ता० २८ नवम्बर से ३० नवम्बर तक इस महोत्सव का क्या शानदार कार्यक्रम होगा। यह सारा विवरण भी इस अक मे अकित है। श्री राजेन्द्र जिज्ञासु एम ए. जैसे मस्ताने वक्ता भी शामिल हैं। सारे कार्य छोड़ कर आर्य जनता इस विशेष समारोह मे हर हालत में आवे।

—त्रिलोक चन्द्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की अन्तरग सभा ने निश्चय किया है कि २३ से २८दिसम्बर१९६९ को होने वाले महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ एवं पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी समारोह आर्यो के सार्वजनिक सार्वभौम महोत्सव हैं। उन्हें सफल बनाने के लिए आर्य जनता को तन, मन, धन से सहयोग देना चाहिए और आर्यसमाज की शक्ति का विराट प्रदर्शन करने के लिए वहां अधिक से अधिक संख्या में पहुचना चाहिए।

उमेशचन्द्र स्नातक
उप-मन्त्री सभा

आर्यसमाज कालीकट

आर्यसमाज मन्दिर कालीकट मे २४—९—६९ को सुलेमान नामक मुसलमान की शुद्धि की गई उस की उम्र ३० वर्ष की है। शुद्धि के बाद इस का नया नाम के० सी० प्रसन्न रखा गया। यह २३—७—६९ को मुसलमान हो गया था।

३०—९—६९ को ए० अबु-बक्कर नामक एक मुसलमान की शुद्धि की। यह एक महीने के पहले मुसलमान हो गया था। शुद्धि के बाद नया नाम आर० सी० राम रखा गया। उसकी उम्र ३८ वर्ष की है।

२०—१०—६९ को विमला नाम की एक जन्म की ईसाई देवी की शुद्धि की। उम्र ३६ वर्ष की है। नाम नहीं बदला। हाई कोर्ट की कलर्क है।

—बुद्ध सिंह

सरकार की चोट पहली आर्यसमाज पर

एकता सम्मेलन के निर्णय को क्रियात्मक रूप देने के लिये सरकार ने पहली चोट आर्यसमाज पर लगाई है और महाराष्ट्र सरकार ने धारा १५३ ए को गति देकर आर्यसमाज नया बास देहली के पंडित आशानन्द को घेर लिया है। उन पर दो सम्प्रदायो के मध्य घृणा फैलाने का दोष लगाया है। मैं इसे आर्यसमाज को खुली चुनौती समझता हू।

अग्रेज सरकार का रग-ढग भी यही था। जब कभी सरकार के सम्मुख साम्प्रदायिक प्रश्न उपस्थित हुआ आर्यसमाज पर वार कर दिया जाता। स्वतन्त्रत: भारत मे भी पूर्ववर्ती सरकार की धरोहर को सुरक्षित रखा जा रहा है। विश्वास है कि आर्यसमाज इस परीक्षा अग्नि मे पूर्व की भाति सफल होगा।

खामगाव महाराष्ट्र के कोर्ट मे पंडित जी के विरुद्ध अभियोग चल पड़ा है। अत: केस के सम्बन्ध मे सम्मति देना न्यायालय के नियमो के विरुद्ध है। पंडित जी ने लगभग दो वर्ष पूर्व खामगाव आर्यसमाज के निमन्त्रण पर कुछ दिन वहा धर्म प्रचार किया और कुछ सुधार तथा धर्म रक्षा सम्बन्धी बाते भी कराई वहा की पुलिस ने पंडित जी को बन्दी बनाया और न्यायालय मे जमानत हो गई।

इतना समय मौन रहने पर अकस्मात केस की सुनवाई कोर्ट मे शुरू हो गई है। प्रारम्भिक पेशी पर कोर्ट ने इलजाम की सूची मागी गई जोकि उस समय तैयार न थी जिस पर २४ नवम्बर की तिथि कोर्ट ने दी। न्यायालय मे न्याय प्राप्त करने के लिये तैयारी की जा रही है।

देहली से दूरस्थ पर अभियोग लडा जाना है। पंडित जी को प्रत्येक पेशी पर यहा आना होगा वकीलो पर भी खर्च होगा। मै समझता हू कि यह अभियोग अकेले व्यक्ति के लड़ने का नहीं है सारे आर्यसमाज को इसमे सहायता करनी चाहिये।

इस अभियोग को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली अथवा आर्य समाज प्रतिनिधि सभा बम्बई अपने हाथ मे ले ले तो बहुत अच्छा है। इससे भारत के सारे आर्यसमाज मे प्रगति होगी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीमान सेठ शूर जी वल्लभ भाई बम्बई मे ही रहते हैं। मुझे आशा है कि वह इस धर्म कार्य मे अवश्य सहायक होगे।

आज पंडित आशानन्द जी के साथ जो कुछ हुआ है कल को दूसरो के साथ भी हो सकता है। समय है कि आर्यसमाज अपने जीवनी शक्ति प्रमाण दे और केस को अपना कर पैरवी का सन्तोषजनक प्रबन्ध करे।

शान्ति प्रकाश आर्योपदेशक (जैकमपुरा गुड़गाव)

आर्य बन्धुओं के लिए स्वर्ण अवसर

सब आर्य सज्जनो की सेवा मे सहर्ष सूचित किया जाता है कि, हम वानप्रस्थ तथा सन्यास आश्रम के लिए एक सुन्दर योजना बना रहे हैं। इस आश्रम मे धर्म ग्रन्थो के स्वाध्याय का तथा भोजनादि का सब प्रबन्ध होगा। आश्रम मे रहने के इच्छुक महानुभाव अपना खर्च स्वयं देगे। जो सज्जन आश्रम मे निवास के इच्छुक है कृपया निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करे अथवा आ कर स्वयं मिले।

राम प्रताप आर्य
दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापी एक ओर लिखें

धर्म के नाम पर

(श्री विश्वमित्र जी चडडा, किला, जालन्धर नगर)

धर्म ने हजारो वर्षों से मनुष्य जाति को नाकों चने चबाए हैं। और लाखों करोड़ों नर-नाहरों का गर्म रक्त इसने पीया है। असंख्य कुल बालाओ एवं पुरुषो को जिन्दा मुर्दा बना दिया है। यही धर्म पृथ्वी की मानव जाति का विनाश करेगा कि उद्धार ? आज इस बात पर विचार करने का समय आ गया है।

धर्मके कारण ही राजा हरिश्चन्द्र राज्य पाट छोड़ कर भंगी के नौकर बने। धर्म के कारण ही राम ने राज्य त्याग कर वनवास ग्रहण किया। धर्म के कारण ही अर्जुन और भीम के सामने द्रौपदी पर अत्याचार किये गये और वे योद्धा मुर्दों की भांति बैठे देखते रहे। धर्म के कारण ही कौरवों की पत्नियों ने पति से भिन्न पुरुषो से सहवास करके सन्तान उत्पन्न की। धर्म के कारण राजपूतो ने सिर कटाए और उनकी स्त्रियों ने अपने स्वर्ण शरीर भस्म किए और धर्म के कारण शंकर और कुमारिल ने, दयानन्द और चैतन्य ने कठोर जीवन व्यतीत किया ! आज धर्म के लिए हमारे घरो मे सात करोड विधवाएं चुपचाप आसू पीकर जी रही हैं। धर्म के कारण पाखण्डी घमण्डी और गर्व गड ब्राह्मण भी सर्वश्रेष्ठ बने हुए हैं। भद्दी और बेहूदी अश्लील मूर्तिया भी इसी कारण पूजनीय बनी हुई हैं ! धर्म के कारण आज हिन्दु मुसलमान और ईसाई एक दूसरे के जानी दुश्मन है। धर्म के कारण ही सिक्खो ने मुगल काल मे अग कटवाए अपने बच्चो को दीवार मे चुनवाया। रोमन कैथोलिको के भीषण अत्यचारो की भेंट से लाखो लोग ईसाई बने। इसी कारण वीरो ने ईसाईयों को मशाल की भांति जलवाया। धर्म के कारण क्या-क्या अत्याचार नहीं हुए। धर्म के लिए सिपाही रण क्षेत्र में मनुष्यों को मारता है। वेश्याएं अपनी अस्मत बेचती हैं। कसाई पशु वध करते है। मन्दिरों मे जीव हत्या होती है।

यह किस लिए—केवल धर्म के लिए।

यह महाभयानक धर्म क्या वस्तु है। क्यों नहीं यह मनुष्य को आजाद होने देता मनुष्य को क्यो शांत नहीं से रहने देता। धर्म ने तान की भांति दिमाग को गुलाम बना लिया है। जो मनुष्य जिस रंग मे रंगा गया उसके विरुद्ध कभी सोच भी नहीं सकता। परन्तु प्राण दे सकता है। यह सब प्रबल शक्तिशाली धर्म की करामात है।

वेश्या नीच कर्म करना अपना धर्म समझती है। अछूत औरों का मल ढोना अपना धर्म समझता है। ब्राह्मण सब से श्रेष्ठ होना अपना धर्म समझता है। सिपाही अपने मालिक के शत्रु का हनन करना धर्म समझता है। मुसलमान काफिरों को कत्ल करना अपना धर्म समझता है। इस धर्म के नाम पर पाप-पुण्य अच्छा बुरा जो कुछ मनुष्य को समझा दिया गया उसमें मनुष्य विवश हो गया है। इस धर्म को भिन्न-भिन्न रीतियो से लोगों ने मनन किया है ! कुछ लोगों ने उसे केवल आध्यात्मिक बताया, कुछ एक ने शरीर के साथ भी उसका संसर्ग कायम किया है। जब से मनुष्य ने धर्म शब्द को पहचाना तब से धर्म के नाम पर हत्या पाखण्ड छल-कपट, अपराध व्यभिचार, ठगी, पाप सभी प्रशसा और क्षमा की नजर से देखे गए हैं। नदियो मे स्नान करना, कीडो को खाने को देना, चलना, फिरना, उठना, बैठना, सभी मे धर्म का असर बैठ गया है। इस नकली, झूठे निकम्मे धर्म का भाव भी बहुत ऊंचा चढ़कर उतरा। रोम के पोप मरने वालों से उनके पास स्वीकृत कराकर स्वर्ण के नाम की हुण्डी लिखते थे। और लाखों रुपया हडप लेते थे। गया के पाण्डे स्त्रियों तक को दान करा लेते थे। परन्तु आजकल धर्म की दर कूडे करकट से भी गिरी हुई है। मन्दिर के पत्थर के सामने एक पैसा फेंक देने से धर्म बन जाता है [illegible] किसी भूखे को देने से धर्म बन जाता है। किसी खास नदी में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। व्रत रखने से धर्म बन जाता है। माथे पर लाल टीका लगाने से, पाखण्डी ब्राह्मणों को दान देने, पत्थरों के आगे सिर झुका देने से 'अगड़म बगड़म' कोई खास श्लोक का जाप करने से धर्म बन जाता है।

अरे अभागे मनुष्यो—जरा सोचो धर्म आखिर क्या भला है। आप क्यो उसके पंजे में फंसे हुए हो। जातियों की जातियों का इस धर्म से नाश हो गया। बौद्धों ने सारी पृथ्वी को एक बार चरणों मे झुकाया। पीछे उन्होंने खून की नदियां बहाईं और अन्तमें नष्ट हुए। ईसाईयों ने भी मानव जाति में हाहाकार मचाया। मुसलमानों ने सैकड़ो वर्षों तक मनुष्यो को सुख नींद ना सोने दिया। धर्म मनुष्य जाति के दिल पर पर्दा बन पड़ा है। मगर मनुष्य उससे सावधान सचेत नही होता।

धर्म वह है जिससे मनुष्य मनुष्य के प्रति उत्तरदायी हो। प्राणीमात्र के प्रति उतरदायी हो धर्म वह है जिसके आधार पर मनुष्य अधिक से अधिक लोकोपकार कर सके। धर्म वह है जिससे हृदय और मस्तिष्क का पूरा विकास हो दया धर्म है। प्रेम धर्म है सहनशीलता धर्म है। उदारता धर्म है। सत्यता धर्म है उत्साह धर्म है त्याग धर्म है।

हे हिन्दू जाति के आशा स्तम्भो ! हे मेरे प्यारे नवीन कुमारो एवं कुमारियों। इस नवीन धर्म को हृदयंगम करो—जिस से तुम्हारा मस्तिष्क और दिल पुष्प की भांति खिल जाए और तुम्हारे मन से, वचन से और कर्म से किसी के गुलाम न रहो।

धर्म वह है जो आजादी प्रकाश और जीवन दे। धर्म वह जो जातियों को संगठित करे। प्राणियों को निर्भय करे। जीवन को सुखी और सन्तुष्ट करे। धर्म के ढकोसलो को त्यागो और नवीन धर्म को ग्रहण कर आनन्द प्राप्त करो। यदि तुम्हारी इस स्वतन्त्र भावना तुम्हारे बजुर्ग बाधा डाले तो उनकी आज्ञा मानने में इन्कार कर दो। जिन्हें तुम अपनी नजर में मूर्खतापूर्ण अव्यवहारिक और अपनी आत्मा की आवाज के विपरीत समझते हो। प्राचीन विद्वानो का मत है कि गुरुजनों की उन्हीं आज्ञाओं का पालन करना चाहिए जो नीति और धर्म के अनुकूल हों और तुम्हारी आत्मा की आवाज भी उसका अनुमोदन करे।

आर्यसमाज विक्रमपुरा [किला], जालन्धर

का

८४वां वार्षिक महोत्सव

आर्यसमाज विक्रमपुरा [किला], जालन्धर का ८४वां वार्षिक महोत्सव, जोकि एक महान् धार्मिक उत्सव का रूप धारण कर चुका है, इस बार २८, २९, ३० नवम्बर १९६९ शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को साईंदास एंग्लो संस्कृत हायर सैकण्डरी स्कूल में बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। जिस में आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी, महात्मा, दार्शनिक विद्वान् और संगीताचार्य पधार रहे हैं। नगर-कीर्तन शुक्रवार २८ नवम्बर १९६९ को बाद दोपहर दो बजे, साईंदास एंग्लो संस्कृत हायर सैकण्डरी स्कूल जालन्धर के विशाल मैदान से आरम्भ होगा।

कार्य-क्रम

स्थान—साईंदास एंग्लो संस्कृत हायर सैकण्डरी स्कूल, जालन्धर का अन्दर वाला मैदान।

यज्ञ—२४ से २८ नवम्बर, १९६९ तक आर्यसमाज मन्दिर विक्रमपुरा में तथा २९ और ३० नवम्बर को साईंदास स्कूल के आंगन में स्वामी आनन्द भिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता में यजुर्वेद का यज्ञ होगा।

१—पावन वेद-प्रवचन :—सोमवार दिनांक २४ नवम्बर से २७ नवम्बर वीरवार तक प्रिंसिपल श्री ज्ञानचन्द जी आचार्य ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार, विक्रमपुरा आर्य समाज मन्दिर में प्रतिदिन रात्रि ८-३० बजे से १० बजे तक वेदोपदेश होंगे। प्रवचन से पूर्व श्री मेला राम के भजन भी होंगे।

२—यजुर्वेद यज्ञ—सोमवार दिनांक २४ नवम्बर से २८ नवम्बर शुक्रवार तक प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक विक्रमपुरा आर्य समाज मन्दिर में तथा २९ और ३० नवम्बर १९६९ को प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक स्वामी आनन्द भिक्षु जी की अध्यक्षता में साईं दास स्कूल के आंगन मे यजुर्वेद का यज्ञ सम्पन्न होगा।

३. राष्ट्र भाषा-सम्मेलन—रविवार दिनांक ३०नवम्बर, बाद दोपहर २ बजे से ५-३० बजे तक साईं दास स्कूल मे श्री रला राम जी भूतपूर्व प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज होशियारपुर तथा भूतपूर्व प्रधान आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रधानता मे राष्ट्र भाषा सम्मेलन होगा। जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान अपने अमूल्य विचार प्रस्तुत करेंगे।

४. 'महिला आर्यसमाज विक्रमपुरा' का उत्सव सोमवार दिनांक १ दिसम्बर १९६९ को आर्यसमाज विक्रमपुरा मे बाद दोपहर २ बजे से ५बजे तक मनाया जायेगा, जिसमें आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाबके प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनीक अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

शुक्रवार २८ नवंबर १९६९

प्रातः

७ बजे से ९ बजे तक—यज्ञ,आर्यसमाज मन्दिर विक्रमपुरा मे।

मध्याह्नोत्तर

नगर कीर्तन तथा ध्वजारोहण का कार्यक्रम

स्थान—साईंदास एंग्लो संस्कृत हायर सैकण्डरी स्कूल का बाहर वाला मैदान।

बैण्ड—२-०० बजे साईंदास एंग्लो साईं स्कूल की छात्राएं।

ध्वजारोहण—२.१० बजे कुमारी विद्यावती आनन्द, प्रधान आर्यसमाज विक्रमपुरा।

ध्वजगीत—२.२० बजे साईंदास एंग्लो साईं स्कूल की छात्राएं।

नगर कीर्तन—२.३० बजे ध्वज गीत के पश्चात् नगर कीर्तन आरम्भ होगा। जो साईंदास स्कूल से आरम्भ होकर माई हीरा गेट, भक्तसिंह चौंक, मिलाप चौंक, सैदां गेट, रैनिक बाजार तथा जी०टी० रोड से होता हुआ साईंदास स्कूल मे समाप्त होगा।

रात्रि

८.३० बजे से ९ बजे तक—भजन श्री मेलाराम जी।

९.०० बजे से ९.४५ तक—उपदेश प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी आचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार।

शनिवार २९ नवम्बर १९६९

प्रातः

७ से ९ बजे तक—यज्ञ, साईंदास स्कूल के आंगन मे।

९ से ९-३० तक—भजन, श्री मदन मोहन राजपाल भजन मण्डली।

९-३० से १०-३० तक—उपदेश, श्री प० त्रिलोक चन्द जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब।

१०-३० से १०-४० तक—भजन, ए. एस. हायर सैकण्डरी स्कूल, नकोदर के छात्र।

१०-४० से ११-०० तक—भजन श्री मेला राम जी।

११.०० से १२.०० तक—उपदेश, प्रिंसिपल ज्ञान चन्द जी आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार।

मध्याह्नोत्तर

२ बजे से २-३० तक—भजन, श्री मेलाराम।

२-३० से ३-३० तक—व्याख्यान श्री त्रिलोकचन्द जी शास्त्री, महोपदेश आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब।

३-३० से ३-४५ तक—भजन, श्री मदन मोहन राजपाल मण्डली।

३-४५ से ४-०० तक—भजन, दयानन्द माडल स्कूल, दयानन्द नगर, जालन्धर के छात्र।

४ से ५ तक—व्याख्यान, श्री सत्यव्रत जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब।

रात्रि

७-३० से ८ तक—भजन, श्री मदन मोहन राजपाल जी मण्डली।

८ से ८. ४५ तक—व्याख्यान, श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु प्रो० डी. ए. वी. कालिज अबोहर।

८. ४५ से ९—भजन, श्री मेला राम जी।

९. से ९. ५० तक—व्याख्यान, प्रो० राम प्रकाश जी, चण्डीगढ।

रविवार ३० नवम्बर १९६९

प्रातः

७ बजे से ९. १५ बजे तक—यज्ञ की पूर्णाहुति,साई दास स्कूलके आंगन मे।

९. १५ से ९. ३० तक—यज्ञ शेष वितरण।

९. ३० से ९. ५० तक—भजन, श्री मदन मोहन राजपाल भजन मण्डली।

९.५० से १०.०५ तक—भजन, श्री मेला राम जी।

१०.०५ से १०.१० तक—भजन, साई दास ए. एस हायर सैकण्डरी स्कूल के छात्र

(शेष-पृष्ठ ६ पर)

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर में श्री गुरु नानक देव जी की पांचवीं जन्म-शताब्दी सम्पन्न

प्रिं० भीमसेन जी बहल का सारगर्भित भाषण

जालन्धर २३ नवम्बर—डी०ए०वी० कालेज मे श्री गुरुनानक देवजी की पांचवी जन्म-शताब्दी बडी धूमधाम से तथा बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर डी०ए०वी० कालेज के तीनो छात्रावास के छात्रो ने अपने-अपने छात्रावास मे प्रीति भोज का आयोजन किया। माननीय प्रिंसीपल भीमसेन जी बहल, प्रो०



माननीय श्री भीमसेन जी बहल प्रिंसीपल डी० ए० वी० कालेज जालन्धर जिन्होने श्री गुरु नानक देव जी की पाचवी जन्म शताब्दि पर कालेज के छात्रो मे श्री गुरु नानकदेव जी के जीवन पर सारगर्भित भाषण देते हुए, श्री गुरु नानकदेव जी को श्रद्धाजलि अर्पित की तथा विद्यार्थियो को उनके पदचिन्हो पर चलने की प्रेरणा दी।

श्री पी०डी० चौधरी व डा० वेदीराम जी को विद्यार्थियो ने सम्मिलत प्रीतिभोज मे आमन्त्रित किया। प्रीति भोज का सुप्रबन्ध भी दर्शनीय था।

मेहरचन्द छात्रावास के समारोह का आयोजन इस छात्रावास के मुख्य छात्र श्री प्यारेलाल जी सिगला जो कि आर्य युवक समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता भी है ने किया ! इस शुभ अवसर पर छात्रो ने छात्र केन्द्रीय परिषद् के उप-प्रधान स० हाकिमसिह जी को भी आमन्त्रित किया। इस शुभ अवसर पर प्रिंसीपल भीमसेन जी बहल ने सारगर्भित भाषण दिया जिसकी प्रत्येक ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। माननीय प्रिं०साहब ने विद्यार्थियों को श्री गुरु नानक देव जी के पदचिन्हो पर चलने का सन्देश दिया।

तदउपरांत माननीय प्रिं० साहब, डा० वेदी राम जी व श्री पी. डी. चौधरी छात्राओ के होस्टल मे गये वहा का प्रबन्ध और कार्यक्रम अपनी शान खद ही रखता है। इस होस्टल की वार्डन श्रीमति सत्या मल्होत्रा एक सुयोग्य अध्यापिका हैं वह छात्राओं का हर समय हर रूप मे मार्गदर्शन करती रहती है। छात्राओ का यह होस्टल सारा वर्ष जहा अध्ययन का केन्द्र रहता है वहा वह अपने सास्कृतिक कार्यक्रम द्वारा अपने वातावरण को जागरुक रखता है। माननीय प्रिं० साहब ने श्री गुरुनानक देव जी की शिक्षायो पर सदेश देते हुए कहा कि आज के युग मे जबकि मानव चन्द्रमा पर अपने कदम रख चुका है तथा वहा चलने की तैयारी मे लीन है वह बुरा नही, किंतु उससे पहले यह आवश्यक है कि वह मानव समाज मे भी सद्भावना का प्रकाश करे। श्री गुरुनानकदेव जी ने बे-शक चाद पर पहुचने का यत्न नही किया परतु उसकी रोशनी को हर कोने तक पहुचाने के लिए बलिदानो की लडी तैयार की। प्रिंसीपल साहिब जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री गुरु नानक देव जी का जन्म ऐसे समय हुआ जब कि उन जैसे महान तपस्वी की जरूरत थी। बाल विवाह समाप्त करके तथा विधवा विवाह पुन. शुरू करने की प्रेरणा देकर उन्होने मानव समाज के कल्याण के लिए कई सराहनीय कार्य किए। गुरु जी ने समाज की कुरीतियो का नाश करके समाज सुधार के अनेकों कार्य किए। आज से सौ वर्ष पूर्व जो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया गुरु नानक देव जी ने आज से ५०० वर्ष पहले ऐसा हो सोचा था। महर्षि दयानन्दजी की विचार धारा ने जहा अंग्रेजो से भारत वष कों मुक्त कराया वहां गुरुनानक देव जी ने मुगलो के अत्याचारों से तग दुनिया को सहारा दिया। यह गुरु नानक देव जी की पवित्र वाणी थी जिसने आने वाले समय मे बलिदानो की लडी लगा दी।

इससे पूर्व १९ नवम्बर को सभी दलो की ओर से एक विशाल जलूस निकाला गया जिस मे डी० ए० वी० कालेज के छात्रों की टोली मीलो लम्बे जलूस मे अपना रूप आप ही थी। जनता ने मुक्त कठ से सराहना की। इस टोली का नेतृत्व डा० वेदीराम जी शर्मा कर रहे थे।

वास्तव मे आज हिन्दू सिक्ख एकता की जरूरत है। पजाब के हिन्दू सदा से उद्धार रहे हैं और इसी नाते वह सिक्ख गुरुओ की अपनी संस्कृति का एक अंग मानते रहे हैं। सिक्खोको हिन्दुयो का एक वर्ग स्वीकार किया जाता रहा है। लार्ड मैकालिफके समय से यह विभेद की नीति का आरभ हुआ। आज हमे सबको मिलकर राष्ट्र निर्माण मे अग्रसर होना है। इसी लिए डी. ए वी कालेज ने एकता की ओर पग बढाया।

आर्यसमाज विक्रमपुरा

(५ पृष्ठ का शेष)

१०.१० से १० ५५ तक—व्याख्यान, ब्रह्मचारी सत्य प्रिय जी, लाडवा (करनाल)।

१०.५५ से ११ ०५ तक—वेद मन्त्र हसराज महिला महाविद्यालय जालंधर की छात्राए।

११.०५ से १२ ०० तक—व्याख्यान श्री प्रो० श्याम राव जी एम. ए. (आर्य युवक परिषद देहली)

मध्याह्नोत्तर

राष्ट्र-भाषा सम्मेलन—श्री प्रिंसिपल रलाराम जी के सभापतित्व मे।

२.०० से २ १५ तक—भजन श्री मदन मोहन राज पाल भजन-मण्डली।

२ १५ से २ ३० तक—भजन, साईदास गर्ल्ज हाई स्कूल की छात्राए।

२ ३० से २ ४० तक—भजन, दयानन्द माडल स्कूल के छात्र।

सम्मेलन मे निम्नलिखित महानुभाव अपने विचार प्रस्तुत करेंगे—

श्री त्रिलोकचन्द जी शास्त्री, प्रिंसिपल बी एस. बहल, प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती आनन्द. श्री प्रो० श्याम राव जी एम० ए०, भजन—हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर की छात्राए। श्री यश जी, श्री वीरेन्द्र जी, ला० जगत नारायण जी, श्री प्रो० वेदीराम जी, श्री इन्द्रसेन जी, श्री राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रिंसिपल रलाराम जी सभापति।

रात्रि

७-३० से ८ तक—भजन, श्री मदन मोहन राजपाल भजन मण्डली।

८-०० से ८-४५तक—व्याख्यान, श्रीब्रह्मचारी सत्यप्रियजी, (लाडवा करनाल)

८-४५ से ९-०० तक—भजन, श्री मेलाराम।

९-०० से ९-४५ तक—व्याख्यान प्रो० श्याम राव जी एम० ए०(आर्य युवक परिषद देहली)।

९-४५ से ९-०० तक—धन्यवाद तथा शान्तिपाठ।

सोमवार १ दिसंबर १९६९

महिला आर्य समाज का उत्सव—सोमवार दिनाक १ दिसम्बर १९६९ को आर्य समाज मन्दिर विक्रमपुरा में बाद दोपहर २ बजे से ५ बजे तक मनाया जाएगा जिस में आर्य प्रादेशिक सभा, पंजाब के प्रसिद्ध विद्वान और भजनीक अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

नोट—कार्यक्रम मे परिवर्तन का अधिकार मन्त्री को होगा।

—निवेदक:—

कु० विद्यावती आनंद, आनंद सागर आर्य सियाबिहारी शरण

प्रधान सयुक्त मन्त्री मन्त्री

आर्य-समाज विक्रमपुरा (किला), जालन्धर।

पारकरोप्रभु ! नैयामेरी, शरण पड़ा तेरी

आचार्य मित्रसेन जी एम० ए०, सिद्धांतालंकार

पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।
न ये शेकुर्यज्ञिया नावम् आरुहमीर्मेव ते न्यविशन्त केपयः ।।

ऋग्वेद १०।४४।६ अथर्व २०।९४।६

शब्दार्थ—(प्रथमा:) जो प्रथम प्रकार के अर्थात विस्तृत ज्ञानी (देवहूतय:) दिव्यगुणो का आह्वान करने वाले मनुष्य (पृथक) पृथक् (प्रायन) प्रकृष्ट पथ से (स्व-स्वलोको को) पहुचते हैं, वे (दुष्टरा) अति दुस्तर (श्रवस्यानि) ज्ञानैश्वर्यों को, श्रवणीयशों को (आकृण्वत) प्राप्त कर लेते हैं परन्तु (ये) जो (यज्ञिया नाव) इस यज्ञमयी नाव पर (आरुह) चढने मे (न शेकु:) समर्थ नही होते (ते) वे सब (केपय:) कुत्सित अपवित्र आचरण वाले होकर (ईर्मा एव) यही इसी लोक मे (न्यविशन्त) नीचे-नीचे जाते है ।

उपदेश—इस अपार समझे जाने वाले भव सागर के मध्य मे जीव की की नैया पडी है, अज्ञान के बादल छाए हुए हैं, अविद्या की भयंकर आधी चल रही है, कुकर्मो के भवरो मे फसी यह जीवन नौका हिचकोले खा रही है । जीव बार-बार यही विचार करता है कैसे पार करू मार्ग अवरुद्ध हो चुका है, विपत्ति ग्रस्त मानव चीख पड़ता है, हे प्रभो ! बचाओ, बचाओ, आप ही की शरण हूं । पतितपावन प्रभु बचाने को आते हुए कहते हैं अरे मानव ! संसार सागर से पार कराने वाली नौका यज्ञमयी ही है । यदि तू यज्ञ कर्म नही करेगा तो मनुष्यत्व से ऊपर उठना तो दूर पशुत्व मे अध: पतन की ओर चल पडेगा । अनेक 'देवाहूति' पुरुष उन देव लोक, पितृलोक, ब्रह्मलोक, आदि दुष्प्राप्य यशोमय उन्नत लोको तक पहुच चुके है, अनेक यानों से वे इस मानव अवस्था से पार होकर 'देव' बन गए । ये लोग यज्ञिय यान (नौका) पर चढ कर ही वहा पहुचे हैं । इन्होने अपने मे देवत्व का दिव्य गुणो का आह्वान किया है और 'प्रथमम' बने है । दूसरी ओर वे दुर्भाग्य वाले प्राणी हैं जो स्वार्थ त्याग न कर सकने के कारण, अयज्ञिय हो ऋण के पाश मे फसे पडे है, इस दिव्य नौका को नही पा सके अत: इसी मर्त्यलोक मे दु:ख भोग रहे है ।

वे सासारिक प्राणी जो 'केपि' कुत्सित आचरण वाले है, पतन के गर्त मे समा रहे है, पशुत्व की ओर आकर्षित हो रहे है जिनको उन्नत बन पवित्र मनुष्य होना अत्यन्त कठिन हो हो चुका है । अत. हे मानवो ! आओ मनुष्य योनि प्राप्त करके कुछ स्वार्थ त्याग करे जिस से ऋणबद्ध न रह सकें । मातृ-पितृ, गुरु, समाज, राष्ट्र, मनुष्यता, प्रकृतियां और परमेश्वर इत्यादि के ऋण हैं, उन्हे उतारने के लिए स्व स्वार्थो की आहुति दे । इस प्रकार से दैनिक और आवश्यक पञ्च महायज्ञो को सामर्थ्य भर करते रहो जिससे यज्ञिय नौका पर आरूढ होकर देवयान लोको तक नही तो पितृयान लोको को पहुच ही जावेगे, मानवता को अपने हाथो से न जाने देंगे । मनुष्यो ! यज्ञिय नौका तत्पर है । हम चाहे तो देवहूति दिव्य स्वभाव धर्मशील होकर, इस नौका द्वारा अगम सागर को पार कर ज्ञानैश्वर्य और उन्नताधिक उन्नत लोको तक जा सकेंगे । यदि इस यज्ञिय नाव में स्थान न पा सके तो हम ऐसी कुदशा मे फंस जायेंगे इतने निर्लज्ज बन जायेंगे कि कुत्सित, अपवित्र कुकर्मो के करने मे ही सुख पायेंगे और पतित होते हा जाएंगे । पुन: उद्धार का अवसर कब आयेगा यह कौन कह सकता है ? पाप योनि चक्र से निकाल कर यज्ञिय नौका पर आरूढ होइए ।

आप सबका कर्त्तव्य

'आर्य जगत साप्ताहिक' पत्र आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र है । वैदिक प्रचार का अति उत्तम साधन सिद्ध हुआ है । वर्ष में चार आकर्षक विशेषाक निकालकर तथा साधारण अंकोमे भी वेद विषयक सामग्री देकर पाठको की निरन्तर सेवा करता चला आ रहा है । जहा तक राजनीति का प्रश्न है यह उससे कोसो दूर है । एक मात्र वैदिक प्रचार ही इसका लक्ष्य है ।

हम सबका यह धार्मिक कर्तव्य है कि इसकी ग्राहक सख्या मे वृद्धि करके इसको लोकप्रिय बनाने मे सहायता दे । पुराने ग्राहको की सेवा मे प्रार्थना है कि इस वर्ष के अत तक **एक-एक नया ग्राहक** बनाने का संकल्प ले । आप सबके सहयोग से 'आर्य जगत् साप्ताहिक' की उन्नति निश्चय है । आशा है **नए ग्राहक** बनाने मे आर्य जगत् के पुराने ग्राहक महानुभाव पूर्ण सहयोग देगे । —व्यवस्थापक

लेखकों की सेवा में

'आर्य जगत' साप्ताहिक के सभीलेखको का हम धन्यवाद करते है जो कि समय समय पर अपनी लेखनी द्वारा 'जगत' की सेवा करते रहते हैं । इसके साथ ही उन लेखकों की सेवा मे निवेदन है जिनके लेख आर्य जगत साप्ताहिक मे छपते नही । हमे कई लेख ऐसे प्राप्त होते है जिनका पढना मुश्किल ही नही असम्भव होता है या कई लेख ऐसे भी होते है जो कि कागज की दोनो तरफ लिखे रहते हैं जिन्हे 'कमपोज' करने मे अति कठिनाई अनुभव होती है । हालाकि हम आर्य जगत के अक मे यह लिखते है कि लेखक महानुभाव कापी एक ओर लिखे ।

हम उन लेखको से क्षमा मागते है जो इस से रुष्ट हैं जिनके आर्यजगत मे लेख नही छप रहे हमारी प्रार्थना है कि कृपया कापी हमेशा एक ओर ही लिखने की कृपा करे ताकि पढने व कम्पोज करने मे सुविधा रहे। व्यवस्थापक

कानपुरमें ईसाई परिवार का हिंदूधर्ममें प्रवेश

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर में आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने पाच सदस्यो बाल एक जन्म से ईसाई परिवार को उनकी इच्छानुसार हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया । इस परिवार के शुद्धि के अवसर पर आयोजित विशाल सभा मे श्री आर्य ने शुद्ध होने वालो को यज्ञोपवीत धारण करा कर गायत्री मन्त्र का पाठ कराया । तत्पश्चात उनके नाम एम्बुल जेम्स से अजय कुमार, श्रीमती आसमानी जेम्स से श्रीमती दुर्गा देवी तथा उनकी दो पत्नियो का नाम आशा व ऊषा और एक पुत्र का नाम अशोक कुमार रखा गया । इस अवसर पर श्री जेम्स ने भाषण देने कहा कि वह बगाल का रहने वाला है । नौकरी के सिलसिले मे कानपुर रहा है । उनके दादा अग्रेज अधिकारियो के दबाव तथा लालच के कारण हिन्दू धर्म से ईसाई बन गए थे । श्री जेम्स ने श्री देवीदास आर्य का आभार प्रकट करते कहा कि उनके पथ प्रदर्शन से उनने अपने दादा की भूल का सुधार किया है और हिन्दू धर्म जो ईश्वरी धर्म है, मे प्रवेश कराया है । ज्ञातव्य कुछ दिन पहिले श्री आर्य ने एक प्रसिद्ध ईसाई पादरी अलफ्रेड डेनियल जो ३२ वर्ष तक ईसाइयत का प्रचार करता रहा, को शुद्ध करके हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया था । इससे ईसाई जगत मे काफी हलचल मच गई है ।

सम्यक् संकल्प

(पृष्ठ २ का शेष)

सुभाष चन्द्र बोस के महान श्रेष्ठता को स्वीकार करता है । उनके महान् बलिदान के सामने श्रद्धापूर्वक अपने मस्तक को झुकाता है । बाबू सुभाष-चन्द्र बोस सम्यक् संकल्प शक्ति के आधार पर हो इतने महान श्रेष्ठ महापुरुष बने । उपरोक्त उदाहरणो से स्पष्ट हो जाता है कि अगर हम ससार मे श्रेष्ठ, महान विश्वविजयी बनना चाहते हैं तो सम्यक् सकल्प के आधार पर प्रथम अपने जीवन का ध्येय (उद्देश्य) निश्चत करें तभी हम विश्वविजयी बन सकते हैं ।

आर्यसमाज चंडीगढ़ का ... त्सव सम्पन्न

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी आर्यसमाज सैक्टर—७ का वार्षिक उत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया।

प्रातः सायं ऋग्वेद तथा यजुर्वेद यज्ञ और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के आर्य विद्वान तथा ओजस्वी वक्ता श्री प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री के वेद व्याख्यानो के साथ दिनाक ३-११-६९ से आर्यसमाज सैक्टर ७ चण्डीगढ का ११वा वार्षिकोत्सव प्रभु की महती कृपा से आरम्भ हुआ। पडित जी की वेद कथा ने इस बार चण्डीगढ के नर-नारियो को विशेष प्रभावित किया। वहा सर्वश्री राजपाल मदनलाल जी की चिमटा मडली के सुरीले और मनोहर भजनो ने स्वर्ण पर सुहागे का काम किया।

उपस्थिति दिन प्रतिदिन बढती ही गई और ७-११-६९ को डी ए वी स्कूलो और कालेजो की छावनी के साथ विशाल नगर कीर्तन भिन्न-भिन्न सैक्टरो मे घूमता और वैदिक संदेश देता हुआ साय ५ बजे मन्दिर मे समाप्त हुआ। रात्रि को आर्यसमाज के उच्च कोटी के वेद विद्वान, विद्या-वाचस्पति, विद्या मार्तण्ड इंगलिश सामवेद भाष्यकार आचार्य धर्म देव जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। ८-११-६९ शनिवार को आर्यसमाज के स्वाध्याय शील विद्वान श्री पं० सत्यप्रिय जी तथा अन्य विद्वानो के अतिरिक्त आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब, हरियाणा, हिमाचल तथा दिल्ली के महामंत्री डा० वेदीराम जी शर्मा का ओज और ओजपूर्ण व्याख्यान 'आज के युग में आर्यसमाज के वैदिक आदर्शों की आवश्यकता' विषय पर हुआ। जिसकी नगर के बहू पठित शिक्षित समुदाय ने भूरि-भूरि प्रशसा की।

दयानन्द की खोज के लिये सरकार से मांग

उत्सव की सम्पूर्ण जनता ने श्री प० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री के सुयोग्य विद्वान वक्ता सुपुत्र दयानन्द जी की खोज के लिये पजाब सरकार से ... किय... की ... सम्मति से पारित किया जिसे मैंने प्रस्तुत ... सत्यवती जी मंत्राणी स्त्री समाज ने हृदय ... मर्थन किया!

... चार्य जी के वेद विद्या अनुसंधानात्मक वेद प्रवच... सभी समाजो की ओर से मनाए गए महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस की अध्यक्षता भी आप के द्वारा सम्पन्न हुई जिन मे सभी विद्वानो और भजनीक महोदयो तथा बहिनों ने श्रद्धाजलि भेंट की।

चिमटा मडली के प्रभाव के अतिरिक्त जहा श्री हजारी लाल जी के रसीले भजनो ने जनताको बहुत आनंदित किया वहा श्री इन्द्रसेन विश्वप्रेमी के जोशीले भजनो को भी काफी पसन्द किया गया। आर्य जनता को इस नवयुवक प्रेमी जी की सेवाओ से भी लाभ उठाना चाहिये।

डा शर्मा जी मंत्री सभा की प्रेरणा पर १०००) रु० आर्य समाज ने देना स्वीकार कर लिया।

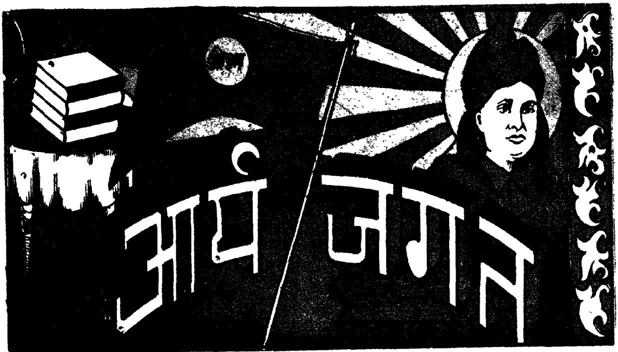
गोरक्षा और शराब पर पिकिटग

के दो प्रस्ताव पूज्य माता श्रीमति भीमसेन जी सच्चर की अध्यक्षता मे हुए आर्य स्त्री समाज के महोत्सव मे १०/११/६९ को पूज्य बहिन यति विद्योत्माजी की प्रेरणा और श्रीमती सच्चर जी के अत्यन्त उत्साह से सर्व सम्मत पारित किये गये जिसमे चण्डीगढ के घरो मे गौ को रखने के अधिकार की माग और मध्य स्थलों पर पिकटिंग के सम्बन्ध मे बहिनो ने पूरा जोश दिखाया। पूज्य प्रधाना श्रीमती सुशीला शर्मा, बहिन कृष्णा तथा आशा जी और अन्य सभी कार्य कर्तृ देवियां हार्दिक बधाई की पात्र हैं।

इस उत्सव की शोभा आर्य पण्डिता बहिन सुवीरा भी थी जिन्हों के सारगर्भित व्याख्यानो ने बहिनो के अन्दर नव चेतना का संचार किया। बहिनों ने उनके व्याख्यानो को बहुत पसन्द किया।

—आशुराम पुरोहित

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा०वेदीरामजी एम ए, पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत् कार्यलय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २१, अंक ४६) २३ मार्गशीर्ष २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—७ दिसम्बर १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

त्वं हि धनदा असि

हे परमेश्वर ! त्वं—आप ही सब प्रकार के धनदा-धन सम्पत्तियों को देने वाले असि हो। धन के दाता प्रभो आप हैं।

भाव —वह भगवान राजा है, वही इन्द्र है। यह तमाम ऐश्वर्य का भण्डार उसी का है। सारी सम्पत्तियों का वही केन्द्र है। वही लक्ष्मीपति, श्रीपति एवं धनपति है। जो कुछ हम अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए मांगना चाहते है—वेद-माता लोरी देती हुई कहती है कि उसी इन्द्र से ही मांगो। प्रभु का प्यारा श्रद्धा भरे भावों में विभोर होकर कहता है, प्रभुदेव ! आप ही धन के दाता हो। सारी सम्पत्ति को प्रदान करते रहते हो।

यजुर्वेद से—सं०

वेदामृत

देववाहन महादेव है

ओ३म् वृषो अग्निः समिध्यते ऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईडते ॥

सामवेद उत्तरा. ७-२-२

अर्थ :—वह प्रमुख (वृषः) तमाम सुखों की वर्षा करने वाला है। (अग्नि.) ज्ञान स्वरूप है, वह (समिध्यते) प्रकाशित होता है (अश्व) प्राण के (न) समान वह प्रभु (देववाहन) सारे पृथिवी जल, वायु, अग्नि, सूर्य चन्द्रमा आदि देवों का धारक वाहक है। (तं) उस प्रभु को (हविष्मन्त) स्तुति करने वाले भक्तजन (ईडते) स्तुति करते है। श्रोता उसी का श्रवण करते है।

इस मन्त्र का भाव यह है

वेद-माता का प्यारा २ उपदेश है है कि लोगो ! सदा स्मरण रखो कि वह भगवान् वृष है—सदा सभी पर सुखों को वर्षा करता रहता है। वह ज्ञान स्वरूप है। हमारे शरीर में जैसे प्राण महान् देव बन कर बाकी सारे आंख, कान, रसना आदि देवों को धारण करता है। उसी प्रकार भगवान् ही विश्व के सारे देवों का धारक है। वही महादेव है। जो प्रभु प्रेमी होते है। भगवान् की निष्ठा वाले है—वे सभी उसी देववाहन की स्तुति करते रहते हैं।

—सम्पादक

ऋषि दर्शन

पापाय पर पीड़नम्

अर्थ :—पापाय—पाप के लिए है पर-पीड़नम्—दूसरों को सताना तपाना पाप कहलाता है।

भाव :—व्यास मुनि जी ने अपने महान् ग्रन्थ महाभारत में उपदेश देते हुए मनुष्यों को कहा है—कि दूसरों को कष्ट पहुंचाना पाप है और जो भी किसी जीव को, प्राणी को कष्ट देता है, सताता है या अपने किसी स्वार्थ के लिये उनको दुख देता है। वह पापी है। ऐसा काय उसका पाप की गिनती में आता है। किसी को मत सताओ वर्ना पापियों की श्रेणी में गिने जाओगे। पर पीड़ा ही सबसे बड़ा पाप है। यह पाप जीवन में नहीं करना चाहिए। पापी मत बनो।

महाभारत से—सं०

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

भारत में ईसाइयों का सुनियोजित आक्रमण

(श्री ब्र० दत्तमूर्ति जी मसूराश्रम गोरे गांव, बम्बई) (बनवासी संदेश) से साभार

भारत को मिटाने के लिए विदेशी पादरियो ने हमला कर दिया है। क्या सर्वनाश मे पहले यह नीद नही टूट सकती ?

ईसाई मिशनरियो की मुक्त गतिविधिया अपने प्यारे भारत के लिए अत्यन्त खतरनाक हैं। इतना ही नही अपितु भारत की राष्ट्रीय एकता, हमारी प्राचीन परम्परा एव हमारी वैदिक संस्कृति की रक्षा की दृष्टि से इन ईसाइयो के नापाक आक्रमण घोर सकट के प्रतीक है।

भारत के कई तथाकथित उपाधि-विभूषित नागरिक एव राष्ट्र नेता विशेषतया ईसाई स्कूलो या विदेशो मे जिन्होने शिक्षा पाई है, उन्हे इस बात का ख्याल ही नही है कि ईसाईयो का यह सामाजिक, धार्मिक, संस्कृति और राजकीय आक्रमण हमारी सस्कृति एव राष्ट्र के लिये कितना खतरनाक है। उल्टे वे यह सोचते है कि ईसाईयो का यह संगठन भारत के लिए हितकर है, क्योकि वे यहा स्कूल और कालेज चलाते है। अस्पताल खोलते है। वहा रोगियो की व्यवस्था करते है। हर गरजमन्द एव दुखी आदमी के लिए हमदर्दी दिखाते है और परिणामस्वरूप स्वेच्छा से ईसाई बन जाते हैं। ईसाइयो की इन जघन्य गतिविधियो की यदि कोई सही-सही आलोचना भी करता है तो उस पर 'गैर जिम्मेदार' 'असस्कृत' 'संकुचित विचारवाला' और तो और 'साम्प्रदायिक, होने की मुहर लगा दी जाती है।

पर इस मे कहा तक तथ्य है ? ईसाई संगठनो की रिपोर्ट स्वय इस बात को स्वीकार करती है कि उनकी इन समस्त गतिविधियो का स्कूल, कालेज, अस्पताल, अनाथालय आदि सभी सगठनो का एकमेव उद्देश्य धर्मान्तरण ही है।

Conversion to christianity itself presupposes a moral, emotional and intell ectual back-ground which our schools supply '

(Catholic India-plattner,p. 117)

यह बडे दुर्भाग्य की बात है कि हमारे समाज के तथाकथित उपाधि विभूषित लोग नेता, या सरकारी अफसर ईसाई मिशनरी सगठनो द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट को पढने तक की आवश्यकता महसूस नही करते है।

नियोगी एव रेगे कमीशन ने यह बात सप्रमाण साबित कर दी है कि मध्यप्रदेश मे जो जोर जुल्म, प्रलोभन आदि अन्याय जघन्य तरीको को अपनाकर ईसाईकरण किया गया। स्वय ईसाई मिशनरियो की अधिकृत रिपोटो मे यह बात आत्मदर्प के साथ अकित की गई है। सब से आश्चर्य की बात तो यह है कि सब रेकार्ड उपलब्ध होते हुये भी जब हमारे भूतपूर्व गृहमन्त्री स्वर्गीय श्री दातार से प्रश्न किया गया तो उन्होने बडी निर्लज्जता पूर्वक लाचारी से उत्तर दिया कि भारतीय शासन को इस प्रकार के ईसाई करण की जानकारी नही है।

साथ ही आजादी के २२ वर्ष बाद भी काग्रेस सरकार नागालैण्ड के प्रश्न को दृढता से हल करने मे क्यो दुम दबाये बैठी है ? ईसाई मिशनरी काग्रेस की छत्रछाया मे अधिक से अधिक हिन्दुओ को ईसाई बनाते हैं और जितने अधिक हिन्दु इसाई बनते है उतने ही काग्रेस के वोट निश्चित होते है भारत राष्ट्, भारतीय संस्कृति का कुछ भी क्यो न हो —वोट और मिनिस्ट्री की लिप्सा न आज देश के अधिकाश नेताओ को अन्धा बना दिया है और दुर्भाग्यवश आज इन्ही के हाथो मे देश का शासन सूत्र है।

भारतीय संस्कृति पर ऐसा सुनियोजित एवं घृणित आक्रमण किये वर्तमान भारत के प्रशासक को अपने तात्कालिक स्वार्थसिद्धि हेतु अन्दर ही अन्दर से सर्वतोभावेन सहायता कर रहे हैं, शायद आज तक नही हुआ होगा। इसी कारण आज सच्चा भारतीय, हर आर्य व्यक्ति चाहे, वह वैष्णव हो, शैव हो, हिन्दु हो, जैन हो बौद्ध हो, सिख हो या और भी कोई हो, जो स्वयं को भारतीय कहलाता है, इस समय जागे, सोचे, समझे कि इस आक्रमण को किस तरह रोका जा सकता है? और तदनुसार क्रियाशील बनें। क्योकि यहा 'क्रियावान् स पण्डित.' जो कृतिशील होता है, वही सही पण्डित होता है।

ईसाइयो के प्रचार तन्त्र का हम- ज्यो-ज्यो अध्ययन करते हैं, पता चलता है कि उनका आक्रमण कितना सुनियोजित है। भारत मे आज अकेले कैथोलिक पन्थ के सैकडो ही स्कूल है, जिनमे से आधे ग्रामीण क्षेत्र मे है। इतनी ही प्रोटेस्टन्ट आदि अन्य ईसाई पन्थो के भी हैं। और अब जरा सोचिए कि इन स्कूलो मे पढने वाले बच्चे कौन हैं ! अधिकाश बच्चे हिन्दू है। वे कान्वेन्ट स्कूल ईसाई कण का सबसे सुगम एव फलदायी जरिया है। और दुःख की बात तो यह है कि हमारे हिन्दू पालक मा-बाप भी अपने बच्चे को कान्वेन्ट स्कूल मे पढाना फैशन समझने लगे हैं। Canon Law के अनुसार कोई भी कैथोलिक स्कूल मे नही पढ सकता।

आज भारतीय सस्कृति को—आर्य संस्कृति को नए-नए मन्दिरो की उतनी आवश्यकता है। भारत के सभी मन्दिर आज यदि संस्कृति केन्द्रो मे परिवर्तित हो जाए, मन्दिरो के बडे-बडे निधि यदि विद्या दान एव संस्कृति सम्वर्धन पर व्यय होने लगे तो वह दिन दूर नही जब कि विश्वविजयी आर्य सस्कृति पुन एक बार अपने उच्च आसन पर विराजमान हो जाएगी।

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध हेतु आज सर्वप्रथम हमे ये निम्नाकित बाते करनी चाहिए—

[१] कोई भी हिन्दू अपदे बच्चे को कान्वेन्ट स्कूल मे न भेजे। धनी वर्ग का इस ओर ध्यान आकृष्ट करना विशेष आवश्यक है) अपितु तत्सदृश सस्कृति प्रचार केन्द्र स्थापित किए जाए, जहा संस्कृति-आर्य सस्कृति को दृष्टिगत रखकर शिक्षा दी जा सके, ऐसे संस्कृति प्रचार केन्द्रो के लिए अच्छे-कुशल-एवं सफल शिक्षको की भरती की जाय, ताकि हिन्दुओं के अलावा अन्य बच्चे इन भारतीय विद्या मन्दिरो की ओर अपने आप आकृष्ट होने लगे।

[२] आर्य संस्कृति के प्रचार केलिए एक मध्यवर्ती सङ्गठन मे पर्याप्त मात्रा मे कार्य-कर्त्ता स्त्री-पुरुष दोनो) हो, जिनमे भारतीय संस्कृति के प्रति सच्ची लगन हो निष्ठा हो।

[३] प्रत्येक हिन्दू ऐसी शपथ ले कि हर वर्ष वह धर्मान्तिरित अपने एक भाई या बहिन को पुन हिन्दू धर्म मे प्रवेश दिलायेगा। एव उसकी सामाजिक व्यवस्था का उचित ख्याल रखेगा।

यदि आज उपरोक्त बातो का ही सब निष्ठा से पालन करते है तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आर्य सस्कृति का भविष्य ही बहुत उज्जवल है।

धार्मिक परीक्षाएं

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धात परिषद (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश सि० विशारद सि० भूषण, सिद्धान्ताचार्य परीक्षाए दिसम्बर, जनवरी मे भारत तथा विदेशो मे होगी। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधिपत्र दिया जाता है। सर्व-प्रथम द्वितीय तृतीय, आने वाले को छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की नि.शुल्क सत्यार्थ सुधा कर, सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधियां डाक द्वारा प्राप्त करें। १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मंगवाइए।

आदित्य ब्रह्मचारी — आचार्य मित्रसेन
यशपाल शास्त्री — एम०ए०, सिद्धातालकार
प्रधान — शिक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद
सेवा-सदन, कटरा अलीगढ, (उ.प्र)

सम्पादकीय :—
आर्यजगत्
वर्ष २९] रविवार २०२६, ७ दिसम्बर १९६९ [अंक ४९

जालन्धरका भव्य समारोह

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर शहर का वार्षिक महोत्सव का समारोह धूमधाम से हो गया। गत सप्ताह जीवन निर्माण की विचारधारा से आचार्य ज्ञानचन्द जी एम.ए. हिसार की कथा प्रारम्भ हुई। माननीय प्रिंसिपल जो सचमुच आर्यसमाज के चलते-फिरते प्रतीक है। उनका सारा जीवन शिक्षा के विशाल क्षेत्र मे बीता है। अपने हाथों से लाखों रुपये दयानन्द कालेज के सुन्दर भवनो के निर्माण के लिए एकत्रित किये। डी. ए. वी. परिवार के प्रसिद्ध अग हैं। शिक्षा क्षेत्र से सेवा निवृत्त होने के बाद हिसार मे दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय जैसे संस्थान का संचालनसूत्र अपने हाथ में लिया। भव्य भवन बनवा दिये। समाजो को योग्य पुरोहित दिये। उसी कार्य मे स्थान-स्थान पर भ्रमण करके उस महान मिशन मे इस आयु में भी लगे रहते हैं। रात को विक्रमपुरा समाज मन्दिर मे कथा होती थी। प्रातः-काल पूज्य महात्मा आनन्दभिक्षु जी की अध्यक्षता में वेद यज्ञ होता रहा। श्रद्धा से यजमान परिवार आते रहे तथा विद्वान पुरोहितवर्ग यज्ञके कर्मकांड में लगे रहे। सभा की प्रसिद्ध चिमटा भजन मण्डली प० राजपाल जी मदन मोहन जी के सुरीले सगीत चलते थे। जनता पूरा-पूरा लाभ उठाती रही।

शुक्रवार ता० २८ नवम्बर को विशाल नगर कीर्तन का जलूस निकला। आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता डा० हुकुमचन्द जी भल्ला ने ओ३म् ध्वजा लहराई। आर्यसमाज विक्रमपुरा की माननीया प्रधान प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी एम० ए० हंसराज महिला कालेज इस बार बीमार हो गईं। सभा के प्रधान मान्यवर प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल भी तथा मन्त्री डा० वेदोराम जी शर्मा भी बीमार थे। प्रभु शीघ्र स्वास्थ्य देवें। जलूस में विद्यार्थी वर्ग के साथ नर-नारियो तथा समाजो के सज्जन भी शामिल थे। सभा के उपदेशक भजनीक भी जो कार्यक्रम पर थे—साथ थे। झाकियां तो बहुत उत्तम थी। नगर मे चहल-पहल हो गई। आर्यसमाज के जयघोषो से बाजार गूज उठे। सगठन की शक्ति का अच्छा परिचय मिलता था। जल्से मे आने वाले विद्वान्, महारथियो तथा नेताओ मे इस बार प्रिंसिपल पं० रलाराम जी एम.ए होश्यारपुर, प्रो. श्यामरावजी एम. ए देहली, प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम ए, ब्र० सत्यप्रिय जी, डा रामप्रकाश जी एम एससी पीएच डी शामिल थे। सभा से मुझे तथा पं विद्याभास्कर जी शास्त्री, पं राजपाल जी मदन जी, पं मेलाराम जी, पं हजारीलाल जी आदि शामिल थे। वक्ताओ के ओजस्वी भाषणो का क्या कहना? रविवार को प्रिंसिपल रलाराम जी एम ए की प्रधानता मे शानदार राष्ट्रभाषा सम्मेलन हुआ जिसमे पजाब सरकार से हिन्दी पढने के माध्यम की की न्याय पूर्ण मांग की गई। कई सज्जनो ने अपने विचाररखे। माननीय सभापति पं रलाराम जी एम ए. का भाषण तो युक्तियुक्त तथा बहुत प्रभावशाली था। इस बार उत्सव मे वक्ताओ मे युवक शक्ति का विशेष प्रभाव रहा। प्रो. श्यामराव जी एम ए. जिन्होंने कलकत्ता मे कालेज की सर्विस त्याग कर घर को छोडकर सन्यासी वेश धारण कर लिया है तथा आर्यसमाज में विशेष आशा-विश्वास का संचार कर रहे हैं। इनके भाषण बडे ही ओजस्वी थे। डा. रामप्रकाश जी एम. एससी. जैसा योग्य युवक प्रभावशाली वक्ता पा कर समाज को बड़ा ही गौरव है। प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु भी पवित्र अग्नि ज्वाला ही हैं। भाषणों में, संगीतों में तथा हंसराज महिला कालेज की छात्राओं के वेद मन्त्र व गायन, साईदास स्कूल के छात्रों के गीत कार्यक्रम में कमाल ही था। समारोह बड़ा ही सफल रहा।

प्रबन्ध तथा विशाल ऋषिलंगर के विचार से भी सब की ओर से समाज की बड़ी प्रशंसा की जा रही थी। साईं दास स्कूल के माननीय प्रिंसिपल प्यारे लाल जी बेरी की देख रेख मे स्कूल के अध्यापक एव विद्यार्थी प्रबन्ध मे तत्पर थे। सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। एक बात कहे बिना रहा नही जाता! सारे कार्यक्रम मे समाज के नवयुवक कार्यकर्ता अधिकारी श्री आनन्दसागर जी, श्री विहारी जी एव श्री वेदप्रकाश जी तो जुटे हुए थे। इनके अनथक कार्यक्रम को देख कर सारे प्रसन्न तथा आशावाद से भर गए। हर प्रकार से ही यह केन्द्र का समारोह सफल रहा है। हम इसकी विशेष सफलता समाज के सारे अधिकारी व सदस्य परिवार को बार-बार बधाई देते है। —त्रिलोक चन्द्र

गुरु नानक शताब्दि

सारे स्थानो पर धूमधाम से सम्पन्न होती रही। सभी ने उस महान् आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी उद्‌गारो की श्रद्धाजलि समर्पित की। पाच सौ वर्ष हो गये हैं उस महान् प्रभु भक्त, महान् सन्त के जन्म को। अपने जीवन मे कितना प्रचार किया। सारा जीवन लोकसेवा मे भेट कर दिया। कई प्रकार के जन-जीवन को अपने उपदेशो से पाठ पढाये। देश-विदेश का भ्रमण किया। वह सन्त थे महान् सन्त थे। सभी के थे। उनका रस-भरा भक्तिवाद भी सभी के लिए था और अब भी है। उनकी पुनीत वाणी आज भी तपे मन को शान्ति के रस का पान करा देती है। सारे मानव वर्ग के लिए उनका जीवन सन्देश था। आज के भोगवादी युग मे गुरु जी के ऊंचे सन्देश की सर्वत्र आवश्यकता है। उन की स्मृति के लिए नानाविध स्थान एव सस्थाए बन रही हैं। पंजाब मे तो उनके नाम का गुरु नानक विश्वविद्यालय खोला जा चुका है। हम चाहते हैं कि उन की ५०० वी शताब्दि का महान् पर्व मनाते हुए उनके जीवन सन्देश को मानव समाज का प्रत्येक वर्ग अपने जीवन मे धारण करे। आज के समय परस्पर कितनी कटुता की भावना पैदा हो रही है। लिप्सा और स्वार्थ की साधना ने मानव को कुछ और ही बना कर रख दिया है। नाना प्रकार के कलह जाग उठे हैं। गुरु नानक सभी के हैं। उनका सन्देश भी सब के लिए है। पंजाब मे तो विशेष कर उनके प्यारे अनुयायियो से कहना है कि उस महान् सन्त के अध्यात्मवाद को जो कि सरल जन भाषा मे पवित्रवाणी के रूप में है—दूर-दूर उसका प्रचार करने के लिए सभी से प्रेमपूर्ण बर्ताव किया जाये। गुरु जी बडे उदार थे उनका सारा शिष्यवर्ग भी प्रत्येक कार्य मे उदारता को अपनाये ताकि उस दिव्य महापुरुष का जीवन सदेश सब को मिलता रहे। हम आशा करते है कि उन सन्त के महान् विश्व विद्यालय के वातावरण में उनके सन्देश की उदारता को स्थापित करके गुरुनानक देव जी का सच्चा सन्देश केन्द्र बनाया जाए।।—

महा कवि शान्त भी गये

महाकवि शात भी परलोक वासी हो गए। कितनी ऊची कविता की प्रभुने उनको शाति प्रदान की थी। सन्ध्या पर ऐसी मस्तीभरी गीतिकाए लिखी कि गाते २ मन मस्त हो जाता था। आर्य प्रादेशिक सभा से पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के आदेश से प्रकाशित की थी। अब तो मिलती नही। बार-बार छपनी चाहिए। अमर शहीद प० लेखराम जी की अमर कथा काव्य लिखा। छपा था। कमाल का था। आर्यसमाज के इतिहास मे ऐसा शहीदी काव्य फिर नही लिखा गया। बहुत ऊचे कवि थे। सरलता की मूर्ति थे। बटाला मे प्रार्थनासभा ने उनकी बडी सेवा की। सौम्यमूर्ति महाशय गोकुल चन्द जी के प्यार से महाकवि शान्त प्रार्थना सभा मे रोगावस्था मे रहे। परमात्मा की कृपा से उनको कविता की कल्पना की उडान केलिए एक प्रकार का वरदान ही मिला था। बहुत सरल भाषा मे गम्भीर तथा मस्त बना देने वाले भाव भर देते थे। रामायण के अनेक प्रसगो को अनूठे एव नये ढंग से कविता मे पेश किया है। हम प्रार्थना-सभा बटाला से प्रार्थना करेगे कि वह शान्त जी की कविताओ का एक सग्रह प्रकाशित करे ताकि उनकी स्मृति बनी रहे। —सम्पादक

वर्तमान युग में शिक्षा समस्या

(श्री विद्यासागर जी शर्मा शास्त्री)

आज सर्वत्र ही शिक्षा के क्षेत्र मे असन्तुष्टि दृष्टिगत हो रही है। जन-साधारण मे आधुनिक शिक्षा प्रणाली से घृणा कर रहा है। एक परिवार के पालक से लेकर शिक्षा-मन्त्री तथा शिक्षा-शास्त्री तक आधुनिक शिक्षा-प्रणाली मे आमूल-चूल परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं।

आधुनिक शिक्षा अनेक शिक्षा-शास्त्रियो की शिक्षण-पद्धति के आधार पर ही दी जा रही है परन्तु अब तक किसी की भी विधि सफल नही हुई। जिस भी शिक्षा-शास्त्री की प्रणाली को प्रयोग की परीक्षा में परीक्षित किया, उसी मे अन्य अधिकृत शिक्षा-शास्त्रियो ने गुण दोषों का पर्याप्त विवेचन किया है। प्रत्येक शिक्षा-शास्त्री अपने द्वारा 'निर्दिष्ट' पद्धति विशेष को ही महत्वपूर्ण तथा सर्वश्रेष्ठ मानता है, वह दूसरो की विधियों को अपूर्ण असफल तथा दोषपूर्ण मानते हैं। शिक्षा के क्षेत्र मे यह खींचातानी आज की ही समस्या नही है अपितु उन्नीसवी सदी से आरम्भ हुई है इससे पहले शिक्षा के क्षेत्र मे इस प्रकार की कोई खींचा-तानी नही थी। ऐसा आभास होता है कि यह एक दूसरे के ऊपर आलोचना का पंक उछालना अधिक शिक्षा का परिणाम है।

आज हमारे लिए शिक्षा एक समस्या बनी हुई है। कोई उसका समाधान कुछ देता है तो कोई कुछ, परन्तु सब अपूर्ण तथा असफल।

शिक्षा के विषय मे हमारे भारतीय जितना प्रामाणिक पाश्चात्य विद्वानो को मानते हैं, उतना भारतीय विद्वानो को नही। हां, एक भारतीय विद्वानका मत या सुझाव वही तक मान्य किया जाता है जहां तक वह पाश्चात्य मतानुसार हो। जो कोई भी शिक्षा संबंधी पुस्तक लिखी या पढ़ाई जाती है उसमें उन लेखको या लेक्चरारों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे आरम्भ मे उदाहरण पाश्चात्य विद्वानो के दें। यदि लेक्चर आरम्भ करें तो पाश्चात्य विद्वान के उदाहरण देकर। पुस्तक लिखनी आरम्भ करे तो पाश्चात्य का उदाहरण देकर, उनको आदर्श मानकर।

उपर्युक्त बातो से यही अनुमान होता है, अनुमान ही नही प्रत्युत विश्वास होता है कि हम अभी भी मानसिक रूप से तथा शैक्षणिक रूप से पाश्चात्यो के दास हैं गुलाम हैं।

शिक्षा के माध्यम के विषय मे भी विवाद चल रहा है। बहुसंख्य विद्वान ऐसे है, जो शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को मानते हैं। कुछ विद्वानो का विचार है कि शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही अधिक है। इसमे कहा तक तथ्य है, यह एक अनुसन्धान का विषय है। माध्यम सम्बन्धी समस्या केवल भारतीय मस्तिष्क से विचारने पर ही सुलझ सकती है, अन्यथा यह विवाद का विषय बना ही रहेगा। जहां २२ वर्ष के स्वतन्त्रता के लम्बे समय मे हम हिन्दी की इतनी उन्नति कर सके हैं वहा हम हिन्दी को शिक्षा का एक मात्र साधन बना कर इस समस्या का हल करें तो भारत की निरीह प्रजा का पर्याप्त कल्याण हो सकता है।

कुछ पाश्चात्य मस्तिष्क वाले विद्वानो का कथन है कि विज्ञान सम्बन्धी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद होना कठिन है क्योंकि हिन्दी मे पारिभाषिक शब्दों की न्यूनता है। इस सम्बन्ध में मेरा सुझाव है कि अंग्रेजी को रोमन लिपि मे लिखने की अपेक्षा देवनागरी लिपि में लिखा जाए। रोमन लिपि का नागरीकरण किया जाए तो शिक्षा की प्रत्येक समस्या का समाधान हो सकता है। दूसरा समाधान यह है कि अंग्रेजी के उन शब्दो को जो जन-भाषा मे रूढ हो चुके हैं तथा जिसका प्रयोग हिन्दी के लेखक भी करते हैं उनको और वे शब्द जिनके लिए हिन्दी में पारिभाषिक शब्द नही है या उन शब्दो की हिन्दी करने के लिए संस्कृत के अत्यधिक कठिन तथा अप्रचलित शब्द न लेकर उनको उसी रूप में हिन्दी मे ले लिया जाए, तब पारिभाषिक शब्दो की समस्या भी नहीं रहेगी। आज हमारे सामने कुछ प्रांतों का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत है। महाराष्ट्र तथा नेपाल की भाषा को नागरी लिपि में लिखा जाता है। वह नागरीकरण उन दोनों को शिक्षा के क्षेत्र मे पर्याप्त अनुकूल सिद्ध हो रहा है।

उपर्युक्त प्रकार से शिक्षा के माध्यम की समस्या हल हो सकती है।

अब हमारे सम्मुख शिक्षाविधि का प्रश्न है। जिस का आज तक समाधान नहीं हुआ। इस क्षेत्र मे भारतके राजगोपालाचार्य स्वामी विवेकानन्द, अरविन्दघोष, मोहनचन्द, कर्मचन्द गांधी। इटली के जीन जेक्स रूसो तथा मैडम मेरिया मान्ट सौरी। स्विट्जरलैण्ड के जे० एच० पैस्टाला जी, जर्मनी के फ्रीडरिख विलहेम फ्रोबेल, अमेरिका के जान डीवी आदि विद्वानो की शिक्षण पद्धतियां आती हैं। अब विचारना यह है कि इन विधियों मे कौन-सी विधि पूर्ण लाभदायक तथा सर्वथा उपयुक्त हो सकता है। विचारते समय देश काल और परिस्थितियों का ध्यान रखना आवश्यक है। विशेषता भारत जैसे देश में देश काल और परिस्थितियों पर विचार करना तथा ध्यान देना अत्यावश्यक है। प्रत्येक विधि का विस्तृत विवेचन करना यहां पर बहुत कठिन है, फिर भी पूर्व कथन सभी विधियां भारत की परिस्थिति के अनुकूल नही हैं। पर्याप्त गवेषना के पश्चात प्रशिक्षित विद्या-वारिधियो ने यही निष्कर्ष निकाला है कि उन कारणो को शिक्षा के क्षेत्र में से हटाया जाएं जिनसे शैक्षणिक उन्नति मे बाधा पड़ती है।

आज के विद्यार्थियों के विषय मे प्रायः यह कहा और सुना जाता है कि वे अनुशासन मे नहीं रहते या अनुशासनहीन हैं। अनुशासन को बनाए रखने का जो हमारा प्रकार है यह ही त्रुटि पूर्ण क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं अनुशासन मे न ही पहले कभी रहे हैं और न ही वर्तमान समय में रह रहे हैं, ऐसे व्यक्तिओं के हाथमे विद्यार्थियो का भविष्य है। छोटे सदैव बड़ों का अनुकरण करते हैं। विद्यार्थियों का मस्तिष्क प्रभावग्राहि होता है इसी लिए वे अपने बड़ो को अनुशासन मे न देखकर उसका पालन नहीं करते। अनुशासन के लिए आज प्रचलित शिक्षा अधिक दोषी है। यह बबूल के वृक्ष का रोपण करके उससे आम जैसे मीठे फलों की आशा करने की भांति है। जो सर्वथा असंभव है।

शिक्षा समाज के लिए अत्यावश्यक है। इसी में व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नती संभव है। एक अच्छे समाज की कल्पना हम सदैव शिक्षित व्यक्तियों से करते आए हैं और करेंगे परन्तु आज तक हम ने शिक्षा को विवाद का विषय बनाया हुआ है। किसी को भारतीय शिक्षा आंखों नहीं भाती। भारतीय शिक्षा में पाश्चात्यो की शिक्षा का चश्मा लगाकर देखते हैं, तो क्यों उनको इस शिक्षा मे कुछ तथ्य दृष्टिगत हो? यह कदापि नहीं हो सकता। इसमें सार्वभौम सत्य को जानने केलिए भारतीय दृष्टि होनी आवश्यक है। शिक्षा क्या है? शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए? शिक्षा का अर्थ और उसकी संकल्पना कैसी होनी चाहिए? शिक्षा के सिद्धान्त कौन से हैं?

इत्यादि का प्रथम स्पष्टीकरण किया जाने पर ही हम शिक्षा की समस्या पर कुछ प्रकाश डाल सकेंगे तथा सुनिश्चित समाधान का कुछ आभास पा सकेंगे। अतः इससे आगे शिक्षा सिद्धान्त का विवेचन किया जायेगा।

★ जिस का स्वभाव भजन करने का बन जाता है, शील और संयम का भाव जिससे कभी नहीं छूटता, वह मृत्यु के समय भी पूर्ण स्वस्थ भाव में रहता है। व्याकुलता उनके अंग नहीं तोड़ती, वासना उसे नहीं डराती, चिन्ता खाने को नहीं दौड़ती, और भय किसी प्रकार की वेदना नहीं दे पाता।

पुरुषार्थ और परमार्थ

(श्रीयुत प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम० ए०)

आर्यसमाज के वीर मस्ताने युवा शक्ति के प्रेरणा स्रोत श्री० प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम० ए० ने आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर के वार्षिक महोत्सव पर ओजस्वी भाषण देते हुए कहा। —सं०

पुरुषार्थ और परमार्थ ही कल्याण मार्ग है आज बिना कर्म किए खाने की वृत्ति बढ रही हैं। नारे समाजवाद के हैं और नेताओ के पुत्र लखपति बन रहे हैं। पूजा के योग्य मातृ-शक्ति सज्जनवृन्द एव देश जाति के आशा के उजाले युवको एवं युवतियो! सामवेद के एक मन्त्र मे परमेश्वर ने कहा है कि आनन्द के सुख के मस्ती के स्रोत फूट रहे हैं, ससार में खुशियों की वर्षा हो रही है। परन्तु यह सुख की वर्षा उनके लिए है जो इन्द्र है, इन्द्रियो के दास नही, जो यज्ञ कर्म करते हैं, परोपकार, जन सेवा मे जुटे हैं। ऐसे लोगो पर मस्ती आक्रमण करती है।

लोग कहते हैं कि ससार में इतनी विकट समस्याये हैं, इतने दुख हैं, अज्ञान, अन्याय व अभाव का साम्राज्य है फिर सुख की वर्षा कहां है? ऋषि दयानन्द जी से पूर्व तो देश मे कीर्तनकारो के गान की तान ही यही थी कि संसार में दुःख ही दु,ख है। यह तो ऋषि थे जिन्होने इस निराशावाद के दुर्ग को ढाते हुए सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि जो दुःख व सुख की तुलना की जाये तो सुख दुःख की अपेक्षा कही अधिक है। हमारे कालेज मे आर्य युवक समाज में एक बार एक आर्ययुवक ने यही प्रश्न मुझ से किया था कि ससार मे दु ख ही दु ख का बात मिथ्या कैसे है। मैंने उसे उत्तर दिया जब आपने जन्म लिया आपकी माता ने शोक नहीं हर्ष मनाया था, जब आप परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, आपका सारा परिवार हर्ष मनाता है, विवाह आदि पर भी हर्ष मनाते हैं फिर सब दुःख ही दुःख कैसे?

महात्मा हसराज के पुत्र बलराज जी पर अभियोग चला। मृत्यु दण्ड की सम्भावना है। मित्र चिन्तित हैं, महात्मा जीं अडोल, अडिग हैं। क्यो? इसलिए के इन्द्र हैं। यज्ञ, परोपकारमे लगे हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर लोहारू मे प्राण लेवा लाठियों भालो के वार हुए। अस्पताल मे ला० देवराज जी दीना नगर ने कहा, 'महाराज आपको बडी मार पडी है।' साधु बोला, 'भद्र मार पडी है और खूब पडी है।' यह है वीरो और फकीरों की मस्ती यह है इन्द्र पर खुशिया बरसने की बात। यह है मस्ती का आक्रमण। यह है दुखो में मुस्काने गाने व सुख पाने की बात।

वेद कहता है इन्द्र को सुख मिलेगा। इन्द्र कौन है? वेद ने कहा जो कुछ करता है, परोपकारी व संयमी है। आज बिना कर्म किये धनी बनने की लालसा सब को है। बिना कर्म किये खाने व जीने वाला धरती पर भार है। समाज पर कलंक है। इसी का नाम शोषण है, वेद ने कहा 'अकर्मा दस्यु'। जो कर्म करते नही वह डाकू हैं, चोर हैं। ऋषि ने लिखा है प्रार्थना भी पुरुषार्थ के उपरान्त ही करनी चाहिए। ऋषि से पूर्व तो यह रट थी कि भगवान भक्तों के बस में हैं। सब की भावनाएं पूरी हो जाती हैं। अजगर करे न चाकरी पक्षी करे न काम। पक्षी प्रात: ही कार्य मे लग जाते हैं। अजगर पर हाथ रख कर देख लो, काम करे या न काम तमाम अवश्य कर देगा।' ऋषि ने लिखा है— 'परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है, उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी न पावेगा।'

मैं यह वाक्य पढ़ कर झूम उठा। ऋषि पुरुषार्थहीन को पापी मानते हैं। देश में आज समाजवाद के नारे लगाए जा रहे हैं और लाटरिया चला कर देश को जुआरिया बनाया जा रहा है। सम्पत्ति की सीमा निश्चित करने की घोषणाएं की जाती हैं और रात-रात में लाख-लाख बिना कर्म किये लाटरी से प्राप्त हो जाता है। यह क्या फराड है? यह क्या समाजवाद है। ऋषि ने लिखा है धन अधिक बढना है तो विलास भोग आता है। जातियो का नाश होता है। इतिहास ऋषि के वचनों का साक्षी है। आज हमारे देश मे एक ओर दरिद्रता है एक ओर धन की पूजा है। सब नेता समाजवाद की रागनी गाते है और सब अपने बच्चो को व्यापारी, पूंजीपति बना रहे हैं। इन्द्रा जी जगजीवन राम और कैरो, सब के बच्चे लखपति-करोडपति हैं या बन रहे हैं। समाजवाद का नारा तो वोट व नोट का नारा है। कोई नेता अपने बच्चे को गाधी पथ पर, त्याग, सेवा के मार्ग पर चलाना नही चाहता। आठ केन्द्रीय मन्त्रियो ने आय कर ही न दिया। यह है हमारा समाजवाद।

आओ कर्मफल के ईश्वरीय नियम का सिद्धान्त फैलाये, बिना कार्य किये कोई खाए न। धनी निर्धन का बहुत बडा अन्तर दूर करे। धन का सीमा से बढ जाना ऋषि के शब्दो मे विनाश को बुलाना है। विनाश से बच्चो। अनैतिकता की बाढ रोको। हम आज ऋषि की सुनते तो तेजस्वी होते हमारा ब्र० दयानन्द डबल एम० ए० सा साधु कर्मठ युवक खोया गया। हम सरकार से खुली जाच भी न करवा सके।

मैंने एक कविता मे लिखा था :—

हमने सुनकर भी न समझा महर्षि सन्देश तेरा हम समझकर भी न पालन कर सके महर्षि आदेश तेरा हमसे तेरे देश के दुखडे मिटाए न गये हमसे सोये भाग्य भारत के जगाए न गए हमसे आर्य देश वासी भी बनाए न गये देखते हम रह गये और कट गया यह देश तेरा हमने सुनकर भी न समझा महर्षि सन्देश तेरा।

आओ हम परमेश्वर के वेद ज्ञान के सृष्टि को आलोकित कर दे। कर्म करने को प्रत्येक को प्रेरणा दे। हम वेदप्रचार न करेंगे तो भी ईश्वर के वेद का प्रचार हो के रहेगा।

शुभ विवाह पर

श्रीयुत ला० इन्द्रसेन जी उप-प्रधान सभा के चिरञ्जीव सुपुत्र प्रिय विजय जी का शुभ विवाह सौभाग्यवती स्नेह जी सुपुत्री ला० अचिन्तराम जी चोपडा हाफजाबाद वासी के साथ माडलटाऊन जालन्धर मे समारोह से सम्पन्न हो गया। इस शुभावसर पर युगल जोड़ी को आशीर्वाद देन के लिए श्री दुर्गादास जी चेयरमैन पजाब कौंसिल, श्री मनमोहन कालिया जी मन्त्री पजाब, श्री वीरेन्द्र जी दैनिक प्रताप, श्री जगतनारायण जी दैनिक हिन्द समाचार, श्रीरमेश जी, श्रीमती स्वर्णयश जी दैनिक मिलाप, प्रिंसिपल विद्यावती आनन्द जी, प्रि० रोशन-लाल जी वर्मा, प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा, प्रिंसिपल चंचलदास जी प्रिंसिपल प्यारेलाल जी वेरी श्री गुरदयाल जी सैनी एम एल ए आदि गणमान्य सज्जन पधारे। इस अवसर पर आर्य अनाथालय फिरोजपुर, आर्यसमाज विक्रमपुरा, स्त्रीसमाज, आर्यसमाज अड्डा होश्यारपुर, स्त्रीसमाज, गुरु विरजानन्द स्मारक, आर्यसमाज गोविन्दगढ़, सिविल लाइन्स, विधवा आश्रम, पिंगलाघर, गौशाला, मन्दिर अड्डा होश्यारपुर, आर्यजगत, आर्य गजट, गर्ल्स स्कूल फिटनगज को २५०) रुपये दान दिया। पण्डित मण्डली का पूरी श्रद्धा से सम्मान किया।

पं. मेलाराम जी को वधाई

आर्य प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० मेलारामजी के प्रिय सुपुत्र श्री ओमप्रकाशजी तथा सुपुत्री सौभाग्यवती चन्द्रप्रभा जी के शुभ विवाह उनके परिवार मे प्रेमपूर्वक सम्पन्न हो गये। उनको नवयुवक दामाद प्रिय सत्यपाल जी M B B S बडे ही योग्य मिले है। इसी प्रकार पुत्रवधू सौ० राजकुमारी भी योग्या मिली है। बरात मे पाच आदमी थे। आदर्श विवाह के लिए हम अपने भ्राता पण्डित जी को तथा उनके सारे परिवार को बहुत २ बधाई देकर प्रभु से प्रार्थी हैं कि वह इन युगल जोडियो को परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए सदा स्वस्थ सानन्द रखे। —सं.

महात्मा हंसराज और भारत का उत्थान

(प्रिंसिपल श्री रलाराम जी एम. ए. होशियारपुर)

स्वामी दयानन्द की मृत्यु ३० अक्तूबर १८८३ को हुई। सारा भारत शोक सागर मे डूब गया परन्तु उन्नत विचारो के व्यक्ति तो विह्वल हो उठे कि इस मानसिक अवसाद के युग में आशा तथा प्रकाश का एकमात्र प्रतीक ऋषि दयानन्द, भारतसे छिन गया। परन्तु दयानन्द का अमरसंदेश एक अमरज्योति जला गयाथा जोकि कभी बुझ नहीं सकती। शोकका स्थान शीघ्र ही विचार तथा प्रयत्न ने लिया। लाहौर के आर्य समाजियों ने दयानन्द का एक कालेज के रूप में उपयुक्त स्मारक बनाने का निश्चय किया। परन्तु वे कि कर्तव्य विमूढ थे कि पर्याप्त धन तथा ठीक योग्य व्यक्ति जो इस महान कार्य का संचालन कर सके, कहा से मिले ? ऐसी घबराहट में एक अनुपम व्यक्ति ला० हंसराज के रूप मे आगे आया। अभी वह पंजाब यूनीवर्सिटी की बी. ए. की परन्तु परीक्षा प्रतिष्ठता पूर्वकउत्तीर्ण कर चुका था। वह किसी धनवान परिवार का सदस्य न था। अपने बड़े भ्राता ला० मुलकराज की सहायता से यह युवक निर्धनता से घोर संग्राम करके इस दशा में पहुंचा था कि प्रचुर धन कमा कर तथा उच्च पदवी प्राप्त करके अपने कुल की प्राचीन-प्रतिष्ठा को पुन: स्थापित कर सकता था। परन्तु महर्षि दयानन्द जी का जादू उस पर गहरा प्रभाव डाल चुका था। उसने एक भीषण व्रत, आजीवन अवैतनिक सेवा का, लेकर फिर अपने आपको तथा अपने परिवार को एक बड़े संघर्ष में डाल दिया। परन्तु अपने अद्भुत तप तथा त्याग और अनुपम योग्यता से उन्होंने अपूर्व सफलता प्राप्त की। एक कालिज या स्कूल क्या दर्जनों कालिज तथा स्कूल उनकी कृपा से चालू गए। महात्मा हंसराज के जीवन का लक्ष्य आजीविका तो था नहीं, सेवा तथा भारत का पुनरुत्थान उनका एक मात्र आदर्श था। भारत के पुर्ननिर्माण की बलिवेदी पर उन्होंने अपनी उमंगों तथा आकांक्षाओं को भेंट कर दिया। जो ज्योति दयानन्द ने जगाई थी उसके प्रकाश को भारत के कोने-कोने में पहुंचाने का उन्होंने सफल प्रयास किया। परन्तु आज स्थिति क्या है, इस पर भी तनिक विचार करना चाहिए।

दयानन्द ने जो भारत के पुराने रोग का निदान किया तथा उनकी बतायी हुई चिकित्सा का प्रयोग हंसराज ने क्रियात्मक ढंग से आरम्भ किया उसमें दो बातें प्रधान थी। पश्चिमी सभ्यता का निराकरण तथा वैदिक सभ्यता का पुरुत्थान स्वामी दयानन्द शून्य स्थान या अवकाश में विश्वास नही रखते थे। वे पश्चिमी सभ्यता का निराकरण करके प्राचीन वैदिक सभ्यता की हमारे हृदयो मे पुन: स्थापना करना चाहते थे। उनकी यह दृढ धारणा थी कि भारत की दासता की जंजीरें उसी समय कट जावेंगी जिस समय शिक्षित वर्ग या बुद्धिजीवी व्यक्ति पश्चिमी सभ्यता के चंगुल से छूट जावेंगे। यह नुस्खा अवैज्ञानिक नहीं था। महात्मा गांधी ने इस औषधि को अपनाया। महात्मा गांधी से जब पूछा गया कि आप भारत की स्वतन्त्रता का क्या नुस्खा प्रस्तुत करते हैं तो इसके उत्तर में उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' मे लिखा, 'अंग्रेजी सभ्यता को भारत से निकाल दो, अंग्रेज स्वयं निकल जाएगा। हम बाघ को तो निकलना चाहते हैं, परन्तु उसके बाघपन को यहा रखना चाहते है। बाघ तो देर हुई चला गया परन्तु उसका बाघपन तो आज घर-घर में प्रविष्ट हो गया है। ग्रामीण भी भी इस की लपेट में आ रहे हैं। जिसके पास चार पैसे हो जाते हैं या जो भी चार अक्षर पढ जाता है वह भारतीय वेश-भूषा को तिरस्कार की दृष्टि से देखता है। स्वतन्त्र भारत में यह बात बढ़ गई है। जिस के पास चार पैसे हो जाते हैं वह अपने बच्चों की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से कानवेंट स्कूल में आरम्भ करवाता है जहां दिमागी गुलामी, वैदिक दासता सिखाते है वहां स्वतन्त्रता क्या आई। वेशभूषा के अपनाने में प्रवृत्ति प्रधान है। कोई समझावे कि पश्चिमी पोशाक में भारतीय वेशभूषा से क्या विशेषता है। सौंदर्य विज्ञान आदमी भी कहते हैं कि विदेशी पोशाक सौंदर्य के दृष्टिकोण से भारतीय पहराव से कहीं घटिया है परन्तु लोग इसे प्रतिष्ठा और रोब के लिए अपनाते आ रहे हैं! इसलिए शिक्षित वर्ग तथा जन-साधारण मे भेद भाव की खाडी विशाल होती जा रही है।

महात्मा हंसराज जी ने अपना सारा जीवन तप तथा तपस्या में गुजारा आज सादगी एक सामाजिक दोष नहीं, एक अपराध बन गया है। इसके परिणाम आज हम अपने समाज में प्रत्यक्ष भ्रष्टाचार तथा दुराचार के रूप में देख रहे हैं। महात्मा हंसराज तथा स्वामी दयानन्द की आत्माएं चकित हैं कि क्या से क्या हो गया है।

महात्मा हंसराज जी ने दयानन्द जी से यह खूब सीख ली थी कि वैदिक धर्म ज्ञान का धर्म है। जितना वैदिक धर्म फैलेगा उतना ही अन्ध-विश्वासों का बादल छिन्न-भिन्न होगा। इसीलिए विद्यालय खोलने का कार्यक्रम अपनाया गया। यह नितांत ठीक मार्ग था। हमारे शिक्षणसंस्थाओं ने काम किया है। जो भी सामाजिक संगठन अपरिपक्व अवस्था से ही मानव के निर्माण का प्रयत्न नियमबद्ध ढंग से नहीं करता वह सामाजिक जीवन को अभिवाञ्छित दिशा में प्रभावित नहीं कर सकता। यह स्कूल कालिज न तो व्यर्थ थे और न अब व्यर्थ हैं। परन्तु हमें समय-समय पर लेखा जोखा तो करना चाहिए। स्वामी दयानन्द के जिन आदर्शों को सामने रखते हुए महात्मा हंसराज ने डी. ए. वी. संस्थाओं की स्थापना की थी वे आदर्श प्राय: धुंधले एवं धूमिल होते जा रहे हैं। एंग्लो-वैदिक में से केवल 'एंग्लो' रहता जा रहा है। 'वैदिक' काफूर हो रहा है। हम पूर्वीयता का उत्थान पश्चमीयता के गुण ग्रहण के साथ करने निकले थे, परन्तु वैदिक संस्कृति लुप्तप्राय: और पश्चमीयता सर्व प्रधान बन रही है। शिक्षा का आध्यात्मिक पहलू हमारी संस्थाओं में इतना निर्बल हो गया है कि इसे लुप्त-सा कहें तो अनुचित न होगा। यह ठीक है कि परिस्थितियां हमारे प्रतिकूल हैं, परन्तु दयानन्द तथा हंसराज ने तो सारा काम घोर विरोध के वातावरण में करते हुए सफलता प्राप्त की। हमें स्वामी दयानन्द तथा महात्मा हंसराज के जीवन से उत्साह तथा स्फूर्ति प्राप्त करनी चाहिए। यदि हमने अपने आदर्श छोड़ दिए तो शेषक्या रह गया।

हमारी संस्थाओं ने अब यह ख्याल रखना छोड़ दिया है उस देश में अब भी निर्धन व्यक्ति रहते हैं जिन्हें अपने बच्चों को शिक्षा दिलानी होती है, फीसें धड़ाधड बढ़ाई जा रही हैं। बच्चों का शोषण सरकारी संस्थाओं से कही अधिक है। विशिष्ट प्रकार के स्कूलों में फीसें ज्यादा हों इस में तो कोई आपत्ति नहीं परन्तु हमारे साधारण स्कूल तथा कालेज अत्यधिक फीसे लेते हैं। महात्मा हंसराज ने जिन आदर्शों के लिए अपने बहु-मूल्य जीवनकी आहुती दी थी। हमें इन समस्याओ पर गहन गम्भीर विचार करना चाहिए। अपनी शिक्षा सम्बन्धी नीति का फिर से मूल्यांकन करना चाहिए तथा अपने लक्ष्य अथवा निशाने कायम करने चाहिएं।

प्रेमी सज्जनों से

कई प्रेमी सज्जनों के पत्र मिलते हैं जिन में वे मेरे नवयुवक बेटे प्रिय दयानन्द एम. ए. के लापता होने के बारे में कुछ पता लगाने की बात पूछते हैं। मैं समझता हूं कि उनका स्नेह और सहानुभूति ही है आभारी हूं। निवेदन यह है कि अभी तक इतनी खोज करने पर भी बेटे का किसी प्रकार का भी सुराग नहीं होशियार पुर से कोई सुराग नहीं मिल सका। बहुत रो भी लिया। पुकार कर भी। दौड़ धूप एवं जिस भाई लिखा। उसका कुछ भी तो निशान नहीं मिला। खोज जारी है। प्रभु की इच्छा पूर्ण होगी। ... आपका आत्मीय सहानुभूति के लिए कृतज्ञ हूं।

विनीत

[illegible]

[illegible]

महर्षि दयानंद काशी शास्त्रार्थ

एवं

पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी

गत दो सप्ताहो मे हमें शताब्दी के सम्बन्ध में लखनऊ वाराणसी, मथुरा, दिल्ली। सभी स्थानो के कार्यों मे शताब्दी के लिए उत्साह की लहर का संचार देखा। आर्य जन तन, मन, धन से सहयता करने को उद्यत देखे। अनेक स्थानो पर जाने वालो की सूची तैयार की जा रही है और दान एकत्रित किया जा रहा है। वाराणसी मे स्वागत समिति तथा उसके अधीन विभिन्न प्रबन्ध कार्यों के लिये उपसमितियो की स्थापना हो गई है स्वागत समिति का सदस्यता-शुल्क १०) रु० से १००) रु० तक रक्खा गया है। ५१ रु० देने वाले अनेक सदस्य बन चुके थे। स्वागत समिति का ४०,००० रु० का बजट रखा गया है। यात्रियो के ठहरने का प्रबन्ध डी० ए० वी० डिग्री तथा इण्टर कालेज, आदर्श इण्टर कालेज आदि में किया गया है। २५-३० हजार नर-नारियो के बैठने के लिए सभा मण्डप बनाने का निश्चय किया गया है।

लखनऊ मे आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री मदनलाल जी श्री कृष्ण बलदेव जी आदि धन-संग्रह आदि मे सहयोग दे रहे हैं। यहा से कम से कम तीन एक-एक हजार रुपये की दक्षिणा देने वाले यजमान बन रहे हैं। शताब्दी का कार्यालय—५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ मे खुल गया है, जहा से सब प्रकार की सूचनाएं मिल सकती हैं।

देहली मे तो आशातीत उत्साह देखा सर्वश्री प्रकाशवीर शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, रामनाथ जी सहगल डेपुटेशन के रूप मे प्रतिष्ठित दानी महानुभावों से मिल रहे हैं। उन्हे आशा से अधिक सफलता मिल रही है। कई सज्जन यजमान बनने अतिथियो का आतिथ्य करने को तैयार हो गये हैं। उनकी सूची अगले सप्ताह दी जावेगी।

स्वागत समिति का कार्यालय 'आर्यसमाज बुलानाला, वाराणसी' मे खुल गया है। आर्यसमाज को चाहिए कि अपने यहा से जाने वाले नर-नारियो की सख्या पहुचने के दिन, समय आदि की सूचना भेज देने चाहिये। व्यक्तिगत रूप से जाने वालो को भी ऐसा करना चाहिये।

आपका

महेन्द्रप्रताप शास्त्री

संयोजक

आर्य समाज धारीवाल

आर्यसमाज धारीवाल जि० गुरदासपुर का वार्षिकोत्सव ६व७ दिसम्बर को मनाना निश्चित हुआ है जिसमे उच्चकोटि के विद्वान भाग ले रहे हैं। ७-१२ ६९ को ११ बजे एक आवश्यक बैठक युवको की होगी जिस मे अमृतसर, गुरदासपुर, होश्यारपुर, कागडा व चम्बा के युवक भाग लेंगे।

मन्त्री—वेद प्रकाश

ड़गावां में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिवर आयोजन

२६ नवम्बर, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के तत्वाधान मे श्री देव व्रत व्यायामाचार्य की अध्यक्षता मे आर्य समाज न्यू कालोनी मे दिनाक २४ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक ब्रह्मचर्य शिक्षिण शिविर सम्पन्न हो रहा है। जिसमे सौ के लगभग युवक निष्ठा से भाग ले रहे हैं। प्रातः सायं व्यायाम आसन प्राणायाम, डम्बल, लेजियम, लाठी, भाला, तलवार एव मल्लखम्भ का अभ्यास किया जा रहा है। नित्य बौद्धिक मे राष्ट्रीय एव चारित्रक दृष्टि से शिविरार्थियो को दीक्षित किया जा रहा है।

संयोजक

रामानन्द शास्त्री

मैं ज्योति जगाने आया हूं

मैं आर्य जाति मे नव जीवन की, ज्योति जगाने आया हू ॥
जिनको सुन करकेघोर नीद से, जाग आर्य सतान उठे।
कायर भी बन कर शूरवीर, गौरव से सीना तान उठे।
वे महा क्रांति के, प्रलयकर रण-गान सुनाने आया हू॥
मैं आर्य जाति मे ॥१॥

है हिला चुकी सारे जग को, जिनके धनुषो की टकारे।
है कपा चुकी शठ अरिदल को, जिसकी प्रलयकर तलवारे।
उस आर्य जाति के सर्द रक्त को, फिर गरमाने आया हू॥
मै आर्य जाति मे ॥२॥

जिनके जलते ही भाग जाए, अति घोर निराशा अंधकार।
आशा उमग उल्लास ओज का, हृदय-हृदय मे हो प्रसार।
मै मधुर मधुर आशाओं के, दीप जलाने आया हू॥
मैं आर्य जाति मे ॥३॥

तुम जगत शिरोमणि जगद्गुरु इस जग के भाग्यविधाता हो।
सुख और शाति के दाता हो, मानवता के निर्माता हो।
मानव के पूर्वज आर्यो को यह याद दिलाने आया हू॥
मै आर्य जाति मे ॥४॥

निज देश धर्म आदर्श भूल, बन गए आज जो उच्छृंखल।
है बने विलासी अकर्मण्य, निस्तेज दीन, कायर निर्बल।
उन भूले भटके युवको को सन्मार्ग बताने आया हू॥
मै आर्य जाति मे ॥५॥

जिसको पा करके धन्य ओ, कृत-कृत हुआ था जग सारा।
बहती थी जिस से प्रेम शाति,सुख सयम की निर्मल धारा।
वह पावन मंगलमय वैदिक युग, फिर से लाने आया हू॥
मै आर्य जाति मे ॥६॥

उस राष्ट्र गुरु ऋषि दयानन्द का, शिष्य और अनुयायी बन।
इस आर्य जाति औ सकल विश्व को, दें को फिर नवजीवन।
बन आर्य वीर निर्भय हो, वैदिक नाद बजाने आया हूं॥
मै आर्य जाति मे ॥७॥

—कुंवर जोरावर सिंह

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

देहली के आर्यो म शास्त्रार्थ शताब्दी केलिए बहुत उत्साह है २५००० रु० के संग्रह की आशा है नर-नारी बडी सख्या मे जावेगे। स्पेशल रेलगाडी का प्रबन्ध होगा।

१६ नवम्बर को श्री प्रकाशवीर शास्त्री ससद-सदस्य के आवास पर देहली के आर्यो की एक सभा हुई। श्री शास्त्री जी तथा शताब्दी के सयोजक प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्रीने शताब्दी का महत्व बताया समारोह की रूपरेखा रखी ओर देहली के आर्यो को भारी सख्या म शताब्दी के अवसर पर [२३ से २८ दिसम्बर] वाराणसी पहुचने को आमन्त्रित किया। उत्तर मे आर्य समाजो के उपस्थित प्रतिनिधियो ने तन मन, धन, से सहयोग देने का आश्वासन दिया। वही पर निम्नस्थ दान घोषित किये गए —

५०००) आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।
११००) आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली।
११००) आर्यसमाज नया बास, दिल्ली।
१०००) श्री रतनलाल जी सूद।

आर्यसमाज, करोलबाग से ५०००) की आशा है। लखनऊ के श्री कृष्ण बलदेव जी, प्रधान आ० स० शृगार नगर १०००) दान दे कर २८ दिसम्बर को यजमान होगे।

श्री रतनलाल सूद २५ दिसम्बर को यजमान होगे। सब का हार्दिक धन्यवाद है।

२४ नवम्बर को देहली प्रदेश की सब आर्यसमाजो की एक सभा इसी कार्य से आर्यसमाज, करोलबाग में होगी। सब सज्जन पधारे।

महेन्द्र प्रताप शास्त्री संयोजक

* समाचार दर्शन *

सूचना

'काशी शास्त्रार्थ शताब्दी'

'दिनाक १६-११-६९ रविवार को आर्यसमाज (बी० ब्लाक) गोबिन्द नगर के तत्वाधान मे जी० पी० एन० विद्यालय प्रांगण मे आयोजन किया गया जिस मे कुछ वक्ताओ ने 'काशी शास्त्रार्थ' के ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डाला तथापि २३ दिसबर ६९ से काशी में होने वाले आयोजन पर तन-मन-धन से सहयोग देने के लिए मन्त्री ने अपील की।

ओ३म प्रकाश आर्य
मन्त्री

जिला होशियारपुर मे वेद प्रचार की धूम

हमारी विशेष प्रार्थना पर ज्वालापुर के प्रसिद्ध वानप्रस्थी श्री नन्दलाल जी वैदिक मिश्नरी यहा पधारे। जिले की निम्न समाजो तथा ग्रामो मे वैदिक धर्म प्रचार किया, जिसका अति उत्तम प्रभाव रहा। आपके साथ जिला वेद प्रचारिणी सभा होशियारपुर के श्री पं० रामदेव जी भजनोपदेशक इस दौरे मे साथ रहे :—

गढशकर, ऊना, अम्ब, अम्बोटा, गगरेट, नया नगल, ज्वाहर मार्कीट, ब्रह्मपुर, बन्दलैहडी, होशियारपुर मे खूब प्रचार हुआ। —बूटाराम

आवश्यक निवेदन

आर्य प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजो की सेवा मे नम्र निवेदन है कि वह अपना २ दशाश १३ दिसम्बर से पहले २ सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा करे। फार्म क ख (प्रतिनिधि फार्म) भी शीघ्र से शीघ्र भेजे।

सभा मन्त्री

नारायण गढ़ हरिजन सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

(१) नारायणगढ तहसील दसूहा जिला होशियारपुर का यह हरिजन सम्मेलन पंजाब सरकार की इस तजवीज कि ईसाई हरिजनो को वही अधिकार दिए जाए जो कि इस समय अनुसूचित जातियो को प्राप्त है का घोर विरोध करता है और भारत सरकार से सानुरोध प्रार्थना करता है कि वह इस तजवीज को स्वीकार न करे।

(२) ग्राम उच्ची बस्सी तथा दसूहा नगर से जो दो रास्ते ग्राम नारायणगढ को आते है। वह दोनो ही इतने खराब और खस्ता हैं कि उन पर साधारणतया आदमी का चलना मुशकिल है, इसलिये यह नारायणगढ हरिजन सम्मेलन साहिब डिप्टी कमिशनर, होश्यारपुर से सानुरोध प्रार्थना करता है कि शीघ्रातिशीघ्र इन दोनो रास्तो को चक्क-बन्दी योजन के अनुसार दरुस्त करवा दें।

(३) नारायणगढ हरिजन सम्मेलन शिक्षा मन्त्री पजाब से सानुरोध प्रार्थना करता है कि ग्राम नारायणगढ के प्राईमरी स्कूल को अगर हाई नही तो कम से कम मिडल स्कूल आवश्य बना दिया जावे। क्योकि इस इलाके मे पाच छ. मील के अन्दर अन्दर कोई भी मिडिल अथवा हाई स्कूल नही है। बरसात के दिनो मे इस इलाके मे बच्चे इन स्कूलो मे भी नही जा सकते जहा वे अब जारहे हैं।

(४) नारायणगढ हरिजन सम्मेलन हरिजण वैल्फेयर (welfare) विभाग पजाब सरकार से माग करता है कि नारायणगढ मे धर्मशाला के निर्माणार्थ ज्यादा से ज्यादा धन राशि प्रदान की जावे।

नोट.—ऊपर लिखित प्रस्ताव प्रधान आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर की अध्यक्षता मे पारित हुए।

—रामदास

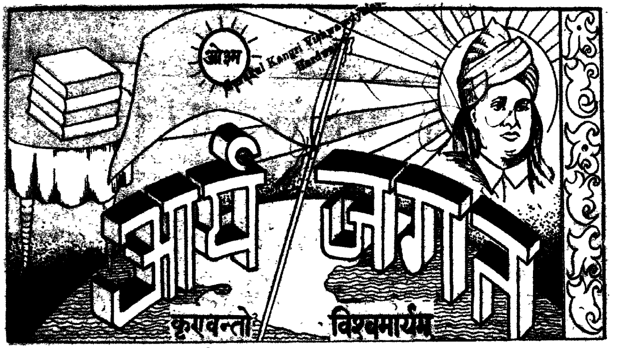
म० हंसराज साहित्य की पुस्तकों की सूची

१. ... ००
२. [पंजाबी मे] (ले० डा० धर्मान्तिसिह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मूल १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज-मोडर्न पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अंग्रेजी मे) १·५०
१२. सध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १·००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २.५०
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र (आनन्द स्वामीजी महाराज) १.२५
१५ प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईंदास जी M A) ०·५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A ·५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, ·५०
२१. मुडक उपनिषद (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०·३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना (ले० स्वामी सोमानद जी) उर्दू मे ०·३७
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० कुन्देन जी मीरपुरी १·२५
२४. सीता (ले. आनंदस्वामीजी) ०·३७
२५. पद्मनी (,, ,, ,,) ०·३१
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२५
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्दजी M A.) अंग्रेजी मे १.२५
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यो प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योत ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता हैं। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्लो में भी खोल दी गई है अत: साहित्य-प्रेमी वहां से भो पुस्तकें प्राप्त कर सकते है। उपयोगी साहित्य का शीघ्र आर्डर भेजें।

मुद्रक व प्रकाशक श्री. डा० वेदीरामजी एम. ए, पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत् कार्यलय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd.No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २१, अंक ५१) ७ पौष २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२१ दिसम्बर १९६९ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

शिवो भव प्रजाभ्य:

हे मानव! शिव:कल्याण करने वाला भव हो प्रजाभ्य: सारी प्रजाओं के लिए। सबको सुखी बना। वेद माता का कितना प्यारा उपदेश है कि हे मनुष्य! इस जीवन में सारे जीवन-मात्र के लिए शिव बन। सुख देने वाला बन किसी को भी कष्ट मत पहुंचा। यदि मनुष्य किसी का दुःख दूर नहीं कर सकता तो उसे दूसरों को दुःखी करने का भी क्या अधिकार है। दुख देना तो आसुरीपन है। सुख पहुंचाना देवीपन है। यह मानवी शरीर कष्ट देने के लिए नहीं मिला। हम सदा देखते रहें कि हम शिव बन रहेहैं या अशिव? वेद का उपदेश तो यह है कि शिव बन। सबको सुख दे किसीको भी पीड़ा न दे।

यजुर्वेद से सं.

वे दा मृ त

ओ३म् यस्यवात: प्रानपानौ चक्षुरगिरसो भवन्
दिशो श्चयक्र प्राज्ञानिस्तस्मै ज्येष्ठायब्रह्मणेनम:

अर्थ—(यस्य) जिस भगवान का (वात:) आयु (प्राण आपनौ) श्वास और प्रश्वास के समान है और (अंगिरस:) प्रकाशमान किरणावली जिस भगवान का (चक्षु:) नेत्र है तथा (दिश) दिशाओं को (य:) जिस प्रभु ने (चक्रे) बनाया है (प्रज्ञानी) ज्ञान का साधक! उस (ज्येष्ठाय) महान (ब्रह्मणे) परमात्मा को नमस्कार है। परमात्मा के विराट शरीर का सुन्दर वर्णन है।

भाव: परमेश्वर के विराट् शरीर का वेद ने कितना सुन्दर वर्णन किया है। वेद ने सरलताके साथ उपमा दी है जिस प्रकार मनुष्य के शरीरमे नाना प्रकार के भिन्न-भिन्न अंग होते है। ये सारे अग मिलकर शरीर कहलाता है। उसी प्रकार से उस विराट् पुरुष ब्रह्म के विराट् शरीर का वर्णन है। वायु उस महान प्रभु के श्वास प्रवास के समान कहा गया है। प्रकाश से भरी किरण-माला उस भगवान के नेत्र के समान है। दिशाएं उस विराट् पुरुष के लिए ज्ञान के साधक हैं। इस प्रकार से यह सारा विशाल ब्रह्मांड उस सर्व-व्यापक ब्रह्म का विराट् शरीर माना गया है। उसी को नमस्कार करो। सं.

ऋषि दर्शन

सर्ववेदात् प्रसिद्धयति

अर्थ-सर्व-सब कुछवेदांत से प्रसिद्धियति-प्रसिद्ध होता है, मिलता है वेद से जीवन में सब कुछ प्राप्त होताहै।

भाव-महात्मा मनुजी से पूछा कि हम वेदों को क्यों पढ़ें? वेदों के पठन पाठन और सुनने सुनाने से क्या मिलेगा? मनु महा-राज ने उत्तर दिया था—किसी वस्तु से एक बात मिलती और किसी से दो। किंतु वेद तो ऐसा भंडार है। यह तो ऐसा कल्पवृक्ष है जिससे मनुष्य को सब कुछ ही प्राप्त हो जाता है। आत्मा व परमात्मा का ज्ञान,जीवन मुख,सच्ची शांति धन-ऐश्वर्य सब कुछ वेदों से मिलता है। वेद के उपदेश धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष रूपी चारों फलों के दाता है।

मनुस्मृति से

अधिष्ठाता—डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

शिक्षा : अर्थ संकल्पना (२)

श्री विद्यासागर जी शर्मा शास्त्री

शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर विहंगम दृष्टिपात करने के पश्चात शिक्षा के अर्थ पर विचार करना आवश्यक है ।

शिक्षा : अधिकार

समस्त सृष्टि असंख्य जीवधारियों का क्रीडास्थल है । सभी जीव प्रयत्नशील हैं 'प्रयत्नवन्तो हि प्राणिन.' (शिक्षासूत्रम्)और प्रत्येक में अपनी-अपनी विशेषताए पृथक्-पृथक् हैं । मनुष्य भी एक इसी प्रकार का प्राणी है, जो इन सब जीवधारियों में अपना स्थान विशेष रखता है । मनुष्य मे सबसे बडी विशेषता यह है कि यह दूसरों का अनुकरण अपेक्षा से अधिक करता है तथा उससे हानि लाभ का विचार करके उससे शिक्षा ग्रहण करता है । क्योकि अन्य जीवधारियो मे सोचने-विचारने तथा तदनुकूल शिक्षा ग्रहण करके ज्ञान वृद्धि करने की योग्यता नही है । इसीलिए मनुष्य सब प्राणियो मे श्रेष्ठ है । यह अपनी इस सीखने की प्रक्रिया से समस्त प्राणियो की श्रेणी से पृथक है तथा शिक्षा से प्राप्त विद्या द्वारा अन्य सब प्राणियो को वश में करता है और उन से आज्ञा का पालन करवाता है । ये सब योग्यताए कैसे और क्यों मनुष्य मे हैं, या आ जाती हैं जिस का उत्तर है 'शिक्षा' । मनुष्य शिक्षा के द्वारा ही सब योग्यताओ को प्राप्त करता है । मनुष्य की इस प्राकृतिक सीखने की शक्ति के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता है क्योकि जिसमे यह सीखने की शक्ति होती है, उसका मस्तिष्क प्रभाव ग्राहि होता है । मनुष्य का मस्तिष्क कोमलतम है अतः वातावरण के प्रभाव को शीघ्र ग्रहण करता है । मनुष्य के इस शक्ति के विकास के लिए उपयुक्त स्थान समाज है । 'मनुष्य सामाजिक प्राणी है' इसका विकास बिना समाज के कदापि भली-भान्ति नही हो पाता । 'मनुष्य अनुपम शक्तियो का केन्द्र है' मनुष्य की ये शक्तिया भी सीखने की प्रक्रिया मे ही सम्मिलित हैं । इन शक्तियो के विकास के लिए अनुकूल तथा उपयुक्त साधनो की अपेक्षा होती है । यह आवश्यकता केवल समाज से ही पूर्ण हो सकती है और होती है । मनुष्य ही एकमात्र समाज की सास्कृतिक धरोहर की सुरक्षा कर सकता है । सास्कृतिक न्यास की रक्षा केवल शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है । भ्रांति शिक्षा का एकमात्र अधिकार केवल मानव को ही है । मानव शिक्षा के द्वार अपनी ज्ञानवृद्धि करता है तथा विभिन्न विचारोका विभिन्न रूपो मे आदान-प्रदान करता है और अमोघ विद्याओ को प्राप्त करके उनको जीवनोपयोगी बनाता है ।

शिक्षा : व्युत्पत्ति

शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति करते समय पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त विद्वान अग्रेजी के 'एजुकेशन' के शब्द के साथ शिक्षा का सम्बन्ध जोडते हैं तथा लैटिन के 'एजुकेयर' 'एजुकीयर' तथा 'एजुकेटम' से 'ऐजुकेशन' की व्युत्पत्ति मानते हैं । जिसका अर्थ है—'एजुकेयर' से 'लालन-पालन' 'एजुकीयर' से 'प्रेरणा' तथा एजुकेटम' से 'शिक्षण' लेते हैं । शिक्षा जैसे सस्कृत शब्द को अग्रेजी के एजूकेशन शब्द के साथ जोड़ना, बुद्धि से शत्रुता करना है क्योकि जिस अर्थ की प्रतीति 'शिक्षा' शब्द मे गोचर है, वह 'एजुकेशन' मे नितान्त असंभव है । ठीक है कि अंग्रेजी मे शिक्षा के लिए 'एजुकेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है । उसकी अपना सास्कृतिक भावाभिव्यक्ति है । उसमे शिक्षाके सामान भारतीय सास्कृतिक भावाभिव्यक्ति लेशमात्र भी विद्यमान नहीं है ।

'शिक्षा' केवल 'आर्यावर्त' मे ही नहीं अपितु समस्त सृष्टि मे प्राचीन शब्द है, जिसको ये सस्कृत के शत्रु नवीन एवं पाश्चात्यो की देन मानते है । संसार के सब से प्राचीन पुस्तकालय में स्थित तथा सब से प्राचीन 'ऋग्वेद' मे 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग उपलब्ध है ।

डा० रघुनाथ 'सफाया' पी. एच. डी., अपनी पुस्तक 'शिक्षा के सिद्धांत और प्रयोग में लिखते हैं— भारत में साधारण रूप में व्यवहृत होने वाले इस 'शिक्षा' की व्युत्पत्ति कोई संस्कृत के 'शास्' धातु से मानता है जिसका अर्थ है—अनुशासन में रखना नियन्त्रण में रखना अथवा समझाना सीखाना कोई इसे विद्या का पर्यायवाची शब्द मानता है जिस की व्युत्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है । 'विद्' का अर्थ है, जानना अर्थात ज्ञान, अतः संयुक्त ज्ञान ही विद्या की परिधि में आता है ।'

उपर्युक्त पक्तिया विवेचनीय हैं । उक्त संदर्भ मे 'कोई' शब्द अनिश्चय वाचक है । 'कोई' से अन्य विद्वान किसी और धातु से भी कल्पित करते हैं, आ आशय स्पष्ट दृष्टिगत होता है । 'शास्' धातु का अर्थ साधारण पाठशालाओ मे पढ़ाया जाने वाला लिया है और पाश्चात्यो द्वारा घिसा पिटा अर्थ 'नियन्त्रण मे रखना' लिया है । 'समझाना-सीखाना' अर्थ पर्याप्त युक्ति संगत है ।

न्याय्य व्युत्पत्ति

शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार से है—

'शिक्ष विद्योपादाने' 'शासु अनुशिष्टौ' तथा 'शिक्षति दान कर्मा' उक्त धातुओ से शिक्षा शब्द व्युत्पन्न होता है जिस का क्रमशः अर्थ—'शिक्ष विद्योपादाने' से विद्या का विद्वान् आचार्य से उपादान—ग्रहण करना है । 'शासुअनुशिष्टौ' से अनुशासन—उपदेश गुरुमुख से विद्या की अनुशासन मे रह कर नम्रता से समीचीन प्राप्ति करना है । 'शिक्षति दान कर्मा' से विद्या का आदान-प्रदान करना है ।

उपर्युक्त अर्थों की सगति उपयुक्त तथा वैदिक है । इस को पढ़ कर 'डा० सफाया' का अर्थ कहा तक सगत है इसका निर्णय पाठक स्वय कर लेवें ।

'कोई तो इसे (शिक्षा को) विद्या का पर्यायवाची शब्द मानता है ।' विद्या और शिक्षा को सस्कृत के विद्वान् कदापि पर्यायवाची शब्द नहीं मानते हैं । हा, आप मानते हो, यह बात दूसरी है ।

निरुक्तिगत अर्थ

'शिक्षन्तेऽनयेति शिक्षा' जिस प्रक्रिया विशेष से विद्यादि सीखी जाएं या ग्रहण की जाए उसे शिक्षा कहते हैं । 'विदन्त्यनयेति विद्या' जिसको सीखकर जानते हैं उसे विद्या कहते हैं । शिक्षा और विद्या शब्दों की निरुक्ति से यह स्पष्ट है कि 'सीखी हुई सचित ज्ञान राशि को या सीखने के पश्चात् संचित की गई ज्ञान राशि को विद्या कहते हैं और विद्या को सीखने की प्रक्रिया विशेष को शिक्षा कहते हैं । यथा—दर्शन, गणित व्याकरण, उपनिषद्, अध्यात्म, भौतिक, दैविक आदि को हम विद्या ही कहते हैं, न कि शिक्षा ।

दोनो के उद्देश्यों मे समता है, क्योंकि 'सा विद्या या विमुक्तये' विद्या वह है जिसका परिपाक मुक्ति हो ।

'शिक्षा त्रिविधात्यन्त ज्ञानात्म तुष्टि पर्यन्तम्'

(अप्रकाशित 'शिक्षा-सूत्रम्' में से)

आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक विद्याओं अत्यन्त ज्ञान जब तक कि आत्म सन्तुष्टि न हो तब तक विद्याए सीखने का प्रयत्न करते रहना शिक्षा है ।'

(क्रमशः)

महात्मा आनन्द स्वामी जी

द्वारा विदेशों में वेद प्रचारकी धूम

सोमवार ता० १७ नवम्बर को प्रातः पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सुरिनाम देश में ५८ दिन रात तक कुल ७० व्याख्यान देने के बाद गयाना देश पधारे हैं।

यहां महात्मा जी केवल ४ दिन तक वैदिक प्रचार कर ता० २१ नवम्बर को त्रिनिडाड पधारे जहा एक सप्ताह तक वैदिक प्रचार कर ता० २१ नवम्बर को नोर्थ अमेरिका स्थित डालस नगर मे पहुचे। इस देश मे स्वामी जी के आने से यहा के भारतीय जनसमाज मे नई जागृति और अन्यो मे उत्तम प्रभाव पडा है। श्री सनातनधर्म महा सभा के प्रधान जी ने अपने भाषण मे यहा तक कहा—इस से पूर्व इतने महान विद्वान और सन्यासी के रूप



मे हमारे देश तो क्या तमाम वेस्ट इण्डीज मे नही आये। अगर इसी तरह अन्य विद्वान भी सिलसिलेवार यहा आते रहे तो निसन्देह हम सुरिनाम देश को वैदिक क्षेत्र बना सकेंगे।

महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती सुरिनाम के गवर्नर महोदय श्री मोहनफेरयई तथा प्रधान मन्त्री श्री अ० ये० यई जी से भी मिले उनके साथ आर्य दिवाकर के उपप्रधान श्री आर० भटोस जी थे।

स्वामी जी के भाषण मे सहस्त्रो की सख्या आर्य समाजी सनातन धर्मी व अन्य लोग भाग लेते रहे हैं। स्वामी जी का प्रचार प्रोग्राम इतना बढ चला था कि खासकर संस्था आर्य दिवाकर के ८ समाजो और कई महत्व सुदूर स्थानो मे प्रचार नही होने पाया। योग साधन व प्राणायाम दीक्षा के लिये कुल ६० व्यक्ति भाग लेते रहे हैं।

मन्दिर उद्घाटन

श्रीमती प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भव्य मन्दिर का उद्घाटन् सजधज से हुआ और ८दिन तक गायत्री महायज्ञ सहस्त्रो की उपस्थिति मे होता रहा। इस मन्दिर निर्माण मे १२ वर्ष लगे जिसमे लगभग एक लाख गिल्डर खर्च हुये हैं। इस निर्माण मे यदि लोग द्रव्य दान के साथ श्रमदान न किये होते तो नि.सन्देह खर्च अधिक बढ जाता। मन्दिर का सौन्दर्य इतना आकर्षक है कि देश-देशान्तर के लोग देखने व फोटो बनाने आते हैं। उद्घाटन मे पं० शिवरत्न जी ने सम्पूर्ण चारो वेद प्रदान किये।

उपदेशक विद्यालय

सस्था आर्य दिवाकर का कार्यक्षेत्र विशाल होते हुए केवल १० उपदेशक सलग्न हैं जिन्हे केबल यज्ञ संस्कार से अवकाश नही मिलती कि वे व्यवस्थापक प्रचार कर सके। हमारी वर्षो की योजना है कि भारत से एक सुयोग्य वैतनिक आचार्य बुलाए जाए जो यहा व्यवस्थापक प्रचार करते हुए एक उपदेशक विद्यालय द्वारा देशीय प्रचारक तैयार करे। जब तक भारत से उपयुक्त आचार्य नही उपस्थित हैं तब तक उक्त विद्यालय का सचालन-भार श्री प० सत्यव्रत दातादीन, श्री प० शिवरत्न, श्री पं० विश्वेश्वर जी पर महात्मा जी ने सौंप कर इसका उद्घाटन किया है। स्वामी जी से कुल १० पुरुष और ३ स्त्रिया यज्ञोपवीत संस्कार ले अब उपदेशक बनने की तैयारी कर रहे हैं। रविवार ता० १६ नवम्बर को १ नीग्रो जाति ने भी शुद्धि और यज्ञोपवीन संस्कार लिया है जो प० शिवरत्न से उपदेशक क्रम की दीक्षा डच भाषा में ले रहा है। इसने सन् १९६० ई० मे सत्यार्थप्रकाश को अंग्रेजी से डच मे भाष्य किया है, केवल इसे अभी हिन्दी पढना है। जन्म का नाम हम्फी प्रेद: से बदल कर अब धर्मदेव नाम पडा है। डच व अंग्रेजी में जब यह वैदिक सिद्धान्त से उत्तीर्ण होगा तब इसे इनके गिरोह का प्रचारक नियत किया जाएगा।

सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों से निवेदन

दशांश और वेद प्रचार दीपावली व शिवरात्रि धन के साथ क-ख प्रतिनिधि फार्म भी भेजिए

आर्य प्रादेशिक प्र. नि सभा पंजाब, हरियाणा, हिमाचल व जम्मू काश्मीर से सम्बद्ध आर्य समाजो से प्रार्थना है कि वे शीघ्रादि शीघ्र सभा के लिए अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन करके भेजने की कृपा करे प्रतिनिधि फार्म क व ख उन्हे भेजे जा चुके है। दशाश धन और प्रतिनिधि फार्मों के साथ ही नियमानुसार दशाश, वेद प्रचार दीपावली व शिवरात्रि फंड प्रत्येक वर्ष भेजना आवश्यक है। इन के अभाव मे यह फार्म नियमानुकूल नही समझे जा सकेगे। अत. प्रत्येक आर्य समाज को इस फार्म मे विलम्ब न कर शीघ्राति शीघ्र दशाश राशि और वार्षिक वेद प्रचार, दीपावली और शिवरात्रि फण्ड का धन सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करनी चाहिए जिस से प्रतिनिधियो की स्वीकृति सूचना उन्हे तुरन्त भेजी जा सके।

वेदीराम—सभा मन्त्री

ग्राहक महानुभावों की सेवा में

'आर्य जगत्' साप्ताहिक के सभी ग्राहको की सेवा मे नम्र निवेदन है कि जिन्होने इस वर्ष का चन्दा अभी तक नही भेजा वह शीघ्र चन्दा भेजने की कृपा करे। चालू वर्ष समाप्ति पर है हिसाब हो रहा है, इसलिए देर न करते हुए चन्दा शीघ्र भेजे अति धन्यवाद होगा।

व्यवस्थापक

आर्यसमाजों के नाम अपील

गढ़वाल में आ०स० मदिर निर्माण की योजना

आर्यसमाज साबली आदि पचपुरी (गढवाल) के कार्यकर्त्ताओ ने स्यूंसी (गढवाल) मे आर्यसमाज मन्दिर बनाने का निश्चय किया है परन्तु गढवाल आदि पर्वतीय अचलो मे आर्यसमाज का प्रचार यथेष्ठ न होने क कारण मन्दिर निर्माणार्थ उन्हे बाहर मे धन सग्रह करने के लिए विवश हो जाना पडा है। उक्त समाज ने धन के लिए अपील निकाली है जिसका समर्थन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा ने भी किया है। अपने प्रचार को स्थाई रूप देने और उस क्षेत्र मे ईसाई मिशन की व्यापक एव आपत्तिजनक प्रगतियो एवं उसके बढते हुए प्रभाव के निराकरण के लिए वहा एक आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण की परमावश्यकता है।

इस कार्य मे देश का आर्यसमाजो द्वारा इस समाज के कार्यकर्त्ताओ को प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

आशा है कि आर्यसमाजे धन से इस समाज की सहायता करेगी। धन मनिआर्डर द्वारा सीधा 'मन्त्री आर्यसमाज साबली आदि पचपुरी, डाकघर—बैजरो, जिला गढवाल, (उ० प०)' को दिया जा सकता है यहा से आवश्यकतानुसार उक्त समाज को दिया जाता रहेगा।

—वेदीराम
मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर
(पजाब)

आप का कर्तव्य

'आर्यजगत्' साप्ताहिक के सभी नए व पुराने ग्राहक बन्धुओं का 'जगत' के साथ अपार स्नेह है इसके लिए वह सब बधाई के पात्र है। वास्तव मे अगर देखा जाए तो इसकी लोकप्रियता तभी हो सकती है कि जब सब ग्राहक महानुभाव एक एक नया ग्राहक बनाने का सकल्प लें। हम सब सकल्प लेवे कि नए वर्ष से पहले-पहले एक-एक नया ग्राहक जरूर बनाए। आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि सहयोगी ग्राहक बन्धु अपना कर्तव्य जरूर निभाएगे।

— व्यवस्थापक

समाचार दर्शन

पाली में वेदसप्ताह

जि० हिसार के पाली गाव मे आर्य समाज पाली की ओर से ४ से ९ दिसम्बर तक वेद सप्ताह मनाया गया ।

जिस मे आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के उपदेशक—वानप्रस्थी मूराराम जी प० प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर—सुमेरसिंह, रणजीतसिंह जी शामिल हुए ।

वैदिक सिद्धांत के प्रचार से गांव के लोग मुग्ध हो गए । दिन-दिन सुनने वालों की उपस्थिति बढती गई ।

नित्य प्रति यज्ञ भी किया गया । यज्ञोपवीत दिये गए । इस शुभ कार्य में (विशेष) भाग लेने वाले श्री प्रधान चौ० छज्जूराम जी, चौ० रामप्रकाश जी व चौ० प्रतापसिंह जी ने बड़े उत्साह से यज्ञ को सफल बनाया है ।

आ० स० पाली की ओर से १५५) रु० दान किया गया । उपदेशकों को दक्षिणा देकर मान किया ।

आर्य प्रादेशिक सभा आ० स० पाली का धन्यवाद करती है ।

—प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर

आ. स. बाजार सीताराम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती समारोह (५०वा वार्षिकोत्सव) दिनाक ३० नवम्बर, ६९ रविवार से ७ दिसम्बर ६९ रविवार तक बडी धूमधाम से मनाया गया । दिनाक ३० नवम्बर ६९ से २ दिसम्बर ६९ तक कविराज रघुनन्दनसिंह जी के व दिनाक ३ दिसम्बर से ४ दिसम्बर ६९ तक महात्मा अमर स्वामी सरस्वती जी के आर्यसमाज मन्दिर मे विभिन्न वैदिक सिद्धान्तो पर सार गर्भित व्याख्यान हुए ।

उत्सव का मुख्य कार्यक्रम दिनाक ५ दिसम्बर १९६९, शुक्रवार से दिनाक ७ दिसम्बर ६९ रविवार तक रामलीला मैदान मे सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य जगत् के निम्नलिखित प्रसिद्ध संन्यासियो, विद्वानो व भजनोपदेशकों ने भाग लिया —

पू० महात्मा अमर स्वामी जी, पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी विदेह, पू० स्वामी रामेश्वरानन्द जी, पूज्य स्वामी आदित्यानन्द जी, तथा सर्व श्री डा० वेदीराम जी सभा मन्त्री, प० शिवकुमार जी शास्त्री, संसद सदस्य, विजयकुमार जी मल्होत्रा, मुख्य कार्य कारी पार्षद, दिल्ली, डा० धीरेन्द्र शर्मा जी शील, प्रोफैसर मिचीगन यूनिवर्सिटी अमेरिका, वैद्यराज प० रामगोपाल जी शास्त्री, कृष्णदत्त जी, सोहनलाल जी आर्य पथिक, प० हरीदत्त जी एव श्रीमता सुव्रता देवी जी ।

५ दिसम्बर शुक्रवार को रामलीला मैदान मे प्रातः यज्ञ-हवन व पू० महात्मा अमर स्वामी जी के द्वारा ध्वजारोहण की कार्यवाही सम्पन्न करने के पश्चात् मुख्य उत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ ।

दोपहर १ बजे से आर्य महिला सम्मेलन हुआ ।

रात्रि ८ बजे से प्रसिद्ध कवि व पत्रकार श्री रामानन्द 'दोषी', (सम्पादक कादम्बिनी) की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि सम्मेलन का सयोजन श्री हरिश्चन्द जी पाठक 'अजेय' ने बडी सफलता पूर्वक किया । दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद माननीय श्री विजय कुमार जी मलहोत्रा ने कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि आर्य समाज सीताराम बाजार एक ऐतिहासिक समाज है और भारत मे इसका विशेष स्थान है । उन्होने इस समाज के गत बीस बाइस वर्षो के कार्यों की विशेष प्रशसा की ।

६ दिसम्बर ६९ शनिवार प्रात यज्ञ-हवन के पश्चात पं० हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार का उपदेश हुआ तथा मध्यान्होतर मे डी० ए० वी० स्कूलो के छात्रो व भागीरथी देवी आर्य कन्या पाठशाला की

[...]प्रकाश

[...]ी)

[...] बताता हैं अष्टम समुल्लास ।
[...]ौर मोक्ष' जीवन में पाओ ।।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो०
आचार अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य' दशम समुल्लास बतलाता है ।
'मतमतान्तरो का खंडनमंडन' एकादश मे सुनो-सुनाओ ।।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो०
द्वादश समुल्लास है बतलाता 'चार्वाक और जैनमत क्या है ?
त्रयोदश समुल्लास में मर्म बतलाया, 'ईसाईमत' पढ जाओ ।।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो०
'मुसलमानो का विषय' चौदहवें समुल्लास में वर्णित है ढंग से ।
सत्य 'सनातन वेद विहितमत' स्वमन्तव्या मन्तव्यप्रकाश' मे पाओ ।।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो०
इस ज्ञान-पुंज को पढ़ कर आर्यो, सर्वत्र सदा बिखराओ ।
महर्षि [illegible] का [illegible] है सब पर, आओ, इसे चुकाओ ।।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो०

रचयिता—श्री ओ३म प्रकाश जी 'आर्य'

छात्राओ के समक्ष सभा मन्त्री डा० वेदी राम जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ । तथा सोहनलाल जी आर्य पथिक का भजनोपदेश हुआ ।

रात्रि ८ बजे से पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी की अध्यक्षता में युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया । जिस में डा० वेदीराम जी, सभामन्त्री, कृष्णदत्त जी (आर्य युवक परिषद) तथा समाज के प्रधान श्री राजाराम जी शास्त्री आदि ने अपने विचार प्रकट करते हुए युवको को सदाचार, कर्तव्य निष्ठा अनुशासन और देश प्रेम आदि पुनीत भावो को अपनाने का आवाहन किया ।

७ दिसम्बर, १९६९ रविवार—प्रातः यज्ञ हवन के पश्चात् पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी का प्रवचन हुआ । मध्यान्होतर १-३० से २-३० बजे तक डा० धीरेन्द्र शर्मा शील (प्रोफैसर मिचीगन यूनिवर्सिटी अमेरिका) का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ जिस मे उन्होने मानव संस्कृति के सम्बन्ध मे भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए अमेरिका की रग भेद नीति की निन्दा की । तत्पश्चात् श्री गौरी शंकर भारद्वाज जी ने आर्यसमाज सीताराम बाजार का ५० वर्ष का सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए इस समाज द्वारा किये गये विशेष कार्यों और सेवाओ का उल्लेख किया । ३ बजे से पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन हुआ जिस मे पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी विदेह श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य, योगीराज बलदेव प्रसाद जी आर्य, वैद्यराज पं० रामगोपाल जी शास्त्री आदि ने अपने विचार प्रकट किए । रात्रि को सभा मन्त्री डा० वेदीराम जी का अत्यन्त खोजपूर्ण व विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुआ । तत्पश्चात पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी ने मूर्ति पूजा तथा मृतक श्राद्ध को वेद विरुद्ध बताते हुए पाडित्यपूर्ण व्याख्यान दिया । रात्रि को १०-३० बजे मन्त्री जी द्वारा धन्यवाद प्रकाशन के पश्चात् उत्सव का समापन हुआ ।

स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष मे महर्षिदयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश १ ५० रु० की व व्यवहार भानु ०.१५ पैसे की विशेष रियायत से प्रचारार्थ वितरित की गयी । राजाराम शास्त्री जी प्रधान श्री बाबूराम जी महेश्वरी, श्री नरेन्द्रनाथ जी गुप्ता मंत्री आर्यसमाज बहुत ही कर्मठ व लग्नशील व्यक्ति हैं । समाज के साथ इनका बहुत ही प्रेम है । उत्सव हर प्रकार से सफल रहा । सब धन्यवाद के पात्र हैं ।

साप्ताहिक आर्यजगत् का वार्षिक चंदा आठ रुपये एक प्रति का मूल्य १६ पैसे

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा०वेदीरामजी एम. ए, पी.एच.डी. मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर तथा आर्यजगत् कार्यलय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, पंजाब



टेलीफोन न० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १६ पैसे — वार्षिक मूल्य ८ रुपए

वर्ष २६, अंक ५२) — १५ पौष २०२६ रविवार—दयानन्दाब्द १४४—२८ दिसम्बर १९६९ — (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

इन्द्रश्च मृडयाति नः

अर्थ —वह इन्द्रः—इन्द्र देव भगवान मृडयाति-कृपा करे, सुखी करे न.—हम सभी को। उसी की कृपा से हमें सुख मिलता है। वही सदा हम पर कृपा करते रहें।

भाव —प्रभु की कृपा का प्रसाद सबसे मीठा है। सबसे कीमती है। इसलिए प्रभु के प्यारे सदा कहा करने है कि ब्रह्म कृपैव केवलम्-सदा ब्रह्म की कृपा हमे मिलती रहे। वह परमेश्वर सदा सुखमय है, आनन्द का धाम है-आनंद-मयो हि स:-ऐसा ऋषियोने कहा है। उसी की कृपासे हमें भी जीवन में सुख आनन्द मिल सकेगा। उसी से सुख की सदा प्रार्थना करनी चाहिए। प्रभुदेव ! हमें भी सुखी करो। आनंद का प्रसाद प्रदान करते रहो। —सं.

ऋग्वेद २-४१-११

वेदामृत

राक्षसों को मार भगाओ

ओ३म् सुवीरं रयिमाभर जातवेदो,
विचर्षणे। जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥

ऋग्वेद मण्डल ६-१६-२९

(सुवीरं) उत्तम वीरों से भरे हुए (रयिम) धन रयि को (आभर) सभी ओर से हमें भरपूर कर दो (जातवेद) हे जातवेदस् प्रभुदेव ! सर्वज्ञ सर्वव्यापक ! (विचर्षणे) सब कुछ देखने और जानने वले प्रभो ! (जहि) मार दो (रक्षांसि) राक्षसों को(सुक्रतो)शुभ कर्मों के प्रेरक परमेश्वर सारे राक्षसों को आसुरी भावो को मार दो।

इसका भाव यह है

प्रभुदेव ! हम तो आपके ही है। जो कुछ लेते है आप से ही लेते है। पिता जी ! ऐसी कृपा करें कि हमे आपकी कृपा से किसी प्रकार की भी कमी न होने पाये। सब ओर से हमारी जीवन झोली भर दो जीवन यात्रा मे जिस २ वस्तु की आवश्यकता पड़े भर दीजिए। वह धन रयि हो शुद्ध पवित्र हो। हमारी कमाई पवित्र हो। जितने भी हानिकारक विश्व के राक्षस है, आसुरी विचार है,मानवता के शत्रु बनते है। उन सभी को समाप्त कर दो ताकि विश्व सुखी हो। —स.

ऋषि दर्शन

तत्तु विषयत्यागात् संग त्यागाच्च

अर्थ —तत्-वह प्रभु भक्ति का साधन तु-तो विषय त्यागात्-संसार के विषय भोगों का त्याग कर देने से तथा सग त्यागात् च-उन सभी विषय वासनाओं का संग आसक्ति भी त्यागकर देने से प्रभु की सिद्धि होती है।

भाव —भक्ति के दो विशेष और प्रमुख साधन माने गये है। मुनिवर नारद जी कहतेहै कि जो भगवान का भक्त बनना चाहता है चाहिए कि वह विषय उसे भोगो को छोड़ देवे। विषयो में कभी न फंसे। उनमे भूलकर भी आसक्ति न रखे। विषय भोगोमे फंसा हुआ भोगी कभी योगी नही बन सकता। दोनो एक साथ नही चल सकते। विषय वासनाए ससार चक्र मे फसाए रखती हैं। इनसे बचने वाला ही भक्तिमार्गी हो सकता है। विषयमार्गी भक्तिमार्गी नही होता—स

नारद का भक्तिसूत्र ३५

अधिष्ठाता--डा० वेदीराम शर्मा एम० ए०, पी० एच० डी० (सभामन्त्री) — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

❀ आर्य-समाज का गौरव ❀

श्री सत्यपाल जी 'सहृदेव' लेखराम नगर (कादियां)

सामयिक विषम परिस्थितियो को सम्मुख रखते हुए यही कहने को मिलेगा कि यदि आज आर्य समाज को बचा सकता है तो केवल आज का आर्य युवक-लेखक की इन पक्तियो को हमारे बजुर्ग जब पढ़ेंगे तो निश्चय ही एक बार मन में विचार करेंगे कि क्या आर्य समाज मे हमारा कोई महत्व नही रहा? हमारा कोई स्थान तक भी नही रहा? आखिर यह चन्द युवक कर क्या रहे हैं? इत्यादि मनोभावो का अप्रत्यक्ष रूप मे मान मर्दन तो हो सकता है परन्तु इनका सही समाधान ढूंढना अति असम्भव है। निकलते ही आग के अगारे को जब देखा जाता है तो वह बहुत ही लालिमा को लिए हुए अपने अतीत के इतिहास को साक्षी करने का प्रयत्न करता है परन्तु कुछ ही समय पश्चात् वही अगारा अपने ऊपर एक राख की परन्तु को तैयार करके लालिमा को छिपा लेता है। शायद कही लालिमा को क्षति न पहुचे। ठीक आर्य समाज मे युवा शक्ति का भी यही स्वरूप है। जैसा वह अगारा राख की परत् को लिए हुए है और अपनी प्रसुप्त भावनाओ का प्रकटीकरण नही कर सकता वैसे ही बेचारा आज का युवक मा आर्य समाज की गोद मे लोरिया लेकर भी अपने आपको एक पेंडुलम की तरह डगमगाता ही प्राप्त कर रहा है। ऐसी हालत मे फिर आर्य युवक निराशावादी नही बना। अपना कदम वह उठा रहा है। मा आर्यसमाज का गौरव वह स्वयं बन कर राख की परत् को दूर फेंकते हुए लालिमा के धीमे प्रकाश के साथ आर्यवर्त्त की धरा पर एक कल्पतरु के सदृश्य विद्यमान् होने लगा है। चारो तरफ से हमारे माननीय बजुर्गों की आवाज आने लगी है कि आर्य युवक शीघ्र अपना सगठन तैयार करे और आर्यसमाज के मिट रहे गौरव को पुन. विश्व मे कायम करे। अपने पूज्य बजुर्गों का गौरव एवं सम्मान आर्य युवको ने हमेशा ही अपने वक्षस्थल के साथ लगा कर रखा है। श्री कृष्ण श्याम जी 'वर्मा' (स्वामी दयानन्द जी महाराज के प्रथम शिष्य), शेरे पजाब लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द जी, सरदार अजीतसिंह जी शहीदे अकबर प० लेखराम जी, पं० श्री गुरुदत्त जी, प० राम प्रसाद 'बिस्मिल' सरदार भक्तसिंह, राजगुरु, सुखदेव इत्यादि यह सब कौन थे? यह भी तो कभी युवक थे। युवावस्था मे ही आर्यसमाज रूपी मा की गोद मे बैठ कर अग्रेजीयत एव हिन्दु जाति के कीटाणुओ (पौराणिको) के विरोध मे अपना जय-घोष बुलन्द किया था।

आर्यवर्त्त की पवित्र धरा पर फिर से युवको ने हजारो वर्षो के पश्चात् दुनिया को आर्य-राष्ट्र का नाद दिया है। स्वामी दयानन्द जी महाराज के विचारो जैसा यदि हमारा सामाजिक जीवन बन जाए तो कितने गौरव की बात हो सकती है। यदि आर्यवर्त्त मे रहने वाली जनता के विचारो को शुद्ध वैदिक रूप दिया जाए तो स्वयं ही यह भारत राष्ट्र आर्य-राष्ट्र का रूप धारण कर लेगा। लिखने और कहने के लिए तो यह बात आसान है परन्तु रचनात्मिकता से कही दूर। आज का युवक अनुभव कर रहा है कि हमारा सामाजिक-ढाचा आज के प्रजातान्त्रिक युग मे वैदिक-पथ पर नही चल सकता—हा! यदि हम सभी मिल कर अपने बजुर्गों के आशीर्वाद से इस बात की दीक्षा ले कि सर्वप्रथम हम अपने जीवन को सही आर्यपन् मे लाएंगे तभी हम अपने सामाजिक जीवन को वैदिक पथ पर ला सकेंगे।

आज की बेढगी राजनीति से युवावर्ग पीडित होता नजर आ रहा है। उस के पास कोई रास्ता नही है जिस के द्वारा की वे कोई सुधार ला सके। अराजकता मे डूबे हुए युवक को यदि कोई रास्ता दिखा सकता है तो केवल आर्यसमाज। हमारे देशकी हालत दिन प्रतिदिन ऐसी गिर रही है कि कभी स्वप्न मे भी विचारा नही था। कही पंजाब, हरियाणा, हिमाचल की समस्या तो कही बगाल की। कही कश्मीर की समस्या तो कही तामिल नाडु की। कही विद्यार्थियो की बुरी हालत तो कही मजदूर बेचारा रोटी के लिए पिट रहा है। भाव यह कि हर तरफ अराजकता ही नजर आ रही है। देश की विषम परिस्थितियां तो हैं सो तो हैं ही—इनको सुधारने के लिए जो संस्था मैदान में आई थी वह भी ऐसे मूर्ख किटाणुओ से बच नही सकी। संस्था आर्य-समाज के साथ के कीटाणू जब तक दूर नहीं हो पाते हमारे देश का भला भी नहीं हो सकता। यह मूर्ख कीटाणू बड़े-२ घौंसले बना कर बैठें हैं। ये भी प्राचीन महात्माओं से कम नही हैं। केवल ढंग का ही अन्तर है। यह पंक्तियां हैं तो कुछ कडवी परन्तु आर्य-समाज के स्वरूप को बचाना है चाहे उसके लिए कितनी ही कीमत का भुगतान क्यों न करना पडे। आज आर्य-समाज की स्थिरता आर्य-युवकों पर है। नौजवानों। अंगारे से राख की परत को दूर फेंककर लालिमा लिए हुए कार्य क्षेत्र मे आना होगा।

★★★

आप का कर्तव्य

"आर्यजगत्" साप्ताहिक के सभी नए व पुराने ग्राहक बन्धुओं का 'जगत' के साथ अपार स्नेह है इसके लिए वह सब बधाईके पात्र हैं। वास्तव में अगर देखा जाए तो इसकी लोकप्रियता तभी हो सकती है कि जब सब ग्राहक महानुभाव एक एक नया ग्राहक बनाने का संकल्प लें। हम सब सकल्प लेवे कि नए वर्ष से पहले-पहले एक-एक नया ग्राहक जरूर बनाएं। आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि सहयोगी ग्राहक बन्धु अपना-२ कर्तव्य जरूर निभाएंगे।

—व्यवस्थापक

वैदिकधर्म हमारा

नित्य ज्ञान की निर्मल धारा।
पावन वैदिक धर्म हमारा ॥
शुभ सुख दायिनी जन कल्याणी।
परमदेव की प्यारी वाणी ॥
मिटे सकल मन का अंध्यारा...
मानवता का यह उपवन है।
राम कृष्ण का गौरव धन है ॥
यह आधार हमारा...
जिस हित निकले ऋषि अकेले।
कष्ट कठोर मुनि ने झेले ॥
श्याम लाल ने जीवन वारा...
निश्चित निश्चय करके निकलो।
युग की धारा मिल कर बदलो ॥
गूंजे यह जयनाद हमारा...
आओ वैदिक ध्वज लहराओ।
लेख राम का पथ अपनाओ ॥
देकर अरुणा रक्त की धारा।
पावन वैदिक धर्म हमारा ॥

—राजेन्द्र 'जिज्ञासु' अबोहर

सम्पादकीय :—

आर्यजगत

वर्ष २१] रविवार २०२६, २८ दिसम्बर १९६९ [अंक ५२

आर्यसमाज अनारकली समारोह

भारत की राजधानी नई देहली में आर्यसमाज अनारकली मन्दिरमार्ग आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के समाजों में एक विशेष भव्य समाज है। इस विशाल मन्दिर के निर्माण मे स्वर्गीय डा० मेहरचन्द जी महाजन का बहुत बडा तप तथा योगदान है। सत्संग एवं उपासना यज्ञ के भवन को देख कर दर्शक का मन प्रसन्न हो जाता है। यह समाज केवल भवन के रूप में ही ऊंचा नही है वरन इसके परिवार में जो सभासदों के परिवार शामिल हैं—वे भी बहुत प्रतिष्ठित हैं। विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डा० जी. एल. दत्त जी, प्रिंसिपल सूर्यभानु जी उपकुलपति पंजाब विश्वविद्यालय, नानाविध कालेजो स्कूलों के आचार्य, मान्य जज महोदय शिक्षा शास्त्री, व्यापारी नेता, उच्चाधिकारी आदि जैसे लब्ध प्रतिष्ठा सज्जन इस माला के मनोरम मनके हैं। यह समाज के गौरव की वस्तु है। इस पर जितना भी मान किया जाए थोडा है। इसके साथ-साथ और भी विशेष बात यह है कि यहां दैनिक सत्संग तो लगता ही है—इसका जो वार्षिकोत्सव होता है—वह भी एक प्रकार का महान मेला का रूप धारण कर जाता है। कमाल की बात तो यह है कि सप्ताह का जो वेदपारायण का यज्ञ होता है उसका सारा व्यय अपनी-अपनी भावना से एक-एक परिवार ही देता है। यज्ञ शेष प्रतिवर्ष मिलाप परिवार की ओर से वितरित किया जाता है। इसी प्रकार महोत्सव पर जो ऋषि-लंगर का भण्डार लगता है—जिस में लगभग डेढ़ दो हज़ार नरनारी बच्चे प्रेमपूर्वक भोजन करते हैं उसका सारा व्यय इस समाज के माननीय प्रधान श्री मुलखराज जी भल्ला की ओर से किया जाता है। प्रचार का स्तर भी बड़ा ऊंचा होता है। बात यह है कि जिस समाज को डा० जी. एल. दत्त को प्रधान डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धक कमेटी जैसे नेताओ का शुभाशी: मिलता हो। श्री भल्ला जी जैसे सात्विकदानी प्रधान एव सौम्यता के प्रतीक योग्य विद्वान पं० दयाराम जी शास्त्री एम. ए. जैसे मन्त्री, डी०ए०वी० कालेज कमेटी कार्यालय के अधीक्षक श्री दरबारीलाल जी एम०ए० वी श्रीयुत हाडा जी आदि जैसा समाज का सारा परिवार ही सहयोगी हो—वहा सफलता मिलती ही है।

उत्सव मे मान्यवर प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी हिसार, प्रिंसिपल रलाराम जी होशियारपुर, मान्य अमर स्वामी जी, प०रामगोपालजी शास्त्री, डा० गोवर्धनलाल जी दत्त प्रधान दयानन्द कालेज कमेटी, प्रो० श्याम-राव जी, ब्रह्मचारी इन्द्रदेव जी, प्रो० रामानन्द जी, पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री के साथ-साथ चौ० नत्था-सिंह जी, श्री ओमप्रकाश जी वर्मा, ब्रह्मचारी महेश जी भी थे। कवि दरबार भी सुन्दर था। आर्य राष्ट्र निर्माण सम्मेलन डा० जी० एल० दत्त जी पूर्व उपकुलपति विक्रम विश्व विद्यालय की प्रधानता में गम्भीरतासे हुआ। इसमें ब्रह्मचारी इन्द्रदेव जी, प्रो. रामानन्द जी तथा प्रो० श्यामराव जी एम ए. के आर्य-राष्ट्र में समाज शिक्षा और अर्थ की व्यवस्था के विषयो पर सार भरे भाषण हुए। सभापति डा० जी ,एल दत्त जी का अध्यक्षीय भाषण बडा ही सारगर्भित था। यज्ञ की पूर्णाहुति शोभा-भरी थी। ऋषिभण्डारा का दृश्य तो दर्शनीय था। हजारो की सख्या में जनता ने एक पंक्ति में बैठ कर भोजन किया। कितनी बडी मात्रा में और कितनी व्यवस्था मे तथा कितने खुले रूप मे यह प्रबन्ध था—देख कर मन प्रसन्न होता था। स्वर्गीय डा० मेहर चन्द जी महाजन का स्मरण सभी की जिह्वा पर था। रह-रह कर उनके अभाव की चर्चा चलती थी। उनकी लगाई यह फूल वाड़ी कितनी विकसित हो रही है। यह मेला प्रत्येक विचार से समारोह पूर्ण था। स्त्री समाज का उत्सव भी ठाठ का था। माननीय माता जी श्रीमती महाजन जी माता बन कर सारे समाज का नेतृत्व कर रही हैं। हर अवस्था मे रौनक थी। माता कृष्णावती जी वानप्रस्थी की सेवा तो याद रहती है। महोत्सव की समाप्ति पर श्री भल्ला जी प्रधान तथा पं दया राम जी शास्त्री मन्त्री ने जो सक्षेप मे समाज कार्य का चित्र खीचा उससे इसकी विशालता का परिचय मिलता था। पं सोमकीर्ति एम. ए. पुरोहित समाज तथा पं पुरुषोत्तम जी एम. ए भी सभा व समाज की शोभा हैं। इतना बडा समाज तथा एक परिवार के समान एकता प्रेम-श्रद्धाभावना के सूत्र मे पिरोया हुआ कितना कार्य करता है—यह गौरव का विषय है।

—त्रिलोक चन्द्र

अबोहर कांड की जांच हो

अबोहर दयानन्द कालेज मे उस शरारती तत्व ने क्या कुछ किया। कैसा हुल्लड और गुण्डागर्दी की गई। कालेज के पवित्र नाम-काम को कैसी क्षति पहुंचाई गई। वहा पढने वाली अपने ही परिवारो की युवती बेटियो के सामने कैसा२ चित्र उपस्थित किया गया तथा यज्ञशाला जैसे पवित्र स्थान का जिस गिरे हुए कार्यों से अपमान किया गया कौन है जिस के दिल मे रोष और घृणा पैदा नही होती। यदि इस प्रकार के तत्व को कडा दण्ड न दिया गया तथा उनके गिरावट से भरे इस कुकर्म की निन्दा की गई एव उसके द्वारा इस अपमान व नीचता का प्रायश्चित्त न किया गया। सरकार की ओर से आगे के लिए कोई कडा पग न उठाया गया तो वातावरण विषैला हो जायगा। सार्वदेशिक सभा देहली के महामन्त्री श्री रामगोपाल जी शालवाले एम पी. तथा श्री ओम प्रकाश जी त्यागी एम पी बधाई के पात्र हैं कि इसकी ओर गृहमन्त्री श्री चौहान का ध्यान खीचा है। पंजाब सरकार के मुख्यमन्त्री का भी ध्यान दिलाया है। यदि इस प्रकार का गुण्डा तत्व खुले रूप मे ऐसे २ गिरे कार्य करता रहा तो जनता के विचारो मे रोष तथा क्रोध की ज्वाला धधक उठना स्वाभाविक है। यज्ञशाला व यज्ञकुण्ड का ऐसा अश्रुत अपमान करने वालो को तो ऐसा कडा दण्ड दिया जाये कि भविष्य मे ऐसे नीच कर्म का कोई साहस भी न कर सके।

इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के मन्त्री डा० वेदीराम जी शर्मा ने भी जो प्रभाव भरा वक्तव्य दिया है वह भी सराहनीय है। यह अबोहर की ही यज्ञ वेदी का अपमान नही सारे धार्मिक जगत् का अपमान है। अबोहर की जनता ने भी इतने दिन हडताल करके बडे साहस का परिचय दिया है। हम सरकार से कहना चाहते हैं कि वहा ऐसे नीच कर्म शिष्टाचार से गिरे कृत्य के सहयोगी तत्व को कडा दण्ड दें ताकि फिर किसी को ऐसा साहस न हो। जनता का रोश शान्त करना भी अधिकारियो का कर्तव्य है। आर्यजगत ऐसा अपमान नही सह सकता।

बलिदान से सन्देश

बलिदान समाज और देश को ऊचा उठा देता है। आर्यसमाज की तो आधारशिला ही बलिदान पर रखी है। इन महान् बलिदानी देवो की स्मृति मे समय-समय पर बलिदान दिवस मनाया जाता है। उससे सारे समाज को प्रेरणा व चेतना मिलती है। अभी-अभी आर्यसमाज ने स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया है। स्थान-स्थान पर समारोह हुए, प्रभात फेरिया, जलूस, सभाए की गई। राजधानी देहली मे बहुत बडे स्तर पर यह दिवस मनाया जाता है। जीवन मे समाज, धर्म और राष्ट्र सेवा मे तन-मन-धन की आहुति देने का सकल्प लिया है। व्रती व्रत लेते हैं। व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड कर समाज के लिए उत्सर्ग किया जाना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सारा जीवन तो दिया ही साथ-साथ अपने शरीर को भी आहुति के रूप मे समिधा बनाकर समाज सेवा के पवित्र यज्ञ कुण्ड मे भेट कर अपनी छाती पर पिस्तौल की गोलिया खाकर समाज के लिए बलिदान का मार्ग प्रशस्त कर दिया। यह बलिदान दिन आया और चला गया। समाजो ने समारोह से तो मना लिया किन्तु हम उस बलिदानी देवता के पथ पर भी चल रहे हैं या स्वार्थ पथ पर भाग रहे हैं—आज सभी को विचारना होगा। आज जीवन मे स्वार्थ की लिप्सा बहुत बढ गई है। समाज को गौण समझने लगे हैं। यही कारण है कि समाज की गाडी मन्द२ गति से चलने लगी है। हमे बलिदान

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

की भावना जीवन मे लानी होगी। समाज एक मा के समान है—माता तन-मन धन मे से जिस किसी की भी आहुति जब मागे तभी देने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह बलिदान की ज्वाला तभी तक प्रदीप्त रहेगी जब तक इसमे त्याग उत्सर्ग की आहुतिया पडती रहेगी। जब यह भावना समाप्त होजाती है या समिधा के समान अपने आपको भेट करने वाले नहीं मिलते तब यह पवित्र ज्वाला मन्द हो जाती है, बाद में बन्द भी हो जाती है। समाज का सारा परिवार बलिदान का पाठ पढता हुआ व्रत धारण करे कि समाज जो वस्तु भी मुझ से मागे वही भेंट करने को सदा प्रस्तुत हू। तभी इस दिवस की सबस बडी सफलता है—

आर्यसमाज अनारकली समारोह

अनासक्ति ही बन्धन है

आर्यसमाज अनारकली नई देहली के वार्षिक महोत्सव पर आर्य जगत के तपस्वी शान्तमूर्ति प्रिंसिपल पण्डित रलाराम जी एम ए ने जो गम्भीर, सारगर्भित प्रभावशाली भाषण दिया। आर्यजगत के प्रेमी पाठको के लिए वह दिया जाता है जल्से पर हमने स्वय उनके नोट लिये जीवन के लिए बहुत बडा सन्देश है।—स०

स्वाध्याय के द्वारा वेद को समझा जा सकता है। घबराना नही चाहिए। वेद के मन्त्र मे उपदेश दिया गया है कि हम अपने कर्मों से प्रभु की महिमा को बढाते हैं। इस प्रकार लोगो को उभयासो जनानाम—दोनो प्रकार की सम्पत्तिया मिलती हैं। मनुष्य के कर्मों स भगवान की महिमा प्रकट होनी है। जब कोई आदोलन प्रारम्भ किया जाता तब वह प्रारम्भ मे एक स्वप्न होता है—वहा फैलता हुआ आन्दोलन का रूप धारण कर लेता है। स्वामी दयानन्द ने बालपन मे एक व्रत लिया। उसे आगे फलाना शुरू किया वही जनजीवन का एक विशाल आन्दोलन बनता गया। वेद मे कहा गया है—इन्द्र वधन्तोऽतुर हे मानवो ! कम करत हुए उसे प्रभु को महिमा को बढाते रहो। स्वामी दयानन्दने जो कुछ कहा है—आज भी उनकी कथनी मे किसी प्रकार का भी अन्तर नही आया। त्रटि और कमी तो हमारी करनी मे आ गई है। ठीक कहा है कि मौखिक उपदेश से जीवन की अधिक कीमत है। महिमा उत्तम कर्मों एव चरित्र से फैलती है। केवल उपदेश से नहीं। उपदेश या कथनी के पीछे यदि करनी व चरित्र न हो तो नही फैलती। एक विद्वान ने लिखा है—Loud Profession and Poor Performance अर्थात दावे तो बड ऊचे हो किन्तु क्रिया नीची हो तो काम कैसे बनेगा? मन को टटोल कर देख कि क्या दयानन्द का सन्देश हम में है या नही? गान्धी जी ने एक बार कहा था कि मुझे सब से अधिक educated Persons शिक्षित लोगो की है, क्योकि ये अग्रेज को तो निकलना चाहते हैं पर अग्रजी सभ्यता को अपने घरो मे बनाए रखना चाहते हैं।

स्वामी दयानन्द का नारा था कि वेदो की ओर मुडो—Back to the Vedas। सबसे प्रथम आर्य बनाओ, फिर ऐसे लोगो से आर्य राष्ट्र स्वय ही बनता चला जाएगा। आर्य बनता है कर्मों से। अपने दिल से प्रत्येक नरनारी पूछे कि क्या हमारे जीवन उसकी महिमा का विस्तार करते हैं? यहां हमारे देश मे जो विदेशी लोग चलकर आते हैं—वे हमारे ऐश्वर्य वैभव को देखने नही आते किन्तु अध्यात्मवाद का पाठ पढने आते हैं। ऐसे व्यक्ति जब यहा आ कर हमारे जीवन के कार्यों का व्यवहार को देखते हैं तो सवथा निराश हो जाते हैं। भारत के प्रति उनका सुनहला स्वप्न समाप्त हो जाता है। उनके मन पर बडी चोट लगती है। विवेकानन्द का सन्देश भारत मे आज किस स्थान पर मिलता है? हमारे देश मे महेश योगी की ख्याति सुन कर Beatles बीटल आए। इस विचार को लेकर कि वहा जा कर जीवन की अशान्ति दूर करनेके साधन मिल सकगे अध्यात्मवाद का अमृतपान करने का अवसर मिलेगा किन्तु यहा आ कर देखा कि भौतिक सुविधाओ की ओर ही ध्यान दिया गया पर अध्यात्मवाद की ओर नही ये वस्तुए और आराम के साधन तो अमरीका मे भारत की अपेक्षा बहुत उत्तम है। इस अवस्था में वे बीटलो की आई हुई मण्डली निराश हो कर वापस अपने देश को लौट गई वहां जा कर उन्होंने कहा कि—He is just a man वह तो केवल मनुष्य ही है। भाव यह है कि जिस योग की भावना से अपनी आत्मिक शान्ति के लाभ के लिए वे यहां पर आए थे। वह कुछ भी तो नही मिला। सवथा निराशा ही हुई। भारत मे तो विदेश से जो इस विचार से आते हैं वे समझते हैं कि भारत योगियो का देश है A land of Yoga योग स आत्म ज्ञान का प्रकाश मिलता है। पर जब उनकी मानसिक प्यास नही मिटती तो खाली हाथ लौट जाते हैं। अपने देश मे यहा के बारे मे अनेक प्रकार की ऐसी वैसी चर्चा करते रहते हैं। आज तो हमारे सामने प्राय एक ही विचार काम करता है कि पैसा ही आना चाहिए चाहे जिन उचित अनुचित साधनो का भी क्यो न इसके लिए प्रयोग किया जाए। केवल मात्र धन का सम्मान ही होने लगा है। धनो लोगो का प्रत्येक क्षत्र में बोल बाला है। यह जीवन को भोगवाद की ओर ले जा रहा है। जीवन का अध्यात्मवाद समाप्त हो रहा है।

महात्मा गाधी से एक बार प्रश्न किया गया था कि आप पश्चिमी सभ्यता का विरोध क्यो करते हैं? उनका उत्तर यह था क्योकि यह सभ्यता धन प्रधान है। धन कमाना बुरा नहीं है—हमारे शास्त्रों मे दो प्रकार के धनो का सन्देश मिलता है—

यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः—जिससे लोक और परलोक की सिद्धि हो वह धन है। दोनो लोक उन्नत होवें तो ठीक है। जिसका यह लोक उन्नत नहीं उसका परलोक कैसे बनेगा? दोनों की उन्नति करनी चाहिए। धन कमाने की तो कहीं भी निंदा नहीं है। किन्तु धन का अपना स्थान होता है, वहीं पर रखना चाहिए। इसको धम पर सवार मत करो। पश्चिमी सभ्यता ने धन को प्रभुत्व दिया है, सब कुछ ही इसे मान लिया है। एक और वहा का विज्ञान चन्द्रमा के धरातल पर पहुच रहा था दूसरी ओर उसी समय वियतनाम मे कत्लेआम हो रहा था। क्या विचित्र तमाशा है! हमारे देशवासी भी यह समझने लगे हैं कि पहले लखपति बन जाओ फिर वेदशास्त्रों को देख पढ जायेगा। इस भ्रान्तधारणा ने आज का सारा जीवन अशात बनाकर रख दिया है। भोगवाद का चारों ओर तेजी से चक्र चलने लगा है। सारा जीवन इसी धन के गिर्द ही घूम रहा है। यही आसक्ति जीवन की सबसे बडी अशांति है, भयानक बन्धन है। इससे जितनी जल्दी छुटकारा मिल सके तभी अच्छा होगा। इसके लिये वेद के पथ पर चलना होगा तभी भला हो सकेगा।

सभामन्त्री डा. वेदीराम शर्मा की अपील :

डी०ए०वी०कालेज अबोहर में अकाली गुण्डागर्दी की पजाब सरकार से जाच करवाने की माग

पजाब बद के दिन जिस गुण्डागर्दी का प्रदर्शन अकाली छात्रो ने अबोहर मे किया है ऐसी उनसे कदापि आशा न थी। डी ए वी कालेज अबोहर मे कुछ अकाली छात्रों ने यज्ञशाला को तोडा तथा उसपर पेशाब करके उसकी पवित्रता को भग करने की कोशिश की। उन्होने कालेज भवन पर पत्थर मारे जिससे भवन का भी नुकसान हुआ। कालेज के हिन्दू छात्रो ने इस लज्जास्पद बात को सहन न करते हुए यज्ञ के पश्चात प्रदर्शन किया। इस घटना से सब धम प्रेमी सज्जनों के दिल पर ठस पहुची है।

शिक्षण संस्थाए व उपासना स्थान सभी की सम्मिलित वस्तु होती है। विशेष रूप से डी० ए० वी० सस्थाए। गुरु नानक देव जी की ५००वीं जन्मशती पर सभी ने हजारों रुपया सरकार को दान दिया तथा अपनी सस्थाओं में समारोह करके हिन्दू-सिख एकता का उज्ज्वल उदाहरण पेश किया। अत सरकार का कतव्य है कि वह इस प्रकार की अराजकता से शिक्षण सस्थाओं की रक्षा कर।

सब आर्यसमाजों से व शिक्षण सस्थाओं से मेरा नम्र निवेदन है कि वह राष्ट्रपति श्री वी वी गिरि, प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरा गान्धी, श्री वाई बी चह्वाण, तथा मुख्य मन्त्री पजाब सरकार के नाम एक प्रस्ताव पास करके भेजें कि इस अक्षम्य अपराध की पूरी तरह जाच करवाई जाए और अपराधियों को दण्ड दिया जाए।

निवेदक

वेदीराम शर्मा सभा मन्त्री

आर्यवीर दल तथा आर्य कुमार सभा के प्रेरणा स्रोत :–

पण्डित रामप्रसाद जी बिस्मिल

(ब्र० जगदीशचन्द्र जी "वसु" सिद्धान्तालंकार-विद्यावाचस्पति नरवाना)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अमर से सेनानी एवं काकोरी केस के अग्रणी क्रान्तिकारी नेता पं रामप्रसाद जी बिस्मिल उन आर्य वीर क्रांतिकारियों में से हैं जिन्होंने इस आर्यावर्त (भारतवर्ष) देश को ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्रता दिलाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। आप आर्य जगत के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी उदभट्ट आर्य सन्यासी स्वामी सोमदेव जी महाराज के शिष्यों में से प्रमुख शिष्य थे। आपने उन्हीं से (स्वामी जी से) सब कुछ सीखा। स्वामी जी महाराज बिस्मिल को धार्मिक, सामाजिक तथा विशेष रूप से क्रान्तिकारी राजनीतिक उपदेश दिया करते थे। और इस प्रकार की पुस्तकें पढने का आदेश भी देते थे।

पं, रामप्रसाद जी बिस्मिल क्रांतिकारी कैसे बने। यह हम उन्ही के शब्दों में उपस्थित करते हैं! वह अपनी आत्म कथा मे लिखते हैं कि सन १९१६ ई० मे लाहौर षडयन्त्र का मामला चला मैं समाचारपत्रो में उसका वृत्तान्त बड़े चाव से पढ़ा करता था! श्रीयुत भाई परमानन्द जी मे मेरी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उनकी लिखी हुई 'तवारिख हिन्द' पढकर मेरे हृदयपर बड़ा प्रभाव पड़ा था। लाहौर षड्यन्त्र का फैसला अखबारो मे छपा। भाई परमानन्द जी को फांसी की सजा पढकर मेरे हृदय मे आग लग गई। मैंने विचारा कि अंग्रेज बड़े अत्याचारी हैं। इनके राज्य मे न्याय नहीं जोकि इतने बड़े महानुभाव को फासी की सजा का हुक्म दे दिया। मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं इसका बदला अवश्य ही लूंगा! जीवन भर अंग्रेजी राज्यको बिध्वंस करने का प्रयत्न करता रहूंगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर चुकने के पश्चात मैं अपने गुरुदेव स्वामी सोमदेव जी के पास आया। सब समाचार दिये और अखबार दिया। अखबार पढ़कर स्वामीजी महाराज बड़े दुःखित हुए। तब मैंने अपनी प्रतिज्ञा के सम्बंध में कहा। स्वामी जी कहने लगे कि रामप्रसाद! प्रतिज्ञा करना सरल है, किंतु उस पर दृढ रहना कठिन है। मैंने स्वामी जी महाराज को प्रणाम कर उत्तर दिया कि यदि श्रीचरणों की कृपा बनी रहेगी तो प्रतिज्ञा-पूर्ति मे किसी प्रकार की त्रुटि न करूगा। उसी दिन से स्वामी जी कुछ-कुछ खुले। आप बहुत-सी राजनीतिक व क्रान्तिकारी बातें बताया करते थे। उसी दिन से मेरे क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात हुआ।' आत्मकथा।

उपरोक्त विचारधारा से हम सहज ही मे जान सकते हैं कि पं० रामप्रसाद जी बिस्मिल क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात एक संन्यासी के सहवास से आरम्भ होता है। यह नही झूठलाया जा सकता कि आप आर्य विचारधारा से ओत-प्रोत थे। इस से पूर्व आपने मुन्शी इन्द्रजीत जी (जो आर्य समाज शाहजहापुर के अधिकारी थे) से सन्ध्या व हवन करना सीखा। जो कि आपके अन्तिम समय तक जीवन का अग रहा। आपने अपनी आत्मकथा में (जो जेल मे फासी के दो दिन पूर्व लिखी थी) लिखते हैं कि 'श्रीयुत मुन्शी इन्द्रजीत जी ने सन्ध्या हवन करने का आदेश दिया। मैंने जानना चाहा कि सन्ध्या क्या वस्तु हैं। मन्शी जी ने आर्यसमाज सम्बन्धित कुछ उपदेश दिया। इसके बारे में मैंने सत्यार्थप्रकाश (महर्षि दयानन्द कृत) पढ़ा। इसे पढकर तो जीवन का तख्ता ही पलट गया। सत्यर्थप्रकाश के अध्ययन ने तो मेरे जीवन के इतिहास मे एक पृष्ट ही खोल दिया। मैंने उसमें ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन करना आरम्भ कर दिया!' इत्यादि। विचारों को पढ़कर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि क्रातिकारी रामप्रसाद जी बिस्मिल, स्वामी सोमदेव जी,व श्रीयुत मुन्शी इन्द्रजीत जी के संसर्ग से ही आप आर्य समाज में प्रविष्ट हुए और उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से अपने जीवन का निर्माण कर इस देश की अनेकों वर्षों की गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अपने जीवन की आहुति प्रदान की। आगे चलकर वह अपने कट्टर व विशुद्ध आर्यसमाजी होने के विषय में लिखते हैं।

(क्रमशः)

प्रो. दीवानचंद शर्मा का देहांत, लोकसभा सम्मान में स्थगित

प्रधानमन्त्री व दलीय नेताओं की श्रद्धांजलियां

नई दिल्ली २३ दिसम्बर—लोकसभा के सदस्य प्रो दीवान चन्द शर्मा का आज प्रात देहान्त हो गया। वह ७२ वर्ष के थे। प्रो शर्मा, जो कांग्रेस महासमिति के सदस्य भी थे, कुछ समय से अस्वस्थ थे।

प्रो० दीवान चन्द शर्मा के निधन पर उनके प्रति सम्मान के तौर पर सभी वर्गों द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित किए जाने के बाद लोकसभा की बैठक बिना कोई कार्यवाई किए बिना उठ गई। सदन ने सभी सदस्यो न मौन खड़े होकर उन्हे श्रद्धाजलि दी। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने कहा कि श्री शर्मा कितने लोकप्रिय थे, यह इस तथ्य से ज्ञात होता है कि वह प्रत्येक चुनाव मे विजयी हुए हैं और वह शुरू से ही लोक सभा के सदस्य चले आ रहे हैं। श्रीमती गाधी ने कहा उनके निधन से उनकी निजि हानि हुई है क्योकि श्री शर्मा उन्हें और उनके पिता को वर्षों से जानते है। 'व मेरे पति के भी निकट मित्र थे', प्रधानमन्त्री ने कहा।

जीवन परिचय

प्रो० दीवानचन्द शर्मा पजाब क प्रमुख शिक्षाविद थे। लम्बी बीमारी के पश्चात आज प्रात. उन का निधन हो गया। वह ससद क कुछ वरिष्ठ सदस्यो म से थ। १९५१ से ही वह लगातार लोकसभा क सदस्य रहे हैं और उन्होने सदन मे शिक्षा, प्रतिरक्षा तथा परराष्ट्र मामलो में हमेशा ही सक्रिय रूप मे भाग लिया है। गुजरात मे दौलत नगर (अब पश्चिमी पाकिस्तान मे) जन्मे। स्वर्गीय श्री शर्मा न उच्च शिक्षा प्राप्त की और अध्यापन क्षेत्र को अपनाया। शीघ्र ही पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ में वह अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष बन गए और बाद मे वह विश्वविद्यालय के भाषा विभाग के डीन नियुक्त हुए।

उन्होने शिक्षा पर कई राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनो मे भाग लिया तथा इसी सम्बन्ध मे विदेश भ्रमण किया। विभिन्न शिक्षा व अध्ययन संस्थाओ के अतिरिक्त वह सामाजिक तथा सास्कृतिक सस्थाओ से सम्बन्धित थे। लोक सभा मे वह अनुमान समिति अधीनस्थ विधिनिर्माण पर लोक लेखा समिति तथा सासदो के वेतन भत्तो सम्बन्धी समिति के सदस्य रह चुके है। १९६७ मे वह याचिका समिति के अध्यक्ष बने। वह अपने पीछे पांच बेटे और तीन बेटिया छोड गए है।

श्रीमती गाधी ने कहा कि कई बार श्री शर्मा मे पुराना स्कूल मास्टर जाग उठता था और मंत्रियो तथा प्रतिपक्षी सदस्यो को समान रूप से झाड डालने लगता था। वास्तव मे वह कई बार सदस्यो द्वारा प्रयुक्त अंग्रेजी ठीक किया करते थे। डा० राम सुभगसिह ने कहा कि श्री शर्मा अंग्रेजी के प्रमुख विद्वान थे। शिक्षामंत्री डा० वी के आर. वी, राव ने श्री शर्मा को २० लाख अध्यापकों की ओर से श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि वह अध्यापको के हितों की रक्षा को सदा तत्पर रहते थे।

श्री शर्मा का आज तीसरे पहर निगमबोध घाट पर अंतिम सस्कार किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से हम मान्यवर श्री शर्मा जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए वियोगमे सतप्त परिजनो से पूर्ण सहानुभूति प्रकट करते हैं। भगवान से प्रार्थना है कि वह प्रो० दीवानचन्द जी को सद्गति और संतप्त परिजनो को धैर्य की सामर्थ्य प्रदान करें।

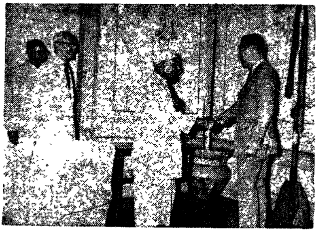
वेदीराम—सभा मन्त्री

महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा विदेश में वेद प्रचार की धूम

सोमवार ता० १७ नवम्बर को प्रात: पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी हमारे सुरिनाम देश मे ५८ दिन रात तक कुल ७० व्याख्यान देने के बाद गयाना देश पधारे हैं।

यहां महात्मा जी केवल ४ दिन तक वैदिक प्रचार कर ता० २१ नवम्बर को त्रिनिडाड पधारे जहां एक सप्ताह तक वैदिक प्रचार कर ता० २१ नवम्बर को नोर्थ अमेरिका स्थित डालास नगर में पहुंचे।

हमारे देश में स्वामी जी को आने से यहां के भारतीय जनसमाज में नई जागृति और अन्यो मे उत्तम प्रभाव पडा है। श्री सनातन धर्म महासभा के प्रधान जी ने अपने भाषण में यहा तक कहा—इससे पूर्व इतने महान विद्वान और सन्यासी के रूप में हमारे देश तो क्या तमाम वेस्ट इडीज में मे नही आये। अगर इसी तरह विद्वान भी सिलसिलेवार यहा आते रहें तो नि.सन्देह हम सुरिनाम देश को वैदिक क्षेत्र बना सकेंगे।



महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती, सुरिनाम के गवर्नर महोदय श्री मोहनफेरयई, उनके साथ आर्य दिवाकर के प्रधान श्री चेतराम सिंह जी।

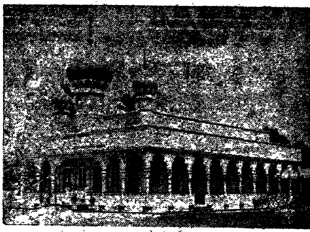


महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती, सुरिनाम के प्रधानमन्त्री श्री ब० ऐ० यई जी, और आर्य दिवाकर के उपप्रधान श्री आर० भटोस जी।

स्वामी जी के भाषण मे सहस्रों की संख्या आर्यसमाजी सनातनधर्मी व अन्य लोग भाग लेते रहे हैं। स्वामी जी का प्रचार प्रोग्राम इतना बढ चला था कि खास कर संस्था आर्य दिवाकर के ८ समाजों और कई महत्व सुदूर स्थानो मे प्रचार नही होने पाया। योग साधन व प्राणायाम दीक्षा के लिये कुल ६० व्यक्ति भाग लेते रहे हैं।

मन्दिर उद्‌घाटन

श्रीमती प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भव्य उद्‌घाटन सजधज से हुवा और ८ दिन तक गायत्री महायज्ञ में सहस्रों की उपस्थिति मे होता रहा। इस मन्दिर निर्माण में १२ वर्ष लगे जिसमें लगभग एक लाख गिल्डर खर्च हुये हैं। इस निर्माण मे यदि लोग द्रव्य दान के साथ श्रमदान न किये होते तो नि:सन्देह खर्च अधिक बढ जाता। मन्दिर का सौंदर्य इतना आकर्षक है कि देशदेशान्तर के लोग देखने व फोटो बनाने आते हैं। उद्‌घाटन में पं० शिवरत्न जी ने सम्पूर्ण चारों वेद प्रदान किये।



सुरिनाम अमरीका में भव्य आर्य समाज मन्दिर आर्य प्रांतीय सभा का कार्यालय जिसका उद्‌घाटन महात्मा जी ने किया।

उपदेशक विद्यालय

संस्था आर्य दिवाकर का कार्यक्षेत्र विशाल होते हुये केवल १० उपदेशक संलग्न हैं जिन्हे केवल यज्ञ संस्कार से अवकाश नहीं मिलती कि वे व्यवस्थापक प्रचार कर सकें। हमारी वर्षों की योजना है कि भारत से एक सुयोग्य वैतनिक आचार्य बुलाये जाय जो यहां व्यवस्थापक प्रचार करते हुये एक उपदेशक विद्यालय द्वारा देशीय प्रचारक तैयार करें। जब तक भारत से उपयुक्त आचार्य नही उपस्थित हैं तब तक उक्त विद्यालय का संचालन-भार श्री प० सत्यव्रत दातादीन, श्री पं० शिवरत्न, श्री प० विश्वेश्वर जी पर महात्मा जी ने सौंप कर इसका उद्‌घाटन किया है। स्वामी जी से कुल १० पुरुष और ३ स्त्रियां यज्ञोपवीत संस्कार ले अब उपदेशक बनने की तैयारी कर रहे हैं। रविवार ता० १६ नवम्बर को १ नीग्रो जाति ने भी शुद्धि और यज्ञोपवीत संस्कार लिया है जो पं० शिवरत्न से उपदेशक कम की दीक्षा डच भाषा में ले रहा है। इसने सन् १९६० ई० में सत्यार्थप्रकाश की अंग्रेजी से डच मे भाष्य किया है केवल इसे अभी हिन्दी पढ़ना है। जन्म का नाम हम्फी फ्रेद: से बदल कर अब धर्मदेव नाम पडा है। डच व अंग्रेजी मे जब यह वैदिक सिद्धान्त से उत्तीर्ण होगा तब इसे इनके गिरोह का प्रचारक नियत किया जायगा।

आर्यसमाज(डी.ए.वी.कालेज)अम्बालानगर

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बडे उत्साहके साथ मनाया गया। श्री वेद प्रकाश जी वेदालंकार ने बहुत ही सुन्दर ढंग से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। सत्संग के पश्चात् हुई बैठक में अबोहर मे हुए यज्ञशाला की अपवित्रीकरण पर रोष प्रकट किया गया।और केन्द्रीय सरकार से मांग की गई है कि पंजाब के हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारो को रोका जाए।

भगवान
मन्त्री, आर्य समाज

आर्यसमाज हिसार के स्तम्भ

ला० शबीलदास जी का देहावसान

हरियाणा के प्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं दानवीर सेठ श्री छबीलदास जी आर्य बाल मसन्द वाले, माडल टाऊन हिसार मे लगभग २ साल रोग शैय्या पर रहने के बाद दिनांक १२—१२—६९ को ६९ वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास हो गए। अन्तिम संस्कार के समय अर्थी के विशाल जलूस मे हजारो नागरिको के अतिरिक्त हरियाणा मे मुख्य-मन्त्री श्री बंसीलाल, श्री बनारसी दास, श्री दलबीरसिंह, श्री नेकी राम संसद सदस्य, श्री प्रभुसिंह, श्रीमती चन्द्रावती, श्री बलवन्त राय तायल सदस्य हरियाणा विधान सभा, श्री एम० के० मिश्रा निजि सचिव मुख्यमन्त्री हरियाणा। श्री हरफूलसिंह जिलाधीश, श्री बलवन्त वीरसिंह प्रशासक नगर पालिका हिसार एवं राजनैतिक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओ के प्रतिनिधि शामिल हुए।



आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से हम मान्यवर श्री लाला जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए वियोग मे सतप्त परिजनो से पूर्ण सहानुभूति प्रकट करते हैं। भगवान से प्रार्थना है कि वह लाला शबीलदास जी को सद्गति और सतप्त परिजनो को धैर्य की सामर्थ्य प्रदान करे।

—वेदीराम
सभा मन्त्री

परिवर्तन

बन्द करो यह मधुर गीत, बन्द करो यह मधुर गान।
है समय का यह आह्वान,मानवता का इसमे कल्याण।

ऐसा गीत मुझे सुनाओ, आग लगा दे जल—थल मे।
उथल-पुथल मच जावे जग मे,ऐसा गीत बनाना होगा।

आज परिवर्तन लाना होगा,हर परिवर्तन नए चित्र का।
प्रारम्भ होता है, हर क्रान्ति से शान्ति का।

आरम्भ होता है, निराशा दूर करने को।
आशाका दीप जलाना,होगा,आज परिवर्तन लाना होगा।

प्रति स्पर्धा नही मानव की, मानव के प्रति।
सग्राम है केवल विचारो का,देश प्रेमी,सस्कृति रक्षक।

राज्यो के ठेकेदारा, आडम्बरो के अम्बारो का।
असत्य को हटा, सत्य के सामने लाना होगा।

आज परिवर्तन लाना होगा, ऐसा जिसमे।
सभी एक-सी भाषा बोले,एक विचार हो,एक सभ्यता।

एक संस्कृति का प्रचार हो, दानवता खत्म हो।
नास्तिकता नष्ट हो, वाद-विवाद कम-कार्य अधिक।
ऐसा युग को बनाना होगा,आज परिवर्तन लाना होगा।

—जगत नारायण

साप्ताहिक आर्यजगत् का वार्षिक चंदा आठ रुपये एक प्रति का मूल्य १६ पैसे

शोक समाचार

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर के पूर्व उपाचार्य ला० किशनचन्द जी का देहावसान

जालन्धर १७ दिसम्बर-यह समाचार देते हुए अत्यन्त दुःख होता है कि डी०ए०वी० कालेज जालन्धर के पूर्व वाइस-प्रिंसिपल व प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री ला० किशनचन्द जी का हृदयगति अवरोध से १६ दिसम्बर की रात्रि को देहावसान हो गया। लाला किशनचन्द जी गणित के उच्च-कोटि की शिक्षा शास्त्री थे। उनके विद्यार्थी उनकी स्मृति आजन्म रखते रहे हैं।

ऐसे सुयोग्य महानुभाव के वियोग पर सभी नगर निवासी शोक सन्तप्त हो उठे प्रभु उन्हे सद्गति प्रदान करें तथा सम्बद्ध परिजनो को धैर्य धारण की शक्ति प्रदान करे।

आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्त्ता श्री एलारामजी का देहावसान

आर्यसमाज और विशेषरूप से आर्य प्रादेशिक प्र. नि. सभा पंजाब व डी. ए वी. कालेज कमेटी के अवैतनिक आडीटर श्री ला० एलाराम जी का गत १२ दिसम्बर को हृदयगति अवरोध से अकस्मात देहांत हो गया। मान्यवर लाला जी सच्चे मायनो मे आर्य थे। उन्होंने जीवन के अन्तिम दिनो तक समाज की सेवा मे अपना जीवन लगा दिया। सभा और कमेटी का हिसाब आडिट करते समय वे बडे ही सख्त रहते थे।

यह इन्ही जैसे महानुभावो का कार्य था कि जिसके कारण आज तक डी०ए०वी० कालेज कमेटी प्रादेशिक सभा और आर्य समाज के हिसाब किताब पर कोई भी व्यक्ति अंगुली नही उठा सका।

हम भगवान से प्रार्थना है कि वे ऐसे साधु-पुरुष को सद्गति प्रदान कर,सम्बद्ध परिजनो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—वेदीराम शर्मा
सभा मन्त्री

ग्राहक महानुभावों की सेवा में

'आर्य जगत्' साप्ताहिक के सभी ग्राहको की सेवा मे नम्र निवेदन है कि जिन्होंने इस वर्ष का चन्दा अभी तक नही भेजा वह शीघ्र चन्दा भेजनेकी कृपा करे। चालू वर्ष समाप्ति पर है हिसाब हो रहा है, इसलिए देर न करते हुए चन्दा शीघ्र भेजें अति धन्यवाद होगा।

व्यवस्थापक

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग का बालोपयोगी साहित्य

आपके बच्चो के मानसिक विकास के लिए अति उत्तम उपयोगी पुस्तके चाहिए। आपका कर्तव्य है कि आप इस कर्तव्य को निभाते हुए उनको ऐसा साहित्य दे। जिस से शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी हो। उन मे अच्छे-अच्छे विचारो तथा धार्मिक शिक्षा का समावेश कराने हेतु इन पुस्तकों को उनको पढने के लिए दे।

१. सीता जीवन	ले० (महात्मा आनन्द स्वामी जी)	मूल्य ३७ पै०
२ पार्वती जीवन	,, ,, ,,	,, २५ ,,
३ पद्मिणी जीवन	,, ,, ,,	,, ३१ ,,
४ छत्रपति शिवाजी	ले० (मा० ताराचन्द आर्य वानप्रस्थी	,, २० ,,
५. दयानन्द उपदेशामृत		,, २५ ,,
६. प्राथना पुस्तक		,, २५ ,,
७ गोरक्षा परम कर्तव्य	(श्री धर्मदेव वाचस्पति	,, ५० ,,
८ चन्द्रगुप्त मौर्य	(प्रि श्री राम जी शर्मा	,, ५० ,,

इनके अतिरिक्त और सभी प्रकार का धार्मिक साहित्य प्राप्त करने के लिए लिखें।

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर

* समाचार दर्शन *

सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों से निवेदन

दशांश और वेद प्रचार दीपावली व शिवरात्रि धन के साथ क-ख प्रतिनिधि फार्म भी भेजिए

आर्य प्रादेशिक प्र नि. सभा पजाब, हरियाणा, हिमाचल व जम्मू काश्मीर से सम्बन्द्ध आर्य समाजो से प्रार्थना है कि वे शीघ्रादि शीघ्र सभा के लिए अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन करके भेजने की कृपा करें प्रतिनिधि फार्म क व ख उन्हे भेजे जा चुके हैं। दशाश धन और प्रतिनिधि फार्मों के साथ ही नियमानुसार दशाश, वेद प्रचार दीपावली व शिवरात्रि फण्ड प्रत्येक वर्ष भेजना आवश्यक है। इन के अभाव मे यह फार्म नियमानुकूल नही समझे जा सकेंगे। अत प्रत्येक आर्य समाज को इस फार्म मे बिलम्ब न कर शीघ्राति शीघ्र दशांश राशि और वार्षिक वेद प्रचार, दीपावली और शिवरात्रि फण्ड का धन सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करनी चाहिए जिस से प्रतिनिधियों की स्वीकृति सूचना उन्हे तुरन्त भेजी जा सके।

वेदीराम—सभा मन्त्री

धार्मिक परीक्षाएं

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश सि० विशारद सि० भूषण, सिद्धान्ताचार्य परीक्षाए दिसम्बर, जनवरी मे भारत तथा विदेशो मे होगी। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधिपत्र दिया जाता है। सर्व-प्रथम द्वितीय तृतीय, आने वाले को छात्रवृति की व्यवस्था है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की निःशुल्क सत्यार्थ सुधा कर, सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधिया डाक द्वारा प्राप्त करे। १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मंगवाइए।

आदित्य ब्रह्मचारी   आचार्य मित्रसेन
यशपाल शास्त्री   एम०ए०, सिद्धातालकार
प्रधान   शिक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वदिक सिद्धान्त परिषद
सेवा-सदन, कटरा अलीगढ, (उ प्र)

काला अफगानां में आर्यसमाज की स्थापना

काला अफगाना गाव जो कि कि बटाला फतेहगढ चूडिया मार्ग के मध्य स्थित है दिनाक १५-१२-६९ सक्रान्ति के शुभ अवसर पर जिला केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वाधान मे वहा के महारथियो हकीम नत्थुमल जी धीर, डा० शिव नाथ जी तथा श्री राम लाल जी के सहयोग से आर्यसमाज की स्थापना की गई। इसमे जिला भर से आर्य सज्जन आए हुए थे। प्रधानसभा प्रिसिपल जुगल किशोर, मन्त्री श्री दर्शन कुमार हाडा के अतिरिक्त स्वामी प्रकाशा नन्द जी गुरदासपुर, सर्वश्री गगाराम जी शर्मा, जगदीश मित्र जी तथा बिहारी लाल जी कादिया, पं० ज्ञान चन्द जी बटाला एव वेदप्रकाश जी गुप्ता तथा सुभाषकुमार जो धारीवाल सम्मिलित हुये। पंडित गगा राम जी का मनोहर प्रवचन हुआ। पंडित अर्जुन देव जी के मनोहर भजन तथा स्वामी प्रकाशा नन्द जी के आर्शीवाद से कार्य सम्पन्न हुआ। जिला केन्द्रीय सभा और भी अन्य स्थानो पर आर्य समाजे खोलने का कार्यक्रम बना रही है।

भवदीय
दर्शन कुमार हाडा
मन्त्री

कालेज जालन्धर

...र के ओपन एयर थियेटर मे १५ और १६ दिसम्बर को गुरु नानक दर्शन नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह पंचशती समारोहो के उपलक्ष्य मे था। समारोह मे शीत शब्द, कविताओ द्वारा गुरु नानकदेव जी को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। सब ने इस कार्यक्रम की सराहना की। श्री रमेश और जनरल राजेन्द्रसिंह जी सपैरो ने समारोहो की अध्यक्षता की।

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन है कि कापो एक ओर लिखें

आर्य प्रादेशिक सभा म० हंसराज साहित्य विभाग जालन्धर को पुस्तकों की सूची

१. सामवेद भाष्य (ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) १०-००
२. वैदिक गुरमत [पंजाबी में] (ले० डा० धर्मान्तसिंह जी) १०-००
३. चन्द्रगुप्त मौर्य ०-५०
४. अमृत वाणी ०.५०
५. ऋषि सन्देश ०.२०
६. दयानन्द शतक (ले० दीवान चन्द जी) १.००
७. व्याख्यान माला मून १.२५
८. ऋग्वेद शतक ०.५०
९. यजुर्वेद शतक ०.५०
१०. अथर्ववेद शतक ०.५०
११. महात्मा हंसराज मेकर्स पंजाब के निर्माता ले० प्रि० श्रीराम जी शर्मा M.A.(अग्रेजी मे) १.५०
१२. सध्या पर व्याख्यान-ले० महात्मा हंसराज जी १.००
१३. Dayanand His Life & Work ले० प्रि० सूर्यभानुजी M. A. २.५०
१४. महात्मा हंसराज जी सचित्र (आनन्द स्वामीजी महाराज) १.२५
१५. प्रभु दर्शन (आनन्द स्वामी जी महाराज) १.२५
१६. महर्षि दर्शन (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M.A.) १.००
१७. स्वाध्याय संग्रह (ले० प्रि० साईदास जी M A.) ०.५०
१८. नवीन प्राचीन समाजवाद (ले० स्व० नारायण स्वामी जी) १.००
१९. सत्यार्थप्रकाश भाग प्रथम समुल्लास ले. वाचस्पति M.A. .५०
२०. ,, ,, द्वितीय ,, ,, .५०
२१. मुंडक उपनिषद (ले० प्रि० दीवान चन्द जी M. A.) ०.३७
२२. राधास्वामी मत आलोचना (ले. स्वामी सोमानद जी) उर्दू मे ०.३
२३. षट् दर्शन समन्वय (ले० बुद्धदेव जी मीरपुरी १.२५
२४. सीता (ले. आनंदस्वामीजी) ०.३
२५. पद्मनी (,, ,, ,,) ०.३
२६. पार्वती (,, ,, ,,) ०.२
२७. Teaching of IshUpnishad ले० प्रि० दीवानचन्द M.A.) अग्रेजी में १.
२८. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा १.५०
२९. जीवन-ज्योत ०.६२

इस के अतिरिक्त सभी वैदिक साहित्य सभा के पुस्तक भण्डार से मिल सकता है। स्वध्याय प्रेमी सज्जन पत्र-व्यवहार करें।

विशेष सूचना—महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की दूसरी शाखा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा (आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग) नई दिल्ली में भी खोल दी गई है अतः साहित्य-प्रेमी वहां से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगी साहित्य के शीघ्र आर्डर भेजें।

मुद्रक व प्रकाशक श्री डा०वेदीरामजी एम ए, पी एच डी मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पजाब जालन्धर द्वारा वीरमिलाप प्रैस, मिलाप रोड जाल, तथा आर्यजगत् कार्यलय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर, प